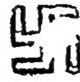
મળવાનું ઠેકાણું :
શ્રી અ. ભા. શ્વે. સ્થાનકવાસી
જૈનશાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ,
ઠે. ગરેડિયા કૂવા રોડ,
રાજકોટ, (સૌરાષ્ટ્ર).

Published by :
Shri Akhil Bharat S. S.
Jain Shastroddhara Samiti,
Garedia Kuva Road, RAJKOT,
(Saurashtra), W. Ry, India.



ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां,
जानन्ति ते किमपि तान् प्रति नैष यत्नः ।
उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा,
कालोह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी ॥ १ ॥



हरिगीतच्छन्दः

करते अवज्ञा जो हमारी यत्न ना उनके लिये ।
जो जानते हैं तत्त्व कुछ फिर यत्न ना उनके लिये ॥
जनमेगा मुझसा व्यक्ति कोई तत्त्व इससे पायगा ।
है काल निरवधि विपुलपृथ्वी ध्यान में यह लायगा ॥ १ ॥



મૂલ્યઃ રૂ. ૩૫=૦૦

પ્રથમ આવૃત્તિ પ્રત ૧૨૦૦
વીર સંવત્ ૨૪૯૮
વિક્રમ સંવત્ ૨૦૨૮
ઇસવીસન ૧૯૭૨

: મુદ્રક :
મણિલાલ છગનલાલ શાહ
નવપ્રભાત પ્રિન્ટીંગ પ્રેસ,
ઘીકાંટા રોડ, અમદાવાદ.

श्री भगवतीसूत्र भाग सत्तरहवें की विषयानुक्रमणिका

अनुक्रमांक	विषय	पृष्ठाङ्क
	अठाइसवां शतक उद्देशक पहला	
१	जीवों के पापकर्म समार्जन का निरूपण	१–११
	दूसरा उद्देशक	
२	अनन्तरोपपन्नक नारक जीवों के पापकर्म समार्जन का निरूपण	१२–१६
	तीसरा उद्देशक से ग्यारहवां उद्देशक पर्यन्त	
३	उद्देशकों की परिपाटि का कथन	१७–२०
	उन्तीसवें शतक का पहला उद्देशक	
४	पापकर्म भोगने का एवं उनको नष्ट करने का कथन	२१–३७
	दूसरा उद्देशक	
५	अनन्तरोपपन्नक नारकादिकों को आश्रित करके पापकर्म प्रस्थापन आदि का कथन	३८–४७
	तीसरा उद्देशक से ग्यारहवें पर्यन्तके उद्देशेका कथन	
६	नैरयिकों के अचरमत्व, पापकर्म भोगनेका कथन	४८–५०
	तीसवें शतक का प्रारंभ–प्रथम उद्देशक	
७	जीवों के कर्मबन्ध होने के कारणों का कथन	५१–७४
८	जीवों के आयुबन्ध का निरूपण	७४–९७
९	नैरयिकों के आयुबन्ध का निरूपण	९७–११८
१०	क्रियावादि जीवों के भवसिद्धि आदि होने का कथन	११९–१३३
	३० दूसरा उद्देशक	
११	अनन्तरोपपन्नक नैरयिकों के क्रियावादी आदि होने का कथन	१३४–१४६

तीसरा उद्देशक
१२ परंपरोपपन्नक नैरयिकों के क्रियावादी आदि होने का कथन १४७-१४९
चौथे उद्देशक से ग्यारहवें पर्यन्त के उद्देशक
१३ उद्देशकों के परिपाटि का कथन १५०-१५४
इकतीसवें शतक का प्रथम उद्देशक
१४ चार प्रकार के युग्मो का कथन १५५-१७६
दूसरा उद्देशक
१५ कृष्णलेश्यावाले क्षुल्लक कृतयुग्म नैरयिक आदि के उत्पाद का कथन १७७-१८८
तीसरा उद्देशक
१६ नीललेश्यावाले क्षुल्लक कृतयुग्म नैरयिक आदिकों के उत्पात आदि का कथन १८९-१९४
चतुर्थ उद्देशक
१७ कापोतलेश्यावाले क्षुल्लक कृतयुग्म नैरयिकों के उत्पात आदि का कथन १९५-२०२
पांचवां उद्देशक
१८ भवसिद्धिक क्षुल्लक कृतयुग्म नैरयिकों के उत्पात आदि का कथन २०३-२१०
छट्ठा उद्देशक
१९ कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक क्षुल्लक कृतयुग्म नैरयिकों के उत्पात आदि का कथन २११-२१४
सातवां उद्देशक
२० नीललेश्यावाले भवसिद्धिक क्षुल्लक कृतयुग्म नैरयिकों के उत्पात आदि का कथन २१६-२१५
आठवां उद्देशक
२१ कापोतलेश्यावाले भवसिद्धिक चार उद्देशेका कथन २१६-२१७

नववें से बारहवें पर्यन्त के उद्देशकों का कथन
२२ अभवसिद्धिक नैरयिकों के एवं कृष्णादि लेश्या-
युक्त नैरयिकों के उपपात आदि का कथन २१८-२१९
तेरहवें से सोलहवें पर्यन्त के उद्देशकों का कथन
२३ कृष्णादि लेश्यायुक्त सम्यग्दृष्टि नारकों के
चार उद्देशकों द्वारा उत्पत्ति आदि का कथन २२०-२२२
सत्तरवें से बीसवें पर्यन्तके उद्देशकों का कथन
२४ कृष्णादि चार लेश्यायुक्त मिथ्यादृष्टि
नारकों के चार उद्देशकों द्वारा कथन २२३-
१९ से २४ पर्यन्तके चार उद्देशक का कथन
२५ कृष्णादि लेश्यायुक्त कृष्णपाक्षिक नैरयिकों
के उत्पत्ति आदि का चार उद्देशक द्वारा कथन २२४-
२५ से २८ पर्यन्त के चार उद्देशकों का कथन
२६ कृष्णादि चार लेश्यायुक्त शुक्लपाक्षिक क्षुल्लक
कृतयुग्म नैरयिकों का चार उद्देशक से कथन २२५-२२७
बत्तीसवां शतक का प्रथम उद्देशक
२७ नारकादि जीवों की उद्वर्त्तना का निरूपण २२८-२३५
दूसरे उद्देशक से २८ पर्यन्त के उद्देशक का कथन
२८ कृष्णलेश्यावाले कृतयुग्म नैरयिक आदि के
उद्देशकों के निर्देशपूर्वक कथन २३६-२३८
तेतीसवें शतक का प्रथम उद्देशक
२९ एकेन्द्रिय जीवों का निरूपण २३९-२५५
दूसरा उद्देशक
३० अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीवों का निरूपण २५६-२६५
तीसरा उद्देशक प्रथम अवान्तर शतक
३१ परंपरोपपन्नक एकेन्द्रिय से अचरम पर्यन्त के
एकेन्द्रियों का निरूपण २६६-२७५

दूसरा एकेन्द्रिय शतक

३२ कृष्णादि लेश्यायुक्त एकेन्द्रिय जीवों का निरूपण २७६–२८८

तीसरा एकेन्द्रिय शतक

३३ नीललेश्यायुक्त एकेन्द्रिय जीवों के उत्पत्ति आदि का निरूपण २८९–

३४ कापोतलेश्यायुक्त एकेन्द्रियों के उत्पत्ति आदि कथनयुक्त चतुर्थ शतक २९०–

पांचवां एकेन्द्रिय शतक

३५ भवसिद्धिक एकेन्द्रियों का निरूपण २९०–२९४

छट्ठा एकेन्द्रिय शतक

३६ कृष्णलेश्यायुक्त भवसिद्धिक आदि एकेन्द्रिय जीवों का निरूपण २९४–३०३

सातवां एवं आठवां एकेन्द्रिय शतक

३७ नीललेश्यायुक्त भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीवों के एकादश उद्देशात्मक शतक का कथन ३०३–३०४

३८ कापोतलेश्यायुक्त भवसिद्धिकों के ग्यारह उद्देशात्मक आठवें शतक का कथन ३०४–३०५

नववां शतक

३९ अभवसिद्धिक एकेन्द्रियों का निरूपण ३०५–३०७

दशवां ग्यारहवां एवं बारहवें शतक का कथन

४० कृष्णलेश्यावाले अभवसिद्धिका एकादश उद्देशात्मक दसवां एकेन्द्रिय शतक नीललेश्यायुक्त अभवसिद्धिक एकेन्द्रियों का ग्यारह उद्देशात्मक ग्यारहवां शतक तथा कापोतलेश्यायुक्त अभवसिद्धिकों का बारहवां शतक का निरूपण ३०७–३११

चोवीसवें शतक का आरंभ

पहला अवान्तर शतक प्रथम उद्देशक

४१ विग्रहगति से एकेन्द्रिय जीवों का निरूपण ३१२–३३२

४२ विग्रहगति से जीवों के उत्पात का निरूपण ३३३–३५६

४३ रत्नप्रभापृथिव्याश्रित पृथिव्याद्येकेन्द्रिय
जीवों का निरूपण ३५७–

४४ शर्कराप्रभा पृथिव्याश्रित एकेन्द्रिय जीवों के
उपपात आदि का कथन ३५८–३६८

४५ सामान्य से अधःक्षेत्र उर्ध्वक्षेत्र का आश्रय-
करके एकेन्द्रिय जीवों के उपपात का कथन ३६९–३७४

४६ अपर्याप्तक सूक्ष्मपृथ्विकाय आदि के अधोलोक में
विग्रहगति से उत्पात आदिका कथन ३७५–३९४

४७ लोक के पोरस्त्यादि चरमान्त विषय
अपर्याप्तक सूक्ष्मपृथ्वीकायके उत्पत्ति आदि का कथन ३९४–४१४

४८ अपर्याप्तक सूक्ष्मपृथ्वीकायिक जीव का लोक के
दक्षिण चरमान्तमें उत्पत्ति आदि का कथन ४१४–४२४

४९ बादर पृथ्वीकाय आदि के स्थान आदि का निरूपण ४२४–४४४

दूसरा उद्देशक

५० अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रियों के भेद आदि का निरूपण ४४५–४६४

तीसरा उद्देशक

५१ परम्परोपपन्नक एकेन्द्रिय जीव के भेदों का निरूपण ४६५–४७०

चौथे उद्देशक से ११ वें पर्यन्त के उद्देशक का कथन

५२ अनन्तरावगाढ से अचरम पर्यन्त के जीवों के
भेदों का कथन ४७१–४७२

दूसरा एकेन्द्रिय शतक

५३ कृष्णलेश्यायुक्त एकेन्द्रियों के भेदों का निरूपण ४७३–४७८

तीसरा चौथा और पांचवां शतक

५४ नील–कापोत एवं शुक्ललेश्यावाले एकेन्द्रिय
जीवों के ग्यारह उद्देशात्मक शतकों द्वारा कथन ४७९–४८१

७८ कृतयुग्म कृतयुग्म द्वीन्द्रिय जीवों के
उत्पत्ति का निरूपण ५९१-५९७

९ से ग्यारह पर्यन्त के उद्देशक

७९ प्रथमसमय कृतयुग्म कृतयुग्म द्वीन्द्रिय
जीवों के उत्पत्ति का निरूपण ५९८-६०३

२ से ४ द्वीन्द्रिय महायुग्म शतक

८० कृष्णलेश्यावाले कृतयुग्म कृतयुग्म द्वीन्द्रिय
जीवों के उत्पत्ति का कथन ६०४-६०५

५ से १२ पर्यन्त के द्वीन्द्रिय महायुग्म
शतकों का कथन

८१ भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म द्वीन्द्रिय
जीवों के एवं अभवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म
द्वीन्द्रिय जीवों के उत्पत्ति का कथन ६०६-६१२

सडतीसवां त्रीन्द्रिय शतक

८२ कृतयुग्मकृतयुग्म त्रीन्द्रिय जीवों के उत्पत्ति का कथन ६१३-६१५

अडतीसवां शतक

८३ कृतयुग्मकृतयुग्म चतुरिन्द्रिय जीवों के
उत्पत्ति का कथन ६१६-६१८

उन्चालीसवां शतक

८४ कृतयुग्मकृतयुग्म असंज्ञिपञ्चेन्द्रिय जीवों के
उत्पत्ति का कथन ६१९-६२१

चालीसवां शतक प्रथम उद्देशक

८५ कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रिय जीवों के
उत्पत्ति का कथन ६२२-६३९

दूसरा उद्देशक

८६ प्रथमसमय कृतयुग्म कृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रिय
जीवों के उत्पत्ति का कथन ६३९-६४३

दूसरा कृष्णलेश्य संज्ञिपञ्चेन्द्रिय महायुग्म शतक

८७ कृष्णलेश्यावाले कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रिय आदि के उत्पत्ति का कथन ६४४–६४९

८८ प्रथमसमय कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रियों के उत्पत्ति का कथन ६५०–६५३

८९ अप्रथमसमय से लेकर चरमाचरम पर्यन्त के उद्देशकों का कथन ६५३

तीसरा संज्ञिमहायुग्म शतक

९० नीललेश्यायुक्त कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रिय जीवों के उत्पत्ति का कथन ६५४–६५६

चतुर्थ संज्ञिमहायुग्म शत

९१ कापोतलेश्यावाले कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रिय जीवों के उत्पत्ति का कथन ६५७–६५९

पांचवां महायुग्म शत

९२ तेजोलेश्यावाले कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रिय जीवों के उत्पत्ति का कथन ६५९–६६१

छट्ठा महायुग्म शत

९३ पद्मलेश्यावाले कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रिय जीवों के उत्पत्ति का कथन ६६२–६६५

सातवां संज्ञिमहायुग्म शत

९४ शुक्ललेश्यावाले कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रिय जीवों के उत्पत्ति का कथन ६६५–६६८

आठवां संज्ञिमहायुग्म शत

९५ भवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रिय जीवों के उत्पत्ति का कथन ६६९–६७१

नववां संज्ञिमहायुग्म शत

९६ कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रिय जीवों के उत्पत्ति का कथन ६७१–६७२

५७ से ८४ पर्यन्त के उद्देशकों का कथन

११७ अभवसिद्धिक राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकों के उत्पत्ति का कथन ७५०-७५२

११८ कृष्णलेश्यावाले अभवसिद्धिक राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकों के उत्पत्ति का कथन ७५३-

११९ नीललेश्यावाले आदि लेश्यायुक्त अभवसिद्धिक राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकों के उत्पत्ति का कथन ७५४-७५७

८५ से ११२ पर्यन्त के उद्देशकों का कथन

१२० सम्यग्दृष्टि आदि राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकों के उत्पत्ति का निरूपण ७५७-७५९

१२१ कृष्णादि लेश्यायुक्त राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकों के उत्पत्ति का निरूपण ७५९-७६१

११३ वें से १४० पर्यन्तके उद्देशक का कथन

१२२ मिथ्यादृष्टि राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकों के उत्पत्ति का कथन ७६२-७६३

१४१ से १६८ पर्यन्त के उद्देशक का कथन

१२३ कृष्णपाक्षिक राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकों के उत्पत्ति का कथन ७६४-७६५

१६९ से १९६ पर्यन्त के उद्देशकों का कथन

१२४ शुक्लपाक्षिक यावत् शुक्लपाक्षिक शुक्ललेश्य राशियुग्म नैरयिकों के उत्पत्ति का कथन ७६६-७७२

१२५ भगवतीसूत्र के शतक एवं उद्देशकों का कथन ७७३-७७४

१२६ भगवतीसूत्र के उपदेश के प्रकार का कथन ७७५-७८०

॥ समाप्त ॥

" असंखयं जीवियं मा पमायए "



श्री विनोदकुमार वीराणी

(दीक्षा लीधा पहेलां शास्त्राभ्यास करता)

जन्म · पोर्टसुदान सा. १९९२

દીક્ષા	નિર્વાણ
ખીચન – (રાજસ્થાન)	ફલોદી – (રાજસ્થાન)
સં. ૨૦૧૩ વૈશાખ વદ ૧૨	સાં. ૨૦૧૩ શ્રાવણ સુદ ૧૨
તા. ૨૬–૫–૫૭ રવિવાર	તા. ૭–૮–૫૭ બુધવાર

આદ્યમુરબ્બીશ્રીઓ

શેઠ શ્રી શાંતિલાલ મંગળદાસભાઈ
અમદાવાદ.

(સ્વ.) શેઠશ્રી શામજીભાઈ વેલજીભાઈ
વીરાણી-રાજકોટ

સ્વ. સુધીરભાઇ જયંતીલાલ ઝવેરી
મુંબઈ.

(સ્વ.) શેઠશ્રી છગનલાલ શામળદાસ
ભાવસાર અમદાવાદ.

શેઠશ્રી રામજીભાઈ શામજીભાઈ
વીરાણી-રાજકોટ.

વચ્ચે બેઠેલા
લાલાજી કિશનચંદજી સા. જૌહરી
ઉભેલા સુપુત્ર ચિ મહેતાબચન્દજી સા.
નાના – અનિલકુમાર જૈન (દોયત્તા)

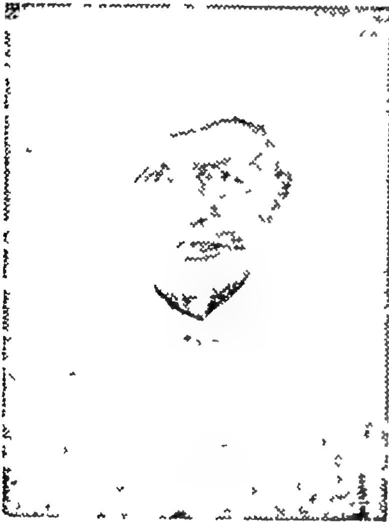
आद्यमुरब्बीश्रीओ



श्रीमान् शेठ मणीलाल पोपटलाल वोरा
अमदावाद, जन्म ता. १०-६-१९०४



श्रीमान् शेठ लालाजी कपूरचन्दजी
नाहटा, मु. देहली



શ્રી વ્રજલાલ દુર્લભજી પારેખ
રાજકોટ.



કોઠારી હરગોવિંદ જેચંદભાઈ
રાજકોટ.



શેઠશ્રી મણીલાલ જેઠુભાઇ
પાલનપુરવાળા

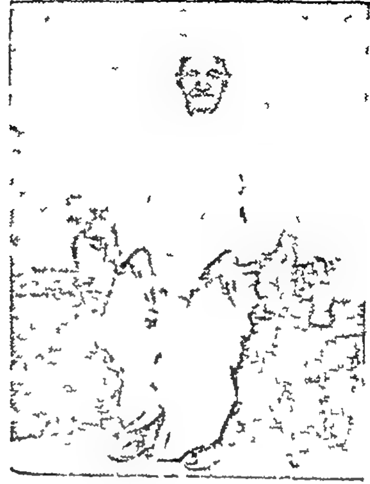


કપુરચંદ નાહટા દેહલીવાળા

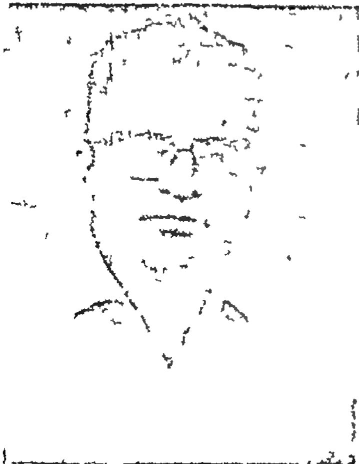
आद्यमुरब्बीश्रीओ



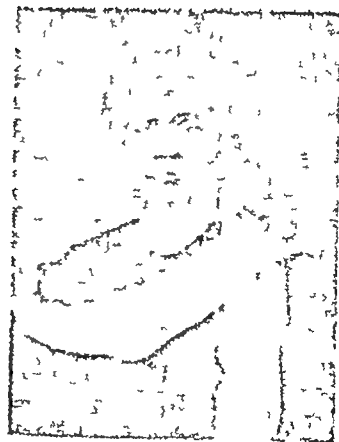
(સ્વ.) શેઠશ્રી ધારશીભાઇ જીવણલાલ
બારસી



श्रीमान् शेठ जगजीवनभाई रतनसीभाई
वगडिया, मु. दामनगर



शेठश्री देवचंदभाई फोजीलालभाई
वलाणी–सुरत



અમુલખભાઈ મલુકચંદ
પાલનપુરવાલા

આ. બ્ર. શ્રી વિનોદમુનિનું સંક્ષિપ્ત જીવનચરિત્ર

પરમ વૈરાગી અને દયાના પુંજ જેવા આ પુરુષનો જન્મ વિક્રમ સંવત્ ૧૯૯૨ પોર્ટસુદાન (આફ્રિકા)માં કે જ્યાં વીરાણી કુટુંબનો વ્યાપાર આજ દિવસ સુધી ચાલુ છે, ત્યાં થયો હતો.

શ્રી વિનોદકુમારના પુણ્યવાન પિતાશ્રીનું નામ શેઠશ્રી દુર્લભજી શામજી વીરાણી અને મહાભાગ્યવંતા તેમના માતુશ્રીનું નામ બેન મણિબેન વીરાણી. બન્નેનું અસલ વતન રાજકોટ (સૌરાષ્ટ્ર) છે. બેન મણિબેન ધાર્મિક ક્રિયામાં પહેલેથી જ રુચિવાળા હતા, પરંતુ શ્રી વિનોદકુમાર ગર્ભમાં આવ્યા પછી વધારે દૃઢધર્મી અને પ્રિયધર્મી બન્યા હતા.

પૂર્વભવના સંસ્કારથી શ્રી વિનોદકુમારનું લક્ષ ધાર્મિક અભ્યાસ અને ત્યાગ ભાવ તરફ વધારે હોવા છતાં તેઓશ્રીએ નોનમેટ્રીક સુધી અભ્યાસ કરી વ્યવહારિક કેળવણી લીધેલી અને વ્યાપારની પેઢીમાં કુશળતા બતાવેલી.

તેઓશ્રીએ યુનાઇટેડ કિંગડમ, ફ્રાન્સ, બેલ્જીયમ, હોલેન્ડ, જર્મની સ્વીઝર્લેન્ડ, તેમજ ઇટાલી, ઈજીપ્ત વગેરે દેશોમાં પ્રવાસ કરેલ સં. ૨૦૦૯ના વૈશાખ માસ, સને ૧૯૫૩માં લંડનમાં રાણી એલીઝાબેથના રાજ્યારોહણ પ્રસંગે તેઓશ્રી લંડન ગયા હતા. કાશ્મીરનો પ્રવાસ પણ તેમણે કરેલ, દેશ પરદેશ ફરવા છતાં પણ તેમણે કોઈ વખતે પણ કંદમૂળનો આહાર વાપરેલ નહીં.

ઉગતી આવતી યુવાનીમાં તેઓશ્રીએ દુનિયાના રમણીય સ્થળો જેવાં કે કાશ્મીર, ઈજીપ્ત અને યુરોપનાં સુંદર સ્થળોની મુલાકાત લીધી હોવા છતાંએ તેઓને તે રમણીય સ્થળો કે રમણીય યુવતીઓનું આકર્ષણ થયું નહીં. એ એના પૂર્વભવના ધાર્મિક સંસ્કારનો જ રંગ હતો અને એ રંગે જ તેમને તે બધું ન ગમ્યું અને તુરત ત્યાંથી પાછા ફર્યા અને સાધુ–સાધ્વીજીનાં દર્શન–કરવાને ઠેકઠેકાણે ગયા અને તેમના ઉપદેશનો લાભ લીધો અને વૈરાગ્યમાં જ મન લગાડ્યું. હુંડાકાલ અવસર્પિણિના આ દુષમ નામના પાંચમાં આરાનું વિચિત્ર વાતાવરણ જોઇ તેમને કંઇક ક્ષોભ થતો કે તુરત જ તેનો ખુલાસો મેળવી લેતા અને ત્યાગ ભાવમાં સ્થિર રહેતા. દેશ પરદેશમાં પણ સામાયિક, પ્રતિક્રમણ, ચોવિહાર આદિ પચ્ચક્ખાણ વિ. ધર્મકાર્ય તેઓ ચૂકયા નહીં ઊંચી કોટિની શૈયાનો ત્યાગ કરી તેઓ સૂવા માટે માત્ર એક શેતરંજી, એક ઓસીકું અને ઓઢવા એક ચાદર ફક્ત વાપરતા અને પલંગ ઉપર નહીં પણ ભૂમિ પર જ

શયન કરતા. અને પહેરવા માટે એક ખાદીનો લેંઘો અને ઝભ્ભો વાપરતા, કોઈ વખતે કબજો પહેરતા બહુ ઠંડી હોય તો વખતે સાદો ગરમ કોટ પહેરી લેતા અને મુહપત્તિ, પાથરણું, રજોહરણ અને બે ચાર ધાર્મિક પુસ્તકની ઝોળી સાથે રાખતા સંડાસમાં નહીં પણ જંગલમાં એકાંત જગ્યામાં ઘણે ભાગે શરીરની અશુચિ દૂર કરવા જતા, હાલતાં ચાલતાં, સંડાસ અને પેશાબ સંબંધમાં જીવદયાની બરાબર જતના કરતા.

દેશમાં કે પરદેશમાં જ્યારે તેમને કોઈની સાથે મળવાનું થતું ત્યારે તેમની સાથે અહિંસામય જૈનધર્મનું સ્વરૂપ પ્રકટ કર્યા વગર રહેતા નહીં.

દીક્ષાર્થીઓને દીક્ષા લેવાની પ્રેરણા કરતા અને એમ જ કહેતા કે જીંદગીનો કોઇ ભરોંસો નથી "असंखयं जीवियं मा पमायए" આયુષ્ય તૂટતાં વાર લાગતી નથી, જીવન તૂટયું સંધાતું નથી માટે ધર્મકરણીમાં સમયમાત્રનો પ્રમાદ ન કરવો જોઇએ.

ગોંડલ સંપ્રદાયના ઘણાખરા પૂ મુનિવરો અને પૂ. મહાસતીજીઓનો તથા બોટાદ સંપ્રદાયના પૂ. આચાર્યશ્રી માણેકચંદજીમહારાજ અને દરિયાપુરી સંપ્રદાયના શાંત–શાસ્ત્રજ્ઞ પૂ મુનિશ્રી ભાયચંદજી મહારાજ શ્રમણસંઘના મુખ્ય આચાર્યશ્રીજી આત્મારામજી મહારાજ તપોમય જ્ઞાનનિધિ શાસ્ત્રોદ્ધારક બા. બ્ર. પૂ. આચાર્ય મહારાજ શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ વગેરે અનેક સાધુ-સાધ્વીના ઉપદેશનો તેમણે લાભ લીધેલ. મુંબઈમાં સં. ૨૦૧૧ સાલમાં શ્રી ધર્મસિંહજી મહારાજના સંપ્રદાયના પંડિતરત્ન શ્રી લાલચંદજી મહારાજનો પરિચય થયો. લાલચંદજી મહારાજ પોતે, તથા સંસારપક્ષના ત્રણ પુત્રો અને બે પુત્રીઓ એમ કુલ ૬ બલ્કે આખા કુટુંબે સંયમ અંગીકાર કરેલ. તે જાણી તેમને અદ્ભૂત ત્યાગભાવના પ્રગટ થઇ કે જે કદી ક્ષય પામી નહીં.

આ પહેલાં તેઓ જ્યારે માતા–પિતા સાથે પૂજ્ય આચાર્ય શ્રી માણેકચંદજી મહારાજના દર્શને બોટાદ ગયેલા ત્યારે તેમના ઉપદેશની જે અસર થઈ તે મુખ્ય અસર પહેલી હતી અને બીજી અસર તે પૂજ્ય લાલચંદજી મહારાજના સકુટુંબની દીક્ષા એ હતી. આ બેઉ પ્રસંગો પૂર્વભવની બાકી રહેલી આરાધનાને પૂરી કરવાના નિમિત્તરૂપ હોઈને વખતોવખત તેઓ માતા–પિતા પાસે દીક્ષાની આજ્ઞા માગતા હતા અને તેનો જવાબ તેમના પિતાશ્રી તરફથી એક જ હતો. 'જે હજુ વાર છે સમય પાકવા દીઓ જ્ઞાનાભ્યાસ વધારો.

સં. ૨૦૧૨ના અષાઢ સુધી ૧૫ થી શ્રી વિનોદકુમારે ગોંડલ સંપ્રદાયના શાસ્ત્રજ્ઞ પૂ. આચાર્યશ્રી પુરુષોત્તમજી મહારાજ સાહેબ પાસે વેરાવળ ચાતુર્માસ દરમ્યાન ખાસ નિયમિત રીતે દીક્ષાની તૈયારી કરવા માટે તેમની પાંસે જ્ઞાનાભ્યાસ કર્યો. તેની સાથે પૂ. આચાર્ય શ્રી પુરુષોત્તમજી મહારાજના સંસાર પક્ષના કુટુંબી દીક્ષાના ભાવિક શ્રી જસરાજભાઈ પણ જ્ઞાનાભ્યાસ કરતા હતા. તેઓએ ત્યાં એવો નિર્ણય કરેલો કે આચાર્ય શ્રી પુરુષોત્તમ મહારાજ પાંસે આપણે બન્નેએ દીક્ષા લેવી, પહેલાં વિનોદકુમારે અને પછી શ્રી જસરાજભાઈએ દીક્ષા લેવી, શ્રી જસરાજભાઈની દીક્ષાતિથિ પૂ૦ શ્રી પુરુષોત્તમજી મહારાજ સાહેબે સં. ૨૦૧૩ના જેઠ સુદ ૫ ને સોમવારે માંગરોલ મુકામે નક્કી કરી શ્રી જસરાજભાઈ વિનોદકુમારને રાજકોટ મળ્યા. શ્રી વિનોદકુમારે શ્રી જસરાજભાઈની યથાયોગ્ય સેવા બજાવી, માંગરોળ રવાના કર્યા અને પોતે નિશ્ચયપૂર્વક દીક્ષા માટે આજ્ઞા માગી પણ તેઓના પિતાશ્રીની એકને એક વાણી સાંભળીને તેમને મનમાં આઘાત થયો અને દીક્ષા માટેનો તેમણે બીજો રસ્તો શોધી કાઢયો.

પૂજ્યશ્રી લાલચંદજી મહારાજ અને તેમના શિષ્યોનો પરિચય મુંબઈમાં થયેલ હતો અને ત્યારબાદ કોઇ વખત પત્રવહેવાર પણ થતો હતો. છેલ્લા પત્રથી તેમણે જાણેલ હતું, જે પૂ૦ શ્રી લાલચંદજી મહારાજ. ખીચન ગામે પૂ. આચાર્ય શ્રી સમરથમલજી મહારાજ સાહેબ પાસે જ્ઞાનાભ્યાસ અર્થે ગયા છે. પોતાને પિતાશ્રીની આજ્ઞા (દીક્ષા માટે) મળે તેમ નથી અને દીક્ષા તો લેવી જ છે આજ્ઞા વિના કોઈ સાધુ મુનિરાજ દીક્ષા આપે નહીં અને સ્વયમેવ દીક્ષા સૌરાષ્ટ્રમાં લઈને આચાર્ય શ્રી પુરુષોત્તમજી મહારાજ પાંસે જવામાં ઘણાં વિઘ્નો થશે, એમ ધારીને તેઓએ દૂર રાજસ્થાનમાં ચાલ્યા જવાનું નક્કી કર્યું.

તા. ૨૪-૫-૫૭ સં. ૨૦૧૩ના વૈશાખ વદ ૧૦ ને શુક્રવારના રોજ સાંજના તેમના માતુશ્રી સાથે છેલ્લું જમણ કર્યું. ભોજન કરી, માતુશ્રી સામાયિકમાં બેસી ગયા. તે વખતે કોઈને જાણ કર્યા વગર દીક્ષાના વિઘ્નોમાંથી બચવા માટે ઘર, કુટુંબ, સૌરાષ્ટ્રભૂમિ અને ગોંડલ સંપ્રદાયનો પણ ત્યાગ કરી તેઓ ખીચન તરફ રવાના થયા.

શ્રી વિનોદમુનિના નિવેદન પરથી માલૂમ પડયું કે તા. ૨૪-૫-૫૭ના રોજ રાત્રે આઠ વાગે ઘેરથી નીકળી, રાજકોટ જંકશને જઇ જોધપુરની ટિકિટ લીધી. તા. ૨૫-૫-૫૭ના સવારે આઠ વાગ્યે મહેસાણા પહોંચ્યા ત્યાં અઢી કલાક ગાડી પડી રહે છે, તે દરમ્યાન ગામમાં જઇને લોચ કરવા માટેના વાળ રાખીને બાકીના કઢાવી નાખ્યાં અને ગાડીમાં બેસી ગયા. મારવાડ જંકશન તથા જોધપુર જંકશન થઇને તા. ૨૬-૫-૫૭ની સવારે ૪।। વાગ્યે ફલોદી

પહોંચ્યા ત્યાંથી પગે ચાલીને ખીચન ઉપાશ્રયમાં જઈ ત્યાં બિરાજતા મુનિવરોના દર્શન કર્યાં વંદણા નમસ્કાર કરી સુખશાતા પૂછી, બહાર નીકળ્યા અને પોતાના સામાયિકના કપડાં પહેર્યાં અને પછી પૂજ્ય શ્રી મુનિવરોની સન્મુખ સામાયિક કરવા બેઠા; તેમાં "जाव नियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं" ના બદલે "जावजीवपज्जुवासामि तिविहं तिविहेण" બોલ્યા તે શ્રી લાલચંદજી મહારાજે સાંભળ્યું અને તેઓશ્રીએ પૂછ્યું કે વિનોદકુમાર! તમે આ શું કરો છો? તેનો જવાબ આપવાને બદલે "अप्पाणं वोसिरामि" બોલી પાઠ પૂરો કર્યો અને પછી વિનયપૂર્વક બે હાથ જોડીને બોલ્યા કે "સાહેબ! એ તો બની ચૂક્યું અને મેં સ્વયમેવ દીક્ષા લઈ લીધી, તે બરોબર છે અને તેમાં કાંઇ ફેરફાર થઈ શકે તેમ નથી. આ શિવાય આપશ્રીની બીજી કોઈપણ પ્રકારની આજ્ઞા હોય તો ફરમાવો."

તેજ દિવસે બપોરના શાસ્ત્રજ્ઞ પૂ. મુનિશ્રી સમરથમલજી મહારાજ સાહેબે શ્રી વિનોદકુમાર મુનિને પોતાની પાસે બોલાવ્યા અને સમજાવ્યા કે "તમે એક સારા ખાનદાન કુટુંબની વ્યક્તિ છો. તમારી આ દીક્ષા અંગીકાર કરવાની રીત બરાબર નથી, કારણ કે તમારા માતા પિતાને આ હકીકતથી દુઃખ થાય અને તેથી મારી સંમતિ છે કે રજોહરણની ડાંડી ઉપરથી કપડું કાઢી નાખો જેથી તમો શ્રાવક ગણાવ અને જરૂર પડે તો શ્રાવકોનો સાથ લઈ શકો, એમ ત્રણવાર પૂ. મહારાજશ્રીએ સમજાવેલા પરંતુ તેમણે ત્રણેય વખત એક જ ઉત્તર આપેલો કે "જે થયું, તે થયું હવે મારે આગળ શું કરવું તે ફરમાવો.

શ્રી વિનોદમુનિના શ્રી સમરથમલજી જેવા મહામુનિના પ્રશ્નના જવાબ પછી ખીચનનો ચતુર્વિધ સંઘ વિચારમાં પડી ગયો અને મુનિશ્રીઓ પર સંસારીઓનો કોઇ પણ પ્રકારનો નિષ્કારણ હુમલો ન આવે તે માટે વિનોદમુનિને જણાવવામાં આવ્યું કે "અમારી સલામતી માટે તમારે જાહેર નિવેદન બહાર પાડવાની જરૂર છે" ત્યારે શ્રી વિનોદમુનિએ પોતાના હસ્તાક્ષરે નિવેદન શ્રીસંઘ સમક્ષ પ્રગટ કર્યું, તેનો સાર નીચે મુજબ છેઃ–

મારા માતા–પિતા મોહને વશ થઈને દીક્ષાની આજ્ઞા આપે તેમ ન હતું અને "असंखयं जीवियं मा पमायए" ને આધારે હું એક ક્ષણ પણ દીક્ષાથી વંચિત રહી શકું તેમ નથી, એમ મને લાગ્યું. શ્રી લાલચંદજી મહારાજ સાહેબ–વગેરેએ મને મારી દીક્ષા માટે વિચારી પછી પગલું ભરવાનું કહેલ પરંતુ મને

સમય માત્રનો પ્રમાદ કરવો ઠીક ન લાગ્યો, તેથી શ્રી અરિહંત ભગવંતો તથા શ્રી સિદ્ધ ભગવંતોની સાક્ષીએ મારા ગુરુ મહારાજ સમક્ષ પ્રવ્રજ્યાનો પાઠ ભણીને મારા આત્માના કલ્યાણ માટે દીક્ષા અંગીકાર કરી છે. સમાજને ખોટો ખ્યાલ ન આવે કે મારી દીક્ષા ક્ષણિક જુસ્સાથી અગર ગેરસમજથી થઈ છે તેથી તથા સમાજમાં જૈનશાસનની પ્રભાવના થાય તે હેતુથી મારે મારો વૃત્તાંત પ્રગટ કરવો ઉચિત છે.

ઉત્તરાધ્યયનજી સૂત્રના ૧૯ મા અધ્યયન પરથી મને લાગ્યું કે મનુષ્ય જીવનનું ખરૂં કર્ત્તવ્ય મોક્ષફળ આપનારી દીક્ષા જ છે.

છેવટ સુધી મેં મારા બાપુજી પાસે દીક્ષા માટે આજ્ઞા માગી અને તે વખતે પણ પહેલાંની જેમ વાત ઉડાવી દીધી અને અનંત ઉપકારી એવા મારા બાપુજી સમક્ષ હું તેમને કડક ભાષામાં પણ કહી શકતો ન હતો અને બીજી બાજુથી મને થયું કે આયુષ્ય અશાશ્વત છે અને આવા ઉત્તમ કાર્ય માટે જરાપણ પ્રમાદ કરવો ઉચિત નથી. તેથી મેં વિચારીને આ પગલું ભર્યું છે અને મને પૂર્ણ વિશ્વાસ છે કે શ્રી વીરપ્રભુ મહાવીર સ્વામીનો સકળ સંઘ મારા આ કાર્યને અનુમોદશે જ " તથાસ્તુ ".

રાજકોટમાં શ્રી વિનોદકુમારના ગયા પછી પાછળથી ખબર પડી કે વિનોદકુમાર દેખાતા નથી એટલે તપાસ થવા માંડી ગામમાં ક્યાંય પત્તો ન લાગ્યો એટલે બહારગામ તારો કર્યા. ક્યાંયથી પણ સંતોષકારક સમાચાર સાંપડયા નહીં. અર્થાત્ પત્તો મળ્યો જ નહીં. આમ વિમાસણના પરિણામે તેમના પિતાશ્રીને બે મહિના પહેલાંની એક વાતની યાદ આવી તે એ હતી કે તે વખતે શ્રી વિનોદકુમારે આજ્ઞા માગેલી કે " બાપુજી ! આપની આજ્ઞા હોય તો આ ચાતુર્માસમાં ખીચન (રાજસ્થાન) જાઉં કારણ કે ખીચનમાં પૂ૦ ગુરુમહારાજ શ્રી સમરથમલજી મહારાજ કે જેઓ સિદ્ધાંત વિશારદ છે અને અનેકાંતવાદના પૂરા જાણકાર છે, તેઓ ત્યાં બિરાજમાન છે જેઓશ્રી પાસે શાસ્ત્રાભ્યાસ કરવા માટે પૂ શ્રી લાલચંદજી મહારાજ આદિ ઠાણા ૪ જનાના છે. તો મારી ઇચ્છા પણ ત્યાં તેમની પાસે જવાની છે.

આ વાતચીતનું સ્મરણ પિતાશ્રીને આવવા સાથે તેઓએ પં. પૂર્ણચંદ્રજી દકને પોતાની પાસે બોલાવ્યા અને વિનોદકુમાર માટેની પોતાની ચિંતા વ્યક્ત કરી. પંડિતનું આ વાતને સમર્થન મળ્યું. તેઓશ્રીએ જણાવ્યું કે થોડા સમય પૂર્વે વિનોદકુમારે મારી પાસે જાણવા માગ્યું હતું કે, ખીચનમાં કેવા પ્રકારની

ઝગવડ છે? આમ મારી સાથે વાર્તાલાપ થયો હતો. બંને આ પ્રમાણે એકમત થતાં તેમના પિતાશ્રીએ ખીચન તાર કરવા સૂચના કરી તા. ૨૭-૫-૫૭ નાં રોજ પૃથ્વીરાજજી માલુ ખીચન (રાજસ્થાન) ઉપર તાર કર્યો.

તા.૨૮-૫-૫૭ના રોજ જવાબ આવ્યો કે શ્રી વિનોદભાઇએ ખીચનમાં સ્વયમેવ દીક્ષા ગ્રહણ કરી છે. એટલે તેમના પિતાશ્રીએ રાવબહાદુરશ્રી એમ. પી. સાહેબ શ્રી કેશવલાલભાઈ પારેખ અને પંડિતજી પૂર્ણચંદ્રજી દક એમ ત્રણેયને શ્રી વિનોદકુમારને પાછા તેડી લાવવા માટે ખીચન મોકલ્યા તા. ૨૮-૫-૫૭ના રોજ રવાના થઇ તા. ૩૦-૫-૫૭ના રોજ સવારે ફ્લોદી સ્ટેશને પહોંચ્યા. બળદગાડીમાં તેઓ ખીચન ગયા કે જ્યાં સ્થવિર મુનિશ્રી શીરોમલજી મહારાજ પૂજ્ય પંડિતરત્ન શાસ્ત્ર વિશારદ શ્રી સમરથમલજી મહારાજ આદિ ઠાણા ૮ તથા પૂજ્ય તપસ્વી મહારાજ શ્રી લાલચંદજી મહારાજ આદિ ઠા. ૪ બિરાજમાન હતા. કુલ્લે સાધુ-સાધ્વીની સંખ્યા અઠ્ઠાવીસથી ત્રીસની હતી.

પૂછપરછના જવાબમાં શ્રી વિનોદમુનિએ કેશવલાલભાઈ પારેખને કહ્યું કે "મેં તો દીક્ષા અંગીકાર કરી લીધી છે તેમાં કાંઈ ફેરફાર થાય તેમ નથી. તમો અમારા વીરાણી કુટુંબના હિતૈષી છો. અને જો સાચા હિતૈષી હો તો મારા પૂ. બા અને બાપુજીને સમજાવીને મારી હવે પછીની મોટી દીક્ષાની આજ્ઞા અઠવાડિયાની અંદર અપાવી દ્યો એટલું જ નહીં પણ "સવિ જીવ કરૂં શાસન રસી"ની ભાવનામાં અને આજ દિવસ સુધીના મારી ઉપરના ઉપકારના બદલામાં આગમને અનુલક્ષીને મારી ભાવના એ જ હોય કે, મારી દીક્ષા તેઓની દીક્ષાનું નિમિત્ત બને અને મારા માતા-પિતા સદ્દગતિને સાધે અર્થાત્ મારી સાથે દીક્ષા લીએ.

આવા દૃઢ જવાબના પરિણામે તેજ સમયે શ્રી વિનોદકુમારને પાછા લઇ જવાની ભાવનાને નિષ્ફળતા સાંપડી અને તા. ૩૧-૫-૫૭ ની રાત્રીના રવાના થઈ તા. ૨-૬-૫૭ના સવારે મહા પરીષહરૂપ ક્ષેત્રનો અનુભવ કરી, શ્રી વિનોદકુમારના પિતાશ્રીને તમામ વાતથી વાકેફ કર્યા.

થોડા વખતમાં ફ્લોદીના શ્રી સંઘે પૂ શ્રી લાલચંદજી મહારાજને ફ્લોદીમાં ચોમાસુ કરવાની વિનંતી કરી તેનો અસ્વીકાર થવાથી સંઘ ગમગીન બન્યો એટલે નિર્ણય ફેરવ્યો અને અષાઢ શુદ ૧૩ ના રોજ ખીચનથી વિહાર કરી ફ્લોદી આવ્યા.

દીક્ષા પછી અઢી મહિનાને આંતરે ફલોદી ચોમાસા દરમ્યાન શ્રી વિનોદ મુનિને હાજતે જવાની સંજ્ઞા થઇ અને તે માટે જવા તૈયાર થયા એટલે તેમના ગુરુએ કહ્યું કે બહુ ગરમી છે, જરાવાર થોભી જાવ એટલે શ્રી વિનોદ-મુનિએ રજોહરણુ વગેરેની પ્રતિલેખના કરી તે દરમ્યાન ન રોકી શકાય એવી હાજત લાગી તેથી ફરી આજ્ઞા માગતાં જણાવ્યું કે મને હાજત બહુ લાગી છે તેથી જાઉં છું, જલદી પાછો ફરીશ કાળની ગહન ગતિને દુઃખદ્ રચના રચવી હતી આજે જ હાજતે એકલા જવાનો બનાવ બન્યો હતો, હંમેશાં તો બધા સાધુઓ સાથે મળીને દિશાએ જતા.

હાજતથી મોકળા થઇ પાછા ફરતા હતા, ત્યાં રેલ્વે લાઇન ઉપર બે ગાયો આવી રહી હતી. બીજી બાજુથી ટ્રેઈન પણ આવી રહી હતી તેની વ્હિસલ વગવા છતાં પણ ગાયો ખસતી ન હતી શ્રી વિનોદમુનિનું હૃદય થરથરી ઉઠયું અને મહા અનુકંપાએ મુનિના હૃદયમાં સ્થાન લીધું. હાથમાં રજોહરણું લઈ જાનના જોખમની પરવા કર્યા વગર ગાયોને બચાવવા ગયા. ગાયોને તો બચાવી જ લીધી પરંતુ આ ક્રિયામાં છકાય જીવની દયાના સાધનભૂત જે રજોહરણુ કે વિનોદમુનિને આત્માથી વધારે પ્યારૂં હતું, તે રેલ્વે લાઇનિ ઉપર પડી ગયું. અને શ્રી વિનોદમુનિએ તે પાછું સંપાદન કરવામાં જડવાદને સિદ્ધ કરતાં રાક્ષસી એન્જિનને ઝપાટે આવ્યા અને પોતાનું બલિદાન આપ્યું. અરિહંત....અરિહંત ...એવા શબ્દો મુખમાંથી નીકળ્યા અને શરીર તૂટી પડયું. રક્ત પ્રવાહ છૂટી પડયો અને થોડા જ વખતમાં પ્રાણુાંત થઈ ગયો, બધા લોકો કહેવા લાગ્યા કે ગૌરક્ષામાં મુનિશ્રીએ પ્રાણુ આપ્યા અંતિમ સમયે મુનિશ્રીના ચહેરા પર ભવ્ય શાન્તિ જ દેખાતી હતી.

હંમેશાં તેઓ જે તરફ હાજતે જતા હતા તે તરફ ફલોદીથી પોકરણુ તરફ જવાની રેલ્વે લાઈન હતી. આ લાઇન ઉપર રેલ્વે સત્તાવાળાઓએ ફાટક મૂકેલ નથી ત્યાં રસ્તો પણુ છે એટલે પશુઓની અવરજવર હોય છે. અને વખતો વખત ત્યાં ઢોરો રેલ્વેની હડફેટે ચડી જવાના પ્રસંગ બને છે.

ફલોદી સંઘે આ દુર્ઘટનાના ખબર રાજકોટ, ટેલીફોનથી આપ્યા. જે વખતે ટેલીફોન આવ્યો. તે વખતે વિનોદમુનિના પિતાશ્રી બહાર ગયા હતા. અને માતુશ્રી મણિબેન સામાયિક-પ્રતિક્રમણમાં બેઠાં હતાં, માત્ર એક નોકર જ ઘરમાં હતો કે જેણે ટેલિફોન ઉઠાવ્યો પણ તે કાંઇ ટેલીફોનમાં હકીકત સમજી શકયો નહીં અને સાચા સમાચાર મોડા મળ્યા. જેથી તેઓ સ્પેશ્યલ પ્લેનથી ફલોદી પહોંચે તે પહેલાં અગ્નિસંસ્કાર થઈ ગયો સૂચનાનો ટેલીફોન

અર્ધો કલાક મોડો પહોંચ્યો. જો સંદેશો સમયસર પહોંચ્યો હોત તો માતા–પિતાને શ્રી વિનોદમુનિના શબરૂપે પણ ચહેરો જોવાનો અને અંતિમ દર્શનનો પ્રસંગ મળત પરંતુ અંતરાય કર્મે તેમ બન્યું નહીં.

આથી પ્લેઈનનો પ્રોગ્રામ પડતો મૂકવામાં આવ્યો અને માતા-પિતા તા. ૧૪–૮–૫૭ના રોજ ટ્રેઈન મારફત ફલોદી પહોંચ્યાં, શ્રી દુર્લભજીભાઈ અને મણિબેને પૂજ્ય તપસ્વીશ્રી લાલચંદજી મહારાજ સાહેબના દર્શન કર્યાં.

આ પ્રસંગે શ્રી લાલચંદજી મહારાજ સાહેબે અવસરને પિછાણીને અને ધૈર્યનું એકાએક ઐક્ય કરીને. શ્રી વિનોદમુનિના માતા–પિતાના સાંત્વન અર્થે ઉપદેશ શરૂ કર્યો જેનો ટૂંકમાં સાર આ પ્રમાણે છે—

"હવે તો રત્ન ચાલ્યું ગયું ! સમાજનો આશાદીપક ઓલવાઈ ગયો ! ઝટ ઊગીને આથમી ગયો ! હવે એ દીપ ફરીથી આવી શકે તેમ નથી"

શ્રી વિનોદમુનિના સંસારપક્ષના માતુશ્રી મણિબેનને મુનિશ્રીએ કહ્યું કેઃ– બેન ! ભાવિ પ્રબળ છે. આ બાબતમાં મહાપુરૂષોએ પણ હાથ ધોઈ નાખ્યા છે એમ સૌને મરણને શરણ થવું પડે છે, તો પછી આપણા જેવા પામર પ્રાણીનું શું ગજું છે ? હવે તો શોક દૂર કરીને આપણે એમના મૃત્યુનો આદર્શ જોઈને માત્ર ધીરજ ધરવાની રહી.

પૂ. શ્રી સમરથમલજી મહારાજ સાહેબનો અભિપ્રાયઃ–

પ્રાથમિક તેમ જ અલ્પકાળના પરિચયથી મને શ્રી વિનોદમુનિના વિષે અનુભવ થયો, કે તેમની ધર્મપ્રિયતા અને ધર્માભિલાષા 'अट्ठिमिंजा पेमाणुरागरत्ते' નો પરિચય કરાવતી હતી પ્રાપ્ત સંસારિક પ્રચૂર વૈભવ તરફ તેમની રુચિ દષ્ટિગોચર થતી ન હતી પરંતુ તેઓ વીતરાગવાણીના સંસર્ગથી વિષયવિમુખ ધર્મકાર્યમાં સદા તત્પર અને તલ્લીન દેખાતા હતા. ખાસ પરિચયના અભાવે વૈરાગ્ય પણ તેમની ધારાથી તેમની ધર્માનુરાગિતા તથા જીવનચર્યાથી કઠિન કાર્ય કરવામાં પણ ગભરાટના સ્થાને સુખાનુભવની વૃત્તિ લક્ષમાં આવતી હતી.

હવે

શ્રી વિનોદમુનિના જીવનના બે પ્રશ્નો ઉપસ્થિત થાય છે તેનો ખુલાસો કરવામાં આવે છે.

પ્ર. ૧. તેમણે આજ્ઞા વગર સ્વયમેવ દીક્ષા કેમ લીધી ?

ઉત્તરઃ–પાંચમાં આરાનાં ભદ્રા શેઠાણીના પુત્ર એવંતા (અતિમુક્ત) કુમારને તેમની માતુશ્રીએ દીક્ષાની આજ્ઞા આપવાની તદ્દન ના પાડી એટલે તેણે

સ્વયમેવ દીક્ષા લીધી. ત્યાર બાદ ભદ્રા શેઠાણીએ પોતાના કુમારને ગુરુને સોંપી દીધા. તેજ રાત્રે તેણે બારમી ભિખ્ખુની પડિમા અંગીકાર કરી અને શિયાળણીના પરીષહથી કાળ કરી નલીનગુલ્મ વિમાનમાં ગયા તેવી જ રીતે શ્રી વિનોદકુમાર સ્વયં દીક્ષિત થયા.

પ્ર. ૨. આવા વૈરાગી જીવને આવો ભયંકર પરીષહ કેમ આવે ?

ઉત્તરઃ–કેટલાક ચરમ શરીરી જીવને મારણાંતિક ઉપસર્ગ આવેલ છે. જુઓ ગજસુકુમાર મુનિ, મેતાર્ય મુનિ, કોશલ મુનિ, કારણ કે તેમની સત્તામાં હજારો ભવનાં કર્મ હોવા જોઈએ ત્યારે તેમને એકદમ મોક્ષ જવું હતું, તો મારણાંતિક ઉપસર્ગ આવ્યા વગર એટલાં બધાં કર્મ કેવી રીતે ખપે ? બા. બ્ર. શ્રી વિનોદમુનિને આવો પરીષહ આવ્યો, જે ઉપરથી એમ અનુમાન થાય છે કે તે એકાવતારી જીવ હોય.

શ્રી વિનોદમુનિનું વિસ્તૃત જીવનચરિત્ર જુદા પુસ્તકથી ગુજરાતી ભાષા તથા હિન્દી ભાષામાં છપાયેલ છે તેમાંથી સાર રૂપે અહીં સંક્ષેપ કરેલ છે.



॥ श्री-भगवतीसूत्रम् ॥

(सप्तदशो भागः)

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

श्री जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री घासीलालव्रतिविरचितया
प्रमेयचन्द्रिकाख्यया व्याख्यया समलङ्कृतम्

॥ श्री-भगवतीसूत्रम् ॥

(सप्तदशो भागः)

॥ अथाष्टाविंशतितमं शतकमारभते ॥

कर्मवक्तव्यता संवलितं सप्तविंशतितमं शतकं व्याख्यातम् अथ क्रमप्राप्तं तथाविधमेव अष्टाविंशतितमं शतकं व्याख्यायते, अत्रापि एकादशोद्देशकाः जीवाद्येकादशद्वारानुगत पापकर्मादि दण्डकोपेताः सन्ति, तदनेन सम्बन्धेन आयातस्याष्टाविंशतितमशतकस्य प्रथमोद्देशकस्येदं सूत्रम्-'जीवा णं भंते' इत्यादि,

मूलम्-जीवा णं भंते! पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु कहिं समायरिंसु? गोयमा! सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा१, अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य होज्जा२, अहवा तिरिक्खजोणिएसु य मणुस्सेसु य होज्जा३, अहवा तिरिक्खजोणिएसु य देवेसु य होज्जा४, अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य मणुस्सेसु य होज्जा५, अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य देवेसु य होज्जा६, अहवा तिरिक्खजोणिएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होज्जा७, अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होज्जा८। सलेस्सा णं भंते! जीवा पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु? कहिं समायरिंसु? एवं चेव। एवं कण्हलेस्सा जाव अलेस्सा। कण्हपक्खिया सुक्कपक्खिया। एवं जाव अणागारोवउत्ता। नेरइया णं भंते! पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु? कहिं समायरिंसु? गोयमा! सव्वे वि तिरिक्खजोणिएसु होज्ज त्ति एवं चेव अट्ठ भंगा भाणियव्वा। एवं सव्वत्थ अट्ठ भंगा एवं जाव अणागारोवउत्ता वि। एवं जाव वेमाणियाणं। एवं णाणावरणिज्जेण दंडओ एवं जाव

अंतराइएणं। एवं एए जीवादीया वेमाणियपज्जवसाणा नव दंडगा भवंति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ ॥सू०१॥

अट्ठावीसइमे सए पढमो उद्देसो समत्तो ॥२८-१॥

छाया-जीवाः खलु भदन्त! पापं कर्म कुत्र समार्जन् कुत्र समाचरन् ? गौतम! सर्वेऽपि तावत् तिर्यग्योनिकेषु भवेयुः१, अथवा तिर्यग्योनिकेषु च नैरयिकेषु च भवेयुः२, अथवा तिर्यग्योनिकेषु च मनुष्येषु च भवेयुः, अथवा तिर्यग्योनिकेषु च देवेषु च भवेयुः४, अथवा तिर्यग्योनिकेषु च नैरयिकेषु च मनुष्येषु च भवेयुः५, अथवा तिर्यग्योनिकेषु च नैरयिकेषु च देवेषु च भवेयुः६, अथवा तिर्यग्योनिकेषु च मनुष्येषु च देवेषु च भवेयुः७, अथवा तिर्यग्योनिकेषु च नैरयिकेषु च मनुष्येषु च देवेषु च भवेयुः सलेश्याः खलु भदन्त! जीवाः पापं कर्म कुत्र समार्जन् कुत्र समाचरन् गौतम! सर्वेऽपि तावत् तिर्यग्योनिकेषु भवेयुरिति एवमेवाष्टौ भङ्गा भणितव्याः। एवं सर्वत्राष्टौ भङ्गाः, एवं यावदनाकारोपयुक्ता अपि। एवं यावद्वैमानिकानाम्। एवं ज्ञानावरणियेनापि दण्डकाः। एवं यावद् अन्तरायिकेण। एवमेते जीवादिकाः वैमानिकपर्यवसाना नवदण्डका भवन्ति। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति यावद्विहरति ।सू० १ ॥

अष्टाविंशतितमशतके प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥२८-१॥

टीका—'जीवा णं भंते!' जीवाः खलु भदन्त! 'पावं कम्मं' पापम्-अशुभं कर्म 'कहिं' कुत्र-कस्यां गतौ 'समज्जिणिंसु' समार्जन्-गृहीतवन्तः कस्यां गतौ

अठावीस वें शतकका पहेला उद्देशक का प्रारंभ

कर्मवक्तव्यता सहित २७ वां शतक व्याख्यात हो चुका अब क्रम प्राप्त २८ वां शतक प्रारम्भ होता है। यहां पर भी ११ उद्देशक हैं। और ये उद्देशक जीवादिक ११ द्वारों में अनुगत पापकर्मादिक दण्डकों से युक्त हैं।

'जीवा णं भंते! पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु' इत्यादि।

टीकार्थ--गौतमस्वामीने इस सूत्रद्वारा प्रभुश्री से ऐसा पूछा है

અઠયાવીસમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

કર્મના સંબંધમાં સત્યાવીસમું શતક કહેવાઇ ગયું હવે ક્રમથી આવેલા આ અઠયાવીસમા શતકનો પ્રારંભ થાય છે, આ અઠયાવીસમા શતકમાં પણ ૧૧ અગીયાર ઉદ્દેશાઓ કહ્યા છે. અને આ ઉદ્દેશાઓ જીવ વિગેરે દંડકો સહિત કહ્યા છે—'जीवा णं भंते! पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—ગૌતમ સ્વામીએ આસૂત્રદ્વારા પ્રભુશ્રી ને એવું પૂછયું છે કે—

वर्तमाना जीवाः पापकर्मणां सार्जनमकुर्वन्नित्यर्थः। 'कहिं समायरिंसु' कस्यां गतौ वर्तमाना जीवाः पापं कर्म समाचरन्-पापकर्माचरणं कृतवन्तः पापकर्महेतु समाचरणेन तद्विपाकानुभवनेन वा, भगवानाह-'गोयमा' हे गौतम! 'सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा१' सर्वेऽपि तावत् जीवा स्तिर्यग्योनिकेषु भवेयुः इह तिर्यग्योनिः सर्वजीवानां मातृस्थानीया तस्या बहुत्वात्, ततश्च सर्वेऽपि तिर्यग्भ्योऽन्ये नैरयिकाद् ये जीवा स्तिर्यग्योनिकेभ्यः समागत्योत्पन्नाः कदाचिद्भवेयुः ततस्ते सर्वेऽपि तिर्यग्योनिकेषु अभूवन्निति व्यपदिश्यन्ते, तदयमर्थः ये जीवा विवक्षितसमये नारकादयोऽभूवन् ते अल्पत्वेन समस्ता अपि सिद्धिगम-

---

कि 'जीवा णं भंते! पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु' हे भदन्त! जीवों ने किसगति में पापकर्म का उपार्जन किया है? 'कहिं समायरिंसु' और किसगति में वर्तमान जीवों ने पापकर्म का आचरण किया है? अर्थात् पापकर्म के हेतुओं के समाचरण से-सेवन से-और तज्जन्य विपाक के अनुभव से पापकर्म का आचरण किया है? उसका फल भोगा है? इसके उत्तर में प्रभुश्रीने उनसे ऐसा कहा है-'गोयमा! सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा' हे गौतम! समस्त जीव पहिले तिर्यग्योनि में रहें हुए हैं-इसलिये तिर्यग्योनि में होने के कारण वह योनि उनकी माता के स्थानापन्न हैं। क्योंकी तिर्यग्योनि बहुत हैं। इसलिये तिर्यञ्चों से भिन्न जो नैरयिकादि जीव हैं वे सब तिर्यग्योनिकों में से आ करके उत्पन्न हुए हैं। इसलिये वे सब पहिले तिर्यग्योनि कों में रहे हुए हैं ऐसा कहा जाता है। इस कारण तिर्य-

---

'जीवा णं भंते! पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु' હે ભગવન્ જીવોએ કઈ ગતિમાં પાપકર્મનું ઉપાર્જન કર્યું છે? 'कहिं समायरिंसु' અને કઈ ગતિમાં રહેલા જીવોએ પાપકર્મનું આચરણ કર્યું છે? અર્થાત્ પાપકર્મના હેતુઓના આચરણથી એટલે કે સેવનથી અને તેનાથી થનારા વિપાકના અનુભવથી પાપકર્મનું આચરણ કર્યું છે? અને તેનું ફળ ભોગવ્યું છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે 'गोयमा! सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा' હે ગૌતમ! સઘળા જીવો પહેલાં તિર્યંચયોનિમાં રહેલા છે, તેથી તિર્યંચયોનીમાં હોવાને કારણે તે યોનિ તેની માતાને સ્થાને ગણાય છે. કેમ કે-તિર્યંચયોની ઘણી છે. તેથી તિર્યંચોથી અન્ય જે નૈરયિકો વિગેરે જીવો છે, તે તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થયેલા છે. તેથી તે બધા પહેલાં તિર્યંચયોનિકોમાં રહેલા છે. એ પ્રમાણે કહેવામાં આવે છે. આ કારણથી તિર્યંચ-

नेन तिर्यग्गतिप्रवेशेन च निर्लेपतया उद्वृत्ताः ततश्च तिर्यग्गतेरनन्तत्वेन अनिर्लेपनीयत्वात् तत उद्वृत्ता स्तिर्यञ्च स्ततस्थानेषु नारकादित्वेन उत्पन्नाः, ततस्ते तिर्यग्गतौ नारकगत्यादिकारणिभूतं पापं कर्म समर्जितवन्त इति प्रथमो भङ्गः १। 'अहवा तिरिक्खजोणिएसु च नेरइएसु य होज्जा२' अथवा तिर्यग्योनिकेषु च नैरयिकेषु च भवेयुः, विविक्षितसमये ये मनुष्या देवा वा अभूवन् ते निर्लेपतया तथैवोद्वृत्ताः तत्स्थानेषु च तिर्यग्नारकेभ्य आगत्योत्पन्नाः ते च एवं व्यपदिश्यन्ते-तिर्यग्नैरयिकेषु अभूवन्नेते, ये च यत्राभूवन् ते तत्रैव कर्मोपार्जितवन्त इत्यर्थो-लभ्यते इति द्वितीयो भङ्गः२। 'अहवा तिरिक्खजोणिएसु य मणुस्सेसु य होज्जा' अथवा तिर्यग्योनिकेषु च मनुष्येषु च भवेयुः विवक्षितसमये ये नैरयिका देवा वा

गति से निकले हुए जीव उन-२ स्थानों में-नारकादि रूप में जो उत्पन्न हुए हैं सो वहां पर तिर्यञ्चगति में उन्होंने नारक गति आदि में प्राप्त होने के कारण भूतकाल में पापकर्म को उपार्जन किया है। ऐसा यह प्रथम भंग है।

'अहवा--तिरिक्खजोणिएसु य नेरइए सु य होज्जा२' अथवा-समस्त जीव तिर्यग्योनिकों में और नैरयिकों में रहे हुए हैं-विवक्षित समय में जो मनुष्य अथवा देव हुए हैं वे उन स्थानों में तिर्यग्यो-निकों से या नारकों से आकर के उत्पन्न हुए हैं, इसलिये ऐसा कहा जा सकता है कि ये पहिले तिर्यग्योनि कों में या नैरयिकों में रहे हुए हैं, जो जहां रहा हुआ है उसने वहीं पर कर्म का उपार्जन किया है, ऐसा यह द्वितीय भंग है। 'अहवा तिरिक्खजोणिएसु य मणुस्सेसु य

ગતિમાંથી નિકળેલા જીવો તે-તે સ્થાનોમાં નારક વિગેરે રૂપથી ઉત્પન્ન થયા છે, તેઓ તિર્યંચ ગતિમાં, નારક ગતિ વિગેરેમાં, ઉત્પન્ન થવાને કારણે ભૂતકાળમાં પાપકર્મનું ઉપાર્જન કર્યું છે. એ પ્રમાણે આ પહેલો ભંગ છે. ૧ 'अहवा-तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य होज्जा' અથવા-સઘળા જીવો તિર્યંચ યોનિકોમાં અને નૈરયિકોમાં રહેલા છે.-વિવક્ષિત સમયમાં જેઓ મનુષ્ય અથવા દેવ થયા છે, તેઓ તે સ્થાનોમાં તિર્યંચ યોનિકોથી નારકોથી આવીને ઉત્પન્ન થયા છે. તેથી એમ કહેવામાં આવે છે કે તેઓ પહેલાં તિર્યંચ યોનિકોમાં અથવા નૈરયિકોમાં રહેલા છે, જેઓ ત્યાં રહેલા છે, તેઓએ ત્યાંજ કર્મનું ઉપાર્જન કર્યું છે, એ પ્રમાણે આ બીજો ભંગ કહ્યો છે. ૨

'अहवा तिरिक्खजोणिएसु य मणुस्सेसु य होज्जा' અથવા સઘળા જીવો તિર્યંચયોનિકોમાં અથવા મનુષ્યોમાં રહેલા છે. તેથી ત્યાંથી નિકળીને

ते तथैव निर्लेपतया उद्वृत्ताः तत्स्थानेषु च तिर्यङ् मनुष्येभ्य आगत्य समुत्पन्नाः तेचैवं व्यपदिश्यन्ते-तिर्यग्मनुष्योऽभूवन्नेते, ये च यत्राभूवन् ते तत्रैव कर्म उपार्जितवन्त इति तृतीयो भङ्गः ३ इति। एवमेवाग्रेऽपि अनयैव भावनयाऽर्थो विधेयः। चतुर्थभङ्गमाह 'अहवा तिरिक्खजोणिएसु य देवेसु य होज्जा' अथवा तिर्यग्योनिकेषु च देवेषु च भवेयुरिति चतुर्थो भङ्गः ४, 'अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु मणुस्सेसु य होज्जा' अथवा तिर्यग्योनिकेषु च नैरयिकेषु च मनुष्येषु च भवेयुरिति पञ्चमो भङ्गः। 'अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य देवेसु

होज्जा' अथवा-समस्त जीव तिर्यग्योनिकों में या मनुष्यों में रहे हुए हैं इसलिये वहां से निकलकर जो जीव विवक्षित समय में नैरयिक या देव रूप से उत्पन्न हुए हैं वे उन-उन तिर्यञ्च एवं मनुष्यों से आकरके उत्पन्न हुए है-इसलिये ऐसा कहा जाता है कि ये तिर्यञ्च या मनुष्यों से आकरके उत्पन्न हुए हैं। जो जीव जहां रहा हुआ है उसने वहीं पर कर्म का उपार्जन किया है। ऐसा यह तृतीय भंग है। इसी प्रकार से आगे भी ऐसा ही अर्थ समझना चाहिये, चतुर्थ भंग इस प्रकार से हैं-'अहवा तिरिक्खजोणिएसु य देवेसु य होज्जा' अथवा समस्त जीव तिर्यग्योनिकों में और देवों में रहे हुए हैं। पंचम भंग इस प्रकार से है-'अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य मणुस्सेसु य होज्जा' अथवा-समस्त जीव तिर्यग्योनिकों में और नैरयिकों में एवं मनुष्यों में रहे हुए हैं। छठा भंग इस प्रकार से है-'अहवा-तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य देवेसु य होज्जा' अथवा-समस्त जीव

વિવક્ષિત જે જીવ નૈરયિક અથવા દેવ પણાથી ઉત્પન્ન થયા છે, તેઓ તે તે તિર્યંચ અથવા મનુષ્યોથી આવીને ઉત્પન્ન થયા છે. તેથી એવું કહેવામાં આવે છે કે-આ તિર્યંચ અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થયા છે. જે જીવો જ્યાં રહેલા છે, તેણે ત્યાંજ કર્મનું ઉપાર્જન કર્યું છે. એ પ્રમાણે આ ત્રીજો ભંગ કહ્યો છે. આગળ પણ આ પ્રમાણે જ સમજવું.

ચોથો ભંગ આ પ્રમાણે છે—'अहवा तिरिक्खजोणिएसु य देवेसु य होज्जा' અથવા સઘળા જીવો તિર્યંચ યોનિકોમાં અથવા દેવોમાં રહેલ છે. એ પ્રમાણે આ ચોથો ભંગ કહ્યો છે. 'अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य मणुस्सेसु य होज्जा' અથવા સઘળા જીવો તિર્યંચયોનિકોમાં અને નૈરયિકોમાં તથા મનુષ્યોમાં રહેલા છે એ પ્રમાણે આ પાંચમો ભંગ કહ્યો છે.

'अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य देवेसु य होज्जा' અથવા સઘળા

य होज्जा' अथवा तिर्यग्योनिकेषु नैरयिकेषु च देवेषु च भवेयुरिति षष्ठो भङ्गः ६। 'अहवा तिरिक्खजोणिएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होज्जा' अथवा तिर्यग्योनिकेषु च मनुष्येषु च देवेषु च भवेयुरिति सप्तमो भङ्गः ७। 'अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होज्जा' अथवा तिर्यग्योनिकेषु च नैरयिकेषु च मनुष्येषु च देवेषु च भवेयु रिति-अष्टमो भङ्ग इति।

तिर्यग्योनिकों में, नैरयिकों में और देवों में रहे हुए हैं। सातवां भंग इस प्रकार से है-'अहवा-तिरिक्खजोणिएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होज्जा' अथवा-समस्त जीव तिर्यग्योनिकों में मनुष्यों में और देवों में रहे हुए हैं। आठवां भंग इस प्रकार से है-'अहवा-तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होज्जा' अथवा-समस्त जीव तिर्यग्योनिकों में नैरयिकों में, मनुष्यों में और देवों में रहे हुए हैं, इस प्रकार से ये आठ भंग हैं। इनमें प्रथम भंग तिर्यग्गति को ही लेकर हुआ है। अन्य तीन भंग तिर्यग्नारकों के, तिर्यग् मनुष्यों के, तिर्यग्देवों के संयोग को लेकर हुए हैं। इस प्रकार से ये चार भंग हो जाते हैं। त्रिक संयोग को लेकर-तिर्यग्नारक मनुष्य के, तिर्यग्नारक देव के तिर्यग्मनुष्य देवके संयोग से त्रिक संयोगी भंग तीन होते हैं, इस प्रकार से सात भंग हो जाते हैं। चतुष्क संयोग में-तिर्यग्नारक मनुष्य देव, इनके

જીવો તિર્યંચયોનિકોમાં નૈરયિકોમાં, અને દેવોમાં રહેલા છે, એ પ્રમાણે આ છઠ્ઠો ભંગ કહ્યો છે.

'अहवा तिरिक्खजोणिएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होज्जा' અથવા સઘળા જીવો તિર્યંચ યોનિકોમાં મનુષ્યોમાં અને દેવોમાં થયા છે. એ રીતે આ સાતમો ભંગ કહ્યો છે, 'अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होज्जा' અથવા સઘળા જીવો તિર્યંચયોનિકોમાં, નૈરયિકોમાં, મનુષ્યોમાં અને દેવોમાં થયા છે. આ રીતે આ આઠમો ભંગ કહ્યો છે. આમાં પહેલો ભંગ તિર્યંગ્ગતિને લઇને કહયો છે અને બાકીના ત્રણ ભંગો તિર્યંચ નારકોના, તિર્યંચ મનુષ્યોના, તિર્યંગ્ દેવોના સંયોગથી થયા છે આ રીતે આ ચાર ભંગો થઇ જાય છે. ત્રિક સંયોગને લઇ ને તિર્યંચ મનુષ્યના, તિર્યંગ્ નારકના તિર્યંગ્ દેવના, સંયોગથી ત્રિકસંયોગી ત્રણ ભંગો હોય છે. આ રીતે સાત ભંગો થઈ જાય છે.

ચતુષ્ક સંયોગમાં-તિર્યંગ્, નારક, મનુષ્ય દેવ, આના સંયોગથી એકજ

तदेवमष्टौ भङ्गाः मदर्शिता स्तत्र प्रथमो भङ्गः केवलं तिर्यग्गत्यैव भवति।१। अन्ये त्रयो द्विकसंयोगेन भवन्ति, तथाहि तिर्यग्नारकाभ्यां तिर्यङ्मनुष्याभ्यां तिर्यग्देवाभ्यामिति त्रयो भङ्गा द्विकसंयोगिनः, एते सङ्कलनया जाताश्चत्वारः, तथा तिर्यग्नारकमनुष्यैः१, तिर्यग्नारकदेवैः२, तिर्यङ्मनुष्यदेवै३ रिति त्रयो भङ्गाः त्रिकसंयोगिनः, जाता सप्त। एक स्तिर्यग्नारकमनुष्यदेवै रिति चतुष्कसंयोगी अष्टमो भङ्गः८। सङ्कलनया सर्वे अष्टौ भङ्गा। भवन्तीत्युत्तरम्। 'सलेस्सा णं भंते! जीवा पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु कहिं समायरिंसु' सलेश्याः-लेश्यासहिता जीवाः पापं कर्म कुत्र कस्यां गतौ समार्जन कस्यां गतौ समाचरन्? इति प्रश्नः. भगवानाह-हे गौतम! 'एवं चेव' एवमेव-पूर्ववदेव अष्टौ भङ्गान् कृत्वा उत्तरं कर्त्तव्यमिति। 'एवं कण्हलेस्सा जाव अलेस्सा' एवं कृष्णलेश्यावन्तो जीवा यावत् अलेश्या लेश्यारहिता जीवाः कस्यां गतौ पाप कर्म समर्जितवन्तः समा-

---

संयोग में एक ही भंग होता है। सब मिलाकर कुल आठ भंग हो जाते हैं। ऐसे ये आठ भंग गौतमस्वामी के प्रश्न के उत्तर में प्रभुश्री ने कहे हैं। 'सलेस्सा णं भंते! जीवा पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु कहिं समायरिंसु' हे भदन्त! समस्त लेश्या सहित जीवों ने पापकर्म का उपार्जन किस गति में किया है? किस गति में उसका समाचरण किया है? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-गोयमा! एवं चेव' हे गौतम! पूर्व के जैसे यहां आठ भंग बनाकर उत्तर समझना चाहिये, 'एवं कण्हलेस्सा जाव अलेस्सा' हे भदन्त! लेश्या सहित जीवों ने एवं लेश्या रहित जीवोंने किस गति में पापकर्म का उपार्जन किया है? और किस गति में उसका समाचरण किया है-फल भोगा है? इसके उत्तर में प्रभु ने कहा है-कि हे गौतम! यहां पर भी आठ भंग बनाकर

ભંગ હોય છે. તમામ મળીને કુલ આઠ ભંગો થઈ જાય છે. એ પ્રમાણેના આ આઠ ભંગો ગૌતમ સ્વામીને-પ્રભુશ્રીએ તેમના પ્રશ્નના ઉત્તરમાં કહ્યા છે.

'सलेस्सा णं भंते! जीवा पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु कहिं समायरिंसु' હે ભગવન્ સઘળા લેશ્યાવાળા જીવોએ કઈ ગતિમાં પાપકર્મનું ઉપાર્જન કર્યું છે? કઈ ગતિમાં તેનું સમાચરણ કર્યું છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा! एवं चेव' હે ગૌતમ! પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે આ વિષયમાં આઠ ભંગોવાળો ઉત્તર સમજવો 'एवं कण्हलेस्सा जाव अलेस्सा' હે ભગવન્ લેશ્યાવાળા જીવોએ અને લેશ્યા વિનાના જીવોએ કઈ ગતિમાં પાપકર્મનું ઉપાર્જન કર્યું છે? અને કઈ ગતિમાં તેનું ફળ ભોગવ્યું છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-હે ગૌતમ! આ વિષયમાં પણ

चरितवन्त इति प्रश्नः, अष्टभङ्गैरुत्तरं पूर्ववदेवेति, अत्र यावत्पदेन नीलकापोततेजः पद्म शुक्ललेश्यावतां संग्रहो भवति। सर्वत्राऽऽलापप्रकारः स्वयमेव ऊहनीय इति। 'कण्हपक्खिया सुक्कपक्खिया एवं' कृष्णपाक्षिकाः शुक्लपाक्षिका एवम्-एवमेव-पूर्वोक्तवदेव विज्ञेयाः। कियत्पर्यन्तमित्याह-'जाव अणागारोवउत्ता' यावदनाकारोपयुक्ताः अनाकारोपयुक्तप्रकरणपर्यन्तमिति, अत्र यावत्पदेन सम्यग्दृष्टि-मिथ्यादृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टि-ज्ञान्याभिनिबोधिकज्ञानि-श्रुतज्ञानि यावत्केवलज्ञान्यज्ञानि-मत्यज्ञानि-श्रुताज्ञानि-विभङ्गज्ञान्याहारसंज्ञोपयुक्त यावन्नो संज्ञोपयुक्तसवेदक-यावदवेदक-सकषायि-यावदकषायि-सयोगि-मनोयोगि-वाग्योगि-काययोग्ययोगि-साकारोपयुक्तानां संग्रहो भवतीति।

उनका उत्तर समझना चाहिये, यहां यावत्पद से नीललेश्यावालों का, कापोतलेश्यावालों का, पीतलेश्यावालों का, पद्मलेश्यावालों का और शुक्ललेश्यावालों का ग्रहण हुआ है। इनमें आलाप का प्रकार अपने आप उद्भावित करना चाहिये, 'कण्हपक्खिया सुक्कपक्खिया एवं' कृष्णपाक्षिक और शुक्लपाक्षिक जीवों के सम्बन्ध में भी ऐसा ही कथन यावत् अनाकारोपयुक्त प्रकरण तक जानना चाहिये, यहां यावत् पद से' सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, ज्ञानी अभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी यावत् केवलज्ञानी, अज्ञानी, मत्यज्ञानी श्रुताज्ञानी विभंगज्ञानी, आहारसंज्ञोपयुक्त यावत् नोसंज्ञोपयुक्त, सवेदक, यावत् अवेदक, सकषायी-यावत् अकषायी, सयोगी, मनोयोगी, वाक्योगी, काययोगी और साकारोपयुक्त' इन पदों का संग्रह हुआ है।

આઠ ભંગો બનાવીને તેનો ઉત્તર સમજી લેવો, અહિયાં યાવત્ પદથી નીલ લેશ્યાવાળાઓનું કાપોત લેશ્યાવાળાઓનું પીતલેશ્યાવાળાનું પદ્મલેશ્યાવાળા ઓનું અને શુકલ લેશ્યાવાળાઓનું ગ્રહણ કરાયું છે. તેઓના આલાપકોનો પ્રકાર સ્વયં બનાવીને સમજી લેવો. 'कण्हपक्खिया सुक्कपक्खिया एवं' કૃષ્ણપાક્ષિક અને શુકલપાક્ષિક જીવોના સંબંધમાં પણ એજ પ્રમાણે કથન યાવત્ અનાકારોપયોગવાળાના પ્રકરણ સુધી સમજી લેવું. અહિયાં યાવત્ પદથી 'સમ્યક્દૃષ્ટિ, મિથ્યાદષ્ટિ, સમ્યક્મિથ્યાદષ્ટિ, જ્ઞાની, આભિનિબોધિક જ્ઞાની, શ્રુતજ્ઞાની, ઔધિકજ્ઞાની, અજ્ઞાની, મતિ અજ્ઞાની શ્રુત અજ્ઞાની, વિભંગ-જ્ઞાની, આહારસંજ્ઞોપયોગવાળા, યાવત્ પરિગ્રહ સંજ્ઞોપયોગવાળા', સવેદક, નપુંસક વેદક, સકષાયી, યાવત્ લોભકષાયી, સયોગી, મનોયોગી, વચનયોગી અને સાકારોપયોગવાળાઓ ગ્રહણ કરાયા છે.

सामान्यतो जीवानां कस्यां गतौ पापार्जनं भवतीति प्रदर्श्य विशेषतो जीवानां तद्दर्शयितुं प्रकरणमाह-'नेरइयाणं' इत्यादि। 'नेरइयाणं भंते' नैरयिकाः खलु भदन्त! 'पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु कहिं समायरिंसु' पापम्-अशुभं कर्म कुत्र-कस्यां गतौ समार्जन् कुत्र-कस्यां गतौ पापं कर्म समाचरन् कां गतिमाश्रित्य कर्मणां संचयं कुर्वन्ति येन कर्मणा एतेषां नारकगतौ गमनं भवतीति प्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्ज त्ति, एवं चेव अट्ठ भंगा भाणियव्वा' सर्वेऽपि तावत् जीवाः तिर्यग्योनिकेषु अभूवन् इति एवं प्रकारेण अष्टावपि भङ्गाः द्वितीयादारभ्याष्टमान्ताः प्ररूपणीया इति। 'एवं सव्वत्थ वि अट्ठ भंगा' एवमेव

सामान्य से जीवों के द्वारा किस गति में पापकर्म का उपार्जन किया जाता है यह प्रकट करके अब सूत्रकार इसी बात को विशेष रूप से प्रकट करते हैं-इस में गौतमस्वामी ने प्रभुश्री से ऐसा पूछा है-'नेरइयाणं भंते! पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु कहिं समायरिंसु' हे भदन्त! नैरयिकजीवों ने किस गति में पापकर्म का उपार्जन किया है और किस गति में उसका समाचरण किया है? अर्थात् किस गति में रहकर ये कर्मों का संचय करते हैं कि जिस कर्म से इनका नरकगति में गमन होता है? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा एवं चेव अट्ठ भंगा भाणियव्वा' हे गौतम! समस्त जीव तिर्यग्योनिक में रहे हैं इस प्रकार से यहां पूर्व के अनुसार आठ भंग उत्तर रूप में कहना चाहिये, 'एवं सव्वत्थ वि अट्ठ भंगा' इसी प्रकार से सर्वत्र सलेश्यादि नारक पदों में उत्तर

સામાન્ય રીતે જીવો દ્વારા કઈ ગતિમાં પાપકર્મનું ઉપાર્જન કરવામાં આવે છે, આ વિષય પ્રગટ કરીને હવે સૂત્રકાર આ વાતને વિશેષ રૂપથી બતાવે છે.—આમાં ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને એવું પૂછ્યું છે કે— 'नेरइया णं भंते! पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु कहिं समायरिंसु' હે ભગવન્ નૈરયિક જીવોએ કઈ ગતિમાં પાપકર્મનું સમાચરણ કર્યું છે? અર્થાત્ કઇ ગતિમાં રહિને તેઓ કર્મોનો સંચય-સંગ્રહ કરે છે? કે જે કર્મથી તેઓ નારક ગતિમાં જાય છે આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—'गोयमा सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा एवं चेव अट्ठ भंगा भाणियव्वा' હે ગૌતમ! સઘળા જીવો તિર્યંચ યોનીમાં રહ્યા છે, આ રીતે અહિયા પણ પહેલા કહ્યા પ્રમાણે આઠ ભંગો ઉત્તર રૂપે સમજી લેવા. 'एवं सव्वत्थ वि अट्ठ भंगा' એજ પ્રમાણે સલેશ્યાદિ નારક પદોમાં બધે જ

सर्वत्र सलेश्यादिनारकपदेषु उत्तरपक्षे अष्टौ भङ्गाः कर्त्तव्याः 'एवं जाव अणागारोवउत्ता वि' एवं यावदनाकारोपयुक्ता अपि। अत्र यावत्पदेन कृष्णलेश्यादित आरभ्य साकारोपयोगयुक्तानां सर्वेषां ग्रहणं कर्त्तव्यमिति, सर्वत्र पदेषु अष्टौ भङ्गाः प्ररूपणीया इति। 'एवं जाव वेमाणियाणं' एवं नारकवदेव यावद्वैमानिकानाम्, यावत्पदेन एकेन्द्रियादि सर्वजीवानां ग्रहणं भवति। 'एवं णाणावरणिज्जेण वि दंडओ' एवं पापकर्मदण्डकवदेव ज्ञानावरणीयकर्मणा अपि दण्डको भणितव्यः। 'एवं जाव अंतराइएणं' एवं यावत् अन्तरायिकेण कर्मणाऽपि दण्डको भणितव्यः, यावत्पदेन दर्शनावरणीयादीनां संग्रहो भवतीति। 'एवं एए जीवादीया वेमाणियपज्जवसाणा नवदंडगा भवंति' एवमेते जीवादिका

पक्ष में आठ भंग कहना चाहिये, 'एवं जाव अणागारोवउत्ता वि' इसी प्रकार से यावत् अनाकारोपयुक्त तक के पदों में भी आठ भंग कहना चाहिये, यहां यावत् पद से कृष्णलेश्या से लेकर साकारोपयुक्त तक के नरक पदों का ग्रहण हुआ है। 'एवं जाव वेमाणियाणं' नारक के जैसा यावत् वैमानिकों तक प्रत्येक दंडक में भी आठ भंग कहना चाहिये, यहां यावत् पद से एकेन्द्रियादि सर्व जीवों का ग्रहण हुआ है। 'एवं णाणावरणिज्जेण वि दंडओ' पापकर्म दण्डक के जैसा ज्ञानावरणीय कर्म के साथ भी ऐसा ही दण्डक कहना चाहिये, 'एवं जाव अंतराइयं' इसी प्रकार से यावत् अंतराय कर्म के साथ भी ऐसा ही दण्डक कहना चाहिये, यहां यावत् पद से दर्शनावरणीय आदि कर्मों का संग्रह हुआ है। 'एवं एए जीवादीया वेमाणियपज्जवसाणा नव दंडगा

ઉત્તર પક્ષમાં આઠ આઠ ભંગો સમજીલેવા. 'एवं जाव अणागारोवउत्ता वि' એજ પ્રમાણે યાવત્ અનાકારોપયોગવાળાના કથન પર્યન્તના પદોમાં પણ આઠ આઠ ભંગો સમજવા. અહિયાં યાવત્પદથી કૃષ્ણલેશ્યાથી લઈને સાકારોપયોગ સુધીના પદો ગ્રહણ કરાયા છે. 'एवं जाव वेमाणियाणं' નારકના કથન પ્રમાણે યાવત્ વૈમાનિકોને પણ આઠ આઠ ભંગો સમજવા- અહિયાં યાવત્પદથી એક ઈંદ્રિય વિગેરે સઘળા જીવો ગ્રહણ કરાયા છે.

'एवं णाणावरणिज्जेण वि दंडओ' પાપકર્મના દંડકના કથન પ્રમાણે જ્ઞાનાવરણીય કર્મની સાથે એજ પ્રમાણેના દંડકો કહેવા જોઈએ અહિયાં યાવત્પદથી દર્શનાવરણીય વિગેરે કર્મોનો સંગ્રહ થયો છે

'एवं एए जीवदीया वेमाणियपज्जवसाणा नव दंडगा भवंति' આ રીતે જીવ થી લઈને વૈમાનિક સુધીના જીવોમાં આ નવ દંડકો થાય છે, તેમ સમજવું.

ानिकपर्यवसानाः जीवादारभ्य वैमानिकान्तेषु नवदण्डका भवन्ति। 'सेवं भंते! वं भंते! त्ति जाव विहरइ तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति यावद्विहरति, हे दन्त! जीवानां कर्मोपार्जनविषये यद् देवानुप्रियेण कथितं तत्सर्वं सत्यमेवेति थयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा ात्मानं भावयन् विहरतीति ॥सू० १॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात–जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचक–पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक–श्रीशाहूच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त–
'जैनाचार्य' पदभूषित—कोल्हापुरराजगुरु-बाल-
ब्रह्मचारि–जैनाचार्य–जैनधर्मदिवाकर–पूज्य श्री
घासीलालव्रतिविरचितायां श्री "भग
वतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां-
व्याख्यायां अष्टाविंशतितमशतके
प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥२८–१॥

भवंति' इस प्रकार से जीव से लेकर वैमानिकान्त जीवों में ये नौ दण्डक होते हैं। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ' हे भदन्त जीवों के कर्मोपार्जन के विषय में जो आप देवानुप्रियने कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है२ ऐसा कह कर गौतमने प्रभु को वन्दना की और नमस्कार किया और फिर वे वन्दना नमस्कार कर संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० १॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजी महाराजकृत
"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके अठावीसवें शतकका
॥प्रथम उद्देशक समाप्त ॥२८–१॥

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ' હે ભગવન્ જીવોના કર્મોના ઉપાર્જનના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળુ કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન આપ્ત હોવાથી સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા. વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ ૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકરપૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત "ભગવતીસૂત્ર"ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના અઠયાવીસમા શતકનો પહેલો ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥૨૮–૧॥

॥ अथद्वितीयोदेशकः प्रारभ्यते ॥

अथ क्रमप्राप्तं द्वितीयोद्देशकमारभते—'अणंतरोववन्नगा णं' इत्यादि।

मूलम्—अणंतरोववन्नगा णं भंते! नेरइया पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु कहिं समायरिंसु? गोयमा! सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा एवं एत्थ वि अट्ठ भंगा। एवं अणंतरोववन्नगाणं नेरइयाईणं जस्स जं अत्थि लेस्सादियं अणागारोवजोगपज्जवसाणं तं सव्वं एयाए भयणाए भाणियव्वं जाव वेमाणियाणं। नवरं अणंतरेसु जे परिहारियव्वा ते जहा बंधिसए तहा इहंपि। एवं नाणावरणिज्जेण वि दंडओ एवं जाव अंतराइएणं निरवसेसं। एसो वि नवदंडगसंगाहिओ उद्देसओ भाणियव्वो। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥सू० १॥

अट्ठावीसइमे सए बीओ उद्देसओ समत्तो ॥२८-२॥

छाया—अनन्तरोपपन्नकाः खलु भदन्त! नैरयिकाः पापं कर्म कुत्र समार्जन् कुत्र समाचरन्, गौतम! सर्वेऽपि तावत् तिर्यग्योनिकेषु अभूवन् एवमत्रापि अष्टौ भङ्गाः, एवमनन्तरोपपन्नकानां नैरयिकादीनां यस्य यदस्ति लेश्यादिकमनाकारोपयोगपर्यवसानं तत्सर्वम् एतया भजनया भणितव्यं यावद्वैमानिकानाम्, नवरमनन्तरेषु ये परिहर्तव्या स्ते यथा बन्धिशते तथा इहापि। एवं ज्ञानावरणीयेनापि दण्डकः, एवं यावदान्तरायिकेन निरवशेषम्, एषः अपि नवदण्डकसंगृहीत उद्देशको भणितव्यः। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥सू० १॥

अष्टाविंशतितमे शतके द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥२८-२॥

टीका—'अणंतरोववन्नगा णं भंते! नेरइया' अनन्तरोपपन्नकाः प्रथमसमये जायमानाः खलु भदन्त! नैरयिकाः 'पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु' पापम्—

दूसरा उद्देशक का प्रारंभ

'अणंतरोववन्नगाणं भंते! नेरइया पावं कम्मं' इत्यादि

टीकार्थ—हे भदन्त! अनन्तरोपपन्नक नैरयिकों ने पापकर्म का उपार्जन किस गति में किया है और किस गति में उसका समाचरण

॥બીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'अणंतरोववण्णगाणं भंते! पावं कम्मं' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ અનન્તરોપપન્નક નૈરયિકો પાપકર્મની પ્રાપ્તિ કઈ ગતિમાં કરે છે? અને કઈ ગતિમાં તેને ભોગવે છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી

अशुभं कर्म कुत्र-कस्यां गतौ समर्जितवन्तः-गृहीतवन्तः 'कहिं समायरिंसु' कुत्र-कस्यां गतौ समाचरन् समाचरितवन्तः अशुभकर्मणां बन्धनं कस्यां गतौ कृतवन्त इति प्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा' सर्वेऽपि अनन्तरोपपन्नकाः तावत् तिर्यग्योनिकेषु अभूवन् 'एवं एत्थ वि अट्ठ भंगा' एवमत्रापि अष्टौ भङ्गा भणितव्याः, ये चाष्टौ अस्य शतकस्य प्रथमोद्देशके कथिताः तथाहि-सर्वेऽपि तावत् तिर्यग्योनिकेषु अभूवन् १ अथवा तिर्यग्योनिकेषु च नैरयिकेषु चाभूवन् २ अथवा तिर्यग्योनिकेषु च मनुष्येषु चाभूवन् ३, अथवा तिर्यग्योनिकेषु च देवेषु चाभूवन् ४, अथवा तिर्यग्योनिकेषु च नैरयिकेषु चाभूवन् ५, अथवा तिर्यग्योनिकेषु च नैरयिकेषु च देवेषु चाभूवन् ६, अथवा तिर्यग्योनिकेषु च मनुष्येषु च देवेषु चाभूवन् ७, अथवा तिर्यग्योनिकेषु च नैरयिकेषु च मनुष्येषु च देवेषु चाभूवन्निति ८। 'एवं अणंतरो-

---

किया है-फलोपभोग किया है? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! सव्वे वि तावतिरिक्खजोणिएसु होज्जा' हे गौतम! समस्त अनन्तरोपपन्नक जीवों ने पापकर्म का उपार्जन तिर्यग्योनिकों में जन्म लेकर किया है इस प्रकार से पूर्वोक्त कथन के जैसे आठ भंग उत्तर रूप में यहां कहना चाहिये, जैसे-समस्त अनन्तरोपपन्नक नैरयिक नैरयिक पर्याय प्राप्ति के पहिले तिर्यग्गति में थे १ अथवा-तिर्यग्योनिकों में थे, और नैरयिकों में थे २ अथवा-तिर्यग्योनिकों में और मनुष्यों में थे ३ अथवा तिर्यग्योनिकों में और देवों में थे ४ अथवा-तिर्यग्योनिकों में नैरयिकों में और मनुष्यों में थे, ५ अथवा-तिर्यग्योनिकों में नैरयिकों में और देवों में थे, ६ अथवा तिर्यग्योनिकों में मनुष्यों में और देवों में थे ७ अथवा तिर्यग्योनिकों में नैरयिकों

ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે-'સવ્વેવિ તાવ તિરિક્ખજોણિએસુ હોજ્જા' હે ગૌતમ! સઘળા અનંતરોપપન્નક જીવોએ તિર્યક્ યોનીમાં જન્મ લઈને પાપકર્મનું ઉપાર્જન કર્યું છે આ રીતે પહેલાં કહેલ પ્રકારથી આઠ ભંગો ઉત્તરરૂપે અહિયાંસમજવા જેમ કે-સઘળા અનંતરોપપન્નક નૈરયિકપર્યાય પ્રાપ્તિની પહેલાં તિર્યંચ ગતિમાં હતા ૧ અથવા તિર્યંચ યોનિકોમાં હતા અને નૈરયિકોમાં હતા. ૨ અથવા તિર્યંચયોનિકોમાં અને મનુષ્યોમાં હતા. ૩ અથવા તિર્યંચ યોનીકોમાં નૈરયિકોમાં હતા અને દેવોમાં હતા ૪ અથવા તિર્યંચયોનિકોમાં અને નૈરયિકોમાં અને મનુષ્યોમાં હતા. ૫ અથવા તિર્યંચયોનિકોમાં નૈરયિકોમાં અને દેવોમાં હતા ૬ અથવા તિર્યંચયોનિકોમાં મનુષ્યોમાં અને દેવોમાં હતા. ૭ અથવા તિર્યંચયોનિકોમાં નૈરયિકોમાં મનુષ્યોમાં અને

वन्ननेरइयाई णं' एवम् अनन्तरोपपन्नकनैरयिकादीनाम् 'जस्स जं अत्थि लेस्सादियं' यस्य नैरयिकादे र्यत् लेश्यादिकमस्ति विद्यते 'अणागारोवजोगपज्जवसाणं' अनाकारोपयोगपर्यवसानं लेश्यादित आरभ्य अनाकारोपयोगपर्यन्तम् 'तं सव्वं एयाए भयणाए भाणियव्वं' तत्सर्वं लेश्यादिकं स्थानम् एतया भजनया भणितव्यं वक्तव्यमेव । कियत्पर्यन्तं वक्तव्यं तत्राह–'जाव' इत्यादि, 'जाव वेमाणियाणं' यावद्वैमानिकानाम् एकेन्द्रियादित आरभ्य वैमानिकान्तेषु सर्वत्र लेश्यादिकं यस्य यदस्ति तस्य तद् वक्तव्यमेवेति भावः । 'नवरं अणंतरेसु परिहरियव्वा ते जहा वंधिसए तहा इहंपि' नवरम्–केवलम् अनन्तरेषु–अनन्तरोपपन्ननारकादिषु यानि सम्यग्मिथ्यात्वमनोयोगवाग्योगादीनि पदानि परिहर्त्तव्यानि असंभवान्न प्रच्छनीयानि तानि यथा वन्धशतके षड्विंशतितमे शतके द्वितीयो-

में मनुष्यों में और देवों में थे ८, 'एवं अणंतरोववन्न नेरइयाईणं' इस प्रकार अनन्तरोपपन्न नैरयिक आदिकों के मध्य में 'जस्स जं अत्थि लेस्सादियं' जिस नैरयिक आदि के जो लेश्यादिक अनाकारोपयोग पद तक है 'तं सव्वं एयाए भयणाए भाणियव्वं' वह सब लेश्यादिक स्थान इस भजना से यावत् वैमानिक तक कहना चाहिये, यहां यावत् पद से 'एकेन्द्रिय आदि से लेकर वैमानिकान्त पदों में सर्वत्र जो लेश्यादिक जिस के हैं उसके वह कहना चाहिये' यह पाठ ग्रहीत हुआ हैं। 'णवरं अणंतरेसु परिहरियव्वा ते जहा बंधिसए तहा इहंपि' किन्तु अनन्तरोपपन्न नारकादिको में सम्यङ्मिथ्यात्व मनोयोग, वाग्योग आदि जो पद है वे पूछने के योग असंभव होने से नहीं हैं। इनके विषय का कथन जैसा हमने बन्धि शतक में द्वितीय उद्देशक में

દેવોમાં હતા. ૮ एवं अणंतरोववन्ननेरइयाई णं' આજ પ્રકારથી અનંતરોપપન્નક નૈરયિક વિગેરેમાં 'जस्स जं अत्थि लेस्सादियं' જે નૈરયિક વિગેરેને જે લેશ્યા વિગેરે અનાકારોપયોગ પદ સુધીમાં કહ્યા છે, 'तं सव्वं एयाए भयणाए भाणियव्वं' તે તમામ લેશ્યા વિગેરે સ્થાનો આ ભજનાથી-વિકલ્પથી યાવત્ વૈમાનિક સુધીના કથનમાં સમજી લેવા. અહિયાં યાવત્પદથી એકઇંદ્રિય વિગેરેથી લઇને વૈમાનિક સુધીના પદોમાં બધે જે લેશ્યા વિગેરે જેને કહ્યા છે, તેને તેજ લેશ્યા વિગેરે કહેવા જોઇએ. આ પાઠ ગ્રહણ કરાયો છે. 'णवरं अणंतरेसु परिहरियव्वा ते जहा वंधिसए तहा इहंपि' અનંતરોપપન્નક નારક વિગેરેમાં સમ્યગ્મિથ્યાત્વ, મનોયોગ વચનયોગ વિગેરે જે પદો છે, તે અસંભવ હોવાથી પૂછવાયોગ્ય નથી. તેના સંબંધમાં બંધિશતકમાં બીજા ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણે કથન કહેવામાં આવ્યું છે. એજ પ્રમાણેનું કથન અહિયાં સમજવું.

देशके कथितानि तथैवेहापि ज्ञातव्यानि । 'एवं नाणावरणिज्जेण वि दंडओ' एवं पापकर्मवदेव ज्ञानावरणीयकर्मणाऽपि दण्डको विधेयः, आलापप्रकारश्चेत्थम् 'अणंतरोववन्नगाणं भंते ! नेरइया नाणावरणिज्जं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु कहिं समायरिंसु ? गोयमा ! सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा' इत्यादि सर्वत्र स्वयमेवोहनीय इति । 'एवं जाव अंतराइएणं निरवसेसं' एवं ज्ञानावरणीयेन कर्मणा यथा दण्डको निरूपित स्तथैव यावत् आन्तरायिककर्मणाऽपि निरवशेषं सर्वं दण्डकादि कर्तव्यम् अत्र यावत्पदेन दर्शनावरणीय-वेदनीय-मोहनीया-युर्नामगोत्रकर्मणां संग्रहो भवतीति । 'एसो वि नव दण्डगसंगहिओ उद्देसओ भाणियव्वो' एषोऽपि नवदण्डकसंगृहीत उद्देशकः पापकर्म ज्ञानावरणीयादित आरभ्य अन्तरायपर्यन्तो भणितव्य इति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त !

किया है-वैसा ही वह यहां जानना चाहिये, 'एवं नाणावरणिज्जेण वि दंडओ' पापकर्म के दण्डक के जैसे ही ज्ञानावरणीयादिक कर्म के साथ भी दण्डक बनाकर कहना चाहिये, उसका आलाप इस प्रकार से है 'अणंतरोववन्नगाणं भंते ! नेरइया नाणावरणिज्जं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु कहिं समायरिंसु-गोयमा ! सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा एवं जाव अंतराइएणं निरवसेसं' ज्ञानावरणीय कर्म के साथ जैसा दण्डक बतलाया गया है उसी प्रकार से दंडक यावत् आन्तरायिक कर्म के साथ सम्पूर्ण रूप से करना चाहिये यहां यावत् पद से 'दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय आयु, नाम और गोत्र 'इन कर्मों का संग्रह हुआ है । 'एसो वि नव दण्डगसहिओ उद्देसओ' भाणियव्वो !' नव दण्डक सहित यह उद्देश भी पापकर्म ज्ञानावरणीयादि से प्रारम्भ कर अन्तराय कर्म तक भणितव्य है । 'सेवं भंते !

'एवं णाणावरणिज्जेण वि दंडओ' પાપકર્મના દંડકોના કથન પ્રમાણે જ જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે કર્મની સાથે દંડકો બનાવીને સમજી લેવા તેના આલાપકોનો પ્રકાર આ પ્રમાણે છે.--'अणंतरोववण्णएणं भंते नेरइया णाणावरणिज्जं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु कहिं समायरिंसु गोयमा ! सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा एवं जाव अंतराइएणं निरवसेसं' જ્ઞાનાવરણીય કર્મની સાથે જે પ્રમાણે દંડક કહ્યો છે. એજ પ્રમાણેનો દંડક યાવત્ અંતરાય કર્મની સાથે સંપૂર્ણપણાથી કહેવો જોઈએ. અહિયાં યાવત્પદથી 'દર્શનાવરણીય, વેદનીય, આયુ, નામ, અને ગોત્ર, આ કર્મપ્રકૃતિયો ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે. 'एसो वि नव दंडगसहिओ उद्देसओ भाणियव्वो' નવ દંડકો સહિત આ ઉદ્દેશો પણ પાપકર્મ, જ્ઞાનાવરણીય કર્મથી આરંભ કરીને અંતરાય કર્મ સુધી કહેવો જોઈએ.

तदेवं भदन्त ! इति, हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नक-नारकादीनां पापकर्मादि संग्रह विषये यद् देवानुप्रियेण कथितं तत्सर्वम् एवमेव-सर्वथा सत्यमेवेति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति ॥सू० १॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित—कोल्हापुरराजगुरु-
बालब्रह्मचारि — जैनाचार्य — जैनधर्मदिवाकर
-पूज्यश्री घासिलालव्रतिविरचितायां श्री 'भग-
वतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायाम् अष्टाविंशतितमशतके
द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥२८-२॥

सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नक नैरयिक आदिकों के पापकर्म आदि के उपार्जन समाचरण करने के विषय में जो आप देवानुप्रियने कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है। इस प्रकार कहकर गौतमस्वामीने प्रभुश्री की स्तुति-वन्दना की और नमस्कार किया, वन्दना नमस्कार करके फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।सू० १॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके अट्ठाइसवें शतक का
द्वितीय उद्देशक समाप्त ॥२८-२॥

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક નૈરયિક વિગેરેના પાપકર્મ વિગેરેના ઉપાર્જન સમાચરણ (ભોગવવું) કરવાના વિષયમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે. તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું આપ્ત કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ।।સૂ ૧।।

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત "ભગવતીસૂત્ર"ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના અઠયાવીસમા શતકનો બીજો ઉદ્દેશક સમાપ્ત ।।૨૮-૨।।

अथ तृतीयादारभ्य एकादशान्ता उद्देशका आरभ्यन्ते

अथ द्वितीयमुद्देशकं व्याख्याय क्रमप्राप्तान् तृतीयाद्येकादशान्तान् उद्देशकान् निरूपयन्नाह-'एवं एएणं कमेणं' इत्यादि ।

मूलम्—एवं एएणं कमेणं जहेव बंधिसए उद्देसगाणं परिवाडी तहेव इहंपि अट्ठसु भंगेसु नेयव्वा । नवरं जाणियव्वं जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं जाव अचरिमुद्देसो। सव्वे वि एए एक्कारस उद्देसगा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ ।सू० १।

अट्ठावीसइमे सए तइयाइ एगारस उद्देसगा समत्ता ॥२८-३-११॥

अट्ठावीसइमं कम्मसमज्जणसयं समत्तं ॥२८॥

छाया—एवमेतेन क्रमेण यथैव बन्धिशतके उद्देशकानां परिपाटी तथैवेहापि अष्टसु भङ्गेषु नेतव्याः । नवरं ज्ञातव्यं यत् यस्यास्ति तत् तस्य भणितव्यं यावद्-चरमोद्देशकः सर्वेऽपि एते एकादशोद्देशकाः । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति यावद् विहरति ॥सू० १॥

अष्टाविंशतितमे शतके तृतीयाद्येकादश उद्देशकाः समाप्ताः ॥२८-३-११॥

अष्टाविंशतितमं कर्मसमर्जनशतकं समाप्तम् ॥२८॥

टीका—'एवं एएणं कमेणं' एवमेतेन क्रमेण-पूर्वप्रदर्शितप्रकारेण 'जहेव बंधिसए उद्देसगाणं परिवाडी' यथैव बन्धिशतके षड्विंशतितमे शतके उद्देशकानां

अठाइसवें शतक का तीसरा उद्देशक का प्रारंभ

द्वितीय उद्देशक का व्याख्यान कर के अब सूत्रकार क्रम प्राप्त तृतीय उद्देशक से लेकर ११ वें उद्देशक तक के उद्देशकों का निरूपण करते हैं-

'एवं एएणं कमेणं जहेव बंधिसए'—इत्यादि ।

टीकार्थ—एवं एएणं कमेणं' पूर्व प्रदर्शित प्रकार से जैसी कि बन्धिशतक में-२६ वें शतक में उद्देशकों की-तृतीय चतुर्थ आदि

त्रीजा उद्देशानो आरंभ--

बीजा उद्देशानुं कथन करीने हवे सूत्रकार क्रमथी आवेला आ त्रीजा उद्देशाथी लईने अगियारमां उद्देशा सुधीना उद्देशाओनुं कथन करे छे, 'एवं एएणं कमेणं जहेव बंधिसए' ईत्यादि

टीकार्थ—पहेला बतावेल प्रकारथी जे प्रमाणे बंध शतकमां अर्थात् छव्वीसमा शतकमां उद्देशाओनी अेटले के त्रीजा अने चोथा विगेरे उद्देशा-

तृतीयचतुर्थादीनां परिपाटी प्रक्रिया कथिता 'तहेव इहं पि अट्ठसु भंगेसु णेयव्वा' तथैव तेनैव रूपेण इहापि अष्टाविंशतितमशतकेऽपि तृतीयाद्युद्देशकोक्तेषु अष्टसु भङ्गेषु परिपाटी नेतव्या ज्ञातव्येति । पूर्वशतकापेक्षया 'नवरं जाणियव्वं' नवरं केवलं वैलक्षण्यं ज्ञातव्यम् किं तदित्याह-'जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं जाव अचरमुद्देसो' यत् लेश्यादि यादृशं यस्य जीवस्य नारकादेर्भवति तदेव तस्य जीवस्य भणितव्यं नान्यमन्यस्य, कियत्पर्यन्तमित्याह-यावत् अचरमोद्देशः-अचरमोद्देशकान्तम् अनन्तरोपपन्नकः परम्परोपपन्नकानन्तरावगाढपरम्परावगाढानन्तराहारकपरम्पराहारकानन्तरपर्याप्तपरम्परपर्याप्तचरमपर्यन्तानां नवानामुद्देशकानां संग्रहो भवतीति, 'सव्वे वि एए एकारस उद्देसगा' सर्वेऽपि एते सामान्यो-

उद्देशकों की-परिपाटी-प्रक्रिया-कही गई है 'तहेव' उसी प्रकार से 'इहंपि अट्ठसु भंगेसु णेयव्वा' यहां अठाइसवें शतक में भी तृतीयादि उद्देशकों में उक्त आठ भंगो में परिपाटी जाननी चाहिये, यहां पूर्व की अपेक्षा यदि भिन्नता है तो वह 'नवरं जाणियव्वं जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं जाव अचरमुद्देसो' इस सूत्रपाठ द्वारा प्रगट की गई है, अर्थात् जो जैसी लेश्यादिक जिस नारकादि जीव के हो वह वैसी लेश्यादिक उस नारकादि जीव को कहनी चाहिये-अन्य की अन्य को नहीं कहनी चाहिये, और ऐसा कथन यावत् अचरम उद्देशक तक करना चाहिये, यहां यावत् शब्द से-'अनन्तरोपपन्नक परम्परोपपन्नक, अनन्तरावगाढ, परम्परावगाढ, अनन्तराहारक, परम्पराहारक, अनन्तर-पर्याप्त, परम्परपर्याप्त और चरम इन नव उद्देशकों का संग्रह हुआ है, 'सव्वे वि एए एक्कारस उद्देसगा' सामान्य उद्देशक से लेकर अचरम

ઓની-પરિપાટી-પ્રક્રિયા કહેવામાં આવેલ છે, 'तहेव' એજ પ્રમાણે 'इहंपि अट्ठसु भंगेसु णेयव्वा' આ અઠયાવીસમા શતકમાં પણ ત્રીજા વિગેરે ઉદ્દેશાઓમાં ઉક્ત આઠ ભંગોમાં પ્રક્રિયા સમજવી અહિયાં પહેલાં કરતાં જે કાંઇ ફેરફાર છે, તે नवरं जाणियव्वं जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं जाव अचरमुद्देसो' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ કરેલ છે. અર્થાત્ જે નૈરકાદિકને જે જે લેશ્યા વિગેરે કહેલ હોય તેને તેજ પ્રમાણેની લેશ્યા વિગેરે કહેવા જોઇએ બીજાની લેશ્યા વિગેરે બીજાને કહેવાના નથી. અને આ પ્રમાણેનું કથન અચરમના ઉદ્દેશા સુધી કહેવું જોઇએ. અહિયાં યાવત્ શબ્દથી-'અનન્તરોપપન્નક, પરંપરોપપન્નક, અનંતરાવગાઢ, પરંપરાવગાઢ અનંતરાહારક, પરંપરાહારક, અનન્તર પર્યાપ્ત, પરંપરપર્યાપ્ત અને ચરમ પર્યાપ્ત આ નવ ઉદ્દેશાઓ ગ્રહણ કરાયા છે. 'सव्वे वि एए एकारस उद्देसगा' જીવથી લઇને ચરમ ઉદ્દેશા

देशकृत आरभ्याचरमपर्यन्ता एकादशोद्देशका भवन्ति । ननु प्रथमभङ्गके सर्वे-जीवाः तिर्यग्भ्य आगत्य समुत्पन्ना इति कथं संभवेत् आनतादिदेवानां तीर्थ-करादि मनुष्यविशेषाणां च तिर्यग्भ्य आगतानामनुत्पत्तेः एवं द्वितीयतृतीयादि भङ्गकेऽपि प्रश्नाः, इति चेदत्रोच्यते बाहुल्यमाश्रित्य एते भङ्गा ग्रहीतव्या इति । 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति यावद्विहरति, हे भदन्त! गतप्रकरणे यद्देवानुप्रियेण कथितं तत् सर्वम् एवमेव-

---

उद्देशक तक इस प्रकार से यहां सर्वत्र ग्यारह उद्देशक हो जाते हैं।

शंका—प्रथम भंग में जो ऐसा कहा गया है कि समस्त जीव तिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न हुए हैं—सो यह कथन कैसे संभवित हो सकता है? क्यों की आनतादि देवों की एवं तीर्थंकर आदि विशेष मनुष्यों की उत्पत्ति तिर्यग्गति से आये हुए जीवों में से नहीं होती है। अर्थात् तिर्यग्गति से आये हुए जीव आनतादि देवों के रूप से और तीर्थंकरादि के रूप से उत्पन्न नहीं होते हैं। इसी प्रकार से द्वितीय तृतीयादि भंगो में भी यह प्रश्न होता हैं।

उत्तर—समस्त जीव तिर्यग्योनिको में से आकरके उत्पन्न हुए हैं—विवक्षित पर्यायरूप से जन्मे हैं—ऐसा जो कहा गया है वह बाहुल्य को आश्रित करके कहा गया है इसलिये बाहुल्य को आश्रित करके इन भंगों को ग्रहण करना चाहिये. 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ' हे भदन्त! गत प्रकरण में जो आप देवानुप्रियने कहा है वह

સુધીમાં આહુયાં બધા મળીને અગિયાર ઉદ્દેશાઓ થઈ જાય છે.

શંકા--પહેલા ભંગમાં જે એવું કહ્યું છે કે-સઘળા જીવો તિર્યંચ યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થયા છે. તો આ કથન કેવી રીતે સંભવિત થઇ શકે છે? કેમ કે-આનત વિગેરે દેવો અને તીર્થંકર વિગેરે વિશેષ મનુષ્યોની ઉત્પત્તી તિર્યગ્ગતિથી આવેલા જીવોમાંથી થતી નથી. અર્થાત્ તિર્યંચ ગતિથી આવેલા જીવો આનત વિગેરે દેવપણાથી અને તીર્થંકર વિગેરે રૂપથી ઉત્પન્ન થતા નથી. એજ રીતે બીજા અને ત્રીજા વિગેરે ભંગોમાં પણ આ પ્રશ્નો સમજવા.

ઉત્તર--સઘળા જીવો તિર્યંચ યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થયા છે. વિલક્ષિત પર્યાપ્ત પણાથી જન્મ્યા છે. એવું જે કહેલ છે, તે બહુલ પણાનો આશ્રય કરીને આ ભંગો ગ્રહણ કરવા જોઈએ.

'સેવં ભંતે સેવં ભંતે! ત્તિ જાવ વિહરઇ' હે ભગવન્ આગલા પ્રકરણુ-માં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કરેલ છે, તે સર્વ કથન સર્વથા સત્ય છે.

सर्वथा सत्यमेवेति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति ॥सू० १॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात–जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचक–पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक–श्रीशाहूच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त–
'जैनाचार्य' पदभूषित —कोल्हापुरराजगुरु–बाल-
ब्रह्मचारि–जैनाचार्य–जैनधर्मदिवाकर–पूज्य श्री
घासीलालव्रतिविरचितायां श्री "भग
वतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां-
व्याख्यायां अष्टाविंशतितमशतके
तृतीयाद्येकादशान्ता उद्देशकाः
समाप्ताः ॥२८–३–११॥
॥ अष्टाविंशतितमं कर्मसमर्जनशतं समाप्तम् ॥

सर्वथा सत्य ही है। ऐसा कहकर गौतमस्वामीने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया, वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।सू०१।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजी महाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके अठावीसवें शतकका तृतीय उद्देशक से लेकर ग्यारह वें उद्देशक तक नौ उद्देशक समाप्त ॥

॥ २८ वां शतक समाप्त ॥

આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા તેઓ પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ાસૂ. ૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્ર'ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના સત્યાવીસમા શતકના ત્રીજા ઉદ્દેશાથી અગીયારમાં ઉદ્દેશો સુધીના નવ ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૩–૧૧॥

॥અઠયાવીસમું શતક સમાપ્ત ॥૨૮॥

अथैकोनत्रिंशत्तमे शतके प्रथमोद्देशकः प्रारभ्यते

पापकर्मादि वक्तव्यताऽनुगतमष्टाविंशतितमं शतकं व्याख्याय क्रमप्राप्तं तथाविधमेव एकोनत्रिंशं शतमारभते, अत्रापि च तथैव एकादशोद्देशकाः सन्ति, तेषु चाद्यस्य उद्देशकस्येदं सूत्रम्–'जीवा णं भंते ! पावं कम्मं' इत्यादि ।

मूलम्–जीवा णं भंते ! पावं कम्मं किं समायं पट्ठविंसु ? समायं निट्ठविंसु१, समायं पट्ठविंसु, विसमायं निट्ठविंसु२, विसमायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु३, विसमायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु ?४, गोयमा ! अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु१, जाव अत्थेगइया विसमायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु४। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु तं चेव ? गोयमा ! जीवा चउव्विहा पन्नत्ता तं जहा अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा१, अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा२, अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा३, अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा४। तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु१। तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते णं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु विसमाइं निट्ठविंसु२। तत्थ णं जे ते विसमाउया समोववन्नगा ते णं पावं कम्मं विसमायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु३। तत्थ णं जे ते विसमाउया विसमोववन्नगा तेणं पावं कम्मं विसमायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु४, से तेणट्ठेणं गोयमा ! तं चेव। सलेस्सा णं भंते ! जीवा पावं कम्मं० एवं चेव एवं सव्वट्ठाणेसु वि जाव अणागारोवउत्ता। एए सव्वे वि पया एयाए वत्तव्वयाए भाणियव्वा। नेरइया णं भंते ! पावं कम्मं किं समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु ? पुच्छा, गोयमा ! अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु–एवं जहेव जीवाणं तहेव भाणि-

यव्वं जाव अणागारोवउत्ता। एवं जाव वेमाणियाणं जस्स जं अत्थि तं एएणं चेव कमेणं भाणियव्वं। जहा पावेण दंडओ एएणं कमेणं अट्ठसु वि कम्मपगडीसु अट्ठ दंडगा भाणियव्वा जीवादीया वेमाणियपज्जवसाणा। एसो नवदंडगसंगहिओ पढमो उद्देसो भाणियव्वो। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥सू० १॥

एगूणतीसइमे सए पढमो उद्देसो समत्तो ॥२९-१॥

छाया—जीवाः खलु भदन्त! पापं कर्म किं समकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन्१, समकं प्रास्थापयन् विषमकं न्यस्थापयन्२, विषमकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन् ३, विषमकं प्रास्थापयन् विषमकं न्यस्थापयन् ४, गौतम! अस्त्येकके समकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन्१, यावद् अस्त्येकके विषमकं प्रास्थापयन् विषमकं न्यस्थापयन्४,। तत्केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते अस्त्येकके समकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन् तदेव, गौतम! जीवाश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा–अस्त्येकके समायुष्काः समोपपन्नकाः १, अस्त्येकके समायुष्का विषमोपपन्नकाः२, अस्त्येकके विषमायुष्काः समोपपन्नकाः३ अस्त्येकके विषमायुष्का विषमोपपन्नकाः४। तत्र खलु ये ते समायुष्काः समोपपन्नका स्ते खलु पापं कर्म समकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन्१, तत्र खलु ये ते समायुष्का विषमोपपन्नका स्ते खलु पापं कर्म समकं प्रास्थापयन् विषमकं न्यस्थापयन्२, तत्र खलु ये ते विषमायुष्काः समोपपन्नका स्ते खलु पापं कर्म विषमकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन् तत्र खलु ये ते विषमायुष्का विषमोपपन्नका स्ते खलु पापं कर्म विषमकं प्रास्थापयन् विषमकं न्यस्थापयन्। तत्तेनार्थेन गौतम! तदेव। सलेश्याः खलु भदन्त! जीवाः पापं कर्म–एवमेव, एवं सर्वस्थानेष्वपि यावदनाकारोपयुक्ताः। एतानि सर्वाण्यपि पदानि एतया वक्तव्यतया भणितव्यानि। नैरयिकाः खलु भदन्त! पापं कर्म किं समकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन्, पृच्छा, गौतम! अस्त्येकके समकं प्रास्थापयन् एवं यथैव जीवानां तथैव भणितव्यं यावत् अनाकारोपयुक्ताः। एवं यावद्वैमानिकानाम् यस्य यदस्ति तद् एतेनैव क्रमेण भणितव्यम्, यथा पापेन दण्डकः, एतेन क्रमेणाष्टास्वपि कर्मप्रकृतिषु अष्ट दण्डका भणितव्या जीवादिका वैमानिकपर्यवसानाः। एषो नवदण्डकसंगृहीतः प्रथमोद्देशो भणितव्यः। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥सू० १॥

एकोनत्रिंशत्तमे शतके प्रथमोद्देशः समाप्तः ॥२९-१॥

टीका--'जीवा णं भंते' जीवाः खलु भदन्त! 'पावं कम्मं' पापम्-अशुभं कर्म 'किं समायं पट्ठविंसु' समकम्-बहवो जीवाः युगपदित्यर्थः प्रास्थापयन्-प्रस्थापितवन्तः प्रथमतया वेदयितु मारब्धवन्तः किम् तथा-'समायं निट्ठविंसु' समकमेव न्यस्थापयन्-निष्ठापितवन्तः नाशितवन्तः पापकर्मणो नाशमकुर्वन् इत्यर्थः, इति प्रथमो भङ्गः१, तथा 'समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु २' समकं-युगपदेव अनेके जीवाः प्रास्थापयन् प्रस्थापितवन्तः युगपदनेकेन्यस्थापयन्-निष्ठापितवन्त इति द्वितीयो भङ्गः२, तथा 'विसमायं पट्ठविंसु समायं निट्ठ-

---

२९ वां शतकके पहला उद्देशक

पापकर्म आदि की वक्तव्यता से अनुगत २८ वें शतक की व्याख्या करके अब क्रम प्राप्त २९ वां शतक प्रारम्भ होता है, यहां पर भी पूर्वोक्त जैसे ११ उद्देशक हैं। इनमें से आदि के उद्देशक का 'जीवाणं भंते! पावं कम्मं किं समायं पट्ठविंसु'-इत्यादि

टीकार्थ—गौतमस्वामीने प्रभुश्री से ऐसा पूछा है-'जीवा णं भंते! पावं कम्मं' हे भन्दत! अनेक जीव जो पापकर्म को भोगते हैं और नष्ट करते हैं सो क्या वे उस पापकर्म को 'किं समायं पट्ठविंसु' भोगने का प्रारम्भ एक काल में करते हैं और 'समायं निट्ठविंसु' एक ही काल में वे उसका विनाश करते हैं? अथवा-वे उस 'समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु२' पापकर्म को भोगने का प्रारम्भ एक काल में करते हैं और

ઓગણત્રીસમા શતકનો પ્રારંભ--

પહેલો ઉદ્દેશો.

પાપકર્મ વિગેરે ના કથનના સંબંધમાં અઠયાવીસમા શતકનું કથન કરીને હવે ક્રમથી આવેલ આ ઓગણત્રીસમા શતકનો પ્રારંભ કરવામાં આવે છે. આ ઓગણત્રીસમા શતકમાં પણ પહેલા કહ્યા પ્રમાણે અગીયાર ઉદ્દેશાઓ કહ્યા છે. તેમાં પહેલા ઉદ્દેશાનું પહેલું સૂત્ર નીચે પ્રમાણે છે-'जीवा णं भंते पावं कम्मं किं समायं पट्ठविंसु' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ--ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને એવું પૂછયું છે કે—'जीवा णं भंते पावं कम्मं' હે ભગવન્ અનેક જીવો જેઓ પાપકર્મ ભોગવે છે, અને તેનો ક્ષય કરે છે. તો શું તે તેઓ પાપકર્મને 'समायं पट्ठविंसु' ભોગવવાનો પ્રારંભ એકજ સમયમાં કરે છે.? અને 'समायं निट्ठविंसु' એક જ સમયમાં તેઓ તેનો વિનાશ કરે છે?૧ અથવા-તેઓ 'समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु' પાપકર્મને ભોગવવાનો પ્રારંભ એક સમયમાં કરે છે? અને તેનો વિનાશ-

विंसु' विषमं यथा भवति विषमतयेत्यर्थः प्रस्थापितवन्तः, समकं निष्ठापितवन्त इति तृतीयः३, तथा-'विसमायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु' विषममेव यथा भवति तथा प्रस्थापितवन्तः तथा विषमं विषमतयैव निष्ठापितवन्त इति चतुर्थो भङ्गः४, हे भदन्त ! अनेके जीवाः पापं कर्म भोक्तुमेकस्मिन्नेव काले प्रयतमाना भवन्ति स्म तथा सममेककाले एतादृशं कर्म विनाशयन्ति स्म किम्? अथवा एकदैव सर्वे जीवाः कर्मभोगाय प्रवर्त्तन्ते विषमतया अन्तकरणाय प्रवर्त्तन्ते, अथवा-विषमतया प्रारभन्ते समकमेव तत् कर्म विनाशयन्ति अथवा विषमतया प्रारभन्ते विषमतयैव निवर्त्तन्ते? किम्? इति चतुर्णामपि भङ्गानां भाव इति प्रश्नः भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' अस्त्येकके जीवाः समकमेव प्रास्थापयन् समकमेव न्यस्थापयन् केचन अनेके जीवाः पापं कर्म भोगाय एकदैव प्रारभन्ते तथा तादृश कर्म

उसका विनाश भिन्न-भिन्न काल में करते हैं२? अथवा 'विसमायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' वे भिन्नकाल में उस पापकर्म का भोगना प्रारंभ करते हैं और एक काल में उसे विनिष्ट करते हैं३ अथवा 'विसमायं पट्ठविंसु, विसमायं निट्ठविंसु' भिन्न-भिन्न काल में वे उसका भोगना प्रारम्भ करते हैं और भिन्न-भिन्न काल में ही उसका विनाश करते हैं? इस प्रकार से ४ भंगो से युक्त प्रश्न गौतमस्वामीने प्रभुश्री से पूछा है, इस प्रश्न के उत्तर में प्रभुश्री गौतमस्वामीसे कहते हैं-'गोयमा ! अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' हे गौतम। कितनेक जीव ऐसे भी हैं जो पापकर्म को भोगने का प्रारम्भ एक साथ करते हैं और एक ही साथ उसका विनाश करते हैं अर्थात् पापकर्म को एक ही साथ एक काल में भोगते हैं और एक ही

જુદા જુદા કાળમાં કરે છે ? ૨ અથવા 'विसमायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' તેઓ ભિન્ન કાળમાં તે પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ કરે છે ? અને એક કાળમાં તેનો નાશ કરે છે ? ૩ અથવા 'विसमायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' તેઓ ભિન્ન કાળમાં તે પાપ કર્મને ભોગવવાનો પ્રારંભ કરે છે ? અને એક કાળમાં તેનો નાશ કરે છે ? ૪ આ પ્રમાણે ચાર ભંગોવાળો પ્રશ્ન ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને પૂછયો છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે- 'गोयमा ! अत्थेगइए समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' હે ગૌતમ ! કેટલાક જીવો એવા હોય છે કે-જેઓ એક સાથે પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ કરે છે. અને તેનો વિનાશ પણ એક સાથે જ કરે છે. અર્થાત્ પાપકર્મને એક સાથે એક કાળમાં ભોગવે છે. અને એક સાથેજ એક કાળમાં તેનો નાશ કરે છે,

विनाशायापि युगपदेव प्रवर्त्तमाना भवन्तीत्यर्थः। 'जाव अत्थेगइया विसमायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु' यावत् अनेके विषमकं प्रास्थापयन् विषमकं न्यस्थापयन्, अत्र यावत्पदेन अस्त्येकके समकं प्रास्थापयन् विषमकं न्यस्थापयन्, अस्त्येकके विषमं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन् इत्यनयो द्वितीयतृतीयभङ्गयो ग्रहणं भवति, एवं चत्वारोऽपि भङ्गा उत्तरे समर्थिता भगवतेति। पुनः प्रश्नयन्नाह-'से केणट्ठेणं' इत्यादि। 'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ' तत्केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते 'अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु तं चेव' समकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्था-

---

साथ एक कालमें उसे नष्ट भी करते हैं? 'जाव अत्थेगइया विसमायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु' इसी रीति से यावत् कितनेक जीव ऐसे भी हैं जो पापकर्म को भोगने का प्रारम्भ भिन्न-भिन्नकाल में करते हैं और भिन्न-भिन्न काल में ही उसका विनाश करते हैं। यहां यावत् शब्द से द्वितीय और तृतीय भंगों का ग्रहण हुआ है। वे द्वितीय तृतीय भंग इस प्रकार से हैं 'अस्त्येकके जीवा समकं प्रास्थापयन् विषमकं न्यस्थापयत्२ अस्त्येकके विषमकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन्३' दोनों भंगों का अर्थ स्पष्ट हैं। इस प्रकार से प्रभुश्रीने यहां चारों भंगों का समर्थन उत्तर वाक्य में किया है।

'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' हे भदन्त! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि अनेक जीव ऐसे हैं जो पापकर्म को भोगने का प्रारम्भ एक साथ एककाल में करते हैं और उसका अन्त भी एक साथ एक ही काल में करते हैं?

'जाव अत्थेगइया विसमायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु' આજ પ્રમાણે કેટલાક જીવો એવા પણ હોય છે, કે જેઓ જુદા-જુદા કાળમાં પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ કરે છે, અને જુદા-જુદા કાળમાં તેનો વિનાશ કરે છે. અહિયાં યાવત્ શબ્દથી બીજો અને ત્રીજો એ બે ભંગ ગ્રહણ થયા છે તે બે ભંગો આ પ્રમાણે છે—'अस्त्येकके जीवा समकं प्रास्थापयन् विसमकं न्यस्थापयन्२ अस्त्येकके विषमकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन् ३' આ બન્ને ભંગોનો અર્થ સ્પષ્ટ છે. આ પ્રમાણે પ્રભુશ્રીએ ઉત્તર વાક્યમાં અહિયાં ચારે ભંગોનો સ્વીકાર કર્યો છે.

'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ' अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' હે ભગવન્ આપ આ પ્રમાણે શા કારણે કહો છો? કે અનેક જીવો એવા હોય છે કે-જેઓ પાપકર્મને ભોગવવાનો પ્રારંભ એકી સાથે એક કાળમાં કરે છે? અને તેનો નાશ પણ એકી સાથે અને

पयन् समकं प्रास्थापयन् विषमकं न्यस्थापयन् विषमकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन् विषमकं प्रास्थापयन् विषमकं न्यस्थापयन् इत्येवान्तरप्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'जीवा चउव्विहा पन्नत्ता' जीवाश्चतुर्विधाः-चतुष्प्रकारकाः प्रज्ञप्ताः कथिताः 'तं जहा' तद्यथा-'अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा' अस्त्येकके समायुष्काः समायुष उदयापेक्षया समकालायुष्कोदया इत्यर्थः, समोपपन्नकाः विवक्षितायुषः क्षये समकमेव भवान्तरे उपपन्नाः समोपपन्नकाः, येचैवंविधास्ते समकमेव प्रास्थापयन् समकमेव न्यस्थापयन् ।

तथा अनेक जीव ऐसे भी हैं जो पापकर्म को भोगनेका प्रारम्भ तो एक काल में करते है और उसका अन्त भिन्न-भिन्न काल में करते हैं२ तथा अनेक जीव ऐसे हैं जो पापकर्म को भोगने का प्रारम्भ भिन्न-भिन्न काल में करते हैं और उसका अन्त एक काल में करते हैं ३ तथा अनेक जीव ऐसे हैं जो पापकर्म को भोगने का प्रारम्भ भी भिन्न-भिन्न काल में करते हैं और विनाश भी उसका भिन्न-भिन्न काल में करते हैं ? ४ इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-"गोयमा ! जीवा चउव्विहा पन्नत्ता' हे गौतम ! जीव चार प्रकार के कहे गये हैं 'तं जहा' जैसे-'अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा१ अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा२' कितनेक जीव ऐसे होते हैं कि उदयकी अपेक्षा से जिनकी आयु समान है अर्थात् जिनकी आयुका उदय समान काल में हुआ है और उसविवक्षित आयु के क्षय होने पर एक ही समय में जिनका भवान्तर में उत्पाद हुआ है, ऐसे जो जीव होते हैं वे पापकर्म को भोगने का प्रारम्भ एक साथ करते हैं और एक ही साथ

સમયમાં કરે છે ? ૨ તથા અનેક જીવો એવા હોય છે કે-પાપકર્મને ભોગવવાનો પ્રારંભ જુદા-જુદા સમયમાં કરે છે ? અને તેનો અન્ત એક કાળમાં કરે છે ? ૩ તથા અનેક જીવો એવા હોય છે કે જેઓ પાપકર્મને ભોગવવાનો આરંભ જુદા-જુદા કાળમાં કરે છે ? અને તેનો વિનાશ પણ જુદા-જુદા કાળમાં જ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'गोयमा ! जीवा चउव्विहा पन्नत्ता' હે ગૌતમ ! જીવો ચાર પ્રકારના કહ્યા છે. 'तं जहा' તે આ પ્રમાણે છે. 'अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा १ अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा २' કેટલાક જીવો એવા હોય છે કે-ઉદયની અપેક્ષાથી જેઓનું આયુષ્ય સરખું છે. અર્થાત્ જેઓના આયુષ્યનો ઉદય સમાન કાળમાં થયો હોય છે, તે વિવક્ષિત આયુષ્યનો ક્ષય થવાથી એક જ સમયમાં ભવાન્તરમાં જેઓનો ઉત્પાદ ઉત્પત્તિ થયેલ હોય એવા જે જીવો હોય છે. તેઓ પાપ કર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ એકી સાથે કરે છે. અને એકી સાથે તેનો વિનાશ

'अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा' अस्त्येकके जीवाः समायुषो विषमोपपन्नकाः 'अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा' अस्त्येकके जीवाः विषमायुषः समोपपन्नकाः, 'अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा' अस्त्येकके विषमायुषो विषमोपपन्नकाः तदेवं चतुष्प्रकारा जीवा भवन्ति। एतदेव स्पष्टयति-'तत्थ णं' इत्यादि, 'तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा तेणं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' तत्र खलु तेषु चतुर्षु जीवेषु ये ते समायुषः समोपपन्नकाश्च ते जीवा खलु पापं कर्म समकमेव प्रास्थापयन् समकमेव न्यस्थापयन् इति। ननु आयुः कर्म वाश्रित्यैवमुपपद्यते न तु पापं कर्माश्रित्य, तद्धि न आयुष्कं कर्मण उदयापेक्षं प्रस्थाप्यते निष्ठाप्यते च? इति चेदत्रोच्यते कर्मणामुदयस्य क्षयस्य च भवापेक्षत्वात् भवस्य चायुष्कापेक्षत्वाद् आयुः कर्माश्रित्य कथनं न विरुद्धमिति। अत एवोक्तम् 'तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' तत्र चतुर्विधजीवमध्यात् खलु ये जीवाः समायुष्काः

उसका विनाश करते हैं। 'अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा' तथा-कितनेक जीव ऐसे होते हैं जो एक सी आयुवाले होते हैं और भिन्न-भिन्न समय में परभव में उत्पन्न होते हैं२ 'अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा३' तथा-कितनेक जीव ऐसे होते हैं जो विषम आयुवाले होते हैं और परभव में साथ-साथ उत्पन्न होते हैं। तथा 'अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा४' कितनेक जीव ऐसे होते हैं कि जिनकी आयु बराबर नहीं होती है और भिन्न भिन्न समय में जो परभव में उत्पन्न हुए होते है। इस प्रकार से जीव चार प्रकार के होते हैं। इसी कथन का सूत्रकार स्पष्टीकरण करते हुए कहते हैं-'तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु समायं

પણ કરે છે. 'अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा' તથા કેટલાક જીવો એવા હોય છે કે-જેઓ એક સરખા આયુષ્ય વાળા હોય છે. અને જુદા-જુદા સમયમાં પરભવમાં ઉત્પન્ન થાય છે. તથા 'अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा' તથા કેટલાક જીવો એવા હોય છે કે-જેઓ વિષય આયુષ્યવાળા હોય છે. પરભવમાં એકી સાથે ઉત્પન્ન થાય છે. તથા 'अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा' કેટલાક જીવો એવા હોય છે કે-જેઓનું આયુષ્ય બરાબર હોતુ નથી. અને જુદા-જુદા સમયમાં જેઓ પરભવમાં ઉત્પન્ન થયેલા હોય છે. આ રીતે જીવો ચાર પ્રકારના હોય છે આજ કથનનું સ્પષ્ટી કરણ કરતા કહે છે કે-'तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' આમાં જે જીવો સરખા સમયમાં પરભવમાં ઉત્પન્ન

समोपपन्नकाः ते समकमेव प्रास्थापयन् समकमेव न्यस्थापयन् चेति१। 'तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा तेणं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु' तत्र ये खलु समायुषो विषमोपपन्नाः समकालायुष्कोदया विषमतया परभवोत्पन्नाः मरणकालवैषम्यात् ते खलु समकं प्रास्थापयन् आयुष्ककर्मविशेषोदयसंपाद्यत्वात् पापकर्मवेदनविशेषस्य, विषमकं विषमतया न्यस्थापयन् मरणवैषम्येण पापकर्मवेदनविशेषस्य विषमतया निष्ठा संभवादिति द्वितीयः२। तथा 'तत्थ णं जे ते विसमाउया समोववन्नगा तेणं पावं कम्मं विसमायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' तत्र खलु ये जीवा विषमकालायुष्कोदयाः समकालभवान्तरोत्पत्तयः ते खलु जीवाः विषमं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन्

निट्ठविंसु' इनमें जो जीव समान काल में आयुषके उदयवाले होते हैं और समान समय में परभव में उत्पन्न हुए होते हैं ऐसे वे जीव एक ही काल में तो पापकर्म का भोगना प्रारम्भ करते हैं और उसका अन्त भी एक ही काल में–साथ–साथ करते हैं१। 'तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा तेणं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु' तथा–जो जीव समान आयुष के उदयवाले होते हैं और भिन्न–२ काल में परभव में जन्मे हुए होते हैं–ऐसे वे जीव पापकर्म को भोगने का प्रारम्भ एक ही साथ करते हैं पर उसका अन्त भिन्न–२ समय में करते हैं२। तथा–'तत्थ णं जे ते विसमाउया समोववन्नगा तेणं पावं कम्मं विसमायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु३' जो जीव भिन्न–भिन्न समय में आयुष के उदयवाले होते हैं और साथ–साथ में परभव में उत्पन्न हुए होते हैं वे जीव 'पावं कम्मं विसमायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' पापकर्म को भोगने

થયેલા હોય છે, એવા તે જીવો એક જ કાળમાં તો પાપકર્મ ભોગવવાનો આરંભ કરે છે, અને તેનો અંતપણ એક જ કાળમાં એક સાથે કરે છે. ૧ तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा तेणं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु' તથા જે જીવો સમાન આયુષ્યના ઉદયવાળા હોય છે, અને જુદા જુદા કાળમાં પરભવમાં જન્મેલા હોય છે. એવા તે જીવો પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ એકી સાથે કરે છે. પરંતુ તેનો અંત જુદા–જુદા સમયમાં કરે છે. તથા 'तत्थ णं जे ते विसमाउया समोववन्नगा तेणं पावं कम्मं विसमायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु३' જે જીવ જુદા–જુદા સમયમાં આયુષ્યના ઉદયવાળા હોય છે, તે જીવો 'पावं कम्मं विसमायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु ४' પાપ કર્મ ભોગવવાનો આરંભ જુદા–જુદા સમયમાં કરે છે, પરંતુ તેનો અંત એકી

इति तृतीयः३ । 'तत्थ णं जे ते विसमाउया विसमोववन्नगा' तत्र खलु ये जीवा विषमायुष्काः विषमोपपन्नकाः 'तेणं पावं कम्मं विसमायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु' ते खलु जीवाः पापं कर्म विषमतया प्रास्थापयन् विषमतया न्यस्था-

का प्रारम्भ भिन्न-भिन्न समयमें करते हैं पर उसका अन्त एक ही साथ करते हैं। 'तत्थ णं जे ते विसमाउया विसमोववन्नगा 'तथा-जो जीव भीन्न-भिन्न समय में आयुष के उदयवाले होते हैं, और भिन्न-भिन्न समय में परभव में उत्पन्न हुए होते हैं 'तेणं पावं कम्मं विसमायं पट्टविंसु विसमायं निट्ठविंसु' ऐसे वे जीव पापकर्म को भोगने का प्रारम्भ भिन्न-भिन्न समय में करते हैं और उसका अन्त भी भिन्न-भिन्न समय में करते हैं। यहां ऐसी शंका हो सकती है कि जो तुम ऐसा कहते हो कि उदय की अपेक्षा जिनकी आयु समान है और जो परभव में साथ-साथ उत्पन्न हुए हैं ऐसे वे जीव पापकर्म का भोगना साथ-साथ प्रारम्भ करते हैं और साथ-साथ ही उसका अन्त करते हैं-सो ऐसा यह कथन आयुकर्म को लेकर ही बन सकता है पापकर्म को लेकर नहीं-अतःपापकर्म का भोगना एक साथ और एक साथ उसका विनाश होना यह आयुकर्म के उदय की अपेक्षावाला कैसे हो सकता है? सो इसका उत्तर इस प्रकार से है-कर्मों का उदय या क्षय भवापेक्ष होता है और भव आयुकर्म के

સાથે જ કરે છે. 'तत्थ णं जे ते विसमाउया विसमोववन्नगा' તથા જે જીવો જુદા-જુદા-સમયમાં આયુષ્યના ઉદયવાળા હોય છે, અને જુદા જુદા સમયમાં પરભવમાં ઉત્પન્ન થયેલા હોય છે 'ते णं पावं कम्मं विसमायं निट्ठविंसु' એવા તે જીવો પાપકર્મને ભોગવવાનો આરંભ જુદા-જુદા સમયમાં કરે છે, અને તેનો અંત પણ જુદા જુદા સમયમાં કરે છે,

આ કથનમાં એવી શંકા થઈ શકે છે.-કેજે એવું કહેવામાં આવ્યું કે ઉદયની અપેક્ષાએ જેઓનુ આયુષ્ય સમાન છે, અને જેઓ પરભવમાં એકી સાથે ઉત્પન્ન થયા છે, તે જીવો પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ એક સાથે કરે છે, અને એક સાથે તેનો અંત કરે છે.—તો આ પ્રમાણેનું કથન આયુ કર્મને લઈને જ બની શકે છે પાપકર્મના સંબંધમાં બની શકતું નથી. તેથી પાપકર્મ ભોગવવાનું એક સાથે અને તેનો વિનાશ એક સાથે હોવાનું આયુકર્મના ઉદયની અપેક્ષાથી કેવી રીતે થઇ શકે છે? તેનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે-કર્મોનો ઉદય અથવા ક્ષય ભવની અપેક્ષાથી હોય છે, અને ભવ

आधीन होता है, इसलिये आयुकर्म को आधीन करके ऐसा कथन विरुद्ध नहीं पडता है। इसीलिये ऐसा कहा गया है कि जो जीव समान आयुवाले हैं और समोपपन्नक हैं वे जीव पापकर्म को भोगना एक साथ प्रारम्भ करते हैं और एक साथ ही उसका विनाश करते हैं१। तथा-'तत्थ णं जे समाउया विसमोववन्नगा तेणं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु' ऐसा जो द्वितीय भंग के विषय में उत्तर दिया गया है, उसका तात्पर्य ऐसा है कि जिनजीवों की आयु समान है-समानकाल में आयुके उदयवाले हैं-पर जुदे-जुदे समय में परभव में उत्पन्न हुए हैं वे मरणकाल की विषमता से पापकर्म को वेदन यद्यपि आयुष्कर्म के विशेषोदय से संपाद्य होने के कारण एक साथ करने पर भी उसका निष्ठापन विनाश-भिन्न काल में करते हैं। तथा-'तत्थ णं जे ते विसमाउया समोववन्नगा, तेणं पावं कम्मं विसमायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' ऐसा जो तृतीय भंग के विषय में उत्तर दिया गया है-सो उसका-तात्पर्य ऐसा है कि जो जीव विषमकाल में-भिन्न भिन्न समय में आयुके उदयवाले हैं पर परभव में एक ही साथ उत्पन्न हुए हैं ऐसे वे जीव पापकर्म को भोगना भिन्न-भिन्न समय में

આયુકર્મને આધીન હોય છે. તેથી આયુકર્મને આધીન કરવાથી આ કથન વિરૂદ્ધ થતું નથી. તેથી એવું કહેવામાં આવ્યું છે કે-જે જીવો સમાન આયુષ્ય વાળા હોય છે, અને સાથે જ ઉત્પન્ન થવાવાળા હોય છે, તેવા જીવો એકી સાથે પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ કરે છે-અને એકી સાથે તેનો વિનાશ કરે છે. ૧, તથા 'तत्थ णं जे समाउया विसमोववन्नगा तेणं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु' આ પ્રમાણેનો જે બીજા ભંગના સંબંધમાં ઉત્તર આપવામાં આવ્યો છે. તેનું તાત્પર્ય એ છે કે-જે જીવોનું આયુ સમાન છે. સમાનકાળમાં આયુના ઉદયવાળા છે,-પરંતુ જુદા જુદા સમયમાં પરભવમાં ઉત્પન્ન થયા છે, તેઓ મરણ કાળના વિષમ પણાથી પાપકર્મનું વેદન-જોકે આયુષ્ય કર્મના વિશેષોદયથી સંપાદિત થવાને કારણે એકી સાથે કરવાથી તેનો વિનાશ જુદા જુદા સમયમાં કરે છે. તથા 'तत्थ णं जे ते विसमाउया समोववन्नगा, तेणं पावं कम्मं विसमायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' આ રીતે જે ત્રીજા ભંગના સંબંધમાં ઉત્તર આપ્યો છે, તેનું તાત્પર્ય એ છે કે-- જે જીવો વિષમ કાળમાં એટલે કે જુદા જુદા સમયમાં આયુકર્મના ઉદયવાળા છે, પરંતુ પરભવમાં એટલે કે બીજા ભવમાં એકી સાથે જ ઉત્પન્ન થયા છે,

पयन् इति चतुर्थ ४। 'से तेणट्ठेणं गोयमा ! तं चेव' तत् तेनार्थेन गौतम ! तदेव हे गौतम ! एतेन कारणेन कथयामि यत् केचन जीवाः खलु पापं कर्म समकमेव प्रास्थापयन् समकमेव न्यस्थापयन् इत्यादिना, 'सलेस्साणं भंते ! जीवा पावं कम्मं एवं चेव' सलेश्याः खलु भदन्त ! जीवाः पापं कर्म किं समकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन् अथवा समकं प्रास्थापयन् विषमतया न्यस्थापयन् अथवा विषमतया प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन् अथवा विषमतया प्रास्थापयन् विषमतया न्यस्थापयन् इति प्रश्नः, हे गौतम ! केचन सलेश्या जीवाः समकमेव

करते हैं और उसका अन्त साथ-साथ करते हैं। चतुर्थ भंग के विषय में दिये गये उत्तर का तात्पर्य स्पष्ट है। 'से तेणट्ठेणं गोयमा ! तं चेव' इस कारण हे गौतम ! मैंने ऐसा कहा है कि कितनेक जीव पापकर्म का भोगना साथ साथ प्रारम्भ करते हैं और साथ साथ ही उसका अन्त करते हैं इत्यादि। 'सलेस्साणं भंते ! जीवा पावं कम्मं एवं चेव' हे भदन्त ! जो लेश्यावाले जीव हैं- वे क्या पापकर्म का भोगना साथ-साथ प्रारम्भ करते हैं और साथ साथ ही उसका विनाश करते हैं? १ अथवा-पापकर्म का भोगना साथ-साथ प्रारम्भ करते हैं और विनाश भिन्न-भिन्न समय में करते हैं? २ अथवा-पापकर्म का भोगना भिन्न-भिन्न समय में प्रारम्भ करते हैं और विनाश साथ-साथ करते हैं ३ अथवा पापकर्म का भोगना भी भिन्न-भिन्न समय में प्रारम्भ करते हैं और विनाश भी उसका भिन्न-भिन्न समय में करते हैं? ४ ऐसा यह प्रश्न गौतमस्वामीने प्रभुश्री से लेश्यावाले जीवों

એવા તે જીવો જુદા જૂદા સમયે પાપકર્મને ભોગવે છે. અને તેનો અંત એકી સાથે જ કરે છે. ચોથા ભંગના સંબંધમાં કહેલ ઉત્તરનું તાત્પર્ય સ્પષ્ટ જ છે. 'से तणट्ठेण गोयमा ! तं चेव' આ કારણથી હે ગૌતમ ! મેં એવું કહ્યું છે કે-કેટલાક જીવો પાપકર્મને ભોગવવાનું એક સાથે પ્રારંભ કરે છે, અને તેનો અંત પણ એકી સાથે જ કરે છે. ઈત્યાદિ.

'सलेस्साणं भंते जीवा पावं कम्मं एवं चेव' હે ભગવન્ લેશ્યાવાળા જે જીવો છે, તેઓ એક સાથે પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ કરે છે ? અને એકી સાથે જ તેનો અંત કરે છે? ૧ અથવા-પાપકર્મનો ઉપભોગ એકીસાથે કરે છે, અને જુદા જુદા સમયમાં તેનો વિનાશ કરે છે ? ૨ અથવા પાપકર્મનો ઉપભોગ જુદા જુદા સમયે કરે છે, અને તેનો વિનાશ એકી સાથે કરે છે? ૩ અથવા પાપકર્મ ભોગવવાનું જુદા જુદા સમયમાં કરે છે, અને તેનો વિનાશ પણ જુદા જુદા સમયે કરે છે ? આ પ્રમાણેનો પ્રશ્ન ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને

प्रास्थापयन् समकमेव न्यस्थापयन्, तथा एके केचन जीवाः समकं प्रास्थापयन् विषमतया न्यस्थापयन् तथा केचन सलेश्याजीवाः विषमतया प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन् तथा एके केचन सलेश्य जीवाः विषमतया प्रास्थापयन् विषमतया न्यस्थापयन् इति चतुर्भङ्गयोत्तरम् । तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते, समकं प्रास्थापयन् सलेश्यजीवाः समकं न्यस्थापयन् इत्यादि प्रश्नः, हे गौतम ! चतु-

को लेकर पापकर्म के भोगने का और विनाश के विषय में पूछा है-सो प्रभु इसका उत्तर देते हुए उनसे कहते हैं-'गोयमा !' हे गौतम ! कितनेक लेश्यावाले जीव ऐसे भी होते हैं जो पापकर्म का भोगना एक ही साथ प्रारम्भ करते हैं और एक साथ उसका विनाश करते हैं १ तथा-कितनेक जीव ऐसे होते हैं-जो पापकर्म का भोगना तो साथ-साथ प्रारम्भ करते हैं-पर विनाश उसका भिन्न-भिन्न समय में करते हैं २ तथा-कितनेक सलेश्य जीव ऐसे भी होते हैं जो भिन्न-भिन्न काल में पापकर्म का भोगना प्रारम्भ करते हैं और एक ही काल में उसका विनाश करते हैं३ तथा-कितनेक सलेश्य जीव ऐसे भी होते हैं-जो भिन्न-भिन्नकाल में पापकर्म का भोगना प्रारम्भ करते हैं और भिन्न भिन्न काल में ही उसका विनाश करते हैं ४। इस पर पुनः गौतमस्वामी प्रभुश्री से ऐसा पूछा है-हे भदन्त ! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि कितनेक सलेश्य जीव पापकर्म का भोगना साथ-साथ प्रारम्भ करते हैं और साथ-साथ-ही उसका विनाश करते हैं इत्यादि,

લેશ્યાવાળા જીવોને ઉદ્દેશીને પાપકર્મ ભોગવવાના તથા તેના વિનાશના સંબંધમાં પૂછેલ છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે--'ગોયમા' ! હે ગૌતમ ! કેટલાક લેશ્યાવાળા જીવો એવા પણ હોય છે કે-જેઓ એકી સાથે જ પાપ-કર્મનો ઉપભોગ કરે છે. અને તેનો વિનાશ પણ એકી સાથે જ કરે છે. ૧ કેટલાક જીવો એવા હોય છે કે જેઓ પાપકર્મ ભોગવવાનો તો એક સાથે પ્રારંભ કરે છે. પરંતુ તેનો વિનાશ જુદા જુદા સમયે કરે છે ૨ તથા કેટલાક સલેશ્ય-લેશ્યાવાળા જીવો એવા પણ હોય છે કે-જેઓ જુદા જુદા સમયમાં પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ કરે છે અને એકી સાથે એક સમયે તેનો વિનાશ કરે છે ૩, તથા કેટલાક લેશ્યાવાળા જીવો એવા હોય છે કે જેઓ જુદા જુદા સમયમાં પાપકર્મને ભોગવવાનો આરંભ કરે છે, પરંતુ જુદા જુદા કાળમાં તેનો વિનાશ કરે છે. ૪

ફરીથી આ વિષયમાં ગૌતમસ્વામી પ્રભુશ્રીને પૂછે છે કે-હે ભગવન્ એવું આપ શા કારણથી કહો છો કે કેટલાક લેશ્યાવાળા જીવો પાપકર્મ ભોગવવાનું એક સાથે કરે છે, અને તેનો અંત પણ એક સાથે જ કરે છે? ઇત્યાદિ.

विधा जीवाः प्रज्ञप्ता इत्याद्युत्तरम् । एष एव 'एवं चेव' इति प्रकरणस्याभिप्राय इति । 'एवं सव्वट्ठाणेसु वि जाव अणागारोवउत्ता' एवं यथा सलेश्यापदे कथितं लेश्यापदमाश्रित्य यथा यथा विचारः कृत स्तेनैव रूपेण सर्वपदेष्वपि कृष्णलेश्यादि पदेभ्य यावदनाकारोपयोगपर्यन्त पदान्याश्रित्य विचारः करणीयः, कृष्णलेश्याः खलु भदन्त ! जीवाः पापं कर्म समकं न्यस्थापयन् इत्यादिरूपेण आलापका ज्ञातव्याः । 'एए सव्वे वि पया एयाए वत्तव्वयाए भाणियव्वा' एतानि लेश्यादिनी सर्वाण्यपि पदानि एतया वक्तव्यतया भणितव्यानि । वक्तव्यता प्रकारस्तु सामान्यजीवप्रकरणवदेव चतुर्भङ्गीतया ज्ञातव्य इति । सामान्यतो जीवमाश्रित्य

इस प्रश्न के उत्तर देते हुए गौतमस्वामी से प्रभुश्री कहते हैं–हे गौतम ! जीव चार प्रकार के कहे गये हैं–ऐसा कथन जो जीवके प्रकरण में कहा जा चुका है–वैसा ही कथन यहां पर भी उत्तर के रूप में जानना चाहिये, यही अभिप्राय 'एवं चेव' इस सूत्रपाठ का है । 'एवं सव्वट्ठाणेसु वि जाव अणागारोवउत्ता' जैसा–जैसा कथन सलेश्य पद को आश्रित करके किया गया है वैसा–ही कथन यावत् अनाकारोपयुक्त पद तक के समस्त पदों को आश्रित करके कहना चाहिये, यहां आलापक 'कृष्णलेश्याः खलु भदन्त ! जीवाः पापं कर्म समकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन्' इत्यादि रूप में जानना चाहिये । 'एए सव्वे वि पया एयाए वत्तव्वयाए भाणियव्वा' ये लेश्यादिक समस्त ही पद इस वक्तव्यता से ही जानना चाहिये । वक्तव्यता का प्रकार तो सामान्य जीव प्रकरण के जैसा ही चतुर्भंगी रूप से समझना चाहिये,

આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે–હે ગૌતમ ! જીવો ચાર પ્રકાર ના કહ્યા છે, એ પ્રમાણેનું કથન જીવના સંબંધમાં જીવ પ્રકરણમાં જે કહેવામાં આવી ગયું છે, એજ પ્રમાણેનું કથન અહિયાં પણ ઉત્તરરૂપે સમજવું. એજ અભિપ્રાયથી પ્રભુશ્રીએ 'एवं चेव' આ પ્રમાણે સૂત્રપાઠ કહેલ છે. 'एवं सव्वट्ठाणेसु वि जाव अणागारोवउत्ता' જે પ્રમાણેનું કથન લેશ્યાવાળા જીવોનો આશ્રય કરીને કરેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન યાવત્ અનાકારોપયોગવાળા સુધીના સઘળા પદોનો આશ્રય કરીને કહેવા જોઇએ. તેના સંબંધમાં આલાપકો આ પ્રમાણે છે— 'कृष्णलेश्याः खलु भदन्त जीवाः पापं कर्म समकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन्' વિગેરે રૂપથી સમજવા જોઈએ. 'एए सव्वे वि पया एयाए वत्तव्वयाए भाणियव्वा' આ લેશ્યા વિગેરે સઘળા પદો આ કથનથી જ સમજવા જોઇએ અને કથનનો પ્રકાર સામાન્ય જીવની જેમજ ચાર ભંગાત્મક સમજવો જોઇએ

विचारः कृतः, अथ जीवविशेषमाश्रित्य विचारयन्नाह-'नेरइया णं' इत्यादि, 'नेरइया णं भंते ! पावं कम्मं किं समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु पुच्छा' नैरयिकाः खलु भदन्त ! पापं कर्म किं समकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन्? अथवा समकं प्रास्थापयन् विषमतया न्यस्थापयन् ? इत्यादि सम्पूर्णमपि प्रश्न प्रकरणं पृच्छया संग्राह्यम् । भगवानाह-गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' अस्त्येकके नारकाः समकमेव

इस प्रकार सामान्य जीव को आश्रित करके विचार किया-अब जीव विशेष को आश्रित करके विचार करने के निमित्त सूत्रकार कहते हैं- 'नेरइयाणं भंते ! पावं कम्मं किं समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' हे भदन्त ! नैरयिक क्या पापकर्म को भोगने का प्रारम्भ एक काल में-साथ२करते हैं और एक ही काल में-साथ२-में क्या उसका अन्त करते हैं१ अथवा-पापकर्म को भोगने का प्रारम्भ एक काल में करते हैं और उसका अन्त भिन्न-भिन्न काल में करते हैं अथवा उसका भोगने का प्रारंभ भिन्न-भिन्न काल में करते हैं और अन्त एक काल में करते हैं अथवा उसका भोगने का प्रारंभ भी वे भिन्न भिन्न काल में करते हैं और उसका अन्त भी भिन्न भिन्न काल में करते हैं ? इस प्रकार से पृच्छा शब्द से गृहीत इस प्रश्न प्रकरण के कारण उत्तर रूप में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! हे गौतम ! 'अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' कितनेक नारक जीव ऐसे होते हैं जो पापकर्म का भोगना एक साथ प्रारम्भ करते हैं और एक ही साथ उसका अन्त

આ રીતે સામાન્ય જીવનો આશ્રય કરીને વિચાર કરવામાં આવેલ છે.

હવે જીવ વિશેષનો આશ્રય કરીને વિચાર પ્રગટ કરવા માટે સૂત્રકાર કહે છે કે--'नेरइयाणं भंते ! पावं कम्मं किं समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' હે ભગવન્ નૈરયિકો પાપકર્મનો પ્રારંભ એક કાળમાં-એક સાથે કરે છે ? અને તેનો અંત પણ એકી સાથે જ કરે છે ? અથવા-પાપકર્મને ભોગવવનો પ્રારંભ એક કાળમાં કરે છે ? અને તેનો અંત જુદા જુદા કાળમાં કરે છે ? ૨ અથવા તેને જુદા જુદા સમયે ભોગવે છે ? અને અંત એક કાળમાં કરે છે ? ૩ અથવા તેનો ભોગ પણ જુદા જુદા સમયે કરે છે, અને અંત પણ જુદા જુદા સમયે કરે છે ? આ પ્રમાણેનો ચાર ભંગાત્મક પ્રશ્ન 'પુચ્છા' શબ્દથી ગ્રહણ કરીને પૂછેલ છે, આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે 'गोयमा' ! હે ગૌતમ ! 'अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' કેટલાક જીવો એવા હોય છે કે-જેઓ આ પાપકર્મને ભોગવવાનો પ્રારંભ એક સાથે કરે છે, અને

मास्थापयन् समकमेव न्यस्थापयन् 'एवं जहेव जीवाणं तहेव भाणियव्वं जाव अणागारोवउत्ता' एवं यथैव जीवानां तथैव भणितव्यं यावदनारकारोपयुक्ताः, सामान्यतो जीवप्रकरणे येन प्रकारेण कथितं प्रश्नोत्तरादिकं तेनैव क्रमेण नारक-जीवप्रकरणेऽपि सर्वं प्रश्नोत्तरादिकं ज्ञातव्यम्, यावदनाकारोपयुक्तप्रकरणम्। सलेश्यनारकमधिकृत्य चतुर्भङ्गा वक्तव्याः कृष्णलेश्यनारकमधिकृत्य चतुर्भङ्गी वक्तव्या यावदनाकारोपयोगयुक्तनारकमधिकृत्य सामान्यजीवदण्डकवदेव सर्वत्र पदेषु चतुर्भङ्गी वक्तव्या। 'एवं जाव वेमाणियाणं' एवं यावद्वैमानिकानाम् एवं यथा नारकदण्डके लेश्यादिद्वाराणि अनाकारोपयोगान्तानि पदान्याश्रित्य चतु-

करते हैं। 'एवं जहेव जीवाणं तहेव भाणियव्वं जाव अणागारोवउत्ता' इस प्रकार से जैसे कथन जीव के सम्बन्ध में किया गया है–वैसा ही समस्त कथन नैरयिकों के सम्बन्ध में भी यावत् अनाकारोपयुक्त नैरयिक पद तक समझना चाहिये। अर्थात्–सामान्य जीव के प्रकरण में जिस प्रकार से प्रश्नोत्तरादिक कहा गया है उसी प्रकार से नारक जीव प्रकरण में भी सब प्रश्नोत्तर आदिक जानना–चाहिये। और यह कथन यावत् अनाकारोपयुक्त प्रकरण तक समझना चाहिये। सलेश्य नारक को लेकर चतुर्भंगी कृष्णलेश्य नारक को लेकर चतुर्भंगी, यावत् अनाकारोपयुक्त नारक को लेकर चतुर्भंगी सामान्य जीव दण्डक के जैसी समस्त पदों में कहनी चाहिये, 'एवं जाव वेमाणियाणं' जिस प्रकार से नारक दण्डक में लेश्यादिद्वार से लेकर अनाकारोपयोग तक के पदों को आश्रित करके चतुर्भंगी प्रकट की गई है उसी प्रकार से

તેના અન્ત પણ એકી સાથે જ કરે છે. ૧ 'एवं जहेव जीवाणं तहेव भाणियव्वं जाव अणागारोवउत्ता' આ પ્રમાણે જે રીતે જીવના સંબંધમાં કથન કહેલ છે, એજ પ્રમાણે સઘળું કથન નૈરયિકોના સંબંધમાં પણ યાવત્ અનાકારોપયુક્ત નૈરયિક પદ સુધી સમજી લેવું. અર્થાત્ સામાન્ય જીવના પ્રકરણમાં જે પ્રમાણે પ્રશ્નોત્તર વિગેરે કહ્યા છે, એજ પ્રમાણે નારક જીવ પ્રકરણમાં પણ પ્રશ્નોત્તરો સમજી લેવા. અને આ સઘળું કથન યાવત્ અનાકારોપયોગના પ્રકરણ સુધીનું અહિયાં સમજવું. લેશ્યાવાળા નારકને લઈને ચાર ભંગો, કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નારકો ને લઈને ચાર ભંગો, યાવત્ અનાકારોપયોગવાળા નારક ને લઈને ચાર ભંગો સામાન્ય દંડકમાં કહ્યા પ્રમાણે સઘળા પદોમાં સમજવા. 'एवं जाव वेमाणियाणं' જે પ્રમાણે નારકના દંડકમાં લેશ્યા વિગેરે દ્વારથી લઈને અનાકારોપયોગ સુધીના પદોનો આશ્રય કરીને ચાર ભંગો કહ્યા છે, એજ પ્રમાણે એક ઇંદ્રિયવાળા પૃથ્વી

भंङ्गी दर्शिता तथैव एकेन्द्रियपृथिव्यादित आरभ्य वैमानिकान्त सर्वदण्डकेषु लेश्यादित आरभ्य अनाकारोपयोगान्त सर्वपदानाश्रित्य सर्वत्र चतुर्भङ्ग्यादि विचारः कर्तव्य इति । विशेषमाह-'जस्स जं अत्थि तं एएणं चेव कमेणं भाणियव्वं' यस्य जीवस्य यत् लेश्यादिकमस्ति विद्यते तस्य तत् लेश्यादिकम् एतेनै-वोपरिदर्शितेनैव प्रकारेण चतुर्भङ्ग्यादिरूपेण भणितव्यं वक्तव्यमिति । कथमिवे-त्याह-'जहा पावेणं दंडओ' यथा पापेन दण्डकः चतुर्भङ्गीकः कृतः, एवम् 'एएणं कमेणं अट्ठसु वि कम्मपगडीसु अट्ठदण्डगा भाणियव्वा जीवादीया वेमाणिय पज्जवसाणा' एतेनोपरिदर्शितेन क्रमेण प्रकारेणाष्टास्वपि कर्मप्रकृतिषु अष्टौ दण्डका भणितव्या जीवादिका वैमानिकपर्यवसानाः ज्ञानावरणीयाद्यारभ्य अन्त-रायपर्यन्तेषु नारकवदेव जीवादारभ्य वैमानिकपर्यन्तेषु दण्डके निर्मातव्य इति ।

एकेन्द्रिय पृथिवी आदिकों से लेकर वैमानिकान्त समस्त दण्डकों में लेश्याआदि से लेकर अनाकारोपयोगान्त तक अपने अपने योग्य सर्व पदों को लेकर सर्वत्र चतुर्भंगी का विचार करना चाहिये। 'जं जस्स अत्थि तं एएणं चेव कमेणं भाणियव्वं' परन्तु इतना ध्यान अवश्य रखना चाहिये कि जिस जीव के जो लेश्यादिक हैं वे उसी जीव के ऊपर में दिखाये गये प्रकार के अनुसार चतुर्भंगी आदि रूप से कहना चाहिये 'जहा पावेणं दंडओ' जैसा पाप के साथ चतुर्भंगी कृत दण्डक कहा गया है वैसा ही दण्डक 'एएणं कमेणं अट्ठसु वि कम्मपगडीसु' इसी क्रम से आठों कर्म प्रकृतियों में भी 'अट्ठदंडगा भाणियव्वा' आठ दण्डक कहना चाहिये-'जीवादीया वेमाणियपज्जवसाणा' अर्थात् जीव से लेकर वैमानिक तक के पदों में ज्ञानावरणीय आदिकर्मों के सम्बन्ध में आठ दण्डक पूर्वोक्त चार भंगोंवाला बना-बना कर कहना चाहिये,

કાયિકોથી આરંભીને વૈમાનિકો સુધી સઘળા દંડકોમાં લેશ્યા વિગેરે ને લઇને અનાકારોપયોગ સુધીના પદોને લઈને બધે જ ચાર ભંગાત્મક વિચાર સમજવો.

'जं जस्स अत्थि तं एएणं चेव कमेणं भाणियव्वं' પરંતુ એ ખ્યાલ અવશ્ય રાખવો જોઇએ કે-જે જીવને જે લેશ્યા વિગેરે કહ્યા છે. તે જીવને તે લેશ્યા વિગેરે ઉપર બતાવેલા પ્રકાર પ્રમાણે ચાર ભંગ પણાથી કહેવા જોઈએ. 'जहा पावेणं दंडओ' જે પ્રમાણે પાપકર્મના સંબંધમાં ચતુર્ભંગા-ત્મક દંડકો કહ્યા છે, એજ પ્રમાણેના દંડકો 'एएणं कमेणं अट्ठसु वि कम्मपगडीसु' આજ ક્રમથી આઠે કર્મપ્રકૃતિયોમાં પણ 'अट्ठदंडगा भाणियव्वा' આઠ દંડકો કહેવા જોઈએ. 'जीवादीया वेमाणियपज्जवसाणा' જીવથી આરંભીને વૈમાનિક સુધીના પદોમાં જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે કર્મોના સંબંધમાં પૂર્વોક્ત ચાર ભંગો

'एसो नवदण्डगसंगहिओ पढमो उद्देसो भाणियव्वो' एषः नवदण्डकसंगृहीतः प्रथमोद्देशको भणितव्य इति। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति, हे भदन्त! अनेके जीवाः पापकर्मणामुपभोगं तत्समाप्तिं च सहैव-एककाले एव कुर्वन्तीत्यादिकं यद् देवानुप्रियेण कथितं तत्सर्वम् एवमेव सर्वथा सत्यमेवेति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा च संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति ॥सू० १॥

इति श्री विश्वविख्यात जगद्वल्लभादिपदभूषित बालब्रह्मचारि 'जैनाचार्य' पदभूषित पूज्यश्री 'घासीलाल' व्रतिविरचितायां श्री "भगवती" सूत्रस्य प्रमेयचन्द्रिका ख्यायां व्याख्यायां एकोनत्रिंशत्तमे शतके प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥२९-१॥

'एसो नव दंडगसंगहिओ पढमो उद्देसो भाणियव्वो' इस प्रकार से नव दण्डक सहित यह प्रथम उद्देशक कहने के योग्य हैं।

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! अनेक जीव पापकर्मों का उपभोग और उनका विनाश एक काल में ही करते हैं इत्यादि विषय जो आप देवानुप्रियने कहा है-वह सब सर्वथा सत्य ही है। इस प्रकार कहकर गौतमस्वामीने प्रभुश्री को वन्दना की-नमस्कार किया, वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू०१॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके उनतीसवें शतकका ॥ प्रथम उद्देशक समाप्त ॥ २९-१॥

વાળા આઠ દંડકો બનાવીને તે કહેવા જોઈએ 'एसो नव दंडगसंगहिओ पढमो उद्देसो भाणियव्वो' આ પ્રમાણે નવ દંડકો સહિત આ પહેલો ઉદ્દેશો કહેવો જોઈએ.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ અનેક જીવો પાપકર્મનો ઉપભોગ અને તેનો ક્ષય એક કાળમાંજ કરે છે. ઈત્યાદિ વિષયમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન આપ્ત હોવાથી સર્વથા સત્ય જ છે, આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજ માન થયા ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્ર'ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ઓગણત્રીસમા શતકનો પહેલો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૨૯-૧॥

अथ द्वितीयोद्देशकः प्रारभ्यते-

अनेकेषां जीवानामेकस्मिन् काले कर्मभोगस्तत्परिसमाप्तिश्च भवतीति प्रथमोद्देशके प्रदर्शितं द्वितीये तु अनन्तरोपपन्नकानां नारकादीनां तद्दर्शयिष्यति तदनेन सम्बन्धेन आयातस्य द्वितीयोद्देशकस्येदं सूत्रम्-'अणंतरोववन्नगाणं' इत्यादि।

मूलम्-अणंतरोववन्नगाणं भंते! नेरइया पावं कम्मं किं समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु पुच्छा, गोयमा! अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु१, अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु२। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु तं चेव, गोयमा! अणंतरोववन्नगा नेरइया दुविहा पन्नत्ता तं जहा-अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा१, अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा२। तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा तेणं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु१, तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा, तेणं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु२ से तेणट्ठेणं तं चेव। सलेस्सा णं भंते! अणंतरोववण्णगा नेरइया पावं कम्मं एवं चेव। एवं जाव अणागारोवउत्ता। एवं असुरकुमाराणं एवं जाव वेमाणियाणं। नवरं जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं। एवं नाणावरणिज्जेणं वि दंडओ, एवं निरवसेसं जाव अंतराइएणं सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ ॥सू० १॥

एगूणतिसइमे सए बीओ उद्देसो समत्तो ॥२९-२॥

छाया—अनन्तरोपपन्नकाः खलु भदन्त! नैरयिकाः पापं कर्म किं समकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन् पृच्छा, गौतम! अस्त्येकके समकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन्१, अस्त्येकके समकं प्रास्थापयन् विषमकं न्यस्थापयन्२। तत्केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते अस्त्येकके समकं प्रास्थापयन् तदेव गौतम! अनन्तरोपपन्नका नैरयिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-अस्त्येकके समायुष्काः समोपपन्नकाः१, अस्त्येकके समायुष्का विषमोपपन्नकाः २। तत्र खलु ये ते

समायुष्काः समोपपन्नकाः ते खलु पापं कर्म समकं प्रास्थापयन्, समकं न्यस्थापयन् १, तत्र खलु ये ते समायुष्का विषमोपपन्नका स्ते खलु पापं कर्म समकं प्रास्थापयन् विषमकं न्यस्थापयन् तत् तेनार्थेन तदेव। सलेश्याः खलु भदन्त! अनन्तरोपपन्नका नैरयिकाः पापं० एवमेव एवं यावदनाकारोपयुक्ताः एवमसुरकुमाराः। एवं यावद् वैमानिकाः। नवरं यत् यस्यास्ति तत् तस्य भणितव्यम्। एवं ज्ञानावरणीयेनापि दण्डकः। एवं यावत् निरवशेषं यावदन्तरायिकेन। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति यावद्विहरति ॥सू० १॥

एकोनत्रिंशत्तमे शतके द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥२९-२॥

टीका—'अणंतरोववन्नगा णं भंते! नेरइया' अनन्तरोपपन्नकाः-प्रथमसमये उत्पत्तिमन्तः खलु नैरयिकाः 'पावं कम्मं किं समायं पट्ठविंसु समाय निट्ठविंसु' पापं कर्म समकं प्रास्थापयन्-प्रस्थापितवन्तः समकं-समकालमेव न्यस्थापयन्-निष्ठापित-

---

दूसरा उद्देशक का प्रारंभ

अनेक जीवों का एक काल में भी कर्मभोग होता है और कर्म से मुक्त होते हैं इत्यादि विषय प्रथम उद्देशक में प्रकट करने में आया है- अब इस क्रमप्राप्त द्वितीय उद्देशे में अनन्तरोपपन्नक नैरयिकादिकों के विषय में भी यही बात प्रकट की जावेगी-इसी सम्बन्ध को लेकर सूत्रकार ने यह द्वितीय उद्देशक प्रारम्भ किया है-

'अणंतरोववन्नगाणं भंते! नेरइया पावं कम्मं किं समायं'-इत्यादि

टीकार्थ—गौतमस्वामीने प्रभुश्री से ऐसा पूछा है कि 'अणंतरोववन्नगाणं भंते! नेरइया०' हे भदन्त! जो अनन्तरोपपन्नक नैरयिक हैं वे क्या एक साथ ही पापकर्म को भोगना प्रारम्भ करते हैं? अर्थात्

બીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

અનેક જીવોનો એક કાળમાં કર્મભોગ થાય છે, અને કર્મથી મુક્ત થાય છે. વિગેરે વિષય પહેલા ઉદ્દેશામાં પ્રગટ કરવામાં આવ્યો છે. હવે આ ક્રમ પ્રાપ્ત બીજા ઉદ્દેશામાં અનંતરોપપન્નક નૈરયિકો વિગેરેના સંબંધમાં પણ એજ હકીકત કહેવામાં આવે છે. એ સંબંધ ને લઈને સૂત્રકારે આ બીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ કરેલ છે.—'अणंतरोववन्नगाणं भंते! नेरइया पावं कम्मं किं समायं' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને એવું પૂછયું છે કે—'अणंतरोववन्नगाणं भंते नेरइया' હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક જે નૈરયિકો છે, તેઓ એક સમયમાં એક સાથે જ પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ કરે છે? અર્થાત્ ભોગવે છે? અને

न्तः१, अथवा समकं प्रास्थापयन्-प्रस्थापितवन्तः विषमकं-विषमतया न्यस्थापयन् निष्ठापितवन्तः२, 'पुच्छा' पृच्छा-प्रश्न', अनेन संग्राह्यपदौ यथा-अथवा विषमकं विषमतया-प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन्३, अथवा विषमकं प्रास्थापयन् विषमकं न्यस्थापयन् इति । भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' अस्त्येकके अनन्तरोपपन्नका जीवाः समकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन् १, अथवा जीवा अनन्तरोपपन्नकाः युगपदेव प्रथमतया पापं कर्म वेदयितुमारब्धवन्त स्तथा युगपदेव निष्ठां नीतवन्तः इति प्रथमभङ्गः१, तथा-'अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु' समकं प्रास्थापयन् तथा विषमं यथा भवति तथा विषमतया न्यस्थापयन्

भोगते हैं? और एक साथ ही उसका विनाश करते हैं १। (प्रथम समय में उत्पत्तिवाले जो नैरयिक हैं वे अनन्तरोपपन्नक नैरयिक है) अथवा वे पापकर्म का भोगना साथ-साथ प्रारम्भ करते हैं और विनाश भिन्न-भिन्न समय में करते हैं? अथवा-पापकर्मका भोगने का प्रारंभ भिन्न-भिन्न समय में करते हैं और विनाश एक साथ करते हैं?३ अथवा-पापकर्मका भोगना भी भिन्न-भिन्न समय में करते है और विनाश भी भिन्न-भिन्न समय में करते हैं?४ इसके उत्तर में प्रभुश्री उनसे कहते हैं-'गोयमा!' हे गौतम! 'अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' कितनेक अनन्तरोपपन्नक नैरयिक ऐसे हैं जो एक साथ ही पापकर्म का भोगना प्रारंभ करते हैं और एक साथ ही उसका विनाश करते हैं१ तथा-'अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु'

એક સાથે જ તેનો ક્ષય કરે છે? પ્રથમ સમયમાં ઉત્પત્તિવાળા જે નૈરયિકો છે, તે અનંતરોપપન્નક નૈરયિક કહેવાય છે. અથવા-તેઓ પાપકર્મ ભોગવવાનું એક સાથે કરે છે? અથવા-પાપકર્મ ભોગવવાનું એક સાથે કરે છે? અને તેનો ક્ષય જુદા જુદા સમયમાં કરે છે? ૨ અથવા-પાપકર્મ ભોગવવાનું જુદા જુદા સમયે કરે છે? અને તેનો વિનાશ એક સાથે કરે છે? ૩ અથવા પાપકર્મ ભોગવવાનું પણ જુદા જુદા સમયમાં કરે છે? અને તેનો વિનાશ પણ જુદા જુદા સમયે કરે છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'ગોયમા' હે ગૌતમ! 'अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' કેટલાક અનંતરોપપન્નક નૈરયિકો એવા હોય છે કે-જેઓ એક સાથે જ પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ કરે છે, અને તેનો ક્ષય-વિનાશ પણ એક સાથે જ કરે છે. ૧ તથા 'अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु' કેટલાક અનંતરોપપન્નક

एकसमये एव जायमानत्वात् भङ्गद्वयमेव भवति। अनन्तरोपपन्नत्वेन तृतीयचतुर्थयोर्भङ्गयोरभाव इति। पुनः प्रश्नयन्नाह-'से केणट्ठेणं' इत्यादि, 'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु-तं चेव' तत् केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते यत् अस्त्येकके समकं प्रास्थापयन् समकमेव न्यस्थापयन् तदेवेति तथा समकं प्रास्थापयन् विषमकं न्यस्थापयन् इत्यत्रान्तरप्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'अणंतरोववन्नगा नेरइया दुविहा पन्नत्ता' अनन्तरोपपन्नका नैरयिका द्विविधाः-द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः 'तं जहा' तद्यथा 'समाउया समोववन्नगा' समायुष स्तुल्यायुष्कवन्तः अनन्तरोपपन्नकानां

कितनेक अनन्तरोपपन्नक नैरयिक ऐसे हैं-जो एक साथ तो पापकर्मका भोगना प्रारंभ करते हैं पर उसका विनाश एक साथ नहीं करते-भिन्न-भिन्न समय में करते है, यहां ये दो ही भंग होते हैं, क्योंकि अनन्तरोपपन्नक जीवों में तृतीय और चतुर्थ ये दो भंग नहीं होते हैं।

'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ, अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु तं चेव' हे भदन्त ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि कितनेक अनन्तरोपपन्नक नैरयिक जीव ऐसे होते हैं कि एक साथ पापकर्म को भोगना प्रारंभ करते हैं और एक साथ ही उसका विनाश करते हैं? तथा कितनेक अनन्तरोपपन्नक नैरयिक ऐसे होते हैं जो एक साथ तो पापकर्म का भोगना प्रारंभ करते हैं पर भिन्न भिन्न समय में उसका विनाश करते हैं? इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा!' अणंतरोववन्नगा नेरइया दुविहा पन्नत्ता' हे गौतम! अनन्तरोपपन्नक

નૈરયિકો એવા હોય છે કે-જેઓ પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ તો એક સાથે જ કરે છે, પરંતુ તેનો ક્ષય વિનાશ એક સાથે કરતા નથી. અર્થાત્ જુદા જુદા સમયે તેનો ક્ષય કરે છે. અહિયાં આ બેજ ભંગો કહ્યા છે. કેમકે-અનંતરોપપન્નક જીવોમાં ત્રીજો અને ચોથો એ બે ભંગો હોતા નથી.

से केणट्ठेणं भंते! ,एवं वुच्चइ. अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु तं चेव, હે ભગવન્ આપ એવું શા કારણથી કહો છો? કે કેટલાક અનંતરોપપન્નક નૈરયિક જીવો એવા હોય છે કે જેઓ એક સાથે પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ કરે છે, અને એકી સાથે જ તેનો ક્ષય કરે છે ૧ તથા કેટલાક અનંતરોપપન્નક નૈરયિક જીવો એવા હોય છે કે જેઓ પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભતો એક સાથે કરે છે. પરંતુ તેનો વિનાશ જુદા જુદા સમયે કરે છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा! अणंतरोववन्नगा नेरइया दुविहा पन्नत्ता' હે ગૌતમ! અનંતરોપપન્નક નૈરયિક

सम एवायुरुदयो भवति आयुषो वैषम्ये अनन्तरोपपन्नत्वमेव न स्यात्, आयुः प्रथमसमयवर्त्तित्वात् तेषां समोपपन्नकाः मरणानन्तरं परभवोत्पत्तिमाश्रित्य ते च मरणकाले भूतपूर्वगत्या अनन्तरोपपन्नकाः कथ्यन्ते इति। 'अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा' अस्त्येकके समायुषो विषमोपपन्नकाः विषमोपपन्नकत्वम् अत्रापि संभवति, मरणवैषम्यादिति। अनन्तरोपपन्नकेषु तृतीयचतुर्थभङ्गौ न संभवतोऽतोऽत्र तृतीयचतुर्थौ न दर्शितौ अनन्तरोपपन्नत्वादेवेति। 'तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा' तत्र तयो द्वयोरनन्तरोपपन्नकयोर्मध्ये ये अनन्तरोपपन्ननारकाः समायुषः समोपपन्नकाश्च 'तेणं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु

नैरयिक दो प्रकार के होते हैं-'तं जहा' जैसे कि-'समाउया समोववन्नगा' एक वे जो तुल्य आयुवाले हो और समानकाल में परभव में उत्पन्न हुए हैं १तथा-द्वितीय वे-जो समकाल में आयुष के उदयवाले हों और परभव में भिन्न-भिन्न समय में उदय हुए हों २ अनन्तरोपपन्नक जीवों की आयुका उदय समान ही होता है। आयुकी विषमता में उनमें अनन्तरोपपन्नता ही नहीं बनती है। ये सब समोपपन्नक आयुके प्रथम समयवर्ती होते हैं। तथा ये समोपपन्नक इसलिये कहे गये हैं कि ये मरण के अनन्तर ही परभव में उत्पन्न हो जाते हैं। इसलिये ये मरणकाल में भूतपूर्व गति से अनन्तरोपपन्नक कहलाते हैं। तथा द्वितीय भंग में मरण की विषमता से इनमें विषमोपपन्नकता कही गई है। यहां आदि के ये दो भंग ही संभवित हैं-तृतीय चतुर्थ नहीं। इसलिये वे यहां प्रकट नहीं किये गये हैं। 'तत्थ णं

બે પ્રકારના હોય છે, 'तं जहा' તે આ પ્રમાણે છે. 'समाउया समोववन्नगा' એક એ કે જેઓ સમાન આયુવાળા હોય છે, અને સમાન કાળમાં પરભવમાં ઉત્પન્ન થયા હોય ૧ તથા--બીજા એ કે જેઓ સમાન કાળમાં આયુના ઉદયવાળા થયા હોય ૨ અનંતરોપપન્નક જીવોના આયુષ્યનો ઉદય સમાન જ હોય છે. આયુના વિષમપણામાં તેઓમાં અનંતરોપપન્નકપણું જ બનતું નથી. તેઓ બધા સમોપપન્નક આયુના પ્રથમ સમયમાં રહેનારા હોય છે. તથા તેઓને સમોપપન્નક એ માટે કહ્યા છે કે-તેઓ મરણ પછી જ પરભવમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. તેથી તેઓ મરણ કાળમાં ભૂતપૂર્વ ગતિથી અનંતરોપપન્નક કહેવડાવે છે. તથા બીજા ભંગમાં મરણના વિષમપણાથી તેઓમાં વિષમોપપન્નકપણું કહેલ છે. અહિયાં પહેલો અને બીજો એ બે ભંગો જ સંભવિત કહ્યા છે. ત્રીજો અને ચોથો એ ભંગો તેઓને હોતા નથી. તેથી તે બે ભંગો અહીં કહ્યા નથી. 'तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा'

समायं निट्ठविंसु' ते अनन्तरोपपन्नकाः खलु नारकाः पापम्-अशुभं कर्म समकमेव प्रास्थापयन् समकमेव न्यस्थापयन् चेति। 'तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा' तत्र द्वयोर्मध्ये खलु ये नारकाः समायुषो विषमोपपन्नकाः 'तेणं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु' ते खलु पापं कर्म समकमेव प्रास्थापयन् विषमकं-विषमतया न्यस्थापयन् इति 'से तेणट्ठेणं तं चेव' तत्तेनार्थेन हे गौतम! एवमुच्यते अस्त्येकके समकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन्, अस्त्येकके समकं प्रास्थापयन् विषमकं न्यस्थापयन्, इति। 'सलेस्सा णं भंते! अणंतरोववन्नगा नेरइया पावं०' सलेश्याः खलु भदन्त! अनन्तरोपपन्नका नारकाः समकं प्रास्थापयन् समकमेव न्यस्थापयन्, अथवा समकमेव प्रास्थापयन् विषमकं

जे ते समाउया समोववन्नगा' इनमें जो अनन्तरोपपन्ननारक समान आयुवाले और समोपपन्नक हैं 'तेणं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' वे पापकर्म का भोगना एक साथ प्रारम्भ करते हैं और एक साथ उनका विनाश करते हैं। तथा-'तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा-तेणं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु' जो अनन्तरोपपन्ननारक समान आयुवाले होते हुए भी भिन्न-भिन्न समय में परभव में उत्पत्तिवाले हैं-वे पापकर्म को एक साथ तो भोगते हैं पर उसका विनाश वे भिन्न-भिन्न समय में करते हैं 'से तेणट्ठेणं तं चेव' इसलिये हे गौतम! मैंने ऐसा कहा है कि कितनेक अनन्तरोपपन्नक नैरयिक जीव ऐसे होते हैं जो पापकर्म का भोगना साथ-साथ प्रारम्भ करते हैं और साथ-साथ-उसका विनाश करते हैं इत्यादि, 'सलेस्साणं भंते! अणंतरोववन्नगा नेरइया पावं' हे भदन्त!

આમાં જે અનંતરોપપન્નક નારક સમાન આયુવાળા અને સમાન કાળમાં ઉત્પન્ન થવાવાળા હોય છે, 'पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु' તેઓ પાપકર્મ ભોગવવાનું એક સાથે જ કરે છે, અને તેનો વિનાશ પણ એક સાથે જ કરે છે. તથા 'तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा तेणं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु' જે અનંતરોપપન્નક નારક સમાન આયુવાળા હોવા છતાં પણ જુદા જુદા સમયમાં પરભવમાં ઉત્પન્ન થવાવાળા હોય છે, તેઓ એક સાથે પાપકર્મને ભોગવે તો છે, પરંતુ તેનો વિનાશ જુદા જુદા સમયે કરે છે, 'से तेण ट्ठेणं तं चेव' તેથી હે ગૌતમ! મેં એવું કહ્યું છે કે-કેટલાક અનંતરોપપન્નક નૈરયિક જીવો એવા હોય છે કે-જેઓ એક સાથે પાપકર્મને ભોગવે છે, અને એકી સાથે તેનો વિનાશ કરે છે, ઈત્યાદિ.

'सलेस्साणं भंते! अणंतरोववन्नगा! नेरइया पाव' હે ભગવન્ જેઓ લેશ્યાવાળા અનંતરોપપન્નક નૈરયિક છે તેઓ પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ

न्यस्थापयन् इत्यादि क्रमेण चतुर्भङ्गकः प्रश्नः, उत्तरमाह-'एवं चेव त्ति' एवमेव यथैवानन्तरोपपन्नकनारकाणां द्विभङ्गकमेवोत्तरम् तथैव सलेश्यानन्तरोपपन्नकेऽपि द्विभङ्गकमेवोत्तरम्, अस्त्येकके समकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन् तथा-केचन सलेश्यानन्तरोपपन्ननारकाः समकं प्रास्थापयन् विषमकं न्यस्थापयन् इति। तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते सलेश्या अनन्तरोपपन्नका नारकाः केचन समकं प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन् केचन तथाविधा नारकाः समकमेव प्रास्थापयन् विषमकं न्यस्थापयन् गौतम ! सलेश्या अनन्तरोपपन्ननारका द्विप्रकारका भवन्ति

जो सलेश्य अनन्तरोपपन्नक नैरयिक हैं वे पापकर्म को एक साथ भोगना प्रारम्भ करते हैं और एक साथ ही उसका विनाश करते हैं क्या? अथवा-एक साथ पापकर्म का भोगना प्रारम्भ करते हैं और विनाश उसका भिन्न-भिन्न समय में करते हैं क्या? इत्यादि रूप से यहां चार भंगोवाला प्रश्न गौतमस्वामी की तरफ से उपस्थित किया गया है। इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'एवं चेव त्ति' हे गौतम! जिस प्रकारका उत्तर दो भंगो को लेकर अनन्तरोपपन्नक नैरयिकों के प्रकरण में दिया गया है-ठीक वैसा ही उत्तर आदि के दो भंगों को लेकर यहां पर भी समझना चाहिये, इस प्रकार कितनेक सलेश्य अनन्तरोपपन्नक नैरयिक ऐसे होते हैं जो एक साथ पापकर्म का भोगना प्रारम्भ करते हैं और एक साथ ही उसका विनाश करते हैं-तथा कितनेक सलेश्य अनन्तरोपपन्नक नैरयिक ऐसे होते हैं जो पापकर्म का भोगना एक साथ तो प्रारम्भ करते हैं पर उसका विनाश भिन्न भिन्न काल में करते हैं।

એક સાથે કરે છે? અને તેનો વિનાશ પણ એક સાથે જ કરે છે! અથવા-એક સાથે પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ કરે છે? અને તેનો વિનાશ જુદા જુદા સમયે કરે છે? વિગેરે પ્રકારથી અહિયાં ચાર ભંગોવાળો પ્રશ્ન ગૌતમ સ્વામીએ પૂછેલ છે, આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'एवं चेव त्ति' હે ગૌતમ! જે પ્રમાણેનો ઉત્તર બંને ભંગોના સંબંધમાં અનંતરોપપન્નક નૈરયિકોના પ્રકરણમાં આપેલ છે, એજ પ્રમાણેનો ઉત્તર પહેલો અને બીજો એ બે ભંગોને લઈને અહિયાં પણ સમજી લેવા, આ રીતે કેટલાક લેશ્યાવાળા અનંતરોપપન્નક નૈરયિકો એવા હોય છે કે-એક સાથે પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ કરે છે. અને એકી સાથે જ તેનો ક્ષય વિનાશ કરે છે. તથા-કેટલાક લેશ્યાવાળા અનંતરોપપન્નક નૈરયિકો એવા હોય છે, કે જેઓ પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ એક સાથે કરે છે. પરંતુ તેનો ક્ષય વિનાશ જુદા જુદા કાળમાં કરે છે, હે ભગવાન્ આપ એવું શા કારણથી

केचन समायुषः समोपपन्नकाः केचन समायुषो विषमोपपन्नकाः तत्र ये ते समायुषः समोपपन्नका स्ते पापं कर्म समकं प्रास्थापयन समकं न्यस्थापयन् तथा तत्र खलु ये ते समायुषो विषमोपपन्नका स्ते समकं प्रास्थापयन विषमकं न्यस्थापयन्, एतेन कारणेन कथयामि यत् सलेश्यानन्तरोपपन्ननारकाः समकं

हे भदन्त! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि जो सलेश्य अनन्तरोपपन्नक नैरयिक हैं उनमें से कितनेक सलेश्य अनन्तरोपपन्न नैरयिक पापकर्म का भोगना एक साथ प्रारम्भ करते हैं और एक साथ उसका विनाश करते हैं? तथा-कितनेक अनन्तरोपपन्न नैरयिक पापकर्म का भोगना एक साथ तो प्रारम्भ करते हैं पर उसका विनाश वे भिन्न२ काल में करते हैं? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभुश्री उनसे कहते हैं-हे गौतम! सलेश्य अनन्तरोपपन्न नैरयिक दो प्रकार के होते हैं-कितनेक समान आयुवाले समोपपन्नक और कितनेक समान आयुवाले विषमोपपन्नक, इनमें जो प्रथम प्रकार के सलेश्य अनन्तरोपपन्न नैरयिक हैं वे पापकर्म का भोगना एक साथ प्रारंभ करते हैं और एक साथ ही उसका विनाश करते हैं, तथा द्वितीय प्रकार के जो सलेश्य अनन्तरोपपन्न नैरयिक हैं वे पापकर्म का भोगना यद्यपि एक साथ प्रारंभ करते हैं पर उसका विनाश भिन्न भिन्न काल में करते हैं। इसीलिये हे गौतम! मैंने पूर्वोक्त रूप से ऐसा कहा है कि कितनेक सलेश्य अनन्तरोपपन्नक नैरयिक ऐसे होते हैं कि जो पापकर्म का भोगना साथ-साथ प्रारम्भ

કહો છે. કે-જે સલેશ્ય અનંતરોપપન્નક નૈરયિકો છે, તેઓ પૈકી કેટલાક લેશ્યાવાળા અનંતરોપપન્નક નૈરયિકો પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ એક સાથે કરે છે, અને તેનો વિનાશ પણ એક સાથે જ કરે છે? તથા કેટલાક અનંતરોપપન્નક નૈરયિકો પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભતો એક સાથે કરે છે, પરંતુ તેનો વિનાશ તેઓ જુદા જુદા સમયે કરે છે, આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી તેઓને કહે છે કે-હે ગૌતમ! લેશ્યાવાળા અનંતરોપપન્નક નૈરયિકો બે પ્રકારના હોય છે. કેટલાક સમાન આયુષ્યવાળા સમોપપન્નક અને કેટલાક સમાન આયુષ્યવાળા વિષમોપન્નક, આમાં જેઓ પહેલા પ્રકારના લેશ્યાવાળા અનંતરોપપન્નક નૈરયિકો હોય છે, તેઓ પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ એક સાથે કરે છે, અને એક સાથે જ તેનો વિનાશ કરે છે. તથા બીજા પ્રકારના જેઓ લેશ્યાવાળા અનંતરોપપન્નક નૈરયિકો છે, તેઓ પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ જોકે એક સાથે કરે છે, પરંતુ તેનો વિનાશ જુદા જુદા કાળમાં કરે છે, તે કારણથી હે ગૌતમ! મેં પૂર્વોક્ત પ્રકારથી એવું કહ્યું છે કે-કેટલાક લેશ્યાવાળા

पापं कर्म प्रास्थापयन् समकं न्यस्थापयन् केचन सलेश्यानन्तरोपपन्ननारकाः पापं कर्म समकं प्रास्थापयन् विषमकमेव न्यस्थापयन्, एतदेव 'एवं चेव' इति प्रकरणेन कथितमिति । 'एवं जाव अणागारोवउत्ता' एवं लेश्यापदवदेव यावदनाकारोपयुक्ताः, अत्र यावत्पदेन कृष्णलेश्यापदत आरभ्य साकारोपयोग-पदपर्यन्तानां ग्रहणं भवति तथा च कृष्णपाक्षिकानन्तरोपपन्नकनारकादारभ्य अनाकारोपयुक्त पर्यन्तनारकविषये पापकर्मणः प्रस्थापने निष्ठापने च समानैव रीति र्ज्ञेयेतिभावः । 'एवं असुरकुमाराणं' एवम्-नारकवदेव असुरकुमाराणामपि सर्वपदेषु एवमेव प्रक्रिया ज्ञातव्या । 'एवं जाव वेमाणियाणं' एवम्-असुरकुमार-वदेव यावद्वैमानिकानाम्-वैमानिकपर्यन्तानाम् 'नवरं जं जस्स अत्थि तं तस्स

करते हैं और उसका विनाश भिन्न भिन्न काल में करते हैं इत्यादि, 'एवं जाव अणागारोवउत्ता' लेश्यापद के जैसे ही यावत् अनाकारोपयुक्त पद तक भी यही कथन का क्रम जानना चाहिये, यहां यावत्पद से नरक योग्य कृष्णलेश्या पद से प्रारम्भ कर साकारोपयोग पद तक के नैरयिकों का ग्रहण हुआ है-तथा च-कृष्णलेश्य अनन्तरोपपन्नक नारक से लेकर अनाकारोपयोगयुक्त तक के पद वाले नारकों के विषय में पापकर्म के भोगने में और उसके विनाश करने में समान रीति जाननी चाहिये, 'एवं असुरकुमाराणं' नारक की जैसी रीति ही असुरकुमारों के समस्त पदों में भी समझनी चाहिये, 'एवं जाव वेमाणियाणं' और इसी प्रकार की रीति यावत् वैमानिकों के विषय में पापकर्मों के भोगने में और उसके विनाश करने में जाननी चाहिये, परन्तु इसमें इतनी विशेषता का ध्यान रखना चाहिये कि जो लेश्यादिक जिसके हो वही उसको कहना चाहिये। दण्डकों की रचना उन-उन पदों

અનંતરોપપન્નક નૈરયિકો એવા હોય છે કે જેઓ પાપકર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ એક સાથે કરે છે, અને તેનો વિનાશ જુદા જુદા સમયમાં કરે છે. ઈત્યાદિ

'एवं जाव अणागारोवउत्ता' લેશ્યાપદના કથન પ્રમાણે જ યાવત્ અનાકારોપયોગવાળા પદ સુધી આ પ્રમાણે જ કથનનો ક્રમ સમજવો જોઇએ. અહીંયા યાવત્પદથી કૃષ્ણલેશ્યાપદથી આરંભીને સાકારોપયોગ પદ સુધીના નૈરયિકો ગ્રહણ કરાયા છે. તથા-કૃષ્ણપાક્ષિક અનંતરોપપન્નક નારકોથી લઇને અનાકારોપયુક્ત સુધીના પદવાળા નારકોના, વિષયમાં પાપકર્મના ભોગવવામાં અને તેનો વિનાશ કરવામાં સરખી રીતે સમજવા. 'एवं असुरकुमारणं' નારકના કથન પ્રમાણે જ અસુરકુમારોના સઘળા પદોમાં પણ સમજવું. 'एवं जाव वेमाणियाणं' આજ પ્રમાણેની રીત યાવત્ વૈમાનિકોના સંબંધમાં પાપકર્મ ભોગવવામાં અને તેનો વિનાશ કરવામાં સમજવી.

भाणियव्वं' नवरं यत् लेश्यादिकं यस्यास्ति-विद्यते तदेव तस्य वक्तव्यम् तत्तत् पदमाश्रित्यैव तत्र दण्डको विधेय इति। 'एवं णाणावरणिज्जेण वि दंडओ' एवं पापकर्मप्रस्थापनवदेव ज्ञानावरणियकर्मणाऽपि दण्डको भणितव्य इति। 'एवं निरवसेसं जाव अंतराइएणं' एवं ज्ञानावरणीयदण्डकवदेव यावत् अन्तरायिकेनाऽपि निरवशेषो दण्डको भणितव्य इति। सेवं भंते! सेवं भते! त्ति जाव विहरइ' तदेवं भदन्त! तदेव भदन्त! इति यावद्विहरति हे भदन्त! कर्मप्रस्थापनादिविषये यद्देवानुप्रियेण कथितं तत्सर्वम् एवमेव-सर्वथा सत्यमेव इति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरति, इति ॥सू० १॥

इति एकोनत्रिंशत्तमे शतके द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥२९-२॥

को लगाकर वहां करनी चाहिये। 'एवं णाणावरणिज्जेण वि दंडओ' पापकर्म के प्रस्थापन के जैसा ही ज्ञानावरणीय कर्म के साथ भी दण्डक कहना चाहिये, 'एवं निरवसेसं जाव अंतराइयं' और यह सब ज्ञानावरणीय के जैसा कथन यावत् अन्तराय कर्म तक करना चाहिये, 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ' हे भदन्त! कर्मप्रस्थापनादि के विषय में जो आप देवानुप्रियने कहा है-वह सब कथन सर्वथा सत्य ही है इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभु को वन्दना की और उन्हें नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्माको भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये॥सू० १॥

द्वितीय उद्देशक समाप्त ॥२९-२॥

પરંતુ તેમાં એ વિશેષ પણાનું ધ્યાન રાખવું કે જે લેશ્યા વિગેરે જેને કહ્યા હોય તેજ લેશ્યા વિગેરે તેને કહેવા જોઈએ. દંડકોની રચના તે તે પદો લગાવીને કહી લેવી. 'एवं णाणावरणिज्जेण वि दंडओ' પાપકર્મના કથન પ્રમાણે જ જ્ઞાનાવરણીય કર્મની સાથે પણ દંડકો કહેવા જોઈએ. 'एवं निरवसेसं जाव अंतराइयं' અને જ્ઞાનાવરણીય કર્મ પ્રમાણેનું કથન યાવત્ અંતરાકર્મ સુધી સમજવું.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ' હે ભગવન્ કર્મના પ્રસ્થાપન વિગેરે વિષયમાં આપદેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે. તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયના સંબંધમાં કહેલ કથન આપ્ત હોવાથી સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ॥સૂ. ૧॥

બીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૨૮-૨॥

तृतीयोद्देशकत आरभ्यैकादशान्ता उद्देशका आरभ्यन्ते

द्वितीयोद्देशकं निरूप्य क्रमप्राप्तान् तृतीयोद्देशकादारभ्य एकादशान्तान् उद्देशकान् निरूपयन्नाह-'एवं' इत्यादि ।

सूत्रम्-एवं एएणं गमएणं जच्चेव बंधिसए उद्देसगपरिवाडी सच्चेव इह वि भाणियव्वा जाव अचरिमो त्ति। अणंतर उद्देसगाणं चउण्हं वि एक्का वत्तव्वया, सेसाणं सत्तण्हं एक्का ॥सू० १॥

एगूणतीसइमे सए तइयाइ एगारस उद्देसगा समत्ता ॥२९॥३-११॥

एगूणतीसइमं कम्मपट्ठवणसयं समत्तं ॥२९॥

छाया—एवमेतेन गमकेन यैव बन्धिशतके उद्देशकपरिपाटी सैवेहापि भणितव्या यावदचरम इति । अनन्तरोद्देशकानां चतुर्णामपि एका वक्तव्यता, शेषाणां सप्तानामेका ॥सू० १॥

॥ एकोनत्रिंशत्तमे शतके तृतीयत एकादशान्ता उद्देशकाः समाप्ताः ॥

॥ एकोनत्रिंशत्तमं कर्मप्रस्थापनशतकं समाप्तम् । २९॥

टीका—'एवं' एवम्-द्वितीयोद्देशकवदेव 'एए णं गमए णं' एतेन-उपरि प्रदर्शितेन गमकेन-गमकक्रमेण 'जच्चेव बंधिसए उद्देसगपरिवाडी' यैव बन्धि

उद्देशक ३-११-

द्वितीय उद्देशक का निरूपण करके अब सूत्रकार क्रम प्राप्त तृतीय उद्देशक से प्रारम्भ कर ११ ग्यारहवें उद्देशक पर्यन्त के उद्देशकों का निरूपण करते हैं-'एवं एएणं गमएणं जच्चेव बंधिसए'-इत्यादि

टीकार्थ- उपर्युक्त गमक क्रम से जो बन्धिशतक में-२६ वें शतक में-उद्देशकों-११ उद्देशकों की परिपाटी-प्रणाली-दिखलाई गई है

ત્રીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

બીજા ઉદ્દેશાનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર ક્રમથી આવેલ આ ત્રીજા ઉદ્દેશાથી પ્રારંભ કરીને અગીયારમા ઉદ્દેશાઓ સુધીના નવ ઉદ્દેશાઓનું નિરૂપણ કરે છે-'एवं एएणं गमएणं जच्चेव बंधिसए' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—ઉપર કહેવા ગમકના પ્રમાણે બંધી શતકમાં એટલે કે—૨૬ છવ્વીસમાં શતકમાં અગિયાર ઉદ્દેશાઓની પરિપાટી-પ્રણાલી બતાવવામાં

शतके षड्विंशतितमे शतके उद्देशकानाम् एकादशसंख्यकानां परिपाटी-प्रणालीप्रदर्शिता 'सच्चेव इह वि भाणियव्वा' सैव परिपाटी इहापि एकोनत्रिंशत्तमशतकस्य तृतीयाद्येकादशान्तोद्देशकेषु भणितव्या 'जाव अचरिमोत्ति' यावद् अचरम इति, अचरमः खलु भदन्त! नारकाः किं समकं प्रास्थापयन् समकं व्यस्थापयन् इत्यादि सर्वमपि प्रकरणं वक्तव्यमिति, यावत्पदेन परम्परोपपन्ना-नन्तरावगाढ-परम्परावगाढा-ऽनन्तराहारक-परम्पराहारका-ऽनन्तरपर्याप्त-परम्परपर्याप्त-चरमोद्देशकपर्यन्तानामष्टानामुद्देशकानां संग्रहोऽत्र करणीयः 'अणंतरउद्देसगाणं चउण्हं वि एका वत्तव्वया' अनन्तरोद्देशकानाम्-अनन्तरपदविशिष्टानां चतुर्णाम्-द्वितीय-चतुर्थ-षष्ठा-ष्टमानाम्-उपपन्ना-ऽवगाढा-ऽऽहारक- पर्याप्तोद्देशकानाम्-

यही परिपाटी इस २९ वे शतक के तृतीय उद्देशक से लेकर ११ वें उद्देशक पर्यन्त के उद्देशकों में कहनी चाहिये, अचरम (अन्तिम) उद्देशक ग्यारहवां उद्देशक है सो यहां तक के उद्देशकों में पूर्वोक्त पद्धति के अनुसार सब कथन करना चाहिये, जैसे कि-हे भदन्त! जो नैरयिक अचरम होते हैं वे क्या पापकर्म का भोगना साथ-साथ प्रारम्भ करते हैं और एक साथ ही क्या उसका विनाश करते हैं? इत्यादि रूप से समस्त प्रकरण यहां कहना चाहिये, यावत्पद से यहां परम्परोपपन्न, अनन्तरावगाढ, परम्परावगाढ, अनन्तराहारक, परम्पराहारक अनन्तरपर्याप्त, परम्परपर्याप्त और चरम इन आठ उद्देशकों का संग्रह किया गया है। 'अणंतरउद्देसगाणं चउण्हं वि एक्का वत्तव्वया' अनन्तर पद विशिष्ट चारों उद्देशकों की द्वितीय उद्देशक, चतुर्थ उद्देशक, षष्ठ उद्देशक और आठवां उद्देशक-इनकी-तथा-उपपन्न, अवगाढ, आहारक एवं पर्याप्त

આવી છે. એજ પ્રણાલી આ ૨૯ ઓગણત્રીસમા શતકના ત્રીજા ઉદ્દેશાથી લઈને અગિયારમા ઉદ્દેશાઓ સુધીના સઘળા ઉદ્દેશાઓમાં કહેવું જોઈએ અચરમ (છેલ્લા) ઉદ્દેશો અગિયારમો ઉદ્દેશો છે તો તે અગિયારમા ઉદ્દેશા સુધીના ઉદ્દેશાઓમાં પૂર્વોક્ત પદ્ધતિ પ્રમાણે સઘળું કથન કહેવું જોઈએ જેમ કે-હે ભગવન્ જે નૈરયિકો અચરમ હોય છે, તેઓ એક સાથે પાપ કર્મ ભોગવવાનો પ્રારંભ કરે છે? અને એક સાથે જ તેનો ક્ષય કરે છે? વિગેરે પ્રકારથી સમગ્ર પ્રકરણ અહિયાં કહેવું જોઈએ. અહિયાં યાવત્પદથી પરંપરોપપન્નક, અનંતરાવગાઢ, પરંપરાવગાઢ, અનંતરાહારક, પરંપરાહારક, અનંતરપર્યાય, પરંપરપર્યાય અને ચરમ આ આઠ ઉદ્દેશાઓનો સંગ્રહ થયો છે. 'अणंतरउद्देसगाणं चउण्हवि एक्का वत्तव्वा' અનંતર પદથી યુક્ત ચારે ઉદ્દેશાઓનું એટલે કે બીજા, ચોથા, છઠ્ઠા અને આઠમા ઉદ્દેશાઓનું તથા ઉપપન્ન, અવ

पि एषा समाना वक्तव्यता भणितव्या 'सेसाणं सत्तण्हं एक्का' शेषाणां सप्तानां समुच्चयोद्देशकपरम्परपदविशिष्टोदपन्नाद्युद्देशकचतुष्टक–चरमाचरमाख्यां प्रथम-तृतीय–पञ्चम–सप्तम–नवम–दशमैकादशानामुद्देशकानामेका वक्तव्यता भणितव्या आलापप्रकारश्च सर्वत्र बन्धिशतकीयोद्देशकवदेव स्वयमेवोहनीय इति ॥सू० १॥

इति श्री–विश्वविख्यातजगद्वल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि – 'जैनाचार्य' पूज्यश्री–घासीलालव्रतिविरचितायां "श्री भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां एकोनत्रिंशत्तमे शतके तृतीयादारभ्यैकादशान्ता उद्देशकाः समाप्ताः।

एकोनत्रिंशत्तमं कर्मप्रस्थानशतकं समाप्तम् ॥२९॥

इन उद्देशकों की वक्तव्यता समान है, तथा–'सेसाणं सत्तण्हं एक्को' शेष सातों–प्रथम, तृतीय, पंचम, सप्तम, नवम, दशम और एकादश इन उद्देशकों की वक्तव्यता एक सी है। यहां सब जगह आलापक प्रकार बन्धि शतकीय उद्देशकों के जैसे अपने आप उत्पन्न करना चाहिये, तृतीय उद्देशक से लेकर ११ वें तक के ९ उद्देशक का कथन समाप्त ॥सू० १॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके उनतीसवें शतकका तीसराउद्देशक से ग्यारहवां पर्यन्त के नव उद्देशक समाप्त ॥२९-३-११॥

२९ वां शतक समाप्त

ગાઢ આહારક અને પર્યાપ્ત આ ઉદ્દેશાઓનું કથન સરખું જ છે, તથા 'सेसाणं सत्तण्हं एक्का' આદીના સાતે એટલે કે–પહેલો, ત્રીજો, પાંચમો સાતમો, નવમો, દશમો અને અગીયારમો આ સાતે ઉદ્દેશાઓનું કથન એક સરખું છે. અહિયાં બધા જ ઉદ્દેશાઓમાં આલાપકનો પ્રકાર બંધી શતકમાં કહેલા ઉદ્દેશાઓ પ્રમાણે સ્વયં સમજી લેવો આ પ્રમાણે આ ત્રીજા ઉદ્દેશાથી લઈને અગીયારમાં ઉદ્દેશા સુધીનું કથન કહેલ છે ॥સૂ૦ ૩-૧૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત "ભગવતીસૂત્ર"ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ઓગણત્રીસમા શતકના ત્રીજા ઉદ્દેશા સુધીના અગીયાર ઉદ્દેશા સુધીના નવ ઉદ્દેશા સમાપ્ત ॥૨૯–૩–૧૧॥

॥ઓગણત્રીસમું શતક સમાપ્ત॥

---

१ समुच्चय उद्देशक परम्परपदयुक्त उत्पन्न आदि ४ उद्देशक, चरम और अचरम उद्देशक इस प्रकार ये ७ सात उद्देशक हैं।

अथ त्रिंशत्तमं शतकमारभते

व्याख्यातमेकोनत्रिंशत्तमं शतकम् क्रमप्राप्तं त्रिंशत्तमं शतकमारभते, अस्य च पूर्वशतकेनायमभिसम्बन्धः—पूर्वशतके कर्मप्रस्थापनाद्याश्रित्य जीवा विचारिताः अत्र तु त्रिंशत्तमे शतके कर्मबन्धादिकारणस्वरूपवस्तुवादमाश्रित्य जीवा एव विचार्यन्ते, तदनेन सम्बन्धेन आयातस्यास्य त्रिंशत्तमशतकस्य द्वादशोद्देशकात्मकस्येदं प्रथमोद्देशकादिसूत्रम्—'कइ णं भंते' इत्यादि ।

मूलम्—कइ णं भंते! समोसरणा पन्नत्ता? गोयमा! चत्तारि समोसरणा पन्नत्ता, तं जहा किरियावाई१, अकिरियावाई२, अन्नाणिय वाई३, वेणइयवाई४। जीवा णं भंते! किं किरियावाई अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाई? गोयमा! जीवा वि रेयावाई वि, अकिरियावाई वि, अन्नाणियवाई वि, वेणइयवाइ वि सलेस्सा णं भंते! जीवा किं किरियावाई पुच्छा, गोयमा! किरियावाई वि, अकिरियावाई वि, अन्नाणियवाई वि, वेणइयवाई वि४। एवं जाव सुक्कलेस्सा। अलेस्साणं भंते! जीवा पुच्छा, गोयमा! किरियावाई, नो अकिरियावाई नो अन्नाणियवाई नो वेणइयवाई। कण्हपक्खियाणं भंते! जीवा किं किरियावाई पुच्छा, गोयमा! नो किरियावाई अकिरियावाई अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि। सुक्खपक्खिया जहा सलेस्सा। सम्मादिट्ठी जहा अलेस्सा। मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया। सम्मामिच्छादिट्ठी णं पुच्छा, गोयमा! नो किरियावाई नो अकिरियावाई अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि। नाणी जाव केवलनाणी जहा अलेस्सा। अन्नाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया। आहारसन्नोवउत्ता जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता जहा सलेस्सा। नो सन्नोवउत्ता जहा

अलेस्सा। सवेदगा जाव नपुंसगवेदगा जहा सलेस्सा। अवेदगा जहा अलेस्सा। सकसाई जाव लोभकसाई जहा सलेस्सा। अकसाई जहा अलेस्सा। सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा। अजोगी जहा अलेस्सा। सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता जहा सलेस्सा। नेरइयाणं भंते! किं किरियावाई पुच्छा, गोयमा! किरियावाई वि जाव वेणइयवाई वि। सलेस्सा णं भंते! नेरइया किं किरियावाई पुच्छा, एवं चेव। एवं जाव काउलेस्सा, कण्हपक्खिया, किरिया विवज्जिया। एवं एएणं कमेणं जच्चेव जीवाणं वत्तव्वया सच्चेव नेरइयाणं वत्तव्वया वि जाव अणागारोवउत्ता नवरं जं अत्थि तं भाणियव्वं, सेसं न भण्णइ। जहा नेरइया, एवं जाव थणियकुमारा। पुढवीकाइयाणं भंते! किं किरियावाई पुच्छा, गोयमा! नो किरियावाई अकिरियावाई वि, अन्नाणियवाई वि, नो वेणइयवाई। एवं पुढविकाइयाणं जं अत्थि तत्थ सव्वत्थ वि एयाइं दो मज्झिल्लाइं समोसरणाइं जाव अणागारोवउत्ता वि। एवं जाव चउरिंदियाणं सव्वट्ठाणेसु एयाइं चेव मज्झिल्लगाइं दो समोसरणाइं। सम्मत्तनाणे हि वि एयाणि चेव मज्झिल्लगाइं दो समोसरणाइं। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा जीवा नवरं जं अत्थि तं भाणियव्वं। मणुस्सा जहा जीवा तहेव निरवसेसं। वाणमंतरजोइसिय वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥सू० १॥

छाया—कति खलु भदन्त! समवसरणानि प्रज्ञप्तानि? गौतम! चत्वारि समवसरणानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—क्रियावादी अक्रियावादी अज्ञानवादी विनयवादी च। जीवाः खलु भदन्त! किं क्रियावादिनोऽक्रियावादिनः अज्ञानवादिनः वैनयिकवादिनः? गौतम! जीवाः क्रियावादिनोऽपि अक्रियावादिनोऽपि आज्ञानिक-

वादिनोऽपि वैनयिकवादिनोऽपि । सलेश्याः खलु भदन्त ! जीवाः किं क्रियावादिनः पृच्छा, गौतम ! क्रियावादिनोऽपि अक्रियावादिनोऽपि अज्ञानिकवादिनोऽपि वैनयिकवादिनोऽपि । एवं यावत् शुक्ललेश्याः । अलेश्याः खलु भदन्त ! जीवाः पृच्छा, गौतम ! क्रियावादिनः, नो अक्रियावादिनः, नो वैनयिकवादिनः । कृष्णपाक्षिकाः खलु भदन्त ! जीवाः किं क्रियावादिनः, पृच्छा, गौतम ! नो क्रियावादिनः, अक्रियावादिनः, अज्ञानिकवादिनोऽपि वैनयिकवादिनोऽपि । शुक्लपाक्षिकाः यथा सलेश्याः, सम्यग्दृष्टयो यथा अलेश्याः मिथ्यादृष्टयो यथा कृष्णपाक्षिकाः । सम्यग्मिथ्यादृष्टयः खलु पृच्छा, गौतम ! नो क्रियावादिनः नो अक्रियावादिनः, अज्ञानिकवादिनोऽपि वैनयिकवादिनोऽपि । ज्ञानिनो यावत् केवलज्ञानिनः, यथा अलेश्याः । अज्ञानिनो यावद् विभङ्गज्ञानिनो यथा कृष्णपाक्षिकाः । आहारसंज्ञोपयुक्ता यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्ता यथा सलेश्याः । नो संज्ञोपयुक्ता यथा अलेश्याः । सवेदका यावत् नपुंसकवेदकाः यथा सलेश्याः । अवेदका यथा अलेश्याः । सकषायिनो यावत् लोभकषायिनो यथा सलेश्याः । अकषायिनो यथा अलेश्याः सयोगिनो यावत् काययोगिनो यथा सलेश्याः । अयोगिनो यथा अलेश्याः, साकारोपयुक्ता अनाकारोपयुक्ता यथा सलेश्याः । नैरयिकाः खलु भदन्त ! किं क्रियावादिनः ? पृच्छा, गौतम ! क्रियावादिनो यावत् वैनयिकवादिनोऽपि । सलेश्याः खलु भदन्त ! नैरयिकाः किं क्रियावादिन एवमेव । एवं यावत् कापोतलेश्याः । कृष्णपाक्षिकाः क्रिया विवर्जिताः । एवमेतेन क्रमेण यैव जीवानां वक्तव्यता सैव नैरयिकाणां वक्तव्यताऽपि यावदनाकारोपयुक्ताः । नवरं यदस्ति तद् भणितव्यम्, शेषं न भण्यते । यथा नैरयिकाः, एवं यावत् स्तनितकुमाराः । पृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! किं क्रियावादिनः पृच्छा, गौतम ! नो क्रियावादिनः, अक्रियावादिनोऽपि, अज्ञानिकवादिनोऽपि, नो वैनयिकवादिनः । एवं पृथिवीकायिकानां यदस्ति तत्र सर्वत्रापि एते द्वे मध्यमे समवसरणे यावत् अनाकारोपयुक्ता अपि । एवं यावत् चतुरिन्द्रियाणाम्, सर्वस्थानेषु एते एव मध्यमे द्वे समवसरणे । सम्यग्ज्ञानिभिरपि एते एव मध्यमे द्वे समवसरणे । पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका यथा जीवाः । नवरं यदस्ति तद् भणितव्यम् । मनुष्या यथा जीवा स्तथैव निरवशेषम् । वानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिका यथा असुरकुमाराः ॥सू० १॥

टीका--'कइ णं भंते ! समोसरणा पन्नत्ता' कति खलु भदन्त ! समवसरणानि प्रज्ञप्तानि अनेकप्रकारकपरिणामवन्तो जीवाः समवसरन्ति कथंचित्

तुल्यतया तिष्ठन्ति येषु मतेषु दर्शनेषु वा तानि समवसरणानि मतानि दर्शनानि वा, तानि कति प्रकारकाणि भवन्तीति समवसरणविषयकः प्रश्नः, भगवानाह-

---

तीसवें शतक का प्रथम उद्देशक का प्रारंभ

२९ वां शतक व्याख्यात हो चुका, अब क्रमप्राप्त ३० वां शतक प्रारम्भ होता है, इस शतक का पूर्व शतक के साथ ऐसा सम्बन्ध है कि उस पूर्व शतक में कर्मप्रस्थापनादि को लेकर जीवों का विचार किया है, परन्तु अब इस शतक में कर्मबन्ध आदि के कारणभूत वस्तुवाद को आश्रित करके उन जीवों का विचार होता है। इस सम्बन्ध को लेकर यह ३० तीसवां शतक कहा जा रहा है। इसमें १२ बारह उद्देशक हैं। 'कइ णं भंते ! समोसरणा पण्णत्ता-इत्यादि

टीकार्थ-हे भदन्त ! समवसरण-कितने प्रकार के कहे गये हैं। 'अनेक प्रकारकपरिणामवन्तो जीवा, समवसरन्ति कथंचित् तुल्यतया तिष्ठन्ति येषु मतेषु दर्शनेषु वा तानि समवसरणानि' इस व्युत्पत्ति के अनुसार समवसरण शब्द से यहां मत या दर्शन गृहीत हुए है। क्योंकी इन मतादिकों में अनेक प्रकार के परिणामोवाले मनुष्य प्राणी रहा करते

ત્રીસમા શતકનો પ્રારંભ--

"ઉદ્દેશો પહેલો"

ઓગણત્રીસમું શતક કહેવાઈ ગયું. હવે ક્રમ પ્રાપ્ત આ ત્રીસમાશતકનો પ્રારંભ થાય છે. પૂર્વ શતકની સાથે આ શતકનો એ પ્રમાણે સંબંધ છે કે--પૂર્વ શતકમાં કર્મપ્રસ્થાપના વિગેરેને લઈને જીવોનો વિચાર કરવામાં આવ્યો છે-પરંતુ હવે આ શતકમાં કર્મ બંધના કારણભૂત વસ્તુવાદનો. આશ્રય કરીને તે જીવોનો વિચાર કરવામાં આવશે, આ સંબંધથી આ ૩૦ ત્રીસમું શતક કહેવાઈ રહ્યું છે. આ શતકમાં બાર ઉદ્દેશાઓ છે.

'कइ णं भंते ! समोसरणा पन्नत्ता' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ--હે ભગવન્ સમવસરણ-મત કેટલા પ્રકારના કહ્યા છે? 'अनेक प्रकारकपरिणामवन्तो जीवाः समवसरन्ति कथंचित् तुलयतया तिष्ठति येषु मतेषु दर्शनेषु वा तानि समवसणानि' આ વ્યુત્પત્તિ અનુસાર સમવસણ શબ્દથી અહિયાં મત-અથવા દર્શન ગ્રહણ કરાયેલ છે. કેમ કે આ મત વિગેરેમાં અનેક પ્રકારના પરિણામવાળા મનુષ્ય પ્રાણી રહ્યા છે. આ રીતે ગૌતમસ્વામીએ

'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'चत्तारि समोसरणा पन्नत्ता' चत्वारि-चतुष्प्रकारकाणि समवसरणानि प्रज्ञप्तानि-कथितानि-इति । 'तं जहा' तद्यथा-'किरियावाई' क्रियावादिनः-क्रियाचारित्रपरिपालनात्मककार्यरूपा, सा च कर्त्तारमन्तरेण अनुपपद्यमाना कर्त्तारमाक्षिपन्ती आत्मसमवायिनीति वदन्ति एवं शीला वा ये ते क्रियावादिनः । अथवा क्रियैव प्रधानं न ज्ञानम्, नहि गुडमाधुर्यज्ञानवान् अनुभवति रसनया गुडास्वादम् अतो न ज्ञानं प्रधानम् अपि तु क्रियैव सर्वत्र प्रधाना एतादृश क्रियावादनशीलाः क्रियावादिनः । अथवा क्रिया-जीवादिपदार्थोऽस्तीत्यादिकां वदितुं शीलं येषां ते क्रियावादिनः, ते चात्मास्तित्व प्रतिपत्ति-

हैं । इस प्रकार से गौतमने यह प्रश्न समवसरण के सम्बन्ध में किया है। इसके उत्तर में प्रभुश्री उनसे कहते हैं-'गोयमा ! चत्तारि समोसरणा पण्णत्ता' हे गौतम ! समवसरण चार प्रकार के कहे गये हैं। 'तं जहा'-जैसे कि-'किरियावाई' क्रियावादि चरित्रको पालन करने रूप जो प्रकृति है उसका नाम क्रिया है । यह क्रिया कर्ता के बिना होती नहीं है । इसलिये कर्ता रूप आत्माकी सिद्धि इससे होती है । इस प्रकार आत्मा के अस्तित्व को माननेवाले जो हैं वे सब क्रियावादी हैं । अथवा-क्रिया ही प्रधान है, ज्ञान नहीं । कहीं गुड की केवल मधुरता का ज्ञानवाला व्यक्ति मात्र जिह्वा से गुडके आस्वाद को थोडे ही जानता है, गुड के आस्वाद को जानने के लिये उसके खाने रूप क्रिया की आवश्यकता होती है । अतः क्रिया ही सर्वत्र प्रधान है ज्ञान नहीं। इस प्रकार से जो क्रिया की प्रधानता माननेवाले हैं वे क्रियावादी हैं। अथवा-जीवादि पदार्थों की अस्तित्व रूप क्रिया को माननेवाले जो हैं वे क्रियावादी हैं।

સમવસરણના સંબંધમાં પ્રશ્ન કરેલ છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा ! चत्तारि समोसरणा पण्णता' હે ગૌતમ ! સમવસરણુ ચાર પ્રકારના કહેલ છે. 'तं जहा' તે આ પ્રમાણે છે,—'किरियावाई' ક્રિયાવાદી, ચારિત્રને પાલન કરવા રૂપ જે પ્રકૃતિ છે, તેનું નામ ક્રિયા છે. આ ક્રિયા કર્તા શિવાય થતી નથી, કોઈ ગોળના કેવળ મધુરપણાના જ્ઞાન વાળો પુરૂષ જીભથી ગોળની મીઠાશનો સ્વાદ થોડો જ જાણે છે ? ગોળના સ્વાદો જાણુવા માટે તેને ખાવારૂપ ક્રિયાની જરૂરત હોય છે જ તેથી ક્રિયા જ સર્વત્ર મુખ્ય છે, જ્ઞાન નહીં. આ રીતે જેઓ ક્રિયાને જ મુખ્ય માનનારા છે. તેઓ ક્રિયાવાદી કહેવાય છે. અથવા-જીવ વિગેરેના અસ્તિત્વ-વિદ્યમાનપણાની ક્રિયાને જેઓ માનનારા છે, તેઓ ક્રિયાવાદી કહેવાય છે.

लक्षणा अशीत्यधिकशतसंख्यकाः सूत्रकृताङ्गादितो ज्ञातव्याः ततश्च क्रियावादिसम्बन्धात् समवसरणमपि क्रियावादि, समवसरण समवसरणवतामभेदोपचारात् क्रियावादिन एव समवसरणमिति, 'अकिरियावादी' अक्रियावादिनः न क्रिया अक्रिया, तां क्रियाया अभावं, न हि अनवस्थितस्य कस्यचिदपि पदार्थस्य क्रिया भवति, क्रिया सत्वे चानवस्थितेरेव अभावादित्येवं वदन्ति ये ते अक्रियावादिनः, तथा चोक्तम्- 'क्षणिकाः सर्वसंस्काराः, अस्थितानां कुतः क्रिया।

भूति र्येषां क्रिया सैव, कारकं सैव चोच्यते ॥१॥ इति।

अन्ये तु अक्रियां 'जीवादिपदार्थः सार्थो नास्ती' त्यादिकां वदितुं शीलं विद्यते येषां तेऽक्रियावादिनः, ते चात्मादिपदार्थनास्तित्व प्रतिपत्तिलक्षणा चतुरशीति विकल्पाः

ये सब क्रियावादी आत्मा के अस्तित्व को माननेवाले हैं। इनकी संख्या १८० है। इनका स्वरूप सूत्रकृताङ्ग आदि से जाना जा सकता है। क्रियावादी के सम्बन्ध से समवरण भी क्रियावादी कहा गया है। क्यों की समवसरण और समवसरणवालों में अभेद का यहां उपचार किया गया है। अक्रियावादी अनवस्थित किसी भी पदार्थ में क्रिया नहीं होती है। यदि वहां क्रिया का सत्व माना जाय तो पदार्थ में अवस्थिति नहीं मानी जा सकती है क्यों कि इस स्थिति में वहां अनवस्थिति का अभाव हो जाता है। इस प्रकार से जो कहते हैं वे अक्रियावादी हैं-तथा कहा भी है-'क्षणिकाः सर्वसंस्कारा' इत्यादि।

दूसरे ऐसा कहते हैं-'जीवादिक पदार्थ नहीं हैं' इत्यादि रूप क्रिया को जो मानते है वे अक्रियावादी हैं। ये अक्रियावादी आत्मादि पदार्थ

આ સઘળા ક્રિયાવાદીઓ આત્માના અસ્તિત્વને માનનારા છે. આ ક્રિયાવાદીઓની સંખ્યા ૧૮૦ એકસોએંસીની છે આ ક્રિયાવાદિઓનું લક્ષણ સુત્રકૃતાંગ. વિગેરે શાસ્ત્રોમાંથી સમજી લેવું. ક્રિયાવાદીના સંબંધથી સમવસરણ પણ ક્રિયાવાદી કહેવામાં આવેલ છે. કેમ કે-સમવસરણ અને સમવસરણવાળાઓમાં અહિયાં અભેદપણાનો ઉપચાર કરવામાં આવેલ છે. આ ક્રિયાવાદી-અનવસ્થિત કોઇ-પણ પદાર્થમાં ક્રિયા થતી નથી જો તેમાં ક્રિયાનું અસ્તિત્વપણું માનવામાં આવે તો પદાર્થમાં અવસ્થિતિ માની શકાય નહી કેમ કે-એ સ્થિતિમાં ત્યાં અનવસ્થિતિનો અભાવ થઈ જાય છે. આ રીતે જેઓ કહે છે, તેઓ આ ક્રિયાવાદી છે તથા કહ્યું પણ છે-'ક્ષણિકા સર્વસંસ્કારાઃ' ઈત્યાદિ

બીજાએ એવું કહ્યું છે કે-"જીવ વિગેરે કોઈ પદાર્થ નથી" ઈત્યાદિ પ્રકારથી જેઓ ક્રિયાને માને છે. તેઓ અક્રિયાવાદી છે. આ અક્રિયાવાદિયો

स्थानान्तराद् ज्ञातव्या इति। अथवा अक्रियावादि बौद्धा ये इत्थं कथयन्ति क्रियाया नान्यत्फलं केवलं चित्तशुद्धिरेव फलमिति ते बौद्धा अक्रियावादिन इति। 'अन्नाणियवाई' अज्ञानिकवादिनः कुत्सितं ज्ञानमज्ञानम्, तद् विद्यते येषां ते अज्ञानिका इत्थंभूतश्च ते वादिन इति अज्ञानिकवादिनः, ते इत्थं प्रतिपादयन्ति- अज्ञानमेव श्रेयस्करम्, ज्ञानाद्धि तीव्रं कर्म बध्यते तथा अज्ञानपूर्वकं कृतं कर्म न बन्धाय भवति, तथा कस्यापि पुरुषस्य कवचिदपि वस्तुनि सम्पूर्णरूपेण ज्ञानं न भवति प्रमाणानां सम्पूर्णवस्तु विषयत्वात्, इत्येवमभ्युपगमवन्तोऽज्ञानिकवादिनः सप्तषष्टिसंख्यकाः स्थानान्तरादवसेया इति। 'वेणइयवाई' वैनयिकवादिनः विनयेन

के नास्तित्व को मानते हैं। इनके चोरासी भेद हैं। ये भेद ग्रन्थान्तर से जाने जा सकते हैं। अथवा-अक्रियावादी बौद्ध हैं-इनका ऐसा कहना है कि क्रिया का और कोई फल नहीं है केवल चित्त की शुद्धि ही क्रिया का फल है। 'अन्नाणियवाई' अज्ञानिकवादी-कुत्सित ज्ञान का नाम अज्ञान है, इस अज्ञानवाले जो है वे अज्ञानवादी हैं-इनका ऐसा कहना है कि अज्ञान ही श्रेयस्कर है क्योंकि ज्ञान से तीव्र कर्म का बन्ध होता है। तथा-अज्ञानपूर्वक किया गया कर्म बन्ध के लिये नहीं होता है। तथा -किसी भी पुरुष को किसी भी वस्तु का सम्पूर्ण रूप से ज्ञान नहीं होता है। प्रमाण ही सम्पूर्ण वस्तु को विषय करनेवाला होता है। इस प्रकार की मान्यतावाले जन अज्ञानवादी है। इनकी संख्या ६७ सडसठ की है। इनका स्वरूप नन्दीसूत्र की ज्ञानचन्द्रिका टीका से समझना चाहिये।

આત્મા વિગેરે પદાર્થના અવિદ્યમાનપણાને માને છે. તેઓના ૮૪ ચોર્યાશી ભેદો છે આ ભેદો અન્ય શાસ્ત્રોમાંથી સમજી લેવા.

અથવા--અક્રિયાવાદી બૌદ્ધો છે-તેઓનુ કહેવુ એવું છે કે-ક્રિયાનું બીજું કાંઈ જ ફળ નથી. કેવળ ચિત્તની શુદ્ધી જ ક્રિયાનું ફળ છે. 'अन्नाणियवाई' અજ્ઞાનિકવાદી. કુત્સિત જ્ઞાનનું નામ અજ્ઞાન છે, આ અજ્ઞાન વાળા જેઓ હોય છે તેઓ અજ્ઞાનવાદી કહેવાય છે, તેઓનું કહેવું એવું છે છે કે-અજ્ઞાન જ કલ્યાણકારી છે. કેમકે જ્ઞાનથી તીવ્ર કર્મનો બંધ થાય છે. તથા અજ્ઞાન પૂર્વક કરવામાં આવેલ કર્મ બંધન કરનાર હોતું નથી. તથા કોઈપણ પુરૂષને કોઈપણ વસ્તુનું સંપૂર્ણ જ્ઞાન હોતું નથી. પ્રમાણ જ સમગ્ર વસ્તુનો વિષય કરવાનું હોય છે. આ પ્રમાણેની માન્યતાવાળા મનુષ્યો અજ્ઞાન વાદી કહેવાય છે. તેઓની સંખ્યા ૬૭ સડસઠની છે, તેઓનું સ્વરૂપ નંદી-સૂત્રની જ્ઞાનચંદ્રિકા ટીકામાંથી સમજી લેવું.

चरन्ति, अथवा विनय एव प्रयोजनं येषां ते वैनयिकाः वैनयिकाश्च ते वादिन इति वैनयिकवादिनः, विनयएव वा वैनयिकं, तदेव ये स्वर्गादि हेतुतया वदन्ति इत्येवं शीलाश्च ते वैनयिकवादिनः, ते च स्वर्गादिसाधनं विनयमेव वदन्ति विनयस्यैव प्राधान्येन स्वीकुर्वाणाः अनवधृतलिङ्गाचारशास्त्रः, विनयप्रतिपत्तिलक्षणाः द्वात्रिंशत्प्रकारकाः स्थानान्तरात् सूत्रकृताङ्गादिसूत्रात् अवगन्तव्या इति।
अत्रार्थे भवति गाथा–'अत्थि त्ति किरियवाई, वयंति नत्थि त्तिऽकिरियवाइओ।
अन्नाणि य अन्नाणं, वेणइया विणयं वायंति' ॥१॥
छाया––अस्तीति क्रियावादिनो वदन्ति, नास्तीत्य क्रियावादिनः।
अज्ञानिका अज्ञानं, वैनयिका विनयवादमिति ॥१॥

एते सर्वेऽपि यद्यप्यन्यत्र मिथ्यादृष्टयः कथिताः तथाप्यत्र क्रियावादिनः सम्यग्दृष्टयो ग्राह्याः, क्रियावादिनो हि जीवादीनामस्तित्व स्वीकारेण सम्यग्दृष्टय एव स्वीकर्त्तव्या इति। 'जीवा णं भंते ! किं किरियावाई, अकिरियावाई, अन्नाणियवाई, वेणइयवाई' जीवाः खलु भदन्त ! किं क्रियावादिनोऽक्रियावादिनोऽज्ञानि-

---

'वेणईयवाई' वैनयिकवादी–इनका मन्तव्य ऐसा है कि विनय ही स्वर्ग मोक्ष आदिका हेतु है। ये विनय को ही प्रधान रूप से मानते हैं। इनका कोई निश्चित आचार, लिङ्ग या शास्त्र नहीं होता है। सिर्फ ये तो विनय कोही श्रेयस्कर मानते हैं। ये ३२ बत्तीस प्रकार के होते हैं। इनका स्वरूप नन्दीसूत्रकी ज्ञानचन्द्रिका टीका से जाना जा सकता है। इस विषय की गाथा ऐसी है–'अत्थि त्ति किरियवाइ' इत्यादि ये सब क्रियावादी अक्रियावादी आदि जन यद्यपि अन्यत्र मिथ्यादृष्टि कहे गये हैं परन्तु फिर भी यहां पर क्रियावादी जीवादि के अस्तित्व को सम्यक् प्रकार से माननेवाला होने के कारण सम्यग्दृष्टि रूप से गृहीत किया गया है। 'जीवा णं भंते! किं किरियावादी अकिरियावादी अन्नाणियवादी

'वेणइयवाई' वैनयिकवादी–तेओनी मान्यता ओवी छे के–विनय ज स्वर्ग मोक्ष विगेरेनुं कारण छे. तेओ विनयने ज प्रधान माने छे. तेओनो कोई निश्चित आचारलिंग अथवा शास्त्र होतुं नथी केवळ तेओ विनयने ज श्रेयस्कर–कल्याणकारक माने छे, तेओ ३२ बत्रीस प्रकारना होय छे. तेओनुं स्वरूप–प्रकार नन्दीसूत्रनी ज्ञानचंद्रिका टीकामां आपवामां आवेल छे. त्यांथी समजी लेवुं

'अत्थित्ति किरियावाई' ईत्यादि आ सघळा क्रियावादीयो, अक्रियावादीयो विगेरेने जो के अन्य स्थळे मिथ्यादृष्टि कहेवामां आव्या छे, परंतु अहियां क्रियावादी जीव विगेरेना अस्तित्वने मानवावाळा होवाथी सम्यग्दृष्टि पणाथी वर्णवेल छे.
'जीवा णं भंते ! किरियावादी अकिरियावाई अन्नाणियवादी, वेणइयवादी

कवादिनो वैनयिकवादिनो चेति समुच्चतो जीवमधिकृत्य प्रश्नः, भगवानाह- 'गोयमा' इत्यादि । 'गोयमा' हे गौतम ! 'जीवा किरियावाई वि' जीवाः सामान्यतः क्रियावादिनोऽपि भवन्ति तथा-'अकिरियावाई वि' अक्रियावादिनोऽपि भवन्ति तथा-'अन्नाणियवाई वि' अज्ञानिकवादिनोऽपि भवन्ति तथा-'वेणइयवाई वि' वैनयिकवादिनोऽपि भवन्तीत्युत्तरम् । सामान्यतो जीवाश्चतुर्विधा अपि भवन्ति तादृश स्वभावत्वादिति । जीवविशेषमधिकृत्य प्रश्नयन्नाह-'सलेस्सा णं' इत्यादि । 'सलेस्सा णं भंते ! जीवा किं किरियावाई पुच्छा' सलेश्याः-कृष्णनीलाद्यन्यतमलेश्यावन्तो जीवा किं क्रियावादिनो भवन्ति अथवा अक्रियावादिनो भवन्ति अथवा अज्ञानिकवादिनो भवन्ति, अथवा वैनयिकवादिनो भवन्तीति प्रश्नः पृच्छया

वेणइयवादी' हे भदन्त ! जीव क्या क्रियावादी हैं ? या अक्रियावादी है ? या अज्ञानवादी है ? या विनयवादी है ? ऐसा यह प्रश्न सामान्य जीव को लेकर किया गया हैं, इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! जीवा किरियावाई वि' हे गौतम ! जीव सामान्यतः क्रियावादी भी होते हैं । तथा 'अकिरियावाई वि' अक्रियावादी भी होते हैं 'अन्नाणियवाई वि' अज्ञानवादी भी होते हैं । 'वेणइयवाई वि' और वैनयिकवादी भी होते हैं । तात्पर्य कहने का यही है कि सामान्य से जीव चारों प्रकार के भी होते हैं। क्योंकि जीव का स्वभाव ही कुछ ऐसा होता है। जीव विशेष को लेकर प्रश्न-'सलेस्साणं भंते ! जीवा किं किरियावाई पुच्छा' हे भदन्त ! कृष्ण, नील आदि लेश्याओं में से कोई एक लेश्या वाले जीव क्या क्रियावादी होते हैं ? या अक्रियावादी होते हैं ? या अज्ञानवादी होते हैं ? या वैनयिकवादी होते हैं ? उत्तर

હે ભગવન્ જીવ શું ક્રિયાવાદી છે ? અથવા અક્રિયાવાદી છે ? અથવા અજ્ઞાનવાદી છે ? અથવા વિનયવાદી છે ? આ પ્રમાણેનો પ્રશ્ન સામાન્ય જીવનો આશ્રય કરીને પૂછવામાં આવેલ છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा ! जीवा किरियावाइत्ति' હે ગૌતમ ! જીવો સામાન્યતઃ ક્રિયાવાદી પણ હોય છે. 'अकिरियावाई वि' અક્રિયાવાદી પણ હોય છે. તથા-'अन्नाणियवाइ वि' અજ્ઞાન વાદી પણ હોય છે. 'वेणइयवाईवि' અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-સામાન્યથી જીવો ચારે પ્રકારના પણ હોય છે. કેમ કે જીવનો સ્વભાવ જ કંઈક એવો હોય છે. હવે જીવ વિશેષના સંબંધમાં ગૌતમસ્વામી પ્રભુશ્રીને પૂછે છે-'सलेस्साणं भंते ! जीवा किं किरियावाई पुच्छा' હે ભગવન્ કૃષ્ણનીલ વિગેરે લેશ્યાઓ પૈકી કોઈ એક લેશ્યાવાળો જીવ શું ક્રિયાવાદી હોય છે ? અથવા અક્રિયાવાદી હોય છે ? અથવા અજ્ઞાન

संगृह्यते, भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'किरियावाई वि' क्रियावादिनोऽपि भवन्ति सलेश्या जीवाः, तथा 'अकिरियावाई वि' अक्रियावादिनोऽपि भवन्ति, तथा–'अन्नाणियवाई वि' अज्ञानिकवादिनोऽपि भवन्ति तथा 'वेणइयवाई वि' वैनयिकवादिनोऽपि भवन्ति सलेश्यजीवानां तथा तथा स्वभावत्वादिति। 'एवं जाव सुक्कलेस्सा' एवम्–सलेश्यजीववदेव यावत् कृष्णलेश्यजीवादारभ्य पद्मलेश्यजीवपर्यन्ताः सर्वेऽपि जीवाः चतुर्विधा अपि भवन्ति तथास्वभावत्वादितिभावः। 'अलेस्सा णं भंते! जीवा पुच्छा' अलेश्याः–लेश्यारहिता जीवाः खलु भदन्त! क्रियावादिनोऽक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनो भवन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'किरियावाई' क्रियावादिनोऽलेश्या जीवा भवन्ति अलेश्याः अयोगिनः सिद्धाश्च भवन्ति तेचायोगिनः सिद्धाश्च क्रियावादिन एव

में प्रभुश्री कहते हैं–'गोयमा! किरियावाई वि, अकिरियावाई वि अन्नाणियवाई वि, वेणइयवाई वि' हे गौतम सलेश्य जीव क्रियावादी भी होते हैं, अक्रियावादी भी होते हैं, अज्ञानवादी भी होते हैं और वैनयिकवादी भी होते हैं। 'एवं जाव सुक्कलेस्सा' सलेश्य जीव के जैसे ही यावत् कृष्णलेश्य जीव से लेकर शुक्ललेश्य जीव तक समस्त जीव चारों प्रकार के भी होते हैं। क्योंकि इन जीवों का स्वभाव ही ऐसा होता है। 'अलेस्सा णं भंते! जीवा पुच्छा' हे भदन्त! जो जीव लेश्यारहित हैं वे क्या क्रियावादी होते हैं? या अक्रियावादी होते हैं? या अज्ञानवादी होते हैं? या वैनयिकवादी होते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं–'गोयमा! किरियावाई' हे गौतम! अलेश्य जीव क्रियावादी

વાદી હોય છે? અથવા વૈનયિકવાદી હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે–'गोयमा! किरियावाई वि अकिरिया वाईवि अन्नाणियवाई वि, वेणइयवाई वि' હે ગૌતમ! લેશ્યાવાળા જીવો ક્રિયાવાદી પણ હોય છે. અક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે. અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. 'एवं जाव सुक्कलेस्सा' લેશ્યવાળા જીવના કથન પ્રમાણે જ યાવત્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા જીવથી લઈને શુકલ લેશ્યાવાળા જીવ સુધીના સઘળા જીવો ચારે પ્રકારના પણ હોય છે. કેમ કે આ જીવોનો સ્વભાવ જ એવો હોય છે. 'अलेस्सा णं भंते! जीवा पुच्छा' હે ભગવન્ જે જીવો લેશ્યા વિનાના હોય છે, તેઓ શું ક્રિયાવાદી હોય છે? અથવા અક્રિયાવાદી હોય છે? અથવા અજ્ઞાનવાદી હોય છે? અથવા વૈનયિકવાદી હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રીને કહે છે કે છે કે–'गोयमा! किरियावाई' હે ગૌતમ! લેશ્યા

क्रियावादकारणीभूत यथावस्थितद्रव्यपर्यायात्मकार्थपरिच्छेदयुक्तत्वात्। अत्र खलु यानि सम्यग्दृष्टियोग्यस्थानानि अलेश्यत्वसम्यग्दर्शनज्ञानिनो असंज्ञोपयुक्तत्वावेदकत्वादीनि तानि सर्वाण्यपि क्रियावादे एव निक्षिप्यन्ते। यानि खलु मिथ्यादृष्टि स्थानानि मिथ्यात्वाज्ञानादीनि तानि शेष समवसरणत्रये निक्षिप्यन्ते 'नो अकिरियावाई' अलेश्या जीवा अक्रियावादिनो नो भवन्ति द्रव्यपर्यायात्मक वस्तु परिच्छेदयुक्तत्वादिति। 'नो अन्नाणियवाई' नो न वा अज्ञानिकवादिनः पूर्वोक्तयुक्तेरेव। 'नो वेणइयवाई' नो न वा वैनयिकवादिनो भवन्ति अलेश्या जीवा इति! 'कण्हपक्खियाणं भंते! जीवा किं किरियावाई पुच्छा' कृष्णपाक्षिकाः खलु

होते हैं। अयोगी और सिद्ध ये अलेश्य जीव हैं। ये क्रियावादी ही होते हैं। क्यों की इन में क्रियावाद के कारणीभूत यथावस्थित द्रव्य पर्यायात्मक पदार्थ के परिच्छेद से युक्तता है। यहां सम्यग्दृष्टि के योग्य अलेश्यत्व, सम्यग्दर्शन, ज्ञानी, नो संज्ञोपयुक्त और अवेदकत्व आदि स्थान हैं–सो इन सबका क्रियावाद में ही समावेश हुआ है तथा–जो मिथ्यादृष्टि के योग्य मिथ्यात्व, अज्ञान आदि स्थान हैं सो इनका शेष समवसरण त्रय में समावेश हुआ है। 'नो अकिरियावाई' अलेश्य जीव अक्रियावादी नहीं होते हैं। क्योंकि ये द्रव्य पर्यायात्मक वस्तु के ज्ञान से युक्त होते हैं। 'णो अन्नाणियवाई' इसी प्रकार वे अज्ञानिक वादी भी नहीं होते हैं। 'णो वेणइयवाई' वैनयिकवादी भी नहीं होते हैं। क्यों की ये द्रव्यपर्यायात्मक वस्तुके ज्ञानवाले होते हैं। 'कण्हपक्खियाणं भंते! जीवा किरियावाई पुच्छा' हे भदन्त! जो कृष्णपाक्षिक

વિનાના જીવો ક્રિયાવાદી હોય છે. અયોગી અને સિદ્ધ એ અલેશ્ય જીવ છે. એ ક્રિયાવાદી જ હોય છે. કેમ કે તેઓ ક્રિયાવાદના કારણભૂત યથાવસ્થિતદ્રવ્ય પર્યાયાર્થિક પદાર્થના પરિચ્છેદથી યુક્ત હોય છે અહિયાં સમ્યગ્ દૃષ્ટિને યોગ્ય અલેશ્યપણામાં, સમ્યક્દર્શનજ્ઞાની નોસંજ્ઞોપયુક્ત અને અવેદકપણુ વિગેરે સ્થાનો છે તે સઘળાનો ક્રિયાવાદમાં જ સમાવેશ થાય છે. તથા જે મિથ્યાદૃષ્ટિને યોગ્ય મિથ્યાત્વ, અજ્ઞાન. વિગેરે સ્થાનો છે, તેનો સમાવેશ સમવસરણત્રયમાં થયેલ છે.

'नो अकिरियावाई' લેશ્યાવિનાના જીવો અક્રિયાવાદી હોતા નથી. કેમ કે તેઓ દ્રવ્ય પર્યાયાત્મક વસ્તુના જ્ઞાનથી યુક્ત હોય છે. 'णो अन्नाणियवाई' એજ પ્રમાણે અજ્ઞાનવાદી પણ હોતા નથી. 'णो वेणइयवाइ' વૈનયિકવાદી પણ એ પ્રમાણેના હોતા નથી. કેમ કે તેઓ દ્રવ્ય પર્યાયાત્મક વસ્તુમાં જ્ઞાનવાળા હોય છે.

'कण्हपक्खिया णं भते! जीवा किं किरियावाई पुच्छा' હે ભગવન્ જે કૃષ્ણપાક્ષિક જીવો છે, તેઓ શું ક્રિયાવાદી હોય છે? અક્રિયાવાદી હોય છે?

भदन्त ! जीवा किं क्रियावादिनो भवन्ति अक्रियावादिनो वा भवन्ति अज्ञानिकवादिनो वा भवन्ति वैनयिकवादिनो वा भवन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते ! भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'नो किरियावाई' नो क्रियावादिनः कृष्णपाक्षिका भवन्ति यथावस्थितद्रव्यपर्यायात्मकवस्तुपरिच्छेदरहितत्वात्। 'अकिरियावाई वि अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि' अक्रियावादिनोऽपि भवन्ति अज्ञानिकवादिनोऽपि भवन्ति तथा वैनयिकवादिनोऽपि भवन्तीति। 'सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा' शुक्लपाक्षिकाः जीवाः सलेश्यजीववदेव क्रियावादिनोऽपि अक्रियावादिनोऽपि अज्ञानिकवादिनोऽपि वैनयिकवादिनोऽपि भवन्तीति भावः 'सम्मादिट्ठी जहा अलेस्सा' सम्यग्दृष्टयो तथा–अलेश्याः तथैव क्रियावादिनो भवन्ति यथावस्थितद्रव्यपर्यायात्मकवस्तुपरिच्छेदयुक्तत्वात् न तु अक्रियावादिनो भवन्ति न वा अज्ञानिकवादिनो, न वा वैनयिकवादिनो भवन्तीति

जीव हैं वे क्या क्रियावादी होते हैं? या अक्रियावादी होते हैं? या अज्ञानवादी होते हैं? या वैनयिकवादी होते हैं? इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं–'गोयमा! णो किरियावाई' हे गौतम कृष्णपाक्षिक जीव क्रियावादी नहीं होते हैं, क्यों कि ये यथावस्थित द्रव्यपर्यायात्मक वस्तु के वेदन से रहित होते हैं। इसलिये ये 'अकिरियावाई वि अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि' ये अक्रियावादी भी होते हैं, अज्ञानवादी भी हैं और वैनयिकवादी भी होते हैं, 'सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा' शुक्लपाक्षिक जीव सलेश्य जीव के जैसे क्रियावादि भी होते हैं, अक्रियावादी भी होते हैं, अज्ञानवादी भी होते हैं और वैनयिकवादी भी होते हैं। 'सम्मदिट्ठी जहा अलेस्सा' सम्यग्दृष्टि जीव अलेश्य जीव के जैसे यथावस्थित द्रव्यपर्यायात्मक वस्तु के परिच्छेदक होने से क्रियावादी ही होते हैं। अक्रियावादी, अज्ञानवादी और वैनयिकवादी

અથવા અજ્ઞાનવાદી હોય છે? અથવા વૈનયિકવાદી હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'गोयमा! णो किरियावाई' હે ગૌતમ! કૃષ્ણપાક્ષિક જીવ ક્રિયાવાદી હોતા નથી, કેમ કે તેઓ યથાવસ્થિત દ્રવ્ય પર્યાયાત્મક વસ્તુની વેદનાથી રહિત હોય છે. 'अकिरियावाई वि, अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि' અક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે, અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. 'सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा' સલેશ્ય જીવના કથન પ્રમાણેજ શુકલપાક્ષિકને પણ સમજી લેવા 'सम्मादिट्ठी जहा अलेस्सा' સમ્યગ્દૃષ્ટિ વાળા જીવો લેશ્યાવિનાના જીવોના કથન પ્રમાણે યથાવસ્થિત દ્રવ્ય પર્યાયાત્મક વસ્તુના પરિચ્છેદક હોવાથી ક્રિયાવાદીજ હોય છે, તેઓ અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાન વાદી અને વૈનયિકવાદી હોતા નથી.

भावः। मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया' मिथ्यादृष्टयः कृष्णपाक्षिकवत् नो क्रियावादिनः किन्तु अक्रियावादिनोऽपि अज्ञानिकवादिनोऽपि वैनयिकवादिनोऽपि भवन्तीति। 'सम्मामिच्छादिट्ठी णं पुच्छा' सम्यग्मिथ्यादृष्टयो मिश्रदृष्टयः किं क्रियावादिनोऽक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनो वा भवन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'नो किरियावाई' नो क्रियावादिनः नो वा अक्रियावादिनो भवन्ति किन्तु 'अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि' अज्ञानिकवादिनोऽपि भवन्ति वैनयिकवादिनोऽपि भवन्ति, मिश्रदृष्टयोहि जीवाः साधारणपरिणामत्वान्नो आस्तिका न वा नास्तिकाः किन्तु अज्ञानिकवादिनोऽपि वैनयिकवादिनोऽपि भवन्तीति भावः। 'नाणी जाव केवलनाणी जहा अलेस्से' ज्ञानिनो यावत्केवलज्ञानिनो हि अलेश्यजीववदेव क्रियावा-

---

नहीं होते हैं। 'मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया' मिथ्यादृष्टि जीव कृष्णपाक्षिक के जैसे क्रियावादी नहीं होते हैं। किन्तु वे अक्रियावादी भी होते हैं, अज्ञानवादी भी होते हैं और वैनयिकवादी भी होते हैं। 'सम्मामिच्छादिट्ठीणं पुच्छा' हे भदन्त! जो जीव मिश्रदृष्टि होते हैं वे क्या क्रियावादी हैं? या अक्रियावादी होते हैं? या अज्ञानवादी होते हैं? या वैनयिकवादी होते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! नो किरियावाई, नो अकिरियावाई' हे गौतम! वे न क्रियावादी होते हैं और न अक्रियावादी होते हैं। किन्तु वे 'अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि' अज्ञानवादी भी होते हैं और वैनयिकवादी भी होते हैं। क्यों की मिश्रदृष्टि जीव साधारण परिणामवाले होते हैं इसलिये वे न आस्तिक होते हैं और न नास्तिक होते हैं। 'नाणी जाव केवलनाणी जहा अलेस्से' ज्ञानी जीव यावत् केवल ज्ञानी जीव अलेश्य जीव के

'मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया' મિથ્યાદૃષ્ટિ જીવો કૃષ્ણપાક્ષિકના કથન પ્રમાણે ક્રિયાવાદી હોતા નથી પરંતુ તેઓ અક્રિયાવાદી પણ હોય છે. અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે. અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે 'सम्मामिच्छादिट्ठीणं पुच्छा' હે ભગવન્ જે જીવો મિશ્રદૃષ્ટીવાળા હોય છે, તેઓ શું ક્રિયાવાદી હોય છે? અથવા અક્રિયાવાદી હોય છે? અથવા અજ્ઞાનવાદી હોય છે? અથવા વૈનયિકવાદી હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે 'गोयमा नो किरियावाई नो अकिरियावाई' હે ગૌતમ! તેઓ ક્રિયાવાદી હોતા નથી. તથા અક્રિયાવાદી પણ હોતા નથી 'अन्नाणियवाई वि वेणईयवाई' તેઓ અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે, અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે, કેમ કે મિશ્રદૃષ્ટિવાળા જીવો સાધારણ પરિણામવાળા હોય છે. 'नाणी जाव केवलनाणी जहा अलेस्से'

दिनो भवन्ति द्रव्यपर्यायात्मकयथावस्थितवस्तुपरिच्छेदयुक्तत्वात् नो अक्रियावादिनो नो वा अज्ञानिकवादिनो नो वा वैनयिकवादिनो भवन्तीति भावः। अत्र यावत्पदेन आभिनिबोधिकज्ञानि श्रुतज्ञान्यवधिज्ञानि मनःपर्यवज्ञानिनां संग्रहः, एतेषां यथावस्थितवस्तुपरिच्छेदवत्वात्। 'अन्नाणी जाव विभंगनाणि जहा कण्हपक्खिया' अज्ञानिनो यावद् विभङ्गज्ञानिनो यथा कृष्णपाक्षिकाः, अत्र यावत्पदेन मत्यज्ञानि–श्रुताज्ञानिनोः संग्रहः, तथाज्ञानि–मत्यज्ञानि–श्रुताज्ञानि–विभङ्गज्ञानिनः सर्वेऽपि नो क्रियावादिनो भवन्ति किन्तु अक्रियावादिनोऽज्ञानि-

---

जैसे क्रियावादी होते हैं, वे अक्रियावादी नहीं होते हैं, अज्ञानवादी भी नहीं होते हैं और न वैनयिकवादी होते हैं। क्योंकि ये सब द्रव्य पर्यायात्मक वस्तु के यथार्थ बोधवाले होते हैं। यहां यावत्पद से आभिनिबोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी और मनः पर्ययज्ञानी इन सबका ग्रहण हुआ है। ये सब क्रियावादी होते हैं–क्यों की इन में यथार्थ वस्तु की परिच्छेदकता का सद्भाव रहता है। 'अन्नाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया' 'अज्ञानी यावत् विभङ्गज्ञानी कृष्णपाक्षिक के जैसे क्रियावादी नहीं होते हैं किन्तु ये अक्रियावादी होते है, अज्ञानवादी भी होते हैं और वैनयिकवादी भी होते हैं। यहां यावत्पद से मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी इन दो का संग्रह हुआ है। अतः ये सब क्रियावादी नहीं होते हैं किन्तु शेष तीन समवसरणवाले होते हैं 'आहारसन्नोवउत्ता जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता जहा सलेस्सा' जिस

જ્ઞાની જીવ યાવત્ કેવળ જ્ઞાનવાળા જીવો સલેશ્ય જીવની જેમ ક્રિયાવાદી જ હોય છે. તેઓ અક્રિયાવાદી હોતા નથી અજ્ઞાનવાદી હોતા નથી તથા વૈનયિકવાદી પણ હોતા નથી કેમ કે આ બધા દ્રવ્યપર્યાયાત્મક વસ્તુના યથાર્થ બોધવાળા હોય છે અહિયાં યાવત્પદથી આભિનિબોધિકજ્ઞાની શ્રુતજ્ઞાની અવધિજ્ઞાની અને, મનઃપર્યવજ્ઞાની આ સઘળા ગ્રહણ કરાયા છે. આ બધા ક્રિયાવાદી હોય છે. કેમ કે તેઓમાં યથાર્થ વસ્તુના પરિચ્છેદક પણાનો સદ્ભાવ રહે છે. 'अन्नाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया' અજ્ઞાની યાવત્ વિભંગજ્ઞાની કૃષ્ણપાક્ષિકના કથન પ્રમાણે ક્રિયાવાદી હોતા નથી. પરંતુ તેઓ અક્રિયાવાદી જ હોય છે, અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે. અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. અહિયાં યાવત્પદથી મતિઅજ્ઞાની અને શ્રુતઅજ્ઞાની ગ્રહણ કરાયા છે. આ બધા ક્રિયાવાદી હોતા નથી, પરંતુ અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી, અને વૈનયિકવાદી હોય છે, 'आहारसन्नोवउत्ता जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता जहा

वादिनो वैनयिकवादिश्च भवन्तीति। 'आहारसन्नोवउत्ता जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता जहा सलेस्सा' आहारसंज्ञोपयुक्ता यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्ता यथा सलेश्याः, अत्र यावत्पदेन भयसंज्ञा मैथुनसंज्ञयोः संग्रहः, तथा चैते सर्वेऽपि क्रियावादिनोऽपि भवन्ति अक्रियावादिनोऽपि भवन्ति अज्ञानिकवादिनोऽपि वैनयिकवादिनोऽपि भवन्ति तथाविधविलक्षणपरिणामवत्त्वादितिभावः। 'नोसन्नोवउत्ता जहा अलेस्सा' नो संज्ञोपयुक्ता जीवा अलेश्यजीववदेव केवलं क्रियावादिन एव न तु अक्रियावादिनो न वा अज्ञानिकवादिनो न वा वैनयिकवादिनो भवन्तीति। 'सवेदगा जाव नपुंसगवेयगा जहा सलेस्सा' सवेदका जीवा यावत् नपुंसकवेदका यथा

प्रकार सलेश्य जीव क्रियावादी भी होते हैं, अक्रियावादी भी होते हैं, अज्ञानवादी भी होते हैं और वैनयिकवादी भी होते हैं, उसी प्रकार से आहारसंज्ञोपयुक्त जीव यावत् परिग्रह संज्ञोपयुक्त जीव भी चारों प्रकार के समवसरणवाले होते हैं। क्यों कि इनका परिणाम विलक्षण प्रकार का होता है। यहां यावत् शब्द से भयसंज्ञोपयुक्त और मैथुन-संज्ञोपयुक्त इनका ग्रहण हुआ है। तथा च-ये सब क्रियावादी भी होते हैं अक्रियावादि भि होते हैं अज्ञानवादी भी होते है और वैनयिकवादी भी होते हैं। 'नो सण्णोवउत्ता जहा अलेस्सा' नो संज्ञोपयुक्त जीव अलेश्य जीव के जैसे केवल क्रियावादी ही होते हैं। अक्रियावादी अज्ञानवादी और वैनयिकवादी नहीं होते हैं। 'सवेदगा जाव नपुंसगवेदगा जहा सलेस्सा 'सवेदक जीव यावत् नपुंसकवेदक जीव सलेश्य

'सलेस्सा' सलेश्य જીવો જે પ્રમાણે ક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અક્રિયાવાદી પણ હોય છે. અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે. અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. એજ પ્રમાણે આહાર સંજ્ઞોપયોગવાળા જીવો પણ યાવત્ પરિગ્રહ સંજ્ઞોપ યુક્ત જીવ પણ ચારે પ્રકાર ના સમવસરણવાળા હોય છે. કેમ કે તેઓનું પરિણામ વિલક્ષણ પ્રકારનું હોય છે. અહિયાં યાવત્ શબ્દથી ભયસંજ્ઞોપ યોગવાળા અને મૈથુનસંજ્ઞોપયોગવાળા એ બે ગ્રહણ કરાયા છે. તથા આ બધા ક્રિયાવાદી પણ હોય છે. અક્રિયાવાદી પણ હોય છે. અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે. અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. 'नो सण्णोवउत्ता जहा अलेस्सा' નો સંજ્ઞોપયુક્ત જીવો અલેશ્યાવાળા જીવના કથન પ્રમાણે કેવળ ક્રિયાવાદી જ હોય છે. અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી, અને વૈનયિકવાદી હોતા નથી 'सवेयगा जाव नपुंसगवेयगा जहा सलेस्सा' સવેદક જીવ યાવત્ નપુંસકવેદક જીવ

सलेश्याः यावत्पदेन स्त्रीवेदकपुरुषवेदकयोः संग्रहो भवति, ततश्चैते सर्वेऽपि क्रियावादिनोऽपि भवन्ति अक्रियावादिनोऽपि भवन्ति अज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनश्चापि भवन्ति विलक्षण तादृश परिणामवत्त्वादिति । 'अवेदगा जहा अलेस्सा' अवेदकाः सामान्यतो वेदरहिता जीवाः अलेश्यजीववदेव केवलं क्रियावादिनो भवन्ति न तु अक्रियावादिनो नो अज्ञानिकवादिनो नो वैनयिकवादिनो वा भवन्तीति भावः, 'सकसाई जाव लोभकसाई जहा सलेस्सा' सकषायिनो यावत् लोभकषायिनः सलेश्यजीववदेव क्रियावादिनोऽपि अक्रियावादिनोऽपि अज्ञानिकवादिनोऽपि वैनयिकवादिनोऽपि भवन्तीति, यावत्पदेन क्रोधकषायि मानकषायि मायाकषायिनां ग्रहणं भवतीति । 'अकसाई जहा अलेस्सा' अकषायिनोऽलेश्यवदेव केवलं क्रिया-

जीवों के जैसे क्रियावादी भी होते हैं अक्रियावादी भी होते हैं, अज्ञानवादी भी होते हैं और वैनयिकवादी भी होते हैं। क्यों कि इनके ऐसे ही विलक्षण परिणाम होते हैं। यहां यावत्पद से स्त्री वेदक और पुरुष वेदक इनका ग्रहण हुआ है। 'अवेदगा जहा अलेस्सा' सामान्य से वेद रहित जीव अलेश्य जीवों के जैसे केवल क्रियावादी ही होते हैं। अक्रियावादी नहीं होते हैं, अज्ञानवादी नहीं होते हैं और वैनयिकवादी भी नहीं होते हैं। 'सकसाई जाव लोभकसाई जहा सलेस्सा' सकषायी जीव यावत् लोभकषायी जीव सलेश्य जीवों के जैसे क्रियावादी भी होते हैं और अक्रियावादी भी होते हैं, अज्ञानवादी भी होते हैं और वैनयिकवादी भी होते हैं। यहां यावत् पद से क्रोध कषायी मान कषायी और माया कषायी जीवों का ग्रहण हुआ है। 'अकसाई

લેશ્યાવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે ક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે, અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. કેમ કે તેઓના પરિણામો એવા વિલક્ષણ જ હોય છે. અહિયાં યાવત્પદથી સ્ત્રીવેદવાળા અને પુરૂષવેદવાળાઓ ગ્રહણ કરાયા છે. 'अवेदगा जहा अलेस्सा' સામાન્યથી વેદરહિત જીવો અલેશ્ય જીવોના કથન પ્રમાણે કેવળ ક્રિયાવાદી જ હોય છે, અક્રિયાવાદી હોતા નથી તથા અજ્ઞાનવાદી પણ હોતા નથી અને વૈનયિકવાદી પણ હોતા નથી. 'सकसाई जाव लोभकसाई जहा सलेस्सा' કષાયવાળા જીવો યાવત્ લોભકષાયવાળા જીવો લેશ્યાવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે ક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે. અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. અહિયાં યાવત્ પદથી માનકષાયવાળા, માયાકષાયવાળા, અને લોભકષાયવાળા, જીવો ગ્રહણ કરાયા છે,

वादिनो न तु अक्रियाऽज्ञानिकवैनयिकवादिनो भवन्ति। 'सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा' सयोगिनो यावत् पदेन मनोयोगिनो वचनयोगिनः काययोगिनः सलेश्यजीववदेव क्रियावादिनोऽपि अक्रियावादिनोऽपि अज्ञानिकवादिनोऽपि वैनयिकवादिनोऽपि भवन्तीति। 'अजोगी जहा अलेस्सा' अयोगिनो यथा अलेश्याः, अलेश्यजीववदेव अयोगिनः केवलं क्रियावादिनो भवन्ति न तु अक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनश्च। 'सागारोवउत्ता अनागारोवउत्ता जहा सलेस्सा' सलेश्यजीववदेव साकारोपयोगयुक्ता अनाकारोपयोगयुक्ताः क्रियावादिनो यावत् वैनयिकवादिनो भवन्तीति। 'नेरइयाणं भंते! किं किरियावाई पुच्छा' नैरयिकाः

जहा अलेस्सा' अकषायी जीव अलेश्य जीवों के जैसे केवल क्रियावादी ही होते हैं अक्रियावादी नहीं होते हैं, अज्ञानवादी भी नहीं होते और न वैनयिकवादी ही होते हैं। 'सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा' सलेश्य जीवों के जैसे सयोगी यावत् काययोगी जीव क्रियावादी भी होते हैं, अक्रियावादी भी होते हैं अज्ञानवादी भी होते हैं और वैनयिकवादी भी होते हैं यहां यावत्पद से मनोयोगी, वचनयोगी का ग्रहण हुआ है। 'अजोगी जहा अलेस्सा' अयोगी जीव अलेश्य जीवों के जैसे केवल क्रियावादी ही होते हैं। अक्रियावादी, अज्ञानवादी और वैनयिकवादी नहीं होते हैं। 'सागारोवउत्ता अनागारोवउत्ता जहा सलेस्सा' सलेश्य जीवों के जैसे साकारोपयुक्त और अनाकारोपयुक्त जीव क्रियावादी भी होते हैं, अक्रियावादी भी होते हैं, अज्ञानवादी भी होते हैं और वैनयिकवादी भी होते हैं। 'नेरइयाणं भंते! किं किरियावाई पुच्छा–'हे भदन्त! नैरयिक जीव क्या क्रिया-

'अकसाई जहा अलेस्सा' અકષાયી જીવ લેશ્યા વિનાના જીવોના કથન પ્રમાણે કેવળ ક્રિયાવાદી જ હોય છે. અક્રિયાવાદી હોતા નથી. અજ્ઞાનવાદી પણ હોતા નથી. તથા વૈનયિકવાદી પણ હોતા નથી. 'सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा' લેશ્યાવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે સયોગી યાવત્કાય યોગવાળા જીવો ક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અક્રિયાવાદી પણ હોય છે. અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે, અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. અહિયાં યાવત્પદથી મનોયોગવાળા, અને વચનયોગવાળાઓ, ગ્રહણ કરાયા છે. 'अजोगी जहा अलेस्सा' અયોગી જીવ અલેશ્ય જીવોની જેમ કેવળ ક્રિયાવાદી જ હોય છે. અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી, અને વૈનયિકવાદી હોતા નથી. 'सागारोवउत्ता अनागारोवउत्ता जहा सलेस्सा' લેશ્યાવાળા જીવોની જેમ સાકારોપયુક્ત અને અનાકારોપયુક્ત જીવો ક્રિયાવાદી પણ હોય છે. અક્રિયાવાદી પણ હોય છે. અને અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે. અને વૈનયિક

खलु भदन्त! किं क्रियावादिनोऽक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनो वेति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते। भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'किरियावाई वि जाव वेणइयवाई वि' क्रियावादिनोऽपि यावद्वैनयिकवादिनोऽपि भवन्ति विलक्षणपरिणामवत्त्वात् अत्र यावत्पदेना क्रियावादिनोऽपि अज्ञानिकवादिनोऽपि, इत्यनयोः संग्रहः। 'सलेस्सा णं भंते! नेरइया किं किरियावाई०' सलेश्याः खलु भदन्त! नैरयिकाः किं क्रियावादिनो यावद् वैनयिकवादिन इति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते। उत्तरमाह–'एवं–चेव' एवम्–सामान्यतो नारकदेव सलेश्यनारका अपि क्रियावादिनो यावद् वैनयिकवादिनो भवन्तीति।

वादी होते हैं? या अक्रियावादी होते हैं? या अज्ञानवादी होते हैं? या वैनयिकवादी होते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं–'गोयमा! किरियावाई वि जाव वेणइयवाई वि' हे गौतम! नैरयिक जीव क्रियावादी भी होते हैं, अक्रियावादी भी होते हैं अज्ञानवादी भी होते हैं और वैनयिकवादी भी होते हैं। क्यों की इनके इसी प्रकार के विलक्षण परिणाम होते हैं। 'सलेस्सा णं भंते! णेरइया किं किरियावाई०' हे भदन्त! जो नैरयिक जीव सलेश्य होते हैं वे क्या क्रियावादी होते हैं? या अक्रियावादी होते हैं? या अज्ञानवादी होते हैं? या वैनयिकवादी होते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं–'एवं चेव' हे गौतम! सामान्य नारक के जैसे सलेश्य नारक भी क्रियावादी भी होते हैं, अक्रियावादी भी होते हैं, अज्ञानवादी भी होते हैं और वैनयिकवादी भी

વાદી પણ હોય છે. 'नेरइया णं भंते! किं किरियावाई पुच्छा' હે ભગવન્ નૈરયિક જીવો શું ક્રિયાવાદી હોય છે? અક્રિયાવાદી હોય છે? અથવા અજ્ઞાનવાદી હોય છે? અથવા વૈનયિકવાદી હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે 'गोयमा! किरियावाई वि जाव वेणइयवाई वि' હે ગૌતમ! નૈરયિક જીવો ક્રિયાવાદી પણ હોય છે. અક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે. અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. કેમ કે તેઓને એ પ્રમાણેનું વિલક્ષણ પરિણામ હોય છે. 'सलेस्सा णं भंते! णेरइया किं किरियावाई' હે ભગવન્ જે નૈરયિક જીવો લેશ્યાવાળા હોય છે તેઓ શું ક્રિયાવાદી હોય છે? અથવા અક્રિયાવાદી હોય અથવા અજ્ઞાનવાદી હોય છે? અથવા વૈનયિકવાદી હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે–'एवं चेव' હે ગૌતમ! સામાન્ય નારકના કથન પ્રમાણે લેશ્યાવાળા નારક પણ ક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે, અને

'एवं जाव काउलेस्सा' एवं सलेश्यनारकवदेव यावत्पदेन कृष्णनीलकापोतलेश्यावन्तः कृष्णलेश्यादिका नारकाः क्रियावादिनो यावद्वैनयिकवादिनो भवन्ति। 'कण्हपक्खिया किरिया विवज्जिया' कृष्णपाक्षिका नारकाः क्रियाविवर्जिताः कृष्णपाक्षिका नारका न क्रियावादिनोऽपितु अक्रियावादिनो यावद्वैनयिकवादिनो भवन्तीति भावः। 'एवं एएणं कमेणं जच्चेव जीवाणं वत्तव्वया' एवमेतेन–उपरि दर्शितप्रकारेण यैव जीवानां वक्तव्यता कथिता 'सच्चेव नेरइयाणं वत्तव्वयावि' सैव नैरयिकाणां वक्तव्यताऽपि भणितव्या कियत्पर्यन्तं जीववक्तव्यताऽत्र भणितव्या तत्राह–'जाव' इत्यादि, 'जाव अणागारोवउत्ता' यावदनाकारोपयोगयुक्ता एतदन्तप्रकरणं सर्वमिहापि ज्ञातव्यम् अज्ञानित आरभ्य साकारोपयोगयुक्तान्त सम्पूर्ण प्रकरणस्य संग्रहो ज्ञातव्यइति। 'नवरं जं अत्थि तं भाणियव्वं' नवरं यद् ज्ञानादिकं यस्यास्ति विद्यते तस्य तदेव भणितव्यम् 'सेसं न भण्णइ' शेषं न

होते हैं। 'एवं जाव काउलेस्सा' सलेश्यनारक के जैसे ही कृष्णलेश्यावाले, नील लेश्यावाले और कापोतलेश्यावाले नैरयिक जीव क्रियावादी भी होते हैं यावत् वैनयिकवादी भी होते हैं। 'कण्हपक्खिया किरिया विवज्जिया' कृष्णपाक्षिक नारक क्रियावादी नहीं होते हैं–किन्तु अक्रियावादी यावत् वैनयिकवादी होते हैं। 'एवं एएणं कमेणं जच्चेव जीवाणं वत्तव्वया' इस प्रकार से ऊपर में प्रकटित किये गये अनुसार जो जीवों की वक्तव्यता कही गई है, 'सच्चेव नेरइयाणं वत्तव्वया वि' वही वक्तव्यता यहां नैरयिकों के सम्बन्ध में 'जाव अणागारोवउत्ता' यावत् अनाकारोपयोगवाले नैरयिकों के प्रकरण तक सूत्र कहनी चाहिये। 'नवरं जं अत्थि तं भाणियव्वं' परन्तु इस वक्तव्यता में जो जिसके हो वही उसके कहना चाहिये। 'सेसं न भण्णइ' और

વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. 'एवं जाव काउलेस्सा' લેશ્યાવાળા નારકના કથન પ્રમાણે જ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા, નીલલેશ્યાવાળા, અને કાપોત લેશ્યાવાળા, નૈરયિક જીવો ક્રિયાવાદી પણ હોય છે, યાવત્ વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. 'कण्हपक्खिया किरिया विवज्जिया' કૃષ્ણપાક્ષિક નારક ક્રિયાવાદી હોતા નથી. પરંતુ અક્રિયાવાદી યાવત્ વૈનયિકવાદી હોય છે. 'एवं एएणं कमेणं जच्चेव' जीवाणं वत्तव्वया' આ પ્રમાણે ઉપર બતાવેલ પ્રકારથી જીવોના સંબંધમાં જે કથન કહેલ છે, 'सच्चेव नेरइयाणं वत्तव्वया वि' એજ કથન અહિયાં નૈરયિકોના સંબંધમાં 'जाव अणागारोवउत्ता' યાવત્ અનાકારોપયોગવાળા નૈરયિકોના પ્રકરણ પર્યન્ત સઘળું કથન કહેવું જોઈએ 'नवरं जं अत्थि तं भाणियव्वं' પરંતુ આ કથનમાં જે સ્થાન જેના સંબંધી હોય તે સ્થાન તેને કહેવા જોઈએ. 'सेसं

भण्यते यत् तस्य नास्ति तत् तस्य न वक्तव्यम् इति । 'जहा नेरइया एवं जाव थणियकुमारा' यथा नैरयिकाणां लेश्यादि विशिष्टानामविशिष्टानां च वक्तव्यता कथिता तथैव असुरकुमारादारभ्य स्तनितकुमारपर्यन्तानां वक्तव्यता कथनीया इति भावः । 'पुढवीकाइया णं भंते ! किरियावाई पुच्छा' पृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! किं क्रियावादिनोऽक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनो वेति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'नो किरियावाई' पृथिवीकायिका जीवाः क्रियावादिनो नो भवन्ति 'अकिरियावाई वि अन्नाणियवाई वि' मिथ्यादृष्टित्वात् पृथिवीकायिका अक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनश्च भवन्ति वाग्योगाभावेन वादाभावेऽपि तद्भावादयोग्य जीवपरिणामसद्भावात् 'नो वेणइयवाई' नो वैनयिकवादिन एते भवन्ति तेषां वाग्योगाभावेन वादाभावेऽपि

जो जिसके न हो वह उसके नहीं कहना चाहिये। 'जहा नेरइया एवं जाव थणियकुमारा' जैसा कथन नैरयिकों के सम्बन्ध में प्रकट किया गया है-वैसा ही कथन यावत् स्तनितकुमारों तक जानना चाहिये। 'पुढवीकाइयाणं भंते ! किरियावाई पुच्छा' हे भदन्त ! पृथिवीकायिक जीव क्या क्रियावादी होते हैं ? या अक्रियावादी होते हैं ? या अज्ञानवादी होते हैं ? वैनयिकवादी होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं- 'गोयमा ! नो किरियावाई' हे गौतम ! पृथिवीकायिक जीव क्रियावादी नहीं होते है 'अकिरियावाई, वि अन्नाणियवाई वि' किन्तु वे अक्रियावादी भी होते हैं और अज्ञानवादी भी होते हैं। क्योंकि ये मिथ्यादृष्टि होते हैं। यद्यपि वाक्योगी के अभाव से इनमें वादका अभाव है तब भी तत्तद्भाव के योग्य जीव परिणाम का सद्भाव होने से इनमें इनका सद्भाव कहा गया है। 'नो वेणइयवाई' पृथिवीकायिक जीव

न भण्णइ' જે જેને ન હોય તે તેને કહેવા ન જોઈએ. 'जहा नेरइया एवं जाव थणियकुमारा' નૈરયિકના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું કથન કર્યું છે એજ પ્રમાણેનું કથન યાવત્ સ્તનિતકુમારો સુધી સમજી લેવું. 'पुढविकाइयाणं भंते ! किरियावाई पुच्छा' હે ભગવન્ પૃથ્વીકાયિક જીવ શું ક્રિયાવાદી હોય છે? અથવા અક્રિયાવાદી હોય છે? અથવા અજ્ઞાનવાદી હોય છે? અથવા વૈનયિકવાદી હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! नो किरियावाई' હે ગૌતમ ! પૃથ્વીકાયિક જીવ ક્રિયાવાદી હોતા નથી. 'अकिरियावाई वि, अन्नाणियवाई वि' પરંતુ તેઓ અક્રિયાવાદી હોય છે, અને અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે. કેમ કે-તેઓ મિથ્યાદૃષ્ટિ હોય છે, જો કે વચન યોગીના અભાવથી તેઓમાં વચન વાદનો અભાવ છે. તો પણ તે તે ભાવને યોગ્ય જીવ પરિણામનો

तत्प्रयोजकजीवपरिणामसद्भावाद्वादिन इति कथितम् । 'एवं पुढवीकाइया णं जं अत्थि तत्थ सव्वत्थ वि एयाइं दो मज्झिल्लाइं समोसरणाइं' एवं पृथिवीकायिकानां यदस्ति तत्र सर्वत्रापि एते द्वे मध्यमे समवसरणे, पृथिवीकायिकानां यदस्ति सलेश्यादिपदं तत्र सर्वत्रापि मध्यमम् 'अक्रियावादिनोऽपि अज्ञानिकवादिनोऽपि' इत्याकारकं समवसरणद्वयं ज्ञातव्यम् , सलेश्य-कृष्णलेश्य-नीललेश्य-कापोतलेश्य तेजोलेश्य-कृष्णपाक्षिक-सम्यग्दृष्टि-मिथ्यादृष्टि-सम्यग्मिथ्यादृष्टि-ज्ञान्याभिनिबोधिकज्ञानिश्रुतज्ञान्यौविकज्ञान्यज्ञानिमत्यज्ञानि श्रुताज्ञानि विभङ्गज्ञान्याहारसंज्ञोपयुक्त यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्त सवेदकनपुंसकवेदकसकषायि यावल्लोभकषायि सयोगि -मनोयोगि-वचनयोगि साकारोपयुक्ताः, इत्यादिषु यत्पदं सम्भवति तेषु पदेषु

वैनयिकवादी नहीं होते हैं । क्योंकि इनमें विनयवाद के योग्य परिणाम नहीं है। 'एवं पुढवीकाइयाणं जं अत्थि तत्थ सव्वत्थ वि एयाइं दो मज्झिल्लाइं समोसरणाइं' इसी प्रकार से पृथिविकायिक जीवों में जो-जो लेश्यादिक पद संभवित होते होवें उन-उन समस्त पदों में ये दो ही-अक्रियावादित्व और अज्ञानवादित्व-समवसरण कहना चाहिये। इस प्रकार सलेश्य कृष्णलेश्य, नीललेश्य कापोतलेश्य, तेजोलेश्य, कृष्णपाक्षिक, शुक्लपाक्षिक, सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, सम्यगमिथ्यादृष्टि, ज्ञानी, आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी अज्ञानी, मत्यज्ञान, श्रुताज्ञानी, विभंगज्ञानी, आहारसंज्ञोपयुक्त यावत् परिग्रह संज्ञोपयुक्त, सवेदक नपुंसकवेदक, सकषायी, यावत् लोभकषायी, संयोगी, मनोयोगी, वचनयोगी, साकारोपयुक्त, अनाकारोपयुक्त, इत्यादि

સદ્ભાવ હોવાથી તેઓમાં વચન યોગનો સદ્ભાવ કહ્યો છે. 'णो वेणइयवाई' પૃથ્વીકાયિક જીવ વૈનયિકવાદી હોતા નથી. કેમ કે તેઓમાં વિનયવાદને યોગ્ય પરિણામ હોતું નથી. 'एवं पुढवीकाइयाणं जं अत्थि तत्थ सव्वत्थ वि एयाइं दो मज्जिल्लाइं समोसरणाइं' એજ પ્રમાણે પૃથ્વીકાયિક જીવોમાં જે જે લેશ્યા વિગેરે પદો સંભવિત હોય છે, તે તે સઘળા પદોમાં આ બેજ અટલે કે-અક્રિયાવાદી પણું અને અજ્ઞાનવાદી પણું સમવસરણ કહેવા જોઈએ. આ રીતે લેશ્યાવાળા, કૃષ્ણલેશ્યાવાળા, નીલલેશ્યાવાળા, કાપેતલેશ્યાવાળા, તેજોલેશ્યાવાળા, કૃષ્ણપાક્ષિક, શુકલપાક્ષિક, સમ્યગ્દષ્ટિ, મિથ્યાદષ્ટિ, સમ્યગ્મિથ્યા દષ્ટિ, જ્ઞાની, આભિનિબોધિકજ્ઞાની, શ્રુતજ્ઞાની, ઔધિકજ્ઞાની, અજ્ઞાની, મતિ અજ્ઞાની, શ્રુતઅજ્ઞાની, વિભંગજ્ઞાની આહારસંજ્ઞોપયોગી યાવત્ પરિગ્રહસંજ્ઞોપયુક્ત, સવેદક, નપુંસકવેદક, સકષાયી યાવત્ લોભકષાયી, સયોગી, મનોયોગી વચનયોગી, સાકારોપયોગવાળા, અનાકારોપ યોગવાળા વિગેરે પદો પૈકી જે-જે

मध्यमं समवसरणद्वयं ज्ञातव्यमिति। कियत्पर्यन्तपदेषु समवसरणद्वयं मध्यमं ज्ञातव्यम्, तत्राह–'जाव' इत्यादि। 'जाव अणागारोवउत्ता वि' यावद् अनाकारोपयुक्ता अपि अनाकारोपयोगयुक्त पृथिवीकायिकपर्यन्तं मध्यमं समवसरणद्वयं ज्ञातव्यमिति। 'एवं जाव चउरिंदियाणं' एवं पृथिवीकायिकवदेव अप्कायिकादारभ्य चतुरिन्द्रियपर्यन्तानाम् 'सव्वट्ठाणेसु एयाइं चेव मज्झिल्लाइं दो समोसरणाइं' सर्वस्थानेषु लेश्यादि सम्भवितद्वारेषु एते एव मध्यमे द्वे समवसरणे ज्ञातव्ये। ननु द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रियादि जीवानां सासादनभावेन सम्यक्त्वं ज्ञानं चेष्यते इति द्वीन्द्रियादि जीवेषु क्रियावादित्वमेव युक्तं तत्स्वभावत्वात् तत्कथमुच्यते मध्यममेव समवसरणद्वयमेतेषामित्याशंक्याह–'सम्मत्त' इत्यादि, 'सम्मत्तनाणेहि वि एयाणि चेव

पदों में से जो-जो पद इनमें संभवित होते होवें उनमें से यावत् अनाकारोप युक्त पृथिवीकायिक पद तक इन दो मध्य के समवसरणों काही कथन करना चाहिये।

'एवं जाव चउरिंदियाणं' पृथिवीकायिक के जैसे ही अप्कायिक से लेकर चतुरिन्द्रियतक के जीवों के 'सव्वट्ठाणेसु एयाइं चेव मज्झिल्लाइं दो समोसरणाइं' समस्त लेश्यादिक संभवित स्थानों में ये दो ही मध्य के समवसरण वक्तव्य हुए हैं ऐसा जानना चाहिये।

शंका–द्वीन्द्रिय, तेइन्द्रिय जीवों के सासादन भाव से सम्यक्त्व और ज्ञान माने गये हैं अतः इनमें क्रियावादित्व रूप समवसरणही कहना चाहिये था, तो फिर आप इनमें मध्य के दो समवसरण ही क्यों प्रकट कर रहे हैं?

उत्तर–'सम्मत्तनाणेहि वि एयाणि चेव मज्झिल्लगाइं दो समो-

પદો આ પૃથ્વીકાયિકોમાં સંભવિત હોતા હોય તેમાંથી અનાકારોપયોગવાળા પૃથિવીકાયિક સંબંધી પદ સુધી આ બે મધ્યના સમવસરણોજ કહેવા જોઈએ

'एवं जाव चउरिंदियाणं' પૃથ્વીકાયિકના કથન પ્રમાણે જ અપ્કાયિકથી લઈને ચાર ઈન્દ્રિયવાળા જીવ સુધીના જીવોને 'सव्वट्ठाणेसु एयाइंचेव मज्झिल्लाइं दो समोसरणाइं' સઘળા લેશ્યાદિ સંભવિત સ્થાનોમાં આ બે જ એટલે કે અક્રિયાવાદી અને અજ્ઞાનવાદીપણાના બે મધ્યના સમવસરણ કહેવા લાયક કહ્યા છે. તેમ સમજવું.

શંકા—બે ઈંદ્રિયવાળા અને ત્રણ ઇંદ્રિયવાળા જીવોને સાસાદન ભાવથી સમ્યક્ત્વ અને જ્ઞાન માનવામાં આવેલ છે જેથી તેઓમાં ક્રિયાવાદી રૂપ સમવસરણ જ કહેવું જોઈએ પરંતુ આપ તેઓમાં બન્ને સમવસરણો કેમ કહો છે?

ઉત્તર—'सम्मत्तनाणेहि वि एयाणि चेव मज्झिल्लगाइं दो समोसरणाइं' જો

मज्झिल्लगाइं दो समोसरणाइं' सम्यक्त्वज्ञानयोरपि एते एव मध्यमे द्वे समवसरणे ज्ञातव्ये क्रियावादविनयवादौ हि विशिष्टतरे सम्यक्त्वादिपरिणामे स्यातां न तु सासादनरूपे इति भावः। यद्यपि द्वीन्द्रियादि चतुरिन्द्रियान्तेषु सम्यक्त्वं ज्ञानं च विद्यते तथापि अपर्याप्तावस्थायामेव तयोः सद्भावात् स्तोककालभावित्वेन विशिष्टरूपं सम्यक्त्वं ज्ञानं च नास्ति, अतः मध्यममेव समवसरणद्वयमिति। 'पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा जीवा' पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका यथा जीवाः सामान्यजीववदेव पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः क्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनोऽपि भवन्तीति। 'नवरं जं अत्थि तं भाणियव्वं' नवरं जीवापेक्षया इदमेव वैलक्षण्यं यत्

सरणाइं' यद्यपि इनके सासादन भाव से सम्यक्त्व और ज्ञान माने गये हैं-पर वे यहां अंश रूप से माने गये हैं इसलिये इनके सम्यक्त्व एवं ज्ञान में भी ये दो ही मध्य के समवसरण होने कहे गये हैं, क्यों कि क्रियावाद और विनयवाद ये दो विशिष्टतर सम्यक्त्वादि परिणामों के होने पर होते हैं। सासादन रूप सम्यक्त्व ज्ञान के होने पर नहीं होते हैं। यद्यपि द्वीन्द्रिय से लेकर चौइन्द्रिय तक के जीवों में सम्यक्त्व और ज्ञान है परन्तु वे अपर्याप्त अवस्था में ही उनके सद्भाव रूप से माने गये हैं-अतः उनमें इनका सद्भाव बहुत ही कम समयतक रहता है इसलिये ये विशिष्ट रूप में यहां नहीं हैं। इसी कारण वहां बीच के दो समवसरण माने गये हैं। 'पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा जीवा' सामान्य जीव के जैसे पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक जीव क्रियावादी भी होते हैं अक्रियावादी भी होते हैं, अज्ञानवादी भी होते हैं और वैनयिकवादी भी होते हैं। 'नवरं जं अत्थि

કે આ બે ઇંદ્રિયાદિકોમાં સાસાદન ભાવથી સમ્યકૃત્વ અને જ્ઞાન માનવામાં આવેલ છે, તો પણ તે અહિયાં અંશ રૂપથી માનેલા છે તેથી તેઓને સમ્યકૃત્વ અને જ્ઞાનમાં પણ આ બેજ મધ્યના સમવસરણ હોવાનું કહેલ છે. કેમકે ક્રિયાવાદ અને વિનયવાદ એ બે વિશેષ પ્રકારના સમ્યકૃત્વ વિગેરે પરિણામો હોય ત્યારે હોય છે. સાસાદનરૂપ સમ્યકૃત્વજ્ઞાન હોય ત્યારે હોતા નથી. જો કે બે ઇન્દ્રિયથી લઈને ચાર ઇંદ્રિયવાળા સુધીના જીવોમાં સમ્યકૃત્વ અને જ્ઞાન છે, પરંતુ તે અપર્યાપ્તાવસ્થામાં જ તેના સદ્ભાવ રૂપથી માનેલા છે, તેથી તેઓમાં તેનો સદ્ભાવ ઘણો જ ઓછા સમય સુધી રહે છે. તેથી તેઓ વિશેષ પ્રકારથી ત્યાં હોતા નથી. એજ કારણથી ત્યાં મધ્યના બે સમવસરણો માનેલા છે.

'पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं जहा जीवा' સામાન્ય જીવના કથન પ્રમાણે પંચેન્દ્રિય તિર્યંચયોનિવાળા જીવો ક્રિયાવાદી પણ હોય છે. અક્રિયાવાદી પણ હોય છે.

यदेव लेश्यादिकं योग्यत्वात् सम्भवति पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां तदेव लेश्यादिकं भणितव्यं नान्यदिति। 'मणुस्सा जहा जीवा तहेव निरवसेसं' मनुष्या यथा जीवा स्तथैव निरवशेषं जीववदेव सर्वाऽपि परिपाटी मनुष्येषु वक्तव्येति। 'वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा असुरकुमारा' असुरकुमारवदेव वानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिकाः क्रियावादिनो यावद्वैनयिकवादिनो भवन्तीति ॥सू० १॥

जीवनारकादि पञ्चविंशतितमदण्डकेषु यत् समवसरणं यत्रास्ति तत् समवसरणं विभज्य तत्र तत्रोक्तम्, अथ तेष्वेव जीवादि पञ्चविंशतितमदण्डकेषु आयुर्बन्धं निरूपयन्नाह—'किरियावाई णं भंते !' इत्यादि।

मूलम्—किरियावाई णं भंते ! किं नेरइयाउयं पकरेंति तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति ? मणुस्साउयं पकरेंति ? देवाउयं पकरेंति ? गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति देवाउयं पि पकरेंति।

तं भाणियव्वं' परन्तु जीव के कथन की अपेक्षा इनके कथन में यही विशेषता जाननी चाहिये कि इन पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिकों को जो पद संभवित होता हो वे ही पद उनमें कहने चाहिये—अन्य पद नहीं। 'मणुस्सा जहा जीवा तहेव निरवसेसं' मनुष्यों में जीव के जैसी ही समस्त परिपाटी कहनी चाहिये, 'वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा असुरकुमारा' असुरकुमारों के जैसी परिपाटी वानव्यन्तर-ज्योतिषिक और वैमानिक इनमें कहनी चाहिये, अर्थात् ये सब क्रियावादी भी होते हैं अक्रियावादी भी होते है अज्ञानवादी भी होते हैं और वैनयिकवादी भी होते हैं इत्यादि ॥१॥

'नवरं जं अत्थि तं भाणियव्वं' પરંતુ જીવના કથનની અપેક્ષાથી તેઓના કથનમાં એજ વિશેષપણું છે કે—આ પંચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકોને જે પદો સંભવિત થતા હોય એજ પદો તેઓમાં કહેવા જોઈએ. તેથી અન્ય કહેવાના નથી.

'मणुस्सा जहा जीवा तहेव निरवसेसं' મનુષ્યોમાં જીવના કથન પ્રમાણે જ સઘળું કથન કહેવું જોઈએ. 'वाणमंतरजोइसिय वेमाणिया जहा असुरकुमारा' અસુરકુમારોના સંબંધમાં જે પ્રમાણે કથન કહેલ છે, એજ પ્રમાણે વાનવ્યન્તર જ્યોતિષ્ક અને વૈમાનિકોના સંબંધમાં કહેવું જોઇએ. અર્થાત્ આ બધા ક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. તે સમજવું. ॥સૂ૦૧॥

जइ देवाउयं पकरेंति ? किं भवणवासिदेवाउयं पकरेंति जाव वेमाणियदेवाउयं पकरेंति गोयमा ! नो भवणवासिदेवाउयं पकरेंति, नो वाणमंतरदेवाउयं पकरेंति, नो जोइसिय देवाउयं पकरेंति, वेमाणियदेवाउयं पकरेंति । अकिरियावाई णं भंते ! जीवा किं नेरइयाउयं पकरेंति तिरिक्ख० पुच्छा, गोयमा ! नेरइयाउयं पि पकरेंति जाव देवाउयं पि पकरेंति । एवं अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि । सलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावाई किं नेरइयाउयं पकरेंति, पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति एवं जहा जीवा तहेव सलेस्सा वि चउहिं वि समोसरणेहिं भाणियव्वा । कण्हलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावाई किं नेरइयाउयं पकरेंति, पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पकरेंति नो देवाउयं पकरेंति । अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाई य चत्तारि वि आउयाइं पकरेंति । एवं नीललेस्सा वि काउलेस्सा वि । तेउलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावाई किं नेरइयाउयं पकरेंति पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पकरेंति, देवाउयं पि पकरेंति । जइ देवाउयं पकरेंति तहेव । तेउलेस्सा णं भंते ! जीवा अकिरियावाई किं नेरइयाउयं पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति मणुस्साउयं पि पकरेंति तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति, देवाउयं पि पकरेंति । एवं अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि जहा तेउलेस्सा, एवं पम्हलेस्सा वि सुक्कलेस्सा वि नायव्वा । सलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावाई किं नेरइयाउयं पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति नो तिरिक्ख० नो मणुस्स०

नो देवाउयं पकरेंति । कण्हपक्खिया णं भंते! जीवा अकिरियावाई किं नेरइयाउयं पुच्छा, गोयमा! नेरइयाउयं पि पकरेंति। एवं चउव्विहं पि। एवं अन्नाणियवाई वि, वेणइयवाई वि। सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा। सम्मदिट्ठी णं भंते! जीवा किरियावाई किं नेरइयाउयं पुच्छा गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति मणुस्साउयं पकरेंति देवाउयं पि पकरेंति। मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया। सम्मामिच्छादिट्ठी भंते! जीवा अन्नाणियवाई किं नेरइयाउयं जहा अलेस्सा। एवं वेणइयवाई वि। णाणी आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य ओहियनाणी य जहा सम्मदिट्ठी। मणपज्जवनाणी णं भंते! पुच्छा, गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति नो तिरिक्ख० नो मणुस्स० देवाउयं पकरेंति। जइ देवाउयं पकरेंति किं भवणवासि० पुच्छा, गोयमा! णो भवणवासिदेवाउयं पकरेंति नो वाणमंतर० नो जोइसिय० वेमाणियदेवाउयं पकरेंति। केवलनाणी जहा अलेस्सा। अन्नाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया, सन्नासु चउसु वि जहा सलेस्सा। नो सन्नोवउत्ता जहा मणपज्जवनाणी सवेदगा जाव नपुंसगवेयगा जहा सलेस्सा। अवेयगा जहा अलेस्सा। सकसाई जाव लोभकसाई जहा सलेस्सा। अकसाई जहा अलेस्सा। सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा। अजोगी जहा अलेस्सा। सागारोवउत्ता य अणागारोवउत्ता य जहा सलेस्सा ॥सू० २॥

छाया—क्रियावादिनः खलु भदन्त! जीवाः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति? तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति? मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति? देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति? गौतम! नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति नो तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति मनुष्यायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति देवायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति। यदि देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति किं भवनवासि-

देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति यावद्वैमानिकदेवायुष्कं प्रकुर्वन्ति ? गौतम ! नो भवनवासिदेवायुष्कं प्रकुर्वन्ति, नो वानव्यन्तरदेवायुष्कं प्रकुर्वन्ति नो ज्योतिष्कदेवायुष्कं प्रकुर्वन्ति, वैमानिकदेवायुष्कं प्रकुर्वन्ति। अक्रियावादिनः खलु भदन्त ! जीवाः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति तिर्यग्० पुच्छा, गौतम ! नैरयिकायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति यावद्देवायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति। एवमज्ञानिकवादिनोऽपि, वैनयिकवादिनोऽपि। सलेश्याः खलु भदन्त ! जीवाः क्रियावादिनः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति पृच्छा, गौतम ! नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, एवं यथैव जीवा स्तथैव सलेश्या अपि चतुर्भिरपि समवसरणे भणितव्याः कृष्णलेश्याः खलु भदन्त जीवाः क्रियावादिनः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति पृच्छा, गौतम ! नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, नो तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति। अक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनश्च चत्वारि अपि आयुष्काणि प्रकुर्वन्ति, एवं नीललेश्या अपि, कापोतलेश्या अपि तेजोलेश्याः खलु भदन्त ! जीवाः क्रियावादिनः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति पृच्छा, गौतम ! नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, नो तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति, देवायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति। यदि देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति तथैव। तेजोलेश्याः खलु भदन्त ! जीवाः अक्रियावादिनः किं नैरयिकायुष्कं पृच्छा, गौतम ! नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, मनुष्यायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति, तिर्यग्योनिकायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति, देवायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति। एवमज्ञानिकवादिनोऽपि, वैनयिकवादिनोऽपि यथा तेजोलेश्याः। एवं पद्मलेश्या अपि शुक्ललेश्या अपि ज्ञातव्याः। अलेश्याः खलु भदन्त ! जीवाः क्रियावादिनः किं नैरयिकायुष्कं पृच्छा, गौतम ! नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, नो तिर्यग्० नो मनु० नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति। कृष्णपाक्षिकाः खलु भदन्त ! जीवा अक्रियावादिनः किं नैरयिकायुष्कं पृच्छा, गौतम ! नैरयिकायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति एवं चतुर्विधमपि। एवमज्ञानिकवादिनोऽपि, वैनयिकवादिनोऽपि। शुक्लपाक्षिका यथा सलेश्याः। सम्यग्दृष्टयः खलु भदन्त ! जीवाः क्रियावादिनः किं नैरयिकायुष्कं पृच्छा, गौतम ! नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, नो तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति देवायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति। मिथ्यादृष्टयो यथा कृष्णपाक्षिकाः। सम्यग्मिथ्यादृष्टयः खलु भदन्त ! जीवाः अज्ञानिकवादिनः किं नैरयिकायुष्कं० यथा अलेश्याः। एवं वैनयिकवादिनोऽपि। ज्ञानि आभिनिबोधिकज्ञानी च श्रुतज्ञानि च अवधिज्ञानी च यथा सम्यग्दृष्टिः। मनःपर्यवज्ञानिनश्च भदन्त ! पृच्छा, गौतम ! नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति नो तिर्यग्० नो मनुष्य० देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति। यदि देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति किं भवनवासि० पृच्छा,

गौतम ! नो भवनवासि देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति नो वानव्यन्तर० नो ज्योतिष्क० वैमानिकदेवायुष्कं प्रकुर्वन्ति । केवलज्ञानिनो यथा अलेश्याः । अज्ञानिनो यावद् विभङ्गज्ञानिनो यथा कृष्णपाक्षिकाः । संज्ञासु चतसृष्वपि यथा सलेश्याः । नो संज्ञोपयुक्ता यथा मनःपर्यवज्ञानिनः । सवेदका यावत् नपुंसकवेदकाः यथा सलेश्याः । अवेदका यथा अलेश्याः । सकषायिनो यावत् लोभकषायिणः यथा सलेश्याः । अकषायिनो यथा अलेश्याः । सयोगिनो यावत् काययोगिनो यथा सलेश्याः । अयोगिनो यथा अलेश्याः । साकारोपयुक्ताश्च, अनाकारोपयुक्ताश्च यथा सलेश्याः ॥सू० २॥

टीका—'किरियावाई णं भंते ! जीवा' क्रियावादिनः खलु भदन्त ! जीवाः 'किं नेरइयाउयं पकरेंति' किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति नारकभवसम्बन्धि आयुर्बध्नातीत्यर्थः अथवा 'तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति' तिर्यग्योनिकसम्बन्धि आयुष्कं प्रकुर्वन्ति तादृशायुष्कंप्रबन्धं कुर्वन्तीति, अथवा-'मणुस्साउयं पकरेंति' मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति अथवा 'देवाउयं पकरेंति' देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति ? इति प्रश्नः भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'नो नेरइयाउयं पकरेंति' नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति नारकभवसम्बन्धि आयुष्ककर्मबन्धनं कुर्वन्ती-

जीव नारकादि २५ दण्डकों में जो-जो समवसरण जहां-जहां है वह-वह समवसरण वहां-वहां विभक्त करके प्रकट किया गया है। अब उन्हीं जीवादि २५ दण्डकों में आयु के बन्ध का निरूपण किया जाता है।-'किरियावाई णं भंते ! जीवा नेरइयाउयं पकरेंति'-

टीकार्थ—हे भदन्त जो जीव क्रियावादी हैं वे क्या नैरयिक आयुष्क का बन्ध करते हैं ? 'तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति' तिर्यञ्चायुका बन्ध करते हैं ? 'मणुस्साउयं पकरेंति' मनुष्यायुका बन्ध करते हैं ? 'देवाउयं पकरेंति' अथवा-देवायु का बन्ध करते हैं ? इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति' हे गौतम ! क्रियावादी जीव नैरयिक आयुका बन्ध नहीं करते है, 'णो तिरिक्खजोणिया-

જીવ નારક વિગેરે દંડકોમાં જે-જે સમવસરણ જ્યાં જ્યાં હોય છે, તે તે સમવસરણ ત્યાં ત્યાં જુદા જુદા પ્રગટ કરેલા છે હવે તે જીવ વિગેરે ૨૫ પચ્ચીસ દંડકોમાં આયુના બંધનું નિરૂપણ કરવામાં આવે છે.—'किरियावाईण भंते ! जीवा किं नेरइयाउयं पकरेंति' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ— હે ભગવન્ જે જીવો ક્રિયાવાદી છે, તેઓ શું નૈરયિક આયુષ્યનો બંધ કરે છે? 'तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति' તિર્યંચ આયુષ્યનો બંધ કરે છે? 'देवाउयं पकरेंति' અથવા દેવ આયુષ્યનો બંધ કરે છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति' હે ગૌતમ ! ક્રિયાવાદી જીવ નૈરયિક આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી. 'णो तिरिक्खजोणिया-

त्यर्थः। 'नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति' नो-न वा तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति किन्तु 'मणुस्साउयं पकरेंति देवाउयं पकरेंति' मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति, देवायुष्कमपि कुर्वन्तीत्युत्तरम्। 'जइ देवाउयं पकरेंति' यदि क्रियावादिनो जीवा देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति तदा 'किं भवणवासि देवाउयं पकरेंति जाव वेमाणिय देवाउयं पकरेंति' किं भवनवासिदेवायुष्कं प्रकुर्वन्ति यावत् वैमानिकदेवायुष्कं प्रकुर्वन्ति यावत्पदेन वानव्यन्तरज्योतिष्कदेवयोः संग्रहः एषु कतमदायुर्बन्धं प्रकुर्वन्तीति प्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'णो भवणवासि देवाउयं पकरेंति' नो भवनवासि देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति 'णो वाणमंतरदेवाउयं पकरेंति' नो न वा वानव्यन्तरदेवायुष्कं प्रकुर्वन्ति' 'णो जोइसियदेवाउयं पकरेंति' नो न वा ज्योतिष्कदेवायुष्कं प्रकुर्वन्ति अपि तु 'वेमाणियदेवाउयं पकरेंति' वैमानिकदेवायुष्कं प्रकुर्वन्ति क्रियावादिनो

उयं पकरेंति' तिर्यञ्चआयु का बन्ध नहीं करते हैं, किन्तु 'मणुस्साउयं पि पकरेंति देवाउयं पि पकरेंति' मनुष्य आयुका भी बन्ध करते हैं और देवायु का भी बन्ध करते हैं। 'जइ देवाउयं पकरेंति किं भवणवासिदेवाउयं पकरेंति जाव वेमाणियदेवाउयं पकरेंति' यदि वे देवायु का बन्ध करते हैं तो क्या भवनवासी देवों की आयुका बन्ध करते हैं या यावत् वैमानिक देवों की आयुका बन्ध करते हैं? यहां यावत् शब्द से वानव्यन्तर और ज्योतिषिक इन दो का ग्रहण हुआ है। उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! णो भवणवासिदेवाउयं पकरेंति णो वाणमंतर देवाउयं पकरेंति' हे गौतम! क्रियावादी जीव न भवनवासी देवों की आयुका बन्ध करते हैं न वानव्यन्तरदेवों की आयुका बन्ध करते हैं 'णो जोइसिय देवाउयं पकरेंति' न ज्योतिषिक देवों की आयुका बन्ध करते हैं। अपितु 'वेमाणियावाउयं पकरेंति' वे वैमानिक देवोंकी आयुका बन्ध

उयं पकरेंति' तिर्यंच आयुनो बंध करता नथी. परंतु 'मणुस्साउयं पकरेंति देवाउयं पकरेंति' मनुष्य आयुनो बंध करे छे, अने देव आयुनो बंध करे छे. 'जइ देवाउयं पकरेंति किं भवणवासी देवाउयं पकरेंति' जो तेओ देव आयुनो बंध करे छे, तो शुं तेओ भवनवासी देवोना आयुष्यनो बंध करे छे? यावत् वैमानिक देवोना आयुष्यनो बंध करे छे? अहियां यावत् शब्दथी वानव्यन्तर अने ज्योतिष्क आ बन्ने ग्रहण कराया छे. आ प्रश्नना उत्तरमां प्रभुश्री कहे छे के-'गोयमा! णो भवणवासिदेवाउयं पकरेंति णो वाणमंतरदेवाउयं पकरेंति' हे गौतम! क्रियावादी जीव भवनवासि देवोनी आयुष्यनो बंध करता नथी तथा वानव्यन्तर देवोनी आयुष्यनो बंध करता नथी. 'णो जोइसिय देवाउयं पकरेंति' ज्योतिष्क देवोनी आयुष्यनो बंध करता नथी

जीवा इति। 'अकिरियावाई णं भंते! जीवा किं नेरइयाउयं पकरेंति तिरिक्ख० पुच्छा' अक्रियावादिनः खलु भदन्त! जीवाः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति देवायुष्कं वा प्रकुर्वन्ति इति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'नेरइयाउयं पि पकरेंति जाव देवाउयं पि पकरेंति' नैरयिकायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति यावद् देवायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति अत्र यावत्पदेन तिर्यग्योनिकायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति मनुष्यायुष्कमपि प्रकुर्वन्तीत्यनयोः संग्रहो भवतीति। 'एवं अन्नाणियवाई वि, वेणइयवाई वि' एवम्-अक्रियावादिन इव अज्ञानिकवादिनोऽपि वैनयिकवादिनोऽपि नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, तिर्यग्योनिकायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति मनुष्यायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति 'सलेस्साणं भंते! जीवा किरियावाई' सलेश्याः खलु भदन्त! जीवाः क्रियावादिनः 'किं नेरइयाउयं

करते हैं। 'अकिरियावाई णं भंते! जीवा किं नेरइयाउयं पकरेंति तिरिक्ख० पुच्छा' हे भदन्त? अक्रियावादी जीव क्या नैरयिक आयुका बन्ध करते हैं? या तिर्यग्योनिक की आयुका बन्ध करते हैं? या मनुष्य आयुका बन्ध करते हैं? या देवायुष्क का बन्ध करते हैं? इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! नेरइयाउयं पि पकरेंति०' हे गौतम! अक्रियावादी नैरयिक की आयुका भी बन्ध करते हैं यावत् देवायुका भी बन्ध करते हैं। यहां यावत्पद से तिर्यग्योनिक की आयुका भी वे बन्ध करते हैं और मनुष्य आयुका भी वे बन्ध करते हैं ऐसा पाठ गृहीत हुआ है। 'एवं अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि' इसी प्रकार से अज्ञानवादी भी और वैनयिकवादी भी चारों गतियों के आयुष्क का बन्ध करते हैं। 'सलेस्सा णं भंते! जीवा किरियावाई' हे भदन्त!

પરંતુ 'वेमाणियदेवाउयं पकरेंति' તેઓ વૈમાનિકદેવોના આયુષ્યનો બંધ કરે છે. 'अकिरियावाईणं भंते! जीवा किं नेरइयाउयं पकरेंति तिरिक्ख० पुच्छा' હે ભગવન્ અક્રિયાવાદી જીવ શું નૈરયિક આયુષ્યનો બંધ કરે છે? અથવા તિર્યંચયોનિકના આયુષ્યનો બંધ કરે છે? અથવા મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે? અથવા દેવ આયુષ્યનો બંધ કરે છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा! नेरइयाउयं वि पकरेंति' હે ગૌતમ અક્રિયાવાદી નૈરયિકના આયુષ્યનો પણ બંધ કરે છે, યાવત્ દેવ આયુષ્યનો પણ બંધ કરે છે. અહિયાં યાવત્પદથી તેઓ તિર્યંચયોનિકના આયુષ્યનો પણ બંધ કરે છે. અને મનુષ્ય આયુષ્યનો પણ તેઓ બંધ કરે છે. એ પ્રમાણેનો પાઠ ગ્રહણ કરાયો છે. 'एवं अन्नाणियवाई वि. वेणइयवाई वि' એજ પ્રમાણે અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદી પણ ચારે ગતિયોના આયુષ્યનો બંધ કરે છે. 'सलेस्साणं भंते!

पकरेंति पुच्छा' किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति ? इति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'नो नेरइयाउयं एवं जहेव जीवा तहेव सलेस्सा वि चउहि वि समोसरणेहिं भाणियव्वा' नो नैरयिकायुष्कं एवं यथैव जीवा स्तथैव सलेश्या अपि चतुर्भिः समवसरणै भणितव्याः, यथा क्रियावादिनो जीवाः नैरयिकायुष्कं न प्रकुर्वन्ति नो तिर्यगायुष्कं प्रकुर्वन्ति अपि तु मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति तथा देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति, यदि देवायुष्क प्रकुर्वन्ति तदा किं भवनपत्यादि वैमानिकान्तेषु आयुषो बन्धं कुर्वन्तीति प्रश्नः, नो भवनपत्यादिषु किन्तु वैमानिकेष्वेव आयुर्बन्धं कुर्वन्तीत्युत्तरम् एतदेव 'जहेव जीवा तहेव

लेश्यावाले क्रियावादी जीव क्या नैरयिक आयुका बन्ध करते हैं ? या तिर्यग्योनिक की आयुका बन्ध करते है ? या मनुष्यायु का बन्ध करते है ? या देवायुष्कका बन्ध करते हैं ? इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-हे गौतम ! 'नो नेरइयाउयं एवं जहेव जीवा तहेव सलेस्सा वि चउहि वि समोसरणेहिं भाणियव्वा' जिस प्रकार क्रियावादी जीव नैरयिकायुष्क का बन्ध नहीं करते हैं तिर्यग्योनिकायुष्क का बन्ध नहीं करते हैं, किन्तु मनुष्य आयुका बन्ध करते हैं देवायुष्क का बन्ध करते हैं-देवायुष्क में भी वे केवल वैमानिक देवों की ही आयुका बन्ध करते हैं भवनपत्यादिकों की आयुका बन्ध नहीं करते हैं उसी प्रकार से सलेश्य जीव भी नैरयिकायुष्क का बन्ध नहीं करते हैं इत्यादि प्रकार से चारों समवसरणवाले सलेश्य जीवों का सब कथन जीव के जैसा ही जानना चाहिये, यही बात 'जहेव जीवा तहेव सलेस्सा वि'

जीवा किरियावाइ' હે ભગવન્ લેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી જીવો શું નૈરયિક આયુષ્યનો બંધ કરે છે ? અથવા તિર્યંચયોનિકોના આયુષ્યનો બંધ કરે છે ? અથવા મનુષ્યના આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા દેવ આયુષ્યનો બંધ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-હે ગૌતમ ! 'नो नेरइयाउयं एवं जहेव जीवा तहेव सलेस्सावि चउहिवि समोसरणेहिं भाणियव्व' જે પ્રમાણે ક્રિયાવાદી જીવો નૈરયિક આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી, તિર્યંચયોનિકોના આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી. પરંતુ મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે, તથા દેવ આયુષ્યનો બંધ કરે છે, દેવ આયુમાં પણ તેઓ કેવળ વૈમાનિક દેવોના જ આયુનો બંધ કરે છે. ભવનપતિ વિગેરેના આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી, એજ પ્રમાણે લેશ્યાવાળા જીવ પણ નૈરયિકાયુષ્યનો બંધ કરતા નથી. વિગેરે પ્રકારનું સઘળું કથન જીવના પ્રકરણમાં કહ્યા અનુસાર અહીંયાં સમજવું એજ વાત 'जहेव जीवा

सलेस्सा वि' इत्यनेन प्रकरणेन दर्शितमिति। 'कण्हलेस्सा णं भंते! जीवा किरियावाई किं नेरइयाउयं पकरेंति पुच्छा' कृष्णलेश्याः खलु भदन्त! जीवाः क्रियावादिनः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति यद्वा तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति अथवा मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति अथवा देवायुष्कं प्रकुर्वन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम। 'नो नेरइयाउयं पकरेंति' नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति क्रियावादिनः कृष्णलेश्याः जीवाः तथा 'नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति' नो न वा तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति अपि तु 'मणुस्साउयं पकरेंति' मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति किन्तु 'नो देवाउयं पकरेंति' नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति, कृष्णलेश्याः जीवाः क्रियावादिनो देवनारकापेक्षया

इस प्रकरण से स्पष्ट की गई है। 'कण्हलेस्सा णं भंते! जीवा किरियावाई किं नेरइयाउयं पकरेंति पुच्छा?' हे भदन्त! कृष्णलेश्यावाले क्रियावादी जीव क्या नैरयिक आयुका बन्ध करते हैं? या तिर्यगायु का बन्ध करते हैं, या मनुष्य आयुका बन्ध करते हैं या देवायु का बन्ध करते हैं? इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम!' 'नो नेरइयाउयं पकरेंति,' कृष्णलेश्यावाले क्रियावादी जीव नैरयिक आयुका बन्ध नहीं करते हैं तथा-'नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति' न वे तिर्यगायु का बन्ध करते हैं, अपितु-वे 'मणुस्साउयं पकरेंति०' मनुष्यायुका ही बन्ध करते हैं। 'णो देवाउयं पकरेंति' देवायु का बन्ध नहीं करते हैं। ऐसा जो यह कथन किया गया है कि कृष्णलेश्यावाले क्रियावादी जीव मनुष्य आयुका ही बन्ध करते हैं सो यह देव नारकों की

तहेव सलेस्सा वि' આ સૂત્રપાઠથી સ્પષ્ટ કરેલ છે. 'कण्हलेस्सा णं भंते! जीवा किरियावाई किं नेरइयाउयं पकरेंति पुच्छा' હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી જીવો શું નૈરયિક આયુષ્યનો બંધ કરે છે? અથવા તિર્યંચ આયુનો બંધ કરે છે? અથવા મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે? અથવા દેવ આયુનો બંધ કરે છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा!' હે ગૌતમ! 'नो नेरइयाउयं पकरेंति' હે ગૌતમ! કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી જીવો નૈરયિકના આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી. 'नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति' તેઓ તિર્યંચ યોનીવાળાઓના આયુષ્યનો પણ બંધ કરતા નથી પરંતુ તેઓ 'मणुस्साउयं पकरेंति' મનુષ્ય આયુનો જ બંધ કરે છે. णो देवाउयं पकरेंति' દેવ આયુનો તેઓ બંધ કરતા નથી આ પ્રમાણે જે આ કથન કર્યું છે, કે 'કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી જીવો મનુષ્ય આયુનો જ બંધ કરે છે. તો તે

विज्ञेया इति मनुष्यतिरश्चोः कृष्णादि त्रितय लेश्याकाले आयुर्बन्धाभावादिति। 'अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाई य, चत्तारि वि आउयाइं पकरेंति' कृष्णलेश्या अक्रियावादिनः, अज्ञानिकवादिनः, वैनयिकवादिनश्च जीवाः चत्वारि अपि आयुष्काणि नारकतिर्यग्मनुष्यदेवसम्बन्धीनि प्रकुर्वन्ति, चतुष्प्रकारकमपि आयुष्कर्म बध्नन्तीति भावः। 'एवं नीललेस्सा वि काउलेस्सा वि' एवं कृष्णलेश्यवदेव नीललेश्यावन्तः कापोतलेश्यावन्तश्च अक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनश्च जीवाः चतुष्प्रकारकमपि आयुष्कर्म बध्नन्तीति भावः। क्रियावादिनो जीवास्तु केवलं मनुष्यायुष एव बन्धं कुर्वन्तीति' 'तेउलेस्सा णं भंते! जीवा किरियावाई किं नेरइयाउयं पकरेंति पुच्छा' तेजोलेश्याः खलु भदन्त!

अपेक्षा से कहा गया हैं क्यों की मनुष्य और तिर्यञ्च कृष्णादि तीन लेश्या के सद्भावकाल में आयुका बन्ध नहीं करते हैं। 'अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाईय चत्तारि वि आउयाइं पकरेंति' अक्रियावादी, अज्ञानवादी, वैनयिकवादी ये सब चारों भी आयुओं का बन्ध करते हैं। कृष्णलेश्यावाले अक्रियावादी जीव 'अन्नाणियवाई' अज्ञानवादी जीव और 'वेणइयवाईय' वैनयिकवादी जीव चारों आयुओं का बन्ध करते हैं। 'एवं नीललेस्सा वि काउलेस्सा वि' इसी प्रकार नीललेश्यावाले और कापोतलेश्यावाले अक्रियावादी जीव, अज्ञानिकवादी जीव एवं वैनयिकवादी जीव चारों प्रकार की आयु का बन्ध करते हैं। और क्रियावादी जीव मात्र मनुष्यायु का ही बन्ध करते हैं 'तेउलेस्सा णं भंते! जीवा किरियावाई किं नेरइयाउयं पकरेंति पुच्छा' हे भदन्त! तेजोलेश्यावाले

કથન આ દેવ નારકોની અપેક્ષાથી કહેલ છે. કેમ કે-મનુષ્ય અને તિર્યંચ કૃષ્ણ વિગેરે ત્રણ લેશ્યાના સદ્ભાવકાળમાં આયુનો બંધ કરતા નથી. 'अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाई य चत्तारि वि आउयाइं पकरेंति' અક્રિયાવાદી અજ્ઞાનવાદી, વૈનયિકવાદી એ બધા ચારે પ્રકારના આયુષ્યનો બંધ કરે છે, કૃષ્ણલેશ્યાવાળા અક્રિયાવાદી જીવ 'अन्नाणियवाई' અજ્ઞાનવાદી જીવ અને 'वेणइयवाईय' વૈનયિકવાદી જીવ ચારે પ્રકારના આયુનો બંધ કરે છે, 'एवं नीललेस्सा वि काउलेस्सा वि' એજ પ્રમાણે નીલલેશ્યાવાળા અને કાપોતલેશ્યાવાળા જીવો અક્રિયાવાદી જીવ, અજ્ઞાનવાદી જીવ અને નૈરયિકવાદી જીવના કથન પ્રમાણે ચારે પ્રકારના આયુષ્યનો બંધ કરે છે. અને ક્રિયાવાદી જીવ કેવળ મનુષ્યાયુનો જ બંધ કરે છે. 'तेउलेस्सा णं भंते! जीवा किरियावाई किं नेरइयाउयं पकरेंति' पुच्छा' હે ભગવન્ તેજોલેશ્યાવાળા જીવો કે જેઓ

जीवाः क्रियावादिनः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति अथवा तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति अथवा मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति यद्वा देवायुष्कं प्रकुर्वन्तीत्येवं प्रकारेण प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते, भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'नो नेरइयाउयं पकरेंति' नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति तेजोलेश्याः क्रियावादिनः 'नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति' नो तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, किन्तु 'मणुस्साउयं पकरेंति' मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति। 'देवाउयं पि पकरेंति' देवायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति। 'जइ देवाउयं पकरेंति' यदि तेजोलेश्याः क्रियावादिनो जीवा देवसम्बन्धि आयुष्कं प्रकुर्वन्ति तदा किं भवनवासि देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति यावत् वैमानिकदेवायुष्कं प्रकुर्वन्तीति प्रश्नः, उत्तरमाह–'तहेव' तथैव यथैव क्रियावादिजीवानां देवादौ आयुर्बन्धो निरूपित स्तथैव तेजोलेश्य

जीव जो की क्रियावादी है, वे क्या नैरयिकायुष्क का बन्ध करते हैं? अथवा तिर्यग्योनिक की आयुका बन्ध करते हैं? अथवा मनुष्य आयु का बन्ध करते हैं? अथवा देवायु का बन्ध करते हैं इस प्रश्न के उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं–'गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति' हे गौतम! वे नैरयिक आयुका बन्ध नहीं करते हैं 'नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति' तिर्यग्योनिक आयुका बन्ध नहीं करते हैं किन्तु वे 'मणुस्साउयं पकरेंति, देवाउयंपि पकरेंति' मनुष्य आयुका बन्ध करते हैं और देवायु का भी बन्धकरते हैं। 'जइ देवाउयं पकरेंति' यदि वे तेजोलेश्यावाले क्रियावादी जीव देवायुका बन्ध करते हैं तो क्या वे भवनवासि देवायु का बन्ध करते हैं? या यावत् वैमानिक देवायु का बन्ध करते हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–'तहेव' हे गौतम! जिस प्रकार से क्रियावादी जीवों

ક્રિયાવાદી હોય છે. તેઓ શું નૈરયિક આયુષ્યનો બંધ કરે છે? અથવા તિર્યંચયોનિક આયુનો બંધ કરે છે? અથવા મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે? કે દેવ આયુનો બંધ કરે છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે–'गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति' હે ગૌતમ! તેઓ નૈરયિક આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી. 'नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति' તિર્યંચયોનિક આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી. પરંતુ તેઓ 'मणुस्साउयं पकरेंति, देवाउयं पि पकरेंति' મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે. અને દેવ આયુનો પણ બંધ કરે છે. 'जइ देवाउयं पकरेंति' તેજોલેશ્યાવાળા જીવો જો દેવ આયુનો બંધ કરે છે, તો શું તેઓ ભવનવાસી દેવ આયુનો બંધ કરે છે? અથવા યાવત્ વૈમાનિક દેવ આયુનો બંધ કરે છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે–'तहेव' હે ગૌતમ! જે પ્રમાણે ક્રિયાવાદી જીવોને વૈમાનિક દેવ આયુનો બંધ થવાના સંબંધમાં

क्रियावादिनामपि वक्तव्यम्, भवनवासि वानव्यन्तरज्योतिष्कदेवायुष्कं न कुर्वन्ति किन्तु वैमानिकदेवायुष्कं कुर्वन्तीति भावः। 'तेउलेस्सा णं भंते! जीवा अकिरियावाई किं नेरइयाउयं पुच्छा' तेजोलेश्याः खलु भदन्त! जीवाः अक्रियावादिनः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति अथवा तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति यद्वा मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति देवायुष्कं वा प्रकुर्वन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'नो नेरइयाउयं पकरेंति' नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति तेजोलेश्या अक्रियावादिनो जीवाः किन्तु 'मणुस्साउयंपि पकरेंति' मनुष्यभवसम्बन्धि आयुष्कमपि प्रकुर्वन्ति तथा-'तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति' तिर्यग्योनिकायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति तथा-'देवाउयं पि पक-

---

को वैमानिक देवायुका बन्ध होना कहा गया है उसी प्रकार से तेजोलेश्यावाले क्रियावादीयों को भी वैमानिक देवायुका ही बन्ध कहा गया है। भवनवासी वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवायु का बन्ध करना नहीं कहा गया है। 'तेउलेस्साणं भंते! जीवा अकिरियावाई किं नेरइयाउयं पुच्छा' हे भदन्त! जो तेजोलेश्यावाले जीव अक्रियावादी होते हैं उसको क्या नैरयिक आयुका बन्ध होता है? या तिर्यगायुका बन्ध होता है? या मनुष्यायु का बन्ध होता है? या देवायुका बन्ध होता है? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति' हे गौतम! उनके नैरयिक आयुका बन्ध नहीं होता है, किन्तु- 'मणुस्साउयं पि पकरेंति' उनको मनुष्यायु का भी बन्ध होता है? 'तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति' तिर्यगायुका भी बन्ध होता है 'देवाउयं पि पकरेंति' और

કથન કરેલ છે, એજ પ્રમાણે તેજોલેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદીયોને પણ વૈમાનિક દેવ આયુનો બંધ કહેલ છે, ભવનવાસી, વાનવ્યંતર, અને જ્યોતિષ્ક દેવ આયુનો બંધ કરવાનું કહેલ નથી. 'तेउलेस्सा णं भंते। जीवा अकिरियावाई किं नेरइयाउयं पुच्छा' હે ભગવન્ જે તેજોલેશ્યાવાળા જીવો અક્રિયાવાદી હોય છે, તેઓને શું નૈરયિક આયુનો બંધ હોય છે? અથવા તિર્યંચ આયુનો બંધ હોય છે? અથવા મનુષ્ય આયુનો બંધ હોય છે? અથવા દેવ આયુષ્યનો બંધ હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति' તેઓને નૈરયિક આયુનો બંધ થતો નથી. પરંતુ 'मणुस्साउयं पि पकरेंति' તેઓને મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ હોય છે. 'तिरिक्खजोणियाउयंपि पकरेंति' તિર્યંચ આયુનો પણ બંધ હોય છે. 'देवाउयं पि पकरेंति' અને દેવાયુનો પણ બંધ હોય છે.

न सम्भवति सिद्धिगमनयोग्यत्वात् 'कण्हपक्खिया णं भंते! जीवा अकिरियावाई किं नेरइयाउयं पुच्छा' कृष्णपाक्षिकाः खलु भदन्त! जीवा अक्रियावादिनो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति अथवा तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति यद्वा मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति देवायुर्वा प्रकुर्वन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'नेरइयाउयं पि पकरेंति' नैरयिकायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति 'एवं चउविहं पि' एवं चतुर्विधमपि आयुष्प्रकुर्वन्ति नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति तिर्यग्योनिकायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति मनुष्यायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति देवायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति कृष्णपाक्षिकतया सिद्धिगमनस्य तदानीमसंभवेन चातुर्गतिकसंसारस्यैव सद्भावात्। 'एवं अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि' एवम् अक्रिया-

---

क्यों कि ये तो सिद्धि में जाने के ही योग्य होते हैं। 'कण्हपक्खियाणं भंते! जीवा अकिरियावाई किं नेरइयाउयं पुच्छा' हे भदन्त! जो कृष्णपाक्षिक जीव अक्रियावादी होते हैं वे क्या नैरयिकायुका बन्ध करते हैं? या तिर्यगायु का बन्ध करते हैं? या मनुष्यायुका बन्ध करते हैं? या देवायुका बन्ध करते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! नेरइयाउयं पि पकरेंति एवं चउव्विहं पि' हे गौतम! वे नैरयिक आयुका भी बन्ध करते हैं। तिर्यगायुका भी बन्ध करते हैं। मनुष्य-आयुका भी बन्ध करते हैं और देवायुका भी बन्ध करते हैं। इस प्रकार ये चारों आयुओं का बन्ध करते हैं। क्योंकी कृष्णपाक्षिक होने से इनमें सिद्धिगमन की उस समय असंभवता रहती है अतः इनमें चतुर्विध संसारका ही सद्भाव पाया जाता है। 'एवं अन्नाणियवाई वि वेण-

---

ગતિમાં જ જવાને યોગ્ય હોય છે. 'कण्हपक्खियाणं भंते! जीवा अकिरियावाई किं नेरइयाउयं पुच्छा' હે ભગવન્ જે કૃષ્ણપાક્ષિક જીવો અક્રિયાવાદી હોય છે, તેઓ શું નૈરયિક આયુનો બંધ કરે છે? અથવા તિર્યંચ આયુનો બંધ છે? અથવા મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે? અથવા દેવ આયુનો બંધ કરે છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा! नेरइयाउयं पि पकरेंति एवं चउव्विहं पि' હે ગૌતમ! તેઓ નૈરયિક આયુનો પણ બંધ કરે છે, તિર્યંચ આયુનો બંધ કરે છે. મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ કરે છે. અને દેવ આયુનો પણ બંધ કરે છે. આ રીતે તેઓ ચારે પ્રકારના આયુનો બંધ કરે છે. કેમ કે કૃષ્ણપાક્ષિક હોવાથી તેઓમાં સિદ્ધિ ગમનની યોગ્યતાનો અભાવ રહે છે. તેથી તેઓમાં ચારે પ્રકારના સંસારનો જ સદ્ભાવ રહે છે. 'एवं अन्नाणियवाई वि-

वादि कृष्णपाक्षिकवदेव अज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनश्च कृष्णपाक्षिका अपि जीवाः नारकायुस्तिर्यग्योनिकायुर्मनुष्यायुर्देवायुरपि प्रकुर्वन्ति, तदानीं मोक्षगमनयोग्यताया अभावेन चातुर्गतिकसंसारस्यैव जनकत्वात्। 'सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा' शुक्लपाक्षिका जीवा यथा सलेश्याः सलेश्यजीववदेव शुक्लपाक्षिकाः चतुर्ष्वपि समवसरणेषु आयुर्बन्धं प्रकुर्वन्तीति भावः। 'सम्मदिट्ठीणं भंते! जीवा किरियावाई किं नेरइयाउयं पुच्छा' सम्यग्दृष्टयः खलु भदन्त! जीवाः क्रियावादिनः किं नैरयिकायुष्कं कुर्वन्ति तिर्यग्योनिकायुष्कं कुर्वन्ति मनुष्यायुष्कं कुर्वन्ति देवायुष्कं वा कुर्वन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते। भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'नो नेरइयाउयं पकरेंति' नो नैरकायु-

---

इयवाई वि' इसी प्रकार से अज्ञानवादी कृष्णपाक्षिक जीव भी और वैनयिकवादी कृष्णपाक्षिक जीव भी अक्रियावादी कृष्णपाक्षिक के जैसे ही नारकायु, तिर्यगायु, मनुष्यायु और देवायु का बन्ध करते हैं। क्योंकि इस स्थिति में इनके मुक्ति में जाने की योग्यता नहीं होती है अतः इनमें चतुर्विध संसार में संसरण (परिभ्रमण) होने का ही सद्भाव पाया जाता है. 'सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा' सलेश्य जीव के जैसे ही चारों समवसरणो में शुक्लपाक्षिक जीव के आयु बन्ध कहना चाहिये। 'सम्मदिट्ठीणं भंते! जीवा किरियावाई किं नेरइयाउयं पुच्छा' हे भदन्त! क्रियावादी सम्यग्दृष्टि जीव नैरयिक आयुका बन्ध करते हैं? या तिर्यगायुका बन्ध करते हैं? या मनुष्यायुका बन्ध करते हैं? या देवायुका बन्ध करते हैं? इसके उत्तर में प्रभुश्री

वेणइयवाई वि' એજ પ્રમાણે અજ્ઞાનવાદી કૃષ્ણપાક્ષિક જીવ અને વૈનયિકવાદી કૃષ્ણપાક્ષિક જીવ પણ કૃષ્ણપાક્ષિકની જેમજ નારકાયુ, તિર્યંચાયુ. મનુષ્યાયુ, અને દેવાયુનો બંધ કરે છે. કેમ કે તે સ્થિતિમાં તેઓને મુક્તિ ગમનની યોગ્યતા હોતી નથી. તેથી તેઓમાં ચાર પ્રકારના સંસારમાં સંસરણ—પરિભ્રમણ હોવાનો સદ્ભાવ રહે છે. 'सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा' લેશ્યાવાળા જીવના કથન પ્રમાણે જ ચારે સમવસરણોમાં શુકલપાક્ષિક જીવને આયુ બંધ કહેવો જોઇએ.

'सम्मदिट्ठी णं भंते! किं किरियावाई किं नेरइयाउयं' पुच्छा' હે ભગવન્ ક્રિયાવાદી સમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા જીવો નૈરયિક આયુનો બંધ કરે છે? અથવા તિર્યંચ આયુનો બંધ કરે છે? અથવા મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે? અથવા દેવ આયુનો બંધ કરે છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે ગૌતમ!

ष्कं प्रकुर्वन्ति 'नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति' नो तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति किन्तु 'मणुस्साउयं पकरेंति देवाउयं पि पकरेंति' मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति देवायुष्कमपि प्रकुर्वन्तीति भावः। 'मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया' मिथ्यादृष्टयोऽक्रियावादिनो जीवाः कृष्णपाक्षिकवदेव-देवनारकायुरपि कुर्वन्ति तिर्यग्योनिकायुरपि कुर्वन्ति मनुष्यायुरपि कुर्वन्ति, देवायुरपि कुर्वन्तीति भावः। 'सम्मामिच्छादिट्ठीणं भंते! जीवा अन्नाणियवाई किं नेरइयाउयं०' सम्यग्मिथ्यादृष्टयः, मिश्रदृष्टयो हि अज्ञानिकवादिनो जीवाः किं नारकायुः प्रकुर्वन्ति यद्वा तिर्यग्योनिकायुः प्रकुर्वन्ति देवायुर्वा प्रकुर्वन्तीति प्रश्नः, उत्तरमाह-'जहा अलेस्सा' यथा अलेश्याः अलेश्यजीववदेव मिश्रदृष्टयोऽज्ञानिकवादिनो नो नारकायु नं

कहते हैं-हे गौतम! वे नैरयिक आयुका बन्ध नहीं करते हैं, तिर्यगायु का बन्ध नहीं करते हैं किन्तु मनुष्यायुका बन्ध करते हैं और देवायुका भी बन्ध करते हैं। 'मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया' अक्रियावादी आदि मिथ्यादृष्टि जीव कृष्णपाक्षिक के जैसे नारकायुका भी बन्ध करते हैं, तिर्यगायुका भी बन्ध करते हैं, मनुष्य आयुका भी बन्ध करते हैं और देवायुका भी बन्ध करते हैं। 'सम्मामिच्छादिट्ठी णं भंते! जीवा अन्नाणियवाई किं नेरइयाउयं०' हे भदन्त! अज्ञानवादी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव क्या नरकायुका बन्ध करते हैं? या तिर्यगायुष्क का बन्ध करते हैं? या मनुष्यायुष्क का बन्ध करते हैं? या देवायुका वंध करते हैं? इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं 'जहा अलेस्सा' हे गौतम! अलेश्य जीवों के जैसे अज्ञानवादी मिश्रदृष्टि जीव किसी भी आयुका

તેઓ નૈરયિક આયુનો બંધ કરતા નથી તિર્યંચ આયુનો પણ બંધ કરતા નથી પરંતુ મનુષ્યના આયુનો બંધ કરે છે. અને દેવ આયુનો બંધ કરે છે. 'मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया' અક્રિયાવાદી મિથ્યાદષ્ટિ જીવો પણ કૃષ્ણપાક્ષિકના કથન પ્રમાણે નારક આયુનો પણ બંધ કરે છે તિર્યંચ આયુનો પણ બંધ કરે છે. મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ કરે છે. અને દેવ આયુનો પણ બંધ કરે છે. 'सम्मामिच्छादिट्ठीणं भंते! जीवा अन्नाणियवाई किं नेरइयाउयं०' હે ભગવન્ અક્રિયાવાદી સમ્યગ્મિથ્યાદષ્ટિ જીવો શું નારકાયુનો બંધ કરે છે? અથવા તિર્યંચ આયુનો બંધ કરે છે? અથવા મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે? અથવા દેવ આયુનો બંધ કરે છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'जहा अलेस्सा' હે ગૌતમ! લેશ્યાવિનાના જીવોના કથન પ્રમાણે અજ્ઞાનવાદી મિથ્યાદષ્ટિ જીવો કોઇ પણ આયુનો બંધ કરતા

वा तिर्यग्योनिकायु र्न वा मनुष्यायु र्न वा देवायुष्कमपि प्रकुर्वन्तीति मिश्रदृष्टिकाले सर्वायुषो बन्धाभाव एवेति। 'एवं वेणइयवाई वि' एवं मिश्रदृष्टिकाज्ञानिकवादिन इव मिश्रदृष्टिक वैनयिकवादिनोऽपि चतुर्विधान्यपि आयूंषि न बध्नन्तीति। इतः परं क्रियावादि ज्ञानवादि सूत्राणि कथयति-ज्ञानिप्रभृतिषु क्रियावादातिरिक्तवादस्य विरुद्धत्वेनासंभवात् 'णाणी आभिणीबोहियनाणी य सुयनाणी य ओहिनाणी य जहा सम्मद्दिट्ठी' ज्ञानिन आभिनिबोधिकज्ञानिनश्च श्रुतज्ञानिनश्च अवधिज्ञानिनश्च यथा सम्यग्दृष्टयः सम्यग्दृष्टिवदेव इमे ज्ञानि प्रभृतयः न नारकायुः प्रकुर्वन्ति न वा तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति किन्तु मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति देवायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति इति। 'मणपज्जवनाणी णं भंते! पुच्छा' मनःपर्यवज्ञानिनश्च

बंध नहीं करते हैं-न निरयायुका वे बंध करते हैं न तिर्यगायुका वे बंध करते हैं, न मनुष्यायुका वे बंध करते हैं और न देवायुका वे बन्ध करते हैं-क्यों कि इस अवस्था में किसी भी आयुका बंध नहीं होता है। 'एवं वेणइयवाई वि' अज्ञानवादी मिश्रदृष्टि के जैसे मिश्रदृष्टिक वैनयिकवादी भी चारों प्रकार की आयुका बंध नहीं करता है।

अब यहां से आगे सूत्रकार क्रियावादी ज्ञानवादी के सूत्रों का कथन करते हैं-क्यों की ज्ञानी आदिकों में क्रियावाद के अतिरिक्तवाद की विरुद्ध होने से असंभवता है। 'णाणी आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य ओहिनाणी य जहा सम्मद्दिट्ठी' सम्यक्दृष्टि जीव के जैसे ज्ञानी, आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी ये सब मनुष्यायु और देवायुका बंध करते हैं नरकायु और तिर्यगायुका बंध नहीं करते हैं। 'मणपज्जवनाणी णं भंते! पुच्छा' हे भदन्त! मनःपर्यवज्ञानी क्या नैरयिक आयुका बंध

નથી. તેઓ નારક આયુનો બંધ કરતા નથી તિર્યંચ આયુનો બંધ કરતા નથી. મનુષ્ય આયુનો બંધ કરતા નથી. અને દેવ આયુષ્યનો પણ બંધ કરતા નથી. કેમ કે-આ અવસ્થામાં એકપણ પ્રકારની આયુનો બંધ તેમને હોતો નથી. 'एवं वेणइयवाई वि' અજ્ઞાનવાદી મિશ્રદૃષ્ટિવાળાના કથન પ્રમાણે મિશ્રદૃષ્ટિ વૈનયિકવાદી પણ ચારે પ્રકારના આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી.

હવે સૂત્રકાર ક્રિયાવાદી, જ્ઞાનવાદીઓના સંબંધમાં કથન કરે છે.-કેમકે જ્ઞાની વિગેરેમાં ક્રિયાવાદ શિવાયના વાદનું વિરૂદ્ધ પણુ હોવાથી અસંભવપણું છે. 'णाणी आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य ओहिनाणी य जहा सम्मद्दिट्ठी' સમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા જીવના કથન પ્રમાણે જ્ઞાની. આભિનિબોધિકજ્ઞાની, શ્રુતજ્ઞાની, અવધિજ્ઞાની આ બધા મનુષ્ય આયુ અને દેવ આયુનો બંધ કરે છે. નારક આયુ અને તિર્યંચ આયુનો બંધ કરતા નથી. 'मणपज्जवनाणी णं भंते! पुच्छा'

खलु पृच्छा, मनःपर्यवज्ञानिनः खलु भदन्त ! जीवाः किं नारकायुष्कं कुर्वन्ति तिर्यग्योनिकायुष्कं कुर्वन्ति मनुष्यायुष्कं वा कुर्वन्ति देवायुष्कं वा कुर्वन्तीति पृच्छया संगृह्यते । भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'नो नेरइयाउयं पकरेंति' नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति 'नो तिरिक्ख०' नो तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति 'नो मणुस्स०' नो मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति किन्तु 'देवाउयं पकरेंति' देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति चतुर्विधायुर्मध्यात् मनःपर्यवज्ञानिनः केवलं देवायुरेव बध्नन्ति न तु नारकतिर्यग्योनिकमनुष्यायुषो बन्धका भवन्तीति भावः। 'जइ देवाउयं पकरेंति किं भवणवासि० पुच्छा' यदि मनःपर्यवज्ञानिनो देवायुष्कं कुर्वन्ति तदा किं भवनवासि देवायुष्कं कुर्वन्ति वानव्यन्तरदेवायुष्कं वा कुर्वन्ति ज्योतिष्कदेवायुष्कं प्रकुर्वन्ति वैमानिकदेवायुष्कं प्रकुर्वन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते । भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'णो भवणवासि देवाउयं पकरेंति' नो भवनवासिदेवसम्बन्धि आयुष्कं प्रकुर्वन्ति 'णो वाणमंतर०'

करते हैं ? या तिर्यगायुका बंध करते हैं ? या मनुष्यायुका बंध करते हैं ? या देवायुका बंध करते हैं ? इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं– 'गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति नो तिरिक्ख०, नो मणुस्स०' हे गौतम ! वे न नैरयिक आयुका बंध करते है, न तिर्यगायु का बंध करते हैं और न मनुष्यायुका बंध करते हैं । किन्तु 'देवाउयं पकरेंति' देवायुका ही बंध करते हैं । 'जइ देवाउयं पकरेंति, किं भवणवासि० पुच्छा' यदि मनःपर्यवज्ञानी देवायुका ही बंध करते हैं तो क्या वे भवनवासी देवायुका बंध करते हैं ? या वानव्यन्तर देवायुका बंध करते है ? या ज्योतिष्क देवायुका बंध करते हैं ? या वैमानिक देवायुका बंध करते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं–'गोयमा ! हे गौतम ! 'णो भव-

---

हे भगवन् मनःपर्यवज्ञानी शुं नैरयिक आयुनो बंध करे छे ? अथवा तिर्यंच आयुनो बंध करे छे ? अथवा मनुष्य आयुनो बंध करे छे ? अथवा देव आयुनो बंध करे छे ? आ प्रश्नना उत्तरमां प्रभुश्री कहे छे के–गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति नो तिरिक्ख० नो मणुस्स०' हे गौतम ! तेओ नैरयिक आयुनो बंध करता नथी. तथा तिर्यंच आयुनो पण बंध करता नथी मनुष्य आयुनो बंध करता नथी. परंतु 'देवाउयं पकरेंति' देव आयुनो बंध करे छे. 'जइ देवाउयं पकरेंति, किं भवणवासि पुच्छा' जो मनःपर्यवज्ञानी देव आयुनो ज बंध करे छे. तो शुं तेओ भवनवासी देव आयुनो बंध करे छे ? अथवा वानव्यंतर देव आयुनो बंध करे छे ? अथवा ज्योतिष्क देव आयुनो बंध करे छे ? अथवा वैमानिक देव आयुनो बंध करे छे ? आ प्रश्नना

नो न वा वानव्यन्तरदेव संबन्धि आयुष्कं बध्नन्ति 'नो जोइसिय०' नो न वा ज्योतिष्कदेवायुर्बध्नन्ति किन्तु 'वेमाणियदेवाउयं पकरेंति' वैमानिकदेवसम्बन्धि आयुषो बन्धका मनःपर्यवज्ञानिनो भवन्तीति। 'केवलनाणी जहा अलेस्सा' केवलज्ञानिनो यथा अलेश्याः केवलज्ञानिनोऽलेश्यवद्व्याख्येयाः, केवलज्ञानिनां न कस्यापि आयुषो बन्धो भवति, तेषामायुर्बन्धकारणीभूतस्य मोहनीयादेः कर्म बीजस्य केवलज्ञानाग्निना दग्धत्वात् दग्धबीजानां चाङ्कुरोत्पत्तेरभावादिति। रागादिक्लेशसलिलसिक्तायां हि जीवभूमौ कर्मबीजानि अङ्कुराणि प्रसुवते, केवलज्ञाननिदाघतप्तायां मुषरमायायां जीवभूमौ तु कर्मबीजानि न संसाराङ्कुरं

णवासिदेवाउयं पकरेंति' वे भवनवासी देवों की आयुका बंध नहीं करते हैं 'णो वाणमंतर' वानव्यन्तर देवों की आयुका बंध नहीं करते हैं 'नो जोइसिय०' न ज्योतिषिक देवों की आयुका बंध करते किन्तु-'वेमाणिय देवाउयं०' वे वैमानिक देवायुका बंध करते हैं। 'केवलनाणी जहा अलेस्सा' अलेश्य जीवों के जैसे केवलज्ञानी जीव किसी भी आयुका बंध नहीं करते हैं। क्योंकि उनका आयु कर्म बंध का कारण भूत जो मोहनीय आदि कर्म हैं वह केवलज्ञानरूप अग्नि के द्वारा दग्ध हो जाता है। जिस अंकुर का बीज दग्ध हो जाता है उससे फिर अंकुर उत्पन्न नहीं होता है। यह मोहनीयकर्म का बीज है। जब जीव रूप भूमि रागादिक्लेश रूप जल से सिञ्चित होती रहती है तब उसमें कर्म बीज रूप अंकुर उत्पन्न होते रहते हैं। और जब वही जीव रूपी भूमि केवलज्ञानरूपी निदाघ से तप्तायमान होती

ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'ગોયમા હે ગૌતમ! 'णो भवणवासि देवाउयं पकरेंति' તેઓ ભવનવાસી દેવોના આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી. 'णो वाणमंतर' વાનવ્યન્તર દેવોના આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી. 'नो जोइसिय' જ્યોતિષ્ક દેવોના આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી. પરંતુ 'वेमाणिय देवाउयं' તેઓ વૈમાનિક દેવ આયુનો બંધ કરે છે 'केवलनाणी जहा अलेस्सा' લેશ્યા વિનાના જીવોના કથન પ્રમાણે કેવળજ્ઞાની જીવો કોઈપણ આયુનો બંધ કરતા નથી. કેમ કે તેઓનું આયુષ્ય કર્મબંધના કારણભૂત જે મોહનીય વિગેરે કર્મ છે, તે કેવળજ્ઞાનરૂપ અગ્નિદ્વારા બળી જાય છે. જે અંકુરના બી બળી જાય છે, તેનાથી અંકુર ઉગતા નથી. આ મોહનીય કર્મનું બી છે. જ્યારે જીવ રૂપ ભૂમિ રાગ વિગેરે કલેશ રૂપ પાણીથી સીંચાતી રહે છે, ત્યારે કર્મ બીજ રૂપ અંકુર તેમાં ઉત્પન્ન થતા રહે છે. અને જ્યારે એજ જીવ રૂપભૂમી કેવળજ્ઞાનરૂપી તાપથી તપાયમાન થતી ઉસર ભૂમિના જેવી બની જાય

जनयन्तीति भावः, 'अन्नाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया' अज्ञानिनो यावद् विभङ्गज्ञानिनो यथा कृष्णपाक्षिकाः अत्र यावत्पदेन मत्यज्ञानि-श्रुताज्ञानिनोः संग्रहः तथा चाज्ञानिनो यावद् विभङ्गज्ञानिनश्च नारकायुरपि प्रकुर्वन्ति तिर्यग्योनिकायुरपि प्रकुर्वन्ति मनुष्यायुरपि प्रकुर्वन्ति देवायुरपि प्रकुर्वन्तीति भावः। 'सन्नासु चउसु वि जहा सलेस्सा' संज्ञासु चतसृष्वपि यथा सलेश्याः सलेश्यवदेव आहारादि चतुर्विधसंज्ञायुक्ता जीवा नारकायुष्कमपि कुर्वन्ति तिर्यग्योनिकायुष्कमपि कुर्वन्ति मनुष्यायुष्कमपि कुर्वन्ति देवायुष्कमपि कुर्वन्तीति भावः 'नो सन्नोवउत्ता जहा मणपज्जवनाणी' नो संज्ञोपयुक्ता यथा मनःपर्यवज्ञानिनः मनःपर्यवज्ञानिवदेव नो संज्ञोपयुक्ता जीवा न नारकायुष्कं कुर्वन्ति नो वा तिर्यग्योनिकायुष्कं

हुई ऊषर भूमिके जैसी बन जाती है तब उसमें कर्म रूपी बीज संसार रूप अंकुर को उत्पन्न नहीं कर पाते हैं। यही इस कथन का भाव है। 'अन्नाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया' यावत्पद गृहीत मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी और विभङ्गज्ञानी कृष्णपाक्षिक के जैसे नरकायु का भी बंध करते है तिर्यगायु का भी बंध करते हैं मनुष्यायुका भी बंध करते हैं और देवायुका भी बंध करते हैं। 'सन्नासु चउसु वि जहा सलेस्सा' सलेश्य जीवों के जैसे चारों आहारादि संज्ञाओं से युक्त हुए जीव नैरयिक आयुका भी बंध करते हैं तिर्यगायुका भी बंध करते हैं मनुष्यायु का भी बन्ध करते हैं और देवायु का भी बन्ध करते हैं। 'नो सन्नोवउत्ता जहा मणपज्जवनाणी' नो संज्ञोपयुक्त जीव मनःपर्यवज्ञानीके जैसे केवल एक वैमानिक देवों की ही आयुका बन्ध करते

છે, ત્યારે તેમાં કર્મરૂપી બી સંસારરૂપ અંકુરની ઉત્પત્તી કરી શકતા નથી. એજ આ કથનનો ભાવ છે 'अन्नाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया' યાવત્પદથી મતિ અજ્ઞાની, શ્રુતઅજ્ઞાની, અને વિભંગજ્ઞાની, કૃષ્ણપાક્ષિકના કથન પ્રમાણે નરક આયુનો પણ બંધ કરે છે, તિર્યંચ આયુનો પણ બંધ કરે છે. મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ કરે છે, અને દેવ આયુનો પણ બંધ કરે છે. 'सन्नासु चउसु वि जहा सलेस्सा' લેશ્યાવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે આહાર ભય મૈથુન અને પરિગ્રહ આદિ ચારે સંજ્ઞાથી યુક્ત થયેલા જીવો નૈરયિક આયુનો પણ બંધ કરે છે, તિર્યંચ આયુનો પણ બંધ કરે છે, મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ કરે છે, અને દેવ આયુષ્યનો પણ બંધ કરે છે. 'नो सन्नोवउत्ता जहा मणपज्जवनाणी' નો સંજ્ઞોપયોગવાળા જીવો, મનઃપર્યવજ્ઞાની, જીવના કથન પ્રમાણે કેવળ એક વૈમાનિક દેવોના આયુષ્યનો જ બંધ

कुर्वन्ति न वा मनुष्यायुष्कं कुर्वन्ति किन्तु वैमानिकदेवमात्रलभ्यन्ध्यायुषो बन्धं कुर्वन्तीति भावः। 'सवेदगा जाव नपुमगवेयगा जहा सलेस्सा' सवेदका यावत् नपुंसकवेदका यथा सलेश्याः सलेश्यजीववदेव सवेदकाः पुरुषवेदकाः, स्त्रीवेदकाः नपुंसकवेदकाश्च नारकायुरपि कुर्वन्ति तिर्यग्योनिकायुरपि कुर्वन्ति मनुष्यायुरपि कुर्वन्ति देवायुरपि कुर्वन्तीति भावः। 'अवेदगा जहा अलेस्सा' अवेदकाः सामान्यतो वेदरहिता जीवाः अलेश्यजीववदेव न नारकायुष्कं कुर्वन्ति न वा तिर्यग्योनिकायुष्कं कुर्वन्ति न वा मनुष्यायुष्कं कुर्वन्ति न वा देवायुष्कं बध्नन्तीति भावः। 'सकसाई जाव लोभकसाई जहा सलेस्सा' सकषायिनो यावत् लोभकषायिनो यथा सलेश्याः यावत्पदेन क्रोधमानमायाकषायवतां ग्रहणं भवति तथा च सकषायिणो जीवाः क्रोधमानमायालोभकषायिणश्च चत्वार्यपि नारकतिर्यग्मनुष्यदेवायूंषि कुर्वन्तीति भावः। 'अकसाई जहा अलेस्सा' अकषायिनो यथा अलेश्याः

हैं। न नैरयिकायु का वे बन्ध करते हैं, न तिर्यगायुका वे बन्ध करते हैं और मनुष्यायुका भी वे बन्ध नहीं करते हैं। 'सवेदगा जाव नपुंसगवेदगा जहा सलेस्सा' सलेश्य जीवों के जैसे सवेदक जीव यावत् नपुंसकवेदक जीव नैरयिक आयुका भी बन्ध करते हैं, तिर्यगायुका भी बन्ध करते हैं, मनुष्यायुका भी बन्ध करते हैं और देवायुका भी बन्ध करते हैं। 'अवेदगा जहा अलेस्सा' अवेदक जीव अलेश्य जीवों के जैसे किसी भी आयुका बन्ध नहीं करते हैं। 'सकसाई जाव लोभकसाई जहा सलेस्सा' सलेश्य जीवों के जैसे सकषायी जीव यावत् लोभकषायी जीव चारों आयुओं का बन्ध करता हैं। यहां यावत्पद से क्रोध कषायी, मानकषायी, और मायाकषायी' इन तीन पदों का ग्रहण हुआ है। 'अकसाई जहा अलेस्सा' अलेश्य जीवों के जैसे अकषायी

કરે છે. તેઓ નૈરયિક આયુનો બંધ કરતા નથી. તિર્યંચ આયુનો બંધકરતા નથી. અને મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ કરતા નથી, 'सवेदगा जाव नपुंसगवेदगा' 'जहा सलेस्सा' લેશ્યાવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે સવેદક જીવો યાવત્ નપુંસક વેદવાળા જીવ નૈરયિક આયુનો પણ બંધ કરે છે, તિર્યંચ આયુનો પણ બંધ કરે છે. મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ કરે છે અને દેવ આયુનો પણ બંધ કરે છે. 'अवेदगा जहा अलेस्सा' અવેદક જીવ લેશ્યા વિનાના જીવોના કથન પ્રમાણે કોઈપણ આયુનો બંધ કરતા નથી. 'सकसाई जाव लोभकसाई जहा सलेस्सा' લેશ્યાવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે કષાયવાળા જીવો યાવત્ ક્રોધ કષાય માનકષાય માયાકષાય અને લોભકષાયવાળા જીવો ચારે પ્રકારના આયુષ્યનો બંધ કરે છે. અહિયાં યાવત્પદથી 'ક્રોધકષાયી, માનકષાયી અને

अलेश्यजीववदेव कषायरहिता जीवाः न नारकायुष्कं कुर्वन्ति न वा तिर्यग्योनिकायुष्कं कुर्वन्ति न वा मनुष्यायुष्कं कुर्वन्ति न वा देवायुष्कं कुर्वन्ति इति भावः। 'सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा' सयोगिनो यावत् काययोगिनश्च यथा सलेश्याः, यावत्पदेन मनोयोगिनां वाग्योगिनां च संग्रहो भवति तथा च सामान्यतो योगवन्तो मनोयोगिनो वचोयोगिनः काययोगिनश्च सलेश्यजीववत् नारकायुष्कमपि कुर्वन्ति तिर्यग्योनिकायुष्कमपि कुर्वन्ति मनुष्यायुष्कमपि कुर्वन्ति देवायुष्कमपि कुर्वन्तीति भावः। 'अजोगी जहा अलेस्सा' अयोगिनः सामान्यतो योगरहिताः सिद्धाः केवलिन स्ते अलेश्यवदेव आयुषां बन्धका न भवन्तीति। 'सागारोवउत्ता अनागारोवउत्ता य जहा सलेस्सा' साकारोपयोगयुक्ता अनाकारो-

जीव किसी भी आयुका बन्ध नहीं करते हैं। सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा' सलेश्य जीवों के जैसे सयोगी यावत् काययोगी जीव चारों आयुओं का बन्ध करते हैं। यहां यावत्पद से मनोपयोगी और वाग्योगी इन दो का ग्रहण हुआ है। इस प्रकार सामान्य से योगवाले जीव और मनोयोगवाले जीव वचन योगवाले जीव और काययोगवाले जीव सलेश्य जीवों के जैसे नारक आयुका भी बन्ध करते हैं, तिर्यगायुष्क का भी मनुष्यायुष्क का भी और देवायुष्क का भी बन्ध करते हैं। 'अजोगी जहा अलेस्सा' सामान्य से योग रहित सिद्ध जीव और केवली अलेश्य जीवों के जैसे किसी भी आयुका बंध नहीं करते हैं। 'सागारोवउत्ता अनागारोवउत्ता य जहा सलेस्सा' सलेश्य जीवों के जैसे साकारोपयोगयुक्त तथा अनाकारो-

માયા કષાયવાળા આ ત્રણ કષાયો ગ્રહણ કરાયા છે. 'अकसाई जहा अलेस्सा' લેશ્યા વિનાના જીવોના કથન પ્રમાણે કષાય વિનાના જીવ કોઈ પણ આયુનો બંધ કરતા નથી. 'सजोगी जाव कायजोगा जहा सलेस्सा' લેશ્યાવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે સયોગી યાવત્ કાય યોગવાળા જીવો ચારે પ્રકારના આયુનો બંધ કરે છે. અહિયાં યાવત્પદથી મનોયોગવાળા અને વચનયોગવાળાઓ ગ્રહણ કરાયા છે. આ રીતે સામાન્યથી યોગવાળા જીવો અને મનોયોગવાળા જીવો વચનયોગવાળા જીવો અને કાયયોગવાળા જીવો લેશ્યાવાળા જીવોની જેમ નારક આયુષ્યનો પણ બંધ કરે છે. તિર્યંચ આયુષ્યનો પણ બંધ કરે છે. મનુષ્ય આયુષ્યનો પણ બંધ કરે છે, અને દેવ આયુષ્યનો પણ બંધ કરે છે 'अजोगी जहा अलेस्सा' સામાન્યથી યોગવિનાના સિદ્ધ જીવો અને કેવલી અલેશ્ય જીવોના કથન પ્રમાણે કોઇપણ આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી. 'सागारोवउत्ता अनागारोवउत्ता य जहा सलेस्सा' લેશ્યાવાળા

पयोगयुक्ताश्च यथा सलेश्याः सलेश्यवदेव साकारोपयोगयुक्ता स्तथा अनाकारो-पयोगयुक्ताश्च नारकायुष्कमपि तिर्यग्योनिकायुष्कमपि मनुष्यायुष्कमपि देवा-युष्कमपि कुर्वन्तीति भावः ॥सू० २॥

नारकदण्डके सूत्राण्याह–'किरियावाई णं भंते' इत्यादि,

मूलम्–किरियावाई णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइयाउयं नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति मणुस्साउयं पकरेंति नो देवाउयं पकरेंति अकिरियावाई णं भंते ! नेरइया पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइयाउयं० तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति मणुस्साउयं पि पकरेंति नो देवाउयं पकरेंति, । एवं अन्नाणियवाई वि, वेणइयवाई वि। सलेस्सा णं भंते ! नेरइया किरियावाई किं नेरइयाउयं० एवं सव्वे वि नेरइया जे किरियावाई ते मणुस्साउयं एगं पकरेंति, जे अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाई ते सव्वट्ठाणेसु वि नो नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्ख-जोणियाउयं पि पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति नो देवाउयं पकरेंति। नवरं सम्मामिच्छत्ते उवरिल्लेहिं दोहिं वि समोसरणेहिं न किंचि वि पकरेंति जहेव जीवपए। एवं जाव थणियकुमारा जहेव नेरइया । अकिरियावाई णं भंते ! पुढवीकाइया पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति । तिरिक्खजोणियाउयं० मणुस्साउयं पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति एवं अन्नाणियवाई वि। सलेस्सा णं भंते ! एवं जं जं पयं अत्थि पुढवीकाइया णं तहिं तहिं मज्झिमेसु दोसु समोसरणेसु एवं चेव दुविहं आउयं

पयोगयुक्त जीव नारक आयुका भी बन्ध करते हैं तिर्यगायुष्क का भी बन्ध करते हैं, मनुष्यायुष्क का भी बन्ध करते है और देवायुष्क का भी बन्ध करते हैं ॥२॥

જીવના કથન પ્રમાણે સાકારોપયોગવાળા અને અનાકારોપયોગવાળા જીવો નારક આયુનો પણ બંધ કરે છે, તિર્યંચ આયુષ્યનો પણ બંધ કરે છે, મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ કરે છે અને દેવાયુનો પણ બંધ કરે છે. ॥સૂ૦૨॥

पकरेंति। नवरं तेउलेस्साए न किंपि पकरेंति। एवं आउक्काइयाण वि, एवं वणस्सइकाइयाण वि। तेउक्काइया वाउक्काइया सव्वट्ठाणेसु मज्झिमेसु दोसु समोसरणेसु नो नेरइयाउयं पकरेंति तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति णो मणुस्साउयं णो देवाउयं पकरेंति। बेइंदियतेइंदियचउरिंदिया णं जहा पुढवीकाइया णं नवरं सम्मत्तनाणेसु न एक्कं पि आउयं पकरेंति। किरियावाई णं भंते! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया किं नेरइयाउयं पकरेंति पुच्छा, गोयमा! जहा मणपज्जवनाणी। अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाई य चउव्विहं पि पकरेंति। जहा ओहिया तहा सलेस्सा वि। कण्हलेस्सा णं भंते! किरियावाई पंचिंदियतिरिक्खजोणिया किं नेरइयाउयं पुच्छा, गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति नो तिरिक्खाउयं० नो मणुस्साउयं० नो देवाउयं पकरेंति, अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाई चउव्विहं पि पकरेंति। जहा कण्हलेस्सा, एवं नीललेस्सा वि, काउलेस्सा वि। तेउलेस्सा जहा सलेस्सा। नवरं अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाई य नो नेरइयाउयं पकरेंति। देवाउयं पि पकरेंति। तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति। मणुस्साउयं पि पकरेंति। एवं पम्हलेस्सा वि एवं सुक्कलेस्सा वि भाणियव्वा। कण्हपक्खिया तिहिं समोसरणेहिं चउव्विहं पि आउं पकरेंति। सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा। सम्मदिट्ठी जहा मणपज्जवनाणी तहेव वेमाणियाउयं पकरेंति। मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया। सम्मामिच्छादिट्ठी ण य एक्कमपि पकरेंति जहेव नेरइया। नाणी जाव ओहियनाणी जहा सम्मदिट्ठी। अन्नाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया। सेसा जाव अणागारोवउत्ता सव्वे जहा

सलेस्सा तहा चेव भाणियव्वा। जहा पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं वत्तव्वया भणिया एवं मणुस्साण वि भाणियव्वा। नवरं मणपज्जवनाणी नो सन्नोवउत्ता य जहा सम्मदिट्ठी तिरिक्खजोणिया तहेव भाणियव्वा। अलेस्सा केवलनाणी अवेदगा अकसाई अजोगिय, एए न एगं पि आउयं पकरेंति, जहा ओहिया जीवा, सेसं तहेव। वाणमंतरजोइसिय वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥सू० ३॥

छाया—क्रियावादिनः खलु भदन्त! नैरयिकाः किं नैरयिकायुष्कं पृच्छा गौतम! नो नैरयिकायुष्कं नो तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति। अक्रियावादिनः खलु भदन्त! नैरयिकाः पृच्छा, गौतम! नो नैरयिकायुष्कं० तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति मनुष्यायुष्कमपि कुर्वन्ति नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति। एवमज्ञानिकवादिनोऽपि वैनयिकवादिनोऽपि। सलेश्याः खलु भदन्त! नैरयिकाः क्रियावादिनः किं नैरयिकायुष्कं० एवं सर्वेऽपि नैरयिका ये क्रियावादिनस्ते मनुष्यायुष्कमेकं प्रकुर्वन्ति, ये अक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिन स्ते सर्वस्थानेष्वपि नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, तिर्यग्योनिकायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति मनुष्यायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति, नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति। नवरं सम्यग्मिथ्यात्विनः उपरितनाभ्यां द्वाभ्यामपि समवसरणाभ्यां न किञ्चिदपि प्रकुर्वन्ति यथैव जीवपदे। एवं यावत् स्तनितकुमारा यथैव नैरयिकाः। अक्रियावादिनः खलु भदन्त! पृथिवीकायिकाः पृच्छा, गौतम! नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, तिर्यग्योनिकायुष्कं० मनुष्यायुष्कं० नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति। एवमज्ञानिकवादिनोऽपि। सलेश्याः खलु भदन्त! एवं यत्र यत्र पदमस्ति पृथिवीकायिकानां तत्र तत्र मध्यमयो र्द्वयोः समवसरणयोरेवमेव द्विविधमायुष्कं प्रकुर्वन्ति। नवरं तेजोलेश्यायां न किमपि प्रकुर्वन्ति। एवमप्कायिकानामपि, वनस्पतिकायिकानामपि। तेजस्कायिकाः वायुकायिकाः सर्वस्थानेषु मध्यमयो र्द्वयोः समवसरणयो र्न नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, नो मनुष्यायुष्कं नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति। द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियाणां यथा पृथिवीकायिकानाम्। नवरं सम्यक्त्वज्ञानेषु न एकमपि आयुष्कं प्रकुर्वन्ति। क्रियावादिनः खलु भदन्त! पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, पृच्छा, गौतम! यथा मनःपर्यवज्ञानिनोऽक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनो वैनयिक-

वादिनश्च चतुर्विधमपि प्रकुर्वन्ति । यथौघिका स्तथा सलेश्या अपि । कृष्णलेश्याः खलु भदन्त ! क्रियावादिनः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः किं नैरयिकायुष्कं पृच्छा, गौतम ! नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, नो तिर्यग्० नो मनुष्यायुष्कं० नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति । अक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनश्चतुर्विधमपि प्रकुर्वन्ति यथा कृष्णलेश्याः । एवं नीललेश्या अपि कापोतलेश्या अपि । तेजोलेश्या यथा सलेश्याः । नवरमक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनश्च नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति देवायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति तिर्यग्योनिकायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति मनुष्यायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति । एवं पद्मलेश्या अपि एवं शुक्ललेश्या अपि भणितव्याः । कृष्णपाक्षिका त्रिभिः समवसरणै श्चतुर्विधमपि आयुष्कं प्रकुर्वन्ति । शुक्लपाक्षिका यथा सलेश्याः । सम्यग्दृष्टयो यथा मनःपर्यवज्ञानिनः तथैव वैमानिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति । मिथ्यादृष्टयो यथा कृष्णपाक्षिकाः । सम्यग्मिथ्यादृष्टयो न चैकमपि प्रकुर्वन्ति यथैव नैरयिकाः । ज्ञानिनो यावदवधिज्ञानिनो यथा सम्यग्दृष्टयः । अज्ञानिनो यावद्विभङ्गज्ञानिनो यथा कृष्णपाक्षिकाः । शेषा यावदनाकारोपयुक्ताः सर्वे यथा सलेश्या स्तथैव भणितव्याः । यथा पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां वक्तव्यता भणिता एवं मनुष्याणामपि भणितव्या । नवरं मनःपर्यवज्ञानिनो नो संज्ञोपयुक्ताश्च यथा सम्यग्दृष्टयः तिर्यग्योनिका स्तथैव भणितव्याः । अलेश्याः केवलज्ञानिनोऽवेदका अकषायिनोऽयोगिनश्चैते नैकमपि आयुष्कं प्रकुर्वन्ति । यथा औघिका जीवाः, शेषं तथैव । वानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिका यथा असुरकुमाराः ॥सू० ३॥

टीका—'किरियावाई णं भंते ! नेरइया' क्रियावादिनः खलु भदन्त ! नैरयिकाः 'किं नेरइयाउयं पुच्छा' किं नैरयिकायुष्कं नारकभवप्रयोजकमायुः प्रकुर्वन्ति अथवा तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति अथवा मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति देवायुष्कं वा प्रकुर्वन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि,

---

नारकदण्डक में सूत्र कथन

'किरियावाई णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं'—इत्यादि

टीकार्थ—'किरियावाई णं भंते ! नेरइया' हे भदन्त ! क्रियावादी नैरयिक 'किं नेरइयाउयं पुच्छा' नारकभवके प्रयोजक आयुकर्म का बन्ध करते हैं ? या तिर्यगायुष्क का बन्ध करते हैं ? या मनुष्यायुष्कका बन्ध

નારકદંડક સંબંધી સૂત્રનું કથન—

'किरियावाई णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—'किरियावाईणं भंते ! नेरइया' હે ભગવન્ ક્રિયાવાદી નૈરયિક જીવો 'किं नेरइयाउयं पुच्छा' નારક ભવ સંબંધી આયુષ્યનો બંધ કરે છે ? અથવા તિર્યંચ આયુષ્યનો બંધ કરે છે ? અથવા મનુષ્યના આયુષ્યનો બંધ કરે છે ?

'गोयमा' हे गौतम ! 'नो नेरइयाउयं०' नो नैव नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति 'नो तिरिक्ख०' नो तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति 'मणुस्साउयं पकरेंति' मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति 'नो देवाउयं पकरेंति' नो-नैव देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति क्रियावादिनो नारका यद्देवायुर्नारकायु र्न प्रकुर्वन्ति तत् नारकभवस्वभावादेव यच्च तिर्यगायु र्न बध्नन्ति तत् क्रियावादस्वभावात्, केवलं मनुष्यायुरेव बध्नन्ति तथा स्वाभावादिति। 'अकिरियावाई णं भंते! नेरइया पुच्छा' अक्रियावादिनः खलु भदन्त ! नैरयिकाः किं नारकायुः प्रकुर्वन्ति यद्वा तिर्यगायुः प्रकुर्वन्ति अथवा मनुष्यायुः प्रकुर्वन्ति यद्वा देवायुः प्रकुर्वन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते। भग-

---

करते हैं ? या देवायुष्क का बन्ध करते हैं ? गौतमस्वामी के इस प्रश्न के उत्तरमें प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! नो नेरइयाउयं०, नो तिरिक्ख०' क्रियावादी नैरयिक नैरयिक आयुका बन्ध नहीं करते हैं, तिर्यगायुष्क का बन्ध नहीं करते हैं किन्तु-'मणुस्साउयं पकरेंति' मनुष्यायु का बन्ध करते हैं। 'नो देवाउयं पकरेंति' देवायुका भी वे बन्ध नहीं करते हैं ! क्रियावादी नैरयिक जो नैरयिकायु का और देवायुका बन्ध नहीं करते हैं उसमें कारण नारकभव का स्वभाव ही है। तथा जो तिर्यगायुका वे बन्ध नहीं करते हैं इसमें कारण उनकी क्रियावादिता का स्वभाव है। केवल वे मनुष्यायुका ही बन्ध करते हैं-क्यों कि इस स्थिति में इसी आयु के बांधने का उनका स्वभाव हो जाता है। 'अकिरियावाई णं भंते ! नेरइया पुच्छा' हे भदन्त ! अक्रियावादी नैरयिक क्या नैरकायुका बन्ध करते हैं ? या तिर्यगायु का बन्ध करते हैं ? या मनुष्यायुका बन्ध करते है ?

અથવા દેવ આયુષ્યનો બંધ કરે છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! नो नेरइयाउयं० नो तिरिक्ख०' ક્રિયાવાદી નૈરયિકો નૈરયિક આયુષ્યનો બંધ કરતાં નથી તથા તિર્યંચ આયુષ્યનો પણ બંધ કરતા નથી પરંતુ 'मणुस्साउयं पकरेंति' મનુષ્ય સંબંધી આયુષ્યનો બંધ કરે છે. 'नो देवाउयं पकरेंति' તેઓ દેવ સંબંધી આયુષ્યનો પણ બંધ કરતા નથી. તેનું કારણ નારક ભવનો તે પ્રકારનો સ્વભાવ જ છે. તથા જે તિર્યંચાયુનો તેઓ બંધ કરતા નથી તેનું કારણ તેઓના ક્રિયાવાદી પણાનો સ્વભાવ જ છે તેઓ કેવળ મનુષ્ય આયુનો જ બંધ કરે છે. કેમ કે-આ સ્થિતિમાં એજ આયુષ્ય બાંધવાનો તેમનો સ્વભાવ થઈ જાય છે. 'अकिरियावाई णं भंते ! नेरइया पुच्छा' હે ભગવન્ અક્રિયાવાદી નૈરયિકો શું નૈરયિક આયુનો બંધ કરે છે? અથવા તિર્યંચ આયુષ્યનો બંધ કરે છે? અથવા મનુષ્ય આયુષ્યનો બંધ કરે છે? અથવા દેવ આયુષ્યનો બંધ કરે છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં

वानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'नो नेरइयाउयं०' नो नैरयिकायुष्कम् अक्रियावादिनो नारकाः प्रकुर्वन्ति 'तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति' तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति 'मणुस्साउयं पि पकरेंति' मनुष्यायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति 'नो देवाउयं पकरेंति' नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति। 'एवं अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि' एवम्-अक्रियावादि नारकवदेव अज्ञानिकवादिवैनयिकवादिनारका अपि न नारकदेवायुष्कं प्रकुर्वन्ति किन्तु तिर्यग्मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति इमे त्रयोऽक्रियावादिनः तिर्यग्मनुष्यायुषामेव कर्त्तारो भवन्ति न तु नारकदेवायुषां बन्धका भवन्तीति भावः। 'सलेस्सा णं भंते ! नेरइया किरियावाई' सलेश्याः खलु

या देवायुका बन्ध करते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-गोयमा ! नो नेरइयाउयं०, हे गौतम ! अक्रियावादी नैरयिक नैरयिकायुष्क का बन्ध नहीं करते हैं 'नो देवाउयं पकरेंति' देवायुष्क का बन्ध नहीं करते हैं, किन्तु' तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति' तिर्यगायुष्क का बन्ध करते हैं और मनुष्यायुष्क का भी बन्ध करते हैं। 'एवं अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि' इसी प्रकार से अज्ञानिकवादी नैरयिक और वैनयिकवादी नैरयिक भी न नारकायु का बन्ध करते हैं और न देवायुका ही बन्ध करते हैं किन्तु 'तिरिक्खाउयं पकरेंति मणुस्साउयं पि पकरेंति' तिर्यगायु का बन्ध करते हैं और मनुष्यायु का भी बन्ध करते हैं। इस प्रकार ये अक्रियावादी, अज्ञानिकवादी और वैनयिकवादी नारक तिर्यग्मनुष्य आयुका ही बन्ध करने वाले होते हैं, नारक देवायुका नहीं। 'सलेस्सा णं भंते! नेरइया

પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'ગોયમા ! નો નેરइयाउय' હે ગૌતમ ! અક્રિયાવાદી નૈરયિક નૈરયિકના આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી નો देवाउयं पकरेंति' દેવ સંબંધી આયુષ્યનો બધ કરતા નથી. પરંતુ 'तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति मणुस्साउयं पकरेंति' તિર્યંચ આયુષ્યનો બંધ કરે છે, અને મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ કરે છે. 'एवं अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि' એજ પ્રમાણે અજ્ઞાનવાદી નૈરયિક અને વૈનયિકવાદી નૈરયિકો પણ નારક આયુનો બંધ કરતા નથી અને દેવ આયુનો પણ બંધ કરતા નથી પરંતુ તેઓ 'तिरिक्खाउयं पकरेंति मणुस्साउयं पि पकरेंति' તિર્યંચ આયુષ્યનો બંધ કરે છે, અને મનુષ્ય આયુનો પણ બધ કરે છે. આ રીતે આ અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદી નારકો તિર્યંચ અને મનુષ્યોના આયુનોજ બંધ કરવાવાળા હોય છે નારક અને દેવ આયુનો બંધ કરવાવાળા હોતા નથી.

'सलेस्साणं भंते ! नेरइया किरियावाई' હે ભગવન્ જે નૈરયિકો લેશ્યા-

भदन्त ! नैरयिकाः क्रियावादिनः 'किं नेरइयाउयं०' किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति अथवा तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति देवायुष्कं वा प्रकुर्वन्तीति प्रश्नः। उत्तरमाह-'एवं सव्वे वि' इत्यादिना, 'एवं सव्वे वि नेरइया जे किरियावाई ते मणुस्साउयं एगं पकरेंति' एवं सर्वेऽपि नैरयिका ये क्रियावादिन स्ते एकमेव मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति क्रियावादिनां सर्वेषामेव नारकाणां क्रियावादस्वभावादेकस्यैव मनुष्यायुष्कस्य बन्धो भवति, नेतरायुषः। तत्र 'जे अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाई ते सव्वट्ठाणेसु वि नो नेरइयाउयं पकरेंति' ये अक्रियावादिनो नारका अज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनश्च ते इमे त्रयः सर्वस्थानेषु लेश्यादि सर्वद्वारेष्वपि नो-नैव कथमपि नारकायुष्कं प्रकुर्वन्ति तथा स्वभावत्वात्, किन्तु 'तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति मणुस्साउयं पि पकरेंति' तिर्यग्योनिकायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति तथा मनुष्यायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति 'नो

किरियावाई' हे भदन्त ! जो नैरयिक सलेश्य हैं और क्रियावादी हैं- वे 'किं नेरइयाउयं०' क्या नैरयिकायु का बन्ध करते हैं ? अथवा तिर्यगायुका बन्ध करते हैं ? या मनुष्यायु का बन्ध करते हैं ? या देवायुका बन्ध करते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'एवं सव्वे वि नेरइया जे किरियावाई ते मणुस्साउयं एगं पकरेंति' इस प्रकार समस्त नैरयिक जो क्रियावादी हैं वे एक मनुष्यायु के ही बन्धक होते हैं, शेष तीन आयुओं के नहीं। क्यों कि क्रियावादिता में ऐसा ही स्वभाव होता है कि इसमें एक मनुष्यायु का ही बन्ध होता है। तथा-जो अक्रियावादी, अज्ञानवादी और वैनयिकवादी नारक हैं वे समस्त स्थानों में- लेश्यादिक समस्त द्वारों में-भी किसी प्रकार से नारकायुष्क का बन्ध

વાળા હોય છે. અને ક્રિયાવાદી હોય છે, તેઓ 'किं नेरइयाउयं' શું નૈરયિક આયુનો બંધ કરે છે? અથવા તિર્યંચ આયુનો બંધ કરે છે? અથવા મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે? અથવા દેવ આયુનો બંધ કરે છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'एवं सव्वे नेरइया जे किरियावाई ते मणुस्साउयं एगं पकरेंति' આ રીતે સઘળા નૈરયિકો કે જે ક્રિયાવાદી છે, તેઓ એક મનુષ્ય આયુનો બંધ કરનારા હોય છે. બાકીના ત્રણ આયુનો બંધ કરતા નથી. કેમ કે ક્રિયાવાદી પણામાં એ પ્રમાણેનો સ્વભાવ હોય છે. કે તેમાં મનુષ્ય આયુનો જ બંધ થાય છે. તથા જેઓ અક્રિયાવાદી. અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદી નારકો છે તેઓ બધા જ સ્થાનોમાં લેશ્યા વિગેરે સઘળા દ્વારોમાં પણ કોઈ પણ રીતે નારક આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી. પરંતુ તિર્યંચ આયુનો અને મનુષ્ય આયુનો જ બંધ કરે છે. દેવાયુનો પણ બંધ

देवाउयं पकरेंति' नो नैव देवसम्बन्धि आयुष्कबन्धं कुर्वन्तीति । 'नवरं सम्मामिच्छत्ते उवरिल्लेहिं दोहिं वि समोसरणेहिं' नवरं सम्यग्मिथ्यात्विनो मिश्रदृष्टयः उपरितनाभ्यामज्ञानिक वैनयिकवादिरूपाभ्यां द्वाभ्यामपि समवसरणाभ्याम् 'न किंचि वि पकरेंति' न किमपि आयुः प्रकुर्वन्ति 'जहेव जीवपए' यथैव जीवपदे सम्यग्मिथ्यादृष्टिनारकाणां द्वे एवान्तिमे समवसरणे अज्ञानिकवादिनश्च वैनयिक वादिनश्चेत्याकारके भवतः तेषां चायुर्बन्धो न भवत्येव गुणस्थानकस्वभावादत स्ते न किमपि आयुः प्रकुर्वन्तीति भावः मिश्रदृष्टेः क्रियावादाक्रियावादयोरभावात् । 'एवं जाव थणियकुमारा जहा नेरइया' एवं यावत्स्तनितकुमारा यथा नैरयिकाः नैरयिकवदेव असुरकुमारादारभ्य स्तनितकुमारपर्यन्ता जीवा नारकवदेव समवसरणविषये ज्ञातव्या इति । 'अकिरियावाई णं भंते ! पुढवीकाइया पुच्छा'

नहीं करते हैं-किन्तु तिर्यगायु का एवं मनुष्यायु का ही बन्ध करते हैं, देवायु का भी बन्ध नहीं करते हैं। 'नवरं सम्मामिच्छत्ते उवरिल्ले दोहिं वि समोसरणेहिं' परन्तु जो सम्यग्मिथ्यात्वी नारक हैं और जो अज्ञानिकवादी एवं वैनयिकवादी हैं वे किसी भी आयुका बन्ध नहीं करते हैं । 'जहेव जीव पए' जैसा कि जीव पद में सम्यग्मिथ्याके दो ही अन्तिम समवसरण अज्ञानवादी और वैनयिकवादी ये दो समवसरण होते हैं और उनमें आयुबन्ध नहीं होता है । क्यो की इस गुणस्थान का-तृतीय गुणस्थान का-ऐसा ही स्वभाव होता है- इस लिये किसी भी आयुका बन्ध नहीं करते हैं। मिश्रदृष्टिमें न क्रिया वादिता होती है और न अक्रियावादिता होती है। 'एवं जाव थणियकुमारा जहेव नेरइया' असुरकुमार से लेकर स्तनितकुमार तक के जीव नैरयिकों के जैसे ही समवसरण के विषय में ज्ञातव्य है।

કરતા નથી. 'नवरं सम्मामिच्छत्ते उवरिल्ले दोहिं वि समोसरणेहिं' પરંતુ જેઓ સમ્યગ્મિથ્યાવાળા નારકો છે, તેઓ તથા અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદી છે તેઓ કોઈ પણ આયુનો બંધ કરતા નથી 'जहेव जीवपए' જે પ્રમાણે જીવ પદમાં સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિવાળા નારકોને છેલ્લા બેજ સમવસરણ એટલે કે અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદી આ બેજ સમવસરણ હોય છે. તેઓને આયુ બંધ હોતો નથી. એવો જ તેમનો સ્વભાવ હોય છે, તેથી કોઈ પણ આયુનો તેઓ બંધ કરતા નથી. કેમ કે-આ ત્રીજા ગુણ સ્થાનનો એવો જ સ્વભાવ હોય છે. તેથી તેઓ કોઈપણ આયુનો બંધ કરતા નથી. મિશ્રદૃષ્ટિવાળાઓમાં ક્રિયાવાદીપણું પણ હોતુ નથી. તથા અક્રિયાવાદિપણું પણ હોતું નથી. 'एवं जाव थणियकुमारा जहा नेरइया' એક ઈન્દ્રિયવાળાથી લઈ ને સ્તનિતકુમાર સુધીના જીવો સંબંધી નૈરયિકોના કથન પ્રમાણે જ તેઓનું સમવસરણ કહેલ છે.

अक्रियावादिनः खलु भदन्त ! पृथिवीकायिका जीवाः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति मनुष्यायुष्कं वा प्रकुर्वन्ति देवायुष्कं वा प्रकुर्वन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते । भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि । 'गोयमा' हे गौतम ! 'नो नेरइयाउयं पकरेंति' नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति अक्रियावादिनः पृथिवीकायिकाः किन्तु 'तिरिक्खजोणियाउयं० मणुस्साउयं पकरेंति' तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति तथा मनुष्यायुष्कं च प्रकुर्वन्ति 'नो देवाउयं पकरेंति' नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति, अक्रियावादिनां पृथिवीकायिकजीवानां द्वे एव तिर्यग्मनुष्यायुषी भवतो न तु नारकदेवायुष्कौ भवत इति । 'एवं अन्नाणियवाई वि' एवमक्रियावादिनः पृथिवीकायिकवदेव अज्ञानिकवादि पृथिवीकायिका अपि नो

'अकिरियावाई णं भंते ! पुढवीकाइया पुच्छा' हे भदन्त ! अक्रियावादी पृथिवीकायिक जीव क्या नैरयिक आयुका बन्ध करते हैं ? या तिर्यगायु का बन्ध करते हैं ? या मनुष्यायुका बन्ध करते हैं ? या देवायुका बन्ध करते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं–'गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति' हे गौतम ! अक्रियावादी पृथिवीकायिक जीव नैरयिक आयुका बन्ध नहीं करते हैं किन्तु–तिर्यगायु का बन्ध करते हैं, मनुष्यायु का बन्ध करते हैं, 'नो देवाउयं पकरेंति' पर देवायुका भी वे बन्ध नहीं करते हैं । इस प्रकार अक्रियावादी पृथिवीकायिक जीवों के तिर्यगायु और मनुष्यायु इन दो आयुओं का ही बन्ध होता है नैरयिक और देवायुका बन्ध नहीं होता है । 'एवं अन्नाणियवाई वि' अज्ञानिकवादी पृथिवीकायिक जीव अक्रियावादी पृथिवीकायिक जीव के जैसे ही

'अकिरियावाई णं भंते ! पुढवीकाइया पुच्छा' હે ભગવન્ અક્રિયાવાદી પૃથ્વીકાયિક જીવ શું નૈરયિક આયુષ્યનો બંધ કરે છે? અથવા તિર્યંચ આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા દેવ આયુનો બંધ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે–'गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति' હે ગૌતમ ! અક્રિયાવાદી પૃથ્વીકાયિક જીવ નૈરયિક આયુનો બંધ કરતા નથી. પરંતુ તિર્યંચ આયુષ્યનો બંધ કરે છે, અને મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે. 'नो देवाउयं पकरेंति' પરંતુ તેઓ દેવ આયુષ્યનો પણ બંધ કરતા નથી. આ રીતે અક્રિયાવાદી પૃથ્વીકાયિક જીવોને તિર્યંચ આયુ અને મનુષ્ય આયુ આ બે આયુનોજ બંધ હોય છે તેઓને નૈરયિક અને દેવ આયુનો બંધ હોતો નથી. 'एवं अन्नाणियवाइ वि' અજ્ઞાન વાદી પૃથ્વીકાયિક જીવ, અક્રિયાવાદી પૃથ્વીકાયિક જીવના કથન પ્રમાણે જ નારક આયુ અને દેવ આયુનો બંધ કરતા નથી. પરંતુ તિર્યંચ આયુ અને

नारकायुष्कं प्रकुर्वन्ति न वा देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति किन्तु तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकु-
र्वन्ति तथा मनुष्यायुष्कमपि प्रकुर्वन्तीति भावः। 'सलेस्सा णं भंते !०' सलेश्याः
खलु भदन्त ! पृथिवीकायिकाः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति तिर्यग्योनिकायुष्कं
प्रकुर्वन्ति मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति देवायुष्कं वा प्रकुर्वन्तीति प्रश्नः, भगवानाह-
'एवं जं जं पयं अत्थि पुढवीकाइयाणं' एवं यत् यत् पदं-लेश्यादिरूपद्वारं षड्-
विंशतितमशतकगतप्रथमोद्देशकस्थं पृथिवीकायिकजीवानाम् अस्ति 'तहिं तहिं
मज्झिमेसु दोसु समोसरणेसु' तत्र तत्र पदेषु मध्यमयो द्वयोः अक्रियावाद्यज्ञानिक-
वादिरूपयोः समवसरणयोः 'एवं चेव दुविहं आउयं पकरेंति' एवमेव उपरिदर्शित
प्रकारेणैव द्विविधम्-द्विप्रकारम् आयुष्कम् तिर्यग्योनिकसम्बन्धि मनुष्ययोनिसम्ब-
न्धि चेति आयुष्कद्वयमेव प्रकुर्वन्ति न तु नारकायुष्कं देवायुष्कं वा प्रकुर्वन्तीति।
'नवरं तेउलेस्साए न किंपि पकरेंति' नवरम्-केवलं विशेष एतावानेव यत् तेजो-

नरकायु और देवायु का बन्ध नहीं करते हैं किंतु तिर्यगायु और
मनुष्यायु का ही बन्ध करते हैं। अर्थात् इन आयुओं में से ही किसी
एक आयुका बन्ध करते हैं। 'सलेस्सा णं भंते !' हे भदन्त ! सलेश्य
पृथिवीकायिक जीव क्या नैरयिक आयुका बन्ध करते हैं ? या तिर्यगा-
युका बन्ध करते हैं ? या मनुष्यआयुका बन्ध करते हैं ? या देवायुका
बन्ध करते हैं ? इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'एवं जं जं पयं
अत्थि पुढवीकाइयाणं' हे गौतम ! पृथिवीकायिक जीव में जो-जो
लेश्यादि रूप पद संभवित हों, उन-उन पदों में वर्तमान पृथिवीकायिक
जीवों के अक्रियावादी और अज्ञानवादी ये दो ही समवसरण होते
हैं-सो इन दोनों समवसरणों में पूर्वोक्त अनुसार मनुष्यायु और तिर्य-
गायुका बन्ध ही उन पृथिवीकायिक जीवों के होता है नारकायुष्क

મનુષ્ય આયુનો જ બંધ કરે છે. અર્થાત્ આ બે આયુ પૈકી કોઇ એક આયુનો
બંધ કરે છે. 'सलेस्सा णं भंते ! હે ભગવન્ લેશ્યાવાળા પૃથ્વીકાયિક જીવો શું
નૈરયિક આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા તિર્યંચ આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા
મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા દેવ આયુનો બંધ કરે છે ? આ પ્રશ્નના
ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'एवं जं जं पयं अत्थि पुढवी-
काइयाणं' હે ગૌતમ ! પૃથ્વીકાયિક જીવોમાં લેશ્યા વિગેરે પ્રકારથી જે જે
પદો સંભવિત હોય તે તે પદોમાં રહેનારા પૃથ્વીકાયિક જીવોને અક્રિયાવાદી
અને અજ્ઞાનવાદી આ બેજ સમવસરણ હોય છે. તો આ બન્ને સમવસરણોમાં
પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે મનુષ્ય આયુ અને તિર્યંચ આયુનો બંધ જ તે પૃથ્વી-
કાયિક જીવોને હોય છે. તેઓ નારક આયુ અને દેવ આયુનો બંધ કરતા નથી.

लेश्यायां न किमपि आयुर्बन्धं प्रकुर्वन्ति पृथिवीकायिकजीवेषु देवोत्पत्तित्वेन अपर्याप्तावस्थायामेव तेजोलेश्या भवति, तत्सत्तायां नैवायुषो बन्धः, तद्विगमे एव आयुषो बन्धसद्भावात्। 'एवं आउकाइयाण वि वणस्सइकाइयाण वि' एवं पृथिवीकायिकवदेवाऽप्कायिकानां वनस्पतिकायिकानां च द्वयानाम् अक्रियावाद्यज्ञानिकवादि समवसरणयो र्मध्ये यत् यत् पदं भवति तस्मिन् तस्मिन् पदे एव द्विप्रकारकं तिर्यग्योनिकसम्बन्धि मनुष्यभवसम्बन्धि चायु र्भवति एष्वपि पृथिवीकायिकवदेवोत्पत्तित्वेन अपर्याप्तावस्थायामेव तेजोलेश्या भवति, तेजोलेश्यायां च नायुषो बन्धो भवतीत्यादिकं सर्वं पृथिवीकायिकवदेव ज्ञातव्यमिति भावः।

और देवायुष्क का बन्ध नहीं होता है। 'नवरं तेउलेस्साए न किं पि पकरेंति' परंतु तेजोलेश्या पद में वर्तमान पृथिवीकायिक जीवों के किसी भी आयुका बन्ध नहीं होता है। पृथिवीकायिकों के अपर्याप्तावस्था में ही इन्द्रिय पर्याप्ति पूर्ण होने के पहिले तेजोलेश्या होती है, क्यों कि पृथिवीकायिक जीवों में देवों की उत्पत्ति हो सकने से वहां अपर्याप्तावस्था में तेजोलेश्या कही गई है। तेजोलेश्या की सत्ता में आयुका बंध नहीं होता है। तेजोलेश्या के चले जाने पर ही आयुका बंध होता है। 'एवं आउक्काइयाण वि वणस्सइकाइयाण वि' पृथिवीकायिक जीव के जैसे ही अप्कायिकों के वनस्पतिकायिकों के अक्रियावादी और अज्ञानिकवादी इन दो समवसरणों में जो जो पद संभवित हो उन-उन पदों में तिर्यगायु और मनुष्यायु इन दो आयुओं का ही उनके बंध होता है, अन्य आयुओं का नहीं इनमें भी पृथिवीकायिकों

'नवरं तेउलेस्साए न किं पि पकरेंति' પરંતુ તેજોલેશ્યાવાળા પદમાં રહેનારા પૃથ્વીકાયિક જીવોને કોઈપણ આયુનો બંધ થતો નથી. પૃથ્વીકાયિકોને અપર્યાપ્ત અવસ્થામાં જ ઇન્દ્રિય પર્યાપ્તિ પૂરી થયા પહેલાં તેજોલેશ્યા હોય છે. કેમકે પૃથ્વીકાયિક જીવોમાં દેવોની ઉત્પત્તી થતી હોવાથી ત્યાં અપર્યાપ્ત અવસ્થામાં તેજોલેશ્યા કહી છે. તેજોલેશ્યાની સત્તામાં આયુને બંધ હોતો નથી. તેજોલેશ્યાના જવાથીજ આયુનો બંધ થાય છે. 'एवं आउकाइयाण वि वणस्सइकाइयाण वि' લેશ્યાવાળા પૃથ્વીકાયિક જીવના કથન પ્રમાણે જ લેશ્યાવાળા અપ્કાયિકોને, લેશ્યાવાળા વનસ્પતિકાયિકોને અક્રિયાવાદી અને અજ્ઞાનવાદી આ બે સમવસરણોમાં જે જે પદો સંભવિત હોય તે તે પદોમાં તિર્યંચ આયુ અને મનુષ્ય આયુ આ બે આયુષ્યનો જ બંધ હોય છે. બીજા બે આયુનો બંધ હોતો નથી. તેનું કારણ પણ એજ છે કે-આમાં પણ દેવોની

अक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनश्च अप्कायिकवनस्पतिकायिका द्विप्रकारकमेव आयुष्कं बध्नन्तीति भावः। 'तेउकाइया वाउकाइया सव्वट्ठाणेसु मज्झिमेसु दोसु समोसरणेसु नो नेरइयाउयं पकरेंति' तेजस्कायिका वायुकायिकाश्च सर्वस्थानेषु सर्वेष्वेव लेश्यादिद्वारेषु मध्यमयोर्द्वयोःसमवसरणयोः अक्रियावाद्यज्ञानिकवादिरूपयोः नो नारकभवसम्बन्धि आयुष्कं प्रकुर्वन्ति। किन्तु 'तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति' तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, 'णो मणुस्साउयं०' नो मनुष्य सम्बन्धि आयुष्कं प्रकुर्वन्ति 'नो देवाउयं पकरेंति' नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति तेजस्कायिक

के जैसे देवों की उत्पत्ति हो सकते से अपर्याप्तावस्था में ही तेजोलेश्या का सद्भाव रहता है। तेजोलेश्या, के सद्भाव में आयुका बंध नहीं होता है इत्यादि सब कथन पृथिवीकायिक के जैसे यहां समझना चाहिये। अक्रियावादी और अज्ञानिकवादी अप्कायिक एवं वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारकी ही आयुका बंध करते हैं यही कहने का तात्पर्य है, 'तेउकाइया वाउकाइया सव्वट्ठाणेसु मज्झिमेसु दो सु समोसरणेसु नो नेरइयाउयं पकरेंति' तेजस्कायिक और वायुकायिक जीव लेश्यावादिक सर्व स्थानों में अक्रियावादी रूप और अज्ञानिकवादी रूप समवसरणवाले होते हुए नारक भव सम्बन्धि आयु कर्म का बंध नहीं करते हैं किन्तु वे 'तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति' तिर्यगायु का ही बंध करते हैं। 'णो मणुस्साउयं नो देवाउयं पकरेंति' मनुष्यायु का बंध नहीं करते हैं और न देवायु का बंध करते हैं।

ઉત્પત્તી હોવાથી અપર્યાપ્ત અવસ્થામાં તેજોલેશ્યાનો સદ્ભાવ હોય છે. તેજોલેશ્યાના સદ્ભાવમાં આયુનો બંધ હોતો નથી. વિગેરે તમામ કથન પૃથ્વીકાયિકના કથન પ્રમાણે અહિયાં સમજવું અક્રિયાવાદી અને અજ્ઞાનવાદી અપ્કાયિક અને વનસ્પતિકાયિક જીવ બે પ્રકારનાં આયુષ્યનો જ બંધ કરે છે. એજ આ કથનનું તાત્પર્ય કહ્યું છે.

'तेउकाइया वाउकाइया सव्वट्ठाणेसु मज्झमेसु दोसु समोसरणेसु नो नेरइयाउयं पकरेंति' તેજસ્કાયિક અને વાયુકાયિક લેશ્યા વિગેરે સઘળા સ્થાનોમાં અક્રિયાવાદીપણા અને અજ્ઞાનવાદીપણાના સમવસરણવાળા થઈને નારક ભવ સંબંધી આયુકર્મનો બંધ કરતા નથી. તથા દેવ આયુનો પણ બંધ કરતા નથી. પરંતુ 'तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति' તિર્યંચ આયુનો જ બંધ કરે છે. 'णो मणुस्साउयं नो देवाउयं पकरेंति' મનુષ્ય આયુનો બંધ કરતા નથી. તથા દેવ આયુનો પણ બંધ કરતા નથી. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે

वायुकायिकजीवानां सर्वत्र पदेषु एकप्रकारकतिर्यगायुष एव बन्धनं भवति नान्यायुष इति भावः। 'बेइंदियतेइंदियचउरिंदियाणं जहा पुढविकाइयाणं' द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियजीवानामायुर्बन्धो यथा पृथिवीकायिकानां प्रदर्शित स्तथैव ज्ञातव्यः द्वीन्द्रिय यावत् चतुरिन्द्रियाणां पृथिवीकायिकवदेव तिर्यग्योनिकायुष्कस्य मनुष्यभवसम्बन्ध्यायुष्कस्य च बन्धनं भवति न तु इमे नैरयिकायुष्कं कुर्वन्ति न वा देवायुष्कमेव कुर्वन्तीति भावः। 'नवरं सम्मत्तनाणेसु न एकं पि आउयं पकरेंति' नवरं केवलमेतदेव वैलक्षण्यं यत् सम्यक्त्वज्ञानेषु सम्यक्त्वपदे ज्ञानपदे चेमे द्वीन्द्रिय यावत् चतुरिन्द्रिया जीवा न एकमपि आयुष्कं प्रकुर्वन्ति, द्वीन्द्रियादि चतुरिन्द्रियान्तजीवानां सास्वादनभावेन अपर्याप्तावस्थायामेव सम्यक्त्वं तथा ज्ञानं च भवति तत्कालस्याल्पत्वान्न कस्यापि आयुषो बन्धो भवतीति। 'किरियावाई णं भंते !'

तात्पर्य कहने का यही है कि तेजस्कायिक और वायुकायिक जीवों के सर्वत्र पदों में एक प्रकार के तिर्यगायु का ही बंध होता है, अन्य आयुओं का नहीं। 'बेइंदियतेइंदिय चउरिंदियाणं जहा पुढविक्काइयाणं' दो इन्द्रिय, तेइन्द्रिय चौइन्द्रिय जीवों के पृथिवीकायिक जीवों के जैसे तिर्यग्योनिक आयुष्क का और मनुष्य भव सम्बन्ध्यायुष्क का बंध होता है। नरकायु का और देवायु का इनके बंध नहीं होता है। 'नवरं सम्मत्तनाणेसु न एक्कंपि आउयं पकरेंति' परंतु यहां विशेषता इतनी सी ही है कि सम्यक्त्व पद में और ज्ञान पद में ये द्वीन्द्रिय से लेकर चौइन्द्रिय तक के जीव एक भी आयु का बंध नहीं करते हैं, क्यों कि इनके सम्यक्त्व और ज्ञान सास्वादन भाव से अपर्याप्तावस्था में ही होता है। अतः अपर्याप्तावस्था का काल अत्यल्प होने से किसी भी आयु का बंध इनके अक्रियावादी और अज्ञानिकवादी रूप हालत में

તેજસ્કાયિક અને વાયુકાયિક જીવોને સઘળા પદોમાં એક પ્રકારના તિર્યંચ આયુનોજ બંધ હોય છે, તે શિવાયના બીજા આયુઓનો બંધ થતો નથી. 'बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदियाणं जहा पुढवीकाइयाणं' બે ઇંદ્રિયવાળા ત્રણ ઇંદ્રિયવાળા, ચાર ઇંદ્રિયવાળા પૃથ્વીકાયિક જીવોને પૃથ્વીકાયિક જીવોના કથન પ્રમાણે તિર્યંચયોનિક આયુષ્યનો અને મનુષ્ય સંબંધી આયુનો બંધ થાય છે. નારક આયુનો અને દેવ આયુનો બંધ તેઓને હોતો નથી. 'नवरं सम्मत्तनाणेसु न एक्कं पि आउयं पकरेंति' પરંતુ આ કથનમાં વિશેષપણું એ છે કે-સમ્યક્ત્વ પદમાં અને જ્ઞાનપદમાં આ બે ઇન્દ્રિયવાળાથી લઈને ચારે ઇન્દ્રિયવાળા સુધીના જીવો એક પણ આયુનો બંધ કરતા નથી. કેમકે તેઓને સમ્યક્ત્વ અને જ્ઞાન સાસ્વાદન ભાવથી અપર્યાપ્ત અવસ્થામાં જ

क्रियावादिनः खलु भदन्त ! 'पंचिंदियतिरिक्खजोणिया' पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका जीवाः 'किं नेरइयाउयं पकरेंति पुच्छा' किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति अथवा तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति अथवा मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति देवायुष्कं वा प्रकुर्वन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'जहा मणपज्जवणाणी' यथा मनःपर्यवज्ञानिनः मनःपर्यवज्ञानिवदेव क्रियावादि पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः न नारकतिर्यग्योनिकमनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति किन्तु केवलं देवायुष्कमेव प्रकुर्वन्तीति भावः। 'अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाई य चउव्विहं पि पकरेंति' अक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनश्च पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका नारकायुष्कं तिर्यग्योनिकायुष्कं मनुष्यायुष्कं देवायुष्कं चतु-

---

नहीं होता है। 'किरियावाईणं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया' हे भदन्त ! क्रियावादी पंचेन्द्रियतिर्यञ्च जीव 'किं नेरइयाउयं पकरेंति पुच्छा' क्या नैरयिक आयुका बंध करते हैं ? अथवा-तिर्यगायुका बंध करते हैं ? अथवा-मनुष्यायुका बंध करते हैं ? अथवा-देवायुष्क का बंध करते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! जहा मणपज्जवनाणी' हे गौतम ! मनःपर्यवज्ञानी के जैसे क्रियावादी पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च न नारकायु का बंध करते हैं, न तिर्यगायु का बंध करते हैं, न मनुष्यायु का बंध करते हैं, किंतु वे केवल एक देवायु का ही बंध करते हैं। 'अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाईय चउव्विहं पि पकरेंति' अक्रियावादी, अज्ञानिकवादी और वैनयिकवादी पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीव चारों प्रकार की आयुओं का बंध करते हैं। नार-

---

હોય છે. તેથી અપર્યાપ્ત અવસ્થાનો કાળ અત્યંત થોડો હોવાથી તેઓને અક્રિયાવાદી અને અજ્ઞાનવાદી પણામાં કોઇપણ આયુનો બંધ હોતો નથી.

'किरियावाई णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया' હે ભગવન્ ક્રિયાવાદી પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ જીવ 'किं नेरइयाउयं पकरेंति पुच्छा' શું તેઓ નૈરયિક આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા દેવ આયુનો બંધ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! जहा मणपज्जवनाणी' હે ગૌતમ ! મનઃપર્યવજ્ઞાનીના કથન પ્રમાણે ક્રિયાવાદી પંચેન્દ્રિયતિર્યંચ નારકની આયુનો બંધ કરતા નથી. તિર્યંચની આયુને પણ બંધ કરતા નથી. મનુષ્ય આયુનો બંધ કરતા નથી પરંતુ તેઓ કેવળ એક દેવ આયુનો જ બંધ કરે છે,

'अकिरियावाई, अन्नाणियवाई वेणईयवाई य चउव्विहं पि पकरेंति' અક્રિયાવાદી. અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદી પંચેન્દ્રિય તિર્યંચયોનિવાળા જીવો ચારે

विधमपि आयुष्कं प्रकुर्वन्तीति भावः। 'जहा ओहिया तहा सलेस्सा वि' यथा औघिकाः सामान्यतिर्यग्योनिकजीवा आयुष्कं बध्नन्ति तथैव तेनैव प्रकारेण सलेश्याः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका अपि आयुष्कं बध्नन्ति, अयं भावः-क्रियावादिपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः केवलं वैमानिकदेवायुष्कमेव बध्नन्ति, तथा शेषाः समवसरणत्रयवन्तस्तिर्यक्पञ्चेन्द्रिया श्चत्वार्यपि नरकाद्यायूंषि बध्नन्ति। 'कण्हलेस्सा णं भंते! किरियावाई पंचेंदियतिरिक्खजोणिया' कृष्णलेश्या खलु भदन्त! क्रियावादिनः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः 'किं नेरइयाउयं पुच्छा' किं नैरयिकायुष्कं कुर्वन्ति मनुष्यायुष्कं वा कुर्वन्ति देवायुष्कं वा कुर्वन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम!

कायु का भी वे बंध करते हैं, तिर्यगायु का भी वे बंध करते हैं, मनुष्यायु का भी वे बंध करते हैं और देवायु का भी वे बन्ध करते हैं 'जहा ओहिया तहा सलेस्सा वि' जैसे सामान्य तिर्यग्योनिक जीव आयुष्क कर्म का बन्ध करते हैं उसी प्रकार से सलेश्य पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीव भी आयुष्क कर्म का बन्ध करते हैं, अर्थात् क्रियावादी पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक मात्र वैमानिक देवायुका बन्ध करते हैं और शेष तीन समवसरणवाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय चारों गतिका आयु बांधते हैं। 'कण्हलेस्सा णं भंते! किरियावाई पंचिंदियतिरिक्खजोणिया' हे भदन्त! कृष्णलेश्यावाले क्रियावादी जो पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीव हैं-वे क्या 'नेरइयाउयं पकरेंति पुच्छा' नैरयिकायु का बन्ध करते हैं? या तिर्यगायुका बन्ध करते हैं? या मनुष्यायु का बन्ध करते हैं? या देवायु का बन्ध करते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते

પ્રકારના આયુષ્યનો બંધ કરે છે. તેઓ નારકોના આયુષ્યનો પણ બંધ કરે છે, તિર્યંચઆયુનો પણ તેઓ બંધ કરે છે મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ કરે છે. અને દેવ આયુનો પણ બંધ કરે છે. 'जहा ओहिया तहा सलेस्सा वि' જે રીતે સામાન્ય જીવો આયુષ્ય કર્મનો બંધ કરે છે એજ પ્રમાણે લેશ્યાવાળા પંચેન્દ્રિયતિર્યંચયોનિ જીવો પણ નારકના આયુનો બંધ કરે છે. તેઓ તિર્યંચ આયુનો બંધ કરતા નથી. પરંતુ તેઓ મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે. અને દેવ ભવના આયુષ્યનો બંધ કરે છે. 'कण्हलेस्सा णं भंते! किरियावाई पंचिंदियतिरिक्खजोणिया' હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી જે પંચેન્દ્રિયતિર્યંચયોનિક જીવો છે. તેઓ શું 'किं नेरइयाउयं पकरेंति पुच्छा' નૈરયિક આયુનો બંધ કરે છે? અથવા તિર્યંચ આયુનો બંધ કરે છે? અથવા મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે? અથવા દેવ આયુનો બંધ કરે છે.? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમ

'नो नेरइयाउयं पकरेंति' नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति 'णो तिरिक्ख०' नो तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति 'णो मणुस्साउयं०' नो मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति 'णो देवाउयं पकरेंति' नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति 'अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाई चउव्विहं पि पकरेंति' अक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनश्च पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः कृष्णलेश्यावन्त श्चतुर्विधं चतुःप्रकारमपि नारकतिर्यग्मनुष्यदेवायुष्कं प्रकुर्वन्तीति भावः। 'जहा कण्हलेस्सा एवं नीललेस्सा वि' यथा कृष्णलेश्याः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका स्तथैव नीललेश्या अपि कापोतिक लेश्या अपि पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका वक्तव्याः, तथा च क्रियावादि पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका न नारकायुष्कं न तिर्यग्योनिकायुष्कं न मनुष्यायुष्कं न

हैं-'गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खाउयं पकरेंति 'हे गौतम! कृष्णलेश्यावाले क्रियावादी पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक न नैरयिक आयुका बन्ध करते हैं, न तिर्यगायु का बन्ध करते हैं, 'नो मणुस्साउयं पकरेंति' न मनुष्यायु का बन्ध करते हैं, 'णो देवाउयं पकरेंति' और न देवायु का बंध करते हैं। 'अकिरियावाई, अन्नाणियवाई, वेणइयवाई, चउव्विहं पि पकरेंति' अक्रियावादी, अज्ञानिकवादी और वैनयिकवादी कृष्णलेश्यावाले पंञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च चारों प्रकारकी आयु का बंध करते हैं। 'जहा कण्हलेस्सा एवं नीललेस्सा वि काउलेस्सा वि' जिस प्रकार से कृष्णलेश्यावाले पचेन्द्रियतिर्यञ्च कहे गये हैं उसी प्रकार से नीललेश्या वाले पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च एवं कापोतिकलेश्यावाले भी कहने चाहिये अर्थात् क्रियावादी पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च, न नारकायुष्क का बन्ध करते हैं, न तिर्यगायुष्क का बन्ध करते हैं, न मनुष्यायुष्क का बन्ध करते हैं और न

સ્વામીને કહે છે કે-'ગોયમા! नो नेरइयाउयं पकरेंति नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति' હે ગૌતમ! કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ જીવો નારકોના આયુનો બંધ કરતા નથી. તથા તિર્યંચ આયુનો બંધ કરતા નથી 'नो मणुस्साउयं पकरेंति' મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ કરતા નથી. 'णो देवाउयं पकरेंति' તથા દેવ આયુનો પણ તેઓ બંધ કરતા નથી. 'अकिरियावाई, अन्नाणियवाई वेणइयवाई, चउव्विहं पि पकरेंति' અક્રિયાવાદી અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદી કૃષ્ણલેશ્યાવાળા પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ ચારે પ્રકારના આયુનો બંધ કરે છે. 'जहा कण्हलेस्सा एवं नीललेस्सा वि काउलेस्सा वि' જે પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા પંચેન્દ્રિય તિર્યંચોનું કથન કર્યું છે, એજ પ્રમાણે નીલલેશ્યાવાળા પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ અને કાપોતિકલેશ્યાવાળા પંચેન્દ્રિય તિર્યંચનું કથન પણ કરવું જોઈએ અર્થાત્ નારકાયુનો બંધ કરતા નથી, તિર્યંચઆયુનો પણ બંધ કરતા નથી મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ કરતા નથી. તથા દેવ આયુનો પણ બંધ કરતા નથી. કેમ કે-

देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति। पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः यदा सम्यग्दृष्टयः कृष्णलेश्याद्यशुभपरिणामवन्तो भवन्ति तदा ते पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका न किमपि आयुष्कं प्रकुर्वन्ति, यदा तु तेजोलेश्यादि शुभ परिणामवन्तो भवन्ति सम्यग्दृष्टिक पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः तदा तु देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति, तत्रापि न भवनवासि देवायायुष्कं किन्तु केवलं वैमानिकायुष्कमेव प्रकुर्वन्तीति भावः। तथा शेषा समवसरणत्रयवन्तस्तिर्यक्पञ्चेन्द्रियाश्चत्वार्यपि नरकाद्यायूंषि बध्नन्तीति। 'तेउलेस्सा जहा सलेस्सा' तेजोलेश्या परिणामवन्तः सलेश्य जीववदेव ज्ञातव्याः क्रियावादि तेजोलेश्यावन्तः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः केवलं देवायुष्कमेव प्रकुर्वन्ति, शेषा स्त्रयोऽक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनस्तु त्रिविधमायुष्कं बध्नन्ति

देवायुष्क का बन्ध करते हैं। क्यों कि सम्यग्दृष्टि तिर्यञ्च जब कृष्ण-आदि अशुभ लेश्या के परिणामवाले होते हैं तब वे किसी भी आयुका बन्ध नहीं करते हैं। और जब ये तेजोलेश्यादि शुभ परिणामवाले होते हैं तब वे सिर्फ एक देवायुष्क का ही बंध करते हैं। देवायुष्क के बंध में भी वे भवनवासी आदि देवों की आयुष्क का बन्ध नहीं करते हैं किंतु एक वैमानिक आयुष्क का ही बन्ध करते हैं। और शेष तीन समवसरण-वाले तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय चारों गति की आयुष्क बांधते हैं। 'तेउलेस्सा जहा सलेस्सा' तेजोलेश्यावाले क्रियावादी पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च सलेश्य जीवों के कथन अनुसार केवल एक देवायुष्क का ही बन्ध करते हैं। बाकी के तीन अक्रियावादी, अज्ञानिकवादी और वैनयिकवादी तेजोलेश्यावाले पचेन्द्रियतिर्यञ्च चारों प्रकार के आयु का बन्ध करते हैं। क्यों कि सलेश्य तिर्यक्पचेन्द्रिय जीवों के इसी

સમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા તિર્યંચો જ્યારે કૃષ્ણલેશ્યા વિગેરે અશુભ લેશ્યાના પરિણામવાળા હોય છે, ત્યારે તેઓ કોઈ પણ આયુનો બંધ કરતા નથી. અને જ્યારે તેઓ તેજોલેશ્યા વિગેરે શુભ પરિણામવાળા હોય છે, ત્યારે તેઓ કેવળ એક દેવ આયુષ્યનો જ બંધ કરે છે. દેવાયુષ્યના બંધમાં પણ તેઓ ભવનવાસી વિગેરે દેવોના આયુનો બંધ કરતા નથી. પરંતુ એક વૈમાનિક દેવના આયુષ્યનો જ બંધ કરે છે. અને બાકીના ત્રણ સમવસરણવાળા તિર્યંચ પંચેન્દ્રિય ચારે ગતિની આયુનો બંધ કરે છે. 'तेउलेस्सा जहा सलेस्सा' તેજોલેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી પંચેન્દ્રિયતિર્યંચ સલેશ્ય જીવોના કથન પ્રમાણે કેવળ એક દેવઆયુનો જ બંધ કરે છે, બાકીના અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી, અને વૈનયિકવાદી તેજોલેશ્ય વાળા પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ ચારે પ્રકારના આયુષ્યનો બંધ કરે છે. કેમ કે-લેશ્યાવાળા જીવોને આજ રીતનું પરિણામ

सलेश्यानां तिर्यक्पञ्चेन्द्रियाणामेवं विधस्वरूपतयोक्तत्वादिति। 'नवरं अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाई य णो णेरइयाउयं पकरेंति' नवरं केवलमेतदेव वैलक्षण्यं यत् अक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनश्च न नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति किन्तु 'देवाउयंपि पकरेंति' देवायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति, 'तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति' तिर्यग्योनिकायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति। 'मणुस्साउयंपि पकरेंति' मनुष्यायुष्कमपि प्रकुर्वन्ति 'एवं पम्हलेस्सा वि एवं सुक्कलेस्सा वि भाणियव्वा' एवमुपरोक्तक्रमेण पद्मलेश्यापरिणामवन्तः, एवं शुक्ललेश्यापरिणामवन्तोऽपि भणितव्याः-कथयितव्याः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका इति, एवमिमे चापि यदा क्रियावादिनः तदा केवलं देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति, यदा अक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनश्च भवन्ति तदा त्रिविधमपि आयुष्कं

प्रकार के परिणाम होते हैं ऐसा पहिले कहा गया है। 'नवरं अकिरियावाई, अन्नाणियवाई, वेणइयवाईय णो णेरइयाउयं पकरेंति' किन्तु अक्रियावादी, अज्ञानिकवादी और वैनयिकवादी पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च नैरयिक आयु का बन्ध नहीं करते हैं। वे तो 'देवाउयं पि पकरेंति' देवायु का भी बन्ध करते हैं। 'तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति' तिर्यगायु का भी बन्ध करते हैं। 'मणुस्साउयं पकरेंति' मनुष्य आयुका भी बंध करते हैं। 'एवं पम्हलेस्सा वि एवं सुक्कलेस्सा वि भाणियव्वा' इसी प्रकार से पद्मलेश्या परिणामवाले पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च और शुक्ललेश्या के परिणामवाले पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च भी जानना चाहिये, ये जिस समय क्रियावादी होते हैं तब केवल देवायु का ही बन्ध करते हैं और जब ये अक्रियावादी, अज्ञानिकवादी और वैनयिकवादी होते हैं तब तीनों प्रकार की आयुका बन्ध करते हैं। पर नारकायुका बन्ध नहीं करते हैं

હોય છે, તે પ્રમાણે પહેલા કહેલ જ છે. 'नवरं अकिरियावाई, अन्नाणियवाई वेणइयवाई णो णेरइयाउयं पकरेंति' પરંતુ અક્રિયાવાદી અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદી પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ નૈરયિક આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી. તેઓ તો 'देवाउयं पि पकरेंति' દેવઆયુનો બંધ કરે છે, 'तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति' તિર્યંચઆયુનો પણ બંધ કરે છે. 'मणुस्साउयं पि पकरेंति' મનુષ્ય આયુનો પણ બંધ કરે છે.

'एवं पम्हलेस्सा वि एवं सुक्कलेस्सा वि भाणियव्वा' એજ પ્રમાણે પદ્મ લેશ્યાના પરિણામવાળા પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ અને શુક્લ લેશ્યાના પરિણામવાળા પંચેન્દ્રિય તિર્યંચના સંબંધમાં પણ સમજવું. તેઓ જ્યારે ક્રિયાવાદી હોય છે, ત્યારે કેવળ દેવ આયુનો જ બંધ કરે છે. અને જ્યારે તેઓ અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદી હોય છે, ત્યારે તેઓ ત્રણે પ્રકારના આયુનો

नारकातिरिक्तं प्रकुर्वन्तीति । 'कण्हपक्खिया तिहिं समोसरणेहिं' कृष्णपाक्षिका जीवाः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः त्रिभिः समवसरणैः अक्रियावाद्यज्ञानिकवादि वैनयिकवादिभिः पक्षैः 'चउव्विहंपि आउयं पकरेंति' चतुर्विधमपि नारकदेव तिर्यग्मनुष्यायुष्कं कुर्वन्तीति । 'सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा' समवसरणत्रयवन्तः शुक्लपाक्षिका यथा सलेश्याः सलेश्यतिर्यक्पञ्चेन्द्रियजीववदेव शुक्लपाक्षिका अपि पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका आयुश्चतुष्कं कुर्वन्ति तथा क्रियावादि शुक्लपाक्षिक तिर्यक् पञ्चेन्द्रियाः केवलं वैमानिकदेवायुष्कमेव बध्नन्ति 'सम्मदिट्ठी जहा मण-पज्जवनाणी तहेव वेमाणियाउयं पकरेंति' सम्यग्दृष्टयः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका जीवाः मनःपर्यवज्ञानिवदेव केवलं वैमानिकायुष्कमेव प्रकुर्वन्तीति । 'मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया' मिथ्यादृष्टयो यथा कृष्णपाक्षिकाः कृष्णपाक्षिकजीववदेव मिथ्यादृष्टि जीवा अपि अक्रियावाद्यज्ञानिकवादि वैनयिकवादिभि स्त्रिभिः समव-

---

'कण्हपक्खिया तिहिं समोसरणेहिं' कृष्णपाक्षिक पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीव अक्रियावादी, अज्ञानवादी और वैनयिकवादी ही होते हैं और उस समय 'चउव्विहं पि आउयं पकरेंति' वे चारों प्रकार की आयुका बन्ध करते हैं। 'सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा' तीन समवसरणवाले शुक्लपाक्षिक पञ्चेन्द्रियतिर्यंच सलेश्य तिर्यञ्चपंचेन्द्रिय जीवों के जैसे देव तिर्यक् मनुष्य और नारक चारों आयुओं का बन्ध करते हैं, और क्रियावादी शुक्लपाक्षिक तिर्यक् पंचेन्द्रिय जीव मात्र वैमानिक देवायु का बन्ध करते हैं। 'सम्मदिट्ठी जहा मणपज्जवनाणी तहेव वेमाणिया उयं पकरेंति' सम्यग्दृष्टि पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीव मनः पर्यवज्ञानी के जैसे केवल एक वैमानिक आयुका बन्ध करते है। 'मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया' मिथ्यादृष्टि जीव कृष्णपाक्षिक जीवों के जैसे

બંધ કરે છે, પરંતુ નારકના આયુનો બંધ કરતા નથી 'कण्हपक्खिया तिहिं समोसरणेहिं' કૃષ્ણપાક્ષિક પંચેન્દ્રિય તિર્યંચયોનિક જીવ જ્યારે અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદી હોય છે, ત્યારે 'चउहिं पि आउयं पकरेंति' તેઓ ચાર પ્રકારના આયુનો બંધ કરે છે. 'सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा' શુકલપાક્ષિક પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ લેશ્યાવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે દેવ, તિર્યંચ, અને મનુષ્ય આ ત્રણ પ્રકારના આયુષ્યનો બંધ કરે છે. નૈરયિક આયુનો બંધ કરતા નથી. 'सम्मदिट्ठी जहा मणपज्जवनाणी तहेव वेमाणियाउयं पकरेंति' સમ્યગ્દૃષ્ટિ પંચેન્દ્રિય તિર્યંચયોનિક જીવો, મનઃપર્યવજ્ઞાનવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે કેવળ એક વૈમાનિક આયુનો બંધ કરે છે, 'मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया' મિથ્યાદૃષ્ટિવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે કૃષ્ણપાક્ષિક

सरणे देवनारकतिर्यग्मनुष्यायुष्कं चतुर्विधमपि प्रकुर्वन्तीति। 'सम्मामिच्छादिट्ठी ण य एकं पि पकरेंति जहेव नेरइया' सम्यग्मिथ्यादृष्टयो न चैकमपि आयुष्कं प्रकुर्वन्ति यथैव नैरयिकाः मिथ्यादृष्टिनारकवदेव एषामपि आयुष्कबन्धो न भवतीत्यर्थः। 'नाणी जाव ओहिनाणी सम्मादिट्ठी' ज्ञानिनो यावत् अवधिज्ञानिनो यथा सम्यग्दृष्टयः सम्यग्दृष्टिवदेव ज्ञानिनो मत्यादिज्ञानिनोऽवधिज्ञानिनश्च केवलं वैमानिकदेवायुष्कमेव प्रकुर्वन्ति न तु नारकतिर्यग्मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्तीति। 'अन्नाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया' अज्ञानिनो यावद्विभङ्गज्ञानिनो यथा कृष्णपाक्षिकाः यावत्पदेन मत्यज्ञानि श्रुताज्ञानिनोः संग्रहः तथा चाज्ञानि-मत्यज्ञानि-श्रुताज्ञानि-विभङ्गज्ञानिनश्च कृष्णपाक्षिकवदेव त्रिभिः समवसरणैरक्रियावाद्यज्ञानिकवादि-वैनयिकवादिरूपै श्चतुर्विधमपि आयुष्कं प्रकुर्वन्तीति। 'सेसा

पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च अक्रियावादी, अज्ञानवादी और वैनयिकवादी अवस्था में चारों प्रकार की आयुका बन्ध करते हैं। 'सम्मामिच्छादिट्ठीण य एक्कंपि पकरेंति जहेव नेरइया' सम्यक् मिथ्यादृष्टि मिश्रदृष्टि-जीव नारक के जैसे एक भी आयुष्क कर्म का बन्ध नहीं करता हैं। 'नाणी-जाव ओहिनाणी जहा सम्मादिट्ठी' ज्ञानी यावत् अवधिज्ञानी सम्यग्दृष्टि के जैसे केवल एक वैमानिक देवायुष्क का ही बन्ध करते हैं। नारक तिर्यञ्च एवं मनुष्य आयुओं का बन्ध नहीं करते हैं। 'अन्नाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया' अज्ञानी यावत् विभंगज्ञानी कृष्ण पाक्षिक के जैसे अक्रियावादी, अज्ञानवादी, और वैनयिकवादी अवस्था में चारों प्रकार की आयुका बन्ध करते हैं। यहां यावत् शब्द से मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी इन दोका ग्रहण हुआ है। 'सेसा जाव अणा-

---

પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ અક્રિયાવાદી અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદી અવસ્થામાં ચારે પ્રકારના આયુષ્યનો બંધ કરે છે, 'सम्मामिच्छादिट्ठीण य एक्कं पि पकरेंति' जहेव नेरइया' સમ્યક્‌મિથ્યાદૃષ્ટિવાળા નારકોના કથન પ્રમાણે મિશ્રદૃષ્ટિવાળા એક પણ આયુષ્ય કર્મનો બંધ કરતા નથી. 'नाणी जाव ओहिनाणी जहा सम्मादिट्ठी' જ્ઞાનીયાવત્ અવધિજ્ઞાની સમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા જીવના કથન પ્રમાણે કેવળ એક દેવ આયુષ્યનો જ બંધ કરે છે. નારક, તિર્યંચ અને મનુષ્ય સંબંધી આયુનો બંધ કરતા નથી.

'अन्नाणि जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया' અજ્ઞાની યાવત્ વિભંગજ્ઞાનવાળા કૃષ્ણપાક્ષિકના કથન પ્રમાણે અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી, અને વૈનયિકવાદી અવસ્થામાં ચારે પ્રકારની આયુનો બંધ કરે છે. અહિયાં યાવત્ પદથી મતિઅજ્ઞાની અને શ્રુતઅજ્ઞાની આ બે ગ્રહણ કરાયા છે.

जाव अणागारोवउत्ता सव्वे जहा सलेस्सा तहेव भाणियव्वा' शेषाः यावदनाकारोपयुक्ताः अनाकारोपयुक्तपदपर्यन्ताः सर्वेऽपि यथा सलेश्या स्तथैव भणितव्याः, तथाचेमे सर्वेऽपि आयुर्बन्धविषये सलेश्यवदेव तथाहि ये क्रियावादिनस्ते तु केवलं वैमानिकायुष्कं बध्नन्ति, शेषाः समवसरणत्रयवन्तो जीवाश्चतुर्विधमपि आयुष्कं कुर्वन्ति, 'जहा पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं वत्तव्वया भणिया एवं मणुस्सा वि भाणियव्वा' यथा पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां वक्तव्यताऽनुपदमेव भणिता एवं मनुष्याणामपि वक्तव्यता भणितव्या, क्रियावादि प्रथमसमवसरणे केवलं देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति, अक्रियावादीत्यादि समवसरणत्रये तु चतुर्विधमपि आयुष्प्रकुर्वन्तीति। पञ्चेन्द्रियतिर्यगपेक्षया यद्वैलक्षण्यं तद्दर्शयन्नाह-'णवरं' इत्यादि, 'णवरं मणपज्जवनाणी नो सन्नोवउत्ता य जहा सम्मदिट्ठीतिरिक्खजोणिया तहेव भाणि-

गारोवउत्ता सव्वे जहा सलेस्सा तहेव भाणियव्वा'' बाकी के समस्त जीव अनाकारोपयुक्त पद तक के सलेश्य जीवों के जैसे चारों प्रकार की आयुका बन्ध करते हैं। 'जहा पंचिंदिया तिरिक्खजोणियाणं वत्तव्वया भणिया एवं मणुस्साणं वि भाणियव्वा' जिस प्रकार से पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिकों की यह वक्तव्यता कही गई है उसी प्रकार से मनुष्योंकी भी वक्तव्यता कहनी चाहिये, तथा च-क्रियावादी मनुष्य केवल वैमानिक देवायुका ही बन्ध करते हैं, तथा-अक्रियावादी, अज्ञानिकवादी और वैनयिकवादी मनुष्य चारों प्रकार की आयुका बन्ध करते हैं। परंतु पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिकों की अपेक्षा जो इस मनुष्य सम्बन्धी प्रकरणमें विशेषता है-वह ऐसी है कि-'णवरं मणपज्जनाणी

'सेसा जाव अणागारोवउत्ता सव्वे जहा सलेस्सा तहेव भाणियव्वा' બાકીના સઘળા જીવો અનાકારોપયોગ પદ સુધીના લેશ્યાવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે ચારે પ્રકારના આયુષ્યનો બંધ કરે છે, અહિયાં યાવત્પદથી સંજ્ઞોપયોગવાળાથી લઈને સાકારોપયોગ સુધીના જીવો ગ્રહણ કરાયા છે.

'जहा पचिंदियतिरिक्खजोणियाणं वत्तव्वया भणिया एवं मणुस्सा वि भाणियव्वा' જે પ્રમાણે પંચેન્દ્રિય તિર્યંચયોનિકોના સંબંધમાં આ કથન કરેલ છે. એજ પ્રમાણે મનુષ્યોના સંબંધમાં પણ સમજવું એટલે કે-ક્રિયાવાદી મનુષ્ય કેવળ દેવ આયુનો જ બંધ કરે છે, તથા અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદી, મનુષ્ય ચારે પ્રકારના આયુનો બંધ કરે છે. પરંતુ પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ યોનિકોની અપેક્ષાથી આ મનુષ્ય પ્રકરણમાં જે વિશેષપણું છે, તે એ રીતે છે કે-'णवरं' मणपज्जवणाणी नोसन्नोवउत्ता य जहा सम्मदिट्ठी, तिरिक्ख-

यव्वा' नवरं केवलं मनःपर्यवज्ञानिनः नो संज्ञोपयुक्ताश्च मनुष्या यथा सम्यग्दृष्टि तिर्यग्योनिका स्तथैव भणितव्याः एकं देवायुष्कमेव कुर्वन्तीत्यर्थः । 'अलेस्सा केवलनाणी अवेदगा अकसाई अजोगी य' अलेश्याः सामान्यतो लेश्यारहिताः केवलज्ञानिनः अवेदका अकषायिनोऽयोगिनश्च 'एए न एगंपि आउयं पकरेंति' एते अलेश्यादिकाः सर्वेऽपि न एकमपि आयुष्कं प्रकुर्वन्ति । 'जहा ओहिया जीवा सेसं तहेव' यथा औधिका जीवाः कथिताः शेषम्—कथितव्यतिरिक्तं तथैव सामान्यतो जीवप्रकरणप्रतिपादितमेव ज्ञातव्यमिति । 'वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा असुरकुमारा' वानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिका असुरकुमारवदेव क्रियावादिनः केवलं मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति, अक्रियावादि वानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिका स्त्वय स्तिर्यगायुष्कं मनुष्यायुष्कं च प्रकुर्वन्तीति भावः ॥सू० ३॥

नो सन्नोवउत्ता य जहा सम्मदिट्ठी, तिरिक्खजोणिया तहेव भाणियव्वा' मनःपर्यवज्ञानी और नो संज्ञोपयुक्त मनुष्य सम्यग्दृष्टि तिर्यग्योनिकों के जैसे केवल वैमानिक देवायुका ही बन्ध करते हैं । 'अलेस्सा केवलनाणी अवेदगा अकसाई अजोगीय' सामान्यतः लेश्यारहित, केवलज्ञानी, अवेदक और अकषायी एवं अयोगी 'एए न एगं वि आउयं पकरेंति' ये एक भी आयुकर्मका बन्ध नहीं करते हैं। 'जहा ओहिया जीवा सेसं तहेव' जिस प्रकार से औधिक जीव हैं उसी प्रकार से सामान्यतः जीव प्रकरण में प्रतिपादित शेष कथन जानना चाहिये, 'वाणमंतरजोइसिय वेमाणिया जहा असुरकुमारा' वानव्यन्तर, ज्योतिषिक एवं वैमानिक क्रियावादी अवस्था में असुरकुमारों के जैसे केवल एक मनुष्यायु का ही बन्ध करते हैं। तथा–अक्रियावादी आदि वानव्यन्तरज्योतिषिक एवं वैमानिक ये तीन तिर्यगायु और मनुष्यायु का बन्ध करते हैं ॥३॥

जोणिया तहेव भाणियव्वा' मनःपर्यवज्ञानवाળા અને નો સંજ્ઞોપયુક્ત મનુષ્ય સમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા તિર્યંચ યોનિકોના કથન પ્રમાણે કેવળ એક દેવ આયુનો જ બંધ કરે છે. 'अलेस्सा केवलनाणी अवेदगा अकसाई अयोगीय' સામાન્ય લેશ્યાવિનાના, કેવળજ્ઞાની, અવેદક અને કષાય વિનાના અને અયોગી 'एए न एगं पि आउयं पकरेंति' આ બધા એક પણ આયુકર્મનો બંધ કરતા નથી. 'जहा ओहिया जीवा सेसं तहेव' જે પ્રમાણે ઔધિક જીવના સંબંધમાં કથન કર્યું છે. એજ પ્રમાણે સામાન્ય રીતે જીવ પ્રકરણમા પ્રતિપાદન કરેલ બાકીનું કથન સમજવું. 'वानमंतरजोइसियवेमाणिया जहा असुरकुमारा' વાનવ્યન્તર, જ્યોતિષ્ક અને વૈમાનિક ક્રિયાવાદી અવસ્થામાં અસુરકુમારોના કથન પ્રમાણે કેવળ એક મનુષ્ય આયુનો જ બંધ કરે છે. તથા અક્રિયાવાદી, વાનવ્યન્તર, જ્યોતિષ્ક અને વૈમાનિક આ ત્રણે તિર્યંચ આયુ અને મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે ॥સૂ.૩॥

मूलम्-किरियावाई णं भंते! जीवा किं भवसिद्धिया अभवसिद्धिया? गोयमा! भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया। अकिरियावाई णं भंते! जीवा किं भवसिद्धिया पुच्छा गोयमा! भवसिद्धिया वि अभवसिद्धिया वि। एवं अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि। सलेस्सा णं भंते! जीवा किरियावाई किं भवसिद्धिया पुच्छा, गोयमा! भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया। सलेस्सा णं भंते! जीवा अकिरियावाई? किं भवसिद्धिया पुच्छा गोयमा! भवसिद्धिया वि अभवसिद्धिगा वि। एवं अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि जहा सलेस्सा। एवं जाव सुक्कलेस्सा। अलेस्सा णं भंते! जीवा किरियावाई किं भवसिद्धिया पुच्छा गोयमा! भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया। एवं एएणं अभिलावेणं कण्हपक्खिया तिसु वि समोसरणेसु भयणाए। सुक्कपक्खिया चउसु वि समोसरणेसु भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया। सम्मद्दिट्ठी जहा अलेस्सा। मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया। सम्मामिच्छादिट्ठी दोसु वि समोसरणेसु जहा अलेस्सा। नाणी जाव केवलनाणी भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया। अन्नाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया। सन्नासु चउसु वि जहा सलेस्सा, नो सन्नोवउत्ता जहा सम्मद्दिट्ठी, सवेयगा जाव नपुंसगवेयगा जहा सलेस्सा। अवेदगा जहा सम्मद्दिट्ठी, सकसाई जाव लोभकसाई जहा सलेस्सा अकसाई जहा सम्मदिट्ठी सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा, अजोगी जहा सम्मदिट्ठी, सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता जहा सलेस्सा। एवं नेरइया वि भाणियव्वा। नवरं नायव्वं जं अत्थि। एवं असुरकुमारा वि जाव थणियकुमारा पुढवीकाइया सव्वट्ठाणेसु वि

मज्झिल्लेसु दोसु वि समोसरणेसु भवसिद्धिया वि अभवसिद्धिया वि। एवं जाव वणस्सइकाइया बेइंदियतेइंदियचउरिंदिया एवं चेव। नवरं सम्मत्ते ओहियनाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे एएसु चेव दोसु मज्झिमेसु समोसरणेसु भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया। सेसं तं चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया नवरं नायव्वं जं अत्थि। मणुस्सा जहा ओहिया जीवा, वाणमंतरजोइसिय वेमाणिया जहा असुरकुमारा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥सू० ४॥

तीसइमे सए पढमो उद्देसो समत्तो ॥३०-१॥

छाया—क्रियावादिनः खलु भदन्त! जीवाः किं भवसिद्धिका अभवसिद्धिकाः? गौतम! भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिकाः। अक्रियावादिनः खलु भदन्त! जीवाः किं भवसिद्धिकाः पृच्छा, गौतम! भवसिद्धिका अपि अभवसिद्धिका अपि। एवमज्ञानिकवादिनोऽपि वैनयिकवादिनोऽपि। सलेश्याः खलु भदन्त! जीवाः क्रियावादिनः किं भवसिद्धिका पृच्छा, गौतम! भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिकाः। सलेश्याः खलु भदन्त! जीवा अक्रियावादिनः किं भवसिद्धिका पृच्छा, गौतम! भवसिद्धिका अपि अभवसिद्धिका अपि। एवमज्ञानिकवादिनोऽपि वैनयिकवादिनोऽपि यथा सलेश्याः। एवं यावत् शुक्ललेश्याः। अलेश्याः खलु भदन्त! जीवाः क्रियावादिनः किं भवसिद्धिकाः पृच्छा, गौतम! भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिकाः। एवमेतेनाभिलापेन कृष्णपाक्षिका त्रिष्वपि समवसरणेषु भजनया। शुक्लपाक्षिका चतुर्ष्वपि समवसरणेषु भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिकाः। सम्यग्दृष्टयो यथा अलेश्याः। मिथ्यादृष्टयो यथा कृष्णपाक्षिकाः। सम्यग्मिथ्यादृष्टयो द्वयोरपि समवसरणयो यथा अलेश्याः। ज्ञानिनो यावत् केवलज्ञानिनो भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिकाः। अज्ञानिनो यावद्विभङ्गज्ञानिनो यथा कृष्णपाक्षिकाः। संज्ञासु चतसृष्वपि यथा सलेश्याः। नो संज्ञोपयुक्ता यथा सम्यग्दृष्टयः। सवेदका यावन्नपुंसकवेदका यथा सलेश्याः। अवेदका यथा सम्यग्दृष्टयः, सकषायिनो यावल्लोभकषायिनो यथा सलेश्याः। अकषायिनो यथा सम्यग्दृष्टयः। सयोगिनो यावत् काययोगिनो यथा सलेश्याः। अयोगिनो यथा सम्यग्दृष्टयः। साकारोपयुक्ता अनाकारोपयुक्ताः यथा सलेश्याः। एवं नैरयिका अपि भणितव्याः, नवरं ज्ञातव्यं यदस्ति। एवमसुरकुमारा अपि यावत् स्तनितकुमाराः। पृथिवीकायिकाः

सर्वस्थानेष्वपि मध्यमयो द्वयोरपि समवसरणयो भवसिद्धिका अपि अभवसिद्धिका अपि। एवं यावद् वनस्पतिकायिकाः। द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रिया एवमेव नवरं सम्यक्त्वे औघिकज्ञाने आभिनिबोधिकज्ञाने श्रुतज्ञाने एतयोरेव द्वयोर्मध्यमयोः समवसरणयो भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिकाः। शेषं तदेव। पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका यथा नैरयिकाः, नवरं ज्ञातव्यं यदस्ति। मनुष्या यथा औघिका जीवाः। वानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिका यथा असुरकुमाराः। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥सू० ४॥

त्रिंशत्तमे शतके प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥३०-१॥

टीका—'किरियावाई णं भंते! जीवा' क्रियावादिनः खलु भदन्त! जीवाः 'किं भवसिद्धिया अभवसिद्धिया' किं भवसिद्धिकाः तस्मिन्नेव भवे सिद्धिगमनयोग्या अथवा अभवसिद्धिका भवन्तीति प्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया' भवसिद्धिकाः क्रियावादिनो भवन्ति नो—न तु अभवसिद्धिका भवन्ति ये ते क्रियावादिनस्ते तस्मिन्नेव भवे मोक्षमासादयन्ति न तु अभवसिद्धिका भवन्तीति उत्तरम्। 'अकिरियावाई णं भंते! जीवा' अक्रियावादिनः खलु भदन्त! जीवाः 'किं भवसिद्धिया पुच्छा'

'किरियावाई णं भंते! जीवा किं भवसिद्धिया अभवसिद्धिया'-इ०

टीकार्थ—'किरियावाई णं भंते! जीवा किं भवसिद्धिया अभवसिद्धिया' हे भदन्त! क्रियावादी जीव क्या भवसिद्धिक होते हैं? या अभवसिद्धिक होते हैं? जिन में उसी भव में सिद्धिगति में जाने की क्षमता है वे भवसिद्धिक और इन से विपरीत जो हैं वे अभवसिद्धिक हैं। उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—'गोयमा! भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया' हे गौतम! क्रियावादी जीव भवसिद्धिक होते हैं अभवसिद्धिक नहीं होते हैं। 'अकिरियावाई णं भंते! जीवा किं भवसिद्धिया पुच्छा' हे

'किरियावाई णं भंते! जीवा किं भवसिद्धिया अभवसिद्धिया' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—'किरियावाईणं भंते जीवा किं भवसिद्धिया अभवसिद्धिया' હે ભગવન્ ક્રિયાવાદી જીવો શું ભવસિદ્ધિક હોય છે? કે અભવસિદ્ધિક હોય છે? જેઓ એજ ભવમાં સિદ્ધિ ગતિમાં જવાના હોય તે ભવસિદ્ધિક કહેવાય છે. તે શિવાયના અભવસિદ્ધિક કહેવાય છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'गोयमा! भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया' હે ગૌતમ! ક્રિયાવાદી જીવ ભવસિદ્ધિક હોય છે અભવસિદ્ધિક હોતા નથી.

'अकिरियावाई णं भंते! जीवा किं भवसिद्धिया अभवसिद्धिया पुच्छा' હે ભગવન્ જે જીવો અક્રિયાવાદી છે, તેઓ ભવસિદ્ધિક હોય છે? કે અભવસિદ્ધિક

किं भवसिद्धिका अभवसिद्धिका वा भवन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'भवसिद्धिया वि अभवसिद्धिया वि' अक्रियावादिनो 'भवसिद्धिका अपि अभवसिद्धिका अपि भवन्तीति। 'एवं अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि' एवम् अक्रियावादिवदेव अज्ञानिकवादिनोऽपि वैनयिकवादिनोऽपि भवसिद्धिका अपि भवन्ति अभवसिद्धिका अपि भवन्तीति भावः। 'सलेस्सा णं भंते! जीवा किरियावाई' सलेश्याः खलु भदन्त! जीवाः क्रियावादिनः, 'किं भवसिद्धिया पुच्छा,' किं भवसिद्धिका अभवसिद्धिका वेति प्रश्नः, पृच्छया संगृह्यते। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया' भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिका भवन्ति सलेश्याः क्रियावादिनो जीवा इति। 'सलेस्सा णं भंते! जीवा अकिरियावाई किं भवसिद्धिया अभ-

भदन्त! जो अक्रियावादी जीव हैं वे क्या भवसिद्धिक होते हैं या अभवसिद्धिक होते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं 'गोयमा! भवसिद्धिया वि अभवसिद्धिया वि' हे गौतम! अक्रियावादि जीव भवसिद्धिक भी होते हैं और अभवसिद्धिक भी होते हैं। 'एवं अन्नाणियवाइ वि वेणइयवाई वि' इसी प्रकार से अज्ञानिकवादी भी भवसिद्धिक और अभवसिद्धिक दोनों प्रकारके होते हैं इसी प्रकार के वैनयिकवादी भी होते हैं। 'सलेस्सा णं भंते! जीवा किरियावाई' हे भदन्त! सलेश्य क्रियावादी जीव क्या भवसिद्धिक होते हैं? या अभवसिद्धिक होते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया' हे गौतम! भवसिद्धिक होते हैं अभवसिद्धिक नहीं होते हैं। 'सलेस्सा णं भंते! जीवा अकिरियावाई किं भवसिद्धिया पुच्छा' हे भदन्त! अक्रियावादी सलेश्य जीव क्या भवसिद्धिक

હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-ગોયમા! भवसिद्धिया वि अभवसिद्धिया वि' હે ગૌતમ અક્રિયાવાદી જીવ ભવસિદ્ધિ પણ હોય છે, અને અભવસિદ્ધિક પણ હોય છે. 'एवं अन्नाणियवाई वि, वेणइयवाई वि' આજ પ્રમાણે અજ્ઞાનવાદી પણ ભવસિદ્ધિક અને અભવસિદ્ધિક બન્ને પ્રકારના હોય છે. વૈનયિકવાદી પણ એજ પ્રમાણે બન્ને પ્રકારના હોય છે 'सलेस्सा णं भंते! जीवा किरियावाई' હે ભગવન્ લેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી જીવો શું ભવસિદ્ધિક હોય છે? કે અભવસિદ્ધિક હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा! भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया' હે ગૌતમ! લેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી જીવો ભવસિદ્ધિક હોય છે, અભવસિદ્ધિક હોતા નથી. 'सलेस्सा णं भंते! जीवा अकिरियावाई किं भवसिद्धिया पुच्छा' હે ભગવન્ અક્રિયાવાદી લેશ્યાવાળા જીવો શું ભવસિદ્ધિક હોય છે? કે અભવસિદ્ધિક હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે

वसिद्धिया' पुच्छा सलेश्याः खलु भदन्त ! अक्रियावादिनो जीवाः किं भवसिद्धिका अभवसिद्धिका भवन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते। भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'भवसिद्धिया वि अभवसिद्धिया वि' सलेश्याः अक्रियावादिनो जीवाः भवसिद्धिका अपि भवन्ति अभवसिद्धिका वा भवन्तीति। 'एवं अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि' एवं सलेश्याऽ क्रियावादि जीववदेव अज्ञानिकवादिनोऽपि वैनयिकवादिनोऽपि भवसिद्धिका अपि भवन्ति अभवसिद्धिका अपि भवन्ति। 'एवं जाव सुक्कलेस्सा' यथा सलेश्याः क्रियावादिनोऽक्रियावादिनश्च कथिता स्तथैव यावत् शुक्ललेश्याः, अत्र यावत्पदेन कृष्णनीलकापोततेजः पद्मलेश्यानां संग्रहो भवतीति तथाच कृष्णलेश्यात आरभ्य शुक्ललेश्यापर्यन्ताः क्रियावादिनो जीवा भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिका भवन्ति तथा अक्रियावादिनः कृष्णलेश्यात् आरभ्य शुक्ललेश्यान्ताः सर्वेऽपि जीवा भवसिद्धिकाश्च भवन्ति अभवसिद्धिकाश्चापि भवन्तीति भावः। 'अलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावाई किं भवसिद्धिया पुच्छा' अलेश्याः सामान्यतो लेश्यारहिताः खलु भदन्त ! जीवाः क्रियावादिनः किं भवसि-

होते हैं या अभवसिद्धिक होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं- 'गोयमा ! भवसिद्धिया वि अभवसिद्धिया वि' हे गौतम ! अक्रियावादी सलेश्य जीव भवसिद्धिक भी होते हैं और अभवसिद्धिक भी होते हैं। 'एवं अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि' इसी प्रकार से अज्ञानवादी जीव भी और वैनयिकवादी जीव भी भवसिद्धिक और अभवसिद्धिक दोनों प्रकार के होते हैं। 'एवं जाव सुक्कलेस्सा' कृष्णलेश्या से लेकर शुक्ललेश्यावाले क्रियावादी जीव भवसिद्धिक ही होते हैं अभवसिद्धिक नहीं होते हैं। और कृष्णलेश्या से लेकर शुक्ललेश्या तक के अक्रियावादी आदि जीव भवसिद्धिक और अभवसिद्धिक दोनों प्रकार के

છે-'गोयमा ! भवसिद्धिया वि अभवसिद्धिया वि' હે ગૌતમ ! અક્રિયાવાદી લેશ્યાવાળા જીવો ભવસિદ્ધિક પણ હોય છે અને અભવસિદ્ધિક પણ હોય છે. 'एवं अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि' આજ પ્રમાણે અજ્ઞાનવાદી જીવ અને વૈનયિકવાદી જીવ પણ ભવસિદ્ધિક અને અભવસિદ્ધિક એમ બન્ને પ્રકારના હોય છે. 'एवं जाव सुक्कलेस्सा' કૃષ્ણલેશ્યાથી લઈને શુકલ લેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી જીવ ભવસિદ્ધિક જ હોય છે. અભવસિદ્ધિક હોતા નથી. તથા કૃષ્ણલેશ્યાથી લઈને શુકલ લેશ્યા સુધીના અક્રિયાવાદી જીવ ભવસિદ્ધિક અને અભવસિદ્ધિક બન્ને પ્રકારના હોય છે. 'अलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावाई किं भवसिद्धिया पुच्छा' હે ભગવન્ ક્રિયાવાદી અલેશ્ય જીવો શું ભવસિદ્ધિક હોય છે ? અથવા

द्धिका भवन्ति अभवसिद्धिका वा भवन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते । भगवानाह 'गोयमा' इत्यादि, गोयमा' हे गौतम ! 'भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया' अलेश्याः क्रियावादिनो जीवाः भवसिद्धिका एव भवन्ति न तु अभवसिद्धिका भवन्तीत्युत्तरम् । 'एवं एएणं अभिलावेणं कण्हपक्खिया तिसु वि समोसरणेसु भयणाए' एवमनेन अभिलापेन पूर्वोदितप्रकारेण कृष्णपाक्षिका जीवा स्त्रिष्वपि द्वितीयतृतीयचतुर्थेषु अक्रियावाद्यज्ञानिकवादी–वैनयिकवादी रूपेषु समवसरणेषु भजनया–विकल्पेनेति भवसिद्धिका अपि अभवसिद्धिका अपि ज्ञातव्या इति । 'सुक्कपक्खिया चउसु वि समोसरणेसु भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया' शुक्लपाक्षिका जीवाः चतुर्ष्वपि प्रथमद्वितीयतृतीयचतुर्थेषु समवसरणेषु क्रियावाद्यक्रियावाद्यज्ञानिवादि वैनयिकवादि रूपेषु भवसिद्धिका एव भवन्ति, नो–न तु कथमपि अभवसिद्धिका भवन्तीति । 'सम्मदिट्ठी जहा अलेस्सा, सम्यग्दृष्टयो जीवा यथा अलेश्यजीवाः

होते हैं । 'अलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावाई किं भवसिद्धिया पुच्छा' हे भदन्त ! क्रियावादि अलेश्य जीव क्या भवसिद्धिक होते हैं या अभवसिद्धिक होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं–'गोयमा ! भवसिद्धिया, नो अभवसिद्धिया' हे गौतम ! अलेश्य क्रियावादी जीव भवसिद्धिक ही होते हैं अभवसिद्धिक नहीं होते हैं । 'एवं एएणं अभिलावेणं कण्हपक्खिया तिसु वि समोसरणेसु भयणाए' इस प्रकार अभिलापद्वारा कृष्णपाक्षिक जीव अक्रियावादी अज्ञानिकवादी और वैनयिकवादी रूप तीनों समवसरणों में भवसिद्धिक भी होते हैं और अभवसिद्धिक भी होते हैं । 'सुक्कपक्खिया चउसु वि समवसरणेसु भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया' शुक्लपाक्षिक चारों समोसरणों में भवसिद्धिक ही होते हैं अभवसिद्धिक नहीं होते हैं 'सम्मदिट्ठी जहा अलेस्सा'

અભવસિદ્ધિક હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે. કે–'गोयमा ! भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया' હે ગૌતમ ! લેશ્યા વિનાના ક્રિયાવાદી જીવો ભવસિદ્ધિક જ હોય છે. અભવસિદ્ધિક હોતા નથી 'एवं एएणं अभिलावेणं कण्हपक्खिया तिसु वि समोसरणेसु भयणाए' આ પ્રમાણે આ અભિલાપથી કૃષ્ણપાક્ષિક જીવો અક્રિયાવાદી અજ્ઞાનવાદી, અને વૈનયિકવાદી અવસ્થાઓમાં ભવસિદ્ધિક જ હોય છે. અભવસિદ્ધિક હોતા નથી. 'सुक्कपक्खिया चउसु वि समोसरणेसु भवसिद्धिया' શુકલપાક્ષિક જીવ ચારે સમવસરણોમાં ભવસિદ્ધિક હોય છે. અભવસિદ્ધિક હોતા નથી 'सम्मादिट्ठी जहा अलेस्सा' અલેશ્ય જીવોના સંબંધમાં જે પ્રમાણે કથન કરવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે સમ્યગ્દષ્ટિવાળા

कथिता स्तथैव भवसिद्धिका एव न तु अभवसिद्धिका भवन्तीति। 'मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया' मिथ्यादृष्टयो यथा कृष्णपाक्षिकाः कृष्णपाक्षिकवदेव मिथ्यादृष्टयोऽक्रियावादीत्यादि समवसरणत्रये विकल्पेन भवसिद्धिका अभवसिद्धिका अपि भवन्तीति ज्ञातव्यम्। 'सम्मामिच्छादिट्ठी दोसु वि समोसरणेसु जहा अलेस्सा' सम्यग्मिथ्यादृष्टयो मिश्रदृष्टयः द्वयोरपि तृतीयचतुर्थयोरज्ञानिकवादि वैनयिकवादि समवसरणयोरलेश्यवदेव भवसिद्धिका भवन्तीति ज्ञातव्यम्। 'णाणी जाव केवलनाणी भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया' ज्ञानिनो यावत्केवलज्ञानिनश्च भवसिद्धिकाः, अत्र यावत्पदेन मतिश्रुतावधिमनःपर्यवज्ञानिनां संग्रहो भवति तथा च ज्ञानित आरभ्य केवलज्ञानिपर्यन्ताः सर्वेऽपि भवसिद्धिका एव भवन्ति न तु

जिस प्रकार से अलेश्य जीव कहे गये हैं उसी प्रकार से सम्यग्दृष्टि जीव भी भवसिद्धिक ही होते हैं अभवसिद्धिक नहीं होते हैं। 'मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया' मिथ्यादृष्टि जीव भी कृष्णपाक्षिकों के जैसे अक्रियावादी, अज्ञानिकवादी और वैनयिकवादी अवस्था में भवसिद्धिक भी होते हैं और अभवसिद्धिक भी होते हैं। 'सम्मामिच्छादिट्ठी दोसु वि समोसरणेसु जहा अलेस्सा' अलेश्य जीवों के जैसे मिश्रदृष्टि जीव दो समवसरण अवस्था में-अज्ञानिकवादी और वैनयिकवादी स्थिति में-भवसिद्धिक होते हैं ऐसा जानना चाहिये 'णाणी जाव केवलनाणी भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया' ज्ञानी यावत् केवलज्ञानी जीव भवसिद्धिक ही होते हैं, अभवसिद्धिक नहीं होते हैं। यहां यावत् पद से मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी और मनःपर्यवज्ञानी-

---

જીવો પણ ભવસિદ્ધિક જ હોય છે. અભવસિદ્ધિક હોતા નથી. 'मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया' મિથ્યાદૃષ્ટિવાળા જીવ કૃષ્ણપાક્ષિક જીવના કથન પ્રમાણે અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી, અને વૈનયિકવાદી અવસ્થામાં ભવસિદ્ધિક પણ હોય છે. અને અભવસિદ્ધિક પણ હોય છે. 'सम्मामिच्छादिट्ठी दोसु वि समोसरणेसु जहा अलेस्सा' લેશ્યા વિનાના જીવોના કથન પ્રમાણે મિશ્રદૃષ્ટિવાળા જીવો બે સમવસરણની અવસ્થામાં-એટલે કે અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદીપણાની અવસ્થામાં ભવસિદ્ધિક હોય છે તેમ સમજવું.

'णाणी जाव केवलनाणी भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया' જ્ઞાની યાવત્ કેવળજ્ઞાની જીવો ભવસિદ્ધિક જ હોય છે. અભવસિદ્ધિક હોતા નથી અહિયાં યાવત્પદથી મતિજ્ઞાનવાળા શ્રુતજ્ઞાનવાળા અવધિજ્ઞાનવાળા અને મનઃપર્યવજ્ઞાન

भवसिद्धिका इति भावः। 'अन्नाणी जाव विभङ्गनाणी जहा कण्हपक्खिया' अज्ञानिनो यावद्विभङ्गज्ञानिनो यथा कृष्णपाक्षिकाः, अत्र यावत्पदेन मत्यज्ञानि श्रुताज्ञानिनः संग्रहो भवति तथाचाज्ञानित आरभ्य विभङ्गज्ञानिपर्यन्ताः सर्वेऽपि कृष्णपाक्षिकवदेव अक्रियावादित आरभ्य समवसरणत्रयेषु भवसिद्धिका अपि अभवसिद्धिका अपीति। 'सन्नासु चउसु वि जहा सलेस्सा' संज्ञासु आहारादि परिग्रहान्तासु चतसृष्वपि यथा सलेश्याः सलेश्यवदेव चतुर्ष्वपि आहारादि संज्ञावत्सु क्रियावादिनः भवसिद्धिकाः न तु अभवसिद्धिका अक्रियावादिन स्त्रिषु समवसरणेषु भवसिद्धिका अपि अभवसिद्धिका अपीति। 'नो सन्नोवउत्ता जहा सम्मदिट्ठी' नो संज्ञोपयुक्ता जीवा यथा सम्यग्दृष्टयः सम्यग्दृष्टिवदेव क्रियावादिनो

इनका ग्रहण हुआ है। तथाच-ज्ञानी से लेकर केवलज्ञानी तक सब जीव भवसिद्धिक ही होते हैं अभवसिद्धिक नहीं होते हैं। 'अन्नाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया' यावत्पद ग्रहीत मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी तथा अज्ञानी एवं विभंगज्ञानी ये सब कृष्णपाक्षिक के जैसे अक्रियावादी, अज्ञानिकवादी एवं वैनयिकवादी की हालत में भवसिद्धिक भी होते हैं और अभवसिद्धिक भी होते हैं। 'सन्नासु चउसु वि जहा सलेस्सा' आहार संज्ञा से लेकर परिग्रह संज्ञा तक की चार संज्ञाओं में भी सलेश्य जीवों के जैसे जीव क्रियावादी अवस्था में भवसिद्धिक ही होते हैं अभवसिद्धिक नहीं होते। तथा अक्रियावादी एवं अज्ञानवादी तथा वैनयिकवादी अवस्था में ये सब भवसिद्धिक भी होते हैं और अभवसिद्धिक भी होते हैं। 'नो सन्नोवउत्ता जहा

વાળા જીવો ગ્રહણ કરાયા છે. તથા જ્ઞાનીથી લઇને કેવળજ્ઞાની સુધીના સઘળા જીવો ભવસિદ્ધિક જ હોય છે, અભવસિદ્ધિક હોતા નથી. 'अन्नाणी जाव विभंगनाणी जाव कण्हपक्खिया' અહિયાં સૂત્રમાં આવેલ અજ્ઞાની યાવત્પદથી મતિઅજ્ઞાનવાળા શ્રુતઅજ્ઞાનવાળા તથા વિભંગજ્ઞાની એ બધા કૃષ્ણપાક્ષિક જીવના કથન પ્રમાણે અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદીપણામાં ભવસિદ્ધિક હોય છે, અભવસિદ્ધિક હોતા નથી.

'सन्नासु चउसु वि जहा सलेस्सा' આહાર સંજ્ઞાથી લઇને પરિગ્રહ સંજ્ઞા સુધીની ચારે સંજ્ઞાઓમાં લેશ્યાવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે જીવ ક્રિયાવાદીપણામાં ભવસિદ્ધિક જ હોય છે, અભવસિદ્ધિક હોતા નથી. તથા અક્રિયાવાદી અને અજ્ઞાનવાદી તથા વૈનયિકવાદી અવસ્થામાં આ બધા ભવસિદ્ધિક પણ હોય છે. અને અભવસિદ્ધિક પણ હોય છે. 'नो सन्नोवउत्ता जहा सम्मदिट्ठी'

नो संज्ञोपयुक्ता जीवा भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिका भवन्तीति भावः। 'सवेदगा जाव नपुंसगवेदगा जहा सलेस्सा' सवेदका यावत् नपुंसकवेदकाः यथा सलेश्याः अत्र यावत्पदेन स्त्रीपुरुषवेदकयोः संग्रहः तथा च सवेदकादारभ्य नपुंसकवेदकान्ताः सर्वेऽपि सलेश्यवदेव क्रियावादिनो भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिकाः, अक्रियावादि प्रभृतयस्तु भवसिद्धिका अपि अभवसिद्धिका अपि भवन्तीति भावः। 'अवेयगा जहा सम्मदिट्ठी' अवेदका यथा सम्यग्दृष्टयः सम्यग्दृष्टिवदेव सामान्यतो वेदरहिताः क्रियावादिनो भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिका भवन्तीति। 'सकसाई जाव लोभकसाई जहा सलेस्सा' सकषायिनो यावत् लोभकषायिनो

सम्मदिट्ठि' नो संज्ञोपयुक्त जीव सम्यग्दृष्टि के जैसे क्रियावादी अवस्था होने से भवसिद्धिक होते हैं, अभवसिद्धिक नहीं होते हैं। 'सवेदगा जाव नपुंसगवेदगा जहा सलेस्सा' सवेदक से लेकर नपुंसक वेद तक समस्त जीव सलेश्य जीवों के जैसे क्रियावादी अवस्था में भवसिद्धिक होते है अभवसिद्धिक नहीं होते हैं। यहां यावत्पद से स्त्री वेदकों और पुरुषवेदकों का ग्रहण हुआ है। तथा अक्रियावादी अज्ञानिकवादी और वैनयिकवादी अवस्था में ये सब भवसिद्धिक भी होते हैं और अभवसिद्धिक भी होते हैं। 'अवेयगा जहा सम्मदिट्ठी' अवेदक सम्यग्दृष्टि के जैसे ही क्रियावादी होने से भवसिद्धिक होते हैं अभवसिद्धिक नहीं होते हैं। 'सकसाई जाव लोभकसाई जहा सलेस्सा' सकषायी यावत् लोभकषायी जीव सलेश्य जीवों के जैसे ही क्रियावादी अवस्था में भवसिद्धिक होते हैं अभवसिद्धिक नहीं होते हैं। यहां

નો સંજ્ઞોપયોગવાળા જીવો સમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે ક્રિયાવાદી અવસ્થામાં ભવસિદ્ધિક હોય છે. અભવસિદ્ધિક હોતા નથી 'सवेदगा जाव नपुंसगवेदगा जहा सलेस्सा' વેદવાળા સવેદક જીવોથી લઈને નપુંસકવેદ સુધીના સઘળા જીવો લેશ્યાવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે ક્રિયાવાદી અવસ્થામાં ભવસિદ્ધિક હોય છે અભવસિદ્ધિક હોતા નથી. અહિયાં યાવત્પદથી સ્ત્રીવેદવાળા અને પુરૂષવેદવાળા ગ્રહણ કરાયા છે તથા અક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી, અને વૈનયિકવાદી અવસ્થામાં આ બધા ભવસિદ્ધિક પણ હોય છે, અને અભવસિદ્ધિક પણ હોય છે. 'अवेयगा जाव सम्मदिट्ठि' અવેદક જીવ સમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા જીવના કથન પ્રમાણે ક્રિયાવાદી અવસ્થામાં ભવસિદ્ધિક હોય છે. અભવસિદ્ધિક હોતા નથી 'सकसाई जाव लोभकसाई जहा सलेस्सा' સકષાયી યાવત્ લોભકષાયવાળા જીવો લેશ્યાવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે ક્રિયાવાદી અવસ્થામાં ભવસિદ્ધિક હોય છે.

यथा सलेश्याः यावत्पदेन क्रोधमानमायाकषायिनां संग्रहः तथाचैते सर्वेऽपि सलेश्यवदेव क्रियावादिनो भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिका अक्रियादि समवसरणत्रयवन्तस्तु भवसिद्धिका अपि अभवसिद्धिका अपि भवन्तीति। 'अकसाई जहा सम्मदिट्ठी' अकषायिनो यथा सम्यग्दृष्टयः सम्यग्दृष्टिवदेव भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिका भवन्तीति भावः। 'सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा' सयोगिनो यावत् काययोगिनश्च यथा सलेश्याः, यावत्पदेन मनोयोगिनो वचोयोगिनश्च संग्रहः तथा च सयोगित आरभ्य काययोगिपर्यन्ताः सर्वेऽपि सलेश्यवदेव क्रियावादिनो भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिका अक्रियावादि प्रभृतय स्त्रयेऽपि भवसिद्धिका अपि अभवसिद्धिका अपि भवन्तीति भावः। 'अजोगी जहा सम्मदिट्ठी' अयोगिनो यथा सम्यग्दृष्टयः सम्यग्दृष्टि वद् अयोगिनो भवसिद्धिका

यावत् शब्द से क्रोध, मान, माया कषायवालों का ग्रहण हुआ है। तथा-अक्रियावादी, अज्ञानिकवादी एवं वैनयिकवादी अवस्था में ये सब भवसिद्धिक ही होते हैं, अभवसिद्धिक नहीं होते हैं। 'अकसाई जहा सम्मदिट्ठी' अकषायवाले जीव सम्यग्दृष्टि जीवों के जैसे भवसिद्धिक ही होते हैं अभवसिद्धिक नहीं होते हैं। 'सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा' सयोगी यावत् काययोगी सलेश्य जीवों के जैसे क्रियावादी अवस्था में भवसिद्धिक ही होते हैं अभवसिद्धिक नहीं होते हैं। यहां यावत्पद से 'मनोयोगी और वचोयोगी' इनका ग्रहण हुआ है। तथा ये सयोगी से लेकर यावत् काययोगी तक के समस्त जीव अक्रियावादी अवस्था में अज्ञानिकवादी अवस्था में भवसिद्धिक भी होते हैं और अभवसिद्धिक भी होते हैं। 'अजोगी जहा

અભવસિદ્ધિક હોતા નથી. અહિયાં યાવત્પદથી ક્રોધ, માન, માયા, એ કષાયો વાળાઓ ગ્રહણ કરાયા છે. તથા ક્રિયવાદી, અજ્ઞાનવાદી, અને વૈનયિકવાદી અવસ્થામાં આ બધા ભવસિદ્ધિક જ હોય છે. અભવસિદ્ધિક હોતા નથી 'अकसाई जहा सम्मदिट्ठि' અકષાયવાળા જીવો સમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે ભવસિદ્ધિક જ હોય છે. અભવસિદ્ધિક હોતા નથી 'सजोगी कायजोगी जहा सलेस्सा' સયોગી યાવત્કાયયોગવાળા સલેશ્ય જીવોના કથન પ્રમાણે ક્રિયાવાદી અવસ્થામાં ભવસિદ્ધિક જ હોય છે અભવસિદ્ધિક હોતા નથી અહિયાં યાવત્પદથી મનોયોગવાળા, અને વચન યોગવાળા ગ્રહણ કરાયા છે. તથા આ સયોગીથી લઇને કાયયોગવાળા સુધીના સઘળા જીવો અક્રિયાવાદી અવસ્થામાં અજ્ઞાનવાદી અવસ્થામાં અને વૈનયિકવાદી અવસ્થામાં ભવસિદ્ધિક પણ હોય છે, અને અભવસિદ્ધિક પણ હોય છે.

एव न तु अभवसिद्धिका भवन्तीति भावः। 'सागारोवउत्ता अनागारोवउत्ता जहा सलेस्सा' साकारोपयुक्ता स्तथा अनाकारोपयुक्ता जीवाः सलेश्य जीववदेव क्रियावादिनो भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिकाः, अक्रियावादी प्रभृतयस्त्रयोऽपि भवसिद्धिका अपि अभवसिद्धिका अपि भवन्तीति भावः। 'एवं नेरइया वि भाणियव्वा' एवं सामान्यतो जीववदेव नैरयिका अपि जीवा लेश्यादिभि द्वारैः भवसिद्धिकाऽभवसिद्धिकादिरूपेण भणितव्याः। 'नवरं नायव्वं जं अत्थि' नवरं केवलं सामान्य जीवप्रकरणापेक्षया इदं वैलक्षण्यं यत् यत् लेश्यादिकं द्वारजातं नारकस्य विद्यते तदेव द्वारजातमाश्रित्य भवसिद्धिकत्वादि विचारणीयमिति। 'एवं असुरकुमारा वि जाव थणियकुमारा' एवं नारकदण्डकवदेव असुरकुमारादारभ्य स्तनितकुमार-

---

सम्मदिट्ठी' सम्यक्दृष्टि जीवों के जैसे अयोगी जीव भवसिद्धिक होते हैं अभवसिद्धिक नहीं होते हैं। 'सागारोवउत्ता अनागारोवउत्ता जहा सलेस्सा 'साकारोपयुक्त तथा अनाकारोपयुक्त जीव सलेश्य जीवों के जैसे क्रियावादी अवस्था में भवसिद्धिक होते हैं अभवसिद्धिक नहीं होते हैं। तथा ये ही अक्रियावादी, अज्ञानिकवादि और वैनयिकवादी अवस्था में भवसिद्धिक भी होते हैं और अभवसिद्धिक भी होते हैं। 'एवं नेरइया वि भाणियव्वा' सामान्य जीव के जैसे ही नैरयिक भी लेश्यादि द्वारों को लेकर भवसिद्धिक और अभवसिद्धिक रूप से कहना चाहिये। 'नवरं नायव्वं जं अत्थि' परन्तु सामान्य जीव प्रकरण की अपेक्षा से विशेषता केवल इतनी सी ही है कि जो लेश्यादिक द्वार नारक के हो उसी द्वार को लेकर भवसिद्धिक आदिका विचार करना चाहिये 'एवं असुरकुमारा वि जाव थणियकुमारा' नारक दण्डक के जैसे ही

'अजोगी जहा सम्मदिट्ठी' सम्यग्दृष्टिवाળા જીવના કથન પ્રમાણે અયોગી જીવો ભવસિદ્ધિક જ હોય છે. અભવસિદ્ધિક હોતા નથી. 'सागारोवउत्ता अनागारोवउत्ता जहा सलेस्सा' સાકારોપયોગવાળા અને અનાકારોપયોગવાળા જીવો લેશ્યાવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે ક્રિયાવાદી અવસ્થામાં ભવસિદ્ધિક જ હોય છે, અભવસિદ્ધિક હોતા નથી. તથા આ ક્રિયાવાદી, અજ્ઞાનવાદી અને વૈનયિકવાદી અવસ્થામાં ભવસિદ્ધિક પણ હોય છે, અને અભવસિદ્ધિક પણ હોય છે. 'एवं नेरइया वि भाणियव्वा' સામાન્ય જીવના કથન પ્રમાણે નૈરયિકો પણ લેશ્યા વિગેરે દ્વારોને લઈને ભવસિદ્ધિક અને અભવસિદ્ધિક જ હોય છે. તેમ સમજવું 'नवरं नायव्वं जं अत्थि' પરંતુ સામાન્ય જીવ પ્રકરણની અપેક્ષાથી કેવળ એજ વિશેષપણુ છે કે-નારકના જે લેશ્યા વિગેરે દ્વારો હોય એજ દ્વારોને લઈને ભવસિદ્ધિક વિગેરેનો વિચાર કરવો જોઈએ, 'एवं असुरकुमारा

पर्यन्ताः सर्वेऽपि क्रियावाद्यक्रियावादिप्रभृतिसमवसरणेषु भवसिद्धिकत्वादि रूपेण प्ररूपणीया इति। जीवनारकदेवदण्डकान् विविच्य एकेन्द्रियादि दण्डकान् विवेचयन्नाह–'पुढवीकाइया सव्वट्ठाणेसु वि मज्झिल्लेसु दोसु वि समोसरणेसु भवसिद्धिया वि अभवसिद्धिया वि' पृथिवीकायिका जीवाः सर्वस्थानेषु मध्यमयोरक्रियावाद्यज्ञानिकवादिरूपयोः समवसरणयो भवसिद्धिका अपि भवन्ति अभवसिद्धिका अपि भवन्तीति। 'एवं जाव वणस्सइकाइया' एवं पृथिवीकायिकवदेव यावत् वनस्पतिकायिका अपि माध्यमिकसमवसरणद्वये भवसिद्धिका अपि अभवसिद्धिका अपि भवन्ति, अत्र यावत्पदेनाप्कायिकतेजस्कायिकवायुकायिकानां संग्रहो भवतीति। 'बेइंदियतेइंदियचउरिंदिया एवंचेव' द्वीन्द्रियत्रीन्द्रिय

असुरकुमार से लेकर स्तनितकुमार तक सब ही क्रियावादी, अक्रियावादी आदि अवस्थाओं में भवसिद्धिक आदि रूप से समझना चाहिये–।

इस प्रकार जीव नारक और देव दण्डकों की विवेचना करके अब सूत्रकार एकेन्द्रिय आदिक दण्डकों की विवेचना करते हैं–'पुढवीकाइया सव्वट्ठाणेसु वि मज्झिल्लेसु दोसु वि समोसरणेसु भवसिद्धिया वि अभवसिद्धिया वि 'पृथिवीकायिक जीव समस्त स्थानों में अक्रियावादी और अज्ञानवादी रूप दो समवसरणों में भवसिद्धिक भी होते हैं और अभवसिद्धिक भी होते हैं। 'एवं जाव वणस्सइकाइया' पृथिवी कायिक के जैसे ही यावत् वनस्पतिकायिक भी माध्यमिक दो समवसरणों में भवसिद्धिक भी होते हैं और अभवसिद्धिक भी होते हैं। यहां यावत् पद से 'अप्कायिक, तेजस्कायिक और वायुकायिक' इनका संग्रह हुआ है। 'बेइंदिय, तेइंदिय चउरिंदिया एवं चेव' द्वीन्द्रिय,

---

वि, जाव थणियकुमारा' नारક દંડકના કથન પ્રમાણે જ અસુરકુમારોથી લઈને સ્તનિતકુમાર સુધીના સઘળા ક્રિયાવાદી, અક્રિયાવાદી વિગેરે અવસ્થાઓમાં ભવસિદ્ધિક વિગેરે પણાથી સમજવા.

આ પ્રમાણે જીવ, નારક, અને દેવ દંડકોનું વિવેચન કરીને હવે સૂત્રકાર એક ઇંદ્રિય વિગેરે દંડકોનું વિવેચન કરે છે.—'पुढवीकाइया सव्वट्ठाणेसु वि मज्झिल्लेसु दोसु वि समोसरणेसु भवसिद्धिया वि अभवसिद्धिया वि' પૃથ્વીકાયિક જીવો સઘળા સ્થાનોમાં અક્રિયાવાદી અને અજ્ઞાનવાદી રૂપ બે સમવસરણોમાં ભવસિદ્ધિક પણ હોય છે, અને અભવસિદ્ધિક પણ હોય છે. અહિયાં યાવત્પદથી અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક અને વાયુકાયિક એ પદોનો સંગ્રહ થયો છે. 'बेइंदिय, तेइंदिय चउरिंदिया एवं चेव' બે ઇંદ્રિયવાળા, ત્રણ ઇંદ્રિયવાળા અને ચાર ઇંદ્રિયવાળા જીવો પણ પૃથ્વીકાયિક વિગેરેના કથન પ્રમાણે

चतुरिन्द्रियजीवा अपि एवमेव-पृथिव्यादिवदेव ज्ञातव्याः। 'णवरं संमत्ते ओहियनाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे' नवरं केवलं सम्यक्त्वे औधिकज्ञाने आभिनिबोधिकज्ञाने श्रुतज्ञाने च 'एएसु चेव' एतेषु एव सम्यक्त्वौधिक ज्ञानादि-द्वारेषु 'दोसु मज्झिमेसु समोसरणेसु भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया' द्वयोर्मध्यमयो-रक्रियावाद्यज्ञानिकवादिनो भवसिद्धिका एव द्वीन्द्रियादारभ्य चतुरिन्द्रियान्ता भवन्ति न तु अभवसिद्धिका भवन्तीति। 'सेसं तंचेव' शेषं-मतिज्ञानादिषु यद्वै-लक्ष्यं कथितं तदतिरिक्तं सर्वं पूर्ववदेव ज्ञातव्यमिति। 'पंचिंदियतिरिक्ख-जोणिया जहा नेरइया' पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका यथा नैरयिकाः नैरयिके सामान्य

तेइन्द्रिय और चौइन्द्रिय जीव भी पृथिवीकायिक आदिकों के जैसे ही जानना चाहिये, अर्थात् ये सब अक्रियावादी और अज्ञानवादी अवस्थावाले होने के कारण भवसिद्धिक भी होते हैं और अभवसि-द्धिक भी होते हैं। 'नवरं सम्मत्ते ओहियनाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे' केवल सम्यक्त्व में, औधिक ज्ञान में, आभिनिबोधिकज्ञान में और श्रुतज्ञान में 'एएसु चेव' अर्थात् इन्ही सम्यक्त्व, औधिकज्ञान आदि द्वारों में 'दोसु मज्झिमेसु समोसरणेसु भवसिद्धिया, नो अभवसिद्धिया' अक्रियावादिता एवं अज्ञानिकवादिता को लेकर ये द्वीन्द्रियादिक भवसिद्धिक ही होते हैं, अभवसिद्धिक नहीं होते हैं। ऐसा समझना चाहिये। 'सेसं तं चेव' इस प्रकार मतिज्ञान आदि में जो वैलक्षण्य कहा गया है सो उसके सिवाय और सब कथन पूर्व के जैसा ही है। 'पंचिं-दियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया' नैरयिक प्रकरण में सामान्य

સમજવા. અર્થાત્ એ બધા અક્રિયાવાદી, અને અજ્ઞાનવાદી અવસ્થાવાળા હોવાથી ભવસિદ્ધિક પણ હોય છે- અને અભવસિદ્ધિક પણ હોય છે. 'नवरं सम्मत्ते ओहियनाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे' કેવળ સમ્યક્ત્વમાં ઔધિક-જ્ઞાનમાં અભિનિબોધિકજ્ઞાનમાં અને શ્રુતજ્ઞાનમાં 'एएसु चेव' અથવા આ સમ્યક્ત્વ અને ઔધિકજ્ઞાન વિગેરે દ્વારોમાં 'दोसु मज्झिमेसु समोसरणेसु भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया' અક્રિયાવાદીપણા અને અજ્ઞાનવાદીપણાને લઈને આ દ્વીન્દ્રિય વિગેરે ભવસિદ્ધિક જ હોય છે, અભવસિદ્ધિક હોતા નથી તેમ સમજવું.

'सेसं तं चेव' આ રીતે મતિજ્ઞાન વિગેરેમાં જે જુદાપણું કહ્યું છે, તે કથન શિવાય બાકીનું તમામ કથન પહેલા કહ્યા પ્રમાણે જ છે.

'पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया' નારકોના પ્રકરણમાં સામાન્ય જીવનો અતિદેશ-ભલામણ કરેલ છે તેથી સામાન્ય જીવના કથન પ્રમાણે

जीवस्यातिदेशः कृतोऽतः सामान्यजीववदेव पञ्चेन्द्रियतिरश्चामपि व्यवस्था ज्ञातव्येति। 'नवरं नायव्वं जं अत्थि' नवरं ज्ञातव्यं यदस्ति पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां यद्यत् पदजातं विद्यते तत्र तत्रैव भवसिद्धिकत्वादिकमवगन्तव्यमिति। 'मणुस्सा जहा ओहिया जीवा' मनुष्या यथा औधिका जीवाः सामान्यजीवप्रकरणवदेव मनुष्यप्रकरणमपि ज्ञातव्यमिति 'वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा असुरकुमारा' वानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिका असुरकुमारवदेव ज्ञातव्याः। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति, हे भदन्त समवसरणचतुष्टयविषये यद्देवानुप्रियेण कथितं तत् एवमेव-सर्वथा सत्यमेवेति

जीव का अतिदेश किया गया है-इसलिये सामान्य जीव के जैसी ही व्यवस्था पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चों की जाननी चाहिये 'नवरं नायव्वं जं अत्थि' परन्तु पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चों के जो-जो पद हों वही-वही पद भवसिद्धिक आदि का कथन करना चाहिये, 'मणुस्सा जहा ओहिया जीवा' सामान्य जीव के प्रकरण के जैसा ही मनुष्य का प्रकरण जानना चाहिये। 'वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा असुरकुमारा' वानव्यन्तर ज्योतिषिक और वैमानिकों को असुरकुमारों के जैसा जानना चाहिये 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! समवसरण चतुष्टय के विषय में जो आप देवानुप्रियने कहा है वह सर्वथा सत्य ही है२इस प्रकार

પંચેન્દ્રિય તિર્યંચોનું કથન સમજવું. 'नवरं नायव्वं जं अत्थि' પરંતુ પંચેન્દ્રિય તિર્યંચોમાં જે પદો કહ્યા હોય તેજ પદ ભવસિદ્ધિક વિગેરેના કથનમાં સમજવું. 'मणुस्सा जहा ओहिया जीवा' સામાન્ય જીવના પ્રકરણમાં કહ્યા પ્રમાણે જ મનુષ્યના સંબંધમાં સમજવું. 'वाणमंतरजोइसिय वेमाणिया जहा असुरकुमारा' વાનવ્યન્તર જ્યોતિષ્ક અને વૈમાનિકોના સંબંધનું કથન અસુરકુમારોના પ્રકરણ પ્રમાણે સમજવું.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ ચારે પ્રકારના સમવસરણના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે. તે સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ

कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति ॥ सू० ४॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात–जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचक–पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक–श्रीशाहूछत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त–
'जैनाचार्य' पदभूषित —कोल्हापुरराजगुरु–बाल-
ब्रह्मचारि–जैनाचार्य–जैनधर्मदिवाकर–पूज्य श्री
घासीलालव्रतिविरचितायां श्री "भग
वतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां-
व्याख्यायां त्रिंशत्तमेशतके प्रथमो-
देशकः समाप्तः ॥३०।१॥

कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया, वन्दना नमस्कार कर फिर वे तप और संयम से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥४॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजी महाराजकृत
"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके तीसवें शतकका
॥ प्रथम उद्देशक समाप्त ॥ ३०–१॥

સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ॥સૂ૦૪॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત "ભગવતીસૂત્ર"ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ત્રીસમા શતકનો પહેલો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૦–૧॥



॥ अथ द्वितीयोदेशकः प्रारभ्यते ॥

प्रथमोदेशकं निरूप्य क्रमप्राप्तं द्वितीयोदेशकं निरूपयन्नाह 'अणंतरोववन्नगाणं' इत्यादि।

मूलम्—अणंतरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया किं किरियावाई पुच्छा, गोयमा ! किरियावाई वि जाव वेणइयवाई वि। सलेस्सा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं किरियावाई० एवं चेव एवं जहेव पढमुद्देसे नेरइयाणं वत्तव्वया तहेव इह वि भाणियव्वा। नवरं जं जस्स अत्थि अणंतरोववन्नगाणं नेरइयाणं तं तस्स भाणियव्वं। एवं सव्व जीवाणं जाव वेमाणियाणं। नवरं अणंतरोववन्नगाणं जं जहिं अत्थि तं तहिं भाणियव्वं। किरियावाई णं भंते ! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति, पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियउयं नो मणुस्साउयं नो देवाउयं पकरेंति। एवं अकिरियावाई वि वेणइयवाई वि अन्नाणियवाई वि। सलेस्सा णं भंते ! किरियावाई अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति जाव नो देवाउयं पकरेंति। एवं जाव वेमाणिया। एवं सव्वट्ठाणेसु वि अणंतरोववन्नगा नेरइया न किंचि वि आउयं पकरेंति जाव अणागारोवउत्तत्ति। एवं जाव वेमाणिया। नवरं जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं। किरियावाई णं भंते ! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं भवसिद्धिया अभवसिद्धिया ? गोयमा ! भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया। अकिरियावाई णं पुच्छा, गोयमा ! भवसिद्धिया वि अभवसिद्धिया वि, एवं अन्नाणियवाई वि, वेणइयवाई वि। सलेस्सा णं भंते ! किरियावाई अणंतरोववन्नगा नेरइया किं

भवसिद्धिया अभवसिद्धिया ? गोयमा ! भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया। एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिए उद्देसए नेरइयाणं वत्तव्वया भणिया तहेव इहवि भाणियव्वा जाव अणागारोवउत्त त्ति। एवं जाव वेमाणियाणं, नवरं जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं। इमं से लक्खणं जे किरियावाई सुक्कपक्खिया सम्मामिच्छादिट्ठी य एए सव्वे भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया सेसा सव्वे भवसिद्धिया वि अभवसिद्धिया वि। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥सू.१॥

तीसइमे सए बीओ उद्देसो समत्तो ॥३०-२॥

छाया—अनन्तरोपपन्नकाः खलु भदन्त! नैरयिकाः किं क्रियावादिनः पृच्छा, गौतम! क्रियावादिनोऽपि यावद्वैमानिकवादिनोऽपि। सलेश्याः खलु भदन्त! अनन्तरोपपन्नका नैरयिकाः किं क्रियावादिनः, एवमेव एवं यथैव प्रथमोद्देशके नैरयिकाणां वक्तव्यता तथैवेहापि भणितव्या, नवरं यद्यस्यास्ति अनन्तरोपपन्नकानां नैरयिकाणां तत्तस्य भणितव्यम्। एवं सर्वजीवानां यावद्वैमानिकानाम्। नवरमनन्तरोपपन्नकानां यद् यत्रास्ति तत्तत्र भणितव्यम्। क्रियावादिनः खलु भदन्त! अनन्तरोपपन्नका नैरयिकाः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति० पृच्छा, गौतम! नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, नो तिर्यगायुष्कं नो मनुष्यायुष्कं नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति। एवमक्रियावादिनोऽपि अज्ञानिकवादिनोऽपि वैनयिकवादिनोऽपि। सलेश्याः खलु भदन्त! क्रियावादिनः अनन्तरोपपन्नका नैरयिकाः किं नैरयिकायुष्कं ? पृच्छा, गौतम! नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति यावत् नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति। एवं यावद्वैमानिकाः एवं सर्वस्थानेष्वपि अनन्तरोपपन्नका नैरयिका न किञ्चिदपि आयुष्कं प्रकुर्वन्ति यावदनाकारोपयुक्ता इति एवं यावद्वैमानिकाः, नवरं यद् यस्यास्ति तत् तस्य भणितव्यम्। क्रियावादिनः खलु भदन्त! अनन्तरोपपन्नका नैरयिकाः किं भवसिद्धिका अभवसिद्धिकाः? गौतम! भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिका। अक्रियावादिनः खलु पृच्छा, गौतम! भवसिद्धिका अपि अभवसिद्धिका अपि, एवमज्ञानिकवादिनोऽपि, वैनयिकवादिनोऽपि। सलेश्याः खलु भदन्त! क्रियावादिनोऽनन्तरोपपन्नकाः नैरयिकाः किं भवसिद्धिका अभवसिद्धिकाः? गौतम! भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिकाः। एवमेतेन अभिलापेन यथैवौघिके उद्देशके नैरयिकाणां वक्तव्यता भणिता तथैवेहापि भणितव्या यावदनाकारोपयुक्ता इति। एवं यावद्वैमानिकानाम् नवरं यद् यस्यास्ति तत्तस्य

भणितव्यम् । इदं तस्य लक्षणम्—ये क्रियावादिनः शुक्लपाक्षिकाः सम्यग्मिथ्यादृष्टिका एते सर्वे भवसिद्धिका नो अभवसिद्धिकाः, शेषा सर्वे भवसिद्धिका अपि अभवसिद्धिका अपि । तदेवं भदन्त! तदेव भदन्त! इति ॥ सू०१

त्रिंशत्तमे शतके द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥३०—२॥

टीका—'अणंतरोववन्नगाणं भंते! नेरइया' अनन्तरोपपन्नकाः—प्रथमसमये समुत्पन्नाः ये ते अनन्तरोपपन्नकाः खलु भदन्त! नैरयिकाः 'किं किरियावाई पुच्छा' किं क्रियावादिनो भवन्ति? अक्रियावादिनो वा भवन्ति? अज्ञानिकवादिनो वा भवन्ति? वैनयिकवादिनो वा भवन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते। भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'किरियावाई वि जाव वेणइयवाई वि' क्रियावादिनोऽपि भवन्ति अनन्तरोपपन्नका नैरयिका यावत् वैनयिकवादिनोऽपि भवन्ति यावत्पदेन अक्रियावादिनामज्ञानिकवादिनां च संग्रहो भवतीति। 'सलेस्सा णं भंते! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं

प्रथम उद्देशक का निरूपण करके अब सूत्रकार क्रम प्राप्त द्वितीय उद्देशेका निरूपण करते हैं—'अणंतरोववन्नगा णं भंते! नेरइया'—इत्यादि

टीकार्थ—'अणंतरोववन्नगा णं भंते! नेरइया' हे भदन्त! अनन्तरोपपन्न नैरयिक क्या 'किरियावाई पुच्छा' क्रियावादी होते हैं? या अक्रियावादी होते है? या अज्ञानिकवादी होते हैं? या वैनयिकवादी होते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—'गोयमा! किरियावाई वि जाव वेणइयवाई वि' हे गौतम! अनन्तरोपपन्नक—प्रथम समयोत्पन्न—नैरयिक क्रियावादी भी होते हैं, अक्रियावादी भी होते हैं अज्ञानिकवादी भी होते हैं और वैनयिकवादी भी होते हैं। यहां यावत्पद से इन्ही अक्रियावादी और अज्ञानिकवादी पदों का

બીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

પહેલા ઉદ્દેશાનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર ક્રમથી આવેલ આ બીજા ઉદ્દેશાનું નિરૂપણ કરે છે.—'અણતરોવવન્નગાણં ભંતે! નેરઇયા' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—'અણંતરોવવન્નાગાણં ભંતે! નેરઇયા' હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક નૈરયિક 'કિરિયાવાઈ પુચ્છા' શું ક્રિયાવાદી હોય છે? અથવા અક્રિયાવાદી હોય છે? અથવા અજ્ઞાનવાદી હોય છે? અથવા વૈનયિકવાદી હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—ગોયમા! કિરિયાવાઈ વિ જાવ વેણઇયવાઈ વિ' હે ગૌતમ! અનંતરોપપન્નક નૈરયિક અર્થાત્ પહેલા સમયમાં ઉત્પન્ન થયેલ નારક ક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અને અક્રિયાવાદી પણ હોય છે, તથા અજ્ઞાન વાદી પણ હોય છે. અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. અહિયાં યાવત્પદથી

किरियावाई०' सलेश्याः खलु भदन्त! नैरयिकाः किं क्रियावादिनोऽक्रियावादिनोऽज्ञानिकवादिनो वा वैनयिकवादिनो वा भवन्तीत्यादि क्रमेण प्रश्नः, उत्तरमाह 'एवं चेव' पूर्वोक्तप्रकारेणैव हे गौतम! सलेश्या अनन्तरोपपन्ननारकाः क्रियावादिनो भवन्ति यावद् वैनयिकवादिनोऽपि भवन्ति एतदेव दर्शयन्नाह 'एवं जहेव' इत्यादि, 'एवं जहेव पढमुद्देसए नेरइयाणं वत्तव्वया तहेव इहवि भाणियव्वा' एवं यथैव त्रिंशत्तमशतकीय प्रथमोद्देशके नैरयिकाणां वक्तव्यता कथिता तथैव तेनैव प्रकारेण इहापि अनन्तरोपपन्नकनारकप्रकरणेऽपि सर्वापि वक्तव्यता भणितव्या। 'नवरं जं जस्स अत्थि अनंतरोववन्नगाणं नेरइयाणं तं तस्स भाणियव्वं' 'नवरं केवलं प्रथमोद्देशकापेक्षया इदमेव वैलक्षण्यं यत् यस्य जीवस्य यत् लेश्यादिकमनाकारोपयुक्तान्तं पदजातं विद्यते तस्य तदेव भणितव्यम्। 'एवं सव्वजीवाणं जाव वेमाणियाणं' एवमेव प्रथमोद्देशकवदेव सर्वजीवानाम् असुरकुमा-

ग्रहण हुआ है। 'सलेस्सा णं भंते! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं किरियावाई०' हे भदन्त! सलेश्य अनन्तरोपपन्न नैरयिक क्या क्रियावादी होते हैं? या अक्रियावादी होते हैं? या वैनयिकवादी होते हैं? या अज्ञानिकवादी होते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! एवं चेव०' हे गौतम! सलेश्य अनन्तरोपपन्नक नैरयिक की वक्तव्यता जैसी ३० वे शतक के प्रथम उद्देशक में कही गई है उसी प्रकार से यहां पर भी वही सब वक्तव्यता कहनी चाहिये, 'नवरं जं जस्स अत्थि अणंतरोववन्नगाणं नेरइयाणं तं तस्स भाणियव्वं' परन्तु अनन्तरोपपन्नक नैरयिकों में जिनके जो लेश्यादिक पद अनाकारोपयुक्त पद पर्यन्त संभवित है उनको वही पद कहने चाहिये यही इस कथनमें प्रथम उद्देशक की अपेक्षा से यहां भिन्नता है। 'एवं सव्वजीवाणं

અક્રિયાવાદી અને અજ્ઞાનવાદી એ બે ગ્રહણ કરેલ છે. 'सलेस्सा णं भंते! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं किरियावाई' હે ભગવન્ લેશ્યાવાળા અનંતરોપપન્નક નૈરયિક શું ક્રિયાવાદી હોય છે? અથવા અક્રિયાવાદી હોય છે? અથવા અજ્ઞાનવાદી હોય છે? અથવા વૈનયિકવાદી હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा! एवं चेव' હે ગૌતમ! અનંતરોપપન્નક નૈરયિકના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું કથન ૩૦ ત્રીસમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન અહીંયાં પણ કહેવું જોઈએ. 'नवरं जं जस्स अत्थि अणंतरोववन्नगाणं नेरइयाणं तं तस्स भाणियव्वं' પરંતુ અનંતરોપપન્નક નૈરયિકોમાં જેઓને જે લેશ્યા વિગેરે પદો અનાકારોપયોગ પદ સુધી થતા હોય તેઓના સંબંધમાં એજ પદ કહેવા જોઈએ. આજ પહેલા ઉદ્દેશાના કથન કરતાં

राद्यारभ्य वैमानिकपर्यन्तानां वक्तव्यता पठनीया आलापप्रकारस्तु स्वयमेव सर्वे-भोहनीय इति। 'नवरं अणंतरोववन्नगाणं जं जहिं अत्थि तं तहिं भाणियव्वं' नवरमनन्तरोपपन्नकानां यद् यत्रास्ति लेश्यादिकं तत् लेश्यादिकं तत्र वक्तव्यम्। 'किरियावाई णं भंते ! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति ? पुच्छा' क्रियावादिनः खलु भदन्त ! नैरयिकाः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति अथवा तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति यद्वा मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति देवायुष्कं वा प्रकुर्वन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते। भगवानाह 'गोयमा' इत्यादि। 'गोयमा' हे गौतम ! 'नो नेरइयाउयं पकरेंति' अनन्तरोपपन्नकाः नैरयिकाः नैरयिकसंबन्धि आयुष्कं न कुर्वन्ति

'जाव वेमाणियाणं' इसी प्रकार से प्रथम उद्देशक की वक्तव्यता जैसी-असुरकुमार से लेकर वैमानिक तक के समस्त जीवों की वक्तव्यता कहनी चाहिये, इस सम्बन्ध में आलाप प्रकार अपने आप सर्वत्र कल्पित करना चाहिये, 'नवरं अणंतरोववन्नगाणं जं जहिं अत्थि तं तहिं भाणियव्वं' परन्तु अनन्तरोपपन्नकों के जहां पर जो लेश्यादिक पद हों वे वहां पर कहना चाहिये, 'किरियावाई णं भंते ! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति पुच्छा' हे भदन्त ! क्रियावादी अनन्तरोपपन्न नैरयिक क्या नैरयिक आयुका बन्ध करते हैं? या तिर्यगायु का बन्ध करते हैं? या मनुष्यायु का बन्ध करते है? या देवायुका बन्ध करते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खाउयं पकरेंति, णो मणुस्साउयं, णो देवाउयं' हे गौतम ! क्रियावादी अनन्तरोपपन्न नैरयिक न नैरयिक आयुका बन्ध करते है न तिर्यगायुका बंध करते है न मनुष्यायुका बन्ध

અહિયાં ભિન્ન પણું છે 'एवं सव्वजीवाणं जाव वेमाणियाणं' આજ પ્રમાણે પહેલા ઉદ્દેશામાં કહેલ નારક જીવેના કથન પ્રમાણે પૃથ્વીકાયિકોથી લઈને વૈમાનિક સુધીના સઘળા જીવોના સબંધમાં કહેવું જોઈએ. આ સંબંધમાં આલાપ પ્રકાર સ્વયં બનાવીને સમજી લેવા 'णवरं अणंतरोववन्नगाणं जं जहिं अत्थि त तहिं भाणियव्वं' પરંતુ અનંતરોપપન્નક નૈરયિકોના સંબંધમાં જ્યાં જે લેશ્યા સબંધી પદ હોય તે પદ ત્યાં કહેવા જોઈએ 'किरियवाई णं भंते ! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति पुच्छा' હે ભગવન્ ક્રિયાવાદી અનંતરોપપન્નક નૈરયિક શું નૈરયિક આયુને બંધ કરે છે ? અથવા તિર્યંચ આયુને બંધ કરે છે ? અથવા મનુષ્ય આયુને બંધ કરે છે ? અથવા દેવ આયુને બંધ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે- गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, णो मणुस्साउयं, णो देवाउयं

तथा 'नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति' नो तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, 'णो मणुस्साउयं पकरेंति' नो–नैव मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्ति 'णो देवाउयं पकरेंति' नो–न वा देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति अनन्तरोपपत्तेरल्पकालत्वेन तत्समये कस्यापि आयुषो बन्धाभावात्। 'एवं अकिरियावाई वि अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि' एवं क्रियावाद्यनन्तरोपपन्नक नारकवदेव अक्रियावाद्यज्ञानिकवादि वैनयिकवादि नारका अपि न नारकायुष्कं कुर्वन्ति न वा तिर्यग्योनिकायुष्कं कुर्वन्ति न वा मनुष्यायुष्कं, न वा देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति इति भावः, हेतुरनन्तरोपपन्नत्वमेव एवमग्रेऽपि। 'सलेस्सा णं भंते! किरियावाई अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं पुच्छा' सलेश्याः खलु भदन्त! क्रियावादिनोऽनन्तरोपपन्नका नैरयिकाः किं नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति अथवा तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, मनुष्यायुष्कं वा प्रकुर्वन्ति, देवायुष्कं वा

करते हैं और न देवायु का बन्ध करते हैं। क्योंकि अनन्तरोत्पत्तिका काल अत्यल्प होता है इसलिये उस समय में किसी भी आयु का बन्ध नहीं होता है। 'एवं अकिरियावाई वि अण्णाणियवाई वि वेणइयवाई वि' इसी प्रकार से अक्रियावादी, अज्ञानिकवादी और वैनयिकवादी अनन्तरोपपन्न नैरयिक भी न नारकायुष्क का बन्ध करते हैं न तिर्यगायुष्क का बन्ध करते हैं, न मनुष्यायुष्क का बन्ध करते हैं और न देवायुष्क का बन्ध करते हैं। इसमें कारण अनन्तरोत्पत्ति के काल की अत्यल्पता है। इसी प्रकार से आगे भी जानना चाहिये, 'सलेस्सा णं! भंते! किरियावाई अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं पुच्छा' हे भदन्त! सलेश्य क्रियावादी अनन्तरोपपन्न नैरयिक क्या नैरयिक आयुष्क का बन्ध करते हैं? या तिर्यगायुष्क

पकरेंति' હે ગૌતમ! ક્રિયાવાદી અનંતરોપપન્નક, નૈરયિક આયુનો બંધ કરતા નથી, તિર્યંચ આયુનો બંધ કરતા નથી. મનુષ્ય આયુનો બંધ કરતા નથી. દેવ આયુનો પણ બંધ કરતા નથી કેમ –કે અનંતર ઉત્પત્તિનો કાળ અત્યંત અલ્પ હોય છે તેથી તે સમયે કોઈપણ આયુનો બંધ હોતો નથી. 'एवं अकिरियावाई वि वेणइयवाई वि अण्णाणियवाई वि' એજ પ્રમાણે અક્રિયાવાદી, વૈનયિકવાદી, અજ્ઞાનવાદી, અનંતરોપપન્નક નૈરયિક પણ નારકની આયુનો બંધ કરતા નથી. તિર્યંચ આયુનો બંધ કરતા નથી મનુષ્ય આયુનો બંધ કરતા નથી. તથા દેવ આયુનો બંધ કરતા નથી. કારણ કે અનંતરોત્પત્તિનો કાળ અત્યંત અલ્પ હોય છે. આજ પ્રમાણે આગળ પણ સમજવું.

'सलेस्सा णं भंते! किरियावाई अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं पुच्छा' હે ભગવન્ લેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી અનંતરોપપન્નક નૈરયિક શું નૈરયિક આયુષ્યનો બંધ કરે છે? અથવા મનુષ્ય આયુનો બંધ કરે છે? અથવા

प्रकुर्वन्ति इति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, गोयमा' हे गौतम! 'नो नेरइयाउयं पकरेंति जाव नो देवाउयं पकरेंति' नो नैरयिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति यावत् नो देवायुष्कं प्रकुर्वन्ति यावत् पदेन नो तिर्यग्योनिकायुष्कं प्रकुर्वन्ति न वा मनुष्यायुष्कं प्रकुर्वन्तीत्यनयोः संग्रहो भवति, तथा च चतुर्ष्वपि आयुष्केषु एकविधमपि आयुष्कं न प्रकुर्वन्तीति भावः। 'एवं जाव वेमाणिया' एवमनन्तरोपपन्नक क्रियावादि नारकवदेव असुरकुमारादारभ्य वैमानिकान्ताः सर्वेऽपि जीवा नैकविधमपि आयुष्कं बध्नन्तीति भावः। फलत एतदेव दर्शयति-'एवं सव्वट्ठाणे वि' इत्यादि। 'एवं सव्वट्ठाणेसु वि अणंतरोववन्नगा नेरइया न किंचिवि आउयं पकरेंति जाव अणागारोवउत्त त्ति' एवमनन्तरोपपन्नसलेश्यवदेव सर्वस्थानेष्वपि कृष्णादिलेश्याद्वारेष्वपि अनन्तरोपपन्नका नैरयिका न किमपि एकविधमपि आयुष्कं प्रकुर्वन्ति अनन्तरोपपन्नकानाम् एक प्रकारकस्यापि आयुषो बन्धनं न भवतीति। सर्वस्थानेषु एकमपि आयुर्न भवतीत्युक्तं तत् कियत्पर्यन्तं

का बन्ध करते हैं ? या मनुष्यायुष्क का बन्ध करते हैं ? या देवायुष्क का बन्ध करते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति, जाव नो देवाउयं पकरेंति' हे गौतम! सलेश्य क्रियावादी अनन्तरोपपन्न नैरयिक न नैरयिक आयुष्क का बन्ध करते हैं, न तिर्यगायुष्क का बन्ध करते हैं, न मनुष्यायुष्क का बन्ध करते हैं और न देवायुष्क का बन्ध करते हैं। 'एवं जाव वेमाणिया' इसी प्रकार से अनन्तरोपपन्न क्रियावादी नैरयिक के जैसे असुरकुमार से लेकर वैमानिक तक के सब ही जीव किसी भी आयु का बन्ध नहीं करते हैं। यही वात-'एवं सव्वट्ठाणेसु वि' इस सूत्रपाठ द्वारा प्रकट की गई है। अर्थात्-अनन्तरोपपन्न सलेश्य नैरयिक के जैसे ही समस्त स्थानों में भी-कृष्णलेश्यादि द्वारों में भी-अनन्तरोपपन्न नैरयिक किसी भी आयु का बन्ध नहीं करते हैं। ऐसा यह कथन 'जाव अणा-

તિર્યંચ આયુનો બંધ કરે છે ? અથવા દેવ આયુષ્યનો બંધ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति जाव नो देवाउयं पकरेंति' હે ગૌતમ! લેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી અનંતરોપપન્નક નૈરયિક, નૈરયિકોના આયુષ્યનો બંધ કરતા નથી, તિર્યંચ આયુનો બંધ કરતા નથી. મનુષ્ય આયુનો બંધ કરતા નથી. અને દેવ આયુષ્યનો પણ બંધ કરતા નથી. 'एवं जाव वेमाणिया' અનંતરોપપન્નક ક્રિયાવાદી નૈરયિકના કથન પ્રમાણે એક ઇંદ્રિયવાળાથી લઈને વૈમાનિક સુધીના જીવો કોઈપણ આયુનો બંધ કરતા નથી- એજ વાત 'एवं सव्वट्ठाणे वि' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ કરેલ છે. અર્થાત્ અનંતરોપપન્નક લેશ્યાવાળા નૈરયિક જીવો કોઈપણ આયુનો બંધ

स्थानं ग्राह्यं तत्राह-'जाव अणागारोवउत्त त्ति' यावत् अनाकारोपयुक्त इति कृष्णलेश्या दारभ्य अनाकारोपयोगान्तद्वारेषु एकविधस्यापि आयुषो बन्धनं न भवतीति भावः। 'एवं जाव वेमाणिया' एवं यावद्वैमानिकाः न केवल मनन्तरोपपन्नक्रियावादिनारकाणामेव आयुर्बन्धो न भवति किन्तु असुरकुमारादारभ्य वैमानिकान्तानन्तरोपपन्नकानां सर्वेषामेव जीवानामेकस्यापि आयुषो बन्धो न भवति एतदेव दर्शितम्, 'एवं जाव वेमाणिया' इति प्रकरणेनेति। 'नवरं जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं' नवरम् असुरकुमारादारभ्य वैमानिकान्तजीवेषु अनन्तरोपपन्नकेषु एतदेव वैलक्षण्यं यत् यस्य जीवस्य यत्स्थानं लेश्यादिकं विद्यते तस्य जीवस्य तस्मिन्नेव स्थाने आयुषो बन्धाभावो

गारोवउत्तत्ति' अनाकारोपयुक्त द्वार तक जानना चाहिये, अर्थात् कृष्णलेश्या से लेकर अनाकारोपयुक्त द्वार तक अनन्तरोपपन्न नैरयिक किसी भी आयुका बन्ध नहीं करते है। 'एवं जाव वेमाणिया' केवल अनन्तरोपपन्न क्रियावादी नैरयिक ही किसी भी आयुका बन्ध नहीं करते हैं ऐसी बात नहीं है किन्तु असुरकुमार से लेकर वैमानिक तक के जितने भी अनन्तरोपपन्न जीव हैं उन सब के भी किसी भी आयुका बन्ध नहीं होता है। यही बात सूत्रकारने 'एवं जाव वेमाणिया' इस प्रकरण द्वारा प्रकट की गई है। 'नवरं जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं' परन्तु इन अनन्तरोपपन्न असुरकुमार से लेकर अनन्तरोपपन्न वैमानिकान्त जीवों में यही विशेषता है कि जिस जीव के जो

કરતા નથી. આ પ્રમાણેનું કથન 'जाव अणागारोवउत्तत्ति' અનાકારોપયોગ દ્વાર સુધી સમજવું. અર્થાત્ કૃષ્ણલેશ્યાથી લઈને અનાકારોપ યોગદ્વાર સુધી અનંતરોપપન્નક નૈરયિક કોઈપણ આયુનો બંધ કરતા નથી.

'एवं जाव वेमाणिया' કેવળ અનંતરોપપન્નક ક્રિયાવાદી નૈરયિક જ કોઈપણ આયુનો બંધ કરતા નથી. એવી વાત નથી, પરંતુ એક ઇંદ્રિયવાળાથી લઈને વૈમાનિક સુધીના જેટલા અનંતરોપપન્નક જીવો છે, તે સઘળા ને પણ કોઈપણ આયુનો બંધ થતો નથી. એજ વાત સૂત્રકારે 'एवं जाव वेमाणिया' આ સૂત્ર દ્વારા પ્રગટ કરેલ છે. 'नवरं जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं' પરંતુ આ અનંતરોપપન્નક એક ઇન્દ્રિયવાળાથી લઈને અનંતરોપપન્નક વૈમાનિક સુધીના જીવોમાં એજ વિશેષપણું છે કે-જે જીવને જે લેશ્યા વિગેરે સ્થાનો થતા હોય એજ સ્થાનમાં તેઓને આયુના બંધનો અભાવ કહેવો

वक्तव्य इति । 'किरियावाई णं भंते ! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं भव-सिद्धिया अभवसिद्धिया' क्रियावादिनः खलु भदन्त ! अनन्तरोपपन्नका नैरयिकाः किं भवसिद्धिका भवन्ति अभवसिद्धिका वा भवन्तीति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया' क्रियावादिनोऽनन्तरोपपन्नका नैरयिका भवसिद्धिका एव भवन्ति न तु अभवसिद्धिका भवन्तीति भावः । 'अकिरियावाई णं पुच्छा' अक्रियावादिनः खलु पृच्छा, हे भदन्त ! अक्रियावादिनोऽनन्तरोपपन्नका नैर-यिकाः किं भवसिद्धिका अभवसिद्धिका वा भवन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'भवसिद्धिया वि अभव-सिद्धिया वि' भवसिद्धिका अपि भवन्ति अभवसिद्धिका अपि भवन्ति अक्रिया-वादिनोऽनन्तरोपपन्नका नारका इति । 'एवं अन्नाणियवाई वि वेणइयवाई वि'

लेश्यादिक स्थान संभवित हो उसी स्थान में उसके आयुके बन्ध का अभाव कहना चाहिये, 'किरियावाई णं भंते ! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं भवसिद्धिया अभवसिद्धिया' हे भदन्त ! क्रियावादी अनन्तरोपपन्न नैरयिक क्या भवसिद्धिक होते है या अभवसिद्धिक होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते है-'गोयमा ! भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया' हे गौतम ! क्रियावादी अनन्तरोपपन्नक नैरयिक भवसिद्धिक होते हैं अभवसि-द्धिक नहीं होते हैं । 'अकिरियावाईणं पुच्छा ।' हे भदन्त ! अक्रियावादी अनन्तरोपपन्न नैरयिक क्या भवसिद्धिक होते हैं ? या अभवसिद्धिक होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! भवसिद्धिया वि अभव-सिद्धिया वि' हे गौतम अक्रियावादी अनन्तरोपपन्न नैरयिक भवसिद्धिक भी होते हैं और अभवसिद्धिक भी होते हैं । 'एवं अन्नाणियवाई

જોઈએ. 'किरियावाई णं भंते ! अणंतरोववण्णगा नेरइया किं भवसिद्धिया अभव-सिद्धिया' હે ભગવન્ ક્રિયાવાદી અનંતરોપપન્નક નૈરયિક શું ભવસિદ્ધિક હોય છે ? અથવા અભવસિદ્ધિક હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया' હે ગૌતમ ! ક્રિયાવાદી અનંતરોપપન્નક નૈરયિક ભવસિદ્ધિક હોય છે, અભવસિદ્ધિક હોતા નથી

'अकिरियावाई णं पुच्छा' હે ભગવન્ અક્રિયાવાદી અનંતરોપપન્નક નૈરયિક શું ભવસિદ્ધિક હોય છે ? અથવા અભવસિદ્ધિક હોય છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! भवसिद्धिया वि अभवसिद्धिया वि' હે ગૌતમ ! અક્રિયાવાદી અનંતરોપપન્નક નૈરયિક ભવસિદ્ધિક પણ હોય છે, અને અભવસિદ્ધિક પણ હોય છે. 'एवं अन्नाणियवाई वि, वेणइयवाई वि' અક્રિયા

एवमक्रियावाद्यनन्तरोपपन्नक नारकवदेव अज्ञानिवाद्यनन्तरोपपन्नका अपि ज्ञातव्याः तथा वैनयिकवादिनोऽपि ज्ञातव्या इति। भवसिद्धिका अपि अभवसिद्धिका अपीति। 'सलेस्सा णं भंते! किरियावाई अणंतरोववन्नगा नेरइया किं भवसिद्धिया अभवसिद्धिया' सलेश्याः खलु भदन्त! क्रियावादिनोऽनन्तरोपपन्नका नैरयिकाः किं भवसिद्धिका भवन्ति अथवा अभवसिद्धिका भवन्तीति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया' भवसिद्धिका भवन्ति सलेश्याः क्रियावादिनोऽनन्तरोपपन्नका नो अभवसिद्धिका भवन्ति इति। 'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिए उद्देसए नेरइयाणं वत्तव्वया भणिया तहेव इह वि भाणियव्वा' एवमेतेन अभिलापेन यथैवास्य शतकस्य औधिके प्रथमे उद्देशके नैरयिकजीवानां वक्तव्यता कृष्ण-

---

वि वेणइयवाई वि' अक्रियावादी अनन्तरोपपन्न नैरयिक के जैसे ही अज्ञानवादी अनन्तरोपपन्न नैरयिक और वैनयिकवादी नैरयिक भी जानना चाहिये, अर्थात् ये भवद्धिक भी होते हैं और अभवसिद्धिक भी होते हैं। 'सलेस्सा णं भंते! किरियावाई अणंतरोववन्नगा नेरइया किं भवसिद्धिया अभवसिद्धिया' हे भदन्त! सलेश्य क्रियावादी अनन्तरोपपन्नक नैरयिक क्या भवसिद्धिक होते हैं या अभवसिद्धिक होते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया' हे गौतम! सलेश्य क्रियावादी अनन्तरोपपन्नक नैरयिक भवसिद्धिक होते है अभवसिद्धिक नहीं होते हैं। 'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिय उद्देसए नेरइयाणं वत्तव्वया भणिया, तहेव इहवि भाणियव्वा' इस प्रकार के अभिलाप से जैसी इस शतक के औधिक-प्रथम उद्देशक में नैरयिक जीवों की वक्तव्यता कृष्णलेश्या-

---

વાદી અનંતરોપપન્નક નૈરયિકના કથન પ્રમાણે જ અજ્ઞાનવાદી અનંતરોપપન્નક નૈરયિક અને વૈનયિકવાદી અનંતરોપપન્નક નૈરયિકનું કથન પણ સમજવું અર્થાત્ આ બધા ભવસિદ્ધિક પણ હોય છે, અને અભવસિદ્ધિક પણ હોય છે 'सलेस्सा णं भंते! किरियाई अणंतरोववन्नगा नेरइया किं भवसिद्धिया अभवसिद्धिया' હે ભગવન્ લેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી અનંતરોપપન્નક નૈરયિક શું ભવસિદ્ધિક હોય છે? અથવા અભવસિદ્ધિક હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે- 'गोयमा! भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया' હે ગૌતમ! લેશ્યાવાળા ક્રિયાવાદી અનંતરોપપન્નક નૈરયિક ભવસિદ્ધિક હોય છે અભવસિદ્ધિક હોતા નથી.

'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिए उद्देसए नेरइयाण वत्तव्वया भणिया तहेव इहंवि भणियव्वा' આ રીતે આ અભિલાપથી આ શતકના ઔધિક-

मसिद्धमेव अतो नोक्तमिति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति, हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नकनारकादीनां क्रियावाद्यादिविषये यत् कथितं देवानुप्रियेण तत् सर्वथैव सत्यमिति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति ॥सू० २॥

इति श्री-विश्वविख्यातजगद्वल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि - 'जैनाचार्य' पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां "श्री भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां त्रिंशत्तमे शतके द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥३०-२॥

भी होते हैं । सम्यग्दृष्टिज्ञानी, अवेदक अकषाय और अयोगी ये तो भव्य रूप से प्रसिद्ध ही हैं । अतः ये यहाँ नहीं कहे गये हैं 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त अनन्तरोपपन्नक नारकादिकों की क्रियावादीतादि के विषय में जो आप देवानुप्रियने कहा है वह सर्वथा सत्य ही है २ इस प्रकार कहकर गौतमस्वामीने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार करके फिर वे संयम और तपसे आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० १॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके तीसवें शतकका द्वितीय उद्देशक समाप्त ॥३०-२॥

જીવો ભવ્ય હોય છે, અને અભવ્ય પણ હોય છે. સમ્યગ્દૃષ્ટિજ્ઞાની, અવેદક અકષાય અને અયોગી આ બધા તો ભવ્યપણાથી પ્રસિદ્ધ જ છે. તેથી અહિયાં કહ્યા નથી.

'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક નારક વિગેરેના ક્રિયાવાદી પણાના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સત્ય છે, હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું આ સંબંધનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્ર'ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના તીસમા શતકનો બીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૦-૨॥



अथ तृतीयोद्देशकः प्रारभ्यते

द्वितीयोद्देशकं निरूप्य क्रमप्राप्तं तृतीयं निरूपयन्नाह-'परंपरोववन्नगा' इत्यादि।

मूलम्-परंपरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया किरियावाई० एवं जहेव ओहिओ उद्देसओ तहेव परंपरोववन्नएसु वि नेरइयाइओ तहेव निरवसेसं भाणियव्वं तहेव तियदंडगसंगहिओ। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥सू०१॥

तीसइमे सए तईओ उद्देसो समत्तो ॥३०-३॥

छाया—परम्परोपपन्नकाः खलु भदन्त ! नैरयिकाः क्रियावादिनः० एवं यथैवौघिक उद्देशकस्तथैव परम्परोपपन्नकेषु नैरयिकादिक स्तथैव निरवशेषं भणितव्यम्, तथैव त्रिदण्डकसंगृहीतः। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति यावद्विहरति ॥सू० १॥

त्रिंशत्तमे शतके तृतीयोद्देशकः समाप्तः

टीका—'परंपरोववन्नगाणं भंते ! नेरइया किं किरियावाई' परम्परोपपन्नकाः खलु भदन्त ! नैरयिकाः किं क्रियावादिनोऽक्रियावादिनो वा अज्ञानिकवादिनो वैनयिकवादिनो वा भवन्तीति प्रश्नः, भगवानाह-'जहेव' इत्यादि, 'एवं जहेव ओहिओ उद्देसओ' एवं यथैवौघिक उद्देशकः 'तहेव परंपरोववन्नएसु वि' तथैव पर-

---

तीसरे उद्देशे का प्रारंभ

द्वितीय उद्देशक का निरूपण करके अब क्रमप्राप्त तृतीय उद्देशक का निरूपण किया जाता है—'परंपरोववन्नगाणं भंते !' इत्यादि

टीकार्थ-परंपरोववन्नगाणं भंते ! नेरइया किरियावाई० 'हे भदन्त जो नैरयिक परम्परोपपन्नक हैं।-द्वितीयादि समयोपपन्नक हैं-वे क्या क्रियावादी होते हैं ? या अक्रियावादी होते हैं ? या अज्ञानिकवादी होते हैं ? या वैनयिकवादी होते है ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'जहेव ओहियो

त्रीજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

બીજા ઉદ્દેશાનું નિરૂપણ કરીને હવે ક્રમથી આવેલ આ ત્રીજા ઉદ્દેશાનું નિરૂપણ કરવામા આવે છે.-'परंपरोववन्नगाणं भंते !' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—'परंपरोववन्नगाणं भंते ! नेरइया किरियावाई' હે ભગવન્ જે નૈરયિક પરંપરોપપન્નક હોય છે, બીજા વિગેરે સમયમાં ઉત્પન્ન થવાવાળા હોય છે. તેઓ શું ક્રિયાવાદી હોય છે ? અથવા અક્રિયાવાદી હોય છે ? અથવા અજ્ઞાનવાદી હોય છે ? અથવા વૈનયિકવાદી હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'जहेव ओहिओ उद्देसओ तहेव परंपरोववन्नएसु वि' હે ગૌતમ ! ઔઘિક ઉદ્દેશામાં

म्परोपपन्नकेषु अपि 'नेरइयाइओ तहेव निरवसेसं भाणियव्वं' नैरयिकादिको वैमानिकान्त स्तथैव निरवशेषं यथा स्यात् तथा भणितव्यः, हे गौतम ! परम्परोपपन्नका नैरयिकाः क्रियावादिनोऽपि भवन्ति, अक्रियावादिनोऽपि भवन्ति अज्ञानिकवादिनोऽपि भवन्ति वैनयिकवादिनोऽपि भवन्तीति। सलेश्याः खलु भदन्त ! परम्परोपपन्ननारकाः किं क्रियावादिनो यावत् वैनयिकवादिनो भवन्तीति प्रश्नः, हे गौतम ! सलेश्याः परम्परोपपन्नका नैरयिकाः क्रियावादिनोऽपि भवन्ति यावद् वैनयिकवादिनोऽपि भवन्तीत्युत्तरम् एवं यावच्छुक्ललेश्याः परम्परोपपन्नकाः इत्यादिकं सर्वं प्रथमोद्देशकवदेव इहापि पठनीयम् एतदभिप्रायेण कथितं निरवशेषं भणितव्यमिति। 'तहेव तिदंडगसंगहिओ' तथैव प्रथमोद्देशकवदेव

उद्देसओ तहेव परंपरोववन्नएसु वि' हे गौतम ! जैसा औधिक उद्देशक में कहा गया है उसी प्रकार से परंपरोपपन्नकों के सम्बन्ध में भी 'नेरइयाइओ तहेव निरवसेसं भाणियव्वं' नैरयिक से लेकर वैमानिक तक का समस्त कथन यहां पर करना चाहिये-तथा च-परम्परोपपन्नक नैरयिक क्रियावादी भी होते हैं, अक्रियावादी भी होते हैं, अज्ञानिकवादी भी होते हैं और वैनयिकवादी भी होते हैं। इसी प्रकार से 'हे भदन्त ! जो सलेश्य परम्परोपपन्नक नैरयिक हैं वे क्या क्रियावादी यावत् वैनयिकवादी होते हैं ? इस प्रश्न के उत्तर में भी 'हे गौतम ! सलेश्य परम्परोपपन्नक नैरयिक क्रियावादी भी होते हैं और यावत् वैनयिकवादी भी होते हैं' ऐसा उत्तर यहां समझना चाहिये इत्यादि समस्त कथन प्रथम उद्देशक के जैसे यहां कहना चाहिये इसी अभिप्रायसे 'निरवसेसं भाणियव्वं'

જે પ્રમાણેનું કથન કર્યું છે, એજ પ્રમાણે પરંપરોપપન્નક નૈરયિકોના સંબંધમાં પણ 'नेरइयाइओ तहेव निरवसेसं भाणियव्वं' નૈરયિકથી લઈને વૈમાનિક સુધીનું સઘળું કથન અહિયાં સમજી લેવું. તે આ પ્રમાણે છે.-પરંપરોપપન્નક નૈરયિક ક્રિયાવાદી પણ હોય છે. અક્રિયાવાદી પણ હોય છે. અજ્ઞાનવાદી પણ હોય છે, અને વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. એજ પ્રમાણે હે ભગવન્ જે લેશ્યાવાળા પરંપરોપપન્નક નૈરયિકો છે, તેઓ શું ક્રિયાવાદી હોય છે ? યાવત્ વૈનયિકવાદી હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પણ હે ગૌતમ લેશ્યાવાળા પરંપરોપપન્નક નૈરયિક ક્રિયાવાદી પણ હોય છે, અને યાવત્ વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. આ પ્રમાણે સમજવું. એજ પ્રમાણે યાવત્ શુક્લ લેશ્યાવાળા પરંપરોપપન્નક નૈરયિકો પણ ક્રિયાવાદી હોય છે. અને યાવત્ વૈનયિકવાદી પણ હોય છે. આ પ્રમાણેનું સઘળું કથન પહેલા ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે અહિયાં સમજવું. આજ અભિપ્રાયથી 'निरवसेसं भाणियव्व' આ પ્રમાણેનો સૂત્રપાઠ કહેલ છે.

त्रिदण्डकसंगृहीतः दण्डकत्रयमित्थं भवति-नैरयिकादि पदेषु क्रियावाद्यादि-प्ररूपणा दण्डकः प्रथमः, आयुर्बन्धदण्डको द्वितीयो भव्याभव्यदण्डकश्च तृतीय इति। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति यावद्विहरति, हे भदन्त! परम्परोपपन्ननारकादीनां क्रियावाद्यादिविषये यद् देवानुप्रियेण कथितं तत्सर्वम् एवमेव-सर्वथा सत्यमेव इति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा च संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति ॥सू० १॥

इति श्री विश्वविख्यात जगद्वल्लभादिपदभूषित बालब्रह्मचारि 'जैनाचार्य' पदभूषित पूज्यश्री 'घासीलाल' व्रतिविरचितायां श्री "भगवती" सूत्रस्य प्रमेयचन्द्रिका ख्यायां व्याख्यायां त्रिंशत्तमे शतके तृतीयोद्देशकः समाप्तः ॥३०-३॥

ऐसा पाठ कहा गया है। 'तहेव ति दंडगसंगहिओ' प्रथम उद्देशक जिस प्रकार से त्रिदण्डक सहित कहा गया है उसी प्रकार यह उद्देशक भी त्रिदण्डक सहित है। वे त्रिदण्डक इस प्रकार से हैं-क्रियावादी आदि का प्ररूपक प्रथम दण्डक, आयुबन्ध का प्ररूपक द्वितीयदण्डक और भव्या-भव्यत्व प्ररूपक तृतीय दण्डक, सेवं! भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ' हे भदन्त! परम्परोपपन्नक नैरयिक आदि की क्रियावादिता आदि के विषय में जो आप देवानुप्रियने जो कहा है वह सब सत्य है २ इस प्रकार कहकर गौतमस्वामीने प्रभुश्री को वन्दना की और उन्हे नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर वे तप एवं संयम से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० १॥

तृतीय उद्देशक समाप्त ॥ ३०-३ ॥

'तहेव तिदंडगसंगहिओ' પહેલા ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણે ત્રણ દંડકો કહેવામાં આવ્યા છે, એજ પ્રમાણેના-ક્રિયાવાદી વિગેરેના નિરૂપણ સંબંધી પહેલો દંડક, આયુબંધના નિરૂપણ સંબંધમા બીજો દંડક અને અભવ્ય તથા અભવ્યાત્મકના નિરૂપણના સંબંધમાં ત્રીજો દંડક સમજવો.

'સેવં ભંતે! સેવં ભંતે! ત્તિ જાવ વિહરઇ' હે ભગવન્ પરંપરોપપન્નક નૈરયિક વિગેરેના ક્રિયાવાદી પણા આદિના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યો વંદના નમસ્કાર કરીને તપ અને સંયમથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ॥સૂ૦૧॥

॥ત્રીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત॥ ૩૦-૩॥

अथ चतुर्थाद्येकादशान्ता उद्देशकाः प्रारभ्यन्ते

तृतीयोद्देशकं निरूप्य क्रमप्राप्तान् चतुर्थाद्येकादशान्तान् उद्देशकान् निरूपयन्नाह–'एवं एएणं कमेणं' इत्यादि।

सूत्रम्–एवं एएणं कमेणं जच्चेव बंधिसए उद्देसगाणं परिवाडी सच्चेव इहंपि जाव अचरिमो उद्देसो नवरं अणंतरा चत्तारि वि एक्कगमगा, परंपरा चत्तारि वि एक्कं गमएणं, एवं चरिमा वि अचरिमा वि एवं चेव। नवरं अलेस्सो केवली अजोगी न भण्णइ। सेसं तहेव, सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥सू० १॥

एएवि एक्कारस वि उद्देसगा ॥४-११॥

तीसइमं समवसरणसयं समत्तं

छाया—एवमेतेन क्रमेण यैव बन्धिशतके उद्देशकानां परिपाटी सैव इहापि यावदचरम उद्देशकः। नवरमनन्तराश्चत्वारोऽपि एकगमकाः परम्पराश्चत्वारोऽपि एकगमकेन, एवं चरमा अपि, अचरमा अपि एवमेव। नवरम् अलेश्यः केवली अयोगी न भण्यते शेषं तथैव। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥सू० १॥

एते एकादशापि उद्देशकाः।४-११॥

त्रिंशत्तमं समवसरणशतं समाप्तम् ॥३०॥

टीका—'एवं एएणं कमेणं जच्चेव बंधिसए उद्देसगाणं परिवाडी' एवमेतेन क्रमेण यैव बन्धिशतके षड्विंशतितमे शतके उद्देशकानां प्रथमोद्देशकादारभ्यैकादशोद्देशकान्तानां परिपाटी प्रकाररूपा कथिता 'सच्चेव इहंपि जाव अचरिमो

चौथा उद्देशाका प्रारंभ –

'एवं एएणं कमेणं जच्चेव बंधिसए उद्देसगाणं'–इत्यादि

टीकार्थ—'एवं एएणं कमेणं जच्चेव बंधिसए उद्देसगाणं परिवाडी 'इस प्रकार इस क्रम से जो बन्धि शतक में छाइस २६ वे शतक में उद्देशकों की–प्रथम उद्देशक से लेकर ग्यारह वे उद्देशक तक के उद्देशको

॥ચોથા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ––

'एवं एएणं कमेणं जच्चेव बंधिसए उद्देसगाणं' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—'एवं एएणं कमेणं जच्चेव बंधिसए उद्देसगाणं परिवाडी' આ રીતે ક્રમથી બંધી શતકમાં એટલે કે છવ્વીસમા શતકમાં ઉદ્દેશાઓ–એટલે કે પહેલા ઉદ્દેશાથી લઈને અગિયારમાં ઉદ્દેશા સુધીના ઉદ્દેશાઓનો ક્રમ કહેલ છે.

उद्देसो' सैव इहापि उद्देशकानां परिपाटी वक्तव्या यावद् अचरमोद्देश इति प्रथमोद्देशकादारभ्य अचरमनामकैकादशोद्देशकपर्यन्तं सर्वं वक्तव्यमित्यर्थः, उद्देशानां परिपाटी यथा-औधिकोद्देशको जीवनारकादीनां प्रथमः१, ततः-अनन्तरोपपन्नकः२, परम्परोपपन्नकः३, अनन्तरावगाढः४, परम्परावगाढः५ अनन्तराहारकः६ परम्पराहारकः७, अनन्तरपर्याप्तकः८, परम्परपर्याप्तकः९, चरमः१० अचरमश्च ११, इति। बन्धिशतका दत्रविशेष एतावानेव-यत् तत्र बन्धपदविशिष्टा उद्देशकाः, अत्र तु क्रियावाद्यादि पदविशिष्टा उद्देशका वक्तव्या इति। नवरं केवलम् अनन्तराः-अनन्तरोपपन्नादिकाश्चत्वारोऽपि एकगमकाः-सदृशालापकाः अनन्तरोपप-

की परिपाटी कही गई है 'सच्चेव इहं पि जाव अचरिमो उद्देसो' वही परिपाटी यहां पर भी उद्देशकों की 'जाव अचरिमो उद्देसो' यावत् अचरम उद्देशक तक जाननी चाहिये, जीव नारक आदिकों का जो प्रथम उद्देशक है वह औधिक उद्देशक है ? १ अनन्तरोपपन्नक नारकादिकों का द्वितीय उद्देशक २ परम्परोपपन्नक नारकादिकों का तृतीय उद्देशक हैं ६ अनन्तरावगाढ नामका चतुर्थ उद्देशक है, परम्परावगाढ नामका पांचवां उद्देशक है, अनन्तराहारक नामका छट्ठा उद्देशक हैं परम्पराहारक नामका सातवां उद्देशक है, अनन्तरपर्याप्त नामका आठवां उद्देशक है परम्परपर्याप्त नाम का नौवा उद्देशक है चरम नामका दसवां उद्देशक है और अचरम नाम का ग्यारहवां उद्देशक है। बन्धिशतक से यहां पर इतनी ही विशेषता हैं कि यहां क्रियावादी आदि पद विशिष्ट उद्देशक वक्तव्य हुए हैं और बन्धिशतक में बन्धि पद विशिष्ट

'सच्चेव इहं पि जाव अचरिमो उद्देसो' ઉદ્દેશાઓનો એજ ક્રમ 'जाव अचरमो उद्देसो' યાવત્ અચરમ ઉદ્દેશા સુધી સમજવું જીવ નારક વિગેરેના સંબંધમાં જે પહેલો ઉદ્દેશો છે, તે ઔધિક ઉદ્દેશો છે. ૧ અનંતરોપપન્નક જીવ નારક વિગેરે સંબંધી બીજો ઉદ્દેશો છે. ૨ પરંપરોપપન્નક જીવ નારક વિગેરેના સંબંધમાં ત્રીજો ઉદ્દેશો કહ્યો છે. ૩ અનંતરાવગાઢ નામનો ચોથો ઉદ્દેશો કહ્યો છે. ૪ પરંપરાવગાઢ નામનો પાંચમો ઉદ્દેશો કહ્યો છે ૫ અનંતરાહારક નામનો છઠ્ઠો ઉદ્દેશો કહ્યો છે. ૬ પરંપરાહારક નામનો સાતમો ઉદ્દેશો કહ્યો છે. ૭ અનંતરપર્યાપ્ત નામનો આઠમો ઉદ્દેશો કહ્યો છે. ૮ પરંપરપર્યાપ્ત નામનો નવમો ઉદ્દેશો કહ્યો છે. ૯ ચરમ નામનો દસમો ઉદ્દેશો કહેલ છે. અને અચરમ નામનો અગિયારમો ઉદ્દેશો કહ્યો છે.

બંધિશતક કરતાં અહિયાં એજ વિશેષપણું છે કે-અહિયાં ક્રિયાવાદી વિગેરે પદ વિશિષ્ટ-પદોથી યુક્ત ઉદ્દેશો કહેવો જોઇએ અને બંધિશતકમાં

मका जीवनारकादयः, इति द्वितीयः२, अनन्तरावगाढाः जीवनारकादय इति चतुर्थः४ । अनन्तराहारका जीव नारकादयः, इति षष्ठः६, अनन्तरपर्याप्ता जीव नारकादयः इत्यष्टमः८ । एवं क्रमेण चत्वारोऽनन्तरोद्देशका वक्तव्याः । 'परंपरा चत्तारि वि एक्कगमए णं' परम्पराः परम्परोपपन्नकादयश्चत्वारोऽपि उद्देशकाः एक गमकेन–सदृशालापकेन वक्तव्याः परम्परोपपन्नका जीवनारकादय इति तृतीयोद्देशकः । परम्परावगाढा जीवनारकादय इति पञ्चमोद्देशकः । परम्पराहारका जीव नारकादय इति सप्तमः, परम्परपर्याप्तका जीवनारकादय इति नवमः, इत्येवं क्रमेण चत्वारः परम्परका उद्देशकाः सर्वेऽपि एकरूपेण नेयाः । 'एवं चरिमा वि' एवं चरमोद्देशकः चरमाः खलु भदन्त ! नैरयिकाः क्रियावादिन एवं क्रमेण दशमोद्देशको ज्ञातव्यः । 'अचरिमा वि एवं चेव' अचरमा नारकादयः क्रियावादिनः किमित्यादिरूपेण एकादशोद्देशको नेयः । तदित्थ मेकादशाऽपि उद्देशकाः

उद्देशक वक्तव्य हुए हैं । अनन्तर शब्द घटित चारों उद्देशक एक गमक हैं–सदृश आलापवाले हैं। अनन्तर शब्द घटित चार उद्देशक द्वितीय उद्देशक, चतुर्थ उद्देशक, छट्ठा उद्देशक और आठवां उद्देशक–हैं। परम्पर शब्द घटित चारों उद्देशक एक गमक हैं–परम्पर शब्द घटित तृतीय उद्देशक, पंचम उद्देशक, सप्तम उद्देशक और नौवां उद्देशक ये चार उद्देशक हैं ।इसी प्रकार से चरम और अचरम पद–विशिष्ट उद्देशकों के सम्बन्ध में भी जानना चाहिये। यहां समस्त उद्देशकों में क्रियावादी अक्रियावादी आदि पदो को जोडकर आलापक प्रथम उद्देशक से लेकर ग्यारह वें उद्देशक तक के ११ ग्यारा उद्देशकों में कहना चाहिये । इस

બંધ પદવાળા ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ. અનંતરશબ્દથી યુક્ત ચારે ઉદ્દેશાઓ એક ગમકવાળા છે. અર્થાત્ સમાન આલાપકોવાળા છે. અનંતર શબ્દથી યુક્ત ચાર ઉદ્દેશાઓ-બીજો ઉદ્દેશો, ત્રીજો ઉદ્દેશો છઠો ઉદ્દેશો અને આઠમો ઉદ્દેશો, આ ચાર ઉદ્દેશાઓ છે. પરંપર શબ્દથી યુક્ત ચારે ઉદ્દેશાઓનો એક ગમ છે. તે આ પ્રમાણે છે.-ત્રીજો ઉદ્દેશો. પાંચમો ઉદ્દેશો, સાતમો ઉદ્દેશો અને નવમો ઉદ્દેશો છે આજ પ્રમાણે ચરમ અને અચરમ પદથી યુક્ત ઉદ્દેશાઓના સંબંધમાં પણ સમજવું. અહિયાં સઘળા ઉદ્દેશાઓમાં ક્રિયાવાદી અક્રિયાવાદી, વિગેરે પદોને જોડીને આલાપકો આ પ્રમાણે કહેવા જોઇએ-જેમકે-હે ભગવન્ ચરમ અથવા અચરમ નૈરયિકો વિગેરે શું ક્રિયાવાદી હોય છે? અથવા અક્રિયાવાદી હોય છે? અથવા અજ્ઞાનવાદી હોય છે? અથવા વૈનયિકવાદી હોય છે? આ પ્રકારથી અહિયાં પહેલા ઉદ્દેશાથી લઈને અગિયારમા ઉદ્દેશા સુધીના અગિયાર ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઇએ આ રીતે

संक्षेपविस्ताराभ्यामिह पूर्वप्रकारेण षड्विंशतितमबन्धिशतकोक्तेन वक्तव्याः। 'णवरं अलेस्सो केवली अजोगी न भन्नइ' नवरं केवलम् अलेश्यो जीवः केवली अयोगी चैते कुत्रापि उद्देशके नो भणितव्या एतेषामचरमत्वाभावेन प्रश्नानर्हत्वात् तत्प्रश्नोत्तरयोरप्रयोजनत्वाच्चेति। 'सेसं तं चेव' शेषम्-कथितजीवातिरिक्तं सर्वमपि वस्तु बन्धिशतकवदेव ज्ञातव्यम्। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति, हे भदन्त! जीवादीनां क्रियावाद्यादिविषये यद् देवानुप्रियेण कथितं तत्सर्वम् एवमेव सर्वथा सत्यमेव, इति कथयित्वा गौतमो

प्रकार छाईस २६ वें बन्धि शतक में जिस प्रकार उद्देशकों के कहने का कहा जा चुका है उसी प्रकार यहां भी संक्षेप और विस्तार से कहना चाहिये, यहां पर भी बंधिशतक के जैसे अचरम उद्देशक में अलेश्यों के सम्बन्ध में केवलियों के सम्बन्ध में, अयोगियों के सम्बन्ध में कोई प्रश्न उत्पन्न नहीं करना चाहिये क्यों कि वे अचरम नहीं होते हैं अतः ये सब प्रश्न यहां नहीं उठते है। 'सेसं तं चेव' बाकी का और सब कथन बन्धिशतक के ही जैसा है। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! जीवादिकों की क्रियावादिता आदिके विषयमें जो आप देवानुप्रियने कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है २ इस प्रकार कह कर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया,

---

२६ छव्वीसमां બંધી શતકમાં ઉદ્દેશાઓ કહેવાના સંબંધમાં જે પ્રકાર કહેલ છે, એજ પ્રમાણેનો પ્રકાર અહિયાં પણ સંક્ષેપથી અને વિસ્તારથી કહેવો જોઈએ. અહિયાં લેશ્યાના સંબંધમાં કેવલિયોના સંબંધમાં, અયોગીના સંબંધમાં કાંઈપણ પ્રશ્ન કરવો ન જોઈએ. કેમ કે-કૃતકૃત્ય હોવાથી આ બધા પ્રશ્નો તેઓના સંબંધમાં ઉપસ્થિત થતા નથી. 'सेसं तं चेव' બાકીનું બીજુ તમામ કથન બંધી શતકના કથન પ્રમાણે જ છે. તેમ સમજવું.

सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ જીવ વિગેરના ક્રિયાવાદિ પણા વિગેરેના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્! આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે, આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા. વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા

भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विह-रतीति । 'एए एक्कारस वि उद्देसगा' एते एकादशापि उद्देशकाः सन्तीति ।सू०१।

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक-श्रीशाहूछत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित—कोल्हापुरराजगुरु-बाल-
ब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्य श्री
घासीलालव्रतिविरचितायां श्री "भग
वतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां-
व्याख्यायां त्रिंशत्तमे शतके चतुर्थो-
देशकः समाप्तः ॥३०-४॥

इति त्रिंशत्तमं समवसरणशतं समाप्तम् ॥३०॥

वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थानपर विराजमान हो गये 'एए एक्कारस उद्देसगा' इस प्रकार से ११ उद्देशक पर्यन्त के उद्देशकों समजलेने चाहिए ॥सू०१॥

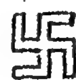
जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजी महाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके तीसवें शतकका
॥ चौथा उद्देशक समाप्त ॥ ३०-१॥

॥३० वां शतक समाप्त ॥

थया पोताना स्थानपर बिराजमान थया. 'एए एक्कारस उद्देसगा' आ रीते अगियार उद्देशाओ कह्या छे. ॥सू०१॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजी महाराजकृत "भगवतीसूत्र"नी प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याना त्रीसमा शतकनो चोथो उद्देशो समाप्त ॥३०-४॥

॥ त्रीसमुं शतक समाप्त ॥३०-४॥



अथ एकत्रिंशत्तमशतकम्

अथ प्रथमोद्देशकः प्रारभ्यते

त्रिंशत्तमशतकान्ते चत्वारि समवसरणानि कथितानीति चतुष्टयसाधर्म्यात् चतुर्युग्मवक्तव्यतानुगतमष्टाविंशत्युद्देशकयुक्तमेकत्रिंशत्तमं शतमारभते, तदनेन सम्बन्धेनायातस्यैकत्रिंशत्तमशतकस्य प्रथमोद्देशकगतमिदमादिमं सूत्रम्—'रायगिहे जाव' इ.

मूलम्—रायगिहे जाव एवं वयासी—कइ णं भंते! खुड्डा जुम्मा पन्नत्ता? गोयमा! चत्तारि खुड्डा जुम्मा पन्नत्ता तं जहा कडजुम्मे१, तेओए२, दावरजुम्मे३, कलिओगे४। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ चत्तारि खुड्डा जुम्मा पन्नत्ता तं जहा कडजुम्मे जाव कलिओगे? गोयमा! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए से त्तं खुड्डाग कडजुम्मे१, जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे त्ति पज्जवसिए से त्तं खुड्डागतेओगे२, जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए से त्तं खुड्डागदावरजुम्मे३, जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए से त्तं खुड्डाग कलिओगे४, से तेणट्ठेणं जाव कलिओगे। खुड्डाग कडजुम्मनेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति किं नेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिक्ख० पुच्छा, गोयमा! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति। एवं नेरइयाणं उववाओ जहा वक्कंतीए तहा भाणियव्वो। ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति? गोयमा! चत्तारि वा, अट्ठ वा, बारस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा उववज्जंति। ते णं भंते! जीवा कहं उववज्जंति? गोयमा! से जहानामए पवए पवमाणे अज्झवसाण० एवं जहा पंचवीसइमे सए अट्ठम उद्देसए नेरइयाणं वत्तव्वया तहेव इह वि भाणियव्वा जाव आयप्पयोगेणं उववज्जंति, नो परप्पयोगेणं उववज्जंति। रयणप्पभापुढवी खुड्डाग कडजुम्म नेरइया णं भंते! कओ उवव-

ज्जंति एवं जहा ओहिय नेरइयाणं वत्तव्वया सच्चेव रयणप्पभाए वि भाणियव्वा जाव न परप्पयोगेणं उववज्जंति। एवं सक्करप्पभाए वि, जाव अहे सत्तमाए, एवं उववाओ जहा वक्कंतीए। 'असन्नी खलु पढमं, दोच्चं व सरीसवा तइयपक्खी'। गाहाए उववाएयव्वा सेसं तहेव। खुड्डागतेयोग नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति किं नेरइएहिंतो? उववाओ जहा वक्कंतीए। तेणं भंते! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति? गोयमा! तिन्नि वा, सत्त वा, एक्कारस वा, पन्नरस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा उववज्जंति। सेसं जहा कडजुम्मस्स, एवं जाव अहे सत्तमाए। खुड्डाग दावरजुम्मनेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति? एवं जहेव खुड्डाग कडजुम्मा। नवरं परिमाणं दो वा, छ वा, दस वा, चोद्दस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, सेसं तं चेव जाव अहे सत्तमाए। खुड्डाग कलियोग नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति एवं जहेव खुड्डागकडजुम्मा। नवरं परिमाणं एक्को वा पंच वा नव वा तेरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति, सेसं तं चेव एवं जाव अहे सत्तमाए। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ ॥सू० १॥

एक्कतीसइमे सए पढमो उद्देसो समत्तो ॥३१-१॥

छाया--राजगृहे यावदेवमवादीत् कति खलु भदन्त! क्षुद्राः युग्माः प्रज्ञप्ताः? गौतम! चत्वारः क्षुद्रा युग्माः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-कृतयुग्मः१, त्र्योजः२, द्वापरयुग्मः३, कल्योजः४। तत्केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते चत्वारः क्षुद्रयुग्माः प्रज्ञप्ताः तद्यथा कृतयुग्मो यावत् कल्योजः, गौतम! यः खलु राशिः चतुष्केणापहारेणापहियमाणः चतुःपर्यवसितो भवति स एष क्षुद्रकृतयुग्मः१। यः खलु राशिश्चतुष्केणापहारेणापहियमाण स्त्रिः पर्यवसितः स एष क्षुद्रत्र्योजः२। यः राशिश्चतुष्केणापहारेण अपहियमाणो द्विपर्यवसितः स एष क्षुद्रद्वापरयुग्मः३। यः खलु राशिश्चतुष्केणापहारेणापह्रियमाण एकपर्यवसितः, स एष क्षुद्रकल्योजः४, तत्तेनार्थेन यावत् कल्योजः। क्षुद्रकृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? किं

नैरयिकेभ्य उत्पद्यन्ते ? तिर्यग्भ्यः ? पृच्छा, गौतम ! नो नैरयिकेभ्य उत्पद्यन्ते। एवं नैरयिकाणामुपपातो यथा व्युत्क्रान्तौ तथा भणितव्यः। ते खलु भदन्त ! जीवा एकसमयेन कियन्त उत्पद्यन्ते ? गौतम ! चत्वारो वा अष्टौ वा द्वादश वा षोडश वा, संख्याता वा असंख्याता वा उत्पद्यन्ते। ते खलु भदन्त ! जीवाः कथमुत्पद्यन्ते ? गौतम ! स यथानामकः प्लवकः प्लवमानः अध्यवसाय० एवं यथा पञ्चविंशतितमे शते अष्टमोद्देशके नैरयिकाणां वक्तव्यता तथैव इहापि भणितव्या, यावदात्मप्रयोगेण उत्पद्यन्ते नो परप्रयोगेण उत्पद्यन्ते। रत्नप्रभा पृथिवी क्षुद्रकृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? एवं यथा औधिक नैरयिकाणां वक्तव्यता सैव रत्नप्रभायामपि भणितव्या यावत् नो परप्रयोगेण उत्पद्यन्ते। एवं शर्कराप्रभायामपि यावदधःसप्तम्याम्, एवमुपपातो यथा व्युत्क्रान्तौ। 'असंज्ञी खलु प्रथमां द्वितीयां सरीसृपाः तृतीयां पक्षिणः' गाथया उपपातयितव्याः शेषं तथैव। क्षुद्रत्र्योज नारकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? किं नैरयिकेभ्यः ? उपपातो यथा व्युत्क्रान्तौ। ते खलु भदन्त ! जीवा एकसमयेन कियन्त उत्पद्यन्ते ? गौतम ! त्रयो वा, सप्त वा, एकादश वा, पञ्चदश वा, संख्येया वा, असंख्येया वा उत्पद्यन्ते। शेषं यथा कृतयुग्मस्य, एवं यावत् अधःसप्तम्याम्। क्षुद्रद्वापरयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते एवं यथैव क्षुद्रकृतयुग्माः। नवरं परिमाणं द्वौ वा, षड् वा, दश वा, चतुर्दश वा, संख्येया वा, असंख्येया वा, शेषं तदेव यावदधः सप्तम्याम्। क्षुद्रकल्योजनैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? एवं यथैव क्षुद्रकृतयुग्मा नवरं परिमाणम् एको वा, पञ्च वा, नव वा, त्रयोदश वा, संख्येया वा, असंख्येया वा, उत्पद्यन्ते, शेषं तदेव। एवं यावदधः सप्तम्याम्। तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति यावद्विहरति ॥सू० १॥

एकतीसवें शतक का पहेला उद्देशक का प्रारंभ--

तीसवें शतक के अन्त में चार समवसरण कहे गये हैं इसलिये चतुष्टय के साधर्म्य से चतुर्युग्म की वक्तव्यता को लेकर अट्ठाईस उद्देशकों से युक्त एकतीसवां शतक, सूत्रकार प्रारम्भ करते हैं, जिसके

એકત્રીસમા શતકનો પ્રારંભ—

પહેલો ઉદ્દેશો.

ત્રીસમા શતકના અંતમાં ચાર સમવસરણો કહેવામાં આવ્યા છે. તેથી ચારપણાના સાધર્મ્યથી ચારપણાવાળા અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓવાળા એકત્રીશમા

टीका--'रायगिहे जाव एवं वयासी' राजगृहे यावदेवमवादीत् यावत्पदेन भगवतः समागमनमभूत् परिषन्निर्गता, भगवता धर्मोपदेशः कृतः परिषत्प्रतिगता, ततो गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा पर्युपासीनः प्राञ्जलिपुटो गौतमः; एतदन्तप्रकरणस्य संग्रहो भवति। किमवादीत्? तत्राह-'कइ णं' इत्यादि, 'कइ णं भंते! खुड्डा जुम्मा पन्नत्ता' कति खलु भदन्त! क्षुद्रा युग्माः प्रज्ञप्ताः? ते च महान्तोऽपि भवन्त्यतः क्षुल्लकशब्देन विशेषिताः तत्र चत्वारोऽष्टौ द्वादशेत्यादि संख्यावान् राशिः क्षुल्लकः कृतयुग्मोऽभिधीयते।

प्रथम उद्देशक का यह आदि सूत्र है- 'रायगिहे जाव एवं वयासी'- इत्यादि सूत्र ॥१॥

टीकार्थ-'रायगिहे जाव एवं वयासी' राजगृह नगर में यावत् इस प्रकार से पूछा यहां यावत्पद से ऐसा प्रकरण गृहीत हुआ है-भगवान् महावीरस्वामी यहां पर पधारे, परिषदा धर्मोपदेश सुनने के लिये अपने-अपने स्थान से उनके पास आई, भगवान् ने धर्मोपदेश दिया, धर्मोपदेश सुनकर सभा विसर्जित हो गई, तब गौतम ने भगवान् को वन्दना की नमस्कार किया, वन्दना नमस्कार करके फिर गौतमस्वामीने प्रभुश्री की पर्युपासना करते हुए दोनों हाथ जोडकर ऐसा पूछा-क्या पूछा? सो प्रकट किया जाता है-'कइ णं भंते! खुड्डा जुम्मा पन्नत्ता' हे भदन्त! क्षुद्रयुग्म कितने कहे गये है? ये बडे भी होते हैं। इसलिये यहां क्षुल्लक शब्द से इन्हें विशेषित किया गया है। इस प्रकार जो लघु संख्यावाली राशि विशेष है वह क्षुद्रकृतयुग्म है। चार, आठ, बारह

શકતનો સૂત્રકાર પ્રારંભ કરે છે—'रायगिहे जाव एवं वयासी' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—'रायगिहे जाव एवं वयासी' રાજગૃહ નગરમાં ભગવાન્ મહાવીરસ્વામીનું સમવસરણ થયું પરિષદ ભગવાનને વંદના કરવા નગરની બહાર નીકળી ભગવાનની સમીપે આવી, ભગવાને તેઓને ધર્મદેશના સંભળાવી ધર્મદેશના સાંભળીને પરિષદાએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા. વંદના નમસ્કાર કરીને પરિષદા પોતપોતાના સ્થાને પાછી ગઈ તે પછી ગૌતમસ્વામીએ ભગવાનને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને પ્રભુશ્રીની પર્યુપાસના કરતાં થકા ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને આ પ્રમાણે પૂછયું—'कइणं भंते! खुड्डा जुम्मा पन्नत्ता' હે ભગવન્ ક્ષુદ્રયુગ્મ કેટલા કહેલ છે? સમરાશીને યુગ્મ કહેવામાં આવે છે, અને તે મોટા પણ હોય છે. તેથી અહિયા ક્ષુલ્લક શબ્દથી તેને કહેલ છે. આ રીતે જે લઘુ સંખ્યાવાળી રાશી વિશેષ હોય તે ક્ષુદ્રયુગ્મ છે ચાર, આઠ, બાર, વિગેરે સંખ્યાવાળી રાશી ક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મ છે.

भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'चत्तारि खुड्डा जुम्मा पन्नत्ता' चत्वारः क्षुद्रा युग्माः प्रज्ञप्ताः 'तं जहा' तद्यथा 'कडजुम्मे' कृतयुग्म नामको राशिविशेषः । 'तेयोए' त्र्योजः 'दावरजुम्मे' द्वापरयुग्मः 'कलियोए' कल्योजः । 'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ' तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते 'चत्तारि खुड्डा जुम्मा पन्नत्ता' चत्वारः क्षुद्रा युग्माः प्रज्ञप्ताः 'तं जहा' तद्यथा 'कडजुम्मे जाव कलिओगे' कृतयुग्मो यावत् कल्योजः, अत्र यावत्पदेन त्र्योज द्वापरयुग्मयोः संग्रहः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए' यः खलु राशिः समुदायः चतुष्केणापहारेण चतुःसंख्यया विभज्यमानः चतुःपर्यवसितः चतुरवशिष्टो भवेत् 'से त्तं खुड्डागकडजुम्मे' स एषः क्षुल्लककृतयुग्मः 'जे णं रासी चउक्केण अवहारेणं अवहीरमाणे ति पज्जवसिए सेत्तं खुड्डाग

आदि संख्यावाली राशि क्षुल्लक कृतयुग्म है । उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! चत्तारि खुड्डा जुम्मा पन्नत्ता' हे गौतम ! क्षुद्रयुग्मराशि चार प्रकार की कही गई है-'तं जहा' जैसे-कडजुम्मे' 'कृतयुग्म 'तेयोए' त्र्योज 'दावरजुम्मे' द्वापरयुग्म, 'कलियोए' और कल्योज, 'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ चत्तारि खुड्डा जुम्मा पण्णत्ता' हे भदन्त ! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि क्षुद्रयुग्म चार प्रकार के कहे गये हैं ? और वे ऐसे आपने बतलाये हैं-कृतयुग्म यावत् कल्योज । यहां यावत् पद से त्र्योज और द्वापरयुग्म का ग्रहण हुआ है । उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए' हे गौतम ! जिस राशि में से चार चार का अपहार करते-करते अन्त में चार बचे रहे ऐसी वह संख्या क्षुद्र कृतयुग्म कही गई है ।

આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! चत्तारि खुड्डा जुम्मा पन्नत्ता' હે ગૌતમ ! ક્ષુદ્રયુગ્મરાશી ચાર પ્રકારની કહેલ છે, 'तं जहा' તે આ પ્રમાણે છે.-'कडजुम्मे' કૃતયુગ્મ 'तेयोए' ત્ર્યોજ 'दावरजुम्मे' દ્વાપરયુગ્મ 'कलियोए' અને કલ્યોજ 'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ चत्तारि खुड्डा जुम्मा पण्णत्ता' હે ભગવન્ આપ એવું શા કારણથી કહો છો કે-ક્ષુદ્રયુગ્મ ચાર પ્રકારના કહ્યા છે ? અને તે કૃતયુગ્મ ત્ર્યોજ દ્વાપર અને યાવત કલ્યોજ સુધી આપે કહ્યા પ્રમાણે ના કહેલા છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए' હે ગૌતમ ! જે રાશીમાં ચાર ચારનો અપહાર કરતાં કરતા છેવટે ચાર બચે એવી સંખ્યાને ક્ષુદ્રકૃતયુગ્મ કહેવામાં આવેલ છે.

तेओए' यः खलु राशिः चतुष्केण अपहारेण अपह्रियमाणस्त्रिपर्यवसितो भवेत् स एष क्षुल्लक त्र्योजः। 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए' यः खलु राशिश्चतुष्केणापहारेणापह्रियमाणो द्विपर्यवसितो भवेत् 'सेत्तं खुड्डागदावरजुम्मे' स एष क्षुल्लकद्वापरयुग्मः 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए सेत्तं खुड्डाग कलिओगे' यः खलु राशिः चतुष्केणापहारेण अपह्रियमाण एक पर्यवसितो भवेत् स एष क्षुल्लक कल्योजः 'से तेणट्ठेणं जाव कलिओगे' तत्तेनार्थेन गौतम! एवमुच्यते चत्वारः क्षुल्लक युग्माः, तद्यथा–कृतयुग्मत्र्योजो द्वापरयुग्मः कल्योज इति। 'खुड्डाग कडजुम्म नेरइयाणं भंते' क्षुल्लककृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त! 'कओ उववज्जंति'

'जे णं रासी चउक्केणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए सेत्त खुड्डागतेओए' जिस संख्या में से चार–चार का अपहार करते–२ अंत में तीन बचें ऐसी वह संख्या क्षुल्लक त्र्योज कही गई है। 'जे णं रासी चउक्केणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए सेत्तं खुड्डागदावरजुम्मे' जिस संख्या में से चार–चार का अपहार करते–करते अन्त में दो बचे रहे ऐसी वह संख्या क्षुल्लक द्वापरयुग्म है। 'जे णं रासी चउक्केणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए सेत्तं खुड्डागकलिओगे' तथा जिस संख्या में से चार–२ का अपहार करते २ अन्त में एक बचा रहे ऐसा वह संख्या क्षुद्र कल्योज है। 'से तेणट्ठेणं जाव कलिओगे' इस कारण हे गौतम! मैंने ऐसा कहा है कि क्षुल्लक युग्म कृतयुग्म से लेकर कल्योज तक के भेद से चार प्रकारका होता है।

'जेणं रासी चउक्केणं अवहारेणं अवहीरमाणे त्ति पज्जवसिए सेत्त खुड्डागतेओए' જે સંખ્યામાં ચાર ચારનો અપહાર કરતાં (ભાગાકાર કરતાં કરતાં) છેવટે ત્રણ બચે એવી સંખ્યાને ક્ષુલ્લક ત્ર્યોજ કહેલ છે 'जेणं रासी चउक्केणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए से त्तं खुड्डागदावरजुम्मे' જે સંખ્યામાંથી ચાર–ચાર ઓછા કરતાં કરતાં અન્તમાં બે બચે તેની સંખ્યાને ક્ષુલ્લકદ્વાપર યુગ્મ કહે છે. 'जे णं रासी चउक्केणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए सेत्तं खुड्डागकलिओगे' તથા જે સંખ્યામાંથી ચાર ચારનો અપહાર કરતાં કરતાં અન્તમાં એક બચે એવી તે સંખ્યાને ક્ષુદ્રકલ્યોજ કહેવાય છે. 'से तेणट्ठेणं जाव कलिओगे' તે કારણથી હે ગૌતમ! મેં એવું કહ્યું છે કે-ક્ષુલ્લકયુગ્મ, કૃતયુગ્મથી લઈને કલ્યોજ સુધીના ભેદથી ચાર પ્રકારનો હોય છે.

कुतः-कस्मात्स्थानविशेषादागत्य नरकावासे उत्पद्यन्ते 'किं नेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिक्खजोणिएहिंतो पुच्छा' किं नैरयिकेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते किं वा तिर्यग्योनिकेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते मनुष्येभ्यो वा आगत्योत्पद्यन्ते देवेभ्यो वा आगत्योत्पद्यन्ते इति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'नो नेरइएहिंतो उववज्जंति' नो नैरयिकेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते क्षुल्लककृतयुग्मनैरयिकाः 'एवं नेरइयाणं उववाओ जहा वक्कंतीए तहा भाणियव्वो' एवं नैरयिकाणामुपपातो यथा व्युत्क्रान्तौ प्रज्ञापनायाः षष्ठे पदे कथित स्तथैव इहापि भणितव्यः प्रज्ञापनायाः षष्ठपदे अर्थात् एवं प्रतिपादितम्-नारका न नैरयिकेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते न वा देवेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते किन्तु पञ्चेन्द्रिय-

---

'खुड्डाग कडजुम्मनेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' हे भदन्त ! क्षुद्र कृतयुग्मराशि प्रमाण नैरयिक कहां से-किस स्थान विशेष से-आकर के उत्पन्न होते हैं-नरकावासमें से जन्म लेते हैं-'किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो पुच्छा' क्या नैरयिकों में से आकर के जन्म लेते हैं ? या तिर्यग्योनिकों में से आकर के जन्म लेते हैं ? या मनुष्यों में से आकर के जन्म लेते हैं ? या देवों में से आकर के जन्म लेते हैं ? उत्तरमें प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति' क्षुद्र कृतयुग्मराशि प्रमाण नैरयिक नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न नहीं होते हैं 'एवं नेरइयाणं उववाओ जहा वक्कंतीए तहा भाणियव्वो' इस प्रकार से नैरयिकों के उत्पाद जैसा प्रज्ञापना के छट्ठे पद रूप व्युत्क्रान्ति पदमें कहा गया है वैसा ही यहां पर कहना चाहिये-तथाच-नारक न नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं, न देवो में से

'खुड्डागकडजुम्मनेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' હે ભગવન્ ! ક્ષુદ્રકૃત યુગ્મરાશિવાળા નૈરયિકો ક્યાંથી એટલે કે કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? 'किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्ख० पुच्छा' શું નૈરયિકોમાંથી આવીને જન્મ લે છે ? અથવા તિર્યંચ યોનિકોમાંથી આવીને જન્મ લે છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને જન્મ લે છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને જન્મ લે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! नो नेरइएहिंतो ! उववज्जंति' ક્ષુદ્રકૃતયુગ્મરાશી પ્રમાણ નૈરયિકો, નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થતા નથી 'एवं नेरइयाणं उववाओ जहा वक्कंतीए तहा भाणियव्वो' આ પ્રમાણે નૈરયિકોનો ઉત્પાદ જે પ્રમાણે પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના છઠ્ઠા વ્યુત્ક્રાન્તિપદમાં કહેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં કહેવો જોઈએ અર્થાત્ નારક નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થતા નથી. તથા દેવોમાંથી આવીને પણ

तिर्यग्योनिकेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते नारकाः, तथा गर्भजमनुष्येभ्य आगत्योत्पद्यन्ते नारका इति। 'तेणं भंते! जीवा एगसमएण केवइया उववज्जंति' ते खलु भदन्त! क्षुल्लककृतयुग्मनारक जीवा एकसमयेन-एकस्मिन् समये इत्यर्थः कियन्तः-कियत्संख्यका उत्पद्यन्ते? इति प्रश्नः परिमाणविषयकः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'चत्तारि वा, अट्ठ वा, बारस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा उववज्जंति' चत्वार स्ताहशा नारका एकसमयेन उत्पद्यन्ते, अष्टौ वा, द्वादश वा, षोडश वा, संख्याता वा, असंख्याता वा तादृशा नारकाः एकसमयेन समुत्पद्यन्ते इति। 'तेणं भंते! जीवा कहं उववज्जंति' ते खलु क्षुल्लककृतयुग्मनारकजीवा नरकावासे कथं केन प्रकारेण उत्पद्यन्ते? इति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'से जहा नामए पवए पवमाणे' स यथा नामकः प्लवकः-कूर्दकः उच्छलनशीलः कोऽपि

आकर के उत्पन्न होते हैं, किन्तु पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं तथा-गर्भज मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं 'ते णं भंते! जीवा एग समएणं केवइया उववज्जंति' हे भदन्त! क्षुल्लक कृतयुग्म प्रमाण नारक एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! चत्तारि वा, अट्ठ वा, बारस वा सोलस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा उववज्जंति' हे गौतम! क्षुल्लक कृयुतग्म प्रमाण नारक एक समय में चार या आठ या बारह या सोलह या संख्यात या असंख्यात उत्पन्न होते हैं। 'तेणं भंते! जीवा कहं उववज्जंति' हे भदन्त! वे क्षुल्लक कृतयुग्म प्रमाण नैरयिक जीव नरकावास में किस प्रकार से उत्पन्न होते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! से जहा नामए पवए पवमाणे०' जैसे कोई कूदनेवाला व्यक्ति कूदता

ઉત્પન્ન થતા નથી. પરંતુ પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે. તથા ગર્ભજ મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે. 'તે णं भंते! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति' હે ભગવન્ ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ પ્રમાણવાળા નારક એક સમયમાં કેટલા ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'चत्तारि वा अट्ठ वा बारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति' હે ગૌતમ! ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ પ્રમાણ નારક એક સમયમાં ચાર અથવા આઠ અથવા બાર અથવા સોળ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત ઉત્પન્ન થાય છે. 'ते णं भंते जीवा कहं उववज्जंति' હે ભગવન્ તે ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ પ્રમાણ નૈરયિક જીવ નરકાવાસમાં કઈ રીતે ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा! से जहा नामए पवए पवमाणे' જેમ કોઈ કૂદવાવાળો પુરૂષ કૂદતો

प्लवमानः—उत्प्लवमानः कूर्दन् सः 'अज्झवसाण०' इत्यादि, 'एवं जहा पंचवीसइमे सए अट्ठम उद्देसए' इत्यादि, एवं यथा पञ्चविंशतितमे शतेऽष्टमोद्देशके, इत्यादि, तथाहि—अध्यवसाययोगनिर्वर्त्तितेन करणोपायेन प्लवमानाः प्लवकाइव भविष्यत्काले तं भवं परित्यज्य पुरतोऽग्रेतनं भवमुपसंपद्य विहरन्ति। तेषां खलु भदन्त! जीवानां कथं शीघ्रा गतिः? कथं च शीघ्रो गति विषयः प्रज्ञप्तः? गौतम! तद्यथा नामकः कश्चित्पुरुषः तरुणो बलवान् यावत् त्रिसमयेन वा विग्रहेणोत्पद्यन्ते तेषां जीवानां नारकाणां तथा शीघ्रा गतिः प्रवर्त्तते तथा शीघ्रो गतिविषयः प्रज्ञप्तः।

हुआ अपने पूर्वके स्थान को छोड़कर आगे के स्थान को प्राप्त करता है—इसी प्रकार से नारक भी पूर्वके भव को छोड़कर अध्यवसाय रूप कारण के वशसे आगामी नारक के भवको प्राप्त करते हैं 'एवं जहा पंचवीसइमे सए अट्ठम उद्देसए०' इत्यादि रूप से पच्चीसवें शतक के आठवें उद्देशक में 'नेरइयाणं वत्तव्वया तहेव इह वि भाणियव्वा जाव आयप्पओगेणं उववज्जंति नो परप्पओगेणं उववज्जंति' नैरयिकों के सम्बन्ध में जो वक्तव्यता कही गई है वही वक्तव्यता यहां पर भी कहनी चाहिये यावत् वे आत्मप्रयोग से उत्पन्न होते हैं परप्रयोगसे उत्पन्न नहीं होते हैं। 'हे भदन्त! उन जीवों की शीघ्र गति कैसी है? और उस शीघ्र गतिका विषय कैसा होता है? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—'गौतम! जैसे कोई तरूण बलवान् पुरुष चौदहवें शतक में प्रथम उद्देशक में कहे अनुसार हो यावत् तीन समयवाले विग्रह से वे नारक उत्पन्न होते है, इस प्रकार की शीघ्र गति उन नारक जीवों की होती है। और ऐसा ही उनकी

કૂદતો પોતાના પહેલાના સ્થાનને છોડીને આગળના સ્થાનને પ્રાપ્ત કરે છે, એજ પ્રમાણે નારક પણ પૂર્વભવને છોડીને અધ્યવસાય રૂપ કારણને વશ થઈને આવનારા નારક ભવને પ્રાપ્ત કરે છે. 'एवं जहा पंचवीसइमे सए अट्ठमउद्देसए' વિગેરે પ્રકારથી પચ્ચીસમા શતકના આઠમા ઉદ્દેશામાં 'नेरइयाणं वत्तव्वया तहेव इहवि भाणियव्वा जाव आयप्पओगेण उववज्जंति नो परप्पओगेणं उववज्जंति' નૈરયિકોના સંબંધમાં જે કથન કરવામાં આવેલ છે, એજ કથન અહિયાં પણ કહેવું જોઈએ. યાવત્ તેઓ આત્મ પ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે. પર પ્રયોગથી ઉત્પન્ન થતા નથી. હે ભગવન્ તે જીવોનું શીઘ્રગમન કેવું હોય છે? અને તે શીઘ્રગમનનો વિષય કેટલો ને કેવો હોય છે? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે હે ગૌતમ! ચૌદમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે એટલે કે—જેમ કોઈ યુવાન બલશાલી પુરૂષ હોય યાવત્ ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી તે નારકો ઉત્પન્ન થાય છે. આ રીતની શીઘ્રગતિ તે નારક જીવોની હોય છે, અને

ते खलु भदन्त ! नारका जीवाः कथं परभवायुष्कं प्रकुर्वन्ति ? गौतम ! अध्यवसा-
ययोगनिर्वर्त्तितेन करणोपायेन, एवं खलु ते नारकाः परभवायुष्कं प्रकुर्वन्ति।
तेषां नारकाणां खलु भदन्त ! कथं गतिः प्रवर्त्तते ? गौतम ! आयुःक्षयेण भव-
क्षयेण स्थितिक्षयेण एवं खलु तेषां नारकाणां गतिः प्रवर्त्तते। ते खलु नारकजीवाः
किमात्मद्धर्या समुत्पद्यन्ते परद्धर्या वा समुत्पद्यन्ते ? गौतम ! आत्मद्धर्या समुत्पद्यन्ते
नो परद्धर्या समुत्पद्यन्ते। ते खलु भदन्त ! नारकाः किमात्मकर्मणा समुत्पद्यन्ते
परकर्मणा वा समुत्पद्यन्ते ? गौतम ! आत्मकर्मणा समुत्पद्यन्ते नो परकर्मणा समु
त्पद्यन्ते। ते खलु भदन्त ! नारकाः किमात्मप्रयोगेण उत्पद्यन्ते ? परप्रयोगेण उत्प-

---

शीघ्र गतिका विषय होता है। हे भदन्त ! नारक जीव परभवीय आयुष्क का बन्ध कैसे करते हैं ? गौतम ! अध्यवसाय योग से निर्वर्तित करणोपाय से वे नारक परभव की आयुष्य का बन्ध करते हैं। अर्थात् हिंसादि अशुभ परिणाम से नारक आयुष्य का बन्ध करते हैं। हे भदन्त ! उन नारकों की गति किस कारण से होती है ? हे गौतम ! उन नारक जीवों की गति आयु के क्षयसे, भव के क्षय से और स्थिति के क्षय से होती है। वे नारक जीव क्या आत्मर्द्धि से उत्पन्न होते हैं ? या परर्द्धि से उत्पन्न होते हैं। हे गौतम ! वे नारक जीव आत्मर्द्धि (आत्म शक्ति) से उत्पन्न होते हैं परर्द्धि से उत्पन्न नहीं होते हैं। हे भदन्त ! वे नारक क्या आत्मकर्म से उत्पन्न होते है ? या परकर्म से उत्पन्न होते हैं ? गौतम वे नारक आत्मकर्म से उत्पन्न होते हैं, परकर्म से उत्पन्न नहीं होते हैं हे भदन्त ! वे नारक क्या आत्मप्रयोग से उत्पन्न होते है ? या परप्रयोग से उत्पन्न होते हैं ? हे

તેઓની શીઘ્રગતિનો વિષય એવો જ હોય છે હે ભગવન્ નારક જીવ પરભવના આયુષ્યનો બંધ કેવી રીતે કરે છે ? હે ગૌતમ ! અધ્યવસાય યોગથી નિવર્તિત કરવાના ઉપાયથી તે નારકો પરભવ આયુષ્યનો બંધ કરે છે. અર્થાત્ હિંસા વિગેરે અર્થાત્ પ્રાણાતિપાત વિગેરે અશુભ પરિણામથી નારક આયુનો બંધ કરે છે. હે ભગવન તે નારકોની ગતિ કયા કારણથી થાય છે ? હે ગૌતમ ! તે નારક જીવોની ગતિ આયુનો ક્ષયથવાથી ભવનો ક્ષય થવાથી અને સ્થિતિનો ક્ષય થવાથી થાય છે. તે નારક જીવો આત્મઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા અન્યની ઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ ! તે નારક જીવો આત્મઋદ્ધિ (આત્મ શકિત)થી ઉત્પન્ન થાય છે. અન્યની શકિતથી ઉત્પન્ન થતા નથી. હે ભગવન્ તે નારકો શું આત્મકર્મથી ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા પરકર્મથી ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ ! તે નારકો આત્મકર્મથી ઉત્પન્ન થાય છે, પર કર્મથી ઉત્પન્ન થતા નથી. હે ભગવન્ તે નારકો શું આત્મપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે ?

द्यन्ते ? गौतम ! आत्मप्रयोगेणोत्पद्यन्ते नो परप्रयोगेण उत्पद्यन्ते । इत्यादिकं सर्वं पञ्चविंशति शतकीयाष्टमोदेशके नैरयिकाणां यथा वक्तव्यता तथैव इहापि नारकाणां वक्तव्यता ज्ञातव्या एतदाशयेनाह-'एवं जहा' इत्यादि, 'एवं जहा पंचवीसइमे सए नेरइयाणं वत्तव्वया तहेव इह वि भाणियव्वा जाव आयप्पओगेण उववज्जंति णो परप्पयोगेण उववज्जंति' एवं यथा पञ्चविंशतितमे शते अष्टमोद्देशके नैरयिकाणां वक्तव्यता तथैवेहापि भणितव्या कियत्पर्यन्तं पञ्चविंशतिशतकीयाष्टमोद्देशकस्य नारकवक्तव्यता इहाध्येतव्या तत्राह-'जाव' इत्यादि । यावदात्मप्रयोगेणोत्पद्यन्ते नो परप्रयोगेणोत्पद्यन्ते, एतत्पर्यन्तं पूर्वं वक्तव्यता वक्तव्येति । सामान्यतः क्षुल्लक कृतयुग्मप्रमाणकनारकाणामुत्पातादिकं प्रदर्श्य विशेषतः क्षुद्रकृतयुग्मादि नारकाणां वक्तव्यतां दर्शयन् प्राह-'रयणप्पभाए' इत्यादि, 'रयणप्पभा पुढवी खुड्डाग कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' रत्नप्रभापृथिवी क्षुल्लककृतयुग्म-

---

गौतम ! वे नारक आत्मप्रयोग से उत्पन्न होते हैं परप्रयोग से उत्पन्न नहीं होते हैं । इत्यादि सर्व कथन २५ वें शतक के आठवें उद्देशक में नैरयिकों के सम्बन्ध में जिस प्रकार कहा गया है सो वही सब यहां पर भी कहना चाहिये । इसीलिये सूत्रकार ने 'एवं जहा पंचवीसइमे सए नेरइयाणं वत्तव्वया तहेव इहवि भाणियव्वा जाव आयप्पओगेण उववज्जंति णो परप्पओगेण उववज्जंति 'ऐसा सूत्रपाठ कहा है । इस प्रकार सामान्यतः क्षुल्लक कृतयुग्म प्रमाणवाले नारकों का उत्पाद आदि प्रकार कह कर अब विशेषतः क्षुद्र कृतयुग्मादि प्रमाणवाले नारकों की वक्तव्यता को दिखाने के निमित्त सूत्रकार कहते हैं-इसमें गौतम ने प्रभुश्री से ऐसा पूछा है-'रयणप्पभा पुढवी खुड्डाग कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' हे भदन्त ! क्षुद्र कृतयुग्मराशि प्रमाणवाले रत्नप्रभा

કે પર પ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ ! તે નારકો આત્મ પ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે, પરપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થતા નથી. વિગેરે તમામ કથન પચ્ચીસમા શતકના આઠમા ઉદ્દેશામાં નૈરયિકોના સંબંધમાં કહેવામાં આવેલ છે. તો તે સઘળું કથન અહિયા પણ સમજી લેવું. તેથી સૂત્રકારે 'एवं जहा पंचवीसइमे सए नेरइयाणं वत्तव्वया तहेव इह वि भाणियव्वा जाव आयप्पओगेण उववज्जंति णो परप्पओगेण उववज्जंति' એ પ્રમાણે સૂત્રપાઠ કહેલ છે. આ રીતે સામાન્યતઃ ક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મ પ્રમાણવાળા નારકોના ઉત્પાદ વિગેરે પ્રગટ કરીને હવે વિશેષરૂપે ક્ષુદ્રયુગ્મ વિગેરે પ્રમાણવાળા નારકોનું કથન કરવા માટે સૂત્રકાર કહે છે.-આમાં ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને એવું પૂછયું છે કે-'रयणप्पभा पुढवी खुड्डागकडजुम्मनेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति'

विषयश्च कथितः । ते खलु भदन्त ! नारकाः कथं परभवायुष्कं कुर्वन्ति ? गौतम ! अध्यवसाययोगनिर्वर्त्तितेन करणोपायेन एवं खलु रत्नप्रभापृथिवी नारकाः परभवायुष्कं कुर्वन्ति । तेषां क्षुल्लककृतयुग्मरत्नप्रभानारकजीवानां कथं गतिः प्रवर्त्तते ? गौतम ! आयुःक्षयेण भवक्षयेण स्थितिक्षयेण एवं खलु तेषां गतिः प्रवर्त्तते । ते रत्नप्रभानारकाः आत्मद्ध्‌र्या उत्पद्यन्ते परद्ध्‌र्या वोत्पद्यन्ते ? गौतम ! आत्मद्ध्‌र्या उत्पद्यन्ते नो परद्ध्‌र्या समुत्पद्यन्ते । ते खलु रत्नप्रभा नारकाः किमात्मकर्मणा समुत्पद्यन्ते परकर्मणा वा समुत्पद्यन्ते ? गौतम ! आत्म कर्मणैव समुत्पद्यन्ते नो परकर्मणा । ते खलु भदन्त ! रत्नप्रभानारकाः किमा

कहा गया है उसके अनुसार वे नारक तीन समयवाली विग्रह गति से वहां उत्पन्न हो जाते हैं । इस प्रकार की उनकी शीघ्रगति होती है और उस शीघ्रगति का ऐसा विषय होता है । हे भदन्त ! वे नारक परभव आयुका बन्ध कैसे करते है ? हे गौतम ! अध्यवसाय योग से निर्वर्तित करणोपाय से परभव की आयु का बन्ध करते हैं अर्थात् प्राणातिपात रूप अशुभ कर्म से नरक आयुका बन्ध करते हैं । हे भदन्त ! क्षुल्लक कृतयुग्मराशि प्रमाणरूप रत्नप्रभा नारक जीवों की गति किस कारण से होती है ? गौतम ! आयु के क्षय से भव के क्षय से और स्थिति के क्षय से उनकी गति होती है, हे भदन्त ! वे रत्नप्रभा के नैरयिक आत्मर्द्धि से उत्पन्न होते हैं ? या परर्द्धि से उत्पन्न होते हैं ? हे गौतम ! वे आत्मर्द्धि से उत्पन्न होते हैं, परर्द्धि से नहीं । हे भदन्त ! वे रत्नप्रभा के नैरयिक क्या आत्मकर्म से उत्पन्न होते हैं या परकर्म से उत्पन्न होते हैं ? हे गौतम ! वे रत्नप्रभा के नैरयिक आत्मकर्म से उत्पन्न होते हैं,

---

શીઘ્રગતિનો એવો વિષય હોય છે. હે ભગવન્ તે નારકો પરભવના આયુષ્યનો બંધ કેવી રીતે કરે છે ? હે ગૌતમ ! અધ્યવસાયયોગથી નિવર્તિત કારણુના ઉપાયથી પરભવના આયુષ્યનો બંધ કરે છે. અર્થાત્ પ્રાણાતિપાત વિગેરે અશુભ કર્મથી નારક આયુનો બંધ કરે છે. હે ભગવન્ ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મરાશી પ્રમાણુ રૂપ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના નારક જીવોની ગતિ કયા કારણુથી થાય છે ? હે ગૌતમ ! આયુના ક્ષયથી ભવનાક્ષયથી અને સ્થિતિના ક્ષયથી તેઓની ગતિ થાય છે. હે ભગવન્ તે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિકો આત્મઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા પરનીઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થાય છે, હે ગૌતમ ! તેઓ આત્મઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થાય છે પરઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થાતા નથી. હે ભગવન્ તે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિકો શું આત્મ કર્મથી ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા પરના કર્મથી ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ ! તેઓ આત્મકર્મથી ઉત્પન્ન થાય છે, પરકર્મથી નહીં.

त्मप्रयोगेण उत्पद्यन्ते परप्रयोगेण वा समुत्पद्यन्ते ? गौतम ! आत्मप्रयोगेणैवोत्पद्यन्ते, एतत्पर्यन्तमौधिकनारकप्रकरणं रत्नप्रभा पृथिवीनारकप्रकरणे भणितव्यमिति । 'एवं सक्करप्पभाए वि जाव अहे सत्तमाए' एवं रत्नप्रभावदेव शर्कराप्रभायामपि यावत् अधःसप्तम्यां नारकपृथिव्याम् 'एवं उववाओ जहा वक्कंतीए' एव मुपपातो वर्णनीयो यथा व्युत्क्रान्तौ प्रज्ञापनायाः षष्ठपदे उपपातो नारकाणामुपपादित इति । 'असन्नी खलु पढमं दोच्चं व सरीसवा तइय पक्खी गाहाए उववाएयव्वा' असंज्ञी खलु प्रथमां द्वितीयां च सरीसृपाः तृतीयां पक्षिणः (यान्ति) इत्यादि गाथाभ्याम् उपपातयितव्याः असंज्ञिनां प्रथमनरके उपपातो भवति

पर कर्म से नहीं। हे गौतम ! वे रत्नप्रभा के नैरयिक क्या आत्म प्रयोग से उत्पन्न होते हैं ? या पर प्रयोग से उत्पन्न होते हैं ? हे गौतम ! वे रत्नप्रभा के नैरयिक आत्मप्रयोग से ही उत्पन्न होते हैं परप्रयोग से नहीं। 'यहां तक का यह सब प्रकरण जो कि औधिक नारक के प्रकरण में कहा गया है यहां रत्नप्रभा पृथिवी के नारक के प्रकरण में कहना चाहीये। 'एवं सक्करप्पभाए वि जाव अहे सत्तमाए' इसी प्रकार की वक्तव्यता द्वितीय शर्करा पृथिवी से लेकर अधःसप्तमी पृथिवी के नारकों के उत्पाद के सम्बन्ध में भी कहनी चाहिये, अर्थात् प्रज्ञापना के व्युत्क्रान्ति नामक छठे पद में जैसा नारकों के उत्पाद का वर्णन किया गया है वैसा ही वर्णन यहां पर भी करना चाहिये, 'असन्नी खलु पढमं दोच्चं व सरीसवा तइय पक्खी' गाहाए उववाएयव्वा' इत्यादि गाथा द्वारा यह वहां पर प्रकट किया है कि असंज्ञी जीवों का प्रथम नरक तक उपपात

હે ભગવન તે રત્નપ્રભાપૃથ્વી ના નારકો શું આત્મ પ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે ? કે પરપ્રયોગથી જ ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ ! રત્નપ્રભા પૃથ્વીના નારકો આત્મપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે. પરપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થતા નથી. આટલા સુધીનું આ તમામ પ્રકરણ કે જે ઔધિક નારકના પ્રકરણમાં કહેવામાં આવેલ છે, તે આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના નારકના પ્રકરણમાં કહેવું જોઈએ. 'एवं सक्करप्पभाए वि जाव अहे सत्तमाए' આજ પ્રમાણેનું કથન બીજી શર્કરા પૃથ્વીથી લઈને અધઃસપ્તમી પૃથ્વીના નારકોના ઉત્પાદના સંબંધમાં પણ કહેવું જોઈએ. અર્થાત્ પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના વ્યુત્ક્રાંતિ પદમાં એટલે કે છઠ્ઠા પદમાં નારકોના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું વર્ણન કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું વર્ણન અહિયાં પણ કરવું જોઈએ 'असन्नी खलु पढमं दोच्चंव सरीसवा तइय-पक्खीगाहाए उववाएयव्वा' વિગેરે ગાથાદ્વારા ત્યાં આ કથન પ્રગટ કરવામાં આવેલ છે.-કે-અસંજ્ઞી જીવોનો પહેલાં નરકમાં ઉત્પાત હોય

सर्पादीना मुपपातो द्वितीयनरके भवति पक्षिणामुपपात स्तृतीय नरके भवतीत्यादि गाथाद्वयवर्णित क्रमेण सप्तमनारकपर्यन्तं तत्तज्जीवानामुपपातो दर्शनीयः तथाहि-

'असन्नी खलु पढमं दोच्चं व सरीसवा तइय पक्खी,
सीहा जंति चउत्थिं, उरगा पुण पंचमिं पुढविं ॥१॥
छट्ठिं च इत्थियाओ, मच्छा मणुया य सत्तमिं पुढविं।
एसो परमोवाओ, बोद्धव्वो नरग पुढवीणं ॥२॥ इति

छाया—असंज्ञी खलु प्रथमां, द्वितीयां च सरीसृपा तृतीयां पक्षिणः।
सिंहा यान्ति चतुर्थीं, उरगाः पुनः पञ्चमीं पृथिवीम् ॥१॥
षष्ठीं च स्त्रियः, मत्स्या मनुजाश्च सप्तमीं पृथिवीम्।
एष परमोपपातो बोद्धव्यो नरकपृथिवीनाम् ॥२॥ इति।

'सेसं तं चेव' शेषम्-उपपातादि व्यतिरिक्तं सर्वं तदेव औघिकनारकप्रकरणे

होता है। सरीसृपों का अर्थात् भुजपरिसर्पोंका उपपात द्वितीय नरक तक होता है और पक्षियों का उपपात तृतीय नरक तक होता है, सो यही उत्पाद का वर्णन सप्तम नरक पर्यन्त के जीवों का यहां पर भी दिखाना चाहिये, जैसे-असंज्ञी जीव प्रथम पृथिवी तक ही जाते हैं सरीसृप अर्थात् भुजपरिसर्प दूसरी पृथिवी तक जाते हैं, पक्षी तीसरी पृथिवी तक जाते हैं, सिंह चौथी तक जाते हैं उरग-सर्प पांचवी पृथिवी तक जाते है, स्त्रियां छठी पृथिवी तक जाती है, और मत्स्य तथा मनुष्य सातवीं तक जाते है यह उत्कृष्ट उपपात कहा गया है जघन्यसे तो अपनी मर्यादित पृथिवी से नीचे की पृथिवीमें भी जा सकते हैं ॥२॥ यह प्रज्ञापना के व्युत्क्रान्ति पद की दो गाथाओं का भाव है। 'सेसं

છે. સર્પ વિગેરેનો ઉત્પાત બીજી નરકમાં થાય છે. અને પક્ષિઓનો ઉત્પાત ત્રીજા નરકમાં થાય છે. તો આ પ્રમાણેના ઉત્પાતનું વર્ણન સાતમાનારક સુધીના જીવોના સંબંધમાં કહેવામાં આવેલ છે, તે અહિયાં પણ સમજી લેવું. જેમકે-અસંજ્ઞી જીવ પહેલી પૃથ્વી પર્યન્ત જ જાય છે. સરિસૃપ અર્થાત્ ભુજપરિસર્પ બીજી પૃથ્વી પર્યન્ત જાય છે. પક્ષિયો ત્રીજી પૃથ્વી પર્યન્ત જાય છે. સિંહ ચોથી પૃથ્વી સુધી જાય છે. ઉરગ-સર્પ પાંચમી પૃથ્વી પર્યન્ત જાય છે, સ્ત્રિયો છટ્ઠિ પૃથ્વી પર્યન્ત જાય છે અને માછલા અને મનુષ્યો સાતમી પૃથ્વી સુધી જાય છે. આ ઉત્કૃષ્ટ ઉપપાત કહેલ છે. જઘન્યથી તો પોતાની મર્યાદિત પૃથ્વીથી નીચેની પૃથ્વીમાં પણ જઈ શકે છે. આ પ્રજ્ઞાપનાની બે ગાથાનો અર્થ છે. 'સેસં તહેવ' આ ઉપપાત વિગેરે વર્ણન

यत् कथितं तदेव सर्वं शर्कराप्रभात आरभ्य सप्तमी पृथिवी नारकेषु वक्तव्यमिति रत्नप्रभादिगत क्षुल्लक कृतयुग्मनारकाणामुत्पादादिकं दर्शयन् प्राह-'खुड्डाग तेओग नेरइया' इत्यादि ।

'खुड्डाग तेओग नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' क्षुल्लक त्र्योज नैरयिकाः खलु भदन्त ! कुतः-कस्मात्स्थानविशेषादागत्य नरकावासे समुत्पद्यन्ते इति प्रश्नः, भगवानाह-'उववाओ' इत्यादि, 'उववाओ जहा वक्कंतीए' उपपातो यथा व्युत्क्रान्तौ प्रज्ञापनायाः षष्ठे पदे यथा नारकाणामुपपातः कथित स्तेनैव रूपेणात्रापि उपपातो न नैरयिकादिभ्य उत्पद्यन्ते किन्तु पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्यो गर्भजमनुष्येभ्यश्चागत्य समुत्पद्यन्ते एवं वर्णनीयः । 'ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति' ते खलु भदन्त ! क्षुल्लकत्र्योज नारकजीवा एकसमयेन एकस्मिन् समये कियत्संख्यकाः समुत्पद्यन्ते ? इति प्रश्नः, भगवानाह

तहेव' इस उपपातादि वर्णन के अतिरिक्त और सब वर्णन औधिक नारक प्रकरण में जैसा कहा गया है वही सब वर्णन शर्कराप्रभा से लेकर सप्तमी पृथिवी के नारकों तक में कहना चाहिये ।

'खुड्डाग तेओग नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' हे भदन्त ! क्षुल्लक त्र्योजराशि प्रमाण नैरयिक नरकावासमें कहां से आकर के उत्पन्न होते है ? इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'उववाओ जहा वक्कंतीए' हे गौतम ! प्रज्ञापना के छट्ठे व्युत्क्रांति पद में जैसा नारकों का उपपात कहा गया है वैसा ही वह यहां पर भी कहना चाहिये, अर्थात् वे नैरयिक आदिकों में से आकर के उत्पन्न नहीं होते हैं पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकों में से और गर्भज मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ऐसा वर्णन यहां पर करना चाहिये। 'ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उवव-

---

શિવાયનું બીજું સઘળું વર્ણન ઔઘિક નારકના પ્રકરણમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે. તે તમામ વર્ણન શર્કરાપ્રભા પૃથ્વીથી લઈને સાતમી તમતમા પૃથ્વીના નારકોના સંબંધમાં કહેવું જોઈએ.

ખુડ્ડાગતેયોગ નેરઇયાણં ભંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ' હે ભગવન્ ક્ષુલ્લક ત્ર્યોજ રાશિપ્રમાણુવાળા નૈરયિકો નરકાવાસમાં ક્યાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'ઉવવાઓ જહા વક્કંતીએ' હે ગૌતમ ! પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમાં છટ્ઠા વ્યુત્ક્રાંતિ પદમાં નારકોનો ઉત્પાદ જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ કહેવો જોઈએ. અર્થાત્ તે નૈરયિકો વિગેરેમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થતા નથી. પરંતુ પંચેન્દ્રિયતિર્યંચ યોનિકોમાંથી અને ગર્ભજ મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, એ પ્રમાણેનું વર્ણન અહિયાં

'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'तिन्नि वा, सत्त वा, एक्कारस वा' त्रयो वा, सप्त वा, एकादश वा, 'पन्नरस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा उववज्जंति' पञ्चदश वा, संख्याता वा, असंख्याता वा, क्षुल्लकत्र्योजनारका एकदा समुत्पद्यन्ते इति। 'सेसं जहा कडजुम्मस्स' शेषं—परिणामातिरिक्तं सर्वं कुत आगत्योत्पद्यन्ते कथमुत्पद्यन्ते कथं शीघ्रा गतिः आत्मप्रयोगेण वा परप्रयोगेण वा उत्पद्यन्ते इत्यादिकं सर्वं यथा कृतयुग्मनारकस्य कथितं तथैवेहापि ज्ञातव्यम्, आलापप्रकारश्च सर्वत्र स्वयमेवोहनीयः। 'एवं जाव अहे सत्तमाए' एवं यावदधः सप्तम्या मवगन्तव्यम्। येन रूपेण औघिकक्षुल्लकत्र्योजनारकस्य कथितं तेनैव

ज्जंति' हे भदन्त! क्षुल्लक त्र्योजराशि प्रमाणवाले वे नारक एक समय में वहां कितने उत्पन्न होते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—'गोयमा! तिन्नि वा सत्त वा एक्कारस वा उववज्जंति' हे गौतम! वे नारक वहां एक समय में तीन या सात या ११ ग्यारह 'पन्नरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति' या पन्द्रह या संख्यात या असंख्यात तक उत्पन्न होते है? 'सेसं जहा कडजुम्मस्स' इस परिमाण कथन से अतिरिक्त और सब—कहां से आकर के उत्पन्न होते हैं? कैसे उत्पन्न होते हैं? उनकी शीघ्र गति कैसी होती है? कैसी उनकी शीघ्रगति का विषय होता है? वे वहां आत्मप्रयोग से उत्पन्न होते हैं या पर प्रयोग से उत्पन्न होते हैं इत्यादि सब जैसा कृतयुग्मराशि प्रमाण नारकों के विषय में कहा गया है वैसा ही वह सब कथन यहां पर भी करना

કરવું જોઈએ. 'तेणं भंते! जीवा! एगसमएणं केवइया उववज्जंति' હે ભગવન્ ક્ષુલ્લક ત્ર્યોજરાશિ પ્રમાણુવાળા તે નારકો એક સમયમાં ત્યાં કેટલા ઉત્પન્ન થાય છે? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'गोयमा! तिन्नि वा सत्तवा एक्कारस वा उववज्जंति' હે ગૌતમ! તે નારકો ત્યાં એક સમયમાં ત્રણુ અથવા સાત અથવા અગિયાર 'पन्नरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति' અથવા પંદર અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત સુધીના ઉત્પન્ન થાય છે. 'सेसं जहा कडजुम्मस्स' આ પરિણામ કથન શિવાયનું બીજુ તમામ કથન—એટલે—કે "ક્યાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? કેવી રીતે ઉત્પન્ન થાય છે? તેઓનું શીઘ્ર ગમન કેવું હોય છે? તેઓના શીઘ્ર ગમનનો વિષય કેવો હોય છે? તેઓ ત્યાં આત્મ પ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા પરપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે? વિગેરે સઘળું કથન જે પ્રમાણે કૃતયુગ્મરાશિ પ્રમાણુ નારકોના સંબંધમાં કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું તમામ કથન અહીંયાં પણુ કહેવું જોઈએ આ સંબંધમાં આલાપનો પ્રકાર સ્વયં બનાવીને કહેવો જોઈએ. 'एवं जाव अहे सत्तमाए' જે પ્રમાણે ઔઘિક ક્ષુલ્લક ત્ર્યોજરાશિ પ્રમાણુ નૈરયિકોના સંબંધમાં કહેવામાં

रूपेण रत्नप्रभा क्षुल्लकत्र्योजनारकादारभ्य सप्तमीपृथिवी क्षुल्लकत्र्योजनारक विषयेऽपि सर्वमवगन्तव्यमिति। आलापादिकश्च सर्वत्र स्वयमेवोहनीय इति। 'खुड्डाग दावरजुम्मनेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' क्षुल्लकद्वापरयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त! कुतः-कस्मात् स्थानविशेषादागत्य नारकावासे समुत्पद्यन्ते? इति प्रश्नः, भगवानाह-'एवं जहेव' इत्यादि, 'एवं जहेव खुड्डागकडजुम्मे' एवं यथैव क्षुल्लककृतयुग्मः क्षुल्लककृतयुग्मनारकाणामुत्पादादिकं येन प्रकारेण पूर्वं प्रतिपादितं तेनैव प्रकारेण संक्षेपविस्तराभ्यामिहापि सर्वमवगन्तव्यम्। 'नवरं परिमाणं दो वा, छ वा, दस वा, चोदस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, नवरं परिमाणं द्वौ वा षड् वा, दश वा, चतुर्दश वा संख्येया वा,

---

चाहिए, आलापप्रकार इस सम्बन्ध में अपने आप उद्भावित करना चाहीये, 'एवं जाव अहे सत्तमाए' जिस रूपसे औधिक क्षुल्लक त्र्योजराशि प्रमाण नैरयिकों के सम्बन्ध में कहा गया है उसी रूप से रत्नप्रभा क्षुल्लक त्र्योजराशी प्रमाण नैरयिकों से लेकर सप्तमी पृथिवी के क्षुल्लक त्र्योजराशि प्रमाणवाले नैरयिकों के विषय में भी सब कथन करना चाहिये। तथा इस सम्बन्ध में आलापादिक सर्वत्र अपने आप उद्भावित करना चाहिये।

'खुड्डाग दावरजुम्मनेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' हे भदन्त! जो नैरयिक क्षुल्लकद्वापर युग्मराशि प्रमाण हैं वे नरकावास में कहां से आकर के उत्पन्न होते हैं? इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'एवं जहेव खुड्डाग कडजुम्मे' हे गौतम! जैसा कथन क्षुल्लक कृतयुग्म राशि प्रमाणवाले नैरयिकों के उत्पातादि के सम्बन्ध में कहा गया है वैसा ही वह समस्त कथन संक्षेप और विस्तार से यहां पर भी

આવેલ છે એજ પ્રમાણે રત્નપ્રભાના ક્ષુલ્લક ત્ર્યોજરાશિ પ્રમાણુવાળા નૈરયિકોથી લઈને સાતમી પૃથ્વીના ક્ષુલ્લક ત્ર્યોજરાશિ પ્રમાણુવાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં પણ સઘળું કથન કહેવું જોઈએ. તથા આ વિષયમાં આલાપ વિગેરે બધે જ સ્વયં બનાવીને સમજી લેવા જોઈએ.

'खुड्डाग दावरजुम्मनेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति' હે ભગવન્ જે નૈરયિકો ક્ષુલ્લકદ્વાપરયુગ્મપ્રમાણુવાળા છે, તેઓ નરકાવાસમાં કયાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'एवं जहेव खुड्डाग कडजुम्मे' હે ગૌતમ! ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મરાશી પ્રમાણુવાળા નૈરયિકોના ઉત્પાદ વિગેરેના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું કથન કરવામાં આવ્યું છે. એજ પ્રમાણેનું તે કથન સંક્ષેપ અને વિસ્તારથી અહિયાં પણ કહેવું જોઈએ. 'नवरं परिमाणं दो वा छ वा चोदस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा' તે કથન કરતાં આ કથનમાં

असंख्येया वा' क्षुल्लक कृतयुग्मप्रकरणात् वैलक्षण्यं केवलं परिमाणविषये तत्प्रदर्शितमेव, अन्यत्सर्वम् उत्पादादिकं कृतयुग्मप्रकरणादेवावसेयमिति। 'सेसं तं चेव जाव अहे सत्तमाए' शेषम्-परिमाणातिरिक्तं तदेव यदेवोत्पादादिकं क्षुल्लककृतयुग्मप्रकरणे कथितं तदेव इहापि क्षुल्लकद्वापरयुग्मप्रकरणेऽपि। कृतयुग्मप्रकरणं कियत्पर्यन्तमिह ज्ञातव्यं तत्राह-'जाव' इत्यादि, 'जाव अहे सत्तमाए' यावदधःसप्तम्यां रत्नप्रभा क्षुल्लकद्वापरयुग्मादारभ्य अधःसप्तमी पृथिवी पर्यन्तं क्षुल्लक द्वापरयुग्मनारकविषये सर्वं ज्ञातव्यमिति। 'खुड्डाग कलिओग नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' क्षुल्लककल्योजनैरयिकाः खलु भदन्त! कुतः-

कहना चाहिये। 'नवरं परिमाणं दो वा छ वा दस वा चोद्दस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा' उस कथन से इस कथन में यदि कोई विशेषता है तो वह परिमाण को लेकर ही है अतः यहां पर नैरयिकों का उत्पाद परिमाण दो या छह या दश या चौदह या संख्यात या असंख्यात है। बाकी का और सब क्षुल्लकद्वापर युग्मराशि प्रमाणवाले नैरयिकों का कथन क्षुल्लक कृतयुग्मराशि प्रमाणवाले नैरयिकों के जैसा ही है। अतः वह उनके प्रकरण से ही जानना चाहिये। इसलीए सूत्रकार ने इस सम्बन्धमें 'सेसं तं चेव जाव अहे सत्तमाए' ऐसा सूत्र पाठ कहा है। इसलिए कृतयुग्म प्रकरण रत्नप्रभा के क्षुल्लक द्वापरयुग्म राशि प्रमाणवाले नैरयिकों से लेकर अधःसप्तमी पृथिवी तक के क्षुल्लक द्वापरयुग्मराशि प्रमाणवाले नैरयिकों में कहना चाहिये।

'खुड्डाग कलियोग नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' हे भदन्त! जो नैरयिक क्षुल्लक कल्योजराशि प्रमाणवाले हैं वे कहां से आकर के

જો કંઇ વિશેષપણુ હોય તો તે પરિણામના સંબંધમાં જ વિશેષપણુ છે. તેથી અહિયાં નૈરયિકોનો ઉત્પાદ, પરિણામ બે અથવા છ અથવા દસ અથવા ચૌદ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત છે. બાકીનું બીજુ તમામ કથન ક્ષુલ્લક દ્વાપરયુગ્મરાશિ પ્રમાણુવાળા નૈરયિકોની જેમ જ છે તેથી તે સઘળું કથન તેના એટલે-ક્ષુલ્લકદ્વાપર યુગ્મરાશિ પ્રમાણુવાળા નૈરયિકોના પ્રકરણુમાંથી જાણી લેવું. તેથી સૂત્રકારે આ વિષયમાં 'सेसं तं चेव जाव अहेसत्तमाए' આ પ્રમાણે સૂત્રપાઠ કહેલ છે. તેથી કૃતયુગ્મ પ્રકરણુ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ક્ષુલ્લક દ્વાપર-યુગ્મ રાશિ પ્રમાણુવાળા નૈરયિકથી લઇને અધઃસપ્તમી પૃથ્વી સુધીના ક્ષુલ્લકદ્વાપર યુગ્મરાશિ પ્રમાણુવાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં કહેવું જોઈએ.

'खुड्डाग कलिओग नेरइयाण भंते! कओ उववज्जंति' હે ભગવન્ જે નૈર-યિકો ક્ષુલ્લક કલ્યોજરાશી પ્રમાણુવાળા છે, તેઓ ક્યાંથી આવીને નરકાવાસમાં

कस्मात् स्थानविशेषादागत्य नरकावासे समुत्पद्यन्ते? इति प्रश्नः, भगवानाह—'एवं जहेव' इत्यादि, 'एवं जहेव खुड्डागकडजुम्मे' एवं यथैव क्षुल्लककृतयुग्मप्रकरणे नारकाणामुत्पत्ति र्दर्शिता तथैव इहापि क्षुल्लककल्योज नारकाणां न नैरयिकेभ्य उत्पत्तिः किन्तु पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्यः तथा गर्भजमनुष्येभ्यश्चागत्येह समुत्पत्ति र्भवतीति। 'नवरं परिमाणं एक्को वा, पंच वा, नव वा, तेरस वा संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा उववज्जंति' नवरम् केवलं परिमाणं कृतयुग्म नारकाद्विलक्षणं तदिदम् एको वा, पञ्च वा, नव वा, त्रयोदश वा, संख्याता वा,

---

नरकावास में उत्पन्न होते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'एवं जहेव खुड्डाग कडजुम्मे' हे गौतम! जैसा कथन क्षुल्लक कृतयुग्म प्रकरण में नारकों के उत्पाद के विषय में किया गया है उसी प्रकार से वह प्रकरण इस क्षुल्लक कल्योज नारकों के प्रकरण से उत्पाद के विषय में भी कहना चाहीये। इस प्रकार क्षुल्लक कल्योज नारक नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न नहीं होते हैं और न देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं किन्तु वे पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिकों में से आकर के नरकावास में उत्पन्न होते हैं, और गर्भज मनुष्यों में से आकर के वहां उत्पन्न होते हैं। 'नवरं परिमाणं एक्को वा पंच वा नव वा तेरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति' यहां पर कृतयुग्म नारकों के प्रकरण से यदि कोई विशेषता है तो वह परिमाण की अपेक्षा से ही है, अतः यहां पर क्षुल्लक कल्योज नारकों का प्रमाण एक समय में उत्पत्ति का एक अथवा पांच अथवा नौ अथवा

ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'एवं जहेव खुड्डागकडजुम्मे' હે ગૌતમ! ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ પ્રમાણુવાળા નારકોના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણે તે પ્રકરણ આ ક્ષુલ્લક કલ્યોજ નારક સંબંધી પ્રકરણ તેમના ઉત્પાદના સંબંધમાં પણ કહેવું જોઈએ. આ રીતે ક્ષુલ્લક કલ્યોજ નારક નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થતા નથી તેમ દેવોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થતા નથી. પરંતુ તેઓ પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ યોનિકોમાંથી આવીને નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે, અને ગર્ભજ મનુષ્યોમાંથી આવીને નરકાવાસમા ઉત્પન્ન થાય છે

'नवरं परिमाणं एक्को वा पंचवा नव वा तेरसवा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति' અહિયાં આ કૃતયુગ્મ નારકોના પ્રકરણમાં જો કોઈ વિશેષપણું છે, તો તે પરિણામના સંબંધમાં જ છે, તેથી અહિયાં ક્ષુલ્લક કલ્યોજ નારકોની ઉત્પત્તિનું પ્રમાણ એક સમયમાં એક અથવા પાંચ અથવા નવ અથવા

असंख्याता वा, समुत्पद्यन्ते। 'सेसं तं चेव' शेषम्-परिमाणातिरिक्तमुत्पादादिकं सर्वं तदेव क्षुल्लककृतयुग्मनारकप्रकरणकथितमेवेति। 'एवं जाव अहे सत्तमाए' एवं यावद् रत्नप्रभा क्षुल्लककल्योजनारकादारभ्य अधःसप्तम्यां क्षुल्लककल्योज पर्यन्तनारकाणाम् इयमेव व्यवस्था ज्ञातव्या। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति यावद्विहरति, हे भदन्त! क्षुल्लककृतयुग्मादि नारकादीनामुत्पादादिविषये यद् देवानुप्रियेण कथितं तत्सर्वम् एवमेव सर्वथा सत्यमेव इति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति ॥सू० १॥

एकत्रिंशत्तमे शतके प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥३१-१॥

तेरह अथवा संख्यात अथवा असंख्यात तक होता है। 'सेसं तं चेव' इस परिमाण के अतिरिक्त और सब उत्पाद आदि का कथन जैसा क्षुल्लक कृतयुग्म नारकों के प्रकरण में किया गया है-वैसा ही यहां पर भी करना चाहिये। 'एवं जाव अहे सत्तमाए' इस प्रकार रत्नप्रभा के क्षुल्लक कल्योज नारकों से लेकर अधःसप्तमी पृथिवी के क्षुल्लक कल्योज नारकों के सम्बन्ध में भी यही व्यवस्था जाननी चाहिये, 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ' हे भदन्त! क्षुल्लक कृतयुग्म नारकों के उत्पाद आदि के विषय में जो आप देवानुप्रियने कहा है वह सर्वथा सत्य ही है २ इस प्रकार कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और उन्हें नमस्कार किया, वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थानपर विराजमान हो गये ॥सू० १॥

प्रथम उद्देशक समाप्त-३१-१

દસ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત સુધી હોય છે. 'सेसं तं चेव' આ પરિણામના કથન શિવાય બાકીનું ઉત્પાદ વિગેરે સઘળું કથન ક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મ નારકોના પ્રકરણમાં જે પ્રમાણે કહ્યું છે તે પ્રમાણે અહિયા પણ સમજવું.

'एवं जाव अहे सत्तमाए' આ રીતે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ક્ષુલ્લક કલ્યોજ નારકોથી લઈને અધઃસપ્તમી પૃથ્વીના ક્ષુલ્લક કલ્યોજ નારકોના સંબંધમાં પણ આજ કથન સમજવું

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ' હે ભગવન્ ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ વિગેરે નારકોના ઉત્પાદ વિગેરે વિષયમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સર્વથા સત્ય છે. આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥પહેલો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૧-૧॥

अथ द्वितीयोद्देशकः प्रारभ्यते

प्रथमे उद्देशके सामान्यतः क्षुल्लक कृतयुग्मादिनारकाणामुत्पातादिः कथितः; द्वितीयेतु कृष्णलेश्याश्रय उत्पादादि र्वक्तव्यः, तदनेन सम्बन्धेनायातस्य द्वितीयोद्देशकस्येदं सूत्रम्-'कण्हलेस्स०' इत्यादि ।

मूलम्-कण्हलेस्स खुड्डाग कडजुम्म नेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति, एवं चेव जहा ओहिय गमो जाव नो परप्पयोगेणं उववज्जंति । नवरं उववाओ जहा वक्कंतीए धूमप्पभा पुढवी नेरइयाणं सेसं तं चेव । धूमप्पभा पुढवी कण्हलेस्स खुड्डागकडजुम्म नेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति एवं चेव निरवसेसं। एवं तमाए वि, अहे सत्तमाए वि। नवरं उववाओ सव्वत्थ जहा वक्कंतीए। कण्हलेस्स खुड्डाग तेओग नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति ? एवं चेव नवरं तिन्नि वा, सत्त वा, एक्कारस वा, पन्नरस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, सेसं तं चेव। एवं जाव अहे सत्तमाए। कण्हलेस्स खुड्डाग दावरजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति एवं चेव। नवरं दो वा, छ वा, दस वा, चोद्दस वा सेसं तं चेव। धूमप्पभाए वि जाव अहे सत्तमाए। कण्हलेस्स खुड्डाग कलिओग नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति। एवं चेव नवरं एक्को वा, पंच वा, नव वा, तेरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा सेसं तं चेव। एवं धूमप्पभाए वि तमाए वि अहे सत्तमाए वि, सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥सू. १॥

छाया—कृष्णलेश्य क्षुल्लककृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? एवमेव यथा औघिको गमो यावत् नो परप्रयोगेणोत्पद्यन्ते । नवरमुत्पातो यथा व्युत्क्रान्तौ धूमप्रभा पृथिवी नैरयिकाणाम् । शेषं तदेव । धूमप्रभा पृथिवी कृष्णलेश्य क्षुल्लक कृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते एवमेव निरवशेषम्। एवं तमायामपि अधःसप्तम्यामपि। नवरमुपपातः सर्वत्र यथा व्युत्क्रान्तौ। कृष्णलेश्य क्षुल्लक त्र्योज नैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? एवमेव नवरं त्रयो वा, सप्त वा, एकादश वा, पञ्चदश वा, संख्येया वा, असंख्येया वा, शेषं

तदेव। एवं यावदधः सप्तम्यामपि। कृष्णलेश्यक्षुल्लकद्वापरयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते, एवमेव नवरं द्वौ वा, षड् वा, दश वा, चतुर्दश वा, शेषं तदेव धूमप्रभायामपि यावदधःसप्तम्याम्। कृष्णलेश्य क्षुल्लककल्योज नैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? एवमेव। नवरम् एको वा, पञ्च वा, नव वा, त्रयोदश वा, संख्येया वा, असंख्येया वा। शेषं तदेव। एवं धूमप्रभायामपि तमायामपि अधःसप्तम्यामपि। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति॥सू०१॥

एकत्रिंशत्तमे शते द्वितीयोद्देशकः समाप्तः॥३१-२॥

टीका—द्वितीयस्तु उद्देशकः कृष्णलेश्याश्रयः सा च कृष्णलेश्या पञ्चमी षष्ठी सप्तमीष्वेव पृथिवीषु भवतीति कृत्वा सामान्यदण्डकः तथा पञ्चमीषष्ठी सप्तमी पृथिव्याश्रितं दण्डकत्रयं चात्र भवतीति, अतः कृष्णलेश्याश्रय एवात्र विचारोऽवधीयते।

दूसरे उद्देशेका प्रारंभ

प्रथम उद्देशक में सामान्यतः क्षुल्लक कृतयुग्मराशिवाले नारकों का उत्पाद आदि कहा गया है। अब इस द्वितीय उद्देशक में कृष्ण लेश्या के आश्रय से उनका उत्पातादि कहना है सो इसी अभिप्राय से इस द्वितीय उद्देशक को प्रारम्भ सूत्रकार करते हैं—

'कण्हलेस्स खुड्डागकडजुम्मनेरइयाणं भंते!' इत्यादि।

टीकार्थ--यह द्वितीय उद्देशक कृष्णलेश्यावाले क्षुद्र कृतयुग्मराशि प्रमाण नैरयिकों से सम्बन्धित है। कृष्णलेश्या पांचवी छट्ठी और सातवीं पृथिवीयों में ही होती है। इसलिये एक सामान्य दण्डक है तथा पांचवी छट्ठी और सातवी पृथिवीयों के आश्रित तीन दण्डक यहां है। अतः कृष्णलेश्या के आश्रयवाला ही विचार यहां प्रदर्शित किया जाता है--

---

એકત્રીસમા શતકના બીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

પહેલા ઉદ્દેશામાં સામાન્યતઃક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ વિગેરે રાશિવાળા નારકોના ઉત્પાદ વિગેરેના સંબંધમાં કથન કરેલ છે. હવે આ બીજા ઉદ્દેશામાં કૃષ્ણ લેશ્યાના આશ્રયથી તેઓના ઉત્પાદ વિગરેના સંબંધમાં કથન કરવામાં આવશે એજ અભિપ્રાયથી સૂત્રકાર આ બીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ કરે છે.—

'कण्हलेस्स खुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भंते! ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—આ બીજો ઉદ્દેશો કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુદ્ર કૃતયુગ્મ રાશિ પ્રમાણ વાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં કહેલ છે. કૃષ્ણલેશ્યાના આશ્રયવાળી પાંચમી છઠ્ઠી અને સાતમી પૃથ્વીયોના ત્રણ દંડકો અહિયાં કહ્યા છે. જેથી કૃષ્ણલેશ્યાના આશ્રયવાળો જ વિચાર અહિયાં પ્રગટ કરવામાં આવે છે.—

'कण्हलेस्स खुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति' कृष्णलेश्य क्षुल्लककृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! कुतः कस्मात् स्थानविशेषादागत्य नारकावासे उत्पद्यन्ते ? इति प्रश्नः, उत्तरमाह–'एवं चेव' इत्यादि, 'एवं चेव जहा ओहिओ गमो' एवमेव यथा औघिको गमः औघिकगमवत् एतच्छतकीय प्रथमोद्देशकक्षुल्लककृतयुग्मनारकसूत्रवदेव कृष्णलेश्यक्षुल्लक नारकस्यापि उत्पादादिकं वक्तव्यम्, तथाहि–न नारकेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते कृष्णलेश्यक्षुल्लक कृतयुग्मनारकाः किन्तु तिर्यग्योनिकेभ्य आगत्य गर्भज मनुष्येभ्यश्चागत्योत्पद्यन्ते इति । तेषां खलु भदन्त ! जीवानां कथं शीघ्रा गतिः कथं शीघ्रो गतिविषयः प्रश्न-

---

'कण्हलेस्स खुड्डाग कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' हे भदन्त ! क्षुद्र कृतयुग्मराशि प्रमाण कृष्णलेश्यावाले नैरयिक कहां से आकर के नरकावास में उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं– 'एवं चेव जहा ओहिओ गमो' हे गौतम ! जैसा विचार इस शतक के प्रथम उद्देशक में क्षुल्लक कृतयुग्म नारक के सूत्र में किया गया है वैसा ही विचार कृष्णलेश्यावाले क्षुल्लक कृतयुग्म नारक के उत्पाद आदि का भी करना चाहिये । जैसे–कृष्णलेश्यावाले क्षुल्लक कृतयुग्म नारक नैरयिकों में से आकर के नरकावास में उत्पन्न नहीं होते हैं । और न देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं किन्तु वे पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं और गर्भज मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं । हे भदन्त ! उन नारक जीवों की गति कैसी तीव्र होती है ? और कैसा उस तीव्र गति का विषय होता है ? हे गौतम ! जैसे कोई

'कण्हलेस्स खुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति' હે ભગવન્ ક્ષુદ્ર કૃતયુગ્મ રાશી પ્રમાણ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નૈરયિકો ક્યાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે– 'एवं चेव जहा ओहिओ गमो' હે ગૌતમ ! આ શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણેનો વિચાર ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારકોના સૂત્રમાં કરવામાં આવ્યો છે. એજ પ્રમાણેનો વિચાર કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારકના ઉત્પાદ વિગેરેના સંબંધમાં પણ કહેવા જોઈએ. જેમ કે–કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારક નૈરયિકોમાંથી આવીને નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થતા નથી. તથા દેવોમાંથી આવીને પણ તેઓ ઉત્પન્ન થતા નથી. પરંતુ તેઓ પંચેન્દ્રિયતિર્યંચ યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે. તથા ગર્ભજ મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે. હે ભગવન્ તે નારક જીવોની ગતિ કેવી તીવ્ર હોય છે ? અને તે તીવ્ર ગતિનો

प्नः? गौतम ! यथा कश्चित् तरुणो बलवान् पुरुषो यावत् त्रिसमयकेन विग्रहेण समुत्पद्यन्ते तेषां खलु जीवानां तथा शीघ्रा गतिः तथा शीघ्रो गतिविषयः प्रज्ञप्तः ते जीवाः कथं परभवायुष्कं कुर्वन्ति गौतम ! अध्यवसाययोगनिर्वर्त्तितेन करणोपायेन एवं खलु परभवायुष्कं कुर्वन्ति, इति । तेषां जीवानां कथं गतिः प्रवर्त्तते गौतम ! आयुःक्षयेण भवक्षयेण स्थितिक्षयेण गतिः प्रवर्त्तते इति । ते जीवाः किमात्मर्द्धया समुत्पद्यन्ते परर्द्धया वा समुत्पद्यन्ते ? गौतम ! आत्मर्द्धयैव समुत्पद्यन्ते न परर्द्धया समुत्पद्यन्ते । हे भदन्त ! ते जीवा आत्मकर्मणा समुत्पद्यन्ते परकर्मणा वा समुत्पद्यन्ते ? गौतम ! आत्मकर्मणैव समुत्पद्यन्ते न परकर्मणा समुत्प-

---

बलवान पुरुष जैसा कि चौदहवें शतक के प्रथम उद्देशक में कहा गया है उसके अनुसार वे नारक तीन समयवाली विग्रहगति से वहां नरकावास में उत्पन्न हो जाते हैं ऐसी उनकी तीव्र गति होती है और उस तीव्र गति का ऐसा विषय होता है। हे भदन्त! वे नारक परभव की आयु का बन्ध कैसे करते हैं? हे गौतम अध्यवसाययोग से निर्वर्तित करणोपाय से वे नारक परभव की आयु का बन्ध करते हैं। हे भदन्त! उन नारक जीवों की गति किस कारण से होती है? हे गौतम! उनकी गति आयु के क्षय से भव के क्षय से और स्थिति के क्षय से होती है। हे भदन्त! वे जीव क्या आत्मर्द्धि से उत्पन्न होते हैं? या परर्द्धि से उत्पन्न होते हैं? हे गौतम! वे आत्मर्द्धि से उत्पन्न होते हैं परर्द्धि से नहीं हे भदन्त! वे जीव क्या आत्म कर्म से उत्पन्न होते हैं या परकर्म से उत्पन्न होते हैं? हे गौतम! वे नारक जीव आत्मकर्म से ही उत्पन्न होते हैं पर-

---

विषय કેવો હોય છે? હે ગૌતમ જેમ કોઈ બળવાન પુરૂષ જેમ કે-ચૌદમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં કથન કરવામાં આવેલ છે તે અનુસાર તેવા નારકો ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ત્યાં નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. એવી તીવ્ર ગતિ તેમની હોય છે. અને એ તીવ્રગતિનો એવો વિષય હોય છે. હે ભગવન્ તે નારકો પરભવના આયુષ્યનો બંધ કેવી રીતે કરે છે? હે ગૌતમ! અધ્યવસાય યોગથી નિવર્તિત કરણના ઉપાયથી નારકો પરભવના આયુષ્યનો બંધ કરે છે હે ભગવન્ તે નારક જીવોની ગતિ કયા કારણથી હોય છે? હે ગૌતમ! તેઓની ગતિ આયુના ક્ષયથી ભવના ક્ષયથી અને સ્થિતિના ક્ષયથી થાય છે. હે ભગવન તે જીવો શું આત્મઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા પરઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થાય છે? હે ગૌતમ! તેઓ આત્મઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થાય છે. પરઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થતા નથી. હે ભગવન તે જીવો આત્મકર્મથી ઉત્પન્ન થાય છે? અથવ પરકર્મથી ઉત્પન્ન થાય છે? હે ગૌતમ તે નારક જીવો પોતાના કર્મથી જ ઉત્પન્ન થાય છે. પર

द्यन्ते । हे भदन्त ! ते जीवा आत्मप्रयोगेण समुत्पद्यन्ते परप्रयोगेण वा समुत्पद्यन्ते ? गौतम ! आत्मप्रयोगेण समुत्पद्यन्ते न परप्रयोगेण समुत्पद्यन्ते । एतदाशयेनैवाह–'जाव नो परप्पओगेणं उववज्जंति' इति । 'नवरं उववाओ जहा वक्कंतीए धूमप्पभा पुढवी नेरइयाणं' नवरम्–केवलमुपपातो यथा व्युत्क्रान्तौ प्रज्ञापनायाः षष्ठपदे येन रूपेणोपपातः कथित स्तेनैव रूपेणोपपातो धूमप्रभा पृथिवी नैरयिकाणां ज्ञातव्यः, एतदेवौधिकगमापेक्षया वैलक्षण्यम् अन्यत्सर्वमौधिकगमवदेवेति भावः । अत्र कृष्णलेश्यायाः प्रकरणम्, सा च धूमप्रभायां भवतीति, तत्र संज्ञि-

कर्म से नहीं ! हे भदन्त ! वे नारक जीव क्या आत्मप्रयोग से उत्पन्न होते हैं या परप्रयोग से उत्पन्न होते हैं ? हे गौतम ! वे जीव आत्मप्रयोग से ही उत्पन्न होते हैं परप्रयोग से नहीं । यहां तक का यह सब प्रकरण जो कि औधिक नारक के प्रकरण में कहा गया है यहां पर भी वही प्रकरण कहना चाहिए, इसी आशय को लेकर सूत्रकार ने 'जाव नो परप्पओगेणं उववज्जंति' ऐसा सूत्रपाठ कहा है। परन्तु औधिक नारक प्रकरण की अपेक्षा इस प्रकरण में जो विशेषता है वह एक उत्पाद परिमाण में है–यही बात–'नवरं उववाओ जहा वक्कंतीए धूमप्पभा पुढवी नेरइयाणं' इस सूत्रपाठ द्वारा प्रकट की गई है । अर्थात् प्रज्ञापना सूत्र के छट्ठे व्युत्क्रान्ति पद में जिस रूप से धूमप्रभा पृथिवी नैरयिकों का उत्पात कहा गया है उसी रूप से वह उत्पाद यहां पर भी कृष्णलेश्यावाले नैरयिकों का कहना चाहिये, बाकी का और सब कथन औधिक गम के जैसा ही है । यहां कृष्णलेश्या का प्रकरण है । यह कृष्णलेश्या

કર્મથી નહીં હે ભગવન્ તે નારક જીવો શું આત્મ પ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા પરપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે? હે ગૌતમ ! તે જીવો આત્મપ્રયોગથી જ ઉત્પન્ન થાય છે, પરપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થતા નથી આ કથન સુધીનું આ સઘળું પ્રકરણ કે જે ઔધિક નારકના પ્રકરણમાં કહેલ છે, તેજ પ્રકરણ અહિયાં પણ સમજવું. આજ અભિપ્રાયથી સૂત્રકાર 'जाव नो परप्पओगेणं उववज्जंति' આ પ્રમાણેનો સૂત્રપાઠ કહ્યો છે. પરંતુ ઔધિક નારક પ્રકરણના કથન કરતાં આ પ્રકરણમાં જે વિશેષપણું છે, તે એક ઉત્પાદ અને પરિણામમાં જ છે. એજ વાત 'नवरं उववाओ जहा वक्कतीए धूमप्पभा पुढवी नेरइयाणं' આજ સૂત્રપાઠદ્વારા પ્રગટ કરેલ છે. અર્થાત્ પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના છઠ્ઠા વ્યુત્કાંતિ પદમાં જે પ્રમાણે ઉત્પાદના સંબંધમાં કથન કરેલ છે. તેજ પ્રમાણેનો તે ઉત્પાદ અહિયાં પણ ધૂમપ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિકોના સંબંધમાં કહેવો જોઈએ. બાકીનું બીજુ સઘળું કથન ઔધિક ગમના કથન પ્રમાણે છે. અહિયાં કૃષ્ણલેશ્યાનું પ્રકરણ

प्तः? गौतम ! यथा कश्चित् तरुणो बलवान् पुरुषो यावत् त्रिसमयकेन विग्रहेण समुत्पद्यन्ते तेषां खलु जीवानां तथा शीघ्रा गतिः तथा शीघ्रो गतिविषयः प्रज्ञप्तः ते जीवाः कथं परभवायुष्कं कुर्वन्ति गौतम ! अध्यवसाययोगनिर्वर्त्तितेन करणोपायेन एवं खलु परभवायुष्कं कुर्वन्ति, इति । तेषां जीवानां कथं गतिः प्रवर्त्तते गौतम ! आयुःक्षयेण भवक्षयेण स्थितिक्षयेण गतिः प्रवर्त्तते इति । ते जीवाः किमात्मद्धर्या समुत्पद्यन्ते परद्धर्या वा समुत्पद्यन्ते ? गौतम ! आत्मद्धर्यैव समुत्पद्यन्ते न परद्धर्या समुत्पद्यन्ते । हे भदन्त ! ते जीवा आत्मकर्मणा समुत्पद्यन्ते परकर्मणा वा समुत्पद्यन्ते ? गौतम ! आत्मकर्मणैव समुत्पद्यन्ते न परकर्मणा समुत्प

बलवान पुरुष जैसा कि चौदहवें शतक के प्रथम उद्देशक में कहा गया है उसके अनुसार वे नारक तीन समयवाली विग्रहगति से वहां नरकावास में उत्पन्न हो जाते हैं ऐसी उनकी तीव्र गति होती है और उस तीव्र गति का ऐसा विषय होता है। हे भदन्त! वे नारक परभव की आयु का बन्ध कैसे करते हैं ? हे गौतम अध्यवसाययोग से निर्वर्तित करणोपाय से वे नारक परभव की आयु का बन्ध करते हैं। हे भदन्त! उन नारक जीवों की गति किस कारण से होती है ? हे गौतम ! उनकी गति आयु के क्षय से भव के क्षय से और स्थिति के क्षय से होती है। हे भदन्त! वे जीव क्या आत्मर्द्धि से उत्पन्न होते हैं ? या परर्द्धि से उत्पन्न होते हैं ? हे गौतम ! वे आत्मर्द्धि से उत्पन्न होते हैं परर्द्धि से नहीं हे भदन्त ! वे जीव क्या आत्म कर्म से उत्पन्न होते हैं या परकर्म से उत्पन्न होते हैं ? हे गौतम ! वे नारक जीव आत्मकर्म से ही उत्पन्न होते हैं पर-

વિષય કેવા હોય છે ? હે ગૌતમ જેમ કોઈ બળવાન પુરૂષ જેમ કે-ચૌદમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં કથન કરવામાં આવેલ છે તે અનુસાર તેવા નારકો ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ત્યાં નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. એવી તીવ્ર ગતિ તેમની હોય છે. અને એ તીવ્રગતિનો એવો વિષય હોય છે. હે ભગવન્ તે નારકો પરભવના આયુષ્યનો બંધ કેવી રીતે કરે છે ? હે ગૌતમ ! અધ્યવસાય યોગથી નિવર્તિત કરણના ઉપાયથી નારકો પરભવના આયુષ્યનો બંધ કરે છે હે ભગવન્ તે નારક જીવોની ગતિ કયા કારણથી હોય છે ? હે ગૌતમ ! તેઓની ગતિ આયુના ક્ષયથી ભવના ક્ષયથી અને સ્થિતિના ક્ષયથી થાય છે. હે ભગવન તે જીવો શું આત્મઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા પરઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થય છે ? હે ગૌતમ ! તેઓ આત્મઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થાય છે. પરઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થતા નથી. હે ભગવન તે જીવો આત્મકર્મથી ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવ પરકર્મથી ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ તે નારક જીવો પોતાના કર્મથી જ ઉત્પન્ન થાય છે. પર

-द्यन्ते। हे भदन्त! ते जीवा आत्मप्रयोगेण समुत्पद्यन्ते परप्रयोगेण वा समुत्पद्यन्ते? गौतम! आत्मप्रयोगेण समुत्पद्यन्ते न परप्रयोगेण समुत्पद्यन्ते। एतदाशयेनैवाह—'जाव नो परप्पओगेणं उववज्जंति' इति। 'नवरं उववाओ जहा वक्कंतीए धूमप्पभा पुढवी नेरइयाणं' नवरम्—केवलमुपपातो यथा व्युत्क्रान्तौ प्रज्ञापनायाः षष्ठपदे येन रूपेणोपपातः कथितः स्तेनैवरूपेणोपपातो धूमप्रभा पृथिवी नैरयिकाणां ज्ञातव्यः, एतदेवौधिकगमापेक्षया वैलक्षण्यम् अन्यत्सर्वमौधिकगमवदेवेति भावः। अत्र कृष्णलेश्यायाः प्रकरणम्, सा च धूमप्रभायां भवतीति, तत्र संज्ञि-

कर्म से नहीं। हे भदन्त! वे नारक जीव क्या आत्मप्रयोग से उत्पन्न होते हैं या परप्रयोग से उत्पन्न होते हैं? हे गौतम! वे जीव आत्म प्रयोग से ही उत्पन्न होते हैं परप्रयोग से नहीं। यहां तक का यह सब प्रकरण जो कि औधिक नारक के प्रकरण में कहा गया है यहां पर भी वही प्रकरण कहना चाहिए, इसी आशय को लेकर सूत्रकार ने 'जाव नो परप्पओगेणं उववज्जंति' ऐसा सूत्रपाठ कहा है। परन्तु औधिक नारक प्रकरण की अपेक्षा इस प्रकरण में जो विशेषता है वह एक उत्पाद परिमाण में है—यही बात—'नवरं उववाओ जहा वक्कंतीए धूमप्पभा पुढवी नेरइयाणं' इस सूत्रपाठ द्वारा प्रकट की गई है। अर्थात् प्रज्ञापना सूत्र के छट्ठे व्युत्क्रान्ति पद में जिस रूप से धूमप्रभा पृथिवी नैरयिकों का उत्पात कहा गया है उसी रूप से वह उत्पाद यहां पर भी कृष्णलेश्यावाले नैरयिकों का कहना चाहिये, बाकी का और सब कथन औधिक गम के जैसा ही है। यहां कृष्णलेश्या का प्रकरण है। यह कृष्णलेश्या

કર્મથી નહીં હે ભગવન તે નારક જીવો શું આત્મ પ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા પરપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે? હે ગૌતમ! તે જીવો આત્મપ્રયોગથી જ ઉત્પન્ન થાય છે, પરપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થતા નથી આ કથન સુધીનું આ સઘળું પ્રકરણ કે જે ઔધિક નારકના પ્રકરણમાં કહેલ છે, તેજ પ્રકરણ અહિયાં પણ સમજવું. આજ અભિપ્રાયથી સૂત્રકાર 'जाव नो परप्पओगेणं उववज्जंति' આ પ્રમાણેનો સૂત્રપાઠ કહ્યો છે. પરંતુ ઔધિક નરક પ્રકરણના કથન કરતાં આ પ્રકરણમાં જે વિશેષપણું છે, તે એક ઉત્પાદ અને પરિણામમાં જ છે. એજ વાત 'नवरं उववाओ जहा वक्कंतीए धूमप्पभा पुढवी नेरइयाणं' આજ સૂત્રપાઠદ્વારા પ્રગટ કરેલ છે. અર્થાત્ પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના છઠ્ઠા વ્યુત્ક્રાંતિ પદમાં જે પ્રમાણે ઉત્પાદના સંબંધમાં કથન કરેલ છે. તેજ પ્રમાણેનો તે ઉત્પાદ અહિયાં પણ ધૂમપ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિકોના સંબંધમાં કહેવો જોઈએ. બાકીનું બીજુ સઘળું કથન ઔધિક ગમના કથન પ્રમાણે છે. અહિયાં કૃષ્ણલેશ્યાનું પ્રકરણ

सरीसृपपक्षिसिंहान् विहाय तदितरे एव समुत्पद्यन्ते, अत्र तत्र ये जीवा उत्पद्यन्ते तेषामेवोत्पादः पठनीय इति। 'सेसं तं चेव' शेषम्—उपपातव्यतिरिक्तं सर्वं तदेव औधिकगमवदेवेति भावः। 'धूमप्पभा पुढवी कण्हलेस्स खुड्डाग कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' धूमप्रभा पृथिवीकृष्णलेश्यक्षुल्लक कृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त! कुतः कस्मात् स्थानविशेषादागत्य समुत्पद्यन्ते? इति प्रश्नः। उत्तरमाह–'एवं चेव' इत्यादि, 'एवं चेव निरवसेसं' एवमेव–औधिकगमवदेव निरवशेषं ज्ञातव्यम् इति। 'एवं तमाए वि अहे सत्तमाए वि' एवं धूमप्रभा पृथिवी सम्बन्धि कृष्णलेश्य क्षुल्लकनारकविषये यथा कथितं तथैव तमाख्यषष्ठ नारकपृथिवीसम्बन्धि नारकविषयेऽपि, एवं पूर्ववदेव अधः सप्तम्यामिति,

धूमप्रभा आदि में होती है, यहां असंज्ञी, सरीसृप, पक्षी एवं सिंह इनका उत्पाद होता नहीं है अतः इन्हें छोड़कर बाकी के जीव यहां उत्पन्न होते हैं। इसलीए जो जीव यहां उत्पन्न होते हैं उनका ही यहां उत्पाद कहना चाहिये, 'सेसं तं चेव' इस प्रकार उत्पाद के सिवाय और सब कथन औधिक गम के जैसा ही यहां पर जानना चाहिये, इसीलीए धूमप्पभा पुढवी कण्हलेस्स खुड्डाग कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति 'इस प्रश्न का उत्तर प्रभुश्री ने 'एवं चेव निरवसेसं' इस सूत्रपाठ द्वारा दिया है। 'एवं तमाए वि अहे सत्तमाए वि' इसी प्रकार का कथन तमःप्रभा में भी और अधःसप्तमी पृथिवी के नारकों के सम्बन्ध में भी जानना चाहिये, परन्तु प्रज्ञापना के छठे व्युत्क्रान्ति पद में जैसा यहां नारकों का उत्पाद कहा है वहां वैसा ही

છે. આ કૃષ્ણલેશ્યા ધૂમપ્રભામાં હોય છે. અહિયાં અસંજ્ઞી, સરીસૃપ, (સર્પ) પક્ષી અને સિંહ આટલાનો ઉત્પાદ થતો નથી. તેથી આટલાને છોડીને બાકીના જીવો અહિયાં ઉત્પન્ન થાય છે. તેથી જે જીવો અહિયાં ઉત્પન્ન થાય છે. તેઓનો ઉત્પાદજ અહિયાં કહેવો જોઈએ 'सेसं तं चेव' આ રીતે ઉત્પાદના કથન શિવાય બાકીનું સઘળું કથન ઔધિક ગમના કથન પ્રમાણેજ અહિયાં સમજવું તેથી. 'धूमप्पभा पुढवी कण्हलेस्स खुड्डागकडजुम्मनेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' આ પ્રમાણે પ્રશ્ન કરેલ છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં 'एवं चेव निरवसेसं' આ પ્રમાણે પ્રભુશ્રીએ કહેલ છે. 'एवं तमाए वि अहे सत्तमाए वि' આજ પ્રમાણેનું કથન તમઃપ્રભાથી લઈને અધઃસપ્તમી પૃથ્વી સુધીના નારકોના સંબંધમાં પણ સમજવું. પરંતુ પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમાં છઠા વ્યુત્ક્રાંતિ પદમાં જે પ્રમાણે જ્યાં નારકોનો ઉત્પાત કહ્યો છે, ત્યાં એજ પ્રમાણેનો ઉત્પાત કહેવો જોઈએ.

सप्तमनारक पृथिवी सम्बन्धि नारकेऽपि सर्वे पूर्ववदेव ज्ञातव्यमिति । 'नवरं उववाओ सव्वत्थ जहा वक्कंतीए' नवरं वैलक्षण्यं केवलमुपपातो यथा व्युत्क्रान्तौ प्रज्ञापनायाः षष्ठपदे कथित स्तथैव ज्ञातव्य इति । 'कण्हलेस्स खुड्डाग तेओग नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' कृष्णलेश्य क्षुल्लकत्र्योजनैरयिकाः खलु भदन्त ! कुतः कस्मात् स्थानविशेषादागत्य नरकावासे समुत्पद्यन्ते ? इति प्रश्नः । उत्तरमाह-'एवं चेव' एवमेव एवं-यथा पूर्वप्रकरणे उपपातादिः कथित स्तथैव इहापि ज्ञातव्यः । केवलं परिमाणविषये वैलक्षण्यं विद्यते तद्दर्शयति-'णवरं' इत्यादि, 'णवरं तिन्नि वा, सत्त वा, एक्कारस वा, पन्नरस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा' नवरं त्रयो वा, सप्त वा, एकादश वा, पञ्चदश वा, संख्याता वा, असंख्याता वा ते जीवा एकसमयेन समुत्पद्यन्ते नरकावासे 'सेसं तं चेव' शेषं परिमाणातिरिक्तं सर्वं तदेव औघिकप्रकरणकथितमेव । 'एवं जाव अहे सत्तमाए वि' एवं यावद्

उत्पाद कहना चाहीये, 'कण्हलेस्स खुड्डाग तेओग नेरइयाणं भंते !' हे भदन्त ! कृष्णलेश्यावाले क्षुद्र त्र्योजराशि प्रमाण नैरयिक कहां से आकर के नरकावास में उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'एवं चेव' हे गौतम ! पूर्व प्रकरण में जैसा कथन उत्पात आदि के सम्बन्ध में किया गया है उसी प्रकार का कथन यहां पर भी जानना चाहीये । परन्तु 'णवरं तिन्नि वा सत्त वा एक्कारस वा पन्नरसवा संखेज्जा वा असंखेज्जावा' यहां तीन अथवा सात या ११ या १५ या संख्यात या असंख्यात नैरयिक उत्पन्न होते हैं 'सेसं तं चेव' इस प्रकार परिमाण से अतिरिक्त और सब कथन औघिक प्रकरण में जैसा कहा गया है वैसा ही जानना चाहीये । 'एवं जाव अहे सत्तमाए' वि' और ऐसा ही सब कथन यावत् सातवी पृथिवी तक जानना चाहिये,

---

'कण्हलेस्स खुड्डाग तेओग नेरइया णं भंते ! હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુદ્રત્ર્યોજરાશિ પ્રમાણે નૈરયિકો ક્યાંથી આવીને નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'एवं चेव' હે ગૌતમ ! આગલા પ્રકરણમાં ઉત્પાદ વિગેરેના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું કથન કરવામાં આવ્યુ છે, એજ રીતનું કથન અહિયાં પણ સમજવું. પરંતુ 'णवरं तिन्नि वा सत्त वा एक्कारस वा पन्नरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा' અહિયાં ત્રણ અથવા સાત અથવા અગિયાર અથવા પંદર અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત નૈરયિકો ઉત્પન્ન થાય છે. 'सेसं तं चेव' આ પરિણામ દ્વાર શિવાય બાકીનું સઘળું કથન ઔઘિક પ્રકરણમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે સમજવું. 'एवं जाव अहे सत्तमाए' वि' અને આજ પ્રમાણેનું સઘળું કથન યાવત્ સાતમી

मुपपातादिः कथित स्तेनैवरूपेण कृष्णलेश्यक्षुल्लककल्योज प्रमाणयुक्तनारकाणामपि उपपातादिको ज्ञातव्यः। किन्तु क्षुल्लककृतयुग्मनारकापेक्षया यद्वैलक्षण्यं ताहश कल्योजप्रमाणकनारकस्य विद्यते तद्दर्शयति-'णवरं' इत्यादिना, 'णवरं एक्को वा, पंच वा, नव वा, तेरस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा' नवरं केवलमेको वा पञ्च वा, नव वा, त्रयोदश वा, संख्याता वा, असंख्याता वा नारका एकसमये नरकावासे समुत्पद्यन्ते 'सेसं तं चेव' शेषं परिमाणातिरिक्तं सर्वमपि रदेव-कृतयुग्मनारकवदेव ज्ञातव्यमिति। 'एवं धूमप्पभाए वि तमाए वि अहे सत्तमाए वि' एव सामान्यतः कृष्णलेश्य क्षुल्लककल्योजनारकाणां यथा उपपातादिः कथित स्तेनैव रूपेण धूमप्रभायां पञ्चमनारकपृथिव्यामपि कृष्णलेश्य

कृतयुग्म नारकों का उत्पात आदि कहा गया है वैसा ही कृष्णलेश्या वाले क्षुल्लक कल्योज प्रमाण युक्त नारकों का भी उपपात आदि जानना चाहिये। किन्तु क्षुल्लक कृतयुग्म नारकों की अपेक्षा जो क्षुल्लक कल्योज प्रमाण युक्त नारकों में अन्तर है वह 'नवरं एक्कोवा पंच वा नव वा तेरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा' इस सूत्रपाठ द्वारा प्रकट किया गया है, तथाच वहां वे नारक एक समय में एक अथवा पांच, या नौ या तेरह या संख्यात या असंख्यात उत्पन्न होते हैं। 'सेसं तं चेव' परिमाण से अतिरिक्त और सब कथन कृतयुग्म नारकों के जैसा ही जानना चाहिये। 'एवं धूमप्पभाए वि तमाए वि अहे सत्तमाए वि' सामान्य से कृष्णलेश्यावाले क्षुल्लक कल्योज प्रमाणयुक्त नारकों के जैसा उपपात आदि कहा गया है उसी रूप से पंचमनारक पृथिवी जो धूमप्रभा

કહે છે કે-'एवं चेव' હે ગૌતમ! કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારકોના સંબંધમાં જે પ્રમાણે ઉત્પાદ વિગેરેનું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણેનું કથન કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કલ્યોજ પ્રમાણવાળા નારકોના સંબંધમાં પણ ઉપપાત વિગેરે સંબંધી કથન સમજવું.

'પરંતુ ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારકો કરતાં ક્ષુલ્લક કલ્યોજ પ્રમાણવાળા નારકોના કથનમાં જે ફેરફાર છે, તે 'नवरं एक्को वा पंच वा नव वा तेरसवा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा' આ સૂત્રપાઠથી પ્રગટ કરેલ છે. તથા ત્યાં તે નારકો એક સમયમાં એક અથવા પાંચ અથવા નવ અથવા તેર અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત ઉત્પન્ન થાય છે. 'सेसं तं चेव' પરિણામ દ્વારથી અન્ય બાકીનું સઘળું કથન કૃતયુગ્મ નારકોના કથન પ્રમાણે સમજવું. 'एवं धूमप्पभाए वि तमाए वि अहे सत्तमाए वि' સામાન્ય કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક કલ્યોજ પ્રમાણવાળા નારકોના ઉત્પાદ વિગેરેના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું કથન તેમના ઉપપાત વિગેરે

क्षुल्लककल्योजप्रमाणकनारकाणामपि उपपातपरिमाणादिः ज्ञातव्यः। एवमेव क्रमेण तमायां षष्ठनारकपृथिव्यामपि नारकाणामुपपातादि ज्ञातव्यः तथैव अधःसप्तम्यां सप्तमनारकपृथिव्यामपि उपपातादिर्वर्णनीयो नारकाणामिति। यद्यपि परिमाणे संख्याता असंख्याता इति कथितं तथापि कृतयुग्मप्रकरणे संख्याता अपि चतुरवशिष्टा एव, त्र्योजे त्र्यवशिष्टा एव द्व्यवशिष्टा एकावशिष्टा एव संख्याताः असंख्याताश्चेति। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति हे भदन्त! कृष्णलेश्य क्षुल्लककृतयुग्मादि नारकाणामुपपातादिविषये यद् देवानुप्रियेण कथितं तदखिलमपि एवमेव सर्वथा सत्य-

---

है उसमें भी कृष्णलेश्यावाले क्षुल्लक कल्योज प्रमाणयुक्त नारकों का भी उपपात एवं परिमाण आदि कहना चाहिये। इसी क्रम से छठवी तमा नाम की पृथिवि में भी नारकों का उपपात आदि जानना चाहिये। और इसी प्रकार सातवी अधःसप्तमी तमस्तमा नारक पृथिवी में भी नारकों का उपपात आदि जानना चाहिए। यद्यपि परिमाण में संख्यात और असंख्यात ऐसा कहा गया है तो भी कृतयुग्म प्रकरण में संख्यात असंख्यात भी चतुर विशिष्ट ही होते हैं और त्र्योज में वे तीन अवशिष्टवाले ही द्वापरयुग्म में वे दो अवशिष्टवाले ही और कल्योज में वे एक अवशिष्टवाले ही संख्यात एवं असंख्यात होते हैं। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! कृष्णलेश्या युक्त क्षुल्लक कृतयुग्म राशिवाले नारकों के उत्पात आदि के विषय में जो आप देवानुप्रियने

સંબંધી કહેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન પાંચમી નારક પૃથ્વી કે જે ધૂમપ્રભા છે, તેમાં પણ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક કલ્યોજ પ્રમાણવાળા નારકોના ઉપપાત પરિણામ વિગેરે સંબંધી કરવું જોઈએ. આજ ક્રમથી છઠી તમા નામની નારક પૃથ્વીમાં પણ નારકોનો ઉપપાત વિગેરે સમજવો. અને આજ પ્રમાણે સાતમી અધઃસપ્તમી તમસ્તમા નારક પૃથ્વીમાં પણ નારકોના ઉપપાત વિગેરેના સંબંધમાં કથન સમજવું. જો કે પરિણામમાં સંખ્યાત અને અસંખ્યાત એ પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, તો પણ કૃતયુગ્મ પ્રકરણમાં સંખ્યાત અને અસંખ્યાત પણ ચાર વિશિષ્ટજ હોય છે. અને ત્ર્યોજરાશિમાં ત્રણ શેષવાળા, દ્વાપરયુગ્મમાં બે શેષવાળા, અને કલ્યોજમાં એક શેષવાળા જ સંખ્યાત અને અસંખ્યાત હોય છે.

'સેવં ભંતે! સેવં ભંતે! ત્તિ' હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ વિગેરે રાશિવાળા નારકોના ઉત્પાદ વિગેરે વિષયના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે

मेवेति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति ॥सू० १।

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित—कोल्हापुरराजगुरु-बाल-
ब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्य श्री
घासीलालव्रतिविरचितायां श्री "भग
वतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां-
व्याख्यायां एकत्रिंशत्तमे शतके
द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥३१-२॥

कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है। इस प्रकार कहकर गौतम ने भगवान को वन्दना की और नमस्कार किया, वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० १॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके एकतीसवें शतकका
॥ द्वितीय उद्देशक समाप्त ॥

જે કથન કરેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આપ દેવાનુપ્રિયનું તે કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરી તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત "ભગવતીસૂત્ર"ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના એકત્રીસમા શતકનો બીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૧-૨॥



अथ तृतीयोद्देशकः प्रारभ्यते

कृष्णलेश्याश्रितं द्वितीयोद्देशकं व्याख्याय क्रमप्राप्तं नीललेश्याश्रयं तृतीयमुद्देशकमारभते, तदनेन सम्बन्धेनायातस्य तृतीयोद्देशकस्येदं सूत्रम्–'नीललेस्स खुड्डागकडजुम्म' इत्यादि।

मूलम्–नीललेस्स खुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति एवं जहेव कण्हलेस्सखुड्डागकडजुम्मा। नवरं उववाओ जो वालुयप्पभाए, सेसं तं चेव। वालुयप्पभा पुढवी नीललेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया एवं चेव। एवं पंकप्पभाए वि। एवं धूमप्पभाए वि। एवं चउसु वि जुम्मेसु। नवरं परिमाणं जाणियव्वं। परिमाणं जहा कण्हलेस्स उद्देसए, सेसं तहेव। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥सू० १॥

एक्कतीसइमे सए तइओ उद्देसो समत्तो ॥३१–३॥

छाया––नीललेश्यक्षुल्लककृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? एवं यथैव कृष्णलेश्यक्षुल्लककृतयुग्माः। नवरमुपपातो यो वालुकाप्रभायाम्, शेषं तदेव। वालुकाप्रभापृथिवीनीललेश्यक्षुल्लककृतयुग्मनैरयिका एवमेव। एवं पङ्कप्रभायामपि, एवं धूमप्रभायामपि एवं चतुर्ष्वपि युग्मेषु, नवरं परिमाणं ज्ञातव्यम्, परिमाणं यथा कृष्णलेश्योद्देशके, शेषं तदेव। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥सू० १॥

इति एकत्रिंशत्तमे शतके तृतीयोद्देशकः समाप्तः ॥३१–३॥

टीका––तृतीयोद्देशकस्तु नीललेश्याश्रयकः नीललेश्या च तृतीयचतुर्थपञ्च-

---

शतक ३१ उद्देशक ३––

कृष्णलेश्याश्रित द्वितीय उद्देशक की व्याख्या करके अब क्रम प्राप्त नीललेश्याश्रित तृतीय उद्देशक प्रारम्भ किया जाता है, इसका यह प्रथम सूत्र हैं 'नीललेस्स खुड्डाग कडजुम्म' इत्यादि

टीकार्थ––यह तृतीय उद्देशक नीललेश्याश्रयवाला है। नीललेश्या

એકત્રીસમા શતકના ત્રીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

કૃષ્ણલેશ્યાવાળા બીજા ઉદ્દેશાનું કથન કરીને હવે ક્રમથી આવેલ આ નીલલેશ્યા યુક્ત ત્રીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ કરવામાં આવે છે. 'નીલખુડ્ડાગ કડજુમ્મ' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—આ ત્રીજો ઉદ્દેશો નીલલેશ્યા યુક્ત છે. નીલલેશ્યા ત્રીજી ચોથી

मीष्वेव नारकपृथिवीषु भवतीत्यतोऽत्र सामान्यदण्डकः तथा तृतीयचतुर्थपञ्चमी पृथिवीदण्डको भवतीति 'नीललेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते !' नील-लेश्यक्षुल्लककृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! 'कओ उववज्जंति' कुतः-कस्मात् स्थानविशेषादागत्योत्पद्यन्ते ? इति प्रश्नः, भगवानाह-'एवं जहेव' इत्यादि, 'एवं जहेव कण्हलेस्सखुड्डागकडजुम्मा' एवं यथैव कृष्णलेश्यक्षुल्लक-कृतयुग्माः यथा द्वितीयोद्देशके कृष्णलेश्य क्षुल्लक कृतयुग्मप्रमाणकजीवाना-मुत्पादः कथित स्तेनैव रूपेण नीललेश्यक्षुल्लककृतयुग्मप्रमाणकजीवानामुप-पातादि वक्तव्य इति । 'नवरं उववाओ जहा वालुयप्पभाए' नवरं केवलमुपपातो यथा वालुकाप्रभायाम्, अत्र खलु नीललेश्या प्रक्रान्ता सा च नीललेश्या वालु-

---

तृतीय चतुर्थ और पंचमी नारक पृथिवी में ही होती है। इसलिये यहां एक सामान्य दण्डक है। तथा तृतीय चतुर्थ और पंचमी पृथिवी के आश्रित तीन दण्डक हैं।

'नीललेस्स खुड्डाग कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' हे भदन्त ! नीललेश्यावाले क्षुल्लक कृतयुग्मराशि संपन्न नैरयिक किस स्थान विशेष से आकर के नरकावास में उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'एवं जहेव कण्हलेस्स खुड्डाग कडजुम्म' हे गौतम ! जिस प्रकार से द्वितीय उद्देशक में कृष्णलेश्यावाले क्षुल्लक कृतयुग्म प्रमाण संपन्न जीवों का उत्पात आदि वक्तव्य हुआ है उसी प्रकार से यहां नीललेश्यावाले क्षुल्लक कृतयुग्म प्रमाण युक्त जीवों का उत्पात आदि भी वक्तव्य हुआ है। 'नवर उववाओ जहा वालुयप्पभाए' परन्तु विशेष यह है कि बालुकाप्रभा में जैसा उपपात कहा गया है वैसा ही उपपात यहां पर कहना चाहिये, यहां नीललेश्या प्रक्रान्त है। यह

અને પાંચમી નારક પૃથ્વીમાં હોય છે. તેથી અહિયાં એક સામાન્ય દંડક કહેલ છે તથા ત્રીજી, ચોથી અને પાંચમી પૃથ્વી સંબંધી ત્રણ દંડકો કહ્યા છે.

'नीललेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति' હે ભગવન્ નીલલેશ્યા ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ રાશીવાળા નૈરયિકો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને નરકાવાસમા ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'एवं जहेव कण्हलेस्सखुड्डागकडजुम्म' હે ગૌતમ ! જે પ્રમાણે બીજા ઉદ્દેશામાં કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ પ્રમાણવાળા જીવોના ઉત્પાદના સંબંધમાં કથન કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં નીલલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ પ્રમાણવાળા જીવોના ઉત્પાદ વિગેરે સંબંધમાં કહી લેવું. 'नवरं उववाओ जहा वालुयप्पभाए' પરંતુ અહિયાં વિશેષપણું એ છે કે-વાલુકાપ્રભા પૃથ્વીમાં જે પ્રમાણેનો ઉપપાત કહ્યો છે, એજ પ્રમાણેનો ઉપપાત અહિયાં પણ સમજવો.

काप्रभायां नारकपृथिव्यां भवतीति तत्र वालुकाप्रभायां ये जीवा उत्पद्यन्ते तेषामेवात्र उत्पादो वक्तव्य एते जीवा असंज्ञि सरीसृपवर्जिता भवन्तीति। कृष्णलेश्य क्षुल्लककृतयुग्मजीवानां व्युत्क्रान्त्या व्युत्क्रान्तिपदं प्रज्ञापनायाः षष्ठं पदम्, तस्यानुसारेणोपपातः कथित इह तु वालुकाप्रभायामिवोपपातः कथित एतदेवोभयो वैलक्षण्यं भवतीति। 'सेसं तं चेव' शेषमुपपातातिरिक्तं सर्वं परिमाणादिकं तदेव कृष्णलेश्यक्षुल्लककृतयुग्मजीववदेव ज्ञातव्यमिति। 'वालुयप्पभापुढवी नीललेस्स खुड्डाग कडजुम्मनेरइया एवं चेव' वालुकाप्रभापृथिवी नीललेश्यक्षुल्लककृतयुग्मनैरयिका एवमेव वालुकाप्रभाश्रित नीललेश्य कृतयुग्मनारकाणामपि वक्तव्यता औघिकनीललेश्यकृतयुग्मनारकवदेव ज्ञातव्याः। 'एवं पंकप्पभाए वि धूमप्पभाए वि' एवमेव यथा वालुकाप्रभाश्रित नीललेश्य

नीललेश्या तृतीय नारकपृथिवी वालुका आदि में होती है इसलिये वालुकाप्रभा में जो जीव उत्पन्न होते हैं। उनका ही यहां उत्पाद कहना चाहिये यहां असंज्ञी और सरीसृप ये जीव उत्पन्न नहीं होते हैं इनके सिवाय बाकी के जीव उत्पन्न होते हैं। कृष्णलेश्यावाले क्षुल्लक कृतयुग्मराशि संपन्न जीवों का प्रज्ञापना के छठा व्युत्क्रान्ति पद में धूमप्रभा पृथिवी के कथन अनुसार उत्पात कहा गया है। परन्तु यहां वालुकाप्रभा के अनुसार उपपात कहा गया है। यही दोनों में विलक्षणता है। 'सेसं तं चेव' उपपात से अतिरिक्त और सब परिमाण आदि का कथन कृष्णलेश्यावाले क्षुल्लक कृतयुग्म जीवों के जैसा ही है। 'वालुयप्पभापुढवी नीललेस्स खुड्डागकडजुम्म नेरइया एवं चेव' वालुका प्रभाश्रित नीललेश्यावाले कृतयुग्म राशि

અહિયાં નીલલેશ્યાપદ યુક્ત તે કથન કહેવાનું છે. આ નીલલેશ્યા ત્રીજી નારક પૃથ્વીવાલુકા પ્રભામાં હોય છે. તેથી વાલુકાપ્રભામાં જે જીવો ઉત્પન્ન થાય છે, તેઓનો જ ઉત્પાત અહિયાં કહેવો જોઈએ. અહિયાં અસંજ્ઞી, સરીસૃપ (સર્પ) અને સિંહ આ જીવો ઉત્પન્ન થતા નથી. આમના શિવાય બાકીના જીવો ઉત્પન્ન થાય છે. કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મવાળા જીવેનો ઉત્પાદ પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના છઠ્ઠા વ્યુત્ક્રાંતિ પદમાં કહ્યો છે પરંતુ અહિયાં વાલુકાપ્રભામાં કહ્યા પ્રમાણે ઉપપાત કહેલ છે આજ તે કથન કરતાં આ કથનમાં વિશેષ પણુ છે. 'સેસં તં ચેવ' ઉપપાતના કથન શિવાય બાકીના પરિણામ વિગેરે સંબંધી કથન કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ જીવોના કથન પ્રમાણે જ છે, 'वालुयप्पभा पुढवी नीललेस्स खुड्डागकडजुम्मनेरइया एवं चेव' વાલુકાપ્રભા યુક્ત નીલલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મરાશી પ્રમાણુ યુક્ત નારકોનું કથન પણ કૃષ્ણ લેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ રાશીપ્રમાણુવાળા નારકોના કથન પ્રમાણે જ છે. 'एवं पंक

क्षुल्लककृतयुग्मनारकस्य वक्तव्यता तथैव पङ्कप्रभा नारकपृथिव्या धूमप्रभा पृथिव्याश्रितनारकाणामपि वक्तव्यता ज्ञातव्या। 'एवं चउसु वि जुम्मेसु' एवम् क्षुल्लककृतयुग्मवदेव चतुर्ष्वपि युग्मेषु कृतयुग्मत्र्योजद्वापरयुग्मकल्योजरूपेष्वपि नीललेश्यनारकाणां वालुकाप्रभा पङ्कप्रभा धूमप्रभा तृतीयचतुर्थपञ्चमी पृथिव्याश्रितानां वक्तव्यता ज्ञातव्या। 'नवरं परिमाणं जाणियव्वं' नवरं केवलं परिमाणं भिन्नभिन्नरूपेण तत्तद् युग्मे ज्ञातव्यं चतुरष्टद्वादश प्रभृति क्षुल्लक कृतयुग्मादि स्वरूपं ज्ञातव्यमित्यर्थः। परिमाणं तत्तद्युग्मं ज्ञातव्यमिति तत्र केन रूपेण ज्ञातव्यम्, तत्राह-'परिमाणं' इति, 'परिमाणं जहा कण्हलेस्स उद्देसए' परिमाण यथा

प्रमाण युक्त नारकों की भी वक्तव्यता औधिक नीललेश्यावाले कृतयुग्म राशि प्रमाणयुक्त नारकों के जैसी ही है। 'एवं पंकप्पभाए वि धूमप्पभाए वि' जैसी वालुकाप्रभाश्रित नीललेश्य क्षुल्लक कृतयुग्मवाले नारक की वक्तव्यता है वैसी ही वक्तव्यता पङ्कप्रभा नारक पृथिवी के और धूमप्रभा पृथिवी के नारकों की भी है। 'एवं चउसु वि जुम्मेसु' क्षुल्लक कृतयुग्म के जैसा ही चारों युग्मों में-कृतयुग्म, त्र्योज, द्वापर और कल्योज-इन युग्मों में भी वालुकाप्रभा, पङ्कप्रभा, धूमप्रभा इन तीन पृथिवियों के आश्रित हुए नीललेश्यावाले नारक जीवों की वक्तव्यता जाननी चाहिए। 'नवरं परिमाणं जाणियव्वं' परन्तु उस-उस युग्म में परिमाण भिन्न-भिन्न रूप से जानना चाहिये। और वह परिमाण चार, आठ, बारह आदि क्षुल्लक कृतयुग्मादि रूप होता है ऐसा समजना चाहिये, इसी बात को 'परिमाणं जहा कण्हलेस्स उद्देसए' इस सूत्रपाठ द्वारा स्पष्ट किया गया है अर्थात्-कृष्णलेश्योद्देशक में जैसा

प्पभाए वि धूमप्पभाए वि' वालुकाप्रभा युक्त नीललेश्यावाળા क्षुल्लक कृतयुग्म नारકોનું કથન જે પ્રમાણે કહેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન પંકપ્રભા નારક પૃથ્વીના અને ધૂમપ્રભા નારક પૃથ્વીના નારકોના સંબંધમાં પણ કહેલ છે. 'एवं चउसु वि जुम्मेसु' ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મના કથન પ્રમાણે જ ચારે યુગ્મોમાં પણ એટલે કે-કૃતયુગ્મ, ત્ર્યોજદ્વાપર અને કલ્યોજ આ યુગ્મોમાં પણ વાલુકાપ્રભા પંકપ્રભા, ધૂમપ્રભા, આ ત્રણ પૃથ્વીયોના આશ્રયવાળા નીલલેશ્યાવાળા નારક જીવોનું કથન સમજવું.

'नवरं परिमाणं जाणियव्वं' પરંતુ તે તે યુગ્મોમાં પરિણામ અલગ-અલગ હોવાનું સમજવું અને તે પરિણામ ચાર, આઠ, બાર વિગેરે ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ વિગેરે પણાવાળું હોય છે. તેમ સમજવું આ વાત 'परिमाणं जहा कण्हलेस्स उद्देसए' આ સૂત્રદ્વારા સમજાવેલ છે. અર્થાત્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ઉદ્દે-

कृष्णलेश्योद्देशके कथितं तथैव ज्ञातव्यम्, तथाहि-क्षुल्लककृतयुग्मनारकाणां परिमाणं चत्वारो वा, अष्टौ वा, द्वादश वा, षोडश वा, संख्याता वा, असंख्याता वा, समुत्पद्यन्ते। त्र्योजनीललेश्यनारकास्त्रयो वा, सप्त वा, एकादश वा, पञ्चदश वा, संख्याता वा असंख्याता वा जायन्ते एक समये। द्वापरयुग्म नीललेश्यनारकाः द्वौ वा, षड् वा, दश वा, चतुर्दश वा, संख्याता वा, असंख्याता वा एकसमयेन जायन्ते। कल्योज नीललेश्यनारका एको वा, पञ्च वा, नव वा, त्रयोदश वा, संख्याता वा, असंख्याता वा जायन्ते एकसमये। एवं क्रमेण कृष्णलेश्योद्देशके प्रोक्तप्रकारेण परिमाणं ज्ञातं भवतीति। 'सेसं तहेव' शेषं परिमाणातिरिक्तं सर्वमुपपातादिकं

परिमाण कहा गया है वैसा ही जानना चाहिये-जैसे-क्षुल्लक कृतयुग्म नारकों का परिमाण चार अथवा आठ अथवा बारह अथवा सोलह अथवा संख्यात अथवा असंख्यात है-एक समय में ये नारक इतनी संख्या में वहां उत्पन्न होते हैं। त्र्योज नीललेश्य नारक तीन अथवा सात अथवा ग्यारह अथवा पन्द्रह अथवा संख्यात अथवा असंख्यात एक समय में उत्पन्न होते हैं। द्वापरयुग्म नीललेश्यावाले नारक दो अथवा छह अथवा दश अथवा चौदह अथवा संख्यात अथवा असंख्यात एक समय में उत्पन्न होते हैं। कल्योज नीललेश्य नारक एक अथवा पांच अथवा नौ अथवा तेरह अथवा संख्यात अथवा असंख्यात एक समय में उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार से कृष्णलेश्योदेशक में कहे गये अनुसार परिमाण जाना जाता है। 'सेसं तहेव' परिमाण से अतिरिक्त और

શમાં જે પ્રમાણે પરિણામ કહેલ છે, એજ પ્રમાણેનુ પરિણામ અહિયાં સમજવું. જેમ કે-ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારકોનું પરિણામ ચાર અથવા આઠ અથવા બાર અથવા સોળ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત છે.-એક સમયમાં આ નારકો આટલી સંખ્યામાં ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે. ત્ર્યોજ નીલલેશ્યા નારક ત્રણ અથવા સાત અથવા અગિયાર અથવા પંદર અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત એક સમયમાં ઉત્પન્ન થાય છે. દ્વાપરયુગ્મ નીલલેશ્યાવાળા નારકો બે અથવા છ અથવા દસ અથવા ચૌદ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત એક સમયમાં ઉત્પન્ન થાય છે. કલ્યોજ નીલલેશ્યાવાળા નારકો એક અથવા પાંચ અથવા નવ અથવા તેર અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત એક સમયમાં ઉત્પન્ન થાય છે. એ રીતે કૃષ્ણલેશ્યા ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે પરિણામ સમજવું જોઈએ. 'સેસં તહેવ' પરિણામ શિવાય બાકીનું ઉત્પાદ સંબંધી કથન પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે જ છે. તેમ સમજવું.

पूर्ववदेव ज्ञातव्यमिति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति हे भदन्त ! नीललेश्यक्षुल्लककृतयुग्मादि नारकविषये यद् देवानुप्रियेण कथितं तत्सर्वं सर्वथैव सत्यमिति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरति ॥सू० १॥

इति श्री-विश्वविख्यातजगद्वल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि - 'जैनाचार्य' पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां "श्री भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां एकत्रिंशत्तमे शतके तृतीयोद्देशकः समाप्तः ॥३१-३॥

सब उत्पाद आदि पूर्वोक्त जैसे ही जानना चाहिये 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! नीललेश्य क्षुल्लक कृतयुग्मादि नारकों के विषय में जो आप देवानुप्रिय ने कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है । ऐसा कह कर गौतमस्वामीने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया, वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये । ॥सू०१॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके तीसवें शतकका तृतीय उद्देशक समाप्त ॥३१-३॥

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ નીલલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ વિગેરે નારકોના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે, હે ભગવન્ આપનુ કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી અને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પુજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્ર ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના એકત્રીસમા શતકનો ત્રીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૦-૨॥



अथ चतुर्थोद्देशकः प्रारभ्यते

तृतीयोद्देशकं निरूप्य क्रमप्राप्तं चतुर्थमुद्देशकं कापोतलेश्याश्रयं निरूपयति तस्येदं सूत्रम्-'काउलेस्स' इत्यादि।

मूलम्—काउलेस्स खुड्डाग कडजुम्मनेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति एवं जहेव कण्हलेस्सखुड्डागकडजुम्म० नवरं उववाओ जो रयणप्पभाए, सेसं तं चेव। रयणप्पभा पुढवी काउयलेस्स खुड्डाग कडजुम्मनेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति एवं चेव एवं सक्करप्पभाए वि एवं वालुयप्पभाए वि, एवं चउसु वि जुम्मेसु। नवरं परिमाणं जाणियव्वं परिमाणं जहा कण्हलेस्स उद्देसए सेसं तं चेव। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥सू० १॥

एकतीसइमे सए चउत्थो उद्देसो समत्तो ॥३१-४॥

छाया—कापोतलेश्यक्षुल्लककृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते एवं यथैव कृष्णलेश्यक्षुल्लककृतयुग्म० नवरमुपपातो यो रत्नप्रभायाम्, शेषं तदेव। रत्नप्रभापृथिवी कापोतलेश्यक्षुल्लककृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? एवमेव। एवं शर्कराप्रभायामपि एवं वालुकाप्रभायामपि एवं चतुर्ष्वपि युग्मेषु। नवरं परिमाणं ज्ञातव्यम्, परिमाणं यथा कृष्णलेश्योद्देशके शेषं तदेव। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥सू० १॥

एकत्रिंशत्तमे शतके चतुर्थोद्देशकः समाप्तः ॥३१-४॥

टीका—अयं चतुर्थोद्देशकः कापोतलेश्याश्रयः सा च कापोतलेश्या प्रथमद्वितीयतृतीयरत्नप्रभाशर्कराप्रभा वालुकाप्रभापृथिवीष्वेव भवतीति कृत्वाऽत्र सामान्यदण्डको रत्नप्रभादिदण्डकत्रयं च भवतीति। सम्प्रति अक्षरार्थं विवृणोमि 'काउलेस्स खुड्डाग कडजुम्मनेरइया णं भंते! कओहिंतो उववज्जंति' कापोत-

---

शतक ३१ उद्देशक ४—

तृतीय उद्देशक का निरूपण करके अब क्रम प्राप्त चतुर्थ उद्देशक का जो कि कापोतलेश्या के आश्रित है निरूपण किया जाता है।

'काउलेस्स खुड्डाग कडजुम्म नेरइयाणं भंते!' इत्यादि

ચોથા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

ત્રીજા ઉદ્દેશાનું નિરૂપણ કરીને હવે ક્રમથી આવેલ આ ચોથા ઉદ્દેશાનું કે જે કાપોતલેશ્યા યુક્ત છે. તેનું નિરૂપણ કરવામાં આવે છે.-काउलेस्सखुड्डाग-कडजुम्मनेरइया णं भंते!' ઇત્યાદિ

लेश्यक्षुल्लककृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त! कुतः—कस्मात् स्थानविशेषादागत्य उत्पद्यन्ते ? इति प्रश्नः, भगवानाह—'एवं जहेव' इत्यादि, 'एवं जहेव कण्हलेस्स खुड्डाग कडजुम्म०' एवं यथैव कृष्णलेश्यक्षुल्लककृतयुग्मनैरयिकवदेव इहापि परिणामादि ज्ञातव्यः तथाहि—कापोतलेश्यक्षुल्लकनैरयिकाः कुत उत्पद्यन्ते ?

टीकार्थ—यह चतुर्थ उद्देशक कापोतलेश्या के आश्रित है। यह कापोतलेश्या प्रथम, द्वितीय तृतीय नारको में होती है। प्रथम नरक का नाम रत्नप्रभा है। द्वितीय नरक का नाम शर्करा प्रभा है। तृतीय नरक का नाम वालुकाप्रभा है। इस प्रकार यहां एक सामान्य दण्डक है और रत्नप्रभादि सम्बन्धी तीन दण्डक हैं 'काउलेस्स खुड्डाग कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति' हे भदन्त! कापोतलेश्यावाले क्षुल्लक कृतयुग्मराशि प्रमित नैरयिक किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं 'एवं जहेव कण्हलेस्स खुड्डाग कडजुम्म०' हे गौतम! जैसा कृष्णलेश्यावाले क्षुद्र कृतयुग्म नैरयिकों के सम्बन्ध में कहा गया है वैसा ही यहां पर कहना चाहिये। अर्थात् जब गौतमस्वामी ने प्रभुश्री से ऐसा पूछा—हे भदन्त! कापोतलेश्यावाले क्षुल्लक नैरयिक कहां से उत्पन्न होते हैं? तो उत्तर में प्रभुश्री ने उनसे ऐसा कहा—कि हे गौतम! कापोत लेश्यावाले क्षुल्लकनैरयिक नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न नहीं होते हैं। देवों में से आकर के उत्पन्न नहीं होते हैं किन्तु पञ्चेन्द्रिय-

ટીકાર્થ—આ ચોથો ઉદ્દેશો કાપોત લેશ્યા યુક્ત કહેલ છે. આ કાપોત-લેશ્યા પહેલા, બીજા, અને ત્રીજા નારકોમાં જ હોય છે. પહેલા નરકનું નામ રત્નપ્રભા છે. બીજા નરકનું નામ શર્કરા પ્રભા છે ત્રીજા નરકનું નામ વાલુકાપ્રભા છે. આ રીતે અહિયાં એક સામાન્ય દંડક કહેલ છે, અને રત્નપ્રભા વિગેરે સંબંધમાં ત્રણ દંડકો કહ્યા છે. 'काउलेस्सखुड्डागकडजुम्म नेरइया णं भंते! कओहिंतो उववज्जंति' હે ભગવન્ કાપોત લેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મરાશિ યુક્ત નૈરયિક કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'एवं जहेव कण्हलेस्सखुड्डागकडजुम्म०' હે ગૌતમ! કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નૈરયિકોના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું કથન કરેલ છે, એજ પ્રમાણેનું સઘળું કથન અહિયાં સમજવું. અર્થાત્ ગૌતમસ્વામીએ જ્યારે એવું પૂછ્યું કે—હે ભગવન્ કાપોતલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક નૈરયિકો ક્યાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી તેઓને કહે છે કે—હે ગૌતમ! કાપોત લેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક નૈરયિક નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થતા નથી. દેવોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થતા નથી. પરંતુ

हे गौतम ! यथानामकः कश्चित् प्लवकः प्लवमानोऽध्यवसायनिर्वर्तितेन करणोपायेन स्वस्थानं परित्यज्य आगामिस्थानान्तरं प्रतिपद्यते एवमेव जीवोऽध्यवसाययोगनिर्वर्तितेन करणोपायेन पूर्वकालिकभवं परित्यज्य भवान्तरमासादयति। हे भदन्त ! तेषां जीवानां कथं शीघ्रा गति र्भवति कथं शीघ्रश्च गतिविषयः प्रज्ञप्तः हे गौतम ! यथानामकः कश्चित् तरुणो बलवान् यावत् त्रिसमयकेन विग्रहेणोत्पद्यन्ते तथा शीघ्रा गति र्भवति तथा शीघ्रश्च गतिविषयः प्रज्ञप्तः । ते जीवा भदन्त ! कथं परभवायुष्कं प्रकुर्वन्ति गौतम ! अध्यवसाययोगनिर्वर्तितेन करणो-

---

तिर्यग्योनिकों से आकर के उत्पन्न होते हैं और गर्भज मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं। हे भदन्त ! वे वहां किस प्रकार से आकर के उत्पन्न होते हैं ? हे गौतम ! जिस प्रकार कोई कूदनेवाला व्यक्ति कूदता कूदता पूर्व के स्थान को छोड़कर आगे के स्थान पर पहुंच जाता है उसी प्रकार से नैरयिक भी पूर्ववर्ती भव को छोड़कर अध्यवसाय रूप कारण के वश से आगे के भव को प्राप्त करलेते हैं। हे भदन्त ! उन जीवों की शीघ्र गति कैसी होती है ? और उस शीघ्रगति का विषय कैसा होता है ? जैसे कोई तरुण बलवान् पुरुष चौदहवें शतक में प्रथम उद्देशक में कहे गये अनुसार हो, तो जैसा वहां कहा गया है उसके अनुसार वे नैरयिक तीन समयवाली विग्रहगति से वहां नरकावास में उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार की उनकी शीघ्र गति होती है और ऐसा ही उनकी शीघ्र गति का विषय होता है। हे भदन्त ! वे नारक परभव की आयु का बन्ध कैसे करते हैं ? हे गौतम ! अध्यवसाय

પંચેન્દ્રિય તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે તથા ગર્ભજ મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે. હે ભગવન્ તેઓ ત્યાં કઇ રીતે આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આના ઉત્તરમાં હે ગૌતમ ! જે પ્રમાણે કોઇ કૂદવાવાળો પુરૂષ કૂદતો કૂદતો પહેલાના સ્થાનને છોડીને આગળના સ્થાન પર પહોંચી જાય છે, એજ પ્રમાણે નૈરયિકો પણ પહેલાના ભવને છોડીને અધ્યવસાયરૂપ કારણને વશ થઇને આગળના સ્થાનપર પહોંચી જાય છે. હે કરૂણુ નિધાન ભગવન્ તે જીવોનું શીઘ્રગમન કેવા પ્રકારનું હોય છે ? અને તે શીઘ્ર ગમનનો વિષય કેવો હોય છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-હે ગૌતમ ! જેમ કોઈ તરૂણ બળવાન પુરૂષ ચૌદમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશામા કહ્યા પ્રમાણે તે નૈરયિકો ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ત્યાં નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે. આ રીતની તેઓની શીઘ્રગતિ હોય છે. અને તેઓના શીઘ્ર ગમનનો વિષય પણ એજ પ્રમાણેનો હોય છે. હે ભગવન્ તે નારકો પરભવના આયુષ્યનો બંધ કેવી રીતે કરે છે ?

पायेन एवं खलु ते जीवाः परभवायुष्कं प्रकुर्वन्ति। हे भदन्त! तेषां जीवानां कापोतलेश्याश्रयाणां कथं गति र्भवति गौतम! आयुःक्षयेण भवक्षयेण स्थितिक्षयेण एवं गति र्भवति। हे भदन्त! ते जीवाः कापोतलेश्याश्रया किम् आत्मऋद्ध्योत्पद्यन्ते परऋद्ध्या वा उत्पद्यन्ते? हे गौतम! आत्मऋद्ध्या समुत्पद्यन्ते नो परऋद्ध्या, हे भदन्त! ते कापोतलेश्या जीवाः किमात्मकर्मणा उत्पद्यन्ते परकर्मणा वा? हे गौतम! आत्मकर्मणा जायन्ते नो परकर्मणा। हे भदन्त! कापोतलेश्या जीवाः किमात्मप्रयोगेणोत्पद्यन्ते परप्रयोगेण वा हे गौतम! आत्म-

योग से निर्वर्तित करणोपाय से वे नारक परभव की आयुका बन्ध करते हैं। हे भदन्त! कापोतलेश्यावाले उन जीवों की गति कैसी होती है? गौतम! आयु के क्षय से, भव के क्षय से और स्थिति के क्षय से होती है। हे भदन्त! कापोतलेश्याश्रयवाले वे जीव क्या आत्मऋद्धि से उत्पन्न होते हैं? या परऋद्धि से उत्पन्न होते हैं? हे गौतम! वे जीव वहां से आत्मऋद्धि से उत्पन्न होते है, परऋद्धि से उत्पन्न नहीं होते हैं। हे भदन्त! वे कापोतलेश्यावाले जीव क्या आत्मकर्म से उत्पन्न होते हैं? या परकर्म से उत्पन्न होते हैं? हे गौतम! वे जीव आत्मकर्म से ही उत्पन्न होते हैं परकर्म से उत्पन्न नहीं होते हैं। हे भदन्त! वे कापोतलेश्यावाले जीव क्या आत्मप्रयोग से उत्पन्न होते हैं? या परप्रयोग से उत्पन्न होते हैं? हे गौतम! वे जीव आत्मप्रयोग से ही उत्पन्न होते हैं परप्रयोग

હે ગૌતમ! અધ્યવસાય યોગથી નિર્વર્તિત કરવાના ઉપાયથી તે નારકો પર ભવના આયુષ્યને બંધ કરે છે. હે ભગવન્ કાપોતલેશ્યાવાળા તે જીવોની ગતિ કેવી હોય છે? હે ગૌતમ! આયુષ્યના ક્ષયથી ભવના ક્ષયથી અને સ્થિતિના ક્ષયથી તેઓની ગતિ થાય છે. હે ભગવન્ કાપોતલેશ્યાના આશ્રય વાળા તે જીવો શું આત્મઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થાય છે? કે પરઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થાય છે. હે ગૌતમ! તે જીવો ત્યાં આત્મઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થાય છે. પરઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થતા નથી. હે ભગવન્ તે કાપોતલેશ્યાવાળા જીવો આત્મકર્મથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા પરકર્મથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે? હે ગૌતમ! તે જીવો આત્મકર્મથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે. પરકર્મથી ઉત્પન્ન થતા નથી. હે ભગવન્ તે કાપોતલેશ્યાવાળા જીવો શું આત્મ પ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા પર પ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે? હે ગૌતમ! તે જીવો આત્મપ્રયોગથી જ ઉત્પન્ન થાય છે, પરપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થતા નથી. વિગેરે પ્રકારથી કૃષ્ણ લેશ્યાના સંબંધમાં કહેલ સઘળું કથન અહિયાં કહેવું જોઈએ.

प्रयोगेणोत्पद्यन्ते नो परप्रयोगेणेत्यादिकं सर्वं कृष्णलेश्यप्रकरणोदितमिह ज्ञातव्यम् इति। 'नवरं उववाओ रयणप्पभाए' नवरं केवलं पूर्वापेक्षया वैलक्षण्यमिदं यत् कापोतलेश्य जीवानामुपपातो यथा रत्नप्रभायां कथितः तथैव सामान्यदण्डके उपपातो वर्णनीय इति। 'सेसं तं चेव' शेषमुपपातातिरिक्तं सर्वं परिमाणादिकं तदेव कृष्णलेश्यनारकीय द्वितीयोद्देशकवदेव ज्ञातव्यमिति। सामान्यदण्डकः कापोतलेश्यजीवानामिति। 'रयणप्पभापुढवीकाउलेस्स खुड्डागकडजुम्म नेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति' रत्नप्रभापृथिवी कापोतलेश्यक्षुल्लक कृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त! कुतः-कस्मात् स्थानविशेषादागत्य रत्नप्रभायामुत्पद्यन्ते? इति प्रश्नः, भगवानाह-'एवं' इत्यादि, 'एवं चेव' एवमेव यथैव सामान्यदण्डके कापोतलेश्यनारकजीवानामुत्पत्तिः कथिता तथैव रत्नप्रभाप्रथमनारकाश्रित कापो-

---

से नहीं। इत्यादि सब यह कृष्णलेश्योदित प्रकरण यहां कहना चाहिये 'नवरं उववाओ रयणप्पभाए' परन्तु पूर्व की अपेक्षा से यही वैलक्षण्य है कि कापोतलेश्यावालों का उपपात जैसा रत्नप्रभा में कहा गया है वैसा ही सामान्य दण्डक में उपपात कहना चाहिये। 'सेसं तं चेव' उपपात से अतिरिक्त और सब परिमाण आदिक कृष्णलेश्य नारक के द्वितीय उद्देशक के जैसे ही जानना चाहिये। ऐसा यह सामान्य दण्डक कापोतलेश्यावाले जीवों का है। 'रत्नप्रभा पुढवीकाउलेस्स खुड्डाग कडजुम्म नेरइयाणं भंते कओ उववज्जंति' हे भदन्त! कापोतलेश्यावाले क्षुद्रकृतयुग्मराशि प्रमित रत्नप्रभा के नैरयिक किस स्थान विशेष से आकर के रयणप्पभा रूप नरकावास में उत्पन्न होते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'एवं चेव' हे गौतम! सामान्यदण्डक में कापोतलेश्यावाले नारक जीवों का जैसा उपपात कहा

'नवरं उववाओ रयणप्पभाए' परंतु पहेलाना करतां अहिं એજ વિલક્ષણપણું છે કે-કાપોતલેશ્યાવાળાઓનો ઉપપાત જે પ્રમાણે રત્નપ્રભામાં કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનો ઉપપાત સામાન્ય દંડકમાં કહેવો જોઈએ. 'सेसं त चेव' ઉપપાતના કથન શિવાય બાકીનું પરિણામ વિગેરે કથન કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નારકના બીજા ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે સમજવું એ પ્રમાણે આ સામાન્ય દંડક કાપોતલેશ્યાનાં સંબંધમાં કહેલ છે.

'रयणप्पभा पुढवी काउलेस्स खुड्डागकडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' હે ભગવન્ કાપોતલેશ્યાવાળા ક્ષુદ્ર કૃતયુગ્મ રાશિથી યુક્ત રત્નપ્રભાના નૈરયિકો કયા સ્થાન વિશેષમાંથી આવીને રત્નપ્રભા રૂપ નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'एवं चेव' હે

वा, असंख्याता वेति। 'सेसं तं चेव, शेषं परिमाणातिरिक्तं सर्वं तदेव सामान्य दंडकपरिपठितमेव ज्ञातव्यमिति। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति, हे भदन्त! कापोतलेश्यजीवानां चतुर्ष्वपि दंडकेषु येन रूपेण उपपातादिकं देवानुप्रियेण कथितं तत् सर्वम् एवमेव-सर्वथा सत्यमेव इति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति ॥सू० १॥

इति एकत्रिंशत्तमे शतके चतुर्थोद्देशकः समाप्तः ॥ ३१-४ ॥

चौदह, संख्यात या असंख्यात उत्पन्न होते हैं। कल्योज राशिप्रमित कापोतलेश्यावाले नारक जीव एक, पांच, नौ, तेरह, संख्यात अथवा असंख्यात एक साथ उत्पन्न होते हैं। 'सेसं तं चेव' परिमाण से अतिरिक्त और सब कथन सामान्य दण्डक के जैसा ही कहा गया जानना चाहिये, 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! कापोतलेश्यावाले जीवों के चारो दण्डकों में जिसरूप से उपपात आदिक आप देवानुप्रिय ने कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही हैं। इस प्रकार कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया, वन्दना, नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० १॥

॥ चतुर्थ उद्देशक समाप्त ॥ -३१-४ ॥

વાળા નારક જીવો એકી સાથે બે, છ, દસ અને ચૌદ સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત ઉત્પન્ન થાય છે. કલ્યોજ રાશિ પ્રમાણુ કાપોતલેશ્યાવાળા નરક જીવો એક, પાંચ, નવ, તેર સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત એક સાથે ઉત્પન્ન થાય છે. 'સેસં તં ચેવ' પરિણામ શિવાયનું બાકીનું સઘળું કથન સામાન્ય દંડકમાં કહ્યા પ્રમાણે જ કહ્યું છે, તેમ સમજવું.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ કાપોતલેશ્યાવાળા જીવોના ચારે દંડકોમાં જે પ્રમાણે ઉપપાત વિગેરે આપ દેવાનુપ્રિયે કહેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન આપ દેવનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥ચોથો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૧-૪॥

अथ पञ्चमोद्देशकः प्रारभ्यते ॥

मूलम्–भवसिद्धिय खुड्डाग कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति ? किं नेरइय० ? एवं जहेव ओहिओ गमओ तहेव निरवसेसं जाव नो परप्पओगेणं उववज्जंति । रयणप्पभापुढवी भवसिद्धिय खुड्डाग कडजुम्मनेरइया णं भंते !० एवं चेव निरवसेसं एवं जाव अहे सत्तमाए । एवं भवसिद्धिय खुड्डाग तेओग नेरइया वि, एवं जाव कलिओग त्ति नवरं परिमाणं जाणियव्वं, परिमाणं पुव्वभणियं जहा पढमुद्देसए । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।१।

छाया–भवसिद्धिक क्षुल्लककृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यः, एवं यथैवौधिको गमक स्तथैव निरवशेषं यावन्नो परप्रयोगेणोत्पद्यन्ते । रत्नप्रभा पृथिवीभवसिद्धिकक्षुल्लककृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! एवमेव निरवशेषम् एवं यावदधःसप्तम्याम् । एवं भवसिद्धिकक्षुल्लकत्र्योजनैरयिका अपि, एवं यावत्कल्योज इति, नवरं परिमाणं ज्ञातव्यं परिमाणं पूर्वभणितं यथा प्रथमोद्देशके । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति । सू० १॥

टीका–'भवसिद्धिय खुड्डाग कडजुम्मनेरइयाणं भंते' भवसिद्धिक क्षुल्लककृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! 'कओ उववज्जंति किं नेरइय०' कुतः–कस्मात् स्थानविशेषादागत्योत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य आगत्य उत्पद्यन्ते तिर्यग्योनिकेभ्यो वा आगत्य नरकावासे समुत्पद्यन्ते मनुष्येभ्यो वा आगत्य समुत्पद्यन्ते देवेभ्यो वा

शतक ३१ उद्देशक–५

'भवसिद्धिय खुड्डागकडजुम्म नेरइयाणं भंते !' इत्यादि

टीकार्थ–'भवसिद्धिय खुड्डागकडजुम्म नेरइयाणं भंते !' हे भदन्त ! भवसिद्धिक क्षुद्रकृतयुग्म नैरयिक 'कओहिंतो उववज्जंति' किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अर्थात् जो भवसिद्धिक नैरयिक क्षुद्र कृतयुग्मराशि प्रमित हैं वे कहाँ से आकर के नरकावास में उत्पन्न

॥પાંચમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'भवसिद्धिय खुड्डागकडजुम्मनेरइयाणं भंते ! ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–'भवसिद्धिय खुड्डागकडजुम्मनेरइयाणं भंते ! હે ભગવન્ ભવસિદ્ધિક ક્ષુદ્ર કૃતયુગ્મ નૈરયિક 'कओहिंतो उववज्जंति' કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અર્થાત્ જે ભવસિદ્ધિક નૈરયિક ક્ષુદ્ર કૃતયુગ્મરાશિ પ્રમાણ છે, તેઓ કયાંથી આવીને નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં

आगत्योत्पद्यन्ते ? इति प्रश्नः, भगवानाह–'एवं जहेव' इत्यादि, 'एवं जहेव ओहिओ गमओ तहेव निरवसेसं जाव नो परप्पयोगेणं उववज्जंति' एवं यथैव औधिको गमकस्तथैव निरवशेषं यावन्नो परप्रयोगेणोत्पद्यन्ते औघिकप्रकरणे यथोत्पादादिकं कथितं तथैव इहापि ज्ञातव्यम्, तथाहि-कुत उत्पद्यन्ते इति प्रश्नस्य न नैरयिकेभ्य आगत्य उत्पद्यन्ते न वा देवेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते किन्तु पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते तथा गर्भजमनुष्येभ्य आगत्य समुत्पद्यन्ते, इत्युत्तरम् । ते खलु भवसिद्धिकाः क्षुल्लककृतयुग्मनारकाः भदन्त ! एकसमये कियन्त उत्पद्यन्ते ? गौतम ! चत्वारो वा, अष्ट वा, द्वादश वा, षोडश वा, संख्याता वा, असंख्याता वा एकसमये जायन्ते। ते खलु भदन्त ! भवसिद्धिकक्षुल्लककृत-

होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं–'एवं जहेव निरवसेसं जाव नो परप्पयोगेणं उववज्जंति' हे गौतम ! औधिक प्रकरण में जैसा-जिस रीति से उत्पाद आदि का कथन किया है उसी रीति से वह सब यहां पर भी जानना चाहिये, जैसे–यह प्रश्न किया गया है कि भव सिद्धिक कृतयुग्म नैरयिक कहां से आकर के उत्पन्न होते हैं ? तो वहां ऐसा उत्तर में कहना चाहिये कि वे न नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं और न देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? किन्तु पञ्चेन्द्रिय-तिर्यग्योनिको में से आकर के उत्पन्न होते हैं और गर्भज मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं। हे भदन्त ! ये क्षुल्लक कृतयुग्मराशि प्रमित भवसिद्धिक नैरयिक एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं–? हे गौतम ! एक समय में वे चार, या आठ, या बारह, या सोलह या

પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે–'एवं जहेव ओहिओ गमओ तहेव निरवसेस जाव परप्पओगेणं उववज्जंति' હે ગૌતમ ! ઔધિકના પ્રકરણમાં જે પ્રમાણે ઉત્પાદ વિગેરે સંબંધી કથન કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે તે સઘળું કથન અહિયાં પણ સમજવું જેમ કે-જ્યારે એવો પ્રશ્ન પૂછવામાં આવ્યો કે-ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ નૈરયિક ક્યાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? તો તેનો ઉત્તર એવો છે કે-તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થતા નથી તથા દેવોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થતા નથી. પરંતુ પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે. તથા ગર્ભજ મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે. હે ભગવન્ આ ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મરાશિ પ્રમાણુવાળા ભવસિદ્ધિક નૈરયિકો એક સમયમાં કેટલા ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ ! એક સમયમાં તેઓ ચાર, અથવા આઠ અથવા બાર અથવા સોળ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત ઉત્પન્ન થાય છે. હે ભગવન્ આ ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મરાશિ પ્રમાણુવાળા ભવસિદ્ધિક નૈરયિકો કેવી રીતે

युग्मनारकाः कथमुत्पद्यन्ते ? हे गौतम ! स यथानामकः कश्चित् प्लवमानोऽध्यवसायनिर्वर्तितेन करणोपायेन एष्यति काले पूर्वस्थानं परित्यग्रेतनं स्थानमुपसंपद्य विहरति, एवमेव इमे नारकाः प्लवका इवाध्यवसायनिर्वर्तितेन करणोपायेन पूर्वभवं परित्यज्य भवान्तर मासादयन्ति तेषां खलु भवसिद्धिक क्षुल्लककृतयुग्मनारकजीवानां कथं शीघ्रा गतिः कथं शीघ्रो गतिविषयः प्रज्ञप्तः हे गौतम ! स यथानामकः कश्चित्पुरुषः तरुणो बलवान् यावत् त्रिसमयेन वा विग्रहेणोत्पद्यन्ते तेषां खलु जीवानां तथा शीघ्रा गतिः तथा शीघ्रो गतिविषयः प्रज्ञप्तः । ते खलु भवसिद्धिकक्षुल्लककृतयुग्मनारकजीवाः कथं परभवायुष्कं कुर्वन्तीति । हे

संख्यात या असंख्यात उत्पन्न होते हैं । हे भदन्त ! ये क्षुल्लक कृतयुग्मराशिप्रमित भवसिद्धिक नैरयिक कैसे उत्पन्न होते हैं ? हे गौतम ! जैसे कोई प्लवक कूदता-कूदता अध्यवसाय विशेष से निर्वर्तित करणोपाय से आगामी काल में पूर्व स्थान को छोड़कर आगे के स्थान को प्राप्त करता है, इसी प्रकार से ये नारक प्लवक के जैसे ही अध्यवसाय से निर्वर्तित करणोपाय द्वारा पूर्व भव को छोड़कर पर भव को-भवान्तर को प्राप्त कर लेते हैं । हे गौतम ! भवसिद्धिक क्षुल्लककृतयुग्म नारक जीवों की कैसी शीघ्र गति होती है ? और इस शीघ्र गति का विषय कैसा होता है ? हे गौतम ! जैसे कोई तरुण बलवान् पुरुष चौदहवें शतक में प्रथम उद्देशक में कहे गये अनुसार हो तो जैसा वहां कहा गया है उसके माफिक वे नैरयिक तीन समय वाली विग्रह गति से वहां नरकावासमां में उत्पन्न होते हैं । इस प्रकार की उनकी शीघ्र गति होती है और ऐसा ही उनकी शीघ्र गति का विषय होता

ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ ! જેમ કોઈ કૂદવાવાળો—કૂદતો કૂદતો અધ્યવસાય વિશેષથી નિવર્તિત કરણના ઉપાયથી આગામી કાળમાં પૂર્વ સ્થાનને છોડીને આગળના સ્થાનને પ્રાપ્ત કરે છે એજ રીતે આ નારક કૂદવાવાળાની જેમ જ અધ્યવસાય વિશેષથી નિવર્તિત કારણોપાયદ્વારા પૂર્વ ભવને છોડીને પરભવને ભવાન્તર અર્થાત્ બીજા ભવને પ્રાપ્ત કરી લે છે. હે ભગવન્ ભવસિદ્ધિક ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારક જીવોની શીઘ્ર ગતિ કેવી હોય છે ? અને તે શીઘ્ર ગતિનો વિષય કેવો હોય છે ? હે ગૌતમ ! જેમ કોઈ તરૂણ બલવાન પુરૂષ ચૌદમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે હોય તો ત્યાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવ્યું છે, તે પ્રમાણે તે નારકો ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ત્યાં નારકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે. આ રીતની શીઘ્રગતિ હોય છે. અને એજ પ્રમાણે તેઓના શીઘ્ર ગમનનો વિષય હોય છે.

गौतम! अध्यवसाययोगनिर्वर्तितेन कारणोपायेन एवं खलु ते जीवाः परभवायुष्कं कुर्वन्तीति। तेषां खलु भदन्त! जीवानां कथं गतिः प्रवर्तते गौतम! आयुः क्षयेण भवक्षयेण स्थितिक्षयेण एवं खलु गतिः प्रवर्तते इति। ते खलु भवसिद्धिक क्षुल्लककृतयुग्मनारक जीवाः किम् आत्मऋद्धया उत्पद्यन्ते परऋद्धयानोत्पद्यन्ते इति, हे गौतम! आत्मऋद्धया समुत्पद्यन्ते न परऋद्धया समुत्पद्यन्ते। ते खलु भवसिद्धिकक्षुल्लककृतयुग्मनारकजीवाः किमात्मकर्मणा उत्पद्यन्ते पर कर्मणा वा उत्पद्यन्ते हे गौतम! आत्मकर्मणैव उत्पद्यन्ते न परकर्मणोत्पद्यन्ते। ते खलु भवसिद्धिकक्षुल्लककृतयुग्मनारकजीवाः भदन्त! आत्मप्रयोगेण उत्पद्यन्ते परप्रयोगेण

है। हे भदन्त! वे भवसिद्धिक क्षुल्लक कृतयुग्म नारक जीव परभव की आयु का बन्ध कैसे करते हैं? हे गौतम! अध्यवसाय योग से निर्वर्तित कारणोपाय से वे परभव की आयु का बन्ध करते हैं। हे भदन्त! उन जीवों की गति कैसी होती? हे गौतम! आयु के क्षय से भव के क्षय से और स्थिति के क्षय से होती है। हे भदन्त! वे भवसिद्धिक क्षुल्लक कृतयुग्म नारक जीव क्या आत्मर्द्धि से उत्पन्न होते हैं या परर्द्धि से उत्पन्न होते हैं? हे गौतम! वे आत्मर्द्धि से ही उत्पन्न होते है परर्द्धि से उत्पन्न नहीं होते हैं हे भदन्त! भवसिद्धिक क्षुल्लक कृतयुग्म नारक जीव क्या आत्म कर्म से उत्पन्न होते हैं या परकर्म से उत्पन्न होते हैं? हे गौतम! वे आत्म कर्म से ही उत्पन्न होते हैं परकर्म से उत्पन्न नहीं होते हैं। हे भदन्त! वे भवसिद्धिक क्षुल्लक कृतयुग्म नारक जीव क्या आत्म प्रयोग से उत्पन्न होते हैं या

હે ભગવન્ તે ભવસિદ્ધિક ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારક જીવ પરભવની આયુષ્યનો બંધ કેવી રીતે કરે છે? હે ગૌતમ! અધ્યવસાય યોગથી નિવર્તિત કરણોપાયથી તેઓ પરભવના આયુષ્યનો બંધ કરે છે. હે ભગવન્ તે જીવોની ગતિ કેવી રીતે હોય છે? હે ગૌતમ! આયુના ક્ષયથી ભવના ક્ષયથી અને સ્થિતિના ક્ષયથી તેઓની ગતિ થાય છે હે ભગવન્ તે ભવસિદ્ધિક ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારક જીવો શું આત્મઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા પરઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થાય છે? હે ગૌતમ! તેઓ આત્મઋદ્ધિથી જ ઉત્પન્ન થાય છે. પરઋદ્ધિથી ઉત્પન્ન થતા નથી. હે ભગવન્ તે ભવસિદ્ધિક ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારક જીવો આત્મકર્મથી ઉત્પન્ન થાય છે? કે પર કર્મથી ઉત્પન્ન થાય છે? હે ગૌતમ! તેઓ આત્મ કર્મથી જ ઉત્પન્ન થાય છે. પરકર્મથી ઉત્પન્ન થતા નથી. હે ભગવન્ તે ભવસિદ્ધિક ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારક જીવો શું આત્મ પ્રયોગી ઉત્પન્ન

वा, उत्पद्यन्ते ? गौतम ! आत्मप्रयोगेणोत्पद्यन्ते, एतदन्तं सर्वं यावत्पदेन संगृहीतं भवतीति । 'रयणप्पभापुढवी भवसिद्धिय खुड्डागकडजुम्मनेरइयाणं भंते' रत्नप्रभा पृथिवी भवसिद्धिकक्षुल्लककृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य स्तिर्यग्भ्यो मनुष्येभ्यो देवेभ्योवेति प्रश्नः, उत्तर माह–'एवं चेव' इत्यादि, 'एवं 'चेव निरवसेसं' एवमेव–औघिकगमवदेव निरवशेषम् औघियगवदेव सर्वं यावत् नो परप्रयोगेणोत्पद्यन्ते ज्ञातव्यमिति । 'एवं जाव अहे सत्तमाए 'एवं यावदधः सप्तम्याम्, यावत्पदेन शर्कराप्रभात आरभ्य तमान्तपृथिव्याः संग्रहः, तथा च

पर प्रयोग से उत्पन्न होते हैं ? गौतम वे आत्म प्रयोग से ही उत्पन्न होते हैं पर प्रयोग से उत्पन्न नहीं होते हैं । यहां तक यह सब यहां यावत् पद से गृहीत हुआ है । 'रयणप्पभा पुढवी भवसिद्धिय खुड्डाग कडजुम्म नेरइयाण भंते !' हे भदन्त ! रत्नप्रभा पृथिवी के क्षुद्रकृतयुग्म राशिप्रमित भवसिद्धिक नैरयिक कहां से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या नैरयिकों से आकर के उत्पन्न होते हैं ? या तिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? या मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? या देवों में आकर उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं–'एवं चेव निरवसेसं' हे गौतम ! जैसा सामान्य गम कहा गया है वैसा ही यहां वह सम्पूर्ण रूप से यावत् वे परप्रयोग से उत्पन्न नहीं होते हैं यहां तक कहना चाहिये । 'एवं जाव अहे सत्तमाए' इसी प्रकार का कथन अधः सप्तमी पृथिवी तक समझना चाहिये, यहां यावत् पद से शर्कराप्रभा

થાય છે ? કે પરપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ ! તેઓ આત્મ પ્રયોગથીજ ઉત્પન્ન થાય છે. પરપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થતા નથી આ અહિં સુધીનું સઘળું કથન અહિયાં યાવત્ પદથી ગ્રહણ કરેલ છે,

'रयणप्पभा पुढवी भवसिद्धिय खुड्डाग कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! હે ભગવન્ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ક્ષુદ્ર કૃતયુગ્મરાશિ પ્રમાણુવાળા ભવસિદ્ધિક નૈરયિકો ક્યાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યંચ યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે–'एवं चेव निरवसेसं' હે ગૌતમ ! સામાન્યગમ જે પ્રમાણે કહેલ છે, એજ પ્રમાણે તે અહિયાં સંપૂર્ણ પણે યાવત્ તેઓ પરપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થતા નથી. આત્મપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે. આ કથન સુધીનું સઘળું કથન કહેવું જોઇએ.

'एवं जाव अहे सत्तमाए' આજ પ્રમાણેનું કથન અધઃસપ્તમી પૃથ્વી સુધી સમજવું. અહિયાં યાવત્પદથી શર્કરાપ્રભાથી લઇને તમઃપ્રભાપૃથ્વી નામની

सत्यमिति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा च संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति ॥ सू० १ ॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात–जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचक–पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक–श्रीशाहूछत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त–
'जैनाचार्य' पदभूषित—कोल्हापुरराजगुरु–बाल-
ब्रह्मचारि–जैनाचार्य–जैनधर्मदिवाकर–पूज्य श्री
घासीलालव्रतिविरचितायां श्री "भग
वतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां-
व्याख्यायां एकत्रिंशत्तमे शतके
पञ्चमोद्देशकः समाप्तः ॥३१–५॥

रूप से आप देवानुप्रियने कथन किया है वह सब सर्वथा सत्य ही है, ऐसा कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० १॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके एकतीसवें शतकका
पंचम उद्देशक समाप्त ॥३१—५॥

સત્ય જ છે. ૨ આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ।સૂ૦૧।।

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત "ભગવતીસૂત્ર"ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના એકત્રીસમા શતકનો પાંચમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ।।૩૧–૫।।



अथ षष्ठोदेशकादारभ्य अष्टाविंशतिरुद्देशकाः प्रारभ्यन्ते ॥

मूलम्-कण्हलेस्स भवसिद्धि य खुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति एवं तहेव ओहिओ कण्हलेस्स उद्देसओ तहेव निरवसेसं, चउसु वि जुम्मेसु भाणियव्वो जाव अहे सत्तम पुढवी कण्हलेस्स खुड्डागकलिओगनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति तहेव। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३१-६॥

'नीललेस्स भवसिद्धिया चउसु वि जुम्मेसु तहेव भाणियव्वा, जहा ओहिए नीललेस्स उद्देसए। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥३१-७॥

'काउलेस्स भवसिद्धिया चउसु वि जुम्मेसु तहेव उववाएयव्वा, जहेव ओहिए काउलेस्स उद्देसए। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ' ॥३१-८॥

'जहा भवसिद्धिएहिं चत्तारि उद्देसया भणिया, एवं अभवसिद्धिएहिं वि चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा। जाव काउलेस्स उद्देसओ त्ति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' ॥३१-९-१२॥

एवं सम्मदिट्ठीहिं वि लेस्सा संजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, नवरं सम्मदिट्ठी पढमबितिएसु वि दोसु वि उद्देसएसु अहे सत्तमा पुढवीए न उववाएयव्वा, सेसं तं चेव। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३१-१३-१६॥

मिच्छादिट्ठीहि वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, जहा भवसिद्धियाणं सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३१-१७-२०॥

एवं कण्हपक्खिएहिं वि लेस्सा संजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा जहेव भवसिद्धिएहि सेवं भंते ! सेवं भंते त्ति।३१-२१-२४।

सुक्कपक्खिएहि एवं चेव चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा जाव वालुयप्पभापुढवि काउलेस्स सुक्कपक्खियखुड्डागकलिओग नेरइयाणं कओ उववज्जंति, तहेव जाव नो परप्पओगेणं उववज्जंति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति सव्वे वि एए अट्ठावीसं उद्देसगा।।३१-२८।

एक्कतीसइमं उववायसयं समत्तं ॥३१॥

छाया—कृष्णलेश्यभवसिद्धिक क्षुल्लककृतयुग्मनैयिरकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? एवम् यथैव, औधिकः कृष्णलेश्योद्देशकस्तथैव-निरवशेषं चतुर्ष्वपि युग्मेषु भणितव्यः यावदधः सप्तमपृथिवी कृष्णलेश्यक्षुल्लक कल्योजनैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते तथैव, तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥३१।६॥

नीललेश्यभवसिद्धिकाश्चतुर्ष्वपि युग्मेषु तथैव भणितव्याः यथा—औधिक नीललेश्योद्देशके। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति यावद्विहरति ॥३१॥७॥

कापोतलेश्य भवसिद्धिका श्चतुर्ष्वपि युग्मेषु तथैव उपपातयितव्याः यथैवौधिके कापोतलेश्योद्देशके। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त इति यावद्विहरति॥३१ ॥८॥

यथा भवसिद्धिकैश्चत्वार उद्देशका भणिताः एवम् अभवसिद्धिकैरपि चत्वार उद्देशका भणितव्याः यावत्कापोतलेश्योद्देशक इति। तदेवं भवन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥३१॥९ १२॥

एवं सम्यग्दृष्टिभिरपि लेश्यासंयुक्तैश्चत्वार उद्देशकाः कर्त्तव्याः नवरं सम्यग्दृष्टिः प्रथम द्वितीययोरपि द्वयोरपि उद्देशकयोरधः सप्तमपृथिव्यां न उपपातयितव्यः शेषं तदेव, तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥३१।१३–१६॥

मिथ्यादृष्टिभिरपि चत्वार उद्देशकाः कर्तव्याः यथा भवसिद्धिकानाम्। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥३१।१७–२०

एवं कृष्णपाक्षिकैरपि लेश्यासंयुक्तैश्चत्वार उद्देशकाः कर्त्तव्याः यथैव-भवसिद्धिकैः। तदेवं भवन्त! तदेवं भवन्त! इति ॥३१॥२१–२४॥

शुक्लपाक्षिकैः-एवमेव चत्वार उद्देशका भणितव्याः यावद् वालुकाप्रभा पृथिवीकापोतलेश्य पाक्षिक क्षुल्लक-कल्योज नैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते, तथैव—यावद् नो परप्रयोगेणोत्पद्यन्ते। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति। सर्वेऽपि एतेऽष्टाविंशतिरुद्देशकाः ॥३१–२५-२८॥

एकत्रिंशत्तममुपपातशतं समाप्तम् ॥३१॥

टीका—'कण्हलेस्स भवसिद्धिक खुड्डाग कडजुम्मनेइयाणं भंते' कृष्णलेश्यभवसिद्धिकक्षुल्लक कृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त! 'कओ उववज्जंति' कुत

उत्पद्यन्ते, किं नैरयिकेभ्य स्तिर्यग्योनिकेभ्यो मनुष्येभ्यो देवेभ्यो वा आगत्योत्पद्यन्ते इति प्रश्नः, भगवानाह-'एवं जहा' इत्यादि। 'एवं जहेव ओहिओ कण्हलेस्स उद्देसओ तहेव निरसेसं चउसु वि जुम्मेसु भाणियव्वो, एवं यथैव औघिकः कृष्ण लेश्योद्देशकः तथैव निरवशेषं चतुर्ष्वपि युग्मेषु कृतयुग्म त्र्योज द्वापर कल्योज-युग्मेषु भणितव्यः। कियत्पर्यन्त मौघिकगमवक्तव्यता ? तत्राह-'जाव' इत्यादि। 'जाव अहे सत्तम पुढवी कण्हलेस्स खुड्डागकलिओगनेरइयाणं भन्ते! कओ उववज्जंति' यावदधःसप्तमपृथिवी कृष्णलेश्य क्षुल्लक कल्योजनैरयिकाः खलु

शतक ३१ उद्देशक ६-२८ तक

'कण्हलेस्स भवसिद्धिय खुड्डागकडजुम्म नेरइयाणं भंते!' इत्यादि

टीकार्थः-हे भदन्त! कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक क्षुद्र कृतयुग्म प्रमाण प्रमित नैरयिक 'कओ उववज्जंति' किस स्थान विशेष से आकरके नरकावास में उत्पन्न होते हैं? क्या नैरयिकों में से आकरके वे वहां उत्पन्न होते हैं? या तिर्यग्योनिकों में से आकर के वे वहां उत्पन्न होते हैं? या मनुष्यों में से आकर वहां उत्पन्न होते हैं? या देवों में से आकर के उत्पन्न होतेहैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'एवं जहेव ओहिओ कण्हलेस्स उद्देसओ तहेव निरवसेसं चउसु वि जुम्मेसु भाणियव्वो' हे गौतम! औघिक कृष्णलेश्या के उद्देशक में जिस प्रकार से कहा गया है उसी प्रकार से चारों युग्मों में भी कहना चाहिये, वे चार युग्म-कृतयुग्म, त्र्योज, द्वापर और कल्योज-ये हैं। यह औघिक गम वक्तव्यता यावत्, अधःसप्तमी नारकपृथिवी के कृष्णलेश्य

છઠ્ઠા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'कण्हलेस्स भवसिद्धिय खुड्डाग कडजुम्म नेरइयाणं भंते!' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક ક્ષુદ્રકૃતયુગ્મ પ્રમિત નૈરયિક 'कओ उववज्जंति' કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થયા છે? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા તિર્યંચોમાંથી આવીને ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા દેવોમાંથી આવીને ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે-'एवं जहेव ओहिओ कण्हलेस्स उद्देसओ तहेव निरवसेसं चउसु वि जुम्मेसु भाणियव्वो' હે ગૌતમ! ઔઘિક કૃષ્ણલેશ્યાના ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે ચારે યુગ્મોમાં કહેવું. જોઇએ. તે ચાર યુગ્મો તે કૃતયુગ્મ ત્ર્યોજ દ્વાપર અને કલ્યોજ એ પ્રમાણે છે. ઔઘિક ગમ સંબંધી કથન યાવત્ અધઃસપ્તમી નારક પૃથ્વીના કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક

भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते, किं नैरयिकेभ्यस्तिर्यग्भ्यो मनुष्येभ्यो देवेभ्यो वा, इत्यादि प्रश्नः ? यावत्पदेन धूमप्रभातमः पृथिव्याश्रितनारकाणां संग्रहो भवतीति प्रश्नः ? तहेव' तथैव–औधिकप्रकरणवदेव सर्वमुत्तरं ज्ञातव्यम् । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति हे भदन्त ! यद् देवानुप्रियेण कथितम्, तत्सर्वं सत्यमेवेति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं नमस्कृत्य यावद्विहरतीति ।

षष्ठोद्देशकः समाप्तः ॥३१॥६॥

क्षुल्लक कल्योज प्रमित नैरयिक वहां कहां से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या नैरयिकों में से आकर के वहां उत्पन्न होते हैं ? या तिर्यग्योनिकों में से आकर के वे वहां उत्पन्न होते हैं ? या मनुष्यों में से आकर वे वहां उत्पन्न होते है ? या देवों में से आकर के वहां उत्पन्न होते हैं ? इत्यादि कहना चाहिये । 'तहेव' हे गौतम ! वे वहां पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिकों में से आकर के भी उत्पन्न होते हैं और गर्भज मनुष्यों में से आकर के भी उत्पन्न होते हैं । इस प्रकार औधिक प्रकरण के जैसा ही यहां सब उत्तर जानना चाहिये, यहां यावत्पद से धूमप्रभा और तमःप्रभाः पृथिवी में रहे हुए नैरयिकों का संग्रह हुआ है । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! जो आप देवानुप्रियने यह कहा हैं वह सब सत्य ही है । ऐसा कहकर गौतम ने भगवान को वन्दना की और नमस्कार किया, वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

॥ षष्ठ उद्देशक समाप्त ॥ ३१–६॥

કલ્યોજ પ્રમિત નૈરયિક ત્યાં કયાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું નૈરયિકોમાંથી આવીને ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યંચોમાંથી આવીને ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ કથન સુધી કહેવું જોઇએ. 'तहेव' હે ગૌતમ ! તેઓ ત્યાં પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે. અને ગર્ભજ મનુષ્યોમાંથી પણ આવીને ઉત્પન્ન થાય છે. આ રીતે ઔધિક પ્રકરણમાં કહ્યા પ્રમાણે અહિયાં તમામ ઉત્તરો સમજવા. અહિયાં યાવત્પદથી રત્નપ્રભા પૃથ્વી વિગેરેમાં રહેલા નૈરયિકો ગ્રહણ કરાયા છે. સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કરેલ છે, તે સઘળું કથન સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ ભગવાનને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તેઓ તપ અને સંયમથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥છઠ્ઠો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૧–૬॥

'नीललेस्सभवसिद्धिया चउसु वि जुम्मेसु तहेव भाणियव्वा, जहेव ओहिए नीललेसोद्देसए' नीललेश्यभवसिद्धिका नारकाः चतुर्ष्वपि-कृतयुग्म त्र्योज द्वापरयुग्म-कल्योजात्मकयुग्मेषु तथैव भणितव्या, यथा औधिकनीललेश्योद्देशके भणिताः। एतस्मिन्नेव शतके तृतीयोद्देशके नीललेश्यामधिकृत्य युग्म चतुष्टयेषु नारकाणामुत्पातादिर्यथा प्रतिपादित स्तेनैव रूपेण नीललेश्य भवसिद्धिक नारकाणां चतुर्ष्वपि युग्मेषु तथैव वक्तव्यता विज्ञेया, सेवं भंते। सेवं भंते। त्ति जाव विहरइ' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति यावद्विहरति ॥सू० १॥

इति सप्तमोद्देशकः समाप्तः ॥३१-७॥

'नीललेस्स भवसिद्धिया चउसु वि जुम्मेसु-तहेव भाणियव्वा'-इ.

टीकार्थ-नीललेश्यावाले भवसिद्धिक नैरयिक चारों युग्मों में औधिक नीललेश्योद्देशक में कहे अनुसार कहना चाहिये। तात्पर्य कहने का यह है कि इसी शतक में तृतीय उद्देशक में नीललेश्या को अधिकृत करके कृतयुग्म, त्र्योज, द्वापरयुग्म और कल्योज इन चार युग्मों में नारक जीवों का उत्पात आदि जैसा कहा गया है उसी रूप से नील लेश्यावाले भवसिद्धिक नैरयिकों की वक्तव्यता भी चारों ही युग्मों में कहनी चाहिये। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ' हे भदन्त! आपका यह कथन सर्वथा सत्य ही हैं २। यह कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर वे संयम और तपसे आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

॥ सप्तम उद्देशक समाप्त ॥ ३१-७ ॥

સાતમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'नीललेस्स भवसिद्धिय चउसु वि जुम्मेसु तहेव भाणियव्वा' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—નીલલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક નૈરયિકો ચારે યુગ્મોમાં ઔધિક નીલલેશ્યાના ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે કહેવું જોઈએ.

આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે—આ એકત્રીસમા શતકના ત્રીજા ઉદ્દેશામાં નીલલેશ્યાના અધિકારથી કૃતયુગ્મ, ત્ર્યોજ, દ્વાપરયુગ્મ અને કલ્યોજ યુગ્મોમાં નારક જીવોના ઉત્પાદ વિગેરે સંબંધી જે પ્રમાણે કથન કરવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે નીલલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના સંબંધમાં ચારે યુગ્મોમાં કથન કરવું જોઈએ.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ' હે ભગવન્ આપનું આ વિષય સંબંધનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપનું કથન સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તપ અને સંયમથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥સાતમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૧-૭

'काउलेस्स भवसिद्धिया चउसु जुम्मेसु' कापोतलेश्या भवसिद्धिका नारकाश्चतुर्ष्वपि कृतयुग्म–त्र्योज–द्वापरयुग्मेषु। 'तहेव उववाएयव्वा जहेव ओहिए काउलेस्सोद्देसए' तथैव तेनैव रूपेण उपपातयितव्याः यथैव औधिके कापोतलेश्योद्देशके उपपातिताः। एतच्छतकीय चतुर्थोद्देशके कापोतलेश्याश्रित नारकाणां युग्म चतुष्टयमधिकृत्य यथा-यथा उत्पादपरिमाणादिकः कथितः तत्सर्व मिहापि अनुसन्धेय इति। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति यावद्विहरति। इत्यष्टम उद्देशकः समाप्तः ॥८॥

इति श्री–विश्वविख्यातजगद्वल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि – 'जैनाचार्य' पूज्यश्री–घासीलालव्रतिविरचितायां "श्री भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां एकत्रिंशत्तमे शतके अष्टमोद्देशकः समाप्तः ॥३१–८॥

आठवें उद्देशेका प्रारंभ

'कउलेस्स भवसिद्धिया चउसु जुम्मेसु' कापोतलेश्यावाले भवसिद्धिक नैरयिकों का चारों युग्मों में 'तहेव उववाएयव्वा जहेव ओहिए काउलेस्सोद्देसए' औधिक कापोतलेश्या उद्देशक में कहे गये अनुसार उपपात आदि का कथन करना चाहिये। तात्पर्य कहने का यह है कि इस शतक के चतुर्थ उद्देशक में कापोतलेश्या को आश्रित करके नारकों का कृतयुग्मादि चारों युग्मों में जिस–जिस प्रकार से उत्पाद परिमाग आदि का कथन किया गया है वही सब कथन यहां पर भी लगाना चाहिये सेवं भंते! 'सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ'

આઠમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'काउलेस्स भवसिद्धिया चउसु जुम्मेसु' કાપોત લેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોનું ચારે યુગ્મોમાં 'तहेव उववाएयव्वा जहेव ओहिए काउलेस्सोद्देसए' ઔધિક કાપોત લેશ્યાવાળા ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે ઉપપાત વિગેરે સંબંધી કથન કહેવું જોઈએ. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે—આ એકત્રીસમા શતકના ચોથા ઉદ્દેશામાં કાપોતલેશ્યાનો આશ્રય કરીને નારકોનું કૃતયુગ્મ વિગેરે ચારે યુગ્મોમાં જે-જે રીતે ઉત્પાદ, પરિમાણ વિગેરેના સંબંધમાં કથન કરવામાં આવ્યું છે, એજ સઘળું કથન અહિંયાં પણ કહેવું જોઈએ.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ' હે ભગવન્ આપદેવાનુપ્રિયે કહેલ

हे भदन्त ! आप देवानुप्रिय के द्वारा कहा गया यह सब विषय सर्वथा सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार करके तप एवं संयम से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० १॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके एकतीसवें शतकका ॥ अष्टम उद्देशक समाप्त ॥ ३१-८॥

આ તમામ વિષય સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજ માન થયા. ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્ર'ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના એકત્રીસમા શતકનો આઠમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૧-૮॥



अथ नवमोद्देशकादारभ्य द्वादशान्ता उद्देशकाः

'जहा-भवसिद्धिएहिं चत्तारिउद्देसया भणिया' यथा भवसिद्धिकैर्भवसिद्धिकान् नारकानाश्रित्य यथा चत्वार उद्देशकाः कथिताः। 'एवं अभवसिद्धिएहिं वि चत्तारि उद्देसा भाणियव्वा' एवम् अभवसिद्धिकैरपि-अभवसिद्धिका नाश्रित्यापि चत्वार उद्देशका भणितव्याः' कियत्पर्यन्तं तत्राह-'जाव' इत्यादि। 'जाव-काउलेस्सा उद्देसोत्ति' यावत्कापोतलेश्योद्देशक इति, यावत्पदेन प्रथमस्य सामान्यनैरयिकाणां कृष्णलेश्य-नीललेश्यनैरयिकाणां संग्रहो भवतीति। 'सेवं भंते! सेवं

नव वें उद्देशक से बारह पर्यन्त के उद्देशोका कथन

'जहा भवसिद्धिएहिं चत्तारि उद्देसया भणिया' जिस प्रकार भवसिद्धिक नारकों को आश्रित करके चार उद्देशक कहे गये हैं 'एवं अभवसिद्धिएहिं वि चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा' इसी प्रकार अभव्यसिद्धिक नैरयिकों को आश्रित करके भी चार उद्देशक कहना चाहिये-यावत्कापोतलेश्या उद्देशक तक। यहां यावत्पद से सामान्य नैरयिकों का कृष्णलेश्यावाले नैरयिकों का एवं नीललेश्यावाले नैरयिकों का ग्रहण हुआ है। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! जैसा आप देवानुप्रियने यह विषय कहा है वह सर्वथा सत्य ही है २। ऐसा

॥નવમા ઉદ્દેશાથી બારમા સુધીના ઉદ્દેશાઓનો પ્રારંભ—

'जहा भवसिद्धिएहिं चत्तारि उद्देसया भणिया' જે પ્રમાણે ભવસિદ્ધિક નારકોને ઉદ્દેશીને ચાર ઉદ્દેશાઓ કહેવામાં આવેલા છે, 'एवं अभवसिद्धिएहिं वि चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा' એજ પ્રમાણે અભવસિદ્ધિક નૈરયિકોને ઉદ્દેશીને પણ ચાર ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ. યાવત્કાપોતલેશ્યા ઉદ્દેશક પર્યન્ત કહેવું જોઈએ. અહિયાં યાવત્પદથી આ એકત્રીસમા શતકના સમાન્ય ઉદ્દેશાના કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નૈરયિકો અને નીલલેશ્યાવાળા નૈરયિકો ગ્રહણ કરાયા છે.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ આપદેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે કહ્યું છે, તે સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે, આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓ

भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥ नवम दशमैकादश द्वादशोद्देशकाः समाप्ताः ॥९-१०-११-१२॥

इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यानैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित — कोल्हापुरराजगुरु-
बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य – जैनधर्मदिवाकर
पूज्य श्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री
"भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायाम् एकत्रिंशत्तमशतकस्य
नवमोद्देशका दारभ्य द्वादशान्ता
उद्देशकाः समाप्ताः ॥९-१२॥

कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० १॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके इकतीसवें शतक का
नववें उद्देशक ९-से लेकर १२ तक समाप्त ॥९-१२॥

ने नमस्कार कर्या वंदना नमस्कार करीने तेओ संयम अने तपथी पोताना आत्माने भावित करता थका पोताना स्थान पर बिराजमान थया. ॥सू०१॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजी महाराजकृत "भगवतीसूत्र"नी
प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याना एकत्रीसमा शतकना नवमा उद्देशाथी बार उद्देशा
सुधीना उद्देशाओ समाप्त ॥३१-९-१२॥



त्रयोदशादारभ्य षोडषान्ता उद्देशकाः

'एवं सम्मदिट्ठि वि लेस्सासंजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा' एवं भवाभवसिद्धिकनारकवदेव सम्यग्दृष्टिभिरपि नारकैः कृष्ण-नील-कापोतलेश्या-संयुक्तैः चत्वार उद्देशकाः कर्तव्याः। सम्यग्दृष्टिकक्षुल्लककृतयुग्मनारकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? कृष्णलेश्य सम्यग्दृष्टि क्षुल्लककृतयुग्मनारकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते २, नीललेश्य सम्यग्दृष्टि नारकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते ३, कापोतलेश्य सम्यग्दृष्टिनारकाः कुत उत्पद्यन्ते ४,

तेरहवें उद्देशक से सोलहवें पर्यन्त के उद्देशक का कथन

'एवं सम्मदिट्ठी वि लेस्सा संजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा'

भवसिद्धिक, एवं अभवसिद्धिक नारक के जैसे कृष्ण, नील कापोतलेश्या संयुक्त सम्यग्दृष्टि नारकों को लेकर भी चार उद्देशक कहना चाहिये-जैसे हे भदन्त! क्षुल्लक कृतयुग्म राशिप्रमित सम्यग्दृष्टिक नारक किस स्थान विशेष से आकर के नरकावास में उत्पन्न होते हैं? इत्यादि हे भदन्त! कृष्णलेश्यावाले क्षुल्लककृतयुग्म राशिप्रमित सम्यक्दृष्टि नारक किस स्थान विशेष से आकर के नरकावास में उत्पन्न होते हैं? २। इत्यादि नीललेश्यावाले क्षुल्लककृतयुग्म राशिप्रमित सम्यग्दृष्टिक नारक हे भदन्त! किस स्थान विशेष से आकर के नरकावास में उत्पन्न होते हैं? इत्यादि ३ कापोतलेश्यावाले क्षुल्लक कृतयुग्म राशिप्रमित सम्यग्दृष्टि नारक हे भदन्त! किस स्थान विशेष से आकर नरकावास में उत्पन्न होते हैं? इत्यादि ४ इस क्रम से ये चार उद्देशक जानना चाहिये। 'नवरं सम्मदिट्ठि पढमबितिएसु वि दोसु वि उद्देसएसु

તેરમા ઉદ્દેશાથી સોળમા સુધીના ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'एवं सम्मदिट्ठिहिं वि लेस्सासंजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—ભવસિદ્ધિક નારકોના કથન પ્રમાણે કૃષ્ણ-નીલ, કાપોતલેશ્યાવાળા સમ્યગ્દૃષ્ટિ નારકોને ઉદ્દેશીને ચાર ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ, જેમ કે—હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મરાશિ પ્રમિત સમ્યગદૃષ્ટિવાળા નારકો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે? ૨ નીલલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત સમ્યક્ દૃષ્ટિવાળા નારકો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને નારકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે? ૩ કાપોતલેશ્યાવાળા ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિતસમ્યગ્દૃષ્ટિ-વાળા નારકો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે? ૪ આ ક્રમથી ચાર ઉદ્દેશાઓ સમજી લેવા. 'नवरं सम्मदिट्ठि पढमबीतिएसु दोसु

एवं क्रमेण चत्वार उद्देशकाः ज्ञातव्याः। 'नवरं सम्मदिट्ठीएढमवितिएसु वि दोसु वि उद्देसएसु' नवरं केवलं सम्यग्दृष्टिनारकः, प्रथमद्वितीययोरपि द्वयोरपि उद्देशकयोः। 'अहे सत्तमा पुढवीए न उववाएयव्वो' अधः सप्तमी पृथिव्यां सप्तमनरकभूमौ न उपपातयितव्यः, प्रथमद्वितीयोद्देशके सम्यग्दृष्टिनारकः सप्तमनारकभूमौ न उपपातयितव्यः। कापोतलेश्याश्रयः प्रथम-द्वितीय तृतीयनरकेषु गच्छति नान्यत्र, नीललेश्यः तृतीय चतुर्थ-पञ्चमनरके गच्छति नान्यत्र, कृष्णलेश्यः-पञ्चम-षष्ठ-सप्तमनरकेषु गच्छति नान्यत्र, किन्तु कृष्णलेश्यः-सम्यग्दृष्टिः सप्तमे न गच्छति पञ्चम षष्ठ नरकेषु गच्छत्येवेति भगवता कथितम्। कृष्णलेश्यस्य-सप्तम्यां गमनसंभवेन सम्यग्दृष्टिमभावात् तन्निषेधो युक्त एव नील-कापो-

---

अहे सत्तमा पुढवीए न उववाएयव्वो' परन्तु प्रथम और द्वितीय उद्देशक में सम्यग्दृष्टि नारक का अधःसप्तमी पृथिवी में उत्पाद नहीं होने के कारण उसका वहां उत्पाद नहीं कहना चाहिये तात्पर्य इस कथन का ऐसा है कि कापोतलेश्यावाला सम्यग्दृष्टि नारक प्रथम तृतीय, चतुर्थ और पंचम इन नरकों में जाता है अन्य नरकों में नहीं जाता है नीललेश्यावाला सम्यक्दृष्टि नारक तृतीय चतुर्थ और पंचम इन नरकों में जाता है। अन्यत्र नहीं जाता है कृष्णलेश्यावाला नारक यद्यपि पञ्चम, षष्ठ और सप्तम इन नरकों में जाता है अन्यत्र नहीं जाता है किन्तु कृष्णलेश्यावाला सम्यग्दृष्टि नारक सप्तम नरक में नहीं जाता पंचम और छठे नरक में तो जाता ही है ऐसा भगवान ने कहा हैं। कृष्णलेश्यावाले का सप्तम नरक में गमन संभव है परन्तु सम्यग्दर्शन के प्रभाव से वहां जाने का निषेध किया गया है सो यह कथन

उद्देसएसु अहे सत्तमा पुढवीए न उववाएयव्वो' પરંતુ પહેલા અને બીજા ઉદ્દેશામાં સમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા નારકનો અધઃસપ્તમી પૃથ્વીમાં ઉત્પાત ન થવાના કારણે ત્યાં તેનો ઉત્પાત કહેવો ન જોઈએ. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-કાપોતિક લેશ્યાવાળા સમ્યગ્દૃષ્ટિ નારક પહેલા બીજા અને ત્રીજા નરકોમાં જાય છે. તે શિવાય ના બીજા નરકોમાં જતા નથી. નીલલેશ્યાવાળા સમ્યગ્દૃષ્ટિ નારક ત્રીજા, ચોથા, અને પાંચમા નરકોમાં જાય છે. તે શિવાય અન્યત્ર જતા નથી કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નારકો જો કે-પાંચમા, છઠ્ઠા અને સાતમા નરકોમાં જાય છે, અન્યત્રજતા નથી. પરંતુ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા સમ્યગ્દૃષ્ટિ નારક સાતમા નરકમાં જતા નથી. પહેલા અને છઠ્ઠા નરકમાં તો જાય જ છે. તે પ્રમાણે ભગવાને કહ્યું છે. કૃષ્ણલેશ્યાવાળાનું સાતમા નરકમાં ગમન સંભવિત છે. પરંતુ સમ્યગ્દર્શનના અભાવથી ત્યાં જવાનો નિષેધ કરેલ છે, તો આ કથન યોગ્ય જ છે,

तयोस्तु तत्र सप्तम्यां प्राप्तिरेव नास्ति, अतो न तन्निषेधः कृत इति एतदेव वैलक्षण्यम् 'सेसं तं चेव' शेषम्-कथितव्यतिरिक्तम् अन्यत्सर्वं पूर्ववदेव ज्ञातव्यमिति। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति यावद्विहरति।

इति श्री - विश्वविख्यातजगद्वल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि - 'जैनाचार्य' पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां "श्री भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां एकत्रिंशत्तमे शतके त्रयोदशोद्देशकादारभ्य षोडशोद्देशकान्ता उद्देशकाः समाप्ताः ॥३१।१३।१६॥

युक्त ही है। नील और कापोतलेश्यावालों की तो वहाँ प्राप्ति ही नहीं है। इसलिये वहां इसका निषेध नहीं किया गया है। 'सेसं तं चेव' इस भिन्नता के अतिरिक्त और सब कथन पूर्वोक्त जैसा ही है। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! जैसा आप देवानुप्रियने कहा है वह सब कथन सत्य ही है २ ऐसा कहकर गौतमस्वामीने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया, वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

॥ शतक ३१ उद्देशक १३ से १६ तक समाप्त ॥ ३१-१३-१६ ॥

નીલ અને કાપોતિક લેશ્યાવાળાઓની તો અહિયાં પ્રાપ્તિ જ થતી નથી. તેથી તેમનો નિષેધ નથી. 'સેસં ત ચેવ' આ ઉપર કહેલ ભિન્ન પણા શિવાય બાકીનું તમામ કથન પહેલા કહ્યા પ્રમાણે જ છે. તેમ સમજવું.

'સેવં ભંતે! સેવં ભંતે! ત્તિ' હે ભગવન્ આપદેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણે આ વિષયમાં કથન કર્યું છે. તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે, હે ભગવન્ આપદેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજ માન થયા. ।।સૂ૦૧।।

એકત્રીસમા શતકના તેરમા ઉદ્દેશાથી સોળમા ઉદ્દેશા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ।।૧૩-૧૬।।

'मिच्छादिट्ठीहि वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, जहा, भवसिद्धियाणं, मिथ्यादृष्टिभिरपि लेश्यासंयुक्तै श्चत्वार उद्देशकाः सामान्योद्देशकाः कृष्ण-नील कापोतलेश्याश्रयाः त एते चत्वार उद्देशकाः कर्त्तव्याः यथा भवसिद्धिकानां चत्वारः कथिता इति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति, तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति सप्तदशा-ऽष्टादशै-कोनविंशति विंशत्युद्देशकाः समाप्ताः ३१।१७।२०

'मिच्छादिट्ठिहिं वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा जहा भवसिद्धियाणं' लेश्या संयुक्त मिथ्यादृष्टि नारकों के भी चार उद्देशक भवसिद्धिक नारकों के जैसे कहना चाहिये, एक सामान्य उद्देशक कृष्णलेश्याश्रय द्वितीय उद्देशक २ नीललेश्याश्रय तृतीय उद्देशक ३ और कापोतलेश्या श्रय चतुर्थ उद्देशक ४ 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त आप देवानुप्रिय के द्वारा कहा गया यह सब कथन सर्वथा सत्य ही है २ इस प्रकार कह कर गौतमस्वामीने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया, वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० १॥

॥ शतक ३१ उद्देशक १७ से २० तक समाप्त ॥ ३१-१७-२० ॥

સત્તરમા ઉદ્દેશાથી વીસમા સુધીના ઉદ્દેશાઓનો પ્રારંભ—

'મિચ્છાદિટ્ઠિહિં વિ ચત્તારિ ઉદ્દેસગા કાયવ્વા જહા ભવસિદ્ધિયાણં' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—લેશ્યાવાળા મિથ્યાદૃષ્ટિવાળા નારકોમાં પણ ભવસિદ્ધિક નારકોના કથન પ્રમાણે ચારે ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ. એક સામાન્ય ઉદ્દેશક ૧ કૃષ્ણ લેશ્યાવાળા સંબંધી બીજો ઉદ્દેશો ૨ નીલલેશ્યા સંબંધી ત્રીજો ઉદ્દેશો ૩ અને કાપોતલેશ્યા સંબંધી ચોથો ઉદ્દેશો. ૪ આ ચાર ઉદ્દેશાઓ સમજી લેવા.

'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ આપદેવાનુપ્રિયે જે કહેલ આ તમામ આ કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપદેવાનુપ્રિયે કહેલ આ વિષયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા, ॥સૂ૦૧॥

સત્તરમા ઉદ્દેશાથી વીસમા ઉદ્દેશા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૩૧-૧૭-૨૦॥

अथ एकोनविंशतिद्वारस्य चतुर्विंशतित्युद्देशकाः प्रारभ्यन्ते ॥

'एवं कण्हपक्खिएहि वि लेस्सासंजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा' एवं भवसिद्धिकादिवदेव कृष्णपाक्षिकैर्नारकैरपि लेश्यायुक्तैः कृष्ण-नील-कापोतयुक्तैश्चत्वार उद्देशकाः कर्त्तव्याः परिपठनीयाः, सामान्योद्देशकः प्रथमः कृष्णलेश्याश्रितो द्वितीयः नीललेश्याश्रय श्चतुर्थ, एते चत्वार उद्देशकाः पठनीयाः ? इत्याह- 'जहेव भवसिद्धिएहिं यथैव भवसिद्धिक भवद्धिकनारकाश्रितलेश्याश्रिताश्चत्वार उद्देशकाः इहापि-तथैव चत्वारो ज्ञातव्या इति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति, तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥२१-२२-२३-२४ उद्देशकाः समाप्ताः॥

एकवीसवें उद्देशक से चौवीसवें पर्यन्त के उद्देशक का कथन

'एवं कण्हपक्खिएहि वि लेस्सासंजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा' टीकार्थ-भवसिद्धिक आदि नारकों के जैसे कृष्ण, नील, कापोत लेश्या युक्त कृष्णपाक्षिक नारकों के भी चार उद्देशक कहना चाहिये। इनमें एक पहला सामान्य उद्देशक है कृष्णलेश्याश्रित द्वितीय उद्देशक है। नीललेश्याश्रित तृतीय उद्देशक है। और कापोतलेश्याश्रित चतुर्थ उद्देशक है। 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! जैसा आप देवानुप्रिय ने कहा है वह सर्वथा सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतमस्वामी ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० १॥

॥ शतक ३१ उद्देशक २१ से २४ तक समाप्त ॥

એકવીસમા ઉદ્દેશાથી ચોવીસમા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ-

'एवं कण्हपक्खिएहि वी लेस्सा सजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ— ભવસિદ્ધિક વિગેરે નારકોના કથન પ્રમાણે કૃષ્ણ, નીલ, કાપોત, લેશ્યાવાળા કૃષ્ણપાક્ષિક નારકોના સંબંધમાં પણ ચાર ઉદ્દેશાઓ સમજી લેવા. તેમાં એક સામાન્ય પહેલો ઉદ્દેશો: ૧ કૃષ્ણલેશ્યા સંબંધી બીજો ઉદ્દેશો કહ્યો છે. નીલલેશ્યા સંબંધી ચોથો ઉદ્દેશો કહ્યો છે.

'सेवं भंते ! सेवं ! भंते ! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણેનું કથન કર્યું છે, તે સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ।સૂ૦૧॥

એકવીસમા ઉદ્દેશાથી ૨૪ ચોવીસમા ઉદ્દેશા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૩૧-૨૧ થી ૨૪॥

'सुक्कपक्खिएहिं, एवं चेव चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा' शुक्लपाक्षिकैः एवमेव चत्वार उद्देशका भणितव्याः, शुक्लपाक्षिकक्षुल्लककृतयुग्मनारकाः खलु भदन्त ? कुत उत्पद्यन्ते, एवं क्रमेण-प्रथम उद्देशकः शुक्लपाक्षिककृष्णलेश्य क्षुल्लककृतयुग्मादि नारकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते २ इति द्वितीयोद्देशकः २ नीललेश्य शुक्लपाक्षिक क्षुल्लककृतयुग्मादिनारकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते ? इति तृतीयोद्देशकः ३ कापोतलेश्य शुक्लपाक्षिकक्षुल्लककृतयुग्मादि नारकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते ? इति चतुर्थोद्देशकः ४ एवं क्रमेण चत्वार उद्देशका संपद्यन्ते। कियत्पर्यन्तं वक्तव्या उद्देशकास्तत्राह-'जाव' इत्यादि।

'सुक्कपक्खिएहिं एवं चेव चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा' इसी प्रकार से शुक्लपाक्षिक नारकों के भी चार उद्देशक कहना चाहिये,-जैसे-क्षुल्लककृतयुग्मादि राशिप्रमित शुक्लपाक्षिक नारक हे भदन्त! किस स्थान विशेष से आकर के नरकावास में उत्पन्न होते हैं ? ऐसा यह प्रथम उद्देशक है क्षुल्लक कृतयुग्मादि राशिप्रमित कृष्णलेश्यावाले शुक्लपाक्षिक नैरयिक हे भदन्त! किस स्थान से आकर के नरकावास में उत्पन्न होते हैं ? ऐसा यह द्वितीय उद्देशक है। क्षुल्लककृतयुग्मादि राशि प्रमित नीललेश्यावाले शुक्लपाक्षिक नैरयिक हे भदन्त! किस स्थान विशेष से आकर के नरकावास में उत्पन्न होते हैं ? ऐसा यह तृतीय उद्देशक है। क्षुल्लक कृतयुग्मादि राशिप्रमित कापोतलेश्यावाले शुक्लपाक्षिक नैरयिक हे भदन्त! किस स्थान विशेष से आकर के नरका-

---

પચ્ચીસમાથી અઠયાવીસ સુધીના ઉદ્દેશાઓનો પ્રારંભ—

'सुक्कपक्खिएहिं एवं चेव चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—એજ પ્રમાણે શુકલપાક્ષિક નારકોના સંબંધમાં પણ ચાર ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ જેમ કે-ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ આદિ રાશિપ્રમિત શુકલ પાક્ષિક નારક હે ભગવન કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રમાણેનો આ પહેલો ઉદ્દેશો છે. ૧

ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ આદિ રાશિપ્રમિત કૃષ્ણલેશ્યાવાળા શુકલ પાક્ષિક નૈરયિકો હે ભગવન્ કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? એ પ્રમાણેનો આ બીજો ઉદ્દેશો છે. ૨

ક્ષુલ્લકકૃતયુગ્મ આદિરાશિ પ્રમિત લેશ્યાવાળા શુકલપાક્ષિક હે ભગવન કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? એ પ્રમાણેનો ત્રીજો ઉદ્દેશો કહ્યો છે ૩

ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ વિગેરે રાશિપ્રમિત કાપોતલેશ્યાવાળા શુકલપાક્ષિક નૈરયિકો

'जाव वालुयप्पभा पुढविकाउलेस्स सुक्कपक्खियखुड्डाग कलिओगनेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' यावद् वालुकाप्रभा पृथिवी कापोतलेश्य शुक्लपाक्षिक क्षुल्लक कल्योजनारकाः कुत उत्पद्यन्ते यावत्पदेन रत्नप्रभा-शर्करप्रभापृथिवी सम्बन्धिकापोतलेश्यनारकाणां तथा कापोतलेश्यानां कृतयुग्म-त्र्योज-द्वापरयुग्म-घटितानां शुक्लपक्षियनारकाणां ग्रहणं भवति। पूर्वोद्देशक कथितोत्पादप्रकाराः संग्रहीतव्याः यावत्-नो परप्रयोगेण उत्पद्यन्ते एतत्पर्यन्तम्, एतदाशयेनैव कथितम्।

'तहेव जाव नो परप्पओगेण उववज्जंति' तथैव यावत् नो परप्रयोगेणोत्पद्यन्ते, पूर्वोक्तं सर्वमिहाऽनुसन्धेयम्। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! भदन्त! इति यावद्विहरति ॥

वास में उत्पन्न होते हैं ४ ऐसा यह चतुर्थ उद्देशक है। ये चारों उद्देशक 'जाव वालुयप्पभा पुढवी काउलेस्स सुक्कपक्खिय खुड्डाग कलिओग नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' इस सूत्रपाठ तक कहना चाहिये। इसका तात्पर्य यह है कि-हे भदन्त! यावत् वालुकाप्रभागत क्षुल्लक कल्योज राशिप्रमित कापोतलेश्यावाले शुक्लपाक्षिक नारक कहां से आकर के नरकावास में उत्पन्न होते है? यहां यावत्पद से रत्नप्रभा एवं शर्करा प्रभापृथिवी सम्बन्धी कापोतलेश्यावाले नारकों का तथा कृतयुग्म त्र्योज, एवं द्वापरयुग्म राशिप्रमित कापोतलेश्यावाले शुक्लपाक्षिक नारकों का ग्रहण हुआ है। इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-हे गौतम! 'तहेव जाव नो परप्पओगेणं उववज्जंति' पूर्व के जैसा उत्तर जानना चाहिये। यावत्

હે ભગવન કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે. આ પ્રમાણેનો આ ચોથો ઉદ્દેશો કહ્યો છે. ૪

આ ચારે ઉદ્દેશાઓ 'जाव वालुयप्पभा पुढवी काउलेस्स सुक्कपक्खियखुड्डाग कलिओग नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' આ સૂત્રપાઠ સુધી કહેવું જોઈએ.

આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે-હે ભગવન યાવત્ વાલુકાપ્રભા પર્યન્તના ક્ષુલ્લક કલ્યોજ રાશિપ્રમિત કાપોતલેશ્યાવાળા શુકલપાક્ષિક નારકો કયાંથી આવીને નરકાવાસમાં ઉત્પન્ન થાય છે? અહિયાં યાવત્પદથી રત્નપ્રભા અને અને શર્કરાપ્રભા પૃથ્વીના નારકો તથા કૃતયુગ્મ ત્ર્યોજ અને દ્વાપરયુગ્મ રાશિ પ્રમિત કૃષ્ણ નીલલેશ્યાવાળા શુકલપાક્ષિક નારકો ગ્રહણ કરાયા છે.

આ ઉપર પૂછેલ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે હે ગૌતમ! 'तहेव जाव नो परप्पओगेणं उववज्जंति' પહેલાં કહ્યાં પ્રમાણે અહિયાં ઉત્તર સમજવો યાવત્ તેઓ પરપ્રયોગથી ઉત્પન્ન થતા નથી.

'सव्वे वि एए अट्ठावीसं उद्देसगा' सर्वेऽपि एते उपर्युक्ता अष्टाविंशति-रुद्देशका भवन्तीति इत्येकत्रिंशत्तमे शतके-२८ उद्देशकाः समाप्ताः ॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित—कोल्हापुरराजगुरु-
बालब्रह्मचारि — जैनाचार्य — जैनधर्मदिवाकर
-पूज्यश्री घासिलालव्रतिविरचितायां श्री "भग-
वतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायाम् अष्टाविंशत्युद्देशात्मक-
मेकत्रिंशत्तमसुपपातशतं समाप्तम् ॥

वे पर प्रयोग से उत्पन्न नहीं होते हैं। 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! जैसा आपने कहा हैं वह सब कथन सर्वथा सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतम स्वामी ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया, वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये। 'सव्वे वि एए अट्ठावीसं उद्देसगा' इस प्रकार से ये सब २८ उद्देशक समाप्त हो जाते हैं।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके अठाईस उद्देशक सहित
॥ ३१ वां शतक समाप्त ॥

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भगवन आपदेवानुप्रिये जे कथन कर्युं छे, ते सघळुं कथन सर्वथा सत्य छे. हे भगवन आपदेवानुप्रियनुं कथन सर्वथा सत्य छे. आ प्रमाणे कहीने गौतमस्वामीએ प्रभुश्रीने वंदना करी तेओने नमस्कार कर्या. वंदना नमस्कार करीने ते पछी तेओ संयम अने तपथी पोताना आत्माने भावित करता थका पोताना स्थान पर बिराजमान थया. सू०१॥

'सव्वे वि एए अट्ठावीसं उद्देसगा' आ रीते बधा मळीने अठयावीस उद्देशाओ थाय छे.

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર શ્રી પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્રની
પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના એકત્રીસમા શતકના પચ્ચીસમા ઉદ્દેશાથી
અઠયાવીસમા ઉદ્દેશાઓનું કથન સમાપ્ત ॥૩૧-૨૫ થી ૨૮॥
॥એકત્રીસમું શતક સમાપ્ત ॥૩૧॥

॥ अथ द्वात्रिंशत्तमं शतकम् ॥
(१-२८ उद्देशकाः)

एकत्रिंशमे शतके नारकादि जीवानामुत्पादादिः कथितः, द्वात्रिंशत्तमे तु शतके नारकादि जीवानामेव उद्वर्त्तना कथ्यते इत्येवं सम्बन्धेन आयातस्याऽष्टाविंशत्युद्देशक प्रमाणस्येदमादिमं सूत्रम्-

'खुड्डागकडजुम्मनेरइयाणं भंते' इत्यादि ।

मूलम्-खुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति, कहिं उववज्जंति किं नेरइएसु उववज्जंति तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति उव्वट्टणा जहा वक्कंतीए ।

ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केवइया उव्वट्टंति? गोयमा! चत्तारि वा, अट्ठ वा, बारस वा, सोलस वा, संखेज्जा-असंखेज्जा वा उव्वट्टंति । ते णं भंते! जीवा कहं उव्वट्टंति, गोयमा! से जहानामए पवए एवं तहेव ।

एवं सो चेव गमओ जाव आयप्पयोगेणं उव्वट्टंति नो परप्पयोगेणं उव्वट्टंति । रयणप्पभापुढवि खुड्डागकडजुम्म० एवं रयणप्पभाए वि एवं जाव अहे सत्तमाए । एवं खुड्डागतेओग खुड्डागदावरजुम्म खुड्डागकलिओगा ।

नवरं परिमाणं जाणियव्वं सेसं तं चेव । सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

कण्हलेस्स कडजुम्म नेरइया एवं एएणं कमेणं जहेव उववायसए अट्ठावीसं उद्देसगा भणिया तहेव उव्वट्टणा सए वि अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा ।

नवरं उव्वट्टंति त्ति अभिलावो भाणियव्वो सेसं तं चेव । सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ ॥उ-१-२८॥

बत्तीसइमं उवट्टणा सयं समत्तं ॥३२॥

छाया—क्षुल्लककृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! अनन्तरम् उद्वर्त्य कुत्र गच्छन्ति कुत्रोत्पद्यन्ते, किं नैरयिकेषु उत्पद्यन्ते तिर्यग्योनिकेषु, उत्पद्यन्ते, उद्वर्त्तना यथा व्युत्क्रान्तौ। ते खलु भदन्त! जीवा एक समयेन कियन्त उद्वर्तन्ते? गौतम! चत्वारो वा, अष्टौ वा, द्वादश वा, षोडश वा, संख्याता वा, असंख्याता वा, उद्वर्तन्ते। ते खलु भदन्त! जीवाः कथमुद्वर्तन्ते, गौतम! स यथानामकः प्लवकः, एवं तथैव, एवं स एव गमको यावद्-आत्मप्रयोगेण-उद्वर्तन्ते, नो परप्रयोगेण उद्वर्त्तन्ते। एवं रत्नप्रभापृथिवीक्षुल्लककृतयुग्म, एवं रत्नप्रभायामपि एवं यावदधः सप्तम्याम्। एवं क्षुल्लक-त्र्योज-क्षुल्लकद्वापरयुग्म-क्षुल्लककल्योजाः। नवरं परिमाणं ज्ञातव्यम्, शेषं तदेव। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥सू० १॥

द्वात्रिंशत्तमशतके प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥३२।१॥

कृष्णलेश्य-कृतयुग्म-नैरयिकाः, एवमेतेन क्रमेण यथैव उपपातशतेऽष्टाविंशतिरुद्देशका भणिता स्तथैव-उद्वर्त्तनाशतेऽपि अष्टाविंशति रुद्देशका भणितव्या निरवशेषाः। नवरम् उद्वर्त्तन्ते इत्यभिलापो भणितव्यः, शेषं तदेव। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति यावद्विहरति ॥ 'द्वात्रिंशत्तममुद्वर्त्तनाशतं समाप्तम् ॥३२॥

टीका—'खुड्डागकडजुम्म नेरइयाणं भंते! क्षुल्लककृतयुग्म राशिरूपनैरयिकाः खलु भदन्त! 'अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छन्ति' अनन्तरम्—नारकभवसमाप्तौ

—शतक ३२ उद्देशक १-२८—

३१ वें शतक में नारक जीवों का उत्पाद आदि कहा अब इस ३२ वें शतक में उन्ही कृतयुग्मादि राशिप्रमित नैरयिकों की उद्वर्तना कहनी है, सो इसी सम्बन्ध को लेकर इस शतक का प्रारम्भ हुआ है। इसमें २८ उद्देशक हैं। 'खुड्डाग कडजुम्म नेरइयाणं भंते!' इत्यादि

टीकार्थ—'खुड्डागकडजुम्म नेरइयाणं भंते!' हे भदन्त! क्षुल्लककृतयुग्मराशिप्रमित नैरयिक नारक भवकी समाप्ति होते ही नरकभव में से

બત્રીસમા શતકનો પ્રારંભ—ઉદ્દેશો પહેલો—

એકત્રીસમા શતકમાં નારક વિગેરે જીવોના ઉત્પાદ વિગેરેનું કથન કરવામાં આવ્યું છે. હવે આ બત્રીસમા શતકમાં એજ કૃતયુગ્મ વિગેરે રાશિવાળા નૈરયિકોની ઉદ્વર્તના કહેવામાં આવશે. એ સંબંધને લઈને આ શતકનો પ્રારંભ કરવામાં આવ્યો છે. આ શતકમાં અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ છે.

'ખુડ્ડાગ કડજુમ્મ નેરઇયાણં ભંતે!' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—'ખુડ્ડાગ કડજુમ્મનેરઇયાણં ભંતે! હે ભગવન્ ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમિત નૈરયિક, નારક ભવની સમાપ્તી થતાં જ નારક ભવથી

सत्याम् अन्तररहितम् उद्वर्त्य-निःसृत्य 'कहिं गच्छन्ति' कुत्र गच्छन्ति 'कहिं उववज्जंति' कुत्रोत्पद्यन्ते ? हे भदन्त ! इमे नारकभवसमाप्तौ अनन्तरम्-अन्तररहितं कस्मिन् भवे गच्छन्ति, कुत्र चोत्पद्यन्ते-किं नेरइएसु उववज्जंति तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति' किं नैरयिकेषु उत्पद्यन्ते ? अथवा-तिर्यग्योनिकेषूत्पद्यन्ते इति प्रश्नः, उत्तरमाह-'उव्वट्टणा' इत्यादि' 'उव्वट्टणा जहा वक्कंतीए' उद्वर्त्तना यथा व्युत्क्रान्तौ, प्रज्ञापनायाः षष्टपदे यथा-उद्वर्त्तना कथिता, तथैव इहापि नारकाणामुद्वर्त्तना ज्ञातव्या । अर्थतः सा चैवम्—

नरगाओ उव्वट्टा, गब्भे पज्जत्तऽसंखजीवीसु' इति ।

नरकात् उद्वृत्ता गर्भे पर्याप्ता संख्यजीविषु, इतिच्छाया ।

अयं भावः-ते नारका नरकान्निर्गत्य पर्याप्तसंख्यातवर्षायुष्क मनुष्येषूत्पद्यन्ते, तथा-तिर्यग्योनिकेपूत्पद्यन्ते इति । 'ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं

निकल करके कहां पर जाते हैं ? कहां उत्पन्न होते हैं ? तात्पर्य यह है कि नारक नरक पर्याय से निकलते ही उसी समय किस भव में जाते हैं और कहां उत्पन्न होते हैं ? 'किं नेरइएसु उववज्जंति' क्या नैरयिकों में उत्पन्न होते हैं ? या 'तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति' तिर्यग्योनिकों में उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'उव्वट्टणा जहा वक्कंतीए' हे गौतम ! प्रज्ञापना के छठे पद में जिस प्रकार से उद्वर्तना कही गई है, उसी प्रकार से यहां पर भी नारकों की उद्वर्तना कहनी चाहिये, वह इस प्रकार से है--

'नरगाओ उव्वट्टा गब्भे पज्जत्तऽसंखजीवीसु' तात्पर्य ऐसा है-वे नारक नरक से निकल करके पर्याप्त संख्यात वर्ष की आयुवाले मनुष्यों में और तिर्यग्योनिकों में उत्पन्न होते हैं । 'ते णं भंते ! जीवा एग-

---

નીકળીને ક્યાં જાય છે ? અર્થાત્ ક્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે-નારક, નારક પર્યાયથી નીકળીને એ વખતે કયા ભવમાં જાય છે ? અને ક્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? 'किं नेरइएसु उववज्जति' શું તેઓ નૈરયિકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા 'तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति' તિર્યંચયોનિકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમીને કહે છે કે-'उव्वट्टणा जहा वक्कंतीए' હે ગૌતમ ! પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના છઠા વ્યુત્ક્રાંતિ પદમાં જે પ્રમાણે ઉદ્વર્તના સંબંધી કથન કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં નારકોની પણ ઉદ્વર્તના કહેવી જોઈએ. તે કથન આ પ્રમાણે છે.-

'नरगाओ उव्वट्टा गब्भे पज्जत्तऽसंखजीवीसु' આ કથનનુ તાત્પર્ય એ છે કે-તે નારકો નરકથી નીકળીને પર્યાપ્તક સંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળા મનુષ્યોમાં અને તિર્યંચયોનિકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે. 'ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं

केवइया उव्वट्टंति' ते खलु नारका भदन्त ! एकसमयेन एकस्मिन् समये इत्यर्थः कियत्संख्यका उद्वर्त्तन्ते इति प्रश्नः। भगवानाह 'गोयमा, इत्यादि। गोयमा' हे गौतम ! 'चत्तारि वा, अट्ठ वा, बारस वा, सोलस वा, संखेज्जा वा असंखेज्जा वा, उव्वट्टंति' क्षुल्लक-कृतयुग्म-नारका श्चत्वारो वा, अष्टौ वा, द्वादश वा, षोडश वा, संख्याता वा असंख्याता वा, एकसमये उद्वर्त्तन्ते इति। 'ते णं भंते ! जीवा कहं उव्वट्टंति' ते खलु भदन्त ! क्षुल्लक कृतयुग्म-नारका जीवाः कथं केन प्रकारेण उद्वर्त्तन्ते इति प्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा' हे गौतम ! 'से जहानामए पवए एवं तहेव' स यथानामकः प्लवकः, एवं तथैव-पूर्वोक्तवदेव 'एवं सो चेव गमओ जाव-आयप्पओगेण उव्वट्टंति' एवं स एव गमको यावद् आत्मप्रयोगेण उद्वर्त्तन्ते नो परप्रयोगेणोत्पद्यन्ते। अयं भावः क्षुल्लक-कृतयुग्म-नारकाः कथमुद्वर्त्तन्ते इति

समएणं केवइया उववज्जंति' हे भदन्त ! वे जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं अर्थात् वे जीव नरक से एक समय में कितने निकलते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! चत्तारि वा अट्ठ वा, बारस वा, सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उव्वट्टंति' हे गौतम ! चार अथवा आठ अथवा बारह अथवा सोलह अथवा संख्यात या असंख्यात नारक जीव एक समय में वहां से निकलते हैं।

'तेणं भंते ! जीवा कहं उव्वट्टंति' हे भदन्त ! क्षुल्लक कृतयुग्म राशिप्रमित नारक जीव किस प्रकार से उद्वर्तना करते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! से जहानामए पवए एवं तहेव' हे गौतम ! जैसे कोई कूदनेवाला मनुष्य जैसा कि पच्चीस वें शतक के आठवें उद्देशक में कहा गया है उसी के अनुसार यहां गमक कहना चाहिये, अर्थात् क्षुल्लक कृतयुग्म नारक किस प्रकार से उद्वर्तना करते हैं ? तो

केवइया उववज्जंति' હે ભગવન તે જીવો એક સમયમાં કેટલા ઉત્પન્ન થાય છે? અર્થાત્ એક સમયમાં નરકવાસમાંથી કેટલા નીકળે છે? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! चत्तारि वा, अट्ठ वा, बारस वा, सोलसवा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा उव्वट्टंति' હે ગૌતમ! ચાર અથવા આઠ અથવા બાર અથવા સોળ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત નારક જીવ એક સમયમાં ત્યાંથી નીકળે છે.

'तेणं भंते जीवा कहं उव्वट्टंति' હે ભગવન્ તે ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ રાશિ પ્રમિત નારક જીવો કઈ રીતે ઉદ્વર્તના કરે છે? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! से जहा नामए पवए एवं तहेव' હે ગૌતમ ! જેમ કોઈ કૂદવાવાળો પુરૂષ જેમ કે પચ્ચીસમા શતકના આઠમા ઉદ્દેશામાં કહેવામાં આવેલ છે-એજ પ્રમાણેના ગમકો અહિયાં કહેવા જોઈએ અર્થાત્ ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ

प्रश्नस्य प्रतिवचनावसरे पञ्चविंशतिशतकस्याऽष्टमोद्देशकस्य भाव इहानुकरणीयः अर्थद्वारेण स एव उद्देशक इह पठनीयः। 'रयणप्पभापुढवि खुड्डागकड०' रत्नप्रभा पृथिवी क्षुल्लक-कृतयुग्म प्रमाणका नारकास्तत उद्वर्त्य कुत्र गच्छन्ति कुत्रोत्पद्यन्ते किं नैरयिकेषु उत्पद्यन्ते तिर्यग्योनिकेषु वोत्पद्यन्ते इत्यादि क्रमेण प्रश्नः।

उत्तरमाह-'एवं' इत्यादि। 'एवं रयणप्पभाएवि' एवं सामान्यतः क्षुल्लक-कृतयुग्मनारकाणाम् यथोद्वर्त्तना कथिता, तथैव-रत्नप्रभा पृथिवी नारकजीवानामपि उद्वर्त्तना वक्तव्या। 'एवं जाव अहे सत्तमाए' एवं यावदधः सप्तम्याम्,

यथा-रत्नप्रभा प्रथमनारकपृथिवी सम्बन्धिनारकाणामुद्वर्त्तना कथिता

इस प्रश्न के उत्तर में पच्चीसवें शतक के आठवें उद्देशकका भाव यहां वक्तव्य है वही उद्देशक यहां पठनीय है। 'रयणप्पभा पुढवी खुड्डाग कड०' हे भदन्त! रत्नप्रभा पृथिवी के क्षुल्लक कृतयुग्म प्रमाणक नारक वहां से उद्वर्तना करके कहां जाते हैं और कहां उत्पन्न होते हैं? क्या वे नैरयिकों से नैरयिकों में उत्पन्न होते हैं या तिर्यग्योनिकों में उत्पन्न होते हैं? इत्यादि उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-हे गौतम! 'एवं रयणप्पभाए वि' जिस प्रकार की उद्वर्तना सामान्य क्षुल्लक कृत युग्म नारकों की कही गई है उसी प्रकार की उद्वर्तना रत्नप्रभा पृथिवी के नारक जीवों की भी कहनी चाहिये। 'एवं जाव अहे सत्तमाए' जैसी उद्वर्तना रत्नप्रभा नामकी प्रथम पृथिवी के नारकों की कही गई है वैसी ही उद्वर्तना शर्कराप्रभा नाम की द्वितीय पृथिवी क्षुल्लक कृत युग्म राशिप्रमाणक नारकों से लेकर अधःसप्तमी पृथिवी के क्षुल्लक

નારક કઈ રીતે ઉદ્વર્તના કરે છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પચ્ચીસમાં શતકના આઠમા ઉદ્દેશાનું કથન અહિયાં કહેવું જોઈએ. તેમ સમજવું.

'रयणप्पभा पुढवी खुड्डाग कड०' હે ભગવન્ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ પ્રમાણવાળા નારકો ત્યાંથી ઉદ્વર્તના કરીને ક્યાં જાય છે? અને ક્યાં ઉત્પન્ન થાય છે? શું? તેઓ નૈરયિકોમાંથી નીકળીને નૈરયિકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા તિર્યંચ યોનિકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-હે ગૌતમ! 'एवं रयणप्पभाए वि' જે પ્રમાણેની ઉદ્વર્તના સામાન્ય ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારકો વિષે કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણેની ઉદ્વર્તના રત્નપ્રભા પૃથ્વીના નારક જીવોની પણ કહેવી જોઈએ 'एवं जाव अहे सत्तमाए' રત્નપ્રભા પૃથ્વીના નારકોની ઉદ્વર્તના જે પ્રમાણે કહી છે, એજ પ્રમાણેની ઉદ્વર્તના શર્કરા પ્રભા નામની બીજી પૃથ્વીના ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ રાશિ પ્રમાણ નારક જીવોથી લઈને અધઃસપ્તમી પૃથ્વીના

तेनैव रूपेण शर्कराप्रभा द्वितीय नारकपृथिवी सम्बन्धि क्षुल्लक-कृतयुग्म-राशि-प्रमाणकनारकादारभ्याधःसप्तमी नारक पृथिवी सम्बन्धि क्षुल्लक-कृतयुग्म-राशिप्रमाणक नारकजीवपर्यन्तजीवानामपि-उद्वर्त्तना वक्तव्या प्रकारश्च पूर्वप्रदर्शित एव ग्राह्यः। 'एवं खुड्डागतेओग खुड्डागदावरजुम्म खुड्डाग कलिओगा' एवं क्षुल्लकत्र्योज क्षुल्लक द्वापरयुग्म, क्षुल्लक कल्योजराशि प्रमाणा अपि जीवा ज्ञातव्याः। 'नवरं परिमाणं जाणियव्वं' नवरं केवलं परिमाणं भिन्न भिन्न रूपेण क्षुल्लक कृतयुग्मादिनारकाणां ज्ञातव्यम्।

तथाहि-क्षुल्लक-कृतयुग्मनारकाणां परिमाणम्-चत्वारो वा, अष्टौ वा, द्वादशवा-षोडश वा, संख्याता वा, असंख्याता वेति कथितम्, तथा क्षुल्लक-त्र्योजनारकाणां त्रयो वा, सप्त वा, एकादश वा, पञ्चदश वा, संख्याता वा, असंख्याता वा, इत्येवं क्रमेण वक्तव्यम्। एवं-क्षुल्लक-द्वापरयुग्मनारकाणाम्,

---

कृतयुग्म राशिप्रमाण नारक जीवों तक की भी कहनी चाहिये। इस सम्बन्ध में प्रकार पूर्व पद में दिखा ही दिया गया है। 'एवं खुड्डाग तेओग खुड्डाग दावरजुम्म खुड्डाग कलिओग।' इसी प्रकार से क्षुल्लक त्र्योज, क्षुल्लक द्वापरयुग्म और क्षुल्लक कृतयुग्म राशिप्रमित जीवों के सम्बन्ध में भी जानना चाहिये, 'नवरं परिमाणं जाणियव्वं' परन्तु क्षुल्लक कृतयुग्मादि नारकों का परिमाण भिन्न-२ रूप से जानना चाहिये। जैसे-क्षुल्लक कृतयुग्म नारकों का परिमाण चार, आठ, बारह सोलह, संख्यात या असंख्यात कहा गया है। क्षुल्लक त्र्योज नारकों का परिमाण तीन, सात, ग्यारह, पन्द्रह संख्यात या असंख्यात कहा गया है। क्षुल्लक द्वापरयुग्म नारकों का परिमाण दो, छह, दश, चौदह,

---

क्षुल्लक कृतयुग्म राशि प्रमाण नारक જીવો સુધીની કહેવી જોઈએ આ સંબંધમાં પહેલા બતાવેલા પ્રકાર પ્રમાણેનો પ્રકાર સમજવો.

'एवं खुड्डाग तेओग खुड्डागदावरजुम्मखुड्डाग कलिओगा' આજ પ્રમાણે ક્ષુલ્લક ત્ર્યોજ, ક્ષુલ્લકદ્વાપરયુગ્મ અને ક્ષુલ્લક કલ્યોજરાશિપ્રમિત જીવોના સંબંધમાં પણ સમજવું. 'नवरं परिमाण जाणियव्वं' પરંતુ ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ વિગેરે નારકોનું પરિમાણ જૂદા જુદા પ્રકારનું સમજવું. જેમ કે-ક્ષુલ્લક કૃતયુગ્મ નારકોનું પરિમાણ ચાર, આઠ, બાર, સોળ, સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત કહેલ છે. ક્ષુલ્લક ત્ર્યોજ નારકોનું પરિમાણ ત્રણ, સાત, અગિયાર પંદર, સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત કહેલ છે. ક્ષુલ્લકદ્વાપરયુગ્મ

द्वौ वा, षड् वा, दश वा, चतुर्दश वा, संख्याता वा, असंख्याता वा, क्षुल्लक-कल्योजनारकाणाम् एको वा, पञ्च वा नव वा, त्रयोदश वा, संख्याता वा, असंख्याता वा, इत्येवं क्रमेण वक्तव्यम् । 'नवरं परिमाणं जाणियव्वं' इत्यस्यायमेव भावो मूलसूत्रे इति । 'सेसं तं चेव' शेषं परिमाणातिरिक्तं सर्वं कृतयुग्मनारकवदेव ज्ञातव्यम् ।

रत्नप्रभा पृथिवी सम्बन्धि त्र्योज–द्वापरयुग्म कल्योज नारकवदेव शर्कराप्रभात आरभ्याऽधः सप्तमी पृथिवी सम्बन्धि त्र्योज–द्वापरयुग्म–कल्योजनारकाणा मपि एवमेव परिमाणे वैलक्षण्यम्, तदन्यत्सर्वं रत्नप्रभा प्रथमनारक पृथिवी

संख्यात अथवा असंख्यात कहा गया है । क्षुल्लक कल्योज नारकों का परिमाण एक, पांच, नौ, तेरह संख्यात अथवा असंख्यात कहा गया है । सो इस क्रम से इनका परिणाम कहना चाहिए, इस प्रकार से 'नवरं परिमाणं जाणियव्वं' इस सूत्र का यही भाव मूलसूत्र में प्रदर्शित किया है । 'सेसं तं चेव' परिमाण से अतिरिक्त और सब कथन कृतयुग्म नारक के जैसा ही जानना चाहिये । रत्नप्रभा पृथिवी सम्बन्धी त्र्योज, द्वापर युग्म और कल्योज राशिप्रमित नारकों के जैसा ही शर्कराप्रभा से लेकर अधःसप्तमी पृथिवी सम्बन्धी नारकों के भी परिमाण में इसी प्रकार से वैलक्षण्य जानना चाहिये । इसके सिवाय और सब कथन रत्नप्रभा प्रथम नारक पृथिवी के जैसा ही जानना चाहिये, 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! जैसा यह विषय

નારકોનું પરિમાણુ બે, છ, દસ, ચૌદ સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત કહેલ છે. ક્ષુલ્લક કલ્યોજ નારકોનું પરિમાણુ એક, પાંચ નવ, તેર સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત કહેલ છે. તો આ ક્રમથી આમનું. પરિમાણુ કહેવું જોઇએ. 'नवरं परिमाणं जाणियव्व' આ સૂત્રનો આજભાવ મૂલસૂત્રમાં બતાવેલ છે.

'सेसं तं चेव' પરિમાણુ શિવાયનું બીજું સઘળું કથન કૃતયુગ્મ નારકના કથન પ્રમાણે જ સમજવું. રત્નપ્રભા પૃથ્વી સંબંધી ત્ર્યોજ, દ્વાપરયુગ્મ, અને કલ્યોજ રાશિપ્રમિત નારકોના પરિમાણુમાં પણ આજ પ્રમાણેનું વૈલક્ષણ્ય સમજવું. આ શિવાય બાકીનું સઘળું કથન રત્નપ્રભા પૃથ્વીની પહેલી નારક પૃથ્વી સંબંધી ત્ર્યોજ વિગેરેના કથન પ્રમાણે કહેલ છે.

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ આ વિષયના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણે કહ્યું છે, તે સઘળું કથન એજ પ્રમાણે છે, હે ભગવન્

तदेव सर्वमवगन्तव्यमिति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति पूर्ववत् ॥सू० १॥

इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यानैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित — कोल्हापुरराजगुरु-
बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य – जैनधर्मदिवाकर
पूज्य श्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री
"भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायाम् द्वात्रिंशत्तमशतकस्य
प्रथमोद्देशक समाप्तः ॥३२-१॥

आप देवानुप्रिय ने कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है ऐसा कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया, वन्दना नमस्कार कर के फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० १॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके बत्तीसवें शतक का
प्रथम उद्देशक समाप्त ॥३२-१॥

આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦ ૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્ર'ની
પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના બત્રીસમા શતકનો પહેલો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૨-૧॥



अथ द्वितीयोद्देशकः प्रारभ्यते

'कण्हलेस्स कडजुम्म नेरइया' कृष्णलेश्य कृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! अनन्तरमुद्वर्त्य कुत्र गच्छन्ति, कुत्रोत्पद्यन्ते, किं नैरयिकेषूत्पद्यन्ते तिर्यग्योनिकेषु वोत्पद्यन्ते ? इत्यादि रूपेण प्रश्नः ? उत्तरमाह-'एवं' इत्यादिना, 'एवं एएणं कमेणं जहेव उववायसए अट्ठावीसं उद्देसगा भणिया, तहेव-उव्वट्टणासए वि अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा' एवमेतेन क्रमेण यथैव उपपातशतके अष्टाविंशतिरुद्देशका भणिता स्तथैवोद्वर्त्तना शतकेऽपि-अष्टाविंशतिरुद्देशका भणितव्या निरवशेषाः।

तत्र कृतयुग्मनारकस्य प्रथमउद्वर्त्तनोद्देशकः १, कृष्णलेश्यकृतयुग्मस्य द्वितीयोद्देशकः २, नीललेश्यकृतयुग्मस्य तृतीयोद्देशकः ३, कापोतलेश्यकृतयुग्मस्य

शतक ३२ उद्देशक २-२८

टीकार्थ-'कण्हलेस्स कडजुम्म नेरइया०' हे भदन्त ! कृष्णलेश्यावाले कृतयुग्म राशिप्रमित नैरयिक नारक भव की समाप्ति होते ही नरक भव से निकल कर कहां जाते हैं ? और कहां उत्पन्न होते हैं ? क्या नैरयिकों में उत्पन्न होते हैं ? या तिर्यग्योनिकों में उत्पन्न होते हैं इत्यादि उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'एवं एएणं कमेणं जहेव उववायसए अट्ठावीसं उद्देसगा भणिया तहेव उवट्टणासए वि अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा' इस प्रकार इस क्रम से जैसे उपपात शतक में २८ उद्देशक कहे गये हैं इसी प्रकार से उद्वर्तना शतक में भी २८ उद्देशक कहना चाहिये, इसमें-कृतयुग्मादि नारक का प्रथम उद्वर्तनोद्देशक है ? कृष्णलेश्यावाले कृतयुग्मादि नारक का द्वितीयोद्देशक है, नील

બીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'कण्हलेस्सकड़जुम्म नेरइया' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મરાશિ પ્રમિત નૈરયિક, નારક ભવની સમાપ્તિ થતા નરકભવથી નીકળીને ક્યાં જાય છે ? અને ક્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? શું નૈરયિકોમાંથી ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યંચ યોનિકોમાંથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે- 'एवं एएणं जहेव उववायसए अट्ठावीस उद्देसगा भणिया तहेव उव्वट्टणासए वि अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा' આ રીતે આ ક્રમથી ઉપપાત શતકમાં જે પ્રમાણે અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ કહેવામાં આવ્યા છે. એજ પ્રમાણે આ ઉદ્વર્તના શતકમાં પણ અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ. આમાં કૃતયુગ્મ નારકનો પહેલો ઉદ્વર્તના ઉદ્દેશો કહ્યો છે. કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ નારક સંબંધી બીજો ઉદ્દેશો કહ્યો છે. નીલલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ નારક સંબંધી ત્રીજો

चतुर्थोद्देशकः४, तदेवं लेश्याश्रिताश्चत्वार उद्देशकाः ४, एवं भवसिद्धिकनारकस्य चत्वार उद्देशकाः निर्विशेषणस्य लेश्यात्रयविशेषणसहितस्य च ८, एवमेव-चत्वार उद्देशका अभवसिद्धिकस्य १२, सम्यग्दृष्टेर्लेश्यासंयुक्तस्य चत्वार उद्देशकाः १६, एवमेव-मिथ्यादृष्टेर्लेश्यायुतस्य चत्वार उद्देशकाः २४, एवं शुक्लपाक्षिकस्यापि चत्वार उद्देशका भवन्ति २८, तदेवं सर्वसङ्कलनया-एकत्रिंशत्तमोपपातशतकवत् द्वात्रिंशत्तमोद्वर्तनाशतकेऽपि अष्टाविंशतिरुद्देशका भवन्तीति, 'नवरं उव्वट्टंति अभिलावो भाणियव्वो' नवरं-केवलं विशेष एतावानेव, यत् उपपातकशतके

लेश्यावाले कृतयुग्मादि नारकका तृतीय उद्देशक है। कापोतलेश्यावाले कृतयुग्मादि नारक का चतुर्थोद्देशक है। इस प्रकार से ये लेश्याश्रित चार उद्देशक हैं। इसी प्रकार से भवसिद्धिक नारक के चार उद्देशक हैं इनमें पहिला उद्देशक सामान्य भवसिद्धिक नारक का है और तीन उद्देशक कृष्णनील, कापोतलेश्यात्रय विशेषण विशिष्ट भवसिद्धिक नारक के हैं। इसी प्रकार से चार उद्देशक अभवसिद्धिक नारक के हैं १२ लेश्या संयुक्त सम्यग्दृष्टि नारक के चार उद्देशक हैं। १६ लेश्यावाले मिथ्यादृष्टि नारक के चार उद्देशक हैं कृष्णपाक्षिक नारक के चार उद्देशक हैं और शुक्लपाक्षिक नारक के भी चार उद्देशक हैं सब मिलकर इस प्रकार से ये २८ उद्देशक हैं। जिस प्रकार से ३१ वें उपपात शतक में २८ उद्देशक हैं उसी प्रकार से इस ३२ वें उद्वर्तना शतक में भी २८ उद्देशक हैं। अन्तर केवल दोनों में इतना साही है कि उपपात शतक में जैसे उपपात पद जोडकर अभिलाप कहा जाता है उसी प्रकार यहां उप-

ઉદ્દેશો કહ્યો છે. કાપોતલેશ્યવાળા કૃતયુગ્મનારક સંબંધી ચોથો ઉદ્દેશો કહેલ આ રીતે લેશ્યાસંબંધી ચાર ઉદ્દેશા કહ્યા છે. એજ પ્રમાણે ભવસિદ્ધિક નારક સંબંધી ચાર દંડકો કહ્યા છે. તેમાં પહેલો દંડક સામાન્ય ભવસિદ્ધિક નારક સંબંધી છે. અને ત્રણ દંડકો કૃષ્ણ, નીલ, કાપોત, એ ત્રણ લેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક નારકોના છે. એજ પ્રમાણે ચાર ઉદ્દેશાઓ અભવસિદ્ધિક નારક સંબંધી કહ્યા છે. ૧૨ તથા લેશ્યા યુક્ત સમ્યક્ દૃષ્ટિવાળા નારક સંબંધી ચાર ઉદ્દેશાઓ કહ્યા છે. ૧૬ લેશ્યાવાળા મિથ્યા દૃષ્ટિવાળા નારક સંબંધી ચાર ઉદ્દેશાઓ કહ્યા છે કૃષ્ણપાક્ષિક નારક સંબંધી ચાર ઉદ્દેશાઓ કહ્યા છે, અને શુકલપાક્ષિક સંબંધી પણ ચાર ઉદ્દેશાઓ કહેલા છે જે પ્રમાણે ૩૧ એકત્રીસમા ઉપપાત શતકમાં અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ છે, એજ પ્રમાણે આ, બત્રીસમા ઉદ્વર્તના શતકમાં પણ અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ છે. આ બન્નેમાં અંતર કેવળ એટલું જ છે કે-ઉપપાત શતકમાં જેમ ઉપપાત પદ જોડીને અભિલાપો કહેવામાં આવે છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં

उत्पद्यन्ते इति यत्र कथ्यते, तत्र-तत्र सर्वत्रैव उद्वर्तन्ते इत्येवमभिलापः करणीयः एतावदेव द्वयोः शतकयो वैलक्षण्यम्, 'सेसं तं चेव' शेषम्-उद्वर्त्तन्ते इति विशेषणादतिरिक्तं सर्वं तदेव उपपातशतकवदेव ज्ञातव्यम् ।

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव-विहरइ' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति यावद्विहरति इति पूर्ववत् ॥२८॥

इति श्री - विश्वविख्यातजगद्वल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि - 'जैनाचार्य' पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां "श्री भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां द्वात्रिंशत्तमे-उद्वर्त्तनाशतके द्वितीयोद्देशकादारभ्याऽष्टाविंशति पर्यन्ता उद्देशकाः समाप्ताः ॥२-२८॥

द्वात्रिंशत्तममुद्वर्त्तना शतकं समाप्तम् ॥३२॥

पात के स्थान में उद्वर्तना शब्द जोड़कर अभिलाप कहना चाहिये, 'सेसं तं चेव' बाकी और सब कथन उपपात शतक के जैसा ही है। 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ' हे भदन्त ! जैसा आप देवानुप्रिय ने यह विषय कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है २ इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया, वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

॥ २ से लेकर २८ उद्देशक समाप्त ॥

॥ ३२ वां शतक समाप्त ॥

ઉપપાતના સ્થાને ઉદ્વર્તના પદ મૂકીને અભિલાપો કહેવા જોઈએ. 'સેસં તં ચેવ' બાકીનું બીજું તમામ કથન ઉપપાત શતકમાં કહ્યા પ્રમાણેનું જ છે.

'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ જાવ વિહરઇ' હે ભગવન્ આપદેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે પ્રમાણે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન આપદેવાનુપ્રિયનુ કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા. વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત "ભગવતીસૂત્ર"ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના બત્રીસમા શતકના બીજા ઉદ્દેશાથી અઠ્યાવીસમા ઉદ્દેશા સુધીના ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૩૨-૨થી ૨૮॥

॥બત્રીસમું શતક સમાપ્ત॥

अथ त्रयस्त्रिंशत्तमं शतकमारभते—

द्वात्रिंशत्तमे—उद्वर्त्तनाशतके नारकाणामुद्वर्त्तना कथिता, उद्वृत्ताश्च नारकाः एकेन्द्रियादिषु नोत्पद्यन्ते, के च ते, एकेन्द्रिया यत्र नारका नोत्पद्यन्ते ? इत्यस्यां शङ्कायामेकेन्द्रियाः प्ररूपयितव्याः भवन्ति, तेषु च तावद् एकेन्द्रियाः प्रथमतः प्ररूपणीयाः, इत्येकेन्द्रियप्ररूपणापरकं त्रयस्त्रिंशत्तमं शतकं द्वादशाऽवान्तरशतोपेतं व्याख्यातुमारभते, तस्य चेदं सूत्रम्—'कइविहाणं भंते !' इत्यादि।

मूलम्—कइविहा णं भंते ! एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा एगिंदिया पन्नत्ता तं जहा—पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया। पुढवीकाइया णं भंते ! कइविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता तं जहा—सुहुमपुढविकाइया य बायरपुढविकाइया य। सुहुमपुढवीकाइया णं भंते ! कइविहा पन्नत्ता ?। गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता तं जहा—पज्जत्तसुहुमपुढवीकाइया य अपज्जत्त सुहुमपुढविकाइया य। बायरपुढविकाइया णं भंते ! कइविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! एवं चेव। एवं आउकाइया वि चउक्कएणं भेएणं भाणियव्वा एवं जाव वणस्सइकाइया। अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइकम्मपगडीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं। पज्जत्तसुहुमपुढवीकाइया णं भंते ! कइ कम्म० पगडीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं। अपज्जत्त बायरपुढविकाइयाणं भंते ! कइकम्मपगडीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! एवं चेव ८। पज्जत्तबायरपुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ एवं चेव ८। एवं एएणं कमेणं जाव-बायरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ति। अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कइकम्मपगडीओ बंधंति ? गोयमा ! सत्तविहबंधगा वि अट्ठ-

विह बंधगा वि । सत्त बंधमाणा आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ बंधंति । अट्ठ बंधमाणा पडिपुन्नाओ अट्ठ कम्मपगडीओ बंधंति । पज्जत्तसुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्म-एवं चेव सव्वे जाव पज्जत्तसुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ बंधंति एवं चेव । अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइया णं भंते ! कइकम्मपगडीओ वेदेंति ? गोयमा ! चोद्दस कम्मपगडीओ वेदेंति ? तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं सोइंदियवज्झं चक्खिंदियवज्झं घाणिंदियवज्झं जिब्भिंदियवज्झं इत्थियवेदवज्झं पुरिसवेदवज्झं, एवं चउक्कएणं भेएणं जाव—पज्जत्तबायरवणस्सइकाइयाणं भंते ! कइकम्मपगडीओ वेदेंति ? गोयमा ! एवं चेव चोद्दस कम्मपगडीओ वेदेंति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥सू.१॥

छाया—कतिविधाः खलु भदन्त ! एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पञ्चविधा एकेन्द्रियाः तद्यथा—पृथिवीकायिका यावद्वनस्पतिकायिकाः । पृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा पर्याप्तसूक्ष्म पृथिवीकायिकाश्च, अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च, बादर पृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! एवमेव, एवम् अप्कायिका अपि चतुष्केण भेदेन भणितव्याः, एवं यावद्वनस्पतिकायिकाः अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां भदन्त ! कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! सप्त विधबन्धका अपि अष्टविधबन्धका अपि । सप्तबध्नन्त—आयुर्वर्जाः सप्त कर्म प्रकृती र्बध्नन्ति, अष्टबध्नन्तः परिपूर्णा अष्ट प्रकृतीर्बध्नन्ति ।

पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! कति कर्म० एवमेव, एवं सर्वे-यावत्, पर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकाः खलु भदन्त ! कति कर्म प्रकृतीर्बध्नन्ति ? एवमेव । अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! कति प्रकृतिर्वेदयन्ति गौतम ! चतुर्दशकर्म प्रकृतीर्वेदयन्ति, तद्यथा—ज्ञानावरणीयं यावदन्तरायिकं श्रोत्रेन्द्रियवध्यम् चक्षुरिन्द्रियवध्यम्-घ्राणेन्द्रियवध्यम्, जिह्वेन्द्रियवध्यम्, स्त्रीवेदवध्यम्, पुरुषवेदवध्यम् । एवं चतुष्केन भेदेन यावत्पर्याप्तबादर—वनस्पतिकायिकाः

खलु भदन्त ! कति कर्मप्रकृतीर्वेदयन्ति ? गौतम ! एवमेव चतुर्दश कर्मप्रकृतीर्वेदयन्ति-तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥३३॥१

टीका-'कइविहा णं भंते ! एगिंदिया पन्नत्ता' कतिविधाः खलु भदन्त ! एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः ? हे भदन्त एकेन्द्रियजीवानां कियन्तो भेदा भवन्तीति प्रश्नः ? भगवानाह-'गोयमा !' इत्यादि, गोयमा ! हे गौतम ! 'पंचविहा एगिंदिया पन्नत्ता' पञ्चविधाः-पञ्चप्रकारा एकेन्द्रियजीवाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः । तत्र प्रकारभेदमेव दर्शयति-'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा-'पुढविक्काइया जाव

॥ शतक ३३ उद्देशक १—

३२ वें शतक में नारकों की उद्वर्तना के सम्बन्ध में कथन किया गया है । नारक से उद्वृत्त हुए नारक एकेन्द्रियादिकों में उत्पन्न नहीं होते हैं । अतः वे एकेन्द्रियादिक कौन हैं कि जिन में नारकों की उत्पत्ति नहीं होती है इस शंका की उपस्थिति में एकेन्द्रियादिक प्ररूपण के विषय भूत बन जाते हैं । सो सबसे पहिले एकेन्द्रिय जीवों की प्ररूपणा करनेवाला यह ३३ वां शतक कि जो ११ उद्देशकों वाला है व्याख्या युक्त किया जाते है ।

'कइविहा णं भंते ! एगिंदिया पन्नत्ता'-इत्यादि सूत्र-१-

टीकार्थ--'कइविहा णं भंते ! एगिंदिया पण्णत्ता' हे भदन्त ! एकेन्द्रिय जीव कितने प्रकार के कहे गये है ? 'गोयमा ! पंचविहा एगिंदिया पन्नत्ता' हे गौतम ! एकेन्द्रिय जीव पांच प्रकार के कहे गये हैं। 'तं जहा' जैसा-पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया' पृथिवीकायिक

તેત્રીસમા શતકનો પ્રારંભ—પહેલો ઉદ્દેશો

બત્રીસમા ઉદ્વર્તના શતકમાં નારકોની ઉદ્વર્તના સંબંધમાં કથન કરવામાં આવેલ છે, નરકથી નીકળેલા નારક એકેન્દ્રિય વિગેરેમાં ઉત્પન્ન થતા નથી. તેથી તે એક ઇન્દ્રિયવાળાઓ કયા છે ? કે જેમાં નારકોની ઉત્પત્તિ થતી નથી. આ શંકાના સમાધાન માટે એક ઇન્દ્રિય વિગેરેની પ્રરૂપણા કરવાની જરૂરત લાગે છે, તેથી સૌથી પહેલાં ઇન્દ્રિયવાળા જીવોની પ્રરૂપણા કરવાવાળા આ તેત્રીસમા શતકનો કે જે અગિયાર ઉદ્દેશાઓવાળું છે તેનું કથન કરવામાં આવે છે.—

'कइविहाणं भंते ! एगिंदिया पन्नत्ता' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—'कइविहाणं भंते ! एगिंदिया पन्नत्ता' હે ભગવન્ એક ઇંદ્રિયવાળા જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'गोयमा ! पंचविहा एगिंदिया पन्नत्ता' હે ગૌતમ ! એક ઇંદ્રિયવાળા જીવો પાંચ પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. 'तं जहा' તે આ પ્રમાણે છે.—

वणस्सइकाइया, पृथिवीकायिका यावत् वनस्पतिकायिकाः । अत्र यावत्पदेन अप्कायिक, तेजस्कायिक वायुकायिकानां संग्रहो भवति ।

तथा च-पृथिव्यादिवनस्पत्यन्त भेदेन पञ्च प्रकारा एकेन्द्रियजीवा भवन्ति, एतेषां स्पर्शनेन्द्रियमात्रं भवति, रसनादीन्द्रियाणामभावात् । यद्यपि-मन इन्द्रिय-कायानां सर्वजीवसाधारण्यात् सर्वाण्यपि इन्द्रियाणि सामान्यजीवानां सन्ति, तथापि-एकेन्द्रियजीवेषु स्पर्शनेन्द्रियातिरिक्तेन्द्रियाणामनुक्रमत्वाद् एकेन्द्रिय संज्ञा भवतीति ।

'पुढविक्काइया णं भंते । कइविहा पन्नत्ता' पृथिवीकायिकाः खलु भदन्त । कतिविधाः-कतिप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः-कथिता इति प्रश्नः भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि 'गोयमा !' हे गौतम ! 'दुविहा पन्नत्ता' पृथिवीकायिका द्विविधाः-द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः-कथिता इत्युत्तरम् । तत्र प्रकारभेदमेव दर्शयति-'तं जहा'

से लेकर वनस्पतिकायिक तक अर्थात्-पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तैजस्कायिक, वायुकायिक, और वनस्पतिकायिक इन पांच प्रकार के एकेन्द्रिय जीवों को केवल एक स्पर्शन इन्द्रिय ही होती है, शेष कर्ण, चक्षु, रसना, घ्राण, ये इन्द्रियां नहीं होती हैं । यद्यपि मन, इन्द्रिय और काय ये सब, जीवों के होते हैं क्यों कि ये सर्व जीव साधारण हैं अतः सब इन्द्रिया सामान्य जीव में हैं फिर भी एकेन्द्रिय जीवों में स्पर्शन इन्द्रिय के अतिरिक्त और सब इन्द्रियां होती नहीं हैं इस कारण उनकी एकेन्द्रिय संज्ञा होती है ।

'पुढविक्काइया णं भंते ! कइविहा पन्नत्ता' हे भदन्त ! पृथिवी-कायिक जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं ? 'गोयमा ! हे गौतम ! 'दुविहा पन्नत्ता' पृथिवीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं । 'तं जहा'

'पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया' પૃથ્વી કાયિકથી લઈને વનસ્પતિકાયિક સુધી અર્થાત્ પૃથ્વીકાયિક, અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક. અને વનસ્પતિ કાયિક, આ પાંચે પ્રકારના એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોને કેવળ એક સ્પર્શન ઇન્દ્રિય જ હોય છે. બાકીની કાન, નાક, આંખ રસના (જીભ) આ ઇંદ્રિયો હોતી નથી. જો કે મન ઇન્દ્રિય અને શરીર સઘળા જીવોને હોય છે. કેમ કે તે સર્વ જીવ સાધારણ હોય છે. તેથી આ ઇન્દ્રિયો બધાને હોય છે. તો પણ એક ઇંદ્રિયવાળા જીવોમાં સ્પર્શન ઇન્દ્રિય શિવાય બીજી કોઇપણ ઇંદ્રિયો હોતી નથી. તેથી તેઓની 'એક ઇંદ્રિય એવી સંજ્ઞા છે

'પુઢવિક્કાઇયાણં ભંતે ! કઇવિહા પન્નત્તા' હે ભગવન્ પૃથ્વીકાયિક જીવો કેટલા પ્રકારના કહયા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'ગોયમા ! હે ગૌતમ ! 'દુવિહા પન્નત્તા' પૃથ્વીકાયિક જીવો બે પ્રકારના કહેલા છે. 'તં જહા'

इत्यादि। 'तं जहा' तद्यथा-'सुहुमपुढवीकाइया य बायरपुढवीकाइया य' सूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च बादरपृथिवीकायिकाश्च। तत्र-'सुहुमपुढवीकाइया णं भंते! कइविहा पण्णत्ता' सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त! कतिविधाः-कतिप्रकारका भवन्तीति प्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि। 'गोयमा' हे गौतम! 'दुविहा पन्नत्ता' सूक्ष्मपृथिवीकायिका द्विविधाः-द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः प्रकारमेव दर्शयति-'तं जहा' इत्यादि। तं जहा' तद्यथा-'पज्जत्त सुहुमपुढवीकाइया-अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइया य' पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकाश्च तथा-अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च तथा-पर्याप्ताऽपर्याप्तभेदेन सूक्ष्मपृथिवीकायिका जीवा द्विविधा भवन्तीत्युत्तरम् 'बायरपुढविकाइया णं भंते! कइविहा पन्नत्ता' बादर पृथिवीकायिकाः खलु भदन्त! कतिविधाः प्रज्ञप्ता? इति प्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि 'गोयमा!' हे गौतम! 'एवंचेव' एवमेव सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवस्य यथा-पर्याप्ताऽपर्याप्तभेदेन द्वैविध्यं कथितम्, तथैव-बादरपृथिवीकायिक

जैसे-'सुहुम पुढवीकाइया य बायर पुढवीकाइया य' सूक्ष्म पृथिवीकायिक और बादरपृथिवीकायिक 'सुहुमपुढवीकायिया णं भंते! कइविहा पन्नत्ता' इनमें से सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव हे भदन्त! कितने प्रकार के कहे गये हैं? 'गोयमा! दुविहा पन्नता' हे गौतम! सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं। 'तं जहा' जैसे-'पज्जत्त सुहुमपुढवीकाइया य अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइया य' पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक और अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक। 'बायर पुढविक्काइयाणं भंते! कइविहा पण्णत्ता' हे भदन्त! बादरपृथिवीकायिक जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! एवं चेव' सूक्ष्म पृथिवीकायिक के जैसे बादर पृथिवीकायिक

તે આ પ્રમાણે છે.-'सुहुमपुढवीकाइया य बायरपुढविकाइया य' સૂક્ષ્મ પૃથ્વી કાયિક અને બાદર પૃથ્વી કાયિક 'सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते! कइविहा पन्नत्ता' તેમાં સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ હે ભગવન્ કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा! दुविहा पन्नत्ता' હે ગૌતમ! સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવો બે પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. 'तं जहा' તે આ પ્રમાણે છે. 'पज्जत्त सुहुमपुढवीकाइया य अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइया य' પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વી કાયિક અને અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક 'बायर पुढवीकाइयाणं भंते! कइविहा पण्णत्ता' હે ભગવન્ બાદર પૃથ્વીકાયિક જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा! एवंचेव' હે ગૌતમ! સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયના કથન પ્રમાણે બાદર પૃથ્વીકાયિક જીવ પણ પર્યાપ્ત અને

जीवानामपि पर्याप्ताऽपर्याप्तभेदेन द्वैविध्यं ज्ञातव्यमिति। 'एवं आउकाइया वि चउक्कएणं भेएणं भाणियव्वा' एवं-पृथिवीकायिकवदेव, अप्कायिका अपि चतुष्केण भेदेन भणितव्या। सूक्ष्मबादरपर्याप्ताऽपर्याप्तभेदात् 'एवं जाव-वणस्सइकाइया' एवं यावद् वनस्पतिकायिकाः, अत्र यावत्पदेन तेजस्कायिक-वायुकायिकयोः संग्रहो भवति। तथा च-पृथिव्यप्कायिकयोर्यथा चत्वारो भेदाः कथिताः तथैव-तेजस्कायिकादारभ्य वनस्पतिकायिकान्तैकेन्द्रियजीवानामपि सूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्तात्मकाश्चत्वारो भेदा ज्ञातव्या इति। अथ कर्मप्रकृतिविषयकं सूत्रमाह-'अपज्जत्त' इत्यादि, 'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते' अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकानां भदन्त! 'कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः? भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि।

भी पर्याप्त और अपर्याप्त के भेद से दो प्रकार का कहा गया है। 'एवं आउक्काइया वि चउक्कएणं भेएणं भाणियव्वा' पृथिवीकायिक के जैसे अप्कायिक भी सूक्ष्म, बादर, पर्याप्तक और अपर्याप्तक के भेद से चार प्रकार के कहे गये जानना चाहिये। 'एवं जाव वणस्सइकाइया' इसी प्रकार से यावत् वनस्पतिकायिक भी सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त और अपर्याप्त के भेद से चार प्रकार के कहे गये जानना चाहिये यावत्पद से तेजस्कायिक और वायुकायिक इन दो का ग्रहण हुआ है। तथा च पृथिवीकायिक के जिस प्रकार से चार भेद कहे हैं उसी प्रकार से तेजस्कायिक से लेकर वनस्पतिकायिकान्त एकेन्द्रिय के भी चार चार भेद हैं ऐसा जानना चाहिये।

'अपज्जत्त सुहुम पुढवी काइयाणं भंते! कइ कम्म पगडीओ पन्नत्ताओ' हे भदन्त! अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवों के कितनी

અપર્યાપ્તના ભેદથી બે પ્રકારના કહ્યા છે. 'एवं आउक्काइया वि चउक्कएणं भेएणं भाणियव्वा' પૃથ્વીકાયિકના કથન પ્રમાણે અપ્કાયિક પણ સૂક્ષ્મ, બાદર, પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્તના ભેદથી ચાર પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે. તેમ સમજવું. 'एवं जाव वणस्सइकाइया' આજ પ્રમાણે યાવત્ વનસ્પતિકાયિક પણ સૂક્ષ્મ બાદર પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્તના ભેદથી ચાર પ્રકારના કહ્યા છે. તેમ સમજવું. અહિયાં યાવત્પદથી તેજસ્કાયિક અને વાયુકાયિક એ બે ગ્રહણ કરાયા છે. તે આ પ્રમાણે-પૃથ્વીકાયિકના ચાર ભેદો જે રીતે બતાવ્યા છે. એજ પ્રમાણે તેજસ્કાયિકથી લઈને વનસ્પતિકાયિક સુધીના એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવના પણ ચાર ભેદ સમજવા.

'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' હે ભગવન્ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોને કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયો કહેવામાં

'गोयमा' हे गौतम ! 'अट्ठ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' अष्टकर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः– कथिताः । प्रकारभेदमेव दर्शयति–'तंजहा' इत्यादि । 'तं जहा' तद्यथा–'नाणा- वरणिज्जं जाव–अंतराइयं' ज्ञानावरणीयं यावद् आन्तरायिकम् । अत्र यावत्पदेन दर्शनावरणीयवेदनीय–मोहनीयायु–नाम–गोत्राणां संग्रहो भवति । तथा च– ज्ञानावरणीयादारभ्यान्तरायिकपर्यन्ता अष्टौ कर्मप्रकृतयोऽपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवी- कायिकानां भवन्तीत्युत्तरमिति। 'पज्जत्तसुहुमपुढवीकाइया णं भंते ! कइ कम्मपग- डीओ पन्नत्ताओ' पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां खलु भदन्त ! कति संख्यकाः कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः–कथिता इति प्रश्नः, भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'अट्ठ कम्मपगडीओ' अष्ट कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः एतेषामष्टौ कर्मप्रकृतयो भवन्तीत्युत्तरम् । प्रकारभेदमेव दर्शयति–'तं जहा' इत्यादि। 'तं जहा' तद्यथा–'नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं' ज्ञानावरणीयं यावत्पदेन दर्शनावरणीय

कर्मप्रकृतियां कही गई हैं ? 'गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' हे गौतम ! उनके आठ कर्मप्रकृतियां कही गई हैं । 'तं जहा' जो इस प्रकार से हैं 'नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं' ज्ञानावरणीय यावत् अन्त- रायिक यहां यावत्पद से दर्शनावरणीय वेदनीय मोहनीय आयु नाम और गोत्र इन कर्मप्रकृतियों का ग्रहण हुआ है । 'पज्जत्त सुहुमपुढवी- काइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' हे भदन्त ! पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवों के कितनी कर्मप्रकृतियें कही गई हैं ? उत्तर में भगवान कहते हैं 'गोयमा ! हे गौतम ! 'अट्ठ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' आठ कर्मप्रकृतियां कही गई हैं। 'तं जहा' वे इस प्रकार हैं– 'नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं' ज्ञानावरणीयसे लेकर अन्तराय कर्म की आठों कर्मप्रकृतियां कही गई हैं। जैसे–ज्ञानावरणीय,

---

આવેલ છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે–'अट्ठ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' હે ગૌતમ ! તેઓને આઠકર્મ પ્રકૃતિયો કહી છે. 'तं जहा' તે આ પ્રમાણે છે.

'नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं' જ્ઞાનાવરણીય યાવત્ અંતરાય અહિયાં યાવત્પદથી દર્શનાવરણીય, મોહનીય, વેદનીય, નામ, ગોત્ર, અને આયુ આ કર્મ પ્રકૃતિયો ગ્રહણ કરવામાં આવી છે,

'पज्जत्तसुहुमपुढवीकाइया णं भंते ! कइकम्मपगडीओ पण्णत्ताओ' હે ભગવન્ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોને કેટલી કર્મપ્રકૃતીયો કહેવામાં આવેલ છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે–'गोयमा ! હે ગૌતમ ! 'अट्ठ कम्म- पगडीओ पण्णत्ताओ' આઠ કર્મપ્રકૃતીયો કહેવામાં આવેલ છે. તે આ પ્રમાણે છે.–'नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं' જ્ઞાનાવરણીયથી લઈને અન્તરાકર્મ સુધીની

तत्र-'सत्तबंधमाणा आउवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ बंधंति' सप्तप्रकारक कर्म प्रकृती र्बध्नन्त आयुष्कर्मातिरिक्ताः सप्त ज्ञानावरणीयादिकाः कर्मप्रकृति-र्बध्नन्ति। 'अट्ठ बंधमाणा पडिपुन्नाओ अट्ठ कम्मपगडीओ बंधंति' अष्टकर्मप्रकृती र्बध्नन्तः परिपूर्णाः समस्ता अपि अष्टापि कर्मप्रकृती र्बध्नन्ति। सर्वासामपि कर्म प्रकृतीनां बंधनं कुर्वन्तीति भावः। 'पज्जत्त सुहुमपुढविकाइयाणं भंते!' पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवाः खलु भदन्त! 'कति कर्मप्रकृती र्बध्नन्तीति प्रश्नः,

---

हे गौतम! अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव सात कर्म प्रकृतियों का भी बन्ध करते हैं और आठ कर्मप्रकृतियों का भी बन्ध करते हैं 'सत्त बंधमाणा आउवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ बंधंति' जब वे सात कर्म प्रकृतियों का बन्ध करते हैं तब आयुकर्म के सिवाय वे सात कर्म प्रकृतियों का-ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, नाम, गोत्र, और अन्तराय इनका-बन्ध करते हैं 'अट्ठ बंधमाणा पडिपुन्नाओ अट्ठ कम्मपगडीओ बंधंति' और जब वे आठ कर्मप्रकृतियों का बंध करते हैं तो पूरी की पूरी आठों कर्मप्रकृतियों का बन्ध करते हैं।

'पज्जत्त सुहुम पुढविक्काइयाणं भंते! कइकम्म०' हे भदन्त! पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव कितनी कर्मप्रकृतियों का बन्ध करते हैं? 'गोयमा! एवं चेव' हे गौतम! अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक भी सात प्रकार की कर्म प्रकृतियों के भी बन्धक होते हैं और आठ प्रकार की

अट्ठविह बंधगावि' હે ગૌતમ! અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ સાતકર્મ પ્રકૃતિયોનો પણ બંધ કરે છે, અને આઠ કર્મ પ્રકૃતિયોનો પણ બંધ કરે છે.

'सत्तबंधमाणा आउवज्जाओ सत्तकम्मपगडीओ बंधंति' જ્યારે તેઓ સાત કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે, ત્યારે તેઓ આયુકર્મને છોડીને એટલે કે-જ્ઞાનાવરણીય, દર્શનાવરણીય, વેદનીય, મોહનીય, નામ, ગોત્ર, અને અંતરાય આ સાતકર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે. 'अट्ठबंधमाणा पडिपुन्नाओ अट्ठ कम्म पगडीओ बंधंति' અને જ્યારે તેઓ આઠ કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે, ત્યારે પૂરેપૂરી આઠે કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે.

'पज्जत्त सुहुम पुढविक्काइयाणं भंते! कइ कम्म०' હે ભગવન્ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा! एवं चेव' હે ગૌતમ! અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવની જેમ જ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક પણ સાત પ્રકારની કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે, અને આઠ કર્મપ્રકૃતિયોનો પણ બંધ કરે છે. જ્યારે તે સાત

भगवानाह–'एवंचेव' एवमेव–अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकवदेव पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका अपि सप्तविधबन्धका अपि, अष्टविधबन्धका अपि। तत्र सप्त बध्नन्तः आयुर्वर्जा ज्ञानावरणीयादिकाः सप्त कर्मप्रकृतीर्बध्नन्ति, अष्ट बध्नन्तः परिपूर्णा अष्ट कर्मप्रकृती र्बध्नन्तीति। 'एवं सव्वे जाव–पज्जत्त बायर वणस्सइ काइयाणं भंते! कइ कम्मपगडीओ बंधंति एवंचेव' एवं सर्वे यावत् पर्याप्तबादर वनस्पतिकायिकाः खलु भदन्त! कति कर्मप्रकृतीर्बध्नन्ति एवमेव–पूर्वोक्तवदेव प्रश्नोत्तराणि ज्ञातव्यानि अत्र यावत्पदेनापर्याप्त सूक्ष्माप्कायिक, पर्याप्त सूक्ष्माऽप्कायिकाऽपर्याप्तबादराप्कायिक, पर्याप्तबादराप्कायिकाऽपर्याप्त सूक्ष्मतेजस्कायिक पर्याप्त बादर तेजस्कायिकाऽपर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिक पर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिक अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकानां

कर्मप्रकृतियों के भी बन्धक होते हैं। सात कर्मप्रकृतियों के बन्धक होने पर वे आयु कर्म को छोड़कर शेष ज्ञानावरणीयादि सात कर्मप्रकृतियों का बन्ध करते हैं। और आठ कर्मप्रकृतियों के बन्धक होने पर वे परिपूर्ण आठ कर्मप्रकृतियों का बन्ध करते हैं। 'एवं सव्वे जाव पज्जत्त बायरवणस्सइकाइयाणं भंते! कइ कम्मपगडीओ बंधंति, एवं चेव' इसी प्रकार समस्त यावत् पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक हे भदन्त! कितनी कर्मप्रकृतियों का बन्ध करते हैं? हे गौतम! इस सम्बन्ध में पूर्वोक्त जैसा ही उत्तर जानना चाहिये, यहां यावत्पद से 'अपर्याप्त सूक्ष्म अप्कायिक, पर्याप्तक सूक्ष्म अप्कायिक, अपर्याप्त बादर अप्कायिक, पर्याप्त बादर अप्कायिक, अपर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिक, पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिक, अपर्याप्त बादर तेजस्कायिक, पर्याप्तक बादर तेजस्कायिक अपर्याप्त सूक्ष्म वायुकायिक, पर्याप्त सूक्ष्म वायु-

કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે, ત્યારે તે આયુ કર્મને છોડીને બાકીની જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે સાત કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે, અને જ્યારે આઠ કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે, ત્યારે તેઓ પૂરેપૂરી આઠે આઠ કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે. 'एवं सव्वे जाव पज्जत्तबायरवणस्सइकाइयाणं भंते! कइ कम्मपगडीओ बंधंति एवं चेव' આજ પ્રમાણે સઘળા યાવત્ પર્યાપ્ત બાદર વનસ્પતિકાયિક હે ભગવન્ કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે? હે ગૌતમ! આ સંબંધમાં પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે જ પ્રશ્ન અને ઉત્તર સમજવા. અહિયાં યાવત્પદથી અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક અપર્યાપ્ત બાદર અપ્કાયિક, પર્યાપ્ત બાદર અપ્કાયિક, અપર્યાપ્ત, સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિક પર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિક, અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વાયુકાયિક પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વાયુ

संग्रहो भवति। तथा च–अपर्याप्त सूक्ष्माऽप्कायिकादारभ्याऽपर्याप्तबादर वनस्पतिजीवपर्यन्तानां कर्मबन्धविषये पृथिवीकायिकवदेव व्यवस्था ज्ञातव्या आलापप्रकारस्तु स्वयमूहनीयः, एतदग्रेतन पर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकसूत्रं सूत्रकारः स्वयमेवाह–'पज्जत्त बायरवणस्सइकाइया णं' इत्यादि, 'पज्जत्तबायरवणस्सइकाइया णं भंते! कइ कम्मपगडीओ बंधंति' पर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकाः खलु भदन्त! कति कर्मप्रकृती र्बध्नन्ति ? उत्तरमाह–'एवं चेव' एवमेव पर्याप्त बादरपृथिवीकायिकवदेव कर्मप्रकृतिबन्धनविषये व्यवस्था ज्ञातव्येति।

अथ कर्मप्रकृतिवेदनविषये माह–'अपज्जत्त०' इत्यादि। 'अपज्जत्त सुहुमपुढवि·

कायिक, अपर्याप्त बादर वायुकायिक, पर्याप्त बादर वायुकायिक, अपर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिक, पर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिक और अपर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक 'इन सब के प्रश्नोत्तरोका ग्रहण हुआ है। जैसे अपर्याप्त सूक्ष्म अप्कायिक से लेकर अपर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक तक के जीवों के कर्मबन्ध के विषय में पृथिवीकायिक के जैसी ही व्यवस्था जाननी चाहिये। इस सम्बन्ध में आलाप प्रकार स्वयं ही उद्भावित करना चाहिये।

पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक के विषय में सूत्रकार स्वयं सूत्र कहते हैं 'पज्जत्त' इत्यादि 'पज्जत्त बायरवणस्सइकाइयाणं भंते! कइ कम्मपगडीओ बंधंति' हे भदन्त! पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक जीव कितनी कर्मप्रकृतियों का बन्ध करते है? 'एवं चेव' हे गौतम! इस सम्बन्ध में पर्याप्त बादर पृथिवीकायिक के जैसे ही कर्मप्रकृति के बन्ध के विषय में व्यवस्था जाननी चाहिये।

'अपज्जत्त सुहुम पुढविक्काइयाणं भंते!' हे भदन्त! अपर्याप्त

કાયિક, અપર્યાપ્ત, બાદર, વાયુકાયિક, પર્યાપ્ત બાદર વાયુકાયિક, અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક, અને અપર્યાપ્ત બાદર વનસ્પતિકાયિક આ સઘળા ગ્રહણ કરાયા છે. તથા અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિકથી લઈને અપર્યાપ્ત બાદર વનસ્પતિકાયિક સુધીના જીવોના કર્મબંધના સંબંધમાં પૃથ્વીકાયિકના કથન પ્રમાણે આલાપનો પ્રકાર સ્વયં બનાવીને સમજી લેવો. પર્યાપ્ત બાદર વનસ્પતિકાયિકના સંબંધમાં સૂત્રકાર નીચેનો સૂત્રપાઠ કહે છે. 'पज्जत्तबायरवणस्सइकाइयाणं भंते! कइ कम्मपगडीओ बंधंति' હે ભગવન પર્યાપ્ત બાદર વનસ્પતિકાયિક જીવ કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે–'एवं चेव' હે ગૌતમ! આ સંબંધમાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકના કથન પ્રમાણે જ કર્મ પ્રકૃતિના સંબંધમાં કથન સમજવું.

'अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइयाणं भंते' હે ભગવન અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વી

वकाइयाणं भंते' अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवाः खलु भदन्त ! 'कइ कम्म पगडीओ वेदेंति' कति कर्मप्रकृती वेंदयन्तीति वेदनविषयः प्रश्नः। भगवानाह– 'गोयमा' इत्यादि। 'गोयमा !' हे गौतम! 'चोद्दस कम्मपगडीओ वेदेंति' चतुर्दश कर्मप्रकृती वेंदयन्ति, अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवा इति। प्रकारभेदमेव दर्शयति–'तं जहा' इत्यादि। 'तं जहा' तद्यथा–नाणावरणिज्जं जाव–अंतराइयं' ज्ञानावरणीयं यावद् आन्तरायिकम्। यावत्पदेन=दर्शनावरणीय वेदनीय, मोहनीय आयु=नाम=गोत्राणां संग्रहो भवति ८। तथाचेमा ज्ञानावरणीयादिका अष्टकर्म-प्रकृतयः ८। तथा–'सोइंदियवज्झ' श्रोत्रेन्द्रिय वध्यम्, श्रोत्रेन्द्रियं वध्यं हननीयं–

सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीव 'कइ कम्मपगडीओ वेदेंति' कितनी कर्मप्रकृतियों का वेदन करते हैं ? 'गोयमा ! चोद्दसकम्म पगडीओ वेदेंति' हे गौतम ! अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव १४ कर्मप्रकृतियों का वेदन करते हैं। 'तं जहा' जो इस प्रकार से हैं–'णाणावरणिज्जं जाव अंतराइय' ज्ञानावरणीय से लेकर अन्तराय तक यहां यावत् पद से दर्शनावरणीय वेदनीय मोहनीय, आयु, नाम, और गोत्र इनका ग्रहण हुआ है।

इस प्रकार इन ज्ञानावरणीयादिक आठ कर्मप्रकृतियों का वे वेदन करते हैं तथा 'सोइंदियवज्झ' श्रोत्रेन्द्रिय वध्य श्रोत्रेन्द्रिय, वध्य हनन करने योग्य जिस कर्म के हो वह श्रोत्रेन्द्रिय वध्य कर्म कहलाता है जिस के उदय से जीव को श्रोत्रेन्द्रियकी प्राप्ति न हो सके उस कर्म का नाम श्रोत्रेन्द्रिय वध्य कर्म है उस श्रोत्रेन्द्रिय वध्य कर्म का वेदन करते हैं, इसी प्रकार आगे भी समझ लेना

કાયિક જીવો 'कइ कम्मपगडीओ वेदेंति' કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયોનું વેદન કરે છે? 'गोयमा ! चोद्दसकम्मपगडीओ वेदेंति' હે ગૌતમ! અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વી કાયિક જીવ ચૌદ ૧૪ કર્મપ્રકૃતિયોનું વેદન કરે છે

'तं जहा' તે આ પ્રમાણે છે.–'णाणावरणिज्जं जाव अंतराइय' જ્ઞાનાવરણીયથી લઈને અન્તરાય સુધી. અહિયાં યાવત્ પદથી દર્શનાવરણીય, મોહનીય, વેદનીય, નામ, ગોત્ર, અને આયુ આ કર્મ પ્રકૃતિયો ગ્રહણ થઈ છે. આ રીતે આ જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે આઠ કર્મ પ્રકૃતિયોનું તેઓ વેદન કરે છે. તથા 'सोइंदियवज्झ' શ્રોત્રેન્દ્રિય વધ્ય-શ્રોત્રેન્દ્રિયનું હનન કરવા યોગ્ય જે કર્મ હોય છે તે શ્રોત્રેન્દ્રિય વધ્ય કર્મ કહેવાય છે. જે કર્મના ઉદયથી શ્રોત્રેન્દ્રિયની પ્રાપ્તિ ન થઈ શકે તે કર્મનું નામ શ્રોત્રેન્દ્રિય વધ્ય કર્મ છે. એ શ્રોત્રેન્દ્રિય વધ્ય કર્મનું વેદન કરે છે તેમ સમજવું આ શ્રોત્રેન્દ્રિય વધ્ય કર્મ મતિ જ્ઞાનાવરણ વિશેષ રૂપ હોય છે. 'चक्खिंदियवज्झ' તથા ચક્ષુ ઇન્દ્રિયવધ્ય

हननयोग्यं यस्य कर्मण स्तत्। यदुदयात् जीवस्य श्रोत्रेन्द्रियं न लभ्यते तत्कर्म श्रोत्रे-न्द्रिय वध्यं कथ्यते—एवं सर्वत्र बोध्यम्, एतन्मतिज्ञानावरणविशेष इत्यर्थः, एवम्-'चक्खिंदियवज्झं' चक्षुरिन्द्रियवध्यम्, चक्षुरिन्द्रिय हननीयं तत्-दर्शनावरण विशेषः १०। 'घाणिंदियवज्झं' घ्राणेन्द्रिय वध्यम्, घ्राणेन्द्रिय हननीयम् ११। 'जिब्भिंदियवज्झं' जिह्वेन्द्रिय वध्यम् जिह्वेन्द्रिय हननीयं १२। स्पर्शनेन्द्रिय वध्यन्तु तेषामपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकानां नास्ति, यतः स्पर्शनेन्द्रियवध्यत्व स्वीकारे—एकेन्द्रियत्वहानिप्रसङ्गस्यादिति। 'इत्थिवेयवज्झं' स्त्रीवेदवध्यम् यदुदयात् स्त्रीवेदो न लभ्यते तत् स्त्रीवेदहननीयं कर्म १३। 'पुरिसवेदवज्झं' पुरुषवेदवध्यम्, यदुदयात् पुरुषवेदो न लभ्यते, तत्कर्मपुरुषवेदहननीयम् १४ नपुंसकवध्यंतु एकेन्द्रियाणां नास्ति—नपुंसकवेदवृत्तित्वादिति। एवमेताश्चतु-र्दशकर्मप्रकृतयो भवन्ति।

चाहिये यह श्रोत्रेन्द्रिय कर्म मतिज्ञानावरण विशेष रूप होता है। 'चक्खिंदियवज्झं' तथा चक्षु इन्द्रिय वध्यकर्मका वे वेदन करते हैं यह चक्षुरिन्द्रिय वध्यकर्म दर्शनावरणीयकर्म विशेष रूप होता है 'घाणिंदियवज्झं' तथा घ्राणेन्द्रिय वध्यकर्म का वे वेदन करते हैं 'जिब्भिंदियवज्झं' जिह्वेन्द्रिय वध्यकर्म का वेदन करते हैं। स्पर्शनेन्द्रिय वध्यकर्म का वेदन उन अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकों के नही है, क्यों कि इनके यदि स्पर्शनेन्द्रिय वध्यकर्म का वेदन स्वीकार किया जाय तो इनमें एकेन्द्रियता की हानि का प्रसंग प्राप्त होगा। 'इत्थिवेदवज्झं' इसी प्रकार से ये अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव स्त्रीवेद वध्यकर्म का भी वेदन करते हैं। जिस के उदय से स्त्री वेद प्राप्त न हो वह स्त्री वेद वध्यकर्म है। 'पुरिसवेदवज्झं' पुरुष वेद वध्य कर्म का वेदन करते हैं-जिस के उदय से पुरुष वेद प्राप्त न हो सके वह पुरुष वेद वध्यकर्म है

કર્મનું વેદન કરે છે. આ ચક્ષુ ઈન્દ્રિયાવરણ કર્મ દર્શનાવરણ વિશેષ રૂપ હોય છે. 'घाणिंदियवज्झं' તથા ઘ્રાણેન્દ્રિયાવધ્ય કર્મનુ વેદન કરે છે. जिब्भिं-दियवज्झं' જીહ્વેન્દ્રિયવધ્ય કર્મનું વેદન કરે છે. તે અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકોને સ્પર્શેન્દ્રિયવધ્ય કર્મનું વેદન હોતું નથી. કેમ કે તેઓને જો સ્પર્શનેન્દ્રિયવધ્ય કર્મનુ વેદન સ્વીકારવામાં આવે તો તેઓમાં એકન્દ્રિય પણાની હાનીનો પ્રસંગ ઉપસ્થિત થશે. 'इत्थिवेयवज्झं' આજ પ્રમાણે આ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવો સ્ત્રીવેદવધ્ય કર્મનું પણ વેદન કરે છે. જેના ઉદયથી સ્રીવેદ પ્રાપ્ત ન થાય તે સ્રીવેદવધ્ય કર્મ કહેવાય છે. 'पुरिसवेदवज्झं' પુરૂષ વેદવધ્ય કર્મનું વેદન કરે છે. જેના ઉદયથી પુરૂષવેદ પ્રાપ્ત ન

किं चतुर्दश कर्मप्रकृतीनां वेदनं केवलमपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकानामेव भवती त्याशङ्कायामाह-'एवं चउक्कएणं' इत्यादि। 'एवं चउक्कएणं भेदेणं जाव-पज्जत्त वायरवणस्सइकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ वेदेंति' गोयमा ! एवं चेव, चोद्दसकम्मपगडीओ वेदेंति' एवं चतुष्केण भेदेन पर्याप्तापर्याप्तभेद भिन्नसूक्ष्मवादरभेदेन यावत् पर्याप्तवादरवनस्पतिकायिकाः खलु भदन्त! कति कर्म प्रकृतीर्वेदयन्ति ? गौतम ! एवमेव-अपर्याप्त पृथिवीकायिकवदेव-

इनके नपुंसक वध्यकर्म नहीं है, क्यों कि एकेन्द्रियों में नपुंसक वेद वृत्तिता होती है। इस प्रकार से ये चौदह १४ कर्म प्रकृतियां है जिन्हें ये अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव वेदन करते हैं। इन चौदह कर्म प्रकृतियों का वेदन इन्ही अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकों के होता हो सो बात नहीं है किन्तु इन चौदह कर्म प्रकृतियों का वेदन 'एवं चउ-क्केणं भेदेणं जाव पज्जत्त बायर वणस्सइकाइयाणं भंते ! कइकम्म पगडीओ वेदेंति' सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त और अपर्याप्त इन भेद वाले समस्त एकेन्द्रिय जीव होते है, इसलिये सूत्रकारने यहाँ ऐसा कहा है यह चौदह प्रकृतियों का वेदन पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक तक जानना चाहिये। गौतमस्वामी ने इसी बात को प्रभुश्री से इस रूप में यावत् पूछा है कि हे भदन्त ! पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक जीव कितनी कर्मप्रकृ-तियों का वेदन करते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! एवं चेव चोद्दस कम्मपगडीओ वेदेंति' हे गौतम ! अपर्याप्त पृथिवीकायिक

थई शके ते पुरुष वेदवध्य कर्म कहेवाय छे. तेओने नपुंसकवेदवध्य कर्म होतुं नथी. केम के-एकेन्द्रियोमां नपुंसकवेदपणु होय छे. आ रीते आ चौद १४ कर्म प्रकृतिओ कही छे जेनुं आ अपर्याप्त सूक्ष्मपृथ्वीकायिक जीव वेदन करे छे. आ चौद कर्म प्रकृतियोनुं वेदन आ अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिकोने ज होय छे, ए वात नथी परंतु आ १४ चौदकर्म प्रकृति योनुं वेदन 'एवं चउक्केणं भेदेणं जाव पज्जत्त वायरवणस्सइकाइयाणं भंते ! कइ कम्म पगडीओ वेदेंति' सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त अने अपर्याप्त आ भेदो सघळा एकेन्द्रियोने होय छे. तेथी सूत्रकारे अहियां एवुं कहुं छे के-आ चौद प्रकृतियोनुं वेदन पर्याप्त बादर वनस्पतिकाय सुधी समजवुं. गौतम स्वामीए एज वात प्रभुश्रीने ए रीते पूछेल छे के-हे भगवन् पर्याप्त बादर वनस्पति कायिक जीव केटली कर्म प्रकृतियोनुं वेदन करे छे? आ प्रश्नना उत्तरमां प्रभुश्री कहे छे के-'गोयमा ! एवं चेव चोद्दसकम्मपगडीओ वेदेंति' हे गौतम ! अपर्याप्त पृथ्वीकायिक जीवोना कथन प्रमाणे ज तेओ यावत्

चतुर्दश कर्मप्रकृतीर्वेदयन्ति। यावत्पदेन, पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकादारभ्य अपर्याप्त, पर्याप्त सूक्ष्मबादरभेदभिन्नाप्कायिक, तेजस्कायिक-वायुकायिक पर्याप्तापर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः अपर्याप्तापर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकान्त जीवानां संग्रहो ज्ञातव्याः। पर्याप्त बादरवनस्पतिकायिक सूत्रं तु पूर्वमुक्तमेव, एते सर्वे एकेन्द्रियाश्चतुर्दश कर्मप्रकृतीनां वेदका भवन्तीति भावः। आलाप-प्रकाराश्च स्वयमेवोहनीया इति।

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति हेभदन्त !

जीवों के जैसे ही वे यावत् वनस्पतिकायिक जीव १४ कर्मप्रकृतियों का ही वेदन करते हैं। यहां यावत्पद से पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक से लेकर अपर्याप्त पर्याप्त, सूक्ष्म, बादर, भेद वाले अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक अपर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिक और अपर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक तेजस्कायिक इन सब जीवों का ग्रहण हुआ है। पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक सूत्र तो पहिले कह ही दिया है। इस प्रकार ये सब एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म पर्याप्त सूक्ष्म अपर्याप्त, बादर अपर्याप्त अप्कायिक जीव, इसी प्रकार से सूक्ष्म पर्याप्त आदि भेद वाले तेजस्कायिक जीव वायुकायिक जीव और वनस्पतिकायिक जीव-पूर्वोक्त १४ कर्मप्रकृतियों के वेदक होते हैं। इस सम्बन्ध में आलाप प्रकार स्वयं ही उद्भावित करना चाहिये 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! जैसा आप देवानुप्रियने एकेन्द्रिय जीवों के कर्मप्रकृतियों के

બાદર વનસ્પતિ કાયિક જીવ ચૌદ ૧૪ કર્મપ્રકૃતિયોનું જ વેદન કરે છે. અહિયાં યાવત્પદથી પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકથી લઈને અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ બાદર ભેદવાળા અપ્કાયિક તેજસ્કાયિક વાયુકાયિક તથા અપર્યાપ્તક બાદર વનસ્પતિકાયિક આ સઘળા જીવો ગ્રહણ કરાયા છે. પર્યાપ્ત બાદર વનસ્પતિ કાયિક સૂત્રતો પહેલાં કહેવામાં આવી ગયું છે. આ રીતે આ સઘળા એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો સૂક્ષ્મ પર્યાપ્ત. સૂક્ષ્મ અપર્યાપ્ત, બાદર પર્યાપ્ત બાદર અપર્યાપ્ત, અપ્કાયિક જીવ આજ રીતે સૂક્ષ્મ પર્યાપ્તક વિગેરે ભેદવાળા તેજસ્કાયિક જીવો, વાયુકાયિક જીવો અને વનસ્પતિકાયિક જીવો ઉપર કહેલ ૧૪ ચૌદકર્મ પ્રકૃતિયોનું વેદન કરે છે. આ સંબંધમાં આલાપકો સ્વયં બનાવીને સમજી લેવા.

'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે એક ઇંદ્રિય જીવોને કર્મ પ્રકૃતિયોના બંધ સંબંધમાં અને તેના વેદનના સંબંધમાં

एकेन्द्रियाणां कर्मप्रकृति बन्धनवेदनविषये यत्कथितम्-तत्सर्वं सत्यमितिकथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन् विहरतीति ॥सू० ॥३३।१।

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित—कोल्हापुरराजगुरु-बाल-
ब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्य श्री
घासीलालव्रतिविरचितायां श्री "भग
वतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां-
व्याख्यायां त्रयस्त्रिंशत्तमे शतके
प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥३३-१॥

बन्धन एवं उनके वेदन के विषय में जो कहा है वह सब सत्य ही है। इस प्रकार कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और उन्हें नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्माको भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके तेतीसवें शतकका
प्रथम उद्देशक समाप्त ॥३३-१॥

જે કથન કર્યું છે. તે સઘળું કથન સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત "ભગવતીસૂત્ર"ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના તેત્રીસમા શતકનો પહેલો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૩-૧॥

अथ द्वितीयोद्देशक मारभ्यते

मूलम्—कइविहा णं भंते! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता? गोयमा! पंचविहा अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता। तं जहा—पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया। अणंतरोववन्नगा णं भंते! पुढवीकाइया कइविहा पन्नत्ता गोयमा! दुविहा पन्नत्ता तं जहा—सुहुमपुढवीकाइया य बायरपुढविकाइया य। एवं दुपएणं भेएणं जाव वणस्सइकाइया। अणंतरोववन्नग सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते! कइकम्मपगडीओ पन्नत्ताओ, गोयमा? अट्ठ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव—अंतराइयं। अणंतरोववन्नग बायरपुढवीकाइया णं भंते! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ। गोयमा? अट्ठ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं। एवं जाव अणंतरोववन्नग बायरवणस्सइकाइयाणं त्ति। अणंतरोववन्नग सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते! कइकम्मपगडीओ बंधंति? गोयमा! आउवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ बंधंति। एवं जाव अणंतरोववन्नग बायरवणस्सइकाइय त्ति। अणंतरोववन्नग सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते! कइकम्म पगडीओ वेदेंति? गोयमा! चउद्दस कम्मपगडीओ वेदेंति तं जहा—नाणावरणिज्जं तहेव जाव पुरिसवेदवज्झं। एवं जाव अणंतरोववन्नग बायरवणस्सइकाइयं त्ति। सेवं भंते सेवं भंते! त्ति ॥सू० २॥

छायाः—कतिविधाः खलु भदन्त! अनन्तरोपपन्नका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः? गौतम! पञ्चविधा अनन्तरोपपन्नका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा पृथिवीकायिका यावद्वनस्पतिकायिकाः। अनन्तरोपपन्नकाः खलु भदन्त! पृथिवीकायिका कतिविधाः प्रज्ञप्ताः? गौतम! द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—सूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च, बादरपृथिवीकायिकाश्च। एवं द्विपदेन भेदेन यावद्वनस्पतिकायिकाः अनन्तरोपपन्नकसूक्ष्मपृथिवीकायिकानां भदन्त! कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः? गौतम अष्ट कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा—ज्ञानावरणीयं यावदन्तरायिकम्। अनन्तरोप-

प्रकबादरपृथिवीकायिकानां भदन्त ! कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अष्ट कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-ज्ञानावरणीयं यावदान्तरायिकम् । एवं यावदनन्तरोपपन्नकसूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! कति कर्मप्रकृतीर्बध्नन्ति ? गौतम । आयुर्वर्जाः सप्तकर्म प्रकृतीर्बध्नन्ति, एवं यावदनन्तरोपपन्नकबादरवनस्पतिकायिका इति । अनन्तरोपपन्नकसूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! कति-कर्मप्रकृती वेदयन्ति ? गौतम । चतुर्दश कर्मप्रकृतीर्वेदयन्ति । तद्यथा-ज्ञानावरणीयम् तथैव-यावत् पुरुषवेदवध्यम् । एवं-यावदनन्तरोपपन्नक बादरवनस्पतिकायिका इति । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त । इति ॥सू० २॥

टीका—'कइविहा णं भंते ! अनन्तरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता' कतिविधाः कतिप्रकारकाः खलु भदन्त ! 'अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता' अनन्तरोपपन्नकाः, अनन्तरम् ये उत्पत्तेः प्रथमसमये एव वर्त्तन्ते ते अनन्तरोपपन्नकाः, एकसमयोपपन्नका इत्यर्थः एतादृशा एकेन्द्रियाः कतिविधाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः ? इति प्रश्नः । भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'पंचविहा अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता' पञ्चविधाः-पञ्चप्रकारका अनन्तरोपपन्नका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः कथिताः । 'तं जहा' तद्यथा-'पुढवीकाइया-

---

॥ शतक ३३ उद्देशक द्वितीय ॥

'कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता ?

टीकार्थ-'कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता' हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं ? जो उत्पत्ति के प्रथम समय में रहते है वे अनन्तरोपपन्नक कहे गये हैं । अर्थात् जिन्हे उत्पन्न हुए एक समय ही हुआ है वे ही अनन्तरोपपन्नक हैं । उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा पंचविहा अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता' हे गौतम ! अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीव पांच

॥બીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'कइविहाणं भंते ! अणंतरोववण्णगा एगिंदिया पण्णत्ता' ઈત્યાદિ.

ટીકાર્થ—'कइविहाणं भंते ! अणंतरोववण्णगा एगिंदिया पण्णत्ता' હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવ કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? જેમની ઉત્પત્તી પ્રથમ સમયમાં જ છે, તેઓને અનન્તરોપપન્નક કહેવામાં આવે છે. અર્થાત્ એક સમયમાં જ જે જીવો ઉત્પન્ન થાય છે,—એકી સાથે જેઓ ઉત્પન્ન થાય છે, એ જ, અનંતરોપપન્નક છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववण्णगा एगिंदिया पण्णत्ता' હે ગૌતમ ! અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવો પાંચ પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે, 'तं जहा'

जाव-वणस्सइकाइया' पृथिवीकायिका यावद्वनस्पतिकायिकाः। यावत्पदेन अप्कायिक-तेजस्कायिक-वायुकायिकानां संग्रहो भवति। 'अणंतरोववन्नगा णं भंते! पुढविक्काइया कइविहा पन्नत्ता' अनन्तरोपपन्नकाः खलु भदन्त। पृथिवीकायिका एकेन्द्रियाः कतिविधाः-कति प्रकारकाः प्रज्ञप्ता? इति प्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि। 'गोयमा' हे गौतम। 'दुविहा पन्नत्ता' द्विविधा प्रज्ञप्ताः, अनन्तरोपपन्नकः पृथिवीकायिकाः एकेन्द्रियाः। 'तं जहा' तद्यथा-'सुहुमपुढवीकाइया य-बायरपुढवीकाइया य' सूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च बादरपृथिवीकायिकाश्च 'एवं दुपएणं भेएणं जाव-वणस्सइकाइया' एवं द्विपदेन भेदेन यावत्, यावत्पदेन अप्कायिकाः, तेजस्कायिकाः, वायुकायिकाः, वनस्पतिकायिका अपि

प्रकार के कहे गये हैं। 'तं जहा' जो इस प्रकार से हैं-'पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया' पृथिवीकायिक यावत् वनस्पतिकायिक। यहां यावत् पद से 'अप्कायिक, तेजस्कायिक और वायुकायिक' इन जीवों का ग्रहण किया गया है। 'अणंतरोववन्नगा णं भंते! पुढवीक्काइया कइविहा पन्नत्ता' हे भदन्त! अणंतरोपपन्नक पृथिवीकायिक जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं? 'गोयमा! दुविहा पन्नत्ता' हे गौतम! अनन्तरोपपन्नक पृथिवीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं। 'तं जहा' जैसा-'सुहुम पुढविक्काइया य०' सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव और बादर पृथिवीकायिक जीव 'एवं दुपएणं भेएणं जाव वणस्सइ काइया' इसी प्रकार से यावत् वनस्पतिकायिक जीवों तक के दो दो भेद कहना चाहिये-अर्थात् अनन्तरोपपन्नक, अप्कायिक तेजस्कायिक, वायुकायिक

તે આ પ્રમાણે છે-'पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया' પૃથ્વીકાયિક યાવત્ અપ્કાયિક તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક, અને વનસ્પતિકાયિક 'अणंतरोववन्नगाणं भंते! पुढविकाइया कइविहा पन्नत्ता' હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક પૃથ્વીકાયિક જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा! दुविहा पणत्ता' હે ગૌતમ! અનંતરોપપન્નક પૃથ્વીકાયિક જીવો બે પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. 'तं जहा' તેઓ પ્રમાણે છે.-'सुहुम पुढवी काइया य बायरपुढवीकाइया य' સૂક્ષ્મ પૃથ્વી કાયિક જીવ અને બાદર પૃથ્વી કાયિક જીવ 'एवं दुपएण भेएणं जाव वणस्सइकाइया' એજ પ્રમાણે યાવત્ વનસ્પતિકાયિક જીવો સુધીના બે ભેદો કહેવા જોઈએ. અર્થાત્ અનંતરોપપન્નક અપ્કાયિક તેજસ્કાયિક વાયુકાયિક, અને વનસ્પતિકાયિકના સૂક્ષ્મ અને બાદર એ બેજ ભેદો હોય છે. કેમ કે જે અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિય

प्ररूपणीयाः, अनन्तरोपपन्नकेकेन्द्रियाणाम् पर्याप्तकाऽपर्याप्तकभेदयोरभावेन चतुर्विधभेदाऽसम्भवात् द्विपदेन सूक्ष्मवादरभेदेनेति कथितम्। सामान्यत एकेन्द्रियाः प्रत्येकं चतुष्प्रकारका भवन्ति, सूक्ष्माश्च-वादराश्च, सूक्ष्मा अपि द्विविधाः-पर्याप्तकाश्चाऽपर्याप्तकाश्च तथा-पर्याप्तकवादराः- अपर्याप्तकवादराश्च। परन्तु-अनन्तरोपपन्नकानां पर्याप्तत्वाऽपर्याप्तत्वभेदो नास्ति। अतोऽत्र द्विपदेन-द्विप्रकारकेण भेदेनेति कथितम्। 'अणंतरोववन्नगसुहुमपुढवीकाइया णं भंते!' अनन्तरोपपन्नक सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां भदन्त! 'कइकम्म पगडीओ पन्नत्ताओ' कति प्रकारकाः कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः कथिता? इति प्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि।

और वनस्पतिकायिक के सूक्ष्म बादर ये दो दो भेद होते हैं, क्यों कि जो अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीव होते हैं उनमें पर्याप्त और अपर्याप्त ऐसे दो भेद नहीं होते हैं। इसलिये इनके प्रत्येक के जैसे चार भेद पहिले बताये गये हैं वैसा ये चार भेद इनमें नहीं होते हैं। सामान्य एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म और बादर के भेद से दो प्रकार के कहे गये हैं, इनमें सूक्ष्म जीव भी पर्याप्त और अपर्याप्त के भेद से दो प्रकार के और बादर जीव भी पर्याप्त और अपर्याप्त के भेद से दो प्रकार के बतलाये गये हैं। परन्तु अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीवों के पर्याप्त और अपर्याप्त ऐसे दो भेद नहीं होते हैं। इसी अभिप्राय को प्रकट करने के लिये 'एवं दुपएणं भेएणं' ऐसा सूत्रपाठ सूत्रकारने कहा है। 'अणंतरोववन्नग सुहुम पुढवीकाइयाणं भंते!' हे भदन्त! अनन्तरोपपन्नक सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवों के 'कइ कम्म पगडीओ पन्नत्ताओ' कितनी कर्म प्रकृतियां कही गई हैं? उत्तर में

જીવો હોય છે. તેઓમાં પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત એ બે ભેદો હોતા નથી. તેથી પ્રત્યેકના ચાર ભેદો પહેલા બતાવ્યા છે, એ પ્રમાણેના ચાર ભેદો આમનામાં હોતા નથી. સામાન્ય એકેન્દ્રિય જીવ સૂક્ષ્મ અને બાદરના ભેદથી બે પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે. આમાં સૂક્ષ્મ જીવ પણ પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્તના ભેદથી બે પ્રકારના કહેલા છે. પરંતુ અનન્તરોપપન્નક એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત એવા બે ભેદો હોતા નથી. આજ અભિપ્રાય બતાવવા માટે 'एवं दुपएणं भेएणं' આ પ્રમાણેનો સૂત્રપાઠ સૂત્રકારે કહ્યો છે. 'अणंतरोववन्नगसुहुमपुढवीकाइयाणं भंते!' હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોને 'कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયો કહેવામાં આવી છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં ગૌતમસ્વામીને પ્રભુશ્રી કહે છે કે-

'गोयमा' हे गौतम ! 'अट्ठ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' अष्टेति-अष्टप्रकारकाः कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः कथिताः । 'तं जहा' तद्यथा-'नाणावरणिज्जं जाव-अंतराइयं' ज्ञानावरणीयं यावदान्तरायिकम्, यावत्पदेन दर्शनावरणीय-वेदनीय-मोहनीय-नाम-गोत्राणां षण्णां कर्मप्रकृतीनां ग्रहणं भवति । 'अणंतरोववन्नगबायर पुढवीकाइयाणं भंते !' अनन्तरोपपन्नक बादरपृथिवीकायिकजीवानां भदन्त ! 'कइ कम्म पगडीओ पन्नत्ताओ' कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः ? इति प्रश्नः ? । भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि । 'गोयमा' हे गौतम ! 'अट्ठ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' अष्ट कर्म प्रकृतयः प्रज्ञप्ताः 'तं जहा' तद्यथा-'नाणावरणिज्जं जाव-अंतराइयं' ज्ञानावरणीयं यावदान्तरायिकम् । यावत्पदेन दर्शनावरणीय-वेदनीय-मोहनीय-आयु-नाम-गोत्राणां-संग्रहो भवतीति । 'एवं जाव-अणंतरोववन्नगबायरवणस्सइकाइयाणंत्ति'

प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' हे गौतम ! उनके आठ कर्म प्रकृतियां कही गई हैं ? 'तं जहा' जो इस प्रकार से हैं-'नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं' ज्ञानावरणीय यावत् अन्तरायिक यहां यावत् पद से २ 'दर्शनावरणीय वेदनीय ३ मोहनीय ४ आयु ५ नाम ६ और गोत्र ७ इन छ कर्म प्रकृतियो का ग्रहण हुआ है । 'अणंतरोववन्नगबायर पुढवीकाइयाणं भंते । हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नक बादर पृथिवीकायिक जीवों के 'कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' कितनी कर्म प्रकृतियां कही गई हैं ? 'गोयमा ! हे गौतम ! 'अट्ठ कम्मपगडीओ' आठ कर्म प्रकृतियां कही गई हैं । 'तं जहा' जैसे 'नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं' ज्ञानावरणीय यावत् अन्तरायिक यहां पर भी यावत् पद से 'दर्शनावरणीय २ वेदनीय ३ मोहनीय ४ आयु ५ नाम, ६ और गोत्र ७ 'इन छह कर्म प्रकृतियों का ग्रहण हुआ है । 'एवं जाव अणं-

'गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' हे गौतम तेओने आठ कर्म प्रकृतियो कहेवामां आवेल छे. 'तं जहा' ते आ प्रमाणे छे.-

'नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं' ज्ञानावरणीय यावत् अंतराय यावत् पदथी दर्शनावरणीय, मोहनीय, वेदनीय, नाम, गोत्र, अने आयुष्य आ ७ कर्मप्रकृतियो ग्रहण कराई छे. 'अणंतरोववन्नगा बायर पुढवीकाइयाणं भंते ! हे भगवन् अनंतरोपपन्नक बादर पृथ्वीकायिक जीवोने 'कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' केटली कर्म प्रकृतियो कहेवामां आवी छे ! उत्तरमां प्रभुश्री कहे छे के-'गोयमा ! हे गौतम ! 'अट्ठकम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' आठ कर्म प्रकृतियो कहेवामां आवेल छे. 'तं जहा' ते आ प्रमाणे छे 'नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं' ज्ञानावरणीय यावत् दर्शनावरणीय, मोहनीय, वेदनीय, नाम गोत्र अने आयु

एवं यावत्-अनन्तरोपपन्नक बादरवनस्पति कायिकानामिति । अत्र यावत्पदेन अनन्तरोपपन्नकसूक्ष्मबादराऽप्कायिकानाम् अनन्तरोपपन्नकसूक्ष्मबादरतेजस्कायिकानाम् अनन्तरोपपन्नकसूक्ष्मबादरवायुकायिकानां संग्रहो भवति, 'अणंतरोववन्नग सुहुम पुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ बंधंति' अनन्तरोपपन्नक सूक्ष्म-पृथिवी कायिकैकेन्द्रियजीवाः खलु भदन्त ! कति कर्मप्रकृति र्बध्नन्ति ? भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'अउवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ बंधंति' आयुष्कवर्जाः सप्त कर्मप्रकृतीः ज्ञानावरणीय-दर्शनावरणीय-वेदनीय-मोहनीय-नाम-गोत्राऽन्तरायरूपा बध्नन्ति उत्पत्तेः प्रथमसमये आयुष्कर्मणो बन्धाभावात्

तरोववन्नगा बायरवणस्सइकाइयाणं त्ति' इसी प्रकार का कथन यावत् अनन्तरोपपन्नक बादर वनस्पतिकायिकों तक के जीवों के जानना चाहिये, यहां यावत्पद से 'अनन्तरोपपन्नक सूक्ष्म बादर अप्कायिक, अनन्तरोपपन्नक सूक्ष्मबादरतेजस्कायिक, अनन्तरोपपन्नक सूक्ष्म बादर वायुकायिक और सूक्ष्म बादरवनस्पतिकायिक इन सब का ग्रहण हुआ है । 'अणंतरोववन्नगा सुहुम पुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ बंधंति' हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नक सूक्ष्मपृथिवीकायिकों को कितनी कर्म प्रकृतियों का बन्ध होता है ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! आउवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ बंधंति' हे गौतम ! अनन्तरोपपन्नक सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय जीव आयुकर्म को छोड़कर शेष सात कर्मप्रकृतियों का बन्ध करते हैं । अर्थात् ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, नाम गोत्र और अन्तराय इन सात कर्म

આ આઠ કર્મ પ્રકૃતિયો હોય છે. 'एवं जाव अणंतरोववन्नगा वायरवणस्सइकाइयाणं त्ति' આજ પ્રમાણેનું કથન યાવત્ અનંતરોપપન્નક બાદર વનસ્પતિકાયિક સુધીના જીવોના સંબંધમાં પણ સમજવું. અહિયાં યાવત્પદથી. અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મબાદર અપ્કાયિક અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મ બાદરતેજસ્કાયિક, અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મ બાદરવાયુકાયિક, અને સૂક્ષ્મબાદરવનસ્પતિકાયિક આ બધા ગ્રહણ કરાયા છે. 'अणंतरोववन्नगसुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ बंधंति' હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકો કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! आउवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ बंधंति' હે ગૌતમ ! અનંતરોપપન્નકસૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક એકેન્દ્રિય જીવો આયુકર્મને છોડીને બાકીની સાત કર્મપ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે, અર્થાત્ જ્ઞાનાવરણીય દર્શનાવરણીય, વેદનીય, મોહનીય, નામ. ગોત્ર અને અંતરાય આ સાત કર્મપ્રકૃતિયોનો તેઓ

तत्काले तद् बन्धनं न भवति। अपितु–अवशिष्टानां सप्तानामेव प्रकृतीनां बन्धनं भवति। एवं जाव अणंतरोववन्नगबायरवणस्सइकाइयत्ति' एवम् अनन्तरोपपन्नकसूक्ष्मपृथिवीकायिकवदेव यावद्–अनन्तरोपपन्नक बादरवनस्पतिकायिका अपि आयुष्कवर्जाः सप्तैव कर्मप्रकृतीर्बध्नन्तीति। अत्र यावत्पदेन, अनन्तरोपपन्नकबादरपृथिवीकायिकाऽनन्तरोपपन्नकसूक्ष्मबादराऽप्कायिकाऽनन्तरोपपन्नकसूक्ष्मबादरतेजस्कायिकाऽनन्तरोपपन्नकसूक्ष्मबादरवायुकायिकऽनन्तरोपपन्नकसूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः संगृह्यन्ते। 'अणंतरोववन्नगसुहुमपुढवीकाइया णं भंते! 'अनन्तरोपपन्नकसूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त! 'कइ कम्मपगडीओ वेदेंति, कति

प्रकृतियों का वे बन्ध करते हैं। आयुकर्म का ये बन्ध इसलिये नहीं करते हैं कि इनके उत्पत्ति के प्रथम समय में आयुकर्म का बन्ध नहीं होता हैं इसलिये उस काल में उनके आयुका बन्ध नहीं होता है। अतः अवशिष्ट सात कर्मप्रकृतियों का ही उनको बन्ध होना कहा गया है। 'एवं जाव अणंतरोववन्नग बायरवणस्सइकाइयत्ति' अनन्तरोपपन्नक सूक्ष्मपृथिवीकायिक के जैसे ही यावत् अनन्तरोपपन्नक बादर वनस्पतिकायिक जीवों के भी आयुकर्म को छोड़कर शेष सात कर्म प्रकृतियों का ही बन्ध होता है ऐसा जानना चाहिये। यहां यावत् पद से 'अनन्तरोपपन्नक बादर पृथिवीकायिक, अनन्तरोपपन्नक सूक्ष्म एवं बादर तेजस्कायिक, अनन्तरोपपन्नक सूक्ष्म बादरवायुकायिक और अनन्तरोपपन्नक सूक्ष्म वनस्पतिकायिक' इन सब का ग्रहण हुआ है। 'अणंतरोववन्नग सुहुम पुढवीकाइया णं भंते! कइ कम्मपगडीओ वेदेंति' हे भदन्त! अनन्तरोपपन्नक सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव कितनी

બંધ કરે છે. તેઓ આયુકર્મનો બંધ એટલા માટે કરતા નથી કે–તેઓને આયુકર્મનો બંધ પહેલેથી જ થઈ જાય છે તેથી તે અવસ્થામાં તેઓને આયુકર્મનો બંધ હોતો નથી, તેથી બાકીની સાતકર્મ પ્રકૃતિયોનો જ બંધ આમને હોય છે 'एवं जाव अणंतरोववण्णगबायरवणस्सइकाइयत्ति' અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવની જેમજ યાવત્ અનંતરોપપન્નક બાદર વનસ્પતિ કાયિક જીવોને પણ આયુકર્મને છોડીને બાકીની સાતકર્મ પ્રકૃતિયોનો જ બંધ હોય છે, તેમ સમજવું. અહિયાં યાવત્પદથી "અનંતરોપપન્નક બાદર પૃથ્વીકાયિક અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મ અને બાદર પૃથ્વીકાયિક, અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મ બાદર વાયુકાયિક અને અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક આ બધા ગ્રહણ કરાયા છે. 'अणंतरोववन्नग सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते! कइ कम्मपगडीओ वेदेंति' હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ

कर्मप्रकृती वेदयन्ति ? इति प्रकृतीनां वेदनविषयकः प्रश्नः । भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि 'गोयमा' हे गौतम ! चउदस कम्मपगडीओ वेदेंति' चतुर्दश प्रकारिकाः कर्मप्रकृती वेदयन्ति । 'तं जहा' तद्यथा-'नाणावरणिज्जं' ज्ञानावरणीयम्, 'तहेव जाव' पुरिसवेयवज्झ" तथैव यावत्पुरुषवेदवध्यम् । ज्ञानावरणीयादारभ्याऽन्तराय-पर्यन्तमष्ट ८, तथा श्रोत्रेन्द्रियवध्यं-चक्षुरिन्द्रियवध्यं-घ्राणेन्द्रियवध्यं-जिह्वेन्द्रिय वध्यं-स्त्रीवेदवध्यं-पुरुषवेदवध्यम् । (६) १४ एतेषा मनन्तरोपपन्नकसूक्ष्मपृथिवी कायिकानां चतुर्दश कर्मप्रकृतीनां वेदनं भवति । येन कर्मणा स्पर्शनेन्द्रियस्य लाभो न भवति तादृशं स्पर्शेन्द्रियवध्यं कर्म-एकेन्द्रियाणां न भवति । तथात्वे च-एकेन्द्रियत्वस्यैव व्याघातप्रसङ्गात् । तथा-नपुंसकवध्यकर्माऽपि नास्ति नपुंसकवेद-मात्रस्यैव-एकेन्द्रिये सत्त्वात् । 'एवं जाव अणंतरोववन्नग बायर-वणस्सइकाइयत्ति'

कर्म प्रकृतियोंका वेदन करते हैं ? 'गोयमा ! चउद्दस कम्मपगडीओ वेदेंति' हे गौतम ! अनन्तरोपपन्नक सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव चौदह कर्म प्रकृतियों का वेदन करते हैं । 'तं जहा' वे चौदह कर्मप्रकृतियों ये हैं-'नाणावरणिज्जं' ज्ञानावरणीय १, 'तहेव जाव पुरिसवेयवज्झ' तथैव यावत् पुरुष वेद वध्य यहां यावत् शब्द से यह समझाया गया है कि ज्ञानावरणीय कर्म से लेकर अन्तराय पर्यन्त आठ प्रकृतियां तथा श्रोत्रेन्द्रिय वध्य९ चक्षुरिन्द्रिय वध्य १० घ्राणेन्द्रिय वध्य११ जिह्वे-न्द्रिय वध्य १२, स्त्रीवेद वध्य १३, और पुरुषवेद वध्य १४, एकेन्द्रिय जीव के स्पर्शनेन्द्रिय वध्य कर्म नहीं होता हैं, यदि इस वध्य कर्मका उनके उदय माना जावे तो उनमें एकेन्द्रियत्व का सद्भाव नहीं बन सकता तथा नपुंसकवेद वध्य कर्म भी इनके नहीं होता है । 'एवं जाव अणंत-

---

કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયાનું વેદન કરે છે. ? 'गोयमा ! चउद्दस कम्मपगडीओ वेदेंति' હે ગૌતમ ! અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ ચૌદ કર્મપ્રકૃતિયાનું વેદન કરે છે. 'तं जहा' તે ચૌદકર્મ પ્રકૃતિયા આ પ્રમાણે છે—'नाणावरणिज्जं' જ્ઞાનાવરણીય 'तहेव जाव पुरिसवेयवज्झ' તથૈવ યાવત્ પુરૂષ વેદને છોડીને અહિયાં યાવત્પદથી એ સમજાવ્યું છે કે-જ્ઞાનાવરણીય કર્મથી લઈને અંત-રાય સુધીની આઠ કર્મ પ્રકૃતિયા તથા શ્રોત્રેન્દ્રિયાવરણ ચક્ષુ ઇંદ્રિયાવરણ ૧૦ ઘ્રાણે-ન્દ્રિયાવરણુય ૧૧ જીહ્વેન્દ્રિયાવરણ ૧૨ સ્રીવેદાવરણ ૧૩ અને પુરૂષ વેદા વરણ ૧૪ એકેન્દ્રિય જીવને સ્પર્શનેન્દ્રિયાવરણ કર્મ હોતું નથી કેમ કે-જો આ આવરણ તેઓમાં માનવામાં આવે તો તેઓમાં એકેન્દ્રિય પણાના સદ્ભાવ જ બની શકે નહીં તથા નપુંસક વેદાવરણ પણ તેઓમાં હોતું નથી. કેમ કે-એકેન્દ્રિયોમાં નપુંસકવેદ માત્રનો જ સદ્ભાવ રહે છે.

एवं-यावद्-अनन्तरोपपन्नक वनस्पतिकायिका अपीति। अत्र यावत्पदेन अनन्तरोपपन्नकबादरपृथिवीकायिकाऽनन्तरोपपन्नकसूक्ष्माप्कायिकैकेन्द्रियादारभ्याऽनन्तरोपपन्नकसूक्ष्मवनस्पतिकायिकैकेन्द्रियान्तजीवानां ग्रहणं भवति। एते सर्वेऽपि एकेन्द्रिया ज्ञानावरणीयादि पूर्व प्रदर्शित चतुर्दशकर्मप्रकृतीनां वेदका भवन्तीति भावः।

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति हे भदन्त

रोववन्नगा बायरवणस्सइकाइयत्ति' इसी प्रकार से यावत् अनन्तरोपपन्नक बादर वनस्पतिकायिक जीव भी इन्हीं १४ कर्म प्रकृतियों का वेदन करते हैं ऐसा जानना चाहिये, यहां यावत् पद से अनन्तरोपपन्नक बादर पृथिवीकायिक 'अनन्तरोपपन्नक सूक्ष्म अप्कायिकैकेन्द्रिय से लेकर अनन्तरोपपन्नक सूक्ष्मवनस्पतिकायिकैकेन्द्रिय पर्यन्त के जीवों का ग्रहण हुआ है ये सब भी एकेन्द्रिय जीव ज्ञानावरणीयादि पूर्व प्रदर्शित चौदह कर्मप्रकृतियों के वेदक होते हैं। 'सेवं भंते! सेवं भंते!' हे भदन्त! अनन्तरोपपन्नक विशेषण विशिष्ट ऐसे सूक्ष्म बादर भेदवाले पृथिवीकायिक से लेकर वनस्पतिकायिक एकेन्द्रिय जीवों के कर्मप्रकृतियों के सत्व, बन्ध एवं वेदन के विषय में जो आप देवानुप्रियने कहा है वह

'एवं जाव अणंतरोववन्नग वायरवणस्सइकाइयत्ति' એજ પ્રમાણે યાવત્ અનંતરોપપન્નક બાદર વનસ્પતિકાયિક જીવ પણ આજ ચૌદકર્મ પ્રકૃતિયોનું વેદન કરે છે. તેમ સમજી લેવું જોઇએ. અહિયાં યાવત્પદથી અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક એકેન્દ્રિયથી લઈને અનંતરોપપન્નક બાદરવાયુકાયિક એકેન્દ્રિયસુધીના જીવો ગ્રહણ કરાયા છે. એ બધા એકઇંદ્રિયવાળા જીવો જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે પહેલા કહેલ ૧૪ ચૌદકર્મ પ્રકૃતિયોના વેદક હોય છે. તેમ સમજવું.

'સેવં ભંતે! સેવં ભંતે! ત્તિ' હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક વિશેષણવાળા એવા સૂક્ષ્મ અને બાદર ભેદવાળા પૃથ્વીકાયિકો થી લઈને વનસ્પતિકાયિક એક ઇન્દ્રિય જીવોના કર્મ પ્રકૃતિના સત્વ, બંધન અને વેદનના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્

अनन्तरोपपन्नकसूक्ष्मबादरभेदभिन्नानां पृथिव्यादि वनस्पतिकायिकान्तानामेकेन्द्रियजीवानां कर्मप्रकृतिसत्त्वबन्धनवेदनविषये यद् देवानुप्रियेण कथितम्, तत्सर्वम् एवमेवेति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन् विहरतीति ॥३३-२॥

इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यानैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक-श्रीशाहूछत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित — कोल्हापुरराजगुरु-
बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य - जैनधर्मदिवाकर
पूज्य श्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री
"भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायाम् त्रयस्त्रिंशत्तमशतकस्य
द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥३३-२॥

सब सर्वथा सत्य ही है २। ऐसा कहकर गौतमस्वामीने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर वे संयम और तप से आत्माको भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके तेतीसवें शतक का
दूसरा उद्देशक समाप्त ॥३३-२॥

આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રી ને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્ર ની-
પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના તેત્રીસમા શતકનો બીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૩-૨॥



मूलम्—कइविहा णं भंते! परंपरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता? गोयमा! पंचविहा परंपरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता तं जहा—पुढवीकाइया एवं चउक्कओ भेओ जहा ओहि उद्देसए। परंपरोववन्नग अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइया णं भंते! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहि उद्देसए तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव चउद्दस वेदेंति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥३३-३॥

अणंतरोवगाढा जहा अणंतरोववन्नगा ॥३४-४॥

परंपरोवगाढा जहा परंपरोववन्नगा ॥३३-५॥

परंपराहारगा जहा अणंतरोववन्नगा ॥३३-६॥

परंपराहारगा जहा परंपरोववन्नगा ॥३३-७॥

अणंतरपज्जत्तगा जहा—अणंतरोववन्नगा ॥३३-८॥

परंपरपज्जत्तगा जहा परंपरोववन्नगा ॥३३-९॥

चरिमा वि जहा—परंपरोववन्नगा तहेव ॥३३-१०॥

एवं अचरिमा वि ॥३३-११॥

एवं एए एगारस उद्देसगा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ ॥३३-११॥

पढमं एगिंदियसयं समत्तं ॥

छाया—कतिविधाः खलु भदन्त! परम्परोपपन्नका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः? गौतम! पञ्चविधाः परम्परोपपन्नका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा—पृथिवीकायिकाः, एवं चतुष्को भेदो यथा—औधिकोद्देशकः। परम्परोपपन्नकाऽपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां भदन्त! कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः। एवमेतेनाऽभिलापेन यथा—औधिकोद्देशके तथैव—निरवशेषं भणितव्यम्, यावच्चतुर्दश वेदयन्ति। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥३३।३

अनन्तरावगाढाः यथा परम्परोपपन्नकाः ॥३३।४। परम्परावगाढाः यथा—परम्परोपपन्नकाः ॥३३,५॥ अनन्तराहारका यथा—अनन्तरोपपन्नकाः ॥३३।६॥

परम्पराहारका यथा परम्परोपपन्नकाः ॥३३।७ अनन्तरपर्याप्तकाः यथा अनन्त रोपपन्नकाः ॥३३।८॥ परम्परपर्याप्तकाः यथा-परम्परोपपन्नकाः ॥३३।९ चरमा अपि यथा-परम्परोपपन्नकाः तथैव ।।३३।१०। एवम्-अचरमा अ ॥३३।११। एवमेते-एकादशोद्देशकाः । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इ यावद् विहरति ॥३३।११॥

त्रयस्त्रिंशत् शतकस्य प्रथममेकेन्द्रियशतकं समाप्तम् ॥

टीका-'कइविहा णं भंते !' कतिविधाः-कियन्तः खलु भदन्त ! 'परंपरो ववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता' परम्परोपपन्नका एकेन्द्रिया जीवाः प्रज्ञप्ता कथिता इति प्रश्नः । भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि । 'गोयमा' हे गौतम ! 'पंच विहा परंपरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता' पञ्चविधाः-पञ्चप्रकारकाः परंपरोपप न्नकाः एकेन्द्रियजीवाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः के ते पञ्च तत्राह-'तं जहा' इत्यादि 'तं जहा' तद्यथा-'पुढवीकाइया एवं चउक्कओ भेओ जहा ओहिउद्देसए' पृथिवी कायिका एवं चतुष्को भेदः यथा-औधिके सामान्ये एतस्यैव शतकस्य प्रथमोद्देशके

--शतक ३३ उद्देशक तृतीय

टीकार्थ-'कइविहा णं भंते ! परंपरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता 'हे भदन्त परम्परोपपन्नक एकेन्द्रियजीव कितने कहे गये हैं ? 'गोयमा ! पंचविहा प परोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता' हे गौतम ! परम्परोपपन्नक एकेन्द्रिय जी पांच प्रकार के कहे गये हैं । 'तं जहा' वे इस प्रकार से हैं-'पुढवी काइय एवं चउक्कओ भेओ जहा ओहिउद्देसए' पृथिवीकायिक, अप्कायिक तेजस्कायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक इन सब के चार-चा भेद होते हैं । जैसा कि औधिक उद्देशक में कहा गया है । अर्था पृथिवीकायिक सूक्ष्म और बादर के भेद से मूल में दो प्रकार के कहे है

॥त्रीजा उद्देशानो प्रारंभ—

'कइविहा णं भंते ! परंपरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ પરંપરોપપન્નક એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો કેટલા કહેવામાં આવ્યા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! पंचविहा परंपरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता' હે ગૌતમ ! પરંપરોપપન્નક એક ઇંદ્રિય-વાળા જીવો પાંચપ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. 'तं जहा' તે આ પ્રમાણે છે.-'पुढवीकाइया एवं चउक्कओ भेओ जहा ओहि उद्देसए' પૃથ્વીકાયિક, અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક અને વનસ્પતિકાયિક આ બધાના ચાર ચાર ભેદો હોય છે. તે જે પ્રમાણે ઔધિક ઉદ્દેશામાં કહ્યા છે, તે પ્રમાણે સમજવા. એટલે કે-પૃથ્વીકાયિક સૂક્ષ્મ અને બાદરના ભેદથી બે પ્રકારના છે. સૂક્ષ્મમાં

पृथिवीकायिका यावद् वनस्पतिकायिकाः। पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतिकायिक-भेदाद् एकेन्द्रिया पञ्च प्रकारका भवन्ति। चतुष्को भेद इति पृथिवीकायादारभ्य वनस्पतिकायपर्यन्तानां पञ्चानां चत्वारो भेदा यथा-सूक्ष्मा, बादराः, अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाश्चेति, चतुर्भेदभिन्ना पञ्चविधा अप्येकेन्द्रिया औधिकोद्देशवत् पठनीयाः 'परंपरोववन्नग अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइयाणं भंते!' परम्परोपपन्नकाऽपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवानां भदन्त! 'कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ता इति प्रश्नः। भगवानाह-'एवं एएणं' इत्यादि। 'एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहिए उद्देसए तहेव निरवसेसं भाणियव्वं' एवमेतेन उपरि प्रदर्शिताभिलापेन, यथा-औधिके, एतत् शतकीय प्रथमोद्देशके कथितम्, तथैव निरवशेषं सर्वमपि भणितव्यम्।

कियत्पर्यन्तमौधिकोद्देशक इह पठनीयस्तत्राह-'जाव चउद्दसवेदेंति' यावत्-

सूक्ष्म के भी पर्याप्त और अपर्याप्त ऐसे दो भेद हैं तथा बादर के भी पर्याप्त और अपर्याप्त दो भेद है। इस प्रकार से पांचो प्रकार के एकेन्द्रिय जीव चार-चार भेद वाले होते हैं।

'परंपरोववन्नग अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइयाणं भंते! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' हे भदन्त! परम्परोपपन्नक अपर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवीकायिक के कितनी कर्म प्रकृतियां कही गई हैं? 'एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहिए उद्देसए तहेव निरवसेसं भाणियव्वं' हे गौतम! इस अभिलाप द्वारा जैसा औधिक उद्देशक में-इसी शतक के प्रथम उद्देशक में कहा गया है वैसा ही कथन यहां पर करना चाहिये और वह कथन 'जाव चउद्दस वेदेंति' यावत् वे १४ कर्म प्रकृतियों का वेदन करते हैं

પણ પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત એવા ભેદો હોય છે. તથા બાદરમાં પણ પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત એવા બે ભેદો થાય છે. આ રીતે પાંચે પ્રકારના એક ઇન્દ્રિય વાળા જીવો ચાર-ચાર પ્રકારના ભેદવાળા હોય છે.

'परंपरोववन्नग अप्पज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' હે ભગવન્ પરંપરોપપન્નક અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકોને કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયો કહી છે? 'एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहिए उद्देसए तहेव निरवसेसं भाणियव्वं' હે ગૌતમ! આ અભિલાપ દ્વારા ઔધિક ઉદ્દેશામાં-એટલે કે આ શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં કહેલ છે, એજ પ્રમાણેનું સઘળું કથન અહિયાં કહી લેવું. અને તે કથન યાવત્ 'जाव चउद्दस वेदेंति' તેઓ ચૌદકર્મ પ્રકૃતિયોનું વેદન કરે છે. આ કથન સુધી કહેવું જોઈએ.

चतुर्दश कर्मप्रकृती वेदयन्ति, एतत्पर्यन्त मौघिकोद्देशकइह पठनीयः। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति, हे भदन्त! परम्परोपपन्नकै केन्द्रियविषये यद्देवानुप्रियेण कथितं तत्सर्वं सर्वथैव सत्यमिति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा च संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति ॥

त्रयस्त्रिंशत्तमे शते प्रथमे-एकेन्द्रियशते एकादशोद्देशकयुते
तृतीयोद्देशकः समाप्तः ३३।३।

'अणंतरोवगाढा जहा-अणंतरोववन्नगा' अनन्तरावगाढा एकेन्द्रियजीवाः

यहां तक कहना चाहिये। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! जैसा आप देवानुप्रियने परम्परोपपन्नक एकेन्द्रिय के विषय में यहां कहा है वह सब सर्वथा सत्य है। इस प्रकार कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू०१॥

तेतीसवें शतकका तृतीय उद्देशक समाप्त ॥३३-३॥

'अणंतरोवगाढा जहा अणंतरोववन्नगा' इत्यादि।

टीकार्थ-अनन्तरावगाढ एकेन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में कथन जैसा अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में किया गया है वैसा ही है। प्रथम समय में अवगाढ हुए जीव ही अनन्तरावगाढ कहे गये हैं। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! जैसा यह कथन आप देवानुप्रियने

'સેવં ભંતે! સેવં ભંતે! ત્તિ' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે પરંપરોપપન્નક એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવના સંબંધમાં જે કથન કહેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાનપર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥ત્રીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૩-૩॥

ચોથા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'અણંતરોવગાઢા જહા અણંતરોવવન્નગા' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—અનંતરાવગાઢ એક ઇન્દ્રિય જીવોના બંધનું કથન અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં કહેવામાં આવેલ કથન પ્રમાણે જ છે. પહેલા સમયમાં અવગાઢ થયેલા જીવ જ અનંતરાવગાઢ કહેવાય છે.

यथा–अनन्तरोपपन्नकाः कथितास्तथैव–ज्ञेया अनन्तरावगाढा एकेन्द्रियाः। प्रथम-समयावगाढा अनन्तरावगाढाः कथ्यते। तदेवं भदन्त। तदेवं भदन्त। इति।३३–४।

'परंपरोवगाढा जहा–परंपरोववन्नगा' परम्परावगाढाः यथा–परम्परोपपन्नकाः। परम्परोपपन्नकवदेव–परम्परावगाढैकेन्द्रियाणामपि वक्तव्यता ज्ञातव्या। अत्र सर्वापि वक्तव्यता परम्परोपपन्नकैकेन्द्रियप्रकरणवदेव ज्ञातव्येति संक्षेपः॥ इति पञ्चमोद्देशकः ॥३३ ५।

'अणंतराहारगा जहा–अणंतरोववन्नगा' अनन्तराहारकाः एकेन्द्रियजीवाः अनन्तरोपपन्नकैकेन्द्रियवदेव ज्ञातव्याः ॥३३।६। इतिषष्ठोद्देशकः ॥

किया है वह सब सर्वथा सत्य ही है ऐसा कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

तेतीसवें शतक का चतुर्थ उद्देशक समाप्त ॥३३–४॥

'परंपरोवगाढा जहा परंपरोववन्नगा' परंपरावगाढ एकेन्द्रियों की वक्तव्यता परम्परोपपन्नक एकेन्द्रियों के जैसी ही है।

॥ ३३ वें शतक का पंचम उद्देशक समाप्त ॥

तथा 'अणंतराहारगा जहा अणंतरोववन्नगा' अनन्तरोपपन्नक एके·

'सेवं भंते ! सेवं भंते त्ति' હે ભગવન આપદેવાનુપ્રિયે આ અનંતરાવગાઢ જીવના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાનપર બિરાજ માન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥ચોથો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૩–૪॥

પાંચમા ઉદ્દેશાનો આરંભ—

'परंपरोगाढा जहा परंपरोववन्नगा' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—પરંપરાવગાઢ એકેન્દ્રિય જીવોનું કથન પરંપરોપપન્નક એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના કથનપ્રમાણે સમજવું.

॥પાંચમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૩–૫॥

છટ્ઠા ઉદ્દેશાનો આરંભ—

'अणंतराहारगा जहा अणंतरोववन्नगा' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—અનંતરોપપન્નક એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવના કથન પ્રમાણે અનંતરા·

'परंपराहारगा जहा-परंपरोववन्नगा' परम्पराहारका यथा-परम्परोपपन्नका एकेन्द्रिया स्तथैव ज्ञातव्याः। परम्परोपपन्नकैकेन्द्रियप्रकरणवदेव, ज्ञातव्यमिति भावः। ३३।७॥ इतिसप्तमोद्देशकः॥

'अणंतरपज्जत्तगा जहा-अणंतरोववन्नगा' अनन्तरपर्याप्तकैकेन्द्रियजीवा अनन्तरोपपन्नकैकेन्द्रियवदेव पृथिव्यादि यावद् वनस्पतिपर्यन्तपञ्चभेदभिन्ना तथा-सूक्ष्मबादरभेदभिन्ना ज्ञातव्याः॥३३'८ अष्टमोद्देशकः समाप्तः॥

'परंपरपज्जत्तगा जहा-परंपरोववन्नगा' परम्पर पर्याप्तका एकेन्द्रिया परम्परोपपन्नकैकेन्द्रियवदेव पृथिव्यादि वनस्पत्यन्त पञ्चभेदभिन्नाः, तथा सूक्ष्मबादर-

न्द्रियों के जैसी वक्तव्यता अनन्तराहारक एकेन्द्रिय जीवों का है ऐसा जानना चाहिये॥ ३३ वें शतक का षष्ठ उद्देशक समाप्त॥

'परंपराहारगा जहा परंपरोववन्नगा' परम्परोपपन्नक एकेन्द्रियों के जैसी वक्तव्यता परम्पराहारक एकेन्द्रिय जीवो की है।

३३ वें शतक का सप्तम उद्देशक समाप्त॥

'अणंतरपज्जत्तगा जहा अणंतरोववण्णगा' अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रियों के जैसी वक्तव्यता अन्तरपर्याप्तक एकेन्द्रिय जीवों की है।

॥ ३३ वें शतक का अष्टम उद्देशक समाप्त॥

'परंपरपज्जत्तगा जहा परंपरोववन्नगा' परंपरपर्याप्तक पृथिवी

હારક એક ઈન્દ્રિયવાળા જીવોનું કથન સમજવું. ॥સૂ૦૧॥

॥છઠો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૩-૬॥

સાતમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'પરંપરાહારગા જહા પરંપરોવવન્નગા' ઈત્યાદિ.

ટીકાર્થ—પરંપરોપપન્નક એક ઈન્દ્રિયવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે પરંપરાહારક એક ઈન્દ્રિયવાળા જીવોનું કથન સમજવું. ॥સૂ૦૧॥

॥સાતમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ૩૩-૭॥

આઠમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'અતંણરપજ્જત્તગા જહા અણંતરોવવન્નગા' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—અનંતરોપપન્નક એક ઈન્દ્રિયવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે અનંતરપર્યાપ્તક એકઈન્દ્રિય જીવોનું કથન સમજવું. ॥સૂ૦૧॥

॥આઠમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૩-૮॥

નવમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'પરંપરપજ્જત્તગા જહા પરંપરોવવન્નગા' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—પરંપરપર્યાપ્તક પૃથ્વીકાયિક એકઈન્દ્રિયવાળા જીવના કથનથી

भेदभिन्ना चतुर्दश कर्मप्रकृतिवेदनान्तं सर्वं परम्परोपपन्नकप्रकरणवदेव ज्ञातव्यम् इति। ३३।९। नवमोद्देशकः समाप्तः ॥

'चरिमा वि जहा–परंपरोववन्नगा' चरमा अपि एकेन्द्रियजीवाः परम्परोपपन्नकवदेव प्रथमं पृथिव्यादिवनस्पत्यन्तपञ्चभेदाः, ततः प्रत्येकं पृथिव्यादयः सूक्ष्म बादरभेदभिन्नाः सर्वे परम्परोपपन्नकप्रकरणवदेव ज्ञातव्या इति ॥३३।१०॥

दशमोद्देशकः समाप्तः ॥

कायिक एकेन्द्रिय जीव से लेकर परम्परपर्याप्तक वनस्पतिकायिक एकेन्द्रिय तक पांच भेदवाले ये परम्परपर्याप्तक एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म बादर के भेदसे प्रत्येक दो २ प्रकारके होते हैं और ये सब कथन परम्परोपपन्नक एकेन्द्रिय प्रकरण के जैसा ही जानना चाहिये।

३३ वें शतक का नवम उद्देशक समाप्त ॥

'चरिमा वि जहा परंपरोववन्नगा' चरम एकेन्द्रिय जीव भी परम्परोपपन्नकों के जैसे पृथिवीकायिक आदि के भेद से वनस्पतिकायिक तक पाँच भेद वाले हैं। और प्रत्येक पृथिवीकायिक आदि जीव सूक्ष्म बादर के भेदसे युक्त हैं। तथा ये सब १४ कर्म प्रकृतियों का वेदन करते हैं इस प्रकार का सब कथन परम्परोपपन्नक एकेन्द्रिय के प्रकरण के जैसा ही समझना चाहिये। ॥ ३३ वें शतक का दशवां उद्देशक समाप्त ॥

લઈને પરંપરપર્યાપ્તક વનસ્પતિકાયિક એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવના કથન સુધી પાંચ ભેદોવાળા આ પરંપરપર્યાપ્તક એક ઈન્દ્રિયવાળા જીવો સૂક્ષ્મ અને બાદરના ભેદથી દરેકના બબ્બે પ્રકાર હોય છે. અને આ બધાં ૧૪ ચૌદકર્મ પ્રકૃતિયોનું વેદન કરે છે. એ પ્રમાણેના આ કથન સુધીની સઘળું કથન પરંપરોપપન્નક એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવના પ્રકરણના કથન પ્રમાણે જ સમજવું. ॥સૂ૦૧॥

॥નવમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૩-૯॥

॥દસમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'चरिमा वि जहा परंपरोववन्नगा' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—ચરમ એકઈન્દ્રિયવાળા જીવો પણ પરંપરોપપન્નક જીવોના કથન પ્રમાણે પૃથ્વીકાયિક વિગેરેના ભેદથી વનસ્પતિકાયિક જીવના કથન સુધી પાંચ ભેદ યુક્ત કહ્યા છે. અને દરેક પૃથ્વીકાયિક જીવો સૂક્ષ્મ બાદર ભેદવાળા કહ્યા છે. તથા આ બધા ૧૪ ચૌદકર્મ પ્રકૃતિયોનું વેદન કરે છે. આ પ્રમાણેનું સઘળું કથન પરંપરોપપન્નક એક ઈન્દ્રિય જીવના પ્રકરણમાં કહ્યા પ્રમાણે જ સમજવું. ॥સૂ૦૧॥

॥દસમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૩-૧૦॥

'एवं अचरिमापि' एवं परम्परोपपन्नक पृथिव्याद्येकेन्द्रियवदेव अचरमपृथिव्याद्येकेन्द्रियजीवा अपि ज्ञातव्या इति ॥३३।११॥

'एवं एए एक्कारस उद्देसगा' एवमुपर्युक्त प्रदर्शितक्रमेण–एकेन्द्रियजीवानामेकादश सामान्य एकेन्द्रियजीवानां प्रथम औधिकोद्देशकः १, अनन्तरोपपन्नकानामेकेन्द्रियाणां द्वितीयोद्देशकः २॥ परम्परोपपन्नकानां तृतीयोद्देशकः ३॥, अनन्तरावगाढानां चतुर्थः ४, परम्परावगाढानां पञ्चमोद्देशकः ५, अनन्तराहारकाणामे

शतक ३३ उद्देशक ११--

'एवं अचरिमा वि' परम्परोपपन्नक पृथिव्यादि एकेन्द्रिय जीवों के जैसा ही अचरम पृथिवी आदि एकेन्द्रिय जीवों का कथन जानना चाहिये। ॥ ३३ वें शतक का ११ वां उद्देशक समाप्त ॥

'एवं एए एक्कारस उद्देसगा' इस प्रकार उपर्युक्त प्रदर्शित क्रम के अनुसार एकेन्द्रिय जीवों के ११ उद्देशक हैं–इनमें प्रथम उद्देशक सामान्य रूप से एकेन्द्रिय जीवों का हैं। अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीवों का द्वितीय उद्देशक है। परम्परोपपन्नक एकेन्द्रिय जीवों का तृतीय उद्देशक है। अनन्तरावगाढ एकेन्द्रिय जीवों का चतुर्थ उद्देशक है। परम्परावगाढ

॥અગિયારમા ઉદ્દેશાનો આરંભ—

'एवं अचरिमा वि' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—પરંપરોપપન્નક પૃથ્વીકાયિક એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના કથન પ્રમાણે જ અચરમ પૃથ્વીકાયિક વિગેરે એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોનું કથન સમજવું. ॥સૂ૦૧॥

॥અગિયારમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૩ ૧૧

બારમા ઉદ્દેશાનો આરંભ—

'एवं एए एक्कारस उद्देसगा' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—આ રીતે ઉપર બતાવેલ ક્રમ પ્રમાણે એક ઇન્દ્રિયાળા જીવોના સંબંધમાં અગિયાર ૧૧ ઉદ્દેશાઓ કહ્યા છે. તેમાં પહેલો ઉદ્દેશો સામાન્ય પણાથી એક ઇન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં કહેલ છે. ૧ અનંતરોપપન્નક એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં બીજો ઉદ્દેશો કહ્યો છે. ૨ પરંપરોપપન્નક એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં ત્રીજો ઉદ્દેશો કહેલ છે. ૩ અનંતરાવગાઢ એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં ચોથો ઉદ્દેશો કહેલ છે. ૪ પરંપરાવગાઢ એકેન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં પાંચમો ઉદ્દેશો કહેલ છે. ૫

केन्द्रियाणां षष्ठोद्देशकः ६। परम्पराहारकाणां सप्तमोद्देशकः ७। अनन्तरपर्याप्तकाना मष्टमोद्देशकः। परम्परपर्याप्तकानामेकेन्द्रियाणां नवमोद्देशकः ९। चरमैकेन्द्रियाणां दशमोद्देशकः १० अचरमैकेन्द्रियाणामेकादशोद्देशकः ॥११॥ तदेवमेते सङ्कलनया-एकादशोद्देशका भवन्तीति ॥

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति यावद् विहरति। हे भदन्त! अनन्तरावगाढैकेन्द्रियादारभ्याऽचरमैकेन्द्रियपर्यन्तजीवानां विषये यद् देवानुप्रियेण कथितम्, तत्सर्वं सर्वथैव सत्यम्, इति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति। इति त्रयस्त्रिंशत्तमे शतके प्रथममेकेन्द्रियशतं समाप्तम्।

इति श्री-विश्वविख्यातजगद्वल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि - 'जैनाचार्य' पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां "श्री भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां त्रयस्त्रिंशत्तमे शतके एकादशोद्देशकः समाप्तः ॥३३-११॥

एकेन्द्रिय जीवों का पांचवा उद्देशक है, अनन्तराहारक एकेन्द्रिय जीवों का छठा उद्देशक है। परम्पराहारक एकेन्द्रिय जीवों का सातवा उद्देशक है। अनन्तर पर्याप्तक एकेन्द्रिय जीवों का आठवां उद्देशक है। परम्पर पर्याप्तक एकेन्द्रिय जीवों का नौवां उद्देशक है। चरम एकेन्द्रिय जीवों का १० वां उद्देशक है। तथा-अचरम एकेन्द्रिय जीवों का ११ वां उद्देशक है। इस प्रकार से ये ११ उद्देशक एकेन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में इस प्रथम एकेन्द्रिय शतक में है। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! अनन्तरावगाढ एकेन्द्रिय से लेकर अचरम एकेन्द्रिय पर्यन्त

અનંતરાહારક એક ઇન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં છઠ્ઠો ઉદ્દેશો કહેલ છે. ૬ પરંપરાહારક એક ઇન્દ્રિય જીવના સંબંધમાં સાતમો ઉદ્દેશો કહેલ છે. ૭ અનંતર પર્યાપ્ત એક ઇન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં આઠમો ઉદ્દેશો કહેલ છે. ૮ પરંપરપર્યાપ્તક એક ઇન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં નવમો ઉદ્દેશો કહેલ છે. ૯ ચરમ એક ઇન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં ૧૦ દસમો ઉદ્દેશો કહેલ છે. ૧૦ તથા અચરમ એક ઇન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં અગિયારમો ઉદ્દેશો કહેલ છે. ૧૧ આ રીતે આ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં આ પહેલા એકેન્દ્રિય શતકમાં કહેલ છે.

'સેવં ભંતે! સેવં ભંતે! ત્તિ' હે ભગવન્ અનંતરાવગાઢ એકઇન્દ્રિયવાળા જીવોથી લઈને અચરમ એકેન્દ્રિય સુધીના જીવોના સંબંધમાં આપ દેવાનુ-

के जीवों के विषय में जो आप देवानुप्रियने कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना और नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके तेतीसवें शतक का अग्यारहवां उद्देशक समाप्त ॥३३—११॥

॥ प्रथम एकेन्द्रिय शतक समाप्त ॥

प्रिये જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આ વિષયમાં આપ દેવાનુપ્રિયે કહેલ સઘળું સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમ-સ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા. વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત "ભગવતીસૂત્ર"ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના તેત્રીસમા શતકનો અગિયારમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૩-૧૧॥

॥પહેલું એકઈન્દ્રિય શતક સમાપ્ત ॥



अथ द्वितीयमेकेन्द्रियशतम्

अथ-त्रयस्त्रिंशत्तमे शते प्रथमशतं व्याख्याय क्रमप्राप्तं द्वितीय शतमारभते, तस्येदं सूत्रम् 'कइविहा णं भंते' इत्यादि ।

मूलम्-कइविहा णं भंते! कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता? गोयमा! पंचविहा कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता। तं जहा-पुढवीकाइया जाव-वणस्सइकाइया। कण्हलेस्सा णं भंते! पुढवीकाइया कइविहा पन्नत्ता? गोयमा! दुविहा पन्नत्ता। तं जहा-सुहुमपुढवीकाइया य बायरपुढवीकाइया य। कण्हलेस्सा णं भंते! सुहुमपुढवीकाइया कइविहा पन्नत्ता? गोयमा! एवं एएणं अभिलावेणं चउक्क भेओ जहेव ओहि उद्देसए जाव वणस्सइकाइय त्ति ।

कण्हलेस्सा अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइया णं भंते! कइकम्मपगडीओ पन्नत्ताओ? एवं चेव एएणं अभिलावेणं जहेव-ओहि उद्देसए तहेव पन्नत्ताओ तहेव वेदेंति सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति

कइविहा णं भंते! अणंतरोववन्नग कण्हलेस्स एगिंदिया पन्नत्ता? गोयमा! पंचविहा अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया। एवं एएणं अभिलावेणं तहेव दुपयो भेओ जाव वणस्सइकाइय त्ति। अणंतरोववन्नग कण्हलेस्स सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते! कइकम्मपगडीओ पन्नत्ताओ? एवं एएणं अभिलावेणं जहा-ओहिओ अणंतरोववन्नगाणं उद्देसओ तहेव जाव वेदेंति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।

कइविहा णं भंते! परंपरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता? गोयमा! पंचविहा परंपरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता। तं जहा-पुढवीकाइया० एवं एएणं अभिलावेणं तहेव चउक्कओ भेओ जाव वणस्सइकाइयत्ति।

परंपरोववण्णग कण्हलेस्स अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ परंपरोववन्नग उद्देसओ तहेव जाव वेदेंति। एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहि एगिंदियसए एक्कारस उद्देसगा भणिया तहेव कण्हलेस्ससए वि भाणियव्वा जाव अचरिमकण्हलेस्सा एगिंदिया ॥सू० १॥

बिइयं एगिंदियसयं समत्तं

छाया--कतिविधाः खलु भदन्त! कृष्णलेश्या एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः? गौतम? पञ्चविधाः कृष्णलेश्या एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-पृथिवीकायिकाः यावद् वनस्पतिकायिका, कृष्णलेश्याः खलु भदन्त! पृथिवीकायिकाः कतिविधाः प्रज्ञप्ताः? द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-सूक्ष्म पृथिवीकायिकाश्च बादरपृथिवी कायिकाश्च।

कृष्णलेश्याः खलु भदन्त! सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः कतिविधाः प्रज्ञप्ताः? गौतम! एवमेतेनाऽभिलापेन चतुष्क भेदो यथैव-औधिकोद्देशके यावद् वनस्पतिकायिका इति।

कृष्णलेश्यापर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिकानां भदन्त! कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः? एवमेव एतेनाभिलापेन यथैव-औधिकोद्देशके तथैव प्रज्ञप्ताः। तथैव-बध्नन्ति, तथैव, वेदयन्ति। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति।

कतिविधाः खलु भदन्त! अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्यैकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः? गौतम! पञ्चविधा अनन्तरोपपन्नका कृष्णलेश्या एकेन्द्रियाः, एवमेतेन अभिलापेन तथैव-द्विपदो भेदः, यावद् वनस्पतिकायिका इति। अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्य सूक्ष्म पृथिवीकायिकानां भदन्त! कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः? एवमेतेनाऽभिलापेन यथा औधिकोऽनन्तरोपपन्नकानाम्, उद्देशकस्तथैव यावद्वेदयन्ति। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति।

कतिविधाः खलु भदन्त! परम्परोपपन्नकाः कृष्णलेश्या एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः? गौतम! पञ्चविधाः परम्परोपपन्नकाः कृष्णलेश्या एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-पृथिवीकायिका॥०, एवमेतेनाऽभिलापेन, तथैव-चतुष्कभेदो यावद् वनस्पतिकायिका इति।

परम्परोपपन्नक कृष्णलेश्या पर्याप्तक सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां भदन्त! कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः? एवमेतेनाऽभिलापेन यथैव औधिकः परम्परोपपन्नको-

देशक स्तथैव-यावद् वेदयन्ति। एवमेतेनाऽभिलापेन यथैव-औधिकैकेन्द्रियशते एकादश उद्देशका भणिता स्तथैव-कृष्णलेश्यशतेऽपि भणितव्याः जाव अचरम कृष्णलेश्या एकेन्द्रियाः ॥सू० १॥

इति द्वितीयमेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥

टीका-'कइविहा णं भंते। कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता' कतिविधाः कति प्रकारकाः खलु भदन्त! कृष्णलेश्या एकेन्द्रियजीवाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः इति प्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि। 'गोयमा' हे गौतम! 'पंचविहा कण्ह-लेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता' पञ्चविधाः पञ्चप्रकारकाः कृष्णलेश्या एकेन्द्रियजीवाः प्रज्ञप्ता-कथिताः। 'तं जहा' तद्यथा-'पुढवीकाइया जाव-वणस्सइकाइया' पृथिवीकायिकाः कृष्णलेश्या एकेन्द्रियजीवा यावद् वनस्पतिकायिकाः कृष्णलेश्या एकेन्द्रियजीवाः। अत्र यावत्पदेनाप्कायिक-तेजस्कायिक-वायुकायिकानां संग्रहो भवति। तथा च-पृथिव्यप्तेजो वायुवनस्पतिभेदेन कृष्णलेश्यैकेन्द्रियजीवा, पञ्चप्रकारका भवन्ति इति।

---

३३ वें शतक में प्रथम एकेन्द्रिय शतक व्याख्यात करके अब क्रम प्राप्त द्वितीय शतक प्रारंभ किया जाता है-

'कइविहाणं भंते! कण्हलेस्स एगिंदिया पण्णत्ता' इत्यादि।

टीकार्थ-'कइविहा णं भंते! कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता' हे भदन्त! कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रिय जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'पंचविहा कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता' हे गौतम! कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रिय जीव पांच प्रकार के कहे गये हैं। 'तं जहा' जो इस प्रकार से है-'पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया' पृथिवीकायिक यावत् वनस्पतिकायिक, यहां यावत् शब्द से 'अप्कायिक, तेजस्कायिक और वायुकायिक' इन जीवों का ग्रहण हुआ है। इस प्रकार पृथिवी-

---

બીજા એકેન્દ્રિય શતકનો આરંભ--

તેત્રીસમા શતકમાં પહેલા એકેન્દ્રિય શતકનું કથન કરીને હવે સૂત્રકાર ક્રમથી આવેલા આ બીજા એકેન્દ્રિય શતકનો આરંભ કરે છે.-'कइविहाणं भंते! कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ--'कइविहाणं भंते! कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता' હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકઇન્દ્રિય જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा! पंचविहा कण्ह-लेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता' હે ગૌતમ! કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકઇન્દ્રિય જીવો પાંચ પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. 'तं जहा' તે આ પ્રમાણે છે 'पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया' પૃથ્વીકાયિક, વાયુકાયિક, યાવત્ અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક,

'कण्हलेस्सा णं भंते ! पुढवीकाइया कइविहा पन्नत्ता' कृष्णलेश्याः खलु भदन्त ! पृथिवीकायिकाः कतिविधाः-कतिप्रकारका भवन्तीति प्रश्नः ? भगवानाह-'गोयमा !' इत्यादि । 'गोयमा' हे गौतम ! 'दुविहा पन्नत्ता' कृष्णलेश्या, पृथिवीकायिका एकेन्द्रियजीवाः द्विविधाः-द्विप्रकारका भवन्ति । प्रकारभेदमेव दर्शयति-'तं जहा' इत्यादि । 'तं जहा' तद्यथा-'सुहुमपुढवीकाइया य-बायरपुढवीकाइया य' सूक्ष्म पृथिवीकायिकाश्च कृष्णलेश्या एकेन्द्रियाः बादरपृथिवीकायिकाश्च ।

'कण्हलेस्सा णं भंते ! सुहुमपुढवीकाइया कइविहा पन्नत्ता' कृष्णलेश्याः खलु भदन्त ! सूक्ष्मपृथिवीकायिका एकेन्द्रियजीवाः कतिविधाः-कति प्रकारकाः प्रज्ञप्ताः ? इति प्रश्नः । भगवानाह-'गोयमा' हे गौतम ! 'एवं एएणं अभिलावेणं चउक्कओ भेओ जहेव-ओहिए जाव वणस्सइकाइयत्ति' एवमुपरि-

---

कायिक, अप्कायिक और वनस्पतिकायिक के भेद से कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रिय पांच प्रकार के होते हैं ।

'कण्हलेस्सा णं भंते ! पुढवीकाइया कइविहा पण्णत्ता' हे भदन्त ! कृष्णलेश्यावाले पृथिवीकायिक जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता' हे गौतम ! कृष्णलेश्यावाले पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय जीव दो प्रकार के कहे गये हैं । 'तं जहा' जैसे 'सुहुमपुढवीकाइया बादरपुढवीकाइया' सूक्ष्म पृथिवीकायिक और बादर पृथिवीकायिक 'कण्हलेस्साणं भंते ! सुहुमपुढवीकाइया कइविहा पन्नत्ता' हे भदन्त ! कृष्णलेश्यावाले सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं ? 'गोयमा ! एवं एएणं अभिलावेणं चउक्कओ भेओ जहेव ओहियसए जाव वणस्सइ काइयत्ति' हे गौतम ! इस उपर में प्रदर्शित प्रकारवाले अभिलाप

વાયુકાયિક અને વનસ્પતિકાયિકના ભેદથી કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય જીવો પાંચ પ્રકારના હોય છે.

'कण्हलेस्साणं भंते ! पुढवीकाइया कइविहा पन्नत्ता' હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા પૃથ્વીકાયિક જીવો કેટલા પ્રકારના કહેલા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता' હે ગૌતમ ! કૃષ્ણલેશ્યાવાળા પૃથ્વીકાયિક એકેન્દ્રિય જીવો બે પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. 'तं जहा' તે આ પ્રમાણે છે. 'सुहुमपुढवीकाइया बादरपुढवीकाइया' સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક અને બાદરપૃથ્વીકાયિક 'कण्हलेस्साणं भंते ! सुहुम पुढवीकाइया कइविहा पण्णत्ता' હે ભગવન કૃષ્ણલેશ્યાવાળા સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! एवं एएणं अभिलावेणं चउक्कओ भेओ जहेव ओहियसए जाव वणस्सइकाइयत्ति'

दर्शितप्रकारेण अभिलापेन चतुष्को भेदः यथैव-औधिकोद्देशके कथित स्तथैवात्रापि वक्तव्यः । यावद्वनस्पतिकायिका इति । कृष्णलेश्य पृथिवीकायिकैकेन्द्रियादारभ्य कृष्णलेश्य वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियान्ताः सूक्ष्म-बादराऽपर्याप्तक-पर्याप्तकरूप चतुष्टयभेदवन्तो विज्ञेया इति ।

'कण्हलेस्स अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइया णं भंते ! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' कृष्णलेश्यापर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकानां भदन्त ! कति संख्यकाः कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः ? इति प्रश्नः, उत्तरमाह-'एवंचेव' इत्यादि । 'एवंचेव-एएणं अभिलावेणं जहेव-ओहिउद्देसए तहेव पन्नत्ताओ' एवमेव एतेनाऽभिलापप्रकारेण यथैव औधिकोद्देशके प्रथमोद्देशके कथिताः-अष्टौ कर्मप्रकृतय स्तथैवेहापि अष्टौ

से औधिक उद्देश में कहे गये अनुसार सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव यावत् सूक्ष्म वनस्पतिकाय तक सब एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म बादर अपर्याप्तक और पर्याप्तक के भेद से चार-चार प्रकार के जानना चाहिये, अर्थात् कृष्णलेश्यावाले पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय से लेकर कृष्णलेश्यावाले वनस्पतिकायिक एकेन्द्रिय जीव तक पूर्वोक्त सूक्ष्म बादर अपर्याप्तक पर्याप्तक रूप से चार-चार प्रकार के कहे गये हैं ।

'कण्हलेस्स अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइया णं भंते ! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ'-हे भदन्त ! कृष्णलेश्यावाले अपर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवों के कितनी कर्मप्रकृतियां कही गई हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहि उद्देसए तहेव पन्नत्ताओ' हे गौतम ! इस अभिलाप से जिस प्रकार औधिक उद्देशक में प्रथम उद्देशक में आठ कर्म प्रकृतियों का सत्व कहा गया है उसी

હે ગૌતમ ! આ ઉપર બતાવેલા પ્રકારવાળા અભિલાપોથી ઔધિક ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવો યાવત્ સૂક્ષ્મ વનસ્પતિ કાય સુધિના સઘળા એકઇન્દ્રિયવાળા જીવો સૂક્ષ્મ બાદર અપર્યાપ્તક અને પર્યાપ્તકના ભેદથી ચાર-ચાર પ્રકારના સમજવા. અર્થાત્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા પૃથ્વીકાયિક એકઇન્દ્રિયથી લઈને અપ્કાયિક, વાયુકાયિક, અને વનસ્પતિકાયિક એકઇન્દ્રિયવાળા જીવો પૂર્વોક્ત પ્રકારથી ચાર-ચાર પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે.

'कण्हलेस्स अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોને કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયો કહેવામાં આવી છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहि उद्देसए तहेव पन्नत्ताओ' હે ગૌતમ !

ज्ञानावरणीयादिकाः कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः, 'तहेव बंधंति, तहेव-वेदेंति' तथैव-औधिकप्रथमोद्देशकवदेव, कर्मप्रकृती र्बध्नन्ति, तथैव-वेदयन्ति। बन्धनसूत्रे सप्तविध बन्धका वा, अष्टविधबन्धका वा, सप्तविध बन्धकाः आयुर्वर्जसप्तकर्मप्रकृति बन्धका अष्टविधबन्धकाः परिपूर्णाष्टविधकर्मप्रकृति बन्धका भवन्ति। वेदनसूत्रे ज्ञानावरणीयाद्यष्टकर्मप्रकृतयः, तथा श्रोत्रेन्द्रियवध्यादिकाः स्पर्शेन्द्रियवध्यवर्जाश्च तस्रः, तथा-नपुंसक वेदवध्यवर्जं वेदद्वयंच, एवं चतुर्दशकर्मप्रकृतीनां वेदका भवन्ति इति भावः।

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति। हे भदन्त !

प्रकार से यहां पर भी आठ कर्म प्रकृतियों का सत्व जानना चाहिये, 'तहेव बंधंति, तहेव वेदेंति' तथा बन्धन सूत्र में जैसा कहा गया है कि ये जीव जब सात कर्मप्रकृतियों के बन्धक होते हैं तब आयुकर्म को छोड़कर शेष सात कर्मप्रकृतियों को बांधते हैं और जब आठ कर्मप्रकृतियों के बन्धक होते हैं-तब ये पूरे के पूरे आठ कर्मों को बांधते हैं तथा २ इसी प्रकार से ये उनका वेदन भी करते हैं। इस वेदन में ये ज्ञानावरणादिक आठ कर्मप्रकृतियों का, श्रोत्रेन्द्रिय वध्य चक्षुरिन्द्रिय वध्य घ्राणेन्द्रिय वध्य जिह्वेन्द्रिय वध्य स्त्रीवेद वध्य पुरुषवेद वध्य इन चौदह कर्मप्रकृतियों का वेदन करते हैं। स्पर्शनेन्द्रिय वध्य का वेदन इनको नहीं होता है, क्योंकि इनको तो स्पर्शनेन्द्रिय का उदय होता है। तथा नपुंसक वेदवाले होने से इनके उसके वध्य का भी अभाव रहता

આ અભિલાપથી ઔધિક ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણે પહેલા ઉદ્દેશામાં આઠ કર્મ પ્રકૃતિયો હોવાના સંબંધમાં કથન કર્યું છે. એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ આઠ કર્મ પ્રકૃતિયોનું વિદ્યમાન પણું સમજવું.

'તહેવ બંધંતિ' તહેવ વેદેંતિ' તથા બન્ધ સૂત્રમાં જે પ્રમાણે કથન કરવામાં આવ્યું છે કે-આ જીવો જ્યારે સાતકર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે; ત્યારે તે આયુકર્મને છોડીને બાકીની સાતકર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે. અને જ્યારે આઠકર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે, ત્યારે તેઓ પુરેપૂરી આઠકર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે. એજ પ્રમાણે તેઓનું વેદન પણ કરે છે. આ વેદનમાં તેઓ જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે આઠ કર્મ પ્રકૃતિયોનું શ્રોત્રેન્દ્રિયાવરણનું ચક્ષુ ઇન્દ્રિયાવરણનું, ઘ્રાણેન્દ્રિયાવરણનું, જીહ્વા ઈન્દ્રિયાવરણનું સ્રીવેદાવરણનું, પુરૂષવેદ વરણનું આ રીતે આ ચૌદકર્મ પ્રકૃતિયોનું વેદન કરે છે. તેઓને સ્પર્શનેન્દ્રિયાવરણનું વેદન હોતું નથી. કેમ કે-તેઓને તો સ્પર્શનેન્દ્રિયનો ઉદય હોય છે. તથા નપુંસક વેદવાળા હોવાથી તેઓના આવરણનો અભાવ રહે છે.

दर्शितप्रकारेण अभिलापेन चतुष्को भेदः यथैव-औधिकोद्देशके कथित स्तथैवात्रापि वक्तव्यः। यावद्वनस्पतिकायिका इति। कृष्णलेश्य पृथिवीकायिकैकेन्द्रियादारभ्य कृष्णलेश्य वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियान्ताः सूक्ष्म-बादराऽपर्याप्तक-पर्याप्तकरूप चतुष्टयभेदवन्तो विज्ञेया इति।

'कण्हलेस्स अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइया णं भंते! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' कृष्णलेश्यापर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकानां भदन्त! कति संख्यकाः कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः? इति प्रश्नः, उत्तरमाह-'एवंचेव' इत्यादि। 'एवंचेव-एएणं अभिलावेणं जहेव-ओहिउद्देसए तहेव पन्नत्ताओ' एवमेव एतेनाऽभिलापप्रकारेण यथैव औधिकोद्देशके प्रथमोद्देशके कथिताः-अष्टौ कर्मप्रकृतय स्तथैवेहापि अष्टौ

से औघिक उद्देश में कहे गये अनुसार सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव यावत् सूक्ष्म वनस्पतिकाय तक सब एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म बादर अपर्याप्तक और पर्याप्तक के भेद से चार-चार प्रकार के जानना चाहिये, अर्थात् कृष्णलेश्यावाले पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय से लेकर कृष्णलेश्यावाले वनस्पतिकायिक एकेन्द्रिय जीव तक पूर्वोक्त सूक्ष्म बादर अपर्याप्तक पर्याप्तक रूप से चार-चार प्रकार के कहे गये हैं।

'कण्हलेस्स अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइया णं भंते! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ'-हे भदन्त! कृष्णलेश्यावाले अपर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवों के कितनी कर्मप्रकृतियां कही गई हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहि उद्देसए तहेव पन्नत्ताओ' हे गौतम! इस अभिलाप से जिस प्रकार औघिक उद्देशक में प्रथम उद्देशक में आठ कर्म प्रकृतियों का सत्व कहा गया है उसी

હે ગૌતમ! આ ઉપર બતાવેલા પ્રકારવાળા અભિલાપોથી ઔધિક ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવો યાવત્ સૂક્ષ્મ વનસ્પતિ કાય સુધિના સઘળા એકઈન્દ્રિયવાળા જીવો સૂક્ષ્મ બાદર અપર્યાપ્તક અને પર્યાપ્તકનાભેદથી ચાર-ચાર પ્રકારના સમજવા. અર્થાત્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા પૃથ્વીકાયિક એકઇન્દ્રિયથી લઈને અપ્કાયિક, વાયુકાયિક, અને વનસ્પતિકાયિક એકઇન્દ્રિયવાળા જીવો પૂર્વોક્ત પ્રકારથી ચાર-ચાર પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે.

'કण्हलेस्स अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइयाणं भंते! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોને કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયો કહેવામાં આવી છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहि उद्देसए तहेव पन्नत्ताओ' હે ગૌતમ!

ज्ञानावरणीयादिकाः कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः, 'तहेव बंधंति, तहेव-वेदेंति' तथैव-औघिकप्रथमोद्देशकवदेव, कर्मप्रकृती बध्नन्ति, तथैव-वेदयन्ति। बन्धनसूत्रे सप्तविध बन्धका वा, अष्टविधबन्धका वा, सप्तविध बन्धकाः आयुर्वर्जसप्तकर्मप्रकृति बन्धका अष्टविधबन्धकाः परिपूर्णाष्टविधकर्मप्रकृति बन्धका भवन्ति। वेदनसूत्रे ज्ञानावरणीयाद्यष्टकर्मप्रकृतयः, तथा श्रोत्रेन्द्रियवध्यादिकाः स्पर्शेन्द्रियवध्यवर्जाश्चतस्रः, तथा-नपुंसक वेदवध्यवर्जे वेदद्वयंच, एवं चतुर्दशकर्मप्रकृतीनां वेदका भवन्ति इति भावः।

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति । हे भदन्त !

प्रकार से यहां पर भी आठ कर्म प्रकृतियों का सत्व जानना चाहिये, 'तहेव बंधंति, तहेव वेदेंति' तथा बन्धन सूत्र में जैसा कहा गया है कि ये जीव जब सात कर्मप्रकृतियों के बन्धक होते हैं तब आयुकर्म को छोड़कर शेष सात कर्मप्रकृतियों को बांधते है और जब आठ कर्मप्रकृतियों के बन्धक होते हैं-तब ये पूरे के पूरे आठ कर्मों को बांधते हैं तथा २ इसी प्रकार से ये उनका वेदन भी करते हैं। इस वेदन में ये ज्ञानावरणादिक आठ कर्मप्रकृतियों का, श्रोत्रेन्द्रि वध्य चक्षुरिन्द्रिय वध्य घ्राणेन्द्रिय वध्य जिह्वेन्द्रिय वध्य स्त्रीवेद वध्य पुरुषवेद वध्य इन चौदह कर्मप्रकृतियों का वेदन करते हैं। स्पर्शनेन्द्रिय वध्य का वेदन इनको नहीं होता है, क्योंकि इनको तो स्पर्शनेन्द्रिय का उदय होता है। तथा नपुंसक वेदवाले होने से इनके उसके वध्य का भी अभाव रहता

આ અભિલાપથી ઔધિક ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણે પહેલા ઉદ્દેશામાં આઠ કર્મ પ્રકૃતિયો હોવાના સંબંધમાં કથન કર્યું છે. એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ આઠ કર્મ પ્રકૃતિયોનું વિદ્યમાન પણું સમજવું.

'तहेव बंधंति' तहेव वेदेंति' તથા બન્ધ સૂત્રમાં જે પ્રમાણે કથન કરવામાં આવ્યું છે કે-આ જીવો જ્યારે સાતકર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે, ત્યારે તે આયુકર્મને છોડીને બાકીની સાતકર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે. અને જ્યારે આઠકર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે, ત્યારે તેઓ પુરેપુરી આઠકર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે. એજ પ્રમાણે તેઓનું વેદન પણ કરે છે. આ વેદનમાં તેઓ જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે આઠ કર્મપ્રકૃતિયોનું શ્રોત્રેન્દ્રિયાવરણનું ચક્ષુ ઇન્દ્રિયાવરણનું, ઘ્રાણેન્દ્રિયાવરણનું, જીહ્વા ઈન્દ્રિયાવરણનું સ્ત્રીવેદાવરણનું, પુરૂષવેદાવરણનું આ રીતે આ ચૌદકર્મ પ્રકૃતિયોનું વેદન કરે છે. તેઓને સ્પર્શનેન્દ્રિયાવરણનું વેદન હોતું નથી. કેમ કે-તેઓને તો સ્પર્શનેન્દ્રિયનો ઉદય હોય છે. તથા નપુંસક વેદવાળા હોવાથી તેઓના આવરણનો અભાવ રહે છે.

कृष्णलेश्यैकेन्द्रियजीवविषये भवता यद्यत् कथितम्, तत्सर्वं सर्वथैव सत्यमिति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते-नमस्यति, वन्दित्वा-नमस्यित्वा च संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन् विहरति ॥सू० १॥

त्रयस्त्रिंशत्तम शतकीय द्वितीयशतके प्रथम औधिकोद्देशकः समाप्तः ।३३।२।१॥

त्रयस्त्रिंशत्तमशतकस्य द्वितीयऽवान्तरशतकस्य द्वितीयउद्देशको व्याख्यायते-

टीका-'कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्स एगिंदिया पन्नत्ता' कतिविधाः कति प्रकारकाः खलु भदन्त ! अनन्तरोपपन्नकाः येषा मुत्पत्ती प्रथमसमयो जातस्ते कृष्णलेश्या एकेन्द्रियजीवाः प्रज्ञप्ताः-कथिता ? इति प्रश्नः । भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि । 'गोयमा' हे गौतम ! 'पंचविहा अणंतरोववन्नगा कण्ह-

---

है । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रिय जीव के विषय में आप देवानुप्रिय ने जो कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है । इस प्रकार कहकर गौतमस्वामी ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया, वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

॥ ३३ वें शतक के द्वितीय अन्तर शतक का प्रथम उद्देशक समाप्त ॥

अथ द्वितीय अवान्तर शतक का द्वितीय उद्देशक की व्याख्या की जाती है

'कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा'-इत्यादि ।

टीकार्थ—'कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्स एगिंदिया पन्नत्ता' हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रिय जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं ? जिन्हें उत्पन्न हुए प्रथम समय हुआ है वे

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિયવાળા જીવના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપદેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

બીજા એકેન્દ્રિય શતકનો પહેલો ઉદ્દેશો સમાપ્ત

બીજા અવાન્તર શતકનો પ્રારંભ—

'कइविहाणं भंते ! अणंतरोववण्णगा' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—कइविहाणं भंते ! अणंतरोववण्णगा कण्हलेस्स एगिंदिया पन्नत्ता' હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિયજીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? પહેલા સમયમાં જેઓની ઉત્પત્તી થાય છે. એવા જીવો

लेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता' पञ्चविधाः-पञ्चप्रकारकाः पृथिवीकायिकादिवनस्पति कायिकान्ता अनन्तरोपपन्नकाः कृष्णलेश्या एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः। 'एवं एएणं अभिलावेणं तहेव-दुपओ भेओ जाव-वणस्सइ काइयत्ति' एवमेतेनाऽभिलापेन-उक्तप्रकारेण-तथैव-प्रथमोद्देशकवदेव द्विपदो भेदः, सूक्ष्मबादररूपो भेदो वर्णनीयो यावद्-वनस्पतिकायिका इति।

अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्यपृथिवीकायिकत आरभ्याऽनन्तरोपपन्नककृष्णलेश्य वनस्पतिकायिकान्तैकेन्द्रियजीवेषु सूक्ष्म-बादरभेदेन द्विपदो भेदो ज्ञातव्यः। अत्र चतुर्भेदो न दर्शितः, अनन्तरोपपन्नकानाम्-एकसमयमात्रवृत्तित्वेन पर्याप्तापर्याप्तकभेदाऽभावेन चतुष्प्रकारकत्वस्याऽसम्भवात् इति।

'अणंतरोववन्नगकण्हलेस्ससुहुमपुढवीकाइया णं भंते! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' अनन्तरोपपन्नककृष्णलेश्यसूक्ष्मपृथिवीकायिकानां भदन्त! कति

अनन्तरोपपन्नक हैं। 'गोयमा। पंचविहा पन्नत्ता' हे गौतम! अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रिय जीव पांच प्रकार के कहे गये हैं। ये पृथिवीकायिक से लेकर वनस्पतिकायिक तक होते हैं। 'एवं एएणं अभिलावेणं तहेव दुपओ भेओ, जाव वणस्सइकाइयत्ति' इस अभिलापद्वारा प्रथमोद्देशक के जैसे अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रिय जीव पृथिवीकायिक से लेकर वनस्पतिकायिक तक के एकेन्द्रिय जीव-सूक्ष्म और बादर के भेद से दो पदवाले-दो भेदवाले कहना चाहिये, यहां अपर्याप्त और पर्याप्त भेद नहीं होता है। क्यों कि यहां अनन्तरोपपन्नकका काल एक समय मात्र का है, इसलिये इन में चतुष्प्रकारता संभवित नहीं है। 'अणंतरोववन्नग कण्हलेस्स सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' हे भदन्त! अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्या

અનંતરોપપન્નક કહેવાય છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'ગોયમા! પંચવિહા પણ્ણત્તા' હે ગૌતમ! અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય જીવો પાંચ પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. તે પૃથ્વી કાયિકથી લઈને વનસ્પતિકાયિક સુધીના પાંચ પ્રકાર સમજવા. 'एवं एएणं अभिलावेणं तहेव दुपओ भेओ जाव वणस्सइकाइयत्ति' આ અભિલાપ પ્રમાણે પહેલા ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય જીવો પૃથ્વીકાયિકથી લઈને વનસ્પતિકાયિક સુધીના એકેન્દ્રિય જીવો સૂક્ષ્મ અને બાદરના ભેદથી બે પ્રકારના એટલે કે બે ભેદવાળા સમજવા. આમાં અપર્યાપ્ત અને પર્યાપ્ત એ બે ભેદો હોતા નથી. કેમ કે અહિયાં અનંતરોપપન્નક પણાનો કાળ એક સમયમાત્રનો કહ્યો છે. તેથી તેઓમાં ચાર પ્રકારપણું સંભવતું નથી.

कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ता इति प्रश्नः । भगवानाह–'एवं एएणं' इत्यादि । 'एवं एएणं अभिलावेणं जहा–ओहिओ अणंतरोववन्नगाणं उद्देसओ तहेव जाव–वेदेंति' एवमेतेन अभिलापेन यथा–औधिकोऽनन्तरोपपन्नकानामुद्देशकः तथैव–तेनैव रूपेण इहापि सर्वं ज्ञातव्यम् यावद्वेदयन्ति । एतच्छतकीयप्रथमशतवदेवात्र द्वितीयशतेऽपि–अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्य सूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेन्द्रियाणां कर्मप्रकृति विषये ज्ञातव्यम् । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति । हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नककृष्णलेश्यैकेन्द्रियपृथिवीकायिकादिविषये यद् देवानु-

वाले सूक्ष्म पृथिवीकायिकों के कितनी कर्मप्रकृतियों का सत्त्व कहा गया है ? 'एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहिओ अणंतरोववन्नगाणं उद्देसओ तहेव जाव वेदेंति' हे गौतम ! इस प्रकार से इस अभिलाप द्वारा ये अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्यावाले सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय जैसा कि प्रथम शतक में कहा गया है उस के अनुसार आठ कर्म प्रकृतियों के सत्व वाले होते हैं उसके अनुसार आठ कर्मप्रकृतियों के ये बन्धक होते हैं । सात कर्मप्रकृतियों की बंधकता में आयुकर्म का बन्ध वे नहीं करते हैं क्यों कि उत्पत्ति के प्रथम समय में आयुकर्म का बन्ध नही होता है अतः ये आठ कर्मप्रकृतियों के बंधक नहीं होते हैं । वेदन ये १४ कर्मप्रकृतियों का करते हैं । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रिय पृथिवीकायिकादि

'अणंतरोववण्णग कण्हलेस्स सुहुम पुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોને કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયો હોવાનું કહ્યું છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે 'एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहिओ अणंतरोववन्नगाणं उद्देसओ तहेव जाव वेदेंति' હે ગૌતમ ! આ પ્રમાણે આ અભિલાપ દ્વારા આ અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક એકેન્દ્રિયના સંબંધમાં જે પ્રમાણે પહેલા શતકમાં કહેવામાં આવેલ છે, તે પ્રમાણે આઠ કર્મ પ્રકૃતિયોના સત્વવાળા હોય છે. તથા તે સાત કર્મપ્રકૃતિયોનો બંધ કરવાવાળા હોય છે. સાત કર્મ પ્રકૃતિયોના બંધક પણામાં તેઓ આયુકર્મનો બંધ કરતા નથી. કેમ કે તેઓને આયુકર્મનો બંધ પહેલેથી જ થઈ જાય છે. તેથી તેઓ આઠ કર્મપ્રકૃતિયોનો બંધ કરતા નથી અને તેઓ ચૌદકર્મ પ્રકૃતિયોનું વેદન કરે છે. તેમ સમજવું.

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય પૃથ્વીકાયિક વિગેરેના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન

प्रियेण कथितम् तत्सर्वं तथैव सत्यमिति कथयित्वा भगवान् गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा-नमस्यित्वा संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन् विहरति॥सू०१॥

इति द्वितीयेऽवान्तरशतके द्वितीयोदेशकः समाप्तः ॥३३।२।२॥

'कइविहा णं भंते ! परंपरोववन्नगा कण्हलेस्पा एगिंदिया पन्नत्ता' कतिविधाः-कति प्रकारकाः खलु भदन्त ! परम्परोपपन्नकाः कृष्णलेश्या एकेन्द्रिय जीवाः प्रज्ञप्ताः-कथिता इति प्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि। 'गोयमा!' हे गौतम! 'पंचविहा परंपरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता' पञ्चविधाः-पञ्चप्रकारकाः परम्परोपपन्नकाः कृष्णलेश्या एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः। प्रक-

---

के विषय में जो आप देवानुप्रिय ने कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है २। ऐसा कहकर भगवान् गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू०१॥

॥३३ वें शतक के द्वितीय अवान्तर शतक का द्वितीय उद्देशक समाप्त॥

-द्वितीय एकेन्द्रिय शतक का तृतीयादि उद्देशक-

'कइविहा णं भंते! परंपरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता' हे भदन्त! परम्परोपपन्नक कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रिय जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! पंचविहा परंपरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता' हे गौतम! परंपरोपपन्नक कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रिय जीव पांच प्रकार के कहे गये हैं। 'तं जहा'

કહ્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું આ વિષય સંબંધનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાનપર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

બીજા અવાન્તર શતકનો બીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૩-૨-૨॥

બીજા એકેન્દ્રિય શતકનો ત્રીજા વિગેરે ઉદ્દેશાઓ

'कइविहा णं भंते! परंपरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ પરંપરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકઇંદ્રિય જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा! पंचविहा परंपरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता' હે ગૌતમ! પરંપરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય જીવો પાંચ પ્રકારના કહેવામાં

रणभेदमेव दर्शयति—'तं जहा' इत्यादि। 'तं जहा' तद्यथा—'पुढवीकाइया, एवं एएणं अभिलावेणं तहेव—चउक्कओ भेओ जाव वणस्सइकाइय त्ति' पृथिवीकायिक एवमेतेनाऽभिलापेन तथैव एतच्छतीय प्रथमशतकवदेव चतुष्कः—चतुष्प्रकारकः सूक्ष्मबादराऽपर्याप्तापर्याप्तरूपो भेदो वक्तव्यः यावद् वनस्पतिकायिका इति।

'परंपरोववन्नग कण्हलेस्स अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइया णं भंते !' परम्परोपपन्नक कृष्णलेश्याऽपर्याप्तक सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां भदन्त ! 'कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' कति-कति प्रकारकाः कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः ? इति प्रश्नः। भगवानाह—'एवं एएणं' इत्यादि। 'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ परंपरोववन्नग उद्देसओ तहेव जाव वेदेंति' एवम् एतेनाऽभिलापेन यथैवौघिकः सामान्य-

जैसे—'पुढवीकाइया—एवं एएणं अभिलावेणं तहेव चउक्कओ भेओ जाव वणस्सइकाइयत्ति' पृथिवीकायिक इस प्रकार से इस अभिलाप द्वारा इसी शतक के प्रथम शतक में कहे गये अनुसार इन परंपरोपपन्नक कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रिय पृथिवीकायिक से लेकर वनस्पतिकायिक तक के जीवों के ४-४ भेद सूक्ष्म, बादर अपर्याप्तक और पर्याप्तक रूप से कहना चाहिये।

'परंपरोववन्नग कण्हलेस्स अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' हे भदन्त ! परम्परोपपन्नक कृष्णलेश्यावाले अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकों के कितनी कर्मप्रकृतियों का सत्व कहा गया है ? 'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ परंपरोववन्नग उद्देसओ तहेव जाव वेदेंति' हे गौतम। इस अभिलाप द्वारा जैसा

આવ્યા છે. 'तं जहा' તે આ પ્રમાણે છે—'पुढवीकाइया—एवं एएणं अभिलावेणं तहेव चउक्कओ भेओ जाव वणस्सइकाइयत्ति' પૃથ્વીકાયિક આ પ્રમાણે આ અભિપ્રાય દ્વારા એકેન્દ્રિય શતકના પહેલા શતકમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે તે પ્રમાણે આ પરંપરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય પૃથ્વી કાયિકોથી લઈને વનસ્પતિકાયિક સુધીના જીવોના ૪-૪ ચાર-ચાર ભેદો સૂક્ષ્મ, બાદર, અપર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત એ રીતે થાય તે તેમ સમજવું.

'परंपरोववन्नग कण्हलेस्स अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइया णं भंते ! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' હે ભગવન્ પરંપરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકોને કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયો હોવાનું કહેલ છે? 'एवं एएणं अभिलावेण जहेव ओहिओ परंपरोववन्नग उद्देसओ तहेव जाव वेदेंति' હે ગૌતમ ! આ અભિલાપ દ્વારા સામાન્ય રૂપથી પહેલો ઉદ્દેશો જે પ્રમાણે કહેવામાં

रूपः प्रथमोद्देशकः कथित स्तथैव-तेनैव प्रकारेण इहापि ज्ञातव्यो यावद् वेदय यन्ति इति। अत्र यावत्पदेन-तेषां जीवाना मष्टकर्मप्रकृतयो भवन्ति, ते च सप्त अष्टौ वा बध्नन्ति, चतुर्दश च वेदयन्तीति संग्रहो वाच्यः। 'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिए एगिंदियसए एक्कारस उद्देसगा भणिया तहेव कण्हलेस्ससए वि भाणियव्वा जाव अचरिम कण्हलेस्सा एगिंदिया' एवम्-एतेन अभिलापेन यथैव औघिके एकेन्द्रियशते एकादशोद्देशका भणिता स्तथैव कृष्णलेश्यशतेऽपि एकादशोद्देशका भणितव्या यावद् अचरम कृष्णलेश्या एकेन्द्रियाः।

औघिककृष्णलेश्यैकेन्द्रियानन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्यैकेन्द्रियरूपोद्देशद्वयवदेव

सामान्य रूप प्रथम उद्देशक कहा गया है उसी प्रकार से यहां यावत् वेदन सूत्र तक जानना चाहिये, यहां यावत् पद से इस कथन का संग्रह हुआ है कि-'उन जीवों में आठ कर्मप्रकृतियां होती हैं, वे सात या आठ कर्मप्रकृतियों का बन्ध करते हैं। १४ चौदह कर्मप्रकृतियों का वेदन करते हैं। 'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिए एगिंदियसए एक्कारस उद्देसगा भणिया तहेव कण्हलेस्स सए वि भाणियव्वा जाव अचरिम कण्हलेस्सा एगिंदिया' इस प्रकार इस अभिलाप द्वारा जैसे सामान्य रूप एकेन्द्रिय शतक में ११ उद्देशक कहे गये हैं उसी प्रकार से कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रिय शतक में ११ उद्देशक कहना चाहिये, जैसे सामान्य रूप कृष्णलेश्यावालों का एक सामान्य उद्देशक, अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्यावालों का द्वितीय उद्देशक है. इसी प्रकार से परंपरोपपन्नक कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रियों का तृतीय उद्देशक

આવ્યો છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ યાવત્ વેદન સૂત્ર સુધીનું કથન સમજી લેવું. અહિયાં યાવત્પદથી નીચે પ્રમાણેના કથનનો સંગ્રહ થયો છે, જેમકે-તે જીવોને આઠ કર્મપ્રકૃતિઓ હોય છે તેઓ સાત અથવા આઠ કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે. તથા ચૌદ કર્મપ્રકૃતિયોનું વેદન કરે છે. 'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिए एगिंदियसए एक्कारस उद्देसगा भणिया तहेव कण्हलेस्ससए वि भाणियव्वा जाव अचरिम कण्हलेस्स एगिंदिया' આ અભિલાપ દ્વારા સામાન્ય રૂપ એકેન્દ્રિય શતકમાં જે પ્રમાણે અગિયાર ૧૧ ઉદ્દેશાઓ કહેવામાં આવ્યા છે. એજ પ્રમાણેના અગિયાર ઉદ્દેશાઓ આ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા શતકમાં પણ અચરમ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિયના કથન સુધીના ૧૧ ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ. જેમ કે-સામાન્ય કૃષ્ણલેશ્યાવાળાનો એક સામાન્ય ઉદ્દેશો. ૧ અને અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળાનો બીજો ઉદ્દેશો છે. એજ પ્રમાણે પરંપરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિયોના સંબંધમાં ત્રીજો ઉદ્દેશો કહ્યો છે.

'एवं काउलेस्सेहि वि सयं भाणियव्वं' एवम्-कृष्णलेश्यशतकवदेव कापोतलेश्यैरपि शतं भणितव्यम्। 'नवरं काउलेस्से त्ति भाणियव्वो' नवरं (कापोतलेश्यः) इत्यभिलापो भणितव्यः। पूर्वशते यत्र कृष्णनीलपदे निवेश्याऽऽलापकाः कृत स्तत्र स्थाने (कापोतः) इतिपदं निवेश्य आलापका भणितव्याः। अन्यत्सर्वं पूर्ववदेव ज्ञातव्यमिति ॥३३-४॥

त्रयस्त्रिंशच्छतके एकेन्द्रियाणां तृतीयमेकेन्द्रियशतं चतुर्थमेकेन्द्रियशतं च समाप्तम् ॥३३-३-४॥

पञ्चमशतकः प्रारभ्यते

मूलम्-कइविहा णं भंते! एगिंदिया पन्नत्ता? गोयमा! पंचविहा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता तं जहा-पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया भेओ चउक्कओ जाव वणस्सइकाइय त्ति। भवसिद्धिय अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइया णं भंते! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमिल्लगं एगिंदियसयं तहेव भवसिद्धियसयं पि भाणियव्वं।

'एवं काउलेस्सेहिं वि सयं भाणियव्वं-नवरं 'काउलेस्से' त्ति अभिलावो भाणियव्वो' कृष्णलेश्यावालों के शतक के जैसा ही शतक कापोतलेश्यावालों के सम्बन्ध में भी कहना चाहिये, परन्तु पूर्व शतक में जहां 'कृष्ण' और 'नील' पद को विशेषित करके आलापक किया गया है-वहां 'कापोत' ऐसा पद रखकर आलापक कहना चाहिये, बाकी का और सब कथन पहिले के जैसा ही जानना चाहिये,

॥ ३३ वें शतक का चतुर्थ अवान्तर शतक समाप्त ॥

'एवं काउलेस्सेहिं वि सयं भाणियव्वं नवरं 'कण्हलेस्से वि अभिलावो भाणियव्वो' કૃષ્ણલેશ્યાવાળા જીવોના શતકના કથન પ્રમાણે જ કાપોતલેશ્યાવાળા જીવોના સંબંધમાં પણ કહેવું જોઈએ પરંતુ પહેલાના શતકમાં જ્યાં જ્યાં 'કૃષ્ણ' અને 'નીલ' પદથી કથન કરવામાં આવ્યું છે, ત્યાં ત્યાં 'કાપોત' એ પ્રમાણેનું પદ રાખીને આલાપકો કહેવા જોઈએ. તે શિવાયનું બીજું સઘળું કથન પહેલાના કથન પ્રમાણે જ સમજવું.

ચોથું અવાન્તર શતક સમાપ્ત

उद्देसगपरिवाडी तहेव जाव तहेव अचरिमो त्ति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥सू०१॥

पंचमं एगिंदियसयं समत्तं ॥३३-५॥

छाया—कतिविधाः खलु भदन्त! भवसिद्धिका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः। गौतम! पञ्चविधा भवसिद्धिका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-पृथिवीकायिका यावद् वनस्पतिकायिकाः, भेदश्चतुष्को यावद् वनस्पतिकायिका इति। भवसिद्धिकाऽपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकानां भदन्त! कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः? एवमेतेनाऽभिलापेन यथैव प्रथममेकेन्द्रियशतं तथैव भवसिद्धिकशतमपि भणितव्यम्। उद्देशकपरिपाटी तथैव यावद् अचरम इति। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त। इति।

पञ्चममेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥३३-५॥

टीका—'कइविहा णं भंते! भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता' कतिविधाः-कतिप्रकाराः खलु भदन्त! भवसिद्धिकाः-सिद्धिगमनयोग्याः भवक्रमेण ये ते भवसिद्धिका एतादृशा एकेन्द्रियजीवाः कति प्रकारका भवन्तीति प्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि। 'गोयमा' हे गौतम! 'पंचविहा' पञ्चप्रकारकाः 'भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता' भवसिद्धिका एकेन्द्रिय जीवाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः, 'तं जहा' तद्यथा-'पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया' पृथिवीकायिका यावद्

'कइविहा णं भंते! भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता' हे भदन्त! भवसिद्धिक एकेन्द्रिय कितने प्रकार के कहे गये हैं? जो एकेन्द्रिय भव क्रम से सिद्धि गमन योग्य होते हैं-वे एकेन्द्रिय भवसिद्धिक कहे गये है। उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! पंचविहा भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता' हे गौतम! भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीव पांच प्रकार के कहे गये हैं। 'तं जहा' जो इस प्रकार से हैं 'पुढवीकाइया जाव वणस्सइ

પાંચમાં અવાન્તર શતકનો પ્રારંભ--

'कइविहा णं भंते! भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता' હે ભગવન્ ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે? જે એકેન્દ્રિય જીવો ભવક્રમથી સિદ્ધિ ગમનને યોગ્ય હોય છે, તે એકેન્દ્રિયો ભવસિદ્ધિક કહ્યા છે, આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा! पंचविहा भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता' હે ગૌતમ! ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવો પાંચ પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. 'तं जहा' જે આ પ્રમાણે છે. 'पुढवीकाइया

वनस्पतिकायिकाः, यावत्पदेन अप्कायिकाः, तेजस्कायिकाः, वायुकायिकाः, एतेषां संग्रहो भवति। तथा च पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतिभेदेन भवसिद्धिका एकेन्द्रियजीवाः पञ्चप्रकारका भवन्तीति। 'भेओ चउक्कओ जाव वणस्सइकाइयत्ति' भेदश्चतुष्को यावद्वनस्पतिकायिक इति। यथा–औघिके प्रथमशते एतेषा मवान्तरश्चतुः प्रकारको भेदः सूक्ष्मबादराऽपर्याप्तपर्याप्तरूपः कथित स्तथैव भवसिद्धिक पञ्चमशतेऽपि वक्तव्यः, 'भवसिद्धिय अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइया णं भंते! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' भवसिद्धिकाऽपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवानां खलु भदन्त! कति कर्मप्रकृतयो भवन्ति? इति प्रश्नः। उत्तरमाह–'एवं एएणं' इत्यादि, 'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमिल्लगं एगिंदियसयं तहेव भवसिद्धिय

काइया' पृथिवीकायिक यावत् वनस्पतिकायिक, यहां यावत् पद से 'अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक' इनका ग्रहण हुआ है। तथा च–पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक वायुकायिक, और वनस्पतिकायिक के भेद से भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीव पांच प्रकार के होते हैं। 'भेओ चउक्कओ जाव वणस्सइकाइयत्ति' जिस प्रकार से औघिक प्रथम शतक में इनके चार भेद–सूक्ष्म, बादर, अपर्याप्त, पर्याप्त रूप से कहा है भेद भवसिद्धिक पञ्चम शतक में भी कहना चाहिये।

'भवसिद्धिय अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइया णं भंते! कइ कम्म पगडीओ पन्नत्ताओ' हे भदन्त! भवसिद्धिक अपर्याप्तक सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवों के कितनी कर्मप्रकृतियों का सत्व कहा गया है? 'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमिल्लगं एगिंदियसयं तहेव

जाव वणस्सइ काइया' પૃથ્વીકાયિક યાવત્ વનસ્પતિકાયિક અહિયાં યાવત્પદથી અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક, અને વનસ્પતિકાયિક ગ્રહણ કરાયા છે. તથા પૃથ્વીકાયિક, અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક વાયુકાયિક અને વનસ્પતિ કાયિકના ભેદથી ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવો પાંચ પ્રકારના હોય છે.

'भेओ चउक्कओ जाव वणस्सइकाइयत्ति' જે પ્રમાણે ઔઘિક–પહેલા શતકમાં તેઓના ચાર ભેદો એટલે કે–સૂક્ષ્મ, બાદર, અપર્યાપ્તક અને પર્યાપ્તક એ પ્રમાણેના ચાર ભેદો કહ્યા છે, તેજ પ્રમાણે એ ચાર ભેદો આ ભવસિદ્ધિક પાંચમા શતકમાં પણ કહેવા જોઈએ. 'भवसिद्धिय अपज्जत्त पुढवीकाइयाणं भंते! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' હે ભગવન્ ભવસિદ્ધિક અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવોને કેટલી કર્મપ્રકૃતિયો હોય છે? 'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमिल्लगं एगिंदियसयं तहेव भवसिद्धियसयं पि भाणियव्व"

सयं पि भाणियव्वं' एवम्-अनेन प्रकारेण एतेनाऽभिलापेन यथैव प्रथममेकेन्द्रियशतं तथैव भवसिद्धिकशतमपि सर्वं भणितव्यम्। प्रथममेव औघिकं शतमिहाऽपि अनुसन्धेयम्।

'उद्देसग परिवाडी तहेव जाव अचरिमोत्ति' उद्देशकानां परिपाटी व्यवस्थाऽपि तथैव यथा प्रथमशते कथिता यावत् अचरम इति, सा च औघिकानन्तरोपपन्नक[२] परम्परोपपन्नकानन्तरावगाढ[३]-परम्परावगाढा[४]-नन्तराहारक[५] परम्पराहारका[६][७]नन्तरपर्याप्तक[८]-परम्परपर्याप्तक[९]-चरमा[१०]ऽचरमेत्येकादशसंख्यारूपा[११] विज्ञेयेति

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति। हे भदन्त! भवसिद्धिकैकेन्द्रियाणां विषये यद् देवानुप्रियेण कथितं तत्सर्वम् सर्वथैव

भवसिद्धिगसयं पि भाणियव्वं' इस प्रकार से इस अभिलाप द्वारा जैसा प्रथम एकेन्द्रिय शतक कहा गया है वैसा ही भवसिद्धिक शतक भी पूरा कहना चाहिये। तथा 'उद्देसक परिवाडी तहेव जाव अचरिमोत्ति' उद्देशको की व्यवस्था भी यहां प्रथम शतक के जैसी अचरम उद्देशक तक कहनी चाहिये, इस व्यवस्था में पहिला औघिक उद्देशक है, द्वितीय अनन्तरोपपन्नक उद्देशक है, तृतीय परम्परोपपन्नक उद्देशक है, चतुर्थ अनन्तरावगाढ उद्देशक है पांचवां परंपरावगाढ उद्देशक है, छठा अनन्तराहारक उद्देशक है। सातवां परंपराहारक उद्देशक है ८ वां अनन्तरपर्याप्तक उद्देशक है, ९ वां परंपरपर्याप्तक उद्देशक है। १० वां चरम उद्देशक है। ११ वां अचरम उद्देशक है। ऐसा जानना

આ રીતે આ અભિલાપ દ્વારા જે રીતે પહેલું એકેન્દ્રિય શતક કહેવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણે આ ભવસિદ્ધિકશતક પણ પૂરેપૂરૂં કહેવું જોઈએ. 'उद्देसक परिवाडी तहेव जाव अचरिमोत्ति' ઉદ્દેશાઓની વ્યવસ્થા-ક્રમ પણ અહિયાં પહેલા શતકમાં કહ્યા પ્રમાણે અચરમ ઉદ્દેશા સુધી સમજી લેવી. આ ક્રમથી પહેલો ઔઘિક ઉદ્દેશો કહેલ છે. ૧ બીજો અનંતરોપપન્નક નામનો ઉદ્દેશો છે ૨ ત્રીજો પરંપરોપપન્નક ઉદ્દેશો છે. ચોથો અનંતરાવગાઢ નામનો ઉદ્દેશો કહ્યો છે. પાંચમો પરંપરાવગાઢ નામનો ઉદ્દેશો કહેલ છે. છઠો અનંતરાહારક નામનો ઉદ્દેશો કહ્યો છે. સાતમો પરંપરાહારક નામનો ઉદ્દેશો કહ્યો છે આઠમો અનંતરપર્યાપ્તક નામનો ઉદ્દેશો કહ્યો છે. નવમો પરંપર પર્યાપ્તક નામનો ઉદ્દેશો કહ્યો છે. દસમો ચરમ નામનો ઉદ્દેશો કહ્યો છે. અને અગિયારમો અચરમ નામનો ઉદ્દેશો કહેલ છે તેમ સમજવું.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણેનું કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા

सत्यमिति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति ॥सू० १॥

इति त्रयस्त्रिंशत्तमे शतके पञ्चममेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥३३-५॥

मूलम्—कइविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता । तं जहा—पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया । कण्हलेस्स भवसिद्धिय पुढवीकाइया णं भंते ! कइविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता तं जहा—सुहुमपुढवीकाइया य बायरपुढवीकाइया य । कण्हलेस्स भवसिद्धिय सुहुमपुढवीकाइया णं भंते ! कइविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य एवं बायरा वि । एवं एएणं अभिलावेणं तहेव चउक्कओ भेओ भाणियव्वो । कण्हलेस्स भवसिद्धिय अपज्जत्तग सुहुमपुढवीकाइया णं भंते ! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ । एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिउद्देसए तहेव जाव वेदेंति । कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा जाव वणस्सइकाइया । अणंतरोव-

चाहिये 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! भवसिद्धिक एकेन्द्रियों के विषय में जो आप देवानुप्रिय ने कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है । ऐसा कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

॥ ३३वें शतक के पांचवा अवान्तर शतक समाप्त ॥

સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ॥સૂ૦૧॥

॥પાંચમું અવાન્તર શતક સમાપ્ત ॥ ૩૩-૫

वन्नगा कण्हलेस्स भवसिद्धिय पुढविकाइयाणं भंते ! कइविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता तं जहा–सुहुमपुढवीकाइया य बायरपुढवीकाइया य । एवं दुपओ भेओ । अणंतरोववन्नग कण्हलेस्स भवसिद्धिय सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ अणंतरोववन्नग उद्देसओ तहेव जाव वेदेंति । एवं एएणं अभिलावेणं एक्कारस वि उद्देसगा तहेव भाणियव्वा जहा ओहियसए जाव अचरिमो त्ति सू० १॥

छट्ठं एगिंदियसयं समत्तं ॥३३-६॥

छाया–कतिविधाः खलु भदन्त ! कृष्णलेश्या भवसिद्धिका एकेन्द्रिया प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पञ्चविधाः कृष्णलेश्या भवसिद्धिका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा पृथिवीकायिका यावद्वनस्पतिकायिकाः । कृष्णलेश्यभवसिद्धिकपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा–सूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च बादरपृथिवीकायिकाश्च । कृष्णलेश्य भवसिद्धिकसूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा–पर्याप्तकाश्चापर्याप्तकाश्च । एवं बादरा अपि । एवम्–एतेनाऽभिलापेन तथैव चतुष्को भेदो भणितव्यः ।

कृष्णलेश्यभवसिद्धिकाऽपर्याप्तसूक्ष्म पृथिवीकायिकानां भदन्त ! कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः । एवमेतेन अभिलापेन यथैवौधिकोद्देशके तथैव यावद् वेदयन्ति । कतिविधाः खलु भदन्त ! अनन्तरोपपन्नकाः कृष्णलेश्या भवसिद्धिका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पञ्चविधा अनन्तरोपपन्नकाः यावद्वनस्पतिकायिकाः । अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्य भवसिद्धिकपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा–सूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च बादरपृथिवीकायिकाश्च एवं द्विपदो भेदः अनन्तरोपपन्नककृष्णलेश्यभवसिद्धिकसूक्ष्मपृथिवीकायिकानां भदन्त ! कतिकर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः । एवमेतेनाऽभिलापेन यथैव औधिकोऽनन्तरोपपन्नकोद्देशः तथैव यावद्वेदयन्ति । एवमेतेनाऽभिलापेन एकादशाऽपि उद्देशकास्तथैव भणितव्याः, यथा–औधिकशते यावदचरम इति ॥३३।६॥

॥ षष्ठमेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥

सत्यमिति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति ॥सू० १॥

इति त्रयस्त्रिंशत्तमे शतके पञ्चममेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥३३-५॥

मूलम्—कइविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता। तं जहा—पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया। कण्हलेस्स भवसिद्धिय पुढवीकाइया णं भंते ! कइविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता तं जहा—सुहुमपुढवीकाइया य बायरपुढवीकाइया य। कण्हलेस्स भवसिद्धिय सुहुमपुढवीकाइया णं भंते ! कइविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य एवं बायरा वि। एवं एएणं अभिलावेणं तहेव चउक्कओ भेओ भाणियव्वो। कण्हलेस्स भवसिद्धिय अपज्जत्तग सुहुमपुढवीकाइया णं भंते! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ। एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिउद्देसए तहेव जाव वेदेंति। कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता? गोयमा! पंचविहा अणंतरोववन्नगा जाव वणस्सइकाइया। अणंतरोव-

---

चाहिये 'सेवं भंते ! सेवं भंते। त्ति हे भदन्त। भवसिद्धिक एकेन्द्रियों के विषय में जो आप देवानुप्रिय ने कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है। ऐसा कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

॥ ३३वें शतक के पांचवा अवान्तर शतक समाप्त ॥

સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ॥સૂ૦૧॥

॥પાંચમું અવાન્તર શતક સમાપ્ત ॥ ૩૩-૫

वन्नगा कण्हलेस्स भवसिद्धिय पुढविक्काइयाणं भंते ! कइविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता तं जहा-सुहुमपुढवीकाइया य बायरपुढवीकाइया य । एवं दुपओ भेओ । अणंतरोववन्नग कण्हलेस्स भवसिद्धिय सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ अणंतरोववन्नग उद्देसओ तहेव जाव वेदेंति । एवं एएणं अभिलावेणं एक्कारस वि उद्देसगा तहेव भाणियव्वा जहा ओहियसए जाव अचरिमो त्ति सू० १॥

छट्ठं एगिंदियसयं समत्तं ॥३३-६॥

छाया-कतिविधाः खलु भदन्त ! कृष्णलेश्या भवसिद्धिका एकेन्द्रिया प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पञ्चविधाः कृष्णलेश्या भवसिद्धिका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा पृथिवीकायिका यावद्वनस्पतिकायिकाः । कृष्णलेश्यभवसिद्धिकपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम । द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-सूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च बादरपृथिवीकायिकाश्च । कृष्णलेश्य भवसिद्धिकसूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-पर्याप्तकाश्चापर्याप्तकाश्च । एवं बादरा अपि । एवम्-एतेनाऽभिलापेन तथैव चतुष्को भेदो भणितव्यः ।

कृष्णलेश्यभवसिद्धिकाऽपर्याप्तसूक्ष्म पृथिवीकायिकानां भदन्त ! कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः । एवमेतेन अभिलापेन यथैवौधिकोद्देशके तथैव यावद् वेदयन्ति । कतिविधाः खलु भदन्त ! अनन्तरोपपन्नकाः कृष्णलेश्या भवसिद्धिका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम । पञ्चविधा अनन्तरोपपन्नकाः यावद्वनस्पतिकायिकाः । अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्य भवसिद्धिकपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-सूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च बादरपृथिवीकायिकाश्च एवं द्विपदो भेदः अनन्तरोपपन्नककृष्णलेश्यभवसिद्धिकसूक्ष्मपृथिवीकायिकानां भदन्त ! कतिकर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः । एवमेतेनाऽभिलापेन यथैव औधिकोऽनन्तरोपपन्नकोद्देशः तथैव यावद्वेदयन्ति । एवमेतेनाऽभिलापेन एकादशाऽपि उद्देशकास्तथैव भणितव्याः, यथा-औधिकशते यावदचरम इति ॥३३।६॥

॥ षष्ठमेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥

टीका-'कइविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता' कतिविधाः-कतिप्रकारकाः खलु भदन्त ! कृष्णलेश्या भवसिद्धिका एकेन्द्रिय जीवाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः ? इति प्रश्नः । भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'पंचविहा कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता' पञ्चविधाः-पञ्चप्रकारकाः कृष्णलेश्यावन्तो भवसिद्धिका एकेन्द्रियजीवाः प्रज्ञप्ताः-कथिता इत्युत्तरम् । प्रकारभेदमेव दर्शयति । 'तं जहा' तद्यथा-'पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया' पृथिवीकायिका यावद् वनस्पतिकायिकाः । तथाच कृष्णलेश्य भवसिद्धिक पृथिवीकायिक-कृष्णलेश्यभवसिद्धिकाप्कायिक कृष्णलेश्यभवसिद्धिक तेजस्कायिक-कृष्णलेश्यभवसिद्धिक वायुकायिक-कृष्णलेश्यभवसिद्धिकवनस्पतिकायिकभेदात् एकेन्द्रियाः पञ्चप्रकारका भवन्तीति ।

--छट्ठा अवान्तर शतक--

'कइविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता ?' हे भदन्त ! कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता' हे गौतम ! कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीव पांच प्रकार के कहे गये हैं। 'तं जहा' जैसे-पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया' पृथिवीकायिक यावत् वनस्पति कायिक, तथा च-कृष्णलेश्य भवसिद्धिक पृथिवीकायिक १, कृष्ण लेश्य भवसिद्धिक अप्कायिक २, कृष्णलेश्य भवसिद्धिक तेजस्कायिक ३, कृष्णलेश्य भवसिद्धिक वायुकायिक और कृष्णलेश्य भवसिद्धिक वनस्पतिकायिक के भेद से एकेन्द्रिय पांच प्रकार के होते हैं ।

'छठा અવાન્તર શતકનો આરંભ--

'कइविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता' હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવ કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता' હે ગૌતમ ! કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એક ઇન્દ્રિય જીવો પાંચ પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. 'तं जहा' તે આ પ્રમાણે છે. 'पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया' પૃથ્વીકાયિકથી લઈને યાવત્ વનસ્પતિ કાયિક સુધીના સમજવા. એટલે કે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક પૃથ્વીકાયિક ૧ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક અપ્કાયિક ૨ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક તેજસ્કાયિક, ૩ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક વાયુકાયિક ૪ અને કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક વનસ્પતિકાયિક ૫ આ પ્રમાણેના ભેદથી એકેન્દ્રિયો પાંચ પ્રકારના

काइत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते! कइ समइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा? गोयमा! एगसमइएण वा सेसं तं चेव, जाव से तेणट्ठेणं जाव विग्गहेणं उववज्जेज्जा। एवं अपज्जत्तसुहुमपुढवी० काइओ पुरत्थिमिल्ले चरिमंते, समोहणावेत्ता पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते बादरपुढवीकाइएसु अपज्जत्तएसु उववाएयव्वो ताहे तेसु चेव पज्जत्तएसु ४। एवं आउक्काइएसु चत्तारि आलावगा सुहुमेहिं अपज्जत्तएहिं१, ताहे पज्जत्तएहिं बायरेहिं२, अपज्जत्तएहिं३, ताहे पज्जत्तएहिं उववायव्वो ४। एवं चेव सुहुमतेउकाइएहिं वि अपज्जत्तएहिं१, ताहे पज्जत्तएहिं उववायव्वो२। अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइएणं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए मणुस्सखेत्ते अपज्जत्तबायरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते! कइ समइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा? सेसं तं चेव। पज्जत्तबायरतेउक्काइयत्ताए उववाएयव्वो ४ वाउक्काइएसु सुहुमबायरेसु जहा आउक्काइएसु उववाइओ तहा उववाएयव्वो ४। एवं वणस्सइकाइएसु वि ॥२०॥सू० १॥

छाया—कतिविधाः खलु भदन्त! एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः? गौतम! पञ्चविधा एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—पृथिवीकायिका यावद्वनस्पतिकायिकाः। एवमेते नैव चतुष्केण भेदेन भणितव्याः, यावद्वनस्पतिकायिकाः। अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त! एतस्याः रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः, समवहत्य यो भव्य एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पश्चिमे चरमान्ते अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया उपपत्तुम्, स खलु भदन्त! कति सामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत? गौतम! एकसामयिकेन, वा, द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, विग्रहेणोत्पद्येत। तत्केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते एकसामयिकेन वा, द्विसामयिकेन वा यावत् उत्पद्येत? एवं खलु गौतम! मया सप्त श्रेणयः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा—ऋज्वायता श्रेणिः,१ एकतो वक्रा२, द्विधातो वक्रा३, एकतः खा४, द्विधातः खा५,

चक्रवालाद् अर्द्धचक्रवाला७ ऋज्वायतया श्रेण्या उत्पद्यमानः एक सामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत। एकतो वक्रया श्रेण्योत्पद्यमानः द्विसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत। द्विधातो वक्रया श्रे० णोत्पद्यमानः त्रिसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत, तत्तेनार्थेन गौतम ! यावत् उत्पद्येत। अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदंत ! एतस्याः रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः, समवहत्य यो भव्यः एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पाश्चात्ये चरमान्ते पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकतया उत्पत्तुम्, स खलु भदन्त ! कति सामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत ? गौतम ! एकसामयिकेन वा शेषं तदेव, यावत्तेनार्थेन यावद् विग्रहेणोत्पद्येत। एवम् पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः पौरस्त्ये चरमान्ते समवधात्य पाश्चात्ये चरमान्ते बादरपृथिवीकायिकेषु अपर्याप्तकेषु उपपातयितव्यः, तदा तेष्वेव पर्याप्तकेषु ४, एवम् अप्कायिकेषु चत्वार आलापकाः सूक्ष्मैरपर्याप्तकैः, तदा पर्याप्तकै बादरे अपर्याप्तकैः तदा पर्याप्तकैः उपपातयितव्यः। एवमेव सूक्ष्मतेजस्कायिकैरपि अपर्याप्तकः तदा पर्याप्तकैरुपपातयितव्यः अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः, समवहत्य यो भव्यो मनुष्यक्षेत्रे अपर्याप्त बादरतेजस्कायिकतया उत्पत्तुं, स खलु भदन्त ! कति सामयिकेन, विग्रहेणोत्पद्येत, शेषं तदेव। एवं पर्याप्तबादर तेजस्कायिकतया उपपातयितव्यः वायुकायिकेषु सूक्ष्मबादरेषु यथा अप्कायिकेषु उपपातित स्तथा उपपातयितव्यः, एवं वनस्पतिकायिकेष्वपि ॥२०॥सू०-१

टीका-'कइविहा णं भंते ! एगिंदिया पन्नत्ता' कतिविधाः-कतिप्रकारका

---

३४ वां शतक

३३ वें शतक में एकेन्द्रिय जीवों का निरूपण किया अब इस ३४ वें शतक में भी उन्हीं एकेन्द्रिय जीवों का निरूपण विग्रह गति आदि रूप प्रकारान्तर से किया जावेगा। इसी कारण इस ३४ वें शतक का कथन जो कि १२ शतकों वाला है सूत्रकार करते हैं-'कइविहा णं भंते ! एगिंदिया पण्णत्ता' इत्यादि।

॥ચોત્રીસમા શતક ને। પ્રારંભ—પહેલે। ઉદ્દેશો

તેત્રીસમા શતકમાં એકેન્દ્રિયોનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું છે, હવે આ ૩૪ ચોત્રીસમા શતકમાં પણ એ એકેન્દ્રિય જીવોનું જ વિગ્રહ ગતિ વિગેરે પ્રકારાન્તરથી નિરૂપણ કરવામાં આવશે, એ કારણથી આ ૩૪ ચોત્રીસમા શતકનું કથન સૂત્રકાર કરે છે.—આ શતક બાર શતકોવાળું છે—'कइविहा णं भंते ! एगिंदिया पण्णत्ता' ઇત્યાદિ.

खलु भदन्त ! एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः कथिताः ? । भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि । 'गोयमा' हे गौतम ? 'पंचविहा एगिंदिया पन्नत्ता' पञ्चविधाः-पञ्चप्रकारका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः, 'तं जहा' तद्यथा-'पुढवीकाइया जाव वणस्सइ काइया' पृथिवीकायिका यावद्वनस्पतिकायिकाः, अत्र यावत्पदेन अप्कायिकतेजस्कायिक वायुकायिक वनस्पतिकायिक भेदात्पञ्चप्रकारका एकेन्द्रिया भवन्तीति । 'एवं एएणं चेव चउक्कएणं भेएणं भाणियव्वा जाव वणस्सइकाइया' एवम् एतेनैव चतुष्केण भेदेन भणितव्या यावद्वनस्पतिकायिकाः अत्रापि यावत्पदेन पृथिवीकायिकाप्कायिकतेजस्कायिकवायुकायिकानां संग्रहः सूक्ष्माः पृथिवीकायिकाश्च बादराः पृथिवीकायिकाश्चेत्येवं द्वौ भेदौ । ततः अपर्याप्तकाः सूक्ष्माः पृथिवीकायिकाश्च, पर्याप्तकाः सूक्ष्माः पृथिवीकायिकाश्च, अपर्याप्तका बादरपृथिवी-

---

टीकार्थ-'कइविहा णं भंते ! एगिंदिया पण्णत्ता' हे भदन्त ! एकेन्द्रिय जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं ? 'गोयमा ! पंचविहा एगिंदिया पन्नत्ता' हे गौतम ! एकेन्द्रिय जीव पांच प्रकार के कहे गये हैं 'तं जहा' जैसे-'पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया' पृथिवीकायिक यावत् वनस्पतिकायिक यहां यावत् शब्द से अप्कायिक तेजस्कायिक और वायुकायिक इन एकेन्द्रिय जीवों का ग्रहण हुआ है 'एवं एएणं चेव चउक्कएणं भेएणं भाणियव्वा जाव वणस्सइ काइया' इस प्रकार पृथिवी कायिक से लेकर वनस्पतिकायिक तक के एकेन्द्रिय जीवों के चार-चार भेद कह लेना चाहिये जैसे-सूक्ष्मपृथिवीकायिक१ बादरपृथिवीकायिक २ सूक्ष्मपृथिवी के दो भेद अपर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवीकायिक और पर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवीकायिक बादर पृथिवीकायिक के भी दो भेद-बादर

ટીકાર્થ—'कइविहाणं भंते ! एगिंदिया पन्नत्ता' હે ભગવન્ એકેન્દ્રિય જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? 'कइविहा' ઈત્યાદિ પ્રકરણ ત્રસનાડીને લક્ષ્ય કરીને સમજવું જોઈએ. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा पंचविहा एगिंदिया पण्णत्ता' હે ગૌતમ ! એકેન્દ્રિય જીવો પાંચ પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. 'तं जहा' તે આ પ્રમાણે છે. 'पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया' પૃથ્વીકાયિક અને વનસ્પતિ કાયિક 'एवं एएणं चेव चउक्कएणं भाणियव्वा जाव वणस्सइकाइया' આ રીતે પૃથ્વીકાયિકથી લઈને વનસ્પતિકાય સુધીના એકેન્દ્રિય જીવોના ચાર-ચાર ભેદો સમજવા. જેમ કે-સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક ૧ બાદર પૃથ્વીકાયિક ૨ સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયના અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક અને પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક એ પ્રમાણે બે ભેદો તથા બાદર પૃથ્વીકાયના પણ-બાદર અપર્યાપ્તક પૃથ્વિકાયિક અને બાદર પર્યાપ્તક

कायिकाः, पर्याप्ता बादरपृथिवीकायिका इत्येवमेकस्य पृथिवीकायिकस्य चत्वारो भेदा भवन्ति। एवमेव अप्कायिकादारभ्य वनस्पतिकायिकान्तानामपि चतुष्को भेदः करणीय इति। 'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइएणं भंते!' अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकः खलु भदन्त! 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए' एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या, 'पुरत्थिमिल्ले चरिमंते' पौरस्त्ये चरमान्ते, पूर्वदिशाया अन्तिमे भागे, 'समवहए' समवहतः, मारणान्तिकसमुद्घातं प्राप्तः। 'समोहणित्ता' समवहत्य,-मारणान्तिकसमुद्घातं कृत्वा मृत्वेत्यर्थः, 'जे भविए' यो भव्यः-योग्यः, 'इमीसे रयणप्पभाए, पुढवीए' एतस्या, रत्नप्रभायाः पृथिव्याः, 'पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते' पाश्चात्ये-चरमांते, पश्चिमदिशाया अन्तिमे भागे इत्यर्थः 'अपज्जत्तसुहुम पुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकतया उत्पत्तुम् अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकजीवरूपेण उत्पत्तुम्, योग्य इति पूर्वेण सम्बंधः,

---

अपर्याप्तक पृथिवीकायिक और बादर पर्याप्तक पृथिवीकायिक इस प्रकार से पृथिवीकायिक जीवों के चार भेद होते हैं। इसी तरह से अप्कायिक से लेकर वनस्पतिकायिक तक के जीवों के भी चार २ भेद कर लेना चाहिये।

'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते!' हे भदन्त! कोई अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए' इस रत्नप्रभापृथिवी के 'पुरत्थिमिल्ले चरिमंते' जो कि पूर्वदिशा के अन्तिम भाग में 'समवहए' मारणान्तिक समुद्घात को प्राप्त हुआ है और 'समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए' मारणान्तिक समुद्घात करके वह इस रत्नप्रभा पृथिवी के 'पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते' पश्चिमदिशा के अन्तिम भाग में 'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए' अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न होने के योग्य है 'से णं भंते! कइ

પૃથ્વિકાયિક આ રીતે પૃથ્વીકાયિક જીવોના ૪ ચાર ભેદો થાય છે. એજ પ્રમાણે અપ્કાયિકથી લઈને વનસ્પતિકાયિક સુધીના જીવોના પણ ચાર-ચાર ભેદો સમજવા જોઈએ.

'अपज्जत्त सुहुमपुढविकाइएण' भंते!' હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવો 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए' આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના 'पुरत्थिमिल्ले चरिमंते!' કે જે પૂર્વ દિશાના અંતિમ ભાગમાં 'समहवए' મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત પ્રાપ્ત કરે છે અને 'समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए' મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને તે આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના 'पच्चत्थिमिल्ले' પશ્ચિમ દિશાના અન્તિમ ભાગમાં 'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जेजा' અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકપણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય છે. 'से णं भंते!

'से णं भंते !' स खलु भदन्त ! योऽपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिको जीवः रत्नप्रभायाः पूर्वान्ते भागे मारणांतिकसमुद्घातेन मृत्वा तस्या एव पश्चिमदिग्विभागे उत्पत्ति योग्यो विद्यते स जीवः, 'कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' कतिसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत। मरणोत्पत्त्योर्मध्ये कियान् समया भवन्तीत्यर्थः। 'भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'एगसमइएण वा, दुसमइएण वा, तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा' एकसामयिकेन वा, द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा विग्रहेण उत्पद्येत। विग्रहे वक्रगतो च तस्य सद्भावात् गतिरेव विग्रहः विशिष्टो वा ग्रहः-विशिष्टस्थानप्राप्ति रूपा गतिः विग्रह स्तेन, अथवा विग्रहो विलम्बस्तेन विग्रहेण, विग्रहमेव विशिनष्टि-एकसामयिकेन एकः एक एव समयो विद्यते यत्रासौ एकसामयिक स्तेन एकसामयिकेन विग्रहेणेत्यर्थः एवं द्वौ समयौ विद्यते यत्रासौ द्विसामयिक स्तेन त्रयः समया विद्यन्ते यत्रा स्तै त्रिसामयिक स्तेनेत्यर्थः। पुनः प्रश्नयन्नाह-'से केणट्ठेणं' इत्यादि। 'से केणट्ठेणं

समइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' वह जीव कितने समय की विग्रह गति से उत्पन्न होता है ? इस प्रश्न का तात्पर्य ऐसा है कि कोई सूक्ष्म अपर्याप्तक पृथिवीकायिक जीव जो कि रत्नप्रभा पृथिवी के पूर्वदिशा के अन्तिम भाग में स्थित है। अब वह वहां से मारणान्तिक समुद्घात करके यदि पश्चिम दिशा के अन्तिम भाग में उसी पृथिवी के उत्पन्न होने के योग्य है तो वह कितने समय वाले विग्रह से वहां उत्पन्न होगा ? अर्थात् मरण और उत्पत्ति के बीच में उसे कितना समय लगेगा ? उत्तर में प्रभुश्री कहते है-'गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा' तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा' हे गौतम ! वह एक समयवाले विग्रह से भी वहां उत्पन्न हो सकता है, दो समय वाले विग्रह से भी वहां उत्पन्न हो सकता है और तीन समय वाले विग्रह से भी वह वहां

कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' ते જીવ કેટલા સમયની વિગ્રહ ગતિથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નનું તાત્પર્ય એવું છે કે-કોઈ સૂક્ષ્મ અપર્યાપ્તક પૃથ્વીકાયિક જીવ કે જે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વદિશાના છેલ્લા ભાગમાં રહેલ છે હવે તે ત્યાંથી મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને જો પશ્ચિમદિશાના છેલ્લા ભાગમાં એજ પૃથ્વીમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય હોય છે તો તે કેટલા સમયવાળા વિગ્રહથી ત્યાં ઉત્પન્ન થશે ? અર્થાત્ મરણ અને ઉત્પત્તિમાં તેને કેટલો સમય લાગશે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે કહે છે કે-'ગોયમા ! एगसमइएण वा, दुसमइएण वा, तिसमइएणवा विग्गहेणं उववज्जेज्जा' હે ગૌતમ ! તે એક સમયવાળા વિગ્રહથી પણ ત્યાં ઉત્પન્ન

भंते ! एवं वुच्चइ' तत्केनार्थेन हे भदन्त ! एवमुच्यते, 'एगसमइएणवा, दुसमइएण वा जाव उववज्जेज्जा' एकसामयिकेन द्विसामयिकेन त्रिसामयिकेनवा विग्रहेणोत्पद्येत। अत्र यावत्पदेन 'तिसामइएणवा विग्गहेणं' इत्यस्य संग्रहः, इत्यवान्तर प्रश्नः। भगवानाह-'एवं' इत्यादि। 'एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पन्नत्ताओ' एवं खलु हे गौतम ! मया सप्त श्रेणयः प्रज्ञप्ताः। एतत्प्रकरणं लोकनाडी प्रस्तीर्यभावनीयम्। श्रेणीना मति सूक्ष्मतया दुर्विज्ञेयत्वात् असर्वज्ञेन जन्ममरणयोश्च ज्ञातुमतिदुष्करत्वात् एतादृश्य श्रेणी जन्म मरणं च प्रतिपादता भगवता स्वस्मिन् केवलित्वं सूचयां बभूव 'मए' इति वदता। सप्त श्रेणीरेव विभागशोदर्श-

उत्पन्न हो सकता है। "से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ एगसमइएण वा दुसमइएणवा जाव उववज्जेज्जा' हे भदन्त ! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि वह एक समय वाले विग्रह से अथवा दो समय वाले विग्रह से अथवा तीन समयवाले विग्रह से वहां उत्पन्न हो सकता है ? ऐसा यह अवान्तर प्रश्न है। उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'एवं खलु गोयमा मए सत्तसेढीओ पन्नत्ताओ' हे गौतम ! मैंने सात श्रेणियां कही हैं। यह प्रकरण लोकनाडी को प्रस्तुत करके अर्थात् लोकनाडी का आकार (नकशा) बना करके समझना चाहिये। श्रेणियां अति सूक्ष्म हैं इससे उनको जानना बहुत ही कठीन है। वे दुर्विज्ञेय हैं असर्वज्ञ जीव जन्म और मरण को जान नहीं सकता है। अतः ऐसी श्रेणियों को एवं जन्म मरण को प्रतिपादन करने वाले भगवान् ने अपने में केवलित्व का सर्वज्ञत्वका सूचन 'मया' इस पद द्वारा किया है वे सात श्रेणियां इस

થઈ શકે છે બે સમયવાળા વિગ્રહથી પણ ત્યાં ઉત્પન્ન થઈ શકે છે. અને ત્રણ સમયવાળા વિગ્રહથી પણ ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે. 'से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ एगसमइएणण वा' जाव उववज्जेज्जा' હે ભગવન્ આપ એવું શા કારણથી કહો છો? કે તે એક સમયવાળા વિગ્રહથી ત્યાં ઉત્પન્ન થઈ શકે છે. અથવા બે સમયવાળા વિગ્રહથી અથવા ત્રણ સમયવાળા વિગ્રહથી પણ ત્યાં ઉત્પન્ન થઈ શકે છે? આ રીતના આ અવાન્તર પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पन्नत्ताओ' હે ગૌતમ! મેં સાત શ્રેણીયો કહી છે. શ્રેણીયો અત્યંત સૂક્ષ્મ છે. તેથી તેને સમજવું ઘણું કઠણ છે કારણ કે તે દુર્વિજ્ઞેય છે. અસર્વજ્ઞ જીવ જન્મ અને મરણ ને જાણી શકતા નથી. તેથી એવી શ્રેણિયોને અને જન્મમરણનું પ્રતિપાદન કરવાવાળા ભગવાને પોતાનામાં કેવલિપણાનું-સર્વજ્ઞપણાનું સૂચન 'मये' એ પદ દ્વારા કર્યું છે. તે સાત શ્રેણિયો આ પ્રમાણે છે.-'उज्जुयायया सेढी'

यन्नाह-'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा-'उज्जुआयया सेढी' ऋज्वायता श्रेणिः सरला लम्बायमाना या श्रेणिः सा ऋज्वायता श्रेणिः 'सेढी' ति शब्दः सर्वत्रापि अन्वेतव्यः 'एगयओ वंका' एकतो वक्रा एकतः कुटिलेत्यर्थः 'दुहओ वंका' द्विधात उभयतो वक्रेति तृतीया श्रेणि रिति३। 'एगयओ खहा' एकतः खा-एकस्मिन् भागे त्रस नामकनाडी रहीताकाशवती श्रेणिः४ दुहओ खा' द्विधात उभयतः खा-उभय पार्श्वयो त्रसनाडी रहिताकाशवती श्रेणिः ५, 'चक्रवाला' चक्रवाला, मण्डलाकारसमाना ६, 'अद्ध चक्कवाला' अर्द्ध चक्रवाला-अर्द्ध मण्डलाकारेत्यर्थः ७। ता एताः सप्तश्रेणयो भवन्तीति। अथ यदर्थमियं श्रेणिर्दर्शिता तत्कार्यं दर्शयति-

प्रकार से हैं-'उज्जुआययासेढी' ऋज्वायता श्रेणि-जो सीधी लम्बी श्रेणि है वह ऋज्वायता श्रेणी है। श्रेणि यह शब्द सर्वत्र लगा लेना चाहिए-'एगयओ वंका' एक तरफ जो श्रेणि वक्र होती है वह एकतो वक्रा श्रेणी है। 'दुहओ वंका' द्विधावक्र श्रेणी जो-श्रेणी दोनों तरफ वक्र होती है वह द्विधा वक्र श्रेणी है। 'एगयओ खहा' एक तरफ जो श्रेणि त्रस नाडी से रहित होती है और केवल आकाशवाली होती है ऐसी वह एकतः खा श्रेणी हैं। 'दुहओ खा' दोनों तरफ जो श्रेणि त्रस नाडी से रहित होती है और केवल अकाशवाली होती है वह द्विधा खा श्रेणि है। 'चक्कवाला' जो श्रेणि मण्डलाकारवाली होती है वह चक्रवाला श्रेणि है। जो श्रेणि उर्द्ध मण्डलाकारवाली होती है वह श्रेणि अर्द्ध मण्डलाकार वाली होती है, वह श्रेणी अर्द्ध चक्रवाला हैं। इस प्रकार से श्रेणियां सात होती हैं। 'उज्जु आययाए सेढीए उववज्जमाणे एगसमएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' जो पृथिवीकायिक जीव ऋज्वायत श्रेणि से उत्पन्न होता हैं वह एक समय वाले

ઋજ્વાયતા શ્રેણી કે જે સીધી લાંબી શ્રેણિ છે શ્રેણિઆ શબ્દ બધે જ લગાડી લેવા જોઈએ 'एगयओ वंका' એક તરફ જે શ્રેણી વાંકી થાય છે. 'दुहओ वंका' દ્વિધાવક્ર શ્રેણી કે જે શ્રેણી બન્ને તરફથી વાંકી હોય છે, તે દ્વિધાવક્ર શ્રેણી કહેવાય છે. 'एगयओ खहा' એક તરફ જે શ્રેણી ત્રસનાડી વિનાની હોય છે, અને કેવળ આકાશવાળી હોય છે. એની તે એકતઃ ખા શ્રેણી છે. 'दुहओखा' બન્ને તરફથી જે શ્રેણી ત્રસનાડી રહિત હોય છે. અને કેવળ આકાશવાળી હોય છે. તે દ્વિધા ખા શ્રેણી કહેવાય છે 'चक्कवाला' જે શ્રેણી મંડલાકાર વાળી હોય છે, તે ચક્રવાલા શ્રેણિ કહેવાય છે જે શ્રેણિ અર્ધ મંડલાકારવાળી હોય છે, તે અર્ધ ચક્રવાલા શ્રેણી કહેવાય છે. આ રીતે સાત શ્રેણીયો થાય છે. 'उज्जु आययाए सेढीए उववज्जमाणे एगसमएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा'

'उज्जुआययाए' इत्यादि, 'उज्जु आययाए सेढीए उववज्जमाणे एगसमएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' ऋज्वायतया श्रेण्या उत्पद्यमानो जीव एक सामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत । यदा मरण स्थानापेक्षया उत्पत्तिस्थानं समश्रेण्यां भवति, तदा ऋज्वायता श्रेणि र्भवति । तथा ऋज्वायत श्रेण्या गच्छतो जीवस्य एक सामयिकी गति र्भवतीति भावः । 'एगओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' एकतो वक्रया श्रेण्या उत्पद्यमानो जीवो द्विसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत । यदा तु मरणस्थानापेक्षया समुत्पत्ति स्थानमेंकप्रतरे विश्रेण्यां वर्त्तते तदा एकतो वक्रा गतिः स्यात्, तत्र च समयद्वयेन गति र्भवति इतिभावः । 'दुहओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे ति समइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा, द्विधातो वक्रया श्रेण्या उत्पद्यमानो जीव स्त्रिसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत । यदा तु मरण-

---

विग्रह से उत्पन्न होता हैं-तात्पर्य इसका ऐसा है कि जब मरण स्थान की अपेक्षा उत्पत्ति स्थान समश्रेणि में होता है तब ऋज्वायत श्रेणि होती है । इस ऋज्वायत श्रेणि से गमन करता हुआ जीव एक समय की गति वाला होता हैं । 'एगओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' और जब जीव एक तो वक्र श्रेणि से उत्पन्न होता है तब वह दो समय वाले विग्रह से उत्पन्न होता है । तात्पर्य यह है कि जब मरणस्थान से समुत्पत्ति स्थान एक प्रतर में विश्रेणी में होती है तब एकतो वक्रागति होती है । इस श्रेणि में समय द्वय से गति होती है । 'दुहओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' जीव जब द्विधावक्र श्रेणि से उत्पन्न होता है तब

જે પૃથ્વીકાયિક જીવ ઋજવાયત શ્રેણીથી ઉત્પન્ન થાય છે તે એક સમયવાળા વિગ્રહથી ઉત્પન્ન થાય છે.

કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-જ્યારે મરણ સ્થાનની અપેક્ષાથી ઉત્પત્તિ સ્થાન સમ શ્રેણીમાં હોય છે, ત્યારે ઋજવાયત શ્રેણી કહેવાય છે. આ ઋજવાયત શ્રેણીથી જતો એવો જીવ એક સમયની ગતિવાળો હોય છે. 'एगओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' અને જ્યારે જીવ એકતો વક્રશ્રેણિથી ઉત્પન્ન થાય છે, ત્યારે તે બે સમયવાળા વિગ્રહથી ઉત્પન્ન થાય છે. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-જ્યારે મરણ સ્થાનમાં ઉત્પન્ન થતી એક પ્રતરમાં વિશ્રેણિમાં હોય છે ત્યારે એકતો વક્રા ગતિ થાય છે. આ શ્રેણિમાં બે સમયથી ગતિ થાય છે. 'दुहओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' જીવ જ્યારે દ્વિધાવક્રશ્રેણીથી ઉત્પન્ન થાય છે,

'कण्हलेस्सभवसिद्धिय पुढवीकाइया णं भंते ! कइविहा पन्नत्ता' कृष्णलेश्य, भवसिद्धिकपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! कतिविधाः-कतिप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः ? भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि 'गोयमा !' हे गौतम ! 'दुविहा पन्नत्ता' द्विविधाः-, द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः 'तं जहा' तद्यथा-'सुहुमपुढवीकाइया सूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च बादरपृथिवीकायिकाश्च ।

'कण्हलेस्स भवसिद्धिय सुहुमपुढवीकाइया णं भंते ! कइविहा पन्नत्ता' कृष्णलेश्य, भवसिद्धिक सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! कतिविधाः-कतिप्रकारकाः, प्रज्ञप्ताः-कथिता इति प्रश्नः । भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि । 'गोयमा' हे गौतम ! 'दुविहा पन्नत्ता' द्विविधाः-द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः । प्रकारभेदमेव दर्शयति-'तं जहा' इत्यादि 'तं जहा' तद्यथा-'पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय' पर्याप्तकाश्चाऽपर्याप्तकाश्च ।

'कण्हलेस्स भवसिद्धिय पुढवीकाइया णं भंते ! कइविहा पन्नत्ता' हे भदन्त ! कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक पृथिवीकायिक जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं ? 'गोयमा दुविहा पण्णत्ता,-तं जहा-सुहुमपुढवीकाइया य बायर पुढवीकाइया य' हे गौतम ! दो प्रकार के कहे गये हैं । जैसे सूक्ष्मपृथिवीकायिक और बादरपृथिवीकायिक । 'कण्हलेस्स भवसिद्धिय सुहुमपुढवीकाइया णं भंते ! कइविहा पण्णत्ता' हे भदन्त ! कृष्णलेश्य भवसिद्धिक सूक्ष्म पृथिवीकायिक कितने प्रकार के कहे गये है ? 'गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता' हे गौतम ! कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक पृथ्वीकायिक दो प्रकार के कहे गये हैं । 'तं जहा'-जैसे 'पज्जत्तगा य, अपज्जत्तगा य' पर्याप्तक और अपर्याप्तक 'एवं बायरा वि' कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक सूक्ष्म पृथिवीकायिक के जैसे ही कृष्णलेश्यावाले भव-

---

હોય છે. 'कण्हलेस्स पुढवीकाइयाण' भंते ! कइविहा पण्णत्ता' હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક પૃથ્વીકાયિક જીવ કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? 'गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता' હે ગૌતમ ! કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક પૃથ્વીકાયિક જીવો બે પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે 'तं जहा' તે આ પ્રમાણે છે. 'सुहुमपुढवीकाइया बायरपुढवीकाइया य' સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક અને બાદર પૃથ્વીકાયિક 'कण्हलेस्स भवसिद्धिय सुहुमपुढवीकाइया णं भंते ! कइविहा पण्णत्ता' હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક કેટલા પ્રકારના કહેલા છે ? 'गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता' હે ગૌતમ ! કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક પૃથ્વીકાયિક બે પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. 'तं जहा' તે બે પ્રકાર આ પ્રમાણે છે. 'पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य' પર્યાપ્તક અને અપર્યાપ્તક 'एवं बायरा वि' કૃષ્ણ-

'एवं बायरा वि' एवं कृष्णलेश्य भवसिद्धिक सूक्ष्मपृथिवीकायिकवदेव' कृष्णलेश्य भवसिद्धिक बादरपृथिवीकायिका अपि पर्याप्तकापर्याप्तकभेदेन द्विविधा भवन्ति। 'एएणं अभिलावेणं तहेव चउक्कओ भेदो भाणियव्वो' एतेन उपरि दर्शितेन अभिलापेन प्रकारेण तथैव यथैव औधिकैकेन्द्रियप्रकरणे चतुष्को भेदो वर्णितः पृथिव्यादि वनस्पतिकायिकान्तानां तथैव-तेनैव प्रकारेण कृष्णलेश्यभवसिद्धिकप्रकरणे पृथिव्याद्येकेन्द्रियाणां चतुष्प्रकारको भेदो भणितव्यो वर्णयितव्यः सूक्ष्मबादरपर्याप्ताऽपर्याप्तरूपः।

'कण्हलेस्स भवसिद्धिय अपज्जत्तगसुहुमपुढवीकाइयाणं भंते! कइकम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' कृष्णलेश्यभवसिद्धिकाऽपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकानां भदन्त! कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ता? भगवानाह-'एवं एएणं' इत्यादि।' 'एवं एएणं अभिला-

सिद्धिक बादर पृथिवीकायिक भी पर्याप्तक और अपर्याप्तक के भेद से दो प्रकार के होते हैं। 'एवं एएणं अभिलावेणं तहेव चउक्कओ भेओ भाणियव्वो' जिस प्रकार से पृथिव्यादि से लेकर वनस्पतिकायिकान्त जीवों के चार भेद कहे गये हैं उसी प्रकार से कृष्णलेश्य भवसिद्धिक के इस प्रकरण में पृथिव्यादि एकेन्द्रियों के चार-चार भेद वर्णित करना चाहिये। तात्पर्य यह है कि सूक्ष्म, बादर, पर्याप्तक और अपर्याप्त रूप से समस्त कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीव चार-चार प्रकार के होते हैं। 'कण्हलेस्स भवसिद्धिय अपज्जत्त सुहुमपुढवी काइयाणं भंते! कइ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ' हे भदन्त! कृष्णलेश्या वाले भवसिद्धिक अपर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवों के कितनी कर्मप्रकृतियां कही गई हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'एवं एएणं

લેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવોના કથન પ્રમાણે જ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક બાદર પૃથ્વીકાયિક સંબંધી કથન પણ પર્યાપ્તક અને અપર્યાપ્તકના ભેદથી બે પ્રકારનું સમજવું. 'एवं एएणं अभिलावेणं तहेव चउक्कओ भेओ भाणियव्वो' જે પ્રમાણે પૃથ્વીકાયિક વિગેરેથી લઈને વનસ્પતિકાયિક સુધીના જીવોના સંબંધમાં ચાર ભેદો કહેવામાં આવ્યા છે. એજ પ્રમાણેના ચાર ભેદો કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિકના આ પ્રકરણમાં પૃથ્વીકાયિક વિગેરે એકેન્દ્રિયોનું પણ વર્ણન કરી લેવું. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-સૂક્ષ્મ, બાદર, પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્તકના ભેદથી સઘળા કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવો ચાર-ચાર પ્રકારના હોય છે.

'कण्हलेस्स भवसिद्धिय अपज्जत्तग सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते! कइ कम्म पगडीओ पन्नत्ताओ' હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ

वेणं जहेव ओहिउद्देसए तहेव जाव वेदेंति' एवमेतेन-उपरि प्रदर्शितेन अभिलापेन प्रकारेण तथैव औघिके प्रथमे एकेन्द्रियोद्देशके कथितं तथैव-तेनैव प्रकारेण इहापि भवसिद्धिकप्रकरणेऽपि सर्वं वक्तव्यम्। कियत्पर्यन्तमौघिकप्रकरणं वक्तव्यम्? तत्राह-'जाव' इत्यादि। 'जाव वेदेंति' यावद् वेदयन्ति, कति कर्मप्रकृतयो भवन्तीति प्रश्नादारभ्य चतुर्दशकर्मप्रकृती वेदयन्ति, एतत्पर्यन्तं वक्तव्यम्। तथाहि-कृष्णलेश्य भवसिद्धिकापर्याप्तक सूक्ष्मपृथिवीकायिकादारभ्य कृष्णलेश्य भवसिद्धिकपर्याप्तकबादरवनस्पतिकायिकान्ता अपि एकेन्द्रियजीवा श्चतुर्दश कर्मप्रकृतीनां वेदका भवन्तीति यावत्पदग्राह्यम् औघिक प्रकरणमिति।

अभिलावेणं जहेव ओहियउद्देसए तहेव जाव वेदेंति' हे गौतम! जिस प्रकार से इस अभिलाप द्वारा जैसा कथन औघिक उद्देशक में-प्रथम एकेन्द्रिय उद्देशक में-कहा गया है, उसी प्रकार से यहां इस भवसिद्धिक प्रकरण में भी वही सब कथन कहना चाहिये, और वह सब प्रकरण गत कथन वेदन सूत्र तक का यहां कहना चाहिये, तात्पर्य इस कथन का ऐसा है कि कृष्णलेश्यावाले भसिद्धिक अपर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवों के कितनी कर्मप्रकृतियां होती हैं? इस प्रश्न से लेकर चौदह कर्म प्रकृतियोंका वे वेदन करते हैं यहां तक का सब कथन यहां पर वहां का ज्यों का त्यों करना चाहिये, तथा इसी प्रकार का कथन कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक पर्याप्तक बादर वनस्पतिकायिक तक के समस्त एकेन्द्रिय जीव १४ कर्म प्रकृतियों का वेदन करते हैं।

પૃથ્વીકાયિક જીવોને કેટલી કર્મપ્રકૃતિયો હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिय उद्देसए तहेव जाव वेदेंति' હે ગૌતમ! જે પ્રમાણે આ અભિલાપ દ્વારા ઔઘિક ઉદ્દેશામાં એટલે કે પહેલા એકેન્દ્રિય ઉદ્દેશામાં કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં આ ભવસિદ્ધિક પ્રકરણમાં પણ તે સઘળું કથન સમજી લેવું. અને તે પ્રકરણમાં કહેવામાં આવેલ સઘળું કથન વેદનસૂત્ર સુધીનું અહિયાં કહેવું જોઇએ. આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક અપર્યાપ્ક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોને કેટલી કર્મપ્રકૃતિયો હોય છે? આ પ્રશ્નથી લઇને ૧૪ ચૌદ કર્મપ્રકૃતિયોનું વેદન કરે છે. આ કથન સુધીનું તે પ્રકરણનું કથન જેમનું તેમ અહિયાં સમજી લેવું. જોઇએ. તથા આજ પ્રમાણેનું કથન કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક પર્યાપ્તક બાદર વનસ્પતિકાયિક સુધીના સઘળા એકેન્દ્રિય જીવો ચૌદકર્મ પ્રકૃતિયોનું વેદન કરે છે આ પ્રમાણેનું આ સઘળું કથન ઔઘિક પ્રકરણ અહિયાં યાવત્ શબ્દથી ગ્રહણ કરવામાં આવ્યું છે. તેમ સમજવું.

'कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता' कतिविधाः-कतिप्रकारकाः खलु भदन्त ! अनन्तरोपपन्नकाः कृष्णलेश्या भवसिद्धिका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः ? इति प्रश्नः । भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि 'गोयमा' हे गौतम ! 'पंचविहा अणंतरोववन्नगा' पञ्चविधाः-पंचप्रकारकाः अनन्तरोपपन्नकाः कृष्णलेश्य भवसिद्धिका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः 'जाव' यावत्, यावत्पदेन पृथिवीकायिका अप्कायिका स्तेजस्कायिका वायुकायिका वनस्पतिकायिका इति पञ्चभेदवन्तो भवन्तीति । 'अणंतरोववन्नग कण्हलेस्स भवसिद्धिय पुढवीकाइया णं भंते ! कइविहा पन्नत्ता ?' अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्य भवसिद्धिक पृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? 'गोयमा !' हे गौतम ! 'दुविहा पन्नत्ता' द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । 'तंजहा' तद्यथा-'सुहुमपुढवीकाइया बादरपुढवीका-

इस प्रकार समस्त यह औघिक प्रकरण यहां यावत् शब्द से गृहीत हुआ है।

'कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता' हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं ? 'गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा० जाव वणस्सइकाइया' हे गौतम ! अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीव यावत् वनस्पतिकायिक तक पांच प्रकार के कहे गये हैं। तथा च-ये एकेन्द्रिय जीव पृथिवीकायिक अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक के भेद से पांच प्रकार के होते हैं। 'अणंतरोववन्नग कण्हलेस्स भवसिद्धिय पुढवीकाइया णं भंते ! कइविहा पण्णत्ता' हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक पृथिवीकायिक जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं ? 'गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता' हे गौतम ! ये दो प्रकार के कहे

'कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता' હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? 'गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा जाव वणस्सइकाइया' હે ગૌતમ ! અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવો યાવત્ વનસ્પતિકાયિક સુધી પાંચ પ્રકારના કહેલા છે. તે આ પ્રમાણે સમજવા. પૃથ્વીકાયિક, અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક અને વનસ્પતિકાયિકના ભેદથી પાંચ પ્રકારના સમજવા. 'अणंतरोववण्णग कण्हलेस्स भवसिद्धिय पुढवीकाइयाणं भंते ! कइविहा पण्णत्ता' હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક પૃથ્વીકાયિક જીવો કેટલા પ્રકારના કહ્યા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता' હે ગૌતમ ! આ

इया य' 'सूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च वादरपृथिवीकायिकाश्च। एवम् अनन्तरोपपन्नकाः कृष्णलेश्या भवसिद्धिका अप्कायिकाः सूक्ष्माश्च भवन्ति, बादराश्च भवन्ति। एवं तेजस्कायिका अपि सूक्ष्माश्च बादराश्च, एवं वायुकायिका अपि सूक्ष्माश्च बादरा श्च एवमेव वनस्पतिकायिका अपि सूक्ष्मा भवन्ति बादराश्च भवन्ति 'एवं दुपओ भेओ' एवं द्विपदो भेदो भवति। पर्याप्तत्वाऽपर्याप्तत्वभेदेन चातुर्विध्यं न भवति, अनन्तरोपपन्नकत्वा देवेति। अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्य भवसिद्धिक पृथिवीकायिकादारभ्य अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्य भवसिद्धिक वनस्पतिकायिकान्तेषु सर्वेषु द्विपदो भेदोऽवगन्तव्य इति।

'अनन्तरोववन्नग कण्हलेस्स भवसिद्धिय सुहुमपुढवीकाइया णं भंते! कइ

गये हैं। 'तं जहा' जैसे-सूक्ष्म पृथिवीकायिक और बादर पृथिवीकायिक इसी प्रकार से अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक अप्कायिक जीव भी सूक्ष्म और बादर के भेद से दो प्रकार के होते हैं। तेजस्कायिक वायुकायिक और वनस्पतिकायिक जीव भी इसी प्रकार से सूक्ष्म और बादर के भेद से दो-दो प्रकार के होते हैं। ये सब पर्याप्त और अपर्याप्तक भेद वाले नहीं होते हैं-अतः ये सब ४-४ भेद वाले नहीं कहे गये हैं। क्योंकि अनन्तरोपपन्नक जीवों में ये भेद नहीं होते हैं। इस प्रकार अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्य भवसिद्धिक वनस्पतिकायिक से लेकर अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्य भवसिद्धिक वनस्पतिकायिकान्त सब एकेन्द्रिय जीवों में दो ही भेद होते हैं।

'अनन्तरोववन्नग कण्हलेस्स भवसिद्धिय सुहुमपुढवीकाइया णं

અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક જીવો બે પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. 'तं जहा' તે આ પ્રમાણે છે-સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક અને બાદર પૃથ્વીકાયિક આ રીતે અનંતરોપપન્નક, કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક અપ્કાયિક જીવ પણ સૂક્ષ્મ અને બાદરના ભેદથી બે પ્રકારના હોય છે. તેજસ્કાયિક વાયુકાયિક અને વનસ્પતિકાયિક જીવો પણ આજ પ્રમાણે સૂક્ષ્મ અને બાદરના ભેદથી બબ્બે પ્રકારના હોય છે. આ બધા પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્તના ભેદવાળા હોતા નથી. તેથી આ બધા ૪-૪ ચાર-ચાર ભેદોવાળા કહ્યા નથી. કારણ કે-અનંતરોપ પપન્નક જીવે માં આ ભેદો હોતા નથી. આ રીતે અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક પૃથ્વીકાયિકથી લઈને અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક વનસ્પતિકાયિક સુધીના બધા એકેન્દ્રિય જીવોમાં બેજ ભેદો હોય છે.

'अणंतरोववण्णग कण्हलेस्स भवसिद्धिय सुहुम पुढवीकाइया णं भंते! कइ

कम्मपगडोओ पन्नत्ताओ' अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्यभवसिद्धिकसूक्ष्म पृथिवीकायिकानां भदन्त कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः ? इति प्रश्नः । भगवानाह 'एवं एएणं' इत्यादि, 'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहियो अनन्तरोववन्नग-उद्देसओ तहेव जाव वेदेंति' एवमेतेन अभिलापेन यथैवौधिकोऽनंतरोपपन्नको-द्देशकः कथित स्तथैवाऽत्रापि वर्णयितव्यो यावद्वेदयन्ति । कर्मप्रकृतीनां सत्ता, बन्धनं वेदनं च औधिकाऽनन्तरोपपन्नकोद्देशक कथितमेव वेदितव्यम् इति भावः

'एवं एएणं अभिलावेणं एकारसवि उद्देसगा तहेव भाणियव्वा, जहा ओहिय सए जाव अचरमेत्ति' एवमेतेन अभिलापेन एकादशाऽपि उद्देशका स्तथैव भणित-व्या यथा औधिकशते यावत् अचरम इति । एवम् उपरिदर्शितप्रकारेण परंपरोप-

---

भंते ! कइकम्म पगडीओ पन्नत्ताओ' हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नक कृष्ण-लेश्य भवसिद्धिक सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय जीवों के कितनी कर्म प्रकृतियां कही गई है ? 'गोयमा ! एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ अणंतरोववन्नग उद्देसओ तहेव जाव वेदेंति' हे गौतम ! इस सम्बन्ध में जैसा इस अभिलाप द्वारा औधिक उद्देशक-सामान्य रूप से अनन्तरोपपन्नक उद्देशक कहा गया है-उसी प्रकार से यहां पर भी यावत् वेदन सूत्र तक सब कथन करना चाहिये । अर्थात् कर्मप्रकृ-तियों की सत्ता, उनका बन्धन और वेदन जैसा औधिक अनन्तरोपपन्नक उद्देशक में कहा गया है वही सब यहां पर भी समझना चाहिये ।

'एवं एएणं अभिलावेणं एक्कारस वि उद्देसगा तहेव भाणियव्वा' जहा ओहिय सए जाव अचरिमोत्ति' इस प्रकार अभिलाप द्वारा ११ उद्देशक उसी प्रकार से कहना चाहिये जैसे कि वे औधिक शतक में

'कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ' હે ભગવન અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક એકેન્દ્રિ જીવોને કેટલી કર્મપ્રકૃતિયો કહેવામાં આવેલ છે ? "गोयमा ! एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ अणंतरोववण्णग उद्देसओ तहेव जाव वेदेंति' હે ગૌતમ ! આ સંબંધમાં જે પ્રમાણે આ અભિલાપ દ્વારા ઔધિક ઉદ્દેશામાં એટલે કે સામાન્ય રૂપથી અનંતરોપપન્નક ઉદ્દેશો કહેલ છે. એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ યાવત્ "વેદન સૂત્ર સુધી સઘળું કથન કહેવું જોઈએ. અર્થાત્ કર્મ પ્રકૃતિયોની સત્તા, તેમનું બંધન અને તેમનું વેદન જે રીતે ઔધિક ઉદ્દેશામાં કહેવામાં આવેલ છે, એ સઘળું કથન અહિયાં પણ સમજી લેવું.

'एवं एएणं अभिलावेणं एक्कारसवि उद्देसगा तहेव भाणियव्वा' जहा ओहियसए जाव अचरिमोत्ति' આ પ્રમાણે આ અભિલાપ દ્વારા અગિયાર ઉદ્દે-શાઓ પહેલા કહ્યા પ્રમાણે જ સમજી લેવા. એટલે જે પ્રમાણે ઔધિક

पनक कृष्णलेश्य भवसिद्धिक सूक्ष्मपृथिवीकायिकादिका अचरम भवसिद्धिक सूक्ष्म-पृथिवीकायिकान्ता एकादशोद्देशका औधिकोद्देशकवदेव भणितव्याः ॥

इति षष्ठमेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥ ३३।६॥

अथ सप्तममष्टमं च शतम् ॥

मूलम्—जहा कण्हलेस्स भवसिद्धिएहिं सयं भणियं एवं नीललेस्स भवसिद्धिएहिं वि सयं भाणियव्वं ॥सू० १॥

सत्तमं एगिंदियसयं समत्तं ॥३३-७॥

छाया—यथा कृष्णलेश्यभवसिद्धिकैः शतं भणितम्, नीललेश्य भवसिद्धिकैरपि शतं भणितव्यम् ॥ सप्तममेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥३३।७॥

एवं कापोतलेश्य भवसिद्धिकैरपि शतम् ॥ अष्टममेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥

टीका—'जहा कण्हलेस्सभवसिद्धिएहिं सयं भणियं' यथा—येन प्रकारेण कृष्ण-लेश्यभवसिद्धिकैः शतं भणितम्। कृष्णलेश्यभवसिद्धिकस्य शतं कथितम् 'एवं नीललेस्सभवसिद्धिएहिं वि सयं भाणियव्वं' एवमेव नीललेश्यभवसिद्धिकैरपि

यावत् अचरम उद्देशक तक कहे गये हैं। उसी प्रकार से परम्परोपपन्नक कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक सूक्ष्म पृथिवीकायिक आदि से लेकर अचरम भवसिद्धिक सूक्ष्म पृथिवीकायिक तक के ११ उद्देशक औधिक उद्देशक के जैसे कहना चाहिये।

॥ ६ठा एकेन्द्रिक शतक समाप्त ॥

— ७ वां ८ वां शतक —

'जहा कण्हलेस्स भवसिद्धिएहिं सयं भणियं'

जिस प्रकार से कृष्णलेश्य भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में शतक कहा गया है 'एवं नीललेस्सभवसिद्धिएहिं वि सयं भाणियव्वं' इसी प्रकार से नीललेश्य भवसिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्ब-

---

શતકમાં યાવત્ અચરમ ઉદ્દેશા સુધી કહ્યા છે, એજ પ્રમાણે પરંપરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક સુધીના અગિયાર ૧૧ ઉદ્દેશાઓ ઔધિક ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણેના સમજવા ॥સૂ૦૧॥

॥ છટ્ઠુ એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત ॥

॥સાતમા એકેન્દ્રિય શતક નો પ્રારંભ—

'जहा कण्हलेस्स भवसिद्धिएहिं सयं भणियं'

જે પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં શતક કહેવામાં આવેલ છે. 'एवं नीललेस्स भवसिद्धिएहिं वि सयं भाणियव्वं'

शतं भणितव्यम् । यथा कृष्णलेश्यभवसिद्धिकस्य एकादशोद्देशकात्मकशतमधीतं तथैव नीललेश्यभवसिद्धिकस्यापि एकादशोद्देशकयुक्तं शतमध्येतव्यम् । आलापप्रकारस्तु पूर्ववदेवोहनीयः नवरं कृष्णलेश्यभवसिद्धिकस्थाने 'नीललेश्य भवसिद्धिक इति पदं निवेश्य शतं भणितव्यम् ॥

॥इति सप्तममेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥३३।७।

एवं काउलेस्स भवसिद्धिएहिं वि सयं ॥सू० १॥

अट्ठमं एगिंदियसयं समत्तं ॥३३-८॥

न्ध में भी शतक कहना चाहिये, तात्पर्य यही है कि जैसा कृष्णलेश्य, भवसिद्धिक का ११ उद्देशात्मक शतक कहा गया है वैसा ही नीललेश्य भवसिद्धिक का भी ११ उद्देशकों से युक्त शतक कहना चाहिये। इस सम्बन्ध में आलापक प्रकार पूर्व के जैसा ही उद्भावित करना चाहिये, परन्तु आलापक प्रकार में केवल कृष्णलेश्य भवसिद्धिक के स्थान में नीललेश्य भवसिद्धिक ऐसा पद निवेशित करके शतक कहना चाहिये।

॥ ७ वां एकेन्द्रिय शतक समाप्त ॥

'एवं काउलेस्स भवसिद्धिएहिं वि सयं'

'इसी प्रकार कापोतलेश्यावाले भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीवों का भी आठवां शतक बनाना चाहिये।

એજ પ્રમાણે નીલલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોના સંબંધમાં પણ શતક સમજવું. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-જે પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક જીવોના સંબંધમાં અગિયાર ઉદ્દેશાત્મક શતક કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું નીલલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિકના સંબંધમાં પણ અગિયાર ઉદ્દેશા યુક્ત શતક કહેવું જોઈએ. આ સંબંધમાં આલાપકનો પ્રકાર પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે જ બનાવીને કહી લેવો. આલાપના પ્રકારમાં કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિકના સ્થાને નીલલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એ પ્રમાણેનું પદ મૂકીને શતક સમજવું. એજ તેમાં અને આ કથનમાં ભિન્નપણુ સમજવું. ॥સૂ૦૧॥

॥સાતમું એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત॥

॥આઠમા એકેન્દ્રિય શતકનો પ્રારંભ—

'एवं काउलेस्स भवसिद्धिएहिं वि सयं' ઈત્યાદિ

આજ પ્રમાણે કાપોતલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં પણ આઠમું શતક સમજવું.

'एवं काउलेस्स भवसिद्धिएहि वि सयं' एवमेव कापोतलेश्य भवसिद्धिकैकेन्द्रियजीवाना मपि शतसप्तमं निर्मातव्यम्। नीललेश्यभवसिद्धिकप्रकरणमपि एकादशोद्देशात्मकं ज्ञातव्यम्, आलापप्रकाराः स्वयमेवोहनीया इति ॥सू०

अष्टममेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥ ३३-८॥

॥ अथ नवमं शतम् ॥

मूलम्-कइविहाणं भंते! अभवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता? गोयमा! पंचविहा अभवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता, तं जहा-पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया। एवं जहेव भवसिद्धिय सयं भणियं तहेव अभवसिद्धियसयं वि भाणियव्वं। नवरं नव उद्देसगा चरमअचरमोद्देसगवज्जा सेसं तहेव ॥सू० १॥

नवमं एगिंदिय सयं समत्तं ॥३३-९॥

छाया-कतिविधाः खलु भदन्त! अभवसिद्धिका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः? गौतम! पञ्चविधा अभवसिद्धिका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ता, तद्यथा-पृथिवीकायिका यावद्वनस्पतिकायिकाः। एवं यथैव भवसिद्धिकशतं भणितं तथैवाभवसिद्धिक-शतमपि भणितव्यम्। नवरं नवोद्देशकाश्चरमाचरमोद्देशकवर्जाः, शेषं तथैव' ॥सू.

नवममेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥३३।९॥

जैसा नीललेश्य भवसिद्धिक प्रकरण ११ उद्देशात्मक है वैसा ही कापोतलेश्य भवसिद्धिक प्रकरण भी ११ उद्देशात्मक है इस सम्बन्ध में आलाप प्रकार अपने आप उद्भावित करना चाहिये।

॥ ३३ वें शतक का आठवां एकेन्द्रिय शतक समाप्त ॥

---नौवां शतक---

'कइविहा णं भंते! अभवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता' इत्यादि

અર્થાત્—જે પ્રમાણે નીલલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક જીવોનું અગિયાર ઉદ્દેશાત્મક પ્રકરણ કહ્યું છે. એજ પ્રમાણે અગિયાર ઉદ્દેશાઓવાળું કાપોતલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક જીવોનું પણ પ્રકરણ સમજવું. આ સંબંધમાં આલાપકનો પ્રકાર સ્વયં બનાવીને સમજી લેવો ॥સૂ૦૧॥

॥આઠમું એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત॥

॥નવમા એકેન્દ્રિય શતકનો પ્રારંભ—

'कइविहा णं भंते! अभवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता' ઈત્યાદિ

शतं भणितव्यम् । यथा कृष्णलेश्यभवसिद्धिकस्य एकादशोद्देशकात्मकशतमधीतं तथैव नीललेश्यभवसिद्धिकस्यापि एकादशोद्देशकयुक्तं शतमध्येतव्यम् । आलापप्रकारस्तु पूर्ववदेवोहनीयः नवरं कृष्णलेश्यभवसिद्धिकस्थाने 'नीललेश्य भवसिद्धिक इति पदं निवेश्य शतं भणितव्यम् ॥

॥इति सप्तममेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥३३।७।

एवं काउलेस्स भवसिद्धिएहिं वि सयं ॥सू० १॥

अट्ठमं एगिंदियसयं समत्तं ॥३३—८॥

न्ध में भी शतक कहना चाहिये, तात्पर्य यही है कि जैसा कृष्णलेश्य, भवसिद्धिक का ११ उद्देशात्मक शतक कहा गया है वैसा ही नीललेश्य भवसिद्धिक का भी ११ उद्देशकों से युक्त शतक कहना चाहिये। इस सम्बन्ध में आलापक प्रकार पूर्व के जैसा ही उद्भावित करना चाहिये, परन्तु आलापक प्रकार में केवल कृष्णलेश्य भवसिद्धिक के स्थान में नीललेश्य भवसिद्धिक ऐसा पद निवेशित करके शतक कहना चाहिये।

॥ ७ वां एकेन्द्रिय शतक समाप्त ॥

'एवं काउलेस्स भवसिद्धिएहिं वि सयं'

'इसी प्रकार कापोतलेश्यावाले भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीवों का भी आठवां शतक बनाना चाहिये।

એજ પ્રમાણે નીલલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોના સંબંધમાં પણ શતક સમજવું. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે—જે પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક જીવોના સંબંધમાં અગિયાર ઉદ્દેશાત્મક શતક કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું નીલલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિકના સંબંધમાં પણ અગિયાર ઉદ્દેશા યુક્ત શતક કહેવું જોઈએ. આ સંબંધમાં આલાપકનો પ્રકાર પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે જ બનાવીને કહી લેવો. આલાપના પ્રકારમાં કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિકના સ્થાને નીલલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એ પ્રમાણેનું પદ મૂકીને શતક સમજવું. એજ તેમાં અને આ કથનમાં ભિન્નપણુ સમજવું. ॥સૂ૦૧॥

॥સાતમું એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત॥

॥આઠમા એકેન્દ્રિય શતકનો પ્રારંભ—

'एवं काउलेस्स भवसिद्धिएहिं वि सयं' ઈત્યાદિ

આજ પ્રમાણે કાપોતલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં પણ આઠમું શતક સમજવું.

'एवं काउलेस्स भवसिद्धिएहि वि सयं' एवमेव कापोतलेश्य भवसिद्धिकैकेन्द्रियजीवाना मपि शतमष्टमं निर्मातव्यम्। नीललेश्यभवसिद्धिकप्रकरणमपि एकादशोद्देशात्मकं ज्ञातव्यम्, आलापप्रकाराः स्वयमेवोहनीया इति ॥सू०

अष्टमसैकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥३३-८॥

॥ अथ नवमं शतम् ॥

मूलम्-कइविहाणं भंते! अभवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता? गोयमा! पंचविहा अभवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता, तं जहा-पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया। एवं जहेव भवसिद्धिय सयं भणियं तहेव अभवसिद्धियसयं वि भाणियव्वं। नवरं नव उद्देसगा चरमअचरमोद्देसगवज्जा सेसं तहेव ॥सू० १॥

नवमं एगिंदिय सयं समत्तं ॥३३-९॥

छाया-कतिविधाः खलु भदन्त! अभवसिध्दिका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः? गौतम! पञ्चविधा अभवसिद्धिका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ता, तद्यथा-पृथिवीकायिका यावद्वनस्पतिकायिकाः। एवं यथैव भवसिद्धिकशतं भणितं तथैवाभवसिद्धिकशतमपि भणितव्यम्। नवरं नवोद्देशकाश्चरमाचरमोद्देशकवर्जाः, शेषं तथैव' ॥सू.

नवममेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥३३।९॥

जैसा नीललेश्य भवसिद्धिक प्रकरण ११ उद्देशात्मक है वैसा ही कापोतलेश्य भवसिद्धिक प्रकरण भी ११ उद्देशात्मक है इस सम्बन्ध में आलाप प्रकार अपने आप उद्भावित करना चाहिये।

॥ ३३ वें शतक का आठवां एकेन्द्रिय शतक समाप्त॥

---नौवां शतक---

'कइविहा णं भंते! अभवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता' इत्यादि

અર્થાત્--જે પ્રમાણે નીલલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક જીવોનું અગિયાર ઉદ્દેશાત્મક પ્રકરણ કહ્યું છે. એજ પ્રમાણે અગિયાર ઉદ્દેશાઓવાળું કાપોતલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક જીવોનું પણ પ્રકરણ સમજવું. આ સંબંધમાં આલાપકનો પ્રકાર સ્વયં બનાવીને સમજી લેવો. ॥સૂ૦૧॥

॥આઠમું એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત॥

॥નવમા એકેન્દ્રિય શતકનો પ્રારંભ—

'કઇવિહા ણં ભંતે! અભવસિદ્ધિયા એગિંદિયા પણ્ણત્તા' ઇત્યાદિ

टीका-'कइविहा णं भंते ! अभवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता' कतिविधाः खलु भदन्त ! अभवसिद्धिका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः ? 'गोयमा' पंचविहा अभवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता' हे गौतम ! अभवसिद्धिका एकेन्द्रियाः पंचविधाः प्रज्ञप्ता', 'तं जहा' तद्यथा-'पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया' पृथिवीकायिका यावद्वनस्पतिकायिकाः अत्र यावत्पदेन अप्कायिका स्तेजस्कायिका वायुकायिका एतेषां संग्रहो भवति। तथा च पृथिवीकायिकाऽप्कायिकतेजस्कायिकवायुकायिकवनस्पतिकायिकभेदात् पञ्चप्रकारका अभवसिद्धिकैकेन्द्रिया भवन्ति। 'एवं जहेव भवसिद्धियसयं भणियं एवं अभवसिद्धियसयं वि भाणियव्वं' एवं यथैव भवसिद्धिकशतं भणितं तथैव अभवसिद्धिकशतमपि भणितव्यम्। किन्तु भवसिद्धिकशतापेक्षया यद् वैलक्षण्यं तदिह दर्शयन्नाह-'नवरं' इत्यादि।

टीकार्थ-हे भदन्त ! एकेन्द्रिय अभवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं ? 'गोयमा ! पंचविहा अभवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता' हे गौतम ! अभवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीव पांच प्रकार के कहे गये हैं। 'तं जहा' वे ये हैं-'पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया' पृथिवीकायिक यावत् वनस्पतिकायिक, यहां यावत् पद से 'अप्कायिक, तेजस्कायिक और वायुकायिक इनका ग्रहण किया गया है तथा-च पृथिवीकायिक अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, और वनस्पतिकायिक के भेद से अभवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीव पांच प्रकार के होते हैं। 'एवं जहेव भवसिद्धिय सयं भणियं एवं अभवसिद्धियसयं वि भाणियव्वं' जैसा भवसिद्धिक शतक कहा गया है उसी प्रकार से अभवसिद्धिक शतक भी कहना चाहिये किन्तु उसकी अपेक्षा जो इस शतक में भिन्नता

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! पंचविहा अभवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता' હે ગૌતમ ! અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિ જીવ પાંચ પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. 'तं जहा' તે આ પ્રમાણે છે. 'पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया' પૃથ્વીકાયિક યાવત્ વનસ્પતિકાયિક યાવત્પદથી અપ્કાયિક તેજસ્કાયિક વાયુકાયિક અને વનસ્પતિકાયિકનું ગ્રહણ થયેલ છે. એટલે કે-પૃથ્વીકાયિક અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક અને વનસ્પતિકાયિકના ભેદથી અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવો પાંચ પ્રકારના હોય છે 'एवं जहेव भवसिद्धिय सयं भणियं अभवसिद्धियसयं वि भाणियव्वं' ભવસિદ્ધિક શતકમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એ જ પ્રમાણે અભવસિદ્ધિક શતક પણ સમજી લેવું. પરંતુ તે

'नवरं नव उद्देसगा चरम अचरम उद्देसगवज्जा' नवरं नवउद्देशकाश्चरमाचरमोद्देशकवर्जाः चरमाचरमदशमैकादशोद्देशकरहिताः औघिक भवसिद्धिकोऽनन्तरोपपन्नक परम्परोपपन्नकाऽनन्तरावगाढ परम्परावगाढानन्तराहारक परम्पराहारकाऽनन्तरपर्याप्त परम्परपर्याप्तकानैवोद्देशकाः अभवसिद्धिकशते पठनीयाः चरमाचरमोद्देशकौ तु इह न संभवतः। अभवसिद्धिकस्वभावत्वादेवेति ॥

॥नवममेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥३३।९॥

अथ दशममेकादशं द्वादशं च शतम्।

मूलम्—एवं कण्हलेस्स अभवसिद्धियसयं पि

दसमं एगिंदियसयं समत्तं ॥३३–१०॥

नीललेस्स अभवसिद्धिय एगिंदिएहि वि सयं ॥३३–११

है वह 'नवरं नव उद्देसगा चरम अचरम उद्देसगवज्जा' इस सूत्रपा द्वारा प्रकट की गई है। यहां चरम उद्देशक और अचरम उद्देशक ये उद्देशकों को छोड़कर बाकी के नौ उद्देशक होते हैं। इनमें एक औघि अभवसिद्धिक उद्देशक १ अनन्तरोपपन्नक द्वितीय उद्देशक २ परम्परोपपन्नक तृतीय उद्देशक ३ अनन्तरावगाढ चतुर्थ उद्देशक ४ परम्परा गाढ पांचवां उद्देशक ५ अनन्तराहारक छठा उद्देशक परम्पराहार सातवां उद्देशक ७, अनन्तर पर्याप्तक ८ वां उद्देशक और परम्परपर्याप्त ९ वां उद्देशक हैं, ये नौ ही उद्देशक इस अभवसिद्धिक शतक में पठनी हैं। अभवसिद्धिक स्वभाव होने के कारण यहां चरम और अचर ये दो उद्देशक संभवित नहीं हैं। ९ वां एकेन्द्रिय शतक समाप्त

કથન કરતાં આ શતકમાં જુદાપણું છે, તે 'नवरं नव उद्देसगा चरम अचरम उद्देसगवज्जा' આ સૂત્ર પાઠદ્વારા પ્રગટ કરેલ છે અહિયા ચરમ ઉદ્દેશો અને અચરમ ઉદ્દેશો આ બે ઉદ્દેશાને છોડીને બાકીના નવ ઉદ્દેશાઓ થાય છે. આમ એક ઔઘિક અભવસિદ્ધિક ઉદ્દેશો ૧ અનન્તરોપપન્નક સંબંધી બીજો ઉદ્દેશો ૨ પરંપરોપપન્નક સંબંધી ત્રીજો ઉદ્દેશો ૪ અનંતરાવગાઢ સંબંધી ચોથે ઉદ્દેશો ૪ પરંપરાવગાઢ સંબંધી પાંચમો ઉદ્દેશો ૫ અનંતરાહારક સંબંધી છઠો ઉદ્દેશો ૬ પરંપરાહારક સંબંધી સાતમો ઉદ્દેશો ૭ અનંતરપર્યાપ્તક સંબંધી આઠમો ઉદ્દેશો ૮ અને પરંપર પર્યાપ્તક સંબંધી નવમો ઉદ્દેશો ૯ આ નવ જ ઉદ્દેશાઓ આ અભવસિદ્ધિક શતકમાં કહેવા જોઈએ. અભવસિદ્ધિક સ્વભાવ હોવાથી અહિયાં ચરમ અને અચરમ એ બે ઉદ્દેશાઓ સંભવતા નથી ॥સૂ૦૧॥

॥નવમું એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત॥

काउलेस्स अभवसिद्धियसयं ॥३३-१२॥

एवं चत्तारि वि अभवसिद्धिय सयाणि णव णव उद्देसगाणि भवंति। एयाणि बारस एगिंदियसयाणि भवंति ॥३१-१२॥

तेत्तीसइमं सयं समत्तं ॥३३॥

छाया-एवं कृष्णलेश्याभवसिद्धिकैकेन्द्रियशतमपि ॥३३।१०॥
नीललेश्याऽभवसिद्धिकैकेन्द्रियैरपि शतम् ॥३३।११॥
कापोतलेश्याऽभवसिद्धिकशतम् ॥३३।१२॥
एवं चत्वार्यपि अभवसिद्धिकशतानि नवनवोद्देशकानि भवन्ति।
एवम् एतानि द्वादश एकेन्द्रियशतानि भवन्ति ॥३३।१०-११-२॥

॥ त्रयस्त्रिंशत्तमं शतं समाप्तम् ॥ ३३ ॥

टीका-'एवं कण्हलेस्स अभवसिद्धियसयं' एवम्-औघिकाऽभवसिद्धिकशतमिव कृष्णलेश्याऽभवसिद्धिकैकेन्द्रियशतमपि ज्ञातव्यम् ॥३३।३०॥

दशममेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ।१०॥

'नीललेस्स अभवसिद्धिय एगिंदिएहिं वि सयं' एवं कृष्णलेश्याभवसिद्धिकैकेन्द्रियशतमिव नीललेश्याभवसिद्धिकैकेन्द्रियैरपि शतं ज्ञातव्यम् ॥३३।११॥

-॥ १० वां १२ वां एकेन्द्रिय शतक -॥

'एवं कण्हलेस्स अभवसिद्धिय एगिंदियसयं पि -३३-१०

औघिक अभवसिद्धिक शतक के जैसा ही कृष्णलेश्य अभवसिद्धिक एकेन्द्रिय शतक भी है, ऐसा जानना चाहिये, 'नीललेस्स अभवसिद्धिय एगिंदिएहिं वि सय' कृष्णलेश्य अभवसिद्धिक एकेन्द्रिय शतक के जैसा ही नीललेश्य अभवसिद्धिक एकेन्द्रिय शतक है। ३३-११॥

અગિયારમા એકેન્દ્રિય શતકનો પ્રારંભ—

'एवं कण्हलेस्स अभवसिद्धिय सयं पि' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—ઔધિક અભવસિદ્ધિક શતકમાં કહ્યા પ્રમાણે જ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોનું શતક પણ એજ પ્રમાણે છે. તેમ સમજવું,

'नीललेस्स अभवसिद्धियएगिंदिएहिं वि सयं' કૃષ્ણલેશ્ય અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય શતકના કથન પ્રમાણે જ નીલલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયનું શતક સમજવું. ॥સૂ૦૧॥

અગિયારમું એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત

'काउलेस्स अभवसिद्धियसयं' एवमेव नीललेश्याभवसिद्धकशतमिव कापोतलेश्याभवसिद्धिकशतमपि ज्ञातव्यम् ॥१२॥

'एवं चत्तारि वि अभवसिद्धियसयाणि' एवम्-उपरिदर्शित-क्रमेण चत्वार्यपि औधिकाभवसिद्धिक-कृष्ण-नील-कापोतलेश्यकाभवसिद्धिकरूपाणि अभवसिद्धिकानां शतानि 'णवणवउद्देसगा भवंति' नवनवोद्देशकानि-नवनवोद्देशकात्मकानि औधिकाभवसिद्धिकोद्देशमाश्रित्य अनन्तरोपपन्नकपरम्परोपपन्नकानन्तरावगाढ परम्परावगाढानन्तराहारक परम्पराहारकानन्तरपर्याप्तक परम्परपर्याप्तक रूपाणि भवन्ति । अभवसिद्धिस्वभावात्, चरमाचरमरूपौ दशमैकादशोद्देशौ न भवत

'काउलेस्स अभवसिद्धिय सयं'-नीललेश्य अभवसिद्धिक एकेन्द्रिय शतक के जैसा कापोतलेश्य अभवसिद्धिक शतक है ॥ ३३-१२॥-

'एवं चत्तारि वि अभवसिद्धिय सयाणि' इस प्रकार चार शतक अभवसिद्धिक एकेन्द्रिय शतक है ? दूसरा कृष्णलेश्य अभवसिद्धिक एकेन्द्रिय शतक हैं २ तीसरा नीललेश्य अभवसिद्धिक एकेन्द्रिय शतक है ३ चौथा कापोतलेश्य अभवसिद्धिक एकेन्द्रिय शतक है ४ इन शतकों में 'णव णव उद्देसगा भवंति' प्रत्येक शतक में ९-९ उद्देशक हैं। औधिक को आश्रित करके अर्थात् इस को लेकर अनन्तरोपपन्नक, परम्परोपपन्नक अनन्तरावगाढ, परम्परावगाढ अनन्तराहारक परम्पराहारक, अनन्तरपर्याप्तक और परम्पर पर्याप्तक ये और नौ उद्देशक होते हैं ।.अभव-

'काउलेस्स अभवसिद्धियसयं'
નીલલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય શતકના કથન પ્રમાણે કાપોતલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોનું શતક પણ સમજવું. ॥૩૩-૧૨॥

'एवं चत्तारि वि अभवसिद्धिया सयाणि' આ પ્રમાણે ચાર શતકો અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં કહેવામાં આવ્યા છે. તેમાં એક સામાન્ય પણાથી અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય શતક કહેલ છે. કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય અભવસિદ્ધિક જીવ સંબંધી બીજું શતક કહ્યું છે. ૨ નીલલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય સંબંધી ત્રીજું શતક કહેલ છે. ૩ કાપોતલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય સંબંધી ચોથું શતક કહેલ છે. ૪ આ દરેક શતકોમાં 'णव णव उद्देसगा भवंति' નવ નવ ઉદ્દેશાઓ કહેવામાં આવ્યા છે. ઔધિક ભવસિદ્ધિક ઉદ્દેશાનો આશ્રય કરીને અનંતરોપપન્નક પરંપરોપપન્નક. અનંતરાવગાઢ પરંપરાવગાઢ, અનંતરાહારક, પરંપરાહારક અનંતર પર્યાપ્તક, અને પરંપર પર્યાપ્તક, આ પ્રમાણેના તે ઉદ્દેશાઓ કહ્યા છે. અભવસિદ્ધિક સ્વભાવવાળા હોવાથી આ એકેન્દ્રિયોને ચરમ અને અચરમ

इति । 'एवं एयाणि बारस एगिंदियसयाणि भवंति' एवमुपरिपरिदर्शितक्रमेण एतानि पूर्वोक्तानि द्वादशैकेन्द्रियशतानि भवन्ति ।

सामान्यत एकेन्द्रियाणां प्रथमं शतम् १ । कृष्णलेश्य नीललेश्य कापोतलेश्यानां त्रय इति मिलित्वा चत्वारि ४, तथा औधिकभवसिद्धिकैकेन्द्रियैः कृष्णलेश्य नीललेश्य कापोतलेश्यैः त्रीणि शतानि ८ । तथा अभवसिद्धिकानामपि चत्वारि औधिक कृष्णनील कापोतरूपाणि इति सर्व सङ्कलनया द्वादशशतानि भवन्ति । अष्टसु शतेषु प्रत्येकस्मिन् एकादश एकादशोद्देशकाः, अभवसिद्धिकानां चतुर्णां तु

सिद्धि स्वभाववाले होने से इन एकेन्द्रियों के चरम और अचरम रूप १० वां और ११ वां ऐसे ये दो उद्देशक नहीं कहे गये हैं। 'एवं एयाणि बारस एगिंदियसयाणि भवंति' इस प्रकार से एकेन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में १२ एकेन्द्रिय शतक होते हैं–

सामान्य रूप से एकेन्द्रियों का प्रथम शतक एवं कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले, कापोतलेश्यावाले एकेन्द्रियों के तीन शतक-मिलकर चार शतक होते हैं-तथा-च-औधिक भवसिद्धिक एकेन्द्रियों को लेकर कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले और कापोतलेश्यावाले भवसिद्धिक एकेन्द्रियों के ३ शतक-मिलकर आठ शतक होते हैं। तथा अभवसिद्धिक एकेन्द्रियों के भी चार शतक हैं-एक औधिक और तीन कृष्ण, नील, कापोतलेश्याओ को लेकर सब मिलकर १२ शतक होते है। इनमें

રૂપ ૧૦ દસમો અને ૧૧ અગિયારમો એ બે ઉદ્દેશાઓ કહેવામાં આવેલ નથી.

'एवं एयाणि बारस एगिंदिया सयाणि भवंति' આ પ્રમાણે એકઇન્દ્રિય વાળા જીવોના સંબંધમાં ૧૨ બાર એકેન્દ્રિય શતકો કહ્યા છે.

સામાન્ય પણાથી એકેન્દ્રિયોનું પહેલું શતક અને કૃષ્ણલેશ્યાવાળા, નીલ લેશ્યાવાળા, કાપોતલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિયોના ત્રણ શતકો મળીને ચાર શતકો થાય છે. તથા ઔધિક ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોને લઈને કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નીલ-લેશ્યાવાળા અને કાપોતિક લેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિકના ત્રણ શતકો મળીને આઠ શતકો થાય છે. તથા અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોના સંબંધમાં પણ ચાર શતકો કહેવામાં આવેલા છે તે આ રીતે સમજવા-એક ઔધિક સંબંધી અને કૃષ્ણલેશ્યાયુક્ત, નીલલેશ્યા યુક્ત અને કાપોતલેશ્યા યુક્ત એમ ત્રણ શતકો થાય છે, બધા મળીને બાર શતકો થાય છે. આમાં આઠ શતકોમાં દરેક શતકોમાં ૧૧-૧૧ અગિયાર અગિયાર ઉદ્દેશાઓ થાય છે. ચાર અભવ

नवनवैवोदेशकाश्चरमाचरमवर्जिता इति। तदेवोदेशकानां सर्वसंकलनया चतुर्विंशत्यधिकशतमुद्देशकानां भवतीति ॥

इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यानैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित — कोल्हापुरराजगुरु-
बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य - जैनधर्मदिवाकर
पूज्य श्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री
"भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायाम् त्रयस्त्रिंशत्तमशतकस्य
दशममेकादश द्वादशशतानि
समाप्तानि ॥१०-११-१२॥
समाप्तं च त्रयस्त्रिंशत्तमं शतकम् ।

आठ शतकों में प्रत्येक शतक में ११-११ उद्देशक हैं। चार अभवसिद्धिकों के नौ-नौ उद्देशक हैं। यहां अचरम उद्देशक छूट जाते हैं। इस समस्त उद्देशकों की संख्या १२४ होती है। ११ वां १२ वां एकेन्द्रिय शतक समाप्त ॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके तेतीसवें शतक का दसवां ग्यारहवां और बारहवां अवान्तरशतक समाप्त ।३३-१०-१२।

॥ प्रथम एकेन्द्रिय शतक समाप्त ॥

॥ ३३ वां शतक समाप्त ॥

સિદ્ધિકોના નવ-નવ ઉદ્દેશાઓ થાય છે. તેમાં ચરમ ઉદ્દેશક અને અચરમ ઉદ્દેશક એ બે ઉદ્દેશાઓ છોડી દેવામાં આવેલ છે. આ રીતે આ બધા ઉદ્દેશાઓની કુલ સંખ્યા ૧૨૪ એકસોને ચોવીસની થાય છે. ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત "ભગવતીસૂત્ર"ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના તેત્રીસમા શતકના દસ અગીયાર અને બારમું અવાન્તર શતક સમાપ્ત ॥૩૩-૧૦-૧૨॥

॥એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત॥

॥તેત્રીસમું શતક સમાપ્ત॥

अथ चतुस्त्रिंशत्तमं शतकम्।

त्रयस्त्रिंशत्तमे शतके एकेन्द्रियजीवानां निरूपणं कृतम्, चतुस्त्रिंशत्तमेऽपि शतके एकेन्द्रियजीवा एव विग्रहगत्यादि प्रकारान्तरेण निरूप्यन्ते। तदनेन सम्बन्धेनायातस्य चतुस्त्रिंशच्छतकस्य द्वादश शतोपेतस्य इदमादिमं सूत्रम्-'कइविहा णं भंते!' इत्यादि।

मूलम्-कइविहा णं भंते! एगिंदिया पन्नत्ता? गोयमा! पंचविहा एगिंदिया पन्नत्ता। तं जहा-पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया। एवं एएणं चेव चउक्कएणं भेएणं भाणियव्वं जाव वणस्सइकाइया। अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते! कइसमएण विग्गहेणं उववज्जेज्जा? गोयमा! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ, एगसमइएण वा दुसमइएण वा जाव उववज्जेज्जा, एवं खलु गोयमा! मए सत्त सेढीओ पन्नत्ताओ, तं जहा उज्जुयायया सेढी १, एगओ वंका २, दुहओ वंका ३, एगयओ खहा४, दुहओ खहा५, चक्कवाला६, अद्धचक्कवाला७, उज्जुयायताए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा। एगयओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा। दुहओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा! जाव उववज्जेज्जा। अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइएणं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते पज्जत्तसुहुमपुढवी-

स्थानात्समुत्पत्ति स्थानम् अधस्तने उपरितने वा प्रतरे विश्रेण्यां भवेत् तदा द्विवक्राश्रेणिः स्यात्, तत्र च समयत्रयेण समुत्पत्तिस्थानस्य प्राप्तिर्भवेदिति भावः।

'से तेणट्ठेणं गोयमा! जाव उववज्जेज्जा' तत्तेनार्थेन हे गौतम! यावद् उत्पद्येत। अत्र यावत्पदेन एवमुच्यते, एकसामयिकेन वा, द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, विग्रहेणोत्पन्नस्य प्रकरणस्य संग्रहो भवति। 'अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइया णं भंते!' अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त! 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए' एतस्याः रत्नप्रभायाः पृथिव्याः, 'पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः मरणान्तिकसमुद्घातेन समवहननं कृतवान् मृत इत्यर्थः। 'समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए' समवहत्य

वह तीन समयवाले विग्रह से वहां उत्पन्न होता है। तात्पर्य यह है कि जब मरण स्थान से समुत्पत्ति स्थान नीचे के अथवा ऊपर के प्रतर में विश्रेणी में होता है तब द्विवक्रा श्रेणी होती है। वहां तीन समय में समुत्पत्ति स्थान की प्राप्ति होती है। 'से तेणट्ठेणं गोयमा! जाव उववज्जेज्जा' इस कारण हे गौतम! मैंने ऐसा कहा है कि वह एक समय वाले दो समय वाले अथवा तीन समय वाले विग्रह से वह उत्पन्न हो सकता है।

'अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइया णं भंते!' हे भदन्त! कोई अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए' इस रत्नप्रभा पृथिवी के 'पुरत्थिमिल्ले चरिमंते' पूर्वदिशा के अन्तिम भागमें 'समोहए' मरा 'समोहणित्ता' और मरकर वह 'जे भविए इमीसे रय-

---

ત્યારે તે ત્રણ સમયવાળા વિગ્રહ (શરીર)થી ઉત્પન્ન થાય છે. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-જ્યારે મરણ સ્થાનથી ઉત્પત્તિસ્થાન નીચેના અથવા ઉપરના પ્રતરમાં વિશ્રેણીમાં હોય છે. ત્યારે 'દ્વિધાતોવક્રા' શ્રેણી થાય છે. ત્યાં ત્રણ સમયમાં ઉત્પત્તિ સ્થાનની પ્રાપ્તિ થાય છે. 'से तेणट्ठेणं गोयमा! जाव उववज्जेज्जा' તે કારણથી હે ગૌતમ! મેં એવું કહ્યું છે કે-તે એક સમયવાળા બે સમયવાળા અથવા ત્રણ સમયવાળા વિગ્રહ-શરીરથી ઉત્પન્ન થઈ શકે છે.

'अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइयाणं भंते! હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए' આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના 'पुरत्थिमिल्ले चरिमंते' પૂર્વ દિશાના અંતિમ ભાગમાં 'समोहए' મરણ પામે 'समोहणित्ता' અને મરણ પામીને 'जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्च-

मारणान्तिक-समुद्घातं कृत्वा यो भव्यः-योग्यः एतस्या रत्नप्रभायाः, पृथिव्याः 'पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते' पाश्चात्ये चरमान्ते, 'पज्जत्त सुहुम पुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया उत्पत्तुम्, 'से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' स खलु भदन्त ! जीवः-कति सामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येतेति प्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि। 'गोयमा' हे गौतम ! 'एगसमइएण वा, सेसं तंचेव' एकसामयिकेन वा शेषं तदेव प्रतिवचनावसरे पूर्वप्रकरणस्थेन अत्राध्येतव्यम्। हे गौतम ! एकसामयिकेन वा विग्रहेण, द्विसामयिकेन वा विग्रहेण, त्रिसामयिकेन वा, विग्रहेण उत्पद्येत। कियत्पर्यन्तं पूर्वप्रकरणम् इह ज्ञातव्यं तत्राह-'जाव' इत्यादि। जाव से तेणट्ठेणं' यावत्तत्तेनार्थेन, अयमाशयः द्विसामयिकेन वेत्यारभ्य 'से केणट्ठेणं' इत्यादि प्रश्न स्तदुत्तरं चात्र पूर्ववद्वाच्यम्। 'से तेणट्ठेणं जाव विग्गहेणं उववज्जेज्जा' यावत् हे गौतम ! तत्तेनार्थेन एवमुच्यते-एकसामयिकेन वा, द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, विग्रहेण उत्पद्येत इति २।

णप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते पज्जत्तसुहुम पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए' इसी रत्नप्रभा पृथिवी के पश्चिमदिशा के अन्तिम भाग में पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न होने के योग्य हुआ तो 'से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' हे भदन्त ! वह कितने समय वाले विग्रह से वहां उत्पन्न होता है ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! एगसमइएण वा सेसं तं चेव' हे गौतम ! वह वहां एक समयवाले विग्रह से अथवा दो समय वाले विग्रह से अथवा तीन समय वाले विग्रह से उत्पन्न होता है। 'जाव से तेणट्ठेणं जाव विग्गहेणं उववज्जेज्जा' ऐसा यह सब कथन वहां तक कर लेना चाहिये कि जहाँ गौतमस्वामी के पूछने पर प्रभुश्री ने गौतमस्वामी से ऐसा कहा है कि हे गौतम ! मैंने इस कारण से ऐसा कहा है कि वह

त्थिमिल्ले चरिमंते पज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમ દિશાના છેલ્લા ભાગમાં પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વિકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય હોય તો-'से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' હે ભગવન્ તે કેટલા સમયવાળા વિગ્રહ (શરીર)થી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-गोयमा। एगसमएण वा सेसं तं चेव' હે ગૌતમ! તે ત્યાં એક સમયવાળા વિગ્રહ (શરીર)થી અથવા બે સમયવાળા વિગ્રહથી ઉત્પન્ન થાય છે 'जाव से तेणट्ठेणं जाव विग्गहेणं उववज्जेज्जा' આ પ્રમાણેનું તે સઘળું કથન ત્યાં સુધી કહેવું જોઈએ જ્યાં સુધી ગૌતમસ્વામીના પૂછવાથી પ્રભુશ્રી એ ગૌતમસ્વામીને એવું કહ્યું છે કે-હે ગૌતમ! મેં

'एवं अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइओ पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहणावेत्ता पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते बायरपुढवीकाइएसु अपज्जत्तएसु उववाएयव्वो' एवं यथा-अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकस्य रत्नप्रभापृथिव्याः पूर्वभागात् समवहननानन्तरं रत्नप्रभापृथिव्याः पश्चिमभागे पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकेषु उपपातो दर्शित स्तथैव अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकः तं पौरस्त्ये चरमान्ते समवघात्य—तस्य समुद्घातं कारयित्वा पाश्चात्ये चरमान्ते बादरपृथिवीकायिकेषु अपर्याप्तकेषु उपपातयितव्यः। अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकः खलु भदन्त! अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पूर्व-चरम भागे समवहतः समवहत्य यः खलु रत्नप्रभायाः पश्चिमे भागे अपर्याप्त बादर

एक समयवाले दो समयवाले अथवा तीन समय वाले विग्रह से उत्पन्न होता है।२

'एवं अपज्जत्त सुहुमपुढविकाइओ पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहणा-वेत्ता पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते बायरपुढवीकाइएसु अपज्जत्तएसु उववा-एयव्वो' जैसा अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक का रत्नप्रभा पृथिवी के पूर्व भाग से समुद्घात होने के अनन्तर रत्नप्रभा पृथिवी के पश्चिम भाग में पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकों में उपपात दिखाया है उसी प्रकार से-वैसा ही-अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकका पूर्वदिशा के चर-मान्त में समुद्घात करवा कर पश्चिमदिशा के चरमान्त में अपर्याप्त बादर पृथिवीकायिकों में उत्पाद दिखलाना चाहिये। इस सम्बन्ध में आलाप प्रकार ऐसा है—हे भदन्त! कोई अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव रत्नप्रभा पृथिवी के पूर्व चरम भाग में मरा और मरकर वह रत्न-प्रभापृथिवी के पश्चिम भाग में अपर्याप्त बादर पृथिवीकायिकों में उत्पन्न

તે કારણથી એવું કહ્યું છે કે—તે એક સમયવાળા, બે સમયવાળા અથવા ત્રણ સમયવાળા વિગ્રહ (શરીર)થી ઉત્પન્ન થાય છે.

'एवं अपज्जत्त सुहुम पुढविकाइओ पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहणावेत्ता पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते। बायरपुढविकाइएसु अपज्जत्तएसु उववाएयव्वो' અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વિકાયિકનો રત્નપ્રભા પૃથ્વિના પૂર્વ ભાગથી સમુદ્ઘાત થયા પછી રત્નપ્રભા પૃથ્વિના પશ્ચિમ ભાગમાં પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકોમાં ઉપપાત જે પ્રમાણે બતાવ્યો છે, એજ પ્રમાણે અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વિકાયિક નો પૂર્વ દિશાના ચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત કરાવીને પશ્ચિમ દિશાના ચરમાન્તમાં અપર્યાપ્તક બાદર પૃથ્વિકાયિકોમાં ઉત્પાદ બતાવવો જોઈએ. આ સંબંધમાં આલાપનો પ્રકાર આ પ્રમાણે નો છે—હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મપૃથ્વી કાયિક જીવ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમ ભાગમાં મરણ પામે અને મરણ

पृथिवीकायिकेषु समुत्पत्तु योग्यः स खलु भदन्त ! कियत्सामयिकेन विग्रहेणोत्पद्यते ? हे गौतम ! यदि ऋज्वायतया श्रेण्या उत्पद्यते, तदा एकसामयिकविग्रहेण, एकतो वक्रया जायमानो द्विसामयिकेन विग्रहेण, द्विधातो वक्रया जायमानस्त्रिसामयिकेन विग्रहेण जायते इत्यादिकं पूर्ववदेव सर्वं ज्ञातव्यमिति ३। ताहे तेसु चेव पज्जत्तएसु १ तदा तेष्वेव पर्याप्तकेषु उपपातो वक्तव्यः।

तथाहि–हे भदन्त ! अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकः रत्नप्रभायाः पश्चिमे-चरमान्ते पर्याप्तबादर पृथिवीकायिकतया उत्पत्तियोग्यो भवेत्। स खलु कियत्सामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत ? हे गौतम ! एकसामयिकेन वा द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, विग्रहेण उत्पद्येत इत्यादिकं सर्वं पूर्ववदेव ज्ञातव्यमिति ४।

होने के योग्य हुआ तो हे भदन्त ! वह वहां कितने समय वाले विग्रह से उत्पन्न होता है ? गौतम ! यदि वह ऋज्वायत श्रेणि से वहां उत्पन्न होता है तो एक समय वाले विग्रह से, एकतो वक्रा श्रेणि से यदि उत्पन्न होता है तो दो समयवाले विग्रह से और यदि वह वहां द्विधातो वक्रा श्रेणि से उत्पन्न हुआ है तो वह तीन समय वाले विग्रह से उत्पन्न होता है इत्यादि सब कथन पूर्वोक्त जैसा ही जानना चाहिये ३।

'ताहे तेसु चेव पज्जत्तएसु' हे भदन्त ! कोई अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव रत्नप्रभापृथिवी के पूर्वचरम भाग में मरा और मर कर वह रत्नप्रभा पृथिवी के पश्चिम चरमभाग में पर्याप्त बादर पृथिवीकायिकों में उत्पन्न होने के योग्य हुआ तो हे भदन्त ! वह कितने समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है ? हे गौतम ! वह वहां एक

પામીને તે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના છેલ્લા ભાગમાં અપર્યાપ્ત બાદર પૃથિવિકાયિકોમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયો હોય તો હે ભગવન્ તે ત્યાં કેટલા સમય વાળા વિગ્રહ (શરીર) થી ઉત્પન્ન થાય છે આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે હે ગૌતમ ! જો તે ઋજવાયત શ્રેણીથી ત્યાં ઉપન્ન થાય છે, તો એક સમયવાળા વિગ્રહથી (શરીર)થી, એકતોવક્રા શ્રેણીથી ઉત્પન્ન થાય છે. તો તે ત્રણ સમયવાળા વિગ્રહથી ઉત્પન્ન થાય છે. વિગેરે પ્રકારનું સઘળું કથન પહેલાં કહ્યાં પ્રમાણે જ સમજી લેવું. ૩

'ताहे तेसु चेव पज्जत्तएसु' હે ભગવન્ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વિકાયિક જીવ રત્નપ્રભાપૃથ્વીના પૂર્વચરમ ભાગમાં મરણ પામે અને મરીને તે રત્નપ્રભા પૃથ્વિના પશ્ચિમ ચરમભાગમાં પર્યાપ્ત બાદર પૃથ્વિકાયિકોમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયા હોય તો હે ભગવન્ તે કેટલા સમવાળા વિગ્રહથી ઉત્પન્ન થાય

'एवं आउक्काइएसु चत्तारि आलावगा-सुहुमेहिं अपज्जत्तएहिं १, ताहे पज्जत्तएहिं २, बायरेहिं अपज्जत्तएहिं ३, ताहे पज्जत्तएहिं उववाएयव्वो ४, एवं पृथिवीकायवदेव अप्कायिकेषु चत्वार आलापकाः, सूक्ष्मैरपर्याप्तकैः १, तदा पर्याप्तकैः २, बादरैः अपर्याप्तकै ३, तदा पर्याप्तकैः ४, उपपातयितव्यः। हे भदन्त! अपर्याप्तसूक्ष्म पृथिवीकायिकः अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पूर्वचरमान्ते समवहतः समवहत्य रत्नप्रभायाः पश्चिमे चरमान्ते अपर्याप्त सूक्ष्माप्कायिकतया समुत्पत्तियोग्यः स कियत्सामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत? इति प्रश्नं कृत्वा हे गौतम! एक सामयिकेन यावत् त्रिसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत। इत्याद्युत्तरं पूर्ववदेवेति प्रथम

समय वाले विग्रह से अथवा दो समय वाले विग्रह से अथवा तीन समय वाले विग्रह से उत्पन्न होता है। इत्यादि सब कथन पूर्व के जैसा ही जानना चाहिये ।४॥

'एवं आउक्काइएसु चत्तारि आलावगा सुहुमेहिं अपज्जत्तएहिं १ ताहे पज्जत्तएहिं २ बायरेहिं अपज्जत्तएहिं ३ ताहे पज्जत्तएहिं उववाएयव्वो४' इसी प्रकार से अप्कायिकों के चार आलापक कहलेना चाहिये। जैसे-हे भदन्त! कोई अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव इस रत्नप्रभा पृथिवी के पूर्व चरमान्त में मरा और मरकर वह रत्नप्रभा पृथिवी के पश्चिम चरमान्त में अपर्याप्त सूक्ष्म अप्कायिकरूप से उत्पत्ति के योग्य हुआ तो हे भदन्त! वह वहां कितने समय वाले विग्रह से उत्पन्न होता है? हे गौतम! वह वहां एक समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है, दो समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है और

છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-હે ગૌતમ! તે ત્યાં એક સમયવાળા વિગ્રહથી ઉત્પન્ન થાય છે, અથવા બે સમયવાળા વિગ્રહથી અથવા ત્રણ સમયવાળા વિગ્રહથી ઉત્પન્ન થાય છે. વિગેરે સઘળું કથન પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે જ સમજવું ॥૪॥

एवं आउक्काएसु चत्तारि आलावगा सुहुमेहिं अपज्जत्तएहिं उववाएयव्वो ४' આજ પ્રમાણે અપ્કાયિકોના સંબંધમાં ચાર આલાપકો કહેવા જોઈએ જેમ કે-હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક જીવ આ રત્નપ્રભા પૃથિવીના પૂર્વ ચરમાન્ત ભાગમાં મરણ પામે અને મરણ પામીને તે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્ત ભાગમાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયો હોય તો હે ભગવન્ તે ત્યાં કેટલા સમયવાળા વિગ્રહથી ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-હે ગૌતમ! તે ત્યાં એક સમયવાળા વિગ્રહથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે. બે સમયવાળા વિગ્રહથી

आलापकः १, हे भदन्त ! अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकः रत्नप्रभा पूर्वचरमान्ते समवहत्य रत्नप्रभा पश्चिमचरमान्ते पर्याप्त सूक्ष्माप्कायिकतया उत्पत्ति योग्यः स कियत्सामयिकविग्रहेण उत्पद्येत १, गौतम ! एकसामयिकेन वा यावत् त्रिसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत इत्यादिकं पूर्ववदेवेति द्वितीय आलापकः २, हेभदन्त अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिको रत्नप्रभा पूर्वचरमान्ते समवहत्य रत्नप्रभा पश्चिम चरमान्ते अपर्याप्तबादराप्कायिकतया उत्पत्तियोग्यः स कियत्सामायिकेन विग्रहेणोत्पद्येत ? उत्तरम् एवमेवेति तृतीय आलापकः ३, हे भदन्त ! अपर्याप्त

तीन समय वाले विग्रह से भी होता है इत्यादि रूप से प्रश्न और उत्तर पूर्वोक्त अनुसार जानना चाहिये ऐसा यह प्रथम आलापक है। हे भदन्त ! कोई अपर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव रत्नप्रभा के पूर्व चरमान्त में मरा और रत्नप्रभा के ही पश्चिम चरमान्त में पर्याप्त सूक्ष्म अप्कायिक रूप से उत्पन्न होने के योग्य हुआ तो हे भदन्त ! वह वहां कितने समय वाले विग्रह से उत्पन्न होता है ? हे गौतम ! वह वहां एक समय वाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है दो समय वाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है। तीन समय वाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है और चार समय वाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है ऐसा यह द्वितीय आलापक है २। हे भदन्त ! कोई अपर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव रत्नप्रभा पृथिवी के पश्चिम चरमान्त में बादर अपर्याप्त रूप से उत्पन्न होने के योग्य हुआ तो हे भदन्त ! वह वहां कितने समय के विग्रह से उत्पन्न होगा ? गौतम इस विषय में उत्तर जैसा ऊपर कहा गया है

પણ ઉત્પન્ન થાય છે, અને ત્રણ સમયવાળા વિગ્રહથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, ઈત્યાદિ પ્રકારથી પ્રશ્ન અને ઉત્તર પહેલાં કહ્યાં પ્રમાણે સમજવા. એ પ્રમાણેનો આ પહેલો આલાપક કહ્યો છે.

હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્તક અપ્કાયિક જીવ રત્નપ્રભા પૃથિવીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મરણ પામે અને રત્નપ્રભા પૃથિવીના જ પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિકપણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય બન્યો હોય તો હે ભગવન્ તે ત્યાં એક સમયવાળા વિગ્રહથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, બે સમયવાળા વિગ્રહથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, એજ પ્રમાણેનો આ બીજો આલાપક કહેલ છે. ૨.

હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક જીવ રત્નપ્રભાપૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મરણ પામે અને મરણ પામીને તે રત્નપ્રભાપૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં બાદર અપર્યાપ્તક રૂપથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયો હોય તો હે ભગવન્ તે ત્યાં કેટલા સમયના વિગ્રહથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં

सूक्ष्म पृथिवीकायिकः रत्नप्रभा पूर्वचरमान्ते समवहत्य रत्नप्रभा चरमान्ते पर्याप्त बादराप्कायिकतया उत्पत्ति योग्यो विद्यते स कियत्सामयिकेन विग्रहेण समुत्पद्येत इति प्रश्नस्योत्तरं पूर्ववदेवेति चतुर्थ आलापकः ४, तदेवं चत्वार आलापका अप्कायिकेषु समुत्पद्यमानस्य भवन्तीति। 'एवं चेव सुहुमतेउकाइएहि वि अपज्जत्तएहिं ताहे पज्जत्तएहि उववाएयव्वो' एवमेव सूक्ष्मतेजस्कायिकैरपि अपर्याप्तकैस्तदैव पर्याप्तकैरुपपातयितव्यः।

तथाहि–अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकः खलु भदन्त! रत्नप्रभापूर्वचरमान्ते समवहत्य रत्नप्रभायाः पश्चिमचरमान्ते अपर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिक-

---

वैसा ही है। ऐसा यह तृतीय आलापक है। हे भदन्त! कोई अपर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव रत्नप्रभा पृथिवी के पूर्व चरमान्त में मरा और वह रत्नप्रभा पृथिवी के पश्चिम चरमान्त में पर्याप्त बादर अप्कायिक रूप से उत्पन्न होने के योग्य हुआ तो वहां पर वह कितने समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है? हे गौतम! इस सम्बन्ध में भी उत्तर ऊपर में कहे गये अनुसार ही जानना चाहिये। इस प्रकार से यह चतुर्थ आलापक है। यही बात 'सुहुमेहिं अपज्जत्तएहिं' आदि सूत्रपाठ द्वारा प्रकट की गई है। 'एवचेव सहुमतेउकाइएहिं वि अपज्जत्तएहिं ताहे पज्जत्तएहिं उववाएयव्वो' इसी प्रकार से सूक्ष्मतेजस्कायिक अपर्याप्त और पर्याप्त में उपपात कहना चाहिये। जैसे–हे भदन्त! कोई अपर्याप्तक

પ્રભુશ્રી કહે છે કે–ગૌતમ! આ સંબંધ ના ઉત્તર ઉપર કહ્યો છે તેજ પ્રમાણે છે તેમ સમજવું. એ રીતે આ ત્રીજો આલાપક કહેલ છે. ૩

હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્તક અપ્કાયિક જીવ રત્નપ્રભાપૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મરણુપામે અને મરીને તે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં પર્યાપ્તબાદર અપ્કાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય બન્યો હોય તો તે ત્યાં કેટલા સમયવાળા વિગ્રહથી ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે–હે ગૌતમ! આ સંબંધમાં પણ ઉત્તર ઉપર કહ્યા પ્રમાણે જ સમજવો. આ રીતે આ ચોથો આલાપક કહેલ છે. ૪ એજ વાત 'સુહુમેહિં અપજ્જત્તएहिं' વિગેરે સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ કરેલ છે

'एवं चेव सुहुम तेउ काइएहिं वि अपज्जत्तएहिं ताहे पज्जत्तएहिं उववाएयव्वो' એજ પ્રમાણે સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક અપર્યાપ્ત અને પર્યાપ્તમાં કહેવા જોઈએ. એટલે કે–અપર્યાપ્ત અને પર્યાપ્તના ભેદને લઈને સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિકનું કથન કરવું જોઈએ. અપ્કાયિકના કથન પ્રમાણે જ આ તેજસ્કાયિકના કથનમાં પણ ચાર આલાપકો થાય છે. જેમ કે–હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક

तया समुत्पत्तियोग्यो विद्यते स कियत् सामयिकविग्रहेण उत्पद्यते इत्यादि क्रमेण पूर्वोदित प्रश्नोत्तराभ्यां प्रथम आलापकः १, स एव पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिकेषु समुत्पत्तियोग्यः इत्यादि क्रमेण द्वितीय आलापकः ज्ञातव्यः । अप-ज्जत्त सुहुम पुढवीकाइएणं भंते !' अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' एतस्या रत्नप्रभायाः

सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव रत्नप्रभा के पूर्व चरमान्त में मरा और मर कर वह रत्नप्रभापृथिवी के पश्चिम चरमान्त में सूक्ष्म तेजस्कायिक के अपर्याप्त रूप से उत्पत्ति के योग्य हुआ तो वह हे भदन्त ! कितने समय वाले विग्रह से वहां उत्पन्न होता है ? इत्यादि क्रम से पूर्व में कहे गये प्रश्न और उत्तरों को लेकर यहां प्रथम आलापक कह लेना चाहिये । हे भदन्त ! कोई अपर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव रत्नप्रभा के पूर्व चरमान्त में मरा और मरकर वह रत्नप्रभा पृथिवी के पश्चिम चर-मान्त में पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिकों में उत्पन्न होने के योग्य हुआ तो वह वहां कितने समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है इत्यादि क्रम से द्वितीय आलापक होता है यहां जो बादर अपर्याप्त और बादर पर्याप्त में उत्पन्न होने के सम्बन्ध में इसके जो दो भंग नहीं कहे गये हैं उसका कारण वहां बादर तेजस्कायिकों का अभाव है । 'अपज्जत्त सुहुम पुढवी काइएणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' हे भदन्त ! कोई अपर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव इस

જીવ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મરે અને મરીને તે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં એજ રૂપથી ઉત્પત્તિને યોગ્ય થયેલ હોય તો તે હે ભગવન્ કેટલા સમયવાળા વિગ્રહથી ઉત્પન્ન થાય છે ? વિગેરે ક્રમથી પહેલા કહેલા પ્રશ્નો અને ઉત્તરો લઇને અહિયાં પહેલો આલાપક કહેવો જોઈએ.

હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક જીવો રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વચરમાન્તમાં મરણ પામે અને મરીને તે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમચરમાન્તમાં પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિકમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય બન્યો હોય તો તે હે ભગવન્ કેટલા સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? વિગેરે ક્રમથી બીજો આલાપક સમજવો. અહિયાં જે બાદર અપર્યાપ્ત અને બાદર પર્યાપ્તમાં ઉત્પન્ન થવાના સમ્બન્ધમાં તેના જે ભંગો કહ્યા નથી. તેનું કારણ એ છે કે-ત્યાં બાદર તેજસ્કા યિકોનો અભાવ છે. 'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइएणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવ

पृथिव्याः पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतो मारणान्तिकसमुद्घातेन मृत इत्यर्थः। 'समोहणित्ता जे भविए मणुस्सखेत्ते' समवहत्य-मृत्वा, यो भव्यो योग्यः मनुष्य क्षेत्रे, 'अपज्जत्त बायरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए' अपर्याप्त बादरतेजस्कायिकतया उत्पत्तुं योग्य इति पूर्वेण सम्बन्धः 'से णं भंते! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' स खलु भदन्त! कति सामयिकेन विग्रहेणोत्पद्यतेति प्रश्नः। उत्तरमाह-'सेसं तं चेव' शेषं तदेव पृथिवीकायिकाप्कायिकेषु उत्पत्तिविषये यदुत्तरितं तदेव, एकसामयिकेन वा, द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, विग्रहेणोत्पद्येत इत्यादिकं सर्वं पूर्ववदेवेति। एवं 'पज्जत्त बायरतेउकाइयत्ताए उववाएयव्वो' एवम्

रत्नप्रभापृथिवी के पूर्व चरमान्त में मरा 'समोहणित्ता जे भविए मणुस्सखेत्ते अपज्जत्त बायर तेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए' और मरकर वह मनुष्य क्षेत्र में अपर्याप्त बादर तेजस्कायिक रूप से उत्पन्न होने के योग्य हुआ 'से णं भंते! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' तो हे भदन्त! वह वहां कितने समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है? हे गौतम! 'सेसं तं चेव' पृथिवीकायिकों में उत्पत्ति होने के विषय में जो उत्तर दिया गया है वही उत्तर यहां पर भी समझना चाहिये अर्थात् वह वहां एक समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है दो समय वाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है और तीन समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है। 'एवं पज्जत्त बायरतेउकाइयत्ताए उववाएयव्वो' इसी प्रकार से यहां ऐसा भी कह लेना चाहिये कि हे भदन्त! कोई अपर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव इस रत्नप्रभा पृथिवी के पूर्व चरमान्त में मरा

આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વચરમાન્તમાં મરણપામે અને 'समोहणित्ता जे भविए मणुस्सखेत्ते अपज्जत्त बायरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए' અને મરીને તે મનુષ્ય-ક્ષેત્રમાં અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકપણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયેલ હોય તો 'से णं भंते! कइ समइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' તો હે ભગવન્ તે ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-હે ગૌતમ! 'सेसं तं चेव' પૃથ્વીકાયિકોમાં ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનો ઉત્તર કહ્યો છે, તેજ પ્રમાણેનો ઉત્તર અહિયાં પણ સમજવો. અર્થાત્ તે ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, બે સમય-વાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, અને ત્રણ સમયવાળીવિગ્રહ ગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, 'एवं पज्जत्तबायरतेउकाइयत्ताए उववाएयव्वो' એજ પ્રમાણે અહિયાં એવું પણ કહેવું જોઈએ. કે-હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વચરમાન્તમાં મરણ પામેલ હોય

पूर्वदर्शितक्रमेण पर्याप्त बादरतेजस्कायिकतया उपपातयितव्यः, यथा-अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवस्य, अपर्याप्त बादरतेजस्कायिकेषु उपपातो दर्शितस्तथैव पर्याप्त बादरतेजस्कायिकेऽपि उपपातो वर्णनीयः, इति ४ 'वाउकाइए सुहुमबायरेसु जहा आउक्काइएसु उववाइओ तहा उववाएयव्वो' पृथिवीकायिकः सूक्ष्म बादरपर्याप्तापर्याप्तकेषु यथा अप्कायिकेषु उपपातितः तथा उपपातयितव्यः४ अपर्याप्त सूक्ष्म वायुकायिकेषु१, पर्याप्त सूक्ष्मवायुकायिकेषु२, अपर्याप्त

और मरकर वह मनुष्यक्षेत्रमें पर्याप्त बादर तेजस्कायिकरूप से उत्पन्न होने के योग्य हुआ तो हे भदन्त ! वह वहां कितने समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है ? हे गौतम ! जैसा कथन ऊपर किया गया है वैसाही कथन यहां पर भी जानना चाहिये अर्थात् वह वहां एक समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है दो समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है और तीन समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है। इस प्रकार से ये ४ आलाप तेजस्कायिकों की उत्पत्ति के विषय में हो जाते हैं। "वाउकाइए सुहुमबायरेसु जहा आउक्काइएसु उववाइओ तहा उववाएयव्वो' हे भदन्त ! कोई अपर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव इस रत्नप्रभा पृथिवी के पूर्व चरमान्त में मरा और मर कर वह इसी रत्नप्रभापृथिवी के पश्चिम चरमान्त में सूक्ष्म अपर्याप्त वायुकायिकों में उत्पत्ति के योग्य हुआ तो हे भदन्त ! वह वहां कितने समय वाले

અને મરીને તે મનુષ્ય ક્ષેત્રમાં પર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકપણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય બનેલ હોય તો હે ભગવન્ તે ત્યાં કેટલા સમયવાળી, વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-હે ગૌતમ ! ઉપર જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન અહિયાં પણ સમજવું. અર્થાત્—તે ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, બે સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે અને ત્રણ સમય વાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, આ પ્રમાણેના આ ચાર આલાપકો તેજસ્કાયિકોની ઉત્પત્તિના સંબંધમાં થઈ જાય છે.

'वाउकाइए सुहुमबायरेसु जहा आउक्काइएसु उववाइओ तहा उववाएयव्वो' હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ વાયુકાયિક જીવ આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મરણ પામે અને મરીને તે આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમચરમાન્તમાં સૂક્ષ્મ અપર્યાપ્તક વાયુકાયિકોમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય બનેલ હોય તો હે ભગવન્ તે ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે

वादरवायुकायिकेषु ३. पर्याप्त वादरवायुकायिकेषु ४ अपर्याप्त सूक्ष्म वायुकायिकस्योपपातं वदता चत्वार आलापका ज्ञातव्या इति। 'एवं वणस्सइकाइएसु वि

विग्रह से उत्पन्न होता है ? हे गौतम ! वह वहां जैसा ऊपर में उत्तर रूप में कहा गया है वैसा ही यहां पर जानना चाहिये। ऐसा यह प्रथम आलापक है। इसी प्रकार से-'हे भदन्त ! कोई अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवी कायिक जीव इस रत्नप्रभा पृथिवी के पूर्व चरमान्त में मरा और मर कर वह उसी रत्नप्रभा पृथिवी के पश्चिम चरमान्त में सूक्ष्म पर्याप्त वायुकायिकों में उत्पन्न होने के योग्य हुआ तो हे भदन्त! वह वहां कितने समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है?' इस प्रश्न के उत्तर में भी यही पूर्वोक्त रूप से समाधान हे गौतम ! जानना चाहिये। इसी प्रकार से-'हे भदन्त ! कोई सूक्ष्म अपर्याप्त पृथिवीकायिक जीव इस रत्नप्रभा पृथिवी के पूर्व चरमान्त में मरा और मरकर वह उसी रत्नप्रभा पृथिवी के पश्चिम चरमान्त में अपर्याप्त बादरवायुकायिकों में उत्पत्ति के योग्य हुआ तो हे भदन्त ! वह वहां कितने समय वाले विग्रह से उत्पन्न होता है ? इस प्रश्न के उत्तर में भी हे गौतम ! वही पूर्वोक्त रूप से समाधान जानना चाहिये इसी प्रकार से-'हे भदन्त ! कोई सूक्ष्म अपर्याप्त पृथिवीकायिक जीव इस रत्नप्रभा पृथिवी के पूर्व

કે-હે ગૌતમ ! જે પ્રમાણે ઉપર ઉત્તર વાક્ય રૂપે કહેલ છે, તે પ્રમાણે તે ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે. તેમ સમજવું. આ પ્રમાણેનો આ પહેલો આલાપક કહેલ છે. આજ પ્રમાણે હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ વાયુકાયિક જીવ આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મરે અને મરીને તે એજ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં સૂક્ષ્મ પર્યાપ્ત વાયુકાયિકોમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય બન્યો હોય તો હે ભગવન્ તે ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે હે ગૌતમ ! આ પૂર્વોક્ત કથન સમાધાન રૂપથી ઉત્તર રૂપે સમજવું.

એજ પ્રમાણે હે ભગવન્ કોઈ સૂક્ષ્મ અપર્યાપ્તક વાયુકાયિક જીવ આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મરણ પામે અને મરણ પછી આજ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં અપર્યાપ્તક બાદર વાયુકાયિકોમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયેલ હોય ? તો હે ભગવાન તે ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પણ હે ગૌતમ ! પહેલા કહેલ તે ઉત્તર સમાધાન રૂપે સમજવો. હે ભગવન્ કોઈ સૂક્ષ્મ અપર્યાપ્તક વાયુ-

२०, एवम् अप्कायिकवदेव वनस्पतिकायिकेषु अपर्याप्तकसूक्ष्मेषु पर्याप्तकसूक्ष्मेषु 'अपर्याप्तबादरेषु पर्याप्तबादरेषु चापर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकस्योपपातो वक्तव्यः ४, प्रकारस्तु पूर्ववदेवेति भावः ॥सू०१॥

चरमान्त में मरा और मरकर वह उसी रत्नप्रभा पृथिवी के पश्चिम चरमान्त में पर्याप्त बादरवायुकायिकों में उत्पत्ति के योग्य हुआ तो 'हे भदन्त ! वह वहां कितने समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है ?' 'हे गौतम इस प्रश्न के उत्तर में भी यही पूर्वोक्त रूप से समाधान जानना चाहिये । इस प्रकार से यहां ये चार आलापक होते हैं । "एवं वणस्सइकाइएसु वि' २०–अप्कायिक के जैसे ही वनस्पतिकायिकों में भी अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक का उपपात कहना चाहिये । जैसे-हे भदन्त ! कोई अपर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव इस रत्नप्रभा पृथिवी के पूर्वचरमान्त में मरा और मरकर वह उसी रत्नप्रभा पृथिवी-के पश्चिम चरमान्त में अपर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिकों में उत्पत्ति के योग्य हुआ तो हे भदन्त ! वह वहां कितने समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है? हे गौतम ! इस प्रश्न के उत्तर में वही पूर्वोक्त समाधान जानना चाहिये । ऐसा यह प्रथम आलापक है । इसी प्रकार से पर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिकों में उत्पन्न होने के सम्बन्ध में अपर्याप्त बादर

કાયિક જીવ આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મરણુપામે અને પછી તે એજ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં પર્યાપ્ત બાદર વાયુકાયિકોમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયેલ હોય તો હે ભગવન્ તે ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે હે ગૌતમ ! આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પણ આ પૂર્વોકત રૂપથી સમાધાન સમજવું.

આ રીતે અહિયાં આ ચાર આલાપકો થાય છે 'एवं वणस्सइकाइएसु वि' ૨ અપ્કાયિકના કથન પ્રમાણે વનસ્પતિકાયિકોમા પણ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિકનો ઉપપાત કહેવો જોઇએ. જેમ કે–હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક જીવ આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મરણુપામે અને મરીને તે આજ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ વનસ્પતિ કાયિકોમાં ઉત્પત્તિને યોગ્ય થયેલ હોય તો હે ભગવન્ તે ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે–હે ગૌતમ ! આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પહેલાં કહ્યા પ્રમાણેનું સમાધાન સમજવું. આ રીતે આ આ પહેલો આલાપક કહેલ છે. આજ પ્રમાણે પર્યા·

मूलम्—पज्जत्त सुहुमपुढवीकाइए णं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए, एवं पज्जत्त सुहुमपुढवीकाइओ वि पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहणावित्ता, एएणं चेव कमेणं एएसु चेव वीससु ठाणेसु उववाएयव्वो जाव बायरवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु वि ४०। एवं अपज्जत्त बायरपुढवीकाइओ वि ६०। एवं पज्जत्तबायरपुढवीकाइओ वि ८०। एवं आउकाइओ वि चउसु वि गमएसु पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, एयाए चेव वत्तव्वया एएसु वीसइ ठाणेसु उववाएयव्वो १६०। सुहुम तेउकाइओ वि अपज्जत्तओ पज्जत्तओ य एएसु चेव वीसइ ठाणेसु उववाएयव्वो। अपज्जत्त बायरतेउकाइए णं भंते! मणुस्सखेत्ते समोहए समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते! कइ समइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा, सेसं तहेव जाव से तेणट्ठेणं। एवं पुढवीकाइएसु चउव्विहेसु वि उववाएयव्वो। एवं आउकाइएसु चउव्विहेसु वि। तेउकाइएसु सुहुमेसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य एवं चेव उववाएयव्वो। अपज्जत्त बायरतेउकाइए णं भंते! मणुस्सखेत्ते समोहए समोहणित्ता जे भविए मणुस्सखेत्ते अपज्जत्त बायरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते! कइ सामइएणं० सेसं तं चेव। एवं पज्जत्तबायर-

---

वनस्पतिकायिकों में उत्पन्न होने के सम्बन्ध में और पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिकों में उत्पन्न होने के सम्बन्ध में भी इसके तीन आलापक जानने चाहिये। सू० १॥

प्तक सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोमां उत्पन्न थवाना संबंधमां अपर्याप्तक बादर वनस्पतिकायिकोमां उत्पन्न थवाना संबंधमां अने पर्याप्तक बादर वनस्पति कायिकोमां उत्पन्न थवाना संबंधमां पण आना त्रण आलापको समजी लेवा. ।सू.१।

तेउक्काइयत्ताए वि उववाएयव्वो। वाउक्काइयत्ताए य वणस्सइकाइयत्ताए य जहा पुढवीकाइएसु तहेव चउक्कएणं भेएणं उववाएयव्वो। एवं पज्जत्तबायरतेउकाइओ वि समयखेत्ते समोहणावेत्ता एएसु चेव वीसइ ठाणेसु उववाएयव्वो जहेव अपज्जत्तओ उववाइओ, एवं सव्वत्थ वि बायरतेउकाइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य समयखेत्ते उववाएयव्वा समोहणावेयव्वा वि २४०। वाउक्काइया वणस्सइकाइया य जहा पुढवीकाइया तहेव चउक्कएणं भेएणं उववाएयव्वा जाव पज्जत्ता४००। बायरवणस्सइकाइएणं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते! पज्जत्तबायरवणस्सइकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते! कइ समइएणं, सेसं तहेव जाव से तेणट्ठेणं०। अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइएणं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते! कइ समइएणं सेसं तहेव निरवसेसं। एवं जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते सव्वपएसु वि समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाइया जे य समयखेत्ते समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाइया, एवं एएणं चेव कमेणं पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य समोहया पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाएयव्वा तेणेव गमएणं एवं एएणं गमएणं दाहिणिल्ले चरिमंते समोहयाणं

उत्तरिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाओ एवं चेव उत्तरिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य समोहया दाहिणिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाएयव्वा तेणेव गमएणं ॥सू० २।

छाया--पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः एवं पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकोऽपि पौरस्त्ये चरमान्ते समवघात्य एतेनैव क्रमेण एतेष्वेव विंशतिस्थानेषु उपपातयितव्यः, यावद्बादरवनस्पतिकायिकेषु पर्याप्तकेष्वपि४०, एवमपर्याप्त बादरपृथिवी-कायिकोऽपि६०, एवं पर्याप्तबादर पृथिवी-कायिकोऽपि ८०, एवम् अप्कायिकोऽपि चतुर्ष्वपि गमकेषु पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः एतया एव वक्तव्यतया एतेष्वेव विंशतिस्थानेषु उपपातयितव्यः। १६०, सूक्ष्मतेजस्कायिकोऽपि अपर्याप्तकः पर्याप्तकश्च एतेष्वेव विंशतिस्थानेषु उपपातयितव्यः। अपर्याप्तबादरतेजस्कायिकः खलु भदन्त ! मनुष्यक्षेत्रे समवहतः समवहत्य यो भव्यः एतस्याः रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पाश्चात्ये चरमान्ते अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया उत्पत्तुं स खलु भदन्त कतिसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत' शेषं तथैव यावत्तेनार्थे०। एवं पृथिवीकायिकेषु चतुर्विधेष्वपि उपपातयितव्यः। एवमप्कायिकेषु चतुर्विधेष्वपि। तेजस्कायिकेषु सूक्ष्मेषु अपर्याप्तकेषु पर्याप्तकेषु च एवमेव उपपातयितव्यः। अपर्याप्तबादरतेजस्कायिकः खलु भदन्त ! मनुष्यक्षेत्रे समवहतः समवहत्य यो भव्यो मनुष्यक्षेत्रे अपर्याप्त बादरतेजस्कायिकतया उत्पत्तुं स खलु भदन्त ! कति सामयिकेन० शेषं तदेव। एवं पर्याप्त बादर तेजस्कायिकतयाऽपि उपपातयितव्यः। वायुकायिकतया च यथा पृथिवीकायिकेषु तथैव चतुष्केन भेदेन उपपातयितव्यः। एवं पर्याप्त बादरतेजस्कायिकोऽपि समय क्षेत्रसमवघात्य एतेष्वेव विंशतिस्थानेषु उपपातयितव्यः यथैव अपर्याप्तक उपपातितः एवं सार्वत्रापि बादरतेजस्कायिकाः अपर्याप्तकाश्च पर्याप्तकाश्च समयक्षेत्र उपपातयितव्याः समयघातयितव्या अपि २४० ॥

वायुकायिका वनस्पतिकायिकाश्च यथा पृथिवीकायिकाः तथैव चतुष्केन भेदेनोपपातयितव्याः, यावत् पर्याप्ताः ४००, बादरवनस्पतिकायिकः खलु भदन्त ! एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः समवहत्य यो भव्य एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पाश्चात्ये चरमान्ते पर्याप्त बादरवनस्पति कायिकतया उत्पत्तुं स खलु भदन्त ! कति सामयिकेन० शेषं तथैव यावत् तत्तेनार्थेन, अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! एतस्या रत्नप्रभायापृथिव्याः पाश्चात्ये चरमान्ते समवहतः समवहत्य यो भव्यः एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पौरस्त्ये चरमान्ते अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया उत्पत्तुं स खलु भदन्त ! कति

सामयिकेन, शेषं तथैव निरवशेषम् । एवं यथैव पौरस्त्ये चरमान्ते सर्वपदेऽपि समवहताः पाश्चात्ये चरमान्ते समयक्षेत्रे चोपपातिताः, ये च समयक्षेत्रे समवहताः पाश्चात्ये चरमान्ते समयक्षेत्रे चोपपातिताः, एवमेतेनैव क्रमेण पाश्चात्ये चरमान्ते समयक्षेत्रे च समवहताः पौरस्त्ये चरमान्ते समयक्षेत्रे चोपपातयितव्याः तेनैव गमकेन । एवमेतेन गमकेन दाक्षिणात्ये चरमान्ते समवहतानाम् औत्तरे चरमान्ते समयक्षेत्रे चोपपातः, एवमेव चौत्तरे चरमान्ते समयक्षेत्रे च समवहताः दाक्षिणात्ये चरमान्ते समयक्षेत्रे चोपपातयितव्या स्तेनैव गमकेन । सू० २॥

टीका-'पज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते' पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए' एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पूर्वे चरमान्ते समवहत समवहत्य एतस्या एव रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पश्चिमे चरमान्ते पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकतया समुत्पत्तियोग्यो विद्यते स खलु भदन्त ! कति सामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत इत्यादिकं सर्वं प्रश्न वाक्यं पूर्ववदेव अत्रापि वक्तव्यम् । उत्तरमाह-'एवं' इत्यादि ।

'पज्जत्त सुहुमपुढवीकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए' इ०

टीकार्थ—'पज्जत्त सुहुम पुढवीकाइए णं भंते !' हे भदन्त ! कोई पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए' इस रत्नप्रभापृथिवी के पूर्व चरमान्त (पूर्व भाग के अन्त में) मरा और मर कर वह इसी रत्नप्रभा पृथिवी के पश्चिम चरमान्त (पश्चिम भाग के अन्तिम) में अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक रूप से उत्पत्ति के योग्य हुआ तो हे भदन्त ! वह वहां कितने समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है ? इत्यादि प्रश्नवाक्य पूर्व के जैसा यहां कहना चाहिये अब उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—'एवं पज्जत्तसुहुमपुढवीकाइओ वि पुरत्थिमिल्ले चरि-

---

'पज्जत्त सुहुमपुढवीकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—'पज्जत्त सुहुमपुढवो काइएणं भंते !' હે ભગવન્ કોઈ પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ 'इमीसे रयणप्पभाएभाए पुढवीए' આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વચરમાન્તમાં—પૂર્વભાગના અન્તમાં મરણ પામે અને મરીને તે આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં—પશ્ચિમ ભાગના અન્તમાં પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મપૃથ્વી કાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય બનેલ હોય તો હે ભગવન્ ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? વિગેરે તમામ પ્રશ્નવાક્યો પહેલાં કહ્યાં પ્રમાણેના અહિંયાં સમજવા આના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે 'एवं पज्जत्त सुहुमपुढवीकाइओ वि पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहणावेत्ता एएणं'

'एवं पज्जत्तसुहुमपुढवीकाइओ वि पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहणावेत्ता एएणं चेव कमेणं एएसु चेव वीसइसु ठाणेसु उववाएयव्वो' एवम् अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकवदेव पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकोऽपि ज्ञातव्यः, तं रत्नप्रभायाः पौरस्त्ये चरमान्ते समवघात्य मारणान्तिकसमुद्घातं कारयित्वा एतेनैव अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकोक्तेनैव क्रमेण-प्रकारेण एतेष्वेव विंशती स्थानेषु तानि विंशतिस्थानानि यथा-पृथिव्यादयः पञ्च ते सूक्ष्म बादरभेदाद्दश, तेषां प्रत्येकं पर्याप्तकापर्याप्तकभेदकरणा ते विंशति भवन्ति, इति विंशतिः स्थानानि, तथाहि-पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकस्य अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः, पर्याप्त सूक्ष्म

मंते समोहणावेत्ता एएणं चेव कमेणं एएसु चेव वीसइसु ठाणेसु उववाएयव्वो' हे गौतम! अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक के जैसे ही पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक को भी जानना चाहिये। अर्थात् इस पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक का रत्नप्रभापृथिवी के पूर्व चरमान्त में मारणान्तिक समुद्घात कराकर इसी अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक के सम्बन्ध में कथित प्रकार के अनुसार इन्हीं पूर्वोक्त बीस स्थानों में-पृथिव्यादि पांचो के सूक्ष्म बादर पर्याप्त अपर्याप्त रूप स्थानों में-यावत् बादर वनस्पतिकायिक के पर्याप्तक तक उसे उत्पन्न कराना चाहिये। कहने का भाव ऐसा है-पृथिवीकायिक से लेकर वनस्पतिकायिक तक एकेन्द्रिय जीव के ५ भेद होते हैं। ये पांचो ही सूक्ष्म और बादर के भेद से १० भेदवाले होने से बीस भेद हो जाते हैं। पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकों के इन २० स्थानों में इस प्रकार से उत्पन्न करना चाहिये। हे भदन्त! कोई पर्याप्तक सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव इस रत्नप्रभा पृथिवी

चेव कमेणं एएसु चेव वीसइसु ठाणेसु उववाएयव्वो' हे गौतम! अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिकनी जेमज पर्याप्तक सूक्ष्म पृथ्वीकायिक पण समजवा. अर्थात् आ अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक रत्नप्रभा पृथ्वीना पूर्व चरमान्तमां मारणान्तिक समुद्घात करीने-आ प्रकरणमां अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिकना संबंधमां कहेला प्रकारथी आ पूर्वोक्त संस्थानोमां-पृथिवी विगेरे पांचेना सूक्ष्म. बादर, पर्याप्त अपर्याप्त रूप स्थानमां-यावत् बादर वनस्पतिकाय सुधी एकेन्द्रिय जीवना पांच भेदो थाय छे, आ पांचेना सूक्ष्म अने बादर भेदथी १० भेदो थई जाय छे, आ दस भेदोना पण दरेकना पर्याप्त अने अपर्याप्तक एवा भेदो थवाथी २० वीस भेदो थई जाय छे पर्याप्तक सूक्ष्म पृथ्वीकायिकोना आ २० वीस स्थानोमां आ प्रमाणेनी उत्पत्ति कहेवी जोईए

पृथिवीकायिकः, अपर्याप्त बादर पृथिवीकायिकः पर्याप्तबादरपृथिवीकायिकः एवं पृथिवीकायिकस्य चत्वारो भेदाः ४, अपर्याप्तसूक्ष्माप्कायिकः पर्याप्तसूक्ष्माप्कायिकः,अपर्याप्त बादराप्कायिकः, पर्याप्तबादराप्कायिकः, एते चत्वारोऽप्कायिकस्य भेदाः ८. अपर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिकः, पर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिकः, अपर्याप्त बादर तेजस्कायिकः पर्याप्तबादरतेजस्कायिकः ४. एते चत्वारस्तेजस्कायिकस्य भेदाः, १२, अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिकः, पर्याप्त सूक्ष्मवायुकायिकः २, अपर्याप्तबादर वायुकायिकः ३, पर्याप्त बादरवायुकायिकः ४, एते चत्वारो भेदा वायुकायिकस्य १६, अपर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिकः, १ पर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिकः, २,

---

के पूर्व चरमान्त में मारणान्तिक समुद्घात करके मरा और मरकर वह उसी रत्नप्रभा पृथिवी के पश्चिम चरमान्त में अपर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवी कायिक में उत्पन्न होने के योग्य हुआ तो हे भदन्त ! वह वहां कितने समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है ? इस प्रश्न के उत्तर में 'हे गौतम ! वह वहाँ एक समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है, दो समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है और तीन समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है' ऐसा ही पूर्वोक्त समाधान जानना चाहिये। ऐसा यह प्रथम आलापक है । इसी प्रकार से इस पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवी कायिक को पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक में उत्पन्न कराने के सम्बन्ध में भी आलापक कह लेना चाहिये। यह द्वितीय आलापक है। इसी प्रकार से इस पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक को अपर्याप्त बादर पृथिवी कायिक में उत्पन्न कराने के सम्बन्ध में भी तृतीय आलापक कह लेना

હે ભગવન્ કોઇ પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરી પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય બનેલ હોય તો હે ભગવન્ તે ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-હે ગૌતમ ! તે ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, બે સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, અને ત્રણ સમય વાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે. આ પ્રમાણેનું પહેલા કહેલ સમાધાન સમજવું. આ પહેલો આલાપક કહેલ છે. ૧ આજ પ્રમાણે આ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકને પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકમાં ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં પણ આલાપકો કહેવા જોઇએ. આ રીતે આ બીજો આલાપક કહેલ છે. ૨ આજ રીતે અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકને અપર્યાપ્તક બાદર પૃથ્વીકાયિકમાં ઉત્પન્ન કરાવવાના સંબંધમાં પણ ત્રીજો આલાપક કહેવો એજ પ્રમાણે આ અપર્યાપ્તક

अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकः ३, पर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकः ४ एते चत्वारो भेदा वनस्पतिकायिकस्य २०, एतेषु विंशतिस्थानेषु उपपातयितव्य-उपपातः करणीयः। कियत्पर्यन्तमुपपातयितव्य स्तत्राह–'जाव' इत्यादि। 'जाव

चाहिये। इसी प्रकार इस पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक को पर्याप्त बादर पृथिवीकायिक में उत्पन्न कराने के सम्बन्ध में भी आलापक कह लेना चाहिये। यह चतुर्थ आलापक है। इस प्रकार ये पृथिवीकायिकके ४ भेद हैं। इसी प्रकार से अप्कायिक के अपर्याप्त सूक्ष्म अप्कायिक पर्याप्त सूक्ष्म अप्कायिक अपर्याप्त बादर अप्कायिक और पर्याप्त बादर अप्कायिक ये चार भेद होते हैं। इसी प्रकार से तेजस्कायिक अपर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिक पर्याप्त सूक्ष्मतेजस्कायिक अपर्याप्त बादर तेजस्कायिक और पर्याप्त बादरतेजस्कायिक ये चार भेद होते हैं। इसी प्रकार से वायुकायिक के अपर्याप्त सूक्ष्मवायुकायिक पर्याप्त सूक्ष्मवायुकायिक अपर्याप्त बादर वायुकायिक पर्याप्त बादर वायुकायिक ये ४ चार भेद होते हैं। इसी प्रकार से वनस्पतिकायिक के अपर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिक अपर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक ये ४ चार भेद होते हैं। सो इन २० स्थानों में पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक को उत्पन्न कराना चाहिये। यही बात यहां याव-

સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકને પર્યાપ્તક બાદર પૃથ્વીકાયિકમાં ઉત્પન્ન કરાવવાના સંબંધમાં પણ આલાપક કહેવો જોઈએ. આ ચોથો આલાપક કહેલ છે આ રીતે પૃથ્વીકાયિકોમાં ચાર ભેદો કહેલા છે. સૂક્ષ્મ અને બાદર

આજ પ્રમાણે અપ્કાયિકમાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક, અપર્યાપ્ત બાદર અપ્કાયિક, અને પર્યાપ્ત બાદર અપ્કાયિકના ચાર ભેદો થાય છે. આજ પ્રમાણે તેજસ્કાયિકમાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિક. પર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિક આ પ્રમાણેના ચાર ભેદો થાય છે. આજ પ્રમાણે વાયુકાયિકોમાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વાયુકાયિક, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વાયુકાયિક, અપર્યાપ્ત બાદર વાયુકાયિક અને પર્યાપ્ત બાદર વાયુકાયિકના ભેદથી ૪ ચાર ભેદો સમજવા આજ પ્રમાણે વનસ્પતિકાયિકોમાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિ કાયિક અપર્યાપ્તક બાદર વનસ્પતિકાયિક, પર્યાપ્ત બાદર વનસ્પતિકાયિક એ રીતના ૪ ચાર ભેદો થાય છે. તો આ ૨૦ વીસ સ્થાનોમાં પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ

बायरवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु वि' यावत् पर्याप्त वनस्पतिकायिकेष्वपि, यावत् पदेन अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकत आरभ्य अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकान्तस्य ग्रहणं भवति । तथा च आलापप्रकारः, पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पूर्वे चरमान्ते समवहतः समवहत्य एतस्या एव रत्नप्रभायाः पश्चिमे चरमान्ते अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकतया समुत्पत्तियोग्यो विद्यते स खलु भदन्त ! कति सामयिकेन विग्रहेण उत्पद्यते । हे गौतम ! एकसामयिकेन वा, द्विसामयिकेन वा, त्रिसामकेन वा, विग्रहेणोत्पद्येत, तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते, एकसामयिकेनेत्यादि । गौतम ! मया सप्त श्रेणयः ऋज्वायतादिकाः प्रज्ञप्ताः । तत्र प्रथम श्रेण्या उत्पत्तिमासादयन् एकसामयिकेन द्वितीयया गच्छन् द्विसामयिकेन विग्रहेण, तृतीयया गच्छन्

त्पद से प्रकट की गई है । अब गौतमप्रभु से ऐसा पूछते हैं-हे भदन्त ! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि एकसमयवाले विग्रह से यावत् तीन समयवाले विग्रह से वह वहां उत्पन्न होता है? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-हे गौतम ! मैंने सात श्रेणियां कही हैं-इनमें एक ऋज्वायत श्रेणि हैं दूसरी एकतोवक्रा श्रेणि है । तीसरी द्विधावक्रा श्रेणि है चौथी एकतः खा श्रेणि है । पांचवीं द्विधाखा श्रेणि है छट्ठी चक्रवाल श्रेणि है और सातवीं अर्धचक्रवाल श्रेणि है । इनमें जो जीव प्रथम श्रेणि से उत्पत्ति स्थान में जाता है वह वहां एक समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है द्वितीय श्रेणि से जो जीव उत्पत्तिस्थान में जाता है वह दो समय वाले विग्रह से वहां उत्पन्न होता है । तथा-तृतीय श्रेणी से जो उत्पत्ति स्थान में जाता है वह तीन समयवाले विग्रह से वहां उत्पन्न

પૃથ્વીકાયિકની ઉત્પત્તી કહેવી જોઈએ. આ સઘળું કથન અહિયાં યાવત્ પદથી પ્રગટ કરવામાં આવેલ છે.

હવે ગૌતમસ્વામી પ્રભુશ્રીને એવું પૂછે છે કે-હે ભગવન્ આપ એવું કયા કારણથી કહો છો કે-એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી યાવત્ ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી તે ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-હે ગૌતમ ! મેં સાત શ્રેણીયો કહેલ છે. તેમાં એક ઋજ્વાયત શ્રેણી છે. ૧ બીજી એકતો વક્રા શ્રેણી છે. ૨ ત્રીજી દ્વિધાનો વક્રા શ્રેણી કહી છે. ૩ ચોથી એકતઃ ખા શ્રેણી છે. ૪ પાંચમી દ્વિધાતોખા શ્રેણી કહેલ છે. ૫ છઠ્ઠી ચક્રવાલ શ્રેણી કહેલ છે. ૬ અને સાતમી અર્ધ ચક્રવાલ શ્રેણી છે. ૭ તેમાં જે જીવ પહેલી શ્રેણીથી ઉત્પત્તિ સ્થાનમાં જાય છે, તે ત્યાં એક સ્થાનવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. બીજી શ્રેણીમાં જે જીવ ઉત્પત્તિ સ્થાનમાં જાય છે, તે બે સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન

त्रिसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्यन्ते । तत्तेनार्थेन एवमुच्यते, एक सामयिकेनेत्यादिकं सर्वम् अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकवदेव ज्ञातव्यम्। एवं पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकस्य पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकत आरभ्य पर्याप्त बादरवनस्पति कायिकान्तेषु उपपातालापकाः स्वयमेव ऊहनीयाः । एवमेव अग्रेऽपि सर्वत्रालाप प्रकारः स्वयमेवोहनीय इति तदेव मादितश्चत्वारिंशद्गमका अभवन् ४० ।

'एवं अपज्जत्त बायरपुढवीकाइओ वि' एवम् अपर्याप्त बादरपृथिवीकायिकोऽपि पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकवदेव, अपर्याप्त बादरपृथिवीकायिकोऽपि अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीतआरभ्य पर्याप्त बादरवनस्पतिकायिकान्तेषु सर्वत्रोपपा-

---

होता है इस कारण हे गौतम ! मैंने ऐसा कहा है कि वह वहां एक समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न हो जाता है दो समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न हो जाता है और तीन समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न हो जाता है । इस प्रकार यहां सब कथन सूक्ष्म अपर्याप्तक पृथिवीकायिक के जैसा ही जानना चाहिये। पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक के अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक से लेकर पर्याप्त बादरवनस्पतिकायिक तक में उपपात होने के सम्बन्ध में आलापक अपने आप उद्भावित कर लेने चाहिये। इस प्रकार से मिलकर सब गमक ४० हो जाते हैं। 'एव अपज्जत्त बादरपुढवीकाइओवि' इसी प्रकार से अपर्याप्त बादरपृथिवीकायिक को भी पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक के जैसे अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक से लेकर पर्याप्त बादरवनस्पतिकायिकतक के

થાય છે. તથા-ત્રીજી શ્રેણીથી જે જીવ ઉત્પત્તિ સ્થાનમાં જાય છે, તે ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે. તે કારણથી હે ગૌતમ ! મેં એવું કહેલ છે કે-તે ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, બે સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, અને ત્રણ સમય વાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે. આ પ્રમાણે અહિયાં સઘળું કથન સૂક્ષ્મ અપર્યાપ્ત પૃથ્વીકાયિકના કથન પ્રમાણે સમજવું તથા અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકથી લઈને પર્યાપ્ત બાદર વનસ્પતિકાય સુધીમાં ઉપપાત થવાના સંબંધમાં આલાપકો સ્વયં બનાવીને સમજી લેવા. આ રીતે બધા મળીને કુલ ૪૦ ચાળીસ ગમો થઈ જાય છે 'एवं अपज्जत्त बादर पुढवीकाइओ वि' એજ પ્રમાણે અપર્યાપ્ત બાદર પૃથ્વીકાયિક પણ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકના કથન પ્રમાણે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકથી લઈને પર્યાપ્ત બાદર વનસ્પતિકાય સુધીના સઘળા જીવોમાં ઉત્પત્તિ સમજવી. આ સંબંધમાં

तयितव्यः। उपपातप्रकारश्च पूर्ववदेव सर्वत्र स्वयमेवोहनीय इति । ६०, 'एवं पज्जत्तबायर पुढवीकाइओ वि। ८० एवम् अपर्याप्त बादरपृथिवीकायिकवदेव पर्याप्त बादरपृथिवीकायिकोऽपि विंशति स्थानेषु अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकत आरभ्य पर्याप्त बादरवनस्पतिकायिकायिकान्तेषु अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकवदेव उपपातयितव्य इति। ८०, 'एवं आउक्काइओ वि चउसु वि गमएसु पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' एवं पृथिवीकायिकवदेव अप्कायिकोऽपि चतुर्ष्वपि गमकेषु, अपर्याप्त सूक्ष्म, पर्याप्त सूक्ष्मापर्याप्त बादर पर्याप्त बादर रूपेषु रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः, 'एयाए चेव वत्तव्वया एएसु चेव वीसइट्ठाणेसु उववाएयव्वो' एतयैव वक्तव्यतया एतेष्वेव विंशति स्थानेषु अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकत आरभ्य पर्याप्त बादरवनस्पतिकायिकान्त रूपेषु उपपातयितव्यः,

समस्त जीवों में उत्पन्न कर लेना चाहिये। इस सम्बन्ध में उपपात सम्बन्धी आलापक प्रकार अपने आप उद्भावित कर लेना चाहिये ६०, 'एवं पज्जत्त बायरपुढवीकाइओ वि' ८० इसी प्रकार से अपर्याप्त बादर पृथिवीकायिक के जैसे ही पर्याप्त बादर पृथिवीकायिक भी २० स्थानों में अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक से लेकर पर्याप्त बादरवनस्पति कायिकतक के जीवों में उत्पन्न करा लेना चाहिये ८०। 'एवं आउक्काइओ वि चउसु वि गमएसु पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' इसी प्रकार अप्कायिक जीव भी अपर्याप्त सूक्ष्म पर्याप्त सूक्ष्म, अपर्याप्त बादर और पर्याप्त बादर रूप चारों गमकों को आश्रित करके रत्नप्रभापृथिवी के पूर्व चरमान्त में समुद्घात पूर्वक 'एयाए चेव वत्तव्वयाए एएसु चेव वीसइट्ठाणेसु उववाएयव्वो' इसी वक्तव्यता द्वारा ऊपर में प्रदर्शित बीस स्थानों में उत्पन्न कराना चाहिये। तात्पर्य कहनेका यही है कि

ઉપપાત વિષેના આલાપકોનો પ્રકાર સ્વયં બનાવીને સમજી લેવો. 'एवं पज्जत्त बायर पुढवीकाइओ वि' આ અપર્યાપ્ત બાદર પૃથ્વિકાયિકના કથન પ્રમાણે જ પર્યાપ્તક બાદર પૃથ્વિકાયિક પણ ૨૦ વીસે સ્થનોમાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકથી લઈને પર્યાપ્ત બાદર વનસ્પતિકાયિક સુધીના જીવોમાં ઉત્પન્ન થયાના સંબંધમાં કથન સમજી લેવું. ૮૦ 'एवं आउकाइयो वि चउसु वि गमएसु पुरत्थिमिल्ले चरमंते ! समोहए' આજ પ્રમાણે અપ્કાયિક જીવ પણ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ. પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ, અપર્યાપ્ત બાદર. અને પર્યાપ્ત બાદર રૂપ ચારે ગમોનો આશ્રય કરીને રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત પૂર્વક 'एयाए चेव वत्तव्वयाए एएसु चेव वीसइ ट्ठाणेसु उववाएयव्वो' આ કથન પ્રમાણે ઉપર બતાવેલા વીસ સ્થાનોમાં ઉત્પત્તિ કહેવી જોઈએ કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-પૃથ્વીકાયિકના

पृथिवीकायिकवदेव अप्कायिकस्यापि वक्तव्यता भणितव्येति। अप्कायिकस्य सूक्ष्म बादरपर्याप्तापर्याप्त भेदभिन्नस्य चतुष्कस्य पृथिवीकायिकादिवनस्पतिकायिकान्त विंशतिस्थानेषु उपपातकरणेन अशीतिर्भेदा भवन्ति। अशीत्य शीति भेद भिन्न पृथिवीकायिकाऽप्कायिकयोः संमेलनात् षष्ट्याधिकशतभेदा भवन्ति १६०।

'सुहुमतेउकाइओ वि अपज्जत्तओ पज्जत्तओ य एएसु चेव वीसइठाणेसु उववाएयव्वो' सूक्ष्मतेजस्कायिकोऽपि अपर्याप्तकः पर्याप्तकश्च, एतेष्वेव विंशति स्थानेषु अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकत आरभ्य पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिकान्तेषु उपपातयितव्यः अपर्याप्त सूक्ष्मतेजस्कायिक पर्याप्त सूक्ष्मतेजस्कायिकयोरपि विंशतिस्थानेषु अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकवदेव रत्नप्रभायामुपपातो वर्णनीय इति तदेवं चत्वारिंशद् भेदा भवन्ति ४० (२००)

पृथिवीकायिक की जैसी ही वक्तव्यता अप्कायिक जीव की है। इस प्रकार सूक्ष्मबादर पर्याप्त और अपर्याप्त भेद विशिष्ट होने से चार प्रकार के अप्कायिक जीव के पृथिवीकायिक से लेकर वनस्पतिकायिक तक के २० स्थानों में उत्पाद कराने के कथन से ८० भेद हो जाते हैं। ८०-८० भेद युक्त हुए पृथिवीकायिक और अप्कायिक के सम्मेलन से १६० भेद हो जाते हैं।

'सुहुमतेउकाइओ वि अपज्जत्तओ पज्जत्तओ य एएसु चेव वीसइठाणेसु उववाएयव्वो' अपर्याप्त पर्याप्तक सूक्ष्मतेजस्कायिक भी इन्हीं बीस स्थानों में अपर्याप्तक सूक्ष्मपृथिवीकायिक से लेकर पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक तक के जीवों में-उत्पादयितव्य है। अतः इन दोनों प्रकार के तेजस्कायिक जीवों का अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक के जैसा २० स्थानों में रत्नप्रभापृथिवी में उपपात वर्णित कर लेना चाहिये।

કથન પ્રમાણેનું જ કથન અપકાયિક જીવનું છે. આ રીતે સૂક્ષ્મ બાદર, પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત ભેદવાળા હોવાથી ચાર પ્રકારના અપ્કાયિક જીવોના પૃથિવીકાયિકોથી લઈને વનસ્પતિકાય સુધીના ૨૦ વીસ સ્થાનોમાં ઉત્પાત થવાના કથનથી ૮૦ એંસી ભેદો થઈ જાય છે ૮૦-૮૦ એંસી એંસી ભેદવાળા પૃથ્વીકાયિકને મેળવવાથી કુલ ૧૬૦ એકસોસાઈઠ ભેદો થઈ જાય છે.

'સુહુમ તેઉકાઇઓ વિ અપજ્જત્તઓ ય એએસુ ચેવ વીસઇ ઠાણેસુ ઉવવાએય વ્વો' અપર્યાપ્ત, પર્યાપ્તક, સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક પણ આજ વીસ સ્થાનોમાં અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકથી લઈને પર્યાપ્તક બાદર વનસ્પતિકાયિક સુધીના જીવોમાં ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં કહેવું જોઈએ. તેથી આ બન્ને પ્રકારના તેજસ્કાયિક જીવોનો અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકોની જેમ ૨૦ વીસે સ્થાનોમાં રત્નપ્રભા પૃથ્વીમાં ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં કહેવું જોઈએ. આ રીતે

बादरतेजस्कायिकानां मनुष्यक्षेत्रादन्यत्रासम्भवात् सूक्ष्मपर्याप्तापर्याप्तयोरेव द्वौ भेदौ कथितौ ! बादरपर्याप्तापर्याप्तयो स्तेजस्कायिकयो द्वौ भङ्गौ मनुष्यक्षेत्रम् अधिकृत्याग्रिमसूत्रे कथयिष्येते इति । तदेवाह–'अपज्जत्त बायरतेउकाइएण भंते !' अपर्याप्त बादर तेजस्कायिकः खलु भदन्त । 'मणुस्स खेत्ते समोहए' मनुष्यक्षेत्रे समवहतः, 'समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए' समवहत्य यो भव्य एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः, 'पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' पाश्चात्ये–पश्चिमे चरमान्ते अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकतया पृथिवीकायिकरूपेणेत्यर्थः उत्पत्तुम् 'से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' स खलु भदन्त ! कति सामयिकेन

इस प्रकार से यहां ४० चालीस भेद होते हैं । ४० । बादरतेजस्कायिकों का मनुष्यक्षेत्र से बाहर संभव नहीं है वहीं पर इनका सद्भाव है इसलिये यहां उनके सूक्ष्म पर्याप्त और सूक्ष्म अपर्याप्त ऐसे दो ही भेद कहे हैं। बाकी के इनके बादर पर्याप्त और बादर अपर्याप्त से दो भङ्ग मनुष्य क्षेत्र को अधिकृत करके सूत्रकार आगे के सूत्र में कह रहे हैं–'अपज्जत्त बायर तेउकाइए णं भंते ! 'हे भदन्त ! कोई अपर्याप्त बादरतेजस्कायिक मनुष्य क्षेत्र में मारणान्तिक समुद्घात करके मरा 'और समोहणित्ता' मरकर 'जे भविए' इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' इस रत्नप्रभा पृथिवी के पूर्व चरमान्त में अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न होने के योग्य हुआ 'से णं भंते ! कइसमइए णं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' तो हे भदन्त ! वह वहां कितने समयवाले विग्रह से

અહિયાં ૪૦ ચાળીસ ભેદો થાય છે બાદર તેજસ્કાયિકોનો મનુષ્યક્ષેત્રની બહાર સંભવ હોતા નથી. મનુષ્ય ક્ષેત્રમાં જ તે ઓનો સદ્ભાવ છે, તેથી અહિયાં તેઓના સૂક્ષ્મ અપર્યાપ્ત અને સૂક્ષ્મ પર્યાપ્ત એવા બે જ ભેદો કહ્યા છે, બાકીના તેઓના બાદર પર્યાપ્ત અને બાદર અપર્યાપ્ત એ રીતે બે ભંગો મનુષ્ય ક્ષેત્રને અધિકૃત કરીને સૂત્રકાર આગળના સૂત્રમાં કહેશે. 'अपज्जत्त बायर तेउकाइएणं भंते ! હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિક મનુષ્યક્ષેત્રમાં મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને મરણ પામે અને મરીને તે 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चात्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्त सुहुम पुढवी काइयत्ताए उववज्जित्तए भविए' આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વચરમાન્તમાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયો હોય 'से णं भंते ! कइ समइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' તો હે ભગવાન્ તે ત્યાં કેટલા સમયવાળી

विग्रहेणोत्पद्येत ? इति प्रश्नः, उत्तरमाह-'सेसं' इत्यादि, 'सेसं तहेव जाव से तेणट्ठेणं' शेषम्-प्रश्नातिरिक्तमुत्तरं तदेव समुत्पद्यमानस्य पृथिवीकायिकस्य यत् कथितं तदेव यावत् तत्तेनार्थेन०, हे गौतम ! एकसामयिकेन वा, यावत् त्रिसामयिकेन वा, विग्रहेण उत्पद्येत, तत् तेनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते, एकसामयिकेन वा, यावत् त्रिसामयिकेनेत्यादि । हे गौतम ! मया खलु सप्तश्रेणयः कथिताः, इत्यादिकं सर्वमिहानुसन्धेय मिति । 'एवं पुढवीकाइएसु चउव्विहेसु उववाएयव्वो' एवम्-प्रदर्शितक्रमेण पृथिवीकायिकेषु चतुर्विधेष्वपि सूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्त भेदभिन्नेषु अपर्याप्त बादरतेजस्कायिकस्य उपपातो वर्णनीयः वर्णनप्रकारस्तु स्वयमेवोहनीयः ।

'एवं आउकाइएसु चउव्विहेसु वि' एवं यथा चतुर्विध पृथिवीकायिकेषु

उत्पन्न होता है ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'सेसं तहेव जाव से तेणट्ठेणं' हे गौतम ! वह वहां पर एक समयवाले विग्रह से अथवा दो समयवाले विग्रह से अथवा तीन समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है ऐसा यहां पर सब उत्तर रूप कथन पूर्ववत् समझ लेना चाहिये । हे भदन्त ! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं ? हे गौतम ! मैंने सात श्रेणि कही हैं। यहां पर भी उत्तर रूप में सब कथन पूर्वके जैसा ही लगा लेना चाहिये 'एवं पुढवीकाइएसु चउव्विहेसु उववाएयव्वो' इस प्रकार प्रकट किये गये क्रम से अपर्याप्त बादरतेजस्कायिकके उत्पादका सूक्ष्मबादर पर्याप्त अपर्याप्त भेद विशिष्ट पृथिवीकायिकों में उपपात कर लेना चाहिये, तथा इस सम्बन्ध में वर्णन करनेका प्रकार-अपने आप उद्भावित कर लेना चाहिये । 'एवं आउकाइएसु चउव्विहेसु वि' जिस रीति से

વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'सेसं तहेव जाव से तेणट्ठेणं' હે ગૌતમ ! ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી અથવા બે સમયવાળી વિગ્રહગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. આ પ્રમાણે અહિયાં સઘળું ઉત્તર વાક્ય રૂપ કથન સમજી લેવું. હે ભગવન્ આપ એવું શા કારણથી કહો છો ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં હે ગૌતમ ! મેં સાત શ્રેણીયો કહી છે, વિગેરે સઘળું કથન અહિયાં પણ ઉત્તર રૂપે પહેલાં કહ્યા પ્રમાણેનું કથન સમજી લેવું 'एवं पुढवीकाइएसु चउव्विहेसु उववाएयव्वो' આ રીતે ઉપર પ્રગટ કરવામાં આવેલા ક્રમથી અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકોના ઉત્પાદનું-સૂક્ષ્મ, બાદર, પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત ભેદવાળા પૃથ્વિકાયિકોનું વર્ણન સમજી લેવું. તથા આ વિષયનું વર્ણન કરવાની રીત સ્વયં સમજી લેવી. 'एवं आउकाइएसु चउव्विहेसु वि' જે રીતથી ચાર પ્રકારના

अपर्याप्त बादरतेजस्कायिकस्योपपातो दर्शित स्तथैव अप्कायिकेषु चतुर्विधेषु अपर्याप्तादि भेदभिन्नेषु अपर्याप्तबादरतेजस्कायिकस्योपपातोऽपि वर्णयितव्यः इति । 'तेउक्काइएसु सुहुमेसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य एवं चेव उववाएयव्वो' सूक्ष्मतेजस्कायिकेषु अपर्याप्तकेषु पर्याप्तकेषु च एवमेव पूर्वप्रदर्शितक्रमेणैव उपपातयितव्यः । अपर्याप्त बादरतेजस्कायिकस्यापर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिकेषु तथा पर्याप्त सूक्ष्मतेजस्कायिकेषु पूर्वोक्तरूपेणैवोपपातो वर्णनीय इति भावः । 'अपज्जत्तबायरतेउक्काइएणं भंते ! मणुस्सखेत्ते समोहए' अपर्याप्त बादरतेजस्कायिकः खलु भदन्त ! मनुष्यक्षेत्रे समवहतः 'समोहणित्ता जे भविए मणुस्सखेत्ते अपज्जत्त बायरतेउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए' समवहत्य मारणान्तिकसमुद्घातं

चतुर्विध पृथिवीकायिकों में अपर्याप्त बादरतेजस्कायिक का उपपात दिखाया गया है उसी रीति से अपर्याप्तादि भेदवाले चतुर्विध अप्कायिकों में अपर्याप्त बादर तेजस्कायिक के उत्पादका वर्णन कर लेना चाहिये । 'तेउक्काइएसु सुहुमेसु अपज्जत्तएसु य एवंचेव उववाएयव्वो' इसी प्रकार से अपर्याप्तक और पर्याप्तक सूक्ष्मतेजस्कायिकों में भी बादर अपर्याप्त तेजस्कायिक के उत्पादका वर्णन कर लेना चाहिये । अर्थात् अपर्याप्त सूक्ष्मतेजस्कायिकों में एवं पर्याप्त सूक्ष्मतेजस्कायिकों में पूर्व में दिखाए गए क्रमके अनुसार बादर अपर्याप्त तेजस्कायिकके उत्पादका कथन कर लेना चाहिए ।

'अपज्जत्त बायरतेउकाइणं भंते ! मणुस्सखेत्ते समोहए' हे भदन्त ! कोई अपर्याप्त बादरतेजस्कायिक जीव मनुष्य क्षेत्र में मरा 'समोहणित्ता

પૃથ્વીકાયિકોમાં અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકોનો ઉપપાત બતાવવામાં આવેલ છે' એજ પ્રમાણે અપર્યાપ્ત વિગેરે ભેદવાળા ચાર પ્રકારના અપ્કાયિકોમાં અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકના ઉત્પાદનું વર્ણન સમજી લેવું. 'तेउक्काइएसु सुहुमेसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य एवं चेव उववएयव्वो' આજ પ્રમાણે અપર્યાપ્ત અને પર્યાપ્તક તેજસ્કાયિકોમાં પણ બાદર અપર્યાપ્ત તેજસ્કાયિકના ઉત્પાદનું વર્ણન કરી લેવું. અર્થાત્ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિકોમાં અને પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિકોમાં તથા અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકોમાં અને પર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકોમાં પહેલાં બતાવેલા ક્રમ પ્રમાણે બાદર અપર્યાપ્ત તેજસ્કાયિકના ઉત્પાદનું કથન કરી લેવું જોઈએ.

'अपज्जत्त बायरतेउकाइएणं भंते ! मणुस्सखेत्ते समोहए' હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિક જીવ મનુષ્ય ક્ષેત્રમાં મરણ પામે 'समोहणित्ता जे

कृत्वा यो भव्यो मनुष्यक्षेत्रे अपर्याप्तबादरतेजस्कायिकतया-तेजस्कायिकरूपेणो-त्पत्तुम्-से णं भंते ! कइ समइएणं' स खलु भदन्त ! कतिसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्यतेति प्रश्नः। उत्तरमाह-'सेसं' इत्यादि। 'सेसं तं चेव' शेषं प्रश्नव्य-तिरिक्तम् उत्तरं सर्वमपि तदेव अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकप्रकरणकथितमेव। 'एवं पज्जत्त बायरतेउकाइयत्ताए वि उववाएयव्वो' एवं पर्याप्तबादरतेजस्कायि-कतयाऽपि उपपातयितव्याः। यथा अपर्याप्तबादरतेजस्कायिकस्य मनुष्यक्षेत्रे समवहतस्यापर्याप्त बादरतेजस्कायिकरूपेण उपपातो दर्शित स्तथैवापर्याप्त-बादरतेजस्कायिकस्य मनुष्यक्षेत्रसमवहतस्य पर्याप्तबादरतेजस्कायिकरूपेणा-ऽपि उपपातो वक्तव्यः प्रक्रिया पूर्ववदेवोहनीयेति भावः। 'वाउकाइयत्ताए य

'जे भविए मणुस्सखेत्ते अपज्जत्त बायरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए' और मरकर वह मनुष्य क्षेत्र में ही अपर्याप्त बादरतेजस्कायिक रूप से उत्पन्न होने के योग्य हुआ तो 'से णं भंते! कइसमइएणं०' हे भदन्त! वह कितने समयवाले विग्रह से वहां उत्पन्न होता है? उत्तर में प्रभुश्री गौतमस्वामी से कहते हैं-'सेसं तंचेव' हे गौतम! इस सम्बन्ध में उत्तर रूप सब कथन अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक के प्रकरण में कहे अनुसार ही समझना चाहिए। 'एवं पज्जत्तबायर तेउकाइयत्ताए वि उववाएयव्वो' जिस प्रकार से मनुष्यक्षेत्र में समवहत अपर्याप्त बादर-तेजस्कायिकका अपर्याप्त बादरतेजस्कायिक रूप से मनुष्यक्षेत्र में उप-पात दिखाया है, उसी प्रकार से मनुष्यक्षेत्र में समवहत अपर्याप्त बादर-तेजस्कायिकका पर्याप्त बादरतेजस्कायिक रूप से भी उपपात कह लेना चाहिये। इस सम्बन्ध में प्रक्रिया पूर्व के जैसी ही उद्भावित कर लेनी

भविए मणुस्सखेत्ते अपज्जत्त बायर तेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए' અને મરીને તે મનુષ્ય ક્ષેત્રમાં જ અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકપણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયો હોય તો 'से णं भंते! कइ समइएणं.' હે ભગવન્ તે કેટલા સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે- 'सेसं तं चेव' હે ગૌતમ! આ સમ્બન્ધમાં ઉપપાત રૂપ સઘળું કથન અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકના પ્રકરણમાં કહ્યા પ્રમાણે જ સમજવું.

'एवं पज्जत्त बायरतेउकाइयत्ताए वि उववाएयव्वो' જે પ્રમાણે મનુષ્ય ક્ષેત્રમાં સમવહત અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકનો ઉપપાત અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકપણાથી બતાવેલ છે, એજ પ્રમાણે મનુષ્ય ક્ષેત્રમાં સમવહત અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકનો ઉપપાત-પર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિક પણાથી

वणस्सइकाइयत्ताए य जहा पुढवीकाइएसु तहेव चउक्कएणं भेएणं उववाएयव्वो' वायुकायिकतया च वनस्पतिकायिकतया च यथा-पृथिवीकायिकेषु तथैव भेद चतुष्टयेन सूक्ष्म बादरतेजस्कायिकस्य यथा पृथिवीकायिकेषु उपपातः कथितस्तथा-सूक्ष्म बादर पर्याप्तापर्याप्तक चतुष्कभेदेन वायुकायिकरूपेण वनस्पतिकायिकरूपेण उपपातो वर्णनीय इति। 'एवं पज्जत्त बायरतेउकाइओ वि समयखेत्ते समोहणावेत्ता एएसु चेव वीसइठाणेसु उववाएयव्वो' एवमपर्याप्तवादरतेजस्कायिकवदेव पर्याप्त बादरतेजस्कायिकोऽपि विज्ञेयः, तं समयक्षेत्रे समवघात्य एतेष्वेव विंशतिस्थानेषु अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकत आरभ्य पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिकान्तेषु विंशतिस्थानेषु उपपातयितव्यः, उपपातप्रकारस्तु पूर्वदर्शितक्रमेणैव ज्ञातव्य इति। क इव? इत्याह-'जहेव अपज्जत्तओ उववाइओ' यथैव,

---

चाहिये। 'वाउकाइयत्ताए य वणस्सइकाइयत्ताए य जहा पुढवीकाइएसु तहेव चउक्कएणं भेएणं उववाएयव्वो' अपर्याप्त बादरतेजस्कायिकका जैसा-पृथिवीकायिकों में उपपात कहा है उसी प्रकार से इसके उपपात का वर्णन सूक्ष्म बादर पर्याप्त और अपर्याप्त भेदोंवाले वायुकायिकों में और वनस्पतिकायिकों में भी कर लेना चाहिये। 'एवं पज्जत्तबायरतेउकाइओ वि समयखेत्ते समोहणावेत्ता एएसु चेव वीसइठाणेसु उववाएयव्वो' अपर्याप्त बादरतेजस्कायिक के जैसा ही पर्याप्त बादरतेजस्कायिकका भी कथन जानना चाहिये। अर्थात् समयक्षेत्र में उसका मारणान्तिक समुद्घात से मरण करवाकर इन्हीं बीस स्थानों में-अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक से लेकर पर्याप्त बादरवनस्पतिकायिक तक के जीवों में-उसका उत्पात करवाना चाहिये। उत्पात करवाने कीरीति पहिले प्रकट ही की जा चुकी है। 'जहेव अपज्जत्तओ उववाइओ'

પણ સમજી લેવો. આ સંબંધમાં આલાપનો પ્રકાર પહેલા કહ્યા પ્રમાણે જ સમજી લેવો. 'वाउकाइयत्ताए य वणस्सइकाइयत्ताए य जहा पुढवीकाइएसु तहेव चउक्कएणं भेएण उववाएयव्वो' અપર્યાપ્ત બાદરતેજસ્કાયિકનો ઉપપાત જે પ્રમાણે પૃથ્વીકાયિકોમાં કહેલ છે. એજ પ્રમાણે તેના ઉપપાતનું વર્ણન સૂક્ષ્મ બાદર પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત ભેદોવાળા વાયુકાયિકોમાં અને વનસ્પતિ કાયિકોમાં પણ કરી લેવું.

'एवं पज्जत्त बायरतेउकाइओ वि समयखेत्ते समोहणावेत्ता' एएसु चेव वीसइठाणेसु उववाएयव्वो' અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકોની જેમ જ પર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકનું કથન પણ સમજવું. અર્થાત્ સમય ક્ષેત્રમાં તેમને મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી મરણ કરાવીને આ વીસ સ્થાનોમાં-અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકોથી લઈને પર્યાપ્ત બાદર વનસ્પતિકાયિક સુધીના જીવોમાં-તેઓનો ઉપપાત કહેવો જોઇએ ઉત્પાત કરવાની રીત પહેલા જ બતાવવામાં આવેલ છે. તે પ્રમાણે

अपर्याप्तक उपपातितः, यथा-अव्यहित पूर्वम् अपर्याप्त बादरतेजस्कायिकस्य उपपातो वर्णित स्तद्वत् पर्याप्त बादरतेजस्कायिकस्याऽपि उपपातो वर्णनीय इति भावः। एवं सव्वत्थ वि बायरतेउकायिका अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य समयखेत्ते उववाएयव्वा समोहणावेयव्वावि' ।२४०। एवं यथैव अपर्याप्तक बादरतेजस्कायिक उपपातितः 'अपज्जत्तबायरतेउकाइएणं भंते !' इत्यादि सूत्रेण, एवमेव सर्वत्रापि विंशतिस्थानेष्वपि बादरतेजस्कायिका अपर्याप्तकाश्च पर्याप्तकाश्च समयक्षेत्रे उपपातयितव्याः समवघातयितव्या अपि। एवमपर्याप्त पर्याप्त बादरतेजस्कायि-

अर्थात् जिस प्रकार से अपर्याप्त बादरतेजस्कायिक के उत्पातका अभी अभी वर्णन किया गया है उसी प्रकार से पर्याप्त बादरतेजस्कायिक के उपपात का भी वर्णन कर लेना चाहिये यही इस कथनका सारांश है। 'एवं सव्वत्थ वि बायरतेउकाइया अपज्जत्तगाय पज्जत्तगाय समयखेत्ते उववाएयव्वा समोहणावेयव्वा वि' जिस प्रकार 'अपज्जत्त बायरतेउकाइएणं भंते !' इत्यादि सूत्र द्वारा अपर्याप्त बादरतेजस्कायिक के उत्पातका कथन किया गया है, इसी प्रकार से सर्वत्र २० स्थानों में भी अपर्याप्तक और पर्याप्तक बादरतेजस्कायिक जीवों के समयक्षेत्रको मनुष्यक्षेत्र को आश्रित करके उत्पातका कथन कर लेना चाहिये। अर्थात् उन्हें वहां उत्पन्न बोलना चाहिये। और वहीं पर उनका मारणान्तिक समुद्घात से मरण बोलना चाहिये। इस प्रकार अपर्याप्त और पर्याप्त बादरतेजस्कायिक जीवोंका मनुष्यक्षेत्र में ही समुद्घात और

સમજવી 'जहेव अपज्जत्तओ उववाइओ' અર્થાત્ જે પ્રમાણે અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકોના ઉત્પાતનું વર્ણન હમણાં જ ઉપર કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે પર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકના ઉત્પાતનું વર્ણન પણ સમજવું. એજ આ કથનનો સારાંશ કહેલ છે. 'एवं सव्वत्थ वि बायर तेउकाईया अपज्जत्तगाय पज्जत्तगाय समयखेत्ते उववाएयव्वा समोहणावेयव्वा वि' જે પ્રમાણે 'अपज्जत्त बायरतेउकाइएणं भंते !' ઇત્યાદિ સૂત્ર દ્વારા અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકના ઉત્પાતનું કથન કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે સઘળે ઠેકાણે-એટલે કે વીસે સ્થાનોમાં પણ અપર્યાપ્તક અને પર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિક જીવોના સમય ક્ષેત્ર-મનુષ્ય ક્ષેત્રનો આશ્રય કરીને ઉત્પાતનું કથન કહેવું જોઇએ. અર્થાત્ તેમની ઉત્પત્તી ત્યાં કહેવી જોઇએ. અને ત્યાંજ તેઓનું મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી મરણ કહેવું જોઈએ આ રીતે અપર્યાપ્ત અને પર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકોનો સમુદ્ઘાત અને ઉત્પત્તી મનુષ્ય ક્ષેત્રમાં જ ક્રમથી વીસે

कानां मनुष्यक्षेत्रे समुद्घातः मनुष्यक्षेत्रे एवोपपातो यथाक्रमं विंशतिस्थानेषु वर्णनीय इति। वर्णनप्रकारस्तु पूर्वप्रदर्शित एव ज्ञातव्यः। २४०॥

'वउक्काइया वणस्सइकाइया य जहा पुढवीकाइया तहेव चउक्कएणं भेदेणं उववाएयव्वा' वायुकायिका वनस्पतिकायिकाश्च यथा पृथिवीकायिका स्तथैव चतुष्केन भेदेन सूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्तभेदेन उपपातयितव्याः। वायुकायिकोऽपि च द्विविधः, सूक्ष्मो बादरश्च। सूक्ष्मोऽपि अपर्याप्त पर्याप्त भेदेन द्विविध स्तथा बादरोऽपि अपर्याप्त पर्याप्त भेदेन द्विविध स्तदेवं चतुर्विधा वायुकायिकाः। तेषां चतुष्केन भेदेन वायुकायवनस्पतिकाययोः सर्वत्र सम्भवात् पृथिवीकायिकवदेव उपपातो वर्णनीयः। (३२०) एवमेव वनस्पतिकायिकानामपि चतुष्केन भेदेन पृथिवीकायिकवदेव उपपातो वक्तव्यः।४००। कियत्पर्यन्तं चतुर्भेदभिन्नयोः वायुवनस्पतिकायिकयो रुपपातो वर्णनीय स्तत्राह-'जाव' इत्यादि, जाव पज्जत्त

उपपात यथाक्रम बीस स्थानों में वर्णित करना चाहिये अन्यत्र नहीं। वर्णन करनेका प्रकार पूर्व में दिखा ही दिया गया है २४०।

'वउक्काइया वणस्सइकाइया य जहा पुढवीकाइया तहेव चउक्कएणं भेदेणं उववाएयव्वा' पृथिवीकायिक के जैसा वायुकायिक का और वनस्पतिकायिकका अपने अपने भेदों के साथ सर्वत्र उपपाद कहना चाहिये। वायुकायिक भी सूक्ष्म और बादर के भेद से दो प्रकार का होता है इनमें सूक्ष्म वायुकायिक भी अपर्याप्त और पर्याप्त के भेद से दो प्रकार का कहा गया हैं तथा बादरवायुकायिक भी अपर्याप्त और पर्याप्तक भेद से दो प्रकार का कहा गया है। इस प्रकार चार प्रकार के वायुकायिक और चार प्रकार के वनस्पतिकायिक सर्वत्र संभवित होने से पृथिवीकायिक के जैसे इनके उपपाद का वर्णन कर लेना चाहिये

સ્થાનેમાં વર્ણન કહેવુ જોઈએ. બીજે નહીં. વર્ણન કરવાનો પ્રકાર પહેલાં ઉપર બતાવવામાં આવી ગયેલ છે. તે મુજબ સમજવો. ૨૪૦)

'वाउक्काइया वणस्सइकाइया य जहा पुढवीकाइया तहेव चवक्कएणं भेएणं उववएयव्वा' પૃથ્વીકાયિકના કથન પ્રમાણે વાયુકાયિકનું અને વનસ્પતિ કાયિકોનું કથન ભેદો સાથે સ્વયં બનાવીને સઘળા સ્થાનોમાં ઉપપાત સમજવો. વાયુકાયિક પણ સૂક્ષ્મ અને બાદરના ભેદથી બે પ્રકારના થાય છે. સૂક્ષ્મવાયુકાયિકો પણ અપર્યાપ્ત અને પર્યાપ્તના ભેદથી બે પ્રકારના કહેલ છે. તથા બાદર વાયુકાયિક પણ અપર્યાપ્ત અને પર્યાપ્તના ભેદથી બે પ્રકારના કહેલ છે. આ રીતે ચાર પ્રકારના વાયુકાયિક અને ચાર પ્રકારના વનસ્પતિકાયિકનું બધે સંભવિત પણું હોવાથી પૃથ્વીકાયિકની જેમ તેમના ઉપપાતનું વર્ણન

बायरवणस्सइकाइएणं भंते !' यावत्पर्याप्त बादरवनस्पतिकायिकः खलु भदन्त ! अत्र यावत्पदेन पर्याप्त सूक्ष्मवायुकायिकस्यापर्याप्त बादरवायुकायिकस्य, पर्याप्त-बादरवायुकायिकस्य, अपर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिकस्य, पर्याप्त सूक्ष्मवनस्पति-कायिकस्य, अपर्याप्त बादरवनस्पतिकायिकस्य च संग्रहो भवति। एतादृशः पूर्वोक्तचतुर्भेदभिन्नो वनस्पतिकायिकः, 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए' एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः 'पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' पौरस्त्ये पूर्वस्मिन् चर-मान्ते समवहतः, 'समोहणित्ता' समवहत्य मरणान्तिकसमुद्घातं कृत्वा, 'जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए' यो भव्य एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः, पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते पज्जत्त बायरवणस्सइकाइयत्ताए उववज्जित्तए' पाश्चात्ये-पश्चिमे चरिमान्ते पर्याप्त बादरवनस्पतिकायिकतयोत्पत्तुम्। 'से णं भंते ! कइ-समइएणं' स खलु भदन्त ! कति सामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येतेति प्रश्नः।

४००, 'जाव पज्जत्तबायरवणस्सइकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' यावत् हे भदन्त ! कोई पर्याप्त बादरवनस्पतिकायिक इस रत्नप्रभा पृथिवी के पूर्व चरमान्त में मरा और 'समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थि-मिल्ले चरिमंते पज्जत्त बायरवणस्सइकाइयत्ताए उववज्जित्तए' मरकर वह इसी रत्नप्रभा के पश्चिम चरमान्त में बादर पर्याप्त वनस्पतिका-यिक रूप से उत्पन्न होने के योग्य हुआ 'से णं भंते ! कइसमइएणं०' 'तो हे भदन्त ! वह कितने समयवाले विग्रह से वहां उत्पन्न होता है? यहां यावत् शब्द से सूक्ष्म पर्याप्त वायुकायिक का अपर्याप्त बादर वायुकायिक

करी લેવું જોઈએ. ४०० 'जाव पज्जत्त बायर वणस्सइकाइएणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते ! समोहए' યાવત્ હે ભગવન્ કોઈ પર્યાપ્ત વનસ્પતિકાયિક આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મરણ પામે અને 'समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते ! पज्जत्त बायरवणस्सइकाइयत्ताए उववज्जित्तए' મરીને તે આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં બાદર પર્યાપ્તક વનસ્પતિકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયો હોય તો 'से णं भंते ! कइसमइएणं' હે ભગવન્ તે કેટલા સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે? અહિયાં યાવત્ શબ્દથી સૂક્ષ્મ પર્યાપ્ત વાયુકાયિકનું, અપર્યાપ્ત બાદર વાયુકાયિકનું, પર્યાપ્ત બાદર વાયુ-કાયિકનું, અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાયિકોનું, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાયિકોનું અને અપર્યાપ્ત બાદર વનસ્પતિકાયિકનું ગ્રહણ થયેલ છે આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'सेसं तहेव जाव से तेणट्ठेणं' હે ગૌતમ ! જે પ્રમાણે અપર્યાપ્ત

उत्तरयति—'सेसं' इत्यादिना, 'सेसं तहेव जाव से तेणट्ठेणं' शेषं तथैव यथा अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकोपपातावसरे उत्तरे कथितं तथैव इहापि यावत्तेनार्थेन गौतम! एवमुच्यते, इत्यादि प्रकरणान्तं सर्वमपि उत्तरादिकं ज्ञातव्यम्। यावत् पदेन सम्पूर्णस्यापि उत्तरवाक्यस्य संग्रहो भवति।

'दक्षिण चरमान्ते उपपातं वर्णयितुमाह—अपज्जत्तसुहुम' इत्यादि। 'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइएणं भंते!' अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त! 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' एतस्याः रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पाश्चात्ये–पश्चिमे चरमान्ते समवहतः 'समोहणित्ता जे भविए' समव-

---

का अपर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिकका, एवं अपर्याप्त बादरवनस्पतिकायिक का संग्रह हुआ हैं। इस प्रकार प्रश्न के उत्तर में प्रभुश्री गौतम स्वामी से कहते हैं–'सेसं तहेव जाव से तेणट्ठेणं' हे गौतम! जैसा अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक के उपपात के अवसर में उत्तररूप में कहा गया है उसी प्रकार से यहां पर भी 'यावत् हे गौतम! मैंने इस कारण से ऐसा कहा है' इस प्रकरण तक कह लेना चाहिये। यहां यावत् पद से सम्पूर्ण उत्तर वाक्य का संग्रह हुआ है।

अब सूत्रकार पूर्व दक्षिण चरमान्त में उपपात का वर्णन करते हैं–इसमें गौतमस्वामीने प्रभुश्री से ऐसा पूछा है–'अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइएणं भंते!' हे भदन्त! कोई अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' इस रत्नप्रभापृथिवी के पश्चिम चरमान्त में मारणान्तिक समुद्घात से मरा 'समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते

સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકના ઉપપાતના સંબંધમાં ઉત્તર રૂપથી કથન કરેલ છે, તેજ રીતે આ પ્રકરણમાં પણ યાવત્ હે ગૌતમ! મેં આકારણથી એવું કહ્યું છે કે— આ પ્રકરણ પર્યન્ત સમજી લેવું અહિયાં યાવત્ પદથી આ સમગ્ર ઉત્તર વાક્ય ગ્રહણ કરાયું છે.

હવે સૂત્રકાર દક્ષિણ ચરમાન્તમાં ઉપપાતનું વર્ણન કરે છે. આમાં ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને એવું પૂછયું છે કે–'अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइयाणं भंते!' હે ભગવન્ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ કોઈ પૃથ્વીકાયિક જીવ 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते। समोहए' આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી મરણપામે અને 'समोहणित्ता जे भविए

य-मारणान्तिक समुद्घातं कृत्वा यो भव्यः 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए' तस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः, 'पुरत्थिमिल्ले चरिमंते' पौरस्त्ये-पूर्वे चरमान्ते, अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिक-या अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकरूपेणोत्पत्तुम्, 'से णं भंते ! कइसमइएणं' खलु भदन्त ! कति सामयिकेन विग्रहेणोत्पद्यतेति प्रश्नः। उत्तरमाह-सेसं हेव' इत्यादि। 'सेसं तहेव निरवसेसं' शेषम्-एतदतिरिक्तं निरवशेषं प्रश्न वयमुत्तरवाक्यं च तथैव-सर्वत्र समुद्घातेषु सर्वत्र चोपपातेषु यथैव प्रश्नोत्तर करणं कथितं तेनैव रूपेण निरवशेषम् इहापि अध्येतव्यम्। एकसामयिकेन ावत् त्रिसामयिकेन वा विग्रहेणोत्पद्यत 'से केणट्टेणं' इत्यादिकं पूर्वसूत्रपठितमेव

अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' और मरकर वह उसी त्नप्रभापृथिवी के पूर्व चरमान्त में अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक रूप से त्पन्न होने के योग्य हुआ 'से णं भंते ! कइसमइएणं०' तो हे भदन्त ! वह वहां कितने समय वाले विग्रह से उत्पन्न होता है ? उत्तर में प्रभुश्री गौतमस्वामी से कहते हैं-'सेसं तहेव निरवसेसं' हे गौतम ! इस सम्बन्ध में जैसा कि पूर्व में सर्वत्र समुद्घातों में और उपपातों में प्रश्नो-त्तर प्रकरण कहा गया है वैसा ही यहां पर भी वही सब कथन कह लेना चाहिये। अर्थात् वह वहां एक समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है अथवा दो समयवाले विग्रह से अथवा तीन समयवाले विग्रहसे उत्पन्न होता है। 'से केणट्ठेणं' इत्यादि सूत्र से प्रश्न और 'से तेणट्ठेणं०' इत्यादि सूत्र से उत्तर जैसा पहिले कहा जा चुका है वह सब यहां पर वहां से आकर्षित कर कह लेना चाहिये। यही बात-सेसं तहेव निरवसेसं'

इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते। सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' भरणु पामीने ते એજ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ચરમાન્તમાં સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય બનેલ હોય 'से णं भंते ! कइ समइएणं०' તો હે ભગવન્ તે ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'सेसं तहेव निरवसेसं' હે ગૌતમ ! આ સંબંધમાં જે પ્રમાણે મેં પહેલા બધે સ્થળે સમુદ્ઘાતોમાં અને ઉપપાતોમાં પ્રશ્નોત્તર રૂપથી પ્રકરણ કહ્યું છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ તે સઘળું કથન કહી લેવું. જોઈએ. અર્થાત્ તે ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. અથવા બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. 'से केणट्ठेणं' ઇત્યાદિ સૂત્રથી પ્રશ્ન અને 'से तेणट्ठेणं' ઈત્યાદિ સૂત્રથી ઉત્તર જે પ્રમાણે પહેલાં કહેલ છે. એજ પ્રમાણે તે તમામ ઉત્તર અહીંયાં કહી લેવો. એજ વાત 'सेसं तहेव निरवसेसं' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા અહિયાં સૂત્રકારે

ज्ञातव्यमितिभावः। 'एवं जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते सव्वपदेसु वि समोहया' एवं यथैव पौरस्त्ये चरमान्ते सर्वपदेष्वपि अपर्याप्त पर्याप्तादि भेदभिन्नपृथिव्यादि वनस्पतिकायिकान्त विंशति स्थानेषु समवहताः 'पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाइया' पाश्चात्ये चरमान्ते पृथिव्यप् वायुवनस्पतिकायिकाः समयक्षेत्रेऽप्यपर्याप्तबादरपर्याप्तबादरतेजस्कायिका उपपातिताः। 'जे य समयखेत्ते समोहया ये च समयक्षेत्रे समवहताः सन्तः, 'पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाइया' पाश्चात्ये चरमान्ते पृथिव्यादय श्चत्वारः, समयक्षेत्रे च बादरतेजस्कायिका उपपातिताः। 'एवं एएणं चेव कमेणं' एवमेतेनैव क्रमेण, 'पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य समोहया पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य

इस सूत्रपाठ द्वारा यहां समझाई गई है। 'एवं जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते सव्वपदेसु वि समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाइया' तथा इस सूत्र पाठ द्वारा सूत्रकार ऐसा समझा रहे हैं कि जैसा पूर्वचरमान्त में अपर्याप्त पर्याप्त आदि भेद विशिष्ट पृथिवी आदि से लेकर वनस्पतिकायिक तक के २० स्थानोंवाले जीवोंका मारणान्तिक समुद्घात करके मरण कहा गया है और मरण करके जैसा उनका पाश्चात्य चरमान्त के पृथिवी अप् वायु और वनस्पतिकायिकों में उपपात कहा गया है तथा अपर्याप्त बादर और पर्याप्त बादर तेजस्कायिकों का समयक्षेत्र में उत्पाद कहा गया है तथा 'जे य समयखेत्ते समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाइया' जो जीव बादर अपर्याप्त तेजस्कायिक, बादर पर्याप्त तेजस्कायिक-समयक्षेत्र में मारणान्तिक समुद्घात करके पाश्चात्य चरमान्त में-रत्नप्रभा पृथिवी के पश्चिम-चरमान्त में एवं समयक्षेत्र में उत्पन्न हुए कहे गये हैं। 'एवं

સમઝાવેલ છે. 'एवं जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते सव्वपदेसु वि समोहया पच्छत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेते य उववाइया' તથા આ સૂત્રપાઠ દ્વારા સૂત્રકાર એવું સમજાવે છે કે-જેમ પૂર્વ ચરમાન્તમાં અપર્યાપ્ત પર્યાપ્ત વિગેરે ભેદવાળા પૃથ્વીકાય વિગેરેથી લઈને વનસ્પતિકાય સુધીના ૨૦ વીસ સ્થાનોમાં મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને જીવોનું મરણ કહેવામાં આવેલ છે, અને મરણ કહીને જે રીતે તેઓનું-એટલે કે પૃથ્વી, અપ્, વાયુ, અને વનસ્પતિકાયિકોમાં-એટલે કે પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં ઉપપાત કહેલ છે, તથા 'जे य समयखेते समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते। समयखेते य उववाइया' જે જીવ બાદર અપર્યાપ્તક તેજસ્કાયિક, બાદર પર્યાપ્ત તેજસ્કાયિક સમય ક્ષેત્રમાં મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં-રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં અને સમય ક્ષેત્રમાં થયેલા

उववाएयव्वा तेणेव गमएणं' पाश्चात्ये चरमान्ते समयक्षेत्रे च समवहताः पौरस्त्ये चरमान्ते समयक्षेत्रे च उपपातयितव्या एतेनैव गमकेन- तेन पूर्वोक्तनैव प्रकारेणेति। 'एवं एएणं गमएणं दाहिणिल्ले चरिमंते समोहयाणं उत्तरिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाओ' एवमेतेन गमकेन दाक्षिणात्ये चरमान्ते दक्षिण चरमान्ते समवहतानाम् औत्तरे चरमान्ते समयक्षेत्रे च उपपातो वर्णनीय 'एवं चेव उत्तरिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य समोहया' एवमेवौत्तरे चरमान्ते समयक्षेत्रे च समवहताः 'दाहिणिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाएयव्वा तेणेव गमएणं' दाक्षि-

---

एएणं चेव कमेणं पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्त समोहया पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाएयव्वा' उसी प्रकार इसी क्रम से पश्चिम चरमान्त में और समयक्षेत्र में उनका मारणान्तिक समुद्घात से मरण कहना चाहिये और मरण कहकर उनका पूर्वचरमान्त में एवं समयक्षेत्र में उत्पाद कहना चाहिये। 'एवं एएणं गमएणं दाहिणिल्ले चरिमंते समोहयाणं उत्तरिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाओ 'तथा इसी प्रकार इसी क्रम से इन जीवोंका दक्षिण चरमान्त में मारणान्तिक समुद्घात से मरण कहकर उनका उत्तर चरमान्त में और समयक्षेत्र में उत्पाद का वर्णन करना चाहिये। 'एवं चेव उत्तरिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य समोहया दाहिणिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाएयव्वा तेणेव गमएणं' तथा इसी प्रकार से इसी क्रम से उत्तर चरमान्त में और समयक्षेत्र में उनका मारणान्तिक समुद्घात कहकर दक्षिण के

'एवं एएणं चेव कमेणं पच्चत्थिमिल्ले चरिमते। समयखेत्ते समोहया पुरत्थिमिल्ले चरिमंते। समयखेत्ते य उववाएयव्वा' એજ રીતે આ ક્રમથી પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં અને સમય ક્ષેત્રમાં તેમનું મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી મરણ કહેવું જોઈએ. અને મરણ કહીને પૂર્વચરમાન્તમાં અને સમય ક્ષેત્રમાં તેઓનો ઉત્પાત કહેવો જોઈએ. 'एवं एएणं गमेणं दाहिणिल्ले समोहयाणं उत्तरिल्ले चरिमंते समयखेते य उववाओ' તથા આજ પ્રમાણે આજ ક્રમથી આ જીવોનું દક્ષિણ ચરમાન્તમાં મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી મરણ કહીને તેઓનું ઉત્તર ચરમાન્તમાં અને સમય ક્ષેત્રમાં ઉત્પાદનું વર્ણન કરવું જોઈએ. 'एवं चेव उत्तरिल्ले चरिमंते समयखेते य समोहया दाहिणिल्ले चरिमंते समयखेते य उववाएयव्वा तेणेव गमएण' તથા આજ પ્રમાણે આજ ક્રમથી ઉત્તરમાં ચરમાન્તમાં અને સમય ક્ષેત્રમાં તેઓનો મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કહીને દક્ષિણના

णान्ते चरमान्ते समयक्षेत्रे चोपपातयितव्याः तेनैव पूर्वप्रदर्शितेनैव गमकेन प्रकारेणेति। अयं भावः यथा-रत्नप्रभा पूर्वचरमान्ते समवहतस्य रत्नप्रभापश्चिमचरमान्ते उपपातो वर्णितः, एवं रत्नप्रभा पश्चिमचरमान्ते समवहतस्य रत्नप्रभा पूर्वचरमान्ते समयक्षेत्रे चोपपातो वर्णयितव्यः, तथा रत्नप्रभाया दक्षिणचरमान्ते समयक्षेत्रे च समवहतस्य रत्नप्रभा उत्तरचरमान्ते समयक्षेत्रे च समवहतस्य रत्नप्रभाया उत्तरचरमान्ते समयक्षेत्रे चोपपातो वर्णयितव्यः, तथैव रत्नप्रभाया उत्तरचरमान्ते समयक्षेत्रे च समवहतस्य रत्नप्रभा दक्षिणचरमान्ते चोपपातो वर्णनीयः। आलापकप्रकारः स्वयमेव ऊहनीयः ॥

॥ इति रत्नप्रभाश्रितोपपातप्रकारप्रकरणात्मकं द्वितीयं सूत्रम् ॥

चरमान्त में और समयक्षेत्र में उनके उत्पादका कथन उसी प्रकार के गमकसे करना चाहिये। तात्पर्य यह है-जैसा रत्नप्रभा चरमान्त पृथिवी के पूर्व चरमान्त में समवहत पृथिव्यादिकायिक जीव का रत्नप्रभा पृथिवी के पश्चिम चरमान्त में उपपात वर्णित हुआ है वैसा ही रत्नप्रभा पृथिवी के पश्चिम चरमान्त में समवहत पृथिव्यादिकायिक जीवका रत्नप्रभापृथिवी के पूर्वचरमान्त में और समयक्षेत्र में उपपाद वर्णित कर लेना चाहिये। तथा रत्नप्रभा के दक्षिण चरमान्त में और समयक्षेत्र में समवहत हुए उस जीव के उत्पादका वर्णन रत्नप्रभापृथिके उत्तर चरमान्त में और समयक्षेत्र में कर लेना चाहिये। इसी प्रकार से रत्नप्रभा पृथिवी के उत्तर चरमान्त में एवं मनुष्यक्षेत्र में समवहत हुए

ચરમાન્તમાં અને સમય ક્ષેત્રમાં તેઓના ઉત્પાદનું કથન કરવું જોઈએ. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-જે રીતે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં જે પ્રમાણે સમુદ્ઘાત કહેલા પૃથિવકાયિક વિગેરે જીવનો રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં ઉપપાતનું વર્ણન કર્યું છે, એજ પ્રમાણે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત કરેલ પૃથ્વીકાયિક વિગેરે જીવોનો રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં અને સમય ક્ષેત્રમાં સમુદ્ઘાત કહેલ જીવના ઉત્પાદનું વર્ણન કરી લેવું જોઈએ. તથા રત્નપ્રભા પૃથ્વીના દક્ષિણ ચરમાન્તમાં અને સમય ક્ષેત્રમાં સમુદ્ઘાત કરેલ તે જીવના ઉત્પાદનું વર્ણન રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ઉત્તર ચરમાન્તમાં અને સમયક્ષેત્રમાં કરી લેવું જોઈએ. એજ પ્રમાણે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ઉત્તર ચરમાન્તમાં અને

अत्र रत्नप्रभा प्रकरणे पृथिव्याद्येकैकस्मिन् जीवस्थाने विंशति विंशति गमक सद्भावेन पूर्वान्तगमानां चत्वारि शतानि ४००, एवं पश्चिमान्त दक्षिणान्तोत्तरान्तगमानां प्रत्येकं चत्वारि चत्वारि शतानीति संमील्य सर्वे षोडशशत संख्यकाः १६०० गमा भवन्तीति ॥सू-२॥

इति रत्नप्रभापृथिव्याश्रितोपपातप्रकारप्रवरणात्मकं द्वितीयं सूत्रम् ॥२॥

जीवोंके उत्पाद का वर्णन रत्नप्रभा पृथिवी के दक्षिण चरमान्त में और समयक्षेत्र में कर लेना चाहिये। आलाप प्रकार इस सम्बन्ध में अपने आप उत्पन्न कर लेना चाहिये। इस प्रकार रत्नप्रभाश्रित उपपात के प्रकार का यह प्रकरण रूप द्वितीय सूत्र समाप्त हुआ। इस रत्नप्रभा प्रकरण में पृथिवी आदि एक एक जीव स्थान में बीस २ गमकोंका सद्भाव है इससे पूर्वान्त गमकोंकी संख्या ४०० होती है। इसी प्रकार से पश्चिमान्त, दक्षिणान्त और उत्तरान्त गमोंकी प्रत्येककी ४००-४०० की संख्या होती है। इस प्रकार चारों दिशाओं के गमक १६०० होते हैं। ॥सू० २॥

મનુષ્ય ક્ષેત્રમાં સમુદ્ઘાત કરેલા જીવના ઉત્પાતનું વર્ણન રત્નપ્રભા પૃથ્વીના દક્ષિણ ચરમાન્તમાં અને સમય ક્ષેત્રમાં કરી લેવું. આ રીતે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના આશ્રયવાળા ઉપપાતના પ્રકારોનું આ પ્રકરણ રૂપ બીજું સૂત્ર સમાપ્ત થયું. આ રત્નપ્રભાના પ્રકરણમાં પૃથ્વી વિગેરે એક એક જીવ સ્થાનમાં વીસ વીસ ગમકોનો સદ્ભાવ કહેલ છે. એથી પૂર્વાન્તના ગમોની સંખ્યા ૪૦૦ ચારસો થાય છે. એજ રીતે પશ્ચિમાન્ત, દક્ષિણાન્ત અને ઉત્તરાન્ત, ગમોની દરેકની સંખ્યા ૪૦૦-૪૦૦ ચારસો, ચારસોની થાય છે. આ રીતે ચારે દિશાઓના થઈને કુલ ગમકો ૧૬૦૦ સોળસો થાય છે. ॥સૂ૦૨॥



रत्नप्रभापृथिव्याश्रितानामेकेन्द्रिय जीवानां संघातोपपातप्रकारं संप्रदर्श्य शर्कराप्रभाश्रितैकेन्द्रियजीवानां समुद्घातोपपातं प्रदर्शयन्नाह-'अपज्जत्त' इत्यादि।

मूलम्-अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइए णं भंते! सक्करप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए। एवं जहेव रयणप्पभाए जाव से तेणट्ठेणं० एवं एएणं कमेणं जाव पज्जत्तएसु सुहुमतेउकाइएसु। अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते! सक्करप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्तबायरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते! कइ समइएणं पुच्छा, गोयमा! दुसमइएण वा, ति समइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा। से केणट्ठेणं० एवं खलु गोयमा! मए सत्त सेढीओ पन्नत्ताओ तं जहा, उज्जुयायया जाव अद्धचक्कवाला। एगओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे, दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा, दुहओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा, से तेणट्ठेणं० एवं पज्जत्तएसु वि बायरतेउकाइएसु, सेसं जहा रयणप्पभाए। जे वि बायरतेउकाइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य समयखेत्ते समोहणित्ता दोच्चाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते पुढवीकाइएसु चउव्विहेसु आउकाइएसु चउव्विहेसु, तेउकाइएसु दुविहेसु, वाउकाइएसु चउव्विहेसु, वणस्सइकाइएसु चउव्विहेसु उववज्जंति ते वि एवं चेव दुसमइएण वा, तिसमइएण वा विग्गहेणं उववाएयव्वा। बायरतेउकाइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगाय

जाहे तेसु चेव उववज्जंति, ताहे जहेव रयणप्पभाए तहेव एगसमइय दुसमइय तिसमइय विग्गहा भाणियव्वा, सेसं जहेव रयणप्पभाए तहेव निरवसेसं। जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया एवं जाव अहे सत्तमाए वि भाणियव्वा ॥सू० ३॥

छाया—अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! शर्कराप्रभायाः पृथिव्याः पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः समवहत्य यो भव्यः शर्कराप्रभायाः पृथिव्याः पाश्चात्ये चरमान्ते अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतयोपपत्तुम्, एवं यथैव रत्नप्रभायां यावत् तत्तेनार्थेन०। एवम्—एतेन क्रमेण यावत् पर्याप्तकेषु सूक्ष्मतेजस्कायिकेषु। अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! शर्कराप्रभायाः पृथिव्याः पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः समवहत्य यो भव्यः समयक्षेत्रे अपर्याप्तबादरतेजस्कायिकतया उत्पत्तुम्, स खलु भदन्त ! कति सामयिकेन पृच्छा, गौतम ! द्वि सामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, विग्रहेणोत्पद्येत, तत्केनार्थेन, एवं खलु गौतम ! मया सप्तश्रेणयः प्रज्ञप्ताः तद्यथा ऋज्वायता यावदर्द्धचक्रवाला एकतो वक्रया श्रेण्या उपपद्यमान स्त्रिसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत, द्विधातो वक्रया श्रेण्या उपपद्यमान स्त्रिसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत, तत्तेनार्थेन०। एवं पर्याप्तकेष्वपि बादरतेजस्कायिकेषु शेषं यथा रत्नप्रभायाम्। येऽपि बादरतेजस्कायिका अपर्याप्तकाश्च पर्याप्तकाश्च समयक्षेत्रे समवहत्य द्वितीयायाः पृथिव्याः पाश्चात्ये चरमान्ते पृथिवीकायिकेषु चतुर्विधेषु, अप्कायिकेषु, चतुर्विधेषु, तेजस्कायिकेषु द्विविधेषु, वायुकायिकेषु, चतुर्विधेषु, वनस्पतिकायिकेषु चतुर्विधेषु उत्पद्यन्ते तेऽपि एवमेव, द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, विग्रहेण उपपातयितव्याः। बादरतेजस्कायिकाः अपर्याप्तकाश्च पर्याप्तकाश्च यदा तेष्वेवोत्पद्यन्ते तदा यथैव रत्नप्रभायां तथैव एकसामयिक द्विसामयिक—त्रिसामयिक विग्रहा भणितव्याः। शेषं यथैव रत्नप्रभायां तथैव निरवशेषम्। यथा शर्कराप्रभाया वक्तव्यता भणिताः, एवं यावदधः सप्तम्या अपि भणितव्याः ॥सू० ३॥

रत्नप्रभापृथिवी के आश्रित एकेन्द्रिय जीवों के समुद्घात और उपपात के प्रकार को प्रकट करके अब शर्कराप्रभाश्रित एकेन्द्रिय जीवों के समुद्घात और उपपात के प्रकार को सूत्रकार प्रकट करते हैं—

રત્નપ્રભા પૃથ્વીના આશ્રયવાળા એકેન્દ્રિય જીવોના સંઘાત અને ઉપપાતના પ્રકારને પ્રગટ કરીને હવે સૂત્રકાર શર્કરાપ્રભા પૃથ્વીના આશ્રયવાળા એકેન્દ્રિય જીવોના સમુદ્ઘાતો અને ઉપપાતના પ્રકારો પ્રગટ કરે છે.—

टीका—'अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते' अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! 'सक्करप्पभाए पुढवीए' शर्करामभायाः द्वितीयनारकपृथिव्याः, 'पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' पौरस्त्ये पूर्वस्मिन् चरमान्ते समवहतो मारणान्तिकसमुद्घातं कृतवान्। 'समोहणित्ता जे भविए' समवहत्य मारणान्तिक समुद्घातं कृत्वा यो भव्यः योग्यः 'सक्करप्पभाए पुढवीए' शर्करामभाया द्वितीयपृथिव्याः, 'पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते' पाश्चात्ये-पश्चिमे चरमान्ते, 'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवरूपेणोत्पत्तुम्, स खलु भदन्त ! एकसामयिकेन वा, विग्रहेण यावत् त्रिसामयिकेन विग्रहेण

'अपज्जत्त सुहुमपुढवी काइए णं भंते ! सक्करप्पभाए पुढवीए' इत्यादि

टीकार्थ—'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइए णं भंते !' हे भदन्त ! जिस अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवने 'सक्करप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए 'शर्कराप्रभा पृथिवी के पूर्वचरमान्त पूर्वभागके अन्त में मारणान्तिक समुद्घात से मरण किया 'समोहणित्ता जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' और मरकर वह शर्कराप्रभापृथिवी के पश्चिम चरमान्त 'पश्चिम भाग के अन्त' में अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न होने के योग्य हुआ तो हे भदन्त ऐसा वह जीव वहां कितने समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है ? क्या एक समयवाले विग्रह से वह वहां उत्पन्न होता है ? अथवा दो समयवाले विग्रह से वह वहां उत्पन्न होता है ? अथवा तीन समयवाले विग्रह से वह वहां

'अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइयाणं भंते ! सक्करप्पभाए पुढवीए' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—'अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइए णं भंते !' હે ભગવન્ જે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવે 'सक्करप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते। समोहए' શર્કરાપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વચરમાન્ત (પૂર્વભાગનાઅન્ત)માં મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને મરણપામે અને 'समोहणित्ता जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' અને મરણપામીને તે શર્કરાપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્ત પશ્ચિભાગના અંતમા અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયેલ હોય તો હે ભગવન્ એવો તે જીવ ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે? શું તે એક સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી તે ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા ત્રણ સમય વાળી વિગ્રહ ગતિથી તે ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી

उत्पद्येतेति प्रश्नः। उत्तरमाह-'एवं जहेव' इत्यादि. 'एवं जहेव रयणप्पभाए जाव से तेणट्ठेणं' एवं यथैव रत्नप्रभायां तथैव शर्कराप्रभायामपि वाच्यम्, यावत् तत्तेनार्थेन हे गौतम! एवमुच्यते एकसामयिकेन वा, द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, विग्रहेण उत्पद्येत इति पर्यन्तः पाठोऽत्र वाच्यः। 'एवं एएणं कमेणं जाव पज्जत्तसुहुमतेउकाइएसु' एवमेतेन उपर्युक्त प्रकारेण यावत् पर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिकेषु अत्र यावत्पदेन पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकाऽपर्याप्त बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त बादरपृथिवीकायिकाऽपर्याप्त सूक्ष्माप्कायिक-पर्याप्त सूक्ष्माप्कायिकाऽपर्याप्तबादराऽप्कायिक-पर्याप्तबादराप्कायिकाऽपर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिकानां संग्रहो भवति। तथा च-अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायि-

---

उत्पन्न होता है? उत्तर में प्रभुश्री गौतमस्वामी से कहते हैं-'एवं जहेव रयणप्पभाए जाव से तेणट्ठेणं 'हे गौतम! जैसा रत्नप्रभापृथिवी में कहा गया है वैसा ही शर्कराप्रभापृथिवी में भी यावत् 'हे गौतम! मैंने ऐसा कहा है कि वह वहां एक समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है दो समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है और तीन समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है, ,यहां तकके प्रकरणका कथन करना चाहिये। 'एवं एएणं कमेणं जाव पज्जत्त सुहुम तेउकाइएसु 'इसी क्रम से यावत् पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिक तक में जानना चाहिये। यहां यावत्पद से 'पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त बादरपृथिवीकायिक, पर्याप्त बादरपृथिवीकायिक, अपर्याप्त सूक्ष्म अप्कायिक, पर्याप्त सूक्ष्म अप्कायिक, अपर्याप्त बादरअप्कायिक, पर्याप्त बादर अप्कायिक एवं अपर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिक' इन सबका ग्रहण

ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'एवं जहेव रयणप्पभाए जाव से तेणट्ठेणं' હે ગૌતમ-રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પ્રકરણમાં જે પ્રમાણેનું કથન કરવામાં આવેલ છે એજ પ્રમાણેનું કથન શર્કરાપ્રભા પૃથ્વીના સંબંધમાં પણ યાવત્-'હે ગૌતમ! મેં એવું કહ્યું છે કે-તે ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે. બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, અને ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે. આ કથન સુધીનું સઘળું પ્રકરણ કહેવું જોઈએ. 'एवं एएणं कमेणं जाव पज्जत्तसुहुमतेउकाइएसु' આજ ક્રમથી યાવત્ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ-તેજસ્કાયિક સુધીમાં સમજવું. અહિયાં યાવત્પદથી પર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક, અપર્યાપ્ત બાદરપૃથ્વીકાયિક, પર્યાપ્તબાદરપૃથ્વીકાયિક, અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક પર્યાપ્તસૂક્ષ્મ અપ્કાયિક, અપર્યાપ્ત બાદર અપ્કાયિક પર્યાપ્ત બાદરઅપ્કાયિક અને અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિક આ સઘળા ગ્રહણ કરાયા છે. તથા-અપ-

कस्य शर्कराप्रभा पूर्वचरमान्ते समवहत्य शर्कराप्रभा पश्चिमचरमान्ते समु त्पद्यमानस्य अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकादारभ्य यावत् पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिकेषु उत्पत्तिं वदन् एष एव क्रमो ज्ञातव्य इति। अथ एतदेव समयक्षेत्रमाश्रित्याह–'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइए णं भंते' अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त! 'सक्करप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' शर्कराप्रभाया द्वितीय पृथिव्याः पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः, मारणान्तिकसमुद्घातं कृतवान 'समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्तबायरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए' समवहत्य मारणान्तिकसमुद्घातं कृत्वा यो भव्यः समयक्षेत्रे अपर्याप्तबादरतेजस्कायिकतया–अपर्याप्तबादरतेजस्कायिकरूपेण उत्पत्तुम्, 'से णं भंते! कइ समइएणं पुच्छा' स खलु भदन्त! कति सामयिकेन विग्रहेण उत्प-

हुआ है। तथा च–अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकका शर्कराप्रभा पृथिवी के पूर्वचरमान्त में मारणान्तिक समुद्घात द्वारा मरण कहकर जैसा उसका शर्कराप्रभापृथिवी के पश्चिम चरमान्त में अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवी कायिक रूप से उत्पाद एक अथवा दो अथवा तीन समयवाले विग्रह द्वारा कहा गया है–सो इसी प्रकार से इसकी उत्पत्ति पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिकों तक में कह लेनी चाहिये। 'अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइएणं भंते! 'हे भदन्त! जिस अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवने 'सक्करप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' शर्कराप्रभा पृथिवी के पूर्व चरमान्त में मारणान्तिक समुद्घात से मरण किया 'समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्त बायर तेउकाइयत्ताए' और मरकर वह समयक्षेत्र अढाई द्वीप समुद्र में अपर्याप्त बादरतेजस्कायिक रूप से उत्पत्ति के योग्य हुआ तो 'से णं भंते! कइसमइएणं

र्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिकोनुं शर्कराप्रभा पृथ्वीना पूर्वचरमान्तमां मारणान्तिक समुद्घातद्वारा मरण करीने जे रीते तेओनो शर्कराप्रभा पृथ्वीना पश्चिमचरमान्तमां अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिकपणाथी उत्पाद એક अथवा બે अथवा त्रण समयवाળी विग्रह गतिथी कहेल छे, तो એज प्रमाणे तेओनी उत्पत्ति पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिको सुधीमां कहेवी जोईએ. 'अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइएणं भंते!' हे भगवन् जे अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवे 'सक्करप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' शर्कराप्रभा पृथ्वीना पूर्वचरमान्तमां मारणान्तिक समुद्घातथी मरण पाम्यो 'समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्तबायरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए' અને મરીને समय क्षेत्र (अढी द्वीप)मां अपर्याप्त बादरतेजस्कायिकपणाथी उत्पन्न थवाने योग्य

द्येत ? इति पृच्छया-प्रश्नः संगृह्यते । भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि । 'गोयमा' हे गौतम ! 'दुसमइएण वा, तिसमइएण वा, विग्गहेण उववज्जेज्जा' द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा विग्रहेण उत्पद्येत इत्युत्तरम् । इह शर्कराप्रभा पृथिवी पूर्वचरमान्ताद् मनुष्यक्षेत्रे समुत्पद्यमानस्य बादरतेजस्कायिकस्य समश्रेणि र्नास्तीति, 'दुसमइए णं' इत्यादि कथितम् । एकसामयिकेनेति न कथितम् । समश्रेण्या गच्छत एव एकसामयिक विग्रहसम्भवो भवति, विश्रेण्या गच्छतस्तु द्व्यादिसामयिक विग्रह यथाक्रमं भवतीति भावः, 'से केणट्ठेणं' तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, विग्रहेणोत्पद्येत ? इति पुनः प्रश्नः । भगवानाह-'एवं खलु' इत्यादि । 'एवं खलु गोयमा !' एवं खलु हे गौतम !

पुच्छा 'हे भदन्त ! वह वहां कितने समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है ? इसके सम्बन्ध में प्रभुश्री उत्तर रूप से कहते हैं-'गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा' 'हे गौतम ! वह वहां दो समयवाले विग्रह से अथवा तीन समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है । तात्पर्य इस कथन का ऐसा है कि शर्करा पृथिवी के पूर्व चरमान्त से मनुष्यक्षेत्र में उत्पन्न होनेवाले बादरतेजस्कायिक जीव का वह उत्पत्ति स्थान समश्रेणि में नहीं पड़ता है । एक समयवाला विग्रह समश्रेणिवाले उत्पत्ति स्थान में जानेवाले जीवका होता है । विश्रेणि से जानेवाले जीव को दो आदि समय का ही विग्रह होता है । 'से केणट्ठेणं भंते !' हे भदन्त ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि वह वहां दो समयवाले विग्रह से अथवा तीन समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'एवं खलु गोयमा ! मए-

---

અનેક હોય, 'से णं भंते ! कइ समएणं पुच्छा' હે ભગવન્ તે ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! दुसमइएणं वा, तिसमइएणं वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा' હે ગૌતમ ! તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-શર્કરાપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વચરમાન્તથી મનુષ્યક્ષેત્રમાં ઉત્પન્ન થવાવાળા બાદરતેજસ્કાયિક જીવનું તે ઉત્પત્તિસ્થાન સમશ્રેણીમાં પડતું નથી. એક સમયવાળો વિગ્રહ સમશ્રેણીવાળા ઉત્પત્તિસ્થાનમાં જવાવાળા જીવનો હોય છે. વિશ્રેણીથી જવાવાળા જીવને બે વિગેરે સમયની જ વિગ્રહ ગતિ હોય છે.

'से केणट्ठेणं भंते !' હે ભગવન્ આપ એવું શા કારણથી કહો છો કે-તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'एवं खलु

'मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ' मया-महावीरेण सप्तश्रेणयः प्रज्ञप्ताः, 'तं जहा' तद्यथा-'उज्जुयायया जाव अद्धचक्कवाला' ऋज्वायता यावद् अर्द्धचक्रवाला, अत्र यावत्पदेन एकतो वक्रा, द्विधातो वक्रा, एकतः खा, द्विधातः खा, चक्रवाला इत्यन्तश्रेणीनां संग्रहो भवति, तत्र-'एकओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' एकतो वक्रया द्वितीय श्रेण्या उत्पद्यमानो द्विसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत इति। 'से तेणट्ठेणं०' तत्तेनार्थेन गौतम! एवमुच्यते, द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, विग्रहेण समुत्पद्येतेति। 'एवं पज्जत्तएसु

सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ 'हे गौतम! मैंने सात श्रेणियां कही हैं 'तं जहा' जैसे-'ऊज्जुआयया जाव अद्धचक्कवाला' ऋज्वायता यावत् अर्धक्रवाला यहां यावत्पद से-एकतो वक्रा, द्विधातो वक्रा, एकतः खा, द्विधातः खा, और चक्रवाला' इन अवशिष्ट श्रेणियों का ग्रहण हुआ है। इन में से जो जीव 'एकओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' उत्पत्तिस्थान में एकतो वक्रा श्रेणि से उत्पन्न होता है वह वहां दो समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है। यहां समश्रेणि नहीं है। इसलिए प्रथमश्रेणि से गमन का अभाव रहता है। 'दुहओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएण विग्गहेणं उववज्जेज्जा 'जो जीव उत्पत्तिस्थान में द्विधातो वक्रा श्रेणि से जाकर उत्पन्न होता है वह वहां तीन समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है? 'से तेणट्ठेणं०' इस कारण हे गौतम! मैंने पूर्वोक्तरूप से ऐसा कहा है कि वह वहां दो समयवाले विग्रह से अथवा तीन समयवाले विग्रह से उत्पन्न

गोयमा! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ' હે ગૌતમ! મેં સાત શ્રેણીયો કહેલ છે. 'तं जहा' તે આ પ્રમાણે છે.-'उज्जुयायया जाव अद्धचक्कवाला' ઋજ્વાયતા યાવત્ અર્ધચક્રવાલા અહિયાં યાવત્પદથી એકતોવક્રા, દ્વિધાતોવક્રા, એકતઃ! ખા, દ્વિધાતઃ! ખા અને ચક્રવાલા આ બાકીની શ્રેણીયો ગ્રહણ કરાઈ છે. આમાંથી જે જીવ 'एकओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' ઉત્પત્તિસ્થાનમાં એકતોવક્રા શ્રેણીથી ઉત્પન્ન થાય છે. તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. અહિયાં સમશ્રેણી હોતી નથી એથી પહેલી શ્રેણીથી ગમનનો અભાવ રહે છે. 'दुहओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएण विग्गहेणं उववज्जेज्जा' જે જીવ ઉત્પત્તિસ્થાનમાં દ્વિધાતોવક્રા શ્રેણીથી જઈને ઉત્પન્ન થાય છે, તે ત્યાં ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. 'से तेणट्ठेणं०' તે કારણથી હે ગૌતમ! મેં પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે એવું કહેલ છે કે-તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી

वि बायरतेउकाइएसु' एवम् पर्याप्तबादरतेजस्कायिकेषु यथा-अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकस्य द्विसामयिकेन वा त्रिसामयिकेन वा विग्रहेणोत्पादः कथितो न तु एकसामयिकेन तथैव पर्याप्तेषु अपि बादरतेजस्कायिकेषु शर्कराप्रभा पूर्व-चरमान्तात् शर्कराप्रभापश्चिमचरमान्ते आगत्य समुत्पत्तुं योग्यस्य अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकस्य द्विसामयिकेन वा त्रिसामयिकेन वा विग्रहेण समुत्पादो ज्ञातव्य इति । 'सेसं जहा-रयणप्पभाए' शेषम् वायुकायिकादिसंबन्धे यथा-येन प्रकारेण रत्नप्रभायां कथितं तथैव अत्रापि ज्ञातव्यम् इति । 'जे वि बायरतेउ-काइया अपज्जत्तगाय' येऽपि बादरतजस्कायिका अपर्याप्तकाश्च पर्याप्तकाश्च, 'समयखेत्ते समोहणित्ता दोच्चाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते' समयक्षेत्रे

होता है । 'एवं पज्जत्तएसु वि बायरतेउकाइएसु' जिस प्रकार अपर्याप्त बादरतेजस्कायिकों में अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक का दो समयवाले विग्रह से अथवा तीनसमयवाले विग्रह से उत्पाद कहा गया है-एक समयवाले विग्रह से नहीं उसी प्रकार से पर्याप्त बादर तेजस्कायिकों में शर्कराप्रभा के पूर्व चरमान्त से समयक्षेत्र में आकरके उत्पत्ति के योग्य हुए अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक का दो समयवाले विग्रह से अथवा तीन समयवाले विग्रह से उत्पाद जानना चाहिये 'सेसं जहा रयणप्पभाए' जिस प्रकार से शेष वायुकायिक आदि के संबंध में जैसा रत्नप्रभा में कहा गया है उसी प्रकार से यहां पर भी जानना चाहिये 'जे वि बायरतेउकाइया अपज्जत्तगाय पज्जत्तगाय समयखेत्ते समोहणित्ता दोच्चाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते' और जो पर्या-

અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. 'एवं पज्जत्तएसु वि बायरतेउकाइएसु' જે રીતે અપર્યાપ્ત બાદરતેજસ્કાયિકોમાં અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિકની બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પત્તિ કહેલ છે.-એક સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી નહીં એજ રીતે પર્યાપ્ત બાદરતેજસ્કાયિકોમાં શર્કરાપ્રભાપૃથ્વીના પૂર્વચરમાન્તથી શર્કરાપ્રભાના પશ્ચિમચરમાન્તમાં આવીને ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયેલા અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકોનો ઉત્પાત બે સમયવાળી વિગ્રહગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી સમજવો. 'सेसं जहा रयणप्पभाए' જે રીતે અવાન્તર પ્રશ્નોત્તરો વિગેરે રત્નપ્રભાના પ્રકરણમાં કહ્યા છે, એજ રીતે અહિયાં પણ સમજવા. 'जे वि बायर अपज्जत्तगा य समयखेत्ते समोहणित्ता दोच्चाए पुढवीए पच्चत्थि-मिल्ले चरिमंते' પર્યાપ્તક અને અપર્યાપ્તક બાદર તેજસ્કાયિક જે જીવ સમય

मनुष्यक्षेत्रे इत्यर्थः समवहत्य मारणान्तिकसमुद्घातं कृत्वा मृत्वेत्यर्थः, द्वितीयायाः य पृथिव्याः शर्कराप्रभाया इत्यर्थः, पाश्चात्ये चरमान्ते 'पुढवीकाइएसु चउव्विहेसु' पृथिवीकायिकेषु चतुर्विधेषु अपर्याप्त सूक्ष्म, पर्याप्त सूक्ष्माऽपर्याप्त बादर-पर्याप्तबादर पृथिवीकायिकरूपेषु, तथा-'आउकाइएसु चउव्विहेसु' अप्कायिकेषु अपर्याप्तादि चतुर्विधेषु तथा 'तेउक्काइएसु दुविहेसु' तेजस्कायिकेषु द्विविधेषु अपर्याप्त सूक्ष्म भेदभिन्नेषु, तथा-'वाउकाइएसु चउव्विहेसु' वायुकायिकेषु चतुर्विधेषु तथा-'वणस्सइकाइएसु चउव्विहेसु' वनस्पतिकायिकेषु चतुर्विधेषु 'उववज्जंति' उत्पद्यन्ते, अपर्याप्तकपर्याप्तकाः बादरतेजस्कायिका एषु अधिकरणेषु समुत्पत्तिं लभन्ते, 'तेवि एवं चेव दुसमइएण वा, तिसमइएण वा विग्गहेण उववाएयव्वा' तेऽपि एवमेव द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा विग्रहेण

सक और अपर्याप्तक बादरतेजस्कायिक जीव समक्षेत्र में-मनुष्यक्षेत्र में मारणान्तिक समुद्घात से मरण करके शर्कराप्रभा के पाश्चत्य चरमान्त में चारों प्रकारके-अपर्याप्त सूक्ष्म, पर्याप्त सूक्ष्म, अपर्याप्त बादर और पर्याप्त बादर-पृथिवीकायिकों में तथा 'आउक्काइएसु चउव्विहेसु' अपर्याप्तकादि चारों भेदवाले अप्कायिकों में 'तेउक्काइएसु दुविहेसु' तथा-अपर्याप्त सूक्ष्म एवं पर्याप्त सूक्ष्म दो भेद वाले तेजस्कायिकों में तथा-'वाउक्काइएसु चउव्विहेसु' चारों प्रकारके वायुकायिकों में तथा-'वणस्सइकाइएसु चउव्विहेसु' चारों प्रकारके वनस्पति कायिकों में 'उववज्जंति' उत्पन्न होते हैं, वे इसी प्रकार से वहां दो समयवाले विग्रह से अथवा तीन समयवाले विग्रह से उत्पन्न होते हैं 'ते वि एवं चेव' जिस प्रकार अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकका अपर्याप्त

क्षेत्रમાં, મનુષ્યક્ષેત્રમાં મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી મરણ પામીને શર્કરાપ્રભાના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં ચારે પ્રકારના-એટલે કે-પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ, અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મ, અપર્યાપ્ત બાદર પર્યાપ્ત બાદર-પૃથ્વીકાયિકોમાં તથા 'आउक्काइएसु चउव्विहेसु' અપર્યાપ્ત વિગેરે ચારે ભેદવાળા અપ્કાયિકોમાં 'तेउक्काइएसु दुविहेसु' તથા અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અને પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ બે ભેદવાળા તેજસ્કાયિકોમાં તથા 'वाउक्काइएसु चउव्विहेसु' ચારે પ્રકારના વાયુકાયિકોમાં તથા 'वणस्सइक्काइएसु चउव्विहेसु' ચારે પ્રકારના વનસ્પતિકાયિકોમાં 'उववज्जंति' ઉત્પન્ન થાય છે. એજ પ્રમાણે તેઓ ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. 'ते वि एवं चेव' જે પ્રમાણે અપર્યાપ્ત-સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકનો અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકમાં બે વગેરે સમયવાળી

विषमश्रेण्या उपपातयितव्याः, यथा अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकस्य अपर्याप्त बादरतेजस्कायिके द्व्यादिसामयिकविग्रहेणोत्पादः कथितस्तथैव अपर्याप्त पर्याप्त बादरतेजस्कायिकानामपि समयक्षेत्रे समवहतानां शर्कराप्रभायाः पश्चिमचरमान्त स्थित पृथिव्यादिवनस्पतिकायिकान्तेषु द्वित्रिसामयिकविग्रहेणैव उपपातो वर्णयितव्य इति भावः। 'बायरतेउकाइया अपज्जत्तगाय पज्जत्तगाय' बादरतेजस्कायिका अपर्याप्तकाश्च पर्याप्तकाश्च, 'जाहे तेसु चेव उववज्जंति' यदा तेष्वेव पूर्वोक्त विशेषणविशिष्टेषु पृथिव्यादिवनस्पतिकायिकान्तेषु उत्पद्यन्ते। 'ताहे जहेव रयणप्पभाए' तदा यथैव रत्नप्रभायाम्, 'तहेव एगसमइय–दुसमइय–तिसमइय विग्गहा भाणियव्वा' तथैव–रत्नप्रभावदेव एकसामयिक–

बादरतेजस्कायिक में दो आदि समयवाले विग्रह से उत्पाद प्रकट किया गया है, उसी प्रकार से अपर्याप्त पर्याप्त बादरतेजस्कायिकों का भी जो कि समयक्षेत्र में समवहत हुए हैं और शर्कराप्रभा के पश्चिम चरमान्त के पर्यन्त में उत्पाद दो समय वाले अथवा तीन समयवाले विग्रह से वर्णित कर लेना चाहिये। 'बायरतेउक्काइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगाय जाहे तेसु चेव उववज्जंति' अपर्याप्तक एवं पर्याप्तक बादरतेजस्कायिक जीव जब उन्हीं पूर्वोक्त विशेषण विशिष्ट पृथिवीकायिक से लेकर वनस्पति कायिक तक के जीवों में उत्पन्न होते हैं 'ताहे जहेव रयणप्पभाए तहेव एगसमइय दुसमइय तिसमइय विग्गहा भाणियव्वा' तब जैसा रत्नप्रभा के सम्बन्ध में कहा गया है वैसा इन के सम्बन्ध में एक समयवाले दोसमयवाले अथवा तीनसमयवाले

વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પત્તિના સંબંધમાં કથન કરવામાં આવ્યું છે. એજ પ્રમાણે અપર્યાપ્ત પર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકોનો પણ જેમકે સમયક્ષેત્રમાં સમુદ્ઘાત કરેલ છે. અને શર્કરાપ્રભાના પશ્ચિમ ચરમાન્તના પર્યન્તના ઉત્પાદનું વર્ણન બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી કરી લેવું. 'बायर तेउक्काइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य जाहे तेसु चेव उववज्जंति' અપર્યાપ્તક અને પર્યાપ્તક બાદર તેજસ્કાયિક જીવ જ્યારે આજ પહેલા કહેલ વિશેષણોથી યુક્ત પૃથ્વીકાયિક વિગેરેથી લઈને વનસ્પતિકાયિક સુધીના જીવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે. 'ताहे जहेव रयणप्पभाए तहेव एगसमइय दुसमइय तिसमइय विग्गहा भाणियव्वा' ત્યારે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના સંબંધમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણેનું કથન અપર્યાપ્ત પર્યાપ્ત બાદરતેજસ્કાયિકોના સંબંધમાં એક સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ

द्विसामयिक-त्रिसामयिक, विग्रहा भणितव्याः, 'सेसं जहेव रयणप्पभाए तहेव निरवसेसं' शेषम्-अवान्तरप्रश्नोत्तरादिकं 'तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते, तत्तेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते' इत्यादिकं यथैव रत्नप्रभायां कथितं तथैव निरवशेषमिहापि भणितव्यमिति । 'जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया एवं जाव अहे सत्तमाए वि भाणियव्वा' यथा-शर्कराप्रभा द्वितीयनारकपृथिव्या वक्तव्यता भणिता-कथिता, तथैव-तेनैव रूपेण यावदधः सप्तम्या स्तमस्तमाया अपि पृथिव्या वक्तव्यता भणितव्या, सर्वत्रालापप्रकारः स्वयमेवोहनीय इति ॥३॥

पूर्वं शर्कराप्रभात आरभ्याधः सप्तमीपृथिवीपर्यन्तमुपपातः प्रदर्शितः, साम्पतं सामान्येन अधःक्षेत्र मूर्ध्वक्षेत्र चाश्रित्याह-'अपज्जत्त०' इत्यादि ।

मूलम्-अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइएणं भंते! अहोलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए। समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइ-

---

विग्रह से ये उत्पन्न होते हैं ऐसा कह लेना चाहिये। 'सेसं जहेव रयणप्पभाए तहेव निरवसेसं' बाकी का और सब प्रश्नोत्तरादि रूप कथन 'हे भदन्त ! ऐसा आप किस कारण कहते हैं ? हे गौतम ! मैंने सात श्रेणियां कही हैं' इत्यादि रूप प्रश्न और उत्तररूप कथन सब जैसा रत्नप्रभापृथिवी के प्रकरण में कहा जा चुका है वैसा ही यहां द्वितीय शर्कराप्रभापृथिवी की वक्तव्यता में कह लेना चाहिये 'जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया, एवं जाव अहे सत्तमाए वि भाणियव्वा' जैसी यह द्वितीय शर्कराप्रभा पृथिवी की वक्तव्यता कही गई है इसी प्रकार की वक्तव्यता यावत् अधः सप्तमी पृथिवी तक कह लेनी चाहिए। इस सम्बन्ध में आलापक प्रकार अपने आप उत्पन्न कर लेना चाहिये ।सू०३॥

ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે તેમ કહેવું જોઈએ. 'सेसं जहेव रयणप्पभाए तहेव निरवसेसं' બાકીનું બીજું સઘળું પ્રશ્નોત્તરાદિ રૂપ કથન 'હે ભગવન્ આપ એ પ્રમાણે શા કારણથી કહો છો ? હે ગૌતમ ! મેં સાત શ્રેણીયો કહી છે.' વિગેરે પ્રકારથી પ્રશ્ન અને ઉત્તરરૂપ કથન-જે રીતે રત્નપ્રભા પ્રથ્વીના પ્રકરણમાં કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં આ બીજી શર્કરાપ્રભા પૃથ્વીના કથનમાં કહી લેવું. 'जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया, एवं जाव अहे सत्तमाए वि भाणियव्वा' આ બીજી શર્કરાપ્રભાપૃથ્વીનું કથન જે પ્રમાણે કર્યું છે. એજ પ્રમાણેનું કથન યાવત્ અધઃસપ્તમી પૃથ્વીના કથન સુધી સમજી લેવું. આ વિષયમાં આલાપકો સ્વયં બનાવીને કરી લેવા. ॥સૂ૦ ૩॥

यत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते! कइ समइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ?। गोयमा! तिसमइएण वा, चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ तिसमइएणं वा चउसमइएणं वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा? गोयमा! अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइएणं अहोलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइयत्ताए एगपयरंमि अणुसेढीए उववज्जित्तए, से णं तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा। जे भविए विसेढीए उववज्जित्तए से णं चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा, से तेणट्ठेणं जाव उववज्जेज्जा। एवं पज्जत्तसुहुमपुढवीकाइयत्ताए वि, एवं जाव पज्जत्तसुहुमतेउकाइयत्ताए। सू. ४।

छाया—अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त! अधोलोकक्षेत्रनाड्या बाह्ये क्षेत्रे समवहतः समवहत्य यो भव्य ऊर्ध्वलोकक्षेत्रनाड्या बाह्ये क्षेत्रे अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया उत्पत्तुम्, स खलु भदन्त! कति सामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत ? गौतम! त्रिसामयिकेन वा, चतुःसामयिकेन वा विग्रहेणोत्पद्येत। तत्केनार्थेन खलु भदन्त! एवमुच्यते त्रिसामयिकेन वा, चतुःसामयिकेन वा, विग्रहेण उत्पद्येत ?। गौतम! अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु अधोलोकक्षेत्र नाड्या बाह्ये क्षेत्रे समवहतः समवहत्य यो भव्यः ऊर्ध्वलोकक्षेत्रनाड्या बाह्ये क्षेत्रे अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकतया एकप्रतरे अनुश्रेण्या उत्पत्तुं स खलु त्रिसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत। यो भव्यो विश्रेण्या उत्पत्तुं स खलु चतुःसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत, तत्तेनार्थेन यावदुत्पद्येत, एवं पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकतया अपि। एवं यावत् पर्याप्त सूक्ष्मतेजस्कायिकतया ॥४॥

इस प्रकार शर्करामभा से लेकर अधःसप्तमी पृथिवी तक उपपात 'उत्पन्न होना' दिखाया है। अब सूत्रकार सामान्य रूपसे अधःक्षेत्र और ऊर्ध्वक्षेत्रको आश्रित करके इसी उपपात का कथन करते हैं—

આ ઉપર કહ્યા પ્રમાણે શર્કરાપ્રભાથી લઈને અધઃસપ્તમી પૃથ્વી સુધી ઉપપાત (ઉત્પત્તિ) બતાવવામાં આવેલ છે. હવે સૂત્રકાર સામાન્યરૂપથી અધઃક્ષેત્ર અને ઉર્ધ્વક્ષેત્રનો આશ્રય કરીને આ ઉપપાતનું કથન કરે છે.

टीका—'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइए णं भंते !' अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! 'अहोलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए' अधोलोकक्षेत्रनाडयाः अधोलोकरूपे क्षेत्रे या नाडी–त्रसनाडी, तस्याः बाह्ये क्षेत्रे समवहतो मारणान्तिकसमुद्घातं कृतवान् 'समोहणित्ता' समवहत्य मारणान्तिकसमुद्घातं कृत्वा, 'जे भविए उड्ढलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते' यो भव्यः, ऊर्ध्वलोकक्षेत्रनाडी त्रसनाडी सा ऊर्ध्वलोक क्षेत्रनाडी तस्या ऊर्ध्वलोकक्षेत्रत्रसनाडयाः बाह्ये क्षेत्रे 'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया तादृशपृथिवीकायिकरूपेणोत्पत्तुम् 'से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' स खलु कतिसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्यतेति प्रश्नः। भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि' 'गोयमा' हे गौतम ! 'तिसमइएण वा, चउसमइएण वा, विग्गहेणं उववज्जेज्जा' त्रिसामयिकेन

'पज्जत्त सुहुमपुढवीकाइए णं भंते !' इत्यादि ।

टीकार्थ–हे भदन्त ! जिस अपर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवने 'अहोलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए' अधोलोकस्थित त्रसनाडी से बाह्यक्षेत्र में स्थावरनाडी में मारणान्तिक समुद्घात से मरण किया है और 'समोहणित्ता' मारणान्तिक समुद्घात करके 'जे भविए उड्ढलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' ऊर्ध्वलोक में स्थित त्रसनाली के बाहर के क्षेत्र में–'स्थावरनाली अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक रूपसे उत्पन्न होने के योग्य हुआ है 'से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं ऊववज्जेज्जा' तो हे भदन्त ! ऐसा वह जीव कितने समयवाले विग्रह से वहां उत्पन्न होता है ? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु श्री गौतमस्वामी से कहते है–'गोयमा ! तिसमइएण-

'अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते !' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ જે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવે 'अहोलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए' આ અધોલોકમાં રહેલી ત્રસ નાડીથી બહારના ક્ષેત્રમાં મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી મરણ કરેલ છે, અને 'समोहणित्ता' મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને 'जे भविए उड्ढलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' ઉર્ધ્વલોકમાં રહેલ ત્રસ નાડીના બહારના પ્રદેશમાં અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકપણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય બનેલ છે, 'से णं भंते ! कइ समइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' તો હે ભગવન્ એવો તે જીવ કેટલા સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે–'गोयमा ! तिसमइएण चउसमइएण वा

वा, चतुःसामयिकेन वा विग्रहेणोत्पद्येत, ऊर्ध्वलोकनाडया बाह्ये क्षेत्रे इति। 'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, तिसमइएण वा, चउसमइएण वा, विग्गहेणं उववज्जेज्जा' तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते, त्रिसामयिकेन वा, चतुःसामयिकेन वा, विग्रहेणोत्पद्येत इति अत्रान्तरप्रश्नः भगवानाह-गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइएणं अहोलोयखेत्तनालीए बहिरिल्ले खेत्ते-समोहए' अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु अधो लोकक्षेत्रनाडया बाह्ये क्षेत्रे समवहतो मारणान्तिकसमुद्घातं कृतवान्, 'समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते' समवहत्य मारणान्तिकसमुद्घातं कृत्वा यो भव्यः-योग्य ऊर्ध्वलोकक्षेत्रनाडया, बाह्ये क्षेत्रे, 'अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइयत्ताए' अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया 'एगपयरंमि अणुसेढीए उववज्जित्तए' एकप्रतरे अनुश्रेण्या

वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा' हे गौतम ! वह वहां तीन समयवाले विग्रहसे अथवा चारसमयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है। 'तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते' हे भदन्त ! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि वह वहां तीन समयवाले विग्रह से अथवा चार समयवाले विग्रहसे उत्पन्न होता है ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइएणं अहोलोय खेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए' हे गौतम ! जो अपर्याप्तक सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव अधोलोक स्थित त्रसनाडी के बाहिरी क्षेत्र में मारणान्तिक समुद्घात करके मरा है और मरण करके 'जे भविए उड्ढलोय खेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते' जो ऊर्ध्वलोक स्थित त्रसनाडी के बाहरके क्षेत्र में 'अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइयत्ताए' अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक रूप से 'एगपयरंमि

विग्गहेणं उववज्जेज्जा' तो हे गौतम ! એવો તે જીવ ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ચાર સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. 'तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते' હે ભગવન્ આપ એવું શા કારણથી કહો છો કે-તે ત્યાં ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ચાર સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा ! अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइएणं अहोलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्लेखेत्ते समोहए' હે ગૌતમ ! જે અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવ અધોલોકમાં વર્તમાન ત્રસ નાડીના બહારના ક્ષેત્રમાં મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને મરણ પામેલ છે. અને મરણ પામીને 'जे भविए उड्ढलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते' જે ઉર્ધ્વલોકમાં રહેલ ક્ષેત્રનાલીના બહારના પ્રદેશમાં 'अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइयत्ताए' અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયપણાથી 'एगपयरंमि अणुसेढीए उवव-

गत्वा उत्पत्तुम् 'से णं तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' स खलु त्रिसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत, अयं भावः-अधोलोकक्षेत्रत्रसनाडया बहिः पूर्वादिदिशि मृत्वा, एकेन समयेन नाडी मध्ये प्रविष्टः द्वितीये समये ऊर्ध्वं गत स्ततः एक प्रतरे पूर्वस्यां दिशि पश्चिमायां वा, दिशि यदा उत्पत्ति र्भवति तदा अनुश्रेण्यां गत्वा तृतीयसमये उत्पद्यते इति । 'जे भविए विसेढीए उववज्जित्तए से णं चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' यो भव्यो विश्रेण्याम् उत्पत्तुम्, स खलु चतुःसामायिकेन विग्रहेणोत्पद्येत । अयं भावः-यदा त्रसनाडयाः बहिर्वायव्यादिविदिशि मृतः तदा एकसमयेन पश्चिमाया मुत्तरस्यां वा, दिशि गतो भवति द्वितीयेन त्रसनाडयां

अणुसेढीए उववज्जित्तए' एकप्रतर में अनुश्रेणी से जाकरके उत्पन्न होने के योग्य है 'से णं तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' वह तीन समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है । तात्पर्य इसका यह है कि-अधोलोक क्षेत्रमें त्रसनाडी के बाहर पूर्वादिदिशा में मरकर जीव एकसमय में त्रसनाडी के मध्य में प्रविष्ट होता है । दूसरे समय में वह उर्ध्वगमन करता है । इसके बाद जब वह एकप्रतर में पूर्वदिशा में अथवा पश्चिमदिशा में उत्पन्न होता है तब वह समश्रेणि में जाकर तृतीय समय में वहां उत्पन्न होता है । 'जे भविए विसेढीए उववज्जित्तए से णं चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' और जब वह विश्रेणि में उत्पन्न होने के योग्य है तब वह वहां चारसमयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है । तात्पर्य यह है कि जब जीव त्रसनाडी के बाहर वायव्य आदि विदिशाओं में मरता है तब वह एक समय मे पश्चिमदिशा में

જ્જિત્તए' એક પ્રતરમાં અનુશ્રેણીથી જઈને ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય હોય છે. 'से णं तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' તે ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-અધોલોક ક્ષેત્રમાં ત્રસ નાડીની બહાર પૂર્વદિશામાં મરીને જીવ એક સમયમાં ત્રસનાડીની મધ્યમાં પ્રવેશ કરે છે. બીજા સમયમાં ઉર્ધ્વગમન કરે છે તે પછી જ્યારે તે એક પ્રતરમાં પૂર્વદિશામાં અથવા પશ્ચિમદિશામાં ઉત્પન્ન થાય છે, ત્યારે તે સમશ્રેણીમાં જઈને ત્રીજા સમયમાં ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે. 'जे भविए विसेढीए उववज्जित्तए से णं चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' અને જ્યારે તે વિશ્રેણીમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય હોય ત્યારે તે ત્યાં ચરમ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. તાત્પર્ય કહેવાનું એ છે કે-જ્યારે જીવ ત્રસ નાડીની બહાર વાયવ્ય વિગેરે વિદિશામાં મરે છે, ત્યારે તે એક સમયમાં પશ્ચિમ

प्रविष्टो भवति, तृतीयसमये ऊर्ध्वं गतः चतुर्थसमये अनुश्रेण्यां गत्वा पूर्वादिदिशि उत्पद्येत इति। 'से तेणट्ठेणं जाव उववज्जेज्जा' तत्तेनार्थेन गौतम! एवमुच्यते त्रिसामयिकेन वा, चतुः सामयिकेन वा, विग्रहेण उत्पद्येत इति, 'एवं पज्जत्तसुहुम पुढवी काइयत्ताए वि' एवं यथा अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकस्य अधोलोक क्षेत्र-नाडया बाह्यदेशे समवहतस्य ऊर्ध्वलोकक्षेत्रनाडया बाह्ये देशे अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकतयोत्पादो दर्शितः तथैव तस्यैव तथाविधस्य पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवी-कायिकतया समुत्पद्यमानस्य त्रिसामयिकेन वा, चतुःसामयिकेन वा विग्रहेण उत्पादो ज्ञातव्यः। 'एवं जाव पज्जत्त सुहुम तेउकाइयत्ताए' एवं यावत् पर्याप्त

अथवा उत्तरदिशा में जाता है और दूसरे समय में त्रसनाडी में प्रविष्ट होता है और तृतीय समय में वह उर्ध्व गमन करता है और चौथे समय में वह अनुश्रेणि में जाकरके पूर्वादि दिशा में उत्पन्न हो जाता है। 'से तेणट्ठेणं जाव उववज्जेज्जा' इसलिए, हे गौतम! मैंने ऐसा कहा है कि वह तीनसमयवाले अथवा चार समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है। 'एवं पज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए वि' जिस प्रकार से अधोलोक क्षेत्र स्थित त्रसनाडी के बाहिर के प्रदेश में मारणान्तिक समुद्घात करके मरे हुए अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव का ऊर्ध्व-लोक क्षेत्रस्थित त्रसनाडी के बाह्य प्रदेश में अपर्याप्तक सूक्ष्मपृथिवी कायिक रूप से उत्पाद प्रकट किया गया है उसी प्रकार से पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक रूपसे उत्पन्न होने के योग्य हुए उसका तीनसमयवाले विग्रह से अथवा चारसमयवाले विग्रहसे उत्पाद कहना चाहिये। 'एवं

દિશામા અથવા ઉત્તર દિશામાં જાય છે, અને બીજા સમયમાં ત્રસ નાડીમાં પ્રવેશ કરે છે. અને ત્રીજા સમયમાં ઉર્ધ્વગમન કરે છે. અને ચોથા સમયમાં તે વિશ્રેણીમાં જઈને પૂર્વદિશામાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે 'से तेणट्ठेणं जाव उववज्जेज्जा' તે કારણથી હે ગૌતમ! મેં એવું કહેલ છે કે-તે ત્રણ સમય-વાળી અથવા ચાર સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. 'एवं पज्जत्त-सुहुमपुढवीकाइयत्ताए वि' જે પ્રમાણે અધોલોક ક્ષેત્રમાં રહેલ ત્રસ નાડીના બહારના પ્રદેશોમાં મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને મરણ પામેલા અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવનો ઉર્ધ્વક્ષેત્રમા રહેલા ત્રસ નાડીની બહારના પ્રદેશોમાં અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકપણાથી ઉપપાત બતાવેલ છે એજ પ્રમાણે પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકપણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયેલા તેઓનો ઉત્પાદ ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ચાર સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી કહેવો જોઈએ. 'एवं जाव पज्जत्तसुहुमतेउकाइयत्ताए' આજ

एणं भंते! समयखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढ-लोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते पज्जत्तसुहुमतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते! सेसं तं चेव। अपज्जत्त बायरतेउ-काइए णं भंते! समयखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते, अपज्जत्त बायरतेउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते! कइ समइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ?। गोयमा! एग-समइएण वा, दुसमइएण वा, तिसमइएण वा, विग्गहेणं उव-वज्जेज्जा, से केणट्ठेणं०। अट्ठो जहेव रयणप्पभाए तहेव सत्त सेढीओ, एवं पज्जत्त बायरतेउकाइयत्ताए वि। वाउकाइएसु वणस्सइकाइएसु य जहा पुढवीकाइएसु उववाइओ तहेव चउ-क्कएणं भेदेणं उववायव्वो। एवं पज्जत्त बायरतेउकाइओ वि एएसु चेव ठाणेसु उववाएयव्वो। वाउकाइय वणस्सइकाइ-याणं जहेव पुढवीकाइयत्ते उववाओ तहेव भाणियव्वो॥ अप-ज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते! उड्ढलोगखेत्तनालीए बाहिरि-ल्लेखेत्ते समोहए समोहणित्ता जे भविए अहे लोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते! कइ समइएणं। एवं उड्ढलोयखेत्तनालीए बाहिरि-ल्ले खेत्ते समोहयाणं अहोलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते उव-वज्जयाणं सो चेव गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव बायर-वणस्सइकाइओ पज्जत्तओ बायरवणस्सइकाइयएसु पज्जत्त-एसु उववाइओ ॥सू० ५॥

छाया--अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त अधोलोक० यावत् समवहत्य यो भव्यः समयक्षेत्रे अपर्याप्त बादरतेजस्कायिकतया उत्पत्तुम्, स खलु

भदन्त ! कतिसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत ? गौतम ! द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, विग्रहेणोत्पद्येत । तत्केनार्थेन ? एवं खलु गौतम ! मया सप्तश्रेणयः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-ऋज्वायता १ यावद् अर्द्धचक्रवाला ७। एकतो वक्रया श्रेण्या उत्पद्यमानो द्विसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत, द्विधातो वक्रया श्रेण्या उत्पद्यमान स्त्रिसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत, तच्चेनार्थेन० । एवं पर्याप्तकेष्वपि बादरतेजस्कायिकेष्वपि उपपातयितव्यः । वायुकायिकवनस्पतिकायिकतया चतुष्केन भेदेन, यथा-अप्कायिकतया तथैव उपपातयितव्य । २० एवं यथा अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकस्य गमको भणितः एवं पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकस्यापि भणितव्यः । तथैव विंशति स्थानेषु उपपातयितव्यः ४० । अधोलोकक्षेत्रनाडया बाह्ये क्षेत्रे समवहतः समवहत्य, एवं बादरपृथिवीकायिकस्यापि अपर्याप्तकस्य पर्याप्तकस्य च भणितव्यम्८० । एवमप्कायिकस्य चतुर्विधस्यापि भणितव्यम् १६० । सूक्ष्मतेजस्कायिकस्य द्विविधस्यापि एवमेव २०० । अपर्याप्तबादरतेजस्कायिकः खलु भदन्त ! समयक्षेत्रे समवहतः समवहत्य यो भव्यः ऊर्ध्वलोकक्षेत्रनाडया बाह्ये क्षेत्रे अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया उपपत्तुम स खलु भदन्त ! कतिसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत ? गौतम ! द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, चतुःसामयिकेन वा विग्रहेणोत्पद्येत । तत्केनार्थेन० । अर्थो यथैव रत्नप्रभायां तथैव सप्त श्रेणयः एवं यावदपर्याप्त बादरतेजस्कायिकः खलु भदन्त ! समयक्षेत्रे समवहतः समवहत्य यो भव्यः ऊर्ध्वलोकक्षेत्रनाडया बाह्ये क्षेत्रे पर्याप्त सूक्ष्मतेजस्कायिकतया उपपत्तुं स खलु भदन्त ! शेषं तदेव । अपर्याप्त बादरतेजस्कायिकः खलु भदन्त ! समयक्षेत्रे समवहतः समवहत्य यो भव्यः समयक्षेत्रे अपर्याप्त बादरतेजस्कायिकतया उपपत्तुं स खलु भदन्त ! कति सामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत ? गौतम ! एकसामयिकेन वा, द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, विग्रहेणोत्पद्येत तत्केनार्थेन० । अर्थो यथैव रत्नप्रभायां तथैव सप्तश्रेणयः । एवं पर्याप्तबादरतेजस्कायिकतयाऽपि । वायुकायिकेषु वनस्पतिकायिकेषु च यथा पृथिवीकायिकेषु उपपातितस्तथैव चतुष्केन भेदेन उपपातयितव्यः । एवं पर्याप्तबादरतेजस्कायिकोऽपि एष्वेव स्थानेषु उपपातयितव्यः । वायुकायिक-वनस्पतिकायिकानां यथैव पृथिवीकायिकत्वे उपपात स्तथैव भणितव्यः । अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! ऊर्ध्वलोकक्षेत्रनाडया बाह्ये क्षेत्रे समवहतः समवहत्य यो भव्यः अधोलोकक्षेत्रनाडया बाह्ये क्षेत्रे अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया उपपत्तुम्, स खलु भदन्त ! कति सामयिकेन. एवम् ऊर्ध्वलोक क्षेत्रनाडया बाह्ये क्षेत्रे समवहतानाम् अधोलोकक्षेत्रनाडया बाह्ये क्षेत्रे उत्पद्यमानानां स एव गमको निरवशेषो भणितव्यो यावद् वनस्पतिकायिकः पर्याप्तको बादरवनस्पतिकायिकेषु पर्याप्तकेषु उपपातितः ॥सू०५॥

टीका-'अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते !' अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! 'अहोलोग जाव समोहणित्ता' अधोलोक, यावत् समवहत्य, अत्र यावत्पदेन 'क्षेत्रनाडया बाह्ये क्षेत्रे समवहतः' इत्यस्य ग्रहणं भवति । 'जे भविए समयखेते अपज्जत्तबायरतेउकाइयत्ताए' यो भव्यः समयक्षेत्रे अपर्याप्तबादरतेजस्कायिकतया, तादृशतेजस्कायिकरूपेणोपपत्तुम् । 'से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' स खलु भदन्त ! कतिसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येतेति प्रश्नः । भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि । 'गोयमा' हे गौतम ! 'दुसमइएणं वा, तिसमइएणं वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा' द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा विग्रहेण समुत्पद्येत, 'सेकेणट्ठेणं'

'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइएणं भंते ! अहोलोग जाव समोहणित्ता' इत्यादि ॥५॥

टीकार्थ--'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइए णं भंते ! हे भदन्त ! जो अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक 'अहोलोग जाव समोहणित्ता' अधोलोक स्थित त्रसनाडी के बाहरीक्षेत्र में मरण समुद्घात करके 'जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्तबायरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए' समयक्षेत्रमें मनुष्यक्षेत्रमें अपर्याप्त बादरतेजस्कायिक रूपसे उत्पन्न होने के योग्य हुआ है 'से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' ऐसा वह अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव वहां कितने समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! दुसमइएणं वा तिसमइएणं वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा' हे गौतम ! वह अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव जो कि अधोलोकस्थित त्रसनाडी के बाहिरीक्षेत्र में मरणसमुद्घात

'अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइएणं भंते ! अहोलोग जाव समोहणित्ता' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—અપજ્જત્તસુહુમપુઢવીકાઇએ ણં ભંતે ! અહેલોગ જાવ સમોહણિત્તા' હે ભગવન્ જે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક 'અહોલોગ જાવ સમોહણિત્તા' અધોલોકમાં રહેલા ત્રસનાડીના બહારના ક્ષેત્રમાં મરણસમુદ્ઘાત કરીને 'जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्तबायरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए' સમયક્ષેત્રમાં-મનુષ્યક્ષેત્રમાં અપર્યાપ્ત બાદરતેજસ્કાયિકપણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયેલ હોય 'से णं भंते ! कइ समइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' એવો તે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा ! दुसमइएणं वा, तिसमइएणं वा, विग्गहेणं उववज्जेज्जा' હે ગૌતમ ! તે અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ કે જે અધોલોકમાં રહેલ ત્રસનાડીના બહારના ક્ષેત્રમાં

तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते, यद् द्विसामयिकेन वा त्रिसामयिकेन वा विग्रहेणोत्पद्येतेति अवान्तरप्रश्नः । भगवानाह-'एवं खलु' इत्यादि । 'एवं खलु गोयमा ! मए सत्तसेढीओ पन्नत्ताओ' एवं खलु हे गौतम ! मया सप्तश्रेणयः प्रज्ञप्ताः, 'तं जहा' तद्यथा-'उज्जुआयया जाव अद्धचक्कवाला' ऋज्वायता यावद् अर्द्धचक्रवाला, अत्र यावत्पदेन एकतो वक्रा, द्विधातो वक्रा, एकतः खा, द्विधातः खा चक्रवाला इत्येतासां श्रेणीनां संग्रहो भवतीति । तत्र 'एकओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' एकतोवक्रया श्रेण्या समुत्पद्यमानोऽपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिको द्विसामयिकेन विग्रहेण समुत्पद्येत, दुहओ वंकाए

करके समयक्षेत्र में अपर्याप्त बादरतेजस्कायिक रूपसे उत्पन्न होने के योग्य हुआ है वहां दो समयवाले विग्रह से अथवा तीन समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है । 'से केणट्ठेणं०' हे भदन्त ! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि वह वहां दो समयवाले विग्रहसे अथवा तीन समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है ? इस अवान्तर प्रश्न के उत्तर में प्रभुश्री गौतमस्वामी से कहते हैं-'एवं खलु गोयमा ! मए सत्तसेढीओ पन्नत्ताओ' हे गौतम ! मैंने सात श्रेणियां कही है-'तं जहा' जो इस प्रकार से हैं-'उज्जुआयया जाव अद्धचक्कवाला' ऋज्वायता, यावत् अर्द्धचक्रवाला' यहां यावत्पदसे 'एकतो वक्रा द्विधातो वक्रा एकतः खा, द्विधातः खा चक्रवाला' इन अवशिष्ट श्रेणियों का ग्रहण हुआ है । इनमें जो 'एकओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' एकतः वक्रा श्रेणिसे गमन करता हुआ अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक

મરણસમુદ્ઘાત કરીને સમયક્ષેત્રમાં અપર્યાપ્ત બાદરતેજસ્કાયિકપણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયેલ હોય તો તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. 'से केणट्ठेणं०' હે ભગવન્ આપ એવું શા કારણથી કહો છો કે-તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે? આ અવાન્તર પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पन्नत्ताओ' હે ગૌતમ ! મેં સાત શ્રેણીયો કહેલ છે. 'तं जहा' તે આ પ્રમાણે છે. 'उज्जुआयया जाव अद्धचक्कवाला' ઋજ્વાયતા, એકતો વક્રા, દ્વિધાતો વક્રા, એકતઃ ખા, દ્વિધાતઃ ખા, ચક્રવાલા અને અર્ધચક્રવાલા. આ શ્રેણિયોમાં જે 'एकओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' એકતઃ વક્રા શ્રેણીથી ગમન કરીને અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ ઉત્પત્તિ

सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' द्विधातो वक्रया श्रेण्या समुत्पद्यमानः त्रिसामयिकेन विग्रहेण समुत्पद्येतेति। 'से तेणट्ठेणं' तत्तेनार्थेन हे गौतम! एवमुच्यते—द्विसामयिकेन वा त्रिसामयिकेन वा विग्रहेण उत्पद्येतेति। 'एवं पज्जत्तएसु बायरतेउकाइएसु वि उववाएयव्वो' एवं यथा—अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकस्य अपर्याप्त बादरतेजस्कायिकेषु उपपातो वर्णितस्तथैव पर्याप्तकेष्वपि बादरतेजस्कायिकेषु उपपातो वर्णनीयः प्रकारस्तु स्वयमेवोहनीय, इति। 'वाउकाइयवणस्सइकाइयत्ताए चउक्कएणं भेदेणं जहा आउक्काइयत्ताए तहेव उववाएयव्वो' वायुकायिकतया वनस्पतिकायिकतया च चतुष्केन भेदेन यथा अप्कायिकतया तथैव

जीव उत्पत्ति स्थान में समयक्षेत्र में बादरतेजस्कायिक रूपसे उत्पन्न होता है वह वहां दो समयवाले विग्रहसे उत्पन्न होता है। 'दुहओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' और जब वह द्विधातः वक्राश्रेणि से गमन करता हुआ वहां उत्पन्न होता है तब वह वहां तीनसमयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है। 'से तेणट्ठेणं०' इसी कारण हे गौतम! मैने ऐसा कहा है कि वह वहां दो समयवाले अथवा तीन समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है। 'एवं पज्जत्तएसु बायरतेउकाइएसु वि उववाइएयव्वो' इसी रीति के अनुसार अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवके उत्पादका वर्णन पर्याप्त बादरतेजस्कायिकों में भी कर लेना चाहिये तथा आलाप प्रकार इस सम्बन्ध में अपने आप उद्भावित कर लेना चाहिये। 'वाउक्काइयवणस्सइकाइयत्ताए चउक्कएणं भेदेणं जहा आउक्काइयत्ताए तहेव उववाएयव्वो' इस अपर्याप्त

સ્થાનમાં—સમયક્ષેત્રમાં બાદરતેજસ્કાયિકપણાથી ઉત્પન્ન થાય છે. તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. 'दुहओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' અને જ્યારે દ્વિધાતો વક્રા શ્રેણીથી ગમન કરીને ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે, ત્યારે તે ત્યાં ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. 'से तेणट्ठेणं०' આ કારણથી હે ગૌતમ! મેં એવું કહ્યું છે કે—તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. 'एवं पज्जत्तएसु बायरतेउकाइएसु वि उववाएयव्वो' આજ રીતે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવના ઉત્પાતનું વર્ણન પર્યાપ્ત બાદરતેજસ્કાયિકોમાં પણ કરી લેવું. તથા તેના આલાપનો પ્રકાર આ વિષયમાં સ્વયં બનાવીને સમજી લેવો જોઈએ. 'वाउकाइयवणस्सइकाइयत्ताए चउक्कएणं भेदेणं जहा आउकाइयत्ताए तहेव उववाएयव्वो' આ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ

उपपातयितव्यः २० । अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकस्य अपर्याप्त सूक्ष्मवायुकायिके, पर्याप्त सूक्ष्मवायुकायिके, अपर्याप्तबादरवायुकायिके, पर्याप्त बादरवायुकायिके अपर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिके, पर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिके, अपर्याप्त बादरवनस्पतिकायिके पर्याप्त बादरवनस्पतिकायिके अत्रैव प्रदर्शितः अप्कायिकवदेव उपपातो वर्णनीयः, उपपात प्रकारस्तु स्वयमेवोहनीय इति ।२०। 'एवं जहा अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइयस्स गमओ भणिओ' 'एवं यथा-पूर्वोक्तप्रकारेण अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकस्य गमको भणितः-कथितः, 'एवं पज्जत्तसुहुमपुढवीकाइयस्स वि भाणियव्वो' एवम् अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकवदेव पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकस्यापि गमको भणितव्यः, तथाहि-पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकः खलु

सूक्ष्मपृथिवीकायिकका इसी रीति के अनुसार' अपर्याप्त सूक्ष्मवायुकायिक में पर्याप्त सूक्ष्मवायुकायिक में, अपर्याप्त बादरवायुकायिक में पर्याप्तबादरवायुकायिक में, अपर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिक में, पर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिक में, अपर्याप्त बादरवनस्पतिकायिक में और पर्याप्त बादरवनस्पतिकायिक में' इन जीवों में अप्कायिकके जैसा ही उत्पाद वर्णित कर लेना चाहिये । तथा इस सम्बन्ध में उपपाद का प्रकार अपने आप उद्‌भावित कर लेना चाहिये ।२०। 'एवं जहा अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयस्स गमओ भणिओ' इस प्रकार जैसा उत्पाद प्रकार यह अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक का कहा गया है, 'एवं पज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयस्स वि भाणियव्वो' उसी प्रकार से पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकका भी उत्पाद प्रकार कर लेना चाहिये ।

પૃથ્વિકાયિકનું આજ પ્રમાણે 'અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મ વાયુકાયિકોમાં, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વાયુકાયિકોમાં, અપર્યાપ્ત બાદર વાયુકાયિકોમાં પર્યાપ્ત બાદર વાયુકાયિકોમાં, અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિકોમાં, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિકોમાં અપર્યાપ્ત બાદર વનસ્પતિકાયિકોમાં અને પર્યાપ્ત બાદર વનસ્પતિકાયિકોમાં, અપ્કાયિક જીવોના ઉત્પાદના કથન પ્રમાણેનું વર્ણન કરી લેવું. તથા આ સંબંધમાં ઉપપાત-ઉત્પત્તિનો પ્રકાર સ્વયં ઉદ્ભાવિત કરી સમજી લેવો.૨૦, 'एवं जहा अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइयस्स गमओ भणिओ' અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વિકાયિકના ઉત્પાદનો પ્રકાર જે રીતે કહેલ છે, 'एवं पज्जत्तसुहुमपुढवीकाइयस्स वि भाणियव्वो' એજ પ્રમાણે પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકનો ઉત્પાદ

उपपातो वक्तव्य इति ८०। 'एवं आउक्काइयस्स चउव्विहस्सवि भाणियव्वं' एवं चतुर्विधस्य पृथिवीकायिकस्याधोलोकस्य नाडया बाह्ये क्षेत्रे समवहतस्य ऊर्ध्वलोकनाडया बाह्ये क्षेत्रे समुत्पद्यमानस्य यथा–विंशतिस्थानेषूपपातो वर्णित एतेनैव रूपेण अप्कायिकस्य चतुर्विधस्य अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्म बादरभेदभिन्नस्यापि विंशति–स्थानेषूपपातो वर्णनीय इति भावः १६०। 'सुहुमतेउकाइयस्स दुविहस्स वि एवं चेव' सूक्ष्मतेजस्कायिकस्य द्विविधस्यापर्याप्तपर्याप्तकस्य च

यह उत्तर रूप कथन है। इस प्रकार से अपर्याप्तक बादरपृथिवीकायिकों को २० स्थानों में उत्पादयुक्त करने से और पर्याप्तक पृथिवीकायिकों के भी २० स्थानों में उत्पादित करने से ८० गमक हो जाते हैं। 'एवं आउक्काइयस्स चउव्विहस्स वि भाणियव्वं' जिस प्रकार से अधोलोक स्थित त्रसनाडी के बाह्यप्रदेश में मारणान्तिक समुद्घात करके ऊर्ध्व लोकस्थित त्रसनाडी के बाहिरी प्रदेशमें उत्पन्न हुए पृथिवीकायिकका उत्पाद बीस स्थानों में कहा गया है, उसी प्रकार से अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्म और बादर भेदवाले अप्कायिकका भी २० स्थानों में उपपात वर्णित कर लेना चाहिये। इस प्रकार से चारों प्रकारके अप्कायिकों के ८० गमक हो जाते हैं। पहिले के ८० और ये ८० आपस में जोड़ देने से १६० गमक होते हैं।

'सुहुमतेउकाइयस्स दुविहस्स वि एवं चेव' इसी प्रकार से अपर्याप्त और पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिक का भी पृथिवीकायिक के जैसे २० स्थानों में उपपात कहलेना चाहिये। इस प्रकार से ४० गमक और

છે, એજ પ્રમાણેનું કથન અહિયાં પણ સમજવું. આ પ્રમાણે પ્રભુએ ઉત્તર કહેલ છે. આ રીતે અપર્યાપ્તક બાદર પૃથિવિકાયિકોનો વીસ સ્થાનમાં ઉત્પાત–ઉત્પત્તિ કહેવાથી અને પર્યાપ્ત પૃથિવિકાયિકોના પણ ૨૦ સ્થાનોમાં ઉત્પત્તિ કહેવાથી ૮૦ એંસી ગમકો થઇ જાય છે 'एवं आउक्काइयस्स चउव्विहस्स वि भाणियव्वं' જે પ્રમાણે અધોલોકમાં રહેલ ત્રસ નાડીના બહારના પ્રદેશમાં મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને ઉર્ધ્વલોક સ્થિત ત્રસનાડીના બહારના પ્રદેશમાં ઉત્પન્ન થયેલા પૃથ્વીકાયિકોનો ઉત્પાદ વીસે સ્થાનોમાં કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે અપર્યાપ્ત, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અને બાદર ભેદવાળા અપ્કાયિકોના પણ વીસે સ્થાનોમાં ઉપપાતનું વર્ણન કરી લેવું જોઇએ આ રીતે ચારે પ્રકારના અપ્કાયિકોના ૮૦ એંસી ગમકો થઇ જાય છે. પહેલાં કહેલ ૮૦ એંસીને આ અપ્કાયિકોમાં મેળવવાથી ૧૬૦ એકસો સાઇઠ ગમકો (ભેદો) થાય છે.

'सुहुम तेउकाइयस्स दुविहस्स वि एवं चेव' હે ગૌતમ! આજ પ્રમાણે અપર્યાપ્તક અને પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિકોનો પણ ઉપપાત પૃથ્વીકાયિકોના

पृथिव्यादिकायिकवदेव विंशति स्थानेषूपपातो वर्णनीय इति २०० । 'अपज्जत्त बायरतेउक्काइए णं भंते ! समयखेत्ते समोहए' अपर्याप्त बादरतेजस्कायिकः खलु भदन्त ! समयक्षेत्रे समवहतः, 'समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोय खेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्त' समवहत्य मारणान्तिकसमुद्घातं कृत्वा यो भव्य ऊर्ध्वलोक क्षेत्रनाड्या बाह्ये क्षेत्रे, 'अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकतया-तथाविध पृथिवीकायिकरूपेण समुत्पत्तुम् 'से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' स खलु भदन्त ! कतिसामयिकेन विग्रहेण समुत्पद्येत इति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि । 'गोयमा' हे गौतम ! 'दुसमइएण वा, तिसमइएण वा, चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा' द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, चतुःसामयिकेन वा विग्रहेण उत्पद्येतेत्युत्तरम् ।

मिलाने से २०० गमक हो जाते हैं । 'अपज्जत्तबायर तेउक्काइएणं भंते ! समयखेत्ते ! समोहए' हे भदन्त ! कोई अपर्याप्त बादरतेजस्कायिक जीव समयक्षेत्र में समवहत हुआ 'समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोय खेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' और समवहत होकर वह ऊर्ध्वलोक क्षेत्र स्थित त्रसनाडी के बाहिरी प्रदेश में अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न होने के योग्य हुआ हो 'से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' हे भदन्त ! ऐसा वह जीव कितने समयवाले विग्रह से वहां उत्पन्न होता है ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! दुसमइएण वा, तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा' हे गौतम ! वह वहां दो समयवाले विग्रह से अथवा तीन समयवाले

કથન પ્રમાણે ૨૦ વીસે સ્થાનોમાં કહેવો જોઇએ. આ રીતે આ ૪૦ ગમકો મેળવવાથી ૨૦૦ બસો ગમકો થઇ જાય છે 'अपज्जत्त बायरतेउकाइएणं भंते ! समयखेत्ते समोहए' હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્તક બાદર તેજસ્કાયિક જીવ સમય ક્ષેત્રમાં સમુદ્ઘાત કરે 'समोहणित्ता' સમુદ્ઘાત કરીને 'जे भविए उड्ढलोगखेत्त-नालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' ઉર્ધ્વલોક ક્ષેત્રમાંરહેલ ત્રસનાલીના બહારના પ્રદેશમાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકપણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયેલ હોય તો 'से णं भंते ! कइ समइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' હે ભગવન્ એવો તે જીવ કેટલા સમયની વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે- 'गोयमा' दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा' હે ગૌતમ ! તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી

पुनः प्रश्नयन्नाह-'से केणट्ठेणं' इत्यादि। 'से केणट्ठेणं' तत्केनार्थेन भदन्त! एवम् उच्यते द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, चतुःसामयिकेन वा समुत्पद्येतेति। 'अट्ठो जहेव' इत्यादि। 'अट्ठो जहेव रयणप्पभाए तहेव सत्त सेढीओ' अर्थो हेतुः कारणं यथैव येनैव प्रकारेण रत्नप्रभायां कथित स्तथैव सप्त श्रेणिरूपो वक्तव्यः। यथा रत्नप्रभायां श्रेणि विभज्य द्विसामयिकादि विग्रहस्य समर्थनं तथैव इहापि श्रेणिविभागपूर्वकमेव उत्तर मिति। कियत्पर्यन्तं रत्नप्रभाप्रकरणं वक्तव्यं तत्राह-'जाव' इत्यादि। 'एवं जाव' एवं यावत्, अत्र यावत्पदेन सप्तश्रेणय ऋज्वायता यावदर्द्धचक्रवाला। तत्र एकतो वक्रया गच्छन्, द्विसामयिकेन वा,

---

विग्रह से अथवा चार समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है। 'से केणट्ठेणं भंते' हे भदन्त! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि वह वहां दो समयवाले विग्रहसे यावत् चार समयवाले विग्रहसे उत्पन्न होता है? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'अट्ठो जहेव रयणप्पभाए तहेव सत्त-सेढीओ' हे गौतम! जैसा कारण रत्नप्रभापृथिवी में कहा गया है वैसा ही कारण सप्तश्रेणि रूप यहां पर भी कह लेना चाहिये। अर्थात् जिस प्रकार से रत्नप्रभा में श्रेणिका विभाग करके द्विसामयिक आदि विग्रहका समर्थन किया गया है उसी प्रकार से यहां पर भी श्रेणि के विभाग पूर्वक ही उत्तर कह लेना चाहिये। यह रत्नप्रभा प्रकरण यहां यावत् शब्दसे वहां तक का लिया गया है कि जहां पर प्रभुश्रीने उत्तर रूपमें ऐसा कहा, है कि हे गौतम! मैंने ऋज्वायता यावत् अर्द्धचक्रवाला इस प्रकार से सात श्रेणियां कही

વિગ્રહ ગતિથી અથવા ચાર સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. 'से केणट्ठेणं भंते !०' હે ભગવન આપ એવું શા કારણથી કહો છો કે-તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી યાવત્ ચાર સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'अट्ठो जहेव रयणप्पभाए तहेव सत्त सेढीओ' હે ગૌતમ! રત્નપ્રભા પૃથ્વીના કથનમાં જે પ્રમાણેનું કારણ કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણેનું સાત શ્રેણી રૂપ કથન અહિયાં પણ સમજવું. અર્થાત્ જે પ્રમાણે રત્નપ્રભા પૃથ્વીમાં શ્રેણીનો વિભાગ કરીને બે સમય વિગેરે વિગ્રહ ગતિનું સમર્થન કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ શ્રેણીના વિભાગપૂર્વક જ ઉત્તર સમજવો. આ રત્નપ્રભા પ્રકરણ અહિયાં યાવત્ શબ્દથી ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે. તે રત્નપ્રભા પ્રકરણ ત્યાં સુધીનું ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે કે-ત્યાં પ્રભુશ્રીએ ઉત્તર રૂપથી એવું કહેલ છે કે-હે ગૌતમ! મેં ઋજ્વાયતા યાવત્ અર્ધચક્ર

द्विधातो वक्रया गच्छन्, त्रिसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत त्रिश्रेण्या मुत्पद्यमानश्चतुः सामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत, तत्तेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते द्विसामयिकेनवा, त्रिसामयिकेन वा, चतुःसामयिकेन वा विग्रहेण समुत्पद्येत, एवम् पृथिवीकायिकेषु चतुर्विधेषु उपपातयितव्यः अप्कायिकेषु चतुर्विधेषु, तथा अपर्याप्तेषु सूक्ष्म तेजस्कायिकेषु चोपपातयितव्य एतदन्तस्य ग्रहणं भवतीति भावः 'अपज्जत्त बायरतेउकाइए णं भंते ! समयखेत्ते समोहए समोहणित्ता जे भविए' अपर्याप्त

हैं। उनमें से एकतो वक्रा श्रेणिसे जाता हुआ जो जीव उत्पत्ति स्थान में उत्पन्न होता है वह वहां दो समयवाले विग्रहसे उत्पन्न होता है। द्विधातो वक्रा श्रेणिसे जाता हुआ जो जीव उत्पत्ति स्थान में उत्पन्न होता है वह तीन समयवाले विग्रहसे वहां उत्पन्न होता है और जो जीव विश्रेणि में उत्पन्न होता है वह चार समयवाले विग्रह से वहां उत्पन्न होता है। 'तत्तेनार्थेन गौतम! एवमुच्यते' इसलिये हे गौतम ! मैंने ऐसा कहा है कि वह वहां दो समयवाले विग्रहसे उत्पन्न होता है। तीनसमयवाले विग्रहसे उत्पन्न होता है अथवा चार समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है। इसी प्रकार से उसे चारों प्रकार के पृथिवीकायिक जीवों में उत्पादित कर लेना चाहिये। चारों प्रकारके अप्कायिकों में उत्पादित कर लेना चाहिये और अपर्याप्तक सूक्ष्म तेजस्कायिकों में उत्पादित कर लेना चाहिये।

'अपज्जत्त बायर तेउक्काइएणं भंते ! समयखेत्ते समोहए समोह-

વાલા આ રીતે સાત શ્રેણીયો કહેલ છે. તેમાંથી એકતો વક્રા શ્રેણીથી જઈને જે જીવ ઉત્પત્તિસ્થાનમાં ઉત્પન્ન થાય છે, તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે, અને દ્વિધાતો વક્રા શ્રેણીથી જનારો જીવ ઉત્પત્તિ સ્થાનમાં ઉત્પન્ન થાય તે ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે, અને જે જીવ વિશ્રેણીથી ઉત્પન્ન થાય છે, તે ચાર સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે. 'तत्तेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते' એ કારણથી હે ગૌતમ ! મેં એવું કહેલ છે કે-તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે, ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. ચાર સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. આ પ્રમાણે તે ચારે પ્રકારના પૃથ્વીકાયિકોમાં ઉત્પન્ન થવા સંબંધી કથન કહેવું જોઈએ. અને અપર્યાપ્તક, પર્યાપ્તક તેજસ્કાયિકોમાં ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં કહેવું જોઈએ.

'अपज्जत्तबायरतेउक्काइएणं भंते ! समयखेत्ते समोहए समोहणित्ता' હે ભગવન્

बादरतेजस्कायिकः खलु भदन्त ! समयक्षेत्रे समवहतो-मारणान्तिक समुद्घातं कृतवान्, समवहत्य-मारणान्तिक समुद्घातं कृत्वा यो भव्यः, 'उड्ढलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते' ऊर्ध्वलोक क्षेत्रनाडया बाह्ये क्षेत्रे' 'पज्जत्त सुहुम तेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए' पर्याप्त सूक्ष्मतेजस्कायिकतया तद्रूपेणोपपत्तुम्, 'से णं भंते ! स खलु भदन्त ! कतिसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येतेति प्रश्नः । उत्तरमाह-'सेसं' इत्यादि । 'सेसं तं चेव' शेषमुत्तर मत्र सर्वं द्विसामयिकेन वा' त्रिसामयिकेन वा, चतुःसामयिकेन वा विग्रहेण उत्पद्येतेत्यादिकं सर्वं पूर्ववदेवेति ज्ञातव्यमिति । 'अपज्जत्त बायर तेउकाइएणं भंते ! समयखेत्ते समोहए' अपर्याप्त बादरतेज-

---

णित्ता' 'हे भदन्त ! जो अपर्याप्त बादरतेजस्कायिक समयक्षेत्रमें मारणान्तिक समुद्घात से मरण करता हैं और मरणकरके 'जे उड्ढलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते पज्जत्त सुहुमतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए भविए' जो ऊर्ध्वलोक स्थित त्रसनाडी के बाहरी क्षेत्रमें पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिक रूपसे उत्पन्न होने के योग्य होता है तो 'से णं भंते ! 'हे भदन्त ! ऐसा वह जीव कितने समयवाले विग्रह से वहां उत्पन्न होता है ? उत्तरमें प्रभुश्री कहते हैं-'सेसं तं चेव' 'हे गौतम ! इस सम्बन्ध में उत्तर यहां 'वह वहां दो समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है, तीन समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है तथा चार समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है' 'इत्यादि रूपसे पूर्वोक्त जैसा ही जानना चाहिये ।

'अपज्जत्त बायर तेउकाइएणं भंते ! समयखेत्ते समोहए' 'हे

જે અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિક સમયક્ષેત્રમાં મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી મરણ પામે છે, અને મરણ પામીને 'जे उड्ढलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते पज्जत्तसुहुमतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए भविए' જે ઉર્ધ્વલોકમાં રહેલા ત્રસનાડીના પ્રદેશમાં પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિકપણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય હોય છે, 'से णं भंते !०' હે ભગવન્ એવો તે જીવ કેટલા સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'सेसं तं चेव' હે ગૌતમ! આ સંબંધમાં ઉત્તર અહિયાં 'તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, તથા ચાર સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, વિગેરે પ્રકારથી પહેલા કહ્યા પ્રમાણે જ સમજવો.

'अपज्जत्तबायरतेउकाइएणं भंते ! समयखेत्ते समोहए' હે ભગવન્ જે

स्कायिकः खलु भदन्त ! समयक्षेत्रे समवहतो-मारणान्तिकसमुद्घातं कृतवान्, 'समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्त बायरतेउकायत्ताए उववज्जित्तए' समवहत्य-मारणान्तिक समुद्घातं कृत्वा यो भव्योऽपर्याप्तबादरतेजस्कायिकतया समुत्पत्तुम्। 'से णं भंते ! कइ समइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' स खलु भदन्त ! अपर्याप्त बादरतेजस्कायिकः कति सामयिकेन विग्रहेण समुत्पद्येतेति प्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि।' 'गोयमा' हे गौतम ! 'एगसमइएण वा, दुसमइएण वा, तिसमइएण वा, विग्गहेणं उववज्जेज्जा' एकसामयिकेन वा, द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा विग्रहेण उत्पद्यतेत्युत्तरम्। पुनः प्रश्नयति 'से केणट्ठेणं' तत्केनार्थेन, उत्तरमाह-'अट्ठो जहेव' इत्यादि। 'अट्ठो जहेव रयणप्प-

भदन्त ! जो अपर्याप्त बादरतेजस्कायिक जीव समयक्षेत्र में समवहत होता है-मारणान्तिक समुद्घात करता है-और 'समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्त बायरतेउकाइत्ताए उववज्जित्तए' 'मारणान्तिक समुद्घात करके जो मनुष्यक्षेत्र में अपर्याप्त बादरतेजस्कायिक रूपसे उत्पन्न होने के योग्य होता है 'से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा 'ऐसा वह जीव हे भदन्त ! वहां कितने समयवाले विग्रहसे उत्पन्न होता है। उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा, तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा' हे गौतम ! वह वहां एक समयवाले विग्रहसे, अथवा दो समयवाले विग्रह से अथवा तीन समयवाले विग्रहसे उत्पन्न होता है। 'से केणट्ठेणं' हे भदन्त ! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि वह अपर्याप्त बादर तेजस्कायिक जीव समयक्षेत्र में मारणान्तिक समुद्घात करके वहीं

અપર્યાપ્ત બાદરતેજસ્કાયિક જીવ સમયક્ષેત્રમાં સમવહત થાય છે. અર્થાત્ મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરે છે, અને 'समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्तबायरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए' મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને જે મનુષ્યક્ષેત્રમાં અપર્યાપ્તક બાદર તેજસ્કાયિકપણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય હોય છે, 'से णं भंते ! कइ समइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' એવો તે જીવ હે ભગવન્ કેટલા સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा' હે ગૌતમ ! એવો તે જીવ ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. 'से केणट्ठेणं०' હે ભગવન્ આપ એવું શા કારણથી કહો છો ? કે તે અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિક જીવ સમયક્ષેત્રમાં મારણાન્તિક

भाए तहेव सत्तसेढीओ' अर्थो हेतुः यथैव रत्नप्रभायां तथैव सप्तश्रेणिरूपो विज्ञेयः।
'एवं पज्जत्त बायरतेउक्काइयत्ताए वि' एवम् अपर्याप्त बादर तेजस्कायिकतया समुत्पद्यमानस्य यथैव वक्तव्यता भणिता तथैव पर्याप्त बादरतेजस्कायिकतया समुत्पद्यमानस्यापि वक्तव्यता भणितव्येति भावः 'वाउक्काइएसु वणस्सइकाइएसु य जहा पुढवीकाइएसु उववाइओ तहेव चउक्कएणं भेदेणं उववाएयव्वो' वायुकायिकेषु वनस्पतिकायिकेषु च यथा-येन प्रकारेण पृथिवीकायिकेषु चतुर्विधेषु उपपादितः-उपपातो दर्शित स्तथैव-तेनैव रूपेण चतुष्केन भेदेन अपर्याप्त

पर अपर्याप्त बादरतेजस्कायिक रूपसे एक समयवाले विग्रहसे, अथवा दो समयवाले विग्रह से अथवा तीन समयवाले विग्रहसे उत्पन्न होता है ? उत्तरमें प्रभुश्री कहते हैं-'अट्ठो जहेव रयणप्पभाए तहेव सत्तसेढीओ' हे गौतम ! जैसा रत्नप्रभा प्रकरण में इस सम्बन्ध में मेरे द्वारा सात श्रेणियों का प्रतिपादन रूप कारण बतलाया गया है वही कारण यहां पर भी समझ लेना चाहिये ।

'एवं पज्जत्त बायरतेउक्काइयत्ताए वि' जैसी वक्तव्यता अपर्याप्त बादर तेजस्कायिक रूप से उत्पन्न होनेवाले जीवके संबंध में कही गई है उसी प्रकार की वक्तव्यता पर्याप्त तेजस्कायिक रूप से उत्पन्न होने वाले जीव के विषय में भी कह लेनी चाहिये। 'वाउक्काइएसु वणस्सइकाइएसु य जहा पुढवीकाइएसु उववाइओ तहेव चउक्कएणं भेदेणं

સમુદ્ઘાત કરીને ત્યાં જ અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકપણાથી એક સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી, અથવા બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'अट्ठो जहेव रयणप्पभाए तहेव सत्त सेढीओ' હે ગૌતમ ! રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પ્રકરણમાં જે રીતનું આ સબંધમાં મેં કથન કર્યું છે કે-સાત શ્રેણી હોય છે, વિગેરે પ્રતિપાદન રૂપ કારણ બતાવ્યું છે, તેજ કારણ અહિયાં પણ સમજી લેવું જોઈએ.

'एवं पज्जत्तबायरतेउकाइयत्ताए वि' જે પ્રમાણેનું કથન અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકપણાથી ઉત્પન્ન થનારા જીવના સંબંધમાં કહ્યું છે, એજ પ્રમાણેનું કથન પર્યાપ્ત તેજસ્કાયિકપણાથી ઉત્પન્ન થવાવાળા જીવના સંબંધમાં પણ સમજવું. 'वाउक्काइएसु वणस्सइकाइएसु य जहा पुढवीकाइएसु उववाइओ तहेव चउक्कएणं भेएणं उववाएयव्वो' જે પ્રમાણે ચાર પ્રકારના પૃથ્વીકાયિક જીવોમાં

पर्याप्त सूक्ष्म बादर भेदेनोपपातयितव्यः। चतुष्प्रकारकेषु वायुकायिकेषु तथा-चतुष्प्रकारकेषु वनस्पतिकायिकेष्वपि अपर्याप्त बादरतेजस्कायिकस्योपपातो वर्णनीय इति। 'एवं पज्जत्त बायरतेउकाइओ वि एएसु चेव ठाणेसु उववाएयव्वो' एवम् अपर्याप्त बादरतेजस्कायिकस्य वायुवनस्पतिकायिकेषु उपपातो दर्शित स्तेनैव रूपेण पर्याप्त बादरतेजस्कायिकस्यापि प्रत्येकं चतुर्विधेषु पृथिव्यप्तेजो-वायुवनस्पतिकायिकेषूपपातो वर्णनीय इति। 'वाउकाइय-वणस्सइकाइयाण जहेव पुढवीकायत्ते उववाओ तहेव भाणियव्वो' वायुकायिक वनस्पतिकायिकानां चतु-र्विधानाम् यथैव पृथिवीकायिकतया-पृथिवीकायिकरूपेणोपपातः कथित स्तथै-वैषाम् अत्रापि उपपातो भणितव्यः, आलापप्रकारश्च स्वयमेवोहनीयः। पूर्वमधो-

---

उववाएयव्वो' 'जिस प्रकारसे चतुर्विध पृथिवीकायिकों में अपर्याप्त बादरतेजस्कायिक का उपपात दिखाया गया है। उसी प्रकार से चतु-र्विध वायुकायिकों में और चतुर्विध वनस्पतिकायिकों में भी उसका-अपर्याप्त बादरतेजस्कायिकका-उपपात कह लेना चाहिये।

'एवं पज्जत्त बायरतेउकाइओ वि एएसु चेव ठाणेसु उववाएयव्वो' इसी रीति के अनुसार पर्याप्त बादरतेजस्कायिक का भी चतुर्विध पृथिवीकायिकोंमें, चतुर्विध अप्कायिकोंमें, चतुर्विध तेजस्कायिकोंमें, चतुर्विध वायुकायिकों में और चतुर्विध वनस्पतिकायिकों में उपपात कह लेना चाहिये। 'वाउकाइयवणस्सइकाइयाणं जहेव पुढवीकाइयत्ते उववाओ तहेव भाणियव्वो' चतुर्विधवायुकायिकों का और चतुर्विध वनस्पतिकायिकों का जैसा पृथिवीकायिकों में उपपात कहा गया है उसी प्रकार से इनका यहां पर भी उपपात कह लेना चाहिये। इस

અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકનો ઉત્પાત કહ્યો છે. એજ પ્રમાણે ચાર પ્રકારના વાયુકાયિકોમાં અને ચાર પ્રકારના વનસ્પતિકાયિકોમાં પણ તેનો અપર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકનો' ઉપપાત કહેવો જોઇએ.

'एवं पज्जत्तबायरतेउक्काइयो वि एएसु चेव ठाणेसु उववाएयव्वो' આજ પ્રમાણે પર્યાપ્ત બાદર તેજસ્કાયિકોનો પણ ચાર પ્રકારના પૃથ્વીકાયિકોમાં ચાર પ્રકારના અપ્કાયિકોમાં ચાર પ્રકારના તેજસ્કાયિકોમાં ચાર પ્રકાર વાયુ-કાયિકોમાં અને ચાર પ્રકારના વનસ્પતિકાયિકોમાં ઉપપાત કહેવો જોઇએ 'वाउक्काइय वणस्सइकाइयाणं जहेव पुढवीकाइयत्ते उववाओ तहेव भाणियव्वो' ચાર પ્રકારના વાયુકાયિકોનો અને ચાર વનસ્પતિકાયિકોનો ઉપપાત પૃથ્વી-

लोकक्षेत्रनाडी बाह्यक्षेत्रे समवहतानामूर्ध्वलोकक्षेत्रनाडी बाह्यक्षेत्रे समुत्पित्सूनां पृथिव्यादीनामुपपातो वर्णितः, साम्पतमूर्ध्वलोकक्षेत्रनाडी बाह्यक्षेत्रे समुत्पित्सूनां पृथिव्यादीनामुपपातः पूर्ववदेव भवतीति प्रदर्श्यते-'अपज्जत्त' इत्यादि। 'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइएणं भंते !' अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त! 'उड्ढलोय-खेत्तनालीए बाहिरिल्लेखेत्ते समोहए' ऊर्ध्वलोकक्षेत्रनाडया बाह्ये क्षेत्रे समवहतो-मारणान्तिकसमुद्घातं कृतवान्, 'समोहणित्ता जे भविए अहेलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' समवहत्य-मार-

सम्बन्ध में आलाप प्रकार स्वयं उद्भावित कर लेना चाहिये। जिस प्रकार से अधोलोक क्षेत्र स्थित त्रसनाडी के बाहिरी क्षेत्रमें समवहत हुए पृथिव्यादि जीवों का जो कि ऊर्ध्व लोक स्थित त्रसनाड़ी के बाह्य प्रदेश में उत्पन्न होने के योग्य हैं। उत्पाद कहा गया है उसी प्रकार से ऊर्ध्वलोक स्थित त्रसनाडी के बाह्य क्षेत्र में समवहत हुए जीवों का जो कि अधोलोक स्थित त्रसनाडी के बाहिरी प्रदेश में उत्पन्न होने के योग्य हैं उत्पाद है यह प्रकट किया जाता है-

'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइएणं भंते ! उड्ढलोय खेत्तनालीए बाहि-रिल्ले खेत्ते समोहए' हे भदन्त ! कोई अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव ऊर्ध्वलोकस्थित त्रसनाडी के बाहिरी प्रदेश में मारणान्तिक समुद्घात करके मरा और मरकर 'जे भविए अहेलोय खेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' वह

કાયિકોમાં જે પ્રમાણે કહેલ છે, એજ રીતથી તેઓનો ઉપપાત અહિયાં પણ કહી લેવો. આ વિષયમાં આલાપકોનો પ્રકાર સ્વયં સમજી લેવો.

જે પ્રમાણે અધોલોક ક્ષેત્રમાં રહેલ ત્રસનાડીના બહારના ક્ષેત્રમાં સમુદ્ઘાત કરેલ પૃથ્વીકાયિક વિગેરે જીવોના કે જે ઉર્ધ્વલોકમાં રહેલ ત્રસનાડીના બાહ્ય પ્રદેશમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય છે, તેઓના સંબંધમાં ઉત્પાદ કહેલ છે, એજ પ્રમાણે ઉર્ધ્વલોકમાં રહેલ ત્રસનાડીના બહારના ક્ષેત્રમાં સમુદ્ઘાત કરેલ કે જે નીચેના લોકમાં રહેલ ત્રસનાડીના બહારના પ્રદેશમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય છે, તેઓનો ઉત્પાત થાય છે. તેમ કહેવામાં આવેલ છે. 'अपज्जत्तसुहुमपुढवी-काइएणं भंते ! उड्ढलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए' હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ ઉર્ધ્વલોકમાં રહેલ ત્રસ નાડીના બહારના પ્રદેશમાં મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને મરણ પામે, અને મરણ પામીને 'जे भविए अहोलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइयत्ताए उव-

णान्तिकसमुद्घातं कृत्वा यो भव्यः योग्यः, अधोलोकक्षेत्रनाड्या बाह्ये क्षेत्रे अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया तादृश पृथिवीकायिक स्वरूपेणोत्पत्तुम्-समुत्पत्तिम् आसादयितुम्, 'से णं भंते ! कइसमइएणं' स खलु भदन्त ! कति सामयिकेन विग्रहेण समुत्पद्यतेति प्रश्नः। अस्योत्तरमतिदेशेनाह-'एवं' इति। एवं-यथा-अधोलोकक्षेत्रनाडी बाह्यक्षेत्रे-समवहताना मूर्ध्वलोकक्षेत्रनाडी बाह्यक्षेत्रे समुत्पित्सूनां विषये उपपातो वर्णित स्तथैव-'ऊड्ढलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहयाणं' ऊर्ध्वलोकक्षेत्रनाड्या बाह्ये क्षेत्रे समवहतानां पृथिव्याद्येकेन्द्रियाणाम्, 'अहेलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते उववज्जमाणाणं' अधोलोकक्षेत्रनाड्या बाह्ये क्षेत्रे समुत्पद्यमानानामपि 'सो चेव गमओ निरवसेसो भाणियव्वो' स एव-पूर्वोक्त एव अधोलोकक्षेत्रनाड्याः बहिः क्षेत्राद् ऊर्ध्वलोक क्षेत्रनाडी बहिः क्षेत्रसमुत्पित्सु सदृश एव गमको निरवशेषः-समग्रो भणितव्यः। कियत्पर्यन्तं पूर्वप्रकरणमिह भणितव्यम्, तत्राह 'जाव' इत्यादि। 'जाव बायरवणस्सइकाइयाओ पज्जत्तओ बायर-

---

अधोलोकस्थित त्रसनाडी के बाहिरी प्रदेश में उत्पन्न होने के योग्य हुआ-तो 'से णं भंते ! कइसमइएणं०' हे भदन्त ! ऐसा वह जीव वहां कितने समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है ? अतिदेश से उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतम से कहते हैं 'एव' 'हे गौतम ! जिस रीति से अधोलोकस्थित त्रसनाडी के बाह्य प्रदेशमें समवहत हुए पृथिव्यादि एकेन्द्रिय जीवोंके ऊर्ध्वलोकस्थित त्रसनाडी के बाह्यप्रदेश के विषय में उपपातका-उत्पादका कथन किया गया है उसी रीतिसे ऊर्ध्वलोकस्थित त्रसनाडी के बाह्यप्रदेश में समवहत हुए पृथिव्यादि एकेन्द्रिय जीवों के अधोलोकस्थित त्रसनाली के बाह्यप्रदेश में उत्पाद का कथन है ऐसा जानना चाहिये। यही बात 'सो चेव गमओ निरवसेसो भाणियव्वो' इस सूत्रपाठ द्वारा प्रदर्शित की गई है। और यह सब पूर्व

वज्जित्तए' ते અધોલોકમાં રહેલ ત્રસનાડીના બહારના પ્રદેશમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયો હોય તો 'से णं भंते ! कइ समइएणं०' હે ભગવન્ એવો તે જીવ કેટલા સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર અતિદેશ (ભલામણ)થી આપતાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'एवं' હે ગૌતમ ! જે રીતે અધોલોકમાં રહેલ ત્રસનાડીના બહારના પ્રદેશમાં સમુદ્ઘાત કરેલ પૃથ્વીકાયિક વિગેરે એકેન્દ્રિય જીવોને ઉર્ધ્વલોકમાં રહેલ ત્રસનાડીના બહારના પ્રદેશના વિષયમાં ઉપપાતનું કથન કહેલ છે. તેજ પ્રમાણે આમના ઉત્પાદનું કથન પણ છે. તેમ સમજવું આજ વાત 'सो चेव गमओ निरवसेसो भाणियव्वो' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા બતાવવામાં આવેલ છે. અને આ સઘળું પહેલાનું

वणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु उववाइओ' यावद् बादरवनस्पतिकायिकः पर्याप्तको बादर वनस्पतिकायिकेषु पर्याप्तकेषूपपातितः। अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकत आरभ्य पर्याप्त बादरवनस्पतिक एकेन्द्रियजीवाः अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवी कायिकतः आरभ्य पर्याप्त बादरवनस्पतिकायिकान्तेषु एकेन्द्रियेषु उपपातित स्तथैव विज्ञेयः। सर्वत्रालापप्रकारः स्वयमेवोहनीयः ॥सू० ५॥

अथ--लोकस्य पौरस्त्यादि चरमान्त विषयः समुद्घातोपपातः प्रदर्श्यते- 'अपज्जत्त' इत्यादि ।

मूलम्—अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइएणं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमंते, अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते! कइ समइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? गोयमा ! एगसमइएण वा, दुसमइएण वा, तिसमइएण वा, चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ एगसमइएण वा जाव उववज्जेज्जा ?, एवं खलु

प्रकरण यहां पर 'जाव 'बायर वणस्सइकाइओ पज्जत्तओ बायरवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु उववाइओ' इस सूत्रपाठ तक ज्यों का त्यों कहना चाहिये। तात्पर्य कहने का यह है कि अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव जैसे पहिले पर्याप्त बादरवनस्पतिकायिक तक के एकेन्द्रिय जीवों में उत्पादित बतलाये गये हैं वैसे ही यहां पर इन्हें उत्पादित बतलाना चाहिये। इस सम्बन्ध में सर्वत्र आलाप प्रकार स्वयं ही उद्भावित कर लेना चाहिये ॥ ५॥

પ્રકરણ અહિયાં 'जाव बायरवणस्सइकाइयाओ पज्जत्तओ बायरवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु उववाइओ' આ સૂત્રપાઠના કથન સુધી જેમનું તેમ કહી લેવું જોઈએ.

કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ જે રીતે પહેલાં પર્યાપ્ત બાદર વનસ્પતિકાયિક સુધીના એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોમાં ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં કથન કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ તેઓના ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં કથન કરવું જોઈએ. આ વિષયમાં આલાપકોનો પ્રકાર સ્વયં બનાવીને સમજી લેવો. ॥સૂ૦ ૫॥

गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पन्नत्ताओ तं जहा-उज्जुआयया जाव अद्धचक्कवाला। उज्जुआययाए सेढीए उववज्जमाणे एगसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा। एगओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा। दुहओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे जे भविए एगपयरंमि अणुसेढीए उववज्जित्तए से णं तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा, जे भविए विसेढीए उववज्जित्तए, से णं चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा, से तेणट्ठेणं जाव उववज्जेज्जा। एवं अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइओ लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते ! समोहए, समोहणित्ता लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमंते अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य सुहुमपुढवीकाइएसु२, सुहुमआउकाइएसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु४, सुहुमतेउकाइएसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य ६, सुहुमवाउकाइएसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु ८, बायरवाउकाइएसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु१०, सुहुमवणस्सइकाइएसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य ११, बारससु वि ठाणेसु एएणं चेव कमेणं भाणियव्वो।१२। सुहुमपुढवीकाइओ पज्जत्तओ एवं चेव निरवसेसो बारससु वि ठाणेसु उववाएयव्वो२४। एवं एएणं गमएणं जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु चेव भाणियव्वो। अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइएणं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स दाहिणिल्ले चरिमंते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइ समइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? गोयमा ! दुसमइएणं वा तिसमइएणं वा चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ?।

एवं खलु गोयमा! मए सत्त सेढीओ पन्नत्ताओ तं जहा-उज्जुआयया जाव अद्धचक्कवाला। एगओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा। दुहओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे जे भविए एगपयरंमि अणुसेढीए उववज्जित्तए, से णं तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा। जे भविए विसेढीए उववज्जित्तए से णं चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं एएणं गमएणं पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए दाहिणिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु चेव। सव्वेसिं दुसमइओ, तिसमइओ, चउसमइओ विग्गहो भाणियव्वो। अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते! कइ समइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा? गोयमा! एग समइएण वा, दुसमइएण वा, तिसमइएण वा, चउसमइएण वा, विग्गहेणं उववज्जेज्जा। से केणट्ठेणं०। एवं जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहया पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमंते उववाइया, तहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते उववाएयव्वा सव्वे। अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइएणं भंते! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए समोहणित्ता जे भविए लोगस्स उत्तरिल्ले चरिमंते अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए। से णं भंते! एवं जहा पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहओ दाहिणिल्ले चरिमंते उववाइओ तहा पुरत्थिमिल्ले समोहओ उत्तरिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो॥सू०६॥

छाया--अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! लोकस्य पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः समवहत्य यो भव्यो लोकस्य पौरस्त्ये एव चरमान्ते अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया उत्पत्तुम्, स खलु भदन्त ! कतिसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्यते ? गौतम ! एकसामयिकेन वा, द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, चतुःसामयिकेन वा, विग्रहेणोत्पद्यते, तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते, एकसामयिकेन वा यावत् उत्पद्येत । एवं खलु गौतम ! मया सप्तश्रेणयः प्रज्ञप्ताः तद्यथा--ऋज्वायता यावदर्द्धचक्रवाला ।७। ऋज्वायतया श्रेण्या उत्पद्यमान एकसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत । एकतो वक्रया श्रेण्या उत्पद्यमानो द्विसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत, द्विधातो वक्रया श्रेण्या उत्पद्यमानो यो भव्य एकप्रतरे अनुश्रेण्याम् उत्पत्तुम्, स खलु त्रिसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत । यो भव्यो विश्रेण्यामुत्पत्तुं स खलु चतुःसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत, तत्तेनार्थेन यावदुत्पद्येत । एवमपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिको लोकस्य पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः समवहत्य लोकस्य पौरस्त्ये एव चरमान्ते अपर्याप्तकेषु पर्याप्तकेषु च सूक्ष्म पृथिवीकायिकेषु, सूक्ष्माप्कायिकेषु अपर्याप्तकेषु पर्याप्तकेषु च, बादरवायुकायिकेषु अपर्याप्तकेषु पर्याप्तकेषु च सूक्ष्म वनस्पतिकायिकेषु अपर्याप्तकेषु पर्याप्तकेषु च, द्वादशस्वपि स्थानेषु एतेनैव क्रमेण भणितव्यः १२। सूक्ष्म पृथिवीकायिकः पर्याप्तक एवमेव निरवशेषो द्वादशस्वपि स्थानेषु उपपातयितव्यः २४। एवमेतेन गमकेन यावत् सूक्ष्मवनस्पति कायिकः पर्याप्तकः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकेषु पर्याप्तकेष्वेव भणितव्यः । अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! लोकस्य पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः समवहत्य यो भव्यो लोकस्य दाक्षिणात्ये चरमान्ते, अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकेषु उपपत्तुम्, स खलु भदन्त ! कतिसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत । गौतम ! द्वि सामयिकेन त्रिसामयिकेन चतुःसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत । तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते, एवं खलु गौतम ! मया सप्तश्रेणयः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा--ऋज्वायता यावत् अर्द्धचक्रवाला ७ । एकतो वक्रया श्रेण्या उत्पद्यमानो द्विसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत । द्विधातो वक्रया श्रेण्या उत्पद्यमानो यो भव्य एकप्रतरे अनुश्रेण्या मुत्पत्तुम्, स खलु त्रिसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत, यो भव्यो विश्रेण्या मुत्पत्तुम्, स खलु चतुःसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येत, तत्तेनार्थेन गौतम ! एवमेतेन गमकेन पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः दक्षिणात्ये चरमान्ते उपपातयितव्यो यावत् सूक्ष्म वनस्पतिकायिकः पर्याप्तकः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकेषु पर्याप्तकेष्वेव । सर्वेषां द्विसामयिकः, त्रिसामयिकः, चतुःसामयिको विग्रहो भणितव्यः । अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! लोकस्य पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः समवहत्य यो भव्यो लोकस्य पाश्चात्ये चरमान्ते अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकतयोत्पत्तुं

स खलु भदन्त ! कतिसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत । गौतम ! एकसामयिकेन वा, द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, चतुःसामयिकेन वा विग्रहेणोत्पद्येत । तदेकेनार्थेन एवम्० । यथैव पौरस्त्ये एव चरमान्ते समवहताः पौरस्त्ये एव चरमान्ते उपपादिता स्तथैव पौरस्त्ये चरमान्ते समवहताः पाश्चात्ये चरमान्ते उपपातयितव्याः सर्वे । अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! लोकस्य पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः समवहत्य यो भव्यो लोकस्य औत्तरे चरमान्ते अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकतयोत्पत्तुम्, स खलु भदन्त ! एवं यथा पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतो दाक्षिणात्ये चरमान्ते उपपादितः तथा—पौरस्त्ये चरमान्ते समवहत औत्तरे चरमान्ते उपपातयितव्यः ॥सू. ६॥

'टीका:—'अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते !' अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! 'लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' लोकस्य पौरस्त्ये पूर्वदिक् सम्बन्धिनि चरमान्ते समवहतो—मारणान्तिकसमुद्घातं कृतवान्, 'समोहणित्ता जे भविए लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमंते' समवहत्य—मारणान्तिक समुद्घातं कृत्वा यो भव्यो लोकस्य पौरस्त्ये एव चरमान्ते, 'अपज्जत्त सुहुम-पुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया उत्पत्तुम् 'से णं

अब लोकके पूर्वादि चरम भाग विशेषका उपपात दिखलाया जायगा । 'अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइए णं भंते ! इत्यादि

टीकार्थ—'अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते !' जिस अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवने 'लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' लोक के पूर्वदिक् संबंधि चरमान्त में मारणान्तिक समुद्घात किया है—'समोहणित्ता जे भविए लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमते अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' और मरण करके वह लोक के पूर्व दिशा के ही अन्तिम भाग में अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक रूपसे उत्पन्न होने के योग्य हुआ है 'से णं

હવે લોકના પૂર્વ વિગેરે ચરમાન્ત ભાગ વિશેષનો ઉપપાત બતાવવામાં આવે છે. 'अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते !' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—'अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते !' જે અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ 'लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' લોકના પૂર્વ દિશા સંબંધી ચરમાન્તમાં મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને મરેલ હોય 'समोहणित्ता जे भविए लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमंते अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' અને મરણ પામીને તે લોકના પશ્ચિમના અન્તભાગમાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય હોય છે,

भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' स खलु भदन्त ! कति सामयिकेन विग्रहेण गत्या समुत्पद्येत इति प्रश्नः । भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि । 'गोयमा' हे गौतम ! 'एगसमइएण वा, दुसमइएण वा, तिसमइएण वा, चउसमइएण वा, विग्गहेणं उववज्जेज्जा' एकसामयिकेन वा, द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, चतुःसामयिकेनवा विग्रहेण गत्या समुत्पद्येतेत्युत्तरम् । पुनः प्रश्नयन्नाह- 'से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ एगसमइएण वा जाव उववज्जेज्जा' तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते एकसामयिकेन वा यावत् उत्पद्येतेति । अत्र यावत्पदेन द्विसासामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, चतुःसामयिकेन वा, एतेषां ग्रहणं भवतीति ?

भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' 'तो हे भदन्त ! ऐसा वह जीव वहां कितने समय वाले विग्रह से उत्पन्न होता है ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा' हे गौतम ! वह वहां एकसमयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है, दो समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है, तीनसमयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता हैं और चार समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है । 'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ एगसमइएण वा जाव उववज्जेज्जा 'हे भदन्त ! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि वह वहां एकसमयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है यावत् चार समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है ? यहां यावत्पद से 'द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा चतुःसामयिकेन वा' इस पाठका ग्रहण

'से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' તો હે ભગવન્ એવો તે જીવ કેટલા સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा ति समइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा' હે ગૌતમ ! ત્યાં તે એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે. અને ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ एगसमइएण वा जाव उववज्जेज्जा' હે ભગવન્ આપ એવું શા કારણથી કહો છો કે તે ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. યાવત્ ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે અહિયાં યાવત્ શબ્દથી 'द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, चतुः सामदिकेन वा' આ પાઠ ગ્રહણ કરાયો છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી

भगवानाह-'एवं' इत्यादि । 'एवं खलु हे गौतम ! 'मए सत्तसेढीओ पन्नत्ताओ' मया सप्त श्रेणयः प्रज्ञप्ताः, 'तं जहा' तद्यथा-'उज्जुआयया जाव अद्धचक्कवाला' ऋज्वायता यावदर्द्धचक्रवाला, अत्र यावत्पदेन-एकतो वक्रा, द्विधातो वक्रा, एकतः खा, द्विधातः खा चक्रवालानां श्रेणीनां संग्रहो भवति । तत्र-'उज्जुआययाए सेढीए उववज्जमाणे एगसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' ऋज्वायतया सरलया लम्बायमानया च श्रेण्या समुत्पद्यमानो जीव एकसामयिकेन विग्रहेण समुत्पद्येत, तथा-'एगओ वंकाए सेढीए दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' एकतो वक्रया कुटिलया श्रेण्या समुत्पद्यमानो जीवो द्विसामयिकेन विग्रहेण गत्या समुत्पद्येत । तथा-'दुहओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे' द्विधातो वक्रया श्रेण्या समुत्पद्यमानो जीवः

हुआ है । उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'एवं खलु गोयमा ! मए सत्तसेढीओ पन्नत्ताओ' 'हे गौतम ! मैने सात श्रेणियां कही हैं-'तं जहा' जो इस प्रकार से हैं-'उज्जुआयया जाव अद्धचक्कवाला' 'ऋज्वायता यावत् अर्द्धचक्रवाला यहां यावत्पद से 'एकतो वक्रा द्विधातो वक्रा, एकतः खा द्विधातःखा और चक्रवाला' 'इन अवशिष्ट श्रेणियों का ग्रहण हुआ है । इनमें जो 'उज्जुआययाए सेढीए उववज्जमाणे एगसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' 'जो जीव अपने उत्पत्तिस्थान में ऋज्वायता श्रेणी से गमन करता हुआ उत्पन्न होता है वह वहाँ एक समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है 'एगओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' तथा जो जीव एकतो वक्रा श्रेणि से गमन करता हुआ अपने उत्पत्ति स्थान में उत्पन्न होता है वह वहां दो समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है । तथा-'दुहओ वंकाए

ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ' હે ગૌતમ ! મેં સાત શ્રેણીઓ કહેલ છે. 'तं जहा' તે આ પ્રમાણે છે. 'उज्जु आयया जाव अद्ध चक्कवाला' ઋજ્વાયત યાવત્ અર્ધચક્રવાલા અહિયાં યાવત્પદથી એકતો વક્રા, દ્વિધાતો વક્રા, એકતઃ ખા, દ્વિધાતો ખા, અને ચક્રવાલા આ બાકીની શ્રેણીયો ગ્રહણ કરવામાં આવી છે. આ શ્રેણીયોમાં જે 'उज्जु-आययाए सेढीए उववज्जमाणे एगसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' જે જીવ પોતાની ઉત્પત્તી સ્થાનમાં ઋજ્વાયતા શ્રેણીથી ગમન કરીને ઉત્પન્ન થાય છે, તે ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. 'एगओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' તથા જે જીવ એકતો વક્રા શ્રેણીથી ગમન કરીને પોતાના ઉત્પત્તિ સ્થાનમાં ઉત્પન્ન થાય છે, તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પત્તિ સ્થાનમાં ઉત્પન્ન થાય છે. તથા 'दुहओ

'जे भविए एगपयरंमि अणुसेढीं उववज्जित्तए' यो भव्य एकप्रतरे अणुश्रेणिमाश्रित्य समुत्पत्तुम्, 'से णं तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' स खलु जीव स्त्रिसामयिकेन विग्रहेण समुत्पद्येत, 'जे भविए विसेढीं उववज्जित्तए से णं चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' यो भव्यो विश्रेणि-विश्रेणिमाश्रित्य विश्रेण्यामित्यर्थः, उत्पत्तुम्, स खलु चतुःसामयिकेन विग्रहेण गत्या समुत्पद्येत इति। 'से तेणट्ठेणं जाव उववज्जेज्जा' तत्तेनार्थेन गौतम ! एव मुच्यते एकसामयिकेन वा, द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, चतुःसामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत इति। 'एवं अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइओ लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' एवं पूर्वोक्त

सेढीए उववज्जमाणे जे भविए एगपयरंमि अणुसेढिं उववज्जित्तए से णं तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' जो जीव द्विधातो वक्रा श्रेणि से गमन करता हुआ एक प्रतर में समश्रेणि से उत्पन्न होता है तो वह तीन समयवाले विग्रह से वहां उत्पन्न होता है। और 'जे भविए विसेढीं उववज्जित्तए से णं चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' जो विश्रेणि में उत्पन्न होने के योग्य है वह वहां चार समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है। 'से तेणट्ठेणं जाव उववज्जेज्जा' इस कारण हे गौतम ! मैंने ऐसा कहा है कि वह वहां एकसमयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है दो समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है, तीन समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है और चार समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है। 'एवं अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइओ लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' इसी पूर्वोक्त क्रम के अनुसार कोई अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव लोक के पूर्व चरमान्त में

वंकाए सेढीए उववज्जमाणे जे भविए एगपयरंमि अणुसेढिं उववज्जित्तए से णं तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' જે જીવ દ્વિધાતો વક્રા શ્રેણીથી ગમન કરતો થકો એક સમયમાં સમ શ્રેણીથી ઉત્પન્ન થાય છે. તો તે ત્રણ સમય વાળી વિગ્રહગતિથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે અને 'जे भविए विसेढिं उववज्जित्तए से णं चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' જે વિશ્રેણીમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય છે, તે ત્યાં ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. 'से तेणट्ठेणं जाव उववज्जेज्जा' આ કારણથી હે ગૌતમ ! મેં એવું કહેલ છે કે-તે ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે. ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે અને ચાર સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે. 'एवं अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइओ लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए'

क्रमेणैवापर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः लोकस्य पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतो मारणान्तिकसमुद्घातं कृतवान्। 'समोहणित्ता लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमंते' समवहत्य-मारणन्तिकसमुद्घातं कृत्वा लोकस्य पौरस्त्ये एव चरमान्ते। 'अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य सुहुमपुढवीकाइएसु' अपर्याप्तकेषु पर्याप्तकेषु च सूक्ष्मपृथिवीकायिकेषु अपर्याप्त पर्याप्त भेदद्वयभिन्नेषु पृथिवीकायिकेषु इत्यर्थः तथा-'सुहुमआउकाइएसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु' सूक्ष्माऽप्कायिकेषु अपर्याप्तपर्याप्तभेदद्वयुक्तेषु तथा-'सुहुमतेउकाइएसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य' अपर्याप्तकेषु पर्याप्तकेषु च सूक्ष्मतेजस्कायिकेषु, तथा-'सुहुमवाउकाइएसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य' अपर्याप्तकेषु पर्याप्तकेषु च सूक्ष्मवायुकायिकेषु, तथा-'बायरआउकाइएसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य' अपर्याप्तकेषु पर्याप्तकेषु च बादरवायुकायिकेषु, तथा-'सुहुमवणस्सइकाइएसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य' अपर्याप्तकेषु पर्याप्तकेषु च सूक्ष्मवन-

---

समवहत हुआ और 'समोहणित्ता लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चेव चरमंते' समवहत होकर लोक के पूर्व ही चरमान्त में 'अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमपुढवीकाइएसु' अपर्याप्त एवं पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवी कायिकों में तथा 'सुहुम आउक्काइएसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु' अपर्याप्त एवं पर्याप्तक सूक्ष्म अप्कायिकों में तथा 'सुहुम तेउक्काइएसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य' अपर्याप्त एवं पर्याप्तक सूक्ष्मतेजस्कायिकों में, तथा-'सुहुम वाउकाइएसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य' अपर्याप्त एवं पर्याप्त सूक्ष्मवायुकायिकों में तथा-'बायरवाउकाइएसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य' अपर्याप्त एवं पर्याप्त बादरवायुकायिकों में तथा-'सुहुमवणस्सइकाइएसु अपज्जत्तएसु पज्जएसु य' अपर्या-

---

આ પહેલાં કહેલ ક્રમથી કોઇ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવ લોકના પૂર્વ ચરમાન્તમાં સમુદ્‌ઘાત કરીને અને 'समोहणित्ता लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमंते !' સમુદ્‌ઘાત કરીને લોકના પૂર્વ ચરમાન્તમાં જ 'अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमपुढवीकाइएसु' અપર્યાપ્તક અને પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકોમાં તથા 'सुहुमआउकाइएसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु' અપર્યાપ્તક અને પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ અપ્કાયિકોમાં તથા 'सुहुम तेउकाइएसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य' અપર્યાપ્તક અને પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિકોમાં તથા-'सुहुम वाउकाइएसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य' અપર્યાપ્તક અને પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ વાયુકાયિકોમાં તથા 'बायरवाउकाइएसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु' અપર્યાપ્તક અને પર્યાપ્તક બાદર વાયુકાયિકોમાં તથા-'सुहुम वणस्सइकाइएसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु' અપર્યાપ્તક અને પર્યાપ્તક

स्पतिकायिकेषु, 'बारससु वि ठाणेसु एएणं चेव कमेणं भाणियव्वो' द्वादशस्वपि स्थानेषु अपर्याप्त पर्याप्त विशेषणविशिष्टेषु-सूक्ष्मपृथिवीकायिक २, सूक्ष्माप्कायिक ४, सूक्ष्मतेजस्कायिक ६, सूक्ष्मवायुकायिक ८, बादरवायुकायिक १० सूक्ष्म वनस्पतिकायिक १२ रूपेषु, एतेनैव क्रमेण अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकस्य उपपातो भणितव्यः ।१२।

ननु लोकस्य चरमान्तीय जीवानामुपपातो द्वादशैव स्थानानि कथं कथितानि, इतः पूर्वसूत्रे विंशति स्थानेषु उपपातस्य वर्णनादितिचे दुच्यते-इहलोक चरमान्तभागे बादराः पृथिवीकायिकाप्कायिकतेजस्कायिकवनस्पतिकायिकाः न सन्ति, सूक्ष्मस्तु पञ्चापि जीवाः सन्ति, बादरवायुकायिकाश्च, तत्र सन्तीति

प्तक एवं पर्याप्तक सूक्ष्मवनस्पतिकायिकों में 'बारससु वि ठाणेसु एएणं चेव कमेणं भाणियव्वो' इस क्रम से कथित इन १२ स्थानों में उत्पन्न होने के योग्य हुआ इस रूपसे इसका इन १२ स्थानों में उत्पाद कहना चाहिये और इसी क्रमसे 'सुहुमपुढवीकाइओ पज्जत्तओ एवं चेव' इसी प्रकार से पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकका भी इन १२ स्थानों में उत्पाद कहना चाहिये।

शंका--लोकके चरमान्तीय जीवों के उपपात में यहां १२ स्थान क्यों कहे हैं? क्योंकि इससे पहिले सूत्र में २० स्थानों में उपपात का वर्णन सूत्रकार ने किया है।

उत्तर—लोकके चरमान्त भाग में बादरपृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक, बादरतेजस्कायिक और बादरवनस्पतिकायिक जीव नहीं हैं। सूक्ष्मपृथिवीकायिक सूक्ष्मअप्कायिक, सूक्ष्मतेजस्कायिक, सूक्ष्मवनस्पतिकायिक और सूक्ष्मवायुकायिक एवं बादरवायुकायिक

સૂક્ષ્મ વનસ્પતિ કાયિકોમાં 'बारससु वि ठाणेसु एएणं चेव कमेणं भाणियव्वो' આ ક્રમ પ્રમાણે કહેવામાં આવેલા આ ૧૨ બારે સ્થાનોમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય થયેલ આ રૂપથી તેઓનું આ બારે સ્થાનોમાં ઉત્પાદનું કથન કરવું જોઈએ. અને આજ ક્રમ પ્રમાણે 'सुहुमपुढवीकाइओ पज्जत्तओ एवं चेव' પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકનો ઉપપાત પણ આ બાર સ્થાનોમાં કહેવો જોઈએ.

શંકા—લોકના ચરમાન્તના જીવોના ઉપપાતમાં ૧૨ બાર સ્થાનો કેમ કહ્યા છે? કેમ કે-આનાથી પહેલાના સૂત્રોમાં તો ૨૦ વીસ સ્થાનોમાં ઉપપાતનું વર્ણન સૂત્રકારે કરેલ છે.

ઉત્તર—લોકના ચરમાન્ત ભાગમાં બાદર પૃથ્વીકાયિક, બાદર અપ્કાયિક, બાદર તેજસ્કાયિક અને બાદર વનસ્પતિકાયિક જીવ હોતા નથી. સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક, સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક, સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક, સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક અને

पर्याप्तापर्याप्त भेदेन द्वादश स्थानस्यैव सूत्रकृताऽनुसरणं कृतमिति। इह च लोकस्य पूर्वचरमान्तात् पूर्वचरमान्ते समुत्पद्यमानस्य एकसामयादिका चतुःसमयान्ता गतिः संभवति अनुश्रेणि विश्रेणी संभावात्। पुनः दक्षिण चरमान्ते पूर्वचरमान्तात् समुत्पद्यमानस्य तु द्व्यादि चतुःसामयिक्येव गतिस्तत्रानुश्रेणेरभावात्। एवमन्यत्रापि विश्रेणी गमने द्व्यादि चतुःसामयिक्येव गति र्भवतीति भावः।

'सुहुमपुढवीकाइओ पज्जत्तओ एवं चेव' सूक्ष्मपृथिवीकायिकः पर्याप्तकः एवमेव अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकवदेव अयं पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकोऽपि

मे ही जीव वहां हैं। इसलिये सूत्रकार ने पर्याप्त और अपर्याप्त के भेद से इन १२ स्थानोंका ही यहां अनुसरण किया है। यहां लोकके पूर्वचरमान्त से पूर्वचरमान्त में उत्पन्न हुए जीवकी एक समयवाली और यावत् चारसमयवाली गति हो सकती है क्योंकि यहां अनुश्रेणि रूपसे जाकर भी उत्पन्न होता है और विश्रेणि में भी उत्पन्न होता है तथा दक्षिण चरमान्त में पूर्वचरमान्त से उत्पन्न होने वाले जीवकी गति दोसमय से लेकर चार समयतककी होती है। क्योंकि यहां उत्पत्ति स्थान सीधमें नहीं होने के कारण ऋज्वायता श्रेणि का अभाव है। इसलिये एकसमयवाली गति यहां नहीं कही है। इसी प्रकार से अन्यत्र भी विश्रेणि स्थित स्थान में उत्पन्न होने वाले के गमन में दोसमयवाली गतिसे लेकर चारसमयवाली ही गति होती है ऐसा जानना चाहिये।

'सुहुमपुढवीकाइओ पज्जत्तओ एवं चेव' इत्यादि पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक भी इसी प्रकार से-अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकके जैसे

સૂક્ષ્મ વાયુકાયિક તથા બાદર વાયુકાયિક આટલા જ જીવો ત્યાં હોય છે. તેથી સૂત્રકારે પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્તના ભેદથી આ ૧૨ બાર સ્થાનોનું જ અહિયાં કથન કર્યું છે. અહિયાં લોકના પૂર્વચરમાન્તથી પૂર્વચરમાન્તમાં ઉત્પન્ન થનારા જીવની એક સમયવાળી અને યાવત્ ચાર સમયવાળી ગતિ પણ હોય છે. કેમ કે અહિયાં અનુશ્રેણી ગતિ પણ હોય છે, અને વિશ્રેણી ગતિ પણ હોય છે. તથા દક્ષિણ ચરમાન્તમાં પૂર્વ ચરમાન્તથી ઉત્પન્ન થવાવાળા જીવની ગતિ બે સમયથી લઈને ચાર સમય સુધીની હોય છે. કેમ કે અહિયાં અનુશ્રેણી ગતિનો અભાવ કહેલ છે. તેથી એક સમયવાળી ગતિ અહિયાં કહી નથી. એજ પ્રમાણે બીજે પણ વિશ્રેણી ગમનમાં બે સમયવાળી ગતિથી લઈને ચાર સમયવાળી જ ગતિ હોય છે- તેમ સમજવું જોઈએ.

'सुहुमपुढवीकाइओ पज्जत्तओ एवं चेव' પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક પણ આજ પ્રમાણે. એટલે કે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકની જેમજ બારે

निरवसेसो' निरवशेषः-सम्पूर्णः 'बारससु वि ठाणेसु' द्वादशस्वपि स्थानेषु पूर्व दर्शितेषु 'उववएयव्वो' उपपातयितव्यः-उपपातः करणीयः, तथाहि-पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकेषु २, अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्माप्कायिकेषु ४, अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्मतेजस्कायिकेषु अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्मवायुकायिकेषु ८, अपर्याप्त पर्याप्त बादरवायुकायिकेषु १०, अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिकेषु १२ इत्येवं द्वादशस्वपि स्थानेषु उपपातयितव्यः पर्याप्त सूक्ष्मपृथिकायिकस्य एतेषु द्वादश स्थानेषु उपपातः कर्त्तव्य इति भावः (१२) २४ ।

एवं-पूर्वोक्तगमानुसारेण अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकवदेव अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्माप्कायिकस्य अपर्याप्त पर्याप्त विशेषण विशिष्टेषु सूक्ष्मपृथिवी कायिकाऽप्कायिक तेजस्कायिक सूक्ष्मवायुकायिक बादरवायुकायिक सूक्ष्मवनस्पतिकायिक रूपेषु द्वादशसु स्थानेषु उपपातः कथनीयः ३६ । एवं शेषतेज-

---

१२ स्थानों में-अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकों में २, अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्म अप्कायिकों में ४, अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्मतेजस्कायिकों में ६, अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्मवायुकायिकों में ८ अपर्याप्त पर्याप्त बादर वायुकायिकों में १० और अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायों में १२-उत्पादित करा लेना चाहिये। अर्थात् इस प्रकार इन १२ स्थानों में पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकके उत्पादका कथन कर लेना चाहिये इसी प्रकार-पूर्वोक्तगमके अनुसार अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक के जैसा ही अपर्याप्त पर्याप्त अप्कायिकका भी अपर्याप्त पर्याप्त विशेषण वाले सूक्ष्मपृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, सूक्ष्मवायुकायिक बादरवायुकायिक और सूमवन स्पतिकायिक इन १२ स्थानों में उत्पाद

સ્થાનોમાં-અપર્યાપ્ત પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકોમાં ૨ અપર્યાપ્ત પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિકોમાં ૪ અપર્યાપ્ત પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિકોમાં ૬ અપર્યાપ્ત પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વાયુકાયિકોમાં ૮ અપર્યાપ્ત પર્યાપ્ત બાદર વાયુકાયિકોમાં ૧૦ અને અપર્યાપ્ત પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિકોમાં ૧૨ ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં કથન કરી લેવું. એટલે કે બારે સ્થાનોમાં ઉપર બતાવ્યા પ્રમાણે પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વિકાયિકના ઉત્પાતનું કથન કરી લેવું. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-આ પહેલાં કહેલા ગમકો પ્રમાણે અપર્યાપ્ત, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વિકાયિકના કથન પ્રમાણે જ અપર્યાપ્ત, પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિકોનું ૪ અપર્યાપ્તક-પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક ૬ અપર્યાપ્તક પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વાયુકાયિક ૮ બાદર વાયુકાયિક ૧૦ અને સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક ૧૨ આ બારે સ્થાનામાં ઉત્પન્ન

स्कायिक वायुकायिक वनस्पतिकायिक विषयेऽपि विज्ञेयम् । तत्र अपर्याप्त सूक्ष्मा प्कायिकस्य द्वादशस्थानविशिष्टा द्वादशगमाः १२, एवं पर्याप्त सूक्ष्माप्कायिकस्यापि द्वादशगमा भवन्तीति अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्माप्कायिकमधिकृत्य चतुर्विंशतिर्गमा वाच्या २४ एवमेव सूक्ष्मतेजस्कायिकस्य चतुर्विंशतिः २४ सूक्ष्मवायुकायिकस्य बादरवायुकायिकस्य २४, सूक्ष्मवनस्पतिकायिकस्य २४ प्रत्येकं च चतुर्विंशतिगमभावेन सर्वे त्रिंशत्यधिकशतसंख्यका गमा जायन्ते १२० ततः सूक्ष्मपृथिवीकायिकस्य चतुर्विंशतिगमसम्मेलने चतुश्चत्वारिंशदधिकशतं (१४४) पञ्चानां स्थावराणां गमा भवन्तीति उपपातप्रकारः स्वयमेव ऊहनीय इति ।

करा लेना चाहिये ३६ इसी प्रकार से शेष तेजस्कायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक के विषय में भी जानना चाहिये । इस प्रकार अपर्याप्त सूक्ष्म अप्कायिक के द्वादश स्थान सम्बन्धी १२ गम होते हैं । पर्याप्त सूक्ष्म अप्कायिक के भी १२ स्थान सम्बन्धी १२ गम होते हैं । दोनों प्रकारके अप्कायिकों के इस रीति से २४ गम हो जाते हैं । इसी रीति के अनुसार सूक्ष्मतेजस्कायिकके भी २४ गम होते हैं । सूक्ष्मवायुकायिक के भी २४ गम होते हैं । बादरवायुकायिक के भी २४ गम होते हैं सूक्ष्मवनस्पतिकायिक के भी २४ गम होते हैं । कुल गम मिलकर १२० गम हो जाते हैं । सूक्ष्मपृथिवीकायिक के २४ गम इन में मिलाने से पांच स्थावरों के १४४ गम होते हैं । इनके सम्बन्ध में उपपात प्रकार अपने आप उद्भावित कर लेना चाहिये ।

થવાના સંબંધમાં કથન કરી લેવું ૩૬ આજ પ્રમાણે બાકીના તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક અને વનસ્પતિકાયિકના સંબંધમાં પણ સમજી લેવું. આ રીતે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિકોના બાર ૧૨ સ્થાનો સંબંધી બાર ગમકો થાય છે. પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિકના પણ ૧૨ બાર સ્થાન સંબંધી ૧૨ બાર ગમો થાય છે. બન્ને પ્રકારના અપ્કાયિકોના આ રીત પ્રમાણે ૨૪ ચોવીસ ગમકો થઈ જાય છે. આજ રીત પ્રમાણે સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિકના પણ ૨૪ ચોવીસ ગમકો થઈ જાય છે. અને સૂક્ષ્મ વનસ્પતિ કાયિકના પણ ૨૪ ચોવીસ ગમકો થાય છે આ બધા ગમો મળીને કુલ ૯૬ છન્નુ ગમકો થઈ જાય છે. સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકના ૨૪ ચોવીસ ગમો આમાં મેળવવાથી પાંચ સ્થાનોના ૧૨૦ એકસોવીસ ગમો થાય છે આમાં પૃથ્વીકાયિકના ૨૪ ચોવીસ ગમો મેળવવાથી પાંચે સ્થાનકોના ૧૪૪ એકસો ચુંમાળીસ ગમો થઈ જાય છે. આમના સંબંધમાં ઉપપાતનો પ્રકાર સ્વયં બનાવી લેવો.

'अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते !' अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! 'लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' लोकस्य पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः–मारणान्तिकसमुद्घातं कृतवान्, 'समोहणित्ता जे भविए लोगस्स दाहिणिल्ले चरिमंते' समवहत्य–मारणान्तिकसमुद्घातं कृत्वा यो भव्यो लोकस्य दाक्षिणात्ये–दक्षिणे चरमान्ते 'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइएसु उववज्जित्तए' अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकेषूत्पत्तुम्, 'से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' स खलु भदन्त ! कियत्सामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत ? इति प्रश्नः । भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! दुसमइएण वा, तिसमइएण वा, चउसमइएण वा, विग्गहेणं उववज्जेज्जा' द्विसामयिकेन विग्रहेण वा, त्रिसामयिकेन वा, चतुः सामयिकेन वा, विग्रहेण उत्पद्येतेत्युत्तरम् । पुनः प्रश्न-

---

'अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते ! 'हे भदन्त कोई अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव 'लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' लोक के पूर्व के चरमान्त में मरा 'समोहणित्ता जे भविए लोगस्स दाहिणिल्ले चरिमंते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' और मरकर वह लोकके दक्षिण चरमान्त में अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवी कायिक रूपसे उत्पन्न होने के योग्य है तो 'से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' हे भदन्त ! ऐसा वह जीव वहां कितने समय वाले विग्रह से उत्पन्न होता है ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं–'गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा' हे गौतम ! वह वहां दो समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है, तीनसमयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होता है और चारसमयवाले

'अपज्जत्तसुहुमढवीकाइएणं भंते ! હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ 'लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' લોકના પૂર્વના ચરમાન્તમાં મરણ પામે અને 'समोहणित्ता जे भविए लोयस्स दाहिणिल्ले चरिमते अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' અને મરણ પામીને લોકના દક્ષિણ ચમાન્તમાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય હોય તો 'से णं भंते ! कइसमइएण' विग्गहेणं' उववज्जेज्जा' હે ભગવન્ એવા તે જીવ ત્યાં કેટલા સમયવાળા વિગ્રહથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે–'गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइण वा विग्गहेण' उववज्जेज्जा' હે ગૌતમ ! તે ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થય છે, ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે અને ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે. 'से केणट्ठेण' भंते ! एवं' वुच्चइ' હે ભગવન્

यस्माह–'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ' तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते, द्विसामयिकेन वा, यावत् चतुःसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येतेति प्रश्नः। भगवानाह– 'एवं' इत्यादि, 'एवं–खलु गोयमा' एवं खलु हे गौतम ! 'मए सत्तसेढीओ पन्नत्ताओ' मया सप्तसंख्यकाः श्रेणयः प्रज्ञप्ताः कथिताः। 'तं जहा' तद्यथा– 'उज्जुआयया जाव अद्धचक्कवाला' ऋज्वायता यावदर्द्धचक्रवाला, अत्र यावत्पदेन एकतो वक्रा, द्विधातो वक्रा, एकतः खा, द्विधातः खा चक्रवालानां पञ्चानां श्रेणीनां ग्रहणं भवतीति। तत्र सप्तश्रेणीषु मध्ये 'एकओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' एकतो वक्रया श्रेण्या मरणस्थानात् उत्पत्तिस्थानं गच्छन् द्विसामयिकेन विग्रहेण उपपद्येतेति। 'दुहओ वंकाए सेढीए उववज्ज-

विग्रह से भी उत्पन्न होता है। 'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ' हे भदन्त ! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि वहां दो समयवाले अथवा तीन समयवाले अथवा चार समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है ? 'एवं खलु गोयमा ! मए सत्तसेढीओ पन्नत्ताओ' उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं–हे गौतम ! मैंने सात श्रेणियां कही हैं। 'तं जहा' जो इस प्रकार से हैं–'उज्जुआयया जाव अद्धचक्कवाला' एक ऋज्वायता यावत् सातवीं अर्द्धचक्रवाला यहां यावत् शब्द से 'एकतो वक्रा, द्विधातो वक्रा, एकतः खा द्विधातः खा और चक्रवाला इन पांच श्रेणियों का ग्रहण हुआ है। इन सात श्रेणियोंमें से जो 'एकओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' एकतो वक्रा श्रेणि से गमन करता हुआ उत्पत्ति स्थान में उत्पन्न होता है ऐसा वह जीव वहां दो समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है। 'दुहओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे जे भविए एगपयरंमि अणुसेढीए उववज्जित्तए'

આપ એવું શા કારણથી કહો છો કે–તે ત્યાં બે સમયવાળી અથવા ત્રણ સમયવાળી અથવા ચાર સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? 'एवं खलु गोयमा ! मए सत्तसेढीओ पन्नत्ताओ' આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે– ગૌતમ ! મેં સાત શ્રેણીયો કહી છે. 'तं जहा' તે આ પ્રમાણે છે. उज्जुआयया जाव अद्धचक्कवाला' એક ઋજ્વાયત યાવત્ સાતમી અર્ધ ચક્રવાલા યાવત્ શબ્દથી "એકતો વક્રા દ્વિધાતો વક્રા, એકતઃ ખા દ્વિધાતો ખા અને ચક્રવાલા આ પાંચ શ્રેણીયો ગ્રહણ કરાઈ છે આ સાત શ્રેણીયોમાંથી 'एकओ वंकाए अणुसेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' એકતો વક્રા શ્રેણીથી ગમન કરતો ઉત્પત્તિ સ્થાનમાં ઉત્પન્ન થાય છે. એવો તે જીવ ત્યાં બે સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. 'दुहओ वंकाए सेढीए उववज्जमाणे जे भविए एगपयरंमि अणुसेढीए

माणे जे भवीए एगपयरंमि अणुसेढीए उववज्जित्तए' द्विधातो वक्रया श्रेण्या उत्पद्यमानो यो भव्य एकप्रतरे अनुश्रेण्या उत्पत्तुम्, 'से णं तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' स खलु त्रिसामयिकेन विग्रहेण समुत्पद्येत, 'से णं भंते ! भविए विसेढीए उववज्जित्तए से णं चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' यः खलु भव्यो विश्रेण्यां समुत्पत्तुं स खलु चतुःसामयिकेन विग्रहेण समुत्पद्येत, न तु एकसामयिकेन विग्रहेण गच्छति, दिगन्तात्-दिगन्ते गमनात् 'से तेणट्ठेणं गोयमा !' तत्तेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते, द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा, चतुःसामयिकेन वा विग्रहेण उत्पद्येत इति, 'एवं एएणं गमएणं' एवम् एतेन गमकेन, 'पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहओ' लोकस्य पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः, 'दाहिणिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो' दाक्षिणात्ये-दक्षिणे-चरमान्ते उपपातयितव्यः।

तथा जो द्विधातो वक्रा श्रेणिसे गमन करता हुआ उत्पत्ति स्थान में उत्पन्न होता है ऐसा वह जीव वहां यदि एक प्रतर में 'समश्रेणि में' उत्पन्न होता है तब तो 'से णं तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' वह वहां तीन समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है 'से णं भंते भविए विसेढीए उववज्जित्तए से णं चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' और यदि वह विश्रेणि वाले उत्पत्ति स्थान में उत्पन्न होता है तो वह वहां चार समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है। एक समयवाले विग्रहसे नहीं। क्योंकि एक दिगन्त से दूसरे दिगन्त में उसका गमन होता है। 'से तेणट्ठेणं गोयमा !' इस कारण हे गौतम ! मैंने ऐसा कहा है कि वह वहां दो समयवाले अथवा तीन समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है। 'एवं एएणं गमेणं पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहओ दाहिणिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो' इस प्रकार इसी गमके अनुसार लोकके पूर्वके चरमान्त

उववज्जित्तए' तथा जे द्विधातो वक्रा श्रेणीथी गमन करतो थको उत्पत्ति स्थानमां उत्पन्न थाय छे, एवो ते जीव त्यां जो एक प्रतरमां समश्रेणीमां उत्पन्न थाय तो ते त्यां त्रण समयवाळी विग्रहगतिथी उत्पन्न थाय छे से णं भंते ! भविए विसेढीए उववज्जित्तए से णं चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' अने जो ते विश्रेणीथी जतो थको त्यां उत्पन्न थाय छे. तो ते त्यां चार समयवाळी विग्रहगतिथी उत्पन्न थाय छे. एक समयवाळी विग्रहगतिथी नहीं केम के एक दिगन्तमां तेनुं गमन थाय छे. 'से तेणट्ठेणं गोयमा !' ते कारणथी हे गौतम ! में एवुं कहेल छे के-त्यां बे समयवाळी अथवा त्रण समयवाळी विग्रहगतिथी उत्पन्न थाय छे. 'एवं एएणं गमेणं पुरत्थिमिल्ले चरिमंते ! समोहओ दाहिणिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो' आ गमको प्रमाणे लोकना पूर्व चरमान्तमां

कियत्पर्यन्तानामुपपातो व्यक्तव्यस्तत्राह-'जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ, सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु चेव' यावत् सूक्ष्मवनस्पतिकायिकः पर्याप्तकः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकेषु पर्याप्तकेष्वेव, यावत् पदेन पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकत आरभ्यापर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिकान्ताः संगृह्यन्ते। तथा च पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकत आरभ्य अपर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिकान्तानामुपपातः, अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकत आरभ्य पर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिकान्तेषु द्वादश स्थानेषु वर्णनीय इति। तत्र-'सव्वेसिं दुसमइओ तिसमइओ चउसमइओ विग्गहो भाणियव्वो' सर्वेषां पर्याप्त सूक्ष्मपृथिव्यादि पर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिकान्तानां

में समवहत हुए जीव को दक्षिण चरमान्त में उत्पादित कर लेना चाहिये 'जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुम वणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु' और यह उत्पाद कथन यावत् पर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव पर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिकों में उत्पन्न होता है, यहां तक कहना चाहिये। यहां यावत्पद से पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक से लेकर अपर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिक तकका सब कथन ग्रहीत हुआ है। तथा च-पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक से लेकर अपर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिक तकके जीवों का उपपाद अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक से लेकर पर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिक तकके जीवों में १२ स्थानों में वर्णित कर लेना चाहिये। इनमें 'सव्वेसिं दुसमइओ तिसमइओ, चउसमइओ विग्गहो भाणियव्वो' सबका दो समयवाले अथवा तीनसमयवाले अथवा चारसमयवाले विग्रह से उत्पाद होता

સમુદ્ઘાત કરેલ જીવને દક્ષિણ ચરમાન્તમાં ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં કથન કરી લેવું જોઈએ. 'जाव सुहुम वणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु' અને આ ઉત્પાદ સંબંધી કથન પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક જીવો પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે. "આ કથન સુધીનું કહેવું જોઈએ. અહિયાં યાવત્પદથી પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકથી લઈને અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક સુધીનું સઘળું કથન ગ્રહણ થયેલ છે તથા પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકથી લઈને અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક સુધીના જીવોના સંબંધમાં ૧૨ બારે સ્થાનોમાં વર્ણન કરી લેવું જોઈએ. તેઓમાં 'सव्वेसिं दुसमइओ तिसमइओ चउसमइओ विग्गहो भाणियव्वो' સઘળાનો ઉત્પાદ બે સમયવાળી વિગ્રહગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી

विग्रहस्तु द्विसामयिको वा, त्रिसामयिको वा, चतुःसामयिको वा, भणितव्यो न तु एकसामयिकः दिगन्ताद् दिगन्ते गमनादिति ॥

'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइए णं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! लोकस्य पौरस्त्ये पूर्वस्मिन् चरमान्ते समवहतो–मारणान्तिकसमुद्घातं कृतवान्, 'समोहणित्ता जे भविए लोगस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' समवहत्य–मारणान्तिकसमुद्घातं कृत्वा यो भव्यो लोकस्य पाश्चात्ये–पश्चिमे चरमान्ते अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया समुत्पत्तुम्, 'से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' स खलु भदन्त ! कतिसामयिकेन विग्रहेण समुत्पद्येतेति प्रश्नः । भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि । 'गोयमा' हे गौतम ! 'एगसमइएण वा,

---

है ऐसा कथन करना चाहिये । एकसमयवाले विग्रह से उत्पाद होता है ऐसा नहीं कहना चाहिये क्योंकि इनका एक दिगन्त से दूसरे दिगन्त में गमन होता है ।

'अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' हे भदन्त ! कोई अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव लोकके पूर्वचरमान्त में मरण समुद्घात से मरा और 'समोहणित्ता जे भविए लोगस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' 'मरण समुद्घात कर वह लोकके पाश्चात्य चरमान्त में अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक रूपसे उत्पन्न होने के योग्य हुआ 'से णं भंते ! कइ समइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' हे भदन्त ! ऐसा वह जीव कितने समयवाले विग्रह से वहां उत्पन्न होता है उत्तर में प्रभुश्री

અથવા ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિથી થાય છે. આ પ્રમાણેનું કથન કહેવું જોઈએ. એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પાદ થાય છે. તેમ કહેવું નહીં. કેમ કે–તેઓનું એક દિશાથી બીજી દિશામાં ગમન થાય છે. 'अपज्जत्त सुहुम पुढवीकाइएणं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' હે ભગવન્ કોઈ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ લોકના પૂર્વચરમાન્તમાં મરણ સમુદ્ઘાત કરીને મરણ પામે. અને 'समोहणित्ता जे भविए लोगस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते ! अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए' મરણ સમુદ્ઘાત કરીને તે લોકના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય હોય તો 'से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा' હે ભગવન્ એવો તે જીવ કેટલા સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ?

दुसमइएण वा, तिसमइएण वा, चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा' एकसामयिकेन वा, द्विसामयिकेन वा, त्रिसामयिकेन वा चतुःसामयिकेन वा विग्रहेण समुत्पद्येत इत्युत्तरम् । 'से केणट्ठेणं' तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते, एकसामयिकेन यावत् चतुःसामयिकेन वा विग्रहेणोत्पद्येतेति प्रश्नः । उत्तरमाह-'एवं' इति, यावत्तेनार्थेन एवमुच्यते इत्येतत्पर्यन्तमिति । 'एवं जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहया पुरत्थिमिल्ले चरिमंते उववाइया' एवम्-अनेनैव प्रकारेण यथैव-येनैव रूपेण पौरस्त्ये चरमान्ते समवहताः पौरस्त्ये एव चरमान्ते उपपातिताः, 'तहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते उववाएयव्वा सव्वे' तथैव तेनैव रूपेण

कहते हैं-'गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा' हे गौतम ! वह वहां एकसमयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है अथवा दो समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है अथवा तीन समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है, अथवा चार समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है। 'से केणट्ठेणं भंते !' हे भदन्त ! ऐसा आप किस कारणसे कहते हैं कि वह वहां एकसमयवाले विग्रहसे यावत् चारसमयवाले विग्रहसे उत्पन्न होता है ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'एवं जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहया पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमंते उववाइया' हे गौतम ! जिस प्रकार से पौरस्त्य चरमान्त में समवहत हुए जीव पौरस्त्य चरमान्त में ही उत्पादित किये गये हैं 'तहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते उववाएयव्वा' उसी प्रकार से पौरस्त्य चरमान्त

આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा, चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा' હે ગૌતમ ! તે ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે, બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે, અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે, અથવા ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે, 'से केणट्ठेणं भंते' હે ભગવન્ આપ એવું શા કારણથી કહો છો કે-તે ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી યાવત્ ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'एवं जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहया पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमंते उववाइया' હે ગૌતમ ! જે પ્રમાણે પૂર્વ ચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત કરેલ જીવ પૂર્વ ચરમાન્તમાં જ ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં કથન કર્યું છે, 'तहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते ! समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते उववाएयव्वा' એજ પ્રમાણે પૂર્વ ચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત કરેલ જીવોનો

पौरस्त्ये-पूर्वस्मिन् चरमान्ते समवहताः पाश्चात्ये-पश्चिमे चरमान्ते उपपातयितव्याः सर्वे अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकत आरभ्य पर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिकान्ता इति। 'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइए णं भंते!' अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त! 'लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' लोकस्य पौरस्त्ये पूर्वचरमान्ते समवहतो मारणान्तिकसमुद्घातं कृतवान्। 'समोहणित्ता जे भविए लोगस्स उत्तरिल्ले चरिमंते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते!' समवहत्य यो भव्यो लोकस्योत्तरे चरमान्ते अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया समुत्पत्तुम्, स खलु भदन्त! कियत्सामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येतेति प्रश्नः। उत्तरमाह-एवं जहेव' इत्यादि। 'एवं जहा पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहओ' एवं

में समवहत हुए जीवों को पश्चिम चरमान्त में उत्पादित कर लेना चाहिये। अर्थात् समस्त अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक से लेकर पर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिक तकके एकेन्द्रिय जीवों का पूर्वोक्त जीवों के जैसा ही उत्पाद पूर्वचरमान्त से पश्चिम चरमान्त में कर लेना चाहिये।

'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइए णं भंते! 'हे भदन्त! जो अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव 'लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए समोहणित्ता० अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते!' लोकके पूर्वचरमान्त में मारणान्तिकसमुद्घात करके मरा और मरकर वह लोकके उत्तर चरमान्त में अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक रूपसे उत्पन्न होने के योग्य हुआ तो हे भदन्त! ऐसा वह जीव वहां कितने समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'एवं जहा पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहओ दाहिणिल्ले चरि-

ઉત્પાદ પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં કથન કહી લેવું જોઈએ. અર્થાત્ સઘળા અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વિકાયિકથી લઈને પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક સુધીના એકેન્દ્રિય જીવોનો પહેલા કહેલ જીવોની જેમ જ પૂર્વચરમાન્તથી પશ્ચિમચરમાન્તમાં ઉત્પાદ કહી લેવો.

અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાઇએણં ભંતે!' હે ભગવન્ જે અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ 'લોગસ્સ પુરત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહએ સમોહણિત્તા૦ અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાઇયત્તાએ ઉવવજ્જિત્તએ સે ણં ભંતે!' લોકના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને મરણ પામે અને મરણ પામીને તે લોકના ઉત્તર ચરમાન્તમાં અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય હોય તો હે ભગવન એવો તે જીવ ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'एवं जहा पुरत्थिमिल्ले चरिमंते। समोहओ

यथा पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः, 'दाहिणिल्ले चरिमंते उववाइओ' दाक्षिणात्ये चरमान्ते उपपातितः, 'तहा पुरत्थिमिल्ले समोहओ उत्तरिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो' तथा-पौरस्त्ये समवहतः उत्तरे चरमान्ते उपपातयितव्यः। यथा पूर्वदिशि समवहतस्य दक्षिणस्यां दिशि समुत्पातो वर्णित एवमेव पूर्वदिशि समवहतस्य उत्तरदिशि अपि समुत्पादो वर्णयितव्यः सू० ॥६॥

मूलम्-अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते! लोगस्स दाहिणिल्ले चरिमंते समोहए समोहणित्ता जे भविए लोगस्स दाहिणिल्ले चेव चरिमंते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए। एवं जहा पुरत्थिमिल्ले समोहओ पुरत्थिमिल्ले चेव उववाइओ तहेव दाहिणिल्ले समोहए दाहिणिल्ले चेव उववाएयव्वो। तहेव निरवसेसं जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु चेव पज्जत्तएसु दाहिणिल्ले चरिमंते उववाइओ, एवं दाहिणिल्ले समोहओ पच्चत्थिमिल्ले उववाएयव्वो। नवरं दुसमइय तिसमइय-चउसमइय विग्गहो, सेसं तहेव। दाहिणिल्ले

मंते उववाइओ तहा पुरत्थिमिल्ले समोहओ उत्तरिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो' हे गौतम! जिस प्रकार से लोकके पूर्वचरमान्त में समवहत हुए जीव के दक्षिण चरमान्त में उत्पाद के विषय में कहा गया है, उसी प्रकारसे लोकके पूर्वचरमान्त में समवहत हुए जीवके उत्तर चरमान्त में उत्पाद के सम्बन्ध में भी कह लेना चाहिये। तात्पर्य कहने का यही है कि पूर्वदिशा में समवहत हुए जीवका दक्षिण दिशा में जैसा उत्पाद वर्णित हुआ है उसी प्रकार से पूर्वदिशा में समवहत हुए जीव का उत्तर दिशा में भी उत्पाद वर्णित कर लेना चाहिये ॥सू० ॥६॥

दाहिणिल्ले चरिमंते उववाइओ तहा पुरत्थिमिल्ले समोहओ उत्तरिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो' हे गौतम! જે પ્રમાણે લોકના પૂર્વ ચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત કરેલ જીવના દક્ષિણ ચરમાન્તમાં ઉપપાત થવાના સંબંધમાં કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે લોકના પૂર્વ ચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત કરેલ જીવના ઉત્તર ચરમાન્તમાં ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં પણ કહેવું જોઈએ. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-પૂર્વ દિશામાં સમુદ્ઘાત કરેલ જીવનો ઉપપાત ઉત્તર દિશામાં પણ વર્ણન કરી લેવો જોઈએ. ॥સૂ૦૬॥

समोहओ उत्तरिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो जहेव सट्ठाणे तहेव। एगसमइय-दुसमइय-तिसमइय-चउसमइय विग्गहो। पुरत्थिमिल्ले जहा पच्चत्थिमिल्ले तहेव दुसमइय-तिसमइय चउसमइय विग्गहो। पच्चत्थिमिल्ले य चरिमंते समोहयाणं पच्चत्थिमिल्ले चेव उववज्जमाणाणं जहा सट्ठाणे उत्तरिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमइओ विग्गहो नत्थि सेसं तहेव। पुरत्थिमिल्ले जहा सट्ठाणे, दाहिणिल्ले एगसमइओ विग्गहो नत्थि। सेसं तं चेव उत्तरिल्ले समोहयाणं उत्तरिल्ले चेव उववज्जमाणाणं जहेव सट्ठाणे। उत्तरिल्ले समोहयाणं पुरत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एवं चेव नवरं एगसमइओ विग्गहो नत्थि। उत्तरिल्ले समोहयाणं दाहिणिल्ले उववज्जमाणाणं जहा सट्ठाणे। उत्तरिल्ले समोहयाणं पच्चत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमइओ विग्गहो नत्थि। सेसं तहेव जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु चेव ॥सू०७॥

छाया:-अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! लोकस्य दाक्षिणात्ये चरमान्ते समवहतः, समवहत्य यो भव्यो लोकस्य दाक्षिणात्ये एव चरमान्ते अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया उपपत्तुम्। एवं यथा पौरस्त्ये समवहतः, पौरस्त्ये एवोपपातित स्तथैव दाक्षिणात्ये समवहतो दाक्षिणात्ये एव उपपातयितव्यः। तथैव निरवशेषं यावत्सूक्ष्मवनस्पतिकायिकः पर्याप्तकः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकेष्वेव पर्याप्तकेषु दाक्षिणात्ये चरमान्ते उपपातितः। एवं दाक्षिणात्ये समवहतः पाश्चात्ये चरमान्ते उपपातयितव्यः। नवरं द्विसामयिकः त्रिसामयिकः चतुःसामयिक विग्रहः। शेषं तथैव। दक्षिणात्ये समवहतः औत्तरे चरमान्ते उपपातयितव्या यथैव स्वस्थाने तथैव। एकसामयिक-द्विसामयिक-त्रिसामयिक-चतुःसामयिक विग्रहः। पौरस्त्ये यथा-पाश्चात्ये तथैव-द्विसामयिक-त्रिसामयिक-चतुःसामयिक विग्रहः। पाश्चात्ये च चरमान्ते समवहतानां पाश्चात्ये एवोपपद्यमानानां यथास्वस्थाने, औत्तरे उत्पद्यमानानामेकसामयिको विग्रहो नास्ति शेषं तथैव। पौरस्त्ये यथा स्वस्थाने दाक्षिणात्ये एकसामयिको विग्रहो नास्ति शेषं तदेव। औत्तरे समवहताना

चरिमंते उववाइओ' यावत् सूक्ष्मवनस्पतिकायिकः पर्याप्तकः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकेषु पर्याप्तकेष्वेव दक्षिणे चरिमान्ते उपपातितः। पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकत आरभ्य पर्याप्तवनस्पतिकायिकान्ताः सर्वेऽपि एकेन्द्रिया अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकत आरभ्य पर्याप्त वनस्पतिकायिकान्तेषु दक्षिणे लोकचरमान्ते समवहतानां दक्षिणे एव लोकचरमान्ते एकसामयिकादि यावत् चतुःसामयिकादि विग्रहेणोपपातिताः 'एवं दाहिणिल्ले समोहओ पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो' एवं यथा दक्षिणे समवहतस्य दक्षिणे एव चरिमान्ते उपपातो वर्णित एवमेव लोकस्य दक्षिणे चरमान्ते समवहतस्य लोकस्य पश्चिमे चरमान्ते उपपातो-

---

एसु दाहिणिल्ले चरिमंते उववाइओ' सूत्रकार ने इस सूत्रपाठ द्वारा प्रकट की है-इसके द्वारा उन्होंने यह समझाया है कि जिस प्रकार से यावत् पर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिक जीव पर्याप्तक सूक्ष्मवनस्पतिकायिक रूपसे दक्षिण चरमान्त में ही उपपातित प्रकट किया गया है। अर्थात् अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक से लेकर पर्याप्तवनस्पतिकायिकान्त समस्त एकेन्द्रिय जीव, अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक से लेकर पर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिकान्तों में लोकके दक्षिण चरमान्तमें उनके समवहत होने पर लोकके दक्षिण चरमान्त में ही जिस रूपसे एकसमयवाले विग्रह से दो समयवाले विग्रह से तीनसमयवाले विग्रह से और चार समयवाले विग्रह से उपपादित प्रकट किये गये हैं 'एवं दाहिणिल्ले समोहओ पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो' इसी प्रकार से लोकके दक्षिण चरमान्त में समवहत हुए जीव का पश्चिम

वणस्सइकाइएसु चेव पज्जत्तएसु दाहिणिल्ले चरिमंते। उववाइओ' સૂત્રકારે આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ કરેલ છે. આ કથનથી તેઓએ એ સમઝાવ્યું છે કે જે પ્રમાણે યાવત્ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક જીવ પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ વનસ્પતિ કાયિક પણાથી દક્ષિણ ચરમાન્તમાં જ ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં કથન કર્યું છે. અર્થાત્ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વિકાયિકથી લઈને પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિ કાયિક સુધીના સઘળા એકેન્દ્રિયવાળા જીવો, અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વિકાયિકથી લઈને પર્યાપ્ત વનસ્પતિ કાયિકોમાં લોકના દક્ષિણ ચરમાન્તમાં તેઓના સમુદ્ઘાત કરવાથી લોકના દક્ષિણ ચરમાન્તમાં જ જે રૂપથી-એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી, બે સમયવાળી વિગ્રહ ગતિથી ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી અને ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં કથન કરવામાં આવેલ છે. 'एवं दाहिणिल्ले समोहओ पच्चत्थिमिल्ले। चरिमंते उववाएयव्वो' એજ પ્રમાણે લોકના દક્ષિણ ચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત કરેલ જીવનો ઉપપાત પશ્ચિમ

ऽपि वक्तव्य इति। परन्तु पूर्वापेक्षया यद् वैलक्षण्यं तद्दर्शयति 'नवरं' इत्यादि 'नवरं दुसमइय-तिसमइय-चउसमइय विग्गहो' नवरम्-केवलं वैलक्षण्य मिदमेव यत् द्विसामयिक-त्रिसामयिक-चतुःसामयिको विग्रहो वर्णनीयो न तु एकसामयिको विग्रहोऽत्र सम्भवति। 'सेसं तहेव' शेषं नवरमित्यादिना यत्कथितं तदतिरिक्तं सर्वमुत्पातप्रकारादिकं पूर्ववदेव तत्र नास्ति किमपि वैलक्षण्यमिति। 'दाहिणिल्ले समोहओ उत्तरिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो जहेव सट्टाणे' दक्षिणे लोक-चरमान्ते समवहतः उत्तर चरमान्ते उपपातयितव्यः, यथैव स्वस्थाने। स्वस्थाने इति यत्र चरमान्ते समवहत स्तत्रैव चरमान्ते उपपातो भवति, तथाविधे स्वस्थाने इति।

चरमान्त में भी उपपात कह लेना चाहिये। परन्तु पूर्व के प्रकरण की अपेक्षा जो इस प्रकरण में अन्तर है वह 'नवरं दुसमइए य तिसमइय चउसमइय विग्गहो' इस सूत्रपाठ द्वारा प्रकट किया गया है अर्थात् इस प्रकरण में केवल एक समयवाला विग्रह नहीं कहना चाहिये। किन्तु दो समयवाला तीन समयवाला और चारसमयवाला विग्रह कहना चाहिये। एकसमयवाला विग्रह यहां संभवित नहीं हो सकने से वक्तव्य नहीं कहा गया है। 'सेसं तहेव' इसके अतिरिक्त और सब उपपातादि सम्बन्धी कथन और उपपात पूर्वोदित जैसा ही है। उसमें कोई अन्तर नहीं। 'दाहिणिल्ले समोहओ उत्तरिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो जहेव सट्टाणे' स्वस्थान के जैसा दक्षिण चरमान्त में मरण और उत्तर चरमान्तमें उपपात कहना चाहिए। जिस चरमान्त में समवहत 'समुद्घात' हुआ जीव उसी चरमान्त में जो उत्पन्न होता है वह स्वस्थान है-

ચરમાન્તમાં પણ કહેવો જોઈએ પરંતુ પહેલાના કથનની અપેક્ષાએ આ પ્રકરણમાં જે અંતર-ફેરફાર છે, તે 'नवरं दुसमइय तिसमइय चउसमइय विग्गहो' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ કરવામાં આવેલ છે. અર્થાત્ આ પ્રકરણમાં કેવળ એક સમયવાળી વિગ્રહગતિ કહેવી ન જોઈએ. પરંતુ બે સમય, ત્રણ સમય અને ચાર સમયની વિગ્રહગતિ કહેવી જોઈએ. એક સમયવાળી વિગ્રહગતિ અહિયાં સંભવિત ન થઈ શકવાથી તેનું કથન કર્યું નથી. 'सेसं तहेव' આ કથન શિવાય ઉપપાત વિગેરે સઘળું કથન અને ઉપપાતનો પ્રકાર પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે જ છે તેમાં કોઈ જ ફેરફાર કહેલ નથી. 'दाहिणिल्ले समोहओ उत्तरिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो जहेव सट्टाणे' સ્વસ્થાનના કથન પ્રમાણે દક્ષિણ ચરમાન્તમાં મરણ અને ઉત્તર ચરમાન્તમા ઉપપાત કહેવો જોઈએ. જે ચરમાન્તમા સમુદ્ઘાત કરેલ જીવ એજ ચરમાન્તમાં જો ઉત્પન્ન થાય છે, તે સ્વસ્થાન કહેવાય છે. જેમ કે લોકના પૂર્વ ચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત કરેલ જીવ

तहा- 'तहेव एगसमइय-दुसमइय-तिसमइय-चउसमइय विग्गहो' तथैव पूर्वोक्तवदेव एकसामयिक-द्विसामयिक-त्रिसामयिक-चतुःसामयिको विग्रहो भवतीति। 'पुरत्थिमिल्ले जहा पच्चत्थिमिल्ले तहेव दुसमइय-तिसमइय-चउसमइय विग्गहो' दक्षिणे लोकचरमान्ते समवहत्य पौरस्त्ये चरमान्ते उपपातस्तु यथा-दक्षिणे समवहतस्य पश्चिमे कथित स्तथैव द्विसामयिक-त्रिसामयिको विग्रहो वर्णयितव्यः, उपपातप्रकारः समग्रोऽपि स्वयमेवोहनीयः, 'पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समोहयाणं पच्चत्थिमिल्ले चेव उववज्जमाणाणं जहा सट्ठाणे' पश्चिमे चरमान्ते समवहतानां

जैसे लोकके पूर्व चरमान्त में समवहत हुआ जीव जब लोकके ही पूर्वचरमान्त में उत्पन्न होता है तो यह स्वस्थान उत्पात है। स्वस्थान में उत्पन्न हुए जीवको वहां उत्पन्न होने में एकसमयवाला विग्रह भी होता है दोसमयवाला विग्रह भी होता है, तीन समयवाला विग्रह भी होता है और चारसमयवाला विग्रह भी होता है। इसी प्रकार से दक्षिण चरमान्त में समवहत हुए जीव उत्तर चरमान्त में उत्पन्न होने पर वहां पर भी उसे ऐसे ही समयवाला विग्रह होता है। 'पुरत्थिमिल्ले जहा पच्चत्थिमिल्ले तहेव दुसमइय तिसमइय चउसमइय विग्गहो' पश्चिम चरमान्त के जैसा पूर्वचरमान्त में दो समयवाला, तीनसमयवाला और चारसमयवाला विग्रह होता है। इस सम्बन्ध में उपपात प्रकार सम्पूर्णरूपसे अपने आप उद्भावित कर लेना चाहिये। 'पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समोहयाणं पच्चत्थिमिल्ले चेव उववज्जमाणाणं जहा सट्ठाणे' पश्चिम चरमान्त में समुद्घात

જ્યારે લોકના પૂર્વ ચરમાન્તમાં જ ઉત્પન્ન થાય છે, તો તે સ્વસ્થાનમાં ઉત્પાદ કહેવાય છે. સ્વસ્થાનમાં ઉત્પન્ન થયેલા જીવને ત્યાં ઉત્પન્ન થવામાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિ પણ હાય છે, બે સમયવાળી વિગ્રહગતિ પણ હાય છે, ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિ પણ હાય છે અને ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિ પણ હાય છે. એજ રીતે દક્ષિણ ચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત કરેલ જીવને ઉત્તર ચરમાન્તમાં ઉત્પન્ન થાય ત્યારે પણ તેને આ પ્રમાણેના સમયવાળી વિગ્રહગતિ હાય છે. 'પુરત્થિમિલ્લે જહા પચ્ચત્થિમિલ્લે તહેવ દુસમઇય તિસમઇય ચઉસમઇય વિગ્ગહો' પશ્ચિમ ચરમાન્તના કથન પ્રમાણે પૂર્વ ચરમાન્તમાં બે સમયવાળી ત્રણ સમયવાળી અને ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિ હાય છે. આ વિષય સંબંધી ઉપપાતનો પ્રકાર સંપૂર્ણ પણાથી સ્વયં બનાવી સમજી લેવો જોઇએ. 'પચ્ચત્થિમિલ્લે ચરિમંતે સમોહયાણં પચ્ચત્થિમિલ્લે ચેવ ઉવવજ્જમાણાણં જહા સટ્ઠાણે' પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત કરીને પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં જ ઉત્પન્ન

पश्चिमे एव चरमान्ते उत्पद्यमानानां यथा स्वस्थाने उपपातः कथित स्तथैव एकसामयिक विग्रहादारभ्य यावत् चतुःसामयिको विग्रहो व्यावर्णनीय इति। 'उत्तरिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमइओ विग्गहो नत्थि सेसं तहेव' पश्चिमे समवहतानामुत्तरे लोकचरमान्ते समुत्पद्यमानानामेकसामयिको विग्रहो नास्ति–न भवति, द्वि त्रि चतुःसामयिकविग्रहास्तु सन्त्येव, शेषम्–उपपातप्रकारादिकं सर्वं तु पूर्ववदेव ज्ञातव्यमिति। 'पुरत्थिमिल्ले जहा सट्ठाणे' पाश्चात्ये समवहतानां पौरस्त्ये पूर्वचरमान्तविषये उत्पद्यमानानां यथा–स्वस्थाने समुद्घातोपपातयोरेक स्थानरूपे कथितं तथैव इहापि सर्वं ज्ञातव्यमिति। 'दाहिणिल्ले

करके पश्चिम ही चरमान्त में उत्पन्न हुए पृथिवीकायिक आदि जीवों के सम्बन्ध में जैसा उपपात स्वस्थान में कहा गया है उसी प्रकार से वह वहां एक समयवाला यावत् चार समयवाला होता है ऐसा कह लेना चाहिये। 'उत्तरिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमइओ विग्गहो नत्थि–सेसं तहेव' पश्चिमदिशा से समवहत हुए जीवों के उत्तर चरमान्त में उपपात होने पर वहां उनके उपपात में एकसमयवाला विग्रह नहीं होता है किन्तु दो समयवाला यावत् चार समयवाला विग्रह होता है। बाकीका और सब उपपात प्रकार आदि का कथन पूर्वोक्त जैसा ही है। 'पुरत्थिमिल्ले जहा सट्ठाणे' पश्चिम चरमान्त में समवहत हुए जीवों के पूर्वचरमान्त में उत्पन्न होने पर वहां स्वस्थान के उत्पाद के जैसा उत्पाद कहना चाहिये। अर्थात् वे जीव वहां एकसमयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होते हैं दो समयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होते हैं तीनसम-

थयेला पृथ्वीकायिक विगेरे જીવોના સમ્બન્ધમાં સ્વસ્થાનમાં જે રીતે ઉપપાત કહેલ છે, એજ રીતે તે ત્યાં એક સમયવાળો યાવત્ ચાર સમયવાળો હોય છે, તેમ સમજવું. 'उत्तरिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमइओ विग्गहो नत्थि सेसं तहेव' પશ્ચિમ દિશામાં સમુદ્ઘાત કરેલા જીવોનો ઉપપાત ઉત્તર ચરમાન્તમાં થાય ત્યારે ત્યાં તેના ઉપપાતમાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિ હોતી નથી. પરંતુ બે સમયવાળી યાવત્ ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિ હોય છે. બાકીનું ઉપપાત વિગેરે સઘળું કથન પહેલાં કહ્યા પ્રમાણેનું જ છે. 'पुरत्थिमिल्ले जहा सट्ठाणे' પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત કરેલા જીવો પૂર્વ ચરમાન્તમાં ઉત્પન્ન થાય ત્યારે ત્યાં સ્વસ્થાનના ઉત્પાદના કથન પ્રમાણે ઉપપાદ કહેવો જોઈએ. અર્થાત્ તે જીવો ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, બે સમય વાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે, ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ

एगसमइओ विग्गहो नत्थि सेसं तं-चेव' पाश्चात्ये समवहतानां दक्षिणचरमान्ते उत्पद्यमानानाम् एकसामयिको विग्रहो नास्ति शेष मन्यत्सर्वं पूर्ववदेवेति।

'उत्तरिल्ले समोहयाणं उत्तरिल्ले चेव उववज्जमाणाणं जहेव सट्ठाणे' उत्तरे चरमान्ते समवहताना मुत्तरे एव चरमान्ते समुत्पद्यमानानां यथैव स्वस्थाने एकसामयिकादारभ्य यावत् चतुःसामयिको विग्रहो वर्णनीयः। 'उत्तरिल्ले समोहयाणं पुरत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एवं चेव' उत्तरचरमान्ते समवहतानां पौरस्त्ये पूर्वचरमान्ते समुत्पद्यमानाना मेवमेव। उत्तरे समवहताना मुत्तरे एव समुत्पद्यमानानां यथा कथितं तथैव ज्ञातव्यम्। 'नवरं एगसमइओ विग्गहो

यवाले विग्रह से भी उत्पन्न होते हैं और चारसमयवाले विग्रह से भी उत्पन्न होते हैं। 'दाहिणिल्ले एगसमइओ विग्गहो नत्थि सेसं तं चेव 'पश्चिम चरमान्त में समवहत जीवों के दक्षिण चरमान्त में उत्पन्न होने पर एक समयवाला विग्रह नहीं होता है। इसके अतिरिक्त और सब कथन पूर्वके जैसा ही है।

'उत्तरिल्ले समोहयाणं उत्तरिल्ले चेव उववज्जमाणाणं जहेव सट्ठाणे' लोकके उत्तर चरमान्त में समवहत हुए जीवोंका उत्तर चरमान्त में ही उत्पन्न होने के सम्बन्ध में एक समय से लेकर यावत् चारसमयतक का विग्रह होता है। ऐसा जानना चाहिये। 'उत्तरिल्ले समोहयाणं पुरत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एवं चेव' उत्तर चरमान्त में समवहत हुए जीवों का पूर्वदिशा में उपपात होने के सम्बन्ध में भी दो समय से लेकर चारसमय तकका विग्रह होता है। यहां एक-

---

ઉત્પન્ન થાય છે, ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિથી પણ ઉત્પન્ન થાય છે. 'दाहिणिल्ले एगसमइओ विग्गहो नत्थि सेसं तं चेव' પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત કરેલ જીવ દક્ષિણ ચરમાન્તમાં ઉત્પન્ન થાય ત્યારે એક સમયવાળી વિગ્રહગતિ હોતી નથી. આ શિવાય સઘળું કથન પહેલા કહ્યા પ્રમાણે છે. તેમ સમજવું.

'उत्तरिल्ले समोहयाणं उत्तरिल्ले चेव उववज्जमाणाणं जहेव सट्ठाणे' લોકના ઉત્તર ચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત કરેલ જીવોના ઉત્તર ચરમાન્તમાં ઉત્પન્ન થવાના સંબંધમાં એક સમયથી લઈને યાવત્ ચાર સમય સુધીની વિગ્રહગતિથી હોય છે. 'उत्तरिल्ले समोहयाणं पुरत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एवं चेव' ઉત્તર ચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત કરેલ જીવોના ઉપપાત પૂર્વદિશામાં થવાના સંબંધમાં પણ બે સમયથી લઈને ચાર સમય સુધી વિગ્રહગતિ હોય છે. અહિયાં એક સમયની વિગ્રહગતિ હોતી નથી. એજ વાત 'नवरं एगसमइओ विग्गहो नत्थि' આ સૂત્રપાઠદ્વારા પ્રગટ કરવામાં આવેલ છે.

नत्थि' नवरं केवलम् एकसामयिको विग्रहो नास्ति–न वक्तव्यः किन्तु द्व्यादि सामयिक एव विग्रहो वक्तव्य इति। 'उत्तरिल्ले समोहयाणं दाहिणिल्ले उववज्जमाणाणं जहा सट्ठाणे' उत्तरे चरमान्ते समवहतानां दक्षिणे चरमान्ते समुत्पद्य मानानां यथा स्वस्थाने एकसामयिकादारभ्य चतुःसामयिको विग्रहो वक्तव्य इति। 'उत्तरिल्ले समोहयाणं पच्चत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमइओ विग्गहो नत्थि सेसं तहेव' उत्तरे लोकचरमान्ते समुत्पद्यमानाना मेकसामयिको विग्रहो न भवति, किन्तु द्व्यादि सामयिक एव विग्रहो वर्णयितव्यः। शेषम्–प्राथमिक विग्रहव्यतिरिक्तं सर्वं पूर्ववदेव वर्णनीयम्। कियत्पर्यन्तं पूर्वप्रकरणमनुस्मरणीयम्, 'तत्राह–'जाव' इत्यादि। 'जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइ

समयका विग्रह नहीं होता है। यही बात 'नवरं एगसमइओ विग्गहो नत्थि' इस सूत्र पाठ द्वारा प्रकट की गई है।

'उत्तरिल्ले समोहयाणं दाहिणिल्ले उववज्जमाणाणं जहा सट्ठाणे' उत्तर चरमान्त में समवहत हुए जीवों के दक्षिण चरमान्त में उपपात के सम्बन्ध में उनके स्वस्थान में उत्पाद होने के जैसा ही एकसमयवाला दो समयवाला तीनसमयवाला और चारसमयवाला विग्रह होता है ऐसा जानना चाहिये। 'उत्तरिल्ले समोहयाणं पच्चत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमइओ विग्गहो नत्थि, सेसं तहेव' लोकके उत्तर चरमान्त में समवहत हुए जीवों का पश्चिम चरमान्त में उत्पन्न होने के सम्बन्ध में दो समयवाले विग्रह से लेकर चार समयवाला विग्रह होता है। यहां एकसमयवाला विग्रह नहीं होता है ऐसा जानना चाहिये। बाकी का और सब कथन पूर्वके जैसा ही है। 'जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु चेव'

'उत्तरिल्ले समोहयाणं दाहिणिल्ले उववज्जमाणाणं जहा सट्ठाणे' ઉત્તર ચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત કરેલ જીવોનો ઉપપાત દક્ષિણ ચરમાન્તમાં હોવાના સંબંધમાં તેઓને સ્વસ્થાનમાં ઉત્પાદ હોવાની જેમજ એક સમયવાળી, બે સમયવાળી, ત્રણ સમયવાળી અને ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિ હોય છે. તેમ સમજવું. 'उत्तरिल्ले समोहयाणं पच्चत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमइओ विग्गहो नत्थि सेसं तहेव' લોકના ઉત્તર ચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત કરેલ જીવોનો ઉપપાત પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં થવાના સંબંધમાં બે સમયવાળી વિગ્રહગતિથી લઈને ચાર સમયવાળી વિગ્રહ ગતિ હોય છે. અહિયાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિ હોતી નથી. તેમ સમજવું. બાકીનું બીજું સઘળું કથન પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે જ છે. 'जाव सुहुम वणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु चेव' આ કથન યાવત્

काइएसु पज्जत्तएसु चेव' यावत् सूक्ष्मवनस्पतिकायिकः पर्याप्तकः सूक्ष्मवनस्पति कायिकेषु पर्याप्तकेष्वेव। अत्र यावत्पदेन अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकत आरभ्य अपर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिकान्तस्य ग्रहणं भवति । द्वादशानां द्वादशस्थानेषु उपपातप्रकारः स्वयमेवोहनीय इति ॥सू०७॥

एवमुत्पादमधिकृत्य एकेन्द्रियप्ररूपणा कृता, अथ तेषामेव स्थानादि प्ररूपणायाह—'कहिं णं भंते !' इत्यादि ।

मूलम्—कहिं णं भंते ! बायरपुढवीकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु जहा ठाणपदे जाव सुहुमवणस्सइकाइया जे य पज्जत्तगा जे य अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसमणाणत्ता सव्वलोगपरियावन्ना पन्नत्ता समणाउसो ! अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ, तं जहा नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं। एवं चउक्कएणं भेएणं जहेव एगिंदियसएसु जाव बायरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं। अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ बंधंति ? गोयमा ! सत्तविह बंधगा वि, अट्ठविह बंधगा वि, जहा एगिं-

---

एवं यह कथन 'यावत् पर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिक का पर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिकों में ही उपपात होता है' यहां तक कहना चाहिए यहां यावत्पद से अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक से लेकर अपर्याप्त सूक्ष्मवनस्पतिकायिकान्त के जीवोंका ग्रहण हुआ है । तात्पर्य कहनेका यही है कि १२ प्रकार के जीवोंका १२ प्रकार के स्थानों में उपपात कहना और इस सम्बन्ध में उपपात प्रकार अपने आप उद्‌भावित कर लेना चाहिए ॥सू० ७॥

પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિકોનો પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિ કાયિકોમાં જ ઉપપાત થાય છે. આ કથન સુધી કહેવું જોઈએ અહિયાં યાવત્પદથી અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકથી લઈને અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ વનસ્પતિ કાયિક સુધીના જીવો ગ્રહણ કરાયા છે કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-૧૨ બાર પ્રકારના જીવોનો ૧૨ બાર પ્રકારના સ્થાનોમાં ઉપપાત કહેવો અને આ સંબંધમાં ઉપપાત પ્રકાર સ્વયં બનાવીને સમજી લેવો જોઈએ. ॥સૂ૦૭॥

दिय सएसु जाव पज्जत्त बायरवणस्सइकाइया। अपज्जत्तसुहुम-पुढवीकाइयाणं भंते! कइ कम्मपगडीओ वेदेंति? गोयमा! चोद्दस कम्मपगडीओ वेदेंति, तं जहा नाणावरणिज्जं जहा एगिंदियसएसु जाव पुरिसवेदवज्झं। एवं जाव बायरवणस्सइ-काइयाणं पज्जत्तगाणं। एगिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति, किं नेरइएहिंतो उववज्जंति? जहा वक्कंतीए पुढवीकाइयाणं उव-वाओ। एगिंदियाणं भंते! कइ समुग्घाया पन्नत्ता? गोयमा! चत्तारि समुग्घाया पन्नत्ता, तं जहा-वेयणा समुग्घाए जाव वेउव्वियसमुग्घाए ४। एगिंदिया णं भंते! किं तुल्लट्ठिइया तुल्ल-विसेसाहियं कम्मं पकरेंति। तुल्लट्ठिइया वेमाय विसेसाहियं कम्मं-पकरेंति? वेमायट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, वेमाय-ट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति?। गोयमा! अत्थे-गइया तुल्लट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, अत्थेगइया तुल्लट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति। अत्थेगइया वेमायट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति। अत्थेगइया वेमायट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? अत्थेगइया तुल्लट्ठिइया जाव वेमायविसे-साहियं कम्मं पकरेंति? गोयमा! एगिंदिया चउव्विहा पन्नत्ता, तं जहा-अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा।१। अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा।२। अत्थेगइया विसमाउया समो-ववन्नगा।३। अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा।४। तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठिइया तुल्ल-विसेसाहियं कम्मं पकरेंति १। तत्थ णं जे ते समाउया विसमो-ववन्नगा ते णं तुल्लट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति २।

तत्थ णं जे ते विसमाउया समोववन्नगा ते णं वेमायट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ३। तत्थ णं जे ते विसमाउया विसमोववन्नगा ते णं वेमायट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ४। से तेणट्ठेणं गोयमा! जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति! सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ ॥सू० ८॥

चउतीसइमे सए पढमे एगिंदियसए पढमो उद्देसो समत्तो।३४-१।

छाया--कुत्र खलु भदन्त! बादर पृथिवीकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम! स्वस्थानेनाष्टासु पृथिवीषु यथा स्थानपदे यावत् सूक्ष्मवनस्पतिकायिका ये च पर्याप्तका ये चापर्याप्तका एते सर्वे एकविधा अविशेषा अनानात्वाः, सर्वलोके पर्यापन्नाः प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन्! अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवी कायिकानां भदन्त! कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः ? गौतम! अष्टौ कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा—ज्ञानावरणीयं यावदन्तरायिकम्। एवं चतुष्केन भेदेन यथैव एकेन्द्रियशतकेषु यावद् बादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तकानाम्। अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त! कति कर्म प्रकृतीर्बध्नन्ति ? गौतम! सप्तविधबन्धका अपि अष्टविधबन्धका अपि, यथा एकेन्द्रियशतकेषु यावत् पर्याप्ता बादरवनस्पतिकायिकाः। अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त! कति कर्मप्रकृति वेंदयन्ति ? गौतम! चतुर्दशकर्मप्रकृति वेंदयन्ति। तद्यथा—ज्ञानावरणीयं यथा एकेन्द्रियशतेषु यावत्पुरुषवेदवध्यम्। एवं यावद् बादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तकानाम्। एकेन्द्रियाः। एकेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत्र उत्पद्यन्ते ? किं नैरयिकेभ्य उत्पद्यन्ते ? यथा व्युत्क्रान्तौ पृथिवीकायिकानामुपपातः। एकेन्द्रियाणां भदन्त! कति समुद्घाताः प्रज्ञप्ताः ? गौतम! चत्वारः समुद्घाताः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा—वेदनासमुद्घातो १ यावद् वैक्रियसमुद्घातः ४ एकेन्द्रियाः खलु भदन्त! किं तुल्यस्थितिकाः तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति ? तुल्यस्थितिका विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति ? विमात्रस्थितिकास्तुल्य विशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति ? विमात्रस्थितिका विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति ? गौतम! अस्त्येकके तुल्यस्थितिकाः तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति। अस्त्येकके तुल्यस्थितिका विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति अस्त्येकके विमात्र स्थितिकाः तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति। तत्केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते अस्त्येकके तुल्यस्थितिका यावद् विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति ? गौतम! एकेन्द्रियाश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा—अस्त्येकके समायुष्काः समोपपन्नकाः १ अस्त्ये-

कके समायुष्का विषमोपपन्नकाः २। अस्त्येकके विषमायुष्काः समोपपन्नकाः ३। अस्त्येकके विषमायुष्काः विषमोपपन्नकाः ४, तत्र खलु ये ते समायुष्काः समोपपन्नकास्ते खलु तुल्यस्थितिका स्तुल्य विशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति १ तत्र खलु ये ते समायुष्का विषमोपपन्नका स्ते खलु तुल्यस्थितिका विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति २ तत्र खलु ये ते विषमायुष्काः समोपपन्नकाः ते खलु विमात्रस्थितिका स्तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति ३ तत्र खलु ये ते विषमायुष्का विषमोपपन्नका स्ते खलु विमात्रस्थितिका विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति ४ तत्तेनार्थेन गौतम! यावद् विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति यावद्विहरति ॥सू० ८॥

इति चतुस्त्रिंशत्तमे शतके प्रथमे एकेन्द्रियशते प्रथमोद्देशकः समाप्तः।

टीका--'कहि णं भंते! बायरपुढवीकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता' कुत्र खलु भदन्त! बादरपृथिवीकाइकानां पर्याप्तता गुणविशिष्टानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि-कथितानि, इति स्थानविषयकः प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि। 'गोयमा' हे गौतम! 'सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु' स्वस्थानेनाष्टसु पृथिवीषु रत्नप्रभापृथिवीत आरभ्य तमस्तमापृथिवी पर्यन्तासु सप्तसु, अष्टम्यां च ईष-

---

इस प्रकार से उत्पादको आश्रित करके सूत्रकारने एकेन्द्रिय जीवों की प्ररूपणा की अब उन्हीं के स्थान आदिकों की प्ररूपणा के लिये वे सूत्र का कथन करते हैं-'कहि णं भंते! बायरपुढवीकाइयाणं' इत्यादि

टीकार्थ—'कहि णं भंते! बायरपुढवीकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता' हे भदन्त! पर्याप्त बादपृथिवीकायिकोंके स्थान कहां पर कहे गये हैं। उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु' स्वस्थान की अपेक्षा से पर्याप्त बादरपृथिवीकायिकोंके स्थान रत्नप्रभापृथिवी

આ રીતે ઉત્પાદનો આશ્રય કરીને સૂત્રકારે એકેન્દ્રિય જીવોની પ્રરૂપણા કરી છે. હવે તેમના જ સ્થાન વિગેરેની પ્રરૂપણા કરવા માટે સૂત્રકાર સૂત્રનું કથન કરે છે.-'कहि णं भंते! बायर पुढवीकाइयाणं' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—'कहि णं भंते! बायरपुढवीकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता' હે ભગવન્ પર્યાપ્ત બાદર પૃથ્વિકાયિકોના સ્થાનો ક્યાં કહેવામાં આવ્યા છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु' સ્વસ્થાનની અપેક્ષાથી પર્યાપ્ત બાદર પૃથ્વીકાયિકોનું સ્થાન રત્નપ્રભા પૃથ્વીથી લઈને તમઃતમા સુધીની સાત પૃથ્વીયોમાં અને આઠમી ઈષત્પ્રાગ્ભારા

त्प्राग्भारापृथिव्या मित्यष्टसु पृथिवीषु स्वस्थानं यत्र बादरपृथिवीकायिक आस्ते तेन स्वस्थानेन स्वस्थानमाश्रित्येत्यर्थः । 'जहा ठाणपदे' यथा स्थानपदे' स्थान पदं च प्रज्ञापनासूत्रस्य द्वितीयं पदम् । तच्चैवम्, 'तं जहा रयणप्पभाए सक्कर-प्पभाए वालुयप्पभाए' इत्यादि । कियत्पर्यन्तमिह स्थानपदमध्येतव्यम्, तत्राह- 'जाव' इत्यादि, 'जाव सुहुमवणस्सइकाइया' यावत् सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः इति पर्यन्तम्, अत्र यावत्पदेन बादरपृथिवीकायिकानन्तरं सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः, बाद-राप्कायिकाः, सूक्ष्माप्कायिकाः बादरतेजस्कायिकाः, सूक्ष्मतेजस्कायिकाः बादर-वायुकायिकाः, सूक्ष्मवायुकायिकाः, बादरवनस्पतिकायिकाः, इत्येषां ग्रहणं भवति । एते च 'जे य पज्जत्तगा जे य अपज्जत्तगा ते सव्वे' ये च पर्याप्तका ये च

से लेकर तमस्तमा तककी सात पृथिवियों में और आठवीं ईषत्प्राग्भारा पृथिवी में कहे गये हैं । क्योंकि इन पृथिवियों में बादरपृथिवीकायिक जीव रहते हैं। इसीलिये यहां स्वस्थान को आश्रित करके बादरपृथिवी-कायिक जीवों के स्थान कहे गये हैं ! 'जहा ठाणपदे' प्रज्ञापना सूत्रका स्थान पद द्वितीय पद है-उसमें ऐसा प्रकट किया गया है-'तं जहा-रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए' इत्यादि-कि रत्नप्रभा-पृथिवी में, शर्कराप्रभा पृथिवी में बालुकाप्रभा पृथिवी में इत्यादि प्रकट किया गया है । 'जाव सुहुमवणस्सइकाइया' यावत् सूक्ष्मवनस्पतिका-यिक, जीवों का स्थान है 'यहां यावत्पद से बादर पृथिवीकायिक के बाद 'सूक्ष्मपृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक, सूक्ष्मअप्कायिक, बादर-तेजस्कायिक, सूक्ष्मतेजस्कायिक, बादरवायुकायिक, सूक्ष्मवायुकायिक और बादरवनस्पतिकायिक' इन सबका ग्रहण हुआ है । 'जे य पज्ज-त्तगा जे य अपज्जत्तगा ते सव्वे' ये सब चाहे पर्याप्त हो चाहे अपर्याप्त

પૃથ્વીમાં કહેવામાં આવ્યા છે. કેમકે આ પૃથ્વીયોમાં બાદર પૃથ્વીકાયિક જીવો રહે છે. તેથી અહિયાં સ્વસ્થાનનો આશ્રય કરીને બાદર પૃથ્વીકાયિક જીવોના સ્થાનો કહેવામાં આવેલ છે. 'जहा ठाणपदे' પ્રજ્ઞાપના સૂત્રનુ બીજુ' જે સ્થાન પદ કહેલ છે, તેમાં એ પ્રમાણે કહેલ છે 'तं जहा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए' ઈત્યાદિ રત્નપ્રભા પૃથ્વીમાં, શર્કરા પ્રભા પૃથ્વીમાં, વાલુકા પ્રભા પૃથ્વીમાં 'जाव सुहुम वणस्सइ काइया' યાવત્ સૂક્ષ્મ વનસ્પતિ-કાયિક જીવોનુ સ્થાન છે. અહિયાં યાવત્પદથી બાદર પૃથ્વિકાયિક પછી સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક અને બાદર અપ્કાયિક સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક, બાદર તેજસ્કાયિક, સૂક્ષ્મતેજસ્કાયિક બાદર વાયુકાયિક સૂક્ષ્મવાયુકાયિક અને બાદર વનસ્પતિકાયિક આ બધા ગ્રહણ કરાયા છે. 'जे य पज्जत्तगा जे य अपज्जत्तगा ते सव्वे' આ

अपर्याप्तका स्ते सर्वे 'एगविहा' एकविधाः एकप्रकारका एव प्रकृत स्वस्थानादि विचार मधिकृत्यैवेतः, 'अविसेसमणाणत्ता' अविशेषा अनानात्वाः अविशेषाः विशेषरहिताः, यथा पर्याप्तका स्तथैवेतरेऽपि अनानात्वाः नानात्ववर्जिताः येष्वेव आधारभूताकाशप्रदेशेषु एके-पर्याप्तका-भवन्ति तेष्वेव इतरे अपर्याप्ता अपि भवन्तीत्यर्थः । 'सव्वलोग परियावन्ना' सर्वलोकपर्यापन्नाः उपपात समुद्घात स्वस्थानैः सर्वलोके वर्त्तन्ते इत्यर्थः, तत्रोपपात उपपाताभिमुख्यम्' समुद्घात इह मारणान्तिकादिः स्वस्थानं यत्र ते आसते 'पन्नत्ता' प्रज्ञप्ताः-कथिताः । 'समणाउसो' हे श्रमण ! हे आयुष्मन् ! एतेषां सर्वेषामालापकप्रकारः प्रज्ञापना सूत्रस्य द्वितीयस्थानपदे द्रष्टव्यः तद्व्याख्यानमपि तत्रैव मत्कृतायां प्रमेयबोधिनी व्याख्यायां द्रष्टव्यम् । 'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ

हो सब सूक्ष्मवनस्पतिकायिक सामान्य से एक प्रकार के है। इनमें कोई भिन्नता नहीं है। जिस प्रकार पर्याप्तक हैं उसी प्रकार अपर्याप्तक हैं जिन आधारभूत प्रदेशों में पर्याप्तक रहते हैं उन्हीं आकाश प्रदेशों में अपर्याप्तक रहा करते हैं। 'सव्वलोग परियावन्ना' उपपात समुद्घात एवं स्वस्थानों की अपेक्षा से ये सर्वलोक में पाये जाते हैं उत्पत्तिका नाम उपपात है मारणान्तिक आदि समुद्घात है और जहां ये रहते हैं वह स्वस्थान है।' इस प्रकार से ये हे आयुष्मन् ! श्रमण ! सर्वलोकमें हैं' इनका आलापक प्रकार प्रज्ञापना सूत्रके द्वितीय स्थान पद में देख लेना चाहिये। इस पर मैंने प्रमेयबोधिनी टीका लिखी है। उस टीका से इसका व्याख्यान समझ लेना चाहिये।

'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते! कइ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ

બધા પર્યાપ્ત હોય કે અપર્યાપ્ત હોય બધા સૂક્ષ્મ વનસ્પતિ કાયિક સામાન્ય રીતે એક પ્રકારના છે. તેમાં કોઈ જ ભિન્ન પણુ નથી. જે પ્રમાણે પર્યાપ્તક કહ્યા છે, એજ રીતે અપર્યાપ્તક પણુ કહેલ છે, જે આધારભૂત પ્રદેશામાં પર્યાપ્તકો રહે છે, એજ આકાશ પ્રદેશોમાં અપર્યાપ્તકો રહે છે. 'સવ્વલોગ-પરિયાવન્ના' ઉપપાત સમુદ્ઘાત અને સ્વસ્થાનની અપેક્ષાથી આ સર્વ લોકમાં રહેલા છે. ઉત્પત્તિનુ નામ ઉપપાત છે. મારણાન્તિક વિગેરે સમુદ્ઘાતો છે. અને જ્યાં તેઓ રહે છે. તે સ્વસ્થાન કહેવાય છે. તેના આલાપકોનો પ્રકાર પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના બીજા સ્થાન પદમાંથી સમજી લેવો જોઈએ.

આ વિષયમાં પ્રમેયબોધિની ટીકા કે જે મેં રચી છે, તેમાંથી આ સંબંધનું કથન સમજી લેવું.

'અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાઇયાણં ભંતે ! કઇકમ્મપગડીઓ પણ્ણત્તાઓ'

पन्नत्ताओ' अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकाना मेकेन्द्रियजीवानां खलु भदन्त ! कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः-कथिताः। एतेषां कति कर्मप्रकृतयो भवन्तीति प्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि। 'गोयमा' हे गौतम ! 'अट्ठ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' अष्टौ कर्म प्रकृतयः प्रज्ञप्ताः। 'तं जहा' तद्यथा-'नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं' ज्ञानावरणीयं यावदन्तरायिकम्, अत्र यावत्पदेन दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीयायुष्य नाम गोत्रकर्मप्रकृतीनां ग्रहणं भवतीति भावः। 'एवं चउक्कएणं भेदेणं जहेव एगिंदियसएसु' एवं चतुष्केन भेदेन यथैव एकेन्द्रियशतकेषु त्रयस्त्रिंशत्तमे शतके द्वादशसु एकेन्द्रियशतेषु मध्ये प्रथम एकेन्द्रिय शतके पृथिव्यादिवनस्पतिकायिकान्तानां द्वौ भेदौ सूक्ष्मबादरौ कथितौ, तदनु पर्याप्ता-पर्याप्तौ द्वौ भेदौ, मिलित्वा चतुष्को भवति' तद्वदिहापि चतुष्को भेदो

हे भदन्त ! अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवों के कितनी कर्मप्रकृतियों का सत्त्व (सत्ता) कहा गया है ? अर्थात् इनके कितनी कर्मप्रकृतियां होती हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' हे गौतम ! इनके आठ कर्म प्रकृतियां कही गई हैं। 'तं जहा' जिनके नाम इस प्रकार से हैं-'नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं' ज्ञानावरणीय यावत् अन्तरायिक यहां यावत् पद से 'दर्शनावरणीय वेदनीय मोहनीय आयु, नाम, गोत्र, इन प्रकृतियों का ग्रहण हुवा है। 'एवं चउक्कएणं भेदेणं जहेव एगिंदियसएसु' इस प्रकार सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त और अपर्याप्त इन चारों प्रकार के पृथिवीकायिकोंके एवं इन्हीं चारों भेदवाले अप्कायिक जीवों के, इन्हीं चारों भेदवाले तेजस्कायिक जीवोंके, इन्हीं चारों भेदों वाले वायुकायिक जीवों के और इन्हीं

હે ભગવન્ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોને કેટલી કર્મપ્રકૃતિયો કહેવામાં આવેલ છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'ગોયમા ! अट्ठ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' હે ગૌતમ ! તેઓને આઠ કર્મપ્રકૃતિયો કહેવામા આવેલ છે. 'तं जहा' તેમના નામો આ પ્રમાણે છે. 'णाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं' જ્ઞાનાવરણીય યાવત્ અન્તરાયિક અહિયાં યાવત્ પદથી દર્શનાવરણીય, વેદનીય, મોહનીય, આયુ, અને નામ ગોત્ર આ કર્મપ્રકૃતિયો ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે. 'एवं चउक्कएणं भेएणं जहेव एगिंदियसएसु' આ રીતે સૂક્ષ્મ, બાદર, પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત આ ચાર પ્રકારના પૃથ્વીકાયિકોના અને આ ચાર ભેદવાળા અપ્કાયિકોના એજ પ્રમાણેના ચાર ભેદવાળા તેજસ્કાયિકોના આજ પ્રમાણેના ચાર ભેદવાળા વાયુકાયિક જીવોના અને એજ રીતના ચારભેદવાળા વનસ્પતિ કાયિક જીવોના જ્ઞાનાવરણીય કર્મપ્રકૃતિથી લઈને અન્તરાયિક કર્મપ્રકૃતિ સુધી

ज्ञातव्यः, कियत्पर्यन्त मेकेन्द्रियशतकं ज्ञातव्यम्, तत्राह-'जाव' इत्यादि' 'जाव वणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं' यावद्वनस्पतिकायिकानां पर्याप्तकानां यावत्पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकत आरभ्य अपर्याप्त बादरवनस्पतिकायिकान्तस्य ग्रहणं भवति। तथा च सूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्तभेदभिन्नानां पृथिव्यादि वनस्पतिकायिकान्तानां सर्वैकेन्द्रियाणां पञ्चानामपि ज्ञानावरणीयादिका अन्तरायपर्यन्ता अष्टौ कर्मप्रकृतयो ज्ञातव्या इति प्रकरणाशयः।

'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइया णं भंते! कइ कम्मपगडीयो बंधंति'। अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त! कति-कियत्संख्यकाः कर्मप्रकृती र्बध्नन्तीति कर्मबन्धविषयकः प्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि। 'गोयमा' हे गौतम! 'सत्तविहबंधगा वि अट्ठविहबंधगा वि' सप्तप्रकारककर्मप्रकृतीनां बन्धका अपि भवन्ति सूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्याप्तकाः, तथा-अष्टविधकर्मप्रकृतीनां बन्धका

चारों भेदवाले वनस्पतिकायिक जीवों के ज्ञानावरणीय कर्म प्रकृति से लेकर अन्तरायिक कर्मप्रकृति तक ८ ही कर्मप्रकृतियां होती हैं ऐसा जानना चाहिये। ३३ वें शतक रूप एकेन्द्रिय शतक में ऐसा ही प्रतिपादन सूत्रकार ने किया है। यही बात 'एवं चउक्कएणं भेदेणं जहेव एगिंदियसएसु जाव वणस्सइकाइयाणं पज्जत्ताणं' इस सूत्र पाठ द्वारा यहां समझाई गई है।

'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइया णं भंते! कइ कम्मपगडीओ बंधंति' हे भदन्त! अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव कितनी कर्म प्रकृतियों का बंध करते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! सत्तविह बंधगा वि अट्ठविह बंधगा वि' हे गौतम! अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव सात प्रकार की कर्मप्रकृतियों का भी बन्ध करते हैं और आठ

૮આઠ જ કર્મપ્રકૃતિયો હોય છે. તેમ સમજવું. બત્રીસમા શતકના એકેન્દ્રિય શતકમાં સૂત્રકારે એજ પ્રમાણે પ્રતિપાદન કરેલ છે. એજ વાત 'एवं चउक्कएणं भेएणं जहेव एगिंदियसएसु जाव वणस्सइकाइयाणं' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા અહિયાં સમજાવી છે.

'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते! कइ कम्मपगडीओ बंधंति' હે ભગવન્ અપર્યાપ્તક પૃથ્વીકાયિક જીવ કેટલી કર્મપ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा! सत्तविह बंधगा वि अट्ठविह बंधगा वि' હે ગૌતમ અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ સાત પ્રકારની કર્મપ્રકૃતિયોનો

अपि भवन्ति ते। 'जहा एगिंदियसएसु' यथा-येन प्रकारेण एकेन्द्रियशतकेषु अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक प्रभृत्येकेन्द्रियजीवानां कर्मप्रकृति बन्धविषये कथितं तथैवेहापि सर्वं ज्ञातव्यमिति। तथाहि-सप्तकर्मप्रकृती र्वध्नन्त आयुर्वर्जाः सप्तज्ञानावरणीयादिकाः कर्मप्रकृती र्वध्नन्ति, अष्टविधकर्मप्रकृती र्वध्नन्तः परिपूर्णा अष्टावपि कर्मप्रकृती र्वध्नन्तीति। कियत्पर्यन्तमेकेन्द्रियशतकमिहाध्येतव्यं तत्राह-'जाव' इत्यादि। 'जाव पज्जत्ता बायरवणस्सइकाइया' यावत्पर्याप्ता बादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकत आरभ्य अपर्याप्त बादरवनस्पतिकायिकान्ताः सर्वेऽपि यावत् पदग्राह्या भवन्ति। तथा च-अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकत आरभ्य पर्याप्त बादरवनस्पतिकायिकान्ताः सर्वेऽपि एके

प्रकार की कर्मप्रकृतियों का भी बन्ध करते हैं। 'जहा एगिंदियसएसु' इस सम्बन्ध में जैसा कथन एकेन्द्रिय शतक में किया गया है उसी प्रकार से वही कथन यहां अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकादि एकेन्द्रिय जीवों के कर्मप्रकृतियों के बन्ध के सम्बन्ध में भी कर लेना चाहिये। जैसे-जब वे सातकर्म प्रकृतियों के बन्धक होते हैं-तब वे आयुकर्म को छोडकर शेष सातकर्म प्रकृतियों का बन्ध करते हैं और जब आठ कर्मप्रकृतियों के बन्धक होते हैं तब पूरी की पूरी वे आठों कर्मप्रकृतियों का बन्ध करते हैं। इसी प्रकार का कथन यावत् पर्याप्त बादरवनस्पतिकायिक जीवों तक करते जाना चाहिये। अर्थात् पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक से लेकर अपर्याप्त बादरवनस्पतिकायिक तकके जीव यहां यावत् पदसे गृहीत हुए हैं-सो ये अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक से लेकर पर्याप्त बादरवनस्पतिकायिक तक के समस्त

પણ બંધ કરે છે. અને આઠ પ્રકારની કર્મપ્રકૃતિયોનો પણ બંધ કરે છે. 'जहा एगिंदिसएसु' આ સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું કથન અહિયાં એકેન્દ્રિય શતકમાં કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે એજ કથન અહિયાં એકેન્દ્રિય વિગેરે જીવોને કર્મપ્રકૃતિયોના બંધના સંબંધમાં પણ કહેવું જોઇએ. જેમ કે-જ્યારે તેઓ સાત કર્મપ્રકૃતિયોનો બંધ કરનાર હોય છે. ત્યારે તે આયુ કર્મપ્રકૃતિને છોડીને બાકીની સાત કર્મપ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે અને જ્યારે તેઓ આઠ કર્મપ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે, ત્યારે તેઓ પૂરેપૂરી આ આઠ કર્મપ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે. આજ પ્રમાણેનું કથન યાવત્ પર્યાપ્ત બાદર વનસ્પતિકાયિક જીવોના કથન સુધીમાં સમજી લેવું અર્થાત્ પર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકથી લઇને અપપર્યાપ્તક બાદર વનસ્પતિકાયિક સુધીના જીવો અહિયાં યાવત્પદથી ગ્રહણ કરાયા છે. તો આ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકથી લઇને અપર્યાપ્ત બાદરવનસ્પતિ

न्द्रियजीवाः सप्तप्रकारककर्मप्रकृतीनां बन्धका अपि भवन्ति, तथाऽष्टविधकर्मप्रकृतीनां बन्धका अपि भवन्तीति भावः। 'अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते! कइकम्मपगडीओ वेदेंति' अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त! कति कर्मप्रकृती वेदयन्तीति भावः। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि। 'गोयमा!' हे गौतम! 'चोद्दसकम्मपगडीओ वेदेंति' चतुर्दश-चतुर्दशसंख्यकाः कर्मप्रकृती वेंदयन्ति। चतुर्दश भेदमेव दर्शयति-'तं जहा' इत्यादि। 'तं जहा' तद्यथा-'नाणावरणिज्जं' ज्ञानवरणीयम् 'जहा एगिंदियसएसु' यथा-एकेन्द्रियशतकेषु कथितम् ज्ञानावरणीयादि कर्मपकृतिर्वेदनं तथैवेहापि कर्मप्रकृतिवेदनं ज्ञातव्यम्। कियत्पर्यन्तमेकेन्द्रियशतके ज्ञातव्यं तत्राह-'जाव' इत्यादि। 'जाव पुरिसवेदवज्झ' यावत्पुरुषवेदवध्यम्। अत्र यावत्पदेन दर्शनावरणीयतः आरभ्य अन्तराय-

जीव सात प्रकार की कर्मप्रकृतियों के भी बन्धक होते हैं और आठ प्रकार की कर्मप्रकृतियों के भी बन्धक होते हैं।

'अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइया णं भंते! कइ कम्मपगडीओ वेदेंति' हे भदन्त! अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव कितनी कर्मप्रकृतियों का वेदन करते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! चोद्दस कम्मपगडीओ वेदेंति' हे गौतम! अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव १४ कर्मप्रकृतियों का वेदन करते हैं। 'तं जहा' जिनके नाम इस प्रकार से हैं-'नाणावरणिज्जं जहा एगिंदियसएसु' ज्ञानावरणीय आदि जैसा कि एकेन्द्रिय शतक में कहा गया है। इन १४ प्रकृतियों में 'जाव पुरिसवेदवज्झ' यावत् पुरुषवेदावरणीय तक कही गई प्रकृतियां आ जाती है। जो इस प्रकासे हैं-'ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय,

કાયિક સુધીના જીવો સાત પ્રકારની કર્મપ્રકૃતિયોનો પણ બંધ કરે છે. અને આઠ કર્મપ્રકૃતિયોનો પણ બંધ કરે છે

'અપજ્જત્ત સુહુમપુઢવીકાઇયાણં ભંતે! કઇકમ્મપગડીઓ વેદેંતિ' હે ભગવન્ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ કેટલી કર્મપ્રકૃતિયોનું વેદન કરે છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે "ગોયમા! ચોદ્દસ કમ્મપગડીઓ વેદેંતિ' હે ગૌતમ! અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ ૧૪ ચૌદ કર્મપ્રકૃતિયોનું વેદન કરે છે? 'તં જહા' તેના નામો આ પ્રમાણે છે.-'નાણાવરણિજ્જં જહા એગિંદિયસએસુ' જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે જે પ્રમાણે એકેન્દ્રિય શતકમાં કહેવામાં આવેલ છે, આ ૧૪ ચૌદ કર્મપ્રકૃતિયોમાં 'જાવ પુરિસવેદવજ્ઝ' યાવત્ પુરૂષ વેદાવરણીય સુધી કહેલ કર્મપ્રકૃતિયો આવી જાય છે. જે આ પ્રમાણે

पर्यन्तानां तथा श्रोत्रेन्द्रियवध्य, चक्षुरिन्द्रियवध्य, रसनेन्द्रियवध्य, घ्राणेन्द्रिय वध्य-स्त्रीवेदवध्यान्तानां च कर्मप्रकृतीनां संग्रहो भवति। तथा च ज्ञानावरणीयादारभ्य पुरुषवध्यान्त चतुर्दश कर्मप्रकृतीनामपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकादयः सर्वेऽपि वेदयन्तीतिभावः। 'एवं जाव बायर वणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं' एवम्-अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां यथा चतुर्दश कर्मप्रकृति वेदनं कथितं तथैव यावद् बादरवनस्पतिकायिकपर्याप्तकानामपि चतुर्दश कर्मप्रकृति वेदनं ज्ञातव्यम् अत्रापि यावत्पदेन पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकत आरभ्य अपर्याप्त बादरवनस्पतिकायिकान्ताः प्रबादरासूक्ष्मपर्याप्तपर्याप्तभेद-

---

मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तराय तक ८ कर्मप्रकृतियां तथा श्रोत्रेन्द्रियवध्य चक्षुइन्द्रिय वध्य घ्राणेन्द्रिय वध्य रसनेन्द्रिय वध्य स्त्रीवेद वध्य और पुरुषवेद वध्य' इस प्रकार अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक आदि से लेकर दोनों प्रकारके वनस्पतिकायिक तकके समस्त एकेन्द्रिय जीव ज्ञानावरणीय आदि से लेकर अन्तराय कर्म तक और श्रोत्रेन्द्रिय से लेकर पुरुषवेदावरण तक १४ कर्म प्रकृतियों का वेदन करते हैं। चाहे ये पर्याप्त हों अथवा अपर्याप्त हों। 'एवं जाव बायर वणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं' यही बात इस सूत्र पाठ द्वारा प्रकट की गई है। अर्थात् अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकों के सम्बन्ध में जिस प्रकारसे १४ कर्मप्रकृतियों का वेदन करना कहा गया है उसी प्रकार से यावत् पर्याप्त बादरवनस्पतिकायिकों के सम्बन्ध में भी १४ कर्मप्रकृतियों का वेदन करना कह लेना चाहिये। यहां यावत् पदसे पर्याप्त

છે.-જ્ઞાનાવરણીય, દર્શનાવરણીય, વેદનીય, મોહનીય, આયુ, નામ, ગોત્ર અને અંતરાય, સુધીની આઠ કર્મપ્રકૃતિયો તથા શ્રોત્રેન્દ્રિયવધ્ય, ચક્ષુઈંદ્રિય વધ્ય ઘ્રાણેન્દ્રિયવધ્ય, રસનેન્દ્રિયવધ્ય, સ્રીવેદવધ્ય અને પુરૂષ વેદવધ્ય આ રીતે અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકથી લઈને બન્ને પ્રકારના વનસ્પતિકાયિક સુધીના સઘળા એકેન્દ્રિય જીવો જ્ઞાનાવરણીય વિગેરેથી લઈને અંતરાય કર્મ સુધી અને શ્રોત્રેન્દ્રિયથી લઈને પુરૂષ વેદાવરણ સુધી ૧૪ ચૌદ કર્મપ્રકૃતિયોનું વેદન કરે છે. તે પર્યાપ્ત હોય કે અપર્યાપ્ત હોય 'एवं जाव बायरवणस्सइ काइयाणं पज्जत्तगाणं' એજ વાત આ સૂત્ર પાઠદ્વારા પ્રગટ કરવામાં આવેલ છે. અર્થાત્ અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકોના સંબંધમાં જે પ્રમાણે ૧૪ ચૌદ કર્મપ્રકૃતિયોનું વેદન કરવાનું કહ્યું છે, એજ પ્રમાણે યાવત્ બાદર વનસ્પતિ કાયિકોના સંબંધમાં પણ ૧૪ ચૌદ કર્મપ્રકૃતિયોનું વેદન કરવાનું કહ્યું છે.

भिन्नाः सर्वेऽपि संग्रहीतव्या इति । अथैकेन्द्रियाणा मुत्पत्तिविषयं सूत्रमाह- 'एगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति' एकेन्द्रियजीवाः खलु भदन्त ! कुतः- कस्मात् स्थानविशेषाद् आगत्य समुत्पद्यन्ते 'किं नेरइएहिंतो उववज्जंति' किं नैरयिकेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते किं वा-तिर्यग्योनिकेभ्य आगत्य समुत्पद्यन्ते मनुष्येभ्यो वा आगत्य समुत्पद्यन्ते देवेभ्यो वा आगत्य समुत्पद्यन्ते इति प्रश्नः । उत्तरमाह-'जहा' इत्यादि । 'जहा वक्कंतीए पुढवीकाइयाणं उववाओ' यथा व्युत्क्रान्तौ प्रज्ञापनासूत्रस्य षष्ठपदे पृथिवीकायिकानामुपपातः तथैवेहापि एकेन्द्रियाणा मुपपातो वर्णयितव्यः । तथाहि-एकेन्द्रिया नैरयिकेभ्य आगत्य नोत्पद्यन्ते, किन्तु देवेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते, मनुष्येभ्य आगत्योत्पद्यन्ते । तथा-

---

सूक्ष्मपृथिवीकायिक से लेकर सूक्ष्म बादर पर्याप्त और अपर्याप्त भेद वाले वनस्पतिकायिक तक के समस्त एकेन्द्रिय जीव गृहीत हुए हैं ।

'एगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति' हे भदन्त ! एकेन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? 'किं नेरइएहिंतो उववज्जंति' क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा मनुष्यों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'जहा वक्कंतीए पुढवीकाइयाणं उववाओ' हे गौतम ! जिस रीतिसे प्रज्ञापना सूत्रके छट्टे व्युत्क्रान्तिकपद में पृथिवीकायिकों का उपपाद कहा गया है उसी रीति से उनका वह उत्पाद यहां पर भी जान लेना चाहिये । जैसे-एकेन्द्रिय जीव नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न नहीं होते हैं किन्तु देवों में से आकरके उत्पन्न

તેમ સમજવું. અહિયાં યાવત્ પદથી સૂક્ષ્મ પૃથ્વિકાયિકથી લઈને સૂક્ષ્મ બાદર પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત ભેદોવાળા વનસ્પતિકાયિક સુધીના તમામ એકેન્દ્રિય જીવો ગ્રહણ કરાયેલ છે.

'एगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति' હે ભગવન્ એકેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति' શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા દેવોમાંથી આવીને તેઓ ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'जहा वक्कंतीए पुढवीकाइयाणं उववाओ' હે ગૌતમ ! જે પ્રમાણે પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના છઠા વ્યુત્ક્રાન્તિ પદમાં પૃથ્વીકાયિકોનો ઉપપાદ કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે તેઓનો ઉપપાત અહિયાં પણ સમજવો. જેમકે-એકેન્દ્રિય નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થતા નથી, અને

तिर्यग्योनिकेभ्य आगत्य एकेन्द्रियेषु समुत्पद्यन्ते इति प्रज्ञापना सूत्रोक्तोत्तर मिति भावः । 'एगिदिया णं भंते ! कइ समुग्घाया पन्नत्ता' एकेन्द्रियाणां खलु भदन्त ! कति समुद्घाताः प्रज्ञप्ताः-कथिता इति प्रश्नः । भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'चत्तारि समुग्घाया पन्नत्ता' चत्वारः समुद्घाताः प्रज्ञप्ताः-कथिताः। प्रकारभेदमेव दर्शयति-'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा- 'वेयणा समुग्घाए जाव वेउव्विय समुग्घाए' वेदनासमुद्घातो यावद् वैक्रिय समुद्घातः। अत्र यावत्पदेन कषाय समुद्घात मारणान्तिक समुद्घातयोः संग्रहो भवति । तथा च-वेदनाकषाय मारणान्तिक वैक्रियाख्याश्चत्वारः समुद्घाता भवन्तीति भावः । अत्र यत् चत्वारः समुद्घाताः कथिता स्तत्र वैक्रिय समुद्घातो

होते हैं । मनुष्यों में से भी आकरके उत्पन्न होते हैं और तिर्यग्योनिकों में से भी आकरके उत्पन्न होते हैं । ऐसा ही यह उत्तर प्रज्ञापना सूत्र का है। 'एगिंदियाणं भंते कइ समुग्घाया पण्णत्ता' हे भदन्त! एकेन्द्रिय जीवों के कितने समुद्घात होते कहे गये हैं ? 'गोयमा ! चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता' हे गौतम ! एकेन्द्रिय जीवों के चार समुद्घात कहे गये हैं। 'तं जहा' जो इस प्रकार से हैं -'वेयणा समुग्घाए जाव वेउव्वियसमुग्घाए' वेदना समुद्घात, यावत् वैक्रिय समुद्घात यहां यावत्पद से कषाय समुद्घात, मारणान्तिक समुद्घात, इन दो समुद्घातों का ग्रहण हुआ है । तथा च-वेदना, कषाय, मारणान्तिक और वैक्रिय ये चार समुद्घात इन एकेन्द्रिय जीवों के होते हैं यहां चार जो समुद्घात कहे गये हैं सो इनमें जो वैक्रिय समुद्घात

દેવોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થતા નથી. પરંતુ ગર્ભજ મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, અને તિર્યંચ યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, આ પ્રમાણે આ પ્રજ્ઞાપના સૂત્રનું કથન કહેલ છે. 'एगिंदिया णं भंते ! कइ समुग्घाया पण्णत्ता' હે ભગવન્ એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોને કેટલા સમુદ્ઘાતો હોવાનું કહેલ છે ? 'गोयमा ! चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता' હે ગૌતમ ! એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોને ચાર સમુદ્ઘાતો હોવાનું કહેલ છે. 'तं जहा' તેઓ આ પ્રમાણે છે.-'वेयणा समुग्घाए जाव वेउव्विय समुग्घाए' વેદના સમુદ્ઘાત યાવત્ વૈક્રિય સમુદ્ઘાત અહિયાં યાવત્પદથી કષાય સમુદ્ઘાત, મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત આ બે સમુદ્ઘાતો ગ્રહણ કરાયા છે. જેમ કે-વેદના, કષાય, મારણાન્તિક, અને વૈક્રિય આ ચાર સમુદ્ઘાતો આ એકેન્દ્રિય જીવોને હોય છે, અહિયાં જે ચાર સમુદ્ઘાતો

वायुकायिकानाश्रित्य कथितः, वायुकायिकान् विहायान्येषां वेदनाकषायमारणान्तिकरूपा त्रय एव समुद्घाता भवन्ति न तु वैक्रियसमुद्घात इति। 'एगिंदियाणं भंते !' एकेन्द्रियजीवाः खलु भदन्त ! 'किं तुल्लट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' किं तुल्यस्थितिकाः परस्परापेक्षया समानायुष्काः तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति। परस्परापेक्षया तुल्यत्वेन विशेषेण असंख्येयभागादिना अधिकं पूर्वकालबद्धकर्मापेक्षयाऽधिकतरं तुल्यविशेषाधिकं कर्म ज्ञानावरणीयादिकं प्रकुर्वन्ति किमिति प्रश्नः। तथा 'तुल्लट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' तुल्यस्थितिकाः विमात्रः अन्योऽन्यापेक्षया विषमपरिमाणः कस्याऽप्यसंख्येयभागरूपोऽन्यस्य संख्येयभागरूपयो विशेषस्तेनाधिकं पूर्वकालबद्धकर्मापेक्षया यत् तद् विमात्रविशेषाधिकं कर्म

है वह वायुकायिकों को आश्रित करके कहा गया है। वायुकायिकोंको छोडकर अन्य एकेन्द्रिय जीवों को वेदना कषाय और मारणान्तिक ये तीन ही समुद्घात होते हैं। वैक्रिय समुद्घात इनको नहीं होता है।

'एगिंदिया णं भंते ! किं तुल्लट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' 'हे भदन्त ! एकेन्द्रिय जीव की जिनकी आयु आपसमें समान होती है क्या तुल्य और विशेषाधिक कर्मका बन्ध करते हैं? परस्परकी अपेक्षा समानता को लेकर यहां तुल्यता कर्म में कही गई और पूर्वकाल में बद्ध कर्मों की अपेक्षा असंख्यातवें भाग आदिको लेकर कर्म में विशेषाधिकता कही गई है।

अथवा--'तुल्लट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ? 'तुल्यस्थितिवाले एकेन्द्रिय जीव परस्पर भिन्न २ विशेषाधिक कर्मबन्ध करते हैं ? किसी एकेन्द्रिय जीव के पूर्वबद्ध कर्मोंकी अपेक्षासे असंख्येय

કહ્યા છે, તે પૈકી જે વૈક્રિયસમુદ્ઘાત છે, તે વાયુકાયિકોને આશ્રય કરીને કહેલ છે વાયુકાયિકોને છોડીને બીજા એકઇન્દ્રિયવાળા જીવોને વેદના, કષાય અને મારણાન્તિક આ ત્રણ સમુદ્ઘાત જ હોય છે. તેઓને વૈક્રિય સમુદ્ઘાત હોતો નથી.

'एगिंदिया णं भंते ! किं तुल्लट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' હે ભગવન્ એક ઈન્દ્રિયવાળા જીવો કે જેઓનું આયુષ્ય પરસ્પરમાં સરખું હોય છે, એવા જીવો શું તુલ્ય અને વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે? પરસ્પરની અપેક્ષાથી સમાન પણાને લઈને અહિયાં કર્મમાં તુલ્યપણું કહ્યું છે, અને પૂર્વ કાળમાં બંધકર્મની અપેક્ષાથી અસંખ્યાતમા ભાગ વિગેરેને લઈને કર્મમાં વિશેષાધિક પણું કહ્યુ છે. અથવા 'तुल्लट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' સમાન સ્થિતિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો અન્યો અન્ય જુદા જુદા વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે? કોઈ એક ઈન્દ્રિયવાળા જીવના અસંખ્યાત ભાગ રૂપ અને

ज्ञानावरणीयादिकं प्रकुर्वन्ति बध्नन्ति। तथा-'वेमायट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' विमात्रस्थितिकाः विमात्रा-विषममात्रा स्थितिः-आयु येषां ते विमात्रस्थितिकाः विषमायुष्का इत्यर्थः। तुल्यविशेषाधिकं पूर्ववदेव कर्म प्रकुर्वन्ति। ३। 'वेमायट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ४' विमात्रस्थितिकाः विमात्रविशेषाधिकं कर्म ज्ञानावरणीयादिकं प्रकुर्वन्ति बध्नन्ति किमिति प्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि 'गोयमा' हे गौतम! 'अत्थेगइया तुल्लट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' अस्त्येकके तुल्यस्थितिका

भाग रूप और किसी एकेन्द्रिय जीवके संख्येय भाग रूप अधिक कर्मबन्ध को लेकर इस विकल्प में कर्मबन्ध में भिन्नता कही गई जाननी चाहिये। अथवा-'वेमायट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' 'भिन्न २ स्थितिवाले एकेन्द्रिय जीव परस्पर में तुल्य विशेषाधिक कर्म का बन्ध करते हैं? अथवा-'वेमायट्ठिइया वेमाय विसेसाहियं कम्मं पकरेंति' 'भिन्न २ स्थितिवाले एकेन्द्रिय जीव भिन्न २ विशेषाधिक कर्मका बन्ध करते हैं? ऐसे ये बन्ध के विषय में चार विकल्प रूप प्रश्न हैं। इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! अत्थेगइया तुल्लट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' 'हे गौतम! कितनेक एकेन्द्रिय जीव जो तुल्यस्थितिवाले होते हैं तुल्य विशेषाधिक कर्मका बन्ध करते हैं। 'अत्थेगइया तुल्लट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति'

કોઇ એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવના સંખ્યાત ભાગ રૂપ કર્મ બંધને લઈને આ વિકલ્પમાં કર્મબંધમાં જુદાપણુ કહ્યુ છે. તેમ સમજવું. અથવા-'वेमायट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' જુદી જુદી સ્થિતિવાળા એક ઇન્દ્રિય જીવો પરસ્પરમાં તુલ્ય અથવા વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે? અથવા 'वेमायट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' જુદી જુદી સ્થિતિવાળા એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો જુદા જુદા વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે? આ રીતે આ બંધના સંબંધમાં ચાર વિકલ્પોરૂપ પ્રશ્ન ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુને પૂછેલ છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा! अत्थेगइया तुल्लट्ठिइया तुल्लविसेसहियं कम्मं पकरेंति' હે ગૌતમ! કેટલાક એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો કે જે સમાન સ્થિતિવાળા હોય છે, તેઓ તુલ્ય અને વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે. 'अत्थेइया तुल्लट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' તથા કોઈ કોઈ સમાન સ્થિતિવાળા એક ઇન્દ્રિય જીવો એવા હોય છે કે જેઓ જુદી જુદી માત્રમાં વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે. 'अत्थेगइया तुल्लट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं'

तुल्य विशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति। 'अत्थेगइया वेमायट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' अस्त्येकके विमात्रस्थितिकाः तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति। 'अत्थेगइया वेमायट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' अस्त्येकके विमात्रस्थितिका विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्तीत्युत्तरम्। 'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ अत्थेगइया तुल्लट्ठिइया जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति?' तत्केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते, अस्त्येकके तुल्यस्थितिकाः यावद् विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति, अत्र यावत्पदेन अस्त्येकके तुल्यस्थितिका स्तुल्य-

---

'तथा कोई कोई तुल्यस्थितिवाले एकेन्द्रिय जीव ऐसे होते हैं जो भिन्न भिन्न मात्रा में विशेषाधिक कर्मबन्ध करते हैं, 'अत्थेगइया वेमायट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' तथा कोई कोई एकेन्द्रिय जीव ऐसे भी होते हैं कि जिनकी आयु परस्पर में भिन्न भिन्न होती है पर वे तुल्य विशेषाधिक कर्मका बन्ध करते हैं। तथा-'अत्थेगइया वेमायट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' कोई कोई एकेन्द्रिय जीव ऐसे भी होते हैं कि जिनका आयुकर्म भी परस्पर में भिन्न भिन्न होता है और वे भिन्न भिन्न विशेषाधिक कर्मका बन्ध करते हैं। 'से केणट्ठेणं भंते! 'एवं वुच्चइ अत्थेगइया तुल्लट्ठिइया जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' हे भदन्त ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि कितनेक तुल्यस्थितिवाले एकेन्द्रिय जीव तुल्यविशेषाधिक ज्ञानावरणीय आदि कर्मका बन्ध करते हैं और यावत् कितनेक भिन्न भिन्न स्थितिवाले

कम्मं पकरेंति' तथा કોઈ કોઈ એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો એવા પણ હોય છે કે-જેઓનું આયુષ્ય પરસ્પર જુદું જુદું હોય છે. પરંતુ તેઓ તુલ્ય અને વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે. તથા 'अत्थेगइया वेमायट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' કોઈ કોઈ એક ઈન્દ્રિય જીવો એવા પણ હોય છે કે-જેઓનું આયુષ્ય કર્મ પણ પરસ્પરમાં જુદું જુદું હોય છે. અને તેઓ ભિન્ન-ભિન્ન વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે. તથા 'अत्थेगइया वेमायट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' કોઇ કોઈ એક ઇન્દ્રિય જીવો એવા પણ હોય છે કે-આયુષ્ય કર્મ પણ પરસ્પરમાં જુદું જુદું હોય છે. અને તેઓ ભિન્ન-ભિન્ન વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે. 'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ अत्थेगइया तुल्लट्ठिइया जाव विसेसाहियं कम्मं पकरेंति' હે ભગવન્ આપ એ પ્રમાણે શા કારણથી કહો છો કે—કેટલાક તુલ્ય—સરખા શરીરોવાળા એકઇન્દ્રિય જીવો તુલ્ય અને વિશેષાધિક જ્ઞાનાવરણીય વગેરે કર્મનો બંધ કરે છે? અને યાવતકેટલાક જૂદી જૂદી સ્થિતિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો જૂદા

विशेषाधिकं कर्म कुर्वन्ति। अस्त्येकके तुल्यस्थितिका विमात्रविशेषाधिकं कर्म कुर्वन्ति, अस्त्येकके विमात्रस्थितिका स्तुल्यविशेषाधिकं कर्म कुर्वन्ति, इत्येषां संग्रहो भवतीत्यवान्तरप्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'एगिंदिया चउव्विहा पन्नत्ता' एकेन्द्रिया श्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः 'तं जहा' तद्यथा-'अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा' अस्त्येकके समायुष्काः समोपपन्नकाः, समम्-तुल्यम् आयुर्येषां ते समायुष्काः समानस्थितिका इत्यर्थः। 'अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा' अस्त्येकके समायुष्काः-तुल्यायुष्काः समोपपन्नकाः, 'अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा' अस्त्येकके विषमायुष्का समोपपन्नकाः अस्त्येकके विषमायुष्काः

एकेन्द्रिय जीव भिन्न भिन्न विशेषाधिक कर्मका बन्ध करते हैं? यहां यावत् पदसे बीच के दो विकल्प गृहीत हुए हैं। इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! एगिंदिया चउव्विहा पण्णत्ता' हे गौतम! एकेन्द्रिय जीव चार प्रकार के कहे गये हैं।' 'तं जहा' 'जो इस प्रकार से हैं-'अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा' एक वे एकेन्द्रिय जीव जो समान आयुवाले होते हैं और एक ही साथ उत्पन्न होते हैं। 'अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा' 'दूसरे वे एकेन्द्रिय जीव जो समान आयुवाले तो होते हैं पर एक ही साथ उत्पन्न नहीं होते हैं किन्तु भिन्न भिन्न समय में उत्पन्न होते हैं। तीसरे 'अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा' 'वे एकेन्द्रिय जीव जो विषम आयुवाले तो होते हैं पर साथ साथ में एक समयमें उत्पन्न होते हैं ३। चौथे वे एकेन्द्रिय जीव जो

જૂદા વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે? અહિયાં યાવત્પદથી વચ્ચેના બે વિકલ્પો ગ્રહણ કરાયા છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा! एगिंदिया चउव्विहा पण्णत्ता' હે ગૌતમ! એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો ચાર પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે. 'तं जहा' જે આ પ્રમાણે છે. 'अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा' એક તે એક ઇન્દ્રિય જીવો છે, કે જેઓ સરખા આયુષ્યવાળા હોય છે. અને એક સાથે જ ઉત્પન્ન થાય છે. 'अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा' બીજા તે એકેન્દ્રિય જીવો હોય છે કે જેઓ સરખી આયુષ્યવાળા તો હોય છે, પણ એક સાથે ઉત્પન્ન થતા નથી. પરંતુ જુદા જુદા સમયે ઉત્પન્ન થાય છે. 'अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा' अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा' અને ત્રીજા તે એક ઇંદ્રિયવાળા જીવો જેઓ વિષમ આયુષ્યવાળા તો હોય છે, પરંતુ સાથે સાથે એક સમયમાં જ ઉત્પન્ન થાય છે. ચોથા તે એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો જૂદા જૂદા આયુષ્યવાળા પણ હોય છે, અને જૂદા જૂદા સમયમાં પણ ઉત્પન્ન થાય છે. આ રીતે એક ઇન્દ્રિયવાળા

विषमोपपन्नका स्त इमे चत्वारो भेदा भवन्ति एकेन्द्रियाणाम्। 'तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठिइया तुल्ल विसेसाहियं कम्मं पकरेंति' तत्र चतुर्षु मध्ये ये ते एकेन्द्रियाः समायुष्का समोपपन्नका स्ते खलु तुल्यस्थितिकाः समकमेवोत्पन्ना स्तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति तत्रैते तुल्यस्थितिकाः समोत्पन्नत्वेन परस्परेण समानयोगत्वात् तुल्य मिति समानमेव कर्म कुर्वन्ति, तथा ते च पूर्वकर्मापेक्षयः हीनं वा अधिकं वा कर्म कुर्वन्ति यद्यधिकं तथा विशेषाधिक मपि, तच्च परस्परतः तुल्य विशेषाधिकं न तु विशेषाधिकमेव इत्यत उक्तं तुल्यविशेषाधिकमिति १। 'तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठिइया

भिन्न भिन्न आयुवाले भी होते हैं और भिन्न भिन्न समयमें भी उत्पन्न होते हैं।' इस प्रकार से एकेन्द्रियों के ये चार प्रकार होते हैं 'तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा तेणं तुल्लट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' इनमें जो एकेन्द्रिय जीव समान आयुवाले और एक ही साथ में उत्पन्न हुए होते हैं-वे एकसी स्थितिवाले होते हैं। और तुल्यविशेषाधिक कर्मके बन्धक होते हैं। क्योंकि तुल्यस्थितिवाले जीव समकालमें उत्पन्न होने के कारण आपस में समान योगवाले होते हैं-इसलिये वे समान ही कर्मका बन्ध करते हैं। अथवा तो वे पूर्व कर्मको हीन कर्म करते हैं अथवा अधिक कर्म करते हैं। यदि अधिक कर्म करते हैं तो वह परस्पर में तुल्य होता हुआ भी पूर्व कर्म की अपेक्षा विशेषाधिक होता है केवल विशेषाधिक ही नहीं होता है। इसीलिये उसे तुल्य और विशेषाधिक इन दो विशेषणों से विशिष्ट बतलाया गया है।

જીવોના ચાર ભેદો હોય છે. 'तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठिइया तुल्ल विसेसाहियं कम्मं पकरेंति' આમાં જે એક ઈન્દ્રિયવાળા જીવો સમાન આયુષ્યવાળા અને એક સાથે જ ઉત્પન્ન થાય છે, તેઓ સરખી સ્થિતિવાળા હોય છે. અને તુલ્ય વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરવાવાળા હોય છે. કેમ કે-તુલ્ય સ્થિતિવાળા જીવો સરખા કાળમાં ઉત્પન્ન થવાને કારણે પરસ્પરમાં સરખા યોગવાળા હોય છે. તેથી તેઓ સરખા કર્મનો જ બંધ કરે છે. અથવા તો તે પૂર્વ કર્મને એટલે કે પહેલા કરેલા કર્મોને હીન ઓછા કરે છે. અથવા અધિક કર્મ કરે છે. જો અધિક કર્મ કરે તો તેઓ પરસ્પરમાં તુલ્ય થઈને પણ પૂર્વકર્મની અપેક્ષાથી વિશેષાધિક હોય છે. કેવળ વિશેષાધિક જ હોતા તેથી તેઓને તુલ્ય અને વિશેષાધિક આ બે વિશેષણોથી યુક્ત કહેલ છે. 'तत्थ णं जे ते समाउया

वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' तत्र खलु ये ते समायुष्का विषमोपपन्नास्ते खलु तुल्यस्थितिका विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति, एते समायुष्का विषमोपपन्नका :स्तुल्यस्थितिकाः विषमोपपन्नत्वेन च योगवैषम्यात् विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्तीति २।

'तत्थ णं जे ते विसमाउया समोववन्नगा ते णं वेमायट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' तत्र खलु ये ते विषमायुष्काः समोपपन्नकास्ते खलु विमात्रस्थितिका स्तुल्यविशेषाधिकं कर्म ज्ञानावरणीयादिकं प्रकुर्वन्ति–बध्नन्ति एते विमात्रस्थिकाः समोपपन्नत्वेन च समानयोगत्वात् तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्तीति ।३।

'तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' 'तथा जो एकेन्द्रिय जीव समान आयुवाले होते हुए भी भिन्न भिन्न समय में उत्पन्न हुए होते हैं वे तुल्यस्थिति वाले होने पर भी भिन्न भिन्न समय में उत्पन्न होने के कारण योगों की विषमता को लेकर भिन्न भिन्न विशेषाधिक कर्म के बन्धक होते हैं। 'तत्थ णं जे ते विसमाउया समोववन्नगा ते णं वेमायट्ठिइया तुल्ल विसेसाहियं कम्मं पकरेंति' तथा जो एकेन्द्रिय जीव विषम आयुवाले होते हैं और साथ साथ में उत्पन्न हुए होते हैं वे विषमस्थितिवाले होते हैं और तुल्यविशेषाधिक कर्मके बन्धक होते हैं। ये विमात्र स्थिति के एकेन्द्रिय जीव समोपपन्न होने के कारण तुल्ययोगवाले होते हैं, इससे वे तुल्यविशेषाधिक कर्म के बन्धक होते हैं। ३ 'तत्थ णं जे ते विसमाउया विसमोववन्नगा ते णं वेमायट्ठिइया वेमाय-

विसमोववन्नगा तेणं तुल्लट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' तथा જે એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો સમાન આયુષ્યવાળા હોવા છતાં પણ જુદા જુદા સમયમાં ઉત્પન્ન થાય છે. તેઓ તુલ્ય સ્થિતિવાળા હોવા છતાં પણ જુદા જુદા સમયે ઉત્પન્ન થવા ને કારણે યોગોના વિષમ પણાને લઈને જુદા જુદા વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરવાવાળા હોય છે 'तत्थ णं जे ते विसमाउया समोववन्नगा ते णं वेमायट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' तथा જે એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો વિષમ આયુષ્યવાળા હોય છે, અને એક સાથે ઉત્પન્ન થયેલા હોય છે, તેઓ વિષમ સ્થિતિવાળા તુલ્ય વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે. તેઓ વિમાત્રસ્થિતિના એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો સમાન ઉત્પત્તીવાળા હોવાને કારણે સરખા યોગવાળા હોય છે. તેથી તેઓ તુલ્ય વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરનારા હોય છે. ।૩। 'तत्थ णं जे ते विसमाउया

'तत्थ णं जे ते विसमाउया विसमोववन्नगा ते णं वेमायट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' तत्र खलु ये ते विषमायुष्का विषमोपपन्नकास्ते खलु विमात्र विशेषाधिकं कर्म ज्ञानावरणीयादिकं प्रकुर्वन्ति, एते विमात्रस्थितिका विषमायुषो विषमोपपन्नकाः विषमोपपन्नत्वाच्च योगवैषम्येण विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्तीति ४।

'से तेणट्ठेणं गोयमा ! वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' तत् तेनार्थेन गौतम !, यावद् विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति, अत्र यावत्पदेन एवमुच्यते, अस्त्येकके तुल्यस्थितिकाः तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति इत्यारभ्य अस्त्येकके विमात्रस्थितिका एतदन्त प्रकरणस्य संग्रहो भवतीति।

विसेसाहियं कम्मं पकरेंति' 'तथा जो एकेन्द्रिय जीव विषम आयुवाले होते हैं और विषम समय में उत्पन्न हुए होते हैं वे विषम स्थितिवाले होते हैं और विषम विशेषाधिक कर्मके बन्धक होते हैं। ४ तात्पर्य कहने का यही है कि जहां विषमकाल में उत्पन्न होता है वहां पर योगों की विषमता है और उसकी विषमता से भिन्न भिन्न विशेषाधिक कर्मोंकी बन्धकता है और जहां समान समय में उपपात है वहां योगों की समता है इससे वहां समान विशेषाधिक कर्मों की बन्धकता है ऐसा जानना चाहिये। 'से तेणट्ठेणं गोयमा जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' इसी कारण हे गौतम ! मैंने ऐसा कहा है कि वे एकेन्द्रिय जीव यावत् विषम विशेषाधिक कर्मका बन्ध करते हैं। यहां यावत्पद से 'एवमुच्यते अस्त्येकके तुल्यस्थितिका तुल्यविशेषाधिकं

विसमोववन्नगा तेणं वेमायट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' तथा જે એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો વિષય આયુષ્યવાળા હોય છે, અને વિષમ સમયમાં ઉત્પન્ન થાય છે, તે વિષમ સ્થિતિવાળા હોય છે અને વિષમ વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરનારા હોય છે. ।૪। આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે-જ્યાં વિષમ કાળમાં ઉત્પન્ન થાય છે, ત્યાં યોગોનું વિષમપણું હોય છે. અને તે વિષમ પણાથી જુદા જુદા વિશેષાધિક કર્મોનું બંધ પણુ રહે છે અને જ્યાં સમાન સમયમાં ઉત્પન્ન થવાનું કહેલ છે, ત્યાં યોગોનું સમાનપણું છે. તેથી ત્યાં સમાન વિશેષાધિક કર્મોનું બંધકપણું કહેલું છે તેમ સમજી લેવું 'से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' આ કારણથી હે ગૌતમ ! મેં એવું કહેલ છે કે-તે એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો યાવત્ વિષમ વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે. અહિયાં યાવત્પદથી 'एवमुच्यते अस्त्येकके

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति यावद् विहरति। हे भदन्त ! एकेन्द्रियजीवानां विषये यद् देवानुप्रियेण कथितं तत् सर्वमेवमेव सर्वथैव सत्यमिति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन विहरतीति ॥सू०८॥

इति श्री – विश्वविख्यातजगद्वल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि – 'जैनाचार्य' पूज्यश्री–घासीलालव्रतिविरचितायां "श्री भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां चतुस्त्रिंशत्तमे शतके प्रथमस्य एकेन्द्रियशतकस्य प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥३४।१।१॥

कर्म प्रकुर्वन्ति' यहां से लेकर 'अस्त्येकके विमात्रस्थितिका 'यहां तक का पाठ ग्रहीत हुआ है। 'सेवं भंते ! सेवं भंते त्ति' जाव विहरइ 'हे भदन्त ! एकेन्द्रिय जीवों के विषय में जो आप देवानुप्रियने जो कहा है वह सर्व ही सर्वथा सत्य है २ इस प्रकार कहकर गौतमने भगवान् को वन्दना की और नमस्कार किया वन्दना और नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० ८॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके चौतीसवें शतक के प्रथम एकेन्द्रियशतक का पहला उद्देशक समाप्त ॥३४–१॥

तुल्यस्थितिकाः तुल्य विशेषाधिक कर्म प्रकुर्वन्ति' આ કથનથી લઈને 'अस्त्येकके विमात्रस्थितिका' અહિયાં સુધીનો પાઠ ગ્રહણ કરેલ છે.

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ' હે ભગવન્ એક ઈન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તેપછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૮॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્ર ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ચોત્રીસમાં શતકમાં એકઇન્દ્રિય શતકનો પહેલો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૪–૧॥

अथ द्वितीयोद्देशकः प्रारभ्यते

मूलम्–कइविहा णं भंते! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता? गोयमा! पंचविहा अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता तं जहा–पुढवीकाइया दुया भेओ जहा–एगिंदियसएसु जाव बायरवणस्सइकाइया य, कहिं णं भंते! अणंतरोववन्नगा णं बायरपुढवीकाइयाणं ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु तं जहा–रयणप्पभाए जहा ठाणपदे जाव दीवेसु समुद्देसु। एत्थ णं अणंतरोववन्नगाणं बायरपुढवीकाइयाणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं सव्वलोए। समुग्घाएणं सव्वलोए। सट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे। अणंतरोववन्नग सुहुमपुढवीकाइया एगविहा अविसेसमणाणत्ता सव्वलोए परियावन्ना पन्नत्ता समणाउसो! एवं एएणं कमेणं सव्वे एगिंदिया भाणियव्वा, सट्ठाणाइं सव्वेसिं जहा ठाणपदे तेसिं पज्जत्तगाणं बायराणं उववाय समुग्घाय सट्ठाणाणि जहा तेसिं चेव अपज्जत्तगाणं बायराणं सुहुमाणं सव्वेसिं जहा–पुढवीकाइयाणं भणिया तहेव भाणियव्वा जाव वणस्सइकाइयत्ति। अणंतरोववन्नगाणं सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ? गोयमा! अट्ठ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ, एवं जहा एगिंदियसएसु अणंतरोववन्नग उद्देसए तहेव पन्नत्ताओ तहेव बंधंति। तहेव वेदेंति जाव अणंतरोववन्नगा बायरवणस्सइकाइया। अणंतरोववन्नगएगिंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति। जहेव ओहिओ उद्देसओ भणिओ तहेव। अणंतरोववन्नग एगिंदियाणं भंते! कइ समुग्घाया पन्नत्ता। गोयमा! दोन्नि समुग्घाया पन्नत्ता। तं जहा–वेयणासमुग्घाए य कसायसमुग्घाए य। अणंतरोववन्नग एगिंदियाणं

भंते ! किं तुल्लट्ठिइया तुल्ल विसेसाहियं कम्मं पकरेंति ?, पुच्छा तहेव । गोयमा ! अत्थेगइया तुल्लट्ठिइया तुल्ल विसेसाहियं कम्मं पकरेंति, अत्थेगइया तुल्लट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति । से केणट्ठेणं जाव वेमाय विसेसाहियं कम्मं पकरेंति ? गोयमा ! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया दुविहा पन्नत्ता । तं जहा—अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा १, अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा २ । तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठिइया तुल्ल विसेसाहियं कम्मं पकरेंति । तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, से तेणट्ठेणं जाव वेमाय विसेसाहियं कम्मं पकरेंति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥सू० १॥

चोत्तीसइमे सए पढमे एगिंदियसए बीओ उद्देसो समत्तो ।३४-१-२।

छाया—कतिविधाः खलु भदन्त ! अनन्तरोपपन्नका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पञ्चविधा अनन्तरोपपन्नका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा—पृथिवीकायिका द्विपदो भेदो यथा—एकेन्द्रियशतकेषु यावद् बादर वनस्पतिकायिकाश्च । कुत्र खलु भदन्त ! अनन्तरोपपन्नकाणां बादरपृथिवीकायिकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! स्वस्थानेनाष्टसु पृथिवीसु, तद्यथा—रत्नप्रभायां यथा स्थानपदे यावद् द्वीपेषु समुद्रेषु, अत्र खलु अनन्तरोपपन्नकानां बादरपृथिवीकायिकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन सर्वलोके, समुद्घातेन सर्वलोके, स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे, अनन्तरोपपन्नक सूक्ष्म पृथिवीकायिका एकविधा अविशेषा अनानात्वाः सर्वलोके पर्यापन्नाः प्रज्ञप्ताः, श्रमण ! आयुष्मन् ! एवमेतेन क्रमेण, सर्वे एकेन्द्रिया भणितव्याः, स्वस्थानानि सर्वेषां यथा स्थानपदे । तेषां पर्यन्तकानां बादराणामुपपातसमुद्घातस्वस्थानानि यथा तेषामेवापर्याप्तकानां बादराणाम् । सूक्ष्माणां सर्वेषां यथा पृथिवीकायिकानां भणितानि तथैव भणितव्यानि यावद् वनस्पतिकायिका इति । अनन्तरोपपन्नकानां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां भदन्त ! कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः, गौतम ! अष्टौ कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः । एवं यथा एकेन्द्रियशतेषु अनन्तरोपपन्नकोद्देशके तथैव बध्नन्ति, तथैव वेदयन्ति, यावदनन्तरोपपन्नकाः बादरवनस्पतिकायिकाः । अनन्तरोपपन्नकके-

न्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते, यथैवौधिकउद्देशको भणितस्तथैव। अनन्तरोपपन्नकैकेन्द्रियाणाम्, भदन्त ! कति समुद्घाताः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! द्वौ समुद्घातौ प्रज्ञप्तौ, तद्यथा–वेदना समुद्घातश्च कषायसमुद्घातश्च। अनन्तरोपपन्नकैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! किं तुल्यस्थितिका स्तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति ? पृच्छा तथैव। गौतम ! अस्त्येकके तुल्यस्थितिका स्तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति। अस्त्येकके तुल्यस्थितिका विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति। तत्केनार्थेन यावद् विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति ? गौतम ! अनन्तरोपपन्नका एकेन्द्रिया द्विविधा, प्रज्ञप्ताः। तद्यथा–अस्त्येकके समायुष्काः समोपपन्नकाः १, अस्त्येकके समायुष्काः विषमोपपन्नकाः २ तत्र खलु ये ते समायुष्काः समोपपन्नका स्ते खलु तुल्यस्थितिका स्तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति। तत्र खलु ये ते समायुष्का विषमोपपन्नकास्ते खलु तुल्यस्थितिका विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति। तत्तेनार्थेन यावद् विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति। तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त !

चतुस्त्रिंशत्तमे शते प्रथमे एकेन्द्रियशते द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥३४।१।२।

टीका—'कइविहाणं भंते ! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता' कतिविधाः कति प्रकाराः खलु भदन्त ! अनन्तरोपपन्नकाः, ये अनन्तरे–उत्पत्तेः प्रथमे समये वर्त्तन्ते। तेऽनन्तरोपपन्नकाः इत्थंभूता एकेन्द्रियजीवाः प्रज्ञप्ताः कथिताः, कियन्तो भेदा एकेन्द्रियाणामिति प्रश्नः। भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि। 'गोयमा' हे गौतम ! 'पंचविहा अणंतरोपपन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता' पञ्चविधाः–

दूसरे उद्देशेका प्रारंभ–

'कइविहाणं भंते ! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया' इत्यादि

टीकार्थ–'कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता' हे भदन्त जो उत्पत्ति के प्रथम समयमें वर्त्तते हैं ऐसे वे अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीव कितने प्रकार के कहे गये है ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं–'गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता' हे गौतम !

॥બીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'कइ विहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया' ઈત્યાદિ

'कइ विहाणं भंते ! अणंतरोववण्णगा एगिंदिया पण्णत्ता' હે ભગવન્ જે ઓની ઉત્પત્તી એક જ સમયમાં હોય છે. એવા તે અનંતરોપપન્નક એકેઈન્દ્રિય જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? 'गोयमा ! पंचविहा

पञ्चप्रकारका अनन्तरोपपन्नका एकेन्द्रियजीवाः प्रज्ञप्ता-कथिताः। प्रकार-भेदमेव दर्शयति-'तं जहा' इत्यादि। 'तं जहा' तद्यथा-'पुढवीकाइया दुया भेदो जहा एगिंदियसएसु जाव वायरवणस्सइकाइयाय' पृथिवीकायिकाः द्विपदो भेदो यथा-एकेन्द्रियशतेषु त्रयस्त्रिंशत्तमे शते एकेन्द्रियशतेषु मध्ये प्रथमस्य एकेन्द्रिय शतस्य द्वितीये उद्देशके यावद् बादरवनस्पतिकायिकाश्च द्विपदो भेदः सूक्ष्म-बादररूपः। इहानन्तरोपपन्नकैकेन्द्रियाणामधिकारात् अनन्तरोपपन्नकानां च पर्याप्तकत्वाभावात् अपर्याप्तकानां सतां सूक्ष्मा बादराश्चेति द्विपद एव भेदः कथितो नत्वन्यत्रेव चतुष्को भेदः कथित इति। स्थानभेदनिरूपणायाह-'कहिं णं' इत्यादि। 'कहिं णं भंते! अणंतरोववन्नगाणं बायरपुढवीकाइयाणं ठाणा पन्नत्ता' कुत्र-खलु भदन्त! अनन्तरोपपन्नकानां बादरपृथिवीकायिकानां स्थानानि-निवासाधिकरणानि प्रज्ञप्तानि-कथितानीति प्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि।

अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीव पांच प्रकार के कहे गये हैं 'तं जहा' जैसे-'पुढवीकाइया दुया भेदो जहा एगिंदियसएसु जाव बायरवणस्सइकाइया य' 'पृथिवीकायिक वगैरह इनके दो दो भेद जैसे एकेन्द्रिय शतकों में कहे गये हैं सूक्ष्म और बादर के भेद से यावत् वनस्पतिकायिक तक वैसे ही यहां जानना चाहिये। यहां अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रियों का अधिकार है। इसलिये इनमें पर्याप्तकता का अभाव रहता है। इसलिये यहां सूक्ष्म और बादर ऐसे ये दो भेद ही इनके कहे गये हैं। दूसरी जगह के जैसे यहां एकेन्द्रिय पृथिवी कायिकके चार भेद नहीं कहे हैं। 'कहि णं भंते! अणंतरोववन्नगाणं बायरपुढवीकाइयाणं ठाणा पण्णत्ता 'हे भदन्त! इन अनन्तरोपपन्नक बादर पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय जीवों के स्थान कहां कहे गये हैं?

अणतरोववन्नगा पण्णत्ता' હે ગૌતમ! અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવો પાંચ પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. 'तं जहा' તે આ પ્રમાણે છે. 'पुढवीकाइया दुया भेदो जहा एगिंदियसएसु जाव बायर वणस्सइकाइया य' પૃથ્વીકાયિક વિગેરેના બે ભેદો જે રીતે એકઇન્દ્રિય શતકમાં કહેવામાં આવેલ છે. સૂક્ષ્મ અને બાદરના ભેદથી યાવત્ વનસ્પતિકાયિક સુધીના કહ્યા છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ સમજવું. અહિયાં અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિયોનો અધિકાર છે. તેથી પર્યાપ્ત પણાનો અભાવ રહે છે. તેથી અહિયાં સૂક્ષ્મ અને બાદર એવા બે જ ભેદો તેઓના કહ્યા છે. અન્ય સ્થળની જેમ અહિયાં એકઇન્દ્રિયવાળા પૃથ્વીકાયિકોના ચાર ભેદો કહ્યા નથી. 'कहि णं भंते! अणंतरोववन्नगाणं बायर पुढवीकाइयाणं ठाणा पन्नत्ता' હે ભગવન્ આ અનંતરોપપન્નક બાદર પૃથ્વીકાયિક એકઇન્દ્રિય

'गोयमा' हे गौतम ! 'सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु' स्वस्थानेन अष्टसु पृथिवीषु यत्र ते तिष्ठन्ति तानि तेषां स्वस्थानानि, तदपेक्षया तेषामष्टासु पृथिवीषु स्थानानि कथितानि, 'तं जहा' तद्यथा-'रयणप्पभाए जहा ठाणापदे' रत्नप्रभायां यथा-स्थानपदे प्रज्ञापनाया द्वितीयं पदं तत्र यथा रत्नप्रभादिकं प्राग्भारापृथिवी पर्यन्तं स्थानतया कथितं तदेव स्थानतया अत्रापि ज्ञातव्यमिति । कियत्पर्यन्तं प्रज्ञापनायाः स्थानपदमिह ग्राह्यम्, तत्राह-'जाव' इत्यादि । 'जाव दीवेसु समुद्देसु' यावद्वीपेषु समुद्रेषु द्वीपसमुद्रादिकं सर्वमेव अनन्तरोपपन्न वादरपृथिवीकायिकैकेन्द्रियाणां स्थानमिति । स्थानमुपसंहरन्नाह-'एत्थ णं' इत्यादि । 'एत्थ णं अणंत-

उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! सट्ठाणे णं अट्ठसु पुढवीसु' हे गौतम ! स्वस्थान की अपेक्षा से इन अनन्तरोपपन्नक बादर एकेन्द्रिय जीवोंके स्थान आठ पृथिवियों में कहे गये हैं क्योंकि ये वहां पर रहते हैं । वे आठ पृथिवियां इस प्रकार से हैं-'रयणप्पभाए जहा ठाणपदे' स्थानपद यह प्रज्ञापना का द्वितीय पद है । उसमें रत्नप्रभा से लेकर ईषत्प्राग्भारा पृथिवी तकके स्थान को इनका निवासस्थान बतलाया गया है । सो ऐसा ही यहां पर इनके निवासस्थान के सम्बन्ध में जानना चाहिये । 'जाव दीवेसु समुद्देसु' इन पृथिवियों आदि के अतिरिक्त और भी इन अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीवोंके रहने के स्थान हैं जो इस सूत्रपाठ द्वारा बतलाये गये हैं वे स्थान हैं द्वीप और समुद्र । समस्त द्वीपोंमें और समस्त समुद्रों में भी ये अनन्तरोपपन्नक बादरपृथिवीकायिक एकेन्द्रिय जीव रहते हैं ।

જીવોનું સ્થાન ક્યાં કહેવામાં આવેલ છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! सट्ठाणेण' अट्ठसु पुढवीसु' હે ગૌતમ ! સ્વસ્થાનની અપેક્ષાથી આ અનંતરોપપન્નક બાદર એકઇન્દ્રિયવાળા જીવોના સ્થાનો આઠ પૃથ્વીયોમાં કહેવામાં આવેલ છે. કેમ કે તે ત્યાં રહે છે. તે આઠ પૃથ્વીયો આ પ્રમાણે છે 'रयणप्पभाए जहा ठाणपदे' પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના બીજા સ્થાન પદમાં રત્નપ્રભા વિગેરેથી લઈને પ્રાગ્ભારા પૃથ્વી સુધીના સ્થાનો તેઓના નિવાસ સ્થાન કહેલ છે. તો તે જ પ્રમાણે અહીંયા તેઓના નિવાસ સ્થાનના સંબંધમાં સમજવું. 'जाव दीवेसु समुद्देसु' આ પૃથ્વીયો શિવાય બીજા પણ આ અનંતરોપપન્નક એકઇન્દ્રિય જીવોને રહેવાના સ્થાનો છે જે આ સૂત્રપાઠ દ્વારા બતાવવામાં આવેલ છે તે સ્થાનો દ્વીપ અને સમુદ્ર છે સઘળા દ્વીપોમાં અને સઘળા સમુદ્રોમાં પણ આ અનંતરોપપન્નક એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો રહે છે. આ રીતે 'एत्थ णं' अणंतरोववण्णगाणं बायर पुढवीकाइयाणं' ठाणा

रोववन्नगाणं वायरपुढवीकाइयाणं ठाणा पन्नत्ता' अत्र रत्नप्रभादिषु द्वीपसमुद्रादिषु च खलु अनन्तरोपपन्नकानां बादरपृथिवीकायिकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि कथितानि। एतेषु द्वीपसमुद्रादिषु एते तिष्ठन्तीति भावः।

तत् किमेतावदेव स्थानम् अनन्तरोपपन्नकानां तत्राह–'उववाएणं' इत्यादि। 'उववाएणं सव्वलोए' उपपातेन सर्वलोके स्थानम्, 'समुग्घाएणं सव्वलोए' समुद्घातेन सर्वलोके तत्रोपपातेन–उपपाताभिमुख्येनापान्तरालवृत्त्येत्यर्थः समुद्घातेन मारणान्तिकेनेति। अनन्तरोपपन्नका हि उपपातमारणान्तिक समुद्घाताभ्यामति बहुत्वात् सर्वलोकमपि व्याप्य वर्त्तन्ते, अत्रचैवं भूतया स्थापनया भावना कर्त्तव्या।



अत्र प्रथमवक्रं यथैव एके संहरन्ति, तदैव तद्वक्रदेश मन्ये पूरयन्ति। एवं द्वितीयवक्रसंहरणेऽपि अवक्रोत्पत्तावपि प्रवाहतो भावनीयम्। अनन्तरोपपन्नकत्वं चेह भाविभावापेक्षं

इस प्रकार 'एत्थ णं अणंतरोववन्नगाणं बायर पुढवीकाइयाणं ठाणा पण्णत्ता' इन रत्नप्रभा आदि पृथिवियों में और जम्बूद्वीप आदि द्वीपों में एवं लवण समुद्र आदि समुद्रों में अनन्तरोपपन्नक बादरपृथिवीकायिक एकेन्द्रिय जीवों के स्थान कहे गये हैं। इन सब में ये एकेन्द्रिय जीव रहते हैं। 'उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए' उपपात की अपेक्षा से और मारणान्तिक समुदघात की अपेक्षा ये जीव बहुत ही अधिक होनेके कारण समस्त लोकको व्याप्त कर के रह रहे हैं। इनकी ऐसी रचनासे भावना करनी चाहिये।



यहां जब प्रथम वक्र स्थानको कितनेक अनन्तरोपपन्नक जीव संहृत करते हैं–खाली करते हैं–तब उसी समय उस वक्र स्थानको दूसरे और अनन्तरोपपन्नक जीव भर देते हैं। इसी प्रकार से जब द्वितीय वक्र स्थानका संहरण होता है तब उसे और दूसरे अनन्तरोपपन्नक जीव भर देते हैं इस

पन्नत्ता' આ રત્નપ્રભા વિગેરે પૃથ્વીયોમાં અને જંબૂદ્વીપ વિગેરે દ્વીપોમાં તથા લવણ સમુદ્ર વિગેરે સમુદ્રોમાં અનંતરોપપન્નક બાદર એકઈન્દ્રિયવાળા જીવોના સ્થાનો કહેવામાં આવેલ છે. આ બધામાં એક ઈન્દ્રિયવાળા જીવો રહે છે. 'उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए' ઉપપાતની અપેક્ષાથી અને મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતની અપેક્ષાથી આ જીવો ઘણા વધારે હોવાને કારણે સઘળા લોકને વ્યાપ્ત કરીને રહે છે. તેઓની રચના આ પ્રકારની કરીને ભાવના કરવી જોઈએ. અહિયાં જ્યારે પહેલા વક્રસ્થાનને કેટલાક અનંતરોપપન્નક જીવો ખાલી કરે છે, ત્યારે તેજ સમયે તે વક્રસ્થાનને બીજા અનંતરોપપન્નક જીવો ભરી દે છે, એ રીતે જ્યારે બીજા વક્ર



प्राग्मपान्तराले तस्य साक्षादभावात्। मारणान्तिकसमुद्घातश्च प्राक्तन भावापेक्षया अनन्तरोपपन्नकावस्थायां तस्यासम्भवादिति। 'सट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइ भागे त्ति' स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे रत्नप्रभादि पृथिवीनां विमानानां च लोकस्यासंख्येयभागवर्त्तित्वात्, पृथि०व्यादीनां च पृथिवीकायिकानां स्वस्थानत्वादिति। 'अणंतरोववन्नग सुहुमपुढवीकाइया एगविहा अविसेसमणाणत्ता' अनन्तरोपपन्नक सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः सर्वेऽपि एकविधा एकप्रकारका एव भवन्ति अविशेषाः परस्परं विशेषरहिता अनानात्वाः परस्परं भेदरहिताश्च भवन्ति 'सव्व लोए परियावन्ना' सर्वलोके पर्यापन्नाः व्याप्ताः 'पन्नत्ता' प्रज्ञप्ताः-कथिता इति

प्रकार प्रवाह रूप से यह सदा भरा ही रहता है। अनन्तरोपपन्नकता यहां भावी भव की अपेक्षा से कही गई है। क्योंकि अपान्तराल में इसका साक्षात् अभाव रहता है। मारणान्तिक समुद्घात प्राक्तन भवकी अपेक्षा से कहा गया है। क्योंकि अनन्तरोपपन्नक की अवस्था मे इसका अभाव होता है, 'सट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे त्ति' स्वस्थान की अपेक्षा ये लोकके असंख्यातवें भाग में रहते हैं। क्योंकि रत्नप्रभा आदि पृथिवियां और विमान ये सब लोकके असंख्यातवें भाग में हैं। और पृथिवी आदि पृथिवीकायिकों के स्वस्थान हैं। 'अणंतरोववन्नग सुहुमपुढवीकाइया एगविहा अविसेस-मणाणत्ता' सब अनन्तरोपपन्नक सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय जीव एकप्रकार के ही होते हैं। परस्पर में ये विशेषता से रहित होते हैं। और इनमें कोई भेद नहीं होता है। 'सव्वलोए परियावन्ना' ये

સ્થાનનું સંહરણ થાય છે. ત્યારે તેનાથી બીજા અનંતરોપપન્નક જીવો તે સ્થાન ભરી દે છે. આ પ્રમાણે પ્રવાહ રૂપથી અહિયાં બધા ભર્યાજ રહે છે. અનંતરોપપન્નકપણું અહિયાં આગામી ભવની અપેક્ષાથી કહેલ છે. કેમ કે-અપાન્તરાલમાં તેનો સાક્ષાત્ અભાવ રહે છે. 'सट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइ भागेत्ति' સ્વસ્થાનની અપેક્ષાથી તેઓ લોકના અસંખ્યાત ભાગમાં રહે છે. કેમ કે રત્નપ્રભા વિગેરે પૃથ્વીયો અને વિમાનો એ બધા લોકના અસંખ્યાતમા ભાગમા છે. અને પૃથ્વી વિગેરે પૃથ્વીકાયિકોનું સ્વસ્થાન છે. 'अणंतरोववन्नगसुहुमपुढवीकाइया एगविहा अविसेसमणाणत्ता' સઘળા અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક એક ઈન્દ્રિયવાળા જીવો એક પ્રકારના જ હોય છે. તેઓ અન્યો અન્ય વિશેષ પણાથી રહિત હોય છે. અને તેઓમાં કોઈજ ભેદ હોતો નથી. 'सव्वलोए परियावन्ना' આ સઘળા લોકમાં વ્યાપ્ત

इभागे' इत्यादि । यथैव बादरपृथिवीकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि तथैव बादरपृथिवीकायिकानामपर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि उपपातेन सर्वलोके, समुद्घातेन सर्वलोके, स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे, इत्यादीतिच्छाया । 'सुहुमाणं सव्वेसिं जहा पुढवीकाइयाणं भणिया तहेव भाणियव्वा जाव वणस्सइकाइयत्ति' सूक्ष्माणां सर्वेषामप्कायिकादीनां वनस्पतिकायिकान्तानां यथा पृथिवीकायिकाना मुपपातसमुद्घातस्वस्थानानि तथैव-तेनैव रूपेण अप्कायिकादीनां सूक्ष्माणामपि उपपातसमुद्घात स्वस्थानानि भणितव्यानि यावद्वनस्पतिकायिका इति, अप्कायिकादारभ्य वनस्पतिकायपर्यन्ताना मुपपात समुद्घात स्वस्थानानि पृथिवीकायिकवदेव ज्ञातव्यानीति भावः । 'अणंतरोववन्नगाणं सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' 'अनन्तरोपपन्नकानां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां भदन्त ! कति-कियत्संख्यकाः कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः ?

सव्वलोए, सट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे' ये उपपातकी अपेक्षा से सर्वलोक में हैं समुद्घातकी अपेक्षा से भी ये सर्वलोक में हैं और स्वस्थान की अपेक्षा से ये लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं।' 'सुहुमाणं सव्वेसिं जहा पुढवीकाइयाणं भणिया तहेव भाणियव्वा जाव वणस्सइकाइयत्ति' जिस प्रकार से सूक्ष्म पृथिवीकायिकों के उपपात समुद्घात और स्वस्थान कहे गये हैं उसी प्रकार से समस्त सूक्ष्म एकेन्द्रियों के-अप्कायिक से लेकर वनस्पतिकायिकों तकके उपपात समुद्घात और स्वस्थान कह लेना चाहिये । 'अणंतरोववन्नगाणं सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' 'हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नक सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवों के कितनी कर्मप्रकृतियां कही गई है ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा अट्ठ-

---

सव्वलोए, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइ भागे' ઉપપાતની અપેક્ષાથી આ સર્વ લોકમા રહે છે. સમુદ્ઘાતની અપેક્ષાથી પણ આ સર્વ લોકમાં રહે છે. અને સ્વસ્થાનની અપેક્ષાથી આ સર્વ લોકના અસંખ્યાતમા ભાગમાં રહે છે. 'सुहुमाणं सव्वेसिं जहा पुढवीएकाइयाणं भणिया तहेच भाणियव्वा' जाव वणस्सइकाइयत्ति' જે પ્રમાણે સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકોના ઉપપાત, સમુદ્ઘાત, અને સ્વસ્થાન કહ્યા છે. એજ પ્રમાણે સઘળા સૂક્ષ્મ એકઈન્દ્રિયવાળા જીવોને અપ્કાયિકથી લઈને વનસ્પતિ કાયિકો સુધીના ઉપપાત, સમુદ્ઘાત અને સ્વસ્થાન કહેવા જોઈએ 'अणंतरोववन्नगाणं सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોને કેટલી કર્મ પ્રકૃતિયો કહેવામાં આવી છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને

इति प्रश्नः, भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'अट्ठ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' अष्ट कर्मप्रकृतयः ज्ञानावरणीयादिकाः प्रज्ञप्ताः–कथिताः 'एवं जहा एगिंदिय सएसु अणंतरोववन्नगउद्देसए तहेव पन्नत्ताओ तहेव बंधंति तहेव वेदेंति' एवं यथा–एकेन्द्रियशतेषु त्रयस्त्रियत्तमशतकस्य प्रथमे एकेन्द्रियशते द्वितीये अनन्तरोपपन्नकोद्देशके तथैव प्रज्ञप्ताः। तथा तथैव बध्नन्ति तथैव वेदयन्ति इति ज्ञातव्यम्। प्रज्ञापनबन्धनवेदनरूपा स्तिस्रोऽपि वक्तव्यता एकेन्द्रियशतकोक्तवदेव वाच्या इति भावः, तथाहि–एकेन्द्रियशतके पञ्चविधा एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ता इति, बन्धन सूत्रे सप्तकर्मप्रकृती र्बध्नन्ति २, वेदनसूत्रे चतुर्दशविधाः ज्ञानावरणीया-

कम्म पगडीओ पन्नत्ताओ' हे गौतम ! इनके आठ कर्मप्रकृतियां कही गई हैं। 'एवं जहा एगिंदियसएसु अणंतरोववन्नग उद्देसए तहेव पन्नत्ताओ तहेव बंधति तहेव वेदेंति' जिस प्रकार से ३३ वे शतक के एकेन्द्रिय शतकों में से प्रथम एकेन्द्रियशतक में द्वितीय अनन्तरोपपन्नक उद्देशक में हे गौतम ! बन्ध और वेदन के सम्बन्ध में जैसा कहा गया है उसी प्रकारसे इनके सम्बन्ध में भी कहा गया जानना चाहिये। तात्पर्य इस कथनका केवल ऐसा ही है कि प्रज्ञापन–सत्व, बन्धन एवं वेदन के सम्बन्ध में जैसा कथन एकेन्द्रिय शतकों के अनन्तरोपपन्नक उद्देशक में कहा है, उसी प्रकार का कथन यहां पर भी कह लेना चाहिये। जैसे इस सम्बन्ध में एकेन्द्रिय शतक में पांच प्रकारके एकेन्द्रिय जीव कहे गये हैं–बन्धन सूत्र में सात कर्मप्रकृतियों का इनके

કહે છે કે–'ગોયમા ! अट्ठ कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ' હે ગૌતમ ! તેઓને આઠ કર્મ પ્રકૃતીયો કહેવામાં આવી છે. 'एवं जहा एगिंदियसएसु अणंतरोववन्नग उद्देसए तहेव पन्नत्ताओ तहेव बंधंति तहेव वेदेंति' જે પ્રમાણે ૩૩ તેત્રીસમા શતકના એકેન્દ્રિય શતકોમાંથી પહેલા એકેન્દ્રિય શતકમાં બીજા અનંતરોપપન્નક ઉદ્દેશામાં હે ગૌતમ ! બંધ અને વેદનના સમ્બન્ધમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે તેઓના સમ્બન્ધમાં પણ કહેવું જોઈએ. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે–સત્વ, બંધન અને વેદનના સંબંધમાં એકેન્દ્રિય શતકોના અનંતરોપપન્નક ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણેનું કથન કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન આ પ્રકરણમાં એટલે કે અનંતરોપપન્નક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકોના સંબંધમાં સમજવું. જેમ કે–પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમાં પાંચ પ્રકારના એકેન્દ્રિય જીવો કહેવામાં આવ્યા છે. બન્ધન સૂત્રમાં સાત કર્મપ્રકૃતિયોનો તેઓને બંધ થાય છે, તેમ કહેવામાં આવેલ છે. વેદના સૂત્રમાં આ ચૌદ પ્રકારની કર્મપ્રકૃતિયોનું

घष्ट ८, श्रोत्रेन्द्रियाद्याश्चतस्रः ४, स्त्री पुरुषवधरूपे द्वे २, एवं चतुर्दश कर्मप्रकृती वेदयन्तीति तात्पर्यार्थः । कियत्पर्यन्त मेकेन्द्रियशतकमिहाध्येतव्यं तत्राह–'जाव' इत्यादि । 'जाव अणंतरोववन्नगा वणस्सइकाइया' यावदनन्तरोपपन्नका वनस्पतिकायिकाः अप्कायिकादारभ्य वनस्पतिकायिकान्ताः सर्वेऽपि अनन्तरोपपन्नकैकेन्द्रिया इत्थमेव पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः इत्थमेव कर्मप्रकृती बंधनन्ति वेदयन्ति चेति भावः। 'अणंतरोववन्नग एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' अनन्तरोपपन्नकैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुतः–कस्मात् स्थानविशेषादागत्योत्पद्यन्ते ? इत्युत्पादविषयकः प्रश्नः उत्तरमाह–'जहेव ओहिओ उद्देसओ भणिओ तहेव' यथैव औघिक उद्देशको भणितः, अस्यैव चतुस्त्रिंशत्तमस्य शतकस्य प्रथमे एकेन्द्रियशते

बन्ध होना है ऐसा कहा गया है। वेदन सूत्र में ये चौदह प्रकार की कर्मप्रकृतियों का वेदन करते हैं ऐसा कहा गया है। वे चौदह प्रकृतियां इस प्रकारसे हैं–ज्ञानावरणीयादिक ८ श्रोत्रेन्द्रियावरण ४ स्त्रीपुरुषावरणरूप दो २। 'जाव अणंतरोववन्नगा वणस्सइकाइया' इसी प्रकार का कथन यावत् अनन्तरोपपन्नक वनस्पतिकायिक तक जानना चाहिये। अर्थात् 'अप्कायिक से लेकर वनस्पतिकायिक तक सब अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीव जो कि पांच प्रकार के कहे गये हैं इसी प्रकारसे कर्मप्रकृतियों का बन्ध करते हैं और इसी प्रकारसे वे उनका वेदन करते हैं।

'अणंतरोववन्नग एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीव कहां से आकर के उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं–'जहेव ओहिओ उद्देसओ भणिओ तहेव' 'हे गौतम ! जैसा सामान्य उद्देशक में कहा गया है वैसाही यहां पर भी

વેદન કરે છે. એટલે કે જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે આઠ ૮ શ્રોત્રેન્દ્રિયાવરણ ૪ તથા સ્રીવેદાવરણ ૧૩ પુરૂષવેદ વરણ ૧૪ 'जाव अणंतरोववन्नगा वणस्सइकाइया' આજ પ્રમાણેનું કથન યાવત્ અનંતરોપપન્નકવનસ્પતિકાયિકના કથન સુધી સમજવું. અર્થાત્ અપ્કાયિકથી લઈને વનસ્પતિકાયિક સુધી સઘળા અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવો કે જે પાંચ પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે, તે બધા એજ પ્રમાણે કર્મપ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે. અને એજ પ્રમાણે તેઓ તેનુ વેદન કરે છે.

'अणंतरोववन्नग एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જીવો ક્યાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે–'जहेव ओहिओ उद्देसओ भणिओ

प्रथमोद्देशके एकेन्द्रियाणा मुत्पादः कथितः तत्रापि व्युत्क्रान्तिपदस्य प्रज्ञापनायाः षष्ठपदस्य संकेतः कृत स्तत स्तत्र येन रूपेण उत्पादः कथितः स्तथैवेहापि ज्ञातव्यः। तथाहि–सामान्यतया एकेन्द्रियाः नारकान् विहाय तिर्यङ्मनुष्य देवेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते। पृथिव्यब्वनस्पतिकायिकेषु देवानामपि उत्पत्ति सद्भावात्। तेजोवायुकायिकेषु देवेभ्य आगत्य नोत्पद्यन्ते, तत्र च तिर्यग्योनिकेभ्यः संमूर्छिम गर्भजेति द्विविधेभ्योऽपि मनुष्येभ्य आगत्योत्पद्यन्ते, इति विवेकः।

अथ समुद्घातसूत्रमाह–'अणंतरोववन्नग०' इत्यादि। 'अणंतरोववन्नग एगिंदियाणं भंते! कइसमुग्धाया पन्नत्ता' अनन्तरोपपन्नकैकेन्द्रियाणां भदन्त! कति

कह लेना चाहिये। अर्थात् इसी चौंतीसवें शतक के प्रथम एकेन्द्रियशतक मे प्रथम उद्देशक में एकेन्द्रिय जीवोंका उत्पाद कहा गया है और इस सम्बन्ध में वहां प्रज्ञापना के छठे व्युत्क्रान्तिपदका संकेत किया गया है, इसलिये वहां जिस रूपसे उत्पाद कहा गया है उसी प्रकार से वह यहां पर भी जानना चाहिये। सामान्यतया एकेन्द्रिय जीव नैरयिकों को छोडकर तिर्यञ्च मनुष्य एवं देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं। पृथिवीकायिकों में अप्कायिकों में और वनस्पतिकायिकों में देवों की उत्पत्ति हो जाती है। तेजस्कायिकों में एवं वायुकायिकों में देवों की उत्पत्ति नहीं होती है। वहां तिर्यग्योनिकों से एवं संमूर्च्छिम और गर्भज मनुष्यों से आकरके ही जीव उत्पन्न होते हैं।

'अणंतरोववन्नगएगिंदियाणं भंते! कइ समुग्धाया पण्णत्ता' हे भदन्त जो अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीव हैं उनके कितने समुद्घात

तहेव' હે ગૌતમ! સામાન્ય ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ સમજી લેવું. અર્થાત્ આ ચોત્રીસમા શતકના પહેલા એકેન્દ્રિય શતકમાં પહેલા ઉદ્દેશામાં એકેન્દ્રિય જીવોનો ઉપપાત કહેલ છે, અને તે સંબંધમાં ત્યાં પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના છઠા વ્યુત્ક્રાંતિ પદની ભલામણ કરેલ છે, તેથી ત્યાં જે પ્રમાણે ઉત્પાદ કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે તે કથન અહિયાં પણ સમજવું. સામાન્ય રીતે એક ઈન્દ્રિયવાળા જીવો નૈરયિકોને છોડીને તિર્યંચ મનુષ્ય અને દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, પૃથ્વીકાયિકોમાં, અપ્કાયિકોમાં, અને વનસ્પતિકાયિકોમાં દેવોની ઉત્પત્તી પણ થાય છે, તેજસ્કાયિકોમાં અને વાયુકાયિકોમાં દેવોની ઉત્પત્તી થતી નથી. ત્યાં તિર્યંચ યોનિકોમાંથી અને સંમૂર્છિમ અને ગર્ભજ મનુષ્યોમાંથી આવીને જ જીવ ઉત્પન્ન થાય છે.

'अणंतरोववन्नगा एगिंदिया णं भंते! कइ समुग्घाया पण्णत्ता' હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિય જે જીવો છે. તેઓને કેટલા સમુદ્ઘાતો કહ્યા છે?

देन तुल्यस्थितिकाः तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति अस्त्येकके तुल्यस्थितिका इत्यन्तस्य प्रकरणस्य संग्रहो भवतीति। 'उत्तरमाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'अणंतरोववन्नगा एगिंदिया दुविहा पन्नत्ता' अनन्तरोपपन्नका एकेन्द्रिया द्विविधाः प्रज्ञप्ताः–कथिताः 'तं जहा' तद्यथा–'अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा' अस्त्येकके अनन्तरोपपन्नका एकेन्द्रियाः समायुष्काः समोपपन्नकाः 'अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा' अस्त्येकके समायुष्का विषमोपपन्नकाः

आप किस कारण से कहते हैं कि कितनेक अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीव ऐसे होते हैं जो समान स्थितिवाले होते हैं और तुल्यविशेषाधिक ज्ञानावरणीयादि कर्मका बन्ध करते हैं? और कितनेक अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीव जो समान स्थितिवाले तो होते हैं पर वे भिन्न भिन्न विशेषाधिक कर्मका बन्ध करते हैं? यहां यावत् पद से यही पाठ ग्रहीत हुआ है। इस सम्बन्ध में उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतम से कहते हैं– 'गोयमा! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया दुविहा पन्नत्ता' हे गौतम! अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीव दो प्रकार के कहे गये हैं। 'तं जहा' जैसे–'अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा' कितनेक अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीव ऐसे होते हैं जो बराबर की आयुवाले होते हैं और साथ साथ उत्पन्न होते हैं। तथा– कितनेक अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीव ऐसे होते हैं जो बराबर की आयुवाले तो होते हैं पर वे भिन्न भिन्न समय में उत्पन्न हुए होते

આપ એવું શા કારણથી કહો છો? કે કેટલાક અનંતરોપપન્નક એકઇન્દ્રિયવાળા જીવો એવા હોય છે, કે જેઓ સરખી સ્થિતિવાળા હોય છે. અને તુલ્ય વિશેષાધિક જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે કર્મનો બંધ કરે છે? તથા કેટલાક અનંતરોપપન્નક જીવો એવા હોય છે કે–જેઓ સમાન સ્થિતિવાળા હોય છે, પરંતુ તેઓ જુદા જુદા વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે? આ પાઠ અહિયાં યાવત્પદથી ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે. આ પ્રશ્નનોઉત્તર આપતાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે–'ગોયમા! અણંતરોવવણ્ણગા એગિંદિયા દુવિહા પણ્ણત્તા' હે ગૌતમ! અનંતરોપપન્નક એકઇન્દ્રિય જીવો બે પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે. 'તં જહા' તે આ પ્રમાણે છે.– 'અત્થેગઇયા સમાઉયા સમોવવન્નગા અત્થેગઇયા સમાઉયા વિસમોવવન્નગા, કેટલાક અનંતરોપપન્નક એકઇન્દ્રિયવાળા જીવો એવા હોય છે કે જેઓ સરખી આયુષ્યવાળા હોય છે, અને એક સાથે જ ઉત્પન્ન થાય છે. તથા કેટલાક અનંતરોપપન્નક એકઇન્દ્રિયવાળા જીવો એવા હોય છે કે

'तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा' तत्र खलु ये ते समायुष्काः समोपपन्नकाः 'ते णं तुल्लट्ठिइया तुल्ल विसेसाहियं कम्मं पकरेंति' ते खलु तुल्यस्थितिकाः तुल्य विशेषाधिकं कर्म ज्ञानावरणीयादिकं प्रकुर्वन्ति। ये समायुष्का अनन्तरोपपन्नक पर्यायमाश्रित्य एकसमयमात्रस्थितिकाः तत्परतः परम्परोपपन्नकव्यपदेशात्, समोपपन्नका एकस्मिन्नेव समये उत्पत्तिस्थानं प्राप्ता स्ते तुल्यस्थितयः समोपपन्नकत्वेन समयोगत्वात् तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति। 'तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा तेणं तुल्लट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' तत्र खलु ये ते समायुष्का विषमोपपन्नका स्ते खलु तुल्यस्थितिका विमात्रविशे-

---

हैं। 'तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा' इनमें जो ये समायुष्क समोपपन्नक अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीव हैं, 'ते णं तुल्लट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' तुल्यस्थितिवाले होते हैं और तुल्य विशेषाधिक ज्ञानावरणीय आदि कर्मका बन्ध करते हैं। तात्पर्य इस कथन का ऐसा है कि जो समायुष्क होते हैं अनन्तरोपपन्नक पर्याय को आश्रित करके एक समय मात्र की स्थितिवाले होते हैं क्यों कि इसके बाद वे परम्परोपपन्नक हो जाते हैं। समोपपन्नक एक समय में उत्पत्ति स्थान को प्राप्त हो जाते हैं इसलिये वे तुल्यस्थितिवाले होते हुए समोपपन्नक होने के कारण समान योगवाले होते हैं। इस कारण वे तुल्य और विशेषाधिक रूपसे ज्ञानावरणीय आदि कर्मप्रकृतियों का बन्ध करते हैं। 'तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' तथा जो समायुष्क होते हैं और

જેઓ સમાન આયુવાળા તો હોય છે, પરંતુ તેઓ જુદા જુદા સમયે ઉત્પન્ન થાય છે. ૧ 'तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा' તેઓમાં જે આ સમાન આયુષ્યવાળા અને સાથે ઉત્પન્ન થવાવાળા અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિયવાળા જીવો છે. 'ते णं तुल्लट्ठिइया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' તેઓ તુલ્ય સ્થિતિવાળા હોય છે, અને તુલ્ય વિશેષાધિક જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે કર્મનો બંધ કરે છે. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-જેઓ સમાન આયુષ્યવાળા હોય છે. તેઓ અનંતરોપપન્નક પર્યાયનો આશ્રય કરીને એક સમય માત્રની સ્થિતિવાળા હોય છે. કેમ કે તે પછી તેઓ પરંપરોપપન્નક થઈ જાય છે, સમોપપન્નક-એક સાથે ઉત્પન્ન થવાવાળા અને એક સમયમાંજ ઉત્પત્તી સ્થાનને પ્રાપ્ત કરી લે છે. તેથી તેઓ તુલ્યસ્થિતિવાળા હોવા છતાં સમાન ઉત્પત્તિવાળા હોવાને કારણે સમાન યોગવાળા હોય છે. તે કારણથી તેઓ તુલ્ય અને વિશેષાધિક પણાથી જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે કર્મપ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે. 'तत्थ णं जे ते समाउया

पाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति ये तु समायुष्का स्तथैव विषमोपपन्नका विग्रहगत्या समयादि भेदेनोत्पत्तिस्थानं प्राप्ता स्ते तुल्यस्थितय उत्पत्तिस्थानप्राप्तिवैषम्येणोत्पत्तिस्थानप्राप्तिकालवैषम्याद् विग्रहेऽपि च बन्धकत्वाद् विमात्र विशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति, विषमस्थितिक सम्बन्धि तु अन्तिमभङ्गद्वयमनन्तरोपपन्नकानां न सम्भवति अनन्तरोपपन्नकत्वे विषमस्थितेरभावात् इति। 'से

विषमोपपन्नक होते हैं वे यद्यपि तुल्यस्थितिवाले होते हैं पर विषमोपपन्नक होने के कारण विषमयोग युक्त होने से विमात्र विशेषाधिक कर्म का बन्ध करते हैं। तात्पर्य इस कथन का ऐसा है कि जो अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीव समान आयुवाले होते हैं वे तुल्य स्थितिवाले तो होते ही हैं परन्तु इन्हें जो विमात्र विशेषाधिक कर्म का बन्धक कहा गया है वह विषमोपपन्नक होने के कारण कहा गया है। विषमोपपन्नकता इनमें इसलिये आती है कि ऐसे ये जीव विग्रह गति से कि जिस में समयादिक का भेद होता है उत्पत्ति स्थान में आते हैं अतः वे तुल्यस्थितिवाले भले ही रहे परन्तु उत्पत्ति स्थान को प्राप्त होने की विषमता से उत्पत्ति काल की विषमता को लेकर और विग्रह में भी कर्मबन्ध करने के कारण ऐसे वे अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीव विमात्र विशेषाधिक कर्म के बन्धक होते हैं। विषमस्थिति से सम्बन्ध रखनेवाले अन्तिम दो भङ्ग अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीवों

विसमोववन्नगा तेणं तुल्लट्ठिइया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' तथा જેઓ સમાન આયુષ્યવાળા હોય છે, અને વિષમોપપન્નક હોય છે, તેઓ જોકે-સરખી સ્થિતિવાળા હોય છે, પરંતુ વિષમોપપન્નક હોવાના કારણથી વિષમ યોગવાળા હોવાથી વિમાત્રાથી વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે. આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે-જે અનંતરોપપન્નક એકઇન્દ્રિયવાળા જીવો સમાન આયુષ્યવાળા હોય છે. તેઓ તુલ્ય સ્થિતિવાળા તો હોય છે. પરંતુ તેઓને જે વિમાત્રાથી વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરવાવાળા કહ્યા છે, તે વિષમોપપન્નક હોવાના કારણે કહેલ છે. તેઓમા વિષમોપપન્નક પણું એ માટે આવે છે કે-એવા એ જીવો વિગ્રહ ગતિથી કે જેમાં સમય વિગેરેનો ભેદ હોય છે, ઉત્પત્તિ સ્થાનમાં આવે છે. તેથી તેઓ સમાનસ્થિતિવાળા રહેવા છતાં પણ આયુષ્યના ઉદયના વિષમ પણાને લીધે અને વિગ્રહગતિમાં પણ કર્મનો બંધ કરવાના કારણે એવા આ અનંતરોપપન્નક એકઇન્દ્રિયવાળા જીવો વિમાત્રાથી વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરવાવાળા હોય છે. વિષમ સ્થિતિથી સંબંધ રાખવાવાળા છેલ્લા બે ભંગો અનંતરોપપન્નક એકઇન્દ્રિયવાળા જીવોને સંભવતા નથી. કેમ કે અનંતરોપપન્નક હોવાથી તેઓમાં વિષમ સ્થિતિનો અભાવ રહે છે.

तेणट्ठेणं जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' तत्तेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते अस्त्येकके तुल्यस्थितिकाः तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति अस्त्येकके तुल्य-स्थितिका विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्तीति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति, हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नकैकेन्द्रियपृथि-व्यादि जीवविषये यद् देवानुप्रियेण कथितं तत्सर्वं सर्वथैव सत्यमिति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् यथासुखं विहरतीति ॥सू० २॥

इति श्री विश्वविख्यात–जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचक–पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यानैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक–श्रीशाहूछत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त–
'जैनाचार्य' पदभूषित — कोल्हापुरराजगुरु–
बालब्रह्मचारि–जैनाचार्य – जैनधर्मदिवाकर
पूज्य श्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री
"भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायाम् चतुस्त्रिंशत्तमे शतके
प्रथमे एकेन्द्रियशते द्वितीयोदेशकः
समाप्तः ॥३४–१–२॥

के संभवित नहीं होते हैं। क्यों कि अनन्तरोपपन्नक होने से इनमें विषमस्थिति का अभाव रहता है। 'से तेणट्ठेणं जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' इस कारण हे गौतम ! मैंने ऐसा कहा है कि कितनेक अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीव ऐसे होते हैं जो तुल्य स्थितिवाले होते हुए तुल्यविशेषाधिक कर्म का बन्ध करते हैं और कोई कोई अनन्तरो-पपन्नक एकेन्द्रिय जीव ऐसे होते हैं जो तुल्यस्थितिवाले होते हुए भी विमात्र विशेषाधिक कर्म का बन्ध करते हैं। 'सेवं भंते ! सेवं भंते !

'से तेणट्ठेणं जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति' ते कारणथी हे गौतम ! में એવું કહેલ છે કે-કેટલાક અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિયવાળા જીવો એવા હોય છે કે-જેઓ સરખી સ્થિતિવાળા હોવા છતાં સમાન અને વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે અને કોઈ કોઈ અનંતરોપપન્નક એકેન્દ્રિય વાળા જીવો એવા હોય છે કે જેઓ તુલ્ય સ્થિતિવાળા હોવા છતાં પણ વિમાત્રથી વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે.

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક પૃથ્વીકાયિક એકેન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે

त्ति' हे भदन्त ! अनन्तरोपपन्नक पृथिव्यादि एकेन्द्रिय जीवों के विषय में जो आप देवानुप्रिय ने कहा है वह सब सर्वथा ही सत्य है। इस प्रकार कहकर गौतमने भगवान् को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० २॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके चौतीसवें शतक के प्रथम एकेन्द्रियशतक का दूसरा उद्देशक समाप्त ॥३४-२॥

સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે, હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં કરેલ કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથીપોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્ર'ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ચોત્રીસમાં શતકમાં પહેલા એકઇન્દ્રિય શતકનો ॥બીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ૩૪-૨॥



अथ तृतीयोद्देशकः प्रारभ्यते

मूलम्—कइविहा णं भंते! परंपरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता? गोयमा! पंचविहा परंपरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता, तं जहा—पुढवीकाइया भेओ चउक्कओ जाव वणस्सइकाइयत्ति। परंपरोववण्णग अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए० एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमो उद्देसओ जाव लोग चरिमंतो त्ति। कहि णं भंते! परंपरोववन्नग बायरपुढवीकाइयाणं ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु एवं एएणं अभिलावेणं जहा पढमे उद्देसए जाव तुल्लट्ठिइय त्ति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥सू०१॥

चोत्तीसइमे सए पढमे एगिंदियसए तइओ उद्देसो समत्तो।३४—३।

छाया—कतिविधाः खलु भदन्त! परोपपन्नका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः? गौतम! पञ्चविधाः परम्परोपपन्नका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-पृथिवीकायिकाः भेदो चतुष्को यावद् वनस्पतिकायिका इति। परम्परोपन्नकाऽपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त! एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः समवहत्य यो भव्य एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या यावत्पाश्चात्ये चरमान्ते अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया उपपत्तुम् एवमेतेनाभिलापेन यथैव प्रथमोद्देशको यावल्लोकचरमान्त इति। कुत्र खलु भदन्त! परम्परोपपन्नक बादरपृथिवीकायिकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि? गौतम! स्वस्थानेनाष्टासु पृथिवीषु, एवमेतेनाभिलापेन यथा—प्रथमे उद्देशके यावत् तुल्यस्थितिका इति। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति॥ सू० १॥

चतुस्त्रिंशत्तमे शतके प्रथमे एकेन्द्रियशतके तृतीयोद्देशकः समाप्तः ॥३४।१।३॥

टीका:--'कइविहाणं भंते !' कतिविधाः खलु भदन्त ! 'परंपरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता' परम्परोपपन्नकाः एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः ? इति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा !' 'हे गौतम ! 'पंचविहा परंपरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता' पञ्चविधाः-पञ्चप्रकारकाः परम्परोपपन्नका उत्पत्ते द्वितीयादिसमये वर्त्तमाना एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः 'तं जहा' तद्यथा-'पुढवीकाइया' पृथिवीकायिकाः अप्कायिकाः तेजस्कायिकाः वायुकायिकाः, वनस्पतिकायिकाश्च । पृथिवीकायिकाः कतिविधाः प्रज्ञप्ताः गौतम ! द्विविधाः प्रज्ञप्ताः सूक्ष्माश्च बादराश्च एवं यावद्वनस्पतिकायिका अपि सूक्ष्म-

---

शतक ३४ उद्देशक ३

'कइविहा णं भंते ! परंपरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता' इत्यादि

टीकार्थ--'कइविहा णं भंते ! परपरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता' हे भदन्त ! एकेन्द्रिय परम्परोपपन्नक जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं-'गोयमा ! पंचविहा परंपरोववन्नगा एगिंदिया पन्नत्ता' हे गौतम ! एकेन्द्रिय परम्परोपपन्नक जीव पांच प्रकार के कहे गये हैं। जो जीव उत्पत्ति के द्वितीयादि समय में वर्त्तते है वे परम्परोपपन्नक कहे गये हैं। 'तं जहा' वे परम्परोपपन्नकों के पांच भेद इस प्रकार से हैं-पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक वायुकायिक और वनस्पतिकायिक, हे भदन्त ! पृथिवीकायिक कितने प्रकार के कहे गये हैं ? हे गौतम ! पृथिवीकायिक दो प्रकार के कहे गये हैं। वे दो प्रकार सूक्ष्म और बादर के भेद से होते है। इसी प्रकार से दो भेद यावत् वनस्पतिकायिकों तक जानना

ત્રીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'कइविहा णं भंते ! परंपरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—'कइविहाणं भंते ! परंपरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता' હે ભગવન્ એકઈન્દ્રિયવાળા પરંપરોપપન્નક જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે, આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'गोयमा ! पंचविहा परंपरोववण्णगा एगिंदिया पण्णत्ता' હે ગૌતમ ! એકઇન્દ્રિયવાળા પરંપરોપપન્નક જીવો પાંચ પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે. 'तं जहा' તે પરંપરોપપન્નકોના પાંચ ભેદો આ પ્રમાણે છે.—પૃથ્વીકાયિક, અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક અને વનસ્પતિકાયિક હે ભગવન્ પૃથ્વીકાયિકો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે હે ગૌતમ ! પૃથ્વીકાયિકો બે પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. તે બે પ્રકાર સૂક્ષ્મ, અને બાદર એ પ્રમાણે છે. આજ પ્રમાણે સૂક્ષ્મ અને બાદર એ બે ભેદો યાવત્ વનસ્પતિકાયિકો સુધી સમજવા.

बादरभेदेन द्विविधाः। परम्परोपपन्नकाः सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः कतिविधाः प्रज्ञप्ताः गौतम! द्विविधाः प्रज्ञप्ताः पर्याप्ताश्च अपर्याप्ताश्च एवं यावद्वनस्पतिकायिका अपि पर्याप्तापर्याप्तभेदेन द्विविधा भवन्तीति एतदाशयेनैवाह- 'भेदो चउक्को जाव वणस्सइकाइयत्ति' भेद श्चतुष्को यावद्वनस्पतिकायिका इति, वनस्पतिकायिकपर्यन्तानाम् एते चत्वारः सूक्ष्मबादरपर्याप्ता पर्याप्तरूपा भेदा ज्ञातव्या इति। 'परंपरोववन्नग अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइएणं भंते!' परम्परोपपन्नकापर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त! 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए' एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः 'समोहणित्ता जे भविए

चाहिये। हे भदन्त! परम्परोपपन्नक सूक्ष्म पृथिवीकायिक कितने प्रकार के कहे गये हैं? हे गौतम! ये दो प्रकार के कहे गये हैं एक पर्याप्तक और दूसरे अपर्याप्तक, वनस्पतिकायिक तक इसी प्रकार से दो भेद होते हैं एक पर्याप्तक और दूसरे अपर्याप्त इसी आशय को लेकर 'भेदो चउक्को जाव वणस्सइ काइयत्ति' सूत्रकार ने यह सूत्र कहा है। पृथिवीकायिक से लेकर वनस्पतिकायिक तक ये चार चार सूक्ष्म बादर पर्याप्तक और अपर्याप्तक भेद होते हैं।

'परंपरोववन्नग अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइएणं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए०' हे भदन्त! वह परम्परोपपन्नक अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव कि जिसने इस रत्नप्रभा पृथिवी के पूर्वचरमान्त में मारणान्तिक समुद्घात किया है। और समुद्घात करके इस रत्नप्रभापृथ्वी के पश्चिम चरमान्त में

હે ભગવન્ પરંપરોપપન્નક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે હે ગૌતમ! પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્તક એ બે ભેદથી પરંપરોપપન્નક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકો બે પ્રકારના છે. આજ પ્રમાણે આ બે ભેદો યાવત્ વનસ્પતિકાયિક સુધી સમજવા. અર્થાત્ અપ્કાયિકથી લઈને વનસ્પતિકાયિક સુધીના જીવો પર્યાપ્તક અને અપર્યાપ્તક એ બે ભેદવાળા હોય છે. તેમ સમજવું. આ અભિપ્રાયથી 'भेओ चउक्को जाव वणस्सइ काइयत्ति' સૂત્રકારે આ સૂત્રપાઠ કહેલ છે. પૃથ્વીકાયિકથી લઈને વનસ્પતિકાય સુધીના જીવને સૂક્ષ્મ, બાદર પર્યાપ્તક અને અપર્યાપ્તક એ રીતના ચાર ભેદો હોય છે.

'परंपरोववन्नगा अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयणं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते! समोहए' હે ભગવન્ તે પરંપરોપપન્નક અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ કે જેણે આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરેલ છે, અને મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને જે આ

इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्त सुहुमपुढवी· काइयत्ताए उववज्जित्तए' समवहत्य यो भव्य एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पाश्चात्ये चरमान्ते अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया उत्पत्तुं स खलु भदन्त! कियत्सामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येतेति प्रश्नः, उत्तरमाह-'एवं' इत्यादि, एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमो उद्देसओ' एवमेतेनाभिलापेन यथैव प्रथमोद्देशकः एतस्यैव चतुस्त्रिंशत्तमशतकस्य प्रथमोद्देशके यथा यथा यद् यत् कथितं तत्सर्वं तेनैव रूपेणेहापि ज्ञातव्यम्, कियत्पर्यन्तः प्रथमोद्देशक इहाध्येतव्य स्तत्राह-'जाव' इत्यादि, 'जाव लोगचरिमंते त्ति' यावत् लोकचरमान्त इति एकसामयिकेन यावत् चतुःसामयिकेन विग्रहेण उत्पद्येतेत्यारभ्य लोकचरमान्त पर्यन्तं सर्वमपि वक्तव्यम् किन्तु औत्तरे चरमान्ते समवहतानां पाश्चात्ये चरमान्ते च

अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न होने के योग्य है, वह कितने समयवाले विग्रह से वहां उत्पन्न होता है? इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमउद्देसओ' हे गौतम! इस अभिलाप द्वारा जैसा इसी चौंतीसवें शतक के पूरे प्रथम उद्देशक में जैसा जैसा जो जो कहा गया है वह सब उसी रूप से यहां पर भी जानना चाहिये। और ऐसाही यह सब कथन इस सम्बन्ध में 'जाव लोगचरिमंते त्ति!' यावत् लोक के चरमान्त तक करना चाहिये अर्थात् यह यावत् लोकके चरमान्त तक में एक समय वाले विग्रह से दो समयवाले विग्रह से तीन समयवाले विग्रह से और चार समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है किन्तु उत्तर लोक को

રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ વાયુકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય બનેલ છે, તે ત્યાં કેટલા સમયની વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે 'एएणं अभिलावेणं जहेव पढमो उद्देसओ' હે ગૌતમ! આ અભિલાપ દ્વારાજે રીતે આ ચોત્રીસમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં કહેવામાં આવેલ છે તે સઘળું કથન એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ સમજવું અને એજ પ્રમાણેનું તે સઘળું કથન આ વિષયમાં 'जाव लोगचरिमंते! त्ति' યાવત્ લોકના ચરમાન્ત સુધી કહેવું જોઈએ. અર્થાત્ તે યાવત્ લોકના ચરમાન્તમાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી અથવા બે સમયવાળી વિગ્રહગતિથી અથવા ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી અથવા ચાર સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે, પરંતુ ઉત્તર લોકના ચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત કરીને પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં ઉત્પન્ન થવાવાળાઓને એક સમયનો વિગ્રહ હોતો નથી આ કથન સુધી કહેવું જોઈએ. આ સંબંધમાં આ શતકના

समुत्पद्यमानानामेकसामयिको विग्रहो न भवति अतस्तेषां द्वयादि चतुःसामयिको विग्रहो भवति, उक्तं च प्रथमोद्देशकान्ते-'उत्तरिल्ले समोहयाणं पच्चत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमइओ विग्गहो नत्थि' इत्यन्तं वाच्यम् 'कहिं णं भंते! परंपरोववन्नग बायरपुढवीकाइयाणं ठाणा पन्नत्ता' कुत्र खलु भदन्त ! परम्परोपपन्नक बादरपृथिवीकायिकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि-कथितानीति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा! हे गौतम! 'सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु' स्वस्थानेन यत्र परम्परोपपन्नका जीवा आसते तत् स्वस्थानम् स्थानापेक्षया अष्टासु रत्नप्रभा दीषत्प्राग्भारा पृथिवी पर्यन्तेषु परम्परोपपन्नक बादरपृथिवीकायिकैकेन्द्रियजीवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानीत्युत्तरम्। 'एवं एएणं अभिलावेणं जहा पढमे उद्देसए जाव तुल्लट्ठिइय त्ति' एवमेतेन पूर्वोक्तेनाभिलापेन आलापकप्रकारेण यथैव

चरमान्त में समुद्घात करके पश्चिम चरमान्त में उत्पन्न होनेवालों को एकसमयका विग्रह नहीं होता हैं, यहां तक कहना चाहिये इस संबन्ध में इसी शतक के प्रथम उद्देशक के अन्त में भगवानने कहा है-'उत्तरिल्ले समोहयाणं पच्चत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमइओ विग्गहो नत्थि' 'कहिंणं भंते! परंपरोववन्नगा बायर पुढवीकाइयाणं ठाणा पन्नत्ता' हे भदन्त! परम्परोपपन्नक बादर पृथिवीकायिक के स्थान कहां पर कहे गये हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते है-'गोयमा! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु' हे गौतम! परम्परोपपन्नक बादर पृथिवीकायिकों के स्थान स्वस्थानकी अपेक्षासे आठ पृथिवियों में कहे गये हैं वे आठ पृथिवीयां रत्नप्रभापृथिवी से लेकर ईषत्प्राग्भारा पृथिवी तक हैं। 'एवं एएणं अभिलावेणं जहा पढमे उद्देसए जाव तुल्लट्ठिइयत्ति' इसी प्रकार से इस अभिलाप द्वारा इनके सम्बन्ध का सब प्रश्नोत्तर रूप कथन यावत् तुल्यस्थितिवाले परम्परो-

---

પહેલા ઉદ્દેશાના અંતમા ભગવાને કહ્યું છે કે-'उत्तरिल्ले समोहयाणं पच्चत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमइओ विग्गहो नत्थि।

'कहि णं भंते! परंपरोववन्नगा बायरपुढवीकाइयाणं ठाणा पण्णत्ता' હે ભગવન્ પરંપરોપપન્નક બાદર પૃથ્વીકાયિકોના સ્થાનો ક્યાં કહ્યા છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु' હે ગૌતમ! પરંપરોપપન્નક બાદર પૃથ્વીકાયિકોના સ્થાનો આઠ પૃથ્વીયોમાં કહ્યા છે. તે આઠ પૃથ્વીયો રત્નપ્રભા પૃથ્વીથી લઈને ઈષત પ્રાગ્ભારા પૃથ્વી સુધીની આઠ પૃથ્વીયો છે. 'एवं एएणं अभिलावेणं जहा पढमे उद्देसए जाव तुल्लट्ठिइयत्ति' એજ પ્રમાણે આ અભિલાપદ્વારા આ વિષય સંબંધમાં બીજા સઘળા પ્રશ્નોત્તર રૂપ કથન યાવત્ કેટલાક તુલ્ય સ્થિતિવાળા

अत्रैव शतकस्य प्रथमोद्देशके कथितं तथैव सर्वमिहापि ज्ञातव्यम् । कियत्पर्यन्तं प्रथमोद्देशकप्रकरणमवगन्तव्यं तत्राह—'जाव' इत्यादि, 'जाव तुल्लट्ठिइयत्ति' यावत् तुल्यस्थितिका इति, 'परंपरोपपन्नका एकेन्द्रिया-किं तुल्यस्थितिकाः तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति किं वा तुल्यस्थितिका विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ती त्यादिकं प्रश्नः हे गौतम ? तुल्यस्थितिका विमात्रविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ती त्याद्युत्तरादिकं च प्रथमोद्देशकवदेव ज्ञातव्यम् । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति हे भदन्त ! परम्परोपपन्नकैकेन्द्रियजीवविषये यद्देवानुप्रियेण कथितं तत्सर्वं सत्यमेवेति कथयित्वा गौतमो । भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति ॥सू० १॥

इति श्री - विश्वविख्यातजगद्वल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि - 'जैनाचार्य' पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां "श्री भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां चतुस्त्रिंशत्तमे शतके प्रथममेकेन्द्रियशतकस्य तृतीयोद्देशकः समाप्तः ॥३४।१।३॥

पन्नक अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव विमात्र विशेषाधिक कर्म का बन्ध करते हैं, यहां तक प्रथम उद्देशक के जैसा ही जानना चाहिये 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! परम्परोपपन्नक एकेन्द्रिय जीवों के विषय में जो आप देवानुप्रिय ने कहा है वह सब सर्वथा ही सत्य है । इस प्रकार कहकर गौतमने भगवान को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० १॥

तृतीय उद्देशक समाप्त ॥३४-३ ।

પરંપરોપપન્નક અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવો વિમાત્રાથી વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે. આ કથન સુધી પહેલા ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણેનું કથન સમજવું.

'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ પરંપરોપપન્નક એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી ગૌતમસ્વામી તપ અને સંયમથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ॥સૂ૦૧॥

॥ત્રીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત॥૩૪-૩॥

अथ चतुर्थोद्देशकः प्रारभ्यते-

मूलम्-'एवं सेसा वि अट्ठ उद्देसगा जाव अचरिमोत्ति' नवरं अणंतरसरिसा परंपरा परंपरसरिसा चरमा य अचरमा य एवं चेव। एवं एए एक्कारस उद्देसगा ॥३४-११-१॥

चोत्तीसइमे सए पढमे एगिंदियसए॥३४-४-११ उद्देसगा समत्ता

॥ पढमं एगिंदियसेढीसयं समत्तं ॥

छाया--'एवं शेषा अपि अष्टौ उद्देशका यावदचरम इति। नवरम् अनन्तरसदृशाः परम्पराः परम्परसदृशा श्चरमाश्चाचरमाश्च एवमेव। एवमेते एकादशोद्देशकाः ॥३४।१।११

चतुस्त्रिंशत्तमे शतके प्रथमे एकेन्द्रियशते ४-११ उद्देशाः समाप्ताः

प्रथममेकेन्द्रियश्रेणिशतकं समाप्तम् ॥

टीका--'एवं सेसा वि अट्ठउद्देसगा जाव अचरिमोत्ति' एवम्-परम्परोपपन्नकोद्देशकवदेव शेषा एतद्भिन्ना अष्टावपि उद्देशकाः यावद् अचरमोद्देशक इति। तत्राष्टौ चतुर्थत आरभ्य एकादश पर्यन्ताः-अनन्तरावगाढ ४-परम्परावगाढा ५-ऽनन्तराहारक ६-परम्पराहारक ७-ऽनन्तरपर्याप्त ८-परम्परपर्याप्त ९-चरमा १०ऽचरम ११ रूपा अवसेया इति। 'नवरं अणंतरा 'अणंतरसरिसा' अनन्तरो-

॥शतक ३४ उद्देशक ४-११॥

'एवं सेसावि अट्ठ उद्देसगा जाव अचरिमोत्ति' इत्यादि

टीकार्थ-इसी प्रकार से बाकी के भी आठ उद्देशक अचरम उद्देशक तक कह लेना चाहिये। वे आठ उद्देशक इस प्रकार से हैं-'अनन्तरावगाढ ४, परम्परावगाढ५, अनन्तराहारक ६, परम्पराहारक ७, अनन्तरपर्याप्त८, परम्परपर्याप्त ९, चरम १०, और अचरम ११ 'णवरं अणंतरा अणंतरसरिसा परंपरा परंपरसरिसा चरमा य अचरमाय एवं चेव' जिनने

॥ ચોથા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ ॥

'एवं सेसा अट्ठ उद्देसगा जाव अचरिमो त्ति' ઇત્યાદિ

આજ પ્રમાણે બાકીના આઠે ઉદ્દેશાઓ યાવત્ અચરમ ઉદ્દેશા સુધી કહેવા જોઈએ તે આઠ ઉદ્દેશાઓ આ પ્રમાણે છે. અનંતરાવગાઢ ૪ પરમ્પરાવગાઢ ૫ અનંતરહારક ૬ પરમ્પરહારક ૭ અનન્તર પર્યાપ્તક પરંપરપર્યાપ્તક ૯ ચરમ ૧૦ અને અચરમ ૧૧ 'णवरं' अणंतरसरिसा परम्परा, परम्परसरिसा

देशका यावन्त एते सर्वेऽपि अनन्तरोपपन्नकवदेव ज्ञातव्याः 'परंपरा परंपरसरिसा' परम्परोद्देशकाः परम्परोपपन्नकोद्देशक सदृशा ज्ञातव्याः चरमा अचरमा अपि एवमेव-परम्परोपपन्नकवदेवेति 'एवं एए एकारस उद्देसगा' एवं पूर्वोक्त प्रकारेण एते-पूर्वोक्ता एकादशोद्देशकाः चतुस्त्रिंशत्तमशतके प्रथमैकेन्द्रियशते भवन्तीति ॥३४।१।४-११।

इति श्री-विश्वविख्यातजगद्वल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि - 'जैनाचार्य' पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां "श्री भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां चतुस्त्रिंशत्तमे शतके प्रथमस्य एकेन्द्रियशतकस्य चतुर्थ एवं एकादशोद्देशकः समाप्त ॥३४-४-१-११॥

इति प्रथममेकेन्द्रिय श्रेणिशतकं समाप्तम्।

अनन्तरोद्देशक हैं वे सब अनन्तरोपपन्नक के जैसे हैं 'परंपरा परंपरसरिसा' एवं परम्परोद्देशक परम्परोद्देशक के जैसे हैं तथा चरम और अचरम भी इसी प्रकार अर्थात् परम्परोपपन्नक के जैसे ही जानना चाहिये। 'एवं एए एकारस उद्देसगा' इस प्रकार से ये ३४ वें शतक में प्रथम एकेन्द्रिय शतक में ११ उद्देशक हैं ॥सू० १॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके चोतीसवें शतक का चार से ग्यारहवां उद्देशक समाप्त ॥३४-१-४-११॥

यह पहला एकेन्द्रियश्रेणि शतक समाप्त हुआ॥

चरमा य अचरमा य एवं चेव' જેટલા અનંતરોદ્દેશક છે, તે બધા અનંતરોપપન્નક પ્રમાણે છે. તેમ સમજવું. એવં પરંપરોદ્દેશક પરમ્પરોપન્નકોદ્દેશક પ્રમાણે છે. તથા ચરમ અને અચરમ પણ આજ પ્રમાણે સમજવા 'एवं एए एक्कारस उद्देसगा' આ રીતે આ ૩૪ ઉદ્દેશાઓ કહ્યા છે. ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત "ભગવતીસૂત્ર"ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ચોત્રીસ શતકના ચારથી અગીયાર ઉદ્દેશા સમાપ્ત ॥૩૪-૧-૪-૧૧॥

પહેલુ એકેન્દ્રિયશતક સમાપ્ત થયું. ॥

द्वितीयमेकेन्द्रियशतं प्रारभ्यते

मूलम्–कइविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता? गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता। भेओ चउक्कओ जहा–कण्हलेस्स एगिंदियसए जाव वणस्सइकाइयत्ति। कण्हलेस्स अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइए णं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले० एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहि उद्देसओ जाव लोगचरिमंते ! त्ति, सव्वत्थ कण्हलेस्सेसु चेव उववाएयव्वो। कहि णं भंते ! कण्हलेस्स अपज्जत्तबायरपुढवीकाइयाणं ठाणा पन्नत्ता? एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहि उद्देसओ जाव तुल्लट्ठिइयत्ति। सेवं भंते ! सेवं भंते! त्ति। एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमं सेढिसयं तहेव एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा ॥३४–१॥

बिइयं एगिंदियसेढिसयं समत्तं ॥३४–२॥

छाया––कतिविधाः खलु भदन्त ! कृष्णलेश्या एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः? गौतम ! पञ्चविधाः कृष्णलेश्या एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः भेदश्चतुष्को यथा कृष्णलेश्यैकेन्द्रियशते यावद्वनस्पतिकायिका इति। कृष्णलेश्याऽपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पौरस्त्ये० एवमेतेनाभिलापेन यथैवौधिकोद्देशको यावल्लोकचरमान्ते इति, सर्वत्र कृष्णलेश्येष्वेवोपपातयितव्यः। कुत्र खलु भदन्त ! कृष्णलेश्याऽपर्याप्त बादरपृथिवीकायिकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, एवमेतेनाभिलापेन यथा–औधिकोद्देशको यावत् तुल्यस्थितिका इति, तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति। एवमेतेनाभिलापेन यथैव प्रथमं श्रेणिशतं तथैव एकादशोद्देशका भणितव्याः ॥३४–२–११॥

द्वितीयमेकेन्द्रियश्रेणीशतं समाप्तम् ।३४–२॥

टीका––'कइविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता' कतिविधाः कतिप्रकारकाः खलु भदन्त ! कृष्णलेश्यैकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः–कथिताः ? इति

प्रश्नः, भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'पंचविहा कण्ह-लेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता' पञ्चविधाः–पञ्चप्रकारकाः पृथिवीकायिकादि वनस्पतिकायिकान्ताः कृष्णलेश्या एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः कथिताः। 'भेओ चउक्कओ जहा कण्हलेस्सएगिंदियसए जाव वणस्सइकाइयत्ति' भेद श्चतुष्कको यथा कृष्णलेश्यैकेन्द्रियशते त्रयस्त्रिंशत्तमे शतके द्वितीये एकेन्द्रियशते यावद् वनस्पतिकायिका इति ! कृष्णलेश्य पृथिवीकायिकादारभ्य कृष्णलेश्य वनस्पतिकायिकानां पञ्चानामपि सूक्ष्म-बादर-पर्याप्ता-ऽपर्याप्तरूपा चत्वारो भेदाः, इति

शतक ३४ में दूसरा एकेन्द्रिय शतक २

'कइविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता' ३४–११

टीकार्थ––'कइविहा णं भंते! कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता' हे भदन्त! 'कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रिय जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं? 'गोयमा !' पंचविहा कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता' हे गौतम ! कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रिय जीव पांच प्रकार के कहे गये हैं। और ये पृथिवीकायिक से लेकर वनस्पतिकायिक तक हैं। 'भेओ चउक्कओ जहा कण्हलेस्स एगिंदियसए जाव वणस्सइकाइयत्ति' इन के चार भेद कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रियशतक में कहे अनुसार यावत् वनस्पतिकायिक तक जानना चाहिये अर्थात् ३३ वें शतक में द्वितीय एकेन्द्रिय शतक में यावत् वनस्पतिकायिक तक पांचों कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रियों के सूक्ष्म बादर पर्याप्त और अपर्याप्त रूप से

બીજા એકેન્દ્રિય શતકનો પ્રારંભ —

'कइविहा णं भंते ! कण्हलेस्स एगिंदिया पण्णत्ता' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ– 'कइविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता' હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે? 'गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्स एगिंदिया पन्नत्ता' હે ગૌતમ ! કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય જીવો પાંચ પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. અને તે પૃથ્વીકાયિકથી લઈને વનસ્પતિ કાયિક સુધીના સમજવા. 'भेओ चउक्कओ जहा कण्हलेस्सएगिंदियसए जाव वणस्सइकाइयत्ति' કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય શતકમાં કહ્યા પ્રમાણે તેઓના ચાર ભેદો યાવત્ વનસ્પતિકાય સુધી સમજવા. અર્થાત્ ૩૩ તેત્રીશમાં શતકના બીજા એકેન્દ્રિય શતકમાં યાવત્ વનસ્પતિકાય સુધી પાંચે પ્રકારના કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય જીવને સૂક્ષ્મ, બાદર, પર્યાપ્તક અને અપર્યાપ્તક રૂપથી ચાર ભેદો જે પ્રમાણે કહ્યા છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ સમજવા.

चत्वारो भेदा भवन्तीति। 'कण्हलेस्स अपज्जत्त सुहुमपुढवीकइए णं भंते!' कृष्णलेश्याऽपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त! 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले०' एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पौरस्त्ये० 'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिउद्देसओ जाव लोगचरिमंतेत्ति' एवमेतेनाभिलापेन यथैव औघिकोद्देशको यावल्लोकचरमान्त इति, 'सव्वत्थ कण्हलेस्सेसु चेव उववाएयव्वो' सर्वत्र कृष्णलेश्येष्वेव उपपातयितव्यः। यथैवौघिक उद्देशकः अत्रैव चतुस्त्रिंशत्तमशतकगते प्रथमे एकेन्द्रियशतके सामान्येन-अपर्याप्त सूक्ष्म-पृथिवीकायिकप्रकरणोक्तं सर्वं प्रकरणं वाच्यम्, विशेष एतावानेव यत्

चार भेद जैसे कहे गये हैं वैसे ही वे यहां पर भी जानना चाहिये। 'कण्हलेस्स अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते! हे भदन्त! वह कृष्ण-लेश्यावाले अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव कि जिसने 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले' इस रत्नप्रभापृथिवी के पूर्व चरमान्त में मारणान्तिक समुद्घात किया है और पश्चिम चरमान्त में उत्पन्न होने के योग्य हुआ है तो हे भदन्त! ऐसा वह जीव वहां कितने समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है? इत्यादि पाठ द्वारा जैसा औघिक उद्देशक में कहा गया है वैसा ही लोक के चरमान्तसंबंधी प्रकरण तक समझना चाहिये। 'सव्वत्थ कण्हलेस्सेसु चेव उववाएयव्वो' और इन सबका सर्वत्र कृष्णलेश्यावालों में ही उपपात कहना चाहिये। तात्पर्य कहने का यही है कि जिस प्रकार से ३४ वें शतक गत प्रथम एकेन्द्रिय शतक में सामान्य से अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक के प्रकरण में कहा

'कण्हलेस्स अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइयाणं भंते! હે ભગવન્ તે કૃષ્ણ-લેશ્યાવાળા અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ કે જેણે 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले' આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય હોય તો હે ભગવન્ એવા તે જીવ ત્યાં કેટલા સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે? ઇત્યાદિ પાઠદ્વારા ઔઘિક ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે એજ પ્રમાણે લોકના ચરમાન્ત સુધી સમજવું જોઈએ. 'सव्वत्थ कण्हलेस्सेसु चेव उववाएयव्वो' અને આ બધાનો ઉપપાત બધે ઠેકાણે કૃષ્ણલેશ્યાવાળામાં કહેવો જોઈએ. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-જે પ્રમાણે ચોત્રીસમાં શતકના પહેલા એકેન્દ્રિય શતકમાં સામાન્ય પણાથી અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકના પ્રકરણમાં કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણેનું સઘળું પ્રકરણ અહિયાં પણ કહેવું જોઈએ.

अत्र कृष्णलेश्यविशेषणविशिष्टाः सर्वे पृथिव्यादयो वाच्याः, उपपातोऽपि सर्वेषां सर्वत्र कृष्णलेश्येष्वेव कर्त्तव्यः। कियत्पर्यन्तमित्याह-'जाव लोगचरिमंते' यावल्लोकचरमान्त इति, लोक-चरमान्तसूत्रपर्यन्तं संग्राह्यम्। जीवो यस्यां लेश्यायां म्रियते तस्यामेवोत्पद्यते, इति न्यायात् कृष्णलेश्य जीवानां कृष्णलेश्येष्वेव उपपातो वर्णनीयः, इति भावः। 'कहि णं भंते! कण्हलेस्स अपज्जत्तबायरपुढवीकाइयाणं ठाणा पन्नत्ता' कुत्र खलु भदन्त! कृष्णलेश्य पर्याप्त बादरपृथिवीकायिकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानीति प्रश्नः स्वस्थानापेक्षयाऽष्टसु पृथिवीषु इत्युत्तरम् इत्यादि, 'एवं एएणं अभिलावेणं

गया है वही सब प्रकरण यहां वाच्य हुआ है। विशेषता उस प्रकरण से इस प्रकरण में केवल इतनी सी है कि यहां पर समस्त पृथिवीकायिक आदि एकेन्द्रिय जीव कृष्णलेश्या रूप विशेषण से विशिष्ट हुए हैं। तथा इन सब का उपपात भी सर्वत्र कृष्णलेश्यावालों में ही कर्त्तव्य हुआ है। ऐसा यह सब उपपात सम्बन्धी कथन लोक के चरमान्त प्रकरण तक गृहीत हुआ है। क्यों कि जीव जिस लेश्या में मरता है वह उसी लेश्या में उत्पन्न होता है। इस न्याय के अनुसार कृष्णलेश्यावाले जीवोंका उपपात कृष्णलेश्यावालों में ही होता है। ऐसा वर्णन करलेना चाहिये।

'कहि णं भंते! कण्हलेस्स अपज्जत्त बायरपुढवीकाइयाणं ठाणा पण्णत्ता' हे भदन्त! कृष्णलेश्यावाले अपर्याप्त बादर पृथिवीकायिकों के स्थान कहां पर कहे गये हैं? इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-हे गौतम! स्वस्थान की अपेक्षा से उनके स्थान आठों पृथिवियों में अर्थात्

ते प्रकरण करतां आ प्रकरणमां विशेषता केवळ एटली ज छे के अहियां सघळा पृथ्वीकायिको विगेरे एकेन्द्रिय जीवो कृष्णलेश्याना विशेषणथी कहेवाना छे. तथा आ बधानो उपपात पण बधे ज कृष्णलेश्यावाळाओमां ज कहेवो जोईए. आ प्रमाणे आ सघळुं उपपात संबंधी कथन लोकना चरमान्त सूत्र सुधी ग्रहण करायेल छे. केम के जीव जे लेश्यामां मरणपामे छे, ते एज लेश्यामां उत्पन्न थाय छे. आ न्याय प्रमाणे कृष्णलेश्यावाळा जीवोनो उपपात कृष्णलेश्यावाळाओमां ज थाय छे ए प्रमाणेनुं वर्णन करी लेवुं जोइए.

'कइ णं भंते! कण्हलेस्स अपज्जत्त बायरपुढवी काइयाणं ठाणा पण्णत्ता' हे भगवन् कृष्णलेश्यावाळा अपर्याप्तक बादर पृथ्वीकायिकोना स्थानो क्यां कहेवामां आवेल छे? आ प्रश्नना उत्तरमां प्रभुश्री गौतमस्वामीने कहे छे छे के-हे गौतम! स्वस्थाननी अपेक्षाथी तेओना स्थानो रत्नप्रभा पृथ्वीथी

जहा ओहि उद्देसओ जाव तुल्लट्ठिइयत्ति' एवमेतेन पूर्वोक्तेनाभिलापेन-अभिलापप्रकारेण यथा अस्य औघिकः प्रथमोद्देशकश्चतुस्त्रिंशत्तमस्य शतकस्य प्रथमे एकेन्द्रियशते प्रथमोद्देशके, यावत् तुल्यस्थितिका इति, 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति यावद्विहरति, 'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमं सेढिसयं तहेव एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा' एवमेतेनाभिलापेन यथैव प्रथमं श्रेणिशतकं तथैव एकादशोद्देशका भणितव्याः ॥सू० १॥

इति श्री - विश्वविख्यातजगद्वल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि - 'जैनाचार्य' पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां 'श्री भगवतीसूत्रस्य' प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां चतुस्त्रिंशत्तमे शतके द्वितीयमेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥३४-२॥

रत्नप्रभा पृथिवी से लेकर ईषत्प्राग्भारा पृथिवी तक में कहे गये हैं इत्यादि 'एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहिओ उद्देसओ जाव तुल्लठिइयत्ति' इसी प्रकार पूर्वोक्त अभिलाप से जैसा इसका चौंतीसवें शतक का प्रथम उद्देशक कहा गया है एकेन्द्रिय शतक में यावत् तुल्य स्थितिवाले प्रकरण तक कहा गया है वैसा ही यहां पर भी तुल्य स्थिति प्रकरण तक कह लेना चाहिये। 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! जैसा आपने कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

લઈને ઈષત્પ્રાગ્ભારા પૃથ્વી સુધીમાં કહેલ છે. ઈત્યાદિ 'एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहिओ उद्देसओ जाव तुल्लट्ठिइयत्ति' આજ પ્રમાણે આ પહેલા કહેલ અભિલાપ પ્રમાણે જે રીતે ચોત્રીસ ૩૪ મા શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં કહેવામાં આવેલ છે, અર્થાત્ એકેન્દ્રિય શતકમાં યાવત્ તુલ્ય સ્થિતિવાળાનાકથન સુધી કહેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન અહિયાં પણ તુલ્યસ્થિતિવાળા કથન સુધી કહેવું જોઈએ.

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણેનું કથન આ વિષય સંબધમાં કરેલ છે, તે સઘળું કથન સત્ય છે, હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાનપર બિરાજમાન થયા.

'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमं सेढिसयं तहेव एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा' इस अभिलाप से जैसा प्रथम श्रेणिशतक कहा गया है उसी प्रकार से इसके भी ११ उद्देशक कह लेना चाहिये।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके चौतीसवें शतकका द्वितीय एकेन्द्रिय शतक समाप्त ॥३४-२॥

'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमं सेढिसयं तहेव एक्कारसउद्देसगा भाणियव्वा' આ અભિલાપથી પહેલા શ્રેણી શતકમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે આના ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત "ભગવતીસૂત્ર"ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ચોત્રીસમા શતકનું બીજુ એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત



'अह तइय चउत्थ पंचम सयाइं'

मूलम्-एवं नीललेस्सेहि वि तइयं सयं। काउलेस्सेहि वि सयं एवं चेव चउत्थं सयं। भवसिद्धिएहिं वि सयं। पंचमं सयं समत्तं।सू. २।

छाया—एवं नीललेश्यैरपि तृतीयं शतम् ॥३॥ कापोतलेश्यैरपि शतम् एवमेव चतुर्थं शतम् ॥४॥ भवसिद्धिकैरपि शतम्। पञ्चमं शतं समाप्तम् ॥सू०१॥३४५

टीका:—'एवं नीललेस्सेहि वि तइयं सयं' एवं यथा कृष्णलेश्यैकेन्द्रियस्य शतमेकादशोद्देशकयुतं भणितं तथैव नीललेश्यैरपि तृतीयं शतम् एकादशोद्देशकयुक्तं भणितव्यम् ॥३४।३।

'काउलेस्से वि सयं एवं चेव चउत्थं सयं' कापोतलेश्यैरपि शतम् एवमेव-तृतीयशतवदेव चतुर्थं शतमपि भणितव्यम्। एवमेकादशोद्देशकयुक्तं चतुर्थं कापोतलेश्यशतं निरूपणीयमिति चतुर्थं शतं समाप्तम् ।३४।४

'भवसिद्धिएहि वि सयं' एवं यथा नीललेश्यादिभिः शतं भणितं तथैव भवसिद्धिकैरपि शतं भणितव्यम्। तथाहि-भवसिद्धिकैकेन्द्रियाः खलु भदन्त!

तीसरे से पांच तक के तीन उद्देशक

'एवं नीललेस्सेहिं वि तइयं सयं' इत्यादि

टीकार्थ-जिस प्रकार से ११ उद्देशों से युक्त कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रिय जीव का शतक कहा गया है उसी प्रकार से नीललेश्यावालों के सम्बन्ध में भी ११ उद्देशकों से युक्त तृतीय शतक भी कहलेना चाहिये।३४-३।

'काउलेस्सेहि वि सयं एवं चेव चउत्थं सयं' इसी प्रकार से कापोत-लेश्यावालों के सम्बन्ध में भी ११ उद्देशकों से युक्त चतुर्थ शतक भी कह लेना चाहिये।३४-४।

'भवसिद्धिएहि वि सयं' जिस प्रकार से नीललेश्यादिवालों के सम्बन्ध में शतक कहे गये है उसी प्रकार से भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीवों के

ત્રીજા, ચોથા, અને પાંચમા શતકનો પ્રારંભ—

'एवं नीललेस्सेहिं वि तइयं सयं' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—જે પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય જીવના સંબંધમાં ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાવાળું શતક કહેલ છે, એજ પ્રમાણે નીલલેશ્યાવાળાઓના સંબંધમાં પણ ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાવાળું ત્રીજું શતક કહેવું જોઈએ ।।૩૪-૩।।

'काउलेस्सेहि वि सयं एवं चेव चउत्थं सयं' આજ પ્રમાણે કાપોતિકલેશ્યાવાળા જીવોના સંબંધમાં પણ ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓવાળું ચોથું શતક પણ કહેવું જોઈએ. ।।૩૪-૪।।

'भवसिद्धिएहिं वि सयं' જે પ્રમાણે નીલલેશ્યા વિગેરે વાળાઓના સંબંધમાં શતક કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે ભવસિદ્ધિક એકઇન્દ્રિયવાળા

कति प्रकारकाः प्रज्ञप्ताः हे गौतम ! पञ्चप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-पृथिवीकायिका यावद्वनस्पतिकायिकाः। भवसिद्धिक पृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! कतिप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः हे गौतम ! द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-सूक्ष्माश्च बादराश्च। एवमेव यावद्वनस्पतिकायिका अपि। भवसिद्धिकसूक्ष्मपृथिवीकायिकाः कतिविधाः प्रज्ञप्ताः हे गौतम ! द्विविधाः प्रज्ञप्ताः अपर्याप्ताश्च पर्याप्ताश्च एवं यावद्वनस्पतिकायिकाः। हे भदन्त ! भवसिद्धिकापर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकः एतस्या रत्नप्रभाया पौरस्त्ये चरमान्ते समवहतः समवहत्य एतस्या रत्नप्रभायाः पौरस्त्ये चरमान्ते भवसिद्धिकापर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकतया समुत्पत्तियोग्यो विद्यते स खलु कियत्सामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येते-

सम्बन्ध में भी शतक कहलेना चाहिये। तथा च-हे भदन्त ! भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं ? हे गौतम ! वे पांच प्रकार के कहे गये हैं। जैसे-पृथिवीकायिक से लेकर यावत् वनस्पतिकायिक तक हे भदन्त ! भवसिद्धिक पृथिवीकायिक कितने प्रकार के कहे गये हैं ? हे गौतम ! दो प्रकार के कहे गये हैं। सूक्ष्म और बादर इसी प्रकार से ये दो भेद यावत् वनस्पतिकायिक जीवों के भी जानना चाहिये। भवसिद्धिक सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं ? हे गौतम ! दो प्रकार के कहे गये हैं। पर्याप्त और अपर्याप्त इसी प्रकार के दो भेद यावत् बादरवनस्पतिकायिक तक जानना चाहिये। हे भदन्त वह भवसिद्धिक अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव जो इस रत्नप्रभापृथिवी के पूर्व चरमान्त में समवहत हुआ है और समवहत होकर उसी पूर्व चरमान्त में भवसिद्धिक अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक

જીવના સંબંધમાં પણ શતક કહેવું જોઈએ. તથા હે ભગવન્ ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા ? છે હે ગૌતમ ! તેઓ પાંચ પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે. જેમ કે-પૃથ્વીકાયિકથી લઈને યાવત્ વનસ્પતિ કાય સુધીના પાંચ પ્રકાર સમજવા. હે ભગવન્ ભવસિદ્ધિક પૃથ્વીકાયિક જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? હે ગૌતમ ! તેઓ બે પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? તે બે પ્રકારો પર્યાપ્તક અને અપર્યાપ્તક એ રીતે છે. આજ પ્રમાણેના બે ભેદો યાવત્ વનસ્પતિકાય સુધી સમજવા.

હે ભગવન્ તે ભવસિદ્ધિક અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવ કે જેણે આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત કરેલ છે, અને સમુદ્ઘાત કરીને આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં ભવસિદ્ધિક અપર્યાપ્ત સૂક્ષ્મ

त्यारभ्य तुल्यस्थितिकाः तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्ति एतत्पर्यन्तमेतस्य प्रथम शतवदेव सर्वमिहापि, एवमेकादशोद्देशकाः पूर्ववदेव भणितव्याः तदित्थम् एकादशोद्देशकयुक्तं पंचमं भवसिद्धिकशतं समाप्तं भवति ॥सू० १॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित—कोल्हापुरराजगुरु-
बालब्रह्मचारि — जैनाचार्य — जैनधर्मदिवाकर
-पूज्यश्री घासिलालव्रतिविरचितायां श्री "भग-
वतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायां चतुस्त्रिंशत्तमशतके
पञ्चमसेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥३४।५॥

रूप से ही उत्पन्न होने के योग्य हुआ हैं वह कितने समयवाले विग्रह से वहां उत्पन्न होता है ? इस प्रश्न सूत्र से लेकर 'तुल्यस्थितिवाले तुल्य विशेषाधिक कर्म का बन्ध करते हैं' यहां तक का समस्त कथन इसी के प्रथम शत के जैसा ही यहां पर भी जानना चाहिये और यहां पर भी ११ उद्देशक पूर्व के जैसे ही कहलेना चाहिये। इस प्रकार यह पांचवां भवसिद्धिक शतक जो कि ११ उद्देशकों युक्त कहा गया है समाप्त होता है।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके चौतीसवें शतक का
पांचवां एकेन्द्रिय शतक समाप्त ॥३४-५॥

પૃથ્વીકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય બનેલ છે, તેઓ ત્યાં કેટલાસમયની વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્ન સૂત્રથી લઈને તુલ્ય સ્થિતિવાળા તુલ્ય વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે. આ કથન સુધીનું સઘળું કથન આ ૩૪ ચોત્રીસમા શતકના ત્રીજા ઉદ્દેશાના પહેલા એકેન્દ્રિય શતકમાં કહ્યાપ્રમાણે છે તેમ સમજવું અને અહિયાં પણ ૧૧ અગીયાર ઉદ્દેશાઓ પહેલા કહ્યા પ્રમાણે કહ્યા છે તેમ સમજવું. આ રીતે આ પાંચમુ ભવસિદ્ધિક શતક કે જે ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓવાળું છે. તે સમાપ્ત થયું છે.

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર શ્રી પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્રની
પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના તેત્રીસમા શતકનું પાંચમું
એકેન્દ્રિયશતક સમાપ્ત ॥૩૪-૫॥

अथ षष्ठं शतकं प्रारभ्यते

मूलम्—कइविहा णं भंते! कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता एवं जहेव ओहि उद्देसओ। कइविहा णं भंते! अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता जहेव अणंतरोववन्नगा उद्देसओ ओहिओ तहेव। कइविहा णं भंते! परंपरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धिय एगिंदिया पन्नत्ता ओहिओ भेओ चउक्कओ जाव वणस्सइकाइय त्ति। परंपरोववन्न कण्हलेस्स भवसिद्धिय अपज्जत्तसुहुमपुढवीकाइए णं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव लोयचरिमंते त्ति। सव्वत्थ कण्हलेस्सेसु भवसिद्धिएसु उववाएयव्वो। कहि णं भंते! परंपरोववन्न कण्हलेस्स भवसिद्धिय पज्जत्तबायरपुढवीकाइया णं ठाणा पन्नत्ता एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव तुल्लट्ठिइयत्ति। एवं एएणं अभिलावेणं कण्हलेस्स भवसिद्धिय एगिंदिएहिं वि तहेव एक्कारस उद्देसगसंजुत्तं छट्ठं सयं ।सू०१।

चोत्तीसइमे सए छट्ठं एगिंदियसयं समत्तं

छाया—कतिविधाः खलु भदन्त! कृष्णलेश्यभवसिद्धिका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः? यथैवौघिकोद्देशकः। कतिविधाः खलु भदन्त! अनन्तरोपपन्नकाः कृष्णलेश्या भवसिद्धिका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः यथैवानन्तरोपपन्नकोदेशक औघिकस्तथैव। कतिविधाः खलु भदन्त! परम्परोपपन्नकाः कृष्णलेश्या भवद्धिकैकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः? गौतम! पञ्चविधाः परम्परोपपन्नकाः कृष्णलेश्य भवसिद्धिकैकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः औघिको भेद श्चतुष्को यावद्वनस्पतिकायिकाः इति। परंपरोपपन्न कण्हलेश्यभवसिद्धिकापर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त! एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः एवमेतेनाभिलापेन यथैवौघिक उद्देशकः यावल्लोकचरमान्त इति। सर्वत्र कृष्णलेश्येषु भवसिद्धिकेषु उपपातयितव्यः कुत्र खलु भदन्त! परम्परोपपन्न कृष्णलेश्यभवसिद्धिकपर्याप्तबादरपृथिवी-

कायिकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि एवमेतेनाभिलापेन यथैवौघिक उद्देशको यावत् तुल्यस्थितिका इति। एवमेतेनाभिलापेन कृष्णलेश्य भवसिद्धिकैकेन्द्रियैरपि तथैव एकादशोद्देशकसंयुक्तं षष्ठं शतम् ॥सू० १॥

चतुस्त्रिंशत्तमे शतके षष्ठमेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥३४।६।

टीका—'कइविहा णं भंते! कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता' कतिविधाः-कतिप्रकारकाः खलु भदन्त! कृष्णलेश्या भवसिद्धिका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः? इति प्रश्नः, उत्तरमाह-'एवं जहेव ओहियउद्देसओ' एवं यथैवौघिकोद्देशकः, अस्यैव चतुस्त्रिंशत्तमशतकस्य औघिके उद्देशके-प्रथमे उद्देशके यथा

शतक ३४ छठा शतक

'कइविहा णं भंते! कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया' इत्यादि

टीकार्थ-हे भदन्त! कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक एकेन्द्रियजीव कितने प्रकार के कहे गये हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'एवं जहेव ओहिओ' हे गौतम! जैसे ३४ वे शतक के प्रथम उद्देशक में भेदों का कथन किया गया है। उसी प्रकार से यहां पर पृथिवीकायिक से लेकर यावत् वनस्पतिकायिक तक पांच भेद इसके जानना चाहिये।

'कइविहा णं भंते! अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्स भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता' हे भदन्त! अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'जहेव अणंतरोववन्न उद्देसओ ओहिओ तहेव' हे गौतम! जैसा इसी ३४ वें शतक का अनन्तरोपपन्नक उद्देशक कहा गया है। उसी

છઠા એકેન્દ્રિયશતકનો પ્રારંભ—

'कइविहा णं भंते! कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકઇન્દ્રિયવાળા જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે-'एवं जहेव ओहिय उद्देसओ' હે ગૌતમ! ૩૪ ચોત્રીસમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણે ભેદોનું કથન કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન અહિયાં પૃથ્વીકાયિકથી લઈને યાવત્ વનસ્પતિકાય સુધી પાંચ ભેદો સમજવા.

'कइविहा णं भंते! अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता' હે ભગવન્ અનંતરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકઇન્દ્રિયવાળા જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે 'जहेव अणंतरोववन्न उद्देसओ ओहिओ तहेव' હે ગૌતમ! આ ચોત્રીસમા

भेदाः कथिता स्तथैवात्रापि पञ्चविधा ज्ञातव्याः पृथिवीकायिका यावद्वनस्पतिकायिका इति। 'कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पन्नत्ता' कतिविधाः-कतिप्रकारकाः खलु भदन्त ! अनन्तरोपपन्नकाः कृष्णलेश्या भवसिद्धिका एकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः कथिताः ? इति प्रश्नः, उत्तरमाह'-जहेव' इत्यादि, 'जहेव अणंतरोववन्न उद्देसओ ओहिओ तहेव' यथैवानन्तरोपपन्नोद्देशक औघिक स्तथैव चतुस्त्रिंशच्छतकस्य औघिके द्वितीये अनन्तरोपपन्नकप्रकरणे यथा कथितं तथैवात्रापि सर्वं ज्ञातव्यम्। कतिप्रकारका इति प्रश्नस्य पञ्चप्रकारकाः तद्यथा-पृथिवीकायिका यावद्वनस्पतिकायिकाः, अनन्तरोपपन्न कृष्णलेश्यभवसिद्धिक पृथिवीकायिकाः कति प्रकारका इति प्रश्नस्य द्विप्रकारकाः सूक्ष्माश्च बादराश्च एवं यावद्वनस्पतिकायिकाः। अत्र द्विपद एव भेदो वर्णयितव्यः अनन्तरोपपन्नकत्वादेव पर्याप्तापर्याप्तभेदयोरभावादिति। अन्यत्सर्वं प्रथमोद्देशकवदेव ज्ञातव्यम्॥ 'कइविहा णं भंते ! परंपरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धि

प्रकार से यहां पर भी सब प्रकरण जानना चाहिये। जैसे-कृष्णलेश्या वाले भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीव पृथिवीकायिक से लेकर वनस्पति कायिक तक पांच प्रकार के कहे गये हैं अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्या वाले भवसिद्धिक पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म और बादर के भेद से दो प्रकार अप्कायिक तेजस्कायिक वायुकायिक और वनस्पतिकायिक इन सब एकेन्द्रिय जीवों के भी जानना चाहिये। यहां पर्याप्त और अपर्याप्त ऐसे दो भेद विवक्षित नहीं हुए हैं। क्यों कि अनन्तरोपपन्नक होने से इन में ये दो भेद होते नहीं है। और सब कथन इन के संबन्ध में प्रथमोद्देशक के जैसा ही समझना चाहिये। 'कइविहा णं भंते ! परंपरोववन्नगा' हे भदन्त ! परम्परोपपन्नक कृष्णलेश्यावाले

शतकनो अनंतरोपपन्नक संबंधी उद्देशा जे प्रमाणे कहेवामां आवेल छे, एज प्रमाणे अहियां पण तमाम प्रकरण समजवुं. जेम के-कृष्णलेश्यावाळा भवसिद्धिक एकेन्द्रिय पृथ्वीकायिकथी लइने वनस्पतिकायिक सुधी पांच प्रकारना कहेवामां आवेल छे. अनंतरोपपन्नक कृष्णलेश्यावाळा भवसिद्धिक पृथ्वीकायिक जीव सूक्ष्म अने बादरना भेदथी बे प्रकारना कहेल छे. आज प्रमाणेना आ बे भेदो अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक अने वनस्पतिकायिक आ सघळा एकइन्द्रियवाळा जीवोना संबंधमां पण समजवा. अहियां पर्याप्त अने अपर्याप्त आ बे भेदोनी विवक्षा करेल नथी. केम के अनंतरोपपन्नक होवाथी आमनामां आ बे भेदो होता नथी. बाकीनुं सघळुं कथन आ विषयना संबंधमां पहेला उद्देशामां कह्या प्रमाणे समजवुं.

एगिंदिया पन्नत्ता' कतिविधाः-कतिप्रकारकाः खलु भदन्त! परम्परोपपन्नाः कृष्णलेश्या भवसिद्धिकैकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः ? इति प्रश्नः, उत्तरमाह-'गोयमा!' इत्यादि 'गोयमा' हे गौतम ! 'पंचविहा परंपरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धियएगिंदिया पन्नत्ता' पञ्चविधाः-पञ्चप्रकारकाः परम्परोपपन्नकाः कृष्णलेश्या भवसिद्धिकैकेन्द्रियाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः। तद्यथा-पृथिवीकायिका यावद्वनस्पतिकायिकाः परम्परोपपन्नक पृथिवीकायिकाः खलु भदन्त! कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम! द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-सूक्ष्माश्च बादराश्च तत्र सूक्ष्मा पुनर्द्विविधाः पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्च बादरा अपि द्विविधाः पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्च एवं यावद्वनस्पतिकायिकाः, एतदाशयेनाह-'ओहिओ भेदो चउक्कओ जाव वण-

भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीव कितने प्रकार के कहे गये हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! पंचविहा परंपरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धियएगिंदिया पन्नत्ता' हे गौतम ! परम्परोपपन्नक कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीव पांच प्रकार के कहे गये हैं। जैसे-पृथिवीकायिक यावद्वनस्पतिकायिक। परम्परोपपन्नक पृथिवीकायिक जीव हे भदन्त ! कितने प्रकार के कहे गये हैं ! हे गौतम ! ये दो प्रकार के कहे गये हैं। एक सूक्ष्म और दूसरे बादर इन में सूक्ष्म भी पर्याप्त और अपर्याप्त के भेद से दो प्रकार के कहे गये हैं। इसी प्रकार के भेदवाले एकेन्द्रिय जीव यावत् वनस्पतिकायिक तक जानना चाहिये। इसी आशय को लेकर सूत्रकार ने 'ओहिओ भेदो चउक्कओ जाव वणस्सइ काइयत्ति' ऐसा यह सूत्रपाठ कहा है। 'परपरोववन्न कण्हलेस्स भव-

'कइविहा णं भंते! परंपरोववन्नगक०' હે ભગવન્ પરંપરોપપન્નક કૃષ્ણુ-લેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा! पंचविहा परंपरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धिय एगिंदिया पण्णत्ता' હે ગૌતમ! પરંપરોપપન્નક કૃષ્ણુ-લેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકઈન્દ્રિયવાળા જીવો પૃથ્વીકાયિકથી લઈને વનસ્પતિ કાય સુધીના પાંચ પ્રકારના કહેવામા આવેલ છે. હે ભગવન્ પરંપરોપપન્નક પૃથ્વીકાયિક જીવો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-હે ગૌતમ! તેઓ સૂક્ષ્મ અને બાદરના ભેદથી બે પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે. તેઓમાં સૂક્ષ્મ પણ પર્યાપ્તક અને અપર્યાપ્તકના ભેદથી બે પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે. આ પ્રમાણેના ભેદોવાળા એકેન્દ્રિવાળા જીવો યાવત્ વનસ્પતિકાય સુધીના સમજવા. આજ અભિપ્રાયથી સૂત્રકારે 'ओहिओ भेओ चउक्कओ जाव वणस्सइकाइयत्ति' આ પ્રમાણેનો સૂત્રપાઠ કહેલ છે,

रसइकाइयत्ति' औधिको भेदश्चतुष्कको सूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्तरूपो यावद्वनस्पतिकायिका इति। 'परंपरोववन्न कण्हलेस्स भवसिद्धिय अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइएणं भंते!' परम्परोपपन्न कृष्णलेश्या भवसिद्धिकापर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकः खलु भदन्त! 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए०' एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पूर्वे चरमान्ते समवहतः समवहत्य यो भव्य एतस्या एव रत्नप्रभायाः पश्चिमे चरमान्ते परम्परोपपन्न कृष्णलेश्य भवसिद्धिकापर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया समुत्पत्तुं स खलु भदन्त! कियत्सामयिकेन विग्रहेणोत्पद्येत हे गौतम! एकसामयिकेन वा यावत् त्रिसामयिकेन वा समुत्पद्येत इत्यारभ्य-लोकचरमान्तपर्यन्तं सर्वमपि औघिकप्रकरणवदेव ज्ञातव्यमित्याशयेनाह—'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव लोयचरिमंते त्ति'

सिद्धिय अपज्जत्तसुहुम पुढवीकाईए णं भंते!' वह परम्परोपपन्नक कृष्णलेश्यावाला भवसिद्धिक अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव जो 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवी ए०' इस रत्नप्रभा पृथिवी के पूर्व चरमान्त में समवहत हुआ है और समवहत होकर इसी रत्नप्रभा पृथवी के पश्चिम चरमान्त में परम्परोपपन्नक कृष्णलेश्या युक्त भवसिद्धिक अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न होने के योग्य है कितने समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है? हे गौतम! वह वहां 'एकसमय वाले विग्रह से यावत् तीन समयवाले विग्रह से उत्पन्न होता है' ऐसे इस कथन से लगाकर लोक चरमान्त प्रकरण तक का सब कथन औघिक प्रकरण जानना चाहिये। इसी आशय को लेकर 'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव लोय चरिमंते। त्ति' ऐसा

'परंपरोववण्ण कण्हलेस्स भवसिद्धिय अपज्जत्त सुहुमपुढवीकाइएणं भंते!' हे ભગવન્ પરંપરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વી કાયિક જીવ કે જે 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए०' આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ ચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત કર્યો છે. અને સમુદ્ઘાત કરીને આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના પશ્ચિમ ચરમાન્તમાં પરંપરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યા યુક્ત ભવસિદ્ધિક અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય હોય છે? હે ગૌતમ! તે ત્યાં એક સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. યાવત્ ત્રણ સમયવાળી વિગ્રહગતિથી ઉત્પન્ન થાય છે. એ પ્રમાણેના કથનથી લઈને ચરમાન્ત સુધીનું તમામ કથન ઔઘિક પ્રકરણમાં કહ્યા પ્રમાણે સમજવું. આ અભિપ્રાયને લઈને સૂત્રકારે 'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव चरिमंते त्ति'

एवमेतेन पूर्वोदितेनाभिलापेन प्रकारेण यथैवौधिकोद्देशकः चतुस्त्रिंशत्तमशतकस्य प्रथमोद्देशः, यावल्लोकचरमान्त इति। औधिकप्रकरणवदेव सर्वं ज्ञातव्यमिति। 'सव्वत्थ कण्हलेस्सेसु भवसिद्धिएसु उववाएयव्वो' सर्वत्र कृष्णलेश्येषु भवसिद्धिकेषूपपातयितव्यः परम्परोपपन्न कृष्णलेश्यभवसिद्धिकानां कृष्णलेश्यभवसिद्धिकेष्वेवोपपातो वर्णयितव्यः, 'कहि णं भंते! परंपरोववन्नकण्हलेस्स भवसिद्धियपज्जत्तबायरपुढवीकाइयाणं ठाणा पन्नत्ता' कुत्र खलु भदन्त! परम्परोपपन्न कृष्णलेश्य भवसिद्धिक बादरपृथिवीकायिकानामेकेन्द्रियाणां स्थानानि प्रज्ञप्तानि-कथितानीति प्रश्नः, हे गौतम! स्वस्थानापेक्षया अष्टासु पृथिवीषु स्थानानि प्रज्ञप्तानि इत्यारभ्य यावत् तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्तीत्येतत् पर्यन्तम् औधिकोद्देशकवदेव ज्ञातव्यमित्याशयेनाह-'एवं' इत्यादि, 'एवं

यह सूत्रपाठ कहा है 'सव्वत्थ कण्हलेस्सेसु भवसिद्धिएसु उववाएयव्वो' सर्वत्र परम्परोपपन्नक कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिकों का कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिकों में ही उपपात वर्णित करना चाहिये।

'कहि णं भंते! परंपरोववन्न कण्हलेस्स भवसिद्धिय पज्जत्तबायर पुढवीकाइयाणं ठाणा पण्णत्ता' हे भदन्त! परम्परोपपन्नक कृष्णलेश्या वाले भवसिद्धिक बादर पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय जीवों के स्थान कहां पर कहे गये हैं। उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'हे गौतम! स्वस्थान की अपेक्षा से इनके स्थान आठ पृथिवीयों आदिको में ७ सात रत्नप्रभादिक नरकों में एवं आठवीं पृथिवी ईषत्प्राग्भारा पृथिवी में कहे गये हैं। इस के अतिरिक्त और भी इस सम्बन्ध में जो कथन है वह सब कथन यावत् तुल्य विशेषाधिक कर्म का वे बन्ध करते हैं इत्यादि

આ પ્રમાણેનો સૂત્રપાઠ કહેલ છે.' सव्वत्थ कण्हलेस्सेसु भवसिद्धिएसु उववाएयव्वो લોકના પૂર્વ ચરમાન્તમાં સમુદ્ઘાત કરેલ પરંપરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિકોનો ઉપપાત કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિકોમાં જ વર્ણવવો જોઇએ.

'कहिण' भंते! परंपरोववन्न कण्हलेस्स भवसिद्धिय अपज्जत्त बायरपुढवी काइयाणं ठाणा पण्णत्ता' હે ભગવન્ પરંપરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક બાદર પૃથ્વીકાયવાળા એકેન્દ્રિય જીવોના સ્થાન ક્યાં કહેવામાં આવેલ છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-હે ગૌતમ! સ્વસ્થાનની અપેક્ષાથી તેઓના આઠ સ્થાનો પૃથ્વીકાયિકોમાં, રત્નપ્રભા વિગેરે નરકોમાં તેમજ આઠમી ઇષિત્પ્રાગ્ભારા પૃથ્વીમાં કહેવામાં આવેલ છે. આ શિવાય આ વિષયના સંબંધમાં બીજું જે કથન છે, તે સઘળું કથન યાવત્ તુલ્ય વિશેષાધિક કર્મનો બંધ કરે છે. આ કથન સુધી ઔધિક ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે સમજવું

एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव तुल्लट्ठिइयत्ति' एवमेतेन पूर्वोक्तेनाभिलापेन प्रकारेण यथैवौधिक उद्देशकः चतुस्त्रिंशत्तमशतकस्य प्रथमो-यावत्तुल्यस्थितिका इति, सर्वमिह औधिक प्रकरणवदेव ज्ञातव्यं यावत्तुल्य स्थितिका स्तुल्यविशेषाधिकं कर्म प्रकुर्वन्तीति भावः। 'एवं एएणं अभिला-वेणं कण्हलेस्स भवसिद्धिए एगिंदिएहिं वि तहेव एक्कारस उद्देससंजुत्तं छट्ठं सयं' एवमेतेनाभिलापेन यथा-औधिक भवसिद्धि सम्बधि पञ्चमं शतकं कथितं तथैवास्य षष्ठशतकस्य औधिकानन्तरोपपन्नक परम्परोपपन्नकेत्युद्देशकत्रयविशिष्टैकेन्द्रि-यैरपि तथैवैकादशोद्देशकसंयुक्तं षष्ठं शतम्, अनन्तरावगाढ परम्परावगाढानन्तरा-हारक परम्पराहारकानन्तरपर्याप्तकपरम्परपर्याप्तक चरमाचरमेत्यष्टौ उद्देशका अपि वक्तव्याः तदित्थमेकादशोद्देशक संयुक्तं षष्टं शतं निर्मातव्यमिति भावः॥

इति श्री - विश्वविख्यातजगद्वल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि - 'जैनाचार्य' पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां 'श्री भगवतीसूत्रस्य' प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां चतुस्त्रिंशत्तमशतके षष्ठमेकेन्द्रियशतं समाप्तम् ॥३४।६॥

कथन तक औधिक उद्देशक के जैसा ही जानना चाहिये। इसी आशय को लेकर 'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव तुल्ल ट्ठिइयत्ति' सूत्रकार ने ऐसा यह सूत्रपाठ यहां कहा है। 'एवं एएणं अभिलावेणं कण्हलेस्स भवसिद्धिय एगिंदिएहिं वि तहेव एक्कारस उद्देससंजुत्तं छट्ठं सयं' इस के अभिलाप प्रकार से कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में भी ग्यारह उद्देशकों से युक्त यह छट्ठा शतक कहना चाहिये। अर्थात् जिस रीति से औधिक सामान्य भवसिद्धिक संबंधी पांचवां शतक कहा गया है उसी प्रकार से इस छट्ठे शतक के औधिक अनन्तरोपपन्नक परम्परोपपन्नक इनतीन

આ અભિપ્રાયથી સૂત્રકારે 'एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव तुल्लट्ठिइयत्ति' આ પ્રમાણે સૂત્રપાઠ કહેલ છે. 'एवं एएणं अभिलावेणं कण्हलेस्स भवसिद्धिय एगिंदिएहिं वि एक्कारसउद्देससंजुत्तं छट्ठं सयं' આ પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં પણ ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ આ છટ્ઠા શતકમાં કહેવા જોઈએ. અર્થાત્ જે પ્રમાણે પરંપરોપપન્નક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોનો ઉદ્દેશો કહેલ છે,

उद्देशक के अतिरिक्त शेष अनन्तरावगाढ, परम्परावगाढ अनन्तराहारक, परम्पराहारक, अन्तरपर्याप्तक, परम्परपर्याप्तक, चरम और अचरम ये आठ उद्देशक भी इसके सम्बन्ध में कहलेना चाहिये।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके चौतीसवें शतक के छट्ठा एकेन्द्रिय शतक समाप्त ॥३४-६॥

એજ પ્રમાણે અનંતરાવગાઢ, પરંપરાવગાઢ, અનંતરાહારક, પરંપરાહારક, અનંતરપર્યાપ્તક, પરંપરપર્યાપ્તક ચરમ અને અચરમ આ બધાના સંબંધમાં પણ ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ. ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્રની' પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ચોત્રીસમાં શતકનું ॥છટ્ઠું એકેન્દ્રિયશતક સમાપ્ત ॥૩૪-૬॥



अथ सप्तममष्टमादि शतकानि

मूलम्–नीललेस्स भवसिद्धिय एगिंदिएसु सयं सत्तमं समत्तं। एवं काउलेस्स भवसिद्धिय एगिंदिएहि वि अट्ठमं सयं। जहा भवसिद्धिएहिं चत्तारि सयाणि एवं अभवसिद्धिएहि वि चत्तारि सयाणि भाणियव्वाणि। नवरं चरम अचरमवज्जा नव उद्देसगा भाणियव्वा सेसं तं चेव। एवं एयाइं बारस एगिंदिय-सेढिसयाइं सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ ॥सू०१॥

एगिंदियसेढिसयाइं समत्ताइं ॥३४-१२॥

चउत्तीसइमे छट्ठं एगिंदियसेढिसयं समत्तं ॥३४॥

छाया—नीललेश्य भवसिद्धिकैकेन्द्रियेषु शतं सप्तमं समाप्तम्। एवं कापोतलेश्य भवसिद्धिकैकेन्द्रियैरपि अष्टमं शतम्। यथा भवसिद्धिकैश्चत्वारि शतानि, एवमभवसिद्धिकैरपि चत्वारि शतानि भणितव्यानि। नवरं चरमाचरमवर्जा नवोद्देशका भणितव्याः शेषं तदेव। एवमेतानि द्वादश एकेन्द्रिय श्रेणिशतानि। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति यावद्विहरति ॥ सू० १॥

चतुस्त्रिंशत्तमशतके षष्ठमेकेन्द्रियश्रेणि शतम् समाप्तम् ॥३४॥

टीका—'नीललेस्स भवसिद्धियएगिंदिएसु सयं सत्तमं' नीललेश्य भवसिद्धिकैकेन्द्रियेषु शतं सप्तमं समाप्तम्, यथा कृष्णलेश्य भवसिद्धिकैकेन्द्रियैरेकं शतमधीतं तद्वत् सप्तमं शतं नीललेश्य भवसिद्धिकैकेन्द्रियाणामपि वक्त-

---

चोत्तीसवे शतक का सातवां एकेन्द्रिय शतक

'नीललेस्स भवसिद्धियएगिंदिएसु' इत्यादि

टीकार्थ–नीललेश्यावाले भवसिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में सप्तम शतक समाप्त कर लेना चाहिए। अर्थात् जैसा–कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में कहा गया है। उसी प्रकार से यह

॥સાતમા એકેન્દ્રિયશતકનો પ્રારંભ—

'नीललेस्स भवसिद्धियएगिंदिएसु' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—નીલલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકઇન્દ્રિયવાળાઓના સંબંધમાં સાતમું શતક સમાપ્તિ પર્યન્ત કહેવું જોઈએ. અર્થાત્ જે પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યા-વાળા ભવસિદ્ધિક એકઇન્દ્રિયવાળાઓના સંબંધમાં કહેવામાં આવેલ છે. એજ

व्यम्, नवरं पूर्वं यत्र कृष्णलेश्यपदं दत्तं तादृशस्थाने इह नीललेश्यपदं देयम्, अन्यत्सर्वं पूर्ववदेव ज्ञातव्यमिति। तथा तत्र यथा एकादशोद्देशकाः कथिताः तथा अत्रापि एकादशोद्देशकाः कथयितव्या, इति सप्तमं शतम्
'एवं काउलेस्स भवसिद्धिय एगिंदिएहि वि अट्ठमं सयं' एवं कापोतलेश्य भवसिद्धियकैकेन्द्रियैरपि अष्टमं शतं ज्ञातव्यम्, नवरं नीललेश्य-स्थाने कापोत-लेश्यपदं देयम् अत्रापि पूर्ववदेव एकादशोद्देशका ज्ञातव्याः प्रकारस्तु सर्वत्र पूर्व-

---

सातवां शतक नीललेश्यावाले भवसिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में कह लेना चाहिये। परन्तु इस सप्तम शतक में पूर्व शतक की अपेक्षा यही विशेषता है कि इस शतक मे जैसा कि पूर्व शतक में जहां कृष्ण लेश्यापद दिया गया है। उस जगह नीललेश्यापद रखना चाहिये। बाकी का और सब कथन पहिले के जैसा ही जानना चाहिये। तथा जिस रीति से वहां ११ उद्देशक कहे गये उसी रीति से यहां पर भी ११ उद्देशक कहलेना चाहिये। ॥सू०१॥

सप्तम एकेन्द्रिय शतक समाप्त ॥३४-७॥

चोतीसवे शतक के आठवां एकेन्द्रिय शतक

'एवं काउलेस्स भवसिद्धिय एगिंदिए हि वि अट्ठमं सयं' इत्यादि

टीकार्थ-इसी रीति से कापोतलेश्यावाले भवसिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में भी आठवां शतक कह लेना चाहिये। परन्तु नीललेश्य

પ્રમાણે સાતમું શતક નીલલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકઈન્દ્રિયવાળાઓના સંબંધમાં કહેવું જોઈએ પરંતુ આ સાતમા શતકમાં પહેલા શતક કરતાં એ ભિન્નપણું છે કે આ શતકમાં પહેલાના શતકોમાં જ્યાં કૃષ્ણલેશ્યા પદ આપવામાં આવેલ છે. ત્યાં નીલલેશ્યા પદ મૂકીને કહેવું જોઈએ. બાકીનુ બીજું સઘળું કથન પહેલા કહ્યા પ્રમાણે જ સમજવું. જોઈએ તથા જે પ્રમાણે ત્યાં અગીયાર ઉદ્દેશાઓ કહેવામાં આવ્યા છે. એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઇએ.

॥સાતમું શતક સમાપ્ત ॥૩૪-૭॥

આઠમા એકેન્દ્રિય શતકનો પ્રારંભ—

'एवं काउलेस्स भवसिद्धिय एगिंदिएहिं वि अट्ठमं सयं' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—આ નીલલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકઈન્દ્રિયવાળાઓના સંબંધમાં કહેલ રીત પ્રમાણે કાપોતલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોના સંબંધમાં પણ આઠમુ શતક કહેવું જોઈએ. પરંતુ નીલલેશ્યા એ પદના સ્થાને કાપોત-

वदेव ज्ञातव्य इत्यष्टमं शतं समाप्तम् । 'जहा भवसिद्धिएहिं चत्तारि सयाणि एवं अभवसिद्धिएहि वि चत्तारि सयाणि भाणियव्वाणि' यथा भवसिद्धिकै श्चत्वारि शतानि भणितानि एवम् अभवसिद्धिकैरपि चत्वारि शतानि भणितव्यानि । तत्रा-भवसिद्धिकस्यौधिकं शतं प्रथमम् । द्वितीयं शतं कृष्णलेश्यभवसिद्धिकस्य तृतीयं चतुर्थं च नीलकापोतेति लेश्याद्वयमधिकृत्य भवति, तदेवं चत्वारि शतानि भवन्ति अभवसिद्धिकस्य । 'नवरं चरम अचरमवज्जा नव उद्देसगा

पद के स्थान में कापोतलेश्य पद रखना चाहिये । यहाँ पर भी पूर्व के जैसे ११ उद्देशक है । इन में आलापक प्रकार सर्वत्र पूर्व के जैसा ही जानना चाहिये ॥सू०१॥

आठवां शतक समाप्त ॥३४-८॥

नववां एकेन्द्रिय शतक

'जहा भवसिद्धिएहिं चत्तारि सयाणि एवं अभ०' इत्यादि

टीकार्थ-जिस रीति से भवसिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में चार शतक कहे गये हैं, उसी रीति से अभवसिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध भी शत-शतक-कह लेना चाहिये । इन में अभसिद्धिक एकेन्द्रिय के सम्बन्ध में औधिक शतक प्रथम है। कृष्णलेश्यावाले अभवसिद्धिक के सम्बन्ध में द्वितीय शत है । तृतीय और चतुर्थ शत नीललेश्यावाले एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में और कापोतलेश्यावाले एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में हैं। इस प्रकार से ये चार शत अभवसिद्धिक एकेन्द्रियों के

લેશ્ય પદ મૂકવું જોઈએ. અહિયાં આ કાપોતલેશ્યાના સંબંધમાં પણ પહેલાં કહ્યા પ્રમાણેના ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ સમજવા. તેઓમાં આલાપનો પ્રકાર બધે જ પહેલા કહ્યા પ્રમાણે જ સમજી લેવો. ॥સૂ૦૧॥

॥આઠમું શતક સમાપ્ત ॥૩૪-૮॥

'જહા ભવસિદ્ધિએહિં ચત્તારિ સયાણિ એવં અભ૦' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—જે પ્રમાણે ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં ચાર શતક કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોના સંબંધમાં પણ ચાર શતકો કહેવા જોઈએ. આમાં ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોના સંબંધમાં ઔધિક શતક પહેલું છે. ૧ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિકના સંબંધમાં બીજું શતક કહેલ છે. તથા ત્રીજું અને ચોથું શતક નીલલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં અને કાપોતલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય જીવોના કહેલ છે. ૩-૪ આ રીતે આ ચાર શતકો અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોના સંબંધમાં કહેલ છે.

भाणियव्वा' नवरं वैलक्षण्यमेतदेव यत् पूर्वपूर्वशतेषु औघिकोद्देशतोऽनन्तरोपपन्नादिका अचरमपर्यन्ता एकादशएकादशोद्देशका निर्मिताः, अभवसिद्धिकशतचतुष्टयेतु चरमवर्जा नवैवोद्देशकाः पठनीयाः अभवसिद्धिकानां चरमाचरमयोरभावादिति । 'सेसं तं चेव' शेषमन्यत्सर्वं भवसिद्धिकप्रकरणवदेव सर्वं भवतीति । 'एवं एयाइं वारसएगिंदियसेढिसयाइं' एवं पूर्वप्रदर्शितक्रमेण एतानि द्वादश एकेन्द्रिय श्रेणिशतानि भवन्ति, औघिककृष्णनीलकापोतलेश्येति चतुष्टयमाश्रित्यैकेन्द्रियशतानि

सम्बन्ध में । 'नवरं चरमअचरमवज्जा नव उद्देसगा भाणियव्वा' परन्तु यहां जो भिन्नता है वह ऐसी है कि भवसिद्धिक एकेन्द्रियों के पूर्व पूर्व शतों में औघिक उद्देश से लेकर अनन्तरोपपन्नादिक अचरम पर्यन्त ११-११ उद्देशक हैं । परन्तु अभवसिद्धिक एकेन्द्रियों के चार शतों में चरम और अचरम इन शतों को छोड़कर नौ ही उद्देशक होते हैं । क्यों कि अभवसिद्धिकों के चरम अचरम ये दो उद्देशक नहीं हैं कारण कि इनका उन में अभाव है । 'सेसं तं चेव' बाकी का और सब कथन यहां भवसिद्धिक प्रकरण के ही जैसा है ।

'एवं एयाइं बारस एगिंदियसेढिसयाइं' इस प्रकार पूर्वप्रदर्शित क्रम के अनुसार ये १२ एकेन्द्रिय श्रेणि शत होते हैं । औघिक शतको एवं कृष्ण, नील, और कापोतलेश्या इन सम्बन्धी तीन शतों को आश्रित कर के एकेन्द्रिय सम्बन्धी चार शतक हैं और भवसिद्धिक

'नवरं' चरम अचरमवज्जा नव उद्देसगा भाणियव्वा' परंतु अहियां जे भिन्नपणुं छे, ते એવું છે કે-ભવસિદ્ધિક એક ઇન્દ્રિયવાળાઓના પહેલાના શતકોમાં ઔઘિક ઉદ્દેશાથી લઇને અનંતરોપપન્નકાદિ અચરમ સુધીના ૧૧-૧૧ અગિયાર અગિયાર ઉદ્દેશાઓ કહ્યા છે. પરંતુ આ અભવસિદ્ધિક એકઇન્દ્રિય જીવોના ચાર શતકોમાં ચરમ અને અચરમ આ શતકોને છોડીને નવઉદ્દેશાઓજ હોય છે. કેમ કે-અભવસિદ્ધિકોમાં ચરમ અને અચરમ આ બે ઉદ્દેશાઓ હોતા નથી. કારણ કે તેઓમાં આ ચરમ અચરમ પણાનો અભાવ રહે છે.

'સેસં તં ચેવ' આ શિવાય બાકીનું સઘળું કથન આ અભવસિદ્ધિકોના સંબંધમાં ભવસિદ્ધિક પ્રકરણમાં કહ્યા પ્રમાણે જ સમજવું જોઇએ. 'एवं एयाइंवारसएगिंदियसेढिसयाइं' આ રીતે પહેલાં બતાવેલ ક્રમ પ્રમાણે આ ૧૨ બાર એકેન્દ્રિય શ્રેણી શતકો થાય છે, ઔઘિક શતકને તથા કૃષ્ણ, નીલ, અને કાપોતલેશ્યાવાળાના સંબંધમાં. ત્રણ શતકોનો આશ્રય કરીને એકે

चत्वारि, एवं भवसिद्धिकैकेन्द्रियशतानि चत्वारि, तथा अभवसिद्धिकैकेन्द्रियैः सह चत्वारि शतानि, सर्वसङ्कलनया चतुस्त्रिंशत्तमशतके द्वादशशतानि भवन्ति, आद्याष्टशतेषु एकादशैकादशोद्देशकाः, अन्तिमाऽभवसिद्धिकशतचतुष्टये तु नवनवोद्देशकाः, तदेवं सर्वसङ्कलनया चतुर्विंशत्यधिकशतमुद्देशकाः (१२४) एतस्मिन् शतके भवन्तीति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति यावद्विहरति हे भदन्त ! एकेन्द्रियविषये यद् देवानुप्रियेण कथितं तत् सर्वं सत्यमेवेति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्थित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विरहतीति ॥ 'एगिंदिय सेढि सयाइं समत्ताइं' एकेन्द्रियश्रेणिशतानि समाप्तानि ॥सू० १॥

इति चतुस्त्रिंशत्तमैकेन्द्रियश्रेणिशतकं समाप्तम् ॥३४॥

एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में चार शतक हैं । तथा अभवसिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में चार शतक हैं । कुल मिलाकर ये सब १२ शतक इस चौतीसवें शतक में हैं । अन्तिम जो चार अभवसिद्धिक शतक हैं उनमें ९-९ उद्देशक हैं । इस प्रकार इन १२ शतकों के १२४ उद्देशक होते हैं । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ' हे भदन्त ! एकेन्द्रिय जीवों के विषय में जो आप देवानुप्रियने कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप

ન્દ્રિય જીવ સંબંધી ચાર શતકો થાય છે. તથા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયો સંબંધમાં ચાર શતકો થાય છે તેમ જ અભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિયોના સંબંધમાં ચાર શતકોથાય છે. તે રીતે કુલ બધા મળીને આ ૧૨ બાર શતકો આ ચોત્રીસમા શતકમાં કહ્યા છે. છેલ્લા ચાર જે અભવસિદ્ધિક શતક છે તેમાં ૯-૯ નવ નવ ઉદ્દેશાઓ કહ્યા છે. આ રીતે આ બાર શતકોના કુલ ૧૨૪ એકસોચોવીસ ઉદ્દેશાઓ થાય છે.

'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ જાવ વિહરઇ' હે ભગવન્ એકેન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા. વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત

से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये। इस प्रकार से एकेन्द्रिय श्रेणि शतक समाप्त हुए। इनकी समाप्ति में ३४ वां एकेन्द्रिय श्रेणि शतक समाप्त हुआ॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके चौतीसवें शतक में ॥ सातवें से बारहवें पर्यन्तके श्रेणिशतक समाप्त ॥

॥ चोतीसवां शतक समाप्त ॥

કરતા થકા પોતાના સ્થાનપર બિરાજમાન થયા. આ રીતે એકેન્દ્રિય શ્રેણી શતક સમાપ્ત થયા તેની સાથે આ ચોત્રીસમું એકેન્દ્રિય શ્રેણિ શતક સમાપ્ત થયું છે.

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્ર'ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ચોત્રીસમા શતકના સાતમાથી બારમા સુધીના એકેન્દ્રિય શતકો સમાપ્ત ॥

॥ ચોત્રીસમું શતક સમાપ્ત ॥



॥ 'अह पणतीसइमं सयं' ॥ (पढमो उद्देसो)

चतुस्त्रिंशत्तमे शतके एकेन्द्रियजीवाः श्रेणीक्रमेण प्रायो निरूपिताः, अथ पञ्चत्रिंशत्तमे शतके तु ते एव एकेन्द्रियाः राशिक्रमेण निरूप्यन्ते तदनेन सम्बन्धेन आयातस्य द्वादशावान्तरशतयुक्तस्य पञ्चत्रिंशत्तमशतकस्येदमादिमं सूत्रम्-'कइणं' इ०

मूलम्--कइ णं भंते ! महाजुम्मा पन्नत्ता ? गोयमा ! सोलस महाजुम्मा पन्नत्ता, तं जहा--कडजुम्मकडजुम्मे१, कडजुम्मतेओगे२, कडजुम्मदावरजुम्मे ३, कडजुम्मकलिओगे ४, तेओए कडजुम्मे ५, तेओगतेओए ६, तेओगदावरजुम्मे ७, तेओगकलिओगे ८, दावरजुम्मकडजुम्मे ९, दावरजुम्मतेओगे १०, दावरजुम्मदावरजुम्मे ११, दावरजुम्मकलिओगे १२, कलिओग कडजुम्मे१३, कलिओग तेओगे१४, कलिओग दावरजुम्मे१५, कलिओगकलिओगे १६, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सोलस महाजुम्मा पन्नत्ता तं जहा--कडजुम्मकडजुम्मे १ जाव कलियागकलिओगे १६, गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया ते वि कडजुम्मा से त्तं कडजुम्म कडजुम्मे१। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए। जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा से त्तं कडजुम्म तेओगे२। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स समया कडजुम्मा से त्तं कडजुम्मदावरजुम्मे३। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा से त्तं कडजुम्म कलियोगे४, (१)। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं

अवहीरमाणे चउपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहार- समया तेओगा से त्तं तेओगकडजुम्मे ५। जे णं रासी चउक्क- एणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए जे णं तस्स रासि- स्स अवहारसमया तेओगा से त्तं तेओगतेओगे ६। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दो पज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा से त्तं तेओगदावरजुम्मे ७। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा से त्तं तेओग कलिओगे ८। (२) जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीर- माणे चउपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा से त्तं दावरजुम्म कडजुम्मे९। जे णं रासी चउक्क- एणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए जे णं तस्स रासि- स्स अवहारसमया दावरजुम्मा से त्तं दावरजुम्मतेओगे १०। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुप्पज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा से त्तं दावर- जुम्म दावरजुम्मे११। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अव- हीरमाणे एगपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा से त्तं दावरजुम्मकलिओगे १२। (३) जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलिओगा से त्तं कलियोगकड- जुम्मे१३। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिप- ज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलिओगा से त्तं कलियोगतेओगे १४। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अव-

हीरमाणे दुपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलिओगा से त्तं कलिओगदावरजुम्मे १५। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलिओगा से त्तं कलिओगकलिओगे १६ (४) से तेणट्ठेणं जाव कलिओगकलिओगे ॥सू० १॥

छाया--कति खलु भदन्त ! महायुग्माः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! षोडश महायुग्मानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-कृतयुग्मकृतयुग्म १, कृतयुग्मत्र्योजः २, कृतयुग्मद्वापरयुग्मः ३, कृतयुग्मकल्योजः ४, त्र्योजकृतयुग्मः ५, त्र्योजत्र्योजः ६, त्र्योजद्वापरयुग्मः ७, त्र्योजकल्योजः८, द्वापरयुग्मः कृतयुग्मः९, द्वापरयुग्मत्र्योजः १०, द्वापरद्वापरयुग्मः ११, द्वापरयुग्मकल्योजः १२, कल्योजकृतयुग्मः १३ कल्योजत्र्योजः १४, कल्योजद्वापरयुग्मः १५, कल्योजकल्योजः १६ तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते षोडश महायुग्माः प्रज्ञप्ताः तद्यथा कृतयुग्मकृतयुग्मः यावत्कल्योजकल्योजः। गौतम ! यः खलु राशिः चतुष्केणापहारेण अपह्रियमाण श्चतुः पर्यवसितः, ये खलु तस्य राशेरपहारसमया सोऽपि कृतयुग्माः सोऽयं कृतयुग्मकृतयुग्मः१, यः खलु राशिश्चतुष्केणापहारेणापह्रियमाणस्त्रिपर्यवसितः, यः खलु तस्य राशेरपहारसमयाः कृतयुग्मा सोऽयं कृतयुग्मत्र्योजः। यः खलु राशिः चतुष्केणापहारेण अपह्रियमाणो द्विपर्यवसितः ये खलु तस्य राशेरपहारसमयाः कृतयुग्माः सोऽयं कृतयुग्मद्वापरयुग्मः। ३ यः खलु राशिः चतुष्केणापहारेण अपह्रियमाण एक पर्यवसितः ये खलु तस्य राशेरपहारसमयाः कृतयुग्माः सोऽयं कृतयुग्मकल्योजः ४।(१) यः खलु राशि श्चतुष्केणापहारेणापह्रियमाणश्चतुःपर्यवसितः ये खलु तस्य राशेरपहारसमयाः त्र्योजाः सोऽयं त्र्योजकृतयुग्मः ५। यः खलु राशिः चतुष्केणाऽपहारेणापह्रियमाणस्त्रिपर्यवसितः, ये खलु तस्य राशेरपहारसमया स्त्र्योजाः, सोऽयं त्र्योजत्र्योजः ६। यः खलु राशिः चतुष्केणापहारेणापह्रियमाणो द्वियपर्यवसितः ये खलु तस्य राशेरपहारसमया स्त्र्योजाः सोऽयं त्र्योजद्वापरयुग्मः ७। यः खलु राशि श्चतुष्केणापहारेणापह्रियमाण एकपर्यवसितः, ये खलु तस्य राशेरपहारसमयाः त्र्योजाः सोऽयं त्र्योज कल्योजः ८। (२) यः खलु राशि श्चतुष्केणापहारेणापह्रियमाणः चतुः पर्यवसितः ये खलु तस्य राशेरपहारसमया द्वापरयुग्माः सोऽयं द्वापर कृतयुग्मः ९। यः खलु राशि श्चतुष्केणापहारेण अपह्रियमाण स्त्रिपर्यवसितः

ये खलु तस्य राशेरपहारसमया द्वापरयुग्माः सोऽयं द्वापरयुग्मत्र्योजः १० यः खलु राशि श्चतुष्केणापहारेणापह्रियमाणो द्विपर्यवसितः ये खलु तस्य राशेरपहारसमया द्वापरयुग्माः सोऽयं द्वापरयुग्मद्वापरयुग्मः ११। यः खलु राशि श्चतुष्केण अपहारेणापह्रियमाण एकपर्यवसितः ये खलु तस्य राशेरपहारसमया द्वापरयुग्माः सोऽयं द्वापरयुग्मकल्योजः १२। (३) यः खलु राशि श्चतुष्केणापहारेण अपह्रियमाण श्चतुःपर्यवसितः ये खलु तस्य राशेरपहारसमयाः कल्योजा सोऽयं कल्योजकृतयुग्मः १३। यः खलु राशि श्चतुष्केणापहारेणापह्रियमाण स्त्रिपर्यवसितः ये खलु तस्य राशेरपहारसमयाः कल्योजाः सोऽयं कल्योजत्र्योजः १४ यः खलु राशि श्चतुष्केणापहारेण अपह्रियमाणो द्विपर्यवसितः ये खलु तस्य राशेरपहारसमयाः कल्योजाः सोऽयं कल्योजद्वापरयुग्मः १५ यः खलु राशि श्चतुष्केणापहारेणाऽपह्रियमाण एकपर्यवसितः ये खलु तस्य राशेरपहारसमयाः कल्योजाः सोऽयं कल्योजकल्योज इति १६ (४) तत्तेनार्थेन यावत् कल्योज कल्योजः ॥सू० १॥

टीका--'कइ णं भंते ! महाजुम्मा पन्नत्ता' कति खलु भदन्त ! इह युग्मशब्देन राशिविशेषा कथ्यन्ते ते च क्षुल्लका अपि भवन्ति यथा प्राक्-

पैंतीसवे शतक का प्रथम उद्देशक

चौंतीसवें शतक में एकेन्द्रिय जीवों का श्रेणि क्रम से प्रायः निरूपण हो चुका है परन्तु अब इस ३५ वें शतक में उन्हीं एकेन्द्रिय जीवों का राशिक्रम से निरूपण होना हैं। इसी सम्बन्ध से इसे प्रारम्भ किया जा रहा है-

'कइ णं भंते ! महाजुम्मा पन्नत्ता' इत्यादि सूत्र ॥१॥

टीकार्थ-हे भदन्त ! महायुग्म-महाराशियां-कितने कहे गये हैं ? युग्म शब्द से यहां राशिविशेष कहा गया है ये युग्म क्षुल्लक भी होते

પાંત્રીસમા શતકનો પ્રારંભ—

ઉદ્દેશો પહેલો.

ચોત્રીસમા શતકમાં એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોને શ્રેણિના ક્રમથી પ્રાયઃ નિરૂપણ કરવામાં આવી ગયું છે પરંતુ હવે આ ૩૫ પાંત્રીસમા શતકમાં એ એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવોનું રાશિના ક્રમથી નિરૂપણ કરવામાં આવશે. એ સંબંધી આ પાંત્રીસમું શતક પ્રારંભ કરવામાં આવે છે.—

'कइणं भंते ! महाजुम्मा पण्णत्ता' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ મહાયુગ્મ-મહારાશિયો કેટલા કહેવામાં આવ્યા છે ? અહિયાં યુગ્મ શબ્દથી રાશિ વિશેષ કહેલ છે. આ યુગ્મ ક્ષુલ્લક પણ હોય

प्ररूपिता अतस्तद्व्यवच्छेदार्थं महदिति विशेषणं दत्तम्। तथा च-महान्ति च तानि युग्मानीति महायुग्मानि-राशि विशेषाः? इति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, गोयमा' हे गौतम! 'सोलस महाजुम्मा पन्नत्ता' षोडश महायुग्मानि राशिविशेषाः प्रज्ञप्तानि-कथितानि 'तं जहा' तद्यथा 'कडजुम्म कडजुम्मे' कृतयुग्मकृतयुग्मः यो राशिः सामयिकेन चतुष्कापहारेणापह्रियमाण श्चतुःपर्यवसितो भवेत् तथा अपहारसमया अपि चतुष्कापहारेण चतुःपर्यवसिता एव भवेयुः असौ राशिः कृतयुग्म इत्यभिधीयते अपह्रियमाणद्रव्या

हैं। जैसा कि पहिले प्ररूपित किया जा चुका है। अतः उनका व्यवच्छेद करने के लिये यहां युग्म शब्द के साथ 'महत्' यह विशेषण रखा गया है। उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! सोलस महाजुम्मा पन्नत्ता' हे गौतम! महायुग्म १६ कहे गये हैं। 'तं जहा' जो इस प्रकार से हैं 'कडजुम्म कडजुम्मे' कृतयुग्म कृतयुग्म १, कृतयुग्मत्र्योज, २, कृतयुग्म द्वापरयुग्म ३, कृतयुग्म कल्योज ४, त्र्योजकृतयुग्म ५, त्र्योज त्र्योज ६, त्र्योज द्वापरयुग्म ७, त्र्योज कल्योज ८, द्वापरयुग्म कृतयुग्म ९, द्वापरयुग्म त्र्योज १०, द्वापरयुग्म द्वापरयुग्म ११, द्वापरयुग्म कल्योज १२, कल्योज कृतयुग्म १३, कल्योज त्र्योज १४, कल्योज द्वापरयुग्म १५, और कल्योज कल्योज १६, इन में जिस राशि को प्रति समय चार चार से अपहृत करते हुए अन्त में उस में से चार बचे रहते हैं और अपहार (नीकालना) समयों में से भी चार चार के

છે. જેમ કે પહેલા પ્રતિપાદન કરવામાં આવી ગયેલ છે. તેથી તેનો વ્યવચ્છેદ કરવા માટે અહિયાં યુગ્મ શબ્દની સાથે "મહત્" શબ્દનું વિશેષણ રાખવામાં આવેલ છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा! सोलस महाजुम्मा पन्नत्ता' હે ગૌતમ! મહાયુગ્મ શબ્દ ૧૬ સોળ પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે. 'तं जहा' તે આ પ્રમાણે છે.—कडजुम्मकडजुम्मे' કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૧ કૃતયુગ્મ ત્ર્યોજ ૨, કૃતયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ ૩, કૃતયુગ્મ કલ્યોજ ૪, ત્ર્યોજ કૃતયુગ્મ ૫, ત્ર્યોજ ત્ર્યોજ ૬, ત્ર્યોજદ્વાપરયુગ્મ ૭, ત્ર્યોજકલ્યોજ ૮, દ્વાપરયુગ્મકૃતયુગ્મ ૯, દ્વાપરયુગ્મ ત્ર્યોજ ૧૦, દ્વાપરયુગ્મદ્વાપરયુગ્મ ૧૧, ૧૨, કલ્યોજ કૃતયુગ્મ ૧૩, કલ્યોજ ત્ર્યોજ ૧૪, કલ્યોજ દ્વાપરયુગ્મ ૧૫, અને કલ્યોજ કલ્યોજ ૧૬, આમાં જે રાશીને પ્રતિસમય ચાર ચારનો અપહાર (બહાર કહાડવું તે) કરતાં કરતાં છેવટે તેમાંથી ચાર બચે છે, અને અપહાર સમયમાંથી પણ ચાર ચારના અપહારથી તે નીકળી જતાં છેવટે ચાર

पेक्षया तत्समयापेक्षया च द्विधा कृतयुग्मत्वात्। एवमन्यत्रापि शब्दार्थो योजनीयः स च किल जघन्यतः षोडश संख्यात्मकः एषां हि चतुष्कापहारत श्चतुरग्रत्वात् समयानां च चतुःसंख्यत्वादिति १ 'कडजुम्मतेओगे २' कृतयुग्म त्र्योजः यो राशिः प्रतिसमयं चतुष्कापहारेणापह्रियमाण स्त्रिपर्यवसानो भवति तत्समयाश्च चतुःपर्यवसिता एव, असौ अपह्रियमाणापेक्षया त्र्योजः अपहारापेक्षया कृतयुग्म एवेति कृतयुग्म त्र्योज इति कथ्यते तत् संख्यका जघन्यतएकोनविंशतिः तत्र चतुष्कापहारे त्रयोऽवशिष्यन्ते तत्समयाश्च

अपहार से उनके अपहृत होने पर अन्त में चार बचे रहते हैं ऐसी जो राशि है वह कृतयुग्म कृतयुग्म राशि है। कारण कि अपह्रियमाण द्रव्य की अपेक्षा से और समय की अपेक्षासे दोनों रीति से उस राशि में कृतयुग्मता आती है। इसी प्रकार अन्यत्र भी शब्द का अर्थ योजित कर लेना चाहिये। जैसे १६ संख्यात्मक कृतयुग्म कृतयुग्म राशि जघन्य रूप है। क्योंकि इस राशि को चार से अपहृत करने पर में अन्त में चार ही बचते हैं और अपहार समय चार ही है। जो राशि प्रतिसमय चार से अपहृत होकर अन्त में ३ बाकी बचाती है और उसके समय चार में ही पर्यवसित (समाप्त) होते हैं ऐसी वह राशी अपह्रियमाण की अपेक्षा त्र्योजरूप और अपहार की अपेक्षा कृतयुग्म होती है। जघन्य से इस कृतयुग्म त्र्योज की संख्या १९ है। इस संख्या को चारसे अपहृत करने पर अन्त में तीन बचते हैं और इस के समय चार ही है। इस प्रकार से राशि भेद के सूत्र इस के

વધે છે, એવી જે રાશી (સમૂહ) તે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશી કહેવાય છે. કારણ કે બહાર કાઢનાર દ્રવ્યની અપેક્ષાથી અને સમયની અપેક્ષાથી એમ બન્ને પ્રકારથી તે રાશિમાં કૃતયુગ્મ પણુ આવી જાય છે. આજ પ્રમાણે બીજે પણુ શબ્દોના અર્થની યોજના કરીને સમજી લેવું. જેમ કે-૧૬ સોળ સંખ્યાવાળી કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મરાશી જઘન્ય રૂપ છે. કેમ કે આ રાશીને ચારની સંખ્યાથી અપહાર કરતાં છેવટે ચાર જ બચે છે. અને અપહાર સમય પણુ ચાર જ છે. જે રાશીમાંથી પ્રતિસમયે ચારના અપહાર કરતાં છેવટે ત્રણુ બાકી રહે છે, અને તેના સમય ચારમાંજ સમાપ્ત થાય છે, એવી તે રાશી અપહ્રીરમાણુ (બહાર કહાડવા)ની અપેક્ષાથી ત્ર્યોજ રૂપ અને અપહારની અપેક્ષાથી કૃતયુગ્મ રૂપ હોય છે. જઘન્યથી આ કૃતયુગ્મ ત્ર્યોજની સંખ્યા ૧૯ ઓગણીસની થાય છે. આ સંખ્યાનો ચારથી અપહાર કરતાં છેવટે ત્રણુ બચે

चत्वार एवेति २। एवं राशिभेदसूत्राणि एतद्विवरणसूत्रेभ्यो ज्ञातव्यानि इह च सर्वत्रापि अपहारकसमयापेक्षयाऽऽद्यं पदम् अपह्रियमाणद्रव्यापेक्षया तु द्वितीयमिति। 'कइणं भंते! महाजुम्मा पन्नत्ता ? 'गोयमा' ! सोलस महाजुम्मा पण्णत्ता' इत्यादि, संख्यासूत्रे विशेषणविशेष्यभावे विशेषणस्य प्राक् प्रयोगः विशेष्यस्य च परप्रयोग इति नियमेन द्रव्यबोधक सूत्रसिद्धपदस्य परप्रयोगः समयबोधक सूत्रसिद्धपदस्य च प्राक्प्रयोगः कृतः, ततः 'से केणट्ठेण' इत्यादि प्रश्नस्य 'जे णं रासी' इत्याद्युत्तर सूत्रव्याख्यानेतु द्रव्यबोधकपदस्य प्रथमतो विवरणम्, समयबोधकस्य च पश्चाद्विवरणं कृतमिति। 'कडजुम्मदारजुम्मे'

विवरण सूत्रों के द्वारा ज्ञातव्य है। यहां सर्वत्र अपहारक समय की अपेक्षा से आद्य पद है और अपह्रियमाण द्रव्य की अपेक्षा से द्वितीय पद है 'कइ णं भंते ! महाजुम्मा पन्नत्ता' 'गोयमा ! सोलस महाजुम्मा पन्नत्ता' इत्यादि संख्या सूत्र में जो कि विशेषण विशेष्य भाव से युक्त है 'विशेषण का पहिले प्रयोग होना है' और विशेष्य का बाद में प्रयोग होता है। इस नियम के अनुसार द्रव्य बोधक सूत्र से सिद्ध पद का परप्रयोग और समय बोधक सूत्र से सिद्ध पद का पहिले प्रयोग किया गया है। इसलिये 'केणट्ठेणं' इत्यादि प्रश्न के 'जे णं रासि' इत्यादि उत्तर रूप सूत्र के व्याख्यान में द्रव्यबोधक पदका पहिले विवरण किया गया है और समयबोधक पद का पीछे विवरण किया गया है। अब गौतमस्वामी इन सोलह राशियों के अर्थ को पूछते हैं—'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, सोलस महाजुम्मा' हे भदन्त !

છે અને તેના સમય ચાર જ છે. આ રીતે રાશી ભેદના સૂત્રો તેના વિવરણ સૂત્રોદ્વારા જણાય છે. અહિયાં બધે ઠેકાણે આહારક સમયની અપેક્ષાથી પહેલું પદ છે. અને અપહીરમાણ દ્રવ્યની અપેક્ષાથી બીજુ પદ કહેલ છે. 'कइणं भंते ! महाजुम्मा पन्नत्ता' गोयमा ! सोलस महाजुम्मा पन्नत्ता' ઇત્યાદિ સંખ્યા સૂત્રમાં જે વિશેષ્ય વિશેષ ભાવથી યુક્ત છે, વિશેષણનો પહેલાં પ્રયોગ થાય છે. અને વિશેષ્યનો પછીથી પ્રયોગ થાય છે, આ નિયમ પ્રમાણે દ્રવ્યનો બોધ કરાવનાર બોધક સૂત્રથી સિદ્ધપદનો પહેલાં પ્રયોગ કરવામાં આવેલ છે. તેથી 'केणट्ठेण' ' વિગેરે પ્રશ્નોના 'जेणं रासि' વિગેરે ઉત્તર રૂપ સૂત્રોના વ્યાખ્યાનમાં દ્રવ્ય બોધક પદનું વિવરણ પહેલાં કરવામાં આવેલ છે. અને સમય બોધના પદનું પછીથી વિવરણ કરેલ છે.

હવે ગૌતમસ્વામી આ સોળ રાશિયોનો અર્થ પ્રભુશ્રીને પૂછે છે. 'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सोलस महाजुम्मा' હે ભગવન્ આપ શા કારણથી

कृतयुग्मद्वापरयुग्मः ३ 'कडजुम्मकलियोगे' कृतयुग्म कल्योजः ४। 'तेओग कडजुम्मे' त्र्योजकृतयुग्मः ५। 'तेओगतेओगे' त्र्योज-त्र्योजः ६ 'तेओग दावरजुम्मे' त्र्योज द्वापरयुग्मः ७। 'तेओगकलिओगे' त्र्योजकल्योजः ८ 'दावरजुम्मकडजुम्मे' द्वापरयुग्म कृतयुग्मः ९ 'दावरजुम्मतेओगे' द्वापरयुग्मत्र्योजः १०। 'दावरजुम्मदावरजुम्मे' द्वापरयुग्म द्वापरयुग्मः ११ 'दावरजुम्मकलिओगे' द्वापरयुग्म कल्योजः १२ 'कलिओग कडजुम्मे १३, कल्योज कृतयुग्मः १३ 'कलिओग तेओगे' कल्योजत्र्योजः १४ 'कलियोग दावरयुम्मे' कल्योज द्वापरयुग्मः १५। 'कलिओगकलिओगे' कल्योज कल्योजः १६। एते षोडश महायुग्म राशयो भवन्तीति। षोडशराशीनामर्थं गौतमः पृच्छति-'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ सोलस महाजुम्मा पन्नत्ता' तत्केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते षोडशमहायुग्माः प्रज्ञप्ता-कथिताः 'तं जहा' तद्यथा-'कडजुम्मकडजुम्मे जाव कलिओग कलिओगे' कृतयुग्मकृतयुग्मो यावत्कल्योजकल्योज इति अत्र यावत्पदेन 'कडजुम्मतेओगे' इत्यारभ्य 'कलिओग दावरजुम्मे' इत्यन्तानां ग्रहणं भवतीत्यवान्तरप्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' 'हे गौतम! 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए' यः खलु राशिः चतुष्केणापहारेणापह्रियमाणश्चतुःपर्यवसितो भवति चतुःसंख्यया विभज्यमाने चतुः शेषो भवतीत्यर्थः तथा-'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया ते वि कड

आप किस कारण से कहते हैं कि महायुग्म सोलह होते हैं। जैसे कि वे कृतयुग्म कृतयुग्म से लेकर आपने 'कलिओगकलिओग' पद तक कहे हैं। यहां यावत् शब्द से 'कडजुम्म तेओगे' से लेकर 'कलिओगदावर जुम्मे' तक के १४ महायुग्म गृहीत हुए हैं इस प्रकार का यह अवान्तर प्रश्न है। इस के उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए' हे गौतम! जो राशि चार की संख्या से विभक्त होकर अन्त में चार बचाती है तथा

કહો છો કે મહાયુગ્મો સોળ છે? જેમ કે-કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મથી લઈને કલિયોગ પદ સુધી આપે કહ્યા છે. અહિયાં યાવત્પદથી 'कडजुम्म तेओगे' આ પદથી લઈને 'कलिओगद्दावरजुम्मे' આ પદ સુધી ૧૪ ચૌદ મહાયુગ્મો ગ્રહણ કરાયા છે. આ રીતે આ અવાન્તર પ્રશ્ન કરેલ છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसीए' હે ગૌતમ! જે રાશીનો ચારની સંખ્યામાંથી વિભાગ કરવાથી છેવટે ચાર બચે છે, તથા 'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया ते वि कडजुम्मा'

जुम्मा' ये खलु तस्य राशेरपहारसमया स्तेऽपि कृतयुग्मस्वरूपाः चतुः पर्यवसिता एव भवन्ति। 'सेत्तं कडजुम्म कडजुम्मे' सोऽयं कृतयुग्मकृतयुग्मः, तत्तेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते कृतयुग्मकृतयुग्मः, इत्यग्रेण सम्बन्धः, स च जघन्यतः षोडशात्मकः (१६) अपहियमाण द्रव्यापेक्षया समयापेक्षया च कृतयुग्मत्वादिति १। 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे ति पज्जवसिए' यः खलु राशि श्चतुष्केणापहारेणापहियमाण स्त्रिपर्यवसितो भवति तथा-'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा सेत्तं कडजुम्म तेओए' ये खलु तस्य राशेरपहारसमयाः कृतयुग्मा श्चतुः पर्यवसाना भवन्ति 'से त्तं कडजुम्म तेओए' तस्मात्कारणात् सोऽयं राशिविशेषः कृतयुग्म त्र्योज इति कथ्यते स च जघन्यत एकोनविंशत्यात्मकः (१९) २। 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं

'जे णं तस्स रासिस्स अवहार समया ते वि कडजुम्मा 'जो इस राशि के अपहारक समय होते हैं वे भी चार रूप ही होते हैं ऐसी वह राशि कृतयुग्म कृतयुग्म रूप कही गई है 'इसी लिये मैं ने उसे कृतयुग्म कृतयुग्म रूप कहा है। जैसे १६ संख्या की राशि जब चार से विभक्त होती है तो अन्त में इसके ४ बचते हैं और यहां अपहारक समय भी चार हैं, इसलिये अपहियमाण द्रव्य की अपेक्षा से और अपहारक समय की अपेक्षा से इस में कृतयुग्म कृतयुग्म रूपता आती है ऐसा जानना चाहिये। 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए' जो राशि चार के द्वारा विभक्त होती हुई जिस के अन्त में तीन बचें ऐसी होती है तथा-'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा से त्तं कडजुम्मतेओए' उस राशि के अपहार समय कृतयुग्म

જે તે રાશીનો અપહાર કરવાળો સમય હોય છે, તે પણ ચારનો જ હોય છે. એવી તે રાશી કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ કહેવાય છે. તેથી મેં તેને કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ કહેલ છે. જે રીતે ૧૬ સોળ સંખ્યાની રાશીનો જ્યારે ચારથી વિભાગ કરવામાં આવે છે, તો છેવટે તેમાંથી ૪ ચાર બચે છે. અને અહિયાં અપહાર કરનાર સમય પણ ચાર જ છે. તેથી અપહાર કરતાં દ્રવ્યની અપેક્ષાથી અને અપહારક સમયની અપેક્ષાથી આમાં કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મપણું આવે છે. તેમ સમજવું. 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए' જે રાશી ચારથી વિભકત કરાતિ થકી જેના અંતમાં ત્રણ બચે એવી હોય છે. તથા 'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा सेत्तं कडजुम्मतेओए' તે રાશિનો અપહાર સમય કૃતયુગ્મ-ચાર રૂપ હોય છે. એવી તે રાશિ કૃતયુગ્મ, ત્ર્યોજ

अवहीरमाणे दुपज्जवसिए' यः खलु राशि श्चतुष्केणापहारेणापह्रियमाणो द्विपर्यवसितो भवति तथा-'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा सेत्तं कडजुम्म दावरजुम्मे' ये खलु तस्य राशेरपहारसमयाः कृतयुग्मरूपा भवन्ति तस्मात् स राशि विशेषः कृतयुग्मद्वापरयुग्म इत्यभिधीयते, स च जघन्यतोऽष्टादशात्मक इति (१८) 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए' यः खलु राशि श्चतुष्केणापहारेणापह्रियमाण एकपर्यवसित एव भवति तथा-'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा से त्तं कडजुम्मकलिओगे' ये खलु तस्य राशेरपहारसमया एकपर्यवसिता एव भवन्ति तस्मात् स राशिः कृतयुग्मकल्योज इत्यभिधीयते स च जघन्यत सप्तदशात्मकः (१७) इति ४।

चार रूप होते हैं ऐसी वह राशि कृतयुग्म त्र्योज कही गई है। वह राशि जघन्य से १९ संख्या रूप होती है 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए' जें णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा सेत्तं कडजुम्म दावरजुम्मे' तथा-जो राशि चतुष्क से अपहृत-विभक्त होकर अन्त में दो बचाती है और जिस के अपहार समय चार रूप से होते हैं ऐसी वह राशि कृतयुग्म द्वापरयुग्म रूप है। जघन्य से इस राशिका प्रमाण १८ है। अपहार समयों की अपेक्षा इस में कृतयुग्मता है और द्रव्य की अपेक्षा अन्त में दो बचने के कारण द्वापरयुग्म है। 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए' जो राशि चार से विभक्त होकर अन्त में एक बचाती राशि कृतयुग्म कल्योज रूप है। तथा इसके अपहारक समय है। 'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा सेत्तं कडजुम्म कलिओगे' एवं जिस राशिका अपहार समय एक होता है, वह राशि कृतयुग्म कल्योज रूप हैं। तथा इसके अपहार समय चार होते हैं। इसलिये इस में कृतयुग्मता है ऐसी वह राशि जघन्य से १७ संख्यारूप होती है। 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीर-

કહેવાય છે તે રાશિ જઘન્યથી ૧૯ ઓગણીસની સંખ્યા રૂપ છે. 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा सेत्तं कडजुम्म दावरजुम्मे' તથા જે રાશી ચારની સંખ્યાથી અપહાર કરતા વહેંચાઈને છેવટે બે વધે છે અને જેનો અપહાર સમય ચાર રૂપ હોય છે. એવી તે રાશિ કૃતયુગ્મદ્વાપરયુગ્મ રૂપ હોય છે. જઘન્યથી આ રાશિનું પ્રમાણ ૧ અરાઢનું છે, અપહાર સમયોની અપેક્ષાથી આમાં કૃતયુગ્મ પણું કહેલ છે. અને છેવટે બે બચવાને કારણે દ્વાપરયુગ્મપણું છે. 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए' જે રાશી ચારથી વહેંચવાથી છેવટે એક વધે છે, 'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया सेत्तं कडजुम्म कलिओगे' અને જે રાશીનો અપહાર સમય એક હોય તે રાશિ કૃતયુગ્મ કલ્યોજ રૂપ છે. અને તેનો

'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए' यः खलु राशिश्चतुष्केणापहारेणापह्रियमाणश्चतुःपर्यवसितो भवेत् तथा–'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा से त्तं तेओगकडजुम्मे ५। ये खलु तस्य राशेरपहार समयाः त्र्योजा भवन्ति तस्मात्कारणात् स राशिविशेषः त्र्योज कृतयुग्म रूप इत्यभिधीयते स च जघन्यतो द्वादशात्मकः (१२) इति ५। 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे ति पज्जवसिए' यः खलु राशि श्चतुष्केणापहारेण अपह्रियमाणत्रिपर्यवसितो भवेत् तथा–'जे णं तस्स रासिस्स अवहार समया तेओगा से त्तं तेओग तेओगे' ये खलु तस्य राशेरपहारसमयाः त्र्योजा भवन्ति तस्मात्कारणात् स राशिविशेषः त्र्योज त्र्योज रूपोऽभिधीयते' स च जघन्यतः पञ्चदशात्मकः (१५) इति ६। 'जेणं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दो पज्जवसिए' यः खलु राशि श्चतुष्केणापहारेण अपह्रियमाणे द्विपर्यवसित एव भवति तथा–'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा

माणे चउपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा से त्तं तेओग कडजुम्मे' जो राशि चार से अपहृत होने पर चार बचाती है और उसके अपहार समय ३ रूप होते हैं ऐसी वह राशि त्र्योज कृतयुग्म रूप होती है। ऐसी वह राशि जघन्य से १२ संख्या रूप होती है। 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा से त्तं तेओगतेओगे' ६ 'जो राशि चार से अपहृत होने पर अन्त में तीन बचाती है और उस राशि के अपहार समय त्र्योज रूप होते हैं वह त्र्योज त्र्योज राशि है। जघन्य प्रमाण १५ है। 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दो पज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहार

અપહારક સમય ચાર હોય છે. તેથી તેમાં કૃતયુગ્મ પણ આવે છે. એવી તે રાશી જઘન્યથી ૧૭ સત્તર સંખ્યા રૂપ છે 'जेणं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए जेणं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा सेत्तं तेओग कडजुम्मे' જે રાશીમાં ચારની સંખ્યાથી અપહાર કરતાં ચાર વધે છે, અને તેના અપહારનો સમય ૩ ત્રણ રૂપ હોય છે. એવી તે રાશી ત્ર્યોજ કૃતયુગ્મ રૂપ હોય છે, એવી તે રાશી ૧૨ બારની સંખ્યા રૂપ હોય છે.

'जेणं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्सअवहारसमया तेओगा सेत्तं तेओगतेओगे' જે રાશીમાંથી ચારના અપહારથી છેવટે ત્રણ બચે છે, અને અપહારનો સમય ત્ર્યોજ રૂપ હોય છે, તે ત્ર્યોજ ત્ર્યોજ રાશી કહેવાય છે તેની સંખ્યાનું પ્રમાણ ૧૫નું છે, 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दो पज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया

से त्तं तेओग दावरजुम्मे' ये खलु तस्य राशेरपहारसमयाः त्र्योजा भवन्ति तस्मात्कारणात् स राशि विशेषः त्र्योज द्वापरयुग्म इति कथ्यते स च जघन्यत श्चतुर्दशात्मकः (१४) इति ७। 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए' यः खलु राशि श्चतुष्केणापहारेणापहियमाण एक एव पर्यवसितो भवेत् तथा-'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा सेत्तं तेओगकलिओगे' ये खलु तस्य राशेरपहारसमया त्र्योजा भवन्ति, तस्मात् कारणात् स राशिविशेषः त्र्योजकल्योज इत्यभिधीयते स च जघन्यत स्त्रयोदशात्मकः (१३) इति ८। 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए' यः खलु राशि श्चतुष्केणापहारेणापह्रियमाण श्चतुःपर्यवसितो भवति तथा-'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा से त्तं दावरजुम्मकडजुम्मे'

समया तेओगा सेत्तं तेओगदावरजुम्मे' ७ जिस राशि में से चतुष्क के अपहार से अन्त में दो बचते हैं और अपहार समय जिसके त्र्योज रूप होते हैं ऐसी वह राशि त्र्योजद्वापरयुग्म रूप होती है इसका जघन्य प्रमाण १४संख्या रूप है। 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए' जो राशि चतुष्क से अपहृत होने पर अन्त में एक बचाती है और 'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा सेत्तं तेओग कलिओगे' अपहार समय जिसराशि के त्र्योजरूप होते हैं ऐसी वह राशि त्र्योज कल्योज रूप होती है। इसका जघन्य प्रमाण १३, संख्यारूप होता है। 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए' जो राशि चार से विभाजित होकर अन्त में चार बचाती है तथा 'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा सेत्तं दावरजुम्म कडजुम्मे'

तेओगा सेत्तं तेओगदावरजुम्मे' ७, જે રાશિમાંથી ચારનો અપહાર કરવાથી છેવટે બે બચે છે, અને જેના અપહારનો સમય ત્ર્યોજ રૂપ હોય છે. એવી તે રાશી ત્ર્યોજ દ્વાપરયુગ્મ રૂપ હોય છે. તેનું જઘન્ય પ્રમાણ ૧૪ ચૌદ સંખ્યા રૂપ હોય છે. 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए' જે રાશી ચારની સંખ્યાથી અપહાર થવાથી છેવટે એક બચે છે, અને 'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा सेत्तं तेओगकलिओगे' અને જેનો અપહારનો સમય ત્ર્યોજ રૂપ હોય છે. એવી તે રાશી ત્ર્યોજ કલ્યોજ રૂપ હોય છે. તેનું પ્રમાણ ૧૩ તેર સંખ્યા રૂપ હોય છે. ૨ 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए' જે રાશીમાંથી ચારનો વિભાગ કરવાથી છેવટે ચાર બચે છે તથા 'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा सेत्तं दावरजुम्म कडजुम्मे' જે રાશિનો અપહાર સમય દ્વાપરયુગ્મ છે, એવી તે રાશિ દ્વાપર

ये खलु तस्य राशेरपहारसमया द्वापरयुग्मा भवन्ति तस्मात्कारणात् स राशिविशेषो द्वापरयुग्मकृतयुग्म इत्यभिधीयते, स च जघन्यतोऽष्टात्मकः, इति (८) ९। 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए' यः खलु राशि श्चतुष्केणापहारेणापहियमाण स्त्रिपर्यवसितो भवति तथा-'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा से त्तं दावरजुम्मतेओगे' ये खलु तस्य राशेरपहारसमया द्वापरयुग्मरूपा भवन्ति तस्मात्कारणात् स राशिविशेषः द्वापरयुग्मत्र्योज इति कथ्यते स च जघन्यत एकादशात्मकः (११) इति १०। 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए' यः खलु राशि श्चतुष्केणापहारेणापहियमाणो द्विपर्यवसितो भवति तथा-'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा से त्तं दावरजुम्मदावरजुम्मे' ये खलु तस्य राशेरपहारसमया द्वापरयुग्मरूपा भवन्ति तस्मात्कारणात् स राशिविशेषो द्वापरयुग्म द्वापरयुग्म इति कथ्यते स च जघ-

जिस राशि के अपहार समय द्वापरयुग्म हैं ऐसी वह राशि द्वापरयुग्म कृतयुग्म कही गई है। वह राशि जघन्य रूप से ८ संख्यात्मक है। ९ 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए' जो राशि चार से अपहृत होकर अन्त में तीन बचाती है। तथा 'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा सेत्तं दावरजुम्मतेओगे' जिस राशि के अपहार समय द्वापरयुग्म रूप हैं ऐसी वह राशि द्वापरयुग्म त्र्योजरूप है। यह संख्या में जघन्य से ११ संख्या रूप होती है। 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए' जो राशि चार से अपहृत होकर-विभाजित होकर अन्त में दो बचाती है तथा 'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा' जिस राशि के अपहार समय द्वापरयुग्म रूप हैं-ऐसी वह राशि द्वापरयुग्म द्वापरयुग्म रूप है। यह जघन्य संख्या में १० रूप होती है। 'जे णं रासी चउक्कएणं

યુગ્મ કૃતયુગ્મ કહેલ છે. તે આઠ ૮ સંખ્યાત્મક છે. ૯ 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे ति पज्जवसिए' જે રાશી ચારથી અપહૃત થઈને છેવટે ત્રણ બચાવે છે, તથા 'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा सेत्तं दावरजुम्म तेओगे' જે રાશિનો અપહાર સમય દ્વાપરયુગ્મ રૂપ છે, એવી તે રાશી દ્વાપરયુગ્મ ત્ર્યોજ રૂપ છે. તેની જઘન્ય સંખ્યા ૧૧ની હોય છે 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए' જે રાશી ચારથી અપહાર થઈને વહેંચવાથી છેવટે બે બચે છે, તથા 'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा' જે રાશીનો અપહાર સમય દ્વાપરયુગ્મ રૂપ છે, એવી તે રાશિ દ્વાપરયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ રૂપ છે, આ સંખ્યામાં ૧૦ દસ રૂપ હોય છે. 'जे णं रासी

न्यतो दशात्मकः (१०) इति ११। 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए' यः खलु राशि श्चतुष्केणापहारेणापह्रियमाण एक पर्यवसित एव भवति तथा-'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावर जुम्मा सेत्तं दावरजुम्मकलिओगे' ये खलु तस्य राशेरपहारसमया द्वापरयुग्म रूपा भवन्ति तस्मात्कारणात् स राशिविशेषो द्वापरयुग्म कल्योज इति कथ्यते, स च नवात्मकः (९) इति १२। 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउप्पज्जवसिए' यः खलु राशि श्चतुष्केणापहारेणापह्रियमाण श्चतुःपर्यवसितो भवति तथा 'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलिओगा सेत्तं कलिओग कडजुम्मे' ये खलु तस्य राशेरपहारसमयाः कल्योजाः तस्मात्कारणात् स राशिविशेषः कल्योजकृतयुग्म इत्यभिधीयते, स च जघन्यत श्चतुष्कात्मकः (४) इति १३। 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए' यः खलु राशि श्चतुष्केणापहारेणाऽपह्रियमाणस्त्रिपर्यवसितो भवति

अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए' जो राशि चार से अपहृत होकर अन्त में एक बचाती हैं तथा 'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा सेत्तं दावरजुम्म कलिओगे' जो उस राशि के अपहार समय द्वापरयुग्म रूप हैं ऐसी राशि द्वापरयुग्म कल्योज रूप होती है। यह जघन्य संख्या में ९ रूप होती है। 'जें णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउज्जवसिए' 'जो राशि चार से विभक्त होकर अन्त में चार बचाती है। 'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोगा सेत्तं कलिओग कडजुम्मे' तथा जिस राशि के अपहार समय कल्योज रूप होते हैं ऐसी वह राशि कल्योज कृतयुग्म कहलाती है। संख्या में वह जघन्य से चार रूप है। 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीर-

चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए' જે રાશી ચારથી અપહૃત થવાથી એક બચે તથા 'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा सेत्तं दावरजुम्मकलिओगे' જે રાશિનો અપહાર સમય દ્વાપરયુગ્મ રૂપ છે, એવી તે રાશીદ્વાપરયુગ્મ કલ્યોજ રૂપ હોય છે. આ સંખ્યામાં ૯ નવ રૂપ હોય છે. 'जे णं रासी चउक्केएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए' જે રાશી ચારથી વહેંચાઇને છેવટે ચાર બચાવે છે, 'जे णं तस्स रासिस्स अवहार समया कलिओगा सेत्तं कलिओगकडजुम्मे' તથા જે રાશીનો અપહાર સમય કલ્યોજ રૂપ હોય છે, એવી તે રાશી કલ્યોજ કૃતયુગ્મ કહેવાય છે. સંખ્યામાં તે ચાર રૂપ હોય છે. 'जेणं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलिओगा सेत्तं कलिओग

तथा-'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलिओगा सेत्तं कलियोग तेओगे' ये खलु तस्य राशेरपहारसमयाः कल्योजाः तस्मात्कारणात् स राशिविशेषः कल्योज त्र्योज इति कथ्यते स च जघन्यतः सप्तात्मकः (७) इति १४। 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए' यः खलु राशिश्चतुष्केणापहारेणापह्रियमाणो द्विपर्यवसितो भवति तथा 'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलिओगा सेत्तं कलिओगदावरजुम्मे' ये खलु तस्य राशेरपहारसमयाः कल्योजा भवन्ति तस्मात् कारणात् स राशि विशेषः कल्योज द्वापरयुग्म इति कथ्यते, स च जघन्यतः षडात्मकः (६) इति १५। 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए' यः खलु राशिश्चतुष्केणापहारेणापह्रीयमाण एकपर्यवसितो भवेत् तथा-'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलिओगा सेत्तं कलिओग कलिओगे' ये खलु तस्य राशेरपहारसमयाः कल्योजा भवन्ति

माणे तिपज्जवसिए 'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलिओगा सेत्तं कलिओगतेओगे' जो राशि चार से विभक्त होकर अन्त में तीन बचाती है, तथा उस के अपहार समय कल्योज रूप होते हैं ऐसी वह राशि कल्योज त्र्योज रूप कही गई। वह जघन्य संख्या में ७ रूप है। 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए' 'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलिओगा सेत्तं कलिओग दावरजुम्मे' जो राशि चार से विभक्त होती हुई अन्त में दो बचाती है और उस के अपहार समय कल्योज रूप होते हैं। ऐसी वह कल्योज द्वापरयुग्म कही जाती है। संख्या में वह जघन्य से ६ रूप होती है। 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलिओगा सेत्तं कलिओगकलिओगे' जो राशि चार से अपहृत होकर अन्त में एक बचाती है। तथा

तेओगे' જે રાશી ચારથી વહેંચાઈને છેવટમાં ત્રણ બચાવે છે, તથા તેના અપહારનો સમય કલ્યોજ રૂપ હોય છે, એવી તે રાશી કલ્યોજ ત્ર્યોજ રૂપ કહેલ છે. તે સંખ્યામાં ૭ સાત રૂપ છે. 'जेणं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए जेणं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलिओगा सेत्तं कलिओगदावर जुम्मे' જે રાશી ચારથી વહેંચાઈને છેવટે બે બચાવે છે, અને તેનો જે અપહારનો સમય કલ્યોજ રૂપ હોય છે, એવી તે રાશી કલ્યોજ દ્વાપરયુગ્મ રૂપ કહેવામાં આવે છે. તે સંખ્યામાં ૬ છ રૂપ છે. 'जेणं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलिओगा से त्तं कलिओगकलिओगे' જે રાશી ચારની સંખ્યાથી અપહૃત થઈને છેવટે એક બચાવે છે. તથા 'जेणं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलिओगा

तस्मात्कारणात् स राशि विशेषः कल्योज कल्योज इति कथ्यते एष च जघन्यतः पञ्चात्मकः (५) इति १६। 'से तेणट्ठेणं जाव कलिओगकलिओगे' तत्तेनार्थेन हे गौतम! एवमुच्यते कृतयुग्मकृतयुग्मो यावत् कल्योज कल्योज इति षोडशा-पहारराशयो भवन्ति यावत्पदेन 'कडजुम्मकडजुम्मे' इत्यारभ्य 'कलिओग दावरजुम्मे' इत्यन्तस्य सर्वस्य ग्रहणं भवतीति ॥सू०१॥

मूलम्–कडजुम्म कडजुम्म एगिंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति? किं नेरइएहिंतो०? जहा उप्पलुद्देसए तहा उववाओ। ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति? गोयमा! सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति। ते णं भंते! जीवा समए समए पुच्छा, गोयमा! ते णं अणंता समए समए अवहीरमाणा अवहीरमाणा अणंताहिं उस्सप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरंति णो चेव णं अवहरिया सिया। उच्चत्तं जहा उप्पलुद्देसए। ते णं भंते! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा अबंधगा? गोयमा! बंधगा, नो अबंधगा। एवं सव्वेसिं आउयवज्जाणं। आउयस्स बंधगा वा अबंधगा वा। ते णं भंते! जीवा णाणावरणिज्जस्स पुच्छा, गोयमा! वेयगा नो अवेयगा। एवं सव्वेसिं। ते णं भंते! जीवा किं सायावेयगा

'जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलिओगा से त्तं कलिओग कलिओगे' जो उस राशि के अपहारसमय कल्योज रूप होते हैं, ऐसी वह राशि कल्योज कल्योज है यह ५ संख्यारूप होती है। १६। 'से तेणट्ठेणं जाव कलिओग कलिओगे' इस कारण हे गौतम! मैंने कृतयुग्म कृतयुग्म से लेकर कल्योज कल्योज तक १६ महाराशियां कही हैं ॥सू०१॥

से त्त कलिओगकलिओगे' જે રાશીનો અપહાર સમય કલ્યોજ રૂપ હોય છે એવી તે રાશી કલ્યોજ કલ્યોજરૂપ છે. આની સંખ્યા પંદર ૧૫ રૂપ હોય છે. ।૧૬। 'से तेणट्ठेणं जाव कलिओग कलिओगे' આ કારણથી હે ગૌતમ! મેં કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મથી લઈને કલ્યોજ કલ્યોજ સુધી ૧૬ સોળ મહારાશીયો કહી છે. ।।સૂ૦૧।।

असायावेयगा पुच्छा, गोयमा! सायावेयगा असायावेयगा वा। एवं उप्पलुद्देसगपरिवाडी। सव्वेसिं कम्माणं उदई नो अणुदई। छण्हं कम्माणं उदीरगा नो अणुदीरगा। वेयणिज्जाउयाणं उदीरगा वा अणुदीरगा वा। तेणं भंते! जीवा किं कण्ह० पुच्छा, गोयमा! कण्हलेस्सा वा, नीललेस्सा वा, काउलेस्सा वा तेउलेस्सा वा। नो सम्मदिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो नाणी अन्नाणी नियमं दुअन्नाणी, तं जहा मइ अन्नाणी य सुय अन्नाणी य नो मणजोगी, नो वइजोगी, काइजोगी। सागारोवउत्ता वा अणागारोवउत्ता वा। तेसिं णं भंते! जीवाणं सरीरा कइ वन्ना जहा उप्पलुद्देसए सव्वत्थ पुच्छा गोयमा! जहा उप्पलुद्देसए ऊसासगा वा, नीसासगा वा, नो ऊसासनीसासगा वा। आहारगा वा अणाहारगा वा। नो विरया अविरया, नो विरयाविरया, सकिरिया, नो अकिरिया। सत्तविहबंधगा वा, अट्ठविहबंधगा वा। आहारसन्नोवउत्ता वा जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता वा। कोहकसाई वा माणकसाई जाव लोभकसाई वा। नो इत्थिवेयगा, नो पुरिसवेयगा णपुंसगवेयगा। इत्थिवेयबंधगा वा, पुरिसवेयबंधगा वा, णपुंसगवेयबंधगा वा। णो सन्नी, असन्नी। सइंदिया नो अणिंदिया। ते णं भंते! कडजुम्म कडजुम्म एगिंदिया कालओ केवच्चिरं होंति? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंता उस्सप्पिणी ओसप्पिणीओ वणस्सइकाइय कालो। संवेहो न भण्णइ। आहारो जहा उप्पलुद्देसए। नवरं निव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं, सिय चउदिसिं सिय पंच दिसिं, सेसं तहेव। ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं

वाससहस्साइं। समुग्घाया आदिल्ला चत्तारि। मारणंतिय समुग्घाएणं समोहया वि मरंति असमोहया वि मरंति। उव्वट्टणा जहा उप्पलुद्देसए। अह भंते! सव्वपाणा जाव सव्व सत्ता कडजुम्मकडजुम्मएगिंदियत्ताए उववन्नपुव्वा? हंता गोयमा! असइं अदुवा अणंतखुत्तो ॥सू० २॥

छाया--कृतयुग्मयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरकेभ्य० यथोत्पलोद्देशके तथा उपपातः ते खलु भदन्त! जीवाः एकसमयेन कियन्त उत्पद्यन्ते गौतम! षोडश वा संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्ता वा, उत्पद्यन्ते। ते खलु भदन्त! जीवाः समये समये पृच्छा गौतम! ते खलु अनन्ताः समये समये अपहियमाणा अपहियमाणा अनन्ताभिरुत्सर्पिणीभिरपहियन्ते, नैव खलु अपहृताः स्युः। उच्चत्वं यथोत्पलोद्देशके। ते खलु भदन्त! जीवाः ज्ञानावरणीयस्य कर्मणः किं बन्धका अबन्धकाः? गौतम! बंधका नो अबन्धकाः। एवं सर्वेषा मायुष्कवर्जाणाम्। आयुष्कस्य बन्धका वा, अबंधका वा। ते खलु भदन्त! जीवाः ज्ञानावरणीयस्य० पृच्छा गौतम! वेदका नो अवेदका एवं सर्वेषाम्। ते खलु भदन्त! जीवाः किं सातावेदका असातावेदकाः० पृच्छा, गौतम! सातावेदका वा, असातावेदका वा, एवमुत्पलोद्देशकपरिपाटी। सर्वेषां कर्मणा मुदयिनो नो अनुदयिनः षण्णां कर्मणा मुदीरकाः, नो अनुदीरकाः, वेदनीयायुष्कायोः उदीरका वा, अनुदीरका वा। ते खलु भदन्त जीवाः किं कृष्ण० पृच्छा, गौतम! कृष्णलेश्या वा, नीललेश्या वा, कापोतलेश्या वा, तेजोलेश्या वा। नो सम्यग्दृष्टयः नो सम्यग्मिथ्यादृष्टयः, मिथ्यादृष्टयः। नो ज्ञानिनः, अज्ञानिनः नियमात् द्वयज्ञानिनः तद्यथा—मत्यज्ञानिनश्च श्रुताज्ञानिनश्च। नो मनोयोगिनो नो वचोयोगिनः काययोगिनः। साकारोपयुक्ता वा, अनाकारोपयुक्ता वा। तेषां खलु भदन्त! जीवानां शरीराणि कति वर्णानि, यथोत्पलोद्देशके सर्वत्र पृच्छा, गौतम! यथोत्पलोद्देशके उच्छ्वासका वा निःश्वासका, वा, नो उच्छ्वासनिःश्वासकाः। आहारका वा अनाहारका वा, नो विरताः अविरताः, नो विरताविरताः। सक्रियाः नो अक्रियाः। सप्तविधबन्धका वा अष्टविधबन्धका वा। आहारसंज्ञोपयुक्ता वा यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्ता वा। क्रोधकषायिनो वा मानकषायिनो यावल्लोभकषायिनो वा। नो स्त्रीवेदका नो पुरुषवेदकाः, नपुंसकवेदकाः। स्त्रीवेदबन्धका वा, पुरुषवेदबन्धका वा, नपुंसकवेदबन्धका वा। नो संज्ञिनोऽसंज्ञिनः। सेन्द्रिया नो अनिन्द्रियाः। ते खलु भदन्त! कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः कालतः कियच्चिरं भवन्ति? गौतम!

जघन्येन एकं समयम्, उत्कर्षेणानन्तं कालम्, अनन्ता उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यः वनस्पतिकायिककालः। संवेधो न भण्यते, आहारो यथा-उत्पलोद्देशके, नवरं निर्व्याघातेन षड्दिशम्, व्याघातं प्रतीत्य स्यात् चतुर्दिशम्, स्यात् पञ्चदिशं शेषं तथैव। स्थितिर्जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम्, उत्कर्षेण द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि। समुद्घाता आद्याश्चत्वारः। मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहता अपि म्रियन्ते, असमवहता अपि म्रियन्ते। उद्वर्त्तना यथा उत्पलोद्देशके। अथ भदन्त! सर्वे प्राणा यावत् सर्वसत्त्वाः कृतयुग्मकृतयुग्म एकेन्द्रियतया उत्पन्नपूर्वाः? गौतम! असकृत् अथवा-अनन्तकृत्वः॥ सू० २॥

टीका:--'कडजुम्मकडजुम्म एगिंदिया णं भंते! कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त! ये एकेन्द्रियाः चतुष्कापहारे चतुःपर्यवसिताः अपहारसमयाश्च चतुःपर्यवसानास्ते कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः कथ्यन्ते एवं सर्वत्र ज्ञातव्यम् 'कओ उववज्जंति' इत्थंभूता एकेन्द्रियाः कुतः कस्मात् स्थानविशेषादागत्योपपद्यन्ते 'किं नेरइएहिंतो०' किं नैरयिकेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते तिर्यग्योनिकेभ्यो वा आगत्योत्पद्यन्ते मनुष्येभ्यो वा आगत्योत्पद्यन्ते देवेभ्यो वा आगत्योत्पद्यन्ते इति प्रश्नः, उत्तरमाह-अतिदेशमुखेन 'जहा उप्पलुद्देसए तहा

'कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते! इत्यादि

टीकार्थ-'कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते!' हे भदन्त! जो एकेन्द्रिय कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमाण है। ऐसे वे एकेन्द्रिय जीव 'कओ उववज्जंति' किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं? 'किं नेरइएहिंतो०' क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते है अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न होते है? अथवा मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा देवों से आकर के उत्पन्न होते हैं? इस प्रश्न का अतिदेश द्वारा उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतम-

---

'कडजुम्मकडजुम्मएगिंदियाणं' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते! હે ભગવન્ જે એકેન્દ્રિય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ હોય એવા તે એકેન્દ્રિય જીવો 'कओ उववज्जंति' કયા સ્થાન વિશેષમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? 'किं नेरइएहिंतो' શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા તિર્યંચ યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં અતિ દેશથી પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'जहा उप्पलुद्देसए तहा उववाओ' આ ભગવતી

उववाओ' यथा उत्पलोद्देशे तथा उपपातो भगवतीसूत्रस्यैव एकादशशतके प्रथमोद्देशक उत्पलोद्देशकः तत्र यथा-एकेन्द्रियाणामुपपातः कथित स्तथैवात्रापि-उपपातो ज्ञातव्यः नो नैरयिकेभ्य उत्पद्यन्ते, तिर्यग्योनिकेभ्यो वा, मनुष्येभ्यो वा, देवेभ्यो वा उत्पद्यन्ते, पृथिव्यब्वनस्पतिषु देवानामुत्पत्तिसंभवात्, तदपेक्षयैव देवेभ्य आगत्य एकेन्द्रियेषु उत्पद्यन्ते इति कथितम्। इह यत्र यत्र यस्मिन् यस्मिन् पदे उत्पलोद्देशकस्यातिदेशः कृतो भवेत् तत्तदेव पदं तत्रत्यं वाच्यम्। 'ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति' ते खलु भदन्त! जीवाः

स्वामी से कहते हैं 'जहा उप्पलुद्देसए तहा उववाओ' इस भगवती सूत्र का जो ११ वें शतक में प्रथम उद्देशक है-वही उत्पल उद्देशक है सो इस उत्पल उद्देशक में जिस रीति से एकेन्द्रिय जीवोंका उपपात कहा गया है उसीरीति से उनका उपपात यहां पर भी जानना चाहिये तथा च-कृतयुग्म कृतयुग्म राशि प्रमाण एकेन्द्रिय जीव नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न नहीं होते हैं, किन्तु वे तिर्यग्योनिकों में से आकर के भी उत्पन्न होते हैं मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं और देवों में से भी आकर के उत्पन्न होते हैं। क्यों कि पृथिवीकायिक अप्कायिक और वनस्पतिकायिक इन में देवो की उत्पत्ति हो सकती है। इसलिये यहां पर देवों से आकर के भी एकेन्द्रिय जीव रूप से जीव उत्पन्न होते हैं ऐसा कहा गया है। यहां जहां जहां जिस जिस पद में उत्पल उद्देशक का अतिदेश किया हो वहां वहां का वही पद कहना चाहिये। 'ते णं

સૂત્રના ૧૧ અગિયારમા શતકનો પહેલો ઉદ્દેશો છે તેજ ઉત્પલ ઉદ્દેશો કહેવાય છે. તે ઉત્પલ ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણે એકઇન્દ્રિયવાળા જીવોનો ઉપપાત કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે તેઓનો ઉપપાત અહિયાં કહેવો જોઈએ. તથા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોમાંથી નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થતા નથી પરંતુ તેઓ તિર્યંચ યોનિકોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે, મનુષ્યોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે. અને દેવોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે. કેમ કે પૃથ્વીકાયિક, અપ્કાયિક અને વનસ્પતિ કાયિકોમાં દેવોની ઉત્પત્તિ થઇ શકે છે. એજ કારણથી અહિયાં દેવોમાંથી આવીને પણ એકેન્દ્રિય જીવ પણાથી જીવ ઉત્પન્ન થાય છે. તેમ કહેવામાં આવેલ છે.

અહિયાં જ્યાં જ્યાં જે જે પદમાં ઉત્પલ ઉદ્દેશાનો અતિદેશ-ભલામણ કરવામાં આવેલ છે, ત્યાં ત્યાં એજ પદો કહેવા જોઇએ. 'તે ણં ભંતે! एग-

कृतयुग्म कृतयुग्मराशिप्रमाणा एकेन्द्रिया एकसमयेन एकस्मिन् समये कियन्तः कियत्संख्यका उत्पद्यन्ते ? इति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा हे गौतम ! 'सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा, उववज्जंति' षोडश वा संख्याता वा असंख्याता वा अनन्ता वा उत्पद्यन्ते, अनन्ता इति वनस्पत्यपेक्षया इति। 'ते णं भंते ! जीवा समए समए पुच्छा' ते खलु भदन्त ! जीवाः समये समये अपह्रियमाणाः कियता कालेनापह्रियन्ते? इति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते। भगवानाह-'गोयमा' हे गौतम ! 'ते णं अणंता समए समए अवहीरमाणा अवहीरमाणा' ते खलु अनन्ताः समये समये एकैकमाश्रित्य अपह्रियमाणाः अपह्रियमाणा 'अणंताहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरंति' अनन्ताभिरुत्सर्पिण्यव-

---

भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति' हे भदन्त ! वे कृतयुग्म कृतयुग्म राशि प्रमाण रूप एकेन्द्रिय जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! सोलसवा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' हे गौतम ! वे एक समय में सोलह अथवा संख्यात अथवा असंख्यात अथवा अनन्त उत्पन्न होते हैं' 'अनन्त उत्पन्न होते हैं' ऐसा जो कहा गया है वह वनस्पतिकायिक जीवों की अपेक्षा से कहा गया है। 'ते णं भंते ! जीवा समए समए पुच्छा' हे भदन्त ! वे अनन्त जीव यदि एक एक समय में अपहृत किये जावें (निकाले जावें) तो कितने काल में वे खाली हो सकते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं 'गोयमा ! ते णं अणंता, समए २ अवहीरमाणा अवहीरमाणा अणंताहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरंति' हे गौतम ! वे अनन्त,

---

समएणं केवइया उववज्जंति' हे भगवन् ते कृतयुग्म कृतयुग्मराशि प्रमाणु वाળા એકેન્દ્રિય જીવો એક સમયમાં કેટલા ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'ગોયમા ! सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' હે ગૌતમ ! તેઓ એક સમયમાં સોળ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનંત ઉત્પન્ન થાય છે. 'અનંત ઉત્પન્ન થાય છે' એ પ્રમાણે જે કહેવામાં આવેલ છે. તે વનસ્પતિકાયિક જીવોની અપેક્ષાથી કહેવામાં આવેલ છે. 'ते णं भंते ! जीवा समए समए पुच्छा' હે ભગવન્ તે અનંત જીવ જો એક એક સમયમાં અપહૃત કરવામાં આવે (બહારકાઢવામાં) આવે તો કેટલા સમયમાં તેઓ ખાલી થઈ શકે છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'ગોયમા ! तेणं अणंता समए २ अवहीरमाणा अवहीरमाणा अणंताहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणिहिं अवहीरंति' હે ગૌતમ ! તેઓ એક એક

सर्पिणीभिरपह्रियन्ते 'णो चेव णं अवहरिया सिया' नैव खलु ते अनन्ता अपहृताः स्युः। 'उच्चत्तं जहा उप्पलुद्देसए' उच्चत्वं यथोत्पलोद्देशके तेषां कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियजीवानां शरीरोच्चत्वे यथोत्पलोद्देशके उत्पलविषये कथितं तथैव ज्ञातव्यम्, जघन्येनांगुलासंख्येयभागम् उत्कर्षेण सातिरेकं योजनसहस्रं वनस्पत्यपेक्षया इति। 'ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा अबंधगा' ते खलु भदन्त ! कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियजीवाः ज्ञानावरणीयस्य कर्मणः किं बन्धका भवन्ति अथवा अबन्धका भवन्तीति प्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि,

---

यदि एक एक समय में एक एक निकाले जावें तो इन के खाली करने में अनन्त उत्सर्पिणी और अनन्त अवसर्पिणी काल समाप्त हो सकते हैं। परन्तु 'णो चेव णं अवहरिया सिया' वे खाली नहीं किये जा सकते हैं। अर्थात् इतने काल में भी नहीं गिने जा सकते हैं 'उच्चत्तं जहा उप्पलुद्देसए' इन के शरीर की ऊंचाई के विषय में जैसा कथन उत्पल उद्देशक में किया गया है-वैसा जानना चाहिये। अर्थात् जघन्य से इन के शरीर की ऊंचाई अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण होती है और उत्कृष्ट से कुछ अधिक १ हजार योजन प्रमाण होती है यह ऊंचाई का उत्कृष्ट रूप से कथन कमल की अपेक्षा से कहा गया जानना चाहिये।

'ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा अबंधगा' हे भदन्त ! वे जीव क्या ज्ञानावरणीय कर्म के बन्धक होते हैं अथवा अबन्धक होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! बंधगा, नो

સમયમાં અનંત અનંતની સંખ્યામાં કહાડવામાં આવે તો પણ તેઓને ખાલી કરવામાં અનંત ઉત્સર્પિણી અને અનંત અવસર્પિણીકાળ સમાપ્ત થઈ જાય છે. પરંતુ 'णो चेव णं अवहरिया सिया' તેઓ ખાલી કરી શકાતા નથી. અર્થાત્ તે સ્થાન પરથી બિલકુલ ખસેડી શકતા નથી. 'उच्चत्तं जहा उप्पलुद्देसए' તેઓના શરીરની ઉંચાઈના સંબંધમાં ઉત્પલ ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણેનું કથન કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન સમજવું. અર્થાત્ જઘન્યથી તેઓના શરીરની ઉંચાઈ આંગળનાઅસંખ્યાતમા ભાગ પ્રમાણની હોય છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી કંઈક વધારે ૧ એક હજાર યોજન પ્રમાણની હોય છે. આ ઉંચાઈનું પ્રમાણ ઉત્કૃષ્ટ પણાથી કથન કમળની અપેક્ષાથી કહેવામાં આવ્યું છે તેમ સમજવું જોઈએ.

'तेणं भंते ! जीवा नाणावरणीज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा अबंधगा' હે ભગવન્ તે જીવો જ્ઞાનાવરણીય કર્મનો બંધ કરવવાળા હોય છે, અથવા બંધ કરનાર હોતા નથી ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! बंधगा

'गोयमा' हे गौतम ! 'बंधगा नो अबंधगा' बन्धका एव ज्ञानावरणीयस्य कर्मण स्ते भवन्ति न तु अबन्धका भवन्तीति । 'एवं सव्वेसिं आउयवज्जाणं' एवं ज्ञानावरणीयस्य कर्मण इव सर्वेषां दर्शनावरणीयादीनाम् आयुष्ककर्मवर्जितानां सप्तानां कर्मणां नियमाद् बन्धका एव ते जीवा भवन्ति, नतु अबन्धका भवन्ति आयुः कर्मबन्धे भजनेति प्राह-'आउयस्स' इत्यादि, 'आउयस्सबंधगा वा अबंधगा वा' आयुष्कस्य तु कर्मणस्ते जीवा बन्धका अपि भवन्ति अबन्धका अपि भवन्तीति भावः । 'ते णं भंते ! जीवा' ते खलु भदन्त ! जीवाः 'नाणावरणिज्जस्स पुच्छा' ज्ञानावरणीयस्य कर्मणः किं वेदका अवेदकाः ? इति प्रश्नः पृच्छा शब्देन गृह्यते । भगवानाह-'गोयमा' हे गौतम ! 'वेयगा' नो अवेयगा' वेदकाः, नो अवेदकाः कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रिया जीवा ज्ञानावरणीयं कर्म वेदयन्त्येव नियमादिति भावः । 'एवं सव्वेसिं' एवम्-अनेनैव प्रकारेण

अबंधगा' हे गौतम ! वे जीव ज्ञानावरणीय कर्म के बन्धक होते हैं अबन्धक नहीं होते हैं। 'एवं सव्वेसिं आउयवज्जाणं' इस प्रकार ये सब जीव आयुष्क कर्म के सिवाय दर्शनावरणीयादि सात कर्मप्रकृतियों के नियम से बन्धक ही होते हैं अबन्धक नहीं होते आयु कर्म के बन्ध में यहां भजना है-यही बात-'आउयस्स बंधगा वा अबंधगा वा' इस सूत्रपाठ द्वारा प्रकट की गई है-'ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स पुच्छा' हे भदन्त ! वे जीव क्या ज्ञानावरणीय कर्म के वेदक होते हैं अथवा अवेदक होते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! वेयगा, नो अवेयगा' हे गौतम ! ये जीव ज्ञानावरणीय कर्म के वेदक होते हैं अवेदक नहीं होते हैं । इसी प्रकार से ये कृतयुग्मकृतयुग्म राशि प्रमाण एकेन्द्रिय

नो अबंधगा' હે ગૌતમ ! તે જીવો જ્ઞાનાવરણીય કર્મનો બંધ કરનાર હોય છે, અબંધક હોતા નથી. 'एवं सव्वेसिं आउयवज्जाणं' આ રીતે સઘળા જીવો આયુષ્ય કર્મ શિવાય દર્શનાવરણીય વિગેરે સાત કર્મ પ્રકૃતિયોનો નિયમથી બંધ કરનારા જ હોય છે. અબંધક હોતા નથી. આયુ કર્મના બંધમાં અહિયાં ભજના કહી છે, એજ વાત 'आउयस्स बंधगा वा अबंधगा वा' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ કરેલ છે. 'तेणं भंते ! नाणावरणिज्जस्स पुच्छा' હે ભગવન્ તે જીવો શું જ્ઞાનાવરણીય કર્મનું વેદન કરવાવાળા હોય છે ? અથવા અવેદક હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा ! वेयगा, नो अवेयगा' હે ગૌતમ ! તે જીવો જ્ઞાનાવરણીય કર્મનું વેદન કરવાવાળા હોય છે, અવેદક હોતા નથી. એજ પ્રમાણે આ કૃતયુગ્મ કૃત-

'सव्वेसिं' सर्वेषां कर्मणां दर्शनावरणीयादारभ्यान्तरायिकपर्यन्तानां वेदका एव भवन्ति किन्तु अवेदका न भवन्तीति भावः। 'ते णं भंते ! जीवा किं सायावेयगा असायावेयगा पुच्छा' हे भदन्त ! ते कृतयुग्मैकेन्द्रियजीवाः किं सातस्य-सातावेदनीयकर्मणो वेदका अनुभवकर्त्तारो भवन्ति अथवा असातावेदनीयस्य वेदका भवन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'सातावेदगा वा असातावेदगा वा' ते जीवाः सातावेदका अपि भवन्ति तथा असातावेदका अपि भवन्तीति। 'एवं उप्पलुद्देसगपरिवाडी' एवं यथा उत्पलोद्देशके कर्मपरिपाटी कथिता सैवेहापि अनुसन्धेया 'सव्वेसिं कम्माणं उदई' ते जीवाः सर्वेषां कर्मणा मुदयिनो भवन्ति तेषां जीवानां सर्व कर्मणामेवोदयो भवन्तीति। 'नो अणुदई' नो अनुदयिनो भवन्ति कर्मणामिति।

जीव 'सव्वेसि' दर्शनावरणीयादि से लेकर अन्तराय कर्म तक के समस्त कर्मों के वेदक ही होते हैं अवेदक नहीं होते हैं। 'ते णं भंते ! जीवा किं सायावेयगा असायावेयगा' हे भदन्त ! ये कृतयुग्म कृतयुग्म राशि प्रमाण एकेन्द्रिय जीव क्या साता वेदनीय कर्म के वेदक होते हैं ? अथवा असाता वेदनीय कर्म के वेदक होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! सायावेयगा वा असायावेयगा वा' हे गौतम ! वे साता कर्म के वेदक भी होते हैं और असाता कर्म के वेदक भी होते हैं। 'एवं उत्पलुद्देसगपरिवाडी' इस प्रकार से उत्पल उद्देशक में जैसी कर्म वेदन की परिपाटी कही गई है वैसी ही यहां पर जानना चाहिये। 'सव्वेसिं कम्माणं उदई' इन जीवों के समस्त कर्मों का उदय होता है। 'नो अणुदई' अनुदयवाले ये नहीं होते हैं। उदीरणा के

युग्मराशि प्रभाणु એકેન્દ્રિય જીવો 'सव्वेसि' दर्शनावरणीय વિગેરેથી લઈને અંતરાય કર્મ સુધીના સઘળા કર્મોનું વેદન કરવાવાળા જ હોય છે. અવેદક હોતા નથી. 'ते णं भंते ! जीवा किं सायावेदगा असायावेयगा' હે ભગવન્ આ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશીપ્રમાણુવાળા એકેન્દ્રિય જીવો શું શાતા વેદનીય કર્મનું વેદન કરવાવાળા હોય છે ? અથવા અસાતા વેદનીય કર્મનું વેદન કરાવાળા હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा ! साया वेदगा वा असाया वेयगा वा' હે ગૌતમ ! તેઓ સાત કર્મનું વેદન કરવાવાળા પણ હોય છે અને અસાતા કર્મનું વેદન કરવાવાળા હોય છે. 'एवं उप्पलुद्देसग परिवाडी' આ રીતે ઉત્પલ ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણેની કર્મના વેદનની પરિપાટી કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણેની પરિપાટી અહિયાં પણ સમજવી. 'सव्वेसिं कम्माण उदई' આ જીવોને સઘળા કર્મોનો ઉદય થાય છે.

उदीरकप्रकरणे 'छण्हं कम्माणं उदीरगा नो अणुदीरगा' षण्णां वेदनीयायुष्क-वर्जितां कर्मणां ज्ञानावरणीयादीनां नियमादुदीरका एव भवन्ति न तु अनुदीरका भवन्तीति। किन्तु 'वेदणिज्जाउयाणं उदीरगा वा अणुदीरगा वा' वेदनीयकर्मणाम् आयुष्ककर्मणां चोदीरका वा भवन्ति अनुदीरका वा भवन्तीति तत्र भजने भावः। 'ते णं भंते! जीवा किं कण्ह० पुच्छा' ते खलु भदन्त! जीवाः किं कृष्णलेश्यावन्तो भवन्ति अथवा-नीलकापोतादिलेश्यावन्तो भवन्तीति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'कण्ह-लेस्सा वा' कृष्णलेश्या वा ते जीवाः कृष्णलेश्यावन्तोऽपि भवन्ति 'नीललेस्सा वा काउलेस्सा वा तेउलेस्सा वा' नीललेश्या वा भवन्ति कापोतिकलेश्या वा; भवन्ति तेजोलेश्या वा भवन्ति पृथिव्यप्वनस्पतीनामपर्याप्तावस्थाऽपेक्षया

प्रकरण में ये-'छण्हं कम्माणं उदीरगा नो अणुदीरगा' वेदनीय और आयुष्क को छोड़कर शेष ज्ञानावरणीय आदि छह कर्मों के ये नियम से उदीरक होते हैं अनुदीरक नहीं होते हैं। किन्तु 'वेदनीय और आयुष्क कर्मों की उदीरणा इन में भजनीय होती है इसलिये ये इनके उदीरक भी होते हैं और उदीरक नहीं भी होते हैं। यही बात-'वेदणिज्जाउयाणं उदीरगावा अणुदीरगा वा' इस सूत्रपाठ द्वारा प्रकट की गई है। 'ते णं भंते! जीवा किं कण्ह० पुच्छा' हे भदन्त! वे जीव क्या कृष्णलेश्यावाले होते हैं? अथवा नीलकापोत आदि लेश्यावाले होते हैं? इस के उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! कण्हलेस्सा वा, नीललेस्सा वा, काउलेस्सा वा, तेउलेस्सा वा' हे गौतम! ये कृष्णलेश्यावाले भी होते हैं, नीललेश्यावाले भी होते हैं, कापोतलेश्यावाले भी होते हैं और तेजोलेश्यावाले भी होते हैं।

'नो अनुदई' આ અનુદયવાળા હોતા નથી. ઉદીરણાના પ્રકરણમાં આ 'छण्हं कम्माणं उदीरगा नो अनुदीरगा' વેદનીય અને આયુષ્ય કર્મને છોડીને બાકીના જ્ઞાનાવરણીય આદિ છ કર્મોના નિયમથી ઉદીરક હોય છે. અનુદીરક હોતા નથી પરંતુ વેદનીય અને આયુષ્ય કર્મોની ઉદીરણ આમાં ભજનાથી હોય છે. એજ વાત 'वेदणिज्जाउयाणं उदीरगावा अणुदीरगावा' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ કરેલ છે. 'तेणं भंते! जीवा किं कण्ह० पुच्छा' હે ભગવન્ તે જીવો શું કૃષ્ણલેશ્યા-વાળા હોય છે? અથવા નીલલેશ્યાવાળા અથવા કાપોત વિગેરે લેશ્યા-વાળા હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा! कण्ह-लेस्सा वा, नीललेस्स वा, काउलेस्सा वा, तेउलेस्सा वा' હે ગૌતમ! તે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા પણ હોય છે, નીલલેશ્યાવાળા પણ હોય છે, કાપોતિક લેશ્યાવાળા પણ હોય છે, અને તેજોલેશ્યાવાળા પણ હોય છે. કેમ કે-પૃથ્વી,

तत्र देवानामुत्पत्ति सम्भवात् इति । 'नो सम्मदिट्ठी' ते जीवाः सम्यग्दृष्टयो न भवन्ति तथा–'नो सम्मामिच्छादिट्ठी' नो सम्यग्मिथ्यादृष्टयो मिश्रदृष्टयोऽपि न भवन्ति अपितु–'मिच्छादिट्ठी' मिथ्यादृष्टयो भवन्ति ते जीवाः। 'नो नाणी अन्नाणी' नो ज्ञानिनो भवन्ति ते जीवाः किन्तु अज्ञानिनो भवन्ति तत्रापि 'नियमं दुअन्नाणी नियमा' नियमाद् अज्ञानद्वयवन्तो भवन्ति, तदेव दर्शयति–'तं जहा' तद्यथा, 'मइ अन्नाणीय सुय अन्नाणी य' मत्यज्ञानिनश्च भवन्ति तथा श्रुताज्ञानिनश्च भवन्ति । 'णो मणोजोगी णो वइजोगी' नो मनोयोगिनो भवन्ति नो न वा, वचोयोगिनो भवन्ति । किन्तु 'कायजोगी' केवलं काययोगिन एव भवन्ति । 'सागारोवउत्ता वा अणागारोवउत्ता वा, साकारोपयोगवन्ता वा भवन्ति

क्योंकि पृथिवी, अप् और वनस्पतिकायिकों को अपर्याप्तावस्था में इन लेश्याओं का सद्भाव कहा गया है । इस का कारण यह है कि इनमें देवों की उत्पत्ति का सम्भव है । 'नो सम्मदिट्ठी' ये जीव सम्यग्दृष्टि नहीं होते हैं तथा–'नो सम्मामिच्छादिट्ठी' मिश्र दृष्टि भी नहीं होते हैं किन्तु 'मिच्छादिट्ठी' मिथ्यादृष्टि होते हैं। 'नो नाणी अन्नाणी' ये ज्ञानी नहीं होते हैं। किन्तु अज्ञानी ही होते हैं, इनमें भी 'नियमं दुअन्नाणी' इस के दो अज्ञान नियम से होते हैं 'तं जहा' जैसे 'मइ अन्नाणी य सुय अन्नाणी य' नियम से मत्यज्ञान और श्रुताज्ञान ऐसे ये दो ही ज्ञान होते हैं 'णो मणोजोगी, णो वइजोगी' इसी प्रकार से इन में केवल एक स्पर्शन इन्द्रिय होने से ये मनोयोगी और वचनयोगी नहीं होते हैं किन्तु 'कायजोगी' काययोगी ही होते हैं 'सागारोवउत्ता वा अणागारोवउत्ता वा' ये

અપ્કાયિક, અને વનસ્પતિકાયિકોને અપર્યાપ્ત અવસ્થામાં આ લેશ્યાઓનો સદ્ભાવ કહેવામાં આવેલ છે. તેનું કારણ એ છે કે–તેઓમાં દેવોની ઉત્પત્તિનો સંભવ હોય 'नो सम्मदिट्ठी' આ જીવો સમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા હોતા નથી. 'नो सम्मामिच्छादिट्ठी' મિશ્ર દૃષ્ટિવાળા પણ હોતા નથી પરંતુ 'मिच्छादिट्ठी' મિથ્યાદૃષ્ટિવાળા હોય છે. 'नो नाणी' તેઓ જ્ઞાની હોતા નથી. 'अन्नाणी नियमा' પરંતુ તેઓ નિયમથી અજ્ઞાની જ હોય છે. તેમાં પણ તેઓ 'नियमं दुअण्णाणी' મતિઅજ્ઞાન અને શ્રુતઅજ્ઞાન એ રીતે બેજ અજ્ઞાનોવાળા નિયમથી હોય છે. એજ વાત સૂત્રકારે 'मइ अन्नाणीय सुयअन्नाणी' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા સમજાવી છે. 'णो मणोजोगी, णोवइजोगी' એજ રીતે તેઓમાં કેવળ એક સ્પર્શન ઈન્દ્રિય હોવાથી મનોયોગવાળા અને વચન યોગવાળા હોતા નથી પરંતુ 'कायजोगी' તેઓ કાયયોગવાળા જ હોય છે. 'सागारोवउत्तावा अणागारोवउत्तावा' તેઓ

अनाकारोपयोगयुक्ता वा भवन्तीति 'तेसिं णं भंते! जीवाणं सरीरा-कइवण्णा' तेषां खलु भदन्त! जीवानां शरीराणि कति वर्णवन्ति भवन्ति 'जहा उप्पलुद्देसए सव्वत्थ पुच्छा' यथोत्पलोद्देशके तथा सर्वत्र पृच्छा-प्रश्नः, अयं भावः-हे भदन्त! तेषां जीवानां शरीराणि कालादिवर्णवन्ति भवन्ति किम् एवं क्रमेण विशिष्य पञ्चवर्णविषये प्रश्नः करणीय इति। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, गोयमा' हे गौतम! 'जहा उप्पलुद्देसए' यथा उत्पलोद्देशके वर्णविषये कथितं तथैवेहापि ज्ञातव्यम्, तथाहि-तेषां जीवानां शरीराणि पञ्चवर्णयुक्तानि भवन्ति-पञ्चवर्णवन्ति भवन्ति द्विविधगन्धवन्ति भवन्ति, अष्टप्रकारकस्पर्शवन्ति भवन्तीति। तथा-'ऊसासगा वा' ते जीवा उच्छ्वासवन्तो भवन्ति 'नीसासगा वा' ते जीवा निःश्वासवन्तोऽपि भवन्ति 'नो ऊसासनीसासगावा' तथा-उच्छ्वास

साकारोपयुक्त भी होते हैं और अनाकारोपयुक्त भी होते हैं। 'तेसिं णं भंते! जीवाणं सरीरा कइ वण्णा' हे भदन्त! इन जीवों के शरीर कितने वर्णों वाले होते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'जहा उप्पलुद्देसए सव्वत्थ पुच्छा' हे गौतम! इन जीवों के शरीर उत्पलोद्देशक में कहे गये अनुसार काल आदि वर्णवाले होते हैं। अर्थात् वहां पांच वर्णों के विषय में गौतमस्वामीने प्रभुश्री से प्रश्न किया है-तब प्रभुश्रीने गौतम से ऐसा ही कहा है हे गौतम! उत्पलोद्देशक में वर्ण के विषय में जैसा कहा गया है वैसा ही यहां पर भी जानना चाहिये। तथा च-उनके शरीर पांच वर्णों से युक्त होते हैं। दो गंधोवाले होते हैं। आठ प्रकार के स्पर्श वाले होते हैं। तथा ये जीव 'ऊसासगा वा, नीसागा वा' उच्छवास वाले भी होते हैं और निःश्वासवाले भी होते हैं और 'नो

સાકાર ઉપયોગવાળા પણ હોય છે. અને અનાકાર ઉપયોગવાળા પણ હોય છે. 'तेसिंणं भंते! जीवाणं सरीरा कइवन्ना' હે ભગવન્ તે જીવોના શરીરો કેટલા-વર્ણવાળા હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'जहा उप्पलुद्देसए सव्वत्थ पुच्छा' હે ગૌતમ! આ જીવોના શરીરો ઉત્પલોદ્દેશામાં કહેવામાં આવ્યા પ્રમાણે કાળા વિગેરે વર્ણોવાળા હોય છે. અર્થાત્ ત્યાં પાંચ વર્ણોના સંબંધમાં ગૌતમસ્વામીને પ્રભુશ્રીને પ્રશ્ન કરેલ છે, ત્યારે પ્રભુશ્રીએ ગૌતમસ્વામીને એવું જ કહ્યું છે, કે હે ગૌતમ! ઉત્પલ ઉદ્દેશામાં વર્ણના સંબંધમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન અહિયાં પણ સમજવું. તથા-તેઓના શરીરો પાંચે વર્ણોવાળા હોય છે, તથા તે જીવો 'ऊसासगा वा, नीसासगा वा, ઉચ્છવાસવાળા પણ હોય છે, અને નિશ્વાસવાળા પણ હોય છે, 'नो ऊसास

निःश्वासवन्तः अपर्याप्तावस्थायां वा भवन्ति । 'आहारगा वा अणाहारगा वा' ते जीवा आहारका वा, भवन्ति तथा अनाहारका वा विग्रहसमयापेक्षया भवन्ति । 'नो विरया' नो विरताः सर्वविरतिमंतो वा न भवन्ति। 'अविरया' अविरताः सर्वविरति रहिता भवन्ति, 'नो विरयाविरया वा' नो विरताऽविरता वा देशविरता अपि न भवन्ति । 'सकिरिया' सक्रियाः क्रिया सहिता एव भवन्ति । 'नो अकिरिया' नो अक्रियाः क्रियारहिता न भवन्ति। 'सत्तविहवंधगा वा अट्ठविहवंधगा वा' आयुर्वर्जानां सप्तविधकर्मणां बन्धका वा भवन्ति अष्टविधकर्मणां बन्धका वा भवन्ति। 'आहारसन्नो वउत्ता वा जाव परिग्गहसन्नोवउत्तावा' आहारसंज्ञोपयुक्ता वा भवन्ति यावत्परिग्रह-

---

उसासनीसासगा वा' नो उच्छवास निःश्वासवाले भी होते हैं। हां अपर्याप्तावस्था में इन के उच्छवास निःश्वास नहीं होते हैं । इसलिये उस अवस्था में इनसे रहित होते हैं। अर्थात् उच्छास निःश्वास से रहित होते हैं । 'आहारगा वा अणाहारगावा' ये जीव आहारक भी होते हैं और अनाहारक भी होतें हैं। यहां अनाहारकता विग्रह गतिकी अपेक्षा से कही गई है ऐसा जानना चाहिये । 'नो विरया' ये सर्व विरति सम्पन्न नहीं होते हैं । किन्तु 'अविरया' सर्व विरति से रहित ही होते हैं । इसी प्रकार से ये 'नो विरयाविरया' देशविरति से भी सहित नहीं होते हैं 'सकिरिया, नो अकिरिया' ये क्रियावाले ही होते हैं अक्रियावाले नहीं होते हैं । 'सत्तविह बंधगा वा अट्ठविह बंधगा वा' आयु को छोड़कर शेष सातों कर्म प्रकृतियों के भी बन्धक होते हैं और आठों कर्म प्रकृतियों के भी बन्धक होते हैं । 'आहारसन्नोवउत्ता

नीसासगावा' ઉચ્છવાસ નિશ્વાસ વિનાના હોતા નથી. કેવળ અપર્યાપ્ત અવસ્થામાં તેઓને ઉચ્છવાસ નિશ્વાસ હોતા નથી. તેઓ એ અવસ્થામાં ઉચ્છવાસ નિશ્વાસ વિનાના હોય છે. 'आहारगा वा अणाहारगा वा' તે જીવો આહારક પણ હોય છે અને અનાહારક પણ હોય છે. અહિયાં અનાહારક પણું વિગ્રહ ગતિની અપેક્ષાથી કહેલ છે. તેમ સમજવું. 'नो विरया' તેઓ સર્વ વિરતિ વાળા હોતા નથી. પરંતુ 'अविरया' સર્વ વિરતિ વિનાના હોય છે. એજ પ્રમાણે 'नो विरयाविरया' તેઓ દેશવિરતિવાળા પણ હોતા નથી. सकिरिया, नो अकिरिया' તેઓ ક્રિયાવાળા જ હોય છે, અક્રિયાવાળા હોતા નથી. 'सत्तविहबंधगा वा अट्ठविहबंधगा वा' આયુ કર્મ પ્રકૃતિને છોડીને બાકીની સાતે કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરવાવાળા હોય છે. અને આઠે કર્મપ્રકૃતિયોનો બંધ કરવાવાળા પણ હોય છે. 'आहारसन्नोवउत्ता वा जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता

संज्ञोपयुक्ता वा भवन्ति यावत्पदेन भयमैथुनसंज्ञयोः परिग्रहो भवति। 'कोहकसाई वा माणकसाई वा जाव लोभकसाई वा' क्रोधकषायिनो वा मानकषायिनो वा यावल्लोभकषायिनो वा भवन्ति ते जीवाः यावत्पदेन मायाख्यकषायस्य ग्रहणं भवतीति। 'नो इत्थिवेयगा नो पुरिसवेयगा' नो स्त्रीवेदका नो वा पुरुषवेदकास्ते जीवा भवन्ति किन्तु 'नपुंसगवेयगा' नपुंसकवेदकास्ते जीवा भवन्ति। 'इत्थिवेयवंधगा वा, पुरिसवेयवंधगा वा, नपुंसगवेयवंधगा वा' स्त्रीवेदबन्धका वा भवन्ति पुरुषवेदबन्धका वा भवन्ति नपुंसकवेदबन्धका वा भवन्ति स्वयं केवलं नपुंसकवेदवन्तः सन्तोऽपि बन्धकास्तु त्रयाणामपि वेदानां भवन्तीति भावः 'नो सन्नी' नो संज्ञिनः अपितु 'असन्नी' असंज्ञिनस्ते जीवा भवन्ति। 'सइंदिया' सेन्द्रियाः स्पर्शने-

---

वा जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता वा' ये आहारसंज्ञोपयुक्त यावत् परिग्रह संज्ञोयुक्त होते हैं। यावत्पद से 'भयसंज्ञा' और मैथुन संज्ञा' इन दो संज्ञाओं का ग्रहण हुआ है। ये 'कोहकसाई वा माणकसाई वा जाव लोभकसाई वा' क्रोध कषायवाले भी होते हैं, मानकषाय वाले भी होते हैं मायाकषाय वाले भी होते हैं। 'नो इत्थिवेयगा, नो पुरिसवेयगा' ये स्त्रीवेदवाले और पुरुषवेदवाले नहीं होते हैं किन्तु 'नपुंसगवेयगा' एक नपुंसकवेदवाले ही होते हैं। 'इत्थिवेयवंधगा वा पुरिसवेयवंधगा वा नपुंसगवेयवंधगा वा' ये स्त्रीवेद के बन्धक भी होते हैं, पुरुष वेद के भी वंधक होते हैं और नंपुसकवेद के भी बंधक होते हैं, यद्यपि ये स्वयं एक नपुंसक वेदवाले ही होते हैं परन्तु फिर भी बन्धक तीनों वेदों के होते हैं। 'नो सन्नी' ये संज्ञी नहीं होते हैं। किन्तु

वा' તેઓ આહાર સંજ્ઞોપયુક્ત યાવત્ પરિગ્રહ સંજ્ઞોપયુક્ત હોય છે. અહિયાં યાવત્ પદથી "ભય સંજ્ઞા અને મૈથુન સંજ્ઞા આ બે સંજ્ઞાઓ ગ્રહણ કરાઈ છે. 'कोहकसाई वा माणकसाई वा जाव लोभकसाई वा' તેઓ ક્રોધકષાયવાળા પણ હોય છે, માનકષાયવાળા પણ હોય છે, માયાકષાયવાળા પણ હોય છે. અને યાવત્ લોભકષાયવાળા પણ હોય છે. 'नो इत्थिवेयगा, नो पुरिसवेयगा' તેઓ સ્ત્રી વેદવાળા અથવા પુરૂષવેદવાળા હોતા નથી. પરંતુ 'नपुंसगवेदगा' એક નપુંસકવેદવાળા જ હોય છે 'इत्थिवेयबंधगा पुरिसवेयबंधगावा' नपुंसगवेदबंधगावा' તેઓ સ્ત્રી વેદનો બંધ કરવવાળા પણ હોય છે, પુરૂષવેદનો બંધ કરવાવાળા પણ હોય છે. અને નપુંસક વેદનો બંધ કરવાવાળા પણ હોય છે. જો કે આ સ્વયં એક નપુંસક વેદવાળા જ હોય છે. પરંતુ તેઓ ત્રણે વેદનો બંધ કરવાવાળા હોય છે. 'नो सन्नी' તેઓ સંજ્ઞી હોતા નથી. પરંતુ 'असन्नी' અસંજ્ઞી જ હોય છે. 'सइंदिया, नो अणिंदिया' તેઓ સ્પર્શન ઈન્દ્રિયો સહિત જ હોય છે. ઈન્દ્રિયો રહિત હોતા નથી.

न्द्रियवन्तो भवन्ति 'नो अणिंदिया:–इन्द्रियरहित न भवन्ति। 'ते णं भंते ! कडजुम्म एगिंदिया कालओ केवलच्चिरं होंति' ते खलु भदन्त ! कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः कालतः कियच्चिरं भवन्ति ? इति प्रश्नः, भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'जहन्नेणं एक्कं समयं' जघन्येनैकं समयम् 'उक्कोसेणं अणंतं कालं अणंता उस्सप्पिणी ओसप्पिणीओ' उत्कर्षेणानन्तं कालमनन्ता उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यः 'वणस्सइकाइयकालो' वनस्पतिकायिककालः। 'संवेहो न भन्नइ' अत्र संवेधो न भण्यते उत्पलोद्देशके उत्पलजीवस्योत्पादो विवक्षितः तत्र च पृथिवीकायिकादिकायान्तरापेक्षया कायसंवेधः संभवति इह तु एकेन्द्रियाणां कृतयुग्मकृतयुग्म विशेषा-

'असन्नी' असंज्ञी ही होते हैं। 'सइंदिया नो अणिंदिया' ये सेन्द्रिय स्पर्शन इन्द्रिय सहित ही होते हैं, इन्द्रिय रहित नहीं होता है।

'ते णं भंते ! कडजुम्मकडजुम्म एगिंदिया कालओ केवच्चिरं होंति' हे भदन्त ! ये कृतयुग्म कृतयुग्म राशि प्रमित एकेन्द्रिय जीव काल की अपेक्षा से कब तक रहते हैं ! उत्तर में प्रभुश्री कहते है !–'गोयमा जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अणंतं कालं' हे गौतम ! ये जघन्य से तो एक समय तक रहते हैं और उत्कृष्ट से अनन्तकाल तक रहते हैं। इस अनन्तकाल में अनन्त उत्सर्पिणी और अनन्त अवसर्पिणी समाजाती है। ऐसा यह कथन 'वणस्सइकाइय कालो' वनस्पति कायिक के काल की अपेक्षा से कहा गया जानना चाहिये। 'संवेहो न भण्णइ' यहां संवेध नहीं कहना है। क्योंकि उत्पल उद्देशक में उत्पल के जीव का उत्पाद विवक्षित हुआ है और वह उत्पल जीव पृथिवी आदि अन्यकायिक में उत्पन्न होकर फिर से वहीं उत्पन्न हो जाते है

'ते णं भंते ! कडजुम्मएगिंदिया कालओ केवच्चिरं होंति' હે ભગવન્ આ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મરાશી પ્રમિત એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો કાળની અપેક્ષાથી ક્યાં સુધી રહે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે–'गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अणंतं कालं' હે ગૌતમ ! આ જઘન્યથી તો એક સમય સુધી રહે છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી અનંતકાળ સુધી રહે છે આ અનંતકાળમાં અનંત ઉત્સર્પિણી અને અનંત અવસર્પિણી સમાઈ જાય છે. એ પ્રમાણેનું આ કથન 'वणस्सइकाइय कालो' વનસ્પતિકાયિકના કાળની અપેક્ષાથી કહ્યાનું જાણવું જોઈએ. 'संवेहो न भण्णइ' અહિયાં સંવેધ કહેવાનો નથી. કેમ કે–ઉત્પલ ઉદ્દેશામાં જીવનો ઉત્પાદ વિવક્ષિત થયેલ છે, અને તે ઉત્પલ જીવ પૃથ્વી વિગેરે અન્ય કાયિકોમાં ઉત્પન્ન થઈને ફરીથી ત્યાં જ ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. તેથી ત્યાં કાયસંવેધ બની જાય છે. પરંતુ અહિયાં કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મરાશિ

णामुत्पादोऽधिकृतः ते चैकेन्द्रिया वस्तुतोऽनन्ता एवोत्पद्यन्ते तेषां चोद्वृत्तेर संभवात् कायसंवेधो न संभवति। यश्च षोडशादीनामेकेन्द्रियेषूपपातः कथितः स च त्रसकायिकेभ्यो ये एकेन्द्रियेषूत्पद्यन्ते तदपेक्ष एव, न पुनः पारमार्थिकः अनन्तानां प्रतिसमयं तेषूत्पादादिति। 'आहारो जहा उप्पलुद्देसए' कृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रियाणामाहारो यथा उत्पलोद्देशके कथितस्तथैवात्रापि ज्ञातव्यः। 'नवरं निव्वाघाएणं छद्दिसिं' नवरं केवलम् उत्पलोद्देशकापेक्षया इदं वैलक्षण्यं यत् निर्व्याघातेन यदि कश्चित्प्रतिबन्धको न भवेत् तदा षड्दिशम् षड्दिग्भ्य आहारग्रहणं कुर्वन्तीति। 'वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं' व्याघातं प्रतीत्य स्यात्

इसलिये वहां काय संवंध बनजाता है पर यहां कृतयुग्मकृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रियोंका उत्पाद अधिकृत है। ये एकेन्द्रिय वस्तुतः अनन्त रूप में उत्पन्न होते हैं और ये फिर से निकल कर पुनः वहीं पर उत्पन्न होवें तो इनका काय संवेध बन सकता है पर इनका वहां से निकलना असंभव है अतः कायसंवेध नहीं बनता है षोडश राशिप्रमित जीवों का जो एकेन्द्रिय जीवों में उत्पात कहा गया है वह जो त्रसकायिक से आकर के वहां उत्पन्न होते हैं उस अपेक्षा से कहा गया है। पर वह वास्तविक उत्पाद नहीं कारण कि एकेन्द्रियों में अनन्त जीवों का उत्पाद होता है। 'आहारो जहा उप्पलुद्देसए' कृत युग्म कृतयुग्म एकेन्द्रियों का आहार जैसा उत्पल उद्देशक में कहा गया है वैसा ही यहां पर भी जानना चाहिये 'नवरं निव्वाघाएणं छद्दिसिं' परन्तु वहां की अपेक्षा यहां केवल इतनी सी विशेषता है कि यदि कोई प्रतिबन्ध नहीं होता है तो ये छहों दिशाओं से आहार ग्रहण

પ્રમિત એકેન્દ્રિયોના ઉપપાતનો અધિકાર કહેલ છે. આ એકેન્દ્રિયો વસ્તુતઃ અનંતપણાથી ઉત્પન્ન થાય છે. અને તે ફરીથી ત્યાંથી નીકળીને ફરીથી ત્યાં જ ઉત્પન્ન થાય તો તેઓનો કાયસંવેધ બની શકે છે. પરંતુ ત્યાંથી તેઓનું નીકળવું અસંભવ થાય છે. તેથી કાયસંવેધ બનતો નથી. સોળરાશી પ્રમિત જીવોનો જે એકેન્દ્રિય જીવોમાં ઉત્પાત કહેલ છે, તે ત્રસકાયિકથી આવીને ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે તે અપેક્ષાથી કહેલ છે પરંતુ તે વાસ્તવિક ઉત્પાત નથી કારણ કે-એકેન્દ્રિયોમાં અનંત જીવોનો ઉત્પાદ થાય છે. 'આહારો જહા ઉપ્પલુદ્દેસએ' કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિયોનો આહાર જે પ્રમાણે ઉત્પલ ઉદ્દેશામાં કહેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ સમજવો જોઈએ. 'નવરં નિવ્વાઘાએણં છદ્દિસિં' પરંતુ ત્યાંના કથન કરતાં અહિયાં કેવળ એટલું જ વિશેષપણું છે કે-જો કોઈ પ્રતિબંધ ન હોય તો આ છએ દિશાઓમાંથી

कदाचित् त्रिदिशम् 'सिय चउदिसिं' स्यात् कदाचित् चतुर्दिशम् 'सिय पंचदिसिं' स्यात् कदाचित् पञ्चदिशम् 'सेसं तहेव' शेषम् एतद् व्यतिरिक्तं सर्वं तथैव उत्पलोद्देशकवदेव ज्ञातव्यम् इति। ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' स्थितिर्जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तं तेषामेकेन्द्रियाणाम् 'उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं' उत्कर्षेण द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि। 'समुग्घाया आदिल्ला चत्तारि' समुद्घाता आद्याश्चत्वारः वेदनाकषायमारणान्तिकवैक्रियाख्याः। 'मारणांतियसमुग्घाएणं समोहया वि मरंति असमोहया वि मरंति' ते कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियजीवा मारणान्तिक समुद्घातेन समवहता अपि म्रियन्ते असमवहता अपि म्रियन्ते। 'उव्वट्टणा जहा

करते हैं 'वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं' और यदि प्रतिबन्ध होता है तो ये कदाचित् तीन दिशाओं से 'सिय चउदिसिं' कदाचित् चार दिशाओं से 'सिय पंचदिसिं' कदाचित् पांच दिशाओं से आहार ग्रहण करते हैं। 'सेसं तहेव' बाकी का और सब कथन उत्पल उद्देशक के जैसा ही है। 'ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं' इनकी स्थिति जघन्य से अन्तर्मुहूर्त की होती है और उत्कृष्ट से २२ हजार वर्ष की होती है। 'समुग्घाया आदिल्ला चत्तारि समुद्घात इनके आदि के चार होते हैं-वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात, मारणान्तिकसमुद्घात और वैक्रियसमुद्घात 'मारणांतिय समुग्घाएणं समोहया वि मरंति असमोहया वि मरंति' ये मारणान्तिकसमुद्घात कर के भी मरते हैं और विना मारणान्तिक समुद्घात के भी मरते हैं 'उव्वट्टणा जहा उप्पलुद्देसए' इन कृतयुग्मकृतयुग्म एकेन्द्रिय जीवों की उद्वर्तना उत्पल उद्देशक में कही गई के अनुसार ही जाननी चाहिये।

આહાર ગ્રહણ કરે છે. 'वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं' અને જો પ્રતિબન્ધ હોય તો તેઓ કદાચિત્ ત્રણ દિશાઓમાંથી 'सिय चउदिसिं' કોઈવાર ચાર દિશાએથી 'सिय पंचदिसिं' કોઈવાર પાંચ દિશાઓમાંથી આહાર ગ્રહણ કરે છે 'सेसं तहेव' બાકીનું બીજુ તમામ કથન ઉત્પલ ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે જ છે. 'ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं' તેઓની સ્થિતિ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની હોય છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી ૨૨ બાવીસ હજારવર્ષની હોય છે 'समुग्घाया आदिल्ला चत्तारि' તેઓને આદિના ચાર સમુદ્ઘાતો હોય છે તે આ પ્રમાણે છે. વેદના સમુદ્ઘાત કષાય સમુદ્ઘાત મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત, અને વૈક્રિય સમુદ્ઘાત 'मारणांतियसमुग्घाएणं समोहया वि मरंति असमोहया वि मरंति' તેઓ મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને પણ મરે છે. અને મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કર્યા વિના પણ મરે છે. 'उव्वट्टणा जहा उप्पलुद्देसए' આ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશીવાળા એકેન્દ્રિય જીવોની ઉદ્વર્તના ઉત્પલ ઉદ્દેશામાં કહેલ છે, તે પ્રમાણે સમજવી.

उप्पलुद्देसए' एषामेकेन्द्रिय जीवानामुद्वर्त्तना यथा उत्पलोद्देशके कथिता तथैव ज्ञातव्या। 'अह णं भंते ! सव्वपाणा जाव सव्व सत्ता कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियत्ताए उववन्नपुव्वा' अथ खलु भदन्त ! सर्वे प्राणाः सर्वेभूताः सर्वेजीवाः सर्वे सत्त्वाः किं कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियस्वरूपेण उत्पन्नपूर्वाः पूर्वं समुत्पन्नाः किमिति प्रश्नः भगवानाह–'हंता' इत्यादि, 'हंता गोयमा !' हंत गौतम ! पूर्वं समुत्पन्नाः ते पुनरेकवारं नेत्याह–'असइं अदुवा अणंतखुत्तो' असकृत् अनेकवारम् एतावदेव न अपितु अनन्तकृत्वः अनन्तवारं पूर्वं ते तत्र समुत्पन्ना आसन् इति ॥सू० २॥

इति षोडश महायुग्मेषु कृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रियाणां प्रथममहायुग्मवक्तव्यता समाप्ता ॥१॥

'अह णं भंते ! सव्वपाणा, जाव सव्वसत्ता कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियत्ताए उववन्नपुव्वा' हे भदन्त ! समस्त प्राण यावत् समस्त सत्त्व क्या पहिले कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रिय रूप से उत्पन्न हो चुके हैं ? यहां यावत् पदसे समस्त भूत और समस्त जीव इन पदोंका ग्रहण हुआ है। उत्तरमें प्रभुश्री कहते हैं–'हंता गोयमा' हां गौतम ! समस्त प्राण समस्त भूत समस्त जीव और समस्त सत्त्व पहिले कृतयुग्म कृतयुग्म राशि-प्रमित एकेन्द्रिय जीवों की पर्याय से उत्पन्न हो चुके हैं। 'असइं अदुवा अणंतखुत्तो' वे वहां एक ही बार उत्पन्न हुए हों सो बात नहीं किन्तु अनेक बार और अनन्तवार वहां वे उत्पन्न हुए हैं ॥सू० २॥

कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रिय जीवोंकी महायुग्म वक्तव्यता समाप्त १॥

'अह णं भंते ! सव्वपाणा, जाव सव्वसत्ता कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियत्ताए उववन्नपुव्वा' હે ભગવન્ સઘળા પ્રાણિયો યાવત્ સઘળા સત્વો શું પહેલાં કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિય પણાથી ઉત્પન્ન થઈ ચૂકયા છે ? અહિયાં યાવત્ પદથી 'સઘળા જીવો અને સઘળા ભૂતો' આ પદો ગ્રહણ કરાયા છે આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે–'હંતા ગોયમા ! હા ગૌતમ ! સઘળા પ્રાણો સઘળા જીવો, સઘળા ભૂતો અને સઘળા સત્વો પહેલાં કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોની પર્યાયથી ઉત્પન્ન થઈ ચૂકયાં છે 'असइं अदुवा अणंतखुत्तो' તેઓ ત્યાં એક જ વાર ઉત્પન્ન થયા હોય એવી વાત નથી પરંતુ અનેક વાર અને અનંતવાર તેઓ ત્યાં ઉત્પન્ન થયા છે. ॥સૂ૦૨॥

કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિય જીવોનું મહાયુગ્મ કથન સમાપ્ત

अथ शेष पञ्चदशभेदानाह–'कडजुम्मतेओग' इत्यादि

मूलम्–कडजुम्मतेओगएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति उववाओ तहेव। तेणं भंते! जीवा एगसमएणं पुच्छा, गोयमा ! एगूणवीसा वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति, सेसं जहा कडजुम्माणं जाव अणंतखुत्तो २। कडजुम्म दावरजुम्मएगिंदियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? उववाओ तहेव। ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं० पुच्छा, गोयमा ! अट्ठारस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा उववज्जंति सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो ३। कडजुम्म कलियोग एगिंदियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति उववाओ तहेव। परिमाणं सत्तरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो ४। तेओग कडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? उववाओ तहेव। परिमाणं बारस वा, संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति, सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो ५। तेओग तेओग एगिंदियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति, उववाओ तहेव। परिमाणं पन्नरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा। सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो ६। एवं एएसु सोलससु महाजुम्मेसु एक्को गमओ। नवरं परिमाणं णाणत्तं तेओगदावरजुम्मेसु परिमाणं चोद्दस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति ७। तेओग कलिओगेसु तेरस वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति ८। दावरजुम्म कडजुम्मेसु अट्ठ वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति ९। दावरजुम्म तेओगेसु एक्कारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति १०। दावर-

जुम्म दावरजुम्मेसु दसवा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति ११। दावरजुम्म कलिओगेसु नव वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति १२। कलिओग कड-जुम्मेसु चत्तारि वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति १३। कलिओग तेओगेसु सत्त वा संखेज्जा वा असं-खेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति १४। कलिओग दावरजुम्मेसु छवा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति १५। कलिओगकलिओगे एगिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति? उववाओ तहेव। परिमाणं पंच वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति १६। सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥सू० ३॥

पणतीसइमे सए पढमो उद्देसो समत्तो ॥३५-१॥

छाया-कृतयुग्मत्र्योजैकेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते उपपातस्तथैव ते खलु भदन्त! जीवा एकसमयेन पृच्छा० गौतम! एकोनविंशति र्वा संख्येया वा असंख्येया वा, अनन्ता वा उत्पद्यन्ते शेषं यथा कृतयुग्मकृतयुग्मानां यावदनन्त कृत्वः २। कृतयुग्म द्वापरयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत्र उत्पद्यन्ते उपपातस्त-थैव। ते खलु भदन्त! जीवा एकसमयेन पृच्छा, गौतम! अष्टादश वा, संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्ता वा, उत्पद्यन्ते शेषं तथैव यावदनन्तकृत्वः ३ कृत-युग्म कल्योजैकेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? उपपातस्तथैव। परिमाणं सप्तदशवा संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्ता वोत्पद्यन्ते। शेषं तथैव यावदनन्त-कृत्वः ४। त्र्योज कृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? उपपातस्त-थैव। परिमाणं द्वादशवा, संख्येया वा, असंख्येया वा अनन्ता वोत्पद्यन्ते' शेषं तथैव यावदनन्तकृत्वः ५ त्र्योजत्र्योजैकेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते उप-पातस्तथैव परिमाणं पञ्चदशवा-संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्ता वा, शेषं तथैव यावदनन्तकृत्वः ६। एवमेतेषु षोडशसु महायुग्मेषु एको गमकः। नवरं परि-माणे नानात्वम्-त्र्योजद्वापरयुग्मेषु परिमाणं चतुर्दश वा, संख्येया वा असंख्येया वा, अनन्तावोत्पद्यन्ते ७। त्र्योजकल्योजेषु त्रयोदश वा, संख्येया वा असंख्येया वा,

अनन्ता वोत्पद्यन्ते ८ द्वापरयुगकृतयुग्मेषु अष्टौ वा-संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्तावोत्पद्यन्ते ९ द्वापरयुग्म त्र्योजेषु एकादश वा, संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्तावोत्पद्यन्ते १० द्वापरयुग्म द्वापरयुग्मेषु दश वा संख्येया वा, असंख्येया वा अनन्तावोत्पद्यन्ते ११ द्वापरयुग्मकल्योजेषु नव वा, संख्येया वा, असंख्येया वा अनन्तावोत्पद्यन्ते १२ कल्योज कृतयुग्मेषु चत्वारो वा, संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्तावोत्पद्यन्ते १३ कल्योजत्र्योजेषु सप्त वा, संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्तावोत्पद्यन्ते १४। कल्योज द्वापरयुग्मेषु षड्वा संख्येया वा, असंख्येया वा अनन्तावोत्पद्यन्ते १५ कल्योजकल्योजैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? उपपातस्तथैव। परिमाणं पञ्च वा, संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्तावोत्पद्यन्ते १६ शेषं तथैव यावदनन्तकृत्वः। तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त इति ॥सू० ३॥

'पञ्चत्रिंशत्तमे शतके प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥ ३५॥१

टीका--'कडजुम्मतेओग एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' कृतयुग्म त्र्योजैकेन्द्रियजीवाः खलु भदन्त ! कुतः-कस्मात्स्थानविशेषादागत्य समुत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य आगत्य समुत्पद्यन्ते तिर्यग्भ्यो वा आगत्य मनुष्येभ्यो वा आगत्य देवेभ्यो वा आगत्य समुत्पद्यन्ते ? इति प्रश्नः, उत्तरमाह-'उववाओ' इत्यादि, 'उववाओ तहेव' उपपातः कृतयुग्म त्र्योजैकेन्द्रियाणां तथैव यथा कृतयुग्म-

पन्द्रह भेदों का कथन

'कडजुम्म तेओग एगिंदियाणं भंते !' इत्यादि

टीकार्थ-'कडजुम्म तेओग एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' हे भदन्त कृतयुग्म त्र्योजराशि प्रमित एकेन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते है ? क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं अथवा मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'उववाओ तहेव

પંદર ભેદોનું કથન

'कडजुम्मतेओगएगिंदियाण' भंते ! कओ उववज्जंति' કૃતયુગ્મ, ત્ર્યોજ રાશીવાળા એકેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'उववाओ तहेव' હે ગૌતમ ! આ કૃતયુગ્મ ત્ર્યોજ

कृतयुग्मैकेन्द्रियाणां कथितः तिर्यग्भ्यो वा आगत्य मनुष्येभ्यो वा आगत्य समुत्पद्यन्ते इति। 'ते णं भंते! जीवा एगसमएणं पुच्छा' ते खलु भदन्त! जीवा कृतयुग्मत्र्योजैकेन्द्रिया एकसमयेन कियन्त उत्पद्यन्ते इति प्रश्नः पृच्छया संगृह्यते। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'एगूणवीसा वा' एकोनविंशतिर्वा 'संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंतावा उववज्जंति' संख्याता वा असंख्याता वा अनन्ता वा कृतयुग्मत्र्योजैकेन्द्रिया एकसमयेन समुत्पद्यन्ते इति। 'सेसं जहा कडजुम्मकडजुम्माणं जाव अणंतखुत्तो' शेषं यथा कृतयुग्म कृतयुग्मानां

'हे गौतम! इन कृतयुग्म त्र्योज राशि प्रमित एकेन्द्रिय जीवों का उत्पाद जैसा कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रियों का कहा गया है वैसा ही जानना चाहिये। अर्थात् ये तिर्यग्योनिकों में से आकरके भी उत्पन्न होते हैं, मनुष्यों में से भी आकरके उत्पन्न होते हैं और देवों में से भी आकर के उत्पन्न होते हैं। 'ते णं भंते! जीवा एगसमएणं पुच्छा' हे भदन्त! ये कृतयुग्म त्र्योज प्रमित एकेन्द्रिय जीव एकसमय में कितने उत्पन्न होते हैं? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' एगूणवीसा वा, संखेज्जा वा असंखेज्जा वा, अणंता वा उववज्जंति' हे गौतम! ये एक समय में १९ तक उत्पन्न होते हैं अथवा संख्यात, असंख्यात अथवा अनन्त उत्पन्न होते हैं। 'सेसं जहा कडजुम्म कडजुम्माणं जाव अणंतखुत्तो' इनके सम्बन्ध में और सब कथन जैसाकि अभी अभी कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीवों के प्रकरण में कहा जा चुका है वैसा ही सब कथन यावत अनन्तवार वे वहां उत्पन्न हुए है यहां तक कह लेना चाहिये।

राशीवाळा એકઇન્દ્રિયવાળા જીવોનો ઉપપાત, કૃતયુગ્મરાશિવાળા એકેન્દ્રિયોનો જે રીતે ઉપપાત કહેલ છે, એજ પ્રમાણે સમજવો. અર્થાત્ તેઓ તિર્યંચોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે? મનુષ્યોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે? અને દેવોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે. 'तेणं भंते! जीवा एगसमएणं पुच्छा' હે ભગવન્ આ કૃતયુગ્મ, ત્ર્યોજ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો એકસમયમાં કેટલાં થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा! एगूणवीसा वा, संखेज्जा वा असंखेज्जा वा, अणंतावा उववज्जंति' હે ગૌતમ! તેઓ એક સમયમાં ૧૯ ઓગણીસ સુધી ઉત્પન્ન થાય છે. અથવા સંખ્યાત અસંખ્યાત અથવા અનંત ઉત્પન્ન થાય છે? 'सेसं जहा कडजुम्म कडजुम्माणं जाव अणंतखुत्तो' આના સંબંધમાં બાકીનું સઘળું કથન હમણાં જ કૃતયુગ્મ, કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોના પ્રકરણમાં કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું તમામ કથન યાવત્ અનંતવાર તેઓ ત્યાં ઉત્પન્ન થયા છે,

कथितं तथैव यावत् अनन्तकृत्व इति २। 'कडजुम्म दावरजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति' कृतयुग्म द्वापरयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य इत्यादि प्रश्नः, उत्तरमाह='उववाओ तहेव' उपपातस्तथैव-पूर्वकथितप्रकारेणैव। 'ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं पुच्छा' ते खलु भदन्त ! कृतयुग्मद्वापरयुग्मैकेन्द्रियजीवा एकसमयेन कियन्त उत्पद्यन्ते इति प्रश्नः, उत्तरमाह-'गोयमा' हे गौतम ! 'अट्ठारस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा उववज्जंति' अष्टादश वा, संख्याता वा, असंख्याता वा, अनन्ता-

'कडजुम्म दावरजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति' हे भदन्त ! कृतयुग्म द्वापरयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रियजीव किस स्थानविशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकरके उत्पन्न होते है ? अथवा मनुष्यों में से आकरके उत्पन्न होते है ? अथवा देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभुश्री गौतमस्वामी से कहते हैं-'उववाओ तहेव हे 'गौतम ! इस सम्बन्ध में समस्त कथन पूर्व में जैसा कहा गया है वैसा ही जानना चाहिये। 'ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं पुच्छा' हे भदन्त ये कृतयुग्म द्वापरयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीव एक समयमें कितने उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! अट्ठारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा' 'हे गौतम ! एक समय में १८ उत्पन्न होते हैं अथवा संख्यात अथवा असंख्यात अथवा अनन्त उत्पन्न होते हैं सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो' अवशिष्ट और

ત્યાં સુધી કહી લેવું જોઇએ. 'कडजुम्म दावरजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति' હે ભગવન્ કૃતયુગ્મદ્વાપરયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે- उववाओ तहेव' હે ગૌતમ ! આ વિષયમાં સઘળું કથન પહેલાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું સમજવું. 'ते णं भंते जीवा एगसमएणं पुच्छा' હે ભગવન્ આ કૃતયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો એક સમયમાં કેટલા ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा ! अट्ठारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा' હે ગૌતમ ! તેઓ એક સમયમાં ૧૮ અઢાર ઉત્પન્ન થાય છે, અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત

चोत्पद्यन्ते इति ३। 'कडजुम्म कलिओग एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' कृतयुग्म कल्योजैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत्र उत्पद्यन्ते ? इति प्रश्नः, उत्तरयति- 'उववाओ तहेव' उपपातः पूर्ववदेव 'परिमाणं सत्तरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा' परिमाणद्वारे जघन्यतः सप्तदश वा संख्याता वा असंख्याता वा अनन्ता वा उत्पद्यन्ते' 'सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो' शेषं समये समये अपहरणादिकं सर्वं यावत् अनन्तकृत्व एतत्पर्यन्तं तथैव कृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रियप्रकरणवदेव ४। 'तेओग कडजुम्म एगगिंदियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति' त्र्योज

सब कथन यावत् 'वे वहां अनन्तवार उत्पन्न हो चुके हैं 'यहां तक का यहां पर कह लेना चाहिये। 'कडजुम्म कलिओग एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' हे भदन्त! कृतयुग्म कल्योज एकेन्द्रिय किस स्थान से आकर उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से तिर्यग्योनिकों में से मनुष्यों में से अथवा देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभुश्री गौतमस्वामी से कहते है 'उववाओ तहेव' इनका उपपात पहले जैसा ही समझना चाहिये 'परिमाणं सत्तरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा' परिमाण में वे जघन्य से सत्रह १७ उत्पन्न होते है संख्याता असंख्याता अथवा अनन्त उत्पन्न होते है 'सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो अवशिष्ट सब कथन वे कृतयुग्म कल्योजएकेन्द्रियपने से अनन्त वार उत्पन्न हो चुके हैं, यहां तक यहां पर कहना चाहिए ॥४॥

'तेओग कडजुम्मएगिंदियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति' हे

અથવા અનંત ઉત્પન્ન થાય છે. 'सेसं तहेव अणंतखुत्तो' બાકીનું તમામ કથન યાવત્ તેઓ ત્યાં અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચૂકયા છે, આ કથન સુધીનું અહિયાં કહેવું જોઈએ.

'कडजुम्म कलिओग एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' હે ભગવન્ કૃતયુગ્મ કલ્યોજ એકેન્દ્રિયો કયા સ્થાનેથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને અથવા તિર્યગ્યોનિકોમાંથી અથવા મનુષ્યોમાંથી અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'उववाओ तहेव' તેમનો ઉપપાત પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે જ છે. 'परिमाणं सत्तरसवा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा' પરિમાણ તેમનું જઘન્યથી ૧૭ સત્તર સુધી ઉત્પન્ન થાય છે. અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનંત ઉત્પન્ન થાય છે 'सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो' બાકીનું તમામ કથન તેઓ કૃતયુગ્મ કલ્યોજ એકેન્દ્રિય પણાથી અનેકવાર ઉત્પન્ન થઈ ચુકેલ છે. આ કથન સુધી અહિયા કહી લેવું જોઈએ. ॥૪॥

'तेओग कडजुम्मएगिंदियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति' હે ભગવન્

कृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यः इत्यादि पूर्ववदेव प्रश्नः, उत्तरमाह–'उववाओ तहेव' उपपात एतेषां तथैव पूर्वोक्तवदेव ज्ञातव्यः 'परिमाणं बारस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा उववज्जंति' त्र्योजकृतयुग्मैकेन्द्रियाणां परिमाणं द्वादश वा संख्याता वा असंख्याता वा, अनन्तावोत्पद्यन्ते । 'सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो' शेषं परिमाणातिरिक्तं सर्वं तथैव यावत् अनन्तकृत्वः ५ । 'तेओगतेओग एगिंदियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति' त्र्योजत्र्योजैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यः

भदन्त ! त्र्योज कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा मनुष्यों में से आकरके उत्पन्न होते ? अथवा देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं–'उववाओ तहेव' हे गौतम ! इनका उपपाद पूर्व के जैसे ही जानना चाहिये । 'परिमाणं बारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' ये त्र्योज कृतयुग्म रूप एकेन्द्रिय जीव एक समय में १२ अथवा संख्यात अथवा असंख्यात अथवा अनन्त उत्पन्न होते हैं । 'सेसं तहेव जाव अणंत खुत्तो' परिमाण कथन से अतिरिक्त और सब कथन 'वे अनन्तवार उत्पन्न हो चुके हैं' यहां तकका यहां पर कह लेना चाहिये । 'तेओग तेओग एगिंदियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति 'हे भदन्त ! त्र्योज

त्र्योज कृतयुग्म राशिवाळा એકેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે–'उववाओ तहेव' હે ગૌતમ ! તેઓનો ઉપપાત પહેલા કહ્યા પ્રમાણે સમજવો. 'परिमाणं बारस वा संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' આ ત્ર્યોજ કૃતયુગ્મ રૂપ એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો એક સમયમાં ૧૨ બાર અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનંત ઉત્પન્ન થાય છે. 'सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो' પરિમાણના કથન શિવાયનું બાકીનું સઘળું કથન "તેઓ અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચૂકયા છે," આટલા સુધીનું કથન અહિયાં કહેવું જોઈએ 'तेओग तेओग एगिंदियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति' હે ભગવન્ ત્ર્યોજ ત્ર્યોજ એકેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન

इत्यादि रूपेण प्रश्नः, उत्तरमाह–'उववाओ तहेव' उपपातस्तथैव यथा–कृतयुग्मकृतयुग्मप्रकरणे कथितः। 'परिमाणं पन्नरस वा संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा' परिमाणं त्र्योज त्र्योजैकेन्द्रियाणां पञ्चदश वा, संख्याता वा, असंख्याता वा, अनन्ता वेति। 'सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो' शेषं परिमाणातिरिक्तं तथैव यावत् अनन्तकृत्वः ६। 'एवं एएसु सोलससु महाजुम्मेसु एको गमओ'

त्र्योज एकेन्द्रिय जीव किस स्थानविशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं? क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? अथवा मनुष्यों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? अथवा देवों में आकरके उत्पन्न होते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं–'उववाओ तहेव' हे गौतम! इनके उपपाद के सम्बन्ध में कथन पूर्व के जैसा ही जानना चाहिये। अर्थात् जैसा कथन कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रिय जीवों के प्रकरण में किया गया है वैसा ही यहां पर समझना चाहिये। 'परिमाणं पन्नरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा' त्र्योज त्र्योज एकेन्द्रिय जीवों का एकसमय में उत्पन्न होने का परिमाण १५ अथवा संख्यात अथवा असंख्यात अथवा अनन्त जानना चाहिये।' सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो' इस परिमाण कथन के अतिरिक्त और सब कथन 'वे अनन्तवार उत्पन्न हो चुके हैं' यहां तक जैसा पहिले कहा गया है वैसा ही यहां पर कह लेना चाहिये। 'एवं एएसु सोलससु महाजुम्मेसु एको गमओ' इस प्रकार जैसा कि ऊपर में

વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા તિર્યંચોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે– 'उववाओ तहेव' હે ગૌતમ! આમના ઉત્પાદના સંબંધમાં પહેલા કહ્યા પ્રમાણેનું જ કથન સમજવું અર્થાત્ જેવું કથન કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિય જીવોના પ્રકરણમાં કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન અહિયાં સમજવું જોઈએ 'परिमाणं पन्नरसवा संखेज्जा वा असंखेज्जावा अणंतावा वा' ત્ર્યોજ ત્ર્યોજ એકેન્દ્રિય જીવોનું એક સમયમાં ઉત્પન્ન થવાનું પરિમાણ ૧૫ પંદર અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનંત સમજવું 'सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो' આ પરિમાણ શિવાયનું બાકીનું બીજું તમામ કથન "તેઓ અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચૂકયા છે, "આ કથન સુધીનું પહેલાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે અહિયાં સમજવું

एवमुपरि प्रदर्शितप्रकारेण षोडशसु महायुग्मेषु एको गमकः सर्वत्र महायुग्मेषु एकएव प्रकार इति भावः। 'नवरं परिमाणे णाणत्तं' नवरं केवलं परिमाणे नानात्वं भेदोऽवगन्तव्यः अन्यत् सर्वमेकप्रकारकमेवेति। परिमाणे नानात्वमेव विशिष्य दर्शयति-'तेओगदावरजुम्मेसु परिमाणं चोद्दस वा संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंतावा उववज्जंति' त्र्योजद्वापरयुग्मेषु एकेन्द्रियेषु परिमाणं चतुर्दश वा, संख्याता वा, असंख्याता वा, अनंता वा एतादृश संख्यका इमे एकसमयेनोत्पद्यन्ते इति ७। 'तेओगकलिओगेसु तेरस वा संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा उववज्जंति' त्र्योज कल्योजएकेन्द्रियेषु परिमाणं त्रयोदश वा, संख्याता वा, असंख्याता वा, अनन्ता वा, एतादृगपरिमाणविशिष्टा इमे

दिखलाया जा चुका है सोलह महायुग्मों में कथन प्रकार एक जैसा ही है, तात्पर्य इसका ऐसा है कि परिमाण कथन से अतिरिक्त और सब कथन इन १६ राशि प्रमित एकेन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में एक ही प्रकार का है। यही बात 'नवरं परिमाणे णाणत्तं' इस सूत्रपाठ द्वारा प्रदर्शित की गई है। परिमाण में नानात्वका कथन इस प्रकार से है-'तेओग दावरजुम्मेसु परिमाणं चोद्दस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' त्र्योज द्वापर युग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीवों का एक समय में उत्पन्न होनेका परिमाण १४ है। अथवा संख्यात अथवा असंख्यात अथवा अनन्त उत्पन्न होते हैं। 'तेओगकलिओगेसु तेरसवा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' त्र्योजकल्योज राशि प्रमित एकेन्द्रिय जीवों का एकसमय में उत्पन्न होनेका परिमाण १३ अथवा संख्यात अथवा असंख्यात अथवा अनन्त है। 'दावरजुम्म

'एवं एएसु सोलसमहाजुम्मेसु एक्को गमओ' આ રીતે જે પ્રમાણે ઉપર કહેવામાં આવેલ છે, તે સોળ મહાયુગ્મોના કથન પ્રકાર એક સરખો છે. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-પરિમાણુના કથન શિવાયનું બીજુ સઘળું કથન ૧૬ સોળ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં એક જ સરખું છે એજ વાત 'नवरं परिमाणे णाणत्तं' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા બતાવેલ છે, પરિમાણુમાં નાનાત્વ (જુદા જુદા પ્રકારનું) નું કથન આ પ્રમાણે છે-'तेओग दावरजुम्मेसु परिमाणं चोद्दस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंतावा' ત્ર્યોજદ્વાપરયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોનું એક સમયમાં ઉત્પન્ન થવાનું પરિમાણુ ૧૪ ચૌદનું છે અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનંત છે. 'तेओग कलिओगेसु तेरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' ત્ર્યોજ કલ્યોજ રાશિપ્રમિત એકેન્દ્રિય જીવોનુ એક સમયમાં ઉત્પન્ન થવાનું પરિમાણુ ૧૩ તેર અથવા

एकदा समुत्पद्यन्ते ८। 'दावरजुम्म कडजुम्मेसु अट्ठवा संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अनन्ता वा, उववज्जंति' द्वापरयुग्म कृतयुग्मेषु अष्टौ वा संख्याता वा, असंख्याता वा अनन्ता वा उत्पद्यन्ते ९ 'दावरजुम्म तेओगेसु एक्कारसवा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अनन्ता वा, उववज्जंति' द्वापरयुग्मत्र्योजेषु एकादश वा संख्याता वा, असंख्याता वा, अनन्तावोत्पद्यन्ते इति १०। 'दावरजुम्मदावरजुम्मेसु दस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' द्वापरयुग्म द्वापरयुग्मेषु दश वा, संख्याता वा, असंख्याता वा अनन्ता वा उत्पद्यन्ते ११।

कडजुम्मेसु अट्ठ वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' 'द्वापरयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीवों का परिमाण एकसमय में उत्पन्न होनेका आठ अथवा संख्यात अथवा असंख्यात अथवा अनन्त है। 'दावरजुम्म दावरजुम्मेसु दसवा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' द्वापरयुग्म द्वापरयुग्म राशि प्रमित एकेन्द्रिय जीवोंका एकसमय में उत्पन्न होनेका परिमाण दस अथवा संख्यात अथवा असंख्यात अथवा अनन्त है। 'दावरजुम्म तेओगेसु एक्कारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' द्वापरयुग्म त्र्योज राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीवोंका एकसमय में उत्पन्न होने का परिमाण ११ अथवा संख्यात अथवा असंख्यात अथवा अनन्त है। 'दावरजुम्म दावरजुम्मेसु दसवा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' द्वापरयुग्म द्वापरयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीवों का एकसमय में उत्पन्न होनेका परिमाण १० अथवा संख्यात अथवा असंख्यात अथवा अनन्त

સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનંત છે. 'दावरजुम्मकडजुम्मेसु अट्ठवा संखेज्जावा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' દ્વાપરયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોનું પરિમાણ એક સમયમાં ઉત્પન્ન થવાનું આઠ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનંત છે. 'दावरजुम्म दावरजुम्मेसु दस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' દ્વાપરયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોનું એક સમયમાં ઉત્પન્ન થવાનું પરિમાણ દસ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનંત છે. 'दावरजुम्म तेओगेसु एक्कारसवा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' દ્વાપરયુગ્મ ત્ર્યોજ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોનું એક સમયમાં ઉત્પન્ન થવાનું પરિમાણ ૧૧ અગિયાર અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનંત છે. 'दावरजुम्म दावरजुम्मेसु दस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' દ્વાપરયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોનું એક સમયમાં ઉત્પન્ન થવાનું પરિમાણ ૧૦ દસ

'दावरजुम्म कलियोगेसु नव वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा उववज्जंति' द्वापरयुग्मकल्योजेषु नव वा, संख्याता वा, असंख्याता वा, अनन्ता वा, उत्पद्यन्ते १२। 'कलियोगकडजुम्मेसु चत्तारि वा, संखेज्जा वा असंखेज्जा वा, अणंता वा उववज्जंति' कल्योजकृतयुग्मेषु चत्वारो वा, संख्याता वा, असंख्याता वा, अनन्ता वा, उत्पद्यन्ते १३। कलियोग तेओगेसु सत्त वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा, उववज्जंति' कल्योजत्र्योजेषु सप्त वा, संख्याता वा, असंख्याता वा, अनन्ता वा, उत्पद्यन्ते १४। 'कलियोगदावरजुम्मेसु छ वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा उववज्जंति' कल्योजद्वापरयुग्मेषु षड् वा, संख्याता वा, असंख्याता वा, अनन्ता वा उत्पद्यन्ते १५। 'कलिओग

हैं। 'दावरजुम्म कलिओगेसु नव वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' द्वापरयुग्म कल्योज राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीवोंका एकसमय में उत्पन्न होनेका परिमाण नौ अथवा संख्यात अथवा असंख्यात अथवा अनन्त है। 'कलियोग कड़जुम्मेसु चत्तारि वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' कल्योजकृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीवों का एकसमय में उत्पन्न होने का परिमाण चार अथवा संख्यात अथवा असंख्यात अथवा अनन्त है। 'कलिओगतेओगेसु सत्त वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' कल्योज त्र्योज राशि प्रमित एकेन्द्रिय जीवों का उत्पन्न होने का परिमाण एकसमय का सात अथवा संख्यात अथवा असंख्यात अथवा अनन्त है।' 'कलिओग दावरजुम्मेसु छ वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' 'कल्योज द्वापरयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीवों का एकसमय में

અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનંત છે. 'दावरजुम्म कलिओगेसु नव वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' દ્વાપરયુગ્મ કલ્યોજ રાશીવાળા એકેન્દ્રિય જીવોનું એક સમયમાં ઉત્પન્ન થવાનું પરિમાણ નવ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનંત છે. 'कलिओगकडजुम्मेसु चत्तारि वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' કલ્યોજ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોનું ઉત્પન્ન થવાનું પરિમાણ ચાર અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનંત છે. 'कलिओग तेओगेसु सत्तवा संखेज्जावा असंखेज्जावा अणंतावा उववज्जंति' કલ્યોજ ત્ર્યોજ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોનું ઉત્પન્ન થવાનું પરિમાણ એક સમયમાં સાત અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનંત છે. 'कलिओग दावरजुम्मेसु छ वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंतावा उववज्जंति' કલ્યોજ દ્વાપરયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોનું એક

एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' कल्योजकल्योजैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य इत्यादि पूर्वप्रकारेणैव प्रश्नः, उत्तरमाह-'उववाओ तहेव' उपपात स्तथैव कृतयुग्मकृतयुग्म प्रकरणपठित एव ज्ञातव्यः। 'परिमाणं पंच वा, संखेज्जा वा-असंखेज्जा वा, अणंता वा, उववज्जंति' परिमाणं पञ्च वा, संख्याता वा असंख्याता वा अनन्ता वा उत्पद्यन्ते इति। 'सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो' शेषं परिमाणातिरिक्तं सर्वं तथैव कृतयुग्म प्रकरणपठितमेव यावदनन्तकृत्व इति १६।

उत्पन्न होने के परिमाण ६ अथवा संख्यात अथवा असंख्यात अथवा अनन्त है 'कलिओग कलिओग एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' कल्योज कल्योज राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीव हे भदन्त ! किस स्थान विशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा मनुष्यों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'उववाओ तहेव' 'हे गौतम ! कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीवों के प्रकरण में जैसा उपपात के सम्बन्ध में कहा गया है वैसा ही यहां पर भी उपपात के सम्बन्ध में कथन जानना चाहिये यहां-'परिमाणं पंच वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' उत्पन्न होनेका परिमाण पांच अथवा संख्यात अथवा असंख्यात अथवा अनन्त है। 'सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो' परिमाण कथनके अतिरिक्त और सब कथन यहां पर

સમયમાં ઉત્પન્ન થવાનું પરિણામ ૬ છ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનંત છે. 'कलिओगकलिओग एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' કલ્યોજ કલ્યોજ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો હે ભગવન્ કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? તિર્યંચોમાથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં કહે છે કે-'उववाओ तहेव' હે ગૌતમ ! કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોના પ્રકરણમાં ઉપપાતના સંબંધમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન અહિયાં ઉપપાતના સંબંધમાં કહેવું જોઈએ. અહિયાં 'परिमाणं पंच वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' પરિમાણ પાંચ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનંત છે. 'सेसं तहेव जाव अणंत खुत्तो' પરિમાણના કથન શિવાયનું સઘળું કથન અહિયાં તેઓ

संख्या १६	महायुग्मनामानि	युग्मनिर्माणसंख्या
१	कृतयुग्म कृतयुग्मः	१६
२	कृतयुग्म त्र्योजः	१९
३	कृतयुग्म द्वापरयुग्मः	१८
४	कृतयुग्म कल्योजः	१७
५	त्र्योज-कृतयुग्मः	१२

'वे अनन्तवार उत्पन्न हो चुके हैं' यहां तकका पूर्व में कहे गये अनुसार एकसा ही जानना चाहिये।

यह सब प्रकरण इस यंत्र से स्पष्ट जाना जा सकता है—

संख्या	सोलह-महायुग्मो के नाम	महायुग्मादिका निर्माण एवं महायुग्मादि राशि प्रमित एकेन्द्रिय जीवों की एकसमयमें उत्पन्न होनेकी जघन्य संख्याका प्रमाण
१	कृतयुग्म कृतयुग्म	१६
२	कृतयुग्म त्र्योज	१९
३	कृतयुग्म द्वापरयुग्म	१८
४	कृतयुग्म कल्योज	१७
५	त्र्योज कृतयुग्म	१२

અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચૂક્યાં છે. આ કથન સુધીનું પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે એક સરખું સમજવું.

આ પ્રકારનું તમામ કથન આ યંત્રથી સ્પષ્ટ જાણવામાં આવે છે—

સંખ્યા સોળ—	મહાયુગ્મોના નામો	મહાયુગ્મદિનું નિર્માણ અને મહાયુગ્મ વિગેરે રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોની એક સમયની સંખ્યાનું પ્રમાણ
૧	કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ	૧૬
૨	કૃતયુગ્મ ત્ર્યોજ	૧૯
૩	કૃતયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ	૧૮
૪	કૃતયુગ્મ કલ્યોજ	૧૭
૫	ત્ર્યોજ કૃતયુગ્મ	૧૨

६	त्र्योज त्र्योजः ३-३	१५
७	त्र्योजद्वापरयुग्मः	१४
८	त्र्योज-कल्योजः	१३
९	द्वापरकृतयुग्मः	८
१०	द्वापरत्र्योजः	११
११	द्वापर द्वापरयुग्मः	१०
१२	द्वापरयुग्म कल्योजः	९
१३	कल्योज कृतयुग्मः	४
१४	कल्योज त्र्योजः	७
१५	कल्योज द्वापरयुग्मः	६
१६	कल्योज कल्योजः	५

६	त्र्योज त्र्योज-३-३	१५
७	त्र्योज द्वापरयुग्म	१४
८	त्र्योज कल्योज	१३
९	द्वापरयुग्म कृतयुग्म	८
१०	द्वापरयुग्म त्र्योज	११
११	द्वापरयुग्म द्वापरयुग्म	१०
१२	द्वापरयुग्म कल्योज	९
१३	कल्योज कृतयुग्म	४
१४	कल्योज त्र्योज	७
१५	कल्योज द्वापरयुग्म	६
१६	कल्योज कल्योज	५

६	ત્ર્યોજ ત્ર્યોજ	૧૫
૭	ત્ર્યોજ દ્વાપરયુગ્મ	૧૪
૮	ત્ર્યોજ કલ્યોજ	૧૩
૯	દ્વાપરયુગ્મ કૃતયુગ્મ	૮
૧૦	દ્વાપરયુગ્મ ત્ર્યોજ	૧૧
૧૧	દ્વાપર યુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ	૧૦
૧૨	દ્વાપર યુગ્મ કલ્યોજ	૯
૧૩	કલ્યોજ કૃતયુગ્મ	૪
૧૪	કલ્યોજ ત્ર્યોજ	૭
૧૫	કલ્યોજ દ્વાપરયુગ્મ	૬
૧૬	કલ્યોજ કલ્યોજ	૫

'सेवं भंते ! सेवं भंते !' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति हे भदन्त ! महायुग्मविषयये यद् देवानुप्रियेण कथितं तत्सर्वं सत्यमेवेति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति सू० ॥३॥

इति श्री विश्वविख्यात–जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचक–पञ्चदशभाषा·
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यानैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक–श्रीशाहूच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त–
'जैनाचार्य' पदभूषित — कोल्हापुरराजगुरु–
बालब्रह्मचारि–जैनाचार्य – जैनधर्मदिवाकर
पूज्य श्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री
"भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायाम् पञ्चत्रिंशत्तमे शतके
प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥३५ । १॥

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' 'हे भदन्त महायुग्म के विषय में जो आप देवानुप्रिय ने कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है । इस प्रकार कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर वे गौतम संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।।सू० ३॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके पैंतीसवें शतक का
। प्रथम उद्देशक समाप्त ॥३५–१॥

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ મહાયુગ્મના વિષયમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે, હે ભગવન્ આપદેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી અને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. સૂ૦૩।

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્ર'ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના પાંત્રીસમા શતકનો પહેલો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૫–૧॥

अथ द्वितीयोद्देशकः प्रारभ्यते

मूलम्--पढमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति? गोयमा! तहेव एवं जहेव पढमो उद्देसओ तहेव सोलसखुत्तो बितिओ वि भाणियव्वो तहेव सव्वं। नवरं इमाणि दस नाणत्ताणि ओगाहणा, जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं १। आउकम्मस्स नो बंधगा अबंधगा २। आउयस्स नो उदीरगा अणुदीरगा३। नो उस्सासगा नो निस्सासगा नो उस्सासनिस्सासगा४। सत्तविहबंधगा नो अट्ठविहबंधगा ५। ते णं भंते! पढमसमय कडजुम्म कडजुम्म एगिंदिय त्ति कालओ केवच्चिरं होंति? गोयमा! एक्कं समयं ६। एवं ठिईए वि ७। समुग्घाया आदिल्ला दोन्नि ८। समोहया न पुच्छिज्जंति ९। उव्वट्टणा न पुच्छिज्जइ १०। सेसं तहेव सव्वं निरवसेसं। सोलससु वि गमएसु जाव अणंतखुत्तो। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥सू० १॥

छाया--प्रथमसमय कृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? गौतम! तथैव एवं यथैव प्रथम उद्देशक स्तथैव षोडशकृत्वो द्वितीयोऽपि भणितव्य', तथैव सर्वम्। नवर मिमानि दश नानात्वानि अवगाहना जघन्येनांगुलस्यासंख्येयभागम् उत्कर्षेणापि अंगुलस्यासंख्येयभागम् १ आयुष्क कर्मणो नो बन्धकाः, अबन्धकाः २ आयुष्कस्य नो उदीरकाः अनुदीरकाः ३। 'नो उच्छ्वासकाः नो निःश्वासकाः नो उच्छ्वासनिःश्वासकाः ४। सप्तविधबन्धकाः नो अष्ट विधबन्धकाः ५। ते खलु भदन्त! प्रथमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रिया इति कालतः कियच्चिरं भवन्ति? गौतम! एकं समयम् ६। एवं स्थितावपि ७। समुद्घातावाद्यौ द्वौ ८। समवहता न पृच्छयन्ते ९। उद्वर्तना न पृच्छयन्ते १०। शेषं तथैव सर्वं निरवशेषम्। षोडशस्वपि गमकेषु यावदनन्त कृत्वः। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥सू० १॥

टीका--'पढमसमयकडजुम्मकडजुम्म एगिंदिया णं भंते!' प्रथमसमय कृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त! एकेन्द्रियत्वेनोत्पत्तौ प्रथमः समयो

येषां ते प्रथमसमयैकेन्द्रियाः त एव कृतयुग्मकृतयुग्मा इति प्रथमसमयकृतयुग्मकृतयुग्माः तादृशाश्चैकेन्द्रिया इति 'कओ उववज्जंति' कुतः स्थानविशेषादागत्य समुत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य आगत्य तिर्यग्भ्यो मनुष्येभ्यो वा देवेभ्यो वा आगत्य समुत्पद्यन्ते ? इति प्रश्नः। उत्तरमाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'तहेव' तथैव 'तिर्यग्भ्य आगत्य उत्पद्यन्ते मनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते देवेभ्य उत्पद्यन्ते इति भावः। 'एवं जहेव पढमो उद्देसओ' एवं यथैव प्रथमउद्देशकः 'तहेव

दूसरे उद्देशे का प्रारंभ

'पढमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते !' इत्यादि

टीकार्थ-'पढमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते !' हे भदन्त ! एकेन्द्रिय रूपसे उत्पत्ति होने में जिनका प्रथम समय है ऐसे वे कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रिय जीव प्रथम समयोत्पन्न कृतयुग्म कृतयुग्म राशि-प्रमित एकेन्द्रिय जीव-'कओ उववज्जंति' किस स्थानविशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! तहेव' हे गौतम ! ये तिर्यग्योनिकों में से आकरके भी उत्पन्न होते हैं। मनुष्यों में से भी आकरके उत्पन्न होते हैं और देवों में से भी आकरके उत्पन्न होते हैं। 'एवं जहेव पढमो उद्देसओ तहेव सोलसखुत्तो बितिओ वि भणियव्वो'

॥બીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'पढमसमय कडजुम्म कडजुम्मएगिंदियाणं भंते ! ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—'पढमसमय कडजुम्म कडजुम्मएगिंदियाणं भंते ! હે ભગવન્ એકેન્દ્રિયપણાથી ઉત્પન્ન થવામાં જેઓને પ્રથમ સમય છે, એવા તે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિય જીવો અર્થાત્ પ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન થયેલા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો 'कओ उववज्जंति' ક્યા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યંચ યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે. ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? કે દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा ! तहेव' હે ગૌતમ ! એ તિર્યંચ યોનિકોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે મનુષ્યોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે. અને દેવોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે 'एवं जहेव पढमो उद्देसओ तहेव सोलसखुत्तो बितियो वि भणियव्वो' હે ગૌતમ ! આ સંબંધમાં

सोलसखुत्तो बितियो वि भणियव्वो' तथैव-प्रथमोद्देशकवदेव षोडशकृत्वः षोडशराशिभेदानाश्रित्य द्वितीयोऽपि उद्देशको भणितव्यः। 'तहेव सव्वं' तथैव प्रथमोद्देशकवदेव सर्वमिहापि वक्तव्यम्। 'नवरं इमाणि य दस नाणत्ताणि' नवरं-केवलं प्रथमोद्देशकापेक्षयाऽत्र इमानि अग्रमदर्श्यमानानि दशनानात्वानि पूर्वोक्तस्य विलक्षणत्व स्थानानि भवन्ति, केषाञ्चित् पूर्वोक्तानां भावानां प्रथमसमयोत्पन्नेषु असंभवात्। तद्यथा-'ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं' शरीरावगाहना अंगुलस्यासंख्येयभागरूपा जघन्येन 'उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं' उत्कर्षेणापि अंगुलस्यासंख्येयभागम्, तत्र प्रथमोद्देशके बादरवनस्पत्यपेक्षया उत्कर्षेण सातिरेकयोजनसहस्ररूपा महत्यवगाहना प्रोक्ता, अत्र तु प्रथमसमयोत्पन्नत्वे-

---

'हे गौतम! इस सम्बन्ध में जैसा प्रथम उद्देशक कहा गया है उसी प्रकार से सोलह राशि भेदोंको आश्रित करके यह द्वितीय उद्देशक भी कह लेना चाहिये। 'तहेव सव्वं' एवं प्रथम उद्देशकके जैसा ही और सब कथन यहां है ऐसा जानना चाहिये। 'नवरं इमाणि य दस नाणत्ताणि' परन्तु प्रथम उद्देशककी अपेक्षा यहां इन दश बातों में अन्तर है-क्योंकि प्रथम समय में उत्पन्न एकेन्द्रियों में इनकी असंभवता है। वे दश बातें ये हैं--

'ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं' 'अवगाहना यहां अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण है जघन्य से तथा 'उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं' 'उत्कृष्ट से भी अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण है। प्रथम उद्देशक में बादरवनस्पतिकायिक की अपेक्षा कुछ

પહેલા ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે સોળરાશિ ભેદોનો આશ્રય કરીને આ બીજો ઉદ્દેશો પણ કહી લેવો જોઈએ. 'तहेव सव्वं' આ રીતે પહેલા ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે સઘળું કથન આ બીજા ઉદ્દેશામાં સમજી લેવું. 'नवरं इमाणि य दस नाणत्ताणि' પરંતુ પહેલા ઉદ્દેશાના કથન કરતાં અહિયાં નીચે બતાવેલ દસ બાબતોમાં અંતર આવે છે-કેમ કે પ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન થયેલા એકઇન્દ્રિયવાળાઓમાં તેનું અસંભવ પણું છે. તે દસ બાબતો નીચે બતાવ્યા પ્રમાણે છે.--

'ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं' અહિયાં અવગાહના જઘન્યથી આંગળના અસંખ્યાતમા ભાગ પ્રમાણ છે. તથા 'उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं' ઉત્કૃષ્ટથી પણ આંગળના અસંખ્યાત ભાગ પ્રમાણ છે. પહેલા ઉદ્દેશામાં બાદર વનસ્પતિકાયિકની અપેક્ષાથી કંઇક વધારે એક હજાર યોજનની અવગાહના કહી છે. પરંતુ અહિયાં તે પ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન

नाल्पा, इत्येवं नानात्वमत्रेति? एव मन्यान्यपि नानात्वानि स्वधिया समुह्यानीति। 'आउयकम्मस्स नो बंधगा अबंधगा' इमे प्रथमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियजीवाः आयुष्ककर्मणो नो बन्धका भवन्ति अपि तु अबन्धका एव भवन्ति २। 'आउयस्स नो उदीरगा अणुदीरगा' आयुष्कस्य कर्मण उदीरका न भवन्ति किन्तु अनुदीरका भवन्तीति ३। 'नो उस्सासगा नो नीसासगा, नो उस्सासनीसासगा' न उच्छ्वासका उच्छ्वासवन्तो न भवन्ति, नो निःश्वासकाः, नो वा उच्छ्वासनिःश्वासका भवन्तीति ४। 'सत्तविहबंधगा नो अट्ठविहबंधगा' आयुष्कवर्जानां सप्तविध कर्मणामेव बन्धका भवन्ति नो न तु अष्टविधकर्मणां बन्धका भवन्तीति ५ 'ते णं

अधिक एक हजार योजन की अवगाहना कही गई है। पर यहां वह प्रथम समय में उत्पन्न होने के कारण अंगुल के असंख्यातवें भाग रूप से अल्प बतलाई गई है। इस प्रकार पूर्व उद्देशक की अपेक्षा अवगाहना कथन में भिन्नता है। इसी प्रकार से और भी अवशिष्ट भिन्नताएं अपनी वुद्धि से समझ लेनी चाहिये। 'आउकम्मस्स नो बंधगा अबंधगा' 'ये प्रथम समयोत्पन्न कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमाण एकेन्द्रिय जीव आयुकर्म के बन्धक नहीं होते हैं किन्तु अबन्धक ही होते हैं। 'आउयस्स नो उदीरगा, अणुदीरगा' तथा ये आयुकर्म के उदीरक नहीं होते हैं किन्तु अनुदीरक होते हैं ३। 'नो उस्सासगा नो नीसासगा नो उस्सासनीसासगा' ये उच्छ्वासवाले नहीं होते हैं निःश्वासवाले भी नहीं होते हैं उच्छ्वास निःश्वास वाले भी नहीं होते हैं, अर्थात् अनुच्छ्वास निःश्वासवाले होते हैं ४ 'सत्तविह बंधगा, नो अट्ठविह बंधगा' ये आयुकर्म के सिवाय सात कर्मों के ही बन्धक होते हैं आठ कर्मों के बन्धक नहीं होते हैं ५।

થવાને કારણે આંગળના અસંખ્યાતમા ભાગ રૂપથી અલ્પ બતાવેલ છે. આ રીતે પહેલા ઉદ્દેશા કરતાં અવગાહનાના કથનમાં ભિન્ન પણું આવે છે. આજ પ્રમાણે બીજું પણ બાકીનું ભિન્ન પણુ પોતાની બુદ્ધિથી સમજી લેવું 'आउकम्मस्स नो बंधगा अबंधगा' આ પ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન થયેલ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા 'એકેન્દ્રિ જીવો આયુકર્મનો બંધ કરવાવાળા હોતા નથી. પરંતુ અબંધક જ હોય છે. 'आउयस्स नो उदीरगा अणुदीरगा' તથા આ આયુકર્મની ઉદીરણા કરવાવાળા હોતા નથી. પરંતુ અનુદીરક હોય છે. ૩ 'नो उस्सासगा नो नीसासगा नो उस्सासनीसासगा' તેઓ ઉચ્છ્વાસવાળા હોતા નથી. નિઃશ્વાસવાળા પણ હોતા નથી તથા ઉચ્છ્વાસનિશ્વાસવાળા પણ હોતા નથી. ૪ 'सत्तविहबंधगा, नो अट्ठविहबंधगा' આ આયુકર્મને છોડીને સાત કર્મ પ્રકૃતિયોનો જ બંધ કરવાવાળા હોય છે. આઠ કર્મપ્રકૃતિયોનો બંધ કરવાવાળા

भंते ! पढमसमयकडजुम्मकडजुम्म एगिंदियत्ति कालओ केवच्चिरं होंति' ते खलु भदन्त ! प्रथमसमयकृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रिया इति कालतः कियच्चिरं भवन्ति ? इति प्रश्नः भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि' 'गोयमा' हे गौतम ! 'एक्कं समयं' एकसमयमात्रमेव ते भवन्तीति ६। 'एवं ठिईए वि' एवं स्थितावपि स्थितिरपि तेषामेकसमयमात्रैवेति ७। 'समुग्घाया आदिल्ला दोन्नि' समुद्घातौ आद्यौ द्वौ वेदनाकषायरूपौ भवतः ८। 'समोहया न पुच्छिज्जंति' समवहता इति न पृच्छयन्ते ९। 'उव्वट्टणा न पुच्छिज्जंति' उद्वर्त्तना न पृच्छयते प्रथमसमयकत्वादेव एतयोः समुद्घातोद्वर्त्तनयोरसंभवादिति १०। 'सेसं तहेव सव्वं निरवसेसं' शेषम्-उत्पादपरिणामादिकं सर्वं षोडशस्वपि महायुग्मेषु प्रथमोद्देशकवदेव

'ते णं भंते ! पढमसमयकडजुम्मकडजुम्म एगिंदियत्ति कालओ केवच्चिरं होंति' हे भदन्त ! ये प्रथम समयोत्पन्न कृतयुग्म कृतयुग्म राशि प्रमाण एकेन्द्रिय जीव कालकी अपेक्षा कितने समय तक रहते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं–एक्कं समयं' हे गौतम ! ये एक समय मात्र ही रहते हैं ६। 'एवं ठिईए वि' इस प्रकार स्थिति भी इनकी एक समय मात्र की होती है ७। 'समुग्घाया आदिल्ला दोन्नि' समुद्घात यहां आदि के दो होते हैं। वेदना समुद्घात और कषाय समुद्घात ८। 'समोहया न पुच्छिज्जंति' ये मारणान्तिकसमुद्घात करते हैं क्या ऐसी बात यहां नहीं पूछनी चाहिये तथा उद्वर्तना के सम्बन्ध में भी नहीं पूछना चाहिये। क्योंकि ये प्रथमसमयवर्ती होते हैं, इसलिये इन दोनों की यहां संभावना नहीं है। १० 'सेसं तहेव सव्वं निरवसेसं'

હોતા નથી. ૫ તે णं भंते ! पढमसमय कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियत्ति कालओ केवच्चिरं होंति' હે ભગવન્ આ પ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન થયેલા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો કાળની અપેક્ષાથી કેટલા સમય સુધી રહે છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે–'एक्कं समयं' હે ગૌતમ! આ એક સમય માત્રજ રહે છે. ૬, 'एवं ठिईएवि' એજ પ્રમાણે તેઓની સ્થિતિ પણ એક સમયમાત્રની જ હોય છે. ૭ 'समुग्घाया आदिल्ला दोन्नि' તેઓને આદિના બે સમુદ્ઘાતો હોય છે. તે બે વેદના સમુદ્ઘાત અને કષાય સમુદ્ઘાત છે. ૮, 'समोहया न पुच्छिज्जंति' તેઓ મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરે છે? એ પ્રમાણે નો પ્રશ્ન અહિં થતો નથી તથા ઉદ્વર્તનાના સંબંધમાં પણ પ્રશ્ન કરવો નહીં કેમકે તેઓ પ્રથમ સમયમાં રહેવાવાળા હોય છે. તેથી તે બન્નેની સંભવના અહિયાં રહેતી નથી. ૧૦ 'सेसं तहेव सव्वं निरवसेसं' બાકીનું બીજું સઘળું ઉત્પાદ, પરિમાણ,

ज्ञातव्यम् 'सोलससु वि गमएसु जाव अणंतखुत्तो' षोडशस्वपि यावदनन्त कृत्वः, इति पर्यन्तं विज्ञेयम्। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त तदेवं भदन्त! इति, हे भदन्त! प्रथमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाणामुपपातादिविषये यद् देवानुप्रियेण कथितं तत् सर्वथा सत्यमेवेति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति ।सू०१।३५।।२।।

इति श्री – विश्वविख्यातजगद्वल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि – 'जैनाचार्य' पूज्यश्री–घासीलालव्रतिविरचितायां 'श्री भगवतीसूत्रस्य' प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां पञ्चत्रिंशत्तमे शतके द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ।।३५–२।।

बाकी का और सब उत्पाद परिमाण आदिका कथन सोलह महायुग्मों में प्रथम उद्देशक के जैसा ही है। 'सोलससु वि गमएसु जाव अणंतखुत्तो' सोलह महायुग्मों में 'यावत् वे अनन्तवार उत्पन्न हो चुके हैं' इस पाठ तक और सब पाठ कह लेना चाहिये। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! प्रथम समयोत्पन्न कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रियों के उपपात आदि के विषय में जो आप देवानुप्रियने कहा है वह सर्वथा सत्य ही है। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्रीको वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तपसे आत्माको भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।।सू०१।।

द्वितीय उद्देशक समाप्त ।।३५–२।।

વિગેરેનું કથન સોળ મહાયુગ્મોમાં પહેલા ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે છે તેમ સમજવું. 'सोलससु वि गमएसु जाव अणंतखुत्तो' સોળ મહાયુગ્મોમાં યાવત્ તેઓ અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચુક્યા છે. આ પાઠના કથન સુધી બાકીનો તમામ પાઠ સમજી લેવો.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ પ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન થવાવાળા કૃતયુગ્મ, કૃતયુગ્મ એક ઇન્દ્રિયવાળાઓના ઉપપાત વિગેરેના વિષયમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી અને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા.

।।બીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ।।૩૫–૨।।

तृतीयादारभ्यैकादशपर्यन्ता नवोद्देशकाः

मूलम्–अपढमसमय कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति ? एसो जहा पढमुद्देसो सोलससु वि जुम्मेसु तहेव नेयव्वो जाव कलियोग कलियोगत्ताए जाव अणंतखुत्तो। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३५-३॥

चरमसमय कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति ? एवं जहेव पढमसमय उद्देसओ नवरं देवा न उववज्जंति तेउलेस्सा न पुच्छिज्जंति, सेसं तहेव। सेवं भंते! सेवं भंते ! त्ति ॥३५-४॥

अचरमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति ? जहा–अपढसमय उद्देसओ तहेव निरवसेसो भाणियव्वो। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३५-५॥

पढमपढमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति ? जहा पढमसमय उद्देसओ तहेव निरवसेसं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥३५-६॥

पढमअपढमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति जहा पढम समय उद्देसओ तहेव भाणियव्वो। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३५-७॥

पढमचरमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति ? जहा चरमुद्देसओ तहेव निरवसेसं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३५-८॥

पढमअचरमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति ? जहा बीओ उद्देसो तहेव निरवसेसं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥३५-९॥

चरमअचरमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति? जहा-पढमसमय उद्देसओ तहेव निरवसेसं। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥३५-१०॥

चरमअचरमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति? जहा-पढमसमय उद्देसओ तहेव निरवसेसं। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ ॥३५-११॥

एवं एए एक्कारस उद्देसगा। पढमतइओ पंचमओ य सरिसगमा। सेसा अट्ठ सरिसगमा। नवरं चउत्थे छट्ठे अट्ठमे दसमे य देवा न उववज्जंति तेउलेस्सा नत्थि ॥३५-११॥

पणतीसइमे सए पढमं एगिंदियमहाजुम्मसयं समत्तं॥

छाया—अप्रथमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत्र उत्पद्यन्ते, एषो यथा प्रथमोद्देशकः षोडशस्वपि युग्मेषु तथैव ज्ञातव्यो यावत् कल्योज कल्योजतया यावदनन्तकृत्वः। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥३५-३॥

चरमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? एवं यथैव प्रथमोद्देशकः। नवरं देवा नोत्पद्यन्ते तेजोलेश्या न पृच्छयन्ते, शेषं तथैव। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥३५।४॥

अचरमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते यथा अप्रथमसमयोद्देशकः तथैव निरवशेषो भणितव्यः। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥३५।५॥

प्रथमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत्र उत्पद्यन्ते। यथा प्रथम समयोद्देशक स्तथैव निरवशेषम्। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥३५ ६॥

प्रथमअप्रथमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुतः उत्पद्यन्ते! यथा प्रथमसमयोद्देशक स्तथैव भणितव्यः! तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥३५।७॥

प्रथमचरमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रिया खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते। यथा-चरमोद्देशक स्तथैव निरवशेषम्। तदेवं भदन्त। तदेवं भदन्त। इति ॥३५।८॥

प्रथमअचरमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते

यथा-द्वितीयोद्देशक स्तथैव निरवशेषम् । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति यावद्विहरति ॥३५।९॥

चरमचरमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते यथा-चतुर्थ उद्देशक स्तथैव । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ३५।१०।

चरमअचरमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते यथा-प्रथमसमयोद्देशक स्तथैव निरवशेषम् । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति यावद्विहरति ॥३५।११॥

एवमेते एकादशोद्देशकाः । प्रथमस्तृतीयाः पञ्चमकश्च सदृशगमाः । शेषा अष्टौ सदृशगमाः । नवरं चतुर्थे षष्ठे अष्टमे दशमे च देवा नोत्पद्यन्ते तेजो-लेश्या नास्ति ॥

॥ पञ्चत्रिंशत्तमे शतके प्रथममेकेन्द्रियमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥३५।१॥

टीका--'अपढमसमयकडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' अप्रथमसमयकृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते । अत्राप्रथमः समयो येषामेकेन्द्रियत्वेन उत्पन्नानां द्वयादयः समया स्ते अप्रथम समयैकेन्द्रियाः कृतयुग्मकृतयुग्म राशि प्रमाणाश्च ते तादृशा एकेन्द्रियाः कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य स्तिर्यग्भ्यो मनुष्येभ्यो देवेभ्यो वा आगत्य समुत्पद्यन्ते

शतक ३५ उद्देशक २ से ११ तक

'अपढम समय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' इत्यादि ।

टीकार्थ-हे भदन्त ! अप्रथम समयोत्पन्न कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं ? एके-न्द्रिय रूप से उत्पन्न होने में जिन्हें दो आदि समय हो चुके हों-ऐसे वे एकेन्द्रिय जीव अप्रथम समयोत्पन्न कहे गये हैं। क्या ऐसे ये एकेन्द्रिय जीव नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा तिर्यग्योनिकों

ત્રીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'अपढमसमय कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' ઇત્યાદિ.

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ અપ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન થયેલા કૃતયુગ્મ, કૃતયુગ્મ, રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? એકે-ન્દ્રિયપણાથી ઉત્પન્ન થવામાં જેઓને બે વિગેરે સમય થઈચૂકેલ હોય-એવા તે એકેન્દ્રિય જીવો અપ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન થવાવાળા કહેવામાં આવેલ છે. એવા એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો શું નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા

इति प्रश्नः। उत्तरमाह-'एसो' इत्यादि। 'एसो जहा पढमुद्देसो सोलससु वि जुम्मेसु तहेव नेयव्वो' एष स्तृतीयोद्देशकः यथा-येन रूपेण प्रथमोद्देशकः षोडशसु अपि युग्मेषु कथित स्तथैव-तेनैव रूपेण अयमपि तृतीयोद्देशः षोडशराशिभेदानाश्रित्य ज्ञातव्यो विचारयितव्यः। कियत्पर्यन्तं तत्राह-'जाव कलिओग कलिओगत्ताए' यावत्कल्योज कल्योजतया कृतयुग्मकृतयुग्मतया इत्यत आरभ्य कल्योज द्वापरयुग्म इत्येतत् पर्यन्तराशीनां ग्रहणं यावत्पदेन भवति। 'जाव अणंत-

में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा मनुष्यों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा देवोंमें से आकरके उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'एसो जहा पढमुद्देसो सोलससु वि जुम्मेसु तहेव नेयव्वो' हे गौतम! जिस रीति से प्रथम उद्देशक सोलह युग्मों को लेकर कहा गया है। उसी रीति से (१६) सोलह राशि भेदों को आश्रित करके यह तृतीय उद्देशक भी कह लेना चाहिये। यावत् 'कलिओग कलिओगत्ताए' अप्रथम समयोत्पन्न कल्योज कल्योज राशि प्रमित एकेन्द्रिय जीव यावत् अनन्तवार उत्पन्न हो चुके हैं' यहां तक इस उद्देशकको कहकर समाप्त करना चाहिये। यहां प्रथम यावत्पद से बीच की शेष राशियां गृहीत हुई हैं। इस प्रकार ये अप्रथम समयोत्पन्न एकेन्द्रिय जीव कृतयुग्म त्र्योज रूप से, कृतयुग्म द्वापर रूप से, कृतयुग्म कल्योज रूपसे त्र्योज कृतयुग्मरूप से, त्र्योजत्र्योजरूप से, द्वापरयुग्म त्र्योजरूप से, द्वापरयुग्मद्वापरयुग्मरूपसे, द्वापरयुग्म कल्योज रूपसे, कल्योज कृतयुग्मरूपसे,

તિર્યંચ યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'एसो जहा पुढमुद्देसो सोलससु वि जुम्मेसु तहेव नेयव्वो' હે ગૌતમ! જે પ્રમાણે પહેલા ઉદ્દેશામાં સોળ યુગ્મોને લઈને કહેલ છે, એજ પ્રમાણે (૧૬) સોળ રાશિ ભેદનો આશ્રય કરીને આ ત્રીજો ઉદ્દેશો પણ કહેવો જોઈએ. યાવત્ 'कलिओग कलिओगत्ताए' અપ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન થયેલા કલ્યોજ કલ્યોજ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો યાવત્ અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે. આ કથન સુધી આ ઉદ્દેશો પુરો કહેવો જોઈએ. અહિયાં પહેલા યાવત્પદથી વચલી બાકીની રાશિયો ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે. આ રીતે આ અપ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન થયેલા એક ઇન્દ્રિયવાળા જીવો કૃતયુગ્મ, ત્ર્યોજ પણાથી કૃતયુગ્મ દ્વાપરપણાથી કૃતયુગ્મ કલ્યોજ પણાથી ત્ર્યોજ, કૃતયુગ્મ પણાથી ત્ર્યોજ ત્ર્યોજ પણાથી ત્ર્યોજ દ્વાપર પણાથી ત્ર્યોજ કલ્યોજ પણાથી દ્વાપરયુગ્મ કૃતયુગ્મ પણાથી દ્વાપરયુગ્મ ત્ર્યોજ પણાથી

खुशो' यावद् अनन्तकृत्वः, अप्रथमसमय कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः कुत उत्पद्यन्ते इत्यारभ्य असकृत् अथवा' इत्यन्तस्य समग्रस्यापि प्रकरणस्य संग्रहो यावत्पदेन ज्ञातव्यः तिर्यङ्मनुष्यदेवेभ्य उत्पद्यन्ते इत्यादिकं सर्वं प्रथमोद्देशकवदेव ज्ञातव्यमिति, 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति हे भदन्त ! अप्रथमसमय कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाणामुत्पादादिविषये यत् कथितं तत्सर्वमेव सत्यमिति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा यावद्यथासुखम्, विहरतीति ।

॥ पञ्चत्रिंशत्तमे शतके तृतीयोद्देशकः समाप्तः ॥३५।३॥

कल्योज त्र्योजरूपसे कल्योजद्वापरयुग्मरूपसे वहां दूसरे यावत् पदसे कहां से आकरके उत्पन्न होते हैं ? इत्यादि प्रश्न से लेकर 'असइं-'असकृत्' इस अन्तिम पाठ तक सब कथन का संग्रह प्रथम उद्देशकके जैसा ही यहां जानना चाहिये । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! अप्रथम समयोत्पन्न कृतयुग्मकृतयुग्म एकेन्द्रिय जीवों के उत्पादादिके विषय में जो आप देवानुप्रियने कहा है वह सब सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥१।

॥ तृतीय उद्देशक समाप्त ॥३५-३॥

દ્વાપરયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મ પણાથી દ્વાપરયુગ્મ કલ્યોજ પણાથી કલ્યોજ કૃતયુગ્મ પણાથી કલ્યોજ ત્ર્યોજપણાથી કલ્યોજ દ્વાપરયુગ્મપણાથી ક્યાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? વિગેરે પ્રશ્નથી લઈને 'असइं' 'असकृत्' આ છેલ્લા પાઠ સુધી સઘળું કથન પહેલા ઉદ્દેશા પ્રમાણે સમજવું.

'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ અપ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન થયેલા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિય જીવોના ઉત્પાદ વિગેરેના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥ત્રીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ૩૫-૩॥

'चरमसमयकडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति' चरमसमय कृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य स्तिर्यग्भ्यो मनुष्येभ्यो देवेभ्यो वोत्पद्यन्ते इत्यादि। अत्र चरमसमयशब्देन एकेन्द्रियाणां मरणसमयो विवक्षितः, स च परभवायुषः प्रथमसमये एव, तत्र च वर्त्तमानाः चरमसमयाः, संख्यया च कृतयुग्मकृतयुग्मराशिप्रमाणा ये एकेन्द्रिया स्ते चरमसमय कृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रिया इति। भगवानाह-'एवं' इत्यादि। 'एवं जहेव पढमसमय उद्देसओ' एवं यथैव प्रथमसमयोद्देशकः द्वितीयोदेशकः एतस्यैव

चौथे उद्देशे का प्रारंभ

'चरमसमय कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते' इत्यादि

टीकार्थ--हे भदन्त चरमसमय में वर्त्तमान ऐसे कृतयुग्मकृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रियजीव किस स्थान विशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा मनुष्यों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? यहां चरम शब्द से एकेन्द्रियों का मरण समय विवक्षित हुआ है। और यह उनकी परभवकी आयुका प्रथमसमय रूप है। इसमें वर्त्तमान एकेन्द्रिय चरमसमय शब्द से कहे गये हैं। अतः चरमसमय में वर्त्तमान और संख्या में कृतयुग्म राशिप्रमाण एकेन्द्रिय जीव कहां से आकरके उत्पन्न होते हैं ? ऐसे इस गौतम के प्रश्न का उत्तर देते हुए प्रभुश्री कहते हैं-'एवं जहेव पढमसमय उद्देसओ' 'हे गौतम ! इस सम्बन्ध में जैसा प्रथम समयके

ચોથા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

ટીકાર્થ-'चरमसमयकडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाण' भंते !' ઇત્યાદિ હે ભગવન્ ચરમ સમયમાં રહેલા એવા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિ જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યંચોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે કે મનુષ્યો. માંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? કે દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અહિયાં ચરમ શબ્દથી એકેન્દ્રિયોનો મરણ સમય વિવક્ષિત થયેલ છે. અને આ તેઓના પરભવના આયુષ્યના પ્રથમ સમય રૂપ છે. તેમાં રહેનારા એકેન્દ્રિય ચરમ સમય શબ્દથી કહેલ છે. તેથી ચરમ સમયમાં રહેલા અને સંખ્યામાં કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ એકેન્દ્રિય જીવો ક્યાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'एवं जहेव पढम समय उद्देसओ' હે ગૌતમ ! આ સંબંધમાં પ્રથમ સમય

शतकस्य द्वितीये प्रथमसमयनामके उद्देशके यथा एकेन्द्रियाणां तिर्यगादिभ्य उत्पादादि कथितम्, तथैव सर्वमिहापि वक्तव्यम् प्रथमसमये औघिकोद्देशकापेक्षया दशनानात्वानि कथितानि तान्येव अत्रापि तेनैव रूपेण वक्तव्यानि उभयोः समानरूपत्वात् प्रथमसमय चरमसमयैकेन्द्रियाणां यो विशेषः तद्दर्शयति- 'नवरं' इत्यादि, 'नवरं देवा न उववज्जंति तेउलेस्सा न पुच्छिज्जंति' नवरं केवलं देवा नोत्पद्यन्ते चरमसमय कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियेषु देवा नोत्पद्यन्ते अतोऽत्र तेजोलेश्या न पृच्छयते। 'सेसं तहेव' शेषं तथैव-प्रथमसमयैकेन्द्रियप्रकरण-

सम्बन्ध में द्वितीय उद्देशक कहा गया है-अर्थात् इसी शतक के द्वितीय प्रथम समय नाम के उद्देशक में जैसा एकेन्द्रियों के तिर्यग् आदि से आकरके उत्पादादि के विषयमें कहा गया है वैसाही सब यहां पर कहना चाहिये। प्रथम समयमें औघिक उद्देशक की अपेक्षा जो १० भिन्नताएं कही गई हैं वे ही भिन्नताएं उसी रूप से यहां भी कह लेनी चाहिये क्योंकि दोनों में समानरूपता है। प्रथम समयवर्ती और चरमसमयवर्ती एकेन्द्रिय जीवों में जो विशेषता है उसे प्रकट करने के लिये 'नवरं देवा न उववज्जंति तेउलेस्सा न पुच्छिज्जंति' सूत्रकार कहते हैं कि चरमसमयवर्ती कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमाण एकेन्द्रिय जीवों में देव उत्पन्न नहीं होते हैं इसीलिये यहां तेजोलेश्या के सम्बन्ध में प्रश्न नहीं करना चाहिये क्योंकि वह यहां होती ही नहीं है। 'सेसं तहेव' बाकीका और सब कथन यहां प्रथमसमयवर्ती एकेन्द्रिय जीव के प्रक-

ના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું કથન બીજા ઉદ્દેશામાં કરવામાં આવ્યું છે, અર્થાત્ આ શતકના બીજા પ્રથમ સમય નામના ઉદ્દેશામાં એકેન્દ્રિયોના તિર્યંચ વિગેરેમાંથી આવીને ઉત્પાદ વિગેરેના સંબંધમાં કહેલ છે. એજ પ્રમાણેનું સઘળું કથન અહિયાં કહેવું જોઈએ. પહેલા ઉદ્દેશામાં ઔઘિક ઉદ્દેશાની અપેક્ષાથી જે ૧૦ દસ પ્રકારનું ભિન્ન પણું કહ્યું છે. તે સઘળું ભિન્ન પણું એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ કહેવું જોઈએ. કેમ કે બન્નેમાં સમાન પણું છે. પ્રથમ સમયમાં રહેલ અને ચરમ સમયમાં રહેલ એકેન્દ્રિય જીવોમાં જે વિશેષ પણું છે, તે બતાવવા માટે 'નવરં' देवा न उववज्जंति' तेउलेस्सा न पुच्छिज्जंति' સૂત્રકારે આ સૂત્રપાઠ કહેલ છે. આ સૂત્રપાઠથી સૂત્રકાર એ કહે છે કે- ચરમ સમયમાં રહેનારા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશીવાળા એકેન્દ્રિય જીવોમાં દેવો ઉત્પન્ન થતા નથી. તેથી અહિયાં તેજોલેશ્યાના સંબંધમાં પ્રશ્ન કરેલ નથી. કેમ કે તેજોલેશ્યા અહિયાં હોતી નથી. 'સેસં તહેવ' બાકીનું બીજું સઘળું કથન અહિયાં પ્રથમ સમયમાં રહેનારા એકેન્દ્રિય જીવોના પ્રકરણ પ્રમાણે સમજવું.

तदेव सर्वं ज्ञातव्यमिति। 'सेवं भंते! सेवं भंते त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति, हे भदन्त! चरमसमयएकेन्द्रियाणा मुत्पादादि विषये यद् भावता कथितं तत्सर्वमेव सत्यमिति कथयित्वा यावत् संयमेन तपसाऽऽत्मान भावयन् विहरतीति ॥३५।४॥

'अचरमसमयकडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति' अचरमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते, न विद्यते मरणसमयात्मकः चरमसमयो येषा मेकेन्द्रियाणां तादृशकृतयुग्मकृतयुग्म राशि प्रमाणानां ते अचरमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः कथ्यन्त इति प्रश्नः,

---

रण के जैसा ही है। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! चरमसमयवर्ती एकेन्द्रिय जीवों के उत्पाद आदि के विषय में जो आपने कहा है वह सर्व ही सत्य है २। ऐसा कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तपसे आत्माको भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये १॥

शतक ३५ चतुर्थ उद्देशक समाप्त ॥३५-४॥

पांचवें उद्देशे का प्रारंभ

'अचरमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति'

टीकार्थ-हे भदन्त! जो अचरमसमयवर्ती कृतयुग्मकृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीव हैं वे किस स्थान विशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं? जिन एकेन्द्रिय जीवोंका मरण समयात्मक चरमसमय नहीं है और जो संख्या में कृतयुग्मकृतयुग्म राशिपमाण है ऐसे वे एकेन्द्रिय जीव अचरम

सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भगवन् चरम समयमां रहेनारा એકેન્દ્રિય જીવોના ઉત્પાદ આદિના વિષયમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કરેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ॥સૂ૦૧॥

॥ચોથો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૫-૪॥

પાંચમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

ટીકાર્થ-'अचरमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति' ઈત્યાદિ હે ભગવન્ અચરમ સમયમાં રહેનારા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા જે એકેન્દ્રિય જીવો છે, તેઓ કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? જે એકેન્દ્રિય જીવોનો મરણ સમયાત્મક ચરમ સમય નથી. અને જે સંખ્યામાં કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ છે એવા તે એકેન્દ્રિય જીવો અચરમ સમયમાં રહેલા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણવાળા કહેવામાં આવ્યા છે, આ પ્રશ્નના

उत्तरमाह-'जहा' इत्यादि, 'जहा अपढमसमय उद्देसो तहेव निरवसेसो भाणि-यव्वो' यथा अप्रथमसमयनामको तृतीयोद्देशक स्तथैव निरवशेषो भणितव्य एतच्छतकीय द्वितीयोद्देशकवदेव यावदनन्तकृत्वः, इति पर्यन्त सर्वं ज्ञातव्यम्, अत्र देवा अपि उत्पद्यन्ते 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति हे भदन्त! अचरमसमयैकेन्द्रियाणा मुत्पादादि विषये यत् कथितं देवानुप्रि-येण तत्सर्वं सत्यमेवेति कथयित्वा वन्दित्वा नमस्यित्वा यावद्विहरतीति ॥३५।५॥

॥ पञ्चत्रिंशत्तमे शतके पञ्चमोद्देशकः समाप्तः ॥३५।५॥

समयवर्ती कृतयुग्म राशिप्रमाण कहे गये हैं। इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'जहा अपढमसमय उद्देसो तहेव निरवसेसो भाणियव्वो' हे गौतम जैसा अप्रथम समय नामक तृतीय उद्देशक कहा गया है उसी प्रकारसे यहां पर भी सब कथन कर लेना चाहिये और वह सब कथन 'यावत् अनन्तवार वे वहां उत्पन्न हो चुके हैं' इस अन्तिम सूत्रपाठ तक कह लेना चाहिये। यहां देव भी उत्पन्न होते हैं। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! अचरमसमयवर्ती एकेन्द्रिय के उत्पाद आदिके विषय में जो आप देवानुप्रियने कहा है वह सब सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तपसे आत्माको भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये॥सू०१॥

॥ शतक ३५ पञ्चमोद्देशक समाप्त ३५॥

ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'जहा पढमसमयउद्देसो तहेव निरवसेसो भाणियव्वो' હે ગૌતમ જે પ્રમાણે પ્રથમ સમય નામનો બીજો ઉદ્દેશો કહ્યો છે એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ સઘળું કથન સમજવું જોઈએ અને આ સઘળું કથન યાવત્ તેઓ અનંતવાર ત્યાં ઉત્પન્ન થઈ ચુક્યાં છે, આ પ્રમાણે છેલ્લા સૂત્રપાઠ સુધી કહેવું જોઈએ. અહિયાં દેવો પણ ઉત્પન્ન થાય છે.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ અચરમ સમયમાં રહેવાળા એકેન્દ્રિય જીવોના ઉત્પાદ વિગેરે વિષયના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે તે સર્વથા સત્ય છે હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરીને તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥પાંચમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૫-૫॥

'पढमपढम समय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते! कओ उववज्जति ?' प्रथमप्रथमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? एकेन्द्रियोत्पादस्य प्रथमसमययोगात् ये प्रथमाः प्रथमश्च समयः कृतयुग्मकृतयुग्मत्वानुभवस्य येषा मेकेन्द्रियाणां ते प्रथमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रिया इति कथ्यन्ते एते कुत उत्पद्यन्ते इति प्रश्नः, उत्तरमाह–अतिदेशद्वारेण 'जहा' इत्यादि, 'जहा पढमसमय उद्देसओ तहेव निरवसेसं' यथा प्रथमसमयोद्देशको द्वितीयः तथैव निरवशेषम् एतच्छतकीयद्वितीयोद्देशके येन रूपेण एकेन्द्रियाणा

'पढम पढमसमय कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति' इत्यादि हे भदन्त! प्रथम प्रथम समयवर्ती कृतयुग्मकृतयुग्म-राशिप्रमाण एकेन्द्रिय जीव किस स्थान विशेषसे आकरके उत्पन्न होते हैं? एकेन्द्रिय रूपसे उत्पाद के प्रथम समय के योग से जो प्रथम हैं तथा कृतयुग्म कृतयुग्मत्व के अनुभव के प्रथम समय में जो वर्तमान हैं ऐसे एकेन्द्रिय जीव प्रथमसमय कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रिय जीव हैं। ये कहां से आकरके उत्पन्न होते हैं? ऐसा यह गौतमका प्रश्न है इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं–'जहा पढमसमय उद्देसओ तहेव निरवसेसं' हे गौतम! जैसा प्रथमसमयोद्देशक–द्वितीय उद्देशक में कहा गया है उसी

॥છઠ્ઠા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

ટીકા—'पढमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति' ઈત્યાદિ હે ભગવન્ જેઓ પ્રથમ સમયમાં રહેવાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશી વાળા એકેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે? એકેન્દ્રિય પણાથી ઉત્પાદના પ્રથમ સમયના યોગથી જેઓ પ્રથમ છે, તથા કૃતયુગ્મ, કૃતયુગ્મપણાના અનુભવના પ્રથમ સમયમાં જેઓ ઉત્પન્ન થયેલા છે, એવા એકેન્દ્રિય જીવો પ્રથમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિય જીવો છે. તે જીવો કયાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રમાણે ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને પૂછેલ છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—'जहा पढमसमय उद्देसओ तहेव निरवसेसं' હે ગૌતમ! જે રીતે પહેલો ઉદ્દેશો બીજા ઉદ્દેશામાં કહેવામાં આવેલ છે, અર્થાત્ પહેલા ઉદ્દેશા પ્રમાણેનું કથન બીજા ઉદ્દેશામાં સમજવું તેમ કહેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ એકેન્દ્રિય

मुपपातादारभ्य 'असकृत् अथवा अनन्तकृत्वः एतत्पर्यन्तं सर्वमिहापि वक्तव्यम् 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति यावद्विहरति, हे भदन्त ! प्रथमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाणा मुपपातादिविषये यद्देवानुप्रियेण कथितं तत्सर्वं सत्यमेवेति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा यावद्विहरतीति ॥

॥ पञ्चत्रिंशत्तमे शतके षष्ठोद्देशकः समाप्तः ॥३५।६॥

'पढमअपढमसमय कडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति' प्रथमाप्रथमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते प्रथम-

---

प्रकार से यहां पर भी एकेन्द्रिय जीवों के उत्पाद से लेकर 'यावत् वे वहाँ अनन्तवार उत्पन्न हो चुके हैं' इस अन्तिम पाठ तक कह लेना चाहिये 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! प्रथम समय कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रियों के उत्पाद आदि के विषय में जो आप देवानुप्रियने कहा है वह सब सत्य ही है ऐसा कहकर गौतमने प्रभुश्रीको वन्दना की और नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तपसे आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥

॥ शतक ३५ वां उद्देशक छट्ठा समाप्त ३५-६॥

'पढम अपढम समय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! इत्यादि'

टीकार्थ–हे भदन्त ! प्रथम अप्रथम समयवर्ती कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं ?

જીવોના ઉત્પાદથી લઈને યાવત્ તેઓ ત્યાં અનંતવાર ઉત્પન્ન થઇ ચુકયા છે. આ છેલ્લા પાઠ સુધી કહેવું જોઈએ.

'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ પહેલા પહેલા સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિયોના ઉત્પાદ વિગેરે વિષયના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ॥સૂ૦૧॥

॥છઠ્ઠો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૫-૬॥

સાતમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

ટીકા–'પઢમઅપઢમસમય કડજુમ્મકડજુમ્મ એગિંદિયાણં' ભંતે ! ઈત્યાદિ હે ભગવન્ પ્રથમ અપ્રથમ સમયમા રહેવાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા

स्तथैव ये अप्रथमो द्व्यादि समयः कृतयुग्मकृतयुग्मत्वानुभूते येषा मेकेन्द्रियाणां ते प्रथमाप्रथमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मकेन्द्रिया इति कथ्यन्ते ते इत्थंभूता एकेन्द्रियाः कुत उत्पद्यन्ते इति प्रश्नः, उत्तरयति-इहापि अतिदेशद्वारेण 'जहा' इत्यादि' 'जहा पढमसमय उद्देसो तहेव भाणियव्वो' यथा-प्रथमसमयोद्देशो द्वितीयोद्देशक स्तथैव सप्तमोद्देशकोऽपि समग्रो वक्तव्यः। अत्र च एकेन्द्रियत्वोत्पादप्रथमसमयवर्त्तित्वे तेषां यद्विवक्षितसंख्यानुभवस्याप्रथमसमयवर्त्तित्वं तत्प्राग्भव सम्बन्धिनीं समयसंख्यामधिकृत्येति विज्ञेयम्। एवमुत्तरत्रापीति 'सेवं

इस प्रश्न का अतिदेश द्वारा उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतम से कहते हैं- 'गोयमा! जहा पढमसमयउद्देसो तहेव भाणियव्वो' हे गौतम! जैसा प्रथम समय उद्देशक अर्थात् द्वितीय उद्देशक कहा जा चुका हैं इसी प्रकार से यह सातवां उद्देशक भी सम्पूर्ण रूपसे कह लेना चाहिये। यहां एकेन्द्रिय रूप से उत्पन्न होने के प्रथम समयवर्ति होने पर भी कृतयुग्म कृतयुग्म राशिरूपसे विवक्षित संख्याका जो यहां अनुभवन है-अर्थात् विवक्षित संख्या के अनुभवन करने की अप्रथम समयवर्तिता है-वह पूर्वभव की समय संख्या को लेकर कहा गया है ऐसा जानना चाहिये। तात्पर्य इसका ऐसा है कि एकेन्द्रिय रूप होने के प्रथम समय में वर्तमान जो जीव हैं उन्होंने पूर्वभव में विवक्षित राशि रूप संख्या का अनुभवन किया है-अतः ऐसे जीव प्रथमाप्रथम समयवर्ती एकेन्द्रिय जीव कहे गये हैं। आगे भी इसी प्रकार से जानना चाहिये। 'सेवं

એકેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નનો અતિદેશ (ભલામણ) દ્વારા ઉત્તર આપતાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે- 'ગોયમા! जहा पढमसमय उद्देसो तहेव भाणियव्वो' હે ગૌતમ! જે પ્રમાણે પ્રથમ સમય સંબંધી ઉદ્દેશો અર્થાત્ બીજો ઉદ્દેશો કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં સાતમો ઉદ્દેશો પણ સમજવો. જોઈએ અહિયાં એકેન્દ્રિય પણાથી ઉત્પન્ન થવાના પ્રથમ સમયમાં રહેનારા હોવા છતાં પણ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિરૂપ છે. અહિયાં વિવક્ષિત સંખ્યાનો અનુભવ કરવો તે અપ્રથમ સમયવર્તિ પણ કહેલ છે. આ પૂર્વભવની સમયસંખ્યાને લઇને કહેવામાં આવેલ છે તેમ સમજવું. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-એકેન્દ્રિય રૂપ હોવાના પ્રથમ સમયમાં રહેનારા જીવો છે, તેઓએ પૂર્વભવમાં વિવક્ષિત રાશિરૂપ સંખ્યાનો અનુભવ કરેલ છે. જેથી એવા જીવો પ્રથમ અપ્રથમ સમયમાં રહેનારા એકેન્દ્રિય જીવો કહેવાયછે. હવે પછી પણ એજ પ્રમાણે સમજવું જોઇએ.

भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति हे भदन्त ! प्रथमा प्रथमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाणा मुत्पातादिविषये यत् कथितं तत्सर्वं सत्यमेवेति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते यावद् यथासुखं विहरतीति ।

॥ पञ्चत्रिंशत्तमे शतके सप्तमोद्देशकः समाप्तः ॥३५।७॥

'पढम चरमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति' प्रथमचरमसमय कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते प्रथमाश्च ते विवक्षितसंख्यानुभूतेः प्रथमसमयवर्तित्वात् चरमसमयाश्च मरणसमयवर्तिनः परिशाटगता इति प्रथमचरमसमयाः, इत्थंभूता एते च ते कृतयुग्मराशिप्रमाण एकेन्द्रिया एते प्रथमचरम कृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रिया इति कथ्यन्ते एते कुत उत्पद्यन्ते इति प्रश्नः, उत्तरयति-इहापि अतिदेशद्वारेणैव 'जहा' इत्यादि 'जहा

भंते ! सेवं भंते !' त्ति' हे भदन्त ! प्रथमाप्रथमसमयवर्ती कृतयुग्मकृतयुग्म एकेन्द्रिय जीवों के उत्पाद आदि के विषय में जो आपने कहा है वह सब सत्य ही है । इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तपसे आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।सू०१।

॥ शतक ३५ वां उद्देशक सातवां समाप्त ३५-७॥

'पढमचरमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' इत्यादि ।

टीकार्थ–हे भदन्त ! प्रथमचरमसमयवर्ती कृतयुग्मकृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीव किस स्थानविशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं ? इस

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ પ્રથમ અપ્રથમ સમયમાં રહેવાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિય જીવોના ઉત્પાદ વિગેરેના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથાસત્ય છે, હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રી ને વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમઅને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥સાતમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ૩૫-૭।

આઠમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'પઢમ ચરમસમય कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' ઇત્યાદિ હે ભગવન્ પ્રથમ ચરમ સમયમાં રહેવાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ

चरमुद्देसओ तहेव निरवसेसं' यथा चरमोद्देशकश्चतुर्थः कथित स्तथैव निरवशेषमष्टमोद्देशकोऽपि भणितव्यः, अत्र देवा नोत्पद्यन्ते ऽतस्तेजोलेश्याऽपि न भवति उपपातादारभ्य 'असइं अदुवा अणंतखुत्तो' 'असकृत् अथवा अनन्तकृत्वः' एतत्पर्यन्तं संपूर्णमपि प्रकरणं वक्तव्यम्। सेव भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त इति ॥

॥ पञ्चत्रिंशत्तमे शतकेऽष्टमोद्देशकः समाप्तः ॥३५।८।

सम्बन्धमें अतिदेश द्वारा उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतम से कहते हैं- 'जहा चरमुद्देसओ तहेव निरवसेसं' जैसा चरम उद्देशक-चौथा उद्देशक-कहा गया है। वैसा ही यह आठवां उद्देशक कहा गया है। जो एकेन्द्रिय जीव विवक्षित संख्याकी अनुभूति के प्रथम समयवर्ती होकर मरणवर्ती हैं ऐसे वे कृतयुग्मकृतयुग्म राशिरूप एकेन्द्रिय जीव प्रथम चरम समयवर्ती कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रिय जीव कहे गये हैं। यहां देव उत्पन्न नहीं होते हैं। इसलिये तेजोलेश्या भी नहीं होती है। इनके उत्पादसे लेकर 'ये यहां अनेकवार अथवा अनन्तवार उत्पन्न हो चुके हैं' इस अन्तिम प्रकरण तक सब प्रकरण वक्तव्य है। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' 'हे भदन्त आपका यह सब कथन सर्वथा सत्य है २। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया वंदना

રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાનથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી અતિદેશ દ્વારા ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'जहा चरमुद्देसओ तहेव निरवसेस' જે પ્રમાણે ચરમ ઉદ્દેશો એટલે કે- ચોથો ઉદ્દેશો કહેલ છે, છે, એજ પ્રમાણે આ આઠમા ઉદ્દેશાનું કથન પણ સમજવું. જે એકેન્દ્રિય જીવો વિવક્ષિત સંખ્યાના અનુભૂતિના-અનુભવના પ્રથમ સમયમાં રહેવાવાળા થઈને મરણના સમયવર્તિ છે. એવા તે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિરૂપ એકેન્દ્રિય વાળા જીવો પ્રથમ સમયમાં રહેવાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિરૂપ કહેવામાં આવેલ છે. તેમાં દેવો પણ ઉત્પન્ન થાય છે. તેથી તેઓને તેજોલેશ્યા પણ હોય છે. તેઓના ઉત્પાદથી લઈને તેઓ અહિયાં અનેકવાર અથવા અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચૂકયા છે આ છેલ્લા પ્રકરણ સુધીનું પ્રકરણ કહી લેવું.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ પ્રથમ અપ્રથમ સમયમાં રહેનાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિય જીવોના ઉત્પાદ વિગેરેના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે, હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમ-

'पढम अचरमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति' प्रथमाचरमसमय कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते एकेन्द्रियत्वेनोत्पत्तौ प्रथमः समयो विद्यते येषां ते प्रथमाः तथैवाचरमसमयास्तु एकेन्द्रियोत्पादापेक्षया प्रथम समयवर्त्तिन इह विवक्षिताः, चरमत्वनिषेधस्य तेषु विद्यमानत्वात्, अन्यथाहि द्वितीयोद्देशकोक्तानामवगाहनादीनां यदि समत्वं कथितं तन्न स्यात् ततः कर्मधारयः अतः प्रथमा

नमस्कार कर बाद में वे संयम और तपसे आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० १॥

३५ पैंतीसवे शतक का आठवां उद्देशक समाप्त

'पढम अचरम समय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदिया णं भंते! कओ· हिंतो उववज्जंति' इत्यादि

टीकार्थ–हे भदन्त! प्रथम अचरम समयवर्ती कृतयुग्मकृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं हे गौतम! जैसा द्वितीय उद्देशक में कहा गया है वैसा ही इस उद्देशक में कह लेना चाहिये। जो एकेन्द्रिय जीव विवक्षित समय की अनुभूति के प्रथम समय में हैं ऐसे वे एकेन्द्रिय जीव प्रथम कहलाते हैं और एकेन्द्रिय रूपसे उत्पाद की अपेक्षा जो प्रथमादि समयवर्ती है ऐसे वे एकेन्द्रिय प्रथम अचरम है। इनमें चरमताका निषेध किया गया है। यदि ऐसा न हो तो फिर उद्देशक में कथित

સ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ॥સૂ૦૧॥

આઠમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૫–૮॥

નવમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'પઢમ અચરમ કડજુમ્મકડજુમ્મ એગિંદિયાણં ભંતે! કઓહિંતો! ઉવવજ્જંતિ' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–હે ભગવન્ પ્રથમ અચરમ સમયમાં રહેવાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે–હે ગૌતમ! ચોથા ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણેનું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણેનું કથન આ ઉદ્દેશામાં કહેવું જોઈએ. એકેન્દ્રિય પણાથી ઉત્પન્ન થવામાં જેઓને પ્રથમ સમય લાગે છે, એવા તે એકેન્દ્રિય જીવો પ્રથમ અચરમ કહેવાય છે. તેઓમાં ચરમ પણાનો નિષેધ કરવામાં આવેલ છે. જો તેમ ન હોય તો પછી બીજા

चरमसमय कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः कुतः आगत्य एतेषामुत्पत्तिः कुत आगत्य भवन्ति ? इति प्रश्नः उत्तरयति-अतिदेशेन 'जहा' इत्यादि, 'जहा बीओ उद्देसओ तहेव निरवसेसं' यथा द्वितीयोद्देशकस्तथैव निरवशेषम् एतच्छतकीय द्वितीयोद्देशक प्रथमसमयैकेन्द्रियाणां यथा उपपातादिकं कथितं तथैव निरवशेषमिहापि ज्ञातव्य मिति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति यावद्विहरति, हे भदन्त ! प्रथमाचरमकृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रियाणामुपपातादि विषये यद् देवानुप्रियेण कथितं तत्सर्वं सत्यमेवेति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते यावद्विहरतीति ।

॥ पञ्चत्रिंशत्तमे शतके नवमोद्देशकः समाप्तः ।३५।९॥

अवगाहना आदि की जो समानता यहाँ कही गई है वह नहीं हो सकती है । इसी शतक के द्वितीय उद्देशक में प्रथम समयमें एकेन्द्रियों का जैसा उत्पाद आदि कहा गया है वैसा ही सब कथन यहां ९ वें उद्देशक में है ऐसा जानना चाहिये । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ' हे भदन्त ! प्रथमाचरम कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीवों के उपपात आदि के विषय में जो आप देवानुप्रिय ने कहा है वह सब सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे तप और संयमसे आत्माको भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये १॥

॥ शतक ३५ वां उद्देशक नौवां समाप्त ॥३५-९॥

ઉદ્દેશામાં કહેલ અવગાહના વિગેરેનું જે સમાન પણું અહિયાં કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનુ સઘળુ કથન અહિયાં આ ૯ નવમાં ઉદ્દેશામાં પણ કહેલ છે, તેમ સમજવુ.

'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! તિ' હે ભગવન્ પ્રથમ ચરમ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિયજીવોના ઉપપાત વિગેરે વિષયના સબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ।સૂ૦૧॥

॥નવમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૫-૯॥

'पढम अचरमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति' प्रथमाचरमसमय कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते एकेन्द्रियत्वेनोत्पत्तौ प्रथमः समयो विद्यते येषां ते प्रथमाः तथैवाचरमसमयास्तु एकेन्द्रियोत्पादापेक्षया प्रथम समयवर्त्तिन इह विवक्षिताः, चरमत्वनिषेधस्य तेषु विद्यमानत्वात्, अन्यथाहि द्वितीयोद्देशकोक्तानामवगाहनादीनां यदि समत्वं कथितं तन्न स्यात् ततः कर्मधारयः अतः प्रथमा

नमस्कार कर बाद में वे संयम और तपसे आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० १॥

३५ पैंतीस वे शतक का आठवां उद्देशक समाप्त

'पढम अचरम समय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति' इत्यादि

टीकार्थ–हे भदन्त ! प्रथम अचरम समयवर्ती कृतयुग्मकृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं हे गौतम ! जैसा द्वितीय उद्देशक में कहा गया है वैसा ही इस उद्देशक में कह लेना चाहिये। जो एकेन्द्रिय जीव विवक्षित समय की अनुभूति के प्रथम समय में है ऐसे वे एकेन्द्रिय जीव प्रथम कहलाते है और एकेन्द्रिय रूपसे उत्पाद की अपेक्षा जो प्रथमादि समयवर्ती है ऐसे वे एकेन्द्रिय प्रथम अचरम है। इनमें चरमताका निषेध किया गया है। यदि ऐसा न हो तो फिर उद्देशक में कथित

સ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ॥સૂ૦૧॥

આઠમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૫-૮॥

નવમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'પઢમ અચરમ કડજુમ્મકડજુમ્મ એગિંદિયાણં ભંતે ! કઓહિંતો ! ઉવવજ્જંતિ' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ–હે ભગવન્ પ્રથમ અચરમ સમયમાં રહેવાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-હે ગૌતમ ! ચોથા ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણેનું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણેનું કથન આ ઉદ્દેશામાં કહેવું જોઈએ. એકેન્દ્રિય પણાથી ઉત્પન્ન થવામાં જેઓને પ્રથમ સમય લાગે છે, એવા તે એકેન્દ્રિય જીવો પ્રથમ અચરમ કહેવાય છે. તેઓમાં ચરમ પણાનો નિષેધ કરવામાં આવેલ છે. જો તેમ ન હોય તો પછી બીજા

चरमसमय कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः कथ्यन्ते एतेषा मुत्पत्तिः कुत आगत्य भवन्ति ? इति प्रश्नः उत्तरयति-अतिदेशेन 'जहा' इत्यादि, 'जहा बीओ उद्देसओ तहेव निरवसेसं' यथा द्वितीयोद्देशकस्तथैव निरवशेषम् एतच्छतकीय द्वितीयोद्देशक प्रथमसमयैकेन्द्रियाणां यथा उपपातादिकं कथित तथैव निरवशेषमिहापि ज्ञातव्य-मिति। 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति यावद्विहरति, हे भदन्त ! प्रथमाचरमकृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रियाण मुपपातादि विषये यद् देवानुप्रियेण कथितं तत्सर्वं सत्यमेवेति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते यावद्विहरतीति।

॥ पञ्चविंशत्तमे शतके नवमोद्देशकः समाप्तः ।३५।९॥

अवगाहना आदि की जो समानता यहाँ कही गई है वह नहीं हो सकती है। इसी शतक के द्वितीय उद्देशक में प्रथम समयमें एकेन्द्रियों का जैसा उत्पाद आदि कहा गया है वैसा ही सब कथन यहां ९ वें उद्देशक में है ऐसा जानना चाहिये। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ' हे भदन्त ! प्रथमाचरम कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीवों के उपपात आदि के विषय में जो आप देवानुप्रिय ने कहा है वह सब सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे तप और संयमसे आत्माको भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये १॥

॥ शतक ३५ वां उद्देशक नौवां समाप्त ॥३५-९॥

ઉદ્દેશામાં કહેલ અવગાહના વિગેરેનું જે સમાન પણું અહિયાં કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું સઘળું કથન અહિયાં આ ૯ નવમાં ઉદ્દેશામાં પણ કહેલ છે, તેમ સમજવું.

'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ પ્રથમ ચરમ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિયજીવોના ઉપપાત વિગેરે વિષયના સબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળુ કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ।સૂ૦૧॥

॥નવમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૫-૯॥

'चरमचरम समय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति' चरमचरमसमय कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? चरमाश्च ते विवक्षितसंख्यानुभूतेश्चरमसमयवर्त्तित्वात्, चरमसमया मरणसमयवर्त्तिनः, इत्थंभूता एकेन्द्रिया चरमचरमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रिया इति कथ्यन्ते एतेषा मुत्पादः कुत इति प्रश्नः, उत्तरयति-अतिदेशद्वारेण-'जहा' इत्यादि 'जहा चउत्थो उद्देसओ तहेव' यथा चतुर्थ उद्देशक स्तथैव एतच्छतकीय चतुर्थोद्देशके यथा कथितं तदिहापि तथैव सर्वं ज्ञातव्यमिति, सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति, हे भदन्त ! चरमचरमसमय कृतयुग्म

'चरम चरम कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' हे भदन्त ! चरम चरम समयवर्ती कृतयुग्म कृतयुग्म राशिरूप एकेन्द्रिय जिव किस स्थान विशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं ? विवक्षित संख्याकी राशिके अनुभव के अन्तिम समय में वर्तमान होने से चरम और मरण समयवर्ति होनेसे चरमवाले ऐसे जो कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीव हैं वे चरमचरमसमय-कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रिय जीव हैं। इनका जन्म कहां से आकरके होता है ? इस प्रश्न के उत्तर में अतिदेश द्वारा गौतम को समझाते हुए प्रभुश्री कहते हैं-'जहा चउत्थो उद्देसओ तहेव' हे गौतम ! इसी शतकके चतुर्थ उद्देशक में जैसा कहा गया है वैसा ही वह सब यहां कह लेना चाहिये।' 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' 'हे भदन्त ! चरम

દસમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'ચરમ ચરમ કડજુમ્મકડજુમ્મ એગિંદિયાણં ભંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ, ઈ.

હે ભગવન્ ચરમ ચરમ સમયમાં રહેનારા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિરૂપ એકેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? વિવક્ષિત સંખ્યાની રાશિના અનુભવના છેલ્લા સમયમાં રહેનારા હોવાથી ચરમ અને મરણ સમયમાં રહેવાવાળા હોવાથી ચરમ સમયવાળા એવા જે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિય જીવો છે, તેઓ ચરમ ચરમ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશી વાળા એકેન્દ્રિય જીવો છે, તેઓ ચરમ ચરમ સમય કૃયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિય જીવો છે. તેઓનો જન્મ કયાંથી આવીને થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં અતિદેશ-ભલામણથી પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-હે ગૌતમ ! આ પાંત્રીસમા શતકના ચોથા ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું તે સઘળું કથન અહિયાં પણ સમજવું જોઈએ.

कृतयुग्मैकेन्द्रियाणामुपपातादि विषये यद् देवानुप्रियेण कथित तत्सर्वं सत्यमेवेति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति ॥३५।१०॥

॥ पञ्चत्रिंशत्तमे शतके दशमोद्देशकः समाप्तः ॥३५।१०॥

'चरम अचरमसमय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति' चरमाचरमसमय कृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? चरमाः विवक्षितसंख्यानुभूते चरमा समये ये वर्त्तमानाः तथा-अचरम समयाः प्रागुक्तयुक्तैरेकेन्द्रियोत्पादापेक्षया प्रथमसमयवर्त्तिनः इत्थंभूताः कृतयुग्म

चरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म राशि प्रमित एकेन्द्रिय जीवों के उत्पात आदि विषय में आप देवानुप्रियने जो२ कहा है वह सब सत्य ही है२। इस प्रकार कहकर गौतम ने प्रभुश्री की स्तुति की और नमस्कार किया स्तुति और नमस्कार कर फिर वे तप और संयम से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये १॥

॥ शतक ३५ वां उद्देशक १० वां समाप्त ॥३५-१०

टीकार्थ-'चरम अचरमसमय कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' हे भदन्त ! जो एकेन्द्रिय जीव चरम और अचरम समयवर्ती कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित हैं वे किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? विवक्षित संख्याकी अनुभूति के चरम समय में वर्तमान होने से इनमें चरमता और एकेन्द्रिय रूपसे

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे ભગવન્ ચરમચરમ સમયમાં રહેવાવાળા કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મરાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોના ઉત્પાત વિગેરે વિષયના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સત્ય છે, આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥દસમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૫-૧૦॥

અગીયારમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ —

'चरम अचरम समय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंत्ति' હે ભગવન્ એકેન્દ્રિય જીવો ચરમ અને અચરમ સમયવર્તિ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા છે, તેઓ કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? વિવક્ષિત સંખ્યાના અનુભવનના ચરમ સમયમાં રહેનારા હોવાથી તેઓમાં ચરમ

कृतयुग्मैकेन्द्रिया एते चरमाचरम कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रिया इति कथ्यन्ते। एतेषा मुत्पादः कुतः ? इति प्रश्नः, उत्तरयति अतिदेशद्वारेण-'जहा' इत्यादि, 'जहा पढमसमय उद्देसओ तहेव निरवसेसं' यथा प्रथमसमयोद्देशको द्वितीय स्तथै-वेहापि निरवशेषं ज्ञातव्यमिति। 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति यावद् विहरति, इति॥

॥ पञ्चत्रिंशत्तमे शतके एकादशोद्देशकः समाप्तः ॥३५।११

उत्पाद की अपेक्षा प्रथमादि समयवर्ती होने से इनमें अचरम समयता कही गई है, इनका उत्पाद कहां से होता है ? तो इस सम्बन्ध में उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतम से कहते हैं-'जहा पढम समय उद्देसओ तहेव निरवसेसं' हे गौतम ! जैसा इसी शतक के द्वितीय उद्देशक में कहा गया है वैसा ही समस्त कथन यहां पर भी करलेना चाहिये। 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ' हे भदन्त चरमा-चरम समय कृतयुग्मकृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीवों के उत्पाद आदि के विषय में जो आप देवानुप्रियने कहा गया है यह सब सत्य ही है। २ इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू०१॥

पैंतीसवें शतक का ११ ग्यारहवां उद्देशक समाप्त ॥३५-११॥

પણુ અને એકેન્દ્રિયપણાથી ઉત્પાદની અપેક્ષાથી પ્રથમ સમયમાં વર્તમાન હેવાથી તેઓમાં અચરમ સમય પણું કહેલ છે. તેઓને ઉત્પાત કયાંથી થાય છે? તો આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'जहा पढमसमयउद्देसओ तहेव निरवसेसं' હે ગૌતમ! આ શતકના બીજા ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું સઘળું કથન અહિયાં પણ કહેવું જોઈએ.

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ ચરમ અચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિયજીવોના ઉત્પાદ વિગેરે વિષયમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. ર આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રી ને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥અગિયારમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૫-૧૧॥

'एवं एए एक्कारस उद्देसगा' एवम् उपरोक्त प्रदर्शितक्रमेणैकादशोद्देशकाः संजाताः 'पढमो तइओ पंचमओ य सरिसगमा' प्रथम स्तृतीयः पञ्चमकश्च सदृश गमाः सदृशालापकाः 'सेसा अट्ठ सरिसगमा' शेषा अष्टौ द्वितीयचतुर्थ षष्ठ सप्तमाष्टम नवम दशमैकादशाः सदृशालापकाः 'नवरं चउत्थे छट्ठे अट्ठमे दसमेय देवा न उववज्जंति तेउलेस्सा नत्थि' नवरं चतुर्थे षष्ठे अष्टमे दशमे चोद्देशके देवा नोत्पद्यन्ते तथा तेषां तेजोलेश्या नास्ति तत्र चरमसमय कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियोद्देशके, षष्ठे प्रथमप्रथम समयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियोद्देशके, अष्टमे-प्रथमचरमसमय कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियोद्देशके, दशमे-चरमचरम समय कृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रियोद्देशके, एषु चतुर्षूद्देशकेषु देवोत्पत्ति र्न वक्तव्येति भावः।

॥ पञ्चत्रिंशत्तमे शतके प्रथममेकेन्द्रिय महायुग्मशतं समाप्तम् ॥३५।१॥

टीकार्थ-'एवं एए एक्कारस उद्देसगा' इस पूर्वोक्त क्रम से ११ उद्देशक हैं। 'पढमो तइओ पंचमओ य सरिसगमा' इनमें प्रथम, तृतीय और पंचम ये उद्देशक सदृश आलापवाले हैं। 'सेसा अट्ठ सरिसगमा' और द्वितीय, चतुर्थ षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम एवं ग्यारह वां ये आठ उद्देशक समान आलापकवाले हैं। 'नवरं चउत्थे छट्ठे अट्ठमे दसमे य देवा न उववज्जंति' परन्तु चौथे छठवें, आठवें और दशवें उद्देशक में देवों का उत्पाद नहीं है। इस लिये वहां तेजोलेश्या नहीं है। चरमसमय कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रिय उद्देशक चतुर्थ उद्देशक है। प्रथम प्रथमसमय कृतयुग्मकृतयुग्म एकेन्द्रिय उद्देशक छठवां उद्देशक हैं। प्रथम चरम समय कृतयुग्म एकेन्द्रिय उद्देशक आठवां उद्देशक है। चरमचरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रिय उद्देशक दशवां उद्देशक है। इनमें देवों की उत्पत्ति वक्तव्य नहीं हुई है।

॥ पैंतीसवें शतक में एकेन्द्रिय महायुग्म शत समाप्तः ॥

'एवं एए एक्कारस उद्देसगा' આ પૂર્વોક્ત ક્રમથી ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ કહ્યા છે. 'पढमो तइओ पंचमओ य सरिसगमा' તેમાં પહેલો અને ત્રીજો તથા પાંચમો સરખા આલાપકોવાળા છે. 'सेसा अट्ठ सरिसगमा' તથા બીજો, ચોથો, છટ્ઠો, સાતમો આઠમો નવમો, દસમો અને અગિયારમો આ આઠે ઉદ્દેશાઓ સરખા આલાપકોવાળા છે 'नवरं चउत्थे छट्ठे अट्ठमे दसमे य देवा न उववज्जंति' પરંતુ ચોથા, છઠ્ઠા, આઠમાં તથા દસમા ઉદ્દેશામાં દેવોનો ઉત્પાત થતો નથી. તેથી ત્યાં તેજોલેશ્યા હોતી નથી ચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિય ઉદ્દેશક છઠ્ઠો, ઉદ્દેશો છે પ્રથમ ચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિયોનો આઠમો ઉદ્દેશો છે. ચરમસમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિયોનો દસમો ઉદ્દેશો છે. તેમા દેવોની ઉત્પત્તી કહેલ નથી

એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત

'अह बितियं एगिंदियमहाजुम्म सयं'

मूलम्--कण्हलेस्स कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति? गोयमा! उववाओ तहेव एवं जहा ओहि उद्देसए। नवरं इमं नाणत्तं--ते णं भंते! जीवा किं कण्हलेस्सा? हंता गोयमा! कण्हलेस्सा तेणं भंते! कण्हलेस्स कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियत्ति कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं। एवं ठिईए वि। सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो। एवं सोलस वि जुम्मा भाणियव्वा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥३५।२॥सू० १॥

पढम समय कण्हलेस्स कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति? जहा--पढम समय उद्देसओ। नवरं ते णं भंते! जीवा कण्हलेस्सा? हंता कण्हलेस्सा। सेसं तं चेव। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥३५-२सू० २॥

एवं जहा ओहियसए एक्कारस उद्देसगा भणिया तहा कण्हलेस्ससए वि एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा। पढमो तइओ पंचमो य सरिसगमा, सेसा अट्ठ वि सरिसगमा। नवरं चउत्थ छट्ठ अट्ठमदसमेसु उववाओ नत्थि देवस्स। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥३५-२॥

छाया--कृष्णलेश्य कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? गौतम! उपपात स्तथैव। एव यथा औघिकोद्देशकः। नवरमिदं नानात्वम्--ते खलु भदन्त! जीवाः किं कृष्णलेश्याः? हंत, गौतम! कृष्णलेश्याः। ते खलु भदन्त! कृष्णलेश्य कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रिया इति कालतः कियच्चिरं भवन्ति? गौतम! जघन्येन एकं समयम्, उत्कर्षेणान्तर्मुहूर्तम्। एवं स्थितावपि। शेषं तथैव यावदनन्त कृत्वः एवं षोडश अपि युग्मा भणितव्याः। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त इति ३५।

प्रथमसमय कृष्णलेश्य कृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते यथा प्रथमसमयोद्देशकः। नवरं ते खलु भदन्त! जीवाः कृष्णलेश्याः? हन्त कृष्णलेश्याः शेषं तदेव! तदेवं भदन्त तदेवं भदन्त! इति ॥३५।२।२

एवं यथा औधिकशते एकादशोद्देशका भणिताः तथा कृष्णलेश्य शतेऽपि एकादशोद्देशका भणितव्याः। प्रथम स्तृतीयः पञ्चमश्च सदृशगमाः शेषा अष्टावपि सदृशगमाः। नवरं चतुर्थ षष्ठाष्टम-दशमेषु उपपातो नास्ति देवस्य। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥३५:२

॥ पञ्चत्रिंशत्तमे शते द्वितीयमेकेन्द्रियमहायुग्मशतं समाप्तम् । ३५।२॥

टीका-'कण्हलेस्स कडजुम्म कडजुम्म एगिंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति' कृष्णलेश्य कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत आगत्य उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य स्तिर्यग्भ्यो मनुष्येभ्यो देवेभ्यो वा आगत्योत्पद्यन्ते? इति प्रश्नः, भगवानाह- 'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा! हे गौतम! 'उववाओ तहेव एवं जहा ओहि उद्देसए' उपपातः, कृष्णलेश्यैकेन्द्रियाणां तथैव एवं यथा औधिकोद्देशकः, अस्यैव शतकस्य प्रथमोद्देशको वर्णितः प्रथमोद्देशकवर्णितप्रकारेणैव कृष्णलेश्य कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाणामुपपातो ज्ञातव्य इति 'नवरं इमं नाणत्तं' नवरमिदं वक्ष्यमाणनानात्वं

द्वितीय एकेन्द्रिय महायुग्म शत

'कण्हलेस्स कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते!' इत्यादि

टीकार्थ-हे भदन्त! कृष्णलेश्यावाले कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं? क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? अथवा मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! उववाओ तहेव एवं जहा ओहि उद्देसए' इन कृष्णलेश्यावाले कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रियों का उपपात जैसा कि इसी शतक के प्रथम उद्देशक में कहा गया है वैसा ही हैं। 'नवरं इमं नाणत्तं' परन्तु यहां ऐसी विशे-

બીજા એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતકનો પ્રારંભ—

'कण्हलेस्स कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते! ઇત્યાદિ

હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા તિર્યંચ યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा! उववाओ तहेव एवं जहा ओहिउद्देसए' આ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશીવાળા એકેન્દ્રિયોનો ઉપપાત જેમ કે આ શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે છે. 'नवरं इमं'

भेदः सामान्यैकेन्द्रियेभ्यः कृष्णलेश्य कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाणाम्। 'ते णं भंते! जीवा किं कण्हलेस्सा' ते खलु भदन्त! जीवाः किं कृष्णलेश्यावन्तः? उत्तरमाह–'हंता गोयमा! कण्हलेस्सा' हन्त गौतम! ते जीवाः कृष्णलेश्यावन्तो भवन्तीति! 'ते णं भंते! कण्हलेस्स कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियत्ति कालओ केवच्चिरं होंति' ते खलु भदन्त! कृष्णलेश्यकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रिया इति कालतः कियच्चिरं भवन्तीति प्रश्नः। भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, गोयमा' हे गौतम! 'जहन्नेणं एक्कं समयं' जघन्येन एकं समयं जघन्यत एकसमयानन्तरं संख्यान्तरं भवन्तीति। 'उक्कोसेणं अंतो मुहुत्तं' उत्कर्षेणान्तर्मुहूर्त्तं यावत् कृष्णलेश्यैकेन्द्रिया भवन्तीति। तदनन्तरं कृतयुग्मकृतयुग्मत्वानुभवाभावात् 'एवं ठिईए वि' एवं

षता है–अर्थात् सामान्य एकेन्द्रियों की अपेक्षा इन कृष्णलेश्यावाले कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रियों के कथन में ऐसी विशेषता है–'ते णं भंते! जीवा किं कण्हलेस्सा' हे भदन्त! क्या ये जीव कृष्णलेश्यावाले होते हैं? 'हंता गोयमा!' हां, गौतम! ये जीव कृष्णलेश्यावाले होते हैं। 'तेणं भंते! कण्हलेस्स कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियत्ति कालओ केवच्चिरं होंति' हे भदन्त। ये कृष्णलेश्यावाले कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीव कालकी अपेक्षा इस रूप में कब तक रहते हैं? 'गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं' हे गौतम! ये एकेन्द्रिय जीव इस रूप में जघन्य से तो एक समय तक रहते हैं और उत्कृष्ट से एक अन्तर्मुहूर्त तक रहते हैं। इस के बाद इनमें यह रूपता नहीं रहती है। 'एवं ठिईए वि' इसी प्रकार

नाणत्तं" परंतु અહિયા એ વિશેષપણું છે અર્થાત્ સામાન્ય એકેન્દ્રિયો કરતાં આ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોના કથનમાં આ પ્રમાણે વિશેષપણું છે–'ते णं भंते! जीवा किं कण्हलेस्सा' હે ભગવન્ શું તે જીવો કૃષ્ણલેશ્યાવાળા હોય છે? 'हंता गोयमा!' હા ગૌતમ! આ જીવ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા હોય છે. 'ते णं भंते! कण्हलेस्स कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियत्ति कालओ केवच्चिरं होंति' હે ભગવન્ આ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો કાળની અપેક્ષાએ આ રૂપથી ક્યાં સુધી રહે છે? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે–'गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं' હે ગૌતમ! આ એકેન્દ્રિય જીવો આ રૂપમાં જઘન્યથી તો એક સમય સુધી રહે છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી એક અંતર્મુહૂર્ત સુધી રહે છે. તે પછી તેઓમાં આ પ્રકાર પણ રહેતું નથી. 'एवं ठिईए वि' એજ પ્રમાણે તેઓની

पूर्वं देव स्थितावपि जघन्येनैकं समयमुत्कर्षेणान्त मुहूर्तम् कृष्णलेश्यावतां स्थिति कृष्णलेश्या कालवदवसेयेत्यर्थः। 'सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो' शेषं स्थितव्यतिरिक्तं सर्वं तथैव औघिकशतकीयप्रथमोद्देशकवदेव यावदनन्तकृत्वः। 'एवं सोलस वि जुम्मा भाणियव्वा' एवं कथित प्रकारेण षोडशापि युग्मा कृतयुग्मकृतयुग्मदारभ्य कल्योजकल्योजा अपि पठनीया इति। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेव भदन्त! इति हे भदन्त! कृष्णलेश्यकृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रिय जीवानामु-

से इनकी स्थिति भी जघन्य से एक समय की और उत्कृष्ट से एक अन्तर्मुहूर्त्त की होती है। 'सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो' बाकी का और सब कथन सामान्य एकेन्द्रिय जीवों के जैसा ही है। और यह कथन इनके सम्बन्ध में 'यावत् ये इस रूप में अनन्तवार उत्पन्न होते हैं' यहां तक है। 'एवं सोलस वि जुम्मा भाणियव्वा' इसी प्रकारसे इनके सोलह महायुग्म भी कहलेना चाहिये। अर्थात् इनके कृतयुग्म कृतयुग्म से लेकर कल्योज कल्योज महायुग्म तक जो इन के महायुग्म प्रकट किये हैं सो उन २ महाराशिवाले इन एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में पूर्वोक्त कथन के अनुसार ही कथन करलेना चाहिये और यह कथन 'यावत् वे इन इन महायुग्मों के रूप में अनन्तवार उत्पन्न हो चुके हैं इस अन्तिम कथन तक जानना चाहिये।

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति हे भदन्त! कृष्णलेश्यावाले कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीवों के उपपात आदि में जो आप

સ્થિતિ પણ જઘન્યથી એક સમયની અને ઉત્કૃષ્ટથી એક અંતર્મુહૂર્તની હોય છે. 'सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो' બાકીનું બીજું સઘળું કથન સામાન્ય એકેન્દ્રિય જીવોના કથન પ્રમાણે જ છે. અને આ કથન તેના સંબંધમાં યાવત્ તેઓ આ પ્રકારથી અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચૂક્યા છે, 'આ કથન સુધી કહેલ છે. 'एवं सोलस वि जुम्मा भाणियव्वा' આજ પ્રમાણે આના સોળ મહાયુગ્મો પણ કહેવા જોઈએ. અર્થાત્ આમને કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મથી લઈને કલ્યોજકલ્યોજ મહાયુગ્મ સુધી આમના જે મહાયુગ્મો બતાવ્યા છે. તે તે મહારાશિવાળા આ એકેન્દ્રિયોના સંબંધમાં પહેલા કહેલ કથન પ્રમાણે કથન કહેવું જોઈએ. અને આ કથન યાવત્ તેઓ અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચૂક્યાં છે આ છેલ્લા કથન સુધી સમજવું.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોના ઉપપાત વિગેરેના સંબંધમાં આપ દેવાનુ પ્રિયે

पपातादि विषये यद् देवानुप्रियेण कथितं तत्सर्वं सत्यमेवेति कथयित्वा गौतमो भगवन्तं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा यावद् विहरतीति ॥३५।२।१
इति पञ्चत्रिंशत्तमे शतके द्वितीयैकेन्द्रियमहायुग्मशते प्रथमोदेशकः समाप्तः।३५।२।१।

'पढम समय कण्हलेस्स कडजुम्मकडजुम्म एगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति' प्रथमसमयकृष्णलेश्य कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? इति प्रश्नः, उत्तरयति अतिदेशद्वारेण-'जहा' इत्यादि, 'जहा पढम समय उद्देसओ' यथा प्रथमसमयोदेशकः, प्रथमसमयोद्देशके एतच्छतकस्य प्रथम

देवानुप्रियने कहा है। वह सब सत्य ही है। २ इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू०१॥
द्वितीय एकेन्द्रिय महायुग्म शत में प्रथम उद्देशक समाप्त। ३५-२-१॥

'पढम कण्हलेस्स कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! इत्यादि

टीकार्थ-हे भदन्त ! प्रथम समय के कृष्णलेश्यावाले कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? इस प्रश्न का अतिदेश द्वारा उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतमस्वामी से कहते हैं ? 'जहा पढम समय उद्देसओ' हे गौतम ! जैसा कथन इसी शतक के प्रथम शत के द्वितीय उद्देशक में एकेन्द्रिय

જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું આ વિષય સંબંધી સઘળું કથન સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા.

બીજા એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતકમાં પહેલો ઉદ્દેશો સમાપ્ત

બીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'પઢમસમય કણ્હલેસ્સ કડજુમ્મ કડજુમ્મ એગિંદિયાણં ભંતે ! ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ-હે ભગવન્ પ્રથમ સમયના કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં અતિદેશ દ્વારા પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે- 'જહા પઢમસમય ઉદ્દેસઓ' હે ગૌતમ ! આ શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં એકે-

शतकीय द्वितीयोद्देशके येन प्रकारेणैकेन्द्रियाणां विषये कथितं तथैवात्रापि ज्ञातव्यमिति। 'नवरं तेणं भंते! जीवा किं कण्हलेस्सा' नवरं प्रथम शतापेक्षया इदं वैलक्षण्यं यत् ते खलु भदन्त! जीवाः किं कृष्णलेश्याऽनन्ताः? इति प्रश्नः। उत्तरयति-'हंता' इत्यादि, 'हंता कण्ह लेस्सा' हे गौतम! ते जीवाः कृष्णलेश्याऽनन्तो भवन्ति, इत्युत्तरम् 'सेसं तं चेव' शेषं तदेव यत् पूर्वशते कथितमिति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त तदेवं भदन्त! इति यावद्विहरति॥

इति पञ्चत्रिंशत्तमेशतके द्वितीयैकेन्द्रियमहाशते द्वितीयोद्देशकः समाप्तः॥३५ २।२

॥ पञ्चत्रिंशत्तमें शतके द्वितीयशते तृतीयाद्येकादशोद्देशकाः प्रारभ्यन्ते।

'एवं जहा ओहियसए एक्कारस उद्देसगा भणिया' एवं यथा औघिकशते पञ्चत्रिंशत्तमशतकस्य प्रथमे शतके औघिक-कृतयुग्मकृतयुग्माः १, प्रथमसमय

के सम्बन्ध में किया जा चुका है वैसा ही वह यहां पर जानना चाहिये। 'नवरं तेणं जीवा किं कण्हलेस्सा' परन्तु वहां के कथन की अपेक्षा यहां के कथन में यही विशेषता है कि ये जीव कृष्णलेश्यावाले होते हैं। यही बात प्रश्नोत्तर रूप से प्रकट की गई है। 'सेसं तं चेव' अवशिष्ट कथन पूर्वशत में कहे गये अनुसार है। 'सेवं भंते। सेवं भंते। त्ति' हे भदन्त! जैसा आपने कहा है वह सब सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये॥३५-२-२॥

पैंतीसवें शतक के दूसरे एकेन्द्रिय महा शतक का

दूसरा उद्देशक समाप्त॥३५-२॥

न्द्रिय જીવોના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું કથન કર્યું છે, એજ પ્રમાણેનું કથન અહિયાં સમજવું 'नवरं ते णं जीवा किं कण्हलेस्सा' પરંતુ ત્યાંના કથન કરતાં આ કથનમાં એજ વિશેષ પણું છે કે આ જીવો કૃષ્ણલેશ્યાવાળા હોય છે. એજ વાત અહિયાં પ્રશ્નોત્તર રૂપથી પ્રગટ કરેલ છે. 'सेसं तं चेव' બાકીનું કથન પહેલા શતકમાં કહ્યા પ્રમાણે છે.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણેનું કથન કર્યું છે. તે સઘળું કથન સત્ય જ છે. ૨ આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી અને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા.

બીજા એકેન્દ્રિય મહાશતકમાં બીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૫-૨-૨॥

कृतयुग्मकृतयुग्माः २, अप्रथमसमय कृतयुग्मकृतयुग्माः ३, चरमसमय कृतयुग्म कृतयुग्माः ४, अचरमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मा ५, प्रथमप्रथमसमय कृतयुग्म कृतयुग्माः ६, प्रथमाप्रथम समयकृतयुग्मकृतयुग्माः ७। प्रथमचरमसमय कृतयुग्मकृतयुग्माः ८। प्रथमाचरमसमय कृतयुग्मकृतयुग्माः ९, चरम चरम समय कृतयुग्मकृतयुग्माः १०, चरमाचरमसमय कृतयुग्मकृतयुग्माः ११, इत्येत द्विशेषणविशिष्टानेकेन्द्रियानाश्रित्य ये एकादशोद्देशका भणिताः कथिताः 'तहा कण्हलेस्ससए वि एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा' तथा तेनैव रूपेण कृष्णलेश्य पदविशिष्ट द्वितीयशतेऽपि एकादश उद्देशका भणितव्याः आलाप-

शतक ३५ उद्देशक ३-११ तक

टीकार्थ-'एवं जहा ओहियसए एक्कारस उद्देसगा भणिया' जिस प्रकार से औधिक शत में ३५ वें शतक के प्रथम शतक में-कृतयुग्म कृतयुग्म १, प्रथमसमय कृतयुग्म कृतयुग्म २, अप्रथम, समय कृतयुग्म कृतयुग्म ३, चरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म ४, अचरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म ५, प्रथम प्रथम समय कृतयुग्म कृतयुग्म ६, प्रथमाप्रथम चरमसमय कृतयुग्म कृतयुग्म ७, प्रथम चरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म ८, प्रथमाचरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म ९, चरम चरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म १०, और चरमाचरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म ११ इन विशेषणों से विशिष्ट एकेन्द्रियों को आश्रित करके ११ उद्देशक कहे गये हैं। 'तहा कण्हलेस्ससए वि एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा' उसी रूप से कृष्णलेश्यपद विशिष्ट द्वितीय शत में भी ११ उद्देशक कहलेना चाहिये। तथा इस सम्बन्ध में आलाप प्रकार भी

ત્રીજાથી ૧૧ મા સુધીના ઉદ્દેશાઓનો પ્રારંભ—

'एवं जहा ओहियसए एक्कारस उद्देसगा भणिया'

ટીકાર્થ-જે પ્રમાણે ૩૫ પાત્રીસમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં—કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ૧, પ્રથમસમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૨, અપ્રથમસમય કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ ૩, ચરમસમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૪, અચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૫, પ્રથમ પ્રથમસમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૬, પ્રથમાપ્રથમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૭ પ્રથમ ચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૮ પ્રથમ અચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૯ ચરમ ચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૧૦ અને ચરમ અચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૧૧ આ પ્રકારના વિશેષણોવાળા એકેન્દ્રિય જીવોનો આશ્રય કરીને ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ કહ્યા છે. 'तहा कण्हलेस्ससए वि एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा' એજ પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યાના પદવાળા બીજા શતકમાં પણ ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ

ममकारश्च स्वयमूहनीय इति। तत्र 'पढमो तइओ पंचमो य सरिसगमा' प्रथमोद्देशक स्तृतीयोद्देशकः पञ्चमोद्देशकश्च सदृशगमाः समानालापका भवन्ति। 'सेसा अट्ठवि सरिसगमा' शेषाः द्वितीयचतुर्थषष्ठसप्तमाष्टमनवमदशमैकादशात्मका अष्टावपि उद्देशकाः सदृशगमाः सदृशालापकाः सन्ति' 'नवरं चउत्थ छट्ठ अट्ठम दसमेसु उववाओ नत्थि देवस्स' नवरं चतुर्थषष्ठाष्टमदशमोद्देशकेषु उपपातो नास्ति देवस्य एषु देवा नोत्पद्यन्ते इति भावः। 'सेवं भंते सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति यावद्विहरति॥

इति श्री-विश्वविख्यातजगद्वल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि-'जैनाचार्य' पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां "श्री भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां पञ्चत्रिंशत्तमे शतके द्वितीयशते तृतीयादारभ्य एकादशान्ताः उद्देशकाः समाप्ताः ॥३५।२।११॥

॥इति पञ्चत्रिंशत्तमे शतके द्वितीयमेकेन्द्रियमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥३५।२॥

अपने आप बना लेना चाहिये। इन में 'पढमो तइओ पंचमो य सरिगमा' प्रथम उद्देशक, तृतीय उद्देशक और पंचम उद्देशक एक से आलापक वाले हैं। 'सेसा अट्ठ वि सरिसगमा' और द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम और एकादश ये आठ उद्देशक एक से आलापकवाले हैं। 'नवरं चउत्थ, छट्ठ, अट्ठम, दसमेसु उववाओ नत्थि देवस्स' परन्तु चतुर्थ में, छठे में, आठवें में एवं दशवें में देव का उपपात नहीं होता हैं। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! जैसा

કહેવા જોઈએ. તથા આ સંબંધમાં આલાપનો પ્રકાર પણ સ્વયં બનાવીને સમજી લેવો. 'पढमो तइओ पंचमो य ससिसगमा' પહેલા ઉ શો ત્રીજો ઉદ્દેશો અને પાંચમો ઉદ્દેશો એકસરખા અલાપકોવાળા છે, 'सेसा अट्ठ वि सरिसगमा' તથા બીજો, ચોથો, છટ્ઠો, સાતમો, આઠમો, નવમો, દસમો, અને અગિયારમો આ આઠ ઉદ્દેશાઓ એક સરખા આલાપકોવાળા છે. 'नवरं चउत्थ छट्ठ अट्ठम दसमेसु उववाओ नत्थि देवस्स' પરંતુ ચોથા, છઠા, આઠમા અને દશમા ઉદ્દેશામાં દેવોનો ઉપપાત થતો નથી.

आपने यह कहा है वह सब कथन सर्वथा सत्य ही है २। इस प्र कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की नमस्कार किया। वन्दना न स्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृ "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके पैंतीसवें शतक के द्वितीय शतक में तृतीय उद्देशक से लेकर ११ वें उद्देशक पर्यन्त के उद्देशक समाप्त ॥३५-२-११॥

द्वितीय एकेन्द्रिय महायुग्म शतक समाप्त हुआ॥३५-२॥

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ આપે જે પ્રમાણે આ વિષય કથન કરેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌત સ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થ પર બિરાજમાન થયા. ાસૂ૦૧ા

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્ર પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના પાંત્રીસમા શતકમાં બીજા ઉદ્દેશાથી લઇને અગિયાર ઉદ્દેશા સુધીના સઘળા ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ા૩૫-૨-૧૧

૩૫ મા શતકમાં બીજું એકેન્દ્રિય મહયુગ્મ શતક સમાપ્ત ા૩૫-૨ા



'अह तइयं एगिंदियमहाजुम्मसयं

मूलम्—एवं नीललेस्सेहि वि सयं कण्हलेस्स सयसरिसं एक्कारस उद्देसगा तहेव सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥सू० १॥

पणतीसइमे सए तइयं एगिंदिय महाजुम्म सयं समत्तं॥३५-३॥

छाया:—एवं नीललेश्यैरपि शतं कृष्णलेश्यशतसदृशम्, एकादशोद्देशकास्तथैव। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥

पञ्चत्रिंशत्तमे शतके तृतीयमेकेन्द्रियमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥३५।३॥

टीका—'एवं नीललेस्सेहि वि सयं कण्हलेस्ससयसरिसं' एवं नीललेश्यैरपि शतं कृष्णलेश्यशतसदृशं ज्ञातव्यम्, यथा—कृष्णलेश्यामन्तर्भाव्य शतमेकेन्द्रिय महायुग्माख्यं निर्मितं तथैव नीललेश्यमन्तर्भाव्यापि तृतीयमेकेन्द्रियमहायुग्मशतं निर्मातव्यम्। 'एक्कारस उद्देसगा तहेव' यथैव कृष्णलेश्यशते औधिककृतयुग्म कृत-

---

शतक ३५ तृतीय एकेन्द्रिय महायुग्म शत

टीकार्थ—'एवं नीललेस्सेहिं वि सयं कण्हलेस्ससरिसं एक्कारस उद्देसगा तहेव सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' कृष्णलेश्यावालों के सम्बन्ध में जैसा कृष्णलेश्या शतक कहा गया है। उसी रीति से नीललेश्यावालों के सम्बन्ध में नीललेश्या शतक भी कहलेना चाहिये जैसे वहां ११ उद्देशक कहे गये हैं वैसे ही यहां पर भी ११ उद्देशक हैं ऐसा समझना चाहिये। तात्पर्य इस कथन का ऐसा है कि जिस रीति से कृष्णलेश्या को आश्रित करके एकेन्द्रिय महायुग्म नाम का शतक निर्मित हुआ है। उसी प्रकार से नीललेश्या को आश्रित करके तृतीय एकेन्द्रिय महायुग्म शतक भी निर्मित कर लेना चाहिये। तथा 'एक्कारस उद्देसगा तहेव' कृष्णलेश्यावालों के शत में औधिक

ત્રીજા એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતકનો પ્રારંભ—

'एवं नीललेस्सेहिं सयं कण्हलेस्ससरिसं एक्कारसउद्देसगा तहेव-सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' કૃષ્ણલેશ્યાવાળાઓના સંબંધમાં જે પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યા શતક કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે નીલલેશ્યાવાળાઓના સંબંધમાં નીલલેશ્યા શતક પણ કહેવું જોઈએ, ત્યાં જે પ્રમાણે ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ કહ્યા છે, એજ પ્રમાણેના ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ અહિયાં પણ છે તેમ સમજવું. આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે-જે રીતે કૃષ્ણલેશ્યાનો આશ્રય કરીને એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ નામનું શતક કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે નીલલેશ્યાનો આશ્રય કરીને એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતક પણ સમજી લેવું જોઈએ. તથા

युग्मोदेशादारभ्य चरमाचरमकृतयुग्मकृतयुग्मोदेशपर्यन्तमेकादशोदेशकाः कृता स्तथैव इहापि नीललेश्य पदमधिकृत्य कृतयुग्म कृतयुग्मादि घटिता एकादशोदेशका अपि करणीयाः। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति॥

इति श्री – विश्वविख्यातजगद्वल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि – 'जैनाचार्य' पूज्यश्री–घासीलालव्रतिविरचितायां 'श्री भगवतीसूत्रस्य' प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां पञ्चत्रिंशत्तमशतके तृतीयमेकेन्द्रियमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥३५।३

कृतयुग्म कृतयुग्म उद्देशक से लेकर चरम चरम कृतयुग्म कृतयुग्म उद्देशक तक ११ उद्देशक किये गये हैं उसी प्रकार से यहां पर भी नीललेश्य पद को लगाकर कृतयुग्म कृतयुग्म आदि घटित ११ उद्देशक कर लेना चाहिये। 'सेवं भंते सेवं भंते। त्ति' हे भदन्त। जैसा आपने यह कथन किया है, वह सर्वथा सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतमस्वामीने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥१॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके पैंतीसवें शतकका तीसरा महायुग्म शतक समाप्त ॥३५-३॥

'एक्कारस उद्देसगा तहेव' કૃષ્ણલેશ્યાવાળાઓના શતકમાં ઔધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ઉદ્દેશાથી લઈને ચરમ ચરમ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ઉદ્દેશા સુધી ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ નીલલેશ્યા પદ લગાવીને કૃતયુગ્મ કતયુગ્મ વિગેરે ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ સમજવા.

'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમણે આ વિષયમાં કહ્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે હે ભગવન્ આપનું કથન સત્ય જ છે, એ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત "ભગવતીસૂત્ર"ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના પાંત્રીસમા શતકનું ત્રીજુ એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત ॥૩૫-૩॥

॥ 'अह चउत्थं एगिंदिय महाजुम्मसयं ॥

मूलम्—एवं काउलेस्सेहि वि सयं कण्हलेस्ससयसरिसं। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।

छाया—एवं कापोतलेश्यैरपि शतं कृष्णलेश्यशतसदृशम्। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति।

टीका—एवं कापोतलेश्यैरपि शतं कृष्णलेश्यशतसदृशम्। अत्र कापोतलेश्यपदमधिकृत्य एकादशोद्देशका कृष्णलेश्यकृतयुग्मकृतयुग्मोद्देशकवदेव एकादशोद्देशकाः पठनीया इति भावः। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति।

॥पञ्चत्रिंशत्तमशतके चतुर्थमेकेन्द्रियमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥३५।४

शतक ३५ चतुर्थ एकेन्द्रिय महायुग्म शत

'टीकार्थ—'एवं काउलेस्सेहि वि सयं कण्हलेस्ससरिसं-सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' कापोतलेश्यावालों के सम्बन्ध में भी कृष्णलेश्या शतक के जैसा शतक बना लेना चाहिये। यहां कृष्णलेश्या के स्थान में कापोतलेश्यापद रखकर ११ उद्देशक बनता है। हे भदन्त! जैसा आपने यह कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

॥चतुर्थ एकेन्द्रिय महायुग्म शत समाप्त ॥३५-४॥

ચોથા એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતકનો પ્રારંભ—

'एवं काउलेस्सेहिं वि सयं कण्हलेस्समयसरिसं' 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' કાપોતલેશ્યાવાળાઓના સંબંધમાં પણ કૃષ્ણલેશ્યા શતકની જેમ શતક બનાવીને કહેવું જોઈએ અહિયાં કૃષ્ણલેશ્યાના સ્થાનમાં કાપોતલેશ્યા પદ મૂકીને ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ બનાવી લેવા. હે ભગવન્ આપે આ વિષયમાં જે કહેલ છે તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

ચોથું એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત ॥૩૫-૪॥

॥ अह ५-१२ सयाइं॥

मूलम्-भवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति ? जहा ओहियसयं तहेव। नवरं एक्कारससु वि उद्देसएसु अह भंते ! सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता भवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियत्ताए उववन्न पुव्वा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे सेसं तहेव। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥सू० १॥

पणतीसइमे सए पंचमं सयं समत्तं ॥३५-५॥

कण्हलेस्स भवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? एवं कण्हलेस्स भवसिद्धिय एगिंदिए वि सयं बितियसयं कण्हलेस्ससरिसं भाणियव्वं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३५-६॥

एवं नीललेस्स भवसिद्धिय एगिंदिएहि वि सयं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३५-७॥

एवं काउलेस्स भवसिद्धिय एगिंदिएहि वि तहेव एक्कारस उद्देसगसंजुत्तं सयं। एवं एयाणि चत्तारि भवसिद्धियसयाणि। चउसु वि सएसु सव्वे पाणा जाव उववन्नपुव्वा ? णो इणट्ठे समट्ठे। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३५-८॥

जहा भवसिद्धिएहिं चत्तारि सयाइं भणियाइं एवं अभवसिद्धिएहिं वि चत्तारि सयाणि लेस्सा संजुत्ताणि भाणियव्वाणि। सव्वे पाणा० तहेव नो इणट्ठे समट्ठे। एयाइं वारसएगिंदियमहाजुम्म सयाइं भवंति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥३५-१२॥

पणतीसइमं सयं समत्तं ॥३५॥

छाया--भवसिद्धिय कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते यथौघिकशतं तथैव ! नवरमेकादशस्वपि उद्देशकेषु अथ भदन्त ! सर्वे प्राणा यावत्सर्वे सत्त्वाः भवसिद्धिककृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियतया उत्पन्नपूर्वाः गौतम ! नायमर्थः समर्थः शेषं तथैव । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥३५ ५॥

कृष्णलेश्य भवसिद्धिककृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते एवं कृष्णलेश्य भवसिद्धिकैरपि शतं द्वितीयशत कृष्णलेश्यसदृशं भणितव्यम् तदेवं भदन्त ! तदेव भदन्त ! इति ॥३५॥६॥

एवं नीललेश्य भवसिद्धिकैकेन्द्रियैरपि शतम् । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥३५॥७॥

एवं कापोतलेश्य भवसिद्धिकैकेन्द्रियैरपि तथैव एकादशोद्देशकसंयुक्तं शतम् एवमेतानि चत्वारि भवसिद्धिकशतानि । चतुर्ष्वपि शतेषु सर्वे प्राणा यावत् उत्पन्न पूर्वाः, नायमर्थः समर्थः । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥३५॥८॥

यथा-भवसिद्धिकैश्चत्वारि शतानि भणितानि एवमभवसिद्धिकैरपि चत्वारि शतानि लेश्या संयुक्तानि भणितव्यानि । सर्वे प्राणा तथैव नायमर्थः समर्थः । एवमेतानि द्वादश एकेन्द्रियमहायुग्मशतानि भवन्ति । तदेवं भदन्त । तदेवं भदन्त इति ३५।१२॥

॥ पञ्चत्रिंशत्तमं शतकं समाप्तम् । ३५॥

टीका--'भवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य आगत्य तिर्यग्भ्यो वा आगत्य मनुष्येभ्यो वा आगत्य देवेभ्यो वा आगत्य समुत्पद्यन्ते इति पूर्ववदेव प्रश्नः, उत्तरमाह-अतिदेशद्वारेण 'जहा' इत्यादि

शतक ३५ पंचम शत से लेकर १२ वें शतक

टीकार्थ-'भवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' हे भदन्त ! भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म राशि प्रमित एकेन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा मनुष्यों में से आकर

પાંચમા શતકનો પ્રારંભ—

'भवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' હે ભગવન્ ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો ક્યા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યંચ યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા

'जहा ओहियसयं तहेव' यथा एतस्यैव शतकस्यौधिकशतं प्रथमशतं तथैव-प्रथम शतकवदेव सर्वं प्रश्नोत्तरादि ज्ञातव्यम् । औघिकशतापेक्षया यद्वैलक्षण्यं तद्दर्शयति-'नवरं' इत्यादिना-'नवरं एक्कारससु वि उद्देसएसु' नवरमेकादशस्वपि उद्देशकेषु 'अह भंते ! सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता' भदन्त ! सर्वे प्राणा यावत् सर्वे सत्त्वाः यावत्पदेन भूतजीवयोः संग्रहो भवति 'भवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियत्ताए उववन्नपुव्वा' भवसिद्धिककृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियतया उत्पन्नपूर्वाः हे भदन्त ! सर्वे प्राणजीवभूतसत्त्वाः भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रियतया किं पूर्वं समुत्पन्ना इति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'नो इणट्ठे समट्ठे' नायमर्थः समर्थः सर्वे जीवाः नोत्पन्नपूर्वा एतादृशैकेन्द्रियतयेति

के उत्पन्न होते हैं ? अथवा देवों में से आकर के उत्पन्न होते है ? इस प्रश्न का अतिदेश द्वारा उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतमस्वामी से कहते हैं-'जहा ओहियसयं तहेव' हे गौतम ! जैसा औधिक शतक में-इसी शतक के प्रथम शतक में कहा गया है-वैसा ही सब प्रश्न और उत्तर के सम्बन्ध में यहां कथन जानना चाहिये । 'नवरं एक्कारससु वि उद्देसएसु अह भंते ! सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता भवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियत्ताए उववन्नपुव्वा' परन्तु औधिक शतक की अपेक्षा जो भिन्नता यहां है वह ऐसी है-'हे भदन्त ! क्या समस्त प्राण यावत् सत्व भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय रूप से पहिले उत्पन्न हो चुके हैं ? तो इस पर प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा णो इणट्ठे समट्ठे' हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है । अर्थात् समस्त

મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નનો અતિદેશ દ્વારા ઉત્તર આપતાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'जहा ओहियसयं' હે ગૌતમ ! ઔઘિક શતકમાં એટલે કે આ શતકના પહેલા શતકમાં જે રીતે કથન કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન પ્રશ્ન અને ઉત્તરરૂપ સઘળુ કથન અહિયાં કહેવું જોઈએ. 'नवरं एक्कारससु वि उद्देसएसु अह भंते ! सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता भवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्मं एगिंदियत्ताए उववन्नपुव्वा' પરંતુ ઔઘિક શતકના કથન કરતાં આ કથનમાં જે ભિન્નપણું છે, તે એવું છે કે-'હે ભગવન્ શું સઘળા પ્રાણો યાવત્ સઘળા સત્વો ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય પણાથી પહેલાં ઉત્પન્ન થઈ ચૂકયા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे' હે ગૌતમ ! આ અર્થ બરાબર નથી. અર્થાત્ સઘળા પ્રાણુ,

भावः । 'सेसं तहेव' शेषम्-एतदतिरिक्तं तथैव शेषम् उपपातादिकम् अस्यैव शतकस्य प्रथम शतोक्तमेव ज्ञातव्यमिति भावः । 'सेव भंते ! सेवं भंते त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त इति ।

इति श्री - विश्वविख्यातजगद्वल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि - 'जैनाचार्य' पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां "श्री भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां पञ्चत्रिंशत्तमे शतके पञ्चमभेकेन्द्रियमहायुग्मशतं समाप्तम् ।३५।५।

प्राण, समस्तजीव, समस्तभूत, और समस्त सत्व इस प्रकार के एकेन्द्रिय के रूपसे पहिले उत्पन्न नहीं हुए हैं । 'सेसं तहेव' इस भिन्नता के अतिरिक्त सब कथन उपपात आदि के सम्बन्ध का विवेचन-इसी शतक के प्रथम शत में कहे गये अनुसार है । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! आपके द्वारा कहा गया यह सब सर्वथा सत्य ही है इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्रीको वन्दना की नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके पैंतीसवें शतकका पांचवा एकेन्द्रिय महायुग्म शतक समाप्त ॥३५-५॥

સઘળા જીવો, સઘળા ભૂતો, અને સઘળા સત્વો આ પ્રકારના એકેન્દ્રિય પણાથી પહેલાં ઉત્પન્ન થયા નથી. 'सेसं तहेव' આ ભિન્નપણા શિવાય બાકીનું બીજું સઘળું ઉપપાત વિગેરે સંબંધી કથનનું વિવેચન આજ શતકના પહેલા શતકમાં કહ્યા પ્રમાણે છે.

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન આપ દેવાનુપ્રિયે કહેલ આ સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે, હે ભગવન્ આપે પ્રતિપાદન કરેલ આ સઘળું કથન સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલલજી મહારાજકૃત "ભગવતીસૂત્ર"ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના પાંત્રીસમા શતકનું પાંચમું એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત ॥૩૫-૫॥

'कण्हलेस्स भवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्मएगिंदियाणं भंते !' कृष्णलेश्य भवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाः खलु भदन्त 'कओहिंतो उववज्जंति' कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य आगत्य यावद् देवेभ्यो वा आगत्य समुत्पद्यन्ते पूर्ववदेव प्रश्नः, इति पूर्ववदेवोत्तरयति-'एवं' इत्यादि, 'एवं कण्हलेस्स भवसिद्धिय एगिंदिएहि वि सयं बितिय कण्हलेस्ससरिसं भाणियव्वं' एवं कृष्णलेश्यभवसिद्धिककृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रियैरपि शतम् एतच्छतकस्यैव द्वितीय कृष्णलेश्यशतसदृशमेव भणितव्यं द्वितीय कृष्णलेश्य शते यत्-यथा कथितं तत् तथैव सर्वमिहापि ज्ञातव्यमिति। 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥

पञ्चत्रिंशत्तमे शतके षष्ठं शतं समाप्तम् ॥३५।६

टीकार्थ-'कण्हलेस्स भवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते !' हे भदन्त ! कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्म राशि प्रमित एकेन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'एवं कण्हलेस्स भवसिद्धिय एगिंदिएहिं वि बितियसयं कण्हलेस्ससरिसं भाणियव्वं' हे गौतम ! इन कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रियों के सम्बन्ध भी यह शत इसी शतक के द्वितीय कृष्णलेश्या शतक के जैसा ही जानना चाहिये। अतः द्वितीय कृष्णलेश्यावालों के सम्बन्ध में जैसा

છટ્ઠા એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મશતકનો પ્રારંભ—

'कण्हलेस्स भवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्म एगिंदियाणं भंते !' હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથીઆવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યગ્યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? કે દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'एवं कण्हलेस्स भवसिद्धिय एगिंदिएहिं वि बितियसयं कण्हलेस्ससरिसं भाणियव्व'-હે ગૌતમ ! આ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ એકેન્દ્રિયોના સંબંધમાં પણ શતક આ પાંત્રીસમા શતકના બીજા કૃષ્ણલેશ્યાશતકના કથન પ્રમાણે સમજવું બીજા કૃષ્ણલેશ્યાવાળાઓના સંબંધમાં જે પ્રમાણે ત્યાં કહેવામાં આવેલ છે. એ જ પ્રમાણેનું તે તમામ કથન અહિયાં પણ સમજવું.

'एवं नीललेस्स भवसिद्धिय एगिंदिएहि वि सयं' एवमेव नीललेश्यभवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्मैकेन्द्रियैरपि शतम् एतत् शतमपि पूर्ववदेव प्रश्नोत्तराभ्यां निरूपणीयम् । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त इति ॥

पञ्चत्रिंशत्तमे शतके सप्तमं शतं समाप्तम् ॥३५ ७॥

वहां कहा गया है वैसा ही वह सब यहां पर भी जानना चाहिये। 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! जैसा आपने यह सब कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है २ इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर के फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये। छट्ठा शत समाप्त ॥३५-६॥

टीकार्थ–'एवं नीललेस्स भवसिद्धियएगिंदएहिं वि सय' इसी प्रकार से नीललेश्यावाले भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिक जीवों के सम्बन्ध में भी शतक का निर्माण कर कथन कर लेना चाहिये। 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! आपका कथन सर्वथा सत्य ही है २। इत्यादि सब कथन पूर्व के ही जैसा है।

सातवां शत समाप्त ॥३५-७॥

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણે આ વિષયમાં કહેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપદેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥છઠ્ઠુ એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત ॥૩૫-૬॥

'एवं नीललेस्स भवसिद्धिय एगिंदिएहिं वि सय' આજ પ્રમાણે નીલલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવેના સંબંધમાં પણ શતક બનાવીને કથન કરી લેવું જોઈએ.

'सेवं भंते ! सेवं भंते त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે કથન કર્યું છે તે સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥સાતમું એકેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત ॥૩૫-૭॥

'एवं काउलेस्स भवसिद्धिय एगिंदिएहि वि तहेव एक्कारस उद्देसगसंजुत्तं सयं' एवं पूर्ववदेव कापोतलेश्य भवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियैरपि तथैव पूर्ववदेव एकादशोद्देशकसंयुक्तं शतं भवति। एते जीवा कुत उत्पद्यन्ते ? इत्यादि प्रश्नोत्तरादिकं पूर्ववदेवोहनीयम्। 'एवं एयाणि चत्तारि भवसिद्धियसयाणि' एवमेतानि चत्वारि भवसिद्धिकशतानि औधिक कृष्णनील कापोतलेश्याख्यानि चत्वारि भवन्ति 'चउसु वि सएसु' चतुर्ष्वपि शतकेषु 'सव्वे पाणा जाव उववन्नपुव्वा ? नो इणट्ठे समट्ठे' सर्वे प्राणा यावद् उत्पन्न पूर्वाः ? नायमर्थः समर्थः।

टीकार्थ–'एवं काउलेस्स भवसिद्धिय एगिंदियहिं वि तहेव एक्कारस उद्देसगसंजुत्तं सयं' इसी प्रकार से कापोतलेश्यावाले भवसिद्धिक कृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीवों के साथ भी पहिले के जैसा ११ उद्देशकों वाला शत होता है। अतः ये जीव कहां से आकर के उत्पन्न होते हैं इत्यादि प्रश्न और हे गौतम ! ये जीव तिर्यग्योनिकादिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं इत्यादि उत्तर पूर्वोक्त जैसा ही जानना चाहिये। 'एवं एयाणि चत्तारि भवसिद्धियसयाणि चउसु वि सएसु' इन औधिक, कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावाले भवसिद्धिक एकेन्द्रिय सम्बन्धी चार शतकों में 'सव्वे पाणा जाव उववन्नपुव्वा, नो इणट्ठे समट्ठे' समस्त प्राण यावत् समस्त सत्त्व पहिले उत्पन्न हो चुके हैं यह अर्थ समर्थित नहीं है ऐसा कहना चाहिये। क्यों कि ऐसे अभव्य एकेन्द्रिय जीव अनन्त हैं जो इस रूप से उत्पन्न नहीं हुए हैं।

"આઠમા એકેન્દ્રિય શતકનો આરંભ–"

'एवं काउल्लेस्स भवसिद्धियएगिंदिएहिं वि तहेव एक्कारस उद्देसग संजुत्तं सयं' આજ પ્રમાણે કાપોતલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોની સાથે પણ પહેલાં કહ્યા પ્રમાણેના ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાવાળું શતક થાય છે. તેથી 'જીવો ક્યાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? વિગેરે પ્રશ્નો અને હે ગૌતમ! તે જીવો તિર્યંચયોનિક વિગેરેમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, વિગેરે ઉત્તર પહેલા કહ્યા પ્રમાણે સમજી લેવા. 'एवं एयाणि चत्तारि भवसिद्धियसयाणि चउसु वि सएसु' ઔધિક, કૃષ્ણ, નીલ, અને કાપોત લેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવો સંબંધી ચાર શતકોમાં 'सव्वे पाणा जाव उववन्नपुव्वा, नो इणट्ठे, समट्ठे' સઘળા પ્રાણો યાવત્ સઘળા સત્વો પહેલાં

एतत्प्रकरणं सर्वत्र चतुर्ष्वपि भवसिद्धिकशतेषु योज्यम् । न सर्वे जीवाः भवसिद्धिक कृष्णनीलकापोतकृतयुग्मतया नोत्पन्नपूर्वाः अनन्तत्वात् 'सेवं भंते! सेवं भंते। त्ति तदेवं भदन्त। तदेवं भदन्त। इति॥

पञ्चत्रिशत्तमे शतकेऽष्टमं शतं समाप्तम् ॥३५।८॥

'जहा भवसिद्धिएहिं चत्तारि सयाइं भणियाइं' यथा भवसिद्धिके श्चत्वारि शतानि भणितानि 'एवं अभवसिद्धिएहि वि चत्तारि सयाणि संजुत्ताणि भाणियव्वाणि' एवमभवसिद्धिकैरपि चत्वारि शतानि औघिक कृष्णनीलकापोतलेश्या संयुक्तानि भणितव्यानि 'सव्वे पाणा० तहेव णो इणट्ठे समट्ठे' सर्वे प्राणाः तथैव,

---

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! आपका यह कथन सर्वथा सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

अष्टम शत समाप्त ॥३५-८॥

'जहा भवसिद्धिएहिं चत्तारि सयाइं भणियाइं' जिस पद्धति से भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में औधिक शतक, कृष्णलेश्या शतक, नीललेश्या शतक, और कापोतलेश्या शतक कहे गये हैं' उसी पद्धति से इन्हीं शतकों को आश्रित करके अभवसिद्धिक एकेन्द्रियजीवों के सम्बन्ध में भी चार शतक कहलेना चाहिये। इन में भी ऐसा ही

ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે. આ અર્થ બરોબર નથી. તેમ કહેવું જોઈએ. કેમકે-એવા એકેન્દ્રિય જીવો અનંત છે. જે અત્યાર સુધી આ રૂપથી ઉત્પન્ન થયા નથી.

'સેવં ભંતે! સેવં ભંતે! ત્તિ' હે ભગવન આપ દેવાનુપ્રિયનું આ વિષય સંબંધમાં કરેલ કથન સર્વથા સત્ય છે. ૨ આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યો વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥આઠમું શતક સમાપ્ત ॥૩૫-૮॥

નવમા શતકથી બારમા શતક સુધીના શતકોનું કથન

'જહા ભવસિદ્ધિએહિં ચત્તારિ સયાઇં ભણિયાઇં' જે પ્રમાણે ભવસિદ્ધિક એકેન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં ઔઘિક શતક, કૃષ્ણલેશ્યા શતક નીલલેશ્યા શતક અને કાપોતલેશ્યા શતક કહેવામાં આવેલ છે, એજ રીતે એજ શતકોના આશ્રય કરીને એકેન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં ચાર શતકો કહેવા જોઈએ.

नायमर्थः समर्थ इति वक्तव्यम् अनन्तत्वात् । एवं एयाइं बारस एगिंदिय महाजुम्म सयाइं भवंति' एवमेतानि द्वादशैकेन्द्रिय महायुग्मशतानि भवन्तीति, 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त इति ॥

इति श्री – विश्वविख्यातजगद्वल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि – 'जैनाचार्य' पूज्यश्री–घासीलालव्रतिविरचितायां 'श्री भगवतीसूत्रस्य' प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां पञ्चत्रिंशच्छतके नवमतः द्वादशान्ता शतानि समाप्तानि।३५-९-१२।

॥ पञ्चत्रिंशत्तमं शतकं समाप्तम् ॥

कथन करना चाहिये कि समस्त प्राण यावत् समस्त सत्व इनमें पहिले उत्पन्न हो चुके हैं ऐसा अर्थ समर्थित नहीं हुआ है। क्यों कि ऐसे भव्य एकेन्द्रिय जीव अनन्त हैं जो इस रूप से उत्पन्न नहीं हुए हैं। 'एवं एयाइं बारस एगिंदियमहाजुम्मसयाइं भवंति' इस प्रकार ये १२ एकेन्द्रिय महायुग्म शत होते हैं। 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! आपका यह कथन सर्वथा सत्य ही है २। इत्यादि सब गौतम के सम्बन्ध की प्रक्रिया पूर्व के जैसी ही जाननी चाहिये।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके पैंतीसवें शतक के नववें से बारहवें पर्यन्तके शतक समाप्त ॥३५-९-१२॥

॥ ३५ वां शतक समाप्त ॥

આમાં પણ એજ પ્રમાણેનું કથન કહેવું જોઈએ.–સઘળા પ્રાણ યાવત્ સઘળા સત્વો આમાં પહેલાં ઉત્પન્ન થઈ ચૂકયાં છે, એ પ્રમાણેનો અર્થ સમર્થિત થતો નથી. કેમ કે એકેન્દ્રિય જીવો અનંત છે. કે જેઓ અત્યાર સુધી આ રૂપથી ઉત્પન્ન થઈ શકયા નથી 'एवं एयाइं बारस एगिंदियमहाजुम्मसयाइं भवंति' આ પ્રમાણે ૧૨ બાર એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતક થાય છે તેમ સમજવું.

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ આપે કહેલ આ સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્ર'ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના પાંત્રીસમા શતકમાં નવમા શતકથી બારમા શતક સુધીના શતકો સમાપ્ત ॥૩૫–૯–૧૨॥

પાંત્રીસમું શતક સમાપ્ત ॥૩૫॥

॥ (छत्तीसइमं सयं) ॥
॥ (पढमं बेइंदियमहाजुम्मसयं) ॥
॥ (पढमो उद्देसो) ॥

पञ्चत्रिंशत्तमे शतके संख्यापदैरेकेन्द्रिजीवाः प्ररूपिताः अथ षट्त्रिंशत्तमे शतके तैरेव संख्यापदैः द्वीन्द्रियाः प्ररूप्यन्ते इत्येवं सम्बन्धेनायातस्य शतकस्येदमादिमं सूत्रम्-'कडजुम्म' इत्यादि ।

मूलम्-कडजुम्म कडजुम्म बेइंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति? उववाओ जहा वक्कंतीए। परिमाणं सोलस वा संखेज्जा वा उववज्जंति, असंखेज्जा वा उववज्जंति। अवहारो जहा उप्पलुद्देसए। ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं बारस जोयणाइं। एवं जहा एगिंदियमहाजुम्माणं पढमुद्देसए तहेव। नवरं तिन्नि लेस्साओ देवा न उववज्जंति सम्मदिट्ठी, वा मिच्छादिट्ठी वा, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। नाणी वा अन्नाणी वा। नो मणजोगी वयजोगी वा कायजोगी वा। ते णं कडजुम्मकडजुम्म बेंदिया कालओ केवच्चिरं होंति? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं संखेज्जं कालं। ठिई जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं बारससंवच्छराइं। आहारो नियमा छद्दिसिं। तिन्नि समुग्घाया। सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो। एवं सोलससु वि जुम्मेसु। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।

छत्तीसइमे सए पढमे बेंदिय महाजुम्मसए
पढमो उद्देसो समत्तो ॥३६-१-१॥

छाया--कृतयुग्म कृतयुग्म द्वीन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? उपपातो यथा व्युत्क्रान्तौ। परिमाणं षोडश वा संख्येया वोत्पद्यन्ते असंख्येया वोत्पद्यन्ते। अपहारो यथा उत्पलोद्देशके। अवगाहना जघन्येनांगुलस्यासंख्येयभागम् उत्कर्षेण द्वादश योजनानि। एवं यथा-एकेन्द्रियमहायुग्मानां प्रथमोद्देशके तथैव नवरं तिस्रो लेश्याः, देवा नोत्पद्यन्ते। सम्यग्दृष्टयो वा, मिथ्यादृष्टयो वा नो सम्यग् मिथ्यादृष्टयः। ज्ञानिनो वा अज्ञानिनो वा, नो मनोयोगिनो वचोयोगिनो

वा काययोगिनो वा। ते खलु भदन्त! कृतयुग्म कृतयुग्म द्वीन्द्रियाः कालतः कियच्चिरं भवन्ति? गौतम! जघन्येन एकं समयम् उत्कर्षेण संख्येयं कालम्। स्थितिर्जघन्येनैकं समयम्, उत्कर्षेण द्वादशसंवत्सरान। आहारो नियमात् षड्दिशम्। त्रयः समुद्घाताः। शेषं तथैव यावदनन्तकृत्वः। एवं षोडशस्त्वपि युग्मेषु तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति।

॥ षट्त्रिंशत्तमे शतके प्रथमे द्वीन्द्रियमहायुग्मशतके प्रथमोद्देशकः समाप्तः ३६॥

टीका—'कडजुम्मकडजुम्म बेंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति' कृतयुग्मकृतयुग्म द्वीन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो वा तिर्यग्भ्योवा मनुष्येभ्यो वा देवेभ्यो वा आगत्योत्पद्यन्ते? इति प्रश्नः, उत्तरमाह—'उववाओ जहा वक्कंतीए'

३६ वां शतक का प्रारम्भ

प्रथम दो इन्द्रिय महायुग्म शतक प्रथम उद्देशक।

३५ वें शतक में संख्यापदोंद्वारा एकेन्द्रिय जीवों की प्ररूपणा की गई है। अब इस ३६ वें शतक में उन्हीं संख्यापदोंद्वारा द्वीन्द्रिय जीवों की प्ररूपणा होती है। इसी सम्बन्धको लेकर इस ३६ वें शतक का प्रारम्भ हुआ है 'कडजुम्मकडजुम्म वेइंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति' इ.

टीकार्थ—'कडजुम्म कडजुम्म वेइंदियाणं भंते। कओ उववज्जंति' हे भदन्त! कृतयुग्मकृतयुग्म राशिप्रमित दो इन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं? क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा

છત્રીસમા શતકનો પ્રારભ—

પ્રથમ બે ઈન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતક નામનો પહેલો ઉદ્દેશો

પાંત્રીસમા શતકમાં સંખ્યાપદોદ્વારા એકેન્દ્રિય જીવોની પ્રરૂપણા કરવામાં આવી છે, હવે આ છત્રીસમા શતકમાં એજ સંખ્યાપદોદ્વારા દ્વીન્દ્રિય જીવોની પ્રરૂપણા કરવામાં આવશે આ સંબંધને લઈને આ છત્રીસમા શતકનો પ્રારંભ કરવામાં આવે છે, 'कडजुम्मकडजुम्म वेइंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति' ઈ.

ટીકાર્થ—'कडजुम्मकडजुम्म वेइंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति' હે ભગવન્ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા બે ઇન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? આ

उपपातो यथा व्युत्क्रान्तौ प्रज्ञापनायाः षष्ठे पदे तिर्यग्भ्यो वा मनुष्येभ्यो वा आगत्य समुत्पद्यन्ते इत्युत्तरम्। 'परिमाणं सोलस वा संखेज्जा वा उववज्जंति असंखेज्जा वा उववज्जंति' परिमाणं षोडश वा संख्याता वा ते सहैकोत्पद्यन्ते असंख्येया वा सहैवोत्पद्यन्ते इति। 'अवहारो जहा उप्पलुद्देसए' अपहारस्तु यथा उत्पलोद्देशके कथित स्तथैव तत एवावगन्तव्यः। एतस्या एव एकादश शतकस्य प्रथमोद्देशके। 'ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं' शरीरावगाहना द्वीन्द्रीयजीवानां जघन्या अंगुलस्यासंख्येयभागपरिमिता 'उक्कोसेण बारस-

देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं ? 'उववाओ जहा वक्कंतीए' हे गौतम! जैसा कि प्रज्ञापना के छठे व्युत्क्रान्ति पद में ऐसा कहा गया है कि ये तिर्यग्योनिकों में से आकर के अथवा मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ऐसा ही कथन यहां पर करलेना चाहिये। 'परिमाणं सोलस वा, संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति' एक समय में ये कितने उत्पन्न होते हैं? तो इस सम्बन्ध में ऐसा कहना चाहिये। कि ये एक समय में १६ अथवा संख्यात अथवा असंख्यात उत्पन्न होते हैं। 'अवहारो जहा उप्पलुद्देसए' उत्पल उद्देशक में इसी के ११ वें शतक के प्रथम उद्देशक में अपहार के सम्बन्ध में जो कथन आया हैं वही यहां पर भी समझना चाहिये। 'ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं' इन द्वीन्द्रिय जीवों की शरीरावगाहना जघन्य से अंगुल के असंख्यात वें भाग प्रमाण होती है

પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'उववाओ जहा वक्कंतीए' હે ગૌતમ! પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના વ્યુત્ક્રાન્તિપદમાં જે પ્રમાણે કહ્યું છે એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ સમજવું. અર્થાત્ વ્યુત્ક્રાંતિ પદમાં એવું કહેલ છે કે-તેઓ તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, એજ પ્રમાણેનું કથન અહિયાં પણ સમજી લેવું. 'परिमाणं सोलसवा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जति' એક સમયમાં આ કેટલા ઉત્પન્ન થાય છે? તો આ સંબંધમાં એવું કહેવું જોઈએ કે આ એક સમયમાં ૧૬ સોળ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત ઉત્પન્ન થાય છે. 'अवहारो जहा उप्पलुद्देसए' ઉત્પલ ઉદ્દેશામાં એટલે કે આ ભગવતી સૂત્રના ૧૧ અગિયારમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં આમના અપહારના સંબંધમાં કહેવામાં આવેલ છે, તે સઘળું કથન અહિયાં પણ સમજવું. 'ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं' આ બે ઇન્દ્રિય વાળા જીવોના શરીરની અવગાહના જઘન્ય આંગળના અસંખ્યાતમાં ભાગ

जोयणाइं' उत्कर्षेण तु द्वादशयोजनप्रमाणा भवन्तीति। 'एवं जहा एगिंदिय महाजुम्माणं पढमुद्देसए तहेव' एवं प्रकारेण यथा एकेन्द्रियमहायुग्मानां पञ्चत्रिंशच्छतकस्य प्रथमोद्देशके कथिता तथैवेहापि सामग्र्याऽपि ज्ञातव्या। 'नवरं तिन्निलेस्साओ देवा न उववज्जंति' नवरं प्रथमोद्देशकापेक्षया इदमेव वैलक्षण्यं यत् प्रथमोद्देशके चतस्रो लेश्याः कथिता इहतु तिस्र एव कृष्णनीलकापोताख्या ज्ञातव्याः इह च देवा नोत्पद्यन्ते, अत्र तेजोलेश्याया असद्भावात् 'सम्मद्दिट्ठी वा मिच्छादिट्ठी वा' सम्यग्दृष्टयो वा अपर्याप्तावस्थायां सास्वादन सम्यक्त्वापेक्षया, मिथ्या दृष्टयो

और 'उक्कोसेणं बारसजोयणाइं' उत्कृष्ट से १२ योजन प्रमाण होती है। 'एवं जहा एगिंदिय महाजुम्माणं पढमुद्देसए तहेव' इस प्रकार जैसा एकेन्द्रिय महायुग्मों के सम्बन्ध में ३५ वें शतक के प्रथम उद्देशक में कहा गया है वैसाही वह सब कथन यहां पर भी कहलेना चाहिये। 'नवरं तिन्नि लेस्साओ देवा न उववज्जंति' परन्तु उस प्रथम उद्देशक की अपेक्षा केवल यहां विशेषता है कि वहां पर चारलेश्याओं का होना कहा गया है और यहां तीन लेश्याएं होती हैं ऐसा कहा गया है। वहां पर देवों का उनमें एकेन्द्रिय में उत्पाद बतलाया गया है पर यहां वह नहीं होता है ऐसा कहा गया है। इसीलिये यहां तेजोलेश्या नहीं होती है। 'सम्मदिट्ठी वा मिच्छादिट्ठी वा' ये सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि होते हैं। अपर्याप्तावस्था में सास्वादन सम्यक्त्व का इनमें सद्भावपाया जाता है इस अपेक्षासे इन्हें सम्यग्दृष्टि कहा गया है। 'नो सम्मामि-

પ્રમાણની હોય છે. અને 'उक्कोसेणं वारस जोयणाइं' ઉત્કૃષ્ટથી બાર ૧૨ યોજન પ્રમાણની હોય છે. 'एवं जहा एगिंदियमहाजुम्माणं पढमुद्देसए तहेव' આ રીતે એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મોના સંબંધમાં જે પ્રમાણે પાંત્રીસમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન અહીંયાં પણ સંપૂર્ણ સમજી લેવું. 'नवरं तिन्नि लेस्साओ देवा न उववज्जंति' પરંતુ પહેલા ઉદ્દેશાના કથન કરતાં આ કથનમાં કેવળ એજ વિશેષપણું છે કે-ત્યાં લેશ્યાઓ ચાર હોવાનું કથન કરવામાં આવેલ છે, તથા અહિયાં ત્રણ લેશ્યાઓ હોય છે તેમ કહેલ છે, ત્યાં દેવોનો ઉપપાત આ એકેન્દ્રિયોમાં હોવાનું કહેલ છે. પરંતુ અહિયાં દેવોની ઉત્પત્તી થતી નથી તેમ કહેલ છે તેથી આ પ્રકરણમાં તેજોલેશ્યાનો સંભવ હોતો નથી 'सम्मदिट्ठी वा मिच्छादिट्ठी वा' આ સમય દૃષ્ટીવાળા અને મિથ્યાદૃષ્ટીવાળા હોય છે. અપર્યાપ્ત અવસ્થામાં સાસ્વાદન સમ્યક્ત્વ તેઓમાં હોય છે. તે અપેક્ષાથી તેઓને સમ્યગ્ દૃષ્ટિવાળા કહેલ

वा द्वीद्रिय जीवाः 'नो सम्मामिच्छादिट्ठी' नो सम्यग् मिथ्यादृष्टयः। 'नाणी वा अन्नाणी वा' ज्ञानिनो वा अज्ञानिनो वा भवन्ति द्वीन्द्रियाः। 'नो मणयोगी' नो मनोयोगिनो भवन्ति, 'वय जोगी वा, कायजोगी वा, वचो योगिनो वा भवन्ति काययोगिनो वा भवन्ति 'ते णं भंते! कडजुम्म कडजुम्म बेंदिया कालओ केव चिरं होंति' ते खलु भदन्त! कृतयुग्म कृतयुग्म द्वीन्द्रियाः जीवाः कालतः कियचिरं भवन्ति, इति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, गोयमा' हे गौतम! 'जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं संखेज्जं कालं' जघन्येन एकं समयम् उत्कर्षेण संख्येयं कालम्' ठिई जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं बारससंवच्छराइ' स्थिति जघन्येन एक समयप्रमाणा उत्कर्षेण तु द्वादशसंवत्सररूपा भवतीति। 'आहारो नियमं छद्दिसिं' आहारो नियमात् षड्दिशमाश्रित्य षड्दिग्भ्यः इत्यर्थः द्वीन्द्रि-

---

च्छादिट्ठी' ये मिश्रदृष्टि नहीं होते हैं। 'नाणी वा अन्नाणी वा' ये ज्ञानी अथवा अज्ञानी होते हैं। 'णो मणो जोगी' ये मनोयोगी नहीं होते हैं। 'वयजोगी कायजोगी वा' वचनयोगी और काययोगी होते हैं। 'ते णं भंते! कडजुम्म कडजुम्म बेइंदिया कालओ केवच्चिरं होंति' हे भदन्त! ये कृतयुग्म कृतयुग्म द्वीन्द्रिय जीव कितने समय तक रहते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं संखेज्जं कालं' हे गौतम! ये इस रूप में जघन्य से तो एक समय तक रहते हैं और उत्कृष्ट से संख्यात काल तक रहते हैं। 'ठिई जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं' इनकी स्थिति जघन्य से एक समय की और उत्कृष्ट से १२ वर्ष की होती

છે, 'नो सम्मामिच्छदिट्ठी' આ સમ્યગ્ મિથ્યાદૃષ્ટીવાળા હોતા નથી. એટલે કે મિશ્રદૃષ્ટીવાળા હોતા નથી. 'नाणी वा अन्नाणी वा' આ જ્ઞાની અથવા અજ્ઞાની હોય છે. 'णो मणोजोगी' આ મનોયોગવાળા હોતા નથી. 'वयजोगी कायजोगी वा' વચન યોગવાળાઅને કાય યોગવાળા હોય છે. 'तेणं भंते! कडजुम्म कडजुम्म बेइंदिया कालओ केवच्चिरं होंति' હે ભગવન્ આ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ બે ઇન્દ્રિય વાળા જીવો કાળની અપેક્ષાથી કેટલા સમય સુધી રહે છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'गोयमा! जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं संखेज्जं कालं' હે ગૌતમ! આ રૂપથી તેઓ જઘન્યથી તો એક સમય સુધી અને ઉત્કૃષ્ટથી સંખ્યાત કાળ સુધી રહે છે. 'ठिई जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं' તેઓની સ્થિતિ જઘન્યથી એક સમયની અને ઉત્કૃષ્ટથી બાર ૧૨ વર્ષની હોય છે. 'आहारो नियमं छद्दिसिं' તેઓ આહાર નિયમથી

याणां लोकमध्ये एव स्थितत्वात् षड् दिग्भ्यो आहारो जायते। 'तिन्नि समुग्घाया' त्रयः वेदना कषाय मारणान्तिकाः समुद्धाता भवन्तीति। 'सेसं तहेव जाव अणंत खुत्तो' शेषं समुद्घातातिरिक्तं सर्वं यावत् द्वीन्द्रिया असकृत् अथवा अनन्तकृत्वः उत्पन्नपूर्वाः एतत्सर्वं पञ्चत्रिंशत्तमशतकीय प्रथमोद्देशकवदेव ज्ञातव्यम्, 'एवं सोलससु वि जुम्मेसु' एवमनेनैव प्रकारेण षोडशस्वपि युग्मेषु कृतयुग्मकृतयुग्मादारभ्य कल्योज कल्योजान्त महायुग्मेष्वपि उपपातादिकं सर्वं ज्ञातव्यमिति। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त इति॥

इति श्री विश्वविख्यात–जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचक–पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यानैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक–श्रीशाहूछत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त–
'जैनाचार्य' पदभूषित — कोल्हापुरराजगुरु–
बालब्रह्मचारि–जैनाचार्य – जैनधर्मदिवाकर
पूज्य श्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री
"भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायाम् षट्त्रिंशत्तमे शतके प्रथमे
द्वीन्द्रियमहायुग्मशत प्रथमोद्देशकः
समाप्तः ।३६।१।१।

है। 'आहारो नियमं छद्दिसिं' ये आहार नियम से छहों दिशाओं से ग्रहण करते हैं। क्यों कि ये लोक के मध्य में ही स्थित रहते हैं। 'तिन्नि समुग्घाय' वेदना कषाय और मारणान्तिक ये तीन समुद्घात इन के होते हैं। 'सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो' बाकी का और सब कथन ३५ वें शतक के प्रथमोद्देशक के जैसा ही है यावत् अनन्तबार इस रूप में उत्पन्न हो चुके हैं। यहां तक का यहां कह लेना चाहिये। 'एवं सोलससु वि जुम्मेसु' इसीप्रकार से १६ युग्मों में कृतयुग्म कृतयुग्म से लेकर कल्योज कल्योज तक के महायुग्मों में भी उपपात आदि का

છએદિશાઓમાંથી ગ્રહણ કરે છે. કેમ કે તેઓ લોકની મધ્યમાંજ સ્થિત રહે છે. 'तिन्नि समुग्घाया' વેદના, કષાય, અને મારણાન્તિક આ ત્રણ સમુદ્ઘાતો તેઓને હોય છે. 'सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो' બાકીનું બીજું સઘળું કથન ૩૫ પાંત્રીસમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે સમજવું યાવત્ તેઓ અનંતવાર આ રૂપે ઉત્પન્ન થઈ ચુકલ છે, આ કથન સુધીનું કથન અહિયાં સમજવું. 'एवं सोलससु वि जुम्मेसु' આજ પ્રમાણે સોળ ૧૬ યુગ્મોમાં કૃતયુગ્મ ત્ર્યોજથી લઈને કલ્યોજ કલ્યોજ સુધીના મહાયુગ્મોમાં પણ ઉપપાત વિગેરેનું કથન સમજી લેવું.

कथन कर लेना चाहिये। 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त जैसा आपने यह कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही २। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके छतीसवें शतक का द्वीन्द्रिय महायुग्म शतक में प्रथम उद्देशक समाप्त॥३६-१-१॥

'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આ વિષયમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સત્ય જ છે આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્ર'ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના છત્રીસમા શતકના દ્વીન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતકમાં પહેલો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૩૬-૧-૧॥



॥२-११ उद्देसगा

मूलम्-पढमसमयकडजुम्मकडजुम्म बेंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति एवं जहा एगिंदिय महाजुम्माणं पढमसमय उद्देसए, दस नाणत्ताइं ताइं चेव दस इह वि। एक्कारसमं इमं नाणत्तं नो मणजोगी नो वयजोगी कायजोगी सेसं जहा बेंदियाणं चेव पढमुद्देसए। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति

एवं एयावि जहा एगिंदिय महाजुम्मेसु एक्कारस उद्देसगा तहेव भाणियव्वा। नवरं चउत्थ छट्ठ अट्ठमदसमेसु सम्मत्त नाणाणि न भवंति। जहेव एगिंदिएसु पढमो तइओ पंचमो य एक्कगमा सेसा अट्ठ एक्कगमा॥

छत्तीसइमे सए पढमं बेंदियमहाजुम्मसयं समत्तं ॥३६-१॥

छाया--प्रथमसमयकृतयुग्मकृतयुग्म द्वीन्द्रियाः खलु भदन्त कुत उत्पद्यन्ते? एवं यथा एकेन्द्रियमहायुग्मानां प्रथमसमयोद्देशके। दशनानात्वानि तान्येव दश इहापि। एकादशमिदं नानात्वम्-नो मनोयोगिनो नो वचोयोगिनः, काययोगिनः शेषं यथा द्वीन्द्रियाणामेव प्रथमोद्देशके। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति। एवमेतेऽपि यथा एकेन्द्रियमहायुग्मेषु एकादशोद्देशका स्तथैव भणितव्या। नवरं चतुर्थ षष्ठाऽष्टमदशमेषु सम्यक्त्वज्ञाने न भवतः। यथैवैकेन्द्रियेषु प्रथम स्तृतीयः श्चमश्च एकगमाः शेषा अष्टौ एकगमाः।

षट्त्रिंशत्तमे शतके प्रथमं द्वीन्द्रियमहायुग्मशतं समाप्तम् ३६।१॥

टीका--'पढमसमयकडजुम्मकडजुम्म बेंदियाणं भंते कओ उववज्जंति' प्रथम समय कृतयुग्म कृतयुग्म द्वीन्द्रियाः खलु भदन्त! जीवाः कुत उत्पद्यन्ते किं

शतक ३६ उद्देशक २-११

'पढमसमय कडजुम्म कडजुम्म बेइंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति' इत्यादि सूत्र ॥१॥

टीकार्थ-हे भदन्त! प्रथम समयोत्पन्न कृतयुग्म कृतयुग्म राशि रूप दो इन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं?

બીજા ઉદ્દેશાથી અગિયારમા સુધીના ઉદ્દેશાઓનો પ્રારંભ—

'पढमसमय कडजुम्म कडजुम्म वेंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति' ઇ.

ટીકાર્થ—હે ભગવન પ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન થયેલા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા બે ઈન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે?

नैरयिकेभ्यो यावद्देवेभ्यः ? इति प्रश्नः, उत्तरमाह–अतिदेशद्वारेण 'एवं जहा–एगिंदिय महाजुम्माणं पढमसमय उद्देसए' एवं यथा एकेन्द्रिय महायुग्मानां प्रथम समयोद्देशके कथितं तथैव प्रथमसमयद्वीन्द्रियाणामपि उपपातादिकमवगन्तव्यम् 'दसणाणत्ताइं ताइं चेव दस इह वि'। एकेन्द्रियमहायुग्मानां प्रथमोद्देशे यानि दश नानात्वानि तान्येव दशापि नानात्वानि इहापि ज्ञातव्यानि। अत्र तु 'एक्कारसमं इमं नाणत्तं' एकादशमिदं नानात्वम् अत्र प्रथमोद्देशद्वीन्द्रियस्यौघिकापेक्षया 'नो मणजोगी नो वयजोगी कायजोगी' नो मनोयोगिनः प्रथमसमयद्वीन्द्रिया

क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अतिदेश द्वारा इसका उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतमस्वामी से कहते हैं–'एवं जहा एगिंदियमहाजुम्माणं पढमसमयउद्देसए' हे गौतम! जैसा कथन प्रथम समयोत्पन्न प्रथम कृतयुग्मकृतयुग्म राशिप्रमित एकेन्द्रिय जीवों के उत्पाद आदि के सम्बन्ध में किया गया है–उसी प्रकार का कथन प्रथम समयोत्पन्न द्वीन्द्रिय जीवों के उत्पाद आदि के सम्बन्ध में भी जानना चाहिये। 'दसणाणत्ताइं ताइं चेव दस इह वि' एकेन्द्रिय महायुग्मों के प्रथम उद्देशक में जो भिन्नताएं प्रकट की गई हैं वे ही दश भिन्नताएं यहां पर पर भी प्रकट कर लेनी चाहिये। तथा यहां पर एक ११ वीं भिन्नता है जो 'नो मणजोगी नो वयजोगी कायजोगी' इस

શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા તિર્યંચોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? કે દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર અતિદેશદ્વારા આપતાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે–'एवं जहा एगिंदियमहाजुम्माणं पढमसमयउद्देसए' હે ગૌતમ! પહેલા સમયમાં ઉત્પન્ન થનારા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા એકેન્દ્રિય જીવોના ઉત્પાત વિગેરેના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું કથન કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રકારનું કથન પ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન થવાવાળા બે ઇન્દ્રિય જીવોના ઉત્પાદ વિગેરેના સંબંધમાં પણ સમજવું. જોઈએ 'दस णाणत्ताइं ताइं चेव दस इह वि' એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મોના પ્રથમ ઉદ્દેશામાં દસ પ્રકારનું ભિન્નપણું પ્રગટ કરવામાં આવેલ છે. એજ પ્રકારથી દસ રીતનું ભિન્નપણું અહિયાં પણ સમજવું તથા અહિયાં એક અગિયાર ૧૧મું ભિન્નપણું આવે છે, તે 'णो मणजोगी णो वयजोगी कायजोगी' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ કર-

नो वचोयोगिनः किन्तु काययोगिनः। 'सेसं जहा बेंदियाणं चेव पढमुद्देसए' शेषं-कथितव्यतिरिक्तं सर्वं यथा द्वीन्द्रियाणामेव प्रथमोद्देशके कथितं तथैव द्वितीयाद्येकादशान्तोद्देशकेषु ज्ञातव्यम्, 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति।

सूत्र द्वारा प्रकट की गई है कि प्रथम समयोत्पन्न दो इन्द्रियजीव मनोयोगी तो होते ही नहीं है परन्तु न वचनयोगी होने का प्रसङ्ग प्राप्त होता है-सो इसके लिये कहा गया है कि वे वचनयोगी भी नहीं होते है क्यों कि अपर्याप्तावस्था में वचनयोग नहीं होता है। केवल ये काययोगी ही होते हैं। 'सेस जहा बेइंदियाणं चेव पढमुद्देसए' इसके अतिरिक्त और सब कथन जैसा द्वीन्द्रियों का प्रथम उद्देशक में कहा है वैसा ही वह सब कथन द्वितीय से लेकर ११ वे उद्देशक तक के उद्देशकों में जानना चाहिये। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! जैसा आपने यह कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्माको भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

વામાં આવેલ છે કે-પ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન થયેલા બે ઇન્દ્રિય જીવો મનોયોગવાળા તો હોતા નથી. તથા તેઓને વચનયોગીપણાનો પ્રસંગ પણ પ્રાપ્ત થતો નથી. તે માટે કહેવામાં આવેલ છે કે-તેઓ વચનયોગી પણ હોતા નથી. કેમ કે અપર્યાપ્ત અવસ્થામાં વચનયોગ હોતો નથી. કેવળ તેઓ કાયયોગી જ હોય છે. 'सेस जहा बेइंदियाणं चेव पढमुद्देसए' આ કથન શિવાય બાકીનું સઘળું કથન જેરીતે બે ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં પહેલા ઉદ્દેશામાં કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણેનું સઘળું કથન બીજા ઉદ્દેશાથી લઈને અગીયારમા ઉદ્દેશાઓ સુધીના ઉદ્દેશાઓમાં સમજવું.

"सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ આપે આ વિષયના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું આ વિષય સંબંધમાં કહેલ સઘળુ કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા"

'एवं एएवि जहा एगिंदियमहाजुम्मेसु एक्कारस उद्देसगा तहेव भणियव्वा' एवमेतेऽपि यथा एकेन्द्रियमहायुग्मशतेषु एकादशोद्देशकाः कथिता स्तथैवेहापि तएव एकादशोद्देशकाः पञ्चत्रिंशच्छतकीय प्रथमशते वर्त्तमाना, भणितव्याः, आलापकप्रकारश्च पूर्ववदेव ऊहनीयः। 'नवरं चउत्थ छट्ठ अट्ठम दसमेसु सम्मत्त नाणाणि न भवंति' नवरमत्र चतुर्थ-षष्ठा-ष्टम-दशमेषु, तत्र चतुर्थे-चरमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मोद्देशके ४, षष्ठे प्रथम प्रथम समय कृतयुग्मकृतयुग्मोद्देशके ६, अष्टमे-प्रथम चरमसमय कृतयुग्मकृतयुग्मोद्देशते ८, दशमे-चरम चरम समय कृतयुग्मकृतयुग्मोद्देशे १०, एषु चतुर्षूद्देशकेषु सम्यक्त्वं ज्ञानं च न भवति अतस्ते न वक्तव्ये 'जहेव एगिंदिएसु पढमो तइओ पंचमो य एकगमा' यथा-एकेन्द्रियेषु पञ्चत्रिंश-

'एवं एए वि जहा एगिंदिय महाजुम्मेसु एक्कारस उद्देसगा तहेव भाणियव्वा' जिस रीति से एकेन्द्रिय महायुग्म शतों में ११ उद्देशक कहे गये हैं उसी प्रकार से ३५ वें शतक के प्रथम शत में वर्तमान वे ११ उद्देशक यहां पर भी कहलेना चाहिये। इस सम्बन्ध में आलाप प्रकार अपने आप पूर्व के जैसे बना लेना चाहिये। 'नवरं चउत्थ छट्ठ अट्ठम दसमेसु सम्मत्त नाणाणि न भवंति' परन्तु इन ११ उद्देशकों में से चरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म उद्देशक में (चतुर्थउद्देशक में) प्रथम प्रथम समय कृतयुग्म कृतयुग्म उद्देशक में (छट्टे उद्देशक में) प्रथम चरम चरम कृतयुग्म कृतयुग्म उद्देशक में (८ वें उद्देशक में) और चरम चरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म उद्देशक में (१० वें उद्देशक में) इन चार उद्देशकों में सम्यक्त्व और ज्ञान नहीं होते हैं अतः वे वहां नहीं कहना चाहिये। 'जहेव एगिंदिएसु पढमो तइओ पंचमोय

'एवं एएवि जहा एगिंदिय महाजुम्मेसु एक्कारस उद्देसगा तहेव भाणियव्वा' જે પ્રમાણે એકેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતકોમાં ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે ૩૫ પાંત્રીસમા શતકના પહેલાશતકમાં કહેલ તે ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ. આ સંબંધમાં આલાપનો પ્રકાર પહેલા કહ્યા પ્રમાણે પોતે સ્વયં બનાવીને સમજી લેવો. 'नवरं चउत्थ छठ, अट्ठम दसमेसु सम्मत्त नाणाणि न भवंति' પરંતુ આ ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓમાંથી ચરમ સમય કૃતયુગ્મ, કૃતયુગ્મ, ઉદ્દેશામાં એટલે કે ચોથા ઉદ્દેશામાં પ્રથમ પ્રથમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ઉદ્દેશામાં એટલે કે ૬ છઠ્ઠા ઉદ્દેશામાં પ્રથમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ઉદ્દેશામાં એટલે કે-૮ આઠમા ઉદ્દેશામાં અને ચરમ ચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ઉદ્દેશામાં એટલે કે ૧૦ દસમા ઉદ્દેશામાં આ ચારે ઉદ્દેશાઓમાં

समशतकेषु प्रथमः तृतीयः पञ्चमः तत्र प्रथमः, कृतयुग्मकृतयुग्मरूपः तृतीयः अप्रथमसमयकः, पञ्चमः चरमसमयकश्च एकगमाः सदृशालापकाः कथिताः तथाऽत्रापि ते सदृशालापका एव। 'सेसा अट्ठ एक्कगमा' शेषा अष्टौ द्वितीय-चतुर्थ-षष्ठ-सप्तमा-ऽष्टम नवम-दशमै-कादशरूपा उद्देशका एकगमाः-सदृशालापकाः सन्ति, तत्र-द्वितीयः प्रथमसमयकः, १, चतुर्थः चरमसमयकः २, षष्ठः प्रथम प्रथमसमयकः ३, सप्तमः प्रथमाप्रथमसमयकः ४, अष्टमः प्रथमचरमसमयकः ५,

एक्कगमा' ३५ वें शतक में प्रथम, तृतीय, और पंचम ये उद्देशक समान आलापकवाले कहे गये हैं-वैसे ही वे समान आलापवाले यहां पर भी कहे गये हैं कृतयुग्म कृतयुग्म रूप प्रथम उद्देशक है। अप्रथम समय कृतयुग्म कृतयुग्म रूप तृतीय उद्देशक कहै और चरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म रूप पांचवां उद्देशक है 'सेसा अट्ठ एक्कगमा' तथा बाकी के आठ उद्देशक-द्वितीय उद्देशक, चतुर्थ उद्देशक, षष्ठ उद्देशक, सप्तम, उद्देशक, अष्टम उद्देशक नौवां उद्देशक दसवां उद्देशक और ग्यारहवां उद्देशक ये आठ उद्देशक एक सरीखे आलापकवाले कहे गये हैं। प्रथम समय कृतयुग्म कृतयुग्म रूप द्वितीय उद्देशक है। चरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म रूप चतुर्थ उद्देशक है। प्रथम प्रथम समय कृतयुग्म कृतयुग्म रूप छट्ठा उद्देशक है। प्रथमाप्रथम समय कृतयुग्म कृतयुग्म रूप सातवां उद्देशक हैं। प्रथम चरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म रूप आठवां उद्देशक है। प्रथमा चरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म रूप ९ वां उद्देशक है। चरम

સમ્યકત્વ અને જ્ઞાન થતા નથી. તેથી ત્યાં તેનું કથન કરવું ન જોઇએ. 'जहेव एगिंदिएसु पढमो तइओ पंचमोय एक्कगमा' ૩૫ પાંત્રીસમા શતકના પહેલા, ત્રીજા અને પાંચમા આ ઉદ્દેશાઓ સરખા આલાપકોવાળા જ કહેલ છે એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ તે સમાન પ્રકારવાળા જ કહ્યા છે. કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ પહેલો ઉદ્દેશો છે, અપ્રથમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ ત્રીજો ઉદ્દેશો કહેલ છે, અને અચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ પાંચમો ઉદ્દેશો છે. તથા બાકીના આઠ ઉદ્દેશાઓ એટલે કે બીજો ઉદ્દેશો, ચોથો ઉદ્દેશો, સાતમો ઉદ્દેશો, આઠમો ઉદ્દેશો, નવમો ઉદ્દેશો, દશમો ઉદ્દેશો અને અગિયારમો ઉદ્દેશો આ આઠ ઉદ્દેશાઓ એક સરખા આલાપકોવાળા કહેલ છે. પ્રથમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ બીજો ઉદ્દેશો છે. ચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ ચોથો ઉદ્દેશો કહેલ છે. પ્રથમ પ્રથમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ છઠો ઉદ્દેશો કહેલ છે. પ્રથમ અપ્રથમ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ સાતમો ઉદ્દેશો કહેલ છે, પ્રથમ ચરમ સમય

नवमः प्रथमाऽचरमसमयकः ६, दशमः चरमचरमसमयकः ७, एकादशः चरमाचरमसमयकः ८, एते अष्टौ उद्देशकाः समानालापकाः सन्तीति भावः ॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक-श्रीशाहूछत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित-कोल्हापुरराजगुरु-
बालब्रह्मचारि — जैनाचार्य — जैनधर्मदिवाकर
-पूज्यश्री घासिलालव्रतिविरचितायां श्री "भग-
वतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायां षट्त्रिंशत्तमे शतके प्रथमं
द्वीन्द्रियमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥३६।१॥

चरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म रूप दसवां उद्देशक है और चरम चरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म रूप ग्यारहवां उद्देशक है। ये आठों उद्देशक समान आलापक वाले हैं।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके छत्तीसवें शतक का
प्रथम द्वीन्द्रिय महायुग्म शत समाप्त ॥३६-१॥

કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ આઠમો ઉદ્દેશો કહેલ છે. પ્રથમ અચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ નવમો ઉદ્દેશો કહેલ છે. ચરમ ચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ દસમો ઉદેશો કહ્યો છે. અને ચરમ અચરમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રૂપ અગીયારમો ઉદ્દેશો છે. આ આઠ ઉદ્દેશાઓ સરખા આલાપ પ્રકારવાળા છે.

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્રની
પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના છત્રીસમા શતકનું પ્રથમ,
દ્વિન્દ્રીય મહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત ॥૩૬-૧॥



॥२-४ बेंदियमहाजुम्मसयाइं॥

मूलम्–कण्हलेस्स कडजुम्मकडजुम्म बेंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति? एवं चेव। कण्हलेस्सेसु वि एक्कारस उद्देसगसंजुत्तं सयं। नवरं लेस्सा संचिट्ठणा ठिई जहा एगिंदिय कण्हलेस्साणं ॥३६–२॥

एवं नीललेस्सेहि वि सयं ।३६–३॥ एवं काउलेस्सेहि वि सयं चउत्थं समत्तं ॥३६–४॥

छत्तीसइमे सए।२।३।४। बेंदियमहाजुम्मसयाइं समत्ताइं

छाया–कृष्णलेश्य कृतयुग्म कृतयुग्म द्वीन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते?। एवमेव कृष्णलेश्येष्वपि एकादशोद्देशकसंयुक्तं शतम्। नवरं लेश्यासंस्थितिः, स्थितिर्यथा एकेन्द्रियकृष्णलेश्यानाम् ॥३–२॥

एवं नीललेश्यैरपि शतम् ॥३६–३॥ एवं कापोतलेश्यैरपि शतं चतुर्थं समाप्तम् ॥३६–४॥

षट्त्रिंशत्तमे शतके द्वितीयतृतीयचतुर्थानि द्वीन्द्रियमहायुग्मशतानि समाप्तानि ॥

टीका–'कण्हलेस्स कडजुम्मकडजुम्म वेंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति, कृष्णलेश्य कृतयुग्मकृतयुग्मद्वीन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो

शतक ३६–२–४ दो इन्द्रिय महायुग्मशत।

'कण्हलेस्स कडजुम्म कडजुम्म वेइंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति' इत्यादि सूत्र–

टीकार्थ–'कण्हलेस्स कडजुम्म कडजुम्म वेइंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति' हे भदन्त! कृष्णलेश्यावाले कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित द्वीन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं? क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा मनुष्यों में से आकर के

બીજાથી ચોથા સુધીના બેઇન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતક

'कण्हलेस्स कडजुम्म कडजुम्म वेइंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति' ઇ.

ટીકાર્થ–'कण्हलेस्स कडजुम्म कडजुम्म वेइंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति' હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા બે ઇન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા તિર્યંચ યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે?

यावद्देवेभ्यो वेति प्रश्नः। उत्तरमाह-'एवं' इत्यादि। 'एवं चेव' एवमेव एवम् एतच्छतकीय कृतयुग्मकृतयुग्म द्वीन्द्रियाख्यप्रथमशतकवदेव 'कण्हलेस्सेसु एक्कारस उद्देसग संजुत्तं सयं' कृष्णलेश्येष्वपि औधिकप्रथमसमयाप्रथमसमयाद्येकादशोद्देशकसंयुक्तं शतं भणितव्यम्। नवरं लेस्सा संचिट्ठणा ठिई जहा एगिंदिय कण्हलेस्साणं' नवर मेतच्छतकीयप्रथमशतापेक्षया इदं वैलक्षण्यं यदत्र लेश्या संस्थानं स्थितिश्च यथा एकेन्द्रियकृष्णलेश्यानां कथिता तथैव ज्ञातव्या ॥

षट्त्रिंशत्तमे शतके द्वितीयं द्वीन्द्रियमहायुग्म शतं समाप्तम् ॥३६-२॥

'एवं नीललेस्सेहि वि सयं' एवं यथा कृष्णलेश्यैरेकादशोद्देशकसंयुक्तं द्वितीयं

उत्पन्न होते हैं ? अथवा देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'एवं चेव' हे गौतम ! जैसा इस सम्बन्ध में इसी शतक में कृतयुग्म कृतयुग्म द्वीन्द्रिय नामक औधिक, प्रथम शतक में कहा गया है वैसा ही शतक कृष्णलेश्यावाले द्वीन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में भी औधिक प्रथम समय, अप्रथम समय आदि ११ उद्देशकों से युक्त यहां पर भी कहलेना चाहिये। 'नवरं लेस्सा संचिट्ठणा ठिई जहा एगिंदिय कण्हलेस्साणं' परन्तु इस शतक के प्रथम शत की अपेक्षा यहां पर ऐसी विलक्षणता है कि यहां लेश्या संचिट्ठणा स्थितिकाल और आयुष स्थिति ये कृष्णलेश्यावाले एकेन्द्रिय जीवों के जैसे ही कहे गये हैं।

द्वीतीय द्वीन्द्रिय महायुग्म शत समाप्त।३६-२।

'एवं नीललेस्सेहि वि सय' जैसा ११ उद्देशकों से युक्त शत

અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'एव चेव' હે ગૌતમ ! આ સંબંધમાં આ શતકમાં કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ દ્વીન્દ્રિય નામનું ઔધિક-પહેલું શતક કહેલ છે, એજ પ્રમાણેનું શતક કૃષ્ણલેશ્યાવાળા બે ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં પણ ઔધિક પ્રથમ સમય, અપ્રથમ સમય વિગેરે ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓવાળું શતક અહિયાં પણ સમજવું 'नवरं लेस्सा संचिट्ठणाठिई जहा एगिंदियकण्हलेस्साण' પરંતુ આ શતકમાં પહેલા શતકના કથન કરતાં એવું વિલક્ષણ પણ છે કે-અહિયાં લેશ્યા સંચિટ્ઠણા સ્થિતિકાળ અને આયુષ્ય સ્થિતિ આ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા એકેન્દ્રિય જીવોની જેમ જ કહેલ છે.

॥બીજુ દ્વીન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત ॥૩૬-૨॥

'एवं नीललेस्सेहिं वि सय' અગિયાર ઉદ્દેશાવાળું શતક કૃષ્ણલેશ્યા-

शतं निर्मितं तथैव नीलळेश्यैरपि शतं नीललेश्यापदमन्तर्भाव्य शतं निर्मातव्यम् ॥
षट्त्रिंशत्तमशतके तृतीयं द्वीन्द्रियमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥३६-३।
'एवं काउलेस्सेहि वि' एवमेव कापोतलेश्यैरपि शतं भणितव्यम्,
षट्त्रिंशत्तमे शतके चतुर्थं द्वीन्द्रियमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥३६-४॥
अह ५-१२ बेंदियमहाजुम्मसयाइं'

मूलम्-भवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्म बेंदियाणं भंते! एवं भवसिद्धियसयापि चत्तारि तेणेव पुव्व गमएणं नेयव्वा। नवरं सव्वे पाणा० णो इणट्ठे समट्ठे। सेसं तहेव ओहियसयाणि चत्तारि। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥३६-५-८॥

जहा भवसिद्धिय सयाणि चत्तारि एवं अभवसिद्धिय सयाणि चत्तारि। नवरं सम्मत्तं नाणाणि नत्थि सेसं तं चेव।

कृष्णलेश्यावालों के सम्बन्ध में कहा गया है वैसा ही शत ग्यारह उद्देशकों से युक्त नीललेश्यावाले द्विन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में भी कहलेना चाहिये। सिर्फ कृष्णलेश्यापद के स्थान में नीललेश्यापद लगाकर आलापक बना लेना चाहिये। इस प्रकार से नीललेश्यावाले द्वीन्द्रियों के सम्बन्ध में ११ उद्देशकों वाला एक तृतीय शत बन जाता है।
तृतीय शत समाप्त ॥३६-३।
'एवं काउलेस्सेहि वि सयं' इसी प्रकार से ११ उद्देशकों से युक्त कापोतलेश्यावाले द्वीन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में चतुर्थ शत बना लेना चाहिये।
चौथा महायुग्म शत समाप्त ॥३६-४॥

વાળાઓના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનુ કહેવામાં આવેલ છે એજ પ્રમાણેનું શતક અગ્યાર ઉદ્દેશાઓવાળું નીલલેશ્યવ.ળા બે ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં પણ સમજવું ફકત 'કૃષ્ણલેશ્યા એ પદના સ્થાને "નીલલેશ્યા" એ પદ લગાવીને સઘળા આલાપકો બન.વીને કહેવા જોઈએ. આ રીતે નીલલેશ્યાવાળા દ્વીન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓવાળું એક ત્રીજુ શતક બનાવીને કહી લેવું જોઈએ

॥ત્રીજુ શતક સમાપ્ત ॥૩૬-૩॥

'एवं काउलेस्से हि वि सयं' આ ઉપર બતાવેલ પ્રકારથી ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાવાળું કાપોતિકલેશ્યાવાળા દ્વીન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં ચોથું શતક બનાવી લેવું જોઈએ.

॥ચોથું શતક સમાપ્ત ૩૬-૪॥

एवं एयाणि बारस बेंदियमहाजुम्मसयाणि भवंति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥

पंचमओ बारस पज्जत्ताइं बेंदियमहाजुम्मसयाइं समत्ताइं।५-१२।

छत्तीसइमं सयं समत्तं॥३६॥

छाया—भवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्मद्वीन्द्रियाः खलु भदन्त! एवं भवसिद्धिशतान्यपि चत्वारि तेनैव पूर्वगमकेन नेतव्यानि। नवरं सर्वे प्राणाः, नायमर्थः समर्थः। शेषं तथैव औघिकशतानि चत्वारि। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति॥३६-५-८॥

यथा भवसिद्धिकशतानि चत्वारि एवमभवसिद्धिकशतानि चत्वारि भणितव्यानि। नवरं सम्यक्त्वज्ञाने न स्तः। शेषं तदेव। एतानि द्वादश द्वीन्द्रिय महायुग्मशतानि भवन्ति। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति॥

पञ्चमत आरभ्य द्वादशपर्यन्तानि द्वीन्द्रियमहायुग्मशतानि समाप्तानि॥५-१२॥

षट्त्रिंशत्तमं शतं समाप्तम्॥३६॥

टीका—'भवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्म बेंदियाणं भंते!' भवसिद्धिक कृत युग्मकृतयुग्म द्वीन्द्रियाः खलु भदन्त कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावद्देवेभ्यवेति प्रश्नः, उत्तरमाह–हे गौतम! नो नैरयिकेभ्यः' इत्यादिरूपेणोपपातविषयकं

॥शतक ३६-५-१२ दो इन्द्रिय महायुग्म शत॥

'भवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्म बेइंदियाणं भंते! 'इत्यादि सूत्र'

टीकार्थ–हे भदन्त! भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित दो इन्द्रिय जीव कहां से आकर के उत्पन्न होते हैं? क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? हे गौतम! ये नैर

પાંચમા શતકથી આઠમા સુધીના મહાયુગ્મ શતકોનું કથન

'भवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्मबेइंदियाणं भंते!' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા બે ઇન્દ્રિય જીવો ક્યાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા દેવોમાંથી આવીને

पूर्ववदेवोत्तरम् एवं परिमाणादिकमपि प्रथमशतवदेव ज्ञातव्यम् एतदभिप्रायेणै-वाह–'एव' इत्यादि 'एवं भवसिद्धियसया वि चत्तारि तेणेव पुव्वगमएणं नेयव्वा' एवं भवसिद्धिकशतान्यपि चत्वारि पूर्वगमकेन ज्ञातव्यानि, यथा कृत-युग्मकृतयुग्मद्वीन्द्रियस्य चत्वारि शतानि औधिक कृष्णलेश्य नीललेश्य कापोत-लेश्याख्यानि कथितानि तथैव भवसिद्धिकद्वीन्द्रियाणामपि चत्वारि औधिक कृष्णनीलकापोतलेश्याख्यानि वक्तव्यानि सर्वत्र शतेषु पूर्ववदेव एकादश एकादशो-द्देशका अपि वक्तव्याः। 'नवरं सव्वे पाणा० णो इणट्ठे समट्ठे' नवरं सर्वे प्राणाः० नायमर्थः समर्थः सर्वे प्राणा यावत् सर्वे सत्त्वाः भवसिद्धिककृतयुग्मकृतयुग्मद्वीन्द्रि-यतया समुत्पन्नपूर्वा इति प्रश्नस्य नायमर्थः समर्थः इत्युत्तरम्। अत्र सर्वे प्राणभूत जीव सत्त्वा भवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्म द्वीन्द्रियतया पूर्वं नोत्पन्ना आसन् अतोऽत्र 'असइं अदुवा अनंतखुत्तो' इति पाठो न वाच्य इति। 'सेसं तहेव' शेषं

यिकों में से आकर के उत्पन्न नहीं होते हैं इत्यादि रूप से उपपात विषयक उत्तर पहिले कहे गये जैसा ही जानना चाहिये।

'एवं भवसिद्धिय सया वि चत्तारि तेणेव पुव्वगमएणं नेयव्वा' जिस प्रकार से कृतयुग्म कृतयुग्म द्वीन्द्रिय जीव के औधिक शत, कृष्णलेश्य शत, नीललेश्य शत, और कापोतलेश्य शत ये चार शतक कहे गये हैं उसी प्रकार से भवसिद्धिक द्वीन्द्रिय जीवों के भी ये ही चार शत कहलेना चाहिये सर्वत्र शतों में पूर्व के जैसे ११–११ उद्देशक वक्तव्य कहे गये हैं। 'नवरं सव्वे पाणा० णो इणट्ठे समट्ठे' परन्तु इन उद्देशकों में 'समस्त प्राण यावत् समस्त सत्व अनन्तवार भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म द्वीन्द्रिय रूप से जन्म धारण कर चुके हैं' ऐसा पाठ

ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે હે ગૌતમ ! તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થતા નથી. વિગેરે પ્રકારથી ઉપપાતના સંબંધમાં પહેલા કહ્યા પ્રમાણેનો ઉત્તર સમજી લેવો.

'एवं भवसिद्धियसया वि चत्तारि तेणेव पुव्वगमएणं नेयव्वा' જે પ્રમાણે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ બે ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં ઔધિક શતક, કૃષ્ણલેશ્યા શતક, નીલલેશ્યા શતક અને કાપોતલેશ્યા શતક આ ચાર શતકો કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે ભવસિદ્ધિક દ્વીન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં પણ આજ પ્રમાણેના ચાર શતકો કહેવા જોઇએ બધા જ શતકોમાં પહેલા કહ્યા અનુસાર ૧૧–૧૧ અગિયાર અગિયાર ઉદ્દેશાઓ કહેવાનું કહેલ છે. 'नवरं सव्वे पाणा० नो इणट्ठे समट्ठे' પરંતુ સઘળા પ્રાણો યાવત્ સઘળા સત્વો અનંતવાર ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ દ્વીન્દ્રિય પણાથી જન્મ લઇ ચુકેલ

नवरमित्यादिना यत् कथितं तदतिरिक्तं पूर्ववदेव ज्ञातव्यम् 'ओहिय सयाणि चत्तारि' औघिक शतयुक्तानि चत्वारि भवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्म-भवसिद्धिक कृष्णलेश्य-भवसिद्धिक नीललेश्य-भवसिद्धिक कापोतलेश्याख्यानि ज्ञातव्यानि। 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥

षट्त्रिंशत्तमे शतके पञ्चमादारभ्याष्टमपर्यन्तानि
द्वीन्द्रिय महायुग्मशतानि समाप्तानि ॥३६-५-८॥

समर्थित नहीं हुआ है। इसलिये यहां 'असइं अदुवा अनंतखुत्तो' ऐसा पाठ वाच्य नहीं बतलाया गया है। 'सेसं तहेव' इस भिन्नता कथन से अतिरिक्त और सब कथन पूर्व के जैसा ही है ऐसा जानना चाहिये। 'ओहियसयाणि चत्तारि' भवसिद्धिक दो इन्द्रिय जीवों के औघिक शतक युक्त ४ शत इस प्रकार से हैं-भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म १, भवसिद्धिक कृष्णलेश्या शत २, भवसिद्धिक नीललेश्या शत ३ और भवसिद्धिक कापोतलेश्या शत ४। 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! जैसा आपने यह कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है २। ऐसा कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तपसे आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

पांचवें से आठ वें महायुग्म शत समाप्त ॥३६-५-८॥

છે, એ પ્રમાણેનો પાઠ સમર્થિત થયેલ નથી. તેથી અહિયાં 'असइं अदुवा अणंतखुत्तो' આ પ્રમાણેનો પાઠ કહેવાનું કહેલ છે. 'सेसं तहेव' આ અલગ પ્રકારના કથન શિવાયનું બીજું સઘળું કથન પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે જ છે, તેમ સમજવું. 'ओहिय सयाणि चत्तारि' ભવસિદ્ધિક બે ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના ઔઘિક શતક યુક્ત ચાર ૪ શતકો આ પ્રમાણે છે.-ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ૧ ભવસિદ્ધિક કૃષ્ણલેશ્યા શતક ૨ ભવસિદ્ધિક નીલલેશ્યાશતક ૩ અને ભવસિદ્ધિક કાપોતલેશ્યા શતક ૪

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ આપે આ વિષયમાં જે પ્રમાણે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥પાંચમાથી આઠમા સુધીના ચાર શતકો સમાપ્ત ૩૬-૫-૮॥

'जहा भवसिद्धियसयाणि चत्तारि एवं अभवसिद्धियसयाणि चत्तारि भाणियव्वाणि' यथा भवसिद्धिकशतानि चत्वारि कथितानि एवमेव अभवसिद्धिकशतान्यपि चत्वारि, तत्रैकमभवसिद्धिकशतमौघिकं१, द्वीतीयं कृष्णलेश्या भवसिद्धिकशतं२, तृतीयं नीललेश्या भवसिद्धिकशतं३, चतुर्थं कापोतलेश्याऽभवसिद्धिकशतं४, तदेवमभवसिद्धिकस्य चत्वारि शतानि भवन्ति। प्रत्येकस्मिन् शते एकादश एकादशोद्देशका अपि वक्तव्याः। 'नवरं सम्मत्त नाणानि नत्थि' नवरं केवलमेतस्मिन् शतचतुष्टये सम्यक्त्वं ज्ञानं च न भवति 'सेसं तं चेव' शेषं नवरमित्यादिना यत् कथितं तदतिरिक्तं सर्वमुपपातपरिमाणादिकं सर्वत्र तदेव पञ्चत्रिंशच्छतकीय प्रथमशतकथितमेवेति, 'एवं एयाणि बारस बेंदियमहाजुम्म-

टीकार्थ-'जहा भवसिद्धिकसयाणि चत्तारि एवं अभवसिद्धियसयाणि चत्तारि भाणियव्वाणि' जिस रीति से भवसिद्धिक द्वीन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में चार शत कहे गये हैं उसी रीति से अभवसिद्धिक द्वीन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में भी चार शत कह लेना चाहिये। जैसे प्रथम औधिक अभवसिद्धिक शत, द्वितीय कृष्णलेश्या अभवसिद्धिक शत, तृतीय नीललेश्या अभवसिद्धिक शत और चतुर्थ कापोतलेश्या अभवसिद्धिक शत। इन प्रत्येक शत में ११-११उद्देशक हैं। 'नवरं सम्मत्त नाणानि नत्थि' इन चार शतों में विशेषता केवल इतनी सी है कि इनमें अभवसिद्धिक दो इन्द्रिय होने के कारण सम्यक्त्व एवं ज्ञान नहीं कहे गये हैं-क्यों कि दोनों यहां नहीं होते हैं। इस अन्तर के अतिरिक्त और सब उपपात परिमाण आदि का कथन सर्वत्र ३५ वें शतक

'जहा भवसिद्धियसयाणि चत्तारि एवं अभवसिद्धियसयाणि' चत्तारि भाणियव्वाणि' જે પ્રમાણે ભવસિદ્ધિક દ્વીન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં ચાર શતકો કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે અભવસિદ્ધિક દ્વીન્દ્રિયોના સંબંધમાં પણ ચાર શતકો કહેવા જોઈએ. જેમ કે-પ્રથમ ઔઘિક અભવસિદ્ધિક શતક દ્વિતીય કૃષ્ણલેશ્યા ભવસિદ્ધિક શતક, તૃતીય નીલલેશ્યા ભવસિદ્ધિક શતક, અને ચોથુ કાપોતલેશ્યા ભવસિદ્ધિક શતક આ દરેક શતકમાં ૧૧-૧૧અગિયાર ઉદેશાઓ કહ્યા છે. 'नवरं सम्मत्त नाणाणि नत्थि'આ ચાર શતકોમાં કેવળ એજ વિશેષપણુ છે કે-તેઓમાં અભવસિદ્ધિક બે ઇન્દ્રિય હોવાને કારણે સમ્યકત્વ અને જ્ઞાન કહેલ નથી. કેમ કે એ બન્ને અહીં હોતા નથી આ જુદાપણા શિવાય બાકીના ઉપપાત, પરિમાણ વિગેરે સંબંધી સઘળું કથન બધે ઠેકાણે પાંત્રીસમા શતકના પહેલા શતકના કથન પ્રમાણે જ છે. 'एवं

सयाणि भवंति' एवमुपरोक्तप्रकारेण एतानि द्वीन्द्रियमहायुग्मशतानि द्वादशसंख्यकानि भवन्ति औघिक द्वीन्द्रियशतमेकम्१, कृष्णनीलकापोतलेश्यात्रययुक्तं शतत्रयमिति चत्वारि४, भवसिद्धिकस्य चतुष्टयम्८, अभवसिद्धिकस्य चतुष्टयम्१२, सङ्कलनया द्वादशशतानि कृतयुग्मकृतयुग्मद्वीन्द्रियाणाम्। एवं कृतयुग्मत्र्योज द्वीन्द्रियशत आरभ्य यावत् कल्योजकल्योजद्वीन्द्रीयाणां विषयेऽपि ज्ञातव्यम्। एवमेतानि द्वादशशतकानि भवन्ति' प्रत्येकं शतके एकादशैकादश उद्देशा सन्ति ततः द्वादश १२ एकादशैर्गुणने द्वात्रिंशदधिकमेकं शतम् (१३२) उद्देशकानामस्मिन् षट्त्रिंशशतके भवन्तीति। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त!

के प्रथम शतक के जैसा ही हैं। 'एवं एयाणि बारस बेइंदियमहाजुम्म सयाणि भवंति' यहां ये द्वीन्द्रिय महायुग्म शत १२ हैं। जैसे-औधिक द्वीन्द्रिय शत १ कृष्ण नील कापोतलेश्या त्रय युक्त तीन शत ३ भवसिद्धिक द्वीन्द्रिय शत ४ अभवसिद्धिक द्वीन्द्रिय शत ४ इस प्रकार से कृतयुग्मकृतयुग्म राशिप्रमित द्वीन्द्रिय जीवों के १२ महायुग्मशत हैं।

इसी प्रकार से कृतयुग्मकृतयुग्मत्र्योज राशिप्रमित द्वीन्द्रिय से लेकर कल्योज कल्योज राशिप्रमित द्वीन्द्रियों के संबंध में भी समझ लेना चाहिये। इस प्रकार ये १२ बारह शतक होते हैं। प्रत्येक शतक में ग्यारह ग्यारह उद्देशक हैं अतः (१२×११=१३२) बारह को ग्यारह से गुणा करने पर एकसो बत्तीस उद्देशक इसी छत्तीस वें शतक में हैं।

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! अभवसिद्धिक द्वीन्द्रिय जीवों के उपपातादि के सम्बन्ध में जो आप देवानुप्रियने कहा है वह सब

एयाणि बारस बेइंदिय महाजुम्मसयाणि भवंति' અહિયાં આ રીતે ૧૨ બાર દ્વીન્દ્રિય સંબંધી મહાયુગ્મ શતકો ઔધિક દ્વીન્દ્રિય શતક ૧ કૃષ્ણલેશ્યા નીલલેશ્યા અને કાપોતલેશ્યા સંબંધી ત્રણ શતક, ભવસિદ્ધિક દ્વીન્દ્રિયના ૪ ચાર શતક અભવસિદ્ધિક બે ઈન્દ્રિય સંબંધી ૪ શતક આ રીતે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા દ્વીન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં ૧૨ મહાયુગ્મ શતકો કહ્યા છે.

આજ પ્રમાણે કૃતયુગ્મ ત્ર્યોજ રાશિવાળા દ્વીન્દ્રિય જીવોથી લઈને કલ્યોજ કલ્યોજ રાશિવાળા દ્વીન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં પણ ૧૨-૧૨ બાર શતકો હોય છે. તેથી સોળે મહા શતકોમાં બધા મળીને કુલ ૧૩૨ એકસો બત્રીસ શતકો થઈ જાય છે. ૧૨- માં ૧૧-૧૧ ઉદ્દેશાઓ છે. તેથી સઘળા ઉદ્દેશાઓની કુલ સંખ્યા ૨૧૧૨ એકવીસસો બારની થઈ જાય છે.

'સેવં ભંતે! સેવં ભંતે! ત્તિ' હે ભગવન્ અભવસિદ્ધિક દ્વીન્દ્રિય જીવોના ઉપપાત વિગેરેના સંબંધમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે તે સઘળું કથન

तदेवं भदन्त ! इति हे भदन्त ! अभवसिद्धिक द्वीन्द्रियाणामुपपातादि विषये यत्क-थितं तत्सर्वं सत्यमिति कथयित्वा यावत्यथासुखं विहरतीति ॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित —कोल्हापुरराजगुरु-बाल-
ब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्य श्री
घासीलालव्रतिविरचितायां श्री "भग
वतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां-
व्याख्यायां अष्टमतः द्वादशान्तानि
द्वीन्द्रिय महायुग्मशतानि
समाप्तानि ॥३६-५-१२॥

॥ षट्त्रिंशत्तमं शतकं समाप्तम् ॥३६॥

सर्वथा सत्य ही है। इस प्रकार कहकर गौतमस्वामीने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तपसे आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

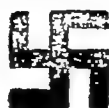
जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहारजकृत
"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके छतीसवें शतक में
आठवें से बारहवें पर्यन्तके द्वीन्द्रिय महायुग्म
शत समाप्त ॥३६-५-१२॥

॥ ३६ वां शतक समाप्त ॥

સર્વથા સત્ય જ છે, હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન આપ્ત હોવાથી સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્રની' પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના છત્રીસમાં શતકના આઠમાથી બારમા સુધીના
દ્વીન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતકો સમાપ્ત ॥૩૬-૫-૧૨॥

॥છત્રીસમું શતક સમાપ્ત॥



अह सत्ततीसइमं तेंदियसयं

मूलम्—कडजुम्मकडजुम्म तेंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति? एवं तेंदिएसु वि बारससया कायव्वा बेंदियसयसरिसा। नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइं। ठिई जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं एगूणवन्नं राइंदियाइं। सेसं तहेव। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति

सत्ततीसइमे सए तेंदियमहाजुम्मसया समत्ता ॥३७-१२॥

सत्ततीसइमं तेंदियसयं समत्तं ॥३७॥

छाया—कृतयुग्मकृतयुग्म त्रीन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते एवं त्रीन्द्रियेष्वपि द्वादशशतानि कर्त्तव्यानि द्वीन्द्रियशतसदृशानि नवरमवगाहना जघन्येनांगुलस्यासंख्येयभागम् उत्कर्षेण तिस्रो गव्यूतयः। स्थितिर्जघन्येनैकं समयम् उत्कर्षेण एकोनपञ्चाशद्रात्रिदिनानि। शेषं तथैव। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति।

सप्तत्रिंशत्तमे शते त्रीन्द्रिय महायुग्मशतानि समाप्तानि ॥३७-१२॥

॥ सप्तत्रिंशत्तमं शतकं समाप्तम् ॥३७॥

टीका—'कडजुम्मकडजुम्म तेंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति' कृतयुग्मकृतयुग्मत्रीन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते यावद्देवेभ्य आगत्य उत्पद्यन्ते इति प्रश्नः, उत्तरमाह अतिदेशद्वारेण—'एवं'

॥३७ वां शतक त्रीन्द्रिय शत॥

टीकार्थ—'कडजुम्म कडजुम्म तेइंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति, हे भदन्त! कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित त्रीन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं? क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा

સાડત્રીસમા શતકનો પ્રારંભ—

કડજુમ્મ કડજુમ્મ તેઇંદિયાણં ભંતે! કઓ ઉવવજ્જંતિ' ઇત્યાદિ

હે ભગવન્ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા ત્રણ ઇન્દ્રિયવાળા જીવો ક્યા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા દેવોમાંથી આવીને

इत्यादि, 'एवं तेंदिएसु वि बारससया कायव्वा बेंदिय सयसरिसा' एवं त्रीन्द्रियेष्वपि द्वादशशतानि अभूवन् तथैवात्रापि द्वादशशतानि कर्त्तव्यानि प्रथममौघिकं शतं द्वितीयं कृष्णलेशाघटितं तृतीयं नीललेश्याघटितम् चतुर्थं कापोतलेश्याघटितं भवसिद्धिकस्यैवमेव चत्वारि शतानि एवमेव अभवसिद्धिकस्य चत्वारि शतानि सर्वशतेषु एकादश एकादशोद्देशकाः प्रथमसमयादिका अपि वक्तव्याः। द्वीन्द्रियशतकापेक्षया यद् वैलक्षण्यं तद्दर्शयति-'नवरं' इत्यादि, 'नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं' नवरं-केवलं शरीरावगाहना त्रीन्द्रियाणां जघन्येनांगुलस्यासंख्येयभागप्रमाणा 'उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइं' उत्कर्षेण तिस्रो गव्यू-

---

देवों में से आकर के उत्पन्न होते है ? 'एवं तेइंदिएसु वि बारस सया कायव्वा बेंदिय सयसरिसा' इस प्रश्न का उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतमस्वामी कहतेहैं-'हे गौतम ! जिस रीति से द्वीन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में १२ शत प्रकट किये गये हैं, इसी रीति से यहां पर भी १२ शत प्रकट कर लेना चाहिये। जैसे प्रथम औघिक शतक द्वितीय कृष्णलेश्या घटित शत, तृतीय नीललेश्या घटित शत, चतुर्थ कापोतलेश्या घटित शत, भवसिद्धिक त्रीन्द्रिय जीव के भी ऐसे ही चार शत और अभवसिद्धिक त्रीन्द्रिय के भी चार शत इन सब शतों में ११-११ उद्देशक भी कहना चाहिये। परन्तु द्वीन्द्रिय शतक की अपेक्षा जो इस शतक मे भिन्नता है वह ऐसी है कि 'नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभाग' यहां जघन्य अवगाहना तो अंगुल के असंख्यात वें भाग प्रमाण है और 'उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइं'

ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે 'एवं तेइंदिएसु वि बारससया कायव्वा बेइंदियसयसरिसा' હે ગૌતમ ! દ્વીન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં જે પ્રમાણે બાર શતકો બતાવ્યા છે, એજ પ્રમાણેના બાર શતકો અહિયાં આ ત્રણ ઇંદ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં પણ કહેવા જોઈએ. જેમ કે—પહેલું ઔઘિક શતક બીજું કૃષ્ણલેશ્યાવાળા યુક્ત, ત્રીજું નીલલેશ્યા યુક્ત, શતક, ચોથું કાપોતિલેશ્યા યુક્ત, શતક ભવસિદ્ધિક ત્રણ ઇન્દ્રિયવાળા જીવોને પણ એજ પ્રમાણના ચાર શતકો તથા અભવસિદ્ધિક ત્રણ ઇન્દ્રિયવાળા જીવોને પણ ચાર શતકો એ રીતે આ બારે શતકોમાં ૧૧-૧૧ અગિયાર અગિયાર ઉદ્દેશાઓ પણ કહેવા જોઈએ પરંતુ બે ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના શતક કરતાં આ શતકોમાં જે જુદાપણું આવે છે, તે એવું છે કે-'नवरं ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभाग' અહિયાં જઘન્ય અવગાહના તો આંગળના અસંખ્યાતમા ભાગ પ્રમાણની છે, અને 'उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइं'

तयः । 'ठिई जहन्नेणं एक्कं समयं' स्थितिर्जघन्येन एकसमयप्रमाणा 'उक्कोसेणं एगूणवन्नं राइंदियाइं' उत्कर्षेण एकोनपञ्चाशत् रात्रि दिवानि, 'सेसं तहेव' शेषमवगाहनास्थित्यतिरिक्तं सर्वं द्वीन्द्रियशतवदेव त्रीन्द्रियशतकेऽपि ज्ञातव्यम् 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥

॥ इति त्रीन्द्रियमहायुग्मशतानि समाप्तानि ॥३७-१२॥

॥ सप्तत्रिंशत्तमं शतकं समाप्तम् ॥३७॥

उत्कृष्ट अवगाहना तीन कोश की है । 'ठिई जहन्नेणं एक्कं समयं' एगूणवन्नं राइंदियाइं' तथा स्थिति जघन्य से एक समय की है और उत्कृष्ट ४९ दिन रातकी है । 'सेसं तहेव' अवगाहना एवं स्थिति से अतिरिक्त और उपपात आदि का कथन द्वीन्द्रिय शतक के जैसा ही है 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! जैसा आपने यह कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

॥ ३७ वां शतक समाप्त ॥

ઉત્કૃષ્ટથી અવગાહના ત્રણ ગાઉની છે, 'ठिई जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं एगूणवन्नं राइंदियाइं' તથા સ્થિતિ જઘન્યથી એક સમયની છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી ૪૯ ઓગણપચાસ દિવસ રાતની કહેલ છે. 'सेसं तहेव' અવગાહના અને સ્થિતિના કથન શિવાય બાકીના ઉપપાત વિગેરે સંબંધી કથન બે ઈન્દ્રિયવાળા જીવોના શતકમાં કહ્યા પ્રમાણે જ છે.

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ ત્રણ ઈન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું કથન કર્યું છે તે સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ॥સૂ૦૧॥

॥સાડત્રીસમું શતક સમાપ્ત ॥૩૭॥

'अह अट्ठतीसइमं चउरिंदियसयं'

मूलम्-चउरिंदिएहि वि एवं चेव बारससया कायव्वा, नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं। ठिई जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा, सेसं जहा बेंदियाणं। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति

चउरिंदियमहाजुम्मसया समत्ता ॥३८-१२॥

अट्ठतीसइमं सयं समत्तं ॥३८॥

छाया--चतुरिन्द्रियैरपि एवमेव द्वादशशतानि कर्त्तव्यानि, नवरम्-अवगाहना जघन्येन अंगुलस्य असंख्येयभागम्, उत्कर्षेण चतस्रो गव्यूतयः स्थितिर्जघन्येन एकं समयम्, उत्कर्षेण षण्मासाः, शेषं यथा द्वीन्द्रियाणाम्, तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति॥

चतुरिन्द्रिय महायुग्मशतानि समाप्तानि ॥३८-१२॥

अष्टत्रिंशत्तमं शतं समाप्तम् ॥३८॥

टीका-'चउरिंदिएहि वि एवंचेव बारससया कायव्वा' पञ्चत्रिंशत्तमशतगतैकेन्द्रिय शतवत् चतुरिन्द्रियैरपि एवमेव द्वादशशतानि कर्त्तव्यानि। औघिक कृतयुग्मकृतयुग्म चतुरिन्द्रियादारभ्य चरमाचरम कृतयुग्मकृतयुग्म चतुरिन्द्रियपर्यन्तमेकादशोद्देशकगर्भितानि प्रत्येकम् औघिक-कृष्णनीलकापोतलेश्या घटितानि चत्वारि शतानि

शतक ३८ वां चौइन्द्रिय शत

टीकार्थ-चौइन्द्रिय जीवों के साथ भी ३५ वें शतक में वर्णित एकेन्द्रिय शतके जैसे १२ शतक कर्तव्य हैं। औधिक कृतयुग्मकृतयुग्म चौइन्द्रिय से लेकर चरमाचरम कृतयुग्म कृतयुग्म चौइन्द्रिय तक के ११ उद्देशकों से युक्त औधिक शत, कृष्णलेश्या घटित शतक, नील

॥આડત્રીસમા શતકનો આરંભ—

ટીકાર્થ—ચાર ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં પણ ૩૫ પાંત્રીસમા શતકમાં વર્ણવેલ એકેન્દ્રિય જીવોના શતકો પ્રમાણેના ૧૨ બાર શતકો કહેવા જોઈએ. ઔધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મથી લઈને ચરમ-અચરમ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ચાર ઇન્દ્રિયવાળા સુધીમાં ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓથી યુક્ત ઔધિક શતક, કૃષ્ણલેશ્યવાળું શતક, નીલલેશ્યાથી યુક્ત, શતક, કાપોતિક લેશ્યાયુક્ત શતક

एवमेव भवसिद्धिकघटितानि चत्वारि शतानि, तथा अभवसिद्धिकघटितानि चत्वारि शतानि चेति, सर्वसंकलितानि चतुरिन्द्रियैरपि कर्त्तव्यानीतिभावः। अत्र यद् वैलक्षण्यं तदाह–'नवरं' इत्यादि, नवरं केवलं विशेषस्त्वयम् यत् एषां चतुरिन्द्रियाणाम् 'ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं' अवगाहना जघन्येनांगुलस्यासंख्येयभागप्रमिता, 'उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं' उत्कर्षेण चतस्रो गव्यूतयः, इति चतुर्गव्यूति प्रमिता चतुःक्रोशप्रमाणा उत्कर्षेण तादृशचतुरिन्द्रियाणामवगाहना प्रोक्तेति भावः। एषां 'ठिई जहन्नेणं एक्कं समयं' स्थितिर्जघन्येन एकं समयं यावत्, 'उक्कोसेणं छम्मासा' उत्कर्षेण स्थितिः षण्मासान् यावत् एतदेव वैलक्षण्यम्, 'सेसं जहा बेइंदियाणं' शेषम्–अवगाहना स्थित्यतिरिक्तं सर्वं

लेश्या घटित शत, कापोतलेश्या घटित शत, भवसिद्धिक घटित चार शतक और अभवसिद्धिक घटित चार शतक इस प्रकार से सब शतक १२ हो जाते हैं। ये १२ शत चौइन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में हैं। पूर्व शतक की अपेक्षा जो यहां अन्तर आता है उसे 'ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं' इस सूत्रपाठ द्वारा प्रकट किया गया है–यहां जघन्य से अवगाहना–शरीर की ऊंचाई अंगुल के असंख्यात वें भाग प्रमाण है और उत्कृष्ट से चार कोश की है। 'एवं ठिई जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासा' इनकी जघन्य स्थिति एक समय की और उत्कृष्ट स्थिति छहमास की है। 'सेसं जहा बेइंदियाणं' अवगाहना और स्थिति के अतिरिक्त और सब कथन जैसा दो इन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में कहा

ભવસિદ્ધિકવાળા ચાર શતકો અને અભવસિદ્ધિવાળા ચાર શતકો આ રીતે સઘળા મળીને ૧૨ બાર શતકો થઇ જાય છે. આ બાર શતકો ચાર ઇન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં કહેલ છે. પહેલા શતકના કથન કરતાં આ કથનમાં જે અંતર આવે છે, તે 'ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं, उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं' આ સૂત્રદ્વારા પ્રગટ કરેલ છે. અહિયાં જઘન્યથી અવગાહના શરીરની ઉંચાઈ આંગળના અસંખ્યાતમા ભાગ પ્રમાણુવાળી છે. અને ઉત્કૃષ્ટ અવગાહના ચારગાઉની કહેલ છે. 'एसो ठिई जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासा' આમની જઘન્ય સ્થિતિ એક સમયની અને ઉત્કૃષ્ટથી સ્થિતિ છ માસની કહી છે. 'सेसं जहा बेइंदियाणं' અવગાહના અને સ્થિતિના કથન કરતાં બાકીનું સઘળું કથન બે ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, તેજ પ્રમાણેનું છે.

यथा द्वीन्द्रियाणां तथा वाच्यम् । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥

इति श्री-विश्वविख्यातजगद्वल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि – 'जैनाचार्य' पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां "श्री भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां चतुरिन्द्रियमहायुग्मशतानि समाप्तानि ॥३८-१२॥
अष्टत्रिंशत्तमशतं समाप्तम् ॥३८॥

है वैसा ही है 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त आपका यह सब कथन सर्वथा सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके अडतीसवें शतक का चौइन्द्रिय महायुग्म शत समाप्त ॥३८-१२॥
३८ वां शतक समाप्त

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ' હે ભગવન્ આપનું આ વિષય સંબંધમાં કહેલ સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે કહેલ સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત "ભગવતીસૂત્ર"ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના આડત્રીસમા શતકનું
મહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત ॥૩૮-૧૨॥
॥આડત્રીસમું શતક સમાપ્ત॥



'अह एगूणयालीसइमं सयं'

मूलम्–कडजुम्मकडजुम्म असन्नि पंचिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति जहा बेंदियाणं तहेव असन्निसु वि बारससया कायव्वा। नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं। संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं पुव्वकोडीपुहुत्तं। ठिई जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं पुव्वकोडी, सेसं जहा बेंदियाणं। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

असन्निपंचिंदियमहाजुम्मसया समत्ता ॥३९-१२॥

एगूणयालीसइमं सयं समत्तं ॥३९॥

छाया–कृतयुग्मकृतयुग्मासंज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? यथा द्वीन्द्रियाणां तथैवासंज्ञिष्वपि द्वादशशतानि कर्त्तव्यानि। नवरमवगाहना जघन्येनांगुलस्यासंख्येयभागम्, उत्कर्षेण योजनसहस्रम्, संस्थितिः कायस्थितिर्जघन्येनैकं समयम् उत्कर्षेण पूर्वकोटिः। शेषं यथा द्वीन्द्रियाणाम्। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥

असंज्ञिपञ्चेन्द्रिय महायुग्मशतानि समाप्तानि ॥३९-१२॥

एकोनचत्वारिंशत्तमं शतकं समाप्तम् ॥३९॥

टीका–'कडजुम्मकडजुम्म असन्नि पंचिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति' कृतयुग्मकृतयुग्माऽसंज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? इति प्रश्नः,

---

३९ वां शतक

'कडजुम्म कडजुम्म असन्नि पंचिंदियाणं भंते ॥इत्यादि सूत्र १॥

टीकार्थ–हे भदन्त! कृतयुग्मकृतयुग्म राशिप्रमित असंज्ञीपञ्चेन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं? क्या वे नैरयिकों से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते

ઓગણુચાલીસમા શતકનો પ્રારંભ—

'કડજુમ્મ કડજુમ્મ અસન્નિ પંચિંદિયાણં ભંતે! ઇત્યાદિ

હે ભગવન્ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિ પ્રમાણુવાળા અસંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા તિર્યંચોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા

उत्तरमाह अतिदेशद्वारेण-'जहा' इत्यादि, 'जहा बेइंदियाणं तहेव असन्निसु वि बारससया कायव्वा' यथा द्वीन्द्रियाणां द्वादशशतानि कथितानि तथैवासंज्ञिष्वपि द्वादशशतानि कर्त्तव्यानि। प्रत्येकस्मिन् शते एकादश एकादशोद्देशका, अपि वक्तव्याः। द्वीन्द्रियापेक्षया यद्वैलक्षण्यं तदाह-'नवरं' इत्यादिना 'नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं' नवरं केवलं वैलक्षण्यं द्वीन्द्रियशतापेक्षया इदमेव यत् शरीरावगाहना चतुरिन्द्रियाणां जघन्येनांगुलस्यासंख्येयभागप्रमाणा 'उक्कोसेणं जोयणसहस्सं' उत्कर्षेण योजनसहस्रम्। 'संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं' 'संचिट्ठणा' कालतः कायस्थिति र्जघन्येन एकसमयप्रमाणा

हैं? अथवा देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? इस प्रश्न के उत्तर के सम्बन्ध में प्रभुश्री गौतमस्वामी से कहते हैं-'जहा बेइंदियाणं तहेव असन्निसु वि-बारस सया कायव्वा' हे गौतम! जिस रीति से द्वीन्द्रिय जीवों के १२ शतक कहे गये हैं उसी रीति से असंज्ञी जीवों के भी १२ शतक कहलेना चाहिये और प्रत्येक शतक में ११-११ उद्देशक भी कहना चाहिये। द्वीन्द्रिय की अपेक्षा जो यहां अन्तर है वह 'नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं' इस सूत्रद्वारा किया गया है-यहां जघन्य अवगाहना अंगुल के असंख्यात वें भाग प्रमाण है और उत्कृष्ट अवगाहना एक हजार योजन की है। 'संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं' काल की अपेक्षा कायस्थिति रूप संचि-

मनुष्योमांथी आवीने उत्पन्न थाय छे? अथवा देवोमांथी आवीने उत्पन्न थाय छे? आ प्रश्नना उत्तरमां प्रभुश्री गौतमस्वामीने कहे छे के-"जहा बेइंदियाणं तहेव असन्निसु वि बारससया कायव्वा' हे गौतम! जे प्रमाणे बे इन्द्रियवाळा जीवोना संबंधमां १२ बार शतको कहेल छे. एज प्रमाणे आ असंज्ञी जीवोना संबंधमां पण १२ शतको कही लेवा अने दरेक शतकमां ११-११ अगियार-अगियार उद्देशाओ पण कही लेवा. बे इन्द्रियवाळा जीवो करतां आ कथनमां जे अंतर छे, ते 'नवरं ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं जोयणसहस्सं' आ सूत्रपाठ द्वारा प्रगट करवामां आवेल छे. अहियां जघन्य अवगाहना आंगळना असंख्यात भाग प्रमाण छे अने उत्कृष्ट एकहजार योजननी कहेल छे. 'संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं' काळनी अपेक्षाथी कायस्थिति रूप संचिट्ठणु जघन्य एक समय

समयानन्तरं संख्यान्तरसद्भावात् 'उक्कोसेणं पुव्वकोडीपुहुत्तं' उत्कर्षेण पूर्वकोटि पृथक्त्वं द्वि पूर्वकोटित आरभ्य नव पूर्वकोटिपर्यन्तमित्यर्थः। 'ठिई जहन्नेणं एक्कं समयं' स्थितिरायुषः जघन्येनैकसमयप्रमाणा समयानन्तरं भवान्तरसद्भावात् 'उक्कोसेणं पुव्वकोडी, उत्कर्षेण पूर्वकोटिः। 'सेसं जहा बेंदियाणं' शेषम् अवगाहना स्थित्यतिरिक्तं यथा द्वीन्द्रियाणां कथितं तथैव ज्ञेयमिति। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति॥

इत्यसंज्ञिपञ्चेन्द्रियमहायुग्मशतानि समाप्तानि ॥३९-१२॥

। एकोनचत्वारिंशत्तमं शतकं समाप्तम् ॥३९॥

हुणा जघन्य से एक समय प्रमाण और 'उक्कोसेणं' उत्कृष्ट से 'पुव्वकोडी पुहुत्तं' पूर्वकोटि पृथक्त्व है। अर्थात् दो पूर्वकोटि से लेकर नौ पूर्वकोटि तक है। 'ठिई जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं पुव्वकोडी' इनके आयुष्य की स्थिति जघन्य से एक समय की और उत्कृष्ट से एक पूर्व कोटि की है। 'सेसं जहा बेइंदियाणं' इस प्रकार अवगाहना और स्थिति इन दोनों भिन्नताओं के अतिरिक्त और सब कथन द्वीन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में जैसा कहा गया है वैसा ही है 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! आपने जो यह कथन किया है। वह सब सर्वथा सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

॥असंज्ञि पञ्चेन्द्रिय शत समाप्त ३९ वां शतक समाप्त॥

પ્રમાણ અને ઉત્કૃષ્ટથી 'पुव्वकोडी पुहुत्तं' પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ છે. અર્થાત્ બે પૂર્વકોટીથી લઈને નવ પૂર્વકોટિ સુધી કહેલ છે. 'ठिई जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं पुव्वकोडी' સ્થિતિ આયુષ્ય કર્મની સ્થિતિ જઘન્યથી એક સમયની અને ઉત્કૃષ્ટ એક પૂર્વકોટિની છે. 'सेसं जहा बेइंदियाणं' આ રીતે અવગાહના અને સ્થિતિ આ બે વિષયના ભિન્નપણા શિવાય બાકીનું સઘળુ કથન બે ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું છે, તેમ સમજવું.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ આપે આ વિષયમાં જે કથન કર્યું છે, તે સર્વથા સત્ય છે. ૨ આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તપ અને સંયમથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

અસંજ્ઞિ પચેન્દ્રિય શતક સમાપ્ત

॥ઓગણચાળીસમું શતક સમાપ્ત ॥૩૯॥

'अह चत्तालीसइमं सय'

मूलम्--कडजुम्मकडजुम्म सन्निपंचिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति? उववाओ चउसु वि गइसु। संखेज्ज वासाउय असंखेज्जवासाउय पज्जत्तअपज्जत्तएसु य न कओ वि पडिसेहो जाव अणुत्तरविमाणत्ति। परिमाणं अवहारो ओगाहणा य जहा असन्निपंचिंदियाणं। वेयणिज्जवज्जाणं सत्तण्हं कम्मपगडीणं बंधगा वा, अबंधगा वा, वेयणिज्जस्स बंधगा नो अबंधगा। मोहणिज्जस्स वेद्गा वा, अवेद्गा वा, सेसाणं सत्तण्ह वि वेद्गा नो अवेद्गा। सयावेयगा वा असायावेयगा वा मोहणिज्जस्स उदई वा अणुदई वा सेसाणं सत्तण्ह वि उदई नो अणुदई। नामस्स गोयस्स य उदीरगा नो अणुदीरगा वा, कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा, सम्मदिट्ठी वा मिच्छादिट्ठी वा, सम्मामिच्छादिट्ठी वा। णाणी वा अन्नाणी वा, मणजोगी वयजोगी कायजोगी, उवओगो वन्नमाई, उसासगा वा नीसासगा वा, आहारगा य जहा एगिंदियाणं, विरयाय अविरयाय विरयाविरयाय। सकिरिया नो अकिरिया। ते णं भंते! जीवा किं सत्तविहबंधगा वा अट्ठविहबंधगा वा, छव्विह बंधगा वा एगविहबधगा वा? गोयमा! सत्तविहबंधगा वा, जाव एगविहबंधगा वा। ते णं भंते! जीवा किं आहारसन्नोवउत्ता वा जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता वा नो सन्नोवउत्ता वा, गोयमा! आहारसन्नोवउत्ता जाव नो सन्नोवउत्ता वा। सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा कोहकसाई वा जाव लोभकसाई वा अकसाइ वा। इत्थिवेयगा वा पुरिसवेयगा वा नपुंसगवेयगा वा अवेद्गा वा। इत्थिवेयबंधगा वा, पुरिसवेयबंधगा वा, णपुंसगवेयबंधगा

वा अबंधगा वा। सन्नी नो असन्नी। सइंदिया णो अणिंदिया। संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं सातिरेगं। आहारो तहेव जाव नियमं छद्दिसिं। ठिई जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। छ समुग्घाया आदिल्लगा। मारणांतियसमुग्घाएणं समोहया वि मरंति असमोहया वि मरंति। उव्वट्टणा जहेव उववाओ न कत्थइ पडिसेहो जाव अणुत्तरविमाणत्ति। अह भंते! सव्व पाणा जाव अणंतखुत्तो। एवं सोलससु वि जुम्मेसु भाणियव्वं जाव अणंतखुत्तो। नवरं परिमाणं जहा बेंदियाणं सेसं तहेव। सेवं भंते! २ त्ति॥४०-१॥

पढमसमय कडजुम्मकडजुम्म सन्निपंचिदियाणं भंते! कओ उववज्जंति? उववाओ, परिमाणं, आहारो, जहा एएसिं चेव पढमुद्देसए। ओगाहणा बंधो वेदो वेयणा उदयी उदीरगा य जहा बेंदियाणं पढमसमयाणं तहेव। कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा। सेसं जहा बेंदियाणं पढमसयाणं जाव अणंतखुत्तो। नवरं इत्थिवेयगा वा पुरिसवेयगा वा नपुंसगवेयगा वा, सन्नी णो असन्नीणो सेसं तहेव। एवं सोलससु वि जुम्मेसु परिमाणं तहेव सव्वं। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥४० १॥

एवं एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा तहेव। पढमो तइओ पंचमो य सरिसगमा, सेसा अट्ठ वि सरिसगमा। चउत्थ छट्ठ अट्ठमदसमेसु नत्थि विसेसो कायव्वो। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥

चत्तालीसइमे सए पढमं सन्निपंचिदिय
महाजुम्मसयं समत्तं ॥४०-१२॥

छाया--कृतयुग्म कृतयुग्म संज्ञि पञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? उपपातश्चतसृभ्योऽपि गतिभ्यः। संख्येयवर्षायुष्कासंख्येयवर्षायुष्क पर्याप्तापर्याप्तकेभ्यश्च न कुतोऽपि प्रतिषेधो यावदनुत्तरविमानमिति, परिमाणमपहारोऽवगाहना च यथा असंज्ञिपञ्चेन्द्रियाणाम्। वेदनीयवर्जानां सप्तानां कर्मप्रकृतीनां बन्धका वा अबन्धका वा वेदनीयस्य बन्धका नो अबन्धकाः। मोहनीयस्य वेदका वा अवेदका वा शेषाणां सप्तानामपि वेदका नो अवेदकाः। सातावेदका वा असातावेदका वा मोहनीयस्योदयिनो वा, अनुदयिनो वा, शेषाणां सप्तानामपि उदयिनो नो अनुदयिनः। नाम्नो गोत्रस्य चोदीरका नो अनुदीरकाः शेषाणां षण्णामपि उदीरका अनुदीरका वा। कृष्णलेश्या वा यावत् शुक्ललेश्या वा। सम्यग्दृष्टयो वा, मिथ्या दृष्टयो वा, सम्यग्मिथ्यादृष्टयो वा। ज्ञानिनो वा अज्ञानिनो वा, मोनोयोगिनो वा वचोयोगिनः काययोगिनः। उपयोगो वर्णादिः, उच्छ्वासका वा निश्शासका वा आहारकाश्च यथा एकेन्द्रियाणाम्। विरताश्चाविरताश्च विरताविरताश्च। सक्रिया नो अक्रिया। ते खलु भदन्त! जीवाः किं सप्तविधबन्धका वा अष्टविधबन्धका वा षड्विधबन्धका वा ? गौतम ! सप्तविधबन्धका वा यावत् एकविधबन्धका वा। ते खलु भदन्त ! जीवाः किमाहारसञ्ज्ञोपयुक्ता यावत् परिग्रह सञ्ज्ञोपयुक्ता वा नो सञ्ज्ञोपयुक्ता वा, गौतम ! आहारसंज्ञोपयुक्ता यावत् नो संज्ञोपयुक्ता वा सर्वत्र पृच्छा भणितव्या, क्रोधकषायिनो वा यावत् लोभषायिनो वा अकषायिनो वा। स्त्रीवेदका वा पुरुषवेदका वा नपुंसकवेदका वा अवेदका वा। स्त्रीवेदबन्धका पुरुषवेदबन्धका वा नपुंसकवेदबन्धका वा अबन्धका वा। संज्ञिनः, नो असंज्ञिनः। सेन्द्रिया नो अनिन्द्रियाः। संस्थितिः जघन्येनैकं समयमुत्कर्षेण सागरोपमशतपृथक्त्वं सातिरेकम्। आहारस्तथैव यावत् नियमतः षड्दिशि। स्थितिर्जघन्येनैकं समयमुत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि। षट् समुद्घाता आदिकाः मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहता अपि म्रियन्ते। असमवहता अपि म्रियन्ते। उद्वर्तना यथैवोपपातः न कुत्रापि प्रतिषेधो यावदनुत्तरविमानमिति। अथ भदन्त ! सर्वे प्राणा यावदनन्त कृत्वः। एवं षोडशस्वपि युग्मेषु भणितव्यं यावदनन्तकृत्वः नवरं परिमाणं यथा द्वीन्द्रियाणाम् शेषं तथैव। तदेव भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति। ४० १।

प्रथमसमय कृतयुग्म कृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते उपपातः परिमाणमाहारो यथा एतेषामेव प्रथमोद्देशके। अवगाहना बन्धो वेदो वेदना उदयिन उदीरकाश्च यथा द्वीन्द्रियाणां प्रथमसमयानाम्। तथैव कृष्णलेश्या वा यावत् शुक्ललेश्या वा। शेषं यथा द्वीन्द्रियाणां यावदनन्तकृत्वः। नवरं स्त्रीवेदका वा पुरुषवेदका वा नपूंसकवेदका वा संज्ञिनोऽसंज्ञिनः। शेषं तथैव। एवं षोडशस्वपि युग्मेषु परिमाणं तथैव सर्वम् तदेवं भदन्त !-तदेवं भदन्त ! इति।

एवमत्रापि एकादशोद्देशकास्तथैव प्रथमस्तृतीयः पञ्चमश्च सदृशगमाः शेषा अष्टावपि सदृशगमाः। चतुर्थषष्ठाष्टमदशमेषु नास्ति विशेषः कर्त्तव्यः। तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त इति ॥

॥चत्वारिंशत्तमे शतके प्रथमं संज्ञिपञ्चेन्द्रियमहायुग्मशतम्, समाप्तम्॥४०-१-१२॥

टीकार्थ-कडजुम्मकडजुम्म सन्निपंचिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' कृतयुग्म कृतयुग्म संज्ञि पञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत आगत्योत्पद्यन्ते इत्यादि, उत्तरमाह- उववाओ' इत्यादि, 'उववाओ चउसु वि गईसु' उपपातश्चतसृभ्योऽपि गतिभ्यः, अत्र सूत्रे पञ्चम्यर्थे सप्तमी, हे गौतम! त इमे कृ०युग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रियजीवाः नरकेभ्योऽपि आगत्य एतादृशपञ्चेन्द्रियतया उत्पद्यन्ते तिर्यग्भ्यो वा आगत्य मनुष्येभ्यो वा आगत्य देवेभ्यो वा आगत्य समुत्पद्यन्ते इति भावः। 'संखेज्जवासाउय असंज्जवासाउय पज्जत्त अपज्जत्तएसु न कओ वि पडिसेहो जाव अणुत्तर-

शतक ४०

'कडजुम्मकडजुम्म सन्नि पंचिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' इ.

टीकार्थ-हे भदन्त ! कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव किस स्थानविशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? 'उववाओ चउसु वि गइसु' हे गौतम ! कृतयुग्मकृतयुग्म राशि प्रमाण संज्ञिपञ्चेन्द्रियजीव नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते है। तिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं। मनुष्यों में से भी आकर के उत्पन्न होते हैं और देवों में से आकर के

ચાળીસમા શતકનો પ્રારંભ—

'कडजुम्म कडजुम्मसन्निपंचिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जति' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-હે ભગવન્ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજ્ઞીપંચેન્દ્રિયજીવ કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? કે તિર્યંચ યોનિકોમાથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'उववाओ चउसु वि गइसु' હે ગૌતમ! કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવો નૈરયિકોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે તિર્યંચ યોનિકોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે, મનુષ્યોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે અને દેવોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે. 'सखेज्जवासाउय. असंखेज्जवासाउय पज्जत्त अपज्जत्तएसु य न कओ वि पडिसेहो जाव अणुत्तरविमाणत्ति'

विमाण त्ति' संख्येयवर्षायुष्कासंख्येयवर्षायुष्क पर्याप्तकापर्याप्तकेभ्यो न कुतोऽपि प्रतिषेधो यावदनुत्तरविमानादिति, संख्यातवर्षायुष्केभ्योऽपि आगत्या संख्यातवर्षायुष्केभ्योऽपि आगत्य पर्याप्तकेभ्यो वा आगत्य अपर्याप्तकेभ्यो वा आगत्य संज्ञिपञ्चेन्द्रियतया जीवानां समुत्पादः संभवति न कुतोऽपि निषेधो विद्यते, नरकादारभ्य यावदनुत्तरविमानपर्यन्तस्थानेभ्यः समुत्पद्यन्ते संज्ञिपञ्चेन्द्रिया इति भावः। 'परिमाणं अवहारो ओगाहणा य जहा-असन्निपंचिंदियाणं' परिमाणमपहारोऽवगाहनाच यथा असंज्ञिपञ्चेन्द्रियाणां कथिता स्तथैव परिमाणं तावत् षोडश वा संख्याता वा असंख्याता वा। शरीरावगाहना जघन्येनांगुलस्यासंख्येयभागप्रमाणा उत्कर्षेण योजनसहस्रप्रमाणा च भवतीति, 'वेयणिज्जवज्जाणं सत्तण्हं

भी उत्पन्न होते हैं। 'संखेज्जवासाउय असंखेज्जवासाउय पज्जत्त अपज्जत्तएसु न कओवि पडिसेहो जाव अणुत्तरविमाणत्ति' संख्यात वर्षकी आयुवालों में से आकर के उत्पन्न होते हैं असंख्यातवर्ष की आयुवालों में से भी आकर के उत्पन्न होते हैं। पर्याप्तों में से भी आकर के उत्पन्न होते हैं अपर्याप्तों में से भी आकर के भी उत्पन्न होते हैं। संज्ञि पंचेन्द्रिय जीव रूप से उत्पाद होने का निषेध किसी भी अवस्था से नहीं है। नरक से यावत् अनुत्तरविमान तक के जीव संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव से उत्पन्न होते हैं।

'परिमाणं अवहारो ओगाहणा य जहा असन्नि पंचिंदियाणं' परिमाण, अपहार और अवगाहना के सम्बन्ध में जैसा असंज्ञि पञ्चेन्द्रियों के सम्बन्ध में कहा गया है वैसा ही जानना चाहिये। असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों के परिमाण सोलह, संख्यात अथवा असंख्यात

સંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળાઓમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે. અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળાઓમાંથી પણ આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, પર્યાપ્તોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે. અપર્યાપ્તોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે. સંજ્ઞીપંચેન્દ્રિયજીવપણાથી ઉત્પાદ થવાનો કોઈપણ અવસ્થામાં નિષેધ નથી. નરકથી લઈને યાવત્ અનુત્તર વિમાન સુધીના જીવો દેવ સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવ પણાથી ઉત્પન્ન થાય છે.

'परिमाणं अवहारो ओगाहणा य जहा असन्निपंचिंदियाणं' પરિમાણ, અપહાર અને અવગાહના ના સંબંધમાં જે રીતે અસંજ્ઞી પંચેન્દ્રિયોના સંબંધમાં કહેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન સમજવું. આ રીતના કથનથી. વ્યુત્ક્રાંતિપદ ના અતિદેશથી અસંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવોના પરિમાણ કથન પ્રમાણે સંજ્ઞી જીવોનું પરિમાણ સોળ, અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત આવે છે. તેના શરીરની

पगडीणं बंधगा वा अबंधगा वा' वेदनीयवर्जानां सप्तानां कर्मप्रकृतिनां बन्धका वा अबंधका वा वेदनीयस्य कर्मणो बन्धप्रकारं विशेषरूपेण कथयिष्यतीति कृत्वा वेदनीयवर्जानामित्युक्तम्, तत्र चोपशांतमोहाः क्षीणमोहाश्च सप्तानां प्रकृतीनामबन्धका एव, तदतिरिक्तास्तु यथासम्भवं बन्धका भवन्ति। 'वेयणिज्जस्स बंधगा नो अबंधगा' वेदनीयस्य कर्म्मणः सर्वे बन्धका एव भवन्ति न तु अबन्धकाः केवलित्वप्राप्तिपूर्वं सर्वेऽपि संज्ञिपञ्चेन्द्रिया इति, ते च वेदनीयकर्मणो बन्धका एव भवन्ति नत्वबन्धका इति भावः। 'मोहणिज्जस्स वेदगा वा अवेदगा वा, मोहनीयस्य कर्मणः संज्ञिपञ्चेन्द्रिया वेदका वा अवेदका वा भवन्ति, तत्र मोहनीयस्य कर्मणो वेदकाः सूक्ष्म संपरायान्ता भवन्ति, अवेदकास्तु उपशान्तमोहाः क्षीणमोहा

आता है। इनके शरीर की अवगाहना जघन्य से अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण आती है और उत्कृष्ट से एक हजार योजन प्रमाण आती है। 'वेयणिज्जवज्जाणं सत्तण्हं पगडीणं बंधगावा अबंधगावा' वेदनीय कर्म को छोड़कर ये सात प्रकार की कर्मप्रकृतियों के बन्धक होते हैं और अबन्धक भी होते हैं। इन में उपशान्त मोहवाले जीव और क्षीण मोहवाले जीव सात कर्मप्रकृतियों के अबन्धक ही होते हैं बाकी के जीव यथासंभव बन्धक होते हैं। 'वेयणिज्जस्स बंधगा नो अबंधगा' केवलिपद की प्राप्ति के पहिले समस्त संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव वेदनीय कर्म के बन्धक ही होते हैं। अबन्धक नहीं होते हैं। 'मोहणिज्जस्स वेदगा वा अवेदगा वा' संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव मोहनीय कर्म के वेदक भी होते हैं और अवेदक भी होते हैं। सूक्ष्म संपराय तक के समस्त संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव मोहनीय कर्म के वेदक ही होते हैं। उपशान्त गुणस्थानवर्ती

અવગાહના જઘન્યથી આંગળના અસંખ્યાતમા ભાગ પ્રમાણુ આવે છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી એક હજાર યોજન પ્રમાણુ આવે છે. 'वेयणिज्जवज्जाणं सत्तण्हं पगडीणं बंधगा वा अबंधगा वा' વેદનીય કર્મને છોડીને તેઓ સાત કર્મપ્રકૃતિયોનો બંધ કરે છે, અને અબંધક પણુ હોય છે. તેમાં ઉપશાંત મોહવાળા જીવો અને ક્ષીણુ મોહવાળા જીવો સાત કર્મપ્રકૃતિયોના અબંધક હોય છે. બાકીના જીવો યથાસંભવ બંધક હોય છે. 'वेयणिज्जस्स बंधगा नो अबंधगा' કેવલિ પદની પ્રાપ્તિ પહેલાં સઘળા સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવો વેદનીય કર્મના બન્ધક જ હોય છે. અબધક હોતા નથી. 'मोहणिज्जस्स वेदगा वा अवेदगा वा' સંજ્ઞી પચેન્દ્રિય જીવો મોહનીય કર્મના વેદક પણુ હોય છે, અને અવેદક પણુ હોય છે, સૂક્ષ્મ સંપરાય સુધીના સઘળા સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવો મોહનીય

श्च भवन्तीति। 'सेसाणं सत्तण्हवि वेदगा नो अवेदगा' शेषाणां सप्तानामपि कर्मणां मोहनीयव्यतिरिक्तानां संज्ञिपञ्चेन्द्रिया वेदका एव भवन्ति नो अवेदका भवन्ति, उपशान्तमपि मोहादयः संज्ञिपञ्चेन्द्रियास्ते मोहनीयव्यतिरिक्तानां सप्तानामपि कर्मणां वेदका एव नो अवेदका भवन्ति। यद्यपि केवलिनश्चतसृणामघाति कर्मप्रकृतिनां वेदका भवन्ति तथापि केवलिन इन्द्रियव्यापारातीतत्वात् न पञ्चेन्द्रिया इति कथ्यन्ते, इति भावः 'सायावेयगा वा असायावेयगा वा' संज्ञिपञ्चेन्द्रिय जीवाः सातावेदका अपि असातावेदका अपि संज्ञिपञ्चेन्द्रियाणामेवं विधस्वरूपत्वादिति। 'मोहणिज्जस्स उदई वा अणुदई वा, संज्ञि पञ्चेन्द्रिया जीवा मोहनीयकर्मप्रकृते उदयिनो वा अनुदयिनो वा भवन्ति, तत्र सूक्ष्मसंपरायान्ताः

संज्ञीपञ्चेन्द्रिय जीव और क्षीण मोहवाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव मोहनीय कर्म के वेदक नहीं होते हैं 'सेसाणं सत्तण्ह वि वेदगा नो अवेदगा' बाकी के सात कर्मों के मोहनीय के सिवाय सातकर्मों के ये संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव वेदक होते हैं अवेदक नहीं होता हैं। यद्यपि केवली जीव चार अघातिया कर्मप्रकृतियों के वेदक होते हैं तब भी केवली इन्द्रिय व्यापारातीत होने से पञ्चेन्द्रिय नहीं कहलाते हैं। 'सायावेदगा वा असाया वेदगा वा' ये संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव साता के भी वेदक होते हैं और असाता के भी वेदक होते हैं। क्यों कि संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों का ऐसा ही स्वभाव होता है। 'मोहणिज्जस्स उदई वा अणुदई वा' ये संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव मोहनीय कर्मप्रकृति के उदयवाले भी होते हैं और अनुदयवाले भी होते हैं। इनमें जो संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव सूक्ष्म

કર્મનું વેદન કરનારા જ હોય છે. ઉપશાંત ગુણ સ્થાનમાં રહેવાવાળા સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવે અને ક્ષીણ મોહવાળા સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવે મોહનીય કર્મનું વેદન કરવાવાળા હોતા નથી. 'सेसाणं सत्तण्ह वि वेदगा नो अवेदगा બાકીના સાત કર્મપ્રકૃતિયોનુ મોહનીય કર્મ શિવાયની આ સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવો વેદન કરવાવાળા હોય છે. જો કે કેવલી જીવો ચાર આઘાતિયા કર્મપ્રકૃતિયોનું વેદન કરવાવાળા હોય છે. તો પણ તે કેવલી ઇન્દ્રિયનાવ્યાપારથી પર હોવાથી પંચેન્દ્રિય કહેવાતા નથી. 'सायावेदगावा असाया वेदगा वा' સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવો શાતાનું પણ વેદન કરવાળા હોય છે, અને અસાતાનું પણ વેદન કરવાળા હોય છે. કેમ કે-સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવોનો સ્વભાવ જ એવો હોય છે,'मोहणिज्जस्स उदई वा अणुदई वा આ સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવો મોહનીય કર્મપ્રકૃતિના ઉદયવાળા પણ હોય છે, અને અનુદયવાળા પણ હોય છે. આમાં

संज्ञिपञ्चेन्द्रियाः मोहनीयकर्मप्रकृतेरुदयिनो भवन्ति, उपशान्तमोहादयस्तु संज्ञिपञ्चेन्द्रिया अनुदयिनो भवन्तीति। 'सेसाणं सत्तण्ह वि उदई नो अणुदई' शेषाणां मोहनीयव्यतिरिक्तानां सर्वेषामपि कर्मणां संज्ञिपञ्चेन्द्रिया उदयिन एव भवन्ति न तु अनुदयिनो भवन्तीति। वेदनोदययोः को भेदः ? इत्याह—वेदकत्वमनुक्रमेणोदीरणाकरणेन च उदयागतानां कर्मणामनुभवनम्, उदयस्तु अनुक्रमागतानां कर्मप्रकृतीनामनुभवनमिति भेद इति। 'नामस्स गोयस्स य उदीरगा नो अणुदीरगा' नाम्नो गोत्रस्य च कर्मणः सर्वे संज्ञिपञ्चेन्द्रिया अकषायान्ता उदीरका एव भवन्ति न तु अनुदीरका भवन्तीति। 'सेसाणं छण्ह वि उदीरगा वा अणुदीरगा वा' शेषाणां नामगोत्रवर्जानां षण्णामपि ज्ञानावरणीयादीनां यथासंभवम् उदीरका

संपराय गुणस्थान तक के हैं वे तो मोहनीय कर्म के उदयवाले होते हैं और उपशान्त मोहवाले हैं अथवा क्षीणमोहवाले हैं वे मोहनीय कर्म के उदयवाले नहीं होते हैं। 'सेसाणं सत्तण्ह वि उदई नो अनुदई' मोहनीय कर्म के सिवाय शेष सात कर्मप्रकृतियों के ये उदयवाले ही होते हैं अनुदयवाले नहीं होते। वेदना और उदय में क्या अन्तर है ? उत्तर—अनुक्रम से अथवा उदीरणा करण से उदय में आये हुए कर्मों का अनुभव करना सो वेदकता है और अनुक्रम से उदय में आये हुए कर्मों का अनुभवन करना वह उदय है। 'नामस्स गोयस्स य उदीरगा णो अणुदीरगा' ये समस्त संज्ञीपञ्चेन्द्रिय जीव नामकर्म के और गोत्र कर्म के क्षीणमोह गुणस्थान तक उदीरक होते हैं अनुदीरक नहीं होते हैं। 'सेसाणं छण्ह वि उदीरगा वा अणुदीरगा वा' बाकी के छह कर्मप्रकृतियों के नामगोत्र को छोड़कर ज्ञानावरणीय आदि ६ कर्मप्रकृतियों के

જે સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવો સૂક્ષ્મ સંપરાય ગુણ સ્થાન સુધીના છે, તેઓ તો મોહનીય કર્મના ઉદયવાળા હોય છે. અને ઉપશાન્ત મોહવાળા હોય છે. તેઓ મોહનીય કર્મના ઉદયવાળા હોતા નથી. 'सेसाणं सत्तण्हं वि उदई नो अणुदई' મોહનીય કર્મ શિવાય બાકીની સાત કર્મપ્રકૃતિયોના તેઓ ઉદયવાળા જ હોય છે, અનુદયવાળા હોતા નથી. વેદન અને ઉદયમાં શું અંતર છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—અનુક્રમથી અથવા ઉદીરણા કરણથી ઉદયમાં આવેલા કર્મોનો અનુભવ કરવો તે વેદનપણું છે અને અનુક્રમથી ઉદયમાં આવેલા કર્મોનો અનુભવ કરવો તે ઉદય છે. 'नामस्स गोयस्स य उदीरगा णो अणुदीरगा' આ સઘળા જીવો નામ કર્મના તથા ગોત્ર કર્મના ક્ષીણ મોહગુણ સ્થાન સુધી ઉદીરક

श्चानुदीरकाश्च भवन्ति । अत्रायं क्रम प्रमत्ताः सर्वेऽपि सामान्यतोऽष्टानामपि कर्मणामुदीरकाः आवलिकावशेषायुष्कास्तु तएव आयुर्वर्जसप्तानामुदीरका भवन्ति, तथा यदा ते वेदनीय कर्मण उदीरणां न कुर्वन्ति तदा वेदनीयायुर्वर्ज शेष षट् कर्मणा मुदीरका भवन्ति अप्रमत्तादि चतुर्गुणस्थानवर्तिनो वेदनीयायुर्वर्जानां षण्णामुदीरकाः तथा सूक्ष्मसंपरायाः आवलिकायां स्वाद्धायाः शेषायां मोहनीय वेदनीयायुर्वर्जानां पञ्चानामपि कर्मणामुदीरकाः उपशान्तमोहास्तु उक्तरूपाणां पञ्चानां कर्मणां मोहनीयवेदनीयायुष्कवर्जानामेव उदीरकाः, क्षीणकषायाः पुनः

ये यथा संभव उदीरक भी होते हैं और अनुदीरक भी होते हैं । उदीरणा का क्रम इस प्रकार से है-प्रमत्त समस्त संज्ञीपञ्चेन्द्रिय जीव सामान्यत आठों ही कर्मप्रकृतियों के उदीरक होते हैं और जब इनकी आवलिमात्र आयुशेष रहती है तब ये आयु के सिवाय सात कर्मप्रकृतियों के उदीरक होते हैं । तथा जिस समय ये वेदनीय कर्म की भी उदीरणा न करते हों । उस समय ये वेदनीय और आयुष्क के सिवाय शेष छह कर्मों के उदीरक होने के कारण अप्रमत्त आदि गुणस्थान से वेदनीय और आयुष्य कर्म को छोड़कर छह कर्मप्रकृतियों के उदीरक होते हैं । तथा सूक्ष्मसंपरायवाले संज्ञीपचेन्द्रिय जीव जब अपना अर्थात् सूक्ष्म संपराय गुणस्थानका काल आवलिका मात्र बाकी रह जाता है तब वह मोहनीय वेदनीय और आयुष कर्म के सिवाय शेष पांच कर्मप्रकृतियों का उदीरक होता हैं । तथा उपशान्त मोहवाले संज्ञीपचेन्द्रिय जीव भी मोहनीय आदि तीन कर्मप्रकृतियों को छोड़कर शेष पांच कर्मप्रकृतियों के ही उदीरक होते हैं । तथा क्षीण कषायवाले संज्ञीपंचेन्द्रिय जीव जब

હોય છે. અનુદીરક હોતા નથી. 'सेसाणं छण्ह वि उदीरगा वा अणुदीरगा वा' બાકીની છ કર્મપ્રકૃતિયોને નામ ગોત્રને છોડીને જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે છ કર્મપ્રકૃતિયોના આ યથાસંભવ-ક્રમથી ઉદીરક પણ હોય છે, અને ઉદીરણાનો ક્રમ આ પ્રમાણેનો છે.-પ્રમત્ત સુધીના સઘળા સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવો સામાન્ય રીતે આઠે કર્મપ્રકૃતિયોના ઉદીરક હોય છે, અને જ્યારે તેઓની આવલિકા માત્રની આયુષ્ય બાકી રહે ત્યારે તેઓ આયુષ્ય શિવાય સાત કર્મપ્રકૃતિયોના ઉદીરક હોય છે. અપ્રમત્ત વિગેરે ચાર વેદનીય અને આયુષ્ય કર્મને છોડીને છ કર્મપ્રકૃતિયોના ઉદીરક હોય છે. તથા સૂક્ષ્મ સાંપરાયવાળા સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવો જ્યારે પોતાનો કાળ આવલિકા માત્ર બાકી રહે ત્યારે તે મોહનીય, વેદનીય અને આયુષ્ય કર્મ શિવાય બાકીની પાંચ કર્મપ્રકૃતિયોના ઉદીરક હોય છે. તથા ઉપશાન્ત મોહનીયવાળા સંજ્ઞીપંચેન્દ્રિય જીવો પણ મોહનીય વિગેરે ત્રણ કર્મપ્રકૃતિયોને છોડીને બાકીની પાંચ કર્મપ્રકૃતિયોના જ ઉદીરક હોય છે.

स्वाद्धाया आवलिकायां शेषायां नाम-गोत्रयोरेव केवलमुदीरका भवन्ति. सयोगिनोऽपि केवलं नामगोत्रयोरेवोदीरका भवन्ति, अयोगिनस्तु अनुदीरका एव केवलं भवन्तीति भावः। 'कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा' संज्ञिपञ्चेन्द्रियाः कृष्णलेश्या वा भवन्ति यावत् शुक्ललेश्या वा भवन्ति, अत्र यावत्पदेन नील-कापोततेजः पद्मलेश्यानां संग्रहो भवति। तथा च कृष्णलेश्याम् आरभ्य यावच्छुक्ललेश्यान्ता इमे पञ्चेन्द्रिया भवन्तीति भावः। 'सम्मदिट्ठी वा मिच्छादिट्ठी वा सम्मामिच्छादिट्ठी वा' संज्ञिपञ्चेन्द्रियाः सम्यग्दृष्टयो वा भवन्ति मिथ्यादृष्टयो वा भवन्ति सम्यग् मिथ्यादृष्टयो मिश्रदृष्टयो वा भवन्तीति। 'नाणी वा अन्नाणी वा ज्ञानिनो वा भवन्ति अज्ञानिनो वा भवन्ति संज्ञिपञ्चेन्द्रियाः। 'मणजोगी वयजोगी कायजोगी' मनोयोगिनो वा भवन्ति-वचोयोगिनो वा भवन्ति काययोगिनो वा

क्षीणमोह गुणस्थान का काल एक आवलिका मात्र बाकी रहता है उस समय नामगोत्र इन दो कर्मों के ही उदीरक होते हैं। सयोगी जीव भी इन्ही दो कर्मों के उदीरक होते हैं। 'एवं अयोगी जीव अनुदीरक होते हैं।

'कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा' संज्ञीपंचेन्द्रिय जीव कृष्णलेश्यावाले यावत् शुक्ललेश्यावाले होते हैं। यहां यावत्पद से शेष नील, कापोत, तेज, पद्म इन लेश्याओं का संग्रह हुआ है। तथा च ये संज्ञी-पञ्चेन्द्रिय जीव कृष्णलेश्या से लेकर शुक्ललेश्यावाले तक होते हैं। 'सम्मदिट्ठी वा, मिच्छादिट्ठी वा' सम्मामिच्छादिट्ठी वा' ये सम्यग्दृष्टि भी होते हैं, मिथ्यादृष्टि भी होते हैं और मिश्रदृष्टि भी होते हैं। 'मणजोगी वयजोगी कायजोगी' मनोयोगवाले, वचनयोगवाले

તથા ક્ષીણ કષાયવાળા સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવો જ્યારે પોતાનો કાળ એક આવલિકામાત્ર બાકી રહે છે. ત્યારે નામગોત્ર આ બે કર્મોના જ ઉદીરક હોય છે, સયોગી જીવ પણ આજ બે કર્મોના ઉદીરક હોય છે, અને અયોગી જીવો અનુદીરક હોય છે.

'कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा' સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવો કૃષ્ણલેશ્યાવાળા યાવત્ શુકલલેશ્યાવાળા હોય છે. અહિયાં યાવત્પદથી બાકીની નીલ, કાપોત, તેજ, પદ્મ, આ લેશ્યાઓનો સંગ્રહ થયેલ છે. તથા આસંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવો કૃષ્ણલેશ્યાથી લઈને શુકલલેશ્યાવાળા સુધી હોય છે. 'सम्मदिट्ठी वा, मिच्छादिट्ठी वा, सम्मामिच्छादिट्ठीवा' આ સમ્યક્દૃષ્ટીવાળા પણ હોય છે. અને મિથ્યાદષ્ટિવાળા પણ હોય છે. અને મિશ્રદૃષ્ટીવાળા પણ હોય છે 'नाणी वा अन्नाणी वा' તેઓ જ્ઞાની પણ હોય છે, અને અજ્ઞાની પણ હોય છે, मणजोगी,

भवन्तीति। 'उवजोगो वन्नाभाई उस्सासगा वा नीसासगा वा आहारगा वा जहा एगिंदियाणं' उपयोगो वर्णादिः उच्छ्वासका वा निःश्वासका वा आहारकाश्च यथा एकेन्द्रियाणाम् एकेन्द्रियवदेवोपयोगादयः पञ्चेन्द्रियाणामपि ज्ञातव्याः तत्र उपयोगो द्विविधोऽपि, पञ्चापि वर्णाः, द्वौ गन्धौ, पञ्चापि रसाः, अष्टौ स्पर्शा भवन्ति उच्छ्वासका वा भवन्ति निःश्वासका वा भवन्ति। आहारकाश्च भवन्ति यथा एकेन्द्रियाणां प्रकरणे तथा 'विरयाय अविरयाय विरया विरयाय' संज्ञिपञ्चेन्द्रिया विरताश्च भवन्ति अविरताश्च भवन्ति। विरताविरताश्चापि भवन्तीति। 'सकिरिया नो अकिरिया' सक्रिया भवन्ति पञ्चेन्द्रियाः, नो न तु अक्रिया भवन्ति। 'ते णं भंते! जीवा किं सत्तविहबंधगा वा अट्ठविहबंधगा वा' ते खलु भदन्त! जीवाः संज्ञिपञ्चेन्द्रियाः सप्तविधकर्मप्रकृतीनां बन्धका वा भवन्ति, अष्टविधकर्मप्रकृतीनां बन्धका वा भवन्ति 'छव्विहबंधगा वा एगविहबंधगा' वा षड्विधकर्मप्रकृतीनां बन्धका वा एकविधकर्म-

---

और काययोगवाले होते हैं। 'उवजोगो, वन्नमाई, उस्सासगा वा नीसासगा वा आहारगा वा जहा एगिंदियाणं' ये दोनों प्रकार के उपयोगवाले होते हैं। पांचो रसोंवाले, दो गंधोवाले, पांचों वर्णोंवाले और आठ प्रकार के स्पर्श वाले होते हैं। उच्छ्वासवाले निश्वासवाले होते हैं और आहारक होते हैं। इत्यादि जैसा एकेन्द्रिय के प्रकरण में कहा है वैसा ही समझलेना चाहिये। 'विरया य अविरया य विरया विरया य' ये संज्ञीपंचेन्द्रिय विरत, अवरित एवं विरताविरत होते हैं। 'सकिरिया नो अकिरिया' क्रिया सहित होते हैं, अक्रिया–क्रिया रहित नहीं होते हैं। 'ते णं भंते! जीवा किं सत्तविह बंधगावा अट्ठविह बंधगावा' हे भदन्त! ये जीव क्या सात प्रकार की कर्मप्रकृतियों के बन्धक होते हैं? अथवा आठ प्रकार की कर्मप्रकृतियों के बन्धक होते

वयजोगी, कायजोगी' મનોયોગવાળા વચનયોગવાળા અને કાયયોગવાળા હોય છે. 'उवजोगो वन्नमाई, उसासगा वा नीसासगावा, आहारगावा जहा एगिंदियाण' એકેન્દ્રિય જીવોની જેમ તેઓ બન્ને પ્રકારના ઉપયોગવાળા હોય છે પાંચે પ્રકારના રસોવાળા હોય છે, બે ગંધોવાળા, પાંચવર્ણોવાળા અને આઠ પ્રકારના સ્પર્શોવાળા હોય છે. ઉચ્છ્વાસ નિઃશ્વાસવાળા હોય છે, અને આહારક હોય છે. 'वीरयाय अविरया य विरयाविरयाय' તે સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય વિરત–અવિરત અને વિરતાવિરત હોય છે. 'सकिरिया नो अकिरिया' ક્રિયા સહિત હોય છે, અક્રિયા –ક્રિયા વિનાના હોતા નથી. 'ते णं भंते! जीवा किं सत्तविहबंधगा वा अट्ठविह बंधगा वा' હે ભગવન્ આ જીવો શું સાત પ્રકારની કર્મપ્રકૃતિયોનો બંધ કરવાવાળા હોય છે? અથવા આઠ પ્રકારની કર્મ પ્રકૃતિયોનો બંધ કરવાવાળા

प्रकृतीनां बन्धका वा भवन्तीति प्रश्नः। भगवानाह—गोयमा ! इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'सत्तविहबंधगा वा जाव एगविहबंधगा वा' सप्तविधकर्मप्रकृतीनां बन्धका वा संज्ञिपञ्चेन्द्रियाः यावत् एकविधबन्धका वा, अत्र यावत्पदेन अष्टविधबन्धका वा षड्विधबन्धका वा, एतयोः संग्रहो भवतीति। 'तेणं भंते ! जीवा किं आहारसन्नोवउत्ता जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता' ते खलु भदन्त! जीवाः संज्ञिपञ्चेन्द्रियाः किमाहारसंज्ञोपयुक्ता भवन्ति यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्ता वा भवन्ति अत्र यावत्पदेन भयमैथुनसंज्ञयोः परिग्रहो भवति 'नो सन्नोवउत्ता वा' नो संज्ञोपयुक्ता वा भवन्ति ? 'सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा' सर्वत्र पृच्छा—प्रश्नरूपा भणितव्या, पृथक् पृथग्रूपेण सर्वप्रश्नः करणीय इति। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा !' हे गौतम! 'आहारसन्नोवउत्ता जाव नो सन्नोवउत्ता' आहारसंज्ञोप-

---

हैं ! 'छव्विह बंधगा वा' छ प्रकार की कर्मप्रकृतियों के बन्धक होते हैं अथवा 'एगविह बंधगा वा' एक प्रकार की कर्मप्रकृतियों के बंधक होते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—'गोयमा! ये जीव 'सत्तविहा बंधगा वा जाव एगविह बंधगा वा' सात प्रकार की कर्मप्रकृतियों के बन्धक होते हैं यावत् एक प्रकार की कर्मप्रकृतियों के बन्धक होते हैं। यहां यावत् शब्द से 'अष्टविधबंधका वा षड्विध बन्धका वा' इन पदों का संग्रह हुआ है। 'तेणं भंते ! जीवा किं आहारसन्नोवउत्ता जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता' हे भदन्त! वे संज्ञीपंचेन्द्रिय जीव क्या आहारसंज्ञोपयुक्त यावत् परिग्रह संज्ञोपयुक्त होते हैं? यहां यावत् पद से 'भय मैथुन संज्ञाओं का ग्रहण हुआ है। अथवा 'नो सन्नोवउत्ता वा' ये नो संज्ञोपयुक्त होते हैं? इस प्रकार 'सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा' पृथक् पृथक् रूप से प्रश्न कर लेना चाहिये।

હોય છે? અથવા 'छव्विह बंधगा वा' છ પ્રકારની કર્મપ્રકૃતિયોનો બંધ કરવાવાળા હોય છે? અથવા 'एगविहबंधगा वा' એક પ્રકારની કર્મપ્રકૃતિનો બંધ કરવાળા હોય છે.? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'गोयमा ! હે ગૌતમ ! આ જીવો 'सत्तविह बंधगा वा जाव एगविह बंधगा वा' સાત પ્રકારની કર્મપ્રકૃતિયોનો બંધ કરવાળા પણ હોય છે. અહિયાં યાવત્ શબ્દથી 'अष्टविध बंधगावा षड्विध बंधगावा' આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે 'तेणं भंते ! जीवा किं आहारसन्नोवउत्ता जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता' હે ભગવન્ તે સંજ્ઞીપંચેન્દ્રિય જીવો શું આહાર સંજ્ઞોપયોગવાળા હોય છે? યાવત્ પરિગ્રહ સંજ્ઞોપયોગવાળા હોય છે? અહિયાં યાવત્પદથી "ભય અને મૈથુન સંજ્ઞાઓ ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે અથવા 'नोसन्नोवउत्ता वा' આ નોસંજ્ઞોપયોગવાળા હોય છે? આ રીતે 'सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा' જુદા જુદા રૂપથી પ્રશ્ન કરી લેવો જોઈએ.

युक्ताः यावत् नो संज्ञोपयुक्ता वा भवन्ति । 'कोहकसाई वा जाव लोभकसाई वा अकसाई वा' संज्ञिपञ्चेन्द्रियाः क्रोधकषायिनो वा लोभकषायिनो वा अकषायिनो वा भवन्ति। 'इत्थिवेयगा वा, पुरिसवेयगा वा, नपुंसगवेयगा वा अवेयगा वा' ते संज्ञिपञ्चेन्द्रियजीवाः स्त्रीवेदका वा भवन्ति, पुरुषवेदका वा भवन्ति नपुंसकवेदका वा भवन्ति अवेदका वा भवन्तीति। 'इत्थिवेदबंधगा वा, पुरिसवेदबंधगा वा, नपुंसगवेदबंधगा वा, अबंधगा वा' स्त्रीवेदबन्धका वा भवन्ति पुरुषवेदबन्धका वा भवन्ति नपुंसकवेदबन्धका वा भवन्ति अबन्धका वा भवन्तीति 'सन्नी नो असन्नी' संज्ञिपञ्चेन्द्रियजीवाः संज्ञिनो भवन्ति नो असंज्ञिनो

इस के उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! आहारसन्नोवउत्ता, जाव नो सन्नोवउत्ता' हे गौतम ! ये आहार संज्ञोपयुक्त होते हैं यावत् नो संज्ञोपयुक्त होते हैं। 'कोहकसाई वा जाव लोभकसाई वा' ये क्रोध कषाय से लेकर लोभकषाय से युक्त होते हैं। तथा कषायों से रहित भी होते हैं। 'इत्थिवेयगा वा पुरिसवेयगा वा नपुंसगवेयगा वा' ये स्त्री वेदवाले भी होते हैं, पुरुष वेदवाले भी होते हैं और नपुंसक वेदवाले भी होते हैं। तथा-'अवेयगा वा भवंति' विना वेदवाले भी होते हैं। 'इत्थिवेदबंधगा वा, पुरिसवेदबंधगा वा नपुंसगवेदबंधगा वा, अबंधगा वा' ये स्त्रीवेद के बन्धक होते हैं, पुरुषवेद के बन्धक होते हैं और नपुंसक वेद के भी बन्धक होते हैं। तथा इन तीनों वेदों के अबंधक भी होते हैं। 'सन्नी नो असन्नी' ये संज्ञी ही होते हैं असंज्ञी नहीं होते हैं। 'सइंदिया नो अणिंदिया' ये सेन्द्रिय होते हैं इन्द्रियों से रहित नहीं होते हैं।

આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'ગોયમા ! आहारसन्नोवउत्ता, जाव नो सन्नोवउत्ता' હે ગૌતમ ! આ આહારસંજ્ઞોપયોગવાળા યાવત્ ભય સંજ્ઞોપયોગવાળા હોય છે 'कोहकसाई वा जाव लोभकसाई वा अकसाई वा' આ ક્રોધ કષાયથી લઈને લોભકષાયવાળા હોય છે, તથા કષાયોથી રહિત પણ હોય છે. 'इत्थिवेयगा वा पुरिसवेयगा वा नपुंसगवेयगा वा' આ સ્ત્રીવેદવાળા પણ હોય છે, પુરૂષવેદવાળા પણ હોય છે, અને નપુંસક વેદવાળા પણ હોય છે. તથા 'अवेदगा वा भवंति' તેઓ વેદવિનાના પણ હોય છે. 'इत्थिवेदबंधगा वा, पुरिसवेदबंधगा वा नपुंसकवेदबंधगा वा, अबंधगा वा' આ સ્ત્રીવેદનો બંધ કરવાવાળા પણ હોય છે, પુરૂષવેદનો બંધ કરવાવાળા પણ હોય છે, અને નપુંસકવેદનો બંધ કરવાવાળા પણ હોય છે. અને ત્રણે પ્રકારના વેદોનો બંધ નથી પણ કરતા. 'सन्नी नो असन्नी' આ સંજ્ઞી જ હોય છે. અસંજ્ઞી હોતા નથી. 'सेइंदिया नो अणिंदिया' આ ઈન્દ્રિયોવાળા હોય છે. ઈન્દ્રિય

भवन्तीति। 'सइंदिया नो अणिंदिया' सेन्द्रियाः संज्ञिपञ्चेन्द्रिया इन्द्रियवन्तो भवन्ति नो अनिन्द्रिया भवन्ति। 'संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं' संस्थानमवस्थितिः संज्ञिपञ्चेन्द्रियाणां जघन्येनैकं समयं कृतयुग्म कृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रियाणामवस्थितिरेकं समयं समयानन्तरं संख्यान्तरसद्भावा दिति। 'उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेगं' उत्कर्षेणावस्थिति सागरोपमशतपृथक्त्वम्, सातिरेकम्, कृतयुग्मकृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रियाणामुत्कर्षेण अवस्थानं कालस्थितिः सागरोपमशतपृथक्त्वं द्विसागरोपमशतादारभ्य नव सागरोपमशतपर्यन्तं सातिरेकं भवति, यत इतः परं ते संज्ञिपञ्चेन्द्रियतया न भवन्तीति भावः। 'आहारो तहेव जाव नियमं छद्दिसिं' आहार स्तथैव आहारो देशकवदेव, कियत्पर्यन्तं तत्राह—यावत् नियमात् षड्दिशि संज्ञिपञ्चेन्द्रियाणामाहारो नियमतः षड्दिग्भ्योऽपि भवति लोकमध्येऽवस्थितानामेषां व्याघाताभावत् इति,

---

'संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं' संचिट्ठणा इन कृतयुग्मकृतयुग्म राशिप्रमित संज्ञिपंचेन्द्रिय जीवों की अवस्थिति जघन्य से एक समय की होती हैं कारण कि एक समय के बाद संख्यांतर होने की संभवना रहती है और 'उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं' साइरेगं' उत्कृष्ट से कुछ अधिक सागरोपम शतपृथक्त्व की होती है। बाद में ये अन्य राशिप्रमित हो जाते हैं। अर्थात् संज्ञिपंचेन्द्रिय रूपता इनमें नहीं रहती है दो सागरोपम शत से लेकर नौ सागरोपम शतका नाम सागरोपम शत पृथक्त्व है 'आहारो तहेव जाव नियमं छद्दिसिं' आहार का प्रकरण प्रज्ञापना के आहार पद २८ वां के जैसे है अर्थात् इनका आहार लोक के मध्य में इनकी स्थिति होने के कारण नियम से यावत् छहों दिशाओं से होता है। क्योंकि उस में इन्हें किसी भी प्रकार का व्याघात नहीं होता

વિનાના હોતા નથી. "संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं" આ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિ પ્રમાણુવાળા સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવોની સંચિટ્ઠણા-અવસ્થિતિ જઘન્યથી એક સમયની હોય છે, કારણ કે એક સમય પછી સંખ્યાંતર હોવાની સંભવના રહે છે. અને 'उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेगं' ઉત્કૃષ્ટથી કંઈ વધારે સાગરોપમશત પૃથક્ત્વની હોય છે. તે પછી તેઓ અન્ય રાશી પ્રમાણુવાળા થઈજાય છે. અર્થાત્ સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય પણું તેઓમાં રહેતું નથી. બે સાગરોપમ શતથી નવ સાગરોપમશતનું નામ સાગરોપમ શત પૃથક્ત્વ છે, 'आहारो तहेव जाव नियमं छद्दिसिं' તેઓનો આહાર લોકની મધ્યમાં તેઓ રહેલા હોવાને કારણે નિયમથી યાવત્ છએ દિશાઓથી હોય છે. કેમ કે તેમાં તેઓને કોઈપણ રીતનો વ્યાઘાત થતો નથી. અહિંયાં યાવત્પદથી ત્રણ દિશાએથી પણ

'ठिई जहन्नेण एक्कं समयं' संज्ञिपञ्चेन्द्रियाणां स्थिति जघन्येनैकं समयं भवति, 'उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं' उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि। 'छ समुग्घाया आदिल्ला' षट् समुद्घाता आदिमाः वेदना कषायादिकाः षट् केवलि समुद्घात-वर्जा भवन्तीति। संज्ञिपञ्चेन्द्रियाणामेवमाद्याः वेदनाकषायमारणान्तिकवैक्रिय तैजसाहारकाख्याः षडेव समुद्घाता भवन्ति, सप्तमस्तु केवलिसमुद्घातः केवलिनामेव भवति तेषां शेषाः षट्समुद्घाता न भवन्ति, इन्द्रियोपयोगाभावेन केवलिनामनिन्द्रियत्वादिति ते संज्ञिपञ्चेन्द्रियत्वेन न गृह्यन्ते इति भावः। 'मारणांतिय समुग्घाएणं समोहया वि मरंति' ते संज्ञिपञ्चेन्द्रिय जीवाः मारणान्तिक समुद्घातेन समवहता अपि म्रियन्ते 'असमोहया वि मरंति' असमवहता अपि म्रियन्ते। 'उव्वट्टणा जहेव उववाओ' उद्वर्तना यथैवोपपातः चतसृभ्योऽपि गतिभ्यः

है। 'ठिई जहन्नेण एक्कं समयं' इनकी जघन्य स्थिति एक समय की होती है और 'उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं' उत्कृष्ट स्थिति ३३ सागरोपम की होती है। 'छ समुग्घाया आदिल्ला' आदि के छहसमुद्-घात होते हैं। इन के केवलि समुद्घात नहीं होता है। वेदना, कषाय मारणान्तिक वैक्रिय तैजस और आहारक ये छ समुद्घात इनके होते हैं। केवलियों के वे ६ समुद्घात नहीं होते हैं। क्यों कि इनमें इन्द्रिय जन्य उपयोग का अभाव रहता है। इसलिये इनमें संज्ञी पंचेन्द्रिय संज्ञा नहीं होती है। इसीलिये इन्हें अनिन्द्रिय कहा गया है। 'मारणांतिय समुग्घाएणं समोहया वि मरंति' ये संज्ञीपंचेन्द्रिय जीव मारणान्तिक समुद्घात से समवहत होकर भी मरते हैं। 'असमोहया वि मरंति'

થાય છે. ચાર દિશાઓથી પણ થાય છે અને પાંચ દિશાઓથી પણ હોય છે. આ પાઠ ગ્રહણ કરાયો છે. 'ठिई जहन्नेण एक्कं समयं' તેઓની જઘન્ય સ્થિતિ-આયુકાળ એક સમયની હોય છે. અને 'उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं' ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ તેત્રીસ સાગરોપમની થાય છે. 'छ समुग्घाया आदिल्ला' અને તેઓના આદિના એટલે કે-વેદના કષાય મારણાન્તિક વૈક્રિય અને તૈજસ, આ છ સમુદ્ઘાતો હોય છે તેઓને કેવલી સમુદ્ઘાત હોતો નથી. કેમ કે કેવલી સમુદ્ઘાત કેવલીયોને જ હોય છે, કેવલિયોને છ સમુદ્ઘાતો હોતા નથી. ઇન્દ્રિય જન્ય ઉપયોગનો અભાવ રહે છે. તેથી તેઓમાં સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય સંજ્ઞા હોતી નથી. તેથી તેઓને અનિંન્દ્રિય કહ્યા છે. 'मारणंतिय समुग्घाएणं समोहया वि मरंति' આ સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવો મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી સમુદ્ઘાત કરીને પણ મરે છે. અને 'असमोहया वि मरंति' મારણાન્તિક

प्रोक्तस्तथैव उद्वर्तना निस्सरणम् उद्वृत्त्य गमनमपि तेषां चतसृष्वपि गतिषु नैरयिक तिर्यग्-मनुष्य-देवेषु भवतीति भावः, न कत्थइ पडिसेहो' न कुत्रचिदपि प्रतिषेधः 'जाव अणुत्तरविमाण त्ति' यावदनुत्तरविमानमिति, नारकादि चतुर्गतिष्वपि पञ्चेन्द्रियाणा मुद्वर्त्तना भवति अनुत्तरविमानपर्यन्तं कस्यापि स्थानस्य प्रतिषेधो नास्तीति। 'अह भंते! सव्वे पाणा जाव अणंतखुत्तो' अथ भदन्त! सर्वे प्राणा यावत् सर्वे सत्त्वाः कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रियतया किं समुत्पन्न पूर्वा? हे गौतम! सर्वे प्राणाः सर्वे भूताः सर्वे जीवाः सर्वे सत्त्वाः कृतयुग्मकृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रियतया असकृत् अथवा अनन्तकृत्वः समुत्पन्नपूर्वा इति। 'एवं सोलससु वि जुम्मेसु भाणिय-

---

और मारणान्तिक समुद्घात से समवहत हुए विना भी मरते हैं। 'उवट्टणा जहेव उववाओ' इन में उपपात के जैसे उद्वर्तना होती है। अर्थात् इनका चारों गतियों में उपपात होता है और चारों गतियों के जीवों का इनमें उत्पाद होता है। 'न कत्थइ' पडिसेहो' इन्हें आनेजाने की कहीं पर भी रुकावट नहीं है। 'जाव अणुत्तरविमाणत्ति' यावत् ये अनुत्तर विमानों तक जाते हैं अर्थात् वहां तक इनका उत्पाद होता है। 'अह भंते? सव्वे पाणा जाव अणंतखुत्तो' हे भदन्त! क्या समस्त प्राण यावत् समस्त सत्व, कृतयुग्म कृतयुग्मसंज्ञिपचेन्द्रिय रूप से उत्पन्न हो चुके हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'सव्वे पाणा सव्वे भूआ सव्वे जीवा सव्वे सत्ता' हे गौतम! समस्त प्राण, समस्त भूत, समस्त जीव और समस्त सत्व असत-वारंवार अथवा अनन्तवार कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञीपचेन्द्रिय रूप से उत्पन्न हो चुके हैं। 'एवं सोलससु वि जुम्मेसु

સમુદ્ઘાત કર્યા વિના પણ મરે છે. 'उवट्टणा जहेव उववाओ' તેઓને ઉપપાતની જેમ જ ઉદ્વર્તના પણ હોય છે. અર્થાત્ તેઓનો ચારે ગતિયોમાં ઉપપાત હોય છે. અને ચારે ગતિયોના જીવોનો તેઓમાં ઉત્પાદ હોય છે. 'न कत्थइ पडिसेहो' તેઓને અવરજવરમાં ક્યાંઈ પણ રૂકાવટ થતી નથી. 'जाव अणुत्तरविमाणत्ति' યાવત્ તેઓ અનુત્તર વિમાનો સુધી જાય છે અર્થાત ત્યાં સુધી તેઓનો ઉત્પાદ હોય છે 'अहभंते! सव्वे पाणा जाव अणंतखुत्तो' હે ભગવન સઘળા પ્રાણો, સઘળા સત્વો, કૃતયુગ્મ, કૃતયુગ્મ સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય પણાથી ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'सव्वे पाणा सव्वे भूआ सव्वे जीवा सव्वे सत्ता' હે ગૌતમ! સઘળા પ્રાણો સઘળા ભૂતો, સઘળા જીવો. અને સઘળા સત્વો, અસકૃત-વારંવાર અથવા અનંતવાર કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય પણાથી ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા

ण्वं जाव अणंतखुत्तो' एवं कृतयुग्म कृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रिययुग्मेषु उपपातादारभ्य अनन्त कृत्वः समुत्पन्न पूर्वा इति कथितं तथैव 'सोलसमु वि वि जुम्मेसु भाणियव्वं जाव अणंत खुत्तो' षोडशष्वपि द्वितीय कृतयुग्म त्र्योज संज्ञिपञ्चेन्द्रियत आरभ्य यावत् कल्योजकल्योज संज्ञिपञ्चेन्द्रियपर्यन्तेषु युग्मेषु भणितव्यं यावद् अनन्त कृत्वः अनन्तशस्तद्रूपेण पूर्वं समुत्पन्ना इति पर्यन्तमिति भावः। 'नवरं परिमाणं जहा बेंदियाणं' नवरं कृतयुग्म कृतयुग्म संज्ञेन्द्रियाणां यथा द्वीन्द्रियाणां षोडश, संख्याता वा असंख्यातावेति। 'सेसं तहेव' शेषं परिमाणव्यतिरिक्त मुपपातादिकं तथैव-पूर्ववदेव पूर्वोक्त प्रथमयुग्मवदेव प्रथमयुग्मे यत् यथा कथितं तत्सर्वं तथैव

भाणियव्वं जाव अणंतखुत्तो' इसी प्रकार से 'कृतयुग्म कृतयुग्म संज्ञी पचेन्द्रियों में समस्त प्राणादि जीवों का जैसा उपपात से लेकर अनन्त बार तक का उपपात हो चुकना कहा गया है 'द्वितीय कृतयुग्म त्र्योज संज्ञिपंचेन्द्रिय रूप से उनके उपपात को लेकर यावत् कल्योज कल्योज संज्ञिपञ्चेन्द्रिय पर्यन्त युग्मों में ये अनन्तवार उत्पन्न हो चुके हैं ऐसा कह लेना चाहिये। 'नवरं परिमाणं जहा बेंदियाणं' द्वीन्द्रिय जीवों का जैसा परिमाण १६ अथवा संख्यातआदि रूप से कहा गया है उसी प्रकार से इन कृतयुग्म कृतयुग्मादि संज्ञिपञ्चेन्द्रिय जीवों का भी परिमाण जानना चाहिये। 'सेसं तहेव' परिमाण से अतिरिक्त उपपात आदि जिस जिस प्रकार से प्रथम युग्म में कहे गये हैं वैसे ही वे सब जानना चाहिये 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! जैसा आपने यह कहा है वह सब

છે, 'एवं सोलससु वि जुम्मेसु भाणियव्वं जाव अणंतखुत्तो' આજ પ્રમાણે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિયોમાં સઘળા પ્રાણુ વિગેરે જીવોના ઉપપાતથી લઈને અનંતવાર સુધીનો ઉપપાત થઈ ચૂકયો છે, એ કથન સુધી જે રીતે કહેલ છે, એજ પ્રમાણે બીજા કૃતયુગ્મ ત્ર્યોજ સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય પણુાથી તેના ઉપપાતથી લઈને યાવત્ કલ્યોજ કલ્યોજ સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય પર્યન્તના યુગ્મોમાં તેઓ અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે. તેમ કહેવું જોઈએ. 'नवरं परिमाणं जहा बेइंदियाणं' બે ઇન્દ્રિય જીવોનું પરિમાણુ જે પ્રમાણે ૧૬ સોળ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત પણાથી કહેલ છે, એજ પ્રમાણે આ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવોનુ પરિમાણુ પણ સમજવું. 'सेसं तहेव' પરિમાણુ શિવાય ઉત્પાત વિગેરે જે રીતે પહેલા યુગ્મોમાં કહેલ છે. તેજ પ્રમાણે તે સઘળું કથન સમજી લેવું.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન આપ દેવાનુપ્રિયે જે આ વિષયના

ज्ञातव्यमिति 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥
इति चत्वारिंशत्तमे शतके प्रथमे शते प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥४०।१॥

॥ इति चत्वारिंशत्तमे शतके प्रथमे शते प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥४०'१॥

द्वितीयोद्देशकः २

'पढम समय कडजुम्मकडजुम्म सन्निपंचिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' प्रथम समय कृतयुग्मकृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? इत्यादि प्रश्नः, उत्तरमाह-'उववाओ परिमाणं आहारो जहा एएसिं चेव पढमुद्दे-

---

सर्वथा सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

४० वें शतक के प्रथम शत में प्रथम उद्देशक समाप्त ॥४०-१॥

'पढमसमय कडजुम्मकडजुम्म सन्निपचिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' इत्यादि

टीकार्थ-हे भदन्त ! प्रथम समय कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित संज्ञीपचेन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'उववाओ परिमाणं आहारो जहा एएसिं चेव पढमु-

---

સંબંધમાં કથન કરેલ છે. તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તપ અને સંયમથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥ચાળીસમાં શતકમાં પહેલા શતકનો પહેલો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૪૦-૧॥

॥પહેલા શતકના બીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'પઢમસમય કડજુમ્મકડજુમ્મસન્નિ પંચિંદિયાણં ભંતે કઓ ઉવવજ્જંતિ' ઇ.

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ પ્રથમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'उववाओ परिमाणं आहारो जहा एएसिं चेव पढमुद्देसए' હે ગૌતમ ! તેઓનો

तहेव' शेषं नवरमित्यादिना यत् कथितं तदतिरिक्तं सर्वं प्रथमसामयिक द्वीन्द्रियवदेव ज्ञातव्यमिति। 'एवं सोलससु वि जुम्मेसु' एवं प्रथमसमय कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रियस्य यथा कथितं तथैव कृतयुग्म त्र्योजादिरूप द्वितीय युग्मत आरभ्य षोडशस्वपि युग्मेषु ज्ञातव्यम्, 'परिमाणं तहेव सव्वं' परिमाणं तथैव सर्वं परिमाणं सर्वमपि प्रथमसमय द्वीन्द्रियवदेव ज्ञातव्यमिति। 'सेवं भंते! सेवं भंते त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति॥

॥ इति चत्वारिंशत्तमे शतके प्रथमे शते द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥४०।१।२

'एवं एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा तहेव' एवमत्रापि शते प्रथमे एकादशो-

---

'एवं सोलससु वि जुम्मेसु' जैसा यह कथन प्रथम समय कृतयुग्म जीवों के सम्बन्ध में कहा गया है उसी प्रकार से प्रथम समय कृतयुग्म त्र्योजादि रूप द्वितीययुग्म से लेकर सोलहयुग्मों में भी कह लेना चाहिये। 'परिमाणं तहेव सव्वं' प्रथम समयवर्ती द्वीन्द्रिय के जैसा सर्वत्र की कथन यहां कर लेना चाहिये।

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' 'हे भदन्त जैसा आपने यह कहा है वह सर्वथा सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

४० वे शतक में प्रथम शत में यह द्वितीय उद्देशक समाप्त हुआ ॥४०-१-२॥

કૃતયુગ્મ રાશિવાળા પંચેન્દ્રિય જીવો સંજ્ઞી પણ હોય છે, અને અસંજ્ઞી પણ હોય છે, 'सेसं तहेव' બાકીનું બીજું સઘળું કથન પ્રથમ સમયવાળા દ્વીન્દ્રિય જીવોના કથન પ્રમાણે જ છે. 'एवं सोलससु वि जुम्मेसु' આ કથન જે પ્રમાણે પ્રથમ સમય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ ત્ર્યોજ વિગેરે રૂપથી બીજા યુગ્મથી લઈને સોળે યુગ્મોમાં પણ કહેવું જોઈએ 'परिमाणं तहेव सव्वं' પ્રથમ સમયમાં રહેવાવાળા દ્વીન્દ્રિય જીવોના કથન પ્રમાણે જ બધે ઠેકાણે અહિયા પરિમાણ સંબંધી કથન કહેવું જોઈએ.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે પ્રમાણે કથન કરેલ છે. તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ હે ભગવન્ આપ દેવાનુંપ્રિયનું તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમ-સ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

ચાળીસમા શતકમાં પહેલા શતકનો બીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૪૦-૧-૨॥

देशकाः ज्ञातव्याः। तत्र 'पढमो तइओ पंचमो य सरिसगमा' प्रथमस्तृतीयः पञ्चमश्च सदृशगमा एकालापका इत्यर्थः। 'सेसा अट्ठवि सरिसगमा' शेषा अष्टावपि द्वितीयचतुर्थषष्ठसप्तमाष्टम नवम दशमैकादशाख्याः सदृशगमा समानाः। 'चउत्थ छट्ठ अट्ठम दसमेसु नत्थि विसेसो कायव्वो' चतुर्थ षष्ठाष्टम दशमेषु नास्ति विशेषः कर्तव्य इति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति

॥ चत्वारिंशत्तमे शतके प्रथमं संज्ञिपञ्चेन्द्रियमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥४०।१।२॥

टीकार्थ–'एवं एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा' इस प्रथम शत में भी ११ उद्देशक हैं। इन में 'पढमो तइओ पंचमो य सरिसगमा' प्रथम द्वितीय उद्देशक और पांचवा उद्देशक ये तीन एकसरीखे आलापकवाले हैं। और 'सेसा अट्ठ वि सरिसगमा' बाकी के आठ उद्देशक द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ, उद्देशक सप्तम, अष्टम, नवम, दसम और ११ वां ये आठ उद्देशक समान आलापवाले हैं। 'चउत्थ छट्ठ अट्ठम दसमेसु नत्थि विसेसो कायव्वो' चतुर्थ छट्ठे आठ वें इन उद्देशको में कोइ विशेषता कर्त्तव्य नही हैं 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! आपका यह कथन सर्वथा सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

४० वें शतक में संज्ञिपंचेन्द्रिय महायुग्म शत समाप्त हुआ ॥४०-१॥

'एवं एत्थवि एक्कारस उद्देसगा' આ પહેલા શતકમાં પણ ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ છે. તેમાં 'पढमो तइओ पंचमो य सरिसगमा' પહેલો ઉદ્દેશો બીજો ઉદ્દેશો અને પાંચમો ઉદ્દેશો આ ત્રણ ઉદ્દેશાઓ સરખા આલાપકોવાળા હોય છે. અને 'सेसा अट्ठ वि सरिसगमा' બાકીના આઠ ઉદ્દેશાઓ એટલે કે બીજો, ચોથો. છઠ્ઠો, સાતમો આઠમો નવમો દશમો અને અગિયારમો આ આઠ ઉદ્દેશાઓ સરખા આલાપકોવાળા છે. 'चउत्थ छट्ठ अट्ठमदसमेसु नत्थि विसेसो कायव्वो' ચોથો, છઠ્ઠો આઠમો દશમો આ ઉદ્દેશાઓમાં કાંઈ પણ વિશેષપણું કહેલ નથી.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું આ કથન સર્વથા સત્ય જ છે, હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું આપ્ત કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કર્યા પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાનપર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

ચાળીસમા શતકમાં સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત ॥૪૦-૧-૨॥

'अह बितियं कण्हलेस्स सन्नि पंचिंदियमहाजुम्मसयं'

मूलम्-कण्हलेस्स कडजुम्मकडजुम्म सन्नि पंचिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति, तहेव जहा पढमुद्देसओ सन्नीणं। नवरं बंधो वेओ उदय उदीरणा लेस्सा बंधगसन्ना कसायवेद बंधगा य एयाणि जहा बेंदियाणं। कण्हलेस्साणं वेओ तिविहो अवेदगा नत्थि। संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं। एवं ठिईए वि। नवरं ठिईए अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं न भन्नंति। सेसं जहा एएसिं चेव पढमुद्देसए जाव अणंतखुत्तो। एवं सोलससु वि जुम्मेसु। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥४०-२॥

पढमसमय कण्हलेस्स कडजुम्मकडजुम्म सन्नि पंचिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति जहा सन्नि पंचिंदिय पढमसमय उद्देसए, तहेव निरवसेसं। नवरं तेणं भंते! जीवा कण्हलेस्सा सेसं तं चेव। एवं सोलससु वि जुम्मेसु। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति। एवं एएवि एक्कारस वि उद्देसगा कण्हलेस्साए। पढमतइय पंचमा सरिसगमा। सेसा अट्ठ वि एक्कगमा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥४०-२॥

चत्तालीसइमे सए बितियं सन्नि महाजुम्मसयं समत्तं ॥४०-२॥

छाया-कृष्णलेश्य कृतयुग्मकृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? तथैव यथा प्रथमोद्देशकः संज्ञिनाम्। नवरं बन्धो वेद उदयी उदीरणा लेश्याबन्धक संज्ञा कषाय वेदबन्धका श्चैतानि यथा-द्वीन्द्रियाणाम्। कृष्णलेश्यानां वेदस्त्रिविधः अवेदका न सन्ति। संस्थानं जघन्येनैकं समयम्, उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्त्ताभ्यधिकानि। एवं स्थितावपि। नवरं स्थितौ अन्तर्मुहूर्त्ताभ्यधिकानि न भण्यन्ते। शेषं यथा एतेषामेव प्रथमे उद्देशके यावदनन्तकृत्वः। एवं षोडशस्वपि युग्मेषु। तदेवं भदन्त तदेवं भदन्त! इति॥

प्रथमसमय कृष्णलेश्य कृतयुग्म कृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत

उत्पद्यन्ते। यथा संज्ञिपञ्चेन्द्रियप्रथमसमयोदेशके तथैव निरवशेषम्। नवरं ते खलु भदन्त! जीवाः कृष्णलेश्याः? हन्त कृष्णलेश्याः। शेषं तदेव। एवं षोडशस्वपियुग्मेसु। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति। एवमेतेऽपि एकादशापि उद्देशकाः कृष्णलेश्यशते! प्रथमतृतीयपञ्चमाः सदृशगमाः, शेषा अष्टावपि एकगमाः। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥४०।२॥

॥चत्वारिंशत्तमे शतके द्वितीयं संज्ञि महायुग्मशतं समाप्तम् ॥४० २॥

टीका—'कण्हलेस्स कडजुम्मकडजुम्म सन्निपंचिंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति' कृष्णलेश्य कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? किं नैरयिकेभ्यो यावत् देवेभ्यो वोत्पद्यन्ते इति प्रश्नः, उत्तरमाह पूर्वातिदेशेन—'तहेव' इत्यादि, 'तहेव पढमुद्देसए सन्नीणं' तथैव यथा प्रथमोद्देशके संज्ञिनाम्, संज्ञिनां चत्वारिंशत्तमशतकस्य प्रथमोद्देशे येन रूपेणोपपातश्चतुर्गतिभ्यः कथित

॥द्वितीय कृष्णलेश्य संज्ञिपचेन्द्रिय महायुग्म शत॥

'कण्हलेस्स कडजुम्मकडजुम्म सन्नि पंचिंदिया णं भंते! इत्यादि

टीकार्थ–हे भदन्त! कृष्णलेश्यावाले कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमाण संज्ञिपचेन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं? क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अतिदेश द्वारा इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं–'तहेव जहा पढमुद्देसए सन्नीणं' हे गौतम! जैसा संज्ञी जीवों के सम्बन्ध में प्रथम उद्देशक कहा गया है वैसा ही यहां पर भी कह लेना चाहिये। ४० वें शतक

બીજા કૃષ્ણલેશ્યા સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય મહાયુગ્મ શતકનો આરંભ—

'कण्हलेस्स कडजुम्मकडजुम्म सन्निपंचिंदियाणं भंते! ઈત્યાદિ

હે ભગવન્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિવાળા સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે–'तहेव जहा पढमुद्देसए सन्नीण' હે ગૌતમ! સંજ્ઞી જીવોના સંબંધમાં પહેલા ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણેનું કથન કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન અહિંયાં પણ કહેવું જોઈએ. ૪૦ ચાળીસમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં ચારે

स्तथैव चतुर्गतिनारकतिर्यङ्मनुष्यदेवेभ्यः कृष्णलेश्य कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रियाणामपि वक्तव्य इति। 'नवरं बंधो वेओ उदयी उदीरणा लेस्सा बन्धग सन्ना कसाय वेदबंधगाय' नवरं-केवलं प्रथमोद्देशकापेक्षया इदं वैलक्षण्यं तत्र बन्धः ज्ञानावरणीयस्य बन्धका नो अबन्धका। वेदो ज्ञानावरणीयादीनां वेदका नो अवेदकाः। उदयिनो नो अनुदयिनः। कर्मणा मुदीरका वा अनुदीरका वा। लेश्या कृष्णैव, कर्मप्रकृतीनां सप्तविध बन्धका अपि अष्टविधबन्धका अपि। संज्ञा-आहा-

के प्रथम उद्देश में चारों गतियों में से आये हुए जीवों का कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित संज्ञीपंचेन्द्रिय रूप से उपपात कहा गया है उसी प्रकार यहां पर भी चारों गतियों में से आये हुए जीवों का उपपात होता है ऐसा जानना चाहिये। अर्थात् कृष्णलेश्यावालेकृतयुग्म कृतयुग्म संज्ञिपंचेन्द्रिय जीव रूप से चारों गतियों में से आये हुए जीव उत्पन्न होते हैं। 'नवरं बंधो, वेओ, उदयी, उदीरणा, लेस्सा बन्धगसन्ना' कसाय वेद, बंधगाय' परन्तु प्रथमोद्देशक की अपेक्षा यहां यह अन्तर है कि बंध, वेद, उदयी, उदीरणा लेश्या बंधक, संज्ञा, कषाय, और वेद बंधक ये सब दो इन्द्रियों के जैसे कहे गये हैं वैसे यहां कह लेना चाहिये। अर्थात् ये ज्ञानावरणीय आदि कर्मों के बन्धक होते हैं किन्तु अबन्धक नहीं होते हैं, वेदक होते हैं, किन्तु अवेदक नहीं होते हैं, उदयवाले ही होते हैं, किन्तु अनुदयवाले नहीं होते हैं। कर्मों के उदीरक भी होते हैं और अनुदीरक भी होते हैं। इनके कृष्णलेश्या ही होती

ગતિવાળાઓમાંથી આવેલા જીવો કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિ પ્રમાણવાળા સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય પણાથી ઉત્પન્ન થાય છે. તેમ કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ ચારે ગતિયોમાંથી આવેલા જીવોનો ઉપપાત થાય છે, તેમ સમજવું અર્થાત્ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય પણાથી ચારે ગતિયોમાંથી આવેલા જીવો ઉત્પન્ન થાય છે.

'નવરં બંધો, વેઓ, ઉદયી, ઉદીરણા, લેસ્સા, બંધગસન્ના કસાય, વેદ બંધગાય,' પહેલા ઉદ્દેશા કરતા આ કથનમાં એ અંતર છે કે-બંધ, વેદ, ઉદયી, ઉદીરણા, લેશ્યા, બંધક, સંજ્ઞા, કષાય, અને વેદબંધ આ તમામ બેઇન્દ્રિયો ને જે પ્રમાણે કહેલ છે તેજ પ્રમાણે અહિયાં કહેવા જોઈએ. અર્થાત્ આ જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે કર્મોનો બંધ કરવાવાળા પણ હોય છે, અને અબંધક પણ હોય છે. વેદક પણ હોય છે. અને અવેદક પણ હોય છે. ઉદયવાળા પણ હોય છે, અને અનુદયવાળા પણ હોય છે, કર્મોના ઉદીરક પણ હોય છે અને અનુદીરક પણ હોય છે. તેઓને છ એ લેશ્યાઓ હોય

रादिरूपा, वेदः स्त्रीवेदादिः स्त्रीवेदादीनां बन्धकावेति। 'एयाणि' एतानि बन्धादीनि 'जहा बेंदियाणं' यथा द्वीन्द्रियाणं कथितानि तथैव इहापि ज्ञातव्यानि द्वीन्द्रियशतं षट्त्रिंशत्तमशतकम्, तत्र पञ्चत्रिंशत्तमशतकस्यातिदेशः ततः पञ्चत्रिंशत्तमशतकात् सर्वं ज्ञातव्यम् अत्र यद् वैलक्षण्यं तदेव स्पष्टयति-'कण्हलेस्साणं वेदो तिविहो' कृष्णलेश्यानां वेदस्त्रिविधः स्त्रीपुंनपुंसकरूपा त्रयो वेदा भवन्ति, 'अवेदगा नत्थि' कृष्णलेश्यावन्तोऽवेदका न भवन्ति इति। 'संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं' संस्थानम्-अवस्थितिकालो जघन्येन एकं समयं भवति। 'उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं' उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि अन्त-

---

है ये कर्मप्रकृतियों के सप्तविध बन्धक भी होते है और अष्टविध बन्धक भी होते हैं। आहारादि रूप चारों प्रकार की संज्ञावाले होते है। स्त्रीवेदादि रूप तीनों वेदवाले होते है और उनके ये बन्धक होते है। द्वीन्द्रिय शत यह ३६ वां शतक है। इसके निरूपण में ३५ वें शतक का अतिदेश किया गया है इसलिये ३५ वे शतक से ही यह सब जानना चाहिये। यहां वेइन्द्रिय शतक की जो विलक्षणता है वह इस प्रकार से-है'कण्हलेस्साणं वेदो तिविहो' कृष्णलेश्यावालो के तीनवेद होते है, स्त्रीवेद होता है, पुरुषवेद होता है और नपुंसक वेद होता है। 'अवेदगा नत्थि' ये अवेदक नहीं होते हैं। 'संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं' अवस्थिति काल यहां जघन्य से एक समय का है और 'उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं'

છે. તેઓ કર્મપ્રકૃતિયોનો બંધ કરવાવાળા પણ હોય છે. અને અબંધક પણ હોય છે. આહાર વિગેરે ૩૫ ચારે પ્રકારની સંજ્ઞાવાળા હોય છે. સ્ત્રીવેદ વિગેરે ત્રણે વેદવાળા હોય છે. અને તેનો બંધ કરવાવાળા હોય છે. દ્વીન્દ્રિય શતક એ છત્રીસમા શતકમાં આવે છે. તેનું નિરૂપણ કરવામાં ૩૫ પાંત્રીસમા શતકનો અતિદેશ કહેલ છે. તેથી ૩૫ પાંત્રીસમાં શતકમાંથી જ આ તમામ પ્રકરણ સમજી લેવું તેનું સ્પષ્ટી કરણ આ પ્રમાણે છે. 'कण्हलेस्साणं वेदो तिविहो' કૃષ્ણલેશ્યાવાળાને ત્રણ વેદ હોય છે. એટલે કે-સ્ત્રીવેદ, પુરૂષવેદ અને નપુંસક વેદ એ ત્રણે વેદ હોય છે. 'अवेदगा नत्थि' આ અવેદક હોતા નથી 'संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं' અવસ્થિતિ કાળ જઘન્યથી અહિયાં એક સમયનો કહેલ છે અને 'उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं' ઉત્કૃષ્ટથી એક

मुहूर्त्ताभ्यधिकानि, इदं च कृष्णलेश्य संज्ञिपञ्चेन्द्रियावस्थानं सप्तमपृथिव्युत्कृष्ट-स्थिति पूर्वभवपर्यन्तवर्त्तिनं च कृष्णलेश्या परिणाममाश्रित्य कथितमिति । 'एवं ठिईए वि' एवं स्थितावपि एवं संस्थानवदेव स्थितौ अपि जघन्येनैकं समयमुत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि । 'नवरं ठिईए अंतो मुहुत्तमब्भहियाइं न भन्नंति' नवरं-केवलं स्थितौ अन्तर्मुहूर्ताभ्यधिकानि, अवस्थानं पूर्वभवपर्यन्तवर्त्तीकालो-गृहीतः आयुष्कं तु न तदपेक्षया अतोऽन्तर्मुहूर्त्तमिह न कथितमिति अन्तर्मुहूर्त्ता-भ्यधिकानि न भण्यन्ते । 'सेसं जहा एएसिं चेव पढमे उद्देसए जाव अणंतखुत्तो' शेषमवस्थानस्थित्यतिरिक्तं सर्वमपि यथा एतेषां संज्ञिपञ्चेन्द्रियाणामेव चत्वारिं-

उत्कृष्ट से एक अन्तर्मुहूर्त्त अधिक ३३ सागरोपम का है। यहां जो इसका काल कहा गया है वह सप्तम पृथिवी के नारक की उत्कृष्ट स्थिति और पूर्वभव पर्यन्त वर्ती कृष्णलेश्या के परिमाण को आश्रित करके कहा गया है। 'एवं ठिईए वि' संस्थान के जैसे ही स्थिति भी जघन्य से एक समय की और उत्कृष्ट से ३३ सागरोपम की है यहां एक अन्तर्मुहूर्त्त अधिक नहीं कहना चाहिये। अर्थात्-अवस्थान में पूर्वभव पर्यन्तवर्ती काल गृहीत हुआ है। इसलिये वहां एक अन्तर्मुहूर्त्त की अधिकता कही गई है परन्तु आयुष्क में यह अपेक्षा होती नहीं है। इसलिये यहां अन्तर्मुहूर्त्त की अधिकता नहीं कही है। 'सेसं जहा एएसिं चेव पढमे उद्देसए जाव अणंतखुत्तो' इस प्रकार अवस्थान और स्थिति के अतिरिक्त और सब कथन इन संज्ञिपंचेन्द्रियों के सम्बन्ध में ४० वें शतक के प्रथम उद्देशक में जैसा कहा गया है वैसा ही यहां भी

અંતર્મુહૂર્ત અધિક ૩૩ તેત્રીસ સાગરોપમનો છે. અહિયાં જે આ પ્રમાણેનો તેઓનો કાળ કહેલ છે, તે સાતમી પૃથ્વીના નારકની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ અને પૂર્વભવ પર્યન્તમાં રહેલ કૃષ્ણલેશ્યાના પરિણામનો આશ્રય કરીને કહેલ છે.

'एवं ठिईए वि' સંસ્થાનના કથન પ્રમાણે જ સ્થિતિ પણ જઘન્યથી એક સમય અને ઉત્કૃષ્ટથી ૩૩ તેત્રીસ સાગરોપમની છે. અહિયાં એક અંતર્મુહૂર્તનું અધિકપણું કહેલ નથી. અર્થાત્ અવસ્થાનમાં પૂર્વભવ પર્યન્તવતિકાળ ગ્રહણ થયેલ છે. તેથી ત્યાં એક અન્તર્મુહૂર્તનું અધિકપણું કહ્યું છે, પરંતુ આયુષ્યકમાં તે અપેક્ષા રહેતી નથી. તેથી અહિયાં એક અંતર્મુહૂર્તનું અધિકપણું કહેલ નથી 'सेसं जहा एएसिं चेव पढमे उद्देसए जाव अणंतखुत्तो' આ રીતે અવસ્થાન અને સ્થિતિના કથન શિવાય બાકીનું સઘળું કથન આ સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિયના સંબંધમાં ૪૦ ચાળીસમા શત-

शतमशतकस्य प्रथममोद्देशके कथितं तथैवेहापि ज्ञातव्यम् । कियत्पर्यन्तं ? तत्राह- 'जाव' इत्यादि, 'जाव अणंतखुत्तो' यावदनन्तकृत्वः, अथ भदन्त ! सर्वे प्राणा यावत् सर्वे सत्वाः कृष्णलेश्य संज्ञिपञ्चेन्द्रियतया समुत्पन्नपूर्वाः किम्, हे गौतम ! अनन्तकृत्वः समुत्पन्न पूर्वाः इत्युत्तरपर्यन्तं ज्ञातव्यमिति । 'एवं सोलससु वि जुम्मेसु' एवं कृष्णलेश्यकृतयुग्मकृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रियाणां यथा उपपातादिः कथित स्तेनैव रूपेण षोडशसु युग्मेषु कृष्णलेश्य कृतयुग्मत्र्योजाद् द्वितीय युग्मा-दारभ्य कल्योजकल्योजपर्यन्तेषु यावदनन्तकृत्व इत्यादिकं वक्तव्यमिति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति तदेवं भदन्त ! तदेव भदन्त ! इति ॥

जानना चाहिये । और यह कथन यावत् समस्त प्राण यावत् समस्त सत्व अनन्तवार इस रूप से पूर्व में उत्पन्न हो चुके हैं इस पाठ तक ज्यों का त्यों कहलेना चाहिये । 'एवं सोलससु वि जुम्मेसु' जिस रीति से यह कृष्णलेश्यावाले कृतयुग्म कृतयुग्म संज्ञी पचेन्द्रियों का उपपात आदि कहा है उसी प्रकार-से उसी रीति से सोलह युग्मों में-कृष्ण-लेश्यावाले कृतयुग्म त्र्योजराशि संज्ञी पचेन्द्रिय रूप द्वितीययुग्म से लेकर कल्योज कल्योज राशिप्रमित कृष्णलेश्यावाले संज्ञी पंचेन्द्रिय के जीवों में समस्त प्राण यावत् समस्त सत्व अनन्तवार उत्पन्न हो चुके हैं" इत्यादि सब कहलेना चाहिये । । 'सेवं भंते सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! जैसा आपने यह कहा है वह सर्वथा सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतमस्वामीने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

કના પહેલા ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણે કહેલ છે, એજ પ્રમાણે અહીંયાં પણ સમજવું. અને આ કથન યાવત્ સઘળા પ્રાણો સઘળા સત્વો અનંતવાર આ રૂપથી પહેલાં ઉત્પન્ન થઈ ચૂકેલ છે, આ પાઠ સુધી જેમનું તેમ કહેવું જોઈએ. 'एवं सोलससु वि जुम्मेसु' જે પ્રમાણે આ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિયોના ઉપપાત કહેલ છે, એજ પ્રમાણે-સોળે યુગ્મોમાં કૃષ્ણલેશ્ય-વાળા કૃતયુગ્મ ત્ર્યોજ રાશિપ્રમાણવાળા સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય રૂપ બીજા યુગ્મથી લઈને કલ્યોજ કલ્યોજ રાશિપ્રમાણવાળા કૃષ્ણલેશ્યાવાળા સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવોમાં સઘળા પ્રાણો યાવત્ સઘળા સત્વો અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચૂકયા છે, વિગેરે સઘળું કથન કહી લેવું જોઈએ

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે પ્રમાણે કહેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપનું

'पढमसमय कण्हलेस्स कडजुम्मकडजुम्म सन्निपंचिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' प्रथमसमय कृष्णलेश्य कृतयुग्म कृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावद् देवेभ्यो वेति प्रश्नः, उत्तरमाह अतिदेशद्वारेण-'जहा' इत्यादि, 'जहा सन्नि पंचिंदिय-पढमसमय उद्देसए तहेव निरवसेसं' यथा संज्ञिपञ्चेन्द्रिय प्रथमसमयोद्देशके चत्वारिंशच्छतकस्य प्रथमशत द्वितीयोद्देशके तत्रापि अतिदेशेन प्रथमोद्देशके यथा कथितं तेनैव रूपेण निरवशेषं सर्वमपि अत्र भणितव्यम् । 'नवरं ते णं भंते ! जीवा कण्हलेस्सा' नवरं केवलमयं विशेषः ते खलु

'पढमसमय कण्हलेस्स कडजुम्मकडजुम्म सन्नि पंचिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' इत्यादि

टीकार्थ-हे भदन्त ! प्रथम समयवर्ती कृष्णलेश्यावाले कृतयुग्मकृतयुग्म राशिप्रमित संज्ञी जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा तिर्यग्योनिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा देवों में से आकर के उत्पन्नहोते हैं ? अतिदेश द्वारा इस प्रश्न का उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतमस्वामी से कहते हैं- 'जहा सन्निपंचिंदिय पढमसमयउद्देसए तहेव निरवसेसं' हे गौतम ! जैसा प्रथम समयवर्ती संज्ञीपंचेन्द्रियों के उद्देशक में कहा गया है- ४० वें शतक के प्रथम शतके द्वितीय उद्देशक में-वहां पर भी अतिदेश से प्रथम उद्देशक में-जैसा कहा गया है वसी रूप से सब कथन यहां पर

કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા.

'पढमसमय कण्हलेस्स कडजुम्मकडजुम्म पंचिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' હે ભગવન્ પ્રથમ સમયમાં રહેનારા કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મરાશિ પ્રમાણવાળા સંજ્ઞીપંચેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યંચોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીનેઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર અતિદેશ દ્વારા આપતાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'जहा संन्निपंचिंदिय पढमसमयउद्देसए तहेव निरवसेसं' હે ગૌતમ ! પ્રથમ સમયમાં રહેલા સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિયોના સંબંધમાં જે પ્રમાણે કહેલ છે, એટલે કે-૪૦ ચાળીસમા શતકના પહેલા શતકના બીજા ઉદ્દેશા

भदन्त ! जीवाः कृष्णलेश्याः केवलं चत्वारिंशत्तमशतके प्रथमशतापेक्षया द्वितीयशते कृष्णलेश्यपद घटितया प्रश्नः कर्त्तव्यः तथा तद् घटितरूपेण उत्तरं दातव्यमेतदेव वैलक्षण्यमिति, 'सेसं तं चेव' शेषं तदतिरिक्तं सर्वमपि प्रथमसमय कृतयुग्मोद्देशकव देवज्ञातव्यमिति । 'एवं सोलससु वि जुम्मेसु' एवं यथा कृष्णलेश्य-कृतयुग्म कृतयुग्मे कथितं तथैव षोडशसु कृष्णलेश्य कृतयुग्म त्र्योजादारभ्य कल्योज कल्योज पर्यन्तेष्वपि सर्वमुपपातादिकं ज्ञातव्यमिति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥

इति श्री-विश्वविख्यातजगद्वल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि - 'जैनाचार्य' पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां "श्री भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां चत्वारिंशतमे शतके द्वितीयं प्रथमसमय कृष्णलेश्य कृतयुग्म कृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रिय शतम् समाप्तम् ॥

भी कर लेना चाहिये । 'नवरं तेणं भंते ! जीवा कण्हलेस्सा' हे भदन्त ! क्या वे सब जीव कृष्णलेश्यावाले हैं ? 'हंता, कण्हलेस्सा' हां गौतम ! वे सब जीव कृष्णलेश्यावाले हैं-तात्पर्य इसका ऐसा है कि ४० वें शतक के प्रथम शतकी अपेक्षा इस द्वितीय शत में कृष्णलेश्यापद लगाकार प्रश्न कहना कहा गया है और उसी पदको रखकर उत्तर देना कहा गया है यही दोनों में अन्तर है ऐसा जानना चाहिये । 'सेसं तं चेव' इसके सिवाय और सब कथन प्रथम समयवर्ती कृतयुग्मकृतयुग्म राशिप्रमित संज्ञि पचेन्द्रियो के उद्देशक के जैसा ही है । 'एवं सोलससु वि जुम्मेसु' इस प्रकार जैसा कृष्णलेश्या कृतयुग्म कृतयुग्म में कहा गया है वैसा ही कृष्णलेश्य कृतयुग्म त्र्योज से लेकर कल्योज कल्योज तक के सोलह

પ્રમાણે કહેવાનું કહેલ છે. એજ પ્રમાણેનું સઘળું કથન અહિયાં પણ કહેવું જોઈએ. 'नवरं तेणं भंते ! जीवा कण्हलेस्सा' પરંતુ વિશેષપણું એ છે કે-હે ભગવન્ શું તેઓ સઘળા જીવો કૃષ્ણલેશ્યાવાળા હોય છે? 'हंता कण्हलेस्सा' હા ગૌતમ ! તે બધા જીવો કૃષ્ણલેશ્યાવાળા હોય છે. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે ચાળીસમા શતકના પહેલા શતકની અપેક્ષાથી આ બીજા શતકમાં કૃષ્ણલેશ્યાપદ લગાવીને પ્રશ્ન કરવાનું કહેલ છે. અને એજ પદને રાખીને ઉત્તર આપવો જોઈએ. 'सेसं तं चेव' આ કથન શિવાય બાકીનું સઘળું કથન પ્રથમ સમયમાં રહેલ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણવાળા સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિયોના ઉદ્દેશાના કથન પ્રમાણે જ છે. 'एवं सोलससु वि जुम्मेसु' આ રીતે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મમાં કહેલ છે, એજ પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ ત્ર્યોજથી લઈને

युग्मों में भी समस्त उपपात आदि कह लेना चाहिये। 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! जैसा आपने कहा है वह सब कथन सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौममस्वामीने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तपसे आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके चालीसवें शतक का प्रथम समय कृष्णलेश्य कृतयुग्म कृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रिय नाम का द्वितीय शत का द्वितीय उद्देशक समाप्त

કલ્યોજ કલ્યોજ સુધીના સોળ યુગ્મોમાં પણ ઉપપાત વિગેરે સઘળું કથન કહી લેવું જોઇએ.

'સેવં ભંતે ! સેવં ! ભંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કરેલ છે તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા.

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત "ભગવતીસૂત્ર"ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ચાલીસમા શતકનું પ્રથમ સમય કૃષ્ણલેશ્ય કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજ્ઞિપંચેન્દ્રિય નામના બીજા શતકનો બીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥



'एवं एएवि उद्देसगा कण्हलेस्ससए' एवमेतेऽप्रथम समयादारभ्य चरमाचरम समयपर्यन्ता एकादशापि नव उद्देशकाः सङ्कलनया एकादशोद्देशका भवन्ति कृष्णलेश्यशतके। तत्र 'पढमतइयपंचमा सरिसगमा' प्रथम तृतीय पञ्चमा इति उद्देशकत्रयम् सदृशगमं सदृश प्रकारकमिति। 'सेसा अट्ठ वि एक्कगमा' शेषा अष्टौ द्वितीयचतुर्थषष्ठसप्तमाष्टमनवमदशमैकादशोद्देशकाः सदृशाः समानालापका भवन्तीति। 'सेवं भंते! सेवं भंते! तदेव भदन्त तदेवं भदन्त! इति॥

॥ चत्वारिंशत्तमे शतके द्वितीयं संज्ञिमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥४०।२॥

टीकार्थ–'एवं एएवि उद्देसगा कण्हलेस्ससए' इसी रीति से अप्रथम समय से लेकर चरम समय पर्यन्त बाकी के नौ उद्देशक होते हैं–अतः पहिले के दो उद्देशक और ९ उद्देशक ये कुल ११ उद्देशक इस कृष्णलेश्य शतक में होते हैं। इन में 'पढमतइय पंचमा सरिसगमा' प्रथम तृतीय और पंचम वे तीन उद्देशक एक सरीखे आलापवाले हैं और 'सेसा अट्ठ वि एक्कगमा' बाकी के द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम और ११ वां ये आठ उद्देशक समान आलापवाले हैं। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! जैसा आपने कहा है वह सब सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

॥४० वें शतक में दूसरा संज्ञिमहायुग्म शत समाप्त ४०–२॥

'एवं एएवि उद्देसगा कण्हलेस्ससए' આજ રીતથી અપ્રથમ સમયથી લઇને ચરમ અચરમ સમય પર્યન્ત બાકીના નવ ઉદ્દેશાઓ થાય છે. જેથી પહેલાના બે ઉદ્દેશાઓ અને આ નવ ઉદ્દેશાઓ મળીને કુલ ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ આ કૃષ્ણલેશ્યા શતકમાં હોય છે. તેમાં 'पढमतइयपंचमा सरिसगमा' પહેલો ત્રીજો અને પાંચમો એ ત્રણ ઉદ્દેશાઓ એક સરખા આલાપવાળા કહ્યા છે. અને 'सेसा अट्ठ वि एक्कगमा' બાકીના બીજો, ચોથો, છઠ્ઠો સાતમો, આઠમો, નવમો, દશમો, ૧૧ અગિયારમો આ આઠ ઉદ્દેશાઓ સરખા આલાપકોવાળા કહ્યા છે.

सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા. વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા.

॥ ૪૦ ચાળીસમા શતકમાં બીજુ સંજ્ઞી મહાયુગ્મ શતક ॥ સમાપ્ત ॥૪૦–૨॥

॥ अह तइयं सन्निमहाजुम्मसयं ॥

मूलम्—एवं नीललेस्सेसु वि सयं। नवरं संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं दससागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं। एवं तिसु उद्देसएसु सेसं तं चेव। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥

॥ चत्तालीसइमे सए तइयं सन्निमहाजुम्मसयं समत्तं ॥

छाया—एवं नीललेश्येष्वपि शतम्। नवरं संस्थाना जघन्येनैकं समयम् उत्कर्षेण दशसागरोपमाणि पल्योपमस्यासंख्येयभागाभ्यधिकानि। एवं त्रिषूद्देशकेषु शेषं तदेव। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति

॥ चत्वारिंशत्तमे शतके तृतीयं संज्ञिमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥४०।३॥

टीका—'एवं नीललेस्सेसु वि सयं' नीललेश्येष्वपि शतं यथा कृष्णलेश्या शतं निरूपितं तेनैव रूपेण नीललेश्यशतमपि भणितव्यम्। प्रथमसमयादिका एकादशोद्देशका अपि पूर्ववदेव ज्ञातव्याः। 'नवरं संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं' नवरं संस्थाना-अवस्थितिकालः जघन्येनैकं समयम् 'उक्कोसेणं दससागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं' उत्कर्षेण दश सागरोपमाणि पल्योपमस्यासंख्येयभागाभ्यधिकानि पञ्चमनारकपृथिव्या धूमप्रभाया

शतक ४० तृतीय संज्ञि महायुग्म शत

टीकार्थ—'एवं नीललेस्सेसु वि सयं' जिस प्रकार से कृष्णलेश्यावालों के सम्बन्ध में शत निरूपित हुआ है, उसी प्रकार से नीललेश्यावालों के सम्बन्ध में भी शतक निरूपित कर लेना चाहिये। यहां पर भी प्रथम समयादिक ११ उद्देशक पहिले के जैसा ही जानना चाहिये। 'नवरं संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं' परन्तु यहां पर अवस्थान काल जघन्य से एक समय का हैं और उत्कृष्ट से पल्योपम के असं-

---

ત્રીજા સંજ્ઞી મહાયુગ્મ શતકનો પ્રારંભ—

'एवं नीललेस्सेसु वि सयं' જે પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યાવાળાઓના સંબંધમાં શતક કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે નીલલેશ્યાવાળાના સંબંધમાં પણ શતકનું નિરૂપણ કરી લેવું જોઈએ. અહિયાં પણ પ્રથમ સમય વિગેરે ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ પહેલા પ્રમાણે સમજવા 'नवरं संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं' પરંતુ અહિયાં અવસ્થાન કાળ જઘન્યથી એક સમયનો છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી પલ્યોપમના અસંખ્યાત ભાગ અધિક દશ સાગરોપમનો છે. આ

उपरितनप्रस्तटे दशसागरोपमाणि पल्योपमस्यासंख्येयभागाधिकान्यायुः सम्भवति नीललेश्या च तत्र स्यादत उक्तम् 'उक्कोसेणं' इत्यादि, यदिह पूर्वभवस्यान्तिमान्तर्मुहूर्त्तं तत्पल्योपमस्यासंख्येयभागे एव सन्निवेश्य प्रकृष्टमिति न भेदेन कथितमिति भावः। 'एवं ठिईए वि' एवं भवस्थितिकालवदेव स्थितावपि ज्ञातव्यम्। इति। 'एवं तिसु उद्देसएसु' एवं त्रिष्वपि प्रथमतृतीयपञ्चमेषूद्देशकत्रयेषु नवर मित्यादिना कथितं वैलक्षण्यं ज्ञातव्यम्। 'सेसं नवरमित्यादिना यद्वैलक्ष्यं दर्शितं तदतिरिक्तं सर्वं प्रथम शतवदेव ज्ञातव्यम्, इहापि एकादशोद्देशकाः

ख्यात वें भाग अधिक दश सागरोपम का है। यह उत्कृष्ट काल पांचवीं धूमप्रभा नरक पृथिवी के ऊपर के प्रतर की अपेक्षा से कहा गया है। क्यों कि यहां पर उत्कृष्ट आयु पल्योपम के असंख्यात वें भाग से अधिक दश सागरोपम की है वहां नीवलेश्या है। यहां जो पूर्व भव का अन्तिम अन्तर्मुहूर्त्त गणना में नहीं आया है उसका कारण उसका पल्योपम के असंख्यात वें भाग में समाविष्ट कर लेना है। 'एवं ठिईए वि' अवस्थान काल के जैसी ही भवस्थिति यहां है। 'एवं तिसु उद्देसएसु' 'नवरम्' पद से जो अवस्थान काल में एवं भवस्थिति में यह भिन्नता कृष्णलेश्याशत की अपेक्षा प्रकट की गई है सो ऐसी ही भिन्नता इनकी प्रथम तृतीय और पञ्चम इन तीन उद्देशकों में भी जाननी चाहिये। 'सेसं त चेव' बाकी का और सब कथन प्रथम शत के ही जैसा है। यहां पर भी पूर्व के जैसे ११ उद्देशक हैं और इन

ઉત્કૃષ્ટકાળ પાંચમી ધૂમપ્રભા નરક પૃથ્વીના ઉપરના પ્રતરની અપેક્ષાથી કહેલ છે. કેમ કે ત્યાં ઉત્કૃષ્ટ આયુષ્ય પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગથી વધારે દશ સાગરોપનું છે. ત્યાં નીલલેશ્યા છે. અહિયાં જે પૂર્વભવનું છેલ્લુ અંતમુહૂર્ત ગણનામાં આવેલ નથી. તેનું કારણ તેનો પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગમાં સમાવેશ કરી લેવાનુ છે.

'एवं ठिईए वि' અવસ્થાન કાળમાં કહ્યા પ્રમાણેનું જ ભવસ્થિતિનું કથન કહેલ છે 'एवं तिसु उद्देसएसु' 'नवरम्' પદથી જે અવસ્થાન કાળમાં અને ભવસ્થિતિમાં આ ભિન્નપણુ કૃષ્ણલેશ્યા શતકની અપેક્ષાથી પ્રગટ કરેલ છે અને એજ પ્રમાણેનું ભિન્નપણુ તેના પહેલા, ત્રીજા, અને પાચમા આ ત્રણ ઉદ્દેશાઓમાં પણ સમજવું. सेसं तं चेव' બાકીનું બીજુ સઘળુ કથન પહેલા શતકના કથન પ્રમાણે જ છે. અહિયાં પણ પહેલા પ્રમાણે ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ છે. અને તે બધામાં આલાપકોનો પ્રકાર પણ પહેલા કહ્યા પ્રમાણેનો જ છે.

पूर्ववदेव ज्ञातव्याः सर्वत्राऽऽलापप्रकारः पूर्ववदेवोहनीयः 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ।

॥ इति श्री विश्वविख्यात–जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचक–पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक–श्रीशाहूच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त–
'जैनाचार्य' पदभूषित—कोल्हापुरराजगुरु–
बालब्रह्मचारि — जैनाचार्य — जैनधर्मदिवाकर
–पूज्यश्री घासिलालव्रतिविरचितायां श्री "भग-
वतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायां चत्वारिंशत्तमे शतके
तृतीयं नीललेश्य संज्ञि महायुग्म
शतं समाप्तम् ॥४०–३॥

सब में आलाप प्रकार भी पूर्वके ही जैसा है । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! आपका यह सब कथन सर्वथा सत्य ही २ इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तपसे आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।४०।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके चालीसवें शतक का
तृतीय नीललेश्य संज्ञि महायुग्म शत समाप्त ॥४०–३॥

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું આ વિષય સંબંધી સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભવગન્આપ દેવાનુપ્રિયે કહેલા આ સઘળુ કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા.

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્ર'ની
પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ચાળીસમા શતકમાં ત્રીજુ નીલલેશ્યાવાળુ
સંજ્ઞી મહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત ॥૪૦–૩॥



'अह चउत्थ सन्निमहाजुम्मसयं'

मूलम्–एवं काउलेस्ससयं पि। नवरं संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तिन्नि सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं। एवं ठिईए वि, एवं तिसु वि उद्देसएसु सेसं तं चेव। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥

चत्तालीसइमे सए चउत्थं सन्निमहाजुम्मसयं समत्तं॥४०–४॥

छाया––एवं कापोतलेश्यशतमपि। नवरं संस्थाना जघन्येनैकं समयम् उत्कर्षेण त्रीणि सागरोपमाणि पल्योपमस्यासंख्येयभागाभ्यधिकानि एवं स्थितावपि। एवं त्रिष्वपि उद्देशकेषु, शेषं तदेव! तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति।

॥ इति चत्वारिंशत्तमे शतके चतुर्थं संज्ञिमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥४०।४॥

टीका––'एवं काउलेस्ससयं पि' एवं यथा कृष्णलेश्यशत कथितं तथैव कापोतलेश्यशतमपि वक्तव्यम्। अत्रापि पूर्ववदेव औघिकप्रथमसमयाद्यारभ्य चरमाचरमसमयपर्यन्ता एकादशोद्देशका अपि वक्तव्याः। केवलं पूर्वापेक्षयाऽस्य शतस्य यद्वैलक्षण्यं तद्दर्शयति–'नवरं' इत्यादिना, 'नवरं संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं

शतक ४० चतुर्थ संज्ञि महायुग्म शत

'एवं काउलेस्ससयं वि–नवरं संचिट्ठणा' इत्यादि

टीकार्थ–जैसा कृष्णलेश्यावालों के सम्बन्ध में पूर्व शत में कहा गया है उसी प्रकार से कापोतलेश्यावालों के सम्बन्ध में भी यह शत कह लेना चाहिये। यहां पर भी पूर्व के जैसे औघिक प्रथम समय आदि से लेकर चरमाचरम समय तक ११ उद्देशक हैं। परन्तु जो भिन्नता पूर्व की अपेक्षा इस शत में है वह 'नवरं संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं तिन्नि सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भ-

ચોથા સંજ્ઞિ મહાયુગ્મ શતકનો પ્રારંભ—

'एवं काउलेस्ससयं वि नवरं संचिट्ठणा' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—કૃષ્ણલેશ્યાવાળાઓના સમ્બન્ધમાં પૂર્વશતકમાં કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે કાપોતલેશ્યાવાળાઓના સમ્બન્ધમાં પણ આ શતક કહેવું જોઈએ અહિયાં પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે ઔઘિક પ્રથમ સમય વિગેરેથી લઈને ચરમાચરમ સમય સુધી ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ થાય છે. પરંતુ જે ભિન્નપણું પહેલા શતકો કરતાં આ કથનમાં આવે છે તે 'नवरं संचिट्ठणा जहण्णेणं'

समयं' संस्थाना–अवस्थितिकालो जघन्येनैकं समयम् 'उक्कोसेणं तिन्नि सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं' उत्कर्षेण त्रीणि सागरोपमाणि पल्योपमस्यासंख्येयभागाभ्यधिकानि इदं तु कथनं तृतीयपृथिव्या उपरितन प्रस्तटस्थितिमाश्रित्य तृतीय पृथिव्या उपरितनप्रस्तटे पल्योपमस्यासंख्येयभागाधिकानि त्रीणि सागरोपमाण्यायुर्भवतीति पूर्वभवान्तिमान्तर्मुहूर्त्तं तु पार्थक्येन न कथितं तादृशान्तर्मुहूर्त्तस्य पल्योपमासंख्येभाग एव समाविष्टत्वादिति। 'एवं ठिईए वि' एवं स्थितावपि स्थितिरपि जघन्येन एकसमयात्मिका उत्कर्षेण पल्योपमस्यासंख्येयभागाधिका त्रिसागरोपमप्रमाणैव ज्ञातव्या इति। 'एवं तिसु वि उद्देसएसु' एवं त्रिष्वपि प्रथमतृतीयपञ्चमेषूद्देशकेषु अवस्थानकालस्थितिकालौ जघन्योत्कृष्टाभ्यां क्रमशः कथितप्रकारेण समयमात्रः, पल्योपमासंख्येयभागाभ्य-

---

हियाइं' इस सूत्र पाठ द्वारा सूत्रकार प्रकट करते हैं–यहां अवस्थान काल जघन्य से एक समय का है और उत्कृष्ट से पल्योपम के असंख्यातवें भाग से अधिक तीन सागरोपम का है। यह कथन तृतीय पृथिवी के उपरितन प्रस्तट की स्थिति को लेकर कहा गया है। क्योंकि यहां पर पल्योपम के असंख्यातवें भाग से अधिक तीन सागरोपम की स्थिति है। यहां पर भी पूर्वभव अन्तर्मुहूर्त्त पृथक्रूप से नहीं कहा गया है क्योंकि इसका समावेश पल्योपम के असंख्यातवें भागमें कहा है। 'एवं ठिईए वि' उसी के जैसी स्थिति भी है। अर्थात् जघन्य स्थिति एक समय की और उत्कृष्ट स्थिति पल्योपम के असंख्यात वें भाग से अधिक तीन सागरोपम की है। 'एवं तिसु वि उद्देसएसु' इसी प्रकार से अवस्थान काल और स्थितिकाल जघन्य और उत्कृष्ट प्रथम, तृतीय और पंचम

एक्कं समयं उक्कोसेणं तिन्नि सागरोवमाइं पलियोवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા સૂત્રકારે પ્રકટ કરેલ છે. અહિયાં અવસ્થાનકાળ જઘન્યથી એક સમયનો છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી પલ્યોપમના અસંખ્યાતા ભાગથી વધારે ત્રણ સાગરોપમનો છે. આ કથન ત્રીજી પૃથ્વીના ઉપરના પ્રસ્તરની સ્થિતિને લઈને કહેલ છે. કેમ કે–અહિયાં પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગથી વધારે ત્રણ સાગરોપમની સ્થિતિ છે. અહિયાં પણ પૂર્વભવનો અંતર્મુહૂર્ત અલગરૂપથી કહેલ નથી કેમ કે તેનો સમાવેશ પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગમાં કહેલ છે. 'एवं ठिईए वि' અને સ્થિતિ પણ તેના પ્રમાણે જ છે. અર્થાત્ જઘન્ય સ્થિતિ એક સમયની કહેલ છે. અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ પલ્યોપમના અસંખ્યતમા ભાગથી વધારે ત્રણ સાગરોપમની છે. 'एवं तिसु वि उद्देसएसु' આજ પ્રમાણે અવસ્થાનકાળ અને સ્થિતિકાળ જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટથી પહેલા,

धिक त्रिसागरोपमप्रमाणश्चेति ज्ञातव्यौ। 'सेसं तं चेव' शेषं-तदतिरिक्तं सर्वम् एषूद्देशकत्रितयेषु तथा शेषाष्टोदेशकेषु प्रथमशतवदेव ज्ञातव्यमिति। अत्रापि पूर्ववदेवैकादशोद्देशका ज्ञातव्या इति। 'सेवं भंते! सेवं भंते त्ति तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति।

॥ चत्वारिंशत्तमे शतके चतुर्थ संज्ञिमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥४०।४॥

॥ 'अह पंचमं सन्निमहाजुम्मसयं' ॥

मूलम्—एवं तेउलेस्सेसु वि सयं। नवरं संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं। एवं ठिईएसु वि। नवरं नो सन्नोवउत्ता वा। एवं तिसुवि उद्देसएसु सेसं तं चेव। सेवं भंते सेवं भंते! त्ति।४०-५।

इन उद्देशकों का भी है ऐसा जानना चाहिये। 'सेसं तं चेव' बाकीका और सब कथन इन ३ उद्देशकों में एवं अवशिष्ट आठ उद्देशकों में प्रथम शतक के जैसा ही जानना चाहिये। यहां पर भी पूर्व के जैसे ही ११ उद्देशक हैं। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! जैसा आपने यह कहा है वह सब कथन सर्वथा सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतमस्वामीने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे गौतम संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये॥

४० वें शतक में यह चतुर्थ संज्ञि महायुग्म शत समाप्त ॥४०-४॥

ત્રીજા, અને પાંચમા ઉદ્દેશાઓમાં પણ છે તેમ સમજવું 'સેસં તં ચેવ' તે શિવાય બાકીનું બીજુ સઘળું કથન આ ઉદ્દેશામાં અને બાકીના આઠ ઉદ્દેશામાં પહેલા કહ્યા પ્રમાણે ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ કહ્યા છે.

'સેવં ભંતે! સેવં ભંતે! ત્તિ' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણે આ વિષયમાં કહેલ છે. તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું આ વિષય સંબધીનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ।।સૂ૦૧।।

।।ચાળીસમા શતકમાં આ ચોથું સંજ્ઞિમહાયુગ્મ નામનું શતક સમાપ્ત ।।૪૦-૪।।

छाया—एवं तेजोलेश्येष्वपि शतम् । नवरं संस्थाना जघन्येन एकं समयम् उत्कर्षेण द्वे सागरोपमे पल्योपमस्यासंख्येयभागाभ्यधिके । एवं स्थितावपि । नवरं नो संज्ञोपयुक्ता वा । एवं त्रिष्वपि उद्देशकेषु शेषं तदेव । तदेवं भदन्त ! तदेव भदन्त ! इति ॥४०।५॥

टीका—'एवं तेउलेस्सेसु वि सयं' एवं तेजोलेश्येष्वपि शतम्, तेजोलेश्यः कृतयुग्म कृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं, नैरयिकेभ्यो यावद्देवेभ्यो वा आगत्योत्पद्यन्ते ? इत्यादि समग्रमपि एतच्छतकीय प्रथमशत मत्रावर्णनीयम् । प्रथमशतापेक्षया यद्वैलक्षण्यं तद्दर्शयति-'नवरं' इत्यादिना-'नवरं संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं' नवरं संस्थाना-अवस्थितिकालो जघन्येन एकं समयम्, 'उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं' उत्कर्षेण द्वे सागरोपमे पल्योपमस्यासंख्येयभागाभ्यधिके पल्योपमा

शतक ४० पांचवां संज्ञि महायुग्म शत

'एवं तेउलेस्सेसु वि सयं' इत्यादि

टीकार्थ-हे भदन्त ! कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित तेजोलेश्यावाले संज्ञि पंचेन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा यावत् देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? इत्यादि रूप से सम्पूर्ण प्रथम शत इसी ४० वें शतक का यहां कह लेना चाहिये परन्तु यहां जो प्रथम शत की अपेक्षा कथन में अन्तर है, उसे 'नवरं संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं, पलिओवमस्स असंखेज्जइभाग मब्भहियाइं' सूत्रकार ने इस सूत्रपाठ द्वारा प्रदर्शित किया है-यहां

॥પાંચમા સંજ્ઞી મહાયુગ્મ શતકનો પ્રારંભ—

'एवं तेउलेस्सेसु वि सयं' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ-હે ભગવન્ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણુવાળા તેજોલેશ્યાવાળા સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ વિગેરે પ્રકારથી આ ચાળીસમા શતકનું પહેલું શતક સંપૂર્ણ રીતે અહિયાં કહેવું જોઈએ. પરંતુ તે પહેલા શતકના કથન કરતાં અહિયાં જે વિશેષપણું છે, તે 'नवरं संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं' સૂત્રકારે આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ કરેલ છે. અહિયાં અવસ્થાન કાળ જઘન્યથી

संख्येयभागाधिक सागरद्वयात्मकावस्थान काल कथनमीशानदेव परमायुराश्रित्य ज्ञातव्यमिति । 'एवं ठिईए वि' एवं स्थितावपि एवमायुषः स्थितिरपि जघन्योत्कृष्टाभ्यामेकसमयप्रमाणा पल्योपमासंख्येयभागाभ्यधिकद्विसागरोपमप्रमाणा च भवतीति भावः । 'नवरं नोसन्नोवउत्ता वा' नवरं तेजोलेश्य संज्ञिपञ्चेन्द्रिया नो संज्ञोपयुक्ता वा भवन्तीति । 'एवं तिसु वि उद्देसएसु' एवमेव त्रिष्वपि प्रथम तृतीय पञ्चमोद्देशकेष्वपि अवस्थिति स्थित्यादे ज्ञातव्यम् 'सेसं तं चेव' शेष-तदतिरिक्तं सर्वं त्रिषूद्देशकेषु शेषाष्टोद्देशकेषु च तदेव प्रथमशतकोक्तमेव ज्ञातव्यमिति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥

॥ चत्वारिंशत्तमे शतके पंचमं संज्ञिमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥४०।५॥

अवस्थान काल जघन्य से एक समय का और उत्कृष्ट से पल्योपम के असंख्यातवें भाग से अधिक दो सागरोपम का है ऐसे अवस्थान काल का कथन यहां तेजोलेश्या की उत्कृष्ट स्थिति को लेकर कहा गया है । क्यों कि ईशानदेवलोक के देवों की उत्कृष्ट आयु पल्योपम के असंख्यातवें भाग से अधिक दो सागरोपम की है । 'एवं ठिईए वि' स्थितिकाल भी अवस्थान काल के जैसा ही है । 'नवरं नो सन्नोवउत्ता' ये तेजोलेश्यावाले संज्ञि पंचेन्द्रिय जीव नो संज्ञोपयुक्त भी होते हैं । 'एवं तिसु वि उद्देसएसु' इसी प्रकार से अवस्थानकाल और स्थिति काल आदि का कथन प्रथम, तृतीय और पंचम इन तीन उद्देशकों में भी कर लेना चाहिये 'सेसं तं चेव' इनके अतिरिक्त और सब कथन अवशिष्ट आठ उद्देशकों में ३ तीन और ८-११ उद्देशों में प्रथम शतक में जैसा कहा गया है वैसा ही है । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! जैसा आपने यह कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है २ ।

એક સમયનો અને ઉત્કૃષ્ટથી પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગથી વધારે બે સાગરોપમનો છે. એવા અવસ્થાન કાળનું કથન અહિયાં તેજોલેશ્યાની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિને લઈને કહેલ છે. કેમકે-ઈશાન દેવમાં દેવોનું ઉત્કૃષ્ટ આયુ પલ્યો-પમના અસંખ્યાત ભાગથી વધારે બે સાગરોપમનું છે. 'एवं ठिईए वि' સ્થિતિકાળ પણ અનવસ્થાનકાળ પ્રમાણે જ છે. 'एवं तिसुवि उद्देसएसु' આજ પ્રમાણે અવસ્થાનકાળ અને સ્થિતિકાળનું કથન પહેલા, ત્રીજા, અને પાંચમા આ ત્રણ ઉદ્દેશાઓમાં પણ કરી લેવું જોઈએ. આ કથન શિવાય બીજુ સઘળું કથન બાકીના આઠ ઉદ્દેશાઓમાં ૩ અને ૮-૧૧ ઉદ્દેશાઓમાં પહેલા શતકમાં જે પ્રમાણે કહેલ છે, એજ પ્રમાણે છે.

॥ 'अह छट्ठं महाजुम्म सयं' ॥

मूलम्—जहा तेउलेस्सा सयं तहा पम्हलेस्सासयं पि। नवरं संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं। एवं ठिईए वि। नवरं अंतोमुहुत्तं न भन्नइ। सेसं तं चेव। एवं एएसु पंचसु सएसु जहा कण्हलेस्सासए गमओ तहा नेयव्वो जाव अणंतखुत्तो। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

॥ चत्तालीसइमे सए छट्ठं महाजुम्मसयं समत्तं ॥

छाया--यथा तेजोलेश्याशतं तथा पद्मलेश्याशतमपि। नवरं संस्थाना जघन्येनैकं समयम् उत्कर्षेण दश सागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्त्ताभ्यधिकानि। एवं स्थितावपि नवरमन्तर्मुहूर्त्तं न भण्यते शेषं तदेव। एवमेतेषु पञ्चसु शतेषु यथा कृष्णलेश्याशते गमक स्तथा नेतव्यो यावदनन्तकृत्वः। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त!

॥ चत्वारिंशत्तमे शतके षष्ठं संज्ञिमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥४०।६॥

टीका--'जहा तेउलेस्सासयं तहा पम्हलेस्सासयं पि' यथा तेजोलेश्य

इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

॥४० वें शतक में यह पांचवां संज्ञि महायुग्मशत समाप्त हुआ ॥४०-५॥

शतक ४० छट्ठा महायुग्म शत

'जहा तेउलेस्सासयं तहा पम्हलेस्सासयं पि' इत्यादि ४०-६॥

टीकार्थ-जिस प्रकार ११ उद्देशकों से समन्वित तेजोलेश्या शत

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે પ્રમાણે કહેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી અને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા.

॥ચાળીસમા શતકમાં આ પાંચમું સંજ્ઞિ મહાયુગ્મ નામનું શતક સમાપ્ત॥ ॥૪૦-૫॥

છઠ્ઠા મહાયુગ્મ શતકનો પ્રારંભ—

'जहा तेउलेस्सासयं तहा पम्हलेस्सासयं वि ઈત્યાદિ

જે પ્રમાણે અગિયાર ઉદ્દેશાઓવાળું તેજોલેશ્યા શતક કહેલ છે, એજ

शतमेकादशोद्देशकसंयुक्तं भणितं तथा तेनैव प्रकारेण पद्मलेश्याशतमपि एकादशोद्देशकसंयुक्तं भणितव्यम्। एवमेव तेजोलेश्याशते यत् यत्-यथा-यथा कथितं तत् तत् सर्वं तेनैव रूपेणात्र पद्मलेश्याशतेऽपि ज्ञातव्यमिति। तेजोलेश्यशतापेक्षया यद्वैलक्षण्यं तद्दर्शयति-'नवरं' इत्यादिना 'नवरं संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं' नवरं संस्थाना-तेषामवस्थितिकालो जघन्येन एकं समयम्-एकसमयात्मकः 'उक्कोसेणं दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं' उत्कर्षेणावस्थितिकालो दशसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्ताभ्यधिकानि। उत्कर्षेण दश सागरोप-

कहा गया है। उसी प्रकार से यह पद्मलेश्याशत भी एकादश उद्देशकों से समन्वित करके कह लेना चाहिये। इस प्रकार तेजोलेश्याशत में जैसा जैसा कहा गया है वैसा वैसा पद्मलेश्या शत में भी कहना चाहिये। परन्तु जो उसकी अपेक्षा यहां भिन्नता है उसे सूत्रकारने 'नवरं संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं' इस सूत्रपाठ द्वारा प्रकट किया है-यहां अवस्थान काल जघन्य से एक समय का और उत्कृष्ट एक अन्तर्मुहूर्त्त अधिक दश सागरोपम का है। उत्कृष्ट से अवस्थान काल जो इस प्रमाण का कहा गया है वह ब्रह्मलोक के देवों की आयु को आश्रित कर के कहा गया है। ब्रह्मलोक में पद्मलेश्या होती है और वहां इतनी आयु होती है। यहां जो इसे एक अन्तर्मुहूर्त्त को विशेषित किया है वह पूर्वभव के अन्तिम अन्तर्मुहूर्त्त को आश्रित कर के किया है।

પ્રમાણે આ પદ્મલેશ્યા શતક પણ અગિયાર ઉદ્દેશાઓથી યુક્ત કહેવું જોઈએ. આ રીતે તેજોલેશ્યા શતકમાં જે જે રીતથી કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે આ પદ્મલેશ્યા શતકમાં પણ કહેવું જોઈએ. પરંતુ તે કથન કરતાં આ કથનમાં જે વિશેષપણું છે તે સૂત્રકારે 'नवरं संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं' આ સૂત્ર પાઠ દ્વારા પ્રગટ કરેલ છે. અહિયાં અવસ્થાનકાળ રહેવાનો સમય જઘન્યથી એક સમયનો અને ઉત્કૃષ્ટથી એક અંતર્મુહૂર્ત દશ સાગરોપમનો છે. ઉત્કૃષ્ટથી અવસ્થાન કાળનું જે આ પ્રમાણ કહેલ છે, તે બ્રહ્મલોકના દેવોની આયુષ્યનો આશ્રય કરીને કહેલ છે બ્રહ્મલોકમાં પદ્મલેશ્યા હોય છે અને ત્યાં તે પ્રમાણેનું આયુષ્ય હોય છે. અહિયાં જે તેને એક અંતર્મુહૂર્તનું વિશેષણ કહેલ છે તે પૂર્વભવના છેલ્લા અંતર્મૂહૂર્તનો આશ્રય કરીને કહેલ છે 'एवं ठिईए वि' સ્થિતિકાળ પણ અવસ્થાન કાળ પ્રમાણેનો જ છે. 'नवरं अंतोमुहुत्तं न भन्नइ' પરંતુ સ્થિતિકાળના

माणीत्यादि यत् कथितं तद् 'ब्रह्मलोकदेवानामायुराश्रित्येति ज्ञातव्यम्, ब्रह्मलोके हि पद्मलेश्या भवति एतावदायुश्च भवति अन्तर्मुहूर्त्तं च भाक्तन भवावसानवर्त्तीति 'एवं ठिईए वि' एवं स्थितावपि स्थितिरपि जघन्योत्कर्षाभ्यामेतावत् प्रमाणैव। 'नवरं अंतोमुहुत्तं न भन्नइ' नवरं केवलं स्थितौ अन्तर्मुहूर्त्तं न भण्यते दशसागरोपममात्रमेव वक्तव्यमिति । 'सेसं तं चेव' शेषं-नवरमित्यादिना यत् कथितं तदतिरिक्तं सर्वं तेजोलेश्यावदेव वक्तव्यमिति । 'एवं एएसु पंचसु सएसु जहा कण्हलेस्साए गमओ तहा नेयव्वो' एतेषु पञ्चसु शतेषु कृष्णनीलकपोततेजः पद्मलेश्याशतेषु यथा कृष्णलेश्याशते गमकस्तथैव गमको नेतव्यः सर्वाण्यपि एतानि शतानि कृष्णलेश्यशतवदेव ज्ञातव्यानि, इति । एकादश एकादशौधिकाद्युद्देशयुक्तानि । कियत्प-

'एवं ठिईए वि' स्थितिकाल भी अवस्थानकाल के जैसा ही है। 'नवरं अंतोमुहुत्तं न भन्नइ' परन्तु स्थितिकाल के कथन में अन्तर्मुहुर्त्त नहीं है अतः यहां स्थितिकाल केवल दश सागरोपम का ही है। एक अन्तमुहूर्त्त अधिक दश सागरोपम का नहीं है। 'सेसं तं चेव' इन के सिवाय-अवस्थान और स्थिति काल के विना और सब कथन यहां तेजोलेश्या के कथन के जैसा ही है। 'एवं एएसु पंचसु सएसु जहा कण्हलेस्साए गमओ तहा नेयव्वो' इस प्रकार इन पांच शतों में कृष्ण, नील, कापोत, तेज, और पद्मलेश्या शतों में-कृष्णलेश्या शत में जैसा पाठ कहा गया है उसी प्रकार से पाठ कहना चाहिये। ये सब शत ११-११ उद्देशकों में से युक्त हैं। कृष्णलेश्या शत के जैसे समस्त प्राण, यावत् समस्त सत्व कृष्णलेश्यावाले जीव रूप से पहिले यावत् अनन्तवार उत्पन्न हो चुके हैं। यहां तक का कथन

કથનમાં અંતર્મૂહૂર્ત હોતું નથી. તેથી અહિયાં સ્થિતિકાળ કેવળ દસ સાગરો-પમનો જ છે. એક અંતર્મુહૂર્ત અધિક દસ સાગરોપમનો નથી 'सेसं तं चेव' આ કથન સિવાય અવસ્થાન અને સ્થિતિકાળના કથન શિવાય બાકીનું સઘળું કથન અહિયાં તેજોલેશ્યાના કથન પ્રમાણે જ છે. 'एवं एएसु पंचसु सएसु जहा कण्हलेस्साए गमओ तहा नेयव्वो' આ રીતે આ પાંચ શતકોમાં એટલે કે કૃષ્ણ, નીલ, કાપોત તેજો અને પદ્મ લેશ્યાવાળા શતકમા કૃષ્ણલેશ્યા વાળા શતકમાં જે પ્રમાણે કહેલ છે, એજ પ્રકારનું કથન સઘળી લેશ્યાઓના સંબંધમાં કહેવું જોઈએ આ બધા શતકો ૧૧-૧૧ અગિયાર અગિયાર ઉદ્દેશાઓવાળા થાય છે. કૃષ્ણલેશ્યાવાળા શતકનો પાઠ સઘળા પ્રાણો યાવત્ સઘળા સત્વો કૃષ્ણલેશ્યાવાળા જીવ પણાથી પહેલાં યાવત્ અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે. આ કથન સુધીનું કથન અહિયાં કહેવું જોઈએ.

र्यन्तं कृष्णलेश्याशतवज्ज्ञातव्यं तत्राह–'जाव' इत्यादि, 'जाव अणंतखुत्तो' याव-दनन्तकृत्वः उपपातादारभ्य अथ भदन्त ! सर्वे प्राणाः यावत्सर्वे सत्त्वाः कृष्णादि-लेश्यतया समुत्पन्नपूर्वाः किम् ? गौतम ! सर्वे प्राणाः यावत्सर्वे सत्त्वाः असकृत् अनन्तकृत्वो वा समुत्पन्नपूर्वाः कृष्णलेश्यादि लेश्यतया, एतत्पर्यन्तं ज्ञातव्यमिति 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥

॥ चत्वारिंशत्तमे शतके षष्ठं संज्ञिमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥४०।६॥

॥ 'अह सत्तमं सन्निमहाजुम्मसयं

मूलम्–सुक्कलेस्ससयं जहा ओहिसयं। नवरं संचिट्ठणा ठिईय जहा कण्हलेस्ससए सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

चत्तालीसइमे सए सत्तमं सन्नि महाजुम्मसयं समत्तं ॥४०–७॥

छाया–-शुक्ललेश्यशतं यथौघिकशतम्। नवरं संस्थाना स्थितिश्च यथा-कृष्णलेश्यशते। शेषं तथैव यावदनन्तकृत्वः। तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति

॥ चत्वारिंशत्तमे शतके सप्तमं संज्ञिमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥४०।७॥

यहां कहना 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! जैसा आपने यह कहा है वह सर्वथा सत्य ही हैं २। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर बिराज-मान हो गये।

४० वें शतक में यह छट्ठा संज्ञि महायुग्म शत समाप्त हुआ ॥४०–६॥

शतक ४० सातवां संज्ञि महायुग्म शत

'सुक्कलेस्ससयं जहा ओहिसयं' इत्यादि०

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ આ વિષયમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણેનું કથન કરેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે, હે ભગવન આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ।સૂ૦૧।।

।।ચાળીસમાં શતકમાં છટ્ઠું સંજ્ઞિ મહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત ।।૪૦–૬।।

સાતમા સંજ્ઞિ મહાયુગ્મ શતકનો આરંભ––

'सुक्कलेस्ससयं जहा ओहिसयं' ઇત્યાદિ

टीका--'सुक्कलेस्ससयं जहा ओहियसयं' शुक्ललेश्यशतं यथौघिकशतम्' एतस्यैव चत्वारिंशत्तमशतकस्य यत् प्रथमं शतं तत् औघिकशतं तस्मिन् प्रथमशतके कृतयुग्मकृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रियाणां येन रूपेणोत्पातादिकं कथितं तेनैव रूपेण उपपातादिकं यथावन्निरूप्य शुक्ललेश्यशतमपि भणितव्यम्। प्रथम शतापेक्षया यद्वैलक्षण्यं तद्दर्शयति 'नवरं' इत्यादिना-'नवरं संचिट्ठणा ठिईय जहा कण्हलेस्सए' नवरं-केवलं संस्थानाऽवस्थितिकालः स्थितिरायुषो यथा कृष्णलेश्यशते अवस्थितिकालो जघन्येन एकं समय मुत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्त्ताभ्यधिकानि शुक्ललेश्यावस्थानमित्यर्थः। एतच्च पूर्वं भवगतान्तिमान्त-

टीकार्थ-जैसा औघिक शत कहा गया है वैसा ही शुक्कललेश्या वाले जीवों के सम्बन्ध में भी कह लेना चाहिये। चालीश वें शतक का जो प्रथम शत है उसका नाम औघिक शत है। उस प्रथम शत में कृतयुग्म कृतयुग्म संज्ञि पञ्चेन्द्रिय जीवों का जिस रूप से उत्पाद आदि कहा गया है उसी रूप से कृतयुग्म कृतयुग्म राशिप्रमित शुक्ललेश्यावाले इन संज्ञि पञ्चेन्द्रिय जीवों का भी इस शत में उत्पाद आदि कह लेना चाहिये। 'नवरं संचिट्ठणा ठिई य जहा कण्हलेस्ससए' परन्तु उस प्रथम शत की अपेक्षा इस शुक्ललेश्य शत में अवस्थान और स्थिति को लेकर भिन्नता है। यहां अवस्थान काल और स्थितिकाल कृष्णलेश्य शत में जैसा कहा गया है वैसा ही है। इस प्रकार अवस्थान काल यहां पर जघन्य से १ समय का और उत्कृष्ट से अन्तर्मुहूर्त्त

ટીકાર્થ-ઔઘિક શતકમાં જે પ્રમાણેનું કથન કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન શુક્લલેશ્યાવાળા જીવોના સમ્બન્ધમાં પણ શતક કહેવું જોઈએ. ચાળીસમા શતકનું જે પહેલું શતક છે, તેનુ નામ ઔઘિક શતક કહેલ છે. તે પહેલા શતકમાં કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવોનો ઉત્પાદ જે પ્રમાણે કહેલ છે, એજ પ્રમાણે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણવાળા શુક્લલેશ્યાવાળા આ સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય જીવોના આ શતકમાં ઉત્પાદ વિગેરે કહેવા જોઈએ. 'नवरं संचिट्ठणा ठिई य जहा कण्हलेस्ससए' પરંતુ તે પહેલાં શતકની અપેક્ષાએ આ શુક્લલેશ્યા શતકમાં અવસ્થાન અને સ્થિતિ સંબંધી જૂદાપણું કહેલ છે. અહિયાં અવસ્થાન કાળ અને સ્થિતિ કાળ કૃષ્ણલેશ્યાશતકમાં જે પ્રમાણે કહેલ છે, એજ પ્રમાણે છે. આ રીતે અહિયાં અવસ્થાનકાળ જઘન્યથી ૧ એક સમયનો અને ઉત્કૃષ્ટથી અન્તર્મૂહૂર્ત વધારે ૩૩ તેત્રીસ સાગરોપમનો

मुहूर्त्तम्, अनुत्तरविमानदेवायुश्च आश्रित्य विज्ञेयम् स्थितिस्तु त्रयस्त्रिंशत्सागरो-पमाणीति। अत्र 'अन्तर्मुहूर्त्ताभ्यधिकानि' इति न वक्तव्यमिति 'सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो' शेषं नवरमित्यादिना यत् कथितं तदतिरिक्तं सर्वं परिमाणादिकं

अधिक ३३ सागरोपम यहां उत्कृष्ट से जो इतना काल कहा गया है वह पूर्वभव के अन्तिम अन्तर्मुहूर्त्त को लेकर तो अन्तर्मुहूर्त्त अधिक कहा है और अनुत्तर देवों की उत्कृष्ट आयु ३३ सागरोपम की होती है और वहीं शुक्ललेश्या होती है। इस भाव को आश्रित कर ३३ सागरोपम काल कहा है। स्थिति के सम्बन्ध में भी ऐसा ही कथन है। परन्तु ३३ सागरोपम को यहां 'एक अन्तर्मुहूर्त्त से अधिक' इस विशे-षण से विशेषित नहीं किया है। 'सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो' बाकी का और सब उत्पाद आदि का कथन प्रथम शत के जैसा ही है। इस प्रकार यहां प्रथमशत का कथन 'समस्त प्राण यावत् समस्त सत्व कृतयुग्म कृतयुग्म राशि प्रमित शुक्ललेश्यावाले संज्ञि पंचेन्द्रिय जीव रूप से अनन्तवार उत्पन्न हो चुके हैं' इस अन्तिम पाठ तक का यहां पर कथन करना चाहिये। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! जैसा आपने यह कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर

કહેલ છે. અહિયાં ઉત્કૃષ્ટથી જે આટલો કાળ કહેલ છે, તે પૂર્વભવના છેલ્લા અંતર્મુહૂર્તને લઈને અંતર્મુહૂર્ત અધિક કહેલ છે. અને અનુત્તર દેવોનું ઉત્કૃષ્ટ આયુષ્ય ૩૩ સાગરોપમનું હોય છે. અને શુકલલેશ્યાનું આયુષ્ય પણ એજ પ્રમાણે હોય છે. આ ભાવનો આશ્રય કરીને ૩૩ તેત્રીસ સાગરોપમકાળ કહેલ છે. સ્થિતિના સંબંધમાં પણ એજ પ્રમાણેનું કથન સમજવું પરંતુ ૩૩ તેત્રિસ સાગરોપમને અહિયાં એક અંતર્મુહૂર્તથી અધિક એમ કહેલ નથી. 'સેસં તહેવ જાવ અણંતખુત્તો' બાકીનું બીજું સઘળું એટલે કે ઉત્પાદ વિગેરે સંબંધી કથન પહેલા શતકમાં કહ્યા પ્રમાણે છે. આ રીતે અહિયાં પહેલા શતકનું કથન સઘળા પ્રાણો યાવત્ સઘળા સત્વો કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ, રાશિ-પ્રમાણવાળા શુકલલેશ્યાવાળા સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય જીવ પણાથી અનંતવાર ઉત્પન્ન થઇ ચુકેલ છે, આ છેલ્લા પાઠ સુધીનુ કથન અહિયાં કહેવું જોઇએ.

'સેવં ભંતે! સેવં ભંતે! ત્તિ' હે ભગવન્ આ વિષયમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણે કહેલ છે. તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનુ સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને

तदेव प्रथमशतवदेव ज्ञातव्यं यावत् अनन्तकृत्वः । एतत्पर्यन्तं प्रथमशतमिहाध्येतव्यमिति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त इति ॥

इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यानैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित — कोल्हापुरराजगुरु-
बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य — जैनधर्मदिवाकर
पूज्य श्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री
"भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायाम् चत्वारिंशत्तमे शतके सप्तमं
संज्ञिमहायुग्मशतं समाप्तम् ।।४०।७।।

गौतमने प्रभुश्री को वन्दना और नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके चालीसवें शतक का
सातवां संज्ञि महायुग्म शत समाप्त ४०-७।।

वंदना करी तेओने नमस्कार कर्या वंदना नमस्कार करीने ते पछी संयम अने तपथी पोताना आत्माने भावित करता थका पोताना स्थान पर बिराजमान थया. ।।सू०१।।

जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री पूज्य श्री घासीलालजी महाराजकृत 'भगवतीसूत्रनी प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याना चाळीसमा शतकमां सातमुं शतक समाप्त ।।४०-७।।



'अह अट्ठमं सन्निमहाजुम्मसयं' ॥

मूलम्—भवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्मसन्निपंचिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति ? जहा पढमं सयं तहा णेयव्वं भवसिद्धियाभिलावेणं। नवरं सव्वपाणा० णो इणट्ठे समट्ठे। सेसं तहेव। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

चत्तालीसइमे सए अट्ठमं सन्निमहाजुम्मसयं समत्तं ॥४०-८॥

छाया—भवद्धिककृतयुग्मकृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? यथा प्रथमं संज्ञिशतं तथा ज्ञातव्यं भवसिद्धिकाऽभिलापेन। नवरं सर्वे प्राणाः० नायमर्थः समर्थः। शेषं तदेव। तदेवं भदन्त ! २ इति ॥

॥ चत्वारिंशत्तमे शतके अष्टमं संज्ञिमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥४०-८॥

टीका—'भवसिद्धिककडजुम्मकडजुम्मसन्निपंचिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' भवद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावद्देवेभ्यो वा आगत्योत्पद्यन्ते इति प्रश्नः। उत्तरमाह—अतिदेशद्वारेण—'जहा' इत्यादि, 'जहा पढमं सन्निसयं तहा नेयव्वं भवसिद्धिया-

---

शतक ४० आठवां संज्ञि महायुग्म शत

'भवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्म सन्नि पंचिंदियाणं भंते !' इत्यादि

टीकार्थ—हे भदन्त ! भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म संज्ञि पंचेन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा यावत् देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—'जहा पढमं सन्निसयं तहा नेयव्वं भवसिद्धिय अभिलावेणं' हे गौतम ! जिस प्रकार से

આઠમાં સંજ્ઞિ મહાયુગ્મ શતકનો પ્રારંભ—

'भवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्म सन्निपंचिदियाणं भंते ! ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતાં પ્રભુશ્રી અતિદેશથી કહે છે કે—'जहा पढमं सन्निसयं तहा नेयव्वं भवसिद्धिय अभिलावेणं' હે ગૌતમ ! જે પ્રમાણે

भिलावेणं' यथा प्रथमं संज्ञिशतं तथा ज्ञात०म्, भवद्धिकाभिलापेन एतस्य चत्वारिंशत्तमशतकप्रथमशते संज्ञिपञ्चेन्द्रियाणामुपपातो येन रूपेण कथित स्तेनैव रूपेण भवसिद्धिकाभिलापेन 'भवसिद्धिककृतयुग्मकृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु एवं रूपाभिलापेन उपपातादि वर्णनीयः। अत्रापि एकादशोद्देशका वक्तव्याः। संज्ञिपञ्चेन्द्रियशतापेक्षया यद्वैलक्षण्यं तद्दर्शयति-'नवरं' इत्यादि, 'नवरं सव्वपाणा, णो इणट्ठे समट्ठे' नवरं सर्वे प्राणाः० नायमर्थः समर्थः, हे भदन्त! सर्वे प्राणा यावत् सर्वे सत्त्वाः किं भवसिद्धिककृतयुग्मकृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रियतया समुत्पन्नपूर्वाः, इति प्रश्नस्य प्रथमशते अनन्तकृत्वः समुत्पन्नपूर्वा इत्युत्तरं दत्तम्, इहतु 'नायमर्थः समर्थः' सर्वे जीवाः नाम संज्ञिपञ्चेन्द्रियत्वे भवसिद्धिकतया समु-

इसी ४० वें शतकके प्रथम शतक में संज्ञिपंचेन्द्रिय जीवों का उपपात कहा गया है उसी प्रकार से भवसिद्धिक अभिलाप से-हे'भदन्त! भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म संज्ञि पंचेन्द्रिय जीव 'इस रूप अभिलाप से-इनको भी उपपात आदि वर्णित कर लेना चाहिये। यहां पर भी ११ उद्देशक हैं। संज्ञि पंचेन्द्रिय शत की अपेक्षा जो इस शत में भिन्नता है वह 'नवरं सव्वे पाणा णो इणट्ठे समट्ठे' इस सूत्रपाठ द्वारा प्रकट की गई है-अर्थात् 'हे भदन्त! समस्त प्राण यावत् समस्त सत्व क्या कृतयुग्म कृतयुग्म संज्ञि पंचेन्द्रिय रूप से पहिले उत्पन्न हो चुके हैं? हां, गौतम! यावत् अनन्तवार वे इस रूप से उत्पन्न हो चुके हैं' ऐसा उत्तर प्रभुश्रीने कहा है। सो ऐसा उत्तर इस प्रश्न का यहां पर नहीं कहना। क्यों कि समस्त प्राण यावत् समस्त सत्व यहां संज्ञि

આ ચાળીસમા શતકના પહેલા શતકમાં સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય જીવોનો ઉપપાત કહેલ છે, એજ પ્રમાણે ભવસિદ્ધિક અભિલાપથી હે ભગવન્! ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજ્ઞિપંચેન્દ્રિય જીવો આ પ્રમાણેના અભિલાપથી તેઓના ઉપપાત વિગેરેનું વર્ણન કરી લેવું જોઈએ. અહિયાં ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ કહેલ છે. તે 'નવરં સવ્વે પાણા ણો इणट्ठे समट्ठे' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ કરવામાં આવેલ છે. અર્થાત્ હે ભગવન સઘળા પ્રાણો યાવત્ સઘળા સત્વો શું ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય પણાથી પહેલાં ઉત્પન્ન થઈ ચુકેલા છે? હા ગૌતમ! યાવત્ અનંતવાર તેઓ એ રૂપથી ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે. આ પ્રમાણેનો પ્રશ્નોત્તર પ્રભુશ્રીએ કહેલ છે તો આ પ્રમાણેનો ઉત્તર અહિયાં કહેવાનો નથી. કેમ કે-સઘળા પ્રાણો યાવત્ સઘળા સત્વો આ રૂપથી અનંતવાર ઉત્પન્ન થયા નથી. આ કથન શિવાય બાકીનું સઘળું કથન પહેલા શતક પ્રમાણે જ છે.

ष्पक्षपूर्वा इत्युत्तरम् अत एतद् उभयोः शतयो वैलक्षण्यमिति । 'सेसं तहेव' शेषं भवरमित्यनेन यत् कथितं तदतिरिक्तं सर्वं प्रथम शतवदेव ज्ञातव्यम् । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥

॥ चत्वारिंशत्तमे शतके अष्टमं संज्ञिमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥४०।८॥

॥ 'अह नवमं सन्निमहाजुम्मसयं' ॥

मूलम्—कण्हलेस्स भवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्म सन्नि-पंचिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति ? एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहियकण्हलेस्ससयं सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

चत्तालीसइमे सए नवमं सन्निमहाजुम्मसयं समत्तं ॥४०—९॥

छाया— कृष्णलेश्य भवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते एवमेतेनाभिलापेन यथा औघिककृष्णलेश्यशतम् । तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥

॥ चत्वारिंशत्तमे शतके नवमं संज्ञिमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥४०।९॥

पञ्चेन्द्रिय में भवसिद्धिक रूप से अनन्तवार उत्पन्न नहीं हुए हैं । 'सेसं तहेव' बाकी का और सब कथन प्रथम शतक के जैसा ही है । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! आप का यह कथन सर्वथा सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना एवं नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

॥४० वें शतक में यह आठवां महायुग्मशत समाप्त ४०—८॥

शतक नौवां महायुग्मशत

'कण्हलेस्स भवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्म सन्निपंचिंदियाणं भंते !'

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું આ કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન આપનું આ કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા.

॥ચાળીસમા શતકમાં આ આઠમું મહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત ॥૪૦-૮॥

નવમા મહાયુગ્મ શતકનો પ્રારંભ—

'कण्हलेस्स भवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्म सन्निपंचिंदियाणं भंते ! ઇત્યાદિ

शतमपि एकादशोद्देशकयुक्तं भवति केवलं कृष्णपदस्थाने नीलपदं घटयित्वा शतं वक्तव्यम्, तथाहि–नीललेश्य भवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावद्देवेभ्य इति प्रश्नं कृत्वा चतुर्गतिकेभ्य आगत्य नीललेश्यभवसिद्धिकतया समुत्पद्यन्ते इत्यादिकं सर्वम् औधिकनीललेश्यशतमिव सर्वं ज्ञातव्यमिति संक्षेपः, सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं

यह बतलाया गया है कि जैसा कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म संज्ञि पचेन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में ११ उद्देशकों से युक्त शत कहा गया है। सो वैसा ही यह शत भी कहना चाहिये। परन्तु यहां कृष्णलेश्या पद के स्थान में नीललेश्य पद को जोड़कर आलापक कहना चाहिये। जैसे–नीललेश्यावाले भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म संज्ञि पचेन्द्रिय जीव हे भदन्त ! किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों से आकर के उत्पन्न होते हैं ? अथवा यावत् देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? इस प्रश्न के उत्तर में ऐसा कहना चाहिये कि ये चारों गतियों में से आकर के उत्पन्न होते हैं इत्यादि रूप से सब कथन औधिक नीललेश्य शत के जैसा ही जानना चाहिये। 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! जैसा आपने यह नीललेश्य भवसिद्धिक के विषय में कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को

અતિદેશ દ્વારા એ કહ્યું છે કે–જે પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ વાળું શતક કહેવામાં આવેલ છે, તે એજ પ્રમાણેનું આ શતક પણ કહેવું પરંતુ આ શતકમાં કૃષ્ણલેશ્યા પદના સ્થાનમાં નીલલેશ્યા એ પદ મૂકીને આલાપકો કહેવા જોઈએ. જેમ કે–નીલલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ સંજ્ઞિપંચેન્દ્રિય જીવો હે ભગવન્ કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં એવું કહેવું જોઈએ કે–તેઓ ચારે ગતિયોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે. વિગેરે પ્રકારથી સઘળું કથન ઔધિક કૃષ્ણલેશ્યા શતકના કથન પ્રમાણે જ સમજવું.

'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ નીલલેશ્યા ભવસિદ્ધિકના વિષયમાં જે પ્રમાણેનું કથન કરેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે આ

भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति, हे भदन्त ! नीललेश्य भवसिद्धिकविषये यद् देवानुप्रियेण कथितं तत्सर्वं सर्वथैव सत्यमिति कथयित्वा गौतमो यावत् यथासुखं विहरतीति ॥

॥ चत्वारिंशत्तमे शतके दशमं संज्ञिमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥४०।१०॥

'११-१४ संनिमहाजुम्मसयाइं'

मूलम्-एवं जहा ओहियाणं सन्नि पंचिंदियाणं सत्त सयाणि भणियाणि एवं भवसिद्धिएहि वि सत्त सयाणि कायव्वाणि। नवरं सत्तसु वि सएसु सव्व पाणा० जाव णो इणट्ठे समट्ठे, सेसं तं चेव। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।

भवसिद्धिय सया समत्ता

चत्तालीसइमे सए ११-१४ सन्निमहाजुम्मसयाणि समत्ताणि

छाया--एवं यथौधिकानि संज्ञिपञ्चेन्द्रियाणां सप्त शतानि भणितानि एवं भवसिद्धिकैरपि सप्तशतानि कर्त्तव्यानि। नवरं सप्तस्वपि शतेषु सर्वप्राणा यावत् नायमर्थः समर्थः। शेषं तदेव। तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥

॥ भवसिद्धिकशतानि समाप्तानि ॥

चत्वारिंशत्तमे शतके एकादशादारभ्य चतुर्दशं
संज्ञिमहायुग्मशतं समाप्तम् ।४०।११-१४॥

वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

॥४० वें शतक में यह १० वां संज्ञि महायुग्म शत समाप्त ४०-१०॥

शतक ४० ग्यारहवां, बारहवां, तेरहवां, और चौदहवां, महायुग्म शत

'एवं जहा ओहियाणि सन्निपंचिंदियाणं सत्त सयाणि भणियाणि एवं भवसिद्धिएहिं वि सत्त सयाणि कायव्वाणि ।४०-१०॥

પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા.

ચાળીસમા શતકમાં આ દસમું સંજ્ઞિમહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત ॥૪૦-૧૦॥

અગ્યારમા બારમા તેરમા ચૌદમા મહાયુગ્મોનો આરંભ--

एवं जहा ओहियाणि सन्नि पंचिंदियाणं सत्त सयाणि भणियाणि एवं भवसिद्धिए हि वि सत्त सयाणि कायव्वाणि'

टीका--'एवं जहा ओहियाणि सन्निपंचिंदियाणं सत्त सयाणि भणियाणि' एवं यथा औधिकानि संज्ञिपञ्चेन्द्रियाणां सप्तशतानि प्रथमम् औघिकम्, द्वितीयं कृष्णलेश्यम् २, तृतीयं नीललेश्यम् ३, चतुर्थं कापोतलेश्यम् ४, पञ्चमं तेजोलेश्यम् ५, षष्ठं पद्मलेश्यम् ६, सप्तमं शुक्कलेश्यम् ७, एवंरूपाणि औघिक संज्ञिपञ्चेन्द्रियसम्बन्धीनि चत्वारिंशत्तमशतकस्य प्रथमद्वितीयतृतीयचतुर्थपष्ठसप्तमरूपाणि शतानि भणितानि-कथितानि 'एवं भवसिद्धिएहि वि सत्त सयाणि कायव्वाणि' एवं भवसिद्धिकैरपि सप्तशतानि कर्त्तव्यानि तत्र प्रथममौधिकं भवसिद्धिशतम् १, द्वितीयं कृष्णलेश्यभवसिद्धिकशतम्, तृतीयं नीललेश्यभवसिद्धिकशतम् ३, चेतित्रयं भवसिद्धिकशतं पूर्वं कथितम्, अस्मिन् सूत्रे तु

टीकार्थ-जैसे संज्ञि पंचेन्द्रियों के सम्बन्ध में सात औघिक शतक कहे गये हैं। वैसे ही संज्ञि पंचेन्द्रिय भवसिद्धिकों के सम्बन्ध में भी सात शतक कह लेना चाहिये औधिक संज्ञि पंचेन्द्रियों के वे सात शतक इस प्रकार से हैं-औघिकशत १, कृष्णलेश्यशत २, नीललेश्य शत ३, कापोतलेश्यशत ४, तेजोलेश्यशत ५, पद्मलेश्यशत ६, और शुक्ललेश्यशत ७, इस प्रकारसे ये संज्ञि पचेन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में ४० वें शतक में प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, षष्ठ और सप्तम शत रूप से कहे गये हैं। इसी प्रकार से 'भवसिद्धिएहि वि सत्त सयाणि कायव्वाणि' भवसिद्धिक जीवों के सम्बन्ध में भी सात शत कह लेना चाहिये। इन में प्रथम औघिक भवसिद्धिक शत है १ द्वितीय कृष्णलेश्य भवसिद्धिक शत है। तृतीय नीललेश्य भवसिद्धिक शत है। ये तीन भवसिद्धिक शत तो पहिले कहे जा चुके है। इस सूत्र में तो

સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિયોના સમ્બન્ધમાં સાત ઔઘિક શતકો કહેલા છે, એજ પ્રમાણે સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય ભવસિદ્ધિકોના સંબંધમાં પણ સાત શતકો કહેવા જોઈએ. સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિયોના તે સાત ઔઘિક શતકો આ પ્રમાણે છે.-ઔઘિક શતક ૧ કૃષ્ણલેશ્યા શતક ૨ નીલલેશ્યા શતક ૩ કાપોતલેશ્યા શતક ૪ તેજોલેશ્યા શતક ૫ પદ્મલેશ્યા શતક ૬ અને શુકલલેશ્યા શતક ૭ આ રીતે આ ઔઘિક સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવોના સંબંધમાં ચાળીસમા શતકમાં પહેલા, બીજા, ત્રીજા, ચોથ', પાંચમાં, છઠા અને સાતમા શતક રૂપથી કહેલ છે. એજ પ્રમાણે 'भवसिद्धिएहि वि सत्तसयाणि कायव्वाणि' ભવસિદ્ધિક જીવોના સંબંધમાં પણ સાત શતકો કહેવા જોઇએ. તેમાં પહેલું ઔઘિક ભવસિદ્ધિક શતક છે. ૧ બીજુ કૃષ્ણલેશ્ય ભવસિદ્ધિક શતક છે. ત્રીજુ નીલલેશ્ય ભવસિદ્ધિક શતક છે. આ ત્રણ શતકોતો પહેલા કહેલા છે. આ સૂત્રમાં તો કેવળ કાપોત, તેજ,

कापोत-तेजः-पद्म-शुक्ललेश्याविशिष्टानि चत्वारि शतानि एवं सङ्कलितानि सप्तशतानि प्रत्येकमेकादशोदेशकगर्भितानि क्रमेण कर्त्तव्यानि। आलापप्रकारस्तु सर्वत्र पूर्ववदेव कर्त्तव्य इति। 'नवरं सत्तसु वि सव्व पाणा जाव णो इणट्ठे समट्ठे' नवरं-केवलमौघिकशतापेक्षया इदमेव वैलक्षण्यं यत् सप्तस्वपि शतेषु सर्वे प्राणा यावत् सर्वे सत्त्वाः औघिक भवसिद्धिककृष्णलेश्यादिक भवसिद्धिकतया समुत्पन्नपूर्वाः किमिति प्रश्नं कृत्वा नायमर्थः समर्थः, एवं रूपेण सर्वत्रापि उत्तर मुन्नेयम्, सेसं तं चेव' शेषं नवर-मित्यनेन यद्वैलक्षण्यं प्रतिपादितं ततोऽन्यत् सर्वम्-औघिक संज्ञिपञ्चेन्द्रियसप्तशतसदृशमेव ज्ञातव्यमिति। 'सेव भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! २ इति।

॥चत्वारिंशत्तमे शतके एकादशशतादारभ्य चतुर्दशशतपर्यन्तं
चत्वारि संज्ञिमहायुग्मशतानि समाप्तानि ॥४०-११-१४॥

केवल कापोत, तेज, पद्म और शुक्ल इन लेश्याओं से विशिष्ट चार ही शत कहे हैं। अतः सब मिलकर कुल सात शत हो जाते हैं। ये सात शत हैं प्रत्येक शत ११ उद्देशक कों से युक्त हैं। अतः इन में प्रत्येक में आलाप प्रकार पूर्व में जैसा कहा गया है वैसा कहलेना चाहिये 'नवरं सत्तसु वि सएसु सव्वपाणा जाव णो इणट्ठे समट्ठे' परन्तु यहां ऐसा नहीं कहना चाहिये कि समस्त प्राण यावत् समस्त सत्व औघिक भवसिद्धिक रूप से अथवा कृष्णलेश्यावाले भवसिद्धिक रूप से पहिले यावत् अनन्तवार उत्पन्न हो चुके हैं। यही विलक्षणता यहां औघिकशत की अपेक्षा से है। 'सेसं तं चेव' बाकी का और सब कथन औघिक संज्ञी पञ्चेन्द्रिय सप्त शत के जैसा ही है। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! जैसा आपने यह कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है २।

પદ્મ અને શુક્લ આ લેશ્યાઓથી યુક્ત ચાર શતકો જ કહેલા છે. તેથી બધા મળીને કુલ ૭ સાત શતકો થઇ જાય છે. આ સાતે શતકોમાં-દરેક શતકોમાં ૧૧-૧૧ અગિયાર અગિયાર ઉદ્દેશાઓ કહેલા છે તેથી દરેકમાં આલાપકોનો પ્રકાર પહેલાં કહ્યા પ્રમાણેનો સમજવો 'नवरं सत्तसु वि सएसु सव्वपाणा जाव नो इणट्ठे समट्ठे' પરંતુ અહિયાં એ પ્રમાણે કહેવું જોઈએ કે-સઘળા પ્રાણો યાવત્ સઘળા સત્વો ઔઘિક ભવસિદ્ધિક પણાથી અથવા કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક પણાથી પહેલાં યાવત્ અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચૂકેલ છે. ઔઘિક શતકના કથન કરતાં અહિયાં એજ જુદાપણું છે. 'सेसं तं चेव' બાકીનું બીજુ સઘળું કથન ઔઘિક પંચેન્દ્રિય શતકના કથન પ્રમાણે જ છે.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં

॥ 'अह पन्नरसमं सन्नि महाजुम्मसयं'

मूलम्-अभवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्म सन्नि पंचिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति? उववाओ तहेव अणुत्तरविमाणवज्जो। जहा परिमाणं अवहारो उच्चत्तं बंधो वेदो वेदणं उदयो उदीरणा य कण्हलेससए। कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा। नो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। नो नाणी, अन्नाणी, एवं जहा कण्हलेस्ससए। नवरं नो विरया अविरया नो विरयाविरया संचिट्ठणा ठिईय जहा ओहिय उद्देसए। समुग्घाया आदिल्ला पंच। उव्वट्टणा तहेव अणुत्तरविमाणवज्जं। सव्वपाणा जाव णो इणट्ठे समट्ठे, सेसं जहा कण्हलेस्ससए जाव अणंतखुत्तो। एवं सोलससु वि जुम्मेसु। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति। ॥४०-१५-१॥

पढमसमय अभवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्म सन्नि पंचिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति? जहा-सन्नीणं पढमसमय उद्देसए तहेव। नवरं सम्मत्तं सम्मामिच्छत्तं नाणं च सव्वत्थ

इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

॥ इस प्रकार ४० वें शतक में ग्यारहवें शत से लेकर चौदहवें शततक के चार संज्ञि महायुग्म शत समाप्त हुए ॥

જે પ્રમાણે કહેલ છે. તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન આપ દેવાનુપ્રિયનું કહેલ સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદનાકરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥આ રીતે ચાળીસમા શતકમાં અગિયારમાં શતકથી લઈને ચૌદમા શતક સુધીના ચાર સંજ્ઞિ મહાયુગ્મ શતકો સમાપ્ત ॥૪૦-૧૧-૧૪॥

नत्थि सेसं तहेव। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥४०-१५-२॥

एवं एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा कायव्वा पढमतइय पंचमा एक्कगमा सेसा अट्ठ वि एक्कगमा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति। चत्तालीसइमे सए पन्नरसमं सन्नि महाजुम्म सयं समत्तं।४०-१५।

छाया--अभवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? उपपात स्तथैव अनुत्तरविमनवर्जः। परिमाणमपहार उच्चत्वं बन्धो वेदन मुदय उदीरणा च यथा कृष्णलेश्यशते। कृष्णलेश्या वा यावत् शुक्ललेश्या वा नो सम्यग्दृष्टयः मिथ्यादृष्टयः नो सम्यग् मिथ्यादृष्टयः। नो ज्ञानिनः अज्ञानिनः एवं यथा कृष्णलेश्यशते। नवरं नो विरताः अविरताः नो विरताविरता। संस्थाना स्थितिश्च यथा औधिकोद्देशके। समुद्घाता आद्याः पञ्च उद्वर्तनाः तथैवानुत्तरविमानवर्जाः सर्वे प्राणाः यावत् नायमर्थः समर्थः शेषं यथा कृष्णलेश्यशते यावदनन्तकृत्वः। एवं षोडस्वपि युग्मेषु तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति॥४०।१५।१॥

प्रथमसमयाभवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? यथा संज्ञिनां प्रथमसमयोद्देशके तथैव। नवरं सम्यक्त्वं सम्यङ् मिथ्यात्वं ज्ञानं च सर्वत्र नास्ति। शेषं तथैव। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति॥४०।१५।२॥

एव मत्रापि एकादशोद्देशकाः कर्त्तव्याः प्रथमतृतीयपञ्चमाः एकगमकाः, शेषा अष्टावपि एकगमकाः। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति।

चत्वारिंशत्तमे शतके पञ्चदशं महायुग्मशतं समाप्तम्।४०।१५

टीका-'अभवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्मसन्निपंचिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति' अभवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्य-

---

'अभवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्म सन्निपंचिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति।

टीकार्थ—हे भदन्त! अभवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञि पञ्चेन्द्रिय जीव किस स्थान विशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं? क्या वे

પંદરમાં સંજ્ઞિ મહાયુગ્મ શતકનો પ્રારંભ--

'अभवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्म पंचिंदियाण भंते! कओ उववज्जंति'

ટીકાર્થ-હે ભગવન્ અભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મકૃતયુગ્મ સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાનવિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને

न्ते ? किं नैरयिकेभ्य आगत्य यावद्देवेभ्य आगत्य समुत्पद्यन्ते इति प्रश्नः, भगवानाह–अतिदेशद्वारेण–'उववाओ' इत्यादि, 'उववाओ तहेव अनुत्तरविमाणवज्जो' उपपात स्तथैव अनुत्तरविमानवर्जः अनुत्तरविमानदेवान् परित्यज्यान्यतः सर्वत एव नैरयिकतिर्यग्मनुष्यदेवेभ्य उपपात एषां वक्तव्य इति । 'परिमाणं अवहारो उच्चत्तं बंधो वेदो वेयणं उदीरणा य जहा कण्हलेस्ससए' परिमाणमपहार उच्चत्तं बंधो वेदो वेदनमुदय उदीरणा च यथा कृष्णलेश्यशते कृष्णलेश्यशते च द्वीन्द्रिय शतकस्यातिदेशः कृतः, तत्रापि एकेन्द्रियशतातिदेशोऽतोयथा परिमाणादिकमुदीरणान्तं कथितं तथैवेहापि यथासम्भवं तत्र तत्रतः ज्ञातव्यम् । 'कण्हलेस्सा

नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? यावत् देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? इसका अतिदेश द्वारा प्रभु उत्तर देते हुए कहते हैं– 'उववाओ तहेव अनुत्तर विमानवज्जो' हे गौतम ! अनुत्तरविमावासी देवों को छोडकर सब जगहोंसे नैयिरकों में से, तिर्यग्योनिकों में से मनुष्यों में से और देवो में से–इनका उपपात होता है । 'परिमाणं अवहारो, उच्चत्तं बंधो, वेदो, वेयणं, उदीरणा य जहा कण्हलेस्ससए' परिमाण अपहार ऊंचाई बन्ध, वेद वेदन, उदीरणा ये सब कृष्णलेश्यशतके जैसे जानने चाहिये । कृष्णलेश्य शत में द्वीन्द्रिय शतक का अतिदेश किया गया है । द्वीन्द्रिय शतक में भी एकेन्द्रिय शतका अतिदेश हुआ है । इसलिये वहां परिमाण से लेकर उदीरणा तकका कथन जैसा किया गया है उसी प्रकार से यहां पर भी इनका कथन यथा संभव वहीं से जानना चाहिये । 'कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा

ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે–'उववाओ तहेव अणुत्तरविमाणवज्जो' હે ગૌતમ ! અનુત્તર વિમાનવાસી દેવોને છોડીને દરેક સ્થળોમાંથી અર્થાત્ નૈરયિકોમાંથી તિર્યંચયોનિકોમાંથી, મનુષ્યોમાંથી, અને દેવોમાંથી તેઓનો ઉપપાત થાય છે. 'परिमाणं अवहारो, उच्चत्तं, बंधो, वेदो, वेयणं, उदीरणा य जहा कण्हलेस्ससए' પરિમાણ અપહાર ઉંચાઇ, બન્ધ, વેદ, વેદન ઉદીરણા આ બધા કૃષ્ણલેશ્યા શતકમાં દ્વીન્દ્રિય શતકનો અતિદેશ–ભલામણ કરેલ છે. અને દ્વીન્દ્રિય શતકમાં પણ એકેન્દ્રિય શતકનો અતિદેશ કરેલ છે. તેથી ત્યાં પરિમાણથી લઇને ઉદીરણા સુધીનું કથન જે રીતે કરેલ છે, એજ રીતે અહિયાં પણ યથાસંભવ તેઓનું કથન ત્યાના કથન પ્રમાણે કરી લેવું. 'कण्हलेस्सा वा, जाव सुक्कलेस्सा वा' આ અભવસિદ્ધિક

वा जाव सुक्कलेस्सा वा' इमे अभवसिद्धिकाः कृष्णलेश्या भवन्ति यावत् शुक्ल-लेश्या वा भवन्ति यावत् पदेन नीलकापोततेजःपद्मलेश्यानां संग्रहो भवतीति। 'नो सम्मदिट्ठी' इमे अभवसिद्धिका नो सम्यग्दृष्टयो भवन्ति किन्तु 'मिच्छादिट्ठी' मिथ्यादृष्टयो भवन्ति 'नो सम्मामिच्छादिट्ठी' नो न वा सम्यग्मिथ्यादृष्टयो मिश्रदृष्टयो भवन्तीति। 'नो नाणी अन्नाणी' नो ज्ञानिनो भवन्ति, किन्तु अज्ञानिनः तत्रापि नियमतो ऽयज्ञानिनः मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनो विभङ्गज्ञानिनश्चेति। 'एवं जहा कण्णलेस्ससए' एवं यथा कृष्णलेश्यशतके कथितं तथैवात्रापि एतस्यैव द्वितीयशते ज्ञातव्यमिति। कृष्णलेश्यशतापेक्षया यद्वैलक्षण्यं तद्दर्शयति 'नवरं नो विरया अविरया नो विरयाविरया, नवरं विशेषस्तावदयम्-इमे अभव-

---

वा' 'ये अभवसिद्धिक जीव कृष्णलेश्यावाले होते हैं यावत् शुक्ललेश्या-वाले होते हैं। यहां यावत्पद से 'नील, कापोत तेजः और पद्मले-श्याओं का संग्रह हुआ है। 'नो सम्मदिट्ठि 'ये सम्यग्दृष्टि नहीं होते हैं। किन्तु-'मिच्छादिट्ठि' मिथ्यादृष्टि ही होते हैं। 'नो सम्मामिच्छा-दिट्ठी' ये मिश्रदृष्टि भी नहीं होते हैं। 'नो नाणी, अन्नाणी' ये ज्ञानी नहीं होते हैं अज्ञानी ही होते हैं। अज्ञान में इनके तीन अज्ञान होते हैं-मति अज्ञान श्रुत अज्ञान और विभंगज्ञान ये तीन अज्ञान होते हैं 'एवं जहा कण्हलेस्ससए' इस प्रकार से जैसा कृष्णलेश्य शतक में कहा गया है वैसा ही यहां पर समझना चाहिये। कृष्णलेश्यशत इसी ४० वें शतकका द्वितीय शत है। 'नवरं नो विरया अविरया, नो विरया विरया' कृष्णलेश्य शतकी अपेक्षा यहां जो अन्तर आता है

જીવો કૃષ્ણલેશ્યાવાળા હોય છે. નીલલેશ્યાવાળા હોય છે કાપોતલેશ્યાવાળા હોય છે. તેજોલેશ્યાવાળા હોય છે. અને પદ્મલેશ્યાવાળા હોય છે તથા શુકલ-લેશ્યાવાળા હોય છે. 'नो सम्मदिट्ठी' આ સમ્યગ્દષ્ટિ હોતા નથી. પરંતુ 'मिच्छादिट्ठी' મિથ્યાદૃષ્ટિવાળા જ હોય છે. 'नो सम्मामिच्छादिट्ठी' તેઓ મિશ્રદૃષ્ટિવાળા પણ હોતા નથી. 'नो नाणी अन्नाणी' તેઓ જ્ઞાની પણ હોતા નથી. અજ્ઞાની હોય છે, તેઓને અજ્ઞાનમાં મતિઅજ્ઞાન અને શ્રુતઅજ્ઞાન એ બે જ અજ્ઞાન હોય છે તેમને વિભંગ અજ્ઞાન હોતું નથી. 'एवं जहा कण्हलेस्ससए' એજ પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યા શતકમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે અહીયાં પણ સમજવું કૃષ્ણલેશ્યા શતક આ ૪૦ ચાળીસમા શતકનું બીજું શતક છે. 'नवरं नो विरया अविरया नो विरयाविरया' કૃષ્ણલેશ્યાશતકની

सिद्धिका नो विरता भवन्ति, अविरता भवन्ति किन्तु नो विरताविरता भवन्तीति। 'संचिट्ठणा ठिईय जहा ओहिय उद्देसए' संस्थाना अवस्थितिकालः स्थितिरायुष्यकालश्च यथौघिकरूपे चत्वारिंशत्तमशतकस्य प्रथमोद्देशके कथितस्तथैव ज्ञातव्यः तत्रावस्थितिकालो जघन्येनैकं समय मुत्कर्षेण सागरोपमशतपृथक्त्वं सातिरेकम् स्थितिस्तु जघन्येनैकं समयमुत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि। 'समुग्घाया आदिल्ला पंच' समुद्धाता आद्याः पञ्च वेदनाकषायमारणान्तिकवैक्रियतैज-

---

पाठ इस सूत्रपाठ द्वारा यहां प्रकट किया गया है-उस कृष्णलेश्यशत की अपेक्षा इसमें यही अन्तर है कि ये कृतयुग्मकृतयुग्म राशिप्रमाण अभवसिद्धिक संज्ञी जीव विरतियुक्त नहीं होते हैं। अविरतिवाले होते हैं। विरताविरत-देशसंयमी-भी ये नहीं होते हैं। 'संचिट्ठणा ठिईय जहा ओहिए उद्देसए' अवस्थान काल और आयुष्ककाल जैसा ४० वें शतकके प्रथम उद्देशक में कहा गया है वैसा ही यहां पर भी जानना चाहिये। इस प्रकार अवस्थिति काल जघन्य से एक समय का और उत्कृष्ट से कुछ अधिक सागरोपमशत पृथक्त्वका है। तथा स्थिति जघन्य से एक समय की और उत्कृष्ट से ३३ सागरोपम की है। 'समुग्घाया, आदिल्ला पंच' यहां समुद्घात आदि के पांच होते हैं-वेदनासमुद्घात कषायसमुद्घात, मारणान्तिक समुद्घात, वैक्रिय समुद्घात और तैजससमुद्घात। आहारक समुद्घात एवं केवलिसमु-

---

અપેક્ષાએ આ કથનમાં જે અંતર આવે છે તેજ આ સૂત્રદ્વારા પ્રગટ કરવામાં આવેલ છે. તે કૃષ્ણલેશ્યા શતકની અપેક્ષાએ આમાં એજ અંતર છે કે આ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણવાળા અભવસિદ્ધિક સંજ્ઞી જીવો વિરતિવાળા હોતા નથી. અવિરતિવાળા હોય છે. વિરતાવિરત-દેશસંયમી શ્રાવકો પણ તેઓ હોતા નથી. 'संचिट्ठणा ठिईय जहा ओहिय उद्देसए' અવસ્થાનકાળ અને આયુષ્યકાળ ૪૦ ચાળીસમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ સમજવું. આ રીતે અવસ્થિતિકાળ જઘન્ય એક સમયને અને ઉત્કૃષ્ટથી કંઈક વધારે સાગરોપમશત પૃથક્ત્વને છે. તથા સ્થિતિ જઘન્ય એક સમયની અને ઉત્કૃષ્ટથી ૩૩ તેત્રીસ સાગરોપમની કહેલ છે. 'समुग्घाया अदिल्ला' पंच' તેઓને આદિના પાંચ સમુદ્ઘાતો હોય છે.-એટલે-વેદના સમુદ્ઘાત ૧ કષાયસમુદ્ઘાત ૨, મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત, ૩ વૈક્રિય સમુદ્ઘાત ૪ અને તૈજસસમુદ્ઘાત ૫ આહારક સમુદ્ઘાત અને કેવલી સમુદ્ઘાત એ બે સમુદ્ઘાતો અહિં કહેલ

साख्याः आहारककेवलिसमुद्घातवर्जाः 'उव्वट्टणा तहेव अणुत्तर विमाणवज्जा' उद्वर्त्तना तथैव-उपपातवदेव अनुत्तरविमानवर्जिताः एते स्वभवाद् उद्वृत्य अनुत्तरविमानेषु नोत्पद्यन्ते तदतिरिक्तेषु सर्व स्थानेषूत्पद्यन्ते, इति भावः। 'सव्वपाणा जाव णो इणट्ठे समट्ठे' सर्वे प्राणाः यावत् सर्वे सत्त्वाः अभवसिद्धिकसंज्ञिपञ्चेन्द्रियतया समुत्पन्नपूर्वाः किमिति प्रश्नस्य, नायमर्थः समर्थः, इत्युत्तरम्। 'सेसं जहा कण्हलेस्ससए' शेषम्-उपरि यत् कथितं तदतिरिक्तं सर्वं कृष्णलेश्यशतवदेव ज्ञातव्यम्, कियत्पर्यन्तं कृष्णलेश्यशतं ज्ञातव्यं तत्राह-'जाव' इत्यादि, 'जाव-अणंतखुत्तो' यावत् अनन्तकृत्वः एतत्पर्यन्तं सर्वं ज्ञातव्यमिति। 'एवं सोलससु

द्घात यहां नहीं होते हैं। 'उव्वट्टणा तहेव अणुत्तरविमाणवज्जा' उद्वर्तना अनुत्तरविमानों को छोडकर उपपात के जैसी ही है। तात्पर्य कहने का यह है कि ये जब अपने भव से उद्वृत्त होते हैं तो अनुत्तर विमानों में उत्पन्न नहीं होते हैं। इनके सिवाय और सब स्थानों में ये उत्पन्न हो जाते हैं। 'सव्वपाणा जाव णो इणट्ठे समट्ठे' हे भदन्त! समस्त प्राण यावत् समस्त सत्त्व अभवसिद्धिक रूप से पहिले उत्पन्न हो चुके हैं? तो इस प्रश्न के उत्तर में ऐसा कहना चाहिये कि हे गौतम यह अर्थ समर्थ नहीं हैं। 'सेसं जहा कण्हलेस्ससए' इस प्रकार से जो ऊपर में कहा गया है उसके अतिरिक्त और सब कथन जैसा कृष्णलेश्याशत में कहा गया है वैसा ही है। 'जाव अणंतखुत्तो' और यह कथन 'यावत् पूर्व में अनन्तबार उत्पन्न नहीं हुए हैं' यहां तकका यहां कहना

નથી. 'उव्वट्टणा तहेव अणुत्तरविमाणवज्जा' ઉદ્વર્તના અનુત્તર વિમાનોને છોડીને ઉપપાત પ્રમાણે જ છે. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-તે જ્યારે પોતાના ભવથી ઉદ્વર્તના કરે છે, તો તે અનુત્તરવિમાનોમાં ઉત્પન્ન થતા નથી. અનુત્તરવિમાન શિવાય બધા જ સ્થાનોમાં તેઓ ઉત્પન્ન થાય છે. 'सव्वपाणा जाव णो इणट्ठे समट्ठे' હે ભગવન્ સઘળા પ્રાણો યાવત્ સઘળા સત્વો શું અભવસિદ્ધિકપણાથી પહેલાં ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં એવું કહ્યું છે કે હે ગૌતમ! આ અર્થ બરાબર નથી 'सेसं जहा कण्हलेस्ससए' આ રીતે ઉપર જે પ્રમાણે કથન કરેલ છે, તે શિવાય બાકીનું સઘળું કથન કૃષ્ણલેશ્યા શતકમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, તેજ પ્રમાણે સમજવું. 'जाव अणंतखुत्तो' અને આ કથન યાવત્ પહેલાં અનંતવાર ઉત્પન્ન થયા છે. આ કથન સુધીનું કૃષ્ણલેશ્યાના પ્રકરણનું કથન કહ્યું છે તેજ પ્રમાણે કથન કહેવું

वि जुम्मेसु' एवं कृतयुग्मकृतयुग्मेषु यथा उपपातादारभ्य अनन्तकृत्व इत्येतत्पर्यन्तं कथितं तथैव कृतयुग्मत्र्योज महायुग्मादारभ्य कल्योजकल्योज पर्यन्ते षोडशमहायुग्मेषु उपपातादारभ्य अनन्तकृत्व एतत्पर्यन्तं वक्तव्यमिति। 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥

इति श्री-विश्वविख्यातजगद्वल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि - 'जैनाचार्य' पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां "श्री भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां चत्वारिंशत्तमशतकस्य पञ्चदशे शते प्रथमोद्देशकः समाप्तः॥४०।१५।१॥

चाहिये।' 'एवं सोलससु वि जुम्मेसु' जिस प्रकार से कृतयुग्मकृतयुग्मों में उपपात से लेकर अनन्तकृत्व तक पाठ कहा गया है उसी प्रकार से कृतयुग्म त्र्योज से लेकर कल्योज कल्योज तक के सोलह महायुग्मों में भी उपपात से लेकर अनन्तकृत्व पाठ तक सब कथन कह लेना चाहिये। 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! जैसा यह कथन आप देवानुप्रियने कहा है वह सब सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके चालीसवें शतक के १५ वें शतमें प्रथम उद्देशक समाप्त ॥४०-१५-१॥

જોઈએ. 'एवं सोलससु वि जुम्मेसु' જે પ્રમાણે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મોમાં ઉપપાતથી લઈને અનંતકૃત્વ સુધીનો પાઠ કહેલ છે, એજ પ્રમાણે કૃતયુગ્મ ત્ર્યોજથી લઈને કલ્યોજ કલ્યોજ સુધીના સોળે મહાયુગ્મોમાં પણ ઉપપાતથી લઈને અનંતકૃત્વ પાઠ સુધી સઘળું કથન કહેવું જોઈએ.

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે રીતે આ કથન કહેલ છે, તે સઘળું કથન સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં કહેલ સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યો વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્ર'ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ચાળીસમા શતકમાં પહેલો ઉદ્દેશો સમાપ્ત॥૪૦-૧૫-૧॥

अथ द्वितीयोद्देशकः प्रारभ्यते–

'पढम समय अभवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्म सन्निपंचिंदियाणं भंते ! कओ उववज्जंति' प्रथमसमयाभवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्मसंज्ञिपञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावद्देवेभ्य इति प्रश्नः। उत्तरमाह अतिदेशद्वारेण–'जहा' इत्यादि, 'जहा सन्नीणं पढमसमयउद्देसए तहेव' यथा संज्ञिनां प्रथमसमयोद्देशके तथैव एतस्यैव प्रथमशतकस्य द्वितीयोद्देशके कथितं तथैवोपपातादिकं सर्वं ज्ञातव्यमिति। पूर्वापेक्षया यद्वैलक्षण्यं तद्दर्शयति–'नवरं' इत्यादि, 'नवरं सम्मत्तं सम्मामिच्छत्तं नाणं च सव्वत्थ नत्थि' नवरं सम्यक्त्वं सम्यगमिथ्यात्वं ज्ञानं च न सन्ति, एतावान् एव पूर्वापेक्षया भेदः 'सेसं तहेव'

'पढमसमय अभवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्म सन्निपंचिंदियाणं भंते !'

टीकार्थ–हे भदन्त प्रथमसमयवर्ती अभवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्म राशिप्रमित संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव किस स्थानविशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा यावत् देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अतिदेशद्वारा इसका उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतम से कहते हैं–'जहा सन्नीणं पढमसमय उद्देसए तहेव' हे गौतम ! जैसा इसी के प्रथमशतक के द्वितीय उद्देशक में कहा गया है वैसा ही उपपात आदिक सब कथन यहां जानना चाहिये। परन्तु यहां सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व और ज्ञान ये नहीं है। यही बात– 'नवरं सम्मत्तं सम्मामिच्छत्तं नाणं च सव्वत्थ नत्थि' इस सूत्रपाठ द्वारा प्रकट की गई है। इस अन्तर के अतिरिक्त और सब कथन प्रथमसमय-

---

બીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ––

'पढमसमय अभवसिद्धिय कडजुम्म कडजुम्म सन्निपंचिंदियाणं भंते ! ઇ.

ટીકાર્થ–હે ભગવન્ પ્રથમ સમયમાં રહેવાવાળા અભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણવાળા સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અતિદેશ દ્વારા આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે–'जहा सन्नीणं' पढमसमयउद्देसए तहेव' હે ગૌતમ ! આ ચાળીસમા શતકના પહેલા સંજ્ઞિ મહાયુગ્મ પહેલા શતકના બીજા ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણે કહેલ છે, એજ પ્રમાણે કહેલ છે. એજ પ્રમાણે ઉપપાત વિગેરે સઘળું કથન સમજવું. પરંતુ અહિયાં સમ્યક્ત્વ સમ્યક્ મિથ્યાત્વ અને જ્ઞાન એ હોતા નથી. એજ વાત 'नवरं'

शेषं नवरमित्यादिना यत् कथितं तदतिरिक्तं सर्वं तथैव-संज्ञिनां प्रथमसमयवदेवेति। 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त इति ॥

इति चत्वारिंशत्तमशतकस्य पञ्चदशे शते द्वितीयोद्देशकः ॥४०।१५।२॥

'एवं एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा कायव्वा' एवमत्रापि अभवसिद्धिकप्रकरणेऽपि एकादशोद्देशकाः कर्त्तव्याः। तत्र-औघिकोद्देशकः प्रथमसमयोद्देशकः, इत्युद्देशद्वयं कथितमेव शेषा अप्रथमसमयादारभ्य चरमाचरमसमयपर्यन्ता नवोद्दे-

---

वर्ती संज्ञी जीवों के जैसा ही जानना चाहिये। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! जैसा आपने यह कहा है वैसा ही वह सब सत्य है २। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया वन्दना नमस्कारकर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

॥४० वें शतक के १५ वें शत में यह द्वितीय उद्देशक समाप्त हुआ ।४०-१५-२॥

'एवं एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा कायव्वा' इस अभवसिद्धिक प्रकरण में भी ११ उद्देशक कहना चाहिये। इन में औघिक उद्देशक और प्रथम समय उद्देशक ये दो उद्देशक तो सूत्रकार ने स्वयं कह दिये हैं। बाकी के अप्रथम समय से लेकर चरमाचरम समय तक के ९ उद्दे-

---

सम्मत्तं सम्मामिच्छत्तं नाणं च सव्वत्थ नत्थि' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ કરેલ છે. આ ફેરફાર શિવાય બાકીનું સઘળું કથન પ્રથમ સમયમાં રહેલા સંજ્ઞિ જીવોના કથન પ્રમાણે જ છે તેમ સમજવું.

'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણે આ વિષયના સંબંધમાં કહેલ છે, તે સઘળું કથન સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥ચાળીસમા શતકના પંદરમાં શતકમાં આ બીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૪૦-૧૫-૨॥

'एवं एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा कायव्वा' 'આ અભવસિદ્ધિકના પ્રકરણમાં ૧૧ અગિયાર ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઇએ. આમાં ઔઘિક ઉદ્દેશાઓ તથા પ્રથમ સમય ઉદ્દેશો આ બે ઉદ્દેશાઓ સૂત્રકારે સ્વયં કહ્યા જ છે બાકીના અપ્રથમ સમયથી લઇને ચરમ ચરમ સમય સુધીના ૯ નવ ઉદ્દેશાઓ અહિયાં પહેલાં

शका अत्र पूर्वोक्तवदेव वाच्या इति भावः । 'पढमतइय पंचमा एकगमा' तत्र प्रथमतृतीयपञ्चमा उद्देशका एकगमाः सदृशा ज्ञातव्याः 'सेसा अट्ठवि एकगमा' शेषा अष्टावपि उद्देशका एकगमाः सदृशा ज्ञातव्याः । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त इति ॥

प्रथमअभवसिद्धिकमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥

॥ चत्वारिंशत्तमे शतके पञ्चदशं संज्ञिमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥

शक यहां पूर्वोक्त जैसे ही हैं । 'पढमतइय पंचमा एक्कगमा' इनमें प्रथम तृतीय पंचम ये तीन उद्देशक एक सरीखे गम जैसे हैं । 'सेसा अट्ठ वि एक्कगमा' बाकी के जो द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम और ग्यारहवां ये ८ उद्देशक हैं-वे सब एक सरीखे गम-वाले हैं । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! जैसा आपने यह कहा है वह सर्वथा सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार कर फिर गौतम संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

प्रथम अभवसिद्धिक महायुग्मशत समाप्त और इस प्रकार ४० वें शतक में १५ वां संज्ञिमहायुग्मशतक समाप्त हुआ ॥४०-१५॥

કહ્યા પ્રમાણે જ છે. 'पढम तइय पंचमा एक्कगमा' તેમાં પહેલો ત્રીજો અને પાંચમો એ ત્રણ ઉદ્દેશાઓ એક સરખા આલાપકોવાળા છે. 'सेसा अट्ठ वि एक्कगमा' બાકીના જે બીજો, ચોથો, છઠ્ઠો સાતમો, આઠમો, નવમો, દસમો, અને અગ્યારમો આ આઠ ઉદ્દેશાઓ એક સરખા આલાપકોવાળા છે.

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયના સંબંધમાં જે પ્રમાણેનું કથન કરેલ છે તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે, હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી તેઓ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥પહેલું અભવસિદ્ધિક મહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત ચાળીસમા શતકમાં પંદરમું સંજ્ઞિ મહાયુગ્મ શતક સમાપ્ત ॥૪૦-૧૫॥

॥ 'अह सोलसमं सन्निमहाजुम्मसयं' ॥

मूलम्--कण्हलेस्स अभवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्म सन्नि पंचिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति ? जहा एएसिं चेव ओहिय सयं तहा कण्हलेस्ससयं पि। नवरं ते णं भंते! जीवा कण्ह-लेस्सा हंता कण्हलेस्सा संचिट्ठणा ठिईय जहा कण्हलेस्ससए सेसं तं चेव। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।

चत्तालीसइमे सए सोलसमं सन्निमहाजुम्मसयं समत्तं

छाया:--कृष्णलेश्याभवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्म संज्ञि पञ्चेन्द्रियाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते यथा एतेषामेव औघिकशतं तथा कृष्णलेश्यशतमपि। नवरं ते खलु भदन्त! जीवाः कृष्णलेश्यशते शेषं तदेव। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति।

द्वितीयमभवसिद्धिकशतं समाप्तम् ॥

॥ चत्वारिंशत्तमे शतके षोडशं संज्ञिमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥

टीका--'कण्हलेस्स अभवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्म सन्निपंचिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति' कृष्णलेश्याभवसिद्धिककृतयुग्मकृतयुग्मसंज्ञिपञ्चे-न्द्रियाः खलु भदन्त! जीवाः कुत आगत्योत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य आगत्य यावत् देवेभ्यो वा आगत्य समुत्पद्यन्ते इति प्रश्नः, उत्तरमाह अतिदेशद्वारेण

सोलहवां संज्ञिमहायुग्मशतक

'कण्हलेस्स अभवसिद्धिय कडजुम्मकडजुम्म सन्नि पंचिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति'

टीकार्थ--हे भदन्त! कृतयुग्मकृतयुग्म राशिप्रमित कृष्णलेश्या-वाले अभवसिद्धिक संज्ञीपञ्चेन्द्रिय जीव किस स्थानविशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं? क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? अथवा यावत् देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? अतिदेशद्वारा इस

સોળમા સંજ્ઞિ મહાયુગ્મ શતકનો પ્રારંભ--

'कण्हलेस्स अभवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्म सन्निपंचिंदियाणं भंते! कओ उववज्जंति'

ટીકાર્થ-હે ભગવન્ કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણવાળા કૃષ્ણલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિક સંજ્ઞિપંચેન્દ્રિય જીવ કયા સ્થાનવિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે?

'जहा' इत्यादि, 'जहा एएसिं चेव ओहियसयं तहा कण्हलेस्ससयंपि' यथा एतेषामेव अभवसिद्धिकानामेवौधिकशतं पञ्चदशं शतं तथा कृष्णलेश्याभवसिद्धिकशतमपि अस्यैव चत्वारिंशच्छतकस्य पञ्चदशे शते यथा औधिका भवसिद्धिक संज्ञिपञ्चेन्द्रियाणामुपपातादिः कथित-एतेनैव रूपेण कृष्णलेश्याभवसिद्धिकानामपि उपपातादयो ज्ञातव्याः। औधिकाभवसिद्धिकापेक्षया कृष्णलेश्याभवसिद्धिकशते यद्वैलक्षण्यं तत् स्वयमेव सूत्रकार आह-'नवरं' इत्यादि, 'नवरम्-विशेष स्त्वयम्-'ते णं भंते! जीवा कण्हलेस्सा' ते खलु भदन्त! जीवाः किं कृष्णलेश्यावन्तो भवन्तीति प्रश्नः। उत्तरमाह-'हंता' इत्यादि 'हंता कण्हलेस्सा' हन्त हे गौतम! ते जीवाः कृष्णलेश्यावन्तो भवन्तीत्युत्तरम् 'संचिट्ठणा ठिईय जहा कण्हलेस्सासए'

प्रश्न का उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतम से कहते हैं-'जहा एएसिं चेव ओहियसयं तहा कण्हलेस्स सयं पि' हे गौतम! जैसा इन अभवसिद्धिकों का औधिक शतक कहा गया है उसी प्रकार से इनका यह कृष्णलेश्या शतक भी कह लेना चाहिये। अर्थात् ४० वें शतक के १५ वें शतमें जिस रीति से औघिक अभवसिद्धिक संज्ञीपञ्चेन्द्रियों के उपपात आदि कहे गये हैं उसी रीति से कृष्णलेश्यावाले अभवसिद्धिक संज्ञीपञ्चेन्द्रियों के भी उपपात आदि कह लेना चाहिये। औघिक अभवसिद्धिकों की अपेक्षा इनमें जो अन्तर है वह इस प्रकार से है-'ते णं भंते! जीवा कण्हलेस्सा' हे भदन्त! ये जीव क्या कृष्णलेश्यावाले होते हैं? 'हंता, कण्हलेस्सा' हां, गौतम! ये जीव कृष्णलेश्यावाले होते हैं। 'संचिट्ठणा ठिईय जहा कण्हलेस्सासए' इनका अवस्थानकाल और आयुकाल जैसा

અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અતિદેશ દ્વારા આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'जहा एएसिं चेव ओहियसयं तहा कण्हलेस्ससयं पि' હે ગૌતમ! જે પ્રમાણે આ અભવસિદ્ધિકોનું ઔઘિક શતક કહેલ છે, એજ પ્રમાણે તેઓના સંબંધમાં આ કૃષ્ણલેશ્યા શતક પણ કહેવું જોઈએ. અર્થાત્ ચાળીસમા શતકના ૧૫ પંદરમાં શતકમાં જે પ્રમાણે ઔઘિક અભવસિદ્ધિક સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિયોના ઉપપાત વિગેરે કહેવામાં આવ્યા છે, એજ રીતે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિક સંજ્ઞિ પંચેન્દ્રિયોના ઉપપાત વિગેરે પણ કહેવા જોઈએ. ઔઘિક અભવસિદ્ધિકવાળાઓની અપેક્ષાએ આમાં જે અંતર આવે છે, તે આ પ્રમાણે છે. 'ते णं भंते! जीवा कण्हलेस्सा' હે ભગવન્ આ જીવો કૃષ્ણલેશ્યાવાળા હોય છે? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'हंता गोयमा! कण्हलेस्सा' હા ગૌતમ! તે જીવો કૃષ્ણલેશ્યાવાળા હોય છે. 'संचिट्ठणा ठिईय

संस्थाना स्थितिश्च अवस्थानकाल आयुः कालश्च कृष्णलेश्यजीवानां यथाऽस्यैव शतकस्य कृष्णलेश्यशते कथित स्तेनैव रूपेणात्रापि ज्ञातव्यः। 'सेसं तं चेव' शेषम्-अवस्थान स्थित्यतिरिक्तं सर्वमपि तदेव-औधिकशतोक्तमेव ज्ञातव्यमिति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त तदेवं भदन्त! इति॥

द्वितीयमभवसिद्धिक महायुग्मशतं समाप्तम्॥

चत्वारिंशत्तमे शतके षोडशं कृष्णलेश्याभवसिद्धिक संज्ञिमहायुग्मशतं समाप्तम्॥४०।१६॥

इसी शतक के कृष्णलेश्याशत में कहा गया है वैसा ही यहां पर भी कह लेना चाहिये। 'सेसं तं चेव' इनके अतिरिक्त और सब कथन औधिक शत में जैसा कहा गया है वैसा ही है। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! आपका यह कथन सर्वथा सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्माको भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये। दूसरा अभवसिद्धिक महायुग्मशत समाप्त।

चालीसवें शतकमें सोलहवां कृष्णलेश्य अभवसिद्धिक संज्ञिमहायुग्मशतक समाप्त हुआ।

जहा कण्हलेस्ससए' तेओनो अवस्थान काळ अने आयुकाळ आ ४० चाळीसमा शतकना कृष्णलेश्या शतकमां कहेल छे, एज प्रमाणे अहियां पण कहेवुं जोईए. 'सेसं तं चेव' आ कथन शिवाय बाकीनुं सघळुं कथन औधिक शतकमां कह्या प्रमाणेनुं समजवुं.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भगवन् आ विषयना संबंधमां आप देवानुप्रिये जे प्रमाणे कथन करेल छे. ए सघळुं कथन सर्वथा सत्य छे. हे भगवन् आप देवानुप्रियनुं सघळुं कथन सर्वथा सत्य ज छे. आ प्रमाणे कहीने गौतमस्वामीए प्रभुश्रीने वंदना करी तेओने नमस्कार कर्या वंदना नमस्कार करीने ते पछी संयम अने तपथी पोताना आत्माने भावित करता थका पोताना स्थान पर बिराजमान थया. ॥सू०१॥

॥बीजुं अभवसिद्धिक महायुग्म शतक समाप्त॥

चाळीसमा शतकमां सोळमुं कृष्णलेश्या अभवसिद्धिक संज्ञिमहायुग्म शतक समाप्त ॥४०-१६

॥ 'अह १७-२१ सयाइं' ॥

मूलम्—एवं छहि वि लेस्साहिं छ सया कायव्वा जहा कण्हलेस्ससयं। नवरं संचिट्ठणा ठिई य जहेव ओहियसए तहेव भाणियव्वा। नवरं संचिट्ठणा सुक्कलेस्साए उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, ठिई एवं चेव, नवरं अंतोमुहुत्तं नत्थि जहन्नगं तहेव। सव्वत्थ सम्मत्त नाणाणि नत्थि। विरई विरयाविरई अणुत्तरविमाणोववत्तीय एयाणि नत्थि सव्व-पाण० जाव णो इणट्ठे समट्ठे। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति। एवं एयाणि सत्त अभवसिद्धिय महाजुम्मसया भवंति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति। एवं एयाणि एक्कवीसं सन्नि महाजुम्मसयाणि। सव्वाणि वि एक्कासीतिमहाजुम्मसयाइं समत्ताइं ॥

चत्तालीसइमं सन्निमहाजुम्मसयं समत्तं

छाया—एवं षड्भिर्लेश्याभिः षट्शतानि कर्तव्यानि यथा कृष्णलेश्याशतम्। नवरं संस्थाना स्थितिश्च यथैव औघिकशते तथैव भणितव्या। नवरं संस्थाना शुक्ललेश्यायाम् उत्कर्षेण एकत्रिंशत्सागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्त्ताभ्यधिकानि। स्थितिरेवमेव, नवर मन्तर्मुहूर्तं नास्ति। जघन्यकं तथैव। सर्वत्र सम्यक्त्वं ज्ञानानि सन्ति। विरतिः विरताविरतिः अनुत्तरविमानोत्पत्तिश्च, एतानि न सन्ति। सर्वप्राणा यावन्नायमर्थः समर्थः। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त इति। एवमेतानि सप्त अभवसिद्धिकमहायुग्मशतानि भवन्ति। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति। एवमेतानि एकविंशतिः संज्ञिमहायुग्मशतानि। सर्वाण्यपि एकाशीतिमहायुग्मशतानि समाप्तानि ॥

चत्वारिंशत्तमं संज्ञिमहायुग्मशतं समाप्तम् ॥

सप्तदशतः एकविंशतितम शतकानि

टीका—'एवं छहिं वि लेस्साहिं छ सया कायव्वा जहा कण्हलेस्ससयं' एवं

'एवं छहिं वि लेस्साहिं छ सया कायव्वा जहा कण्हलेस्ससयं'

टीकार्थ—जिस प्रकार कृष्णलेश्यापदको जोडकर अभवसिद्धिक

સત્તરમા મહાયુગ્મ શતકથી એકવીસમા સુધીના પાંચ મહાયુગ્મ શતકોનો પ્રારંભ

'एवं छहिं वि लेस्साहिं छ सया कायव्वा जहा कण्हलेस्ससयं' જે

षड्भिरपि लेश्याभिः षट्शतानि कर्त्तव्यानि यथा कृष्णलेश्याशतं यथा कृष्णलेश्या मन्तर्भाव्य अभवसिद्धिकस्य द्वितीयं शतं भवति तथैव नीलकापोत तैजसपद्म-शुक्ललेश्या मन्तर्भाव्यापि शतानि कर्त्तव्यानि तदेवमभवसिद्धिकमधिकृत्य सप्त-शतानि भवन्ति एकमौधिकं षड्लेश्यान्तर्भावेन षट्शतानीति। 'नवरं संचिट्ठणा ठिई जहेव ओहियसए तहेव भाणियव्वा' नवरं-केवलं विशेषोऽयं यत् संस्थानाऽव-स्थिति कालः स्थितिरायुष्यकालश्च यथैव औधिक नीललेश्यादिशते कथिता तथैव तेनैवरूपेण ज्ञातव्या। न तु कृष्णलेश्यशतवदिति। 'नवरं संचिट्ठणा सुक्कलेस्साए उक्को-सेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं' नवरं-केवलमेतावदेव वैलक्षण्यं यत् संस्थाना-अवस्थितिकालः शुक्ललेश्यायां शुक्ललेश्यशते, उत्कर्षेणैकत्रिंशत्साग-

---

संज्ञी पञ्चेन्द्रियके सम्बन्ध में द्वितीयशत कहा गया है, उसी प्रकार से नील कापोत, तैजस, पद्म, शुक्ललेश्या इन पदों को जोडकर भी ६ शत कहे गये हैं। इस प्रकार अभवसिद्धिक संज्ञिपञ्चेन्द्रिय जीव को लेकर सातशत हो जाते हैं। जैसे-एक औधिक शतक और ६ लेश्या सम्बन्धी ६ शतक 'नवरं संचिट्ठणा ठिई जहेव ओहियसए तहेव भाणियव्वा' परन्तु यहां जो विशेषता है वह ऐसी है कि यहां अव-स्थिति काल और आयुष्यकाल ये दो बातें जैसी अभवसिद्धिक के औधिक नीललेश्यादिशत में कही गई हैं वैसी ही यहां पर कह लेनी चाहिये। कृष्णलेश्यशत के जैसे इन्हें यहां नहीं कहना चाहिये। 'नवरं संचिट्ठणा सुक्कलेस्साए उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं' परन्तु शुक्ललेश्य शतक में उत्कृष्ट से एक

પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યાપદ લઈને અભવસિદ્ધિકવાળા સંજ્ઞીપંચેન્દ્રિયના સંબંધમાં બીજુ શતક કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે નીલ, કાપોત, તેજસ, પદ્મ, શુકલલેશ્યાના સંબંધમાં તે તે પદોને જોડીને છ શતકો કહેલા છે. આ રીતે અભવસિદ્ધિક સંજ્ઞિ એકેન્દ્રિય જીવને લઈને સાત શતક અને છ લેશ્યાઓના સંબંધમાં છ શતકો એ રીતે સાત શતકો થઈ જાય છે. 'નવરં સંચિટ્ઠણા ઠિઈ જહેવ ઓહિયસએ' તહેવ ભાણિયવ્વા' પરંતુ અહિયાં જે વિશેષપણું છે, તે એવું છે કે-અહિયાં અવસ્થિતિકાળ અને આયુષ્યકાળ આ બે બાબતો જે પ્રમાણે અભવસિદ્ધિક સંબંધી ઔઘિક શતકમાં કહેલ છે, એજ પ્રમાણે છે, તેમ સમજવું કૃષ્ણલેશ્યા શતકના કથન પ્રમાણે તેને અહિયાં કહેવાનું નથી. 'નવરં સંચિટ્ઠણા સુક્કલેસ્સાએ ઉક્કોસેણં એક્કતીસં સાગરોવમાઇં અંતોમુહુત્તમ-બ્ભહિયાઇં' શુકલલેશ્યામાં-એટલે કે શુકલલેશ્યાશતકમાં ઉત્કૃષ્ટથી એક અંતર્મુહૂર્ત

रोपमाणि अन्तर्मुहूर्त्ताभ्यधिकानि, एतावत्परिमिता ज्ञातव्या अन्तर्मुहूर्त्ताधिकैकत्रिंशत्सागरोपमकथनं तु उपरितनग्रैवेयकदेवमाश्रित्य ज्ञातव्यम् तत्र देवानामेतावदेवायुर्भवति शुक्ललेश्या च भवति, अभवसिद्धिकजीवा श्चोत्कर्षतस्तत्रैव देवतयोत्पद्यन्ते न तु ततः परतः समुत्पद्यन्ते अन्तर्मुहूर्त्तं च पूर्वभवावसानसम्बन्धीति। 'ठिई एवमेव' स्थितिरपि एवमेव संस्थानाप्रमितैव किन्तु 'नवरं' संस्थानकालादेतद् वैलक्षण्यं तदेवाह-'अंतोमुहुत्तं नत्थि' अंतर्मुहूर्त्तं नास्ति अत्र स्थितौ 'अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं' इति पदं न वक्तव्यम्, स्थितिरेषामेकत्रिंशत्सागरोपमाणि, इति भावः। 'जहन्नगं तहेव' जघन्यकं तथैव स्थितेर्जघन्यकालः संस्थानकालस्य जघन्य-

अन्तर्मुहूर्त्त अधिक ३१ सागरोपम का अवस्थितिकाल है। उपरितन ग्रैवेयकके देवों को आश्रित करके शुक्ललेश्या का यह अवस्थान काल कहा गया है। क्योंकि वहां पर देवों की इतनी ही आयु होती है और शुक्ललेश्या होती है। अभवसिद्धिक जीव उत्कृष्ट से नौवें ग्रैवेयक तक जाते हैं। इसके आगे नहीं जाते हैं अभवसिद्धिक संज्ञीपञ्चेन्द्रिय जीवकी शुक्ललेश्या की स्थिति जो अन्तर्मुहूर्त्त अधिक ३१ सागरोपमकी कही गई है, सो इसमें कारण तो पूर्व में प्रकट किया ही जा चुका है, परन्तु अन्तर्मुहूर्त अधिकता जो यहां बतलाई गई है वह पूर्वभव के अन्त के अन्तर्मुहूर्त्त को लेकर बताई गई है ऐसा जानना चाहिये। 'ठिई एवं चेव' स्थितिकाल आयुष्ककाल भी अवस्थानकाल के ही जैसा है। परन्तु 'अंतोमुहुत्तं नत्थि' यहां एक अन्तर्मुहूर्त्त की अधिकता नहीं है। आयुष्ककाल यहां केवल ३१ सागरोपम का ही है। 'जहन्नगं तहेव'

વધારે ૩૧ એકત્રીસ સાગરોપમનો અવસ્થિતિકાળ કહેલ છે. ઉપરિતન ગ્રૈવેયકના દેવોનો આશ્રય કરીને શુક્લલેશ્યાનો આ અવસ્થાન કાળ કહેલ છે. કેમ કે ત્યાં દેવોનું આયુષ્ય એટલું જ હોય છે. અને શુક્લલેશ્યા હોય છે. અભવસિદ્ધિક જીવો ઉત્કૃષ્ટથી નવમાં ગ્રૈવેયક સુધી જાય છે. તેથી આગળ જતા નથી. અભવસિદ્ધિક સંજ્ઞિપંચેન્દ્રિય જીવોની શુક્લલેશ્યાની સ્થિતિ જે અંતર્મુહૂર્ત વધારે ૩૧ એકત્રીસ સાગરોપમની કહેલ છે. તો તેનું કારણ તો પહેલા બતાવવામાં આવ્યું જ છે. પરંતુ અંતર્મુહૂર્ત અધિકપણું અહિયાં કહ્યું છે, તે પૂર્વભવના અન્તના અંતર્મુહૂર્તને લઈને કહેલ છે, તેમ સમજવું. 'ठिई एवं चेव' સ્થિતિકાળ અને આયુષ્યકાળ પણ અવસ્થાનકાળ પ્રમાણે જ છે. પરંતુ 'अंतोमुहुत्तं नत्थि' અહિયાં એક અંતર્મુહૂર્તનું અધિકપણું કહેલ નથી. અર્થાત્ આયુષ્યકાળ અહિયાં કેવળ ૩૧ એકત્રીસ સાગરોપમનો જ છે. 'जहन्नगं तहेव' સ્થિતિકાળ સંસ્થાનના જઘન્યકાળ પ્રમાણેનો જ છે, જઘન્ય

कालश्चेति। 'सव्वत्थ सम्मत्तनाणाणि नत्थि' सर्वत्रापि सम्यक्त्वं ज्ञानं च न भवतीति, 'विरई विरया विरई अणुत्तरविमाणोववत्ती एयाणि नत्थि' विरतिः विरताविरतिस्तथा अनुत्तरविमानादुपपातश्चेत्येतानि न सन्ति अभवसिद्धिक प्रकरणे अभवसिद्धिक स्वभावत्वात्। 'सव्वप्पाणा जाव णो इणट्ठे समट्ठे' हे भदन्त! सर्वे प्राणा यावत् सर्वे-सत्त्वा अभवसिद्धिकसंज्ञिपञ्चेन्द्रियतया समुत्पन्नपूर्वाः किमिति प्रश्नः, हे गौतम! नायमर्थः समर्थः, इत्युत्तरम्, चेह वक्तव्यमिति 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति। 'एवं एयाणि सत्त अभवसिद्धिय महाजुम्म सया भवंति' एवम्-उपरोक्तदर्शित क्रमेण सप्त सप्त संख्यकानि

स्थितिकाल संस्थानकाल के ही जघन्यकाल के बराबर है। अर्थात् जघन्यकाल १ एकसमय मात्र है। 'सव्वत्थ सम्मत्तनाणाणि नत्थि' यहां समस्त स्थानों में सम्यक्त्व एवं ज्ञान नहीं है। 'विरई अणुत्तरविमाणोववत्ती एयाणि नत्थि' विरति विरताविरति और अनुत्तर विमान से आकरके उपपात ये सब नहीं हैं। क्योंकि यह अभवसिद्धिक का प्रकरण है। इस में ये सब अभवसिद्धि स्वभाव होने से नहीं होते हैं। 'सव्वप्पाणा जाव णो इणट्ठे समट्ठे' हे भदन्त! समस्त प्राण यावत् समस्त सत्त्व क्या अभवसिद्धिक संज्ञि पंचेन्द्रिय रूप से पहिले उत्पन्न हो चुके हैं? तो इस प्रश्न के उत्तर में यहां ऐसा कहना चाहिये कि यह अर्थ समर्थ नहीं है। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! जैसा आपने यह कहा है वह सब सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर

કાલ એક સમય માત્ર જ છે. 'सव्वत्थ सम्मत्तनाणाणि नत्थि' અહિયાં સઘળા સ્થાનોમાં સમ્યક્ત્વ અને જ્ઞાન કહેલ નથી. 'विरई विरया विरई अणुत्तरविमाणोववत्ती एयाणि नत्थि' વિરતિ વિરતાવિરતિ અનુત્તર વિમાનથી આવીને ઉપપાત આ બધા કહેલ નથી. કેમ કે—આ અભવસિદ્ધિકનું પ્રકરણ છે. તેમાં આ બધા અભવસિદ્ધિક સ્વભાવ હોવાથી હોતા નથી. 'सव्वपाणा जाव णो इणट्ठे समट्ठे' હે ભગવન્ સઘળા પ્રાણો યાવત્ સઘળા સત્વો શું અભવસિદ્ધિક પણાથી પહેલાં ઉત્પન્ન થઈ ચૂકયાંછે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં અહિયાં એવું કહેવું જોઈએ કે—આ અર્થ સમર્થ નથી.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે પ્રમાણે કહેલ છે, તે સઘળું કથન સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ

अभवसिद्धिकानां महायुग्मशतानि एकमौघिकं षड्लेश्यान्तर्भूतानि षट् तदेवं सप्तशतानि भवन्तीति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति । 'एवं एयाणि एक्कवीसं सन्नि महाजुम्मसयाणि' एवमुपरोक्तदर्शितक्रमेण चत्वारिंशत्तमे शतके संज्ञिनामेकविंशतिर्महायुग्मशतानि भवन्तीति । 'सव्वाणि वि एकासीई महाजुम्मसयाइं समत्ताइं' सर्वाण्यपि एकाशीतिर्महायुग्मशतानि समाप्तानि, तथाहि-पञ्चत्रिंशत्तमे शतके द्वादश महायुग्मशतानि १२ षट्त्रिंशत्तमे

फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

'एवं एयाणि सत्त अभवसिद्धिय महाजुम्मसया भवंति' इस प्रकार उपरोक्त दर्शित क्रमानुसार सात अभवसिद्धिक जीवों के महायुग्म शत होते हैं । एक ओघिकशत और ६ छहलेश्याओं के । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! यह ऐसा ही है २ । इस प्रकार 'एवं एयाणि एक्कवीसं सन्निमहाजुम्म सयाणि' उपर्युक्त दर्शित क्रम से ४० वें शतक में संज्ञी जीवों के २१ महायुग्मशत होते हैं । 'सव्वाणि वि एकासीई महाजुम्मसयाइं समत्ताइं' ये सब मिलकर ८१ महायुग्मशत समाप्त हुए । ८१ महायुग्मशत इस प्रकार से होते हैं-३५ वें शतक में १२

પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા.

'एवं एयाणि सत्त अभवसिद्धियमहाजुम्मसया भवंति' આ પ્રમાણે ઉપર બતાવેલ, ક્રમ પ્રમાણે અભવસિદ્ધિક જીવોના સાત મહાયુગ્મ શતકો થાય છે. તેમાં એક ઔઘિક શતક અને છ લેશ્યાઓના છ શતકો મળીને સાત શતકો સમજી લેવા.

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં કહેલ સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે હે ભગવન્ આપનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે એ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા.

'एवं एयाणि एक्कवीसं सन्निमहाजुम्म सयाणि' ઉપર બતાવેલ ક્રમપ્રમાણે આ ચાળીસમા શતકમાં ૨૧ એકવીસ મહાયુગ્મ શતકો હોય છે. 'सव्वाणि वि एकासीई महाजुम्म सयाइं समत्ताइं' આ કુલ મળીને ૮૧ એકાશી મહાયુગ્મ શતકો સમાપ્ત થયા. આ એકાશી મહાયુગ્મ શતકો આ પ્રમાણે કહ્યા

शतकेऽपि द्वादश २४, सप्तत्रिंशत्तमेऽपि द्वादश ३६, अष्टत्रिंशत्तमेऽपि द्वादश ४८, एकोनचत्वारिंशत्तमेऽपि द्वादशशतानि ६० चत्वारिंशत्तमे एकविंशतिः ८१ शतानि सर्वसङ्कलनया एकाशीति महायुग्मशतानि भवन्ति। एकाशीतेः प्रत्येक-मुद्देशाना मेकादशत्वेन एकादशसंख्यया गुणने एकनवत्युत्तराष्टशतानि उद्देश-कानां भवन्ति। तानि च महायुग्मशतानि समाप्तानि ॥

इति श्री – विश्वविख्यातजगद्वल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि – 'जैनाचार्य' पूज्यश्री–घासीलालव्रतिविरचितायां 'श्री भगवतीसूत्रस्य' प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां चत्वारिंशत्तमं शतकं समाप्तम् ॥४०॥

महायुग्मशत हैं, ३६ वें शतक में भी १२ महायुग्मशत हैं, ३७ वें शतक में भी १२ महायुग्मशत हैं, ३८ वें शतक में भी १२ महायुग्म-शत हैं, ३९ वें शतक में भी १२ महायुग्मशत हैं और ४० वें शतक में २१ महायुग्मशत हैं। इन सब ८१ शतों के ११–११ उद्देशक हैं। इसलिये इन सब उद्देशकोंकी संख्या ८९१ होती है। ये सब महायुग्मशत समाप्त हुए।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके चालीसवां शतक समाप्त ॥४०॥

છે. પાંત્રીસમાં શતકમાં ૧૨ બાર મહાયુગ્મ શતક કહેલ છે ૩૬ છત્રીસમા શતકમાં પણ ૧૨ બાર મનાયુગ્મ શતકો બતાવ્યા છે. ૩૭ સાડત્રીસમાં શતકમાં પણ ૧૨ મહાયુગ્મ શતકો કહ્યા છે. ૩૮ આડત્રીસમા શતકમાં પણ ૧૨ બાર મહાયુગ્મ શતકો કહ્યા છે. ૩૯ ઓગણચાળીસમા શતકમાં પણ બાર ૧૨ મહાયુગ્મ શતક કહેલ છે. અને ૪૦ ચાળીસમાં શતકમાં ૨૧ એકવીસ એક વીસ મહાયુગ્મ શતકો કહ્યા છે. આ બધા મળીને ૮૧ એકાશી મહાયુગ્મ શતકો થાય છે. તે બધા શતકોમાં ૧૧–૧૧ અગિયાર-અગિયાર ઉદ્દેશાઓ કહેલ છે. તેથી બધા ઉદ્દેશાઓની સંખ્યા ૮૯૧ આઠસોએકાણુની થાય છે.

॥સત્તરમાથી ૨૧ એકવીસમા મહાયુગ્મો સુધીના પાંચ મહાયુગ્મ શતકો સમાપ્ત ॥૪૦–૧૭–૨૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત "ભગવતીસૂત્ર"ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના ચાલીસમા શતકનું ચાળીસમું શતક સમાપ્ત ॥૪૦॥

अथ एकचत्वारिंशत्तमं शतम्

अह पढमो उद्देसओ

मूलम्—कइ णं भंते ! रासिजुम्मा पन्नत्ता ? गोयमा ! चत्तारि रासिजुम्मा पन्नत्ता तं जहा–कडजुम्म कलिओगे। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ चत्तारि रासिजुम्मा पन्नत्ता तं जहा–जाव कलिओगे। गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए से त्तं रासिजुम्मकड-जुम्मे। एवं जाव जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीर-माणे एगपज्जवसिए से त्तं रासीजुम्मकलिओगे। से तेणट्ठेणं जाव कलिओगे। रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति ? उववाओ जहा वक्कंतीए। ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! चत्तारि वा अट्ठ वा बारस वा सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति। ते णं भंते ! जीवा किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरं पि उववज्जंति निरंतरं पि उववज्जंति। संतरं उववज्जमाणा जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जा समया अंतरं कट्टु उववज्जंति। निरंतरं उववज्जमाणा जह-न्नेणं दो समया उक्कोसेणं असंखेज्जा समया अणुसमयं अविरहियं निरंतरं उववज्जंति। ते णं भंते ! जीवा जं समयं कडजुम्मा, तं समयं तेओगा, जं समयं तेओगा तं समयं कड-जुम्मा ? णो इणट्ठे समट्ठे। जं समयं कडजुम्मा तं समयं दावर-जुम्मा जं समयं दावरजुम्मा तं समयं कडजुम्मा नो इणट्ठे समट्ठे। जं समयं कडजुम्मा तं समयं कलिओगा, जं समयं

कलिओगा तं समयं कडजुम्मा। णो इणट्ठे समट्ठे। ते णं भंते! जीवा कहं उववज्जंति? गोयमा! से जहानामए पवए पवमाणे एवं जहा उववायसए जाव नो परप्पओगेणं उववज्जंति। ते णं भंते! जीवा किं आयजसेणं उववज्जंति आयअजसेणं उववज्जंति? गोयमा! नो आयजसेणं उववज्जंति आयअजसेणं उववज्जंति। जइ आयअजसेणं उववज्जंति किं आयजसं उवजीवंति आयअजसं उवजीवंति? गोयमा! नो आयजसं उवजीवंति, आयअजसं उवजीवंति। जइ आयजसं उवजीवंति किं सलेस्सा अलेस्सा? गोयमा! सलेस्सा नो अलेस्सा। जइ सलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया? गोयमा! सकिरिया नो अकिरिया। जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति, जाव अंतं करेंति? णो इणट्ठे समट्ठे। रासिजुम्म कडजुम्म असुरकुमाराणं भंते! कओ उववज्जंति? जहेव नेरइया तहेव निरवसेसं। एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिया। नवरं वणस्सइकाइया जाव असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति सेसं एवं चेव। मणुस्सा वि एवं चेव जाव नो आयजसेणं उववज्जंति, आयअजसेणं उववज्जंति। जइ आयअजसेणं उववज्जंति किं आयजसं उवजीवंति आयअजसं उवजीवंति? गोयमा! आयजसंपि उवजीवंति आयअजसंपि उवजीवंति। जइ आयजसं उवजीवंति किं सलेस्सा अलेस्सा? गोयमा! सलेस्सा वि अलेस्सा वि। जइ अलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया? गोयमा! नो सकिरिया, अकिरिया। जइ अकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति? हंता सिज्झंति जाव अंतं करेंति।

जइ सलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया ? गोयमा ! सकिरिया नो अकिरिया। जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति ? गोयमा ! अत्थेगइया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति, अत्थेगइया नो तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति । जइ आयअजसं उववज्जंति किं सलेस्सा अलेस्सा। गोयमा ! सलेस्सा नो अलेस्सा जइ सलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया ? गोयमा ! सकिरिया नो अकिरिया । जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति? नो इणट्ठे समट्ठे। वाणमंतरजोइसिय वेमाणिया जहा नेरइया । सेवं भंते! २ त्ति ॥सू०१॥

इक्कचत्तालीसइमे सए रासिजुम्मसए पढमो उद्देसो समत्तो

छाया—कति खलु भदन्त ! राशियुग्माः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! चत्वारो राशियुग्माः प्रज्ञप्ताः ? तद्यथा कृतयुग्मो यावत् कल्योजः । तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते चत्वारो राशियुग्माः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा यावत् कल्योजः ? गौतम ! यः खलु राशिचतुष्केणापहारेणाऽपह्रियमाण श्चतुः पर्यवसितः सोऽयं राशियुग्म कृतयुग्मः एवं यावद् यः खलु राशिचतुष्केणापहारेणैकपर्यवसितः सोऽयं राशियुग्म कल्योजः। तत्तेनार्थेन यावत् कल्योजः । राशियुग्मकृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? उपपातो यथा व्युत्क्रान्तौ । ते खलु भदन्त ! जीवा एकसमयेन कियन्त उत्पद्यन्ते ? गौतम ! चत्वारो वा अष्टौ वा द्वादश वा षोडश वा संख्याता वा असंख्याता वोत्पद्यन्ते । ते खलु भदन्त ! जीवाः किं सान्तर मुत्पद्यन्ते निरन्तरमुत्पद्यन्ते ? गौतम ! सान्तरमपि उत्पद्यन्ते निरन्तरमपि उत्पद्यन्ते ? सान्तरमुत्पद्यमाना जघन्येनैकं समयम् उत्कर्षेणासंख्येयान् समयान् अनन्तरं कृत्वोत्पद्यन्ते । निरन्तरमुत्पद्यमाना जघन्येन द्वौ समयौ, उत्कर्षेण संख्येयान् समयान् अनुसमयमविरहितं निरन्तर मुत्पद्यन्ते । ते खलु भदन्त ! जीवाः यस्मिन् समये कृतयुग्मा स्तस्मिन् समये त्र्योजाः, यस्मिन् समये त्र्योजा स्तस्मिन् समये कृतयुग्माः ? नायमर्थः समर्थः। यस्मिन् समये कृतयुग्मा स्तस्मिन् समये द्वापरयुग्माः, यस्मिन् समये द्वापरयुग्माः तस्मिन् समये कृतयुग्माः ? नायमर्थः समर्थः । यस्मिन् समये कृतयुग्माः तस्मिन समये कल्योजाः, यस्मिन् समये कल्योजा स्तस्मिन् समये कृतयुग्माः ? नायमर्थः समर्थः। ते खलु भदन्त !

जीवाः कथमुत्पद्यन्ते? गौतम! स यथानामकः प्लवकः प्लवमानः, एवं यथोपपातशते यावत् नो परप्रयोगेणोत्पद्यन्ते। ते खलु भदन्त! जीवाः किमात्मयशसा उत्पद्यन्ते आत्माऽयशसोत्पद्यन्ते? गौतम! नो आत्मयशसोत्पद्यन्ते आत्मायशसोत्पद्यन्ते। यदि आत्मायशसोत्पद्यन्ते। किमात्मयश उपजीवन्ति, आत्मायश उपजीवन्ति? गौतम! नो आत्मयशसोपजीवन्ति आत्मायशसोपजीवन्ति। यदि आत्मायश उपजीवन्ति किं सलेश्या अलेश्याः? गौतम! सलेश्याः नो अलेश्याः। यदि सलेश्याः। किं सक्रिया अक्रियाः? गौतम! सक्रियाः, नो अक्रियाः। यदि सक्रिया स्तेनैव भवग्रहणेण सिद्धयन्ति यावदन्तं कुर्वन्ति? नायमर्थः समर्थः। राशियुग्मकृतयुग्मासुरकुमाराः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? यथैव नैरयिका स्तथैव निरवशेषम्। एवं यावत् पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः। नवरं वनस्पतिकायिका यावत् असंख्येया वा अनन्तावोत्पद्यन्ते, शेषम् एवमेव। मनुष्या अपि एवमेव यावत् नो आत्मयशसा उत्पद्यन्ते आत्मायशसा उत्पद्यन्ते। यदि आत्मायशसा उत्पद्यन्ते किमात्मयश उपजीवन्ति आत्मायश उपजीवन्ति? गौतम! आत्मयशोऽपि उपजीवन्ति आत्मायशसोऽपि उपजीवन्ति। यद्यात्मयश उपजीवन्ति किं सलेश्याः अलेश्या? गौतम! सलेश्या अपि अलेश्या अपि। यदि अलेश्याः किं सक्रिया अक्रियाः? गौतम! नो सक्रिया अक्रियाः। यदि अक्रियाः तेनैव भवग्रहणेण सिद्धयन्ति यावत् अन्तं कुर्वन्ति? हन्त सिद्धयन्ति यावदन्तं कुर्वन्ति। यदि सलेश्याः किं सक्रिया अक्रियाः? गौतम! सक्रियाः, नो अक्रियाः। यदि सक्रिया स्तेनैव भवग्रहणेन सिद्धयन्ति यावदन्तं कुर्वन्ति? गौतम! अस्त्येकके तेनैव भवग्रहणेन सिद्धयन्ति यावदन्तं कुर्वन्ति, अस्त्येकके नो तेनैव भवग्रहणेन सिद्धयन्ति यावदन्तं कुर्वन्ति। यद्यात्मायश उपजीवन्ति किं सलेश्या अलेश्याः? गौतम! सलेश्या नोऽलेश्याः। यदि सलेश्याः किं सक्रिया अक्रियाः? गौतम! सक्रिया नो अक्रियाः। यदि सक्रिया स्तेनैव भवग्रहणेन सिद्धयन्ति यावदन्तं कुर्वन्ति? नायमर्थः समर्थः। वानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिका यथा नैरयिकाः। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥सू०१॥

॥ एकचत्वारिंशत्तमे राशियुग्मशतके प्रथमोद्देशकः समाप्तः।

टीका—'कइ णं भंते! रासिजुम्मा पन्नत्ता?' कति खलु भदन्त! राशियुग्माः

शतक ४१ प्रथम उद्देशक

'कइ णं भंते! रासिजुम्मा पन्नत्ता' इत्यादि सूत्र १॥

એકતાળીસમા શતકનો પ્રારંભ—

પહેલો ઉદ્દેશો

'कहि णं भंते! रासिजुम्मा पण्णत्ता' ઇત્યાદિ

प्रज्ञप्ताः ? युग्मशब्दो युगलवाचकोऽपि अस्ति इत्यतोऽसौ इह राशिशब्देन विशेष्यते तेन राशिरूपाः युग्माः न तु द्वितीयरूपा इति राशियुग्माः, ते संख्यया कतीति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'चत्तारि रासिजुम्मा पन्नत्ता' चत्वारः राशियुग्माः प्रज्ञप्ताः-कथिताः। 'तं जहा' तद्यथा-'कडजुम्मे जाव कलिओगे' कृतयुग्मो यावत् कल्योजः अत्र यावत्पदेन त्र्योज द्वापरयुग्मयोः संग्रहः। तदेव सूत्रकारः स्पष्टयति-'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ चत्तारि रासिजुम्मा पन्नत्ता तं जहा जाव कलिओगे' तत्केनार्थेन भदन्त! एव-मुच्यते चत्वारो राशियुग्माः प्रज्ञप्ताः तद्यथा यावत् कल्योजः, अत्र यावत्पदेन कृत युग्मत्र्योज द्वापरयुग्मानां संग्रहो भवतीति प्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि,

टीकार्थ-हे भदन्त! राशियुग्म कितने कहे गये हैं ? युग्म शब्द युगल का भी वाचक होता है इसलिये उसे यहां राशि शब्द से विशेषित किया गया है। अतः राशिरूप जो युग्म हैं वे राशियुग्म हैं किन्तु द्विकरूप ये राशियुग्म नहीं है। ये संख्या में कितने होते हैं ? ऐसा यह प्रश्न है। इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा ! चत्तारि रासिजुम्मा पन्नत्ता' हे गौतम ! चार राशिरूप युग्म कहे गये हैं। 'तं जहा' जैसे-'कडजुम्मे जाव कलिओगे' कृतयुग्म यावत् कल्योज यहां यावत् पद से त्र्योज और द्वापरयुग्म इनका ग्रहण हुआ है।

गौतमस्वामी अब प्रभुश्री से ऐसा प्रश्न करते हैं-'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ चत्तारि रासि जुम्मा पन्नत्ता तं जहा कडजुम्म जाव कलिओगे' हे भदन्त! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि कृतयुग्म से लेकर

टीकार्थ—હે ભગવન્ રાશિયુગ્મો કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે? યુગ્મ શબ્દ યુગલનો વાચક પણ હોય છે. તેથી તેને અહિયાં રાશિ શબ્દથી કહેવામાં આવેલ છે. જેથી રાશિ રૂપ જે યુગ્મ છે, તે રાશિયુગ્મ છે બે રૂપ યુગ્મ રાશિયુગ્મ નથી તે સંખ્યામાં કેટલા હોય છે? આ રીતનો અહિં ગૌતમસ્વામીએ પ્રશ્ન કરેલ છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'ગોયમા ! चत्तारि रासिजुम्मा पन्नत्ता' હે ગૌતમ ! રાશિયુગ્મો ચાર પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે. 'तं जहा' જેમકે-कडजुम्मे जाव कलिओगे' કૃતયુગ્મ યાવત્ કલ્યોજ અહિયાં યાવત્પદથી ત્ર્યોજ અને દ્વાપરયુગ્મ ગ્રહણ કરાયેલ છે.

હવે ગૌતમસ્વામી પ્રભુશ્રીને એવું પૂછે છે કે-'से केणट्ठेण भंते! एवं वुच्चइ चत्तारि रासिजुम्मा पन्नत्ता तं जहा कडजुम्मकडजुम्म जाव कलिओगे' હે ભગવન્ આપ એવું શા કારણથી કહો છો? કે કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મથી લઇને કલ્યોજ

'गोयमा' हे गौतम ! 'जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए सेत्तं रासीजुम्मं कडजुम्मे' यः खलु राशिश्चतुः समुदायरूपश्चतुष्केणापहारेणापह्रियमाणश्चतुष्पर्यवसितः सोऽयं राशियुग्मकृतयुग्म इति कथ्यते। 'एवं जाव जे णं रासिचउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए सेत्तं रासिजुम्मकलिओगे' एवं यावद् यः खलु राशिश्चतुष्केणापहारेणापह्रियमाण एकपर्यवसितो भवति सोऽयं राशियुग्म कल्योजः अत्र यावत्पदेन यः खलु राशिश्चतुष्केणापहारेणापह्रियमाणे त्रिपर्यवसितो भवति सोऽयं राशियुग्म त्र्योजः २, यः खलु राशिचतुष्केणापह्रियमाणो द्विपर्यवसितो भवति सोऽयं राशियुग्म द्वापरः ३, इत्यनयोः संग्रहो भवति इति । 'से तेणट्ठेणं भंते ! जाव कलिओगे' तत्तेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते

कल्योज पर्यन्त राशियुग्म चार कहे गये हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए सेत्तं रासीजुम्म कडजुम्मे' हे गौतम ! जो राशि चार से विभक्त होती हुई अन्त में चार बचाती है ऐसा वह राशि कृतयुग्मराशि कही गई है । 'एवं जाव जेणं रासि चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए सेत्तं रासिजुम्म कलिओगे' इसी प्रकार यावत् जो राशि चार से विभक्त होती हुई अन्त में एक बचाती है वह राशियुग्म कल्योज कहा गया है। यहां यावत्पद से 'जो राशि चार से विभक्त हुई अन्त में तीन बचाती है वह राशियुग्म त्र्योज है। तथा जो राशि चार से विभक्त होती हुई अन्त में दो बचाती है वह राशियुग्म द्वापरयुग्म है' इन दोनों का संग्रह हुआ है।

સુધીના રાશિ યુગ્મો ચાર કહ્યા છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए सेत्तं रासिजुम्म कलिओगे' હે ગૌતમ ! જે રાશિ ચારથી વહેંચવામાં આવતાં છેવટે ચાર બચે તે રાશિને કૃતયુગ્મ રાશિ કહેવામાં આવે છે. 'एवं जाव जे णं रासि चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए से त्तं रासिजुम्म कलिओगे' આજ પ્રમાણે યાવત્ જે રાશિને ચારથી વહેંચવામાં આવતાં છેવટે એક વધે છે તે રાશિ યુગ્મને કલ્યોજ કલ્યોજ રાશિયુગ્મ કહેવાય છે. અહિયાં યાવત્પદથી "જે રાશિ ચારથી વહેંચાઇને છેવટે ત્રણ બચાવે છે, તે રાશિયુગ્મ ત્ર્યોજ" છે, તથા જે રાશિ ચારથી વહેંચાઇને છેવટે બે બચાવે છે. તે રાશિયુગ્મ દ્વાપરયુગ્મરાશિ છે. આ બન્નેનો સંગ્રહ થયેલ છે. 'से तेण ठेणं जाव कलिओगे' આ કારણથી છે હે ગૌતમ ! મેં એવું કહ્યું છે કે-રાશિયુગ્મ-

चत्वारः राशियुग्माः प्रज्ञप्ताः राशियुग्म कृतयुग्मो १, राशियुग्म त्र्योजो २, राशियुग्म द्वापरो ३, राशियुग्म कल्योजः ४, इति । 'रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य आगत्य यावद्देवेभ्यो वा आगत्य उत्पद्यन्ते ? इति प्रश्न', उत्तरमाह-'उववाओ जहा वक्कंतीए' उपपातो यथा व्युत्क्रान्तौ प्रज्ञापनायाः षष्ठपदे न नैरयिकेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते न वा देवेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते किन्तु तिर्यग्भ्यो मनुष्येभ्यो वा आगत्योत्पद्यन्ते, इत्युत्तरमिति । 'ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं

'से तेणट्ठेणं जाव कलिओगे' इस कारण हे गौतम ! मैंने ऐसा कहा है कि राशियुग्म कृतयुग्म, राशियुग्म त्र्योज, राशियुग्म द्वापरयुग्म और राशियुग्म कल्योज ऐसे चार राशियुग्म होते हैं ।

'रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' हे भदन्त ! जो नैरयिक राशियुग्म कृतयुग्म कृतयुग्म प्रमित है-वे किस स्थानविशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा यावत् देवों से आकर के उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'उववाओ जहा वक्कंतीए' हे गौतम ! जैसा इस सम्बन्ध में कथन प्रज्ञापना के व्युत्क्रान्तिपद में-छठे पद में किया गया है वैसा ही यहां पर कर लेना चाहिये। इस प्रकार वे न नैरयिकों से आकरके उत्पन्न होते हैं और न देवों से आकरके उत्पन्न होते हैं । किन्तु तिर्यञ्चों में से और मनुष्यों में से आकरके वे उत्पन्न होते हैं ऐसा जानना

કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્મ રાશિયુગ્મ, કૃતયુગ્મ ત્ર્યોજરાશિયુગ્મ, દ્વાપરરાશિયુગ્મ અને કલ્યોજ રાશિયુગ્મ એ પ્રમાણેના ચાર રાશિયુગ્મો છે.

'रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' હે ભગવન્ જે નૈરયિકો રાશિયુગ્મ પ્રમાણવાળા છે તેઓ કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા યાવત્ દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'उववाओ जहा वक्कंतीए' હે ગૌતમ ! આ વિષયના સંબંધમાં પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના વ્યુત્ક્રાંતિ પદમાં એટલે કે છટ્ઠા પદમાં જે પ્રમાણેનું કથન કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન અહિયાં કહેવું જોઈએ. આ રીતે તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થતા નથી. તથા દેવોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થતા નથી. પરંતુ તિર્યંચયોનિકોમાંથી અને મનુષ્યોમાંથી આવીને તેઓ ઉત્પન્ન થાય છે, તેમ સમજવું. 'ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति' હે

केवइया उववज्जंति' ते खलु भदन्त ! जीवा राशियुग्मकृतयुग्मनारका एक-समयेन एकस्मिन् समये इत्यर्थः कियन्त उत्पद्यन्ते ? इति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' हे गौतम ! 'चत्तारि वा अट्ठ वा बारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति' चत्वारो वा अष्टौ वा द्वादश वा संख्याता वा असंख्याता वा समुत्पद्यन्ते इति। 'ते णं भंते ! जीवा किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति' ते खलु भदन्त ! जीवाः किं सान्तरम् अन्तरसहितं यथा भवेत्तथोत्पद्यन्ते अथवा निरन्तरम्-अन्तररहितं समुत्पद्यन्ते ? इति प्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि' 'गोयमा' हे गौतम ! 'संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति' सान्तरमपि उत्पद्यन्ते निरन्तरमपि उत्पद्यन्ते ! 'संतरं उववज्जमाणा जहन्नेणं एक्कं समयं' सान्तरमुपपद्यमाना जघन्येन एकं समयं जघन्यतः समयमात्रस्य व्यवधानं कृत्वा समुत्पद्यन्ते इत्यर्थः। 'उक्कोसेणं असंखेज्जा समया अन्तरं कट्टु उववज्जंति' उत्कर्षेणा

चाहिये। 'ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति' हे भदन्त ! वे जीव एकसमय में कितने उत्पन्न होते हैं ? 'गोयमा ! चत्तारि वा, अट्ठ वा, बारस वा, सोलस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा उववज्जंति' हे गौतम ! वे जीव एक समय में चार अथवा आठ, अथवा बारह, अथवा सोलह अथवा संख्यात अथवा असंख्यात उत्पन्न होते हैं। 'ते णं भंते ! जीवा किं संतरं उववज्जंति' निरंतरं उववज्जंति' हे भदन्त ! वे जीव क्या सान्तर-अन्तरसहित-उत्पन्न होते हैं ? अथवा निरन्तर-अन्तररहित उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति निरंतरं वि उववज्जंति' हे गौतम ! वे जीव सान्तर भी उत्पन्न होते हैं और निरन्तर भी उत्पन्न होते हैं। 'संतरं उववज्जमाणा जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जा समया अंतरं कट्टु उववज्जंति'

ભગવન્ તે જીવો એક સમયમાં કેટલા ઉત્પન્ન થાય છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! चत्तारि वा, अट्ठ वा, बारस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, उववज्जंति' હે ગૌતમ ! તે જીવો એક સમયમાં ચાર, અથવા આઠ, અથવા બાર, અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત ઉત્પન્ન થાય છે. 'ते णं भंते ! जीवा किं संतरं उववज्जंति, निरंतरं उववज्जंति' હે ભગવન્ તે જીવો શું સાન્તર-અંતર સહિત ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા નિરંતર અંતર વિના ઉત્પન્ન થાય છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति, निरंतरं वि उववज्जंति' હે ગૌતમ ! તે જીવો સાન્તર પણ ઉત્પન્ન થાય છે. અને નિરંતર પણ ઉત્પન્ન થાય છે. 'संतरं उववज्जमाणा जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जा समया अंतरं कट्टु उववज्जंति' સાન્તર-અન્તર સહિત

संख्येयान् समयान् अन्तरं कृत्वा समुत्पद्यन्ते। 'निरंतरं उववज्जमाणा जहन्नेणं दो समया' निरन्तरमुत्पद्यमानाः जघन्येन द्वौ समयौ यावत् 'उक्कोसेणं असंखेज्जा समया अणुसमयं अविरहियं निरंतरं उववज्जंति' उत्कर्षेणासंख्येयान् समयान् यावत् अनुसमयमविरहितं निरन्तरं समुत्पद्यन्ते। 'अनुसमयं' इत्यादि पदत्रयमेकार्थकम्। 'ते णं भंते! जीवा जं समयं कडजुम्मा तं समयं तेओगा' ते खलु भदन्त! जीवा यस्मिन् समये कृतयुग्मा इत्यभिधीयन्ते तस्मिन् समये किं त्र्योज पदवाच्याः सम्भवन्ति? तथा-'जं समयं तेओगा तं समयं कडजुम्मा' यस्मिन् समये त्र्योज पदवाच्याः तस्मिन् समये कृतयुग्म शब्द वाच्याः सम्भवन्ति किमिति प्रश्नः, उत्तरमाह-'णो इणट्ठे समट्ठे' नायमर्थः समर्थः एक संख्याश्रितानां

सान्तर उत्पन्न होने पर वे जघन्य से एकसमय का और उत्कृष्ट से असंख्यात समयका अन्तर कर के उत्पन्न होते हैं। 'निरंतरं उववज्जमाणा जहन्नेणं दो समया' और निरन्तररूप से जब वे उत्पन्न होते हैं तब वे जघन्य से दो समय तक एवं 'उक्कोसेणं असंखेज्जा समया अणुसमयं अविरहियं निरंतरं उववज्जंति' उत्कृष्ट से असंख्यातसमय तक प्रत्येक समय में बिना अन्तर के उत्पन्न होते रहते हैं। 'अनुसमय आदि ये तीन पद एक ही अर्थवाले हैं। 'ते णं भंते! जीवा जं समयं कडजुम्मा तं समयं तेओगा' हे भदन्त! वे जीव जिस समय में कृतयुग्मपदवाच्य होते हैं उस समय में वे क्या त्र्योजपदवाच्य होते हैं? तथा-'जं समयं तेओगा तं समयं कडजुम्मा' वे जिस समय में त्र्योजपदवाच्य होते हैं उस समय में वे कृतयुग्मपदवाच्य होते हैं?

ઉત્પન્ન થાય ત્યારે તેઓ જઘન્યથી એક સમયથીઅને ઉત્કૃષ્ટથી અસંખ્યાત સમયના અંતરથી ઉત્પન્ન થાય છે. 'निरंतरं उववज्जमाणा जहण्णेणं दो समया' અને નિરંતરપણાથી જ્યારે તેઓ ઉત્પન્ન થાય છે, ત્યારે તેઓ જઘન્યથી બે સમય સુધી અને 'उक्कोसेणं असंखेज्जा समया अणुसमयं अविरहियं निरंतरं उववज्जंति' ઉત્કૃષ્ટથી અસંખ્યાત સમય સુધી પ્રત્યેક સમયમાં અંતર વિના ઉત્પન્ન થતા રહે છે. "અનુ સમય વિગેરે આ ત્રણ પદો એક જ પ્રકારના અર્થને બતાવવાવાળા છે. 'ते णं भंते जीवा जं समयं कडजुम्मा तं समयं तेओगा' હે ભગવન્ તે જીવો જે સમયમાં કૃતયુગ્મ પદવાળા હોય છે, તે વખતે તેઓ શું ત્ર્યોજ પદવાળા હોય છે? તથા 'जं समयं तेओगा तं समयं कडजुम्मा' જે વખતે તેઓ ત્ર્યોજપદથી યુક્ત હોય છે, તે વખતે તેઓ શું કૃતયુગ્મ પદવાળા હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમ-

विरुद्धसंख्यान्तराधिकरणत्वादिति। एवम् 'जं समयं कडजुम्मा तं समयं दावरजुम्मा' यस्मिन् समये कृतयुग्माः तस्मिन् समये द्वापरयुग्माः संभवन्ति ? 'जं समयं दावरजुम्मा तं समयं कडजुम्मा' यस्मिन् समये द्वापरयुग्माः तस्मिन् समये कृतयुग्माः संभवन्ति किमिति प्रश्नः, उत्तरमाह-'णो इणट्ठे समट्ठे' नायमर्थः समर्थः। 'जं समयं कडजुम्मा तं समयं कलियोगा' यस्मिन् समये कृतयुग्मा स्तस्मिन् समये कल्योजाः किम् ? तथा-'जं समयं कलिओगा' तं समयं कडजुम्मा' यस्मिन् समये कल्योजा स्तस्मिन् समये कृतयुग्माः किमिति प्रश्नः,

इस प्रश्न के उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'णो इणट्ठे समट्ठे' हे गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है। क्योंकि जो एक संख्याश्रित हैं उनमें विरुद्ध संख्यान्तर की अधिकरणता नहीं बनती है। इस प्रकार 'जं समयं कडजुम्मा तं समयं दावरजुम्मा' यह प्रश्न भी कि जिस समय वे कृतयुग्म रूप होते हैं उस समय में वे क्या द्वापरयुग्म रूप होते है ? 'णो इणट्ठे समट्ठे' इस सूत्र के अनुसार समर्थित नहीं हुआ है। और इसी प्रकार से-'जं समयं दावरजुम्मा तं समयं कडजुम्मा' यह प्रश्न भी कि "जिस समय वे द्वापरयुग्म रूप होते हैं, उस समय में वे क्या कृतयुग्म रूप भी होते हैं ? 'णो इणट्ठे समट्ठे' सूत्र के अनुसार समर्थित नहीं हुआ है। 'जं समयं कडजुम्मा तं समयं कलियोगा' तथा-'जिस समय में कृतयुग्मपदवाच्य होते हैं उस समय में वे कल्योज पदवाच्य होते हैं तथा 'जं समयं कलिओगा तं समयं कडजुम्मा' जिस समय वे कल्योज पदवाच्य होते हैं उस समय वे क्या कृतयुग्म पद-

સ્વામીને કહે છે કે-'णो इणट्ठे समट्ठे' હે ગૌતમ! આ અર્થ બરોબર નથી. કેમ કે-જેઓ એક સંખ્યાના આશ્રયવાળા છે. તેઓમાં વિરૂદ્ધ પ્રકારના સંખ્યાન્તરનું અધિકરણપણુ બનતું નથી એજ પ્રમાણે 'जं समयं कडजुम्मा तं समयं दावरजुम्मा' જે સમયે કૃતયુગ્મ હોય છે, તે સમયમાં તો શું દ્વાપરયુગ્મ રૂપ હોય છે? આ પ્રશ્ન પણ 'णो इणट्ठे समट्ठे' આ સૂત્રપાઠના કથન પ્રમાણે સમર્થિત થયેલ નથી. અને એજ પ્રમાણે 'जं समयं दावरजुम्मा तं समयं कडजुम्मा' આ પ્રશ્ન કે-જ્યારે તેઓ દ્વાપરયુગ્મ પણાવાળા હોય છે, તે સમયે તેઓ શું કૃતયુગ્મ રૂપ પણ હોય છે? આ પ્રશ્ન પણ 'णो इणट्ठे समट्ठे' આ સૂત્રપાઠ પ્રમાણે સમર્થિત થયેલા નથી. 'जं समयं कडजुम्मा तं समयं कलिओगा' તથા જે સમયે કૃતયુગ્મ પદવાળા હોય છે, તે વખતે તેઓ કલ્યોજ પદથી યુક્ત હોય છે. 'जं समयं कलिओगा तं समयं कडजुम्मा' જ્યારે તેઓ કલ્યોજ પદથી યુક્ત હોય છે, તે વખતે તેઓ

उत्तरमाह-'णो इणट्ठे समट्ठे' नायमर्थः समर्थः, इत्युत्तरम्. युक्तिः पूर्वोक्तैव 'तेणं भंते ! जीवा कहिं उववज्जंति' ते खलु भदन्त ! जीवाः कथमुत्पद्यन्ते इति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'से जहानामए पवए पवमाणे एवं जहा उववायसए जाव नो परप्पओगेणं उववज्जंति' स यथानामकः प्लवकः प्लवमानः एवं यथा उपपातशतके भगवत्या एव त्रिंशत्तमशतके प्रथमोद्देशके कथितं तथाऽत्रापि ज्ञातव्यम् कियत्पर्यन्तं तत्राह-'जाव' इत्यादि, यावत् 'नो परप्पओगेणं उववज्जंति' नो परप्रयोगेणोत्पद्यन्ते एतत्पर्यन्तम् उपपातशतकमत्राध्येतव्यम् एकत्रिंशत्तमशतके पञ्चविंशतिशतकीयाष्टमोद्देशकस्यातिदेशो विद्यते तथा च अध्यवसानयोगनिर्वर्त्तितेन करणोपायेनेत्यारभ्य आत्मप्रयोगेणो-

---

वाच्य होते हैं ?' क्या यह प्रश्न भी 'णो इणट्ठे समट्ठे' सूत्र के अनुसार हे गौतम ! समर्थित नहीं हुआ है ।

'ते णं भंते ! जीवा कहिं उववज्जंति' हे भदन्त ! वे जीव कैसे किस प्रकार से उत्पन्न होते हैं ? 'गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे एवं जहा उववायसए जाव नो परप्पओगेणं उववज्जंति' हे गौतम ! जैसे कोई एक प्लवक कूदता कूदता अपने स्थान से आगे के स्थान पर पहुंच जाता है-इत्यादि रूप से जैसा उपपात शतकमें इसी भगवती के ३१ वें शतक में प्रथम उद्देशक में कहा गया है वह यहां पर कह लेना चाहिये । 'जाव नो परप्पओगेणं उववज्जंति' इस सूत्रपाठ तक तात्पर्य कहने का यह है कि ३१ वें शतक में पच्चीस वें शतक के आठ वें उद्देशकका अतिदेश है सो वहां के 'अध्यवसान योग निर्वर्नितेन करणो-

---

કૃતયુગ્મ પદથી યુક્ત હોય છે ? આ પ્રશ્ન પણ 'णो इणट्ठे समट्ठे' આ સૂત્ર પાઠના કથન પ્રમાણે હે ગૌતમ સમર્થિત થયેલ નથી.

'ते णं भंते ! जीवा कहिं उववज्जंति' હે ભગવન્ તે જીવો કેવી રીતે ઉત્પન્ન થય છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे एवं जहा उववायसए जाव नो परपप्पओगेणं उववज्जंति' હે ગૌતમ ! જેમ કોઈ એક કૂદનાર પુરૂષ કૂદતો કૂદતો પોતાના સ્થાનથી આગળના સ્થાન પર પહોંચી જાય છે, વિગેરે પ્રકારથી જે પ્રમાણે ઉપપાત શતકમાં એટલે કે આ ભગવતી સૂત્રના ૩૧ એકત્રીસમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું સઘળું કથન અહિયાં સમજી લેવું. 'जाव नो परप्पओगेणं उववज्जंति' આ સૂત્રપાઠ સુધી તે કથન કહી લવું. આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે-એકત્રીસમાં શતકમાં પચ્ચીસમા શતકના

त्पद्यन्ते एतत्पर्यन्तं पञ्चविंशतिशतकीयाष्टमोद्देशकप्रकरणमिहाध्येतव्यमिति। 'ते णं भंते ! जीवा किं आयजसेणं उववज्जंति आयअजसेणं उववज्जंति' ते खलु भदन्त ! जीवाः किमात्मयशसा उत्पद्यन्ते आत्मनः सम्बन्धि यशः यशःकारणत्वात् आत्मनः यशः-संयम आत्म यश स्तेन आत्मयशसा समुत्पद्यन्ते अथवा आत्मनोऽयशसा समुत्पद्यन्ते ? इति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि' 'गोयमा' हे गौतम! 'नो आयजसेणं उववज्जंति आय अजसेणं उववज्जंति' नो आत्मयशसा उत्पद्यन्ते किन्तु आत्माऽयशसोत्पद्यन्ते इह च सर्वेषामात्माऽयशसैवोत्पत्ति र्भवति उत्पत्तौ सर्वेषा मविरतत्वादिति। 'जइ आय अजसेणं उववज्जंति किं आयजसं उवजीवंति आय अजसं उवजीवंति' यदि आत्माऽयशसा उत्पद्यन्ते तदा किमात्म

पायेन' इस पाठ से लेकर 'आत्मप्रयोगेण उत्पद्यन्ते' इस पाठ तक पच्चीसवें शतक का अष्टमोद्देशक प्रकरण यहां ग्रहण कर लेना चाहिये। 'ते णं भंते ! जीवा किं आयजसेणं उववज्जंति' हे भदन्त। ये जीव क्या अपने यश से उत्पन्न होते हैं ? अथवा 'आय अजसेणं उववज्जंति' अथवा अपने असंयम से उत्पन्न होते हैं ? 'गोयमा ! नो आयजसेणं उववज्जंति, आय अजसेणं उववज्जंति' हे गौतम ! वे अपने संयम से उत्पन्न नहीं होते हैं, किन्तु अपने असंयम से उत्पन्न होते हैं। यहां समस्त जीवों की उत्पत्ति अपने असंयम से ही होती है। क्यों कि उत्पत्ति में यहां समस्त जीवों की अविरत अवस्था ही कारण है। 'जइ आय अजसेणं उववज्जंति' किं आयजसं उवजीवंति' आय अजसं उवजीवंति यदि वे आत्म असंयम से उत्पन्न होते हैं तो क्या वे आत्म संयम का आश्रय करते हैं ? अथवा आत्म असंयम का

આઠમા ઉદ્દેશાની ભલામણ કરેલ છે, તે આ રીતે 'અધ્યવસાનયોગનિવર્તિતેન કરણોપાયેન' આ પાઠથી લઈને 'आत्मप्रयोगेण उत्पद्यन्ते' આ પાઠ સુધી પચ્ચીસ શતકના આઠમા ઉદ્દેશાનું કથન અહિયાં ગ્રહણ કરીને કહેવું જોઈએ. 'ते णं भंते ! जीवा आयजसेणं उववज्जंति' હે ભગવન્ તે જીવો શું પોતાના યશથી સંયમથી ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા 'आय अजसेणं उववज्जंति' અથવા પોતાના અસંયમથી ઉત્પન્ન થાય છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! नो आयजसेणं उववज्जंति, आय अजसेणं उववज्जंति' હે ગૌતમ ! તેઓ પોતાના સંયમથી ઉત્પન્ન થતા નથી. પરંતુ પોતાના અસંયમથી જ ઉત્પન્ન થાય છે. કેમ કે 'जइ आय अजसेणं उवजीवंति किं आयजसं उवजीवंति आय अजसं उवजीवंति' જો તે આત્મ અસંયમથી ઉત્પન્ન થાય છે, તો શું

यशः-आत्मसंयममुपजीवन्ति-आश्रयन्ति विदधतीत्यर्थः अथवा आत्मनोऽयशः आत्मनोऽसंयममुपजीवन्ति-आश्रयन्ति किमिति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'नो आयजसं उवजीवंति आय अजसं उवजीवंति' नो आत्मनो यश -आत्मसंयम स्तम् नो उपजीवन्ति किन्तु आत्मायशः आत्मनोऽसंयममुपजीवन्ति आश्रयन्तीति । 'जइ आय अजसं उवजीवंति सलेस्सा अलेस्सा' हे भदन्त ! यद्यात्मयशः आत्मनोऽसंयममुपजीवन्ति, तदा किं ते जीवाः सलेश्या भवन्ति अलेश्या वा भवन्तीति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'सलेस्सा नो अलेस्सा' सलेश्याः लेश्यावन्त एव भवन्ति न तु लेश्यारहिता भवन्तीति । 'जइ सलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया' हे भदन्त ! यदि ते जीवाः सलेश्याः तदा सक्रिया अक्रिया वा भवन्तीति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'सकिरिया नो अकिरिया' सक्रिया एव भवन्ति न तु क्रिया रहिता भवन्तीति । 'जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेण सिज्झंति जाव

आश्रय करते हैं 'गोयमा ! नो आयजसं उवजीवंति आय अजसं उवजीवंति' हे गौतम ! वे आत्म संयम का आश्रय नहीं करते हैं किन्तु आत्म असंयम का ही आश्रय करते हैं । 'जइ आय अजसं उवजीवंति, सलेस्सा अलेस्सा' हे भदन्त ! यदि वे आत्म असंयम का आश्रय करते हैं तो क्या वे लेश्यासहित ही होते हैं अथवा लेश्यारहित होते हैं ? 'गोयमा सलेस्सा नो अलेस्सा' हे गौतम ! वे लेश्या सहित ही होते हैं लेश्या रहित नहीं होते हैं । 'जई सलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया' हे भदन्त ! यदि वे लेश्यासहित होते हैं तो क्या वे क्रियायुक्त होते हैं ? अथवा क्रियायुक्त नहीं होते हैं ? 'गोयमा !

તેઓ આત્મ સંયમનો આશ્રય કરે છે ? અથવા આત્મ અસંયમનો આશ્રય કરે છે ? 'गोयमा ! नो आयजसं उवरज्जंति, आय अजसं उवरज्जंति' હે ગૌતમ ! તેઓ આત્મ સંયમનો આશ્રય કરતા નથી પરંતુ આત્મ અસંયમનો જ આશ્રય કરે છે. 'जइ आय अजसं उवजीवंति, सलेस्सा, अलेस्सा' હે ભગવન્ જો તેઓ આત્મ અસંયમનો આશ્રય કરે છે તો શું તેઓ લેશ્યા સહિત હોય છે ? કે લેશ્યા વિનાના હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુશ્રી કહે છે કે 'गोयमा ! सलेस्सा नो अलेस्सा હે ગૌતમ ! તેઓ લેશ્યા સહિત જ હોય છે, લેશ્યારહિત હોતા નથી. 'जइ सलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया' હે ભગવન્ જો તેઓ લેશ્યા સહિત હોય છે, તો શું ક્રિયા યુક્ત હોય છે ? અથવા ક્રિયાયુક્ત હોતા નથી ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! सकिरिया नो अकिरिया' હે ગૌતમ તેઓ ક્રિયારહિત હોય છે, ક્રિયા વિનાના હોતા નથી. 'जइ सकिरिया तेणेव भवग्ग-

त्पद्यन्ते एतत्पर्यन्तं पञ्चविंशतिशतकीयाष्टमोद्देशकप्रकरणमिहाध्येतव्यमिति। 'ते णं भंते ! जीवा किं आयजसेणं उववज्जंति आयअजसेणं उववज्जंति' ते खलु भदन्त ! जीवाः किमात्मयशसा उत्पद्यन्ते आत्मनः सम्बन्धि यशः यशःकारणत्वात् आत्मनः यशः-संयम आत्म यश स्तेन आत्मयशसा समुत्पद्यन्ते अथवा आत्मनोऽयशसा समुत्पद्यन्ते ? इति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि' 'गोयमा' हे गौतम! 'नो आयजसेणं उववज्जंति आय अजसेणं उववज्जंति' नो आत्मयशसा उत्पद्यन्ते किन्तु आत्माऽयशसोत्पद्यन्ते इह च सर्वेषामात्माऽयशसैवोत्पत्ति र्भवति उत्पत्तौ सर्वेषा मविरतत्वादिति। 'जइ आय अजसेणं उववज्जंति किं आयजसं उवजीवंति आय अजसं उवजीवंति' यदि-आत्माऽयशसा उत्पद्यन्ते तदा किमात्म

पायेन' इस पाठ से लेकर 'आत्मप्रयोगेण उत्पद्यन्ते' इस पाठ तक पच्चीसवें शतक का अष्टमोद्देशक प्रकरण यहां ग्रहण कर लेना चाहिये। 'ते णं भंते ! जीवा किं आयजसेणं उववज्जंति' हे भदन्त ! ये जीव क्या अपने यश से उत्पन्न होते हैं ? अथवा 'आय अजसेणं उववज्जंति' अथवा अपने असंयम से उत्पन्न होते हैं ? 'गोयमा ! नो आयजसेणं उववज्जंति, आय अजसेणं उववज्जंति' हे गौतम ! वे अपने संयम से उत्पन्न नहीं होते हैं, किन्तु अपने असंयम से उत्पन्न होते हैं। यहां समस्त जीवों की उत्पत्ति अपने असंयम से ही होती है। क्यों कि उत्पत्ति में यहां समस्त जीवों की अविरत अवस्था ही कारण है। 'जइ आय अजसेणं उववज्जंति' किं आयजसं उवजीवंति' आय अजसं उवजीवंति यदि वे आत्म असंयम से उत्पन्न होते हैं तो क्या वे आत्म संयम का आश्रय करते हैं ? अथवा आत्म असंयम का

આઠમા ઉદ્દેશાની ભલામણ કરેલ છે, તો ત્યથી 'अध्यवसानयोगनिर्वर्तितेन करणोपायेन' આ પાઠથી લઈને 'आत्मप्रयोगेण उत्पद्यन्ते' આ પાઠ સુધી પચ્ચીસ શતકના આઠમા ઉદ્દેશાનું કથન અહિયાં ગ્રહણ કરીને કહેવું જોઈએ. 'ते णं भंते ! जीवा आयजसेणं उववज्जंति' હે ભગવન્ તે જીવો શું પોતાના યશથી સંયમથી ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા 'आय अजसेणं उववज्जंति' અથવા પોતાના અસંયમથી ઉત્પન્ન થાય છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा ! नो आयजसेणं उववज्जंति, आय अजसेणं उववज्जंति' હે ગૌતમ ! તેઓ પોતાના સંયમથી ઉત્પન્ન થતા નથી. પરંતુ પોતાના અસંયમથી જ ઉત્પન્ન થાય છે. કેમ કે 'जइ आय अजसेणं उवजीवंति किं आयजसं उवजीवंति आय अजसं उवजीवंति' જો તે આત્મ અસંયમથી ઉત્પન્ન થાય છે, તો શું

यशः-आत्मसंयममुपजीवन्ति—आश्रयन्ति विदधतीत्यर्थः अथवा आत्मनोऽयशः आत्मनोऽसंयममुपजीवन्ति—आश्रयन्ति किमिति प्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'नो आयजसं उवजीवंति आय अजसं उवजीवंति' नो आत्मनो यश —आत्मसंयम स्तम् नो उपजीवन्ति किन्तु आत्मायशः आत्मनोऽसंयममुपजीवन्ति आश्रयन्तीति । 'जइ आय अजसं उवजीवंति सलेस्सा अलेस्सा' हे भदन्त ! यद्यात्मयशः आत्मनोऽसंयममुपजीवन्ति, तदा किं ते जीवाः सलेश्या भवन्ति अलेश्या वा भवन्तीति प्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'सलेस्सा नो अलेस्सा' सलेश्याः लेश्यावन्त एव भवन्ति न तु लेश्यारहिता भवन्तीति । 'जइ सलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया' हे भदन्त ! यदि ते जीवाः सलेश्याः तदा सक्रिया अक्रिया वा भवन्तीति प्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'सकिरिया नो अकिरिया' सक्रिया एव भवन्ति न तु क्रिया रहिता भवन्तीति । 'जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेण सिज्झंति जाव

आश्रय करते हैं 'गोयमा ! नो आयजसं उवजीवंति आय अजसं उवजीवंति' हे गौतम ! वे आत्म संयम का आश्रय नहीं करते हैं किन्तु आत्म असंयम का ही आश्रय करते हैं । 'जइ आय अजसं उवजीवंति, सलेस्सा अलेस्सा' हे भदन्त ! यदि वे आत्म असंयम का आश्रय करते हैं तो क्या वे लेश्यासहित ही होते हैं अथवा लेश्यारहित होते हैं ? 'गोयमा सलेस्सा नो अलेस्सा' हे गौतम ! वे लेश्या सहित ही होते हैं लेश्या रहित नहीं होते हैं । 'जइ सलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया' हे भदन्त ! यदि वे लेश्यासहित होते हैं तो क्या वे क्रियायुक्त होते हैं ? अथवा क्रियायुक्त नहीं होते हैं ? 'गोयमा !

તેઓ આત્મ સયમનો આશ્રય કરે છે ? અથવા આત્મ અસંયમનો આશ્રય કરે છે ? 'गोयमा ! नो आयजसं उववज्जंति, आय अजसं उववज्जंति' હે ગૌતમ ! તેઓ આત્મ સંયમનો આશ્રય કરતા નથી પરંતુ આત્મ અસંયમનો જ આશ્રય કરે છે. 'जइ आय अजस उवजीवंति, सलेस्सा, अलेस्सा' હે ભગવન્ જો તેઓ આત્મ અસંયમનો આશ્રય કરે છે તો શું તેઓ લેશ્યા સહિત હોય છે ? કે લેશ્યા વિનાના હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે 'गोयमा ! सलेस्सा नो अलेस्सा હે ગૌતમ ! તેઓ લેશ્યા સહિત જ હોય છે, લેશ્યારહિત હોતા નથી. 'जइ सलेस्सा कि सकिरिया अकिरिया' હે ભગવન્ જો તેઓ લેશ્યા સહિત હોય છે, તો શું ક્રિયા યુક્ત હોય છે ? અથવા ક્રિયાયુક્ત હોતા નથી ? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'गोयमा ! सकिरिया नो अकिरिया' હે ગૌતમ તેઓ ક્રિયારહિત હોય છે, ક્રિયા વિનાના હોતા નથી. 'जइ सकिरिया तेणेव भवग्ग-

अंतं करेंति' हे भदन्त ! यदि ते जीवाः सक्रियाः तदा तेनैव भवग्रहणेन सिद्धयन्ति यावदन्तं कुर्वन्ति अत्र यावत्पदेन बुद्धयन्ते मुच्यन्ते परिनिर्वास्यन्ति सर्वदुःखाना-मित्यस्य ग्रहणं भवतीति प्रश्नः, भगवानाह–'णो इणट्ठे समट्ठे' नायमर्थः समर्थः । ते तेनैव भवग्रहणेन न सिद्धयन्ति ५ इति भावः ।

'रासिजुम्म कडजुम्म असुरकुमाराणं भंते ! कओ उववज्जंति' राशियुग्म कृतयुग्मासुरकुमाराः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते यावद्देवेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते इति प्रश्नः, उत्तरमाह–अतिदेशद्वारेण 'जहेव' इत्यादि

सकिरिया नो अकिरिया' हे गौतम ! ये क्रिया सहित ही होते हैं क्रिया रहित नहीं होते हैं । 'जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति' हे भदन्त ! यदि क्रिया सहित ही होते हैं तो क्या वे उसी भव से सिद्ध हो जाते हैं यावत् अन्त कर देते हैं? यहां यावत्पद से 'बुद्धयन्ते, मुच्यन्ते परिनिर्वास्यन्ति सर्व दुःखानाम्' इन पदों का ग्रहण हुआ है । उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं–'णो इणट्ठे समट्ठे' हे गौतम ! यह अर्थ समर्थित नहीं हुआ है । इस कारण वे भी इसी भव से न सिद्ध होते हैं न बुद्ध होते हैं न मुक्त होते हैं न परिनिर्वात होते हैं न समस्त दुःखों का अन्त करते हैं ।

'रासिजुम्म कडजुम्म असुरकुमाराणं भंते ! कओ उववज्जंति' हे भदन्त ! राशियुग्म कृतयुग्म राशिप्रमाण असुरकुमार किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा यावत् देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं?

हणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति' હે ભગવન્ જો ક્રિયા સહિત જ હોય છે, તો શું તેઓ એજ ભવમાં સિદ્ધિ પ્રાપ્ત કરી લે છે? બુદ્ધ થઈ જાય છે? મુક્ત થઈ જાય છે? યાવત્ સર્વ દુઃખોનો અંત કરી દે છે? અહિયાં યાવત્ પદથી बुद्धयन्ते, मुच्यन्ते परिनिर्वास्यंति सर्वदुःखानाम् આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે–'णो इणट्ठे समट्ठे' હે ગૌતમ! આ અર્થ સમર્થિત થયેલ નથી. તેથી તેઓ એજ ભવમાં સિદ્ધ થતા નથી. મુક્ત થતા નથી પરિનિર્વાત થતા નથી. અને સઘળા દુઃખોનો અંત કરતા નથી.

'रासिजुम्म कडजुम्म असुरकुमाराणं भंते ! कओ उववज्जंति' હે ભગવન્ રાશિયુગ્મ રૂપ કૃતયુગ્મ રાશિ પ્રમાણ અસુરકુમાર કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા તિર્યંચોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અતિ

'जहेव नेरइया तहेव निरवसेसं' यथैव नैरयिकास्तथैव निरवशेषम् तिर्यग्भ्यो मनुष्येभ्यो वा आगत्योत्पद्यन्ते इत्यादि सर्वं नैरयिक प्रकरणवदेवावगन्तव्यं नवरं नैरयिकस्थाने असुरकुमारेति पदं संयोज्य अलापको वक्तव्यः, आलापप्रकारश्च स्वयमेव ऊहनीय इति। 'एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिया' एवं नैरयिकवदेव यावत् पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः यावत्पदेन असुरकुमारादारभ्य चतुरिन्द्रियान्तानां संग्रहस्तथा च एकेन्द्रियादारभ्य पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानामुपपातादयः नारकवदेव ज्ञातव्याः। 'नवरं वणस्सइकाइया जाव असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति' नवरं-केवलं नारकप्रकरणापेक्षया इदमेव वैलक्षण्यं यद् वनस्पति-

---

अतिदेश द्वारा उत्तर देते हुए प्रभुश्री कहते हैं-'जहेव नेरइया तहेव निरवसेसं' हे गौतम! जैसा नैरयिकों के सम्बन्ध में कहा जा चुका है वैसा ही इनके सम्बन्ध में कहलेना चाहिये। इस प्रकार ये तिर्यग्योनिकों में से आकर के अथवा मनुष्यों में से आकर के उत्पन्न होते हैं इत्यादि समस्त प्रकरण यहां जानने का हो जाता है। आलापक की रचना करते समय नैरयिक के स्थान में असुरकुमार पद रखना चाहिये और आलाप प्रकार अपने आप समझ लेना चाहिये 'एवं जाव पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया' इसी प्रकार से यावत् पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक जीवों के भी उत्पाद आदि जानना चाहिये। यहां यावत्पद से 'एकेन्द्रिय नागकुमार से लेकर चौइन्द्रिय तक के जीवों का ग्रहण हुआ है। तथा च असुरकुमार से लेकर पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिकों का उत्पात आदि नारक के जैसा ही होता है। 'नवरं वणस्सइकाइया जाव असंखेज्जा वा अणंतावा उववज्जंति' परन्तु वनस्पतिकायिक जीव यावत् असंख्यात अथवा अनन्त

દેશ દ્વારા આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'जहेव नेरइया तहेव निरवसेस' હે ગૌતમ! નૈરયિકોના સંબધમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન આ રાશિયુગ્મ કૃતયુગ્મ અસુર કુમારોના સંબંધમાં પણ સમજવું. આ રીતે તેઓ તિર્યંચયોનિકોમાંથી અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, વિગેરે સઘળું પ્રકરણ અહિયાં સમજી લેવું. આલાપકો કહેતી વખતે નૈરયિકોના સ્થાને અસુરકુમાર આ પદ મૂકીને આલાપકો કહેવા જોઈએ. આલાપકોનો પ્રકાર સ્વયં સમજી લેવો 'एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिया' એજ પ્રમાણે યાવત્ પંચેન્દ્રિય તિર્યંચયોનિકોના ઉપપાત વિગેરે પણ સમજવા. અહિયાં યાવત્ પદથી એકેન્દ્રિયોથી લઈને ચાર ઇન્દ્રિય સુધીના જીવો ગ્રહણ કરાયા છે. એટલે કે એકેન્દ્રિયોથી લઈને પંચેન્દ્રિય તિર્યંચયોનિકોનો ઉપપાત વિગેરે નારકોના કથન પ્રમાણે હોય છે. 'नवरं वणस्सइकाइया जाव असंखेज्जा वा अणता वा उववज्जंति' પરંતુ

कायिका यावद् असंख्याता वा अनन्ता वोत्पद्यन्ते इति यावत्पदेन चत्वारोऽष्टौ द्वादश षोडश संख्याता वा एतदन्तस्य ग्रहणम्। 'सेसं एवं चेव' शेषम्-परिमाणातिरिक्तं सर्वमपि एवमेव-नारकवदेव ज्ञातव्यमिति। 'मणुस्सा वि एवं चेव जाव नो आयजसेणं उववज्जंति आयअजसेणं उववज्जंति' मनुष्या अपि एवमेव-नैरयिकवदेव ज्ञातव्याः कियन्तं प्रकरणं मनुष्ये योज्यं तत्राह-'जाव' इत्यादि, यावत् आत्मयशसा नोत्पद्यन्ते किन्तु आत्मायशसामुत्पद्यन्ते एतत्पर्यन्तं नारकप्रकरणमवगन्तव्यमिति। 'जइ आय अजसेणं उववज्जंति किं आयजसं उवजीवंति आयअजसं उवजीवंति' हे भदन्त! ते मनुष्याः यदि आत्मनोऽयशसा-असंयमेनोत्पद्यन्ते तदा किम् आत्मयशः-आत्मनः संयममुपजीवन्ति-आश्रयन्ति, अथवा आत्मनोऽसंयममुपजीवन्तीति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'आयजसंपि उवजीवंति आयअजसंपि उवजीवंति' आत्मयशः आत्मनः

होते हैं। यहां यावत् पद से चार आठ बारह सोलह अथवा संख्यात इस पाठका ग्रहण हुआ है। 'सेसं एवं चेव' परिमाण के अतिरिक्त और सब कथन नारक के प्रकरण के जैसा ही है। 'मणुस्सा वि एवं चेव जाव नो आयजसेणं उववज्जंति आय अजसेणं उववज्जंति' इस प्रकार से मनुष्य भी यावत् आत्मसंयम से उत्पन्न नहीं होते हैं किन्तु आत्म असंयम से ही उत्पन्न होते हैं' 'इस पाठतक मनुष्यों के सम्बन्ध में भी सब कथन नारक के प्रकरण जैसा ही कह लेना चाहिये। 'जइ आय अजसेणं उववज्जंति, किं आयजसं उवजीवंति, आय अजसं उवजीवंति' हे भदन्त! यदि वे मनुष्य आत्म असंयम से उत्पन्न होते हैं तो क्या वे आत्म संयमका आश्रय करते हैं अथवा आत्म असंयमका

વનસ્પતિકાયિક જીવો યાવત્ અસંખ્યાત અથવા અનંત ઉત્પન્ન થાય છે. અહિયાં યાવત્પદથી એક અથવા બે યાવત્ દસ અથવા અસંખ્યાત આ પાઠ ગ્રહણ કરાયો છે. 'सेसं एवं चेव' પરિણામના કથન શિવાય બાકીનું સઘળું કથન નારકના પ્રકરણ પ્રમાણે જ છે. 'मणुस्सा वि एवं चेव जाव नो आय जसेणं उववज्जंति आय अजसेणं उववज्जति' એજ પ્રમાણે મનુષ્ય પણ યાવત્ આત્મ સંયમથી ઉત્પન્ન થતા નથી. પરંતુ આત્મ અસંયમથી જ ઉત્પન્ન થાય છે, આ પાઠ સુધી મનુષ્યોના સંબંધમાં પણ પરિણામના કથન શિવાય બાકીનું સઘળું કથન નારકના પ્રકરણમાં કહ્યા પ્રમાણે કહેવું જોઈએ 'जइ आयजसेणं उववज्जति किं आयजसं उवजीवंति आय अजसं उवजीवंति' હે ભગવન જો તે મનુષ્યો આત્મસંયમથી ઉત્પન્ન થાય છે, તો શું તેઓ આત્મ સંયમનો આશ્રય કરે છે? અથવા આ અસંયમનો આશ્રય કરે છે? ઉત્તરમાં

संयममपि उपजीवन्ति ते मनुष्याः तथा-आत्मनोऽयशः असंयममपि उपजीवन्तीति 'जइ आयजसं उवजीवंति किं सलेस्सा अलेस्सा' यदि ते मनुष्या आत्मयशः आत्मनः संयममुपजीवंति तदा किं ते सलेश्या लेश्यासहिताः किं वा अलेश्याः-लेश्यारहिता वा भवन्तीति प्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'सलेस्सा वि अलेस्सा वि' सलेश्या अपि भवन्ति अलेश्याः-लेश्यारहिता अपि भवन्ति। 'जइ अलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया' यदि सलेश्या भवन्ति तदा किं ते मनुष्याः सक्रिया भवन्ति अक्रियाः-क्रियारहिता वा भवन्तीति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'नो सकिरिया अकिरिया नो सक्रिया भवन्ति, किन्तु अक्रिया भवन्तीति। 'जइ अकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति' यदि ते मनुष्याः अक्रियाः तदा किं तेनैव भवग्रहणेन

आश्रय करते हैं? 'गोयमा! आयजसं वि उवजीवंति आय_अजसंपि उवजीवंति' हे गौतम! वे आत्म संयमका भी आश्रय करते हैं और आत्म असंयम का भी आश्रय करते हैं। 'जइ आयजसं उवजीवंति किं सलेस्सा अलेस्सा' हे भदन्त! यदि वे आत्म संयम का आश्रय करते हैं तो क्या वे सलेश्य होते हैं अथवा अलेश्य होते हैं? 'गोयमा! सलेस्सा वि अलेस्सा वि' हे गौतम! वे सलेश्य भी होते हैं और अलेश्य भी होते हैं। 'जइ अलेस्सा किं सकिरिया, अकिरिया' यदि वे अलेश्य होते हैं तो वे क्या क्रिया सहित होते हैं? अथवा क्रिया रहित होते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा! नो सकिरिया अकिरिया' वे सक्रिय नहीं होते हैं किन्तु अक्रिय होते हैं। 'जइ अकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति' हे भदन्त! यदि वे अक्रिय होते हैं तो क्या वे उसी भवसे सिद्धिक होते हैं यावत् अन्त करते हैं? यहां यावत्

પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा! आयजसं वि उवजीवंति आय अजसं वि उवजीवंति' હે ગૌતમ! તેઓ આત્મ સંયમનો પણ આશ્રય કરે છે. અને આત્મ અસંયમનો પણ આશ્રય કરે છે. 'जइ आयजसं उवजीवंत्ति किं सलेस्सा अलेस्सा' હે ભગવન્ જો તેઓ આત્મ સંયમનો આશ્રય કરે છે, તો શું તેઓ લેશ્યાવાળા હોય છે? અથવા લેશ્યા વિનાના હોય છે? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा! सलेस्सा वि अलेस्सा वि' હે ગૌતમ! તેઓ લેશ્યાવાળા પણ હોય છે, અને લેશ્યાવિનાના પણ હોય છે. 'जइ अलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया' જો તેઓ લેશ્યાવિનાના હોય છે, તો શું ક્રિયા સહિત હોય છે? કે ક્રિયા વિનાના હોય છે? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'गोयमा! नो सकिरिया अकिरिया' તેઓ ક્રિયાવાળા હોતા નથી પણ અક્રિયા-ક્રિયા વિનાના હોય છે. 'जइ अकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति' હે ભગવન્ જો તેઓ ક્રિયા વિનાના હોય છે, તો શું તેઓ એજ ભવમાં

सिद्धयन्ति बुद्धयन्ते मुच्यन्ते परिनिर्वान्ति सर्वदुःखाना मन्तं कुर्वन्तीति प्रश्नः, उत्तरमाह–'हंता' इत्यादि, 'हंता सिज्झंति जाव अंतं करेंति' हन्त गौतम! इत्थं भूता मनुष्याः सिद्धयन्ति बुद्धयन्ते मुच्यन्ते परिनिर्वान्ति सर्वदुःखानामन्तं च कुर्वन्त्येवेति। 'जइ सलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया' हे भदन्त! ते मनुष्या यदि सलेश्याः तदा किं सक्रिया भवन्ति अक्रिया वा भवन्तीति प्रश्नः भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'सकिरिया नो अकिरिया' ये सलेश्यास्ते सक्रिया एव भवन्ति नो अक्रिया भवन्ति, इति। 'जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अन्तं करेंति' यदि ते सक्रियाः तदा किं तेनैव भवग्रहणेन सिद्धयन्ति यावत्सर्वदुःखानामन्तं कुर्वन्तीति प्रश्नः, भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि 'गोयमा' हे गौतम! 'अत्थेगइया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति

पद से बुद्ध होते हैं, मुक्त होते हैं, परिनिर्वात होते हैं और सर्व दुःखों का (अन्त करते हैं) इन पदों का ग्रहण हुआ है। उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं–'हंता, सिज्झंति जाव अंतं करेंति' हां गौतम! वे उसी भव से सिद्ध होते हैं यावत् समस्त दुःखों का अन्त करते हैं। 'जइ सलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया' हे भदन्त! यदि वे सलेश्य होते हैं तो क्या सक्रिय होते हैं अथवा अक्रिय होते है? 'गोयमा! सकिरिया नो अकिरिया' हे गौतम! वे सक्रिय होते है अक्रिय नहीं होते हैं। 'जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति' यदि वे सक्रिय होते हैं तो क्या वे उसी भव से सिद्ध होते हैं यावत् समस्त दुःखों का अन्त करते हैं? 'गोयमा! अत्थेगइया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति, जाव

સિદ્ધ થાય છે, યાવત્ અંત કરે છે? અહિયાં યાવત્પદથી બુદ્ધ થાય છે? મુક્ત થાય છે? પરિનિર્વાત થાય છે? અને સર્વ દુ.ખોનો અંત કરે છે? આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે–'हंता! सिज्झंति जाव अंतं करेंति' હા ગૌતમ! તેઓ એજ ભવમાં સિદ્ધ થાય છે. યાવત્ સઘળા દુઃખોનો અંત કરે છે 'जइ सलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया' હે ભગવન્ જો તેઓ લેશ્યાવાળા હોય છે તો શું તેઓ સક્રિય–ક્રિયા સહિત હોય છે? અથવા અક્રિય–ક્રિયા વિનાના હોય છે? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે–'गोयमा! सकिरिया नो अकिरिया' હે ગૌતમ! તેઓ ક્રિયા સહિત હોય છે, ક્રિયાવિનાના હોતા નથી. 'जइ सकिरिया तणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति, जाव अंतं करेंति' જો તેઓ ક્રિયા સહિત હોય છે, તો શું તેઓ એજ ભવમાં સિદ્ધિ થઇ જાય છે? યાવત્ સઘળા દુઃખોનો અંત કરે છે? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે–'गोयमा! अत्थेगइया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति, जाव

अस्त्येकके तेनैव भवग्रहणेन सिद्ध्यंति यावत् अन्तं कुर्वन्ति। तेषां मोक्षस्य प्राप्स्यमानत्वेन तत्समये अक्रियत्व सद्भावात्, 'अत्थेगइया नो तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति' अस्त्येकके मनुष्या नो तेनैव भवग्रहणेन सिद्धयन्ति यावत् सर्वदुःखानामन्तं कुर्वन्तीति। 'जइ आय अजसं उवजीवंति किं सलेस्सा अलेस्सा' यद्यात्मनोऽयश उपजीवन्ति तदा किं ते मनुष्याः सलेश्या अलेश्या वा भवन्तीति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा! सलेस्सा नो अलेस्सा' हे गौतम! तदा ते सलेश्या नो अलेश्या भवन्तीति। 'जइ सलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया' यदि सलेश्यास्ते मनुष्या स्तदा किं सक्रिया अक्रिया वा भवन्तीति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'सकिरिया नो

अंतं करेंति' हे गौतम! इन में कितनेक ऐसे मनुष्य होते हैं जो उसी भवसिद्धिक होते हैं यावत् समस्त दुःखों का अन्त करते हैं। यहां मोक्ष की भविष्यत् में प्राप्ति के सद्भाव से अक्रियता का सद्भाव हो जाता है। 'अत्थेगइया नो तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति' तथा इन में कितनेक मनुष्य ऐसे होते हैं जो उसी भव से सिद्ध नहीं होते हैं यावत् समस्त दुःखों का अन्त नहीं करते हैं 'जइ आय अजसं उवजीवंति किं सलेस्सा अलेस्सा' यदि वे आत्म असंयम का आश्रय करते हैं तो क्या वे मनुष्य सलेश्य होते हैं अथवा अलेश्य होते हैं? 'गोयमा! सलेस्सा नो अलेस्सा' हे गौतम! वे सलेश्य होते हैं अलेश्य नहीं होते हैं? 'जइ सलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया' यदि वे सलेश्य होते हैं तो क्या क्रिया सहित होते हैं अथवा क्रिया रहित होते हैं? 'गोयमा!

अंतं करेंति' हे गौतम! तेओमां केटलाक मनुष्यो एवा होय छे के-एज भवमां सिद्ध थई जाय छे, यावत् सघळा दुःखोनो अंत करे छे. अहियां भविष्यमां मोक्ष प्राप्तिना सद्भावथी अक्रियपणानो सद्भाव थई जाय छे. 'अत्थेगइया नो तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति' तथा तेओमां केटलाक मनुष्यो एवा होय छे के-जेओ एज भवमां सिद्ध थता नथी. यावत् सघळा दुःखोनो अंत करता नथी. 'जइ आय अजसं उवजीवंति किं सलेस्सा अलेस्सा' जो तेओ आत्म असंयमनो आश्रय करे छे तो शुं ते मनुष्यो लेश्या सहित होय छे? के लेश्या विनाना होय छे? उत्तरमां प्रभुश्री कहे छे के-'गोयमा! सलेस्सा नो अलेस्सा' हे गौतम! तेओ लेश्यावाळा होय छे, लेश्या विनाना होता नथी. 'जइ सलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया' जो तेओ लेश्यावाळा होय छे, तो शुं क्रिया सहित होय छे के क्रिया विनाना होय छे? उत्तरमां प्रभुश्री कहे छे के-'गोयमा! सकिरिया नो अकिरिया' हे गौतम! तेओ क्रिया सहित

अक्रिरिया' सक्रियास्ते भवन्ति नतु अक्रिया भवन्तीति । 'जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति' यदि ते सक्रिया स्तदा किं तेनैव भवग्रहणेन सिद्धयन्ति यावदन्तं कुर्वन्तीति प्रश्नः, उत्तरमाह-'णो इणट्ठे समट्ठे' नायमर्थः समर्थः । एते तेनैव भवग्रहणेन न सिद्धयन्ति आत्माऽयशस्कत्वेन तद्भावमोक्षाऽप्रद्भावात् । 'वाणमंतर जोइसियवेमाणिया जहा नेरइया' वानव्यन्तर ज्योतिष्क वैमानिका यथा नैरयिकाः नैरयिकवदेव एतेषामपि तिर्यग्मनुष्याभ्यामागत्योत्पत्तिरित्यादिकं सर्वं ज्ञातव्यमिति । 'सेवं ! भंते ! सेवं भंते त्ति' तदेवं

सकिरिया नो अकिरिया' हेगौतम ! वे सक्रिय होते हैं अक्रिय नहीं होते हैं । 'जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति, जाव अंतं करेंति' यदि वे सक्रिय होते हैं तो क्या वे उसी भव से सिद्ध होते हैं यावत् समस्त दुःखों का अन्त करते हैं ? 'णो इणट्ठे समट्ठे' हे गौतम ! यह अर्थ समर्थित नहीं हुआ है । क्योंकि आत्म असंयमवाले होने से वे तद्भव मोक्षगामी नहीं होते हैं । 'वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया जहा नेरइया' वानव्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक इन के सम्बन्ध में भी नैरयिकों के जैसा ही कथन जानना चाहिये । इनकी भी उत्पत्ति तिर्यग्योनिक जीवों में से और मनुष्यों में से आये हुए जीवों से होती है । अर्थात मनुष्य गति से और तिर्यग्गतिसे आये हुए जीव ही वानव्यन्तरादि रूप से उत्पन्न होते हैं । इत्यादि सब कथन नैरयिकों के जैसा ही जानना चाहिये । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त जैसा आपने यह कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है २ । इस प्रकार कहकर गौतमने

હોય છે. ક્રિયા વિનાના હોતા નથી. 'जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति, जाव अंतं करेंति' જો તેઓ ક્રિયા સહિત હોય છે ? તો શું તેઓ એજ ભવમાં સિદ્ધ થાય છે ? યાવત્ સઘળા દુઃખોનો અંત કરે છે ? णो इणट्ठे समट्ठे' હે ગૌતમ ! આ અર્થ બરોબર નથી કેમકે-આત્મ સંયમવાળા હોવાથી તેઓ એજ ભવમાં મોક્ષ પ્રાપ્ત કરવાવાળા હોતા નથી. 'वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया जहा नेरइया' વાનવ્યન્તર, જ્યોતિષ્ક અને વૈમાનિકોના સંબંધમાં પણ નૈરયિકોના કથન પ્રમાણે જ કથન સમજવું. તેઓની ઉત્પત્તી પણ તિર્યંચ યોનિવાળા જીવોમાંથી અને મનુષ્યોમાંથી આવેલા જીવોમાંથી થાય છે. અર્થાત્ મનુષ્યગતિથી અને તિર્યંચગતિથી આવેલા જીવો જ વાનવ્યન્તર વિગેરે પણાથી ઉત્પન્ન થાય છે. વિગેરે તમામ કથન નૈરયિકોના કથન પ્રમાણે જ સમજવું.

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે કથન કર્યું છે, તે સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુંપ્રિયનું સઘળું

भदन्त ! तदेवं भदन्त इति । हे भदन्त ! राशियुग्म कृतयुग्म नारकादिवैमानिकान्त जीवानामुत्पादादि विषये यत् कथितं देवानुप्रियेण तत्सर्वं सत्यमेवेति कथयित्वा गौतमो यावद्विहरतीति ॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात–जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचक–पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक–श्रीशाहूच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त–
'जैनाचार्य' पदभूषित—कोल्हापुरराजगुरु–
बालब्रह्मचारि — जैनाचार्य — जैनधर्मदिवाकर
–पूज्यश्री घासिलालव्रतिविरचितायां श्री "भग-
वतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां
व्याख्यायां एकचत्वारिंशत्तमे राशि
युग्मशतके प्रथमोद्देशकः
समाप्तः ॥४१।१।१॥

प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके एकतालीसवें शतक के
राशियुग्म शतक में प्रथम उद्देशक समाप्त ॥४१–१॥

કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્ર'ની
પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના એકતાળીસમાં શતકમાં રાશિયુગ્મશતકનો
પહેલો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૪૧–૧॥



॥ 'अह बीओ उद्देसो' ॥

मूलम्—रासिजुम्म तेओगनेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति एवं चेव उद्देसो भाणियव्वो। नवरं परिमाणं तिन्नि वा सत्त वा पंचदस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति। संतरं तहेव। ते णं भंते! जीवा जं समयं तेओगा तं समयं कडजुम्मा जं समयं कडजुम्मा तं समयं तेओगा? णो इणट्ठे समट्ठे। जं समयं तेओगा तं समयं दावरजुम्मा जं समयं दावरजुम्मा तं समयं तेओगा? णो इणट्ठे समट्ठे। एवं कलिओगेण वि समं सेसं तं चेव जाव वेमाणिया। नवरं उववाओ सव्वेसिं जहा वक्कंतीए। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥४१-२॥

॥ बीओ उद्देसो समत्तो ॥

छाया—राशियुग्म त्र्योज नैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते एवमेव उद्देशो भणितव्यः। नवरं परिमाणं त्रयो वा, सप्त वा, एकादश वा, पञ्चदश वा, संख्याता वा, असंख्याता वोत्पद्यन्ते। सान्तरं तथैव। ते खलु भदन्त! जीवाः यस्मिन् समये त्र्योजा स्तस्मिन् समये कृतयुग्माः यस्मिन् समये कृतयुग्मा स्तस्मिन् समये त्र्योजाः नायमर्थः समर्थः। यस्मिन् समये त्र्योजा स्तस्मिन् समये द्वापरयुग्माः यस्मिन् समये द्वापरयुग्मा स्तस्मिन् समये त्र्योजाः नायमर्थः समर्थः। एवं कल्योजेनापि समम्, शेषं तदेव यावद्वैमानिकाः। नवरमुपपातः सर्वेषां यथा व्युत्क्रान्तौ। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥

॥ द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥४०।२॥

टीका—'रासिजुम्म तेओग नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' राशियुग्म-त्र्योज नैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावद्देवेभ्यो वेति

शतक ४१ उद्देशक २

'रासिजुम्म तेओगनेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' हे भदन्त! राशियुग्म त्र्योज नैरयिक किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते

બીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'रासिजुम्म तेओग नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ રાશિયુક્ત ત્ર્યોજ નૈરયિક કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે?

प्रश्नः, उत्तरमाह–'एवं चेव उद्देसओ भाणियव्वो' एवमेव प्रथमोद्देशकवदेव द्वितीयोद्देशकोऽपि भणितव्यः। प्रथमोद्देशके यथा यथा कथितं तत्सर्वमिहापि तथैव वक्तव्यमिति। प्रथमोद्देशकापेक्षया द्वितीये वैलक्षण्यं दर्शयति–'नवरं' इत्यादि, 'नवरं परिमाणं तिन्नि वा सत्त वा एक्कारस वा पंचदस वा संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा उववज्जंति' नवरं परिमाणं त्रयो वा सप्त वा एकादश वा, पञ्चदश वा, संख्याता वा असंख्याता वोत्पद्यन्ते इति। 'संतरं तहेव' सान्तरमुत्पद्यन्ते निरन्तरं वोत्पद्यन्ते इत्यस्योत्तरं प्रथमोद्देशकवदेव ज्ञातव्यमिति। 'तेणं भंते! जीवा' ते खलु भदन्त! राशियुग्म त्र्योज जीवाः 'जं समयं तेओगा तं समयं कडजुम्मा' यस्मिन्

हैं? क्या वे नैरयिकों से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा यावत् देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? 'एवं चेव उद्देसओ भाणियव्वो' हे गौतम! इस सम्बन्ध में जैसा प्रथम उद्देशक कहा गया है उसी प्रकार से यह द्वितीय उद्देशक भी कह लेना चाहिये। परन्तु उसकी अपेक्षा जो यहां भिन्नता है वह 'नवरं परिमाणं तिन्नि वा सत्त वा एक्कारस वा पंचदसवा संखेज्जावा असंखेज्जावा उववज्जंति' इस सूत्र पाठ द्वारा प्रकट की गई है–इससे यह प्रकट किया गया है कि राशियुग्म नैरयिक एक समय में तीन, अथवा सात अथवा ग्यारह अथवा पन्द्रह अथवा संख्यात अथवा असंख्यात उत्पन्न होते हैं। 'संतरं तहेव' ये नारक सान्तर उत्पन्न होते हैं अथवा निरन्तर उत्पन्न होते हैं? इस सम्बन्ध में उत्तर प्रथम उद्देशक में जैसा कहा गया है

અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે–'एवं चेव उद्देसओ भाणियव्वो' હે ગૌતમ! આ સંબંધમાં પહેલા ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણેનું કથન કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન આ બીજા ઉદ્દેશામાં પણ કહી લેવું જોઇએ. પરંતુ પહેલા ઉદ્દેશાના કથન કરતાં આ ઉદ્દેશામાં જે ફેરફાર આવે છે, તે 'नवरं परिमाणं तिन्नि वा सत्त वा एक्कारस वा पंचदस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા અહિયાં પ્રગટ કરવામાં આવેલ છે.–આ સૂત્રપાઠથી એ બતાવેલ છે કે–રાશિયુગ્મ ત્ર્યોજ નૈરયિક એક સમયમાં ત્રણ અથવા સાત અથવા અગિયાર અથવા પંદર અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત ઉત્પન્ન થાય છે. 'संतरं तहेव' આ નારકો સાંતર–અંતર સહિત પણ ઉત્પન્ન થાય છે. અને નિરંતર પણ ઉત્પન્ન થાય છે. આ વિષય સંબંધી ઉત્તર પહેલા ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે જ છે. 'ते णं

समये त्र्योजा स्तस्मिन् समये कृतयुग्माः 'जं समयं कडजुम्मा तं समयं तेओगा' यस्मिन् समये कृतयुग्माः तस्मिन् समये त्र्योजाः किमिति प्रश्नः, उत्तरमाह-'नो इणट्ठे समट्ठे' नायमर्थः समर्थः यस्मिन् समये त्र्योजाः न तस्मिन् समये कृतयुग्माः तथा यदा कृतयुग्मा स्तदा न त्र्योजा इति भावः। 'जं समयं तेओगा तं समयं दावरजुम्मा जं समयं दावरजुम्मा तं समयं तेओगा' यस्मिन् समये त्र्योजाः तस्मिन् समये द्वापरयुग्माः यस्मिन् समये द्वापरयुग्मा स्तस्मिन् समये त्र्योजाः,

---

वैसा ही है। 'ते णं भंते! जीवा जं समयं तेओगा तं समयं कडजुम्मा' हे भदन्त! ये राशियुग्म त्र्योज जीव जिस समय त्र्योज राशिप्रमाण होते हैं उस समय में वे क्या कृतयुग्म राशिप्रमाण हो जाते हैं? 'जं समयं कडजुम्मा तं समयं तेओगा' और जिस समय ये कृतयुग्म राशिप्रमाण होते हैं उस समय क्या वे त्र्योज राशिप्रमाण हो जाते हैं उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'णो इणट्ठे समट्ठे' हे गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है। अर्थात् जिस समय ये त्र्योजराशिप्रमित होते हैं उस समय में ये कृतयुग्म राशि रूप नहीं होते हैं तथा जब ये कृतयुग्म राशीरूप होते हैं, तब वे त्र्योज राशिरूप नहीं होते हैं। 'जं समयं तेओगा तं समयं' हे भदन्त! ये जीव जिस समय त्र्योजराशिरूप होते हैं तब क्या ये उस समय 'दावरजुम्मा' द्वापरयुग्म रूप होते हैं? और जिस समय ये द्वापरयुग्म होते हैं उस समय क्या ये त्र्योजराशि रूप हो जाते हैं?

भंते! जीवा जं समयं तेओगा तं समयं कडजुम्मा' હે ભગવન્ આ રાશિયુગ્મ ત્ર્યોજ જીવ જ્યારે ત્ર્યોજ રાશિપ્રમાણ હોય છે. તે સમયે તેઓ શું કૃતયુગ્મરાશિ પ્રમાણવાળા થઈ જાય છે? 'जं समयं कडजुम्मा तं समयं तेओगा' અને જ્યારે તેઓ કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણવાળા હોય છે, ત્યારે તેઓ ત્ર્યોજ રાશિરૂપ થઈ જાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'णो इणट्ठे समट्ठे' હે ગૌતમ! આ અર્થ બરોબર નથી. અર્થાત્ જ્યારે તેઓ ત્ર્યોજ રાશિરૂપ હોય છે, ત્યારે તેઓ કૃતયુગ્મ રાશિરૂપ હોતા નથી. તથા જ્યારે તેઓ કૃતયુગ્મ રાશિરૂપ હોય છે, ત્યારે તેઓ ત્ર્યોજ રાશિરૂપ હોતા નથી. 'जं समयं तेओगा तं समयं' હે ભગવન્ આ જીવો જ્યારે ત્ર્યોજરાશિ પ્રમાણવાળા હોય છે, ત્યારે શું તેઓ 'दावरजुम्मा' દ્વાપરયુગ્મ રૂપ હોય છે, અને જ્યારે તેઓ

भवन्ति किमिति प्रश्नः, उत्तरमाह–'णो इणट्ठे समट्ठे' नायमर्थः समर्थः 'एवं कलिओगेण वि समं' एवमेव कल्योजेनापि सह प्रश्नं कृत्वा उत्तरणीयम् इति । 'सेसं तं चेव जाव वेमाणिया' शेषं तदेव यावद्वैमानिकाः ते खलु भदन्त ! जीवाः कुत उत्पद्यन्ते ? इत्यारभ्य वैमानिकपर्यन्तं प्रथमोद्देशकवदेव ज्ञातव्यमिति । 'नवरं उववाओ सव्वेसिं जहा वक्कंतीए' नवरमुपपातः सर्वेषां यथा व्युत्क्रान्तौ प्रज्ञापनायाः षष्ठे पदे कथित स्तथैवेहापि ज्ञातव्य इति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ।

इति श्री – विश्वविख्यातजगद्वल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि – 'जैनाचार्य' पूज्यश्री–घासीलालव्रतिविरचितायां "श्री भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां एकचत्वारिंशत्तमशतकस्य द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥४१।२॥

उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं--'णो इणट्ठे समट्ठे' हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है । 'एवं कलिओगेण वि समं' इसी प्रकार से कल्योज के साथ भी प्रश्न करके उत्तर कह लेना चाहिये । 'सेसं तं चेव जाव वेमाणिया हे भदन्त ! ये जीव किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? यहां से लेकर वैमानिकों तक जैसा प्रथम उद्देशक में कहा गया है वैसा ही यहां पर भी कह लेना चाहिये । 'नवरं उववाओ सव्वेसिं जहा वक्कंतीए' परन्तु उपपात के विषय में जैसा कथन प्रज्ञापना के

द्वापरयुग्म રૂપ હોય છે, તે વખતે શું તેઓ ત્ર્યોજરાશિ પ્રમાણુ હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે–'णो इणट्ठे समट्ठे' હે ગૌતમ ! આ અર્થ બરાબર નથી. 'एवं कलिओगेण वि समं' આજ પ્રમાણે કલ્યોજ સંબંધમાં પણ પ્રશ્ન ઉપસ્થિત કરીને તેનો ઉત્તર કહેવો જોઈએ. 'सेसं तं चेव जाव वेमाणिया' હે ભગવન્ આ જીવો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નથી લઈને વૈમાનિકો સુધી પહેલા ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણે કહેલ છે. એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ કહેવું જોઈએ. 'नवरं उववाओ सव्वेसिं जहा वक्कंतीए' પરંતુ ઉપપાતના સંબંધમાં પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના છઠ્ઠા વ્યુત્ક્રાંતિ પદમાં જે પ્રમાણેનું કથન કરવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણેનું કથન મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે. એ પ્રમાણે સમજવું જોઈએ.

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે પ્રમાણેનું કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે હે ભગવન્,

छट्ठे व्युत्क्रान्ति पद में किया है वैसा ही यहां पर भी कर लेना चाहिये। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' इन पदों का अर्थ पूर्व में जेसा कहा गया है वैसा ही जानना चाहिये।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके एकतालीसवें शतक का द्वितीय उद्देशक समाप्त ॥४१-२॥

આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા જ સત્ય છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર શ્રી પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્રની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના એકતાળીસમા શતકનો બીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૪૧-૨॥



॥ 'अह तइओ उद्देसो' ॥

मूलम्-रासिजुम्म दावरजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति? एवं चेव उद्देसओ। नवरं परिमाणं दो वा छ वा दस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति संवेहो। ते णं भंते! जीवा जं समयं दावरजुम्मा तं समयं कडजुम्मा जं समयं कडजुम्मा तं समयं दावरजुम्मा? णो इणट्ठे समट्ठे। एवं तेओएण वि समं, एवं कलिओगेण वि समं। सेसं जहा पढमे उद्देसए जाव वेमाणिया। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।

॥ तइओ उद्देसो समत्तो ॥४१-३॥

छाया—राशियुग्म द्वापरयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते एवमेवोद्देशकः। नवरं परिमाणं द्वौ वा षड् वा दश वा संख्याता वा, असंख्याता वोत्पद्यन्ते संवेधः। ते खलु भदन्त! जीवाः यस्मिन् समये द्वापरयुग्माः तस्मिन् समये कृतयुग्माः यस्मिन् समये कृतयुग्मा स्तस्मिन् समये द्वापरयुग्माः? नायमर्थः समर्थः। एवं त्र्योजेनापि समम्, एवं कल्योजेनापि समम्। शेषं यथा प्रथमोद्देशके यावद्वैमानिकाः। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥१

॥ तृतीयोद्देशकः समाप्तः ॥४१-३॥

टीका—'रासिजुम्म दावरजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' राशियुग्म द्वापरयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? किं नैरयिकेभ्यो यावद्देवेभ्यो वेति प्रश्नः, उत्तरमाह-'एवं चेव उद्देसओ' एवमेवोद्देशको यथा

शतक ४१ उदेशक ३

'रासिजुम्म दावरजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' इत्यादि

टीकार्थ-हे भदन्त! राशियुग्म में द्वापरयुग्म राशिप्रमित नैरयिक किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते है? क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा यावत् देवों में से आकर

ત્રીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'रासिजुम्म दावरजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ રાશિયુગ્મમાં દ્વાપરયુગ્મ રાશિપ્રમાણવાળા નૈરયિકો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા તિર્યંચોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા

प्रथमोद्देशकः तथैव तृतीयोद्देशकोऽपि ज्ञातव्य इति । 'नवरं परिमाणं दो वा छ वा दस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति' 'नवरं परिमाणं द्वौ वा षड् वा दश वा संख्याता वा असंख्याता वा उत्पद्यन्ते एतावानेव भेदः प्रथमोद्देशकापेक्षयेति । 'संवेहो' संवेधः, संवेधोऽप्यत्र वाच्यः । 'ते णं भंते ! जीवा' ते खलु भदन्त ! जीवा राशियुग्म द्वापरयुग्म नैरयिकाः 'जं समयं दावरजुम्मा तं समयं कडजुम्मा' यस्मिन् समये द्वापरयुग्मा स्तस्मिन् समये कृतयुग्माः 'जं समयं कडजुम्मा तं समयं दावरजुम्मा' यस्मिन् समये कृतयुग्मा तस्मिन् समये द्वापरयुग्मा

के उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'एवं चेव उद्देसओ' हे गौतम ! इस सम्बन्ध में प्रथम उद्देशक के जैसा ही कथन जानना चाहिये 'नवरं परिमाणं दो वा छ वा दस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति' परन्तु परिमाण प्रकरण में यहां ऐसा ही कहना चाहिये कि ये नैरयिक एक साथ में दो उत्पन्न होते हैं अथवा छह उत्पन्न होते हैं, अथवा दस उत्पन्न होते हैं, अथवा संख्यात उत्पन्न होते हैं, अथवा असंख्यात उत्पन्न होते हैं। बस यही एक विशेषता प्रथम उद्देशक की अपेक्षा इस तृतीय उद्देशक में है। 'संवेहो' यहां संवेध भी वाच्य है। 'तेणं भंते ! जीवा' हे भदन्त ! ये राशियुग्म में द्वापरयुग्म राशिप्रमित नैरयिक 'जं समयं दावरजुम्मा' जिस समय में द्वापरयुग्म होते हैं उस समय में क्या ये कृतयुग्म रूप हो जाते हैं ? 'जं समयं कडजुम्मा तं समयं दावरजुम्मा' और जिस समय में ये कृतयुग्म रूप होते हैं उस समय में क्या ये द्वापरयुग्म रूप हो जाते हैं ? उत्तर में प्रभुश्री

મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'एवं चेव उद्देसओ' હે ગૌતમ ! આ વિષયના સંબંધમાં પહેલા ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણેનું સઘળું કથન સમજવું 'नवरं परिमाणं दो वा छ वा दस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति' પરંતુ પરિમાણના સંબંધમાં અહિયાં એવું કહેવું જોઈએ કે આ નૈરયિકો એકી સાથે બે ઉત્પન્ન થાય છે. અથવા છ ઉત્પન્ન થાય છે. અથવા દસ ઉત્પન્ન થાય છે, અથવા સંખ્યાત ઉત્પન્ન થાય છે, અથવા અસંખ્યાત કેવળ એજ વિશેષપણુ પહેલા ઉદ્દેશાના કથન કરતાં આ ત્રીજા ઉદ્દેશામાં છે 'संवेहो' અહિયાં સંવેધ પણ કહેલ છે, 'तेणं भंते ! जीवा' હે ભગવન્ આ રાશિયુગ્મમાં દ્વાપર યુગ્મ રાશિ પ્રમાણવાળા નૈરયિકો 'जं समयं दावरजुम्मा' જે સમયે દ્વાપર યુગ્મ હોય છે, તે સમયે શું તેઓ કૃતયુગ્મ થઈ જાય છે ? 'जं समयं कडजुम्मा तं समयं दावरजुम्मा' અને જ્યારે તેઓ કૃતયુગ્મ રૂપ

भवन्ति किमिति प्रश्नः, उत्तरमाह–'णो इणट्ठे समट्ठे' नायमर्थः समर्थः। 'एवं तेओएण वि समं एवं कलिओगेण वि समं' एवमेव त्र्योजेनापि समम्, एवमेव कल्योजेनापि समं प्रश्न कृत्वा उत्तरणीयमिति। 'सेसं जहा पढमुद्देसए जाव वेमाणिया' शेषं परिमाणातिरिक्तं सर्वं यथा प्रथमोद्देशके वैमानिकान्त पर्यन्तं कथितं तथैवात्रापि ज्ञातव्यम्। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥

इति श्री–विश्वविख्यातजगद्वल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि – 'जैनाचार्य' पूज्यश्री–घासीलालव्रतिविरचितायां "श्री भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां एकचत्वारिंशत्तमे राशियुग्मशतके तृतीयोद्देशकः समाप्तः ॥४१।३॥

कहते हैं। 'णो इणट्ठे समट्ठे' हे गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है। 'एवं तेओएण वि समं एवं कलिओगेण वि समं' इसी प्रकार से त्र्योज के साथ भी और इसी प्रकार से कल्योज के साथ भी प्रश्न करके उत्तर कह लेना चाहिये। 'सेसं जहा पढमुद्देसए जाव वेमाणिया' परिमाण के अतिरिक्त और सब कथन प्रथमोद्देशक में जैसा वैमानिकों तक कहा गया है वैसा ही यहां पर कह लेना चाहिये। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' इन पदों का अर्थ पूर्वोक्त जैसा ही है।

॥४१ वें राशियुग्म शतक में तृतीय उद्देशक समाप्त ४१–३॥

હોય છે, ત્યારે શું તેઓ દ્વાપરયુગ્મ રૂપ હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે–હે ગૌતમ! આ અર્થ બરોબર નથી. આજ રીતે ત્ર્યોજની સાથે પણ અને આજ રીતે કલ્યોજના સંબંધમાં પ્રશ્નો કરીને ઉત્તર વાક્યો કહી લેવા જોઈએ. 'सेसं जहा पढमुद्देसए जाव वेमाणिया' પરિમાણના કથન શિવાય બાકીનું સઘળું કથન પહેલા ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે વૈમાનિકો સુધીના કથન પર્યન્ત કહેલ છે એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ કહેવું જોઈએ.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે પ્રમાણે કહેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥ત્રીજો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૪૧–૩॥

॥ 'अह चउत्थो उद्देसो' ॥

मूलम्–रासिजुम्म कलिओग नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति एवं चेव। नवरं परिमाणं एक्को वा पंच वा नव वा तेरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति। संवेहो। तेणं भंते ! जीवा जं समयं कलिओगा तं समयं कडजुम्मा जं समयं कडजुम्मा तं समयं कलिओगा ? णो इणट्ठे समट्ठे। एवं तेओगेण वि समं दावरजुम्मेण वि समं। सेसं जहा पढमुद्देसए जाव वेमाणिया। सेवं भंते ! सेवं भंते त्ति ॥

चउत्थो उद्देसो समत्तो ॥४१–४॥

छाया—राशियुग्म कल्योज नैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते एवमेव। नवरं परिमाणम् एको वा पञ्च वा नव वा त्रयोदश वा संख्याता वा असंख्याता-वोत्पद्यन्ते। संवेधः। ते खलु भदन्त ! जीवाः यस्मिन् समये कल्योजा स्तस्मिन् समये कृतयुग्माः यस्मिन् समये कृतयुग्माः तस्मिन् समये कल्योजाः ? नायमर्थः समर्थः। एवं त्र्योजेनापि समम्, एवं द्वापरयुग्मेनापि समम्। शेषं यथा प्रथमोद्देशके यावद् वैमानिकाः। तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥सू. २॥

॥ चतुर्थोद्देशकः समाप्तः ॥

टीका—'रासिजुम्म कलिओग नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' राशियुग्म कल्योजनैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावद्देवेभ्यो-वेति प्रश्नः, उत्तरमाह–'एवं चेव' एवमेव यथा प्रथमोद्देशके कथितमत्रापि तथैव

।शतक ४१ चतुर्थ उद्देशक।

'रासिजुम्म कलिओग नेरइयाणं भंते कओ ! उववज्जंति' इत्यादि

टीकार्थ–हे भदन्त राशियुग्म कल्योज राशिप्रमित नैरयिक किस स्थान विशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं अथवा यावत् देवों में से आकर के उत्पन्न

ચોથા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'रासिजुम्म कलिओग नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ રાશિયુગ્મ કલ્યોજ રાશિપ્રમાણુવાળા નૈરયિકો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન

सर्वं ज्ञातव्यमिति। 'नवरं परिमाणं एक्को वा पंच वा नव वा तेरस वा संखेज्जा-वा, असंखेज्जा वा उववज्जंति' नवरं परिमाणमेको वा पञ्च वा नव वा त्रयोदश वा, संख्याता वा, असंख्याता वा, उत्पद्यन्ते इति। 'संवेहो' संवेधः कायसंवेधोऽपि अत्र वक्तव्यः। 'ते णं भंते! जीवा जं समयं कलिओगा तं समयं कडजुम्मा जं समयं कडजुम्मा तं समयं कलिओगा' हे भदन्त! ते राशियुग्म कल्योज नारका यस्मिन् समये कल्योजाः किं तस्मिन् समये कृतयुग्माः? यस्मिन् समये कृतयुग्मा स्तस्मिन् समये किं कल्योजाः सम्भवन्तीति प्रश्नः, उत्तरमाह-'णो इणट्ठे समट्ठे'

होते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'एवं चेव' हे गौतम! जैसा प्रथम उद्देशक में कहा गया है वैसा ही सब कथन इस उद्देशक के सम्बन्ध में भी जानना चाहिये। परन्तु परिमाण में यहां उस उद्देशक की अपेक्षा भिन्नता आती है जो 'नवरं परिमाणं एक्को वा पंच वा नव वा तेरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति' इस सूत्रपाठ द्वारा बतलाई गई है-इससे यहां एकसमय में एक अथवा पांच, अथवा नौ अथवा तेरह, अथवा संख्यात अथवा असंख्यात नैरिक उत्पन्न होते हैं। 'संवेहो' कायसंवेध भी यहां पर वक्तव्य है। 'ते णं भंते! जीवा जं समयं कलिओगा तं समयं कडजुम्मा, जं समयं कडजुम्मा तं समयं कलिओगा' हे भदन्त! वे जीव जिस समय कल्योज राशिप्रमित रहते हैं उस समय क्या वे कृतयुग्म राशिप्रमित हो जाते हैं? और जिस समय वे कृतयुग्मराशिप्रमित होते हैं उस समय क्या वे कल्योज राशि

થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'एवंचेव' હે ગૌતમ! પહેલા ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણે કથન કરેલ છે, એજ પ્રમાણેનું સઘળું કથન આ ઉદ્દેશામાં સંબંધમાં પણ સમજવું. પરંતુ પરિમાણમાં અહિયાં તે ઉદ્દેશાની અપેક્ષાએ ભિન્નપણું આવે છે, જે 'नवरं परिमाणं एक्को वा पंचवा नव वा तेरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા કહેલ છે તેથી અહિયાં એક સમયમાં પાંચ અથવા નવ અથવા તેર અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત નૈરયિકો ઉત્પન્ન થાય છે. 'संवेहो' કાયસંવેધ પણ અહિયાં કહેવો જોઈએ 'तेणं भंते! जीवा जं समयं कलिओगा तं समयं कडजुम्मा जं समयं कडजुम्मा तं समयं कलिओगा' હે ભગવન્ તે જીવો જે સમયે કલ્યોજ રાશિપ્રમાણવાળા હોય છે. તે સમયે શું કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ-વાળા થઈ જાય છે? અને જ્યારે જે સમયે કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણવાળા હોય છે ત્યારે શું તેઓ કલ્યોજ રાશિપ્રમાણવાળા થઈ જાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં

नायमर्थः समर्थः। 'एवं तेओएण वि समं एवं दावरजुम्मेण वि समं' एवमेव कृतयुग्मवदेव त्र्योजेनापि समं द्वापरयुग्मेनापि च समं प्रश्नं कृत्वा समुत्तरणीयमिति। 'सेसं जहा पढमुद्देसए जाव वेमाणिया' शेषं कथितातिरिक्तं सर्वं तथैव ज्ञातव्यम् यथा-प्रथमोद्देशके वैमानिकपर्यन्तं कथितमिति। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेव भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥१

इति श्री - विश्वविख्यातजगदूवल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि - 'जैनाचार्य' पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां 'श्री भगवतीसूत्रस्य' प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां एकचत्वारिंशत्तमे राशियुग्मशतके चतुर्थोद्देशकः समाप्तः॥४१।४।

प्रमित हो जाते हैं? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'णो इणट्ठे समट्ठे' हे गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है। 'एवं तेओएण वि समं एवं दावरजुम्मेण वि समं' इसी प्रकार से त्र्योज के साथ भी और इसी प्रकार से द्वापर युग्म के साथ भी प्रश्न करके उत्तर कह लेना चाहिये।' 'सेसं जहा पढमुद्देसए जाव वेमाणिया' इस कथन के अतिरिक्त और सब कथन वैमानिकों तक प्रथम उद्देशक में किया है वैसा ही सब यहां पर भी जानना चाहिये। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' इन पदों का अर्थ पूर्वोक्त जैसा ही है।

॥४१ वें शतक में राशियुग्मशतक में यह चतुर्थ उद्देशक समाप्त हुआ।४१-४॥

પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'णो इणट्ठे समट्ठे' હે ગૌતમ! એ અર્થ બરાબર નથી. 'एवं तेओएण वि समं एवं' दावरजुम्मेण वि समं" આજ પ્રમાણે ત્ર્યોજની સાથે અને આજ પ્રમાણે દ્વાપર યુગ્મની સાથે પણ પ્રશ્નોત્તરો બનાવીને સમજી લેવા. 'सेसं जहा पढमुद्देसए जाव वेमाणिया' આ કથન શિવાય બાકીનું સઘળું કથન જે રીતે વૈમાનિકો સુધી પહેલા ઉદ્દેશામાં કહેલ છે. એજ પ્રમાણેનું સઘળું કથન અહિયાં પણ સમજવું.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે પ્રમાણે કહ્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાનાસ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥ચોથો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૪૧-૪॥

॥ 'अह ५-८ उद्देसगा' ॥

मूलम्-कण्हलेस्स रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति उववाओ धूमप्पभाए सेसं जहा पढमुद्देसए। असुरकुमाराणं तहेव, एवं जाव वाणमंतराणं। मणुस्साण वि जहेव नेरइयाणं आयअजसं उवजीवंति। अलेस्सा अकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति एवं न भाणियव्वं। सेसं जहा पढमुद्देसए। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥४१-५॥

कण्हलेस्स तेओएहि वि एवं चेव उद्देसओ। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥४१-६॥

कण्हलेस्स दावरजुम्मेहिं एवं चेव उद्देसओ। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥४१-७॥

कण्हलेस्स कलिओएहि वि एवं चेव उद्देसओ। परिमाणं संवेहो य जहा ओहिएसु उद्देसएसु। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥४१-८॥

॥ ५-८ उद्देसगा समत्ता ॥

छाया—कृष्णलेश्य राशियुग्म कृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते उपपातो धूमप्रभायां शेषं यथा प्रथमोद्देशके। असुरकुमाराणां तथैव एवं यावद्वानव्यन्तराणाम्, मनुष्याणामपि यथैव नैरयिकाणाम् आत्मायश उपजीवन्ति। अलेश्याः अक्रियाः तेनैव भवग्रहणेन सिद्धयन्ति एवं न भणितव्यम्। शेषं यथा प्रथमोद्देशके। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥४१।५।

कृष्णलेश्य त्र्योजैरपि एवमेवोद्देशकः। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥४१।६

कृष्णलेश्य द्वापरयुग्मैरेवमेवोद्देशकः। तदेवं भदन्त। तदेवं भदन्त! इति ॥४१।७॥

कृष्णलेश्य कल्योजैरपि एवमेवोद्देशकः। परिमाणं संवेधश्च यथा औघिकेषूद्देशकेषु। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥४१।८॥

॥ पञ्चमादारभ्याष्टमान्ता उद्देशकाः समाप्ताः ॥४१।५।८॥

॥ शतक ४१ उद्देशक ५ से ८ तक ॥

'कण्हलेस्सरासिजुम्मकडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति'

પાંચમા ઉદ્દેશાથી આઠમા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'कण्हलेस्स रासिजुम्म कडजुम्मनेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' ઇત્યાદિ.

टीका--'कण्हलेस्स रासिजुम्म कडजुम्म नेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति' हे भदन्त! कृष्णलेश्यराशियुग्मकृतयुग्म नैरयिकाः कुतः खलूत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावद्देवेभ्य इति प्रश्नः, उत्तरमाह-अतिदेशद्वारेण-'उववाओ जहा' इत्यादि, 'उववाओ जहा धूमप्पभाए' उपपातो धूमप्रभानरके येन प्रकारेण कथित एतेनैव रूपेणात्रापि ज्ञातव्यः 'सेसं जहा पढमुद्देसए' शेषमुपपातातिरिक्तं सर्वं यथा प्रथमोद्देशके कथितं तथैव सर्वमत्रापि ज्ञातव्यमिति। 'असुरकुमाराणं तहेव' असुरकुमाराणामपि तथैव नारकवदेव सर्वं ज्ञातव्यमिति। 'एवं जाव वाणमंतराणं' एवमेव नारकवदेवोपपातादिकं सर्वं यावद् वानव्यन्तराणामपि ज्ञातव्यमिति। 'मणुस्साण

टीकार्थ-हे भदन्त! राशियुग्म में कृतयुग्म प्रमाण कृष्णलेश्यावाले नैरयिक किस स्थानविशेष से आकर के उत्पन्न होते हैं? क्या वे नैरयिक में से आकरके उत्पन्न होते हैं अथवा यावत् देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? अतिदेश द्वारा उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'उववाओ जहा धूमप्पभाए' हे गौतम! जैसा उपपात के सम्बन्ध में कथन धूमप्रभानारक में किया जा चुका है वैसा ही यहां पर भी कर लेना चाहिये। 'सेसं जहा पढमुद्देसए' तथा उपपात के अतिरिक्त और सब कथन प्रथम उद्देशक के अनुसार ही जानना चाहिये। 'असुरकुमाराणं तहेव' तथा असुरकुमारों के सम्बन्ध में भी नारक के जैसा ही कथन समझना चाहिये। 'एवं जाव वाणमंतराणं' और यह कथन यावत् वानव्यन्तरों तक नैरयिकों के कथन जैसा ही है ऐसा ज्ञात करना चाहिये।

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ રાશિયુગ્મમાં કૃતયુગ્મ પ્રમાણવાળા કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નૈરયિકો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? શું તેઓ નૈરયિકો માંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર અતિદેશ દ્વારા આપતાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'उववाओ जहा धूमप्पभाए' હે ગૌતમ! ઉપપાતના સંબંધમાં કથન ધૂમપ્રભા નરકમાં કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન અહિયાં પણ કરી લેવું જોઈએ. 'सेसं जहा पढमुद्देसए' ઉપપાતના કથન શિવાય બાકીનું સઘળું કથન પહેલા ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે જ સમજવું. 'असुरकुमाराणं भंते! तहेव' તથા અસુરકુમારોના સંબંધમાં પણ નારકના કથન પ્રમાણેનું જ કથન સમજવું જોઈએ. 'एवं जाव वाणमंतराणं' અને આ કથન યાવત્ વાનવ્યન્તર ના કથન સુધી નૈરયિકોના કથન પ્રમાણે જ છે. તેમ સમજી લેવું.

वि तहेव जहा नेरइयाणं' मनुष्याणामपि तथैव ज्ञातव्यं यथैव नारकाणामुपपातादिकं कथितमिति। 'आय अजसं उवजीवंति' मनुष्या आत्मनऽयशः असंयममुपजीवन्तीति विशेषो वक्तव्यः। 'अलेस्सा अकिरिया तेणेव भवग्गहणेण सिज्झंति एवं न भाणियव्वं' अलेश्या अक्रिया एतेनैव भवग्रहणेण सिद्धयन्ति इत्येवमत्र कृष्णलेश्यप्रकरणे नो भणितव्यं कृष्णलेश्यानामलेश्यत्वस्याऽक्रियत्वस्य तद्भवसिद्धेश्चाभावादिति भावः। 'सेसं जहा पढमुद्देसए' शेषं कथितव्यतिरिक्तं सर्वं यथा प्रथमोद्देशके कथितं तथैवात्रापि ज्ञातव्यमिति। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥४१।५

॥ पञ्चमोद्देशकः समाप्तः ॥४१।५॥

'मणुस्साण वि तहेव जहा नेरइयाणं' नारकों के जैसे उपपात आदि कहे गये हैं वैसे ही वे मनुष्यों के भी जानना चाहिये। 'आय अजसं उवजीवंति' मनुष्य आत्मा के असंयम का आश्रय करते हैं। 'अलेस्सा अकिरिया तेणेव भवग्गहणेण सिज्झंति एवं न भाणियव्वं' ये लेश्या रहित होते हैं क्रिया रहित होते हैं, उसी भव से सिद्ध होते हैं यह सब यहां कृष्णलेश्य के प्रकरण में नहीं कहना चाहिये। क्योंकि कृष्णलेश्यावालों में अलेश्यत्व अक्रियत्व और तद्‌भवसिद्धत्व का अभाव रहता है। 'सेसं जहा पढमुद्देसए' बाकी का और सब कथन प्रथम उद्देशक में जैसा कहा गया है वैसा ही है ऐसा जानना चाहिये। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' इन पदों का अर्थ जैसा पहिले कहा गया है वैसा ही है।

॥ पंचम उद्देशक समाप्त हुआ-४१-५॥

'मणुस्साण वि तहेव जहा नेरइयाण' નારકોના સંબંધમાં જે પ્રમાણે ઉપપાત વિગેરે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે મનુષ્યોના સંબંધમાં પણ સમજવું 'आय अजसं उवजीवंति' મનુષ્ય અસંયમ આત્માનો આશ્રય કરીને ઉત્પન્ન થાય છે 'अलेस्सा अकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति एवं न भाणियव्वं' આ લેશ્યા વિનાના હોય છે, ક્રિયાવિનાના હોય છે, એજ ભવમાં સિદ્ધ થાય છે. આ સઘળું કથન અહિયાં આ કૃષ્ણલેશ્યાના પ્રકરણનું ન કહેવું જોઇએ. કેમકે-કૃષ્ણલેશ્યાવાળાઓમાં અલેશ્યાપણાનો અક્રિયપણાનો તદ્ભવસિદ્ધપણાનો અભાવ રહે છે. 'सेसं जहा पढमुद्देसए' બાકીનું સઘળું કથન પહેલા ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે સમજવું જોઇએ.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ આપનું કથન સર્વથા સત્ય જ વિગેરે પહેલા કહ્યા પ્રમાણે આ પદોનો અર્થ સમજવો.

॥પાંચમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ૪૧-૫॥

'कण्हलेस्स तेओएहिं वि समं एवं चेव उद्देसओ' कृष्णलेश्य त्र्योजैरपि एवमेवोद्देशको वाच्यः। 'सेवं भंते! सेवं भंते। त्ति' तदेवं भदन्त तदेवं भदन्त! इति ॥४१।६॥

षष्ठोद्देशकः समाप्तः ॥

'कण्हलेस्स दावरजुम्मेहिं एवं चेव उद्देसओ' कृष्णलेश्य द्वापरयुग्मैरपि एवमेव पूर्ववदेव उद्देशको वक्तव्यः। सर्वं प्रथमोद्देशकवदेव ज्ञातव्यम्। 'सेवं भंते! सेवं

'कण्हलेस्स तेओए वि समं एवंचेव उद्देसओ' कृष्णलेश्यावाले राशियुग्म प्रमाण नैरयिकों के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार से उद्देशक कह लेना चाहिये। अतः प्रथम उद्देशक के जैसा ही यह उद्देशक है ऐसा जानना चाहिये। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! जैसा आपने यह कहा है वह सर्वथा सत्य प्रमाण है २। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना और नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

छट्ठा उद्देशक समाप्त हुआ ४१-६॥

'कण्हलेस्स दावरजुम्मेहिं एवं चेव उद्देसओ' इत्यादि।

कृष्णलेश्यावाले द्वापरयुग्म प्रमित नैरयिकों के सम्बन्ध में भी

છઠ્ઠા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'कण्हलेस्स तेओएहिं वि समं एवं चेव उद्देसओ' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—કૃષ્ણલેશ્યાવાળા રાશિયુગ્મમાં ત્ર્યોજયુગ્મ પ્રમાણવાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં પણ આજ પ્રમાણેના ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ સંબંધમાં જે પ્રમાણે કથન કરેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાનપર બિરાજમાન થયા.

॥છઠ્ઠો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૪૧-૬॥

॥સાતમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'कण्हलेस्स दावरजुम्मेहिं एवं चेव उद्देसओ' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—કૃષ્ણલેશ્યાવાળા દ્વાપરયુગ્મ પ્રમાણવાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં

भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त इति ॥४१।७॥

॥ सप्तमोद्देशकः समाप्तः ॥

'कण्हलेस्स कलिओए हि वि एवं चेव उद्देसओ' कृष्णलेश्य कल्योजनारकैरपि एवमेव-पूर्ववदेव उद्देशको वक्तव्यः । 'परिमाणं संवेहो य जहा ओहिएसु उद्देसएसु' परिमाण कायसंवेधश्च औघिकेषूद्देशकेषु कथित स्तथैवात्रापि ज्ञातव्यः 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त तदेवं भदन्त ! इति ॥४१।८॥

अष्टमोद्देशकः समाप्तः ॥

इसी प्रकार से उद्देशक कह लेना चाहिये । तात्पर्य यही है कि यहां सब कथन प्रथम उद्देशक के जैसा ही है ऐसा जानना चाहिये । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' इन पदों की व्याख्या पहिले की गई व्याख्या जैसी ही है । सप्तम उद्देशक समाप्त हुआ-४१-७॥

'कण्हलेस्स कलिओएहि वि एवं चेव उद्देसओ' इत्यादि ।

'कल्योज राशिप्रमाण कृष्णलेश्यावाले नैरयिकों के सम्बन्ध में भी पूर्व के जैसे ही उद्देशक कह लेना चाहिये । 'परिमाणं संवेहो य जहा ओहिएसु उद्देसएसु' परिमाण और कायसंवेध जैसा औघिक उद्देशकों में कहा गया है वैसा ही यहां पर भी कह लेना चाहिये । 'सेवं भंते !

પણ આજ પ્રમાણે ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-આ વિષયમાં સઘળું કથન પહેલા ઉદ્દેશાના કથન પ્રમાણે જ છે.

'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે કથન કરેલ છે. તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા.

॥સાતમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૪૧-૭॥

'कण्हलेस्स कलिओएहि वि एवं चेव उद्देसओ' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—કલ્યોજ રાશિપ્રમાણ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં પણ પહેલાના કથન પ્રમાણેના ઉદ્દેશકો કહેવા જોઇએ. 'परिमाणं संवेहो य जहा ओहिएसु उद्देसएसु' પરિમાણ અને કાયસંવેધ જે પ્રમાણે ઔધિક ઉદ્દેશામાં કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે અહીંયા પણ કહી લેવા. જોઇએ.

॥ 'अह ९-१२ उद्देसगा' ॥

मूलम्-जहा कण्हलेस्सेहिं एवं नीललेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा। नवरं उववाओ नेरइयाणं जहा वालुयप्पभाए सेसं तं चेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥९-१२॥

छाया--यथा कृष्णलेश्यै एवं नीललेश्यैरपि चत्वार-उद्देशका भणितव्या निरवशेषाः। नवरमुपपातो नैरयिकाणां यथा वालुकाप्रभायाम्। शेषं तदेव। तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥९-१२॥

टीका-'जहा कण्हलेस्सेहिं एवं नीललेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा' यथा-कृष्णलेश्यनारकाणां चत्वार उद्देशकाः कथिता स्तथैव नीललेश्यैरपि चत्वार उद्देशकाः कृतयुग्म-त्र्योज-द्वापर-कल्योजपदविशिष्टा भणितव्याः निरवशेषाः। 'नवरं' नवरं-केवलम् 'नेरइयाणं उववाओ जहा वालुयप्पभाए' कृष्णलेश्यप्रकरणापेक्षया इदं वैलक्षण्यं यदेषां नारकाणामुपपातो यथा वालुका-

---

सेवं भंते ! त्ति' इन पदों की व्याख्या पूर्व में की गई व्याख्या के ही जैसी है । आठवां उद्देशक समाप्त हुआ ।४१-८॥

॥ शतक ४१ उद्देशक ९ से १२ तक ॥

'जहा कण्हलेस्सेहिं एवं नीललेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा' इत्यादि ।

टीकार्थ—जिस प्रकार से कृष्णलेश्यावालों के सम्बन्ध में पूर्वोक्तरूप से चार उद्देशक कहे गये हैं, उसी प्रकार से नीललेश्यावालों के सम्बन्ध में भी चार उद्देशक कह लेना चाहिये। 'नवरं उववाओ नेरइयाणं जहा वालुयप्पभाए' परन्तु यहां पर नारकों का उपपात वालुका-

---

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' આ પદોની વ્યાખ્યા પહેલા કહ્યા પ્રમાણે જ છે.

આઠમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૪૧-૮॥

નવમા ઉદ્દેશાથી બારમા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓનો પ્રારંભ—

'जहा कण्हलेस्सेहिं एवं नीललेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—જે પ્રમાણે કૃષ્ણલેશ્યાવાળાઓના સંબંધમાં પૂર્વોક્ત પ્રકારથી ચાર ઉદ્દેશાઓ કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે નીલલેશ્યાવાળાના સંબંધમાં પણ ચાર ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ. 'नवरं उववाओ नेरइयाणं जहा वालुयप्पभाए' પરંતુ અહિયાં નારકોનો ઉપપાત વાલુકાપ્રભામાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ

प्रभायां कथित स्तथैव भणितव्यमिति। 'सेसं तं चेव' शेषमुपपातातिरिक्तं सर्वमपि कृष्णलेश्यवदेवेति भावः। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त तदेवं भदन्त! इति॥

॥ एकचत्वारिंशत्तमे शतके नवमादि द्वादशान्ता उद्देशकाः समाप्ताः॥९।१२

प्रभा में जैसा कहा गया है वैसा ही कहना चाहिये। तात्पर्य इस कथन का ऐसा है कि जिस रीति कृतयुग्म राशिप्रमित कृष्णलेश्यावाले नैरयिकों के, त्र्योजराशिप्रमित कृष्णलेश्यावाले नैरयिकों के द्वापरयुग्म राशिप्रमित कृष्णलेश्यावालों नैरयिकों के और कल्योजराशिप्रमित कृष्णलेश्यावाले नैरयिकों के सम्बन्ध में चार उद्देशक पूर्वोक्त रूपसे प्रकट किये गये हैं उसी प्रकारसे कृतयुग्म राशिप्रमित नीललेश्यावाले नैरयिकों के सम्बन्ध में त्र्योजराशि प्रमित नीललेश्यावाले नैरयिकों के सम्बन्ध में द्वापरयुग्म राशिप्रमित नीललेश्यावाले नैरयिकोंके सम्बन्ध में और कल्योज राशिप्रमित नीललेश्यावाले नैरयिकों के सम्बन्ध में भी चार उद्देशक बनाकर कह लेना चाहिये। परन्तु यहाँ पर कृष्णलेश्यावाले नैरयिकों की अपेक्षा यदि कोई विशेषता है तो वह उपपात की अपेक्षा से है। अतः यहां पर उपपात बालुका प्रभा में जैसा बतलाया गया है वैसा ही है। कृष्णलेश्यावाले नारकों के प्रकरण के जैसा नहीं है। बाकीका और सब कथन कृष्णलेश्य प्रकरण के जैसा ही है। सेवं भंते!

છે, એજ પ્રમાણે કહેવો જોઈએ આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે-જે પ્રમાણે કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નૈરયિકોના તથા ત્ર્યોજ રાશિપ્રમાણ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નૈરયિકોનો તથા દ્વાપરયુગ્મ રાશિપ્રમાણ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નૈરયિકોના અને કલ્યોજ રાશિપ્રમાણ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં પહેલા કહ્યા પ્રમાણેના ચાર ઉદ્દેશાઓ કહેવામાં આવ્યા છે, એજ પ્રમાણે કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ નીલલેશ્યાવાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં ત્ર્યોજ રાશિપ્રમાણ નીલલેશ્યા નૈરયિકોના સંબંધમાં દ્વાપરયુગ્મ રાશિપ્રમાણ નીલલેશ્યાવાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં અને કલ્યોજ રાશિપ્રમાણ નીલલેશ્યાવાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં પણ ચાર ઉદ્દેશાઓ બનાવીને કહેવા જોઈએ પરંતુ અહિયાં કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નૈરયિકોની અપેક્ષાથી કંઇ વિશેષપણું હોય તો તે ઉપપાતની અપેક્ષાએ જ છે. જેથી અહિયાં ઉપપાત વાલુકાપ્રભામાં જે પ્રમાણે કહેલ છે એજ પ્રમાણે છે. કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નારકોના પ્રકરણ પ્રમાણે નથી બાકીનું સઘળું કથન કૃષ્ણલેશ્યાવાળા પ્રકરણમાં કહ્યા પ્રમાણે જ છે.

॥ 'अह १३-२० उद्देसगा' ॥

मूलम्—काउलेस्सेहि वि एवं चेव चत्तारि उद्देसगा कायव्वा। नवरं नेरइयाणं उववाओ जहा रयणप्पभाए। सेसं तं चेव। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥१३-१६॥

तेउलेस्स रासिजुम्म कडजुम्म असुरकुमाराणं भंते! कओ उववज्जंति एवं चेव। नवरं जेसु तेउलेस्सा अत्थि तेसु भाणियव्वं। एवं एए वि कण्हलेस्सा सरिसा चत्तारि उद्देसगा कायव्वा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥४१-१६-२०॥

छाया—कापोतलेश्यैरपि एवमेव चत्वार उद्देशकाः कर्त्तव्या। नवरं नैरयिकाणामुपपातो यथा रत्नप्रभायाम्। शेषं तदेव। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति। १३-१६॥

तेजोलेश्या राशियुग्म कृतयुग्मासुरकुमाराः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते एवमेव। नवरं येषु तेजोलेश्या अस्ति तेषु भणितव्यम्। एवमेतेऽपि कृष्णलेश्यसदृशाश्चत्वारः उद्देशकाः कर्त्तव्याः। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति॥

त्रयोदशादारभ्य विंशन्त्यन्तोद्देशकाः समाप्ताः ॥४१।१३-२०॥

टीका—'काउलेस्सेहि वि एवं चेव चत्तारि उद्देसगा कायव्वा' यथा कृष्ण-

---

सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! आपका कहा हुआ यह सब विषय सर्वथा सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

॥ ४१ वें शतक का ९ से १२ उद्देशक समाप्त ॥

॥ शतक ४१ उद्देशक १३ से २० तक ॥

'काउलेस्सेहिं वि एवं चेव चत्तारि उद्देसगा कायव्वा' इत्यादि।

टीकार्थ—कापोतलेश्यावाले नैरयिकों के सम्बन्ध में भी कृष्णलेश्या

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન આપે કહેલ આ તમામ વિષય સર્વથા સત્ય જ છે. ૨ આ પ્રમાણે કહીને વંદના નમસ્કાર કરી ગૌતમસ્વામી તપ અને સંયમથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાનપર બિરાજમાન થયા.

॥નવમા ઉદ્દેશાથી બારમા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૪૧-૯-૧૨

તેરમા ઉદ્દેશાથી સોળમા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓનો પ્રારંભ—

ટીકાર્થ—'कण्हलेस्सेहिं वि एवं चेव चत्तारि उद्देसगा कायव्वा' કાપોત-

लेश्यैश्चत्वार उद्देशकाः कथिता एवमेव कापोतलेश्यैरपि चत्वार उद्देशकाः कर्तव्याः कापोतलेश्य कृतयुग्मनारकादेः प्रथमः, कापोतलेश्य त्र्योजनारकादे द्वितीयः, कापोतलेश्य द्वापरयुग्मनारकादेस्तृतीयः, कापोतलेश्य कल्योजनाकादेश्चतुर्थो-द्देशकः। 'नवरं नेरइयाणं उववाओ जहा रयणप्पभाए' नवरं पूर्वापेक्षया कापोतलेश्य प्रकरणे इदमेव वैलक्षण्यं यत् अत्र नारकाणामुपपातो रत्नप्रभायामिव वक्तव्यः।

वाले नैरयिकों के जैसे चार उद्देशक हैं जो इस प्रकार से हैं। जैसे-कृतयुग्म राशिप्रमितवाले नैरयिकों का प्रथम उद्देशक है। त्र्योजराशि-प्रमित कापोतलेश्यावाले नैरयिकादिकों का द्वितीय उद्देशक है। द्वापर-युग्म राशिप्रमित कापोतलेश्यावाले नैरयिकोंका तृतीय उद्देशक है और कल्योजराशिप्रमित कापोतलेश्यावाले नैरयिकों का चतुर्थ उद्देशक है। 'नवरं नेरइयाणं उववाओ जहा रयणप्पभाए' परन्तु कृष्णलेश्य प्रकरण की अपेक्षा इस कापोतलेश्या प्रकरण में यदि कोई विलक्षणता है तो वह उपपात की अपेक्षा से है-यही बात 'नवरं नेरइयाणं उववाओ जहा रयणप्पभाए' इस सूत्र द्वारा प्रकट की गई है। अतः यहां उपपात रत्नप्रभा पृथिवी में जैसा बतलाया गया है-वैसा ही कहना चाहिये। 'सेसं तं चेव' उपपात से अतिरिक्त और सब कथन कृष्णलेश्य प्रकरण के जैसा ही है। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! आप

લેશ્યાવાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં પણ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નૈરયિકોના કથન પ્રમાણેના ચાર ઉદ્દેશાઓ કહ્યા છે જે આ પ્રમાણે છે,-જેમકે-કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ કાપોતલેશ્યાવાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં પહેલો ઉદ્દેશો કહેલ છે. ૧ ત્ર્યોજ રાશિપ્રમાણ કાપોતલેશ્યાવાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં બીજો ઉદ્દેશો કહેલ છે. ૨ દ્વાપરયુગ્મ રાશિપ્રમાણ કાપોતલેશ્યાવાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં ત્રીજો ઉદ્દેશો કહેલ છે. ૩ અને કલ્યોજ રાશિપ્રમાણ કાપોતલેશ્યા વાળા નૈરયિકોના સંબંધમાં ચોથો ઉદ્દેશો કહેલ છે. 'नवरं नेरइयाणं उववाओ जहा रयणप्पभाए' પરંતુ કૃષ્ણલેશ્યાના પ્રકરણ કરતાં આ કાપોતલેશ્યા પ્રકરણમાં જો કાંઇ વિલક્ષણપણું છે, તો તે ઉપપાતના સંબંધમાં કહેલ છે. એજ વાત 'नवरं नेरइयाणं उववाओ जहा रयणप्पभाए' આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ કરેલ છે. જેથી અહિયાં ઉપપાત રત્નપ્રભા પૃથ્વીના સંબંધમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં કહેવું જોઇએ. 'सेसं तं चेव' ઉપપાતના કથન કરતાં બાકીનું સઘળું કથન કૃષ્ણલેશ્યાના પ્રકરણની જેમ જ છે. તેમ સમજવું.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ સંબંધમાં

'सेसं तं चेव' शेष मुपपातातिरिक्तं सर्वं तदेव कृष्णलेश्यप्रकरणवदेवेति भावः। 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥

त्रयोदशादारभ्य षोडशान्तोद्देशकाः समाप्ताः ॥१३।१६॥

'तेउलेस्स राशिजुम्म कडजुम्म असुरकुमाराणं भंते ! कओ उववज्जंति' तेजोलेश्य राशियुग्मासुरकुमाराः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावद्देवेभ्य इति प्रश्नः, उत्तरमाह-'एवं चेव' एवमेव-कृष्णलेश्यवदेवेति इहापि सर्वमुपपातादिकं पूर्ववदेव ज्ञातव्यमिति भावः। 'नवरं जेसु तेउलेस्सा अत्थि तेसु

देवानुप्रियने जैसा यह कहा है वह सर्वथा सत्य ही है २। इत्यादिरूप से इन पदों की व्याख्या पूर्व के जैसी ही जाननी चाहिये।

॥४१ वें शतकका १३-१६ उद्देशक समाप्त हुआ॥

उद्देशक १७ से २० पर्यन्त

"तेउलेस्सरासिजुम्म कडजुम्म असुरकुमाराणं भंते ! इत्यादि।

टीकार्थ-'तेउलेस्स रासिजुम्म कडजुम्म असुरकुमाराणं भंते ! कओ उववज्जंति' हे भदन्त ! राशियुग्म में कृतयुग्मराशिप्रमाण तेजोलेश्यावाले असुरकुमार किस स्थान विशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा यावत् देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? 'एवं चेव' उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-हे गौतम !

જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

॥તેરમા ઉદ્દેશાથી સોળ સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૪૧-૧૩-થી૧૬॥

સત્તરમા ઉદ્દેશાથી વીસમા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ--

'તેઉલેસ્સ રાસિજુમ્મ કડજુમ્મ અસુરકુમારાણં ભંતે !' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-'તેઉલેસ્સ રાસિજુમ્મ કડજુમ્મ અસુરકુમારાણં ભંતે ! કઓ ઉવવજ્જંતિ' હે ભગવન્ રાશિયુગ્મમાં કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ તેજોલેશ્યાવાળા અસુરકુમારો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'एवं चेव' હે ગૌતમ ! કૃષ્ણલેશ્યાના

भाणियव्वं' नवरं जेषु असुरकुमारेषु तेजोलेश्या अस्ति तेष्वेव इदं सूत्रं भणितव्यं नान्यत्रेति। 'एवं एए वि कण्हलेस्सा सरिसा चत्तारि उद्देसगा कायव्वा' एवमेतेऽपि चत्वार उद्देशकाः तेजोलेश्य कृतयुग्म, तेजोलेश्यत्र्योज-तेजोलेश्य द्वापरयुग्म-तेजोलेश्य कल्योजरूपाः कर्त्तव्या-वक्तव्या इति। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त इति ॥

एकचत्वारिंशत्तमे शतके सप्तदशादिविंशत्यन्ता उद्देशकाः समाप्ताः। ४१।१७ २०।

॥ 'अह २१-२८ उद्देसगा' ॥

मूलम्—एवं पम्हलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं वेमाणियाणं य एएसिं पम्हलेस्सा सेसाणं नत्थि। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।४१-२१-२४।

कृष्णलेश्य प्रकरण के समान ही यहां पर समस्त उपपात आदि वाच्य हुए हैं ऐसा जानना चाहिये। 'नवरं जेसु तेउलेस्सा अत्थि तेसु भाणियव्वं' परन्तु जिन असुरकुमारों में तेजोलेश्या है उन्हीं के सम्बन्ध में इस सूत्र का कथन करना चाहिये अन्य में नहीं। 'एवं एए वि कण्हलेस्स सरिसा चत्तारि उद्देसगा कायव्वा' इस प्रकार कृष्णलेश्य प्रकरण के जैसे ही यहां तेजोलेश्य कृतयुग्म तेजोलेश्य त्र्योज, तेजोलेश्य द्वापरयुग्म, तेजोलेश्य कल्योजरूप चार उद्देशक वक्तव्य है। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' इन पदों का अर्थ पूर्वोक्त जैसा ही है।

१७-२० उद्देशक समाप्त हुआ।४१-१७-२०॥

પ્રકરણમાં કહ્યા પ્રમાણે જ અહિયાં ઉપપાત વિગેરે સઘળું કથન કહેવું જોઈએ. તેમ સમજવું. 'नवरं जेसु तेउलेस्सा अत्थि तेसु भाणियव्वं' પરંતુ જે જે અસુર-કુમારોમાં તેજોલેશ્યા હોય તેઓના સંબંધમાં આ સૂત્રનું કથન કહેવું જોઈએ. બીજામાં નહીં. एवं एए वि कण्हलेस्स सरिसा चत्तारि उद्देसगा कायव्वा' આ રીતે કૃષ્ણલેશ્યા પ્રકરણની જેમ જ અહિયાં તેજોલેશ્યા કૃતયુગ્મ, તેજોલેશ્યા ત્ર્યોજ તેજોલેશ્યા દ્વાપરયુગ્મ, અને તેજોલેશ્યા કલ્યોજરૂપ ચાર ઉદ્દેશાઓ સમજી લેવા.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે કથન કર્યું છે, તે સર્વથા સત્ય જ છે ૨ આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમ-સ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

સત્તરમા ઉદ્દેશાથી વીસમા ઉદ્દેશા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૧૭-૨૦॥

जहा पम्हलेस्साए एवं सुक्कलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा। नवरं मणुस्साणं गमओ जहा ओहिउद्देसएसु सेसं तं चेव। एवं एए छसु लेस्सासु चौवीसं उद्देसगा ओहिया चत्तारि सव्वे ते अट्ठावीसं उद्देसगा भवंति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।२४-२८।

छाया--एवं पद्मलेश्यायामपि चत्वार उद्देशकाः कर्त्तव्या। पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां मनुष्याणां वैमानिकानां चैतेषां पद्मलेश्या, शेषाणां नास्ति। तदेवं भदन्त! तदेव भदन्त! इति ॥२१-२४

यथा पद्मलेश्यायामेवं शुक्ललेश्यायामपि चत्वार उद्देशकाः कर्त्तव्याः। नवरं मनुष्याणां गमको यथा औघिकोद्देशकेषु। शेषं तदेव। एवमेते षट्सु लेश्यासु चतुर्विंशतिरुद्देशका, औघिकाश्चत्वारः, सर्वे ते अष्टाविंशतिरुद्देशका भवन्ति। तदेवं भदन्त! २ इति। २४-२८ उद्देशकाः समाप्ताः।

टीका-'एवं पम्हलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा' एवं कृष्णलेश्यादिवदेव पद्मलेश्यायामपि चत्वार उद्देशकाः पद्मलेश्यकृतयुग्माः पद्मलेश्यत्र्योजाः पद्मलेश्य द्वापरयुग्माः पद्मलेश्यकल्योजाः इत्येवंरूपाः कर्त्तव्याः सर्वत्रालापकप्रकारः स्वयमेवोहनीयः। केषां जीवानां पद्मलेश्या भवतीति तान् दर्शयति-'पंचिंदिय'

शतक ४१ उद्देशक २१ से २८ तक

'एवं पम्हलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा' इत्यादि।

टीकार्थ—कृष्णलेश्य प्रकरण में जैसे चार उद्देशक प्रकट किये जा चुके हैं वैसे ही चार उद्देशक पद्मलेश्य जीवों के सम्बन्ध में भी कह लेना चाहिये। जैसे पद्मलेश्य कृतयुग्म उद्देशक १ पद्मलेश्य त्र्योज उद्देशक २ पद्मलेश्यद्वापरयुग्म उद्देशक ३ और पद्मलेश्य कल्योज उद्देशक ४ इन सब में आलाप प्रकार अपने आप उद्भावित कर लेना चाहिये। पद्मलेश्या किन किन जीवों के होती है सो सूत्रकारने 'पंचिं-

એકવીસમા ઉદ્દેશાથી અઠયાવીસમા સુધીના આઠ ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'एवं पम्हलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—કૃષ્ણલેશ્યાનાં પ્રકરણમાં જે પ્રમાણેનું કથન કરવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણેનું કથન ચાર ઉદ્દેશારૂપ પદ્મલેશ્યા નારકો વિગેરેના સંબંધમાં પણ કહેવા જોઇએ તે આ પ્રમાણે સમજવા પદ્મલેશ્યા કૃતયુગ્મ ઉદ્દેશો ૧ પદ્મલેશ્યા ત્ર્યોજ ઉદ્દેશો ૨ પદ્મલેશ્યા દ્વાપરયુગ્મ ૩ અને પદ્મલેશ્યા કલ્યોજ ઉદ્દેશક ૪ આ બધામાં આલાપનો પ્રકાર સ્વયં બનાવીને સમજી લેવો. પદ્મલેશ્યા કયા કયા જીવોને હોય

इत्यादि 'पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं वेमाणियाणय एएसिं पम्ह-लेस्सा' पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां मनुष्याणां वैमानिकानां च एतेषां जीवानां पद्मलेश्या भवति। 'सेसाणं नत्थि' शेषाणामेतद्व्यतिरिक्तानां पद्मलेश्या न भवतीति 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! २ इति।

'जहा पम्हलेस्साए एवं सुक्कलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा' यथा-पद्मलेश्यायां चत्वार उद्देशकाः कथिता एवमेव शुक्ललेश्यायामपि चत्वार उद्देशकाः कर्त्तव्या सर्वत्राऽऽलापप्रकारः स्वयमेवोहनीय इति। 'नवरं मणुस्साणं गमओ

दिय तिरिक्ख जोणियाणं मणुस्साणं वेमाणियाण य एएसिं पम्हलेस्सा' इस सूत्र पाठ द्वारा स्पष्ट किया है-पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चों के, मनुष्यों के एवं वैमानिक देवों के पद्मलेश्या होती है। 'सेसाणं नत्थि' इनके सिवाय और जो जीव बचते हैं उनके पद्मलेश्या नहीं होती है। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! जैसा आपने यह कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तपसे आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये।

'जहा पम्हलेस्साए एवं सुक्कलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा' पद्मलेश्या में जिस पद्धति से चार उद्देशक प्रकट किये गये हैं

છે? તે માટે સૂત્રકારે 'पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं वेमाणियाणय एएसिं पम्हलेस्सा' આ સૂત્ર પાઠદ્વારા સ્પષ્ટ કરેલ છે. પંચેન્દ્રિય તિર્યંચોને, મનુષ્યોને, તથા નૈરયિક દેવોને પદ્મલેશ્યા હોય છે. 'सेसाणं नत्थि' આમના શિવાય જે જીવો બાકી રહે છે, તેઓને પદ્મલેશ્યા હોતી નથી.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણે કહ્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું આ વિષયના સબંધમાં કહેલ સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા.

'जहा पम्हलेस्साए एवं सुक्कलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा' પદ્મ લેશ્યાના કથનમાં જે પ્રમાણે ચાર ઉદ્દેશાઓ કહેલા છે, એજ પ્રમાણે શુકલ લેશ્યાના સંબંધમાં પણ ચાર ઉદ્દેશાઓ સમજી લેવા. તથા આ બધામાં

जहा ओहि उद्देसएसु' नवरं मनुष्याणां गमकः प्रकारो यथा औधिकोद्देशकेषु एतस्यैव शतकस्य प्रथमोद्देशके कथित स्तथैव ज्ञातव्यः। 'सेसं तं चेव' शेषं तदेव-पूर्ववदेव ज्ञातव्यमिति। 'एवं एए छसु लेस्सासु चउवीसं उद्देसगा' एवम् उपरोक्त प्रकारेण एते उद्देशका षट्सु लेश्यासु चतुर्विंशति र्भवन्ति। प्रत्येकलेश्यानां कृत-युग्मादि चतुश्चतुरुद्देशकसद्भावात्। 'ओहिया चत्तारि' औधिकाश्चत्वार उद्देशका भवन्ति। 'सव्वे ते अट्ठावीसं उद्देसगा भवंति' सर्वे ते सङ्कलनया अष्टाविंशतिरुद्दे-शका भवन्तीति। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति।

॥ एकचत्वारिंशत्तमे शतके २१-२८ उद्देशकाः समाप्ताः ॥

इसी पद्धति से शुक्ललेश्या में भी चार उद्देशक कह लेना चाहिये। तथा इन सब में आलाप प्रकार स्वयं ही उद्भावित कर लेना चाहिये। परन्तु मनुष्यों के सम्बन्ध में गमक प्रकार जैसा औधिक उद्देशक में कहा जा चुका है वैसा ही यहां वक्तव्य हुआ है। यही बात 'नवरं मणुस्साणं गमओ जहा ओहि उद्देसए' इस सूत्रपाठ द्वारा यहां समझाई गई है। 'सेसं तं चेव' बाकी का और सब कथन पूर्व के ही जैसा है। 'एवं एए छसु लेस्सासु चउवीसं उद्देसगा' इस प्रकार छह लेश्याओं के सम्बन्ध में समस्त उद्देशक २४ होते हैं। क्योंकि प्रत्येक लेश्या में प्रत्येक लेश्यावालो में कृतयुग्मादिरूप चार चार उद्देशक हैं। तथा-'ओहिया चत्तारि' औधिक उद्देशक ४ हैं। इस प्रकार से सब

આલાપનો પ્રકાર સ્વયં બનાવીને સમજી લેવો જોઈએ પરંતુ મનુષ્યોના સંબંધમાં ગમકોનો પ્રકાર ઔધિક ઉદ્દેશામાં એટલે કે-આ ભગવતી સૂત્રના એકતાળીસમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન સમજી લેવું. એજ વાત 'नवरं मणुस्साणं गमओ जहा ओहि उद्देसए' આ સૂત્રપાઠદ્વારા અહિયાં સમજાવેલ છે, 'सेसं तं चेव' બાકીનું બીજુ તમામ કથન પહેલા કહ્યા પ્રમાણેનું જ છે. 'एवं एएसु छसु लेस्सासु चउवीसगं' उद्देसगा' આ રીતે આ છ લેશ્યાઓના સંબંધમાં સઘળા મળીને ૨૪ ચોવીસ ઉદ્દેશાઓ થઈ જાય છે કેમ કે દરેક લેશ્યામાં-એટલે કે દરેક લેશ્યાવાળાઓમાં કૃતયુગ્મ કૃતયુગ્માદિ રૂપ ચાર ચાર ઉદ્દેશાઓ થાય છે. તથા 'ओहिया चत्तारि' ઔધિક ઉદ્દેશાઓ ૪ ચાર છે. આ રીતે બધા મળીને ૨૮ અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ થઈ જાય છે.

॥ 'अह २९-५६ उद्देसगा' ॥

मूलम्-भवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्मनेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति जहा ओहिया पढमगा चत्तारि उद्देसगा तहेव निरवसेसं एए चत्तारि उद्देसगा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।२९-३२।

कण्हलेस्स भवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति जहा कण्हलेस्साए चत्तारि उद्देसगा भवंति तहा इमे वि भवसिद्धिय कण्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा ॥४१-३३-३६॥

एवं नीललेस्स भवसिद्धिएहि वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा ॥४१-३७-४०॥

एवं काउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥४१-४१-४४॥

तेउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ओहिय सरिसा।४१-४५-४८।

पम्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥४१-४९-५२॥

सुक्कलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ओहियसरिसा। एवं एए वि भवसिद्धिएहि वि अट्ठावीसं उद्देसगा भवंति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥४१-५३-५६॥

४१-२९-५६-उद्देसगा समत्ता

मिलकर २८ उद्देशक होते हैं। 'सेवं भंते! सेवं भंते त्ति' इन पदों की व्याख्या पूर्व के ही जैसी है।

४१ वें शतक में २१ से लेकर २८ तकके उद्देशक समाप्त हुए।

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં કહેલ સઘળું કથન સત્ય છે હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે કહેલ સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ॥સૂ૦૧॥

એકવીસમા ઉદ્દેશાથી અઠયાવીસમા સુધીનાઆઠ ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ૪૧-૨૧થી૨૮

छाया--'भवसिद्धिक राशियुग्म कृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते यथा औघिकाः प्रथमका श्चत्वार उद्देशका स्तथैव निरवशेषम् एते चत्वार उद्देशकाः तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥४१. २९-३२॥

कृष्णलेश्य भवसिद्धिक राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? यथा कृष्णलेश्यायां चत्वार उद्देशका भवन्ति तथा-इमेऽपि भवसिद्धिक कृष्णलेश्यैरपि चत्वार उद्देशकाः कर्त्तव्याः ॥४१.३३-३६।

एवं नीललेश्य भवसिद्धिकैरपि चत्वार उद्देशकाः कर्त्तव्याः ॥३७-४०॥

एवं कापोतलेश्यैरपि चत्वार उद्देशकाः ॥४१, ४१-४४॥

तेजोलेश्यैरपि चत्वार उद्देशकाः ॥४१, ४५-४८॥

पद्मलेश्यैरपि चत्वार उद्देशकाः ॥४१,४९-५२॥

शुक्ललेश्यैरपि चत्वार उद्देशका औघिकसदृशाः। एवमेतेऽपि भवसिद्धिकैरपि अष्टाविंशतिरुद्देशका भवन्ति। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति ॥४१,५३-५२

॥४१, २९-५६ उद्देशकाः समाप्ताः॥

टीका--'भवसिद्धियरासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' भवसिद्धिकराशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावद्देवेभ्यः? इति प्रश्नः, उत्तरमाह-'जहा' इत्यादि, 'जहा ओहिया-पढमगा चत्तारि उद्देसगा' यथा औघिकाः सामान्याः प्रथमका आद्या श्चत्वार

शतक ४१ उद्देशक २९ से ५६ तक

'भवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति'

टीकार्थ-हे भदन्त! राशियुग्म में कृतयुग्म राशिप्रमित भवसिद्धिक नैरयिक किस स्थान विशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं अथवा यावत् देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'जहा ओहिया पढमगा चत्तारि उद्देसगा' 'हे गौतम! जैसे पहिले के चार औघिक उद्देशक कहे

ઓગણત્રીસમા ઉદ્દેશાથી બત્રીસમા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

'भवसिद्धिय रासिजुम्मकडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' ई

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ રાશિયુગ્મમાં કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણુવાળા ભવસિદ્ધિક નૈરયિકો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? શું તેઓ નૈરયિકો-માંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે–'जहा ओहिया पढमगा

उद्देशकाः कथिता एतस्मिन्नेव शतके 'तहेव निरवसेसं एए चत्तारि उद्देसगा' तथैव तेनैव रूपेण निरवशेषम् एतेऽपि भवसिद्धिक कृतयुग्मादि नारकादीनामपि चत्वार उद्देशका वक्तव्या इति, 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥

॥ ४१, २९-३२ उद्देशकाः समाप्ताः ॥

कण्हलेस्स भवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' कृष्णलेश्य भवसिद्धिकराशियुग्म कृतयुग्म नारकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावत् देवेभ्यो वा समुत्पद्यन्ते ? इति प्रश्नः, उत्तरमाह-पूर्वातिदेशेन

गये हैं इसी शतक में 'तहेव निरवसेसं एए चत्तारि उद्देसगा' उसी प्रकार से इन भवसिद्धिक कृतयुग्मादि नारक आदिकों के भी चार उद्देशक यहां वक्तव्य हुए हैं। 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' इन पदों की व्याख्या पूर्व के जैसी है।

॥ ४१ वें शतक में २९ से लेकर ३२ तक के उद्देशक समाप्त हुआ।

'कण्हलेस्स भवसिद्धियरासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' इत्यादि।

टीकार्थ-हे भदन्त ! राशियुग्म में कृतयुग्मराशिप्रमित कृष्णलेश्य भवसिद्धिक नैरयिक किस स्थान विशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं ?

चत्तारि उद्देसगा' હે ગૌતમ ! જેવી રીતે આ શતકમાં પહેલાના ચાર ઔધિક ઉદ્દેશાઓ કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે 'तहेव निरवसेसं एए चत्तारि उद्देसगा' આ ભવસિદ્ધિક કૃતયુગ્મ વિગેરે નારકોના સંબંધમાં પણ ચાર ઉદ્દેશાઓ પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે અહિયાં સમજવા.

'सेवं भंते ! सेवं भंते त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં કહેલ સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે કહેલ સઘળું કથન સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા.

ઓગણત્રીસમા ઉદ્દેશાથી લઈને બત્રીસમા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૪૧-૨૯-૩૨॥

તેત્રીસમા ઉદ્દેશાથી છત્રીસમા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓનું કથન—

'कण्हलेस्स भवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે ભગવન રાશિયુગ્મમાં કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક નૈરયિકો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને

'जहा' इत्यादि, 'जहा कण्हलेस्साए चत्तारि उद्देसगा भवंति' यथा कृष्णलेश्या प्रकरणे एतस्यैव शतकस्य पञ्चमाद्युद्देशकेषु चत्वार उद्देशका भवन्ति 'तहा इमे वि' तथा-तेनैव प्रकारेण इमेऽपि। 'कण्हलेस्स भवसिद्धिएहि वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा' कृष्णलेश्य भवसिद्धिक नैरयिकादिकैरपि कृष्णलेश्य भवसिद्धिक कृतयुग्म कृष्णलेश्य भवसिद्धिक त्र्योज भवसिद्धिक कृष्णलेश्य द्वापरयुग्म कृष्णलेश्य भवसिद्धिक कल्योज रूपा श्चत्वार उद्देशकाः कर्त्तव्या इति

त्रयस्त्रिंशत्तमात् षट्त्रिंशत्तमपर्यन्तोद्देशकाः समाप्ताः ॥३३-३६॥

क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं अथवा यावत् देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? इसका पूर्वातिदेश से उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतम से कहते हैं-'जहा कण्हलेस्साए चत्तारि उद्देसगा भवंति' हे गौतम! इसी शतक के पंचमादि चार उद्देशकों में जिस प्रकार से बताये गये हैं 'तहा इमे वि' उसी प्रकार से ये 'कण्हलेस्स भवसिद्धिएहि वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा' कृष्णलेश्य भवसिद्धिक नैरयिकादि जीवों के साथ भी चार उद्देशक बना लेना चाहिये। जैसे-कृष्णलेश्य कृतयुग्म भवसिद्धिकोद्देशक १, कृष्णलेश्य त्र्योज भवसिद्धिकोद्देशक २, कृष्णलेश्य द्वापरयुग्म भवसिद्धिकोद्देशक ३, और कृष्णलेश्य कल्योज भवसिद्धिकोद्देशक ४ इस प्रकार से राशियुग्म में कृष्णलेश्य भवसिद्धिक नैरयिकों के सम्बन्ध में ये चार उद्देशक हो जाते हैं। इस प्रकार ३३ वें उद्देशक से लेकर ३६ वें उद्देशक तकके ४ उद्देशक ४१ वें शतक में समाप्त हुए। ४१, ३३-३६।

ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે 'जहा कण्हलेस्साए चत्तारि उद्देसगा भवंति' હે ગૌતમ! આ એકતાળીસ શતકના પાંચમા ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણેના ચાર ઉદ્દેશાઓ કહેવામાં આવ્યા છે, 'तहा इमे वि' એજ પ્રમાણે આ 'कण्हलेस्स भवसिद्धिएहि वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा' કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક નૈરયિક જીવોના સંબંધમાં પણ ચાર ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ. જેમ કે-કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કૃતયુગ્મ ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના સંબંધમાં પહેલો ઉદ્દેશો ૧ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ત્ર્યોજ ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના સંબંધમાં બીજો ઉદ્દેશો ૨ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા દ્વાપરયુગ્મ ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના સંબંધમાં ત્રીજો ઉદ્દેશો ૩ અને કૃષ્ણલેશ્યાવાળા કલ્યોજ ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના સંબંધમાં ચોથો ઉદ્દેશો ૪ આ રીતે રાશિયુગ્મમાં કૃષ્ણલેશ્યાવાળા

'एवं नीललेस्स भवसिद्धिएहिं वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा' एवमेव कृष्ण-लेश्य भवसिद्धिकवदेव नीललेश्य भवसिद्धिकैरपि चत्वार उद्देशकाः कृतयुग्मादि रूपाः कर्तव्याः ॥ सप्तत्रिंशत्तमाच्चत्वारिंशत्तम पर्यन्ताः समाप्ताः ॥३७-४०॥

'एवं काउलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा' एवमेव कापोतलेश्यैरपि चत्वार उद्देशकाः कर्त्तव्या। एते चत्वारिंशत्तमात् चतुश्चत्वारिंशत्तमपर्यन्ता उद्देशका समाप्ताः ॥४१-४४॥

'एवं नीललेस्स भवसिद्धिएहिं वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा'

टीकार्थ—इसी प्रकार से-कृष्णलेश्य भवसिद्धिक जैसे ही नील-लेश्य भवसिद्धिक नैरयिकादिकों के सम्बन्ध में भी चार उद्देशक कर्त्तव्य होते हैं। जैसे-नीललेश्य कृतयुग्म भवसिद्धिकोद्देशक १ नीललेश्यत्र्योज भवसिद्धिकोद्देशक २, नीललेश्य द्वापरयुग्म भवसिद्धिक उद्देश ३ और नीललेश्य कल्योज भवसिद्धिक उद्देशक ४ इस प्रकार ३७ वें उद्देशकसे लेकर ४० वें उद्देशक तक के ४ उद्देशक ४१ वें शतक में समाप्त हुए।

ભવસિદ્ધિક નૈરયિકના સંબંધમાં આ ચાર ઉદ્દેશાઓ થઈ જાય છે. આ રીતે તેત્રીસમા ઉદ્દેશાથી લઈને છત્રીસમા ઉદ્દેશા સુધીના ૪ ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૪૧-૩૩ થી ૩૬॥

॥તેત્રીસમા ઉદ્દેશાથી ૩૬ સુધીના ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત॥

'एवं नीललेस्स भवसिद्धिएहिं वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—આજ પ્રમાણે-કૃષ્ણલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિકના કથન પ્રમાણે જ નીલલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના સંબંધમાં પણ ચાર ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ. જેમકે-નીલલેશ્યાયુક્ત કૃતયુગ્મ ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના સંબંધમાં પહેલો ઉદ્દેશો. ૧ નીલલેશ્યાવાળા ત્ર્યોજ ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના સંબંધમાં બીજો ઉદ્દેશો. નીલલેશ્યાવાળા દ્વાપરયુગ્મ ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના સંબંધમાં ત્રીજો ઉદ્દેશો ૩ અને નીલલેશ્યાવાળા કલ્યોજ ભવસિદ્ધિકના સંબંધમાં ૪ ચોથો ઉદ્દેશો સાડત્રીસમા ઉદ્દેશાથી ૪૦ સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત થયા ॥૪૧-૩૭થી૪૦॥

'एवं काउलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—આજ પ્રમાણે કાપોતલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના સંબંધમાં પણ ચાર ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ.

આ રીતે આ એકતાળીસમા ૪૧ શતકમાં ૪૧ એકતાળીસમા ઉદ્દેશાથી લઈને ચુમ્માળીસ સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૪૧-થી ૪૧ ૪૪॥

'तेउलेस्से हि वि चत्तारि उद्देसगा ओहियसरिसा' तेजोलेश्यैरपि तेजोलेश्य भवसिद्धिकासुरकुमारादिकैरपि चत्वार उद्देशका औधिकसदृशाः कर्तव्याः ॥ पञ्चचत्वारिंशत्तमात् अष्टचत्वारिंशत्तमपर्यन्ता उद्देशकाः समाप्ताः ॥४५-४८॥

'पम्हलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा' पद्मलेश्यामाश्रित्यापि पद्मलेश्य भवसिद्धिक तिर्यक् पञ्चेन्द्रियादिकमाश्रित्यापि कृतयुग्मादिरूपा श्चत्वार उद्देशकाः कर्त्तव्याः । एकोनपञ्चाशत्तमाद् द्विपञ्चाशत्तमपर्यन्ता उद्देशका समाप्ताः ।४९-५२

'एवं काउलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा' इत्यादि ।

इसी प्रकार से कापोतलेश्य भवसिद्धिक नैरयिकादिकों के सम्बन्ध में भी चार उद्देशक करने योग्य होते हैं । इस प्रकार ४१ वें उद्देशक से लेकर ४४ वें उद्देशक तक के ४ उद्देशक ४१ वें शतक में समाप्त हुए । ४१, ४१-४४॥

'तेउलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा ओहिय सरिसगा' इत्यादि ।

तेजोलेश्य भवसिद्धिक असुरकुमारादिकों के सम्बन्ध में भी चार उद्देशक औधिक उद्देशक के जैसे करने योग्य होते हैं । इस प्रकार ४५ वें उद्देशक से लेकर ४८ वे उद्देशक तक के ४ उद्देशक ४१ वे शतकके समाप्त हुए । ४१, ४५-४८॥

'पम्हलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा' इत्यादि'

पद्मलेश्य भवसिद्धिक तिर्यक्पंचेन्द्रियादिकों को लेकर भी कृतयुग्मादिरूप चार उद्देशक कर लेना चाहिये । इस प्रकार ४९ वे उद्देशक से लेकर ५२ वे उद्देशक तक के ४ उद्देशक ४१ वे शतक में समाप्त हुए ४१, ४९-५२॥

'तेउलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा ओहिय सरिसगा' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—તેજોલેશ્યા ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના સંબંધમાં પણ ચાર ઉદ્દેશાઓ ઔધિક ઉદ્દેશાના કથન પ્રમાણે કહી લેવા જોઈએ.

આ રીતે પિસ્તાળીસમા ઉદ્દેશાથી લઈને અડતાળીસમા ઉદ્દેશા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૪૧-૪૫ થી ૪૮॥

'पम्हलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—પદ્મલેશ્યાવાળા ભવસિદ્ધિક તિર્યક્ પચેન્દ્રિયોને લઈને પણ કૃતયુગ્મ વિગેરે રૂપે ચાર ઉદ્દેશાઓ બનાવીને સમજી લેવા.

આ રીતે ઓગણપચાસમા ઉદ્દેશાથી ૫૨ બાવન સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૪૧-૪૯-થી ૫૨॥

'सुक्कलेस्सेहि वि चत्तारि ओहिय सरिसा' शुक्ललेश्य मन्तमाश्रित्यापि कृतयुग्मादिरूपा श्चत्वार उद्देशका औघिकसदृशा एव कर्त्तव्या इति । 'एवं एएवि भवसिद्धिए वि अट्ठावीसं उद्देसगा भवंति' एवं पूर्ववदेव एते भवसिद्धिकैरपि अष्टाविंशतिरुद्देशका भवन्तीति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेव भदन्त तदेवं भदन्त ! इति । त्रिपञ्चाशत्तमात् षट्पञ्चाशत्तमपर्यन्ता उद्देशका समाप्ताः ॥५३-५६

'सुक्कलेस्सेहिं वि चत्तारि ओहिय सरिसा' इत्यादि ।

शुक्ललेश्यावालों को आश्रित करके भी औधिक उद्देशकों के जैसे ही कृतयुग्मादि रूप चार उद्देशक बना लेना चाहिये । 'एवं एए वि भवसिद्धिएहिं वि अट्ठावीसं उद्देसगा भवंति' इस प्रकार भवसिद्धिकों के सम्बन्ध में भी २८ उद्देशक हो जाते हैं । तात्पर्य कहने का यह है कि भवसिद्धिक जीवों के कृतयुग्मादिरूप से चार उद्देशक तो औघिक हैं और ६ लेश्याओं सम्बन्धी चार चार उद्देशक होने से चौबीस उद्देशक ये हो जाते हैं । इस प्रकार से कुल यहां २८ उद्देशक हैं । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' इन पदों की व्याख्या पूर्ववत् ही है । इस प्रकार ५३ वें उद्देशक से लेकर ५६ वें उद्देशक तक के ४ उद्देसक ४१ वें शतक में समाप्त हुए ४१, ५३-५६॥

'सुक्कलेस्सेहिं चत्तारि ओहिय सरिसगा' શુકલલેશ્યાવાળાઓને આશ્રય કરીને ઔઘિક ઉદ્દેશાઓની જેમ જ કૃતયુગ્માદિ રૂપ ચાર ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ. 'एवं एए वि भवसिद्धिएहिं वि अट्ठावीसं उद्देसगा भवंति' આ રીતે ભવસિદ્ધિકોના સંબંધમાં પણ ૨૮ અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ થઈ જાય છે. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-શુકલલેશ્યાવાળાઓના કૃતયુગ્માદિ રૂપ ચાર ઉદ્દેશાઓ તો ઔઘિક છે. અને છ લેશ્યાઓ સંબંધી ચાર ચાર ઉદ્દેશાઓ થવાથી તેના ૨૪ ચોવીસ ઉદ્દેશાઓ થાય છે. આ રીતે અહિયાં બધા મળીને કુલ ૨૮ અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ થાય છે.

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે કથન કર્યું છે તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે, હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥ આ રીતે ૫૩ તેપનમાં ઉદ્દેશાથી લઈને ૫૬ છપ્પન સુધીના ૪ ચાર ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૪૧-૫૩ થી ૫૬॥

'अह ५७-८४ उद्देसगा'

मूलम्-अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति? जहा पढमो उद्देसो। नवरं मणुस्सा नेरइया य सरिसा भाणियव्वा सेसं तहेव। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति। एवं चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा ॥५७-६०॥

कण्हलेस्स अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति एवं चेव चत्तारि उद्देसगा ॥६१-६४॥ एवं नीललेस्स अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं चत्तारि उद्देसगा ॥६५-६८॥ काउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥६९-७२॥ तेउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥७३-७६॥ पम्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥७७-८०॥ सुक्कलेस्स अभवसिद्धिएहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥८१-८४॥ एवं एएसु अट्ठावीसाए वि अभवसिद्धिय उद्देसएसु मणुस्सा नेरइयगमेणं णेयव्वा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति। एवं एए वि अट्ठावीसं उद्देसगा ॥६१-८४॥

छाया-अभवसिद्धिक राशियुग्म कृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते यथा प्रथम उद्देशकः। नवरं मनुष्याः नैरयिकाश्च सदृशा भणितव्याः। शेषं तथैव, तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति। एवं चतुर्ष्वपि युग्मेषु चत्वार उद्देशका ।५९-६०

कृष्णलेश्याऽभवसिद्धिक राशियुग्मकृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते एवमेव चत्वार उद्देशकाः। एवं नीललेश्याऽभवसिद्धिकराशियुग्मनैरयिकाणां चत्वार उद्देशकाः। कापोतलेश्यैरपि चत्वार उद्देशकाः। तेजोलेश्यैरपि चत्वार उद्देशकाः। पद्मलेश्यैरपि चत्वार उद्देशकाः। शुक्ललेश्याऽभवसिद्धिकैरपि चत्वार उद्देशकाः। एवमेतेषु अष्टाविंशत्यामपि अभवसिद्धिकोद्देशकेषु मनुष्या नैरयिकगमेण नेतव्याः। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति। एवमेतेऽपि अष्टाविंशतिरुद्देशकाः ॥

सप्त पञ्चाशत्तमात् चतुरशीतितमपर्यन्ताः,

एकचत्वारिंशत्तमे शतके समाप्ताः ॥५९-८४॥

टीका-'अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' अभवसिद्धिक राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावद्देवेभ्यो वा आगत्योत्पद्यन्ते ? इति प्रश्नः, उत्तरमाह-पूर्वातिदेशेन 'जहा' इत्यादि, 'जहा पढमो उद्देसो' यथा प्रथम उद्देशकः, एतस्यैव शतकस्य प्रथमोद्देशके नारकाणां वक्तव्यता कथिता तथैवात्रापि ज्ञातव्या। तिर्यग्भ्यो मनुष्येभ्यो वाऽऽगत्योत्पद्यन्ते । शेषं प्रथमोद्देशकवदेव ज्ञातव्यमिति । 'नवरं मणुस्सा नेरइयाय

शतक ४१ उद्देशक ५७ से ८४ तक ॥

'अभवसिद्धिया रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' इत्यादि । ५७-६०॥

टीका—'अभवसिद्धिया रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' हे भदन्त ! राशियुग्म में कृतयुग्म प्रमाण अभवसिद्धिक नैरयिक किस स्थान विशेष से आकर उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं अथवा यावत् देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? पूर्वातिदेश द्वारा इस प्रश्न का उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतम से कहते हैं-'जहा पढमो उद्देसो' हे गौतम ! जैसी वक्तव्यता नारकों के सम्बन्ध में इसी शतक के प्रथम उद्देशक में कही गई है वैसी वक्तव्यता इनके सम्बन्ध में यहां जाननी चाहिये। तथा च-ये नैरयिक तिर्यञ्चों में से आकरके और मनुष्यों में से आकरके उत्पन्न होते हैं-ऐसा इस प्रश्न का उत्तर है। बाकी का और कथन प्रथम उद्देशक के जैसा ही है। 'नवरं मणुस्सा नेरइया य सरिसा

સત્તાવનમા ઉદ્દેશાથી સાઇઠમા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓનું કથન

'अभवसिद्धिया रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' ઇ.

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ રાશિયુગ્મમાં કૃતયુગ્મ પ્રમાણ અભવસિદ્ધિક નૈરયિક કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર અતિદેશ દ્વારા આપતાં પ્રભુશ્રી ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે-'जहा पढमोउद्देसओ' હે ગૌતમ ! નારકોના સંબંધમાં આ એકતાળીસમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું સઘળું કથન તેઓના સંબંધમાં અહિં પણ સમજવું એટલે કે-તે નૈરયિકો તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, આ પ્રમાણેનો આ પ્રશ્નનો ઉત્તર છે. બાકીનું સઘળું કથન પહેલા

'अह ५७-८४ उद्देसगा'

मूलम्-अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति ? जहा पढमो उद्देसो। नवरं मणुस्सा नेरइया य सरिसा भाणियव्वा सेसं तहेव। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति। एवं चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा ॥५७-६०॥

कण्हलेस्स अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति एवं चेव चत्तारि उद्देसगा ॥६१-६४॥ एवं नीललेस्स अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं चत्तारि उद्देसगा ॥६५-६८॥ काउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥६९-७२॥ तेउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥७३-७६॥ पम्ह-लेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥७७-८०॥ सुक्कलेस्स अभवसि-द्धिएहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥८१-८४॥ एवं एएसु अट्ठावीसाए वि अभवसिद्धिय उद्देसएसु मणुस्सा नेरइयगमेणं णेयव्वा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति। एवं एए वि अट्ठावीसं उद्देसगा ॥६१-८४॥

छाया-अभवसिद्धिक राशियुग्म कृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते यथा प्रथम उद्देशकः। नवरं मनुष्याः नैरयिकाश्च सदृशा भणितव्याः। शेषं तथैव, तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति। एवं चतुर्ष्वपि युग्मेषु चत्वार उद्देशका ॥५९-६०

कृष्णलेश्याऽभवसिद्धिक राशियुग्मकृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते एवमेव चत्वार उद्देशकाः। एवं नीललेश्याऽभवसिद्धिकराशियुग्म-नैरयिकाणां चत्वार उद्देशकाः। कापोतलेश्यैरपि चत्वार उद्देशकाः। तेजोलेश्यै-रपि चत्वार उद्देशकाः। पद्मलेश्यैरपि चत्वार उद्देशकाः। शुक्ललेश्याऽभवसिद्धि-कैरपि चत्वार उद्देशकाः। एवमेतेषु अष्टाविंशत्यामपि अभवसिद्धिकोद्देशकेषु मनुष्या नैरयिकगमेण नेतव्याः। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति। एवमेतेऽपि अष्टाविंशतिरुद्देशकाः ॥

सप्त पञ्चाशत्तमात् चतुरशीतितमपर्यन्ताः,

एकचत्वारिंशत्तमे शतके समाप्ताः ॥५९-८४॥

टीका—'अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' अभवसिद्धिक राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावद्देवेभ्यो वा आगत्योत्पद्यन्ते ? इति प्रश्नः, उत्तरमाह—पूर्वातिदेशेन 'जहा' इत्यादि, 'जहा पढमो उद्देसो' यथा प्रथम उद्देशकः, एतस्यैव शतकस्य प्रथमोद्देशके नारकाणां वक्तव्यता कथिता तथैवात्रापि ज्ञातव्या। तिर्यग्भ्यो मनुष्येभ्यो वाऽऽगत्योत्पद्यन्ते। शेषं प्रथमोद्देशकवदेव ज्ञातव्यमिति। 'नवरं मणुस्सा नेरइयाय

शतक ४१ उद्देशक ५७ से ८४ तक ॥

'अभवसिद्धिया रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' इत्यादि। ५७–६०॥

टीका—'अभवसिद्धिया रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' हे भदन्त! राशियुग्म में कृतयुग्म प्रमाण अभवसिद्धिक नैरयिक किस स्थान विशेष से आकर उत्पन्न होते हैं? क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं अथवा यावत् देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? पूर्वातिदेश द्वारा इस प्रश्न का उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतम से कहते हैं—'जहा पढमो उद्देसो' हे गौतम! जैसी वक्तव्यता नारकों के सम्बन्ध में इसी शतक के प्रथम उद्देशक में कही गई है वैसी वक्तव्यता इनके सम्बन्ध में यहां जाननी चाहिये। तथा च-ये नैरयिक तिर्यञ्चों में से आकरके और मनुष्यों में से आकरके उत्पन्न होते हैं—ऐसा इस प्रश्न का उत्तर है। बाकी का और कथन प्रथम उद्देशक के जैसा ही है। 'नवरं मणुस्सा नेरइया य सरिसा

સત્તાવનમા ઉદ્દેશાથી સાઇઠમા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓનું કથન

'अभवसिद्धिया रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' ઇ.

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ રાશિયુગ્મમાં કૃતયુગ્મ પ્રમાણ અભવસિદ્ધિક નૈરયિક કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર અતિદેશ દ્વારા આપતાં પ્રભુશ્રી ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—'जहा पढमोउद्देसओ' હે ગૌતમ! નારકોના સંબંધમાં આ એકતાળીસમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનું સઘળું કથન તેઓના સંબંધમાં અહિં પણ સમજવું એટલે કે—તે નૈરયિકો તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, આ પ્રમાણેનો આ પ્રશ્નનો ઉત્તર છે. બાકીનું સઘળું કથન

सरिसा भाणियव्वा' नवरम्-केवलं प्रथमोद्देशकापेक्षया इदमेव वैलक्षण्यं यत् अत्राभवसिद्धिकप्रकरणे मनुष्या नारकाश्च सदृशा एव वक्तव्या इति। 'सेसं तहेव' शेषं तथैव प्रथमोद्देशकवदेव ज्ञातव्यम् 'चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा' चतुर्ष्वपि युग्मेषु कृतयुग्म त्र्योज द्वापरयुग्म कल्योजरूपयुग्मचतुष्टयेषु चत्वार उद्देशका भवन्ति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति।

एकचत्वारिंशत्तमे शतके सप्त पञ्चाशत्तमाद् आरभ्य षष्ठि पर्यन्ता उद्देशकाः समाप्ताः।५७-६०॥

भाणियव्वा' परन्तु प्रथम उद्देशककी अपेक्षा यहां केवल यही विशेषता है कि इस अभवसिद्धिक प्रकरण में मनुष्य और नारक समान रीति में कहना चाहिये। 'सेसं तहेव' और बाकी का कथन प्रथमोद्देशक के ही जैसा है। 'चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा' यहां पर भी चार युग्मों में-कृतयुग्म, त्र्योज, द्वापरयुग्म और कल्योज-इन युग्मों में चार उद्देशक होते हैं। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! जैसा आपने यह कहा है वह सर्वथा सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्रीको वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये। इस प्रकार ५७ वें उद्देशक से लेकर ६० वें उद्देशक तकके ४ उद्देशक ४१ वें शतक में समाप्त।४१,५७,६०

ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે જ છે. 'नवरं मणुस्सा नेरइया य सरिसा भाणियव्वा' પરંતુ પહેલા ઉદ્દેશા કરતાં આ કથનમાં કેવળ એજ વિશેષપણું આવે છે-આ અભવસિદ્ધિકના પ્રકરણમાં મનુષ્ય અને નારકો સરખા જ કહેવા જોઈએ. 'सेसं तहेव' આ શિવાય બાકીનું સઘળું કથન પહેલા ઉદ્દેશામાં કહ્યા પ્રમાણે જ છે. 'चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा' અહિયાં પણ ચાર યુગ્મોમાં-કૃતયુગ્મ-ત્ર્યોજ દ્વાપરયુગ્મ અને કલ્યોજ આ ચાર યુગ્મોના ચાર ઉદ્દેશાઓ થાય છે.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે પ્રમાણે કહેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળુ કથન સર્વથા સત્ય છે આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા ॥સૂ૦૧॥

આ પ્રમાણે ૫૭ સત્તાવનમા ઉદ્દેશાથી લઈને ૬૦ સાઈઠમા ઉદ્દેશા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૪૧-૫૭ થી ૬૦

'कण्हलेस्स अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' कृष्णलेश्याऽभवसिद्धिक राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावद्देवेभ्यो वा आगत्योत्पद्यन्ते इति प्रश्नः, उत्तरमाह-पूर्ववदेव 'एवं चेव' इत्यादि, 'एवं चेव चत्तारि उद्देसगा' एवं पूर्ववदेव चतुरो युग्मानाश्रित्य चत्वार उद्देशकाः कर्तव्याः ॥६१-६४॥

'एवं नीललेस्स अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं चत्तारि उद्दे-

---

कण्हलेस्स अभवसिद्धिय रासिजुम्मकडजुम्मनेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' इत्यादि सूत्र-६१-६४।

टीकार्थ-'कण्हलेस्स अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति'

हे भदन्त ! राशियुग्म में कृतयुग्म प्रमाण कृष्णलेश्यावाले अभवसिद्धिक नैरयिक किस स्थान विशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा यावत् देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? 'एवं चेव' हे गौतम ! पूर्वके जैसे यहां पर भी चार युग्मों को आश्रित करके चार उद्देशक कह लेना चाहिये। इस प्रकार ६१ वें उद्देशक से लेकर ६४ वे उद्देशक तकके चार उद्देश ४१ ये शतक के समाप्त हुए। ४१,६१-६४॥

एवं नीललेस्स अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं चत्तारि उद्देसगा इत्यादि ६५-६८॥

'कण्हलेस्स अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ--હે ભગવન રાશિયુગ્મમાં કૃતયુગ્મ પ્રમાણુ કૃષ્ણુલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિક નૈરયિકો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? કે દેવો માંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'एवं चेव' હે ગૌતમ ! પહેલાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં પણુ ચાર યુગ્મોનો આશ્રય કરીને ચાર ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ. આ રીતે ૬૧ એકસઠમા ઉદ્દેશાથી લઈને ૬૪ ચોસઠમા ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત

॥૪૧-૬૧- થી ૬૪॥

'एवं नीललेस्स अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं चत्तारि उद्देसगा' ઇત્યાદિ.

सगा' एवमौघिक प्रकरणवदेव अभवसिद्धिक राशियुग्म कृतयुग्म नारकाणामपि चतुरो युग्मानाश्रित्य चत्वार उद्देशका वक्तव्याः ॥६५-६८॥

'काउलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा' इहापि पूर्ववदेव कापोतलेश्यैः कापोतलेश्याभन्तभाव्यापि चतुरो युग्मानाश्रित्य चत्वार उद्देशकाः कर्त्तव्याः ॥६९-७२॥

तेउलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा' तेजोलेश्यैरपि चत्वार उद्देशकाः इहापि पूर्ववदेव तेजोलेश्याभन्तभव्याभवसिद्धिकराशियुग्मकृतयुग्मादि नारकाणां युग्मभेदात् चत्वार उद्देशकाः कर्तव्या इति ॥७२-७६॥

टीकार्थ-'एवं नीललेस्स अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं चत्तारि उद्देसगा' औघिक प्रकरण के जैसे राशियुग्म में कृतयुग्म प्रमाण नीललेश्यावाले अभवसिद्धिक नैरयिको के सम्बन्ध में भी चार उद्देशक कहना चाहिये। इस प्रकार ६५ वें उद्देशक से लेकर ६८ वें उद्देशक तकके चार उद्देशक ४१ वें शतक में समाप्त हुए ४१,६५-६८॥

'काउलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा' इत्यादि ६९-७२॥

'काउलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा' पहिले के जैसे ही यहां पर भी कापोतलेश्यावालों अभवसिद्धिक नैरयिकों के सम्बन्ध में चार युग्मों को आश्रित करके चार उद्देशक होते हैं, ऐसा जानना चाहिये। इस प्रकार ६९ वें उद्देशक से लेकर ७२ वें उद्देशक तक के चार उद्देशक ४१ वें शतक में समाप्त हुए। ४१,६९-७२॥

'तेउलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा' इत्यादि ७३-७६॥

ટીકાર્થ—'एवं नीललेस्स अभवसिद्धिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं चत्तारि उद्देसगा' ઔધિક પ્રકરણમાં કહ્યા પ્રમાણે રાશિયુગ્મમાં કૃતયુગ્મ પ્રમાણ નીલલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના સંબંધમાં પણ ચાર યુગ્મોનો આશ્રય કરીને ચાર ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ.

આ રીતે ૬૫ પાંસઠમા ઉદ્દેશાથી લઈને ૬૮ અડસઠમા ઉદ્દેશા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૪૧-૬૫ થી ૬૮॥

'काउल्लेसेहिं वि चत्तारि उद्देसगा' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—'काउल्लेसेहिं वि चत्तारि उद्देसगा' પહેલાની જેમ જ અહિયાં પણ કાપોતલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના સંબંધમાં ચાર યુગ્મોનો આશ્રય કરીને ચાર ઉદ્દેશાઓ થાય છે, તેમ સમજવું,

આ પ્રમાણે ૬૯ ઓગણસિત્તેરમા ઉદ્દેશાથી લઈને ચાર ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત થયા. ॥૪૧-૬૯ થી ૭૨॥

'तेउलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा' ઇત્યાદિ

'पम्हलेस्से हिं वि चत्तारि उद्देसगा' पद्मलेश्यैरपि चत्वार उद्देशकाः पद्मलेश्या घटिताऽभवसिद्धिक राशियुग्म कृतयुग्म त्र्योज द्वापरयुग्म कल्योज नारकाणामपि चत्वार उद्देशकाः कर्त्तव्याः ॥७७-८०॥

'सुक्कलेस्स अभवसिद्धिएहि वि चत्तारि उद्देसगा' शुक्ललेश्याऽभवसिद्धि·

'तेउलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा' राशियुग्म में कृतयुग्मादि प्रमाण प्रमित तेजोलेश्यावाले अभवसिद्धिक नैरयिकों के सम्बन्ध में भी चार उद्देशक बनते हैं। ऐसा जानना चाहिये। इस प्रकार ७३ वें उद्देशक से लेकर के ७६ वें उद्देशक तक के चार उद्देशक ४१ वें शतक में समाप्त हुए। ४१, ७३-७६॥

'पम्हलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा' इत्यादि ७७-८०॥

'पम्हलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा' पद्मलेश्यावाले अभवसिद्धिक नैरयिकों के सम्बन्ध में भी चार उद्देशक बनते हैं-अर्थात् राशियुग्म में कृतयुग्म प्रमाण, त्र्योज प्रमाण, द्वापरयुग्म प्रमाण और कल्योजप्रमाण प्रमित पद्मलेश्यावाले अभवसिद्धिक नैरयिकों के चार उद्देशक बनते हैं, ऐसा जानना चाहिये। इस प्रकार ७७ वें उद्देशक से लेकर ८० वें उद्देशक तकके चार उद्देशक ४१ वें शतक में समाप्त हुए ४१,७७-८०॥

'सुक्कलेस्स अभवसिद्धिएहिं वि चत्तारि उद्देसगा' इत्यादि।

ટીકાર્થ—'तेउलेस्सेहिं वि चत्तारि उद्देसगा' રાશિયુગ્મમાં કૃતયુગ્મ વિગેરે પ્રમાણુવાળા નીલલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના સંબંધમાં પણ ચાર ઉદ્દેશાઓ થાય છે. તેમ સમજવું.

આ રીતે ૭૩ તોંતેરમા ઉદ્દેશાથી લઈને ૭૬ છોંતેરમા ઉદ્દેશા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૪૧-૭૬ થી ૭૬

'पम्हलेस्सेहिं चत्तारि विउद्देसगा' ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—'पम्हलेस्सेहिं चत्तारि वि उद्देसगा' પદ્મલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના સંબંધમાં પણ ચાર ઉદ્દેશાઓ થાય છે. અર્થાત્-રાશિયુગ્મમાં કૃતયુગ્મ પ્રમાણ, ત્ર્યોજ પ્રમાણ દ્વાપરયુગ્મ પ્રમાણ અને કલ્યોજ પ્રમાણ પ્રમિત પદ્મલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના ચાર ઉદ્દેશાઓ બને છે, તેમ સમજવું.

આ રીતે સત્યોતેરમા ઉદ્દેશાથી લઈને ૮૦ એંસીમા ઉદ્દેશા સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૪૧-૭૭-૮૦॥

'सुक्कलेस्स अभवसिद्धिएहिं वि चत्तारि उद्देसगा' ઈત્યાદિ

केरपि चत्वार उद्देशका भवन्तीति। 'एवं एएसु अट्ठावीसाए वि अभवसिद्धिय उद्देसएसु मणुस्सा नेरइयगमेणं नेयव्वा' एवमेतेषु अष्टाविंशतावपि उद्देशकेषु मनुष्याणां वक्तव्यता नैरयिकवदेव ज्ञातव्येति। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति। ८१-८४॥

'एवं एए वि अट्ठावीसं उद्देसगा' एवमेतेऽपि अष्टाविंशतिरुद्देशका भवन्तीति।

'सुक्कलेस्स अभवसिद्धिएहिं वि चत्तारि उद्देसगा' इसी प्रकार से शुक्ललेश्यावाले अभवसिद्धिकों के सम्बन्ध में भी चार उद्देशक बनते हैं। 'एवं एएसु अट्ठावीसाए वि अभवसिद्धिय उद्देसएसु मणुस्सा णेरइयगमेणं नेयव्वा' जैसी इन २८ उद्देशकों में नैरयिकों की वक्तव्यता प्रकट की गई है वैसी ही वक्तव्यता मनुष्यों के सम्बन्ध में भी कर लेनी चाहिये। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भगवन्! जैसा आपने यह विषय कहा है वह सर्वथा सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये। इस प्रकार ८१ वें उद्देशक से लेकर के ८४ वें उद्देशक तक के चार उद्देशक ४१ वें शतक में समाप्त हुए।४१,८१-८४॥

'एवं एए वि अट्ठावीसं उद्देसगा' इस प्रकार से ये भी २८ उद्देशक

ટીકાર્થ—'सुकलेस्स अभवसिद्धिएहिं वि चत्तारि उद्देसगा' આજ પ્રમાણે શુકલલેશ્યાવાળા અભવસિદ્ધિકોના સંબંધમાં પણ ચાર ઉદ્દેશાઓ બને છે, 'एवं एएसु अट्ठावीसाए वि अभवसिद्धिय उद्देसएसु मणुस्सा णेरइयगमेणं नेयव्वा' આ અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓમાં નૈરયિકો સંબંધી કથન પ્રગટ કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણનું કથન મનુષ્યોના સંબંધમાં પણ સમજી લેવું.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણેનું કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ।।સૂ૦૧।।

આ રીતે ૮૧ એકયાસીમા ઉદ્દેશાથી લઈને ૮૪ ચોર્યાશી સુધીના ચાર ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ।।૪૧-૮૧-થી ૮૪।।

'एवं एए वि अट्ठावीसं उद्देसगा' આ રીતે આ અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ થાય છે.

एकचत्वारिंशत्तमे शतके सप्त पञ्चाशत्तमोद्देशतश्चतुरशीत्यन्ता अष्टाविंशतिरुद्देशका समाप्ताः ॥५७-८४॥

अह ८५-११२ उद्देसगा

मूलम्—सम्मदिट्ठि रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति एवं जहा पढमो उद्देसओ। एवं चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा भवसिद्धियसरिसा कायव्वा। सेवं भंते! २ त्ति ॥८५-८८॥

कण्हलेस्स सम्मदिट्ठि रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति? एए वि कण्हलेस्ससरिसा चत्तारि वि उद्देसगा कायव्वा। एवं सम्मदिट्ठीसु वि भवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ ॥८९-११२ उद्देसगा॥

छाया—सम्यग्दृष्टि राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? एवं यथा प्रथम उद्देशकः। चतुर्ष्वपि युग्मेषु चत्वार उद्देशका भवसिद्धिकसदृशाः कर्त्तव्याः। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति।८५-८८।

कृष्णलेश्य सम्यग्दृष्टि राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? एतेऽपि कृष्णलेश्य सदृशाश्चत्वारोऽपि उद्देशकाः कर्त्तव्याः। एवं सम्यग्दृष्टिष्वपि भवसिद्धिसदृशा अष्टाविंशतिरुद्देशकाः कर्त्तव्याः। तदेवं भदन्त तदेवं भदन्त! इति यावद्विहरति ॥८८-११२ उद्देशकाः ॥

टीका—'सम्मदिट्ठि रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' सम्यग्दृष्टि राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते किं नैर-

---

होते हैं। ५७ उद्देशक से लेकर ८४ उद्देशक समाप्त॥

॥ शतक ४१ उद्देशक ८५-११२॥

'सम्मदिट्ठि रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति'

टीकार्थ—'सम्मदिट्ठि रासिजुम्म कडजुम्मनेरइयाणं भंते! कओ उव-

સત્તાવનમા ઉદ્દેશાથી ચોર્યાશી સુધીના ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૪૧-૫૭-૮૪॥

પંચ્યાસીમા ઉદ્દેશાથી અઠયાસી ઉદ્દેશાસુધી

'सम्मदिट्ठी रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' ઈ.

यिकेभ्यो यावद्देवेभ्यो वा आगत्य समुत्पद्यन्ते इति पूर्ववदेव प्रश्नः। उत्तरमाह-पूर्वातिदेशेन-'एवं' इत्यादि, 'एवं जहा पढमो उद्देसओ' एवं यथा प्रथम उद्देशकः एतस्यैव शतकस्य प्रथमे उद्देशके येन प्रकारेण उपपातादिकं कथितं तेनैव रूपेण इहापि सर्वं ज्ञातव्यमिति। 'एवं चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा भवसिद्धिय सरिसा कायव्वा' एवं चतुर्ष्वपि युग्मेषु कृतयुग्मत्र्योजद्वापरयुग्मकल्योजेषु चत्वार उद्देशकाः भवसिद्धिकसदृशाः कर्तव्या यथा भवसिद्धिकप्रकरणे युग्म चतुष्टयमन्तर्भाव्य चत्वार उद्देशका औघिकाः कथिता स्तथाऽत्रापि युग्म चतुष्टयघटिता

वज्जंति' हे भदन्त! राशियुग्म में कृतयुग्म प्रमाण सम्यग्दृष्टि नैरयिक किस स्थान विशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं? क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? अथवा यावत् देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? पूर्वातिदेश से उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतम से कहते हैं-'एवं जहा पढमो उद्देसओ' हे गौतम! जिस प्रकार से इसी शतक के प्रथम उद्देशक में उपपात आदि कहे गये हैं उसी प्रकार से वे सब यहां पर भी कह लेना चाहिये। 'एवं चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा भवसिद्धिय सरिसा कायव्वा' इस प्रकार चार युग्मों में कृतयुग्म त्र्योज द्वापरयुग्म एवं कल्योज में चार उद्देशक भवसिद्धिक नैरयिकादिकों के जैसे कर लेना चाहिये। अर्थात्-जैसे भवसिद्धिक प्रकरण में युग्म चतुष्टय को लेकर चार औधिक उद्देशक कहे गये हैं वैसे ही युग्म चतुष्टय को लेकर यहां पर भी चार औधिक उद्देशक कह लेना चाहिये। 'सेवं भंते!

ટીકાર્થ—'सम्मदिट्ठि रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' હે ભગવન રાશિયુગ્મમાં કૃતયુગ્મ પ્રમાણ સમ્યગ્દષ્ટિનૈરયિકો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? કે દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'एवं जहा पढमो उद्देसओ' હે ગૌતમ! જે પ્રમાણે આ એકતાળીસમા શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે તેઓના ઉપપાત વિગેરે સઘળું કથન અહિયાં પણ કહેવું જોઈએ. 'एवं चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा भवसिद्धियसरिसा कायव्वा' આજ પ્રમાણે ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના કથન પ્રમાણે ચાર યુગ્મોમાં કૃતયુગ્મ, ત્ર્યોજ દ્વાપરયુગ્મ અને કલ્યોજમાં ચાર ઉદ્દેશાઓ ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના કથન પ્રમાણે કહેવા જોઈએ. અર્થાત્ જે પ્રમાણે ભવસિદ્ધિક પ્રકરણમાં ચાર યુગ્મને લઈને ચાર ઔધિક ઉદ્દેશાઓ કહેલ છે, એજ પ્રમાણે ચાર યુગ્મનો આશ્રય કરીને અહિયાં પણ ચાર ઔધિક ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ.

श्चत्वार उद्देशका : कर्तव्या इति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति । ॥८५-८८॥

एकचत्वारिंशत्तमे शतके सम्यग्दृष्टेश्चत्वार औघिकाः समाप्ताः ।

'कण्हलेस्स सम्मदिट्ठिरासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' कृष्णलेश्य सम्यग्दृष्टि राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावद्देवेभ्यो वा आगत्य समुत्पद्यन्ते इति पूर्ववदेव प्रश्नः । उत्तरमाह-पूर्वातिदेशेन 'एएवि' इत्यादि, 'एएवि कण्हलेस्स सरिसा चत्तारि वि उद्देसगा कायव्वा' एतेऽपि कृष्णलेश्य सदृशा एतच्छतकीय पञ्चमोद्देशकसदृशा

सेवं भंते ! त्ति' इन पदों का अर्थ पूर्वोक्त जैसा ही है ।

४१ वें शतक में ये सम्यग्दृष्टि के चार औघिक उद्देशक समाप्त हुए ॥४१, ८५-८८॥

'कण्हलेस्स सम्मदिट्ठि रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते । कओ उववज्जंति' इत्यादि ।

टीकार्थ-'कण्हलेस्स सम्मदिट्ठि रासिजुम्म कडजुम्मनेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' हे भदन्त ! राशियुग्म में कृतयुग्म प्रमित कृष्णलेश्यावाले सम्यग्दृष्टि नैरयिक किस स्थान विशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? अथवा यावत् देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? पूर्वातिदेश द्वारा उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतम से कहते हैं-'एएवि कण्हलेस्ससरिसा चत्तारि वि उद्देसगा

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भगवन् आप देवानुप्रिये જે પ્રમાણે કહેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે, હે ભગવન આપ દેવાનુપ્રિયે કહેલ સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે, આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥આ રીતે સમ્યગ્દૃષ્ટિના ચાર ઔઘિક ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૪૧-૮૫-૮૮॥

'कण्हलेस्स सम्मदिट्ठी रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति'

ટીકાર્થ—'कण्हलेस्स सम्मदिट्ठी रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति' હે ભગવન્ રાશિયુગ્મમાં કૃતયુગ્મ પ્રમાણ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા સમ્યગ્દૃષ્ટિ નૈરયિકો કયા વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યંચ યોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? પ્રશ્નનો ઉત્તર અતિદેશ દ્વારા આપતાં ગૌતમસ્વામીને પ્રભુશ્રી કહે છે કે-'एएवि कण्हलेस्ससरिसा चत्तारि वि उद्देसगा कायव्वा' હે ગૌતમ !

चत्वारोऽपि उद्देशकाः कृतयुग्म त्र्योज द्वापरयुग्म कल्योज घटिताः कर्त्तव्याः। 'एवं सम्माहिट्ठिसु वि भवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा' एवं सम्यग्दृष्टिष्वपि राशियुग्म कृतयुग्मस्यैकः, सम्यग्दृष्टित्र्योजस्य द्वितीयः सम्यग्दृष्टि द्वापर युग्मस्य तृतीयः, सम्यग्दृष्टि कल्योजस्य चतुर्थः, ते एते चत्वार उद्देशका औघिकाः ४, ततः कृष्णलेश्य सम्यग्दृष्टेः कृतयुग्मादि घटितस्य चत्वारः८। 'एवं नीललेश्य

कायव्वा' हे गौतम ! इनके सम्बन्ध में भी कृष्णलेश्यावालों के जैसे-इसी शतक के पांचवें उद्देशक के जैसे-चार उद्देशक-कृतयुग्म, त्र्योज द्वापरयुग्म और कल्योज पद घटित चार उद्देशक-बनालेना चाहिये। 'एवं सम्मदिट्ठिसु वि भवसिद्धिय सरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा' इसी प्रकार से सम्यग्दृष्टियों के सम्बन्ध में भी भवसिद्धिक नैरयिक-आदिकों के जैसे अठाईस उद्देशक, बनालेना चाहिये। वे इस प्रकार से बनते हैं-राशियुग्म में कृतयुग्मप्रमित सम्यग्दृष्टि नैरयिकादिकों का प्रथम उद्देशक त्र्योज राशिप्रमित सम्यग्दृष्टि नैरयिक आदिकों का द्वितीय उद्देशक, द्वापरयुग्म राशिप्रमित सम्यग्दृष्टि नैरयिकादिकोंका तृतीय उद्देशक कल्योजराशिप्रमित सम्यग्दृष्टि नैरकादिकोंका चतुर्थ उद्देशक ऐसे ये चार उद्देशक औघिक हैं। तथा-कृतयुग्मादिराशिप्रमित कृष्णलेश्यावाले सम्यग्दृष्टि नैरयिकादिकों के चार उद्देशक, तथा

આ રાશિયુગ્મમાં કૃતયુગ્મ પ્રમાણુ કૃષ્ણુલેશ્યાવાળા સમ્યગ્દષ્ટિ નૈરયિકોના સંબંધમાં પણુ કૃષ્ણુલેશ્યાવાળાના કથન પ્રમાણે અર્થાત્ આ એકતાલીસમા શતકના પાંચમા ઉદ્દેશાના કથન પ્રમાણે એટલે કે-કૃતયુગ્મ, ત્ર્યોજ, દ્વાપર-યુગ્મ, અને કલ્યોજપદયુક્ત ચાર ઉદ્દેશાઓ બનાવી લેવા 'एवं सम्मद्दिट्ठिसु वि भवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा' આજ પ્રમાણે સમ્યગ્દષ્ટિ વાળાઓના સમ્બન્ધમાં પણુ ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના કથન પ્રમાણે અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ સમજી લેવા, તે આ પ્રમાણે બને છે. રાશિયુગ્મમાં કૃતયુગ્મ પ્રમાણુ સમ્યગ્દષ્ટિ નૈરયિકોના સમ્બન્ધમાં પહેલો ઉદ્દેશો. ૧ ત્ર્યોજરાશિ પ્રમાણુ સમ્યગ્દૃષ્ટિ નૈરયિકોના સમ્બન્ધમાં બીજો ઉદ્દેશો. ૨ દ્વાપરયુગ્મરાશિપ્રમાણુ સમ્યગ્દષ્ટિ નૈરયિકોના સંબંધમાં ત્રીજો ઉદ્દેશો. ૩ કલ્યોજ રાશિપ્રમાણુ સમ્ય-ગ્દષ્ટિ નૈરયિકોના સંબંધમાં ચોથો ઉદ્દેશો. ૪ આ પ્રમાણે ચાર ઔઘિક ઉદ્દેશાઓ તથા કૃતયુગ્મ વિગેરે રાશિપ્રમાણુ કૃષ્ણુલેશ્યાવાળા સમ્યગ્દષ્ટિ નૈર-યિકના સંબંધમાં ચાર ઉદ્દેશાઓ તથા કૃતયુગ્મ વિગેરે રાશિપ્રમાણુ નીલ-લેશ્યાવાળા સમ્યગ્દષ્ટિ નૈરયિકોના સંબંધમાં ચાર ઉદ્દેશાઓ તથા કૃતયુગ્મ વિગેરે રાશિપ્રમાણુ તેજોલેશ્યાવાળા સમ્યગ્દૃષ્ટિ નૈરયિકોના સંબંધમાં ચાર

कापोतलेश्य तेजोलेश्य पद्मलेश्य शुक्ललेश्यानां प्रत्येकस्य चत्वार चत्वार उद्देशका स्तदेवं सर्वे संकलनया अष्टाविंशतिरुद्देशका भवन्ति, इति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' जाव विहरइ' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति यावद्विहरति ।

'एकचत्वारिंशत्तमे शतके ८९-११२ उद्देशकाः समाप्ताः ॥

कृतयुग्मादिराशिप्रमित नीललेश्यावाले सम्यग्दृष्टि नैरयिकादिकों के चार उद्देशक, तथा कृतयुग्मादिराशिप्रमित कापोतलेश्यावाले सम्यग्दृष्टि नैरयिकादिकों के चार उद्देशक तथा कृतयुग्मादि राशिप्रमित तेजोलेश्यावाले सम्यग्दृष्टि असुरकुमारादिकों के चार उद्देशक, तथा कृतयुग्मादिराशिप्रमित पद्मलेश्यावाले सम्यग्दृष्टि तिर्यक्पंचेन्द्रिय आदिकों के चार उद्देशक और कृतयुग्मादिराशिप्रमित शुक्ललेश्यावाले सम्यग्दृष्टि तिर्यक्पंचेन्द्रियआदिकों के चार उद्देशक इस प्रकार ६ लेश्या सम्बन्धी २४ उद्देशक ये हैं सब कुल मिलाकर यहां २८ उद्देशक होते हैं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ' हे भदन्त ! जसा आपने यह कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥

शतक ४१ उद्देशक ८९से११२ तक समाप्त हुए ॥

ઉદ્દેશાઓ તથા કૃતયુગ્મ વિગેરે રાશિપ્રમાણ પદ્મલેશ્યાવાળા સમ્યગ્દષ્ટિ નૈરયિકોના સંબંધમાં ચાર ઉદ્દેશાઓ. તથા કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ શુક્લલેશ્યાવાળા સમ્યગ્દષ્ટિ નૈરયિકોના સંબંધમાં ચાર ઉદ્દેશાઓ આ રીતે છ લેશ્યાસંબંધી ૨૪ ચોવીસ ઉદ્દેશાઓ થાય છે. અને બધા મળીને અહિયાં ૨૮ અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ થાય છે.

'સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે ! ત્તિ જાવ વિહરઇ' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ વિષયમાં જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું કથન સર્વથા સત્ય જ છે, આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

નેવ્યાસીમા ઉદ્દેશાથી ૧૧૨ એકસોબાર સુધીના ચોવીસ ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત

॥૪૧-૮૯ થી ૧૧૨॥

॥ अह ११३-१४० उद्देसगा ॥

मूलम्—मिच्छादिट्ठि रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति? एवं एत्थ वि मिच्छादिट्ठि अभिलावेणं अभवसिद्धिय सरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

॥११३-१४० उद्देसगा समत्ता॥

छाया—मिथ्यादृष्टि राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? एवमत्रापि मिथ्यादृष्ट्यभिलापेनाभवसिद्धिकसदृशा अष्टाविंशतिरुद्देशकाः कर्त्तव्याः। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति।

११३-१४० उद्देशकाः समाप्ताः ॥

टीका—'मिच्छादिट्ठिरासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' मिथ्यादृष्टि राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावद्देवेभ्यो वा आगत्य समुत्पद्यन्ते इति पूर्ववदेव प्रश्नः। उत्तरयत्यतिदेशद्वारेण—'एव' इत्यादि, 'एवं एत्थ वि मिच्छादिट्ठि अभिलावेणं अभवसिद्धिय

॥ शतक ४१ उद्देशक ११३-१४०॥

'मिच्छादिट्ठिरासिजुम्म कडजुम्मनेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' इत्यादि।

टीकार्थ—'मिच्छादिट्ठिरासिजुम्म कडजुम्मनेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति हे भदन्त! राशियुग्म में कृतयुग्मराशिप्रमित मिथ्यादृष्टि नैरयिक किस स्थानविशेष से आकर उत्पन्न होते हैं? क्या वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? अथवा यावत् देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? अतिदेशद्वारा उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतम से कहते हैं—'एवं एत्थ वि

એકસોતેરમા ઉદ્દેશાથી એકસોચાળીસ સુધીના ઉદ્દેશાઓનું કથન

'मिच्छादिट्ठि रासिजुम्म कडजुम्मनेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—'मिच्छादिट्ठि रासिजुम्मकडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' હે ભગવન્ રાશિયુગ્મમાં કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ મિથ્યાદૃષ્ટિ નૈરયિકો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અતિદેશ દ્વારા આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે

सरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा' एवं पूर्ववदेवत्रापि मिथ्यादृष्टयभिलापेना भवसिद्धिक सदृशा अष्टाविंशतिरुद्देशकाः कर्त्तव्याः, यथाऽभवसिद्धिकप्रकरणे अष्टाविंशतिरुद्देशकाः कथिता एतेनैव रूपेण औघिकोद्देशकस्तथा षड्लेश्यान्तर्भावेण षडुद्देशका मिलित्वा सप्तोद्देशकाः सर्वत्र कृतयुग्मादिचतुर्विधयुग्मानु प्रवेशेनाष्टाविंशतिरुद्देशका वक्तव्याः, पूर्वं यत्राभवसिद्धिकपदं दत्तं तत्र प्रकृते मिथ्यादृष्टिपदं देयम्। 'सेवं भंते। सेवं भंते। त्ति' तदेवं भदन्त तदेवं भदन्त इति।

११३-१४० उद्देशकाः समाप्ताः॥

मिच्छादिट्ठि अभिलावेणं अभवसिद्धियसरिसा अट्ठवीसं उद्देसगा कायव्वा' हे गौतम! इनके सम्बन्ध में भी मिथ्यादृष्टि पद के उच्चारण से अभवसिद्धिक नैरयिकादिकों के जैसे २८ उद्देशक बनालेना चाहिये। इनमें चार औघिक उद्देशक हैं। और ६ लेश्या सम्बन्धी २४ उद्देशक हैं। सब मिलकर २८ उद्देशक हो जाते हैं। इनके बनाने की विधि ऊपर प्रकट की जा चुकी है। इस प्रकार पहिले जहां भवसिद्धिक पदका प्रयोग किया गया है वहां वहां प्रकृत में मिथ्यादृष्टि पदका प्रयोग करना चाहिये। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! जैसा आपने यह कहा है वह सब सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतम ने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान

છે કે-'एवं एत्थवि मिच्छादिट्ठि अभिलावेणं' अभवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा' હે ગૌતમ! આ સંબંધમાં પણ મિથ્યાદષ્ટિ એ પદનાઉચ્ચારણ સાથે અભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના કથન પ્રમાણેના ૨૮ અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ કહેવા જોઈએ. આમાં પણ ૪ ચાર ઔધિક ઉદ્દેશાઓ થાય છે. અને છ લેશ્યા સંબંધી ૨૪ ચોવીસ ઉદ્દેશાઓ થાય છે. એ રીતે બધા મળીને ૨૮ અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ થઈ જાય છે આ અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ કહેવાની રીત ઉપર પહેલાં બતાવવામાં આવેલ છે, તે પ્રમાણેની સમજવી. આ રીતે પહેલાં જ્યાં અભવસિદ્ધિક એ પદનો પ્રયોગ કરવામાં આવેલ છે. ત્યાં ત્યાં મિથ્યાદષ્ટિ પદનો પ્રયોગ કરીને સઘળું કથન કહેવું જોઈએ.

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે આ સંબંધમાં જે કથન કર્યું છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી અને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી

'अह १४१-१६८ उद्देसगा'

मूलम्-कण्हपक्खिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति एवं एत्थ वि अभवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।

॥१४१-१६८ उद्देसगा समत्ता॥

छाया--कृष्णपाक्षिक राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते एवमत्रापि अभवसिद्धिकसदृशा अष्टाविंशतिरुद्देशकाः समाप्ताः। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति

॥१४१-१६८ उद्देशका समाप्ताः॥

टीका--'कण्हपक्खिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' कृष्णपाक्षिक राशियुग्म कृतयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य आगत्य यावद्देवेभ्यो वा आगत्योत्पद्यन्ते इति पूर्ववदेव प्रश्नः, उत्तरमाह अतिदेशद्वारेण-'एवं' इत्यादि, 'एवं एत्थ वि अभवसिद्धियसरिसा

पर विराजमान हो गये। शतक ४१ उद्देशक ११३-१४० समाप्त हुए॥

शतक ४१ उद्देशक १४१-१६८॥

'कण्हपक्खिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति'

टीकार्थ-'कण्हपक्खियरासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' हे भदन्त! राशियुग्म कृतयुग्मराशिप्रमित कृष्णपाक्षिक नैरयिक किस स्थानविशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं? क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं अथवा यावत् देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? अतिदेशद्वारा इस प्रश्न का उत्तर देते हुए प्रभुश्री गौतम से कहते

સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

એકસોતેરમા ઉદ્દેશાથી એકસોચાળીસ સુધીના અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ સંપૂર્ણ

॥૪૧-૧૧૩-થી ૧૪૦॥

એકસોએકતાળીસમા ઉદ્દેશાથી એકસોઅડસઠ સુધીના અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓનું કથન પ્રારંભ-'कण्हपक्खिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' ઇ.

ટીકાર્થ-'कण्हपक्खिय रासिजुम्म कडजुम्मनेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' હે ભગવન્ રાશિયુગ્મમાં કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ કૃષ્ણપક્ષવાળા નૈરયિકો કયા સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અતિદેશ દ્વારા આ પ્રશ્નનો ઉત્તર ગૌતમસ્વામીને આપતાં પ્રભુશ્રી

अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा' एवम्-पूर्ववदेवात्रापि कृष्णपाक्षिक प्रकरणेऽपि अभव-सिद्धिकवदेवाष्टाविंशतिरुद्देशकाः कर्त्तव्याः, यथा-अभवसिद्धिक प्रकरणेऽष्टा-विंशतिरुद्देशकाः कथिताः तथैवात्रापि तेनैव रूपेण अष्टाविंशतिरुद्देशकाः कर्त्तव्याः सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त इति ।

'एकचत्वारिंशत्तमे शतके एकचत्वारिंशदधिक शततमादारभ्याष्ट षष्ट्यधिक शत पर्यन्ता-उद्देशकाः समाप्ताः ॥१४१-१६८॥

हैं-हे गौतम ! 'एवं एत्थ वि अभवसिद्धिय सरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा' पहिले के जैसे यहां पर भी-इस कृष्णपाक्षिक प्रकरण में भी-अभवसिद्धिक नैरयिककादिकों के जैसे २८ उद्देशक बनालेना चाहिये। अतः अभवसिद्धिक प्रकरण में जैसे अट्ठाईस उद्देशक कहे गये हैं वैसे ही उद्देशक २८ यहां पर कह लेना चाहिये। 'सेवं भंते! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! जैसा आपने यह कहा है वह सर्वथा सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर गौतमने प्रभुश्री को वन्दना की और नमस्कार किया, वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तपसे आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये। ॥१४१ से लेकर १६८ तक के उद्देशक ४१ वें शतक में समाप्त हुए।

કહે છે કે-'एवं एत्थ वि अभवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा' હે ગૌતમ પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે અહિયાં પણ આ કૃષ્ણપાક્ષિકના પ્રકરણમાં પણ અભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના કથન પ્રમાણે અઠયાવીસ ૨૮ ઉદ્દેશાઓ બનાવીને કહેવા જોઈએ. જેથી અભવસિદ્ધિક પ્રકરણમાં જે પ્રમાણે અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ કહેવામાં આવ્યા છે, એજ પ્રમાણેના ૨૮ અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ અહિયાં પણ કહેવા જોઇએ.

'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' હે ભગવન્ આ વિષયમાં આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણે કહેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે કહેલ સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમ-સ્વામીએ પ્રભુશ્રીને વંદના કરી તેઓને નમસ્કાર કર્યા વંદના નમસ્કાર કરીને તે પછી સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા. ॥સૂ૦૧॥

એકસો એકતાળીસમા ઉદ્દેશાથી એકસો અડસઠ સુધીના અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ સમાપ્ત ॥૪૧-૧૪૧ થી ૧૬૮॥

'अह १६९-१९६ उद्देसगा'

मूलम्-सुक्कपक्खिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति एवं एत्थ वि भवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा भवंति। एवं एए सव्वे वि छन्नउयं उद्देसगसयं भवंति रासिजुम्मसयं ॥४१-१९६॥

जाव सुक्कलेस्सा सुक्कपक्खिय रासिजुम्म कलिओगवेमाणिया जाव जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति? णो इणट्ठे समट्ठे। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति, भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-एवमेयं भंते! तहमेयं भंते! अवितहमेयं भंते! असंदिद्धमेयं भंते! इच्छियमेयं भंते! पडिच्छियमेयं भंते! इच्छियपडिच्छियमेयं भंते! सच्चेणं एस मट्ठे जे णं तुब्भे वयह त्ति कट्टु अपूतिवयणा खलु अरिहंता भगवंतो समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तपसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥१६९-१९६॥

इगचत्तालीसइमं रासिजुम्मसयं समत्तं ॥४१॥ भगवई समत्ता॥

छाया--शुक्लपाक्षिकराशियुग्म कृतयुग्मनैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? एवमत्रापि भवसिद्धिक सदृशा अष्टाविंशतिरुद्देशका भवन्ति एवमेते सर्वेऽपि षण्णवतीकमुद्देशकशतं १९६ भवति राशियुग्मशते ॥४१-१९६॥

यावत् शुक्ललेश्याः शुक्लपाक्षिकराशियुग्म कल्योज वैमानिकाः यावत् यदि सक्रियाः तेनैव भवग्रहणेन सिद्ध्यन्ति यावदन्तं कुर्वन्ति? नायमर्थः समर्थः। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति भगवान् गौतमः श्रमणं भगवन्तं महावीरं त्रिकृत्व आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति कृत्वा वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्-एवमेतद् भदन्त! तथ्यमेतत् भदन्त! अवितथमेतद् भदन्त! असंदिग्धमेतद् भदन्त! इच्छितमेतद् भदन्त! प्रतीच्छितमेतद् भदन्त! इच्छितप्रतीच्छितमेतद् भदन्त! सत्यः खलु एषोऽर्थः यत् खलु यूयं वदथ इति कृत्वा

अपूतिवचनाः खलु अर्हन्तो भगवन्तः श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरति ॥४१॥

एकचत्वारिंशत्तमं राशियुग्म शतं समाप्तम् ॥४१॥

भगवती समाप्ता

टीका—'सुक्कपक्खिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' शुक्लपाक्षिकराशियुग्मकृतयुग्म नैरयिकाः खलु भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य आगत्य यावद्देवेभ्यो वा आगत्य समुत्पद्यन्ते इति पूर्ववदेव प्रश्नः उत्तरमाह-इहापि पूर्वातिदेशेनैव 'एवं' इत्यादि, 'एवं एत्थ वि भवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा भवंति' एवं पूर्ववदेवात्रापि शुक्लपाक्षिकेऽपि भवसिद्धिक सदृशा अष्टाविंशतिरुद्देशका भवन्ति चत्वार औधिकाः कृतयुग्मादि चतुष्टय घटिताः

॥ शतक ४१ उद्देशक १६९-१९६॥

'सुक्कपक्खिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' इत्यादि।

टीकार्थ—'सुक्कपक्खिय रासिजुम्म कडजुम्मनेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' राशियुग्म में कृतयुग्मराशिप्रमाण शुक्लपाक्षिक नैरयिक हे भदन्त! किस स्थान विशेष से आकरके उत्पन्न होते हैं? क्या वे नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? अथवा यावत् देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? इस प्रश्न का उत्तर भी पूर्वातिदेशद्वारा देते हुए भगवान् गौतमस्वामी से कहते हैं—'एवं एत्थ वि भवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा भवंति' हे गौतम! पूर्व के जैसे यहां शुक्लपाक्षिक के सम्बन्ध में भी भवसिद्धिक नैरयिकादिकों के प्रकरण के जैसे २८ उद्देशक होते हैं। इन

એકસો ઓગણસિત્તેરમા ઉદ્દેશાથી એકસો છન્નુ સુધીના ઉદ્દેશાઓનું કથન

'सुक्कपक्खिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—'सुक्कपक्खिय रासिजुम्म कडजुम्म नेरइयाणं भंते! कओ उववज्जंति' હે ભગવન્ કયા રાશિયુગ્મમાં કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ શુકલપાક્ષિકના નૈરયિકો સ્થાન વિશેષથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? શું તેઓ નૈરયિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર અતિદેશ દ્વારા આપતાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—'एवं एत्थ वि भवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा भवंति' હે ગૌતમ ભવસિદ્ધિકોના કથન પ્રમાણે અહિયાં શુકલપાક્ષિકના સંબંધમાં પણ ૨૮ અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ

षड्लेश्या घटिता चतुर्विंशतिरित्येवमष्टाविंशतिरुद्देशका भवन्ति, 'एवं एए सव्वे वि छन्नउयं उद्देसगसयं भवंति रासिजुम्मसए' अष्टाविंशतिरौधिकाः, अष्टाविंशतिर्भवसिद्धिकस्य, अष्टाविंशत्यभवसिद्धिकस्य सम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टि कृष्णपाक्षिक शुक्लपाक्षिकानां सर्वसङ्कलनया एवमेते सर्वेऽपि षण्णवतिकमुद्देशकशतं भवति राशियुग्मशते राशियुग्मशतके एकचत्वारिंशत्तमे सर्वेऽपि उद्देशकाः षण्णवत्युत्तरशतप्रमाणा भवन्तीत्यर्थः। 'जाव सुक्कलेस्सा सुक्कपक्खियरासिजुम्मकलियोग-

में कृतयुग्मादि चार पद घटित चार तो औघिक उद्देशक हैं और कृष्णलेश्यादि ६ लेश्याओं के ४-४ उद्देशक हैं। इस प्रकार सब २४ उद्देशक हो जाते हैं। 'एवं एए सव्वे वि छन्नउयं उद्देसगसयं भवंति रासिजुम्मसए' इस प्रकारसे इस राशियुग्म शतक में समस्त उद्देशक १९६ हो जाते हैं। इनमें २८ औघिक उद्देशक हैं। भवसिद्धिक नैरयिकों के २८ उद्देशक हैं। अभवसिद्धिक नैरयिकोंके २८ उद्देशक हैं। सम्यग्दृष्टि नैरयिकों के २८ उद्देशक हैं। मिथ्यादृष्टि नरयिकों के २८ उद्देशक हैं शुक्लपाक्षिक नैरयिकों के २८ उद्देशक हैं। और कृष्णपाक्षिक नैरयिकों के २८ उद्देशक हैं। सब मिलकर ये इस राशियुग्म शतक में १९६ उद्देशक हैं।

'जाव सुक्कलेस्सा सुक्कपक्खिय रासिजुम्म कलिओग वेमाणिया' हे भदन्त ! यावत् राशियुग्म में कल्योज राशिप्रमित शुक्ललेश्या

થાય છે, તેમાં કૃતયુગ્મ વિગેરે ચાર પદો યુક્ત ચાર ઉદ્દેશાઓ ઔઘિક ઉદ્દેશાઓ થાય છે, અને કૃષ્ણલેશ્યા વિગેરે છ લેશ્યાઓના ચાર-ચાર ઉદ્દેશાઓ થાય છે. બધા મળીને અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ થઇ જાય છે. 'एवं एए सव्वे वि छन्नउयं उद्देसगसयं भवंति रासिजुम्मसए' આ રીતે આ રાશિયુગ્મ શતકમાં બધા મળીને એકસોછન્નુ ઉદ્દેશાઓ થાય છે. તેમાં ૨૮ અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ છે, ભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના ૨૮ અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ છે. અભવસિદ્ધિક નૈરયિકોના સંબંધમાં ૨૮ અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ થાય છે. સમ્યગ્દષ્ટિ નૈરયિકોના સંબંધમાં અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ થાય છે. મિથ્યાદષ્ટિ નૈરયિકોના સંબંધમાં અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ થાય છે. શુકલપાક્ષિક નૈરયિકોના સંબંધમાં અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ થાય છે અને કૃષ્ણપાક્ષિક નૈરયિકોના સંબંધમાં અઠયાવીસ ઉદ્દેશાઓ થાય છે. આ બધા મળીને આ રાશિયુગ્મ શતકમાં ૧૯૬ એકસોછન્નુ ઉદ્દેશાઓ થાય છે.

'जाव सुक्कलेस्सा सुक्कपक्खिय रासिजुम्म कलिओगवेमाणिया' હે ભગવન્ યાવત્ રાશિયુગ્મમાં કલ્યોજ રાશિપ્રમાણ શુકલલેશ્યાવાળા શુકલપાક્ષિક નૈરયિક

वेमाणिया' यावच्छुक्ललेश्या शुक्लपाक्षिक राशियुग्म कल्योज वैमानिकाः याव-त्पदेन कृष्णलेश्य नीललेश्य कापोतलेश्य तेजोलेश्य पद्मलेश्य शुक्लपाक्षिक कृत-युग्मत आरभ्य शुक्लपाक्षिक राशियुग्म कल्योज वैमानिकान्तानां पूर्ववर्णितानां संग्रहो भवति इति। 'जाव जइ सकिरिका तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति' यावत् यदि सक्रिया स्तेनैव भवग्रहणेन सिद्ध्यन्ति यावदन्तं कुर्वन्ति? अत्र प्रथम यावत्पदेन प्रथमोद्देशकीयः 'यदि सक्रिया' एतत्पूर्वतन संपूर्णस्य प्रकरणस्य संग्रहो भवति। द्वितीय यावत्पदेन बुद्ध्यन्ति मुच्यन्ते परिनिर्वान्ति सर्वदुःखाना मित्यस्य ग्रहणं भवतीति सक्रियाः सर्वे तेनैव भवग्रहणेन सिद्ध्यन्तीत्यादि प्रश्नः, उत्तरमाह-

---

वाले शुक्लपाक्षिक वैमानिक 'जाव जइ सकिरिया' यावत् यदि वे सक्रिय हैं तो क्या 'तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति' उसी भव से सिद्ध होते हैं 'जाव अंतं करेंति' यावत् समस्त दुःखोंका अन्त करते हैं? यहां प्रथम यावत्पद से ऐसा पाठ गृहीत हुआ है कि राशियुग्म में कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले, कापोतलेश्यावाले, तेजोलेश्यावाले, पद्मलेश्यावाले कृतयुग्म राशिप्रमाण प्रमित, त्र्योजराशि प्रमाण प्रमित, द्वापरयुग्मराशिप्रमाण प्रमित एवं कल्योज राशिप्रमाण प्रमित शुक्ल-पाक्षिक तक के वैमानिकदेव हैं वे क्या उसी भव ग्रहण से सिद्ध होते हैं-यावत्-बुद्ध होते हैं, मुक्त होते हैं, परिनिर्वात होते हैं और सर्व दुःखोंका अन्त करते हैं? 'जाव जइ सकिरिया' इस पाठ में जो यावत्पद आया है उससे सक्रियपद के पूर्व में आगत जो पाठ है वह सब गृहीत हुआ है। यह पाठ इसी शतक के प्रथम उद्देशक में आ चुका है। इस

'जाव जइ सकिरिया' यावत् જો તેઓ ક્રિયા સહિત હોય તો શું 'तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति' એજ ભવમાં સિદ્ધ થાય છે? 'जाव अंतं करेंति' यावत् સમસ્ત દુઃખોનો અંત કરશે? અહિયાં પહેલા યાવત્પદથી એવો પાઠ ગ્રહણ કરાયો છે કે-રાશિયુગ્મમાં કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નીલલેશ્યાવાળા કાપોતલેશ્યાવાળા તેજોલેશ્યાવાળા, પદ્મલેશ્યાવાળા જે કૃતયુગ્મ રાશિપ્રમાણ પ્રમિત, ત્ર્યોજ રાશિ પ્રમાણવાળા, દ્વાપરયુગ્મ રાશિપ્રમાણવાળા. અને કલ્યોજ રાશિપ્રમાણવાળા, શુકલપાક્ષિક સુધીના વૈમાનિક દેવો છે, તેઓ શું એજ ભવગ્રહણથી સિદ્ધ થઈ જાય છે? યાવત્ બુદ્ધ થાય છે? મુકત થાય છે? પરિનિર્વાત થાય છે? અને સર્વ દુઃખોનો અંત કરે છે? 'जाव जइ सकिरिया' આ પાઠમાં જે યાવત્પદ આવેલ છે, તેનાથી સક્રિય એ પદની પહેલાં જે પાઠ આવેલ છે, તે સઘળો પાઠ ગ્રહણ કરાયો છે, આ પાઠ આ શતકના પહેલા ઉદ્દેશામા

'णो इणट्ठे समट्ठे' नायमर्थः समर्थः देवा एते तेनैव भवग्रहणेन न सिद्धयन्ति देवानां सिद्धयभावादिति भावः। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति कथयित्वा 'भगवं गोयमे' भगवान् गौतमः 'समणं भगवं महावीरं' श्रमणं भगवन्तं महावीरम् 'तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ' त्रिकृत्वः -त्रिवारम् आदक्षिणं प्रदक्षिणं करोति, 'करेत्ता' कृत्वा 'वंदइ नमंसइ' वन्दते नमस्यति' वंदित्ता नमंसित्ता' वन्दित्वा नमस्यित्वा 'एवं वयासी' एवम्-वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-'एवमेयं भंते' एवमेतद् भदन्त! यद् देवानुप्रियेण कथितं तत् एवमेव 'तहमेयं भंते!' तथ्यं-सत्यमेतद् भदन्त! 'अवितहमेयं भंते!' अवितथमेतद् भदन्त!

प्रश्न के उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'णो इणट्ठे समट्ठे' हे गौतम! यह अर्थ समर्थित नहीं हुआ है। क्योंकि जो देव होते हैं वे इसी भवग्रहण से सिद्ध नहीं होते हैं देवों के सिद्धि का अभाव रहता है। 'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! जैसा आपने यह कहा है वह सब सर्वथा सत्य ही है २। इस प्रकार कहकर 'भगवं गोयमे' भगवान् गौतमने 'समणं भगवं महावीरं' श्रमण भगवान् महावीरको 'तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ' तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिण किया। 'करेत्ता वंदइ, नमंसइ' आदक्षिण प्रदक्षिण करके वन्दना की, नमस्कार किया। 'वंदित्ता नमंसित्ता' वन्दना नमस्कार कर फिर उन्होंने प्रभुश्री से 'एवं वयासी' ऐसा कहा 'एवमेयं भंते! तहमेयं भंते! 'अवितहमेयं भंते! असंदिद्धमेयं भंते! इच्छियमेयं भंते! पडिच्छियमेयं भंते! 'हे भदन्त! जैसा

આવેલ છે, આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-'णो इणट्ठे समट्ठे' હે ગૌતમ! આ અર્થ બરાબર નથી. કેમ કે-જે સક્રિય હોય છે, તેઓ આજ ભવગ્રહણથી સિદ્ધ થતા નથી સક્રિયોને-સિદ્ધિની પ્રાપ્તિનો અભાવ રહે છે.

સેવં ભંતે! સેવં ભંતે! ત્તિ' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણે કથન કરેલ છે, તે સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયનું સઘળું કથન સર્વથા સત્ય જ છે આ પ્રમાણે કહીને 'भगवं गोयमे' ભગવાન્ ગૌતમસ્વામીએ 'समणं भगवं महावीरं' શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને 'तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ' ત્રણવાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા કરી 'करेत्ता वंदइ नमंसइ' આદક્ષિણા પ્રદક્ષિણા કરીને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા. 'वंदित्ता नमंसित्ता' વંદના નમસ્કાર કરીને તેઓએ પ્રભુશ્રીને 'एवं वयासी' આ પ્રમાણે કહ્યું 'एवमेयं भंते तहमेयं भंते! अवितहमेयं भंते! असंदिद्धमेयं भंते! इच्छियमेयं भंते! पडिच्छियमेयं भंते!' હે ભગવન્ આપ દેવાનુપ્રિયે જે પ્રમાણે કહેલ છે, તે સઘળું કથન

हे भदन्त! अवितथं सर्वथैव सत्यमित्यर्थः 'असंदिद्धमेयं भंते!' असंदिग्धम्-सन्देहरहितं यथा भवेत्तथा एतत् 'इच्छियमेयं भंते!' इच्छितम् अभिलाषाविषयीभूतम् एतद् भवदुक्तम् 'पडिच्छियमेयं भंते' प्रतीच्छितं प्रकर्षेणाभिलषितमेतत्। 'इच्छियपडिच्छियमेयं भंते' इच्छित प्रतीच्छितमेतत् भदन्त! 'सच्चेणं एसमट्ठे' हे भदन्त! देवानुप्रियेण कथित एषः खलु अर्थः सर्वथैव सत्यः। 'जण्णं तुब्भे वदह' यत् खलु यूयं वदथ त्ति कट्टु' इति कृत्वा-कथयित्वा, इत्यर्थः, 'अपूतिवयणा खलु अरिहंता भगवंतो' अपूति वचनाः खलु अर्हन्तो भगवन्तः। पूतिर्दोषः स गतो यस्य वचनात् इत्थं भूता स्तीर्थंकरा भवन्ति, एतावता वचनातिशयत्वं बोधितम्' एवं कथनानन्तरं भगवान् गौतमः 'समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ' श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दते नमस्यति 'वंदित्ता नमंसित्ता' वन्दित्वा नमस्यित्वा 'संजमेण तपसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ' संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरतीति ॥

इति श्री - विश्वविख्यातजगद्वल्लभादिपदभूषितबालब्रह्मचारि - 'जैनाचार्य' पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां 'श्री भगवतीसूत्रस्य' प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां राशियुग्मशतमेकचत्वारिंशत्तमं शतं समाप्तम् ॥४१॥

॥ भगवती समाप्ता ॥

आप देवानुप्रियने कहा है वह ऐसा ही है। 'तहमेयं भंते 'हे भदन्त! यह सर्वथा सत्य ही है। हे भदन्त! यह असंदिग्ध ही है हे भदन्त! यह मुझे इष्ट है। हे भदन्त! यह मुझे स्वीकृत है। 'इच्छियपडिच्छियमेयं भंते!' हे भदन्त! यह मुझे ईच्छित प्रतीच्छित है। 'सच्चेणं एसमट्ठे जं णं तुब्भे वदह' हे भदन्त! जो आप देवानुप्रियने कहा है ऐसा यह अर्थ सर्वथा सत्य ही है 'त्ति कट्टु' ऐसा कहकर गौतमने 'अपूति वयणा खलु अरिहंता' अर्हन्त भगवन्त निर्दोष वचनवाले होते हैं इस लिये 'समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ' श्रमण भगवान् महावीर को

તેમ જ છે. 'तहमेयं भंते!' હે ભગવન તે સર્વથા સત્ય જ છે. હે ભગવન આ કથન અસંદિગ્ધ જ છે. સંદેહ વગરનું છે. હે ભગવન્ તે મને ઇષ્ટ છે હે ભગવન્ તે કથન મને સ્વીકાર્ય છે. 'इच्छियपडिच्छियमेयं भंते!' હે ભગવન તે મને ઇચ્છિત પ્રતિચ્છિત છે. 'सच्चेणं एसमट्ठे जं णं तुब्भे वदह' હે ભગવન આપ દેવાનુપ્રિયે જે કહેલ છે, તે તેમજ છે, અર્થાત્ સર્વથા સત્ય જ છે.' तिकट्टु' આ પ્રમાણે કહીને ગૌતમસ્વામીએ 'अपूतिवयणा खलु अरिहंता' અહંત ભગવાન નિર્દોષ વચનવાળા હોય છે, તેથી 'समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ'

वन्दना की नमस्कार किया। 'वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ' वन्दना नमस्कार कर फिर वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके एकतालीसवां राशियुग्म शतक समाप्त ॥४१॥

॥ भगवतीसूत्र का अनुवाद समाप्त हुआ॥

શ્રમણુ ભગવન મહાવીરને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા 'वंदित्ता नमंसित्ता' વંદના નમસ્કાર કરીને 'संजमेणं तवसा अप्पाणं भावे माणे विहरइ' સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થયા.

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત 'ભગવતીસૂત્ર'ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના એકતાળીસમું રાશિયુગ્મ શતક સમાપ્ત ॥૪૧॥

॥ભગવતી સૂત્રનો અનુવાદ સમાપ્ત॥



अथ शास्त्रप्रशस्ति प्ररूपयन् पूर्वं शास्त्रस्य शतकानामुद्देशकानां च परिमाणमाह-'सव्व.ए' इत्यादि,

मूलम्-सव्वाए भगवईए अट्ठतीसं सतं सयाणं १३८ उद्देसगाणं एगूणवीसई पंचवीसाइं सयाइं १९२५॥

छाया—सर्वस्या भगवत्या अष्टत्रिंशं शतं शतानाम् उद्देशकानाम् एकोनविंशतिः पञ्चविंशानि शतानि १९२५॥

टीका—'सव्वाए भगवईए' सर्वस्या भगवत्याः सर्वस्य भगवतीसूत्रस्य 'अट्ठतीसं सयं सयाणं' शतानां शतकानाम् अष्टत्रिंशम्-अष्टत्रिंशदधिकं शतं १३८ भवति। अत्र भगवत्यामष्टात्रिंशदधिक शतसंख्यकानि १३८ शतकानि सन्तीति। तथाहि-प्रथमादारभ्य द्वात्रिंशत्पर्यन्तानि शतकानि अवान्तरशतकरहितानि ३२ त्रयस्त्रिंशत्तमशतकादारभ्य एकोनचत्वारिंशत्तमशतकं यावत् सप्तसु शतकेषु प्रतिशतकं द्वादश द्वादश अवान्तर शतकानीति चतुरशीतिः शतकानि ८४। चत्वारिंशत्तमशतके एकविंशतिः शतकानि २१, एकचत्वारिंशत्तमे

शास्त्र प्रशस्ति की प्ररूपणा करते हुए सूत्रकार पहिले इस शास्त्र के शतकों का परिमाण प्रकट करते हैं--

'सव्वाए भगवईए अट्ठतीसं सतं सयाणं उद्देसगाणं एगूणवीसई पंचवीसाइं सयाइं' इस समस्त भगवती शास्त्र के १३८ शतक हैं। इनकी गणना इस प्रकार से है-प्रथम शतक से लेकर ३२ वें शतक तक अवान्तर शतक नहीं हैं। ३३ वे शतक से लेकर ३९ वे शतक तक के ७ शतकों में १२-१२ अवान्तर शतक हैं। इस प्रकार ८४ शतक हैं। ४० वे शतक में २१ अवान्तर शतक हैं। ४१ वे शतक में अवान्तर

શાસ્ત્ર પ્રશસ્તિ

શાસ્ત્ર પ્રશસ્તિની પ્રરૂપણા કરતાં સૂત્રકાર સૌથી પહેલાં શાસ્ત્રના શતકો અને ઉદ્દેશાઓના પ્રમાણનું કથન પ્રગટ કહે છે.—'सव्वाए भगवईए अट्ठतीसं सतं सयाणं, उद्देसगाणं एगूणवीसइं पंचवीसाइं सयाइं' આ સંપૂર્ણ ભગવતી સૂત્રના ૧૩૮ એકસોઆડત્રીસ શતકો કહ્યા છે તેની ગણત્રી આ પ્રમાણે છે. પહેલા શતકથી આરંભીને બત્રીસમા શતક સુધીમાં અવાન્તર શતકો આવતા નથી ૩૨ બત્રીસમા શતકથી ૩૯ ઓગણચાળીસમા શતક સુધી ૭ સાત શતકોમાં ૧૨-૧૨ બાર બાર અવાન્તર શતકો આવે છે. આ રીતે ૮૪ ચોર્યાશી શતકો થઈ જાય છે, ચાળીસમા શતકમાં ૨૧ એકવીસ અવાન્તર શતકો કહ્યા

शतके तु अवान्तरशतकं नास्तीत्येवमेकमेव शतकम् १, तदेवं-३२-८४=२१=१ सर्वसंकलनया अष्टत्रिंशदधिकमेकं शतं (१३८) शतकानां भवति। तथा-'उद्देसगाणं' उद्देशकानाम्-'एगूणवीसई पंचवीसाइं सयाइं' पञ्चविंशत्यधिकानि एकोनविंशतिः शतानि १९२५ भवन्तीति ॥

अथोपसंहरन् भगवतीसूत्रस्थितपदानां संख्याप्रतिपादिकां गाथामाह-'चुलसीइ' इत्यादि।

मूलम्-चुलसीइ सय सहस्सा, पयाण पवरवरनाणदंसीहिं।
भावाभावमणंता, पन्नत्ता एत्थ मंगंमि ॥१॥

छाया-चतुरशीति शतसहस्राणि, पदानां प्रवरवरज्ञानदर्शिभिः।
भावाभावा अनन्ताः, प्रज्ञप्ता अत्राङ्के ॥१॥

टीका-'चुलसीइ सयसहस्सा पयाणं पवरवरणाणदंसीहिं' चतुरशीति शत प्रवरवरज्ञानदर्शिभिः प्रज्ञप्तानि अस्मिन्-भगवत्याख्य पञ्चमाङ्गे पदानि चतुरशीति शतसहस्राणि विद्यन्ते इति पदानि विशिष्टसम्प्रदायगम्याणि प्रवराणां वरं यज्ज्ञानं तेन ज्ञानेन पश्यन्तीति प्रवरवरज्ञानदर्शिन स्तैः केवलिभिरित्यर्थः

शतक नहीं हैं। एक ही शतक हैं। इस प्रकार ३२-८४-२१ ये सब मिलकर १३८ शतक होते हैं। तथा उद्देशको की संख्या १९२५ है।

अब भगवतीसूत्र स्थित पदों की संख्या प्रतिपादक गाथाका कथन सूत्रकार करते हैं--

'चुलसीइ सयसहस्सा पयाण पवरवरनाण दंसीहिं।
भावाभाव मणंता पन्नत्ता एत्थ मंगंम्मि ॥१॥

इस भगवती नामके पंचम अङ्ग में पदों की संख्या केवली भगवन्तोने ४४ लाख कही है। यह पदों की संख्या विशिष्ट संप्रदाय गम्य

છે. તથા ૪૧ એકતાળીસમા શતકમાં અવાન્તર શતકો થતા નથી. એક જ શતક છે. આ રીતે ૩૨-૮૪-૨૧-૧ આ બધા મળીને કુલ ૧૩૮ એકસોને આડત્રીસ શતકો થઇ જાય છે. તથા ઉદ્દેશાઓની સંખ્યા કુલ ૧૯૨૫ એક હજાર નવસો પચીસની કહેલ છે.

હવે ભગવતી સૂત્રમાં કહેલ પદોની સંખ્યાનું પ્રતિપાદન કરનાર ગાથાનું સૂત્રકાર કથન કરે છે.--

'ચુલસીઈ સયસહસ્સા પયાણ પવરવરનાણદંસીહિં।
ભાવાભાવમણંતા પન્નત્તા એત્થ મંગંમિ ॥૧॥

આ ભગવતી સૂત્ર નામના પાંચમા અંગમાં પદોની સંખ્યા કેવલી ભગવાનોએ ૮૪ ચોર્યાશીલાખ કહેલ છે. આ પદોની સંખ્યા વિશેષ સંપ્ર-

प्रज्ञप्तानीति योगः । इदमेतस्य सूत्रस्य पदपरिमाणं कथितम् अथार्थ स्वरूपमाह— 'भावाभावमणंता' भावाः जीवादयः पदार्थाः अभावाश्च ते एव जीवादयः अन्यापेक्षया इति भावाभावा, अथवा भावा विधयः अभावा निषेधा इति भावाभावाः ते च भावाभावाः अनन्ताः 'एत्थ मंगमि अत्र अस्मिन् भगवतीनामके पञ्चमाङ्गे अथवा भावाभावैः विषय भूतैरनन्तानि इति भावानन्तानि चतुरशीति शतसहस्राणि पदानि प्रज्ञप्तानीति गाथार्थः ॥१॥

मूलम्—पण्णत्तीए आइमाणं अट्ठण्हं सयाणं दो दो उद्देसगा उद्दिसिज्जंति । णवरं चउत्थे सए पढमदिवसे अट्ठ, बितियदिवसे दो उद्देसगा उद्दिसिज्जंति । णवमाओ सयाओ आरद्धं जावइयं जावइयं पवेइ तावइयं तावइयं एगदिवसेणं उद्दिसिज्जइ, उक्कोसेणं सयं पि एगदिवसेणं, मज्झिमेणं दोहिं दिवसेहिं सयं, एवं जाव वीसइमं सयं, णवरं गोसालो एगदिवसेणं उद्दिसिज्जइ । जइ ठिओ एगेण चेव आयंबिलेणं अणुन्नव्वइ । अह णं ठिओ आयंबिलेणं छट्ठेणं अणुपणव्वइ । एक्कवीस-बावीस-तेवीसइमाइं सयाइं एक्केक्क दिवसेणं उद्दिसिज्जंति । चउवीसइमं सयं दोहिं दिवसेहिं छ छ उद्देसगा । पंचवीसइमं दोहिं दिवसेहिं छ छ उद्देसगा । बंधिसयाइं अट्ठसयाइं एगेणं दिवसेणं, सेढिसयाइं बारस एगेणं, एगिंदिय महाजुम्मसयाइं बारस एगेणं । एवं बेंदियाणं बारस, तेइंदियाणं बारस, चउरिंदियाणं

है । तथा भगवती सूत्र में जीवादिरूप भावपदार्थ एवं अन्य की अपेक्षा से अभाव रूप वे ही जीवादिरूप अभाव पदार्थ अथवा भाव–विधि और अभाव–निषेध रूप भावाभाव अनन्त कहे हैं । अथवा विषयभूत भावाभावों से अनन्त चौरासी लाख पद कहे गये हैं । ऐसा यह गाथार्थ है ।

દાયથી જાણી શકાય છે. તથા આ ભગવતી સૂત્રમાં જીવાદિરૂપ ભાવ પદાર્થ અથવા ભાવ વિધિ અને અભાવ નિષેધરૂપ ભાવાભાવ અનન્ત કહેલ છે. અથવા વિષયરૂપ ભાવાભાવોથી અનંત ચોર્યાશીલાખપદો કહેવામાં આવેલ છે. આ પ્રમાણે આ ગાથાનો અર્થ થાય છે.

-बारस एगे वा। असन्नि पंचिंदियमहाजुम्मसयाइं एक्कवीसं एगादिवसेणं उद्दिसिज्जंति। रासिजुम्मसयं एगादिवसेणं उद्दिसिज्जइ।

छाया-प्रज्ञप्त्याम् आदिमानाम् अष्टानां शतकानां द्वौ द्वौ उद्देशकौ च उद्दिश्येते, नवरं चतुर्थे शतके प्रथमदिवसे अष्ट, द्वितीय दिवसे द्वौ च उद्दिश्यन्ते। नवमात् शतकात् आरब्धं यावत्कं यावत्कं प्रवेद्यते तावत्कं तावत्कम् एकदिवसेन उद्दिश्यते, उत्कर्षेण शतकमपि एकदिवसेन, मध्यमेन द्वाभ्यां दिवसाभ्यां शतकम् एवं यावत् विंशतितमं शतकम्, नवरं गोशालम् (अध्ययनम्) एकदिवसेन उद्दिश्यते यदि स्थितः एकेनैव आचामाम्लेन अनुज्ञाप्यते। अथ खलु स्थितः आचामाम्लेन षष्ठेन अनुज्ञाप्यते एकविंशद्वाविंशत्रयोविंशतितमानि शतकानि एकैकदिवसेन श्रेणिशतकानि द्वादश एकेन एकेन्द्रियमहायुग्मशतकानि द्वादश एकेन। एवं द्वीन्द्रियाणां द्वादश, त्रीन्द्रियाणां द्वादश, चतुरिन्द्रियाणां द्वादश एकेन। असंज्ञिपञ्चेन्द्रियाणां द्वादश, संज्ञि पञ्चेन्द्रियमहायुग्म शतकानि एकविंशतिः एकदिवसेन उद्दिश्यन्ते। राशियुग्मशतकम् एकदिवसेन उद्दिश्यन्ते॥

टीका-कस्मिन् दिने कति उद्देशका उद्दिश्यन्ते इत्याह-'पन्नत्तीए' प्रज्ञप्त्याम् 'आइमाणं अट्ठण्हं सयाणं' आद्यानामष्टानां शतानाम् 'दो दो उद्देसगा उद्दिसिज्जंति द्वौ द्वौ उद्देशकौ उद्दिश्यन्ते 'नवरं चउत्थे सए पढमदिवसे अट्ठ' नवरं विशेषस्त्वयं चतुर्थे शतके प्रथमदिवसे अष्ट उद्देशका उद्दिश्यन्ते तथा 'वितीयदिवसे दो उद्देसगा उद्दिसिज्जंति' द्वितीयदिवसे द्वौ उद्देशकौ उद्दिश्यते 'नवमाओ सयाओ आरद्धं'

'पण्णत्तीए आइमाणं अट्ठण्हं सयाणं दो दो उद्देसगा उद्दिसिज्जंति' इ.

टीकार्थ—एकदिन में कितने उद्देशक उपदिष्ट होते हैं इसके लिये कहा गया है कि प्रज्ञप्ति में आदि के आठ शतकों के दो दो उद्देशक एक एकदिन में उपदिष्ट होते है। परन्तु 'चउत्थे सए पढमदिवसे अट्ठ' पहिले दिन चतुर्थ शतक के आठ उद्देशक और दूसरे दिन दो उद्देशक उपदिष्ट होते है। 'नवमाओ सयाओ आरद्धं जावइयं २ पवेइ तावइयं २ एग

'पण्णत्तीए आइमाणं अठण्हं सयाणं दो दो उद्देसगा उद्दिसिज्जंति' ઈત્યાદિ સૂત્ર એકદિવસમાં કેટલા ઉદ્દેશાઓનો ઉપદેશ કરી શકાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં કહેલ છે કે-પ્રજ્ઞપ્તિમાં પહેલા આઠ શતકોના બબ્બે ઉદ્દેશાઓ એક એક દિવસમાં ઉપદેશ આપી શકાય છે. અર્થાત્ પહેલા આઠ શતકોના બબ્બે ઉદ્દેશાઓનું કથન દરરોજ કરી શકાય છે. પરંતુ 'चउत्थे सए पढमदिवसे अट्ठ' પહેલા દિવસે ચોથા શતકના આઠ ઉદ્દેશાઓ અને બીજા દિવસે બે ઉદ્દેશાનો ઉપદેશ આપી શકાય છે,

नवमात् शतादारब्धम् 'जावइयं जावइयं' यावतिकं यावतिकं यावत् 'पवेइ' प्रवेदयति-प्रवेदयति-शक्यते 'तावइयं तावइयं' तावत्प्रमाणम् तावत्प्रमाणम् 'एगदिवसेणं' एकदिवसेन 'उद्दिसिज्जइ' उद्दिश्यते नवमशतादारभ्य अग्रे यावत्प्रमाणं व्याख्यातुं शक्यते तावत्प्रमाणं यथेच्छं व्याख्यातव्यमितिभावः। कियत्पर्यन्तं व्याख्यातव्यमित्याह-'उक्कोसेणं सयंपि एगदिवसेणं' उत्कर्षेण परिपूर्णं शतमपि एकदिवसेन 'मज्झिमेणं' मध्यमेन मध्यमतया 'दोहिं दिवसेहिं सयं' द्वाभ्यां दिवसाभ्यां शतम् 'उद्दिसिज्जइ' उद्दिश्यते 'जहन्नेणं तिहिं दिवसेहिं सयं' जघन्येन त्रिभिर्दिवसैः शतकमुद्दिश्यते 'एवं जाव वीसइमं सयं' एवं यावत् विंशतितमं शतकं विंशतितमशतक पर्यन्त मुद्दिश्यते 'नवरं' विशेषस्त्वयम् 'गोसालो एगदिवसेणं उद्दिसिज्जइ' गोशालकशतं पञ्चदशम् एकदिवसेन उद्दिश्यते 'जइ ठिओ' यदि स्थितः यदि गोशालकाधिकारः स्थितः अवशिष्टो भवे-

दिवसेण उद्दिसिज्जइ' तथा नौवें शतक से लेकर आगे जितना जितना एकदिन में कहा जा सके उतना उतना इच्छानुसार उपदिष्ट करना चाहिये-व्याख्यान में कहना चाहिये। इस प्रकार यदि एकदिन में भी उत्कृष्ट रूप से एक पूरा शतक व्याख्यात उपदिष्ट हो सकता हो तो व्याख्यात कर देना चाहिये और मध्यम रूप से यदि वह दो दिन में उपदिष्ट हो सकता हो तो उसे दो दिन में भी उपदिष्ट कर देना चाहिए और जघन्य से उसे तीन दिन में भी उपदेश में कह देना चाहिये 'एवं जाव वीसइमं सयं' ऐसा यह शतक के उपदिष्ट होने का कथन बीसवें शतक तक कहा गया जानना चाहिए। परन्तु 'गोसालो एगदिवसेणं उद्दिसिज्जइ, पन्द्रहवां जो गोशालक शतक है उसका तो

'नवमाओ सयाओ आरद्धं जावइयं २ तावइयं २ एगदिवसेणं उद्दिसिज्जइ' तथा નવમા શતકથી લઈને આગળ જેટલા જેટલા ઉદ્દેશાઓ એક દિવસમાં કહી શકાય એટલા એટલા ઉદ્દેશાઓ ઇચ્છા પ્રમાણે કહેવા જોઈએ.-અર્થાત્ વ્યાખ્યાનમાં કથન કરવા જોઈએ. આ રીતે જો એકદિવસમાં પણ ઉત્કૃષ્ટ રૂપથી એક શતક પૂરેપૂરૂં વ્યાખ્યાનમાં કહી શકાય તેમ હોય તો પૂરેપૂરા એક શતકનો ઉપદેશ કહેવો જોઈએ. અર્થાત્ ઉપદેશ આપવો જોઈએ. અને મધ્યમ પણાથી જો તે બે દિવસમાં ઉપદેશ કહી શકાય તેમ હોય તો બે દિવસમાં પણ તેનો ઉપદેશ આપવો. અને જઘન્યથી ત્રણ દિવસમાં પણ ઉપદેશ રૂપે કહેવા જોઈએ. 'एवं जाव वीसइमं सयं' આ રીતે આ શતકોનો ઉપદેશ આપવા સંબંધી કથન વીસમા શતક સુધી કહેલ છે. તેમ સમજવું. પરંતુ 'गोसाले एगदिवसेणं उद्दिसिज्जइ' પંદરમુ જે ગોશાલક શતક છે, તેનો ઉપદેશ-વ્યાખ્યાન એક જ

त्तदा 'एगेण चेव आयंबिलेणं' एकेनैव आचामाम्लेन एकमाचामाम्लं कृत्वा द्वितीय दिवसे 'अणुन्नव्वइ' अनुज्ञाप्यते उद्दिश्यते 'अह णं' अथ खलु पुनरपि च यदि 'ठिओ' स्थितः अवशिष्टो भवेत्तदा सः 'आयंबिलेण छट्ठेण अणुण्णव्वइ' आचामाम्लेन षष्ठेन-आचामाम्ल द्वयेन तृतीय दिवसे अनुज्ञाप्यते उद्दिश्यते 'एक्कवीस बावीस तेवीस इमाइं सयाइं एक्केकदिवसेणं उद्दिसिज्जंति' एकविंशति-द्वाविंशति-त्रयोविंशति-तमानि शतकानि एकदिवसेनैव उद्दिश्यन्ते। 'चउवीसइमं सयं दोहिं दिवसेहिं छ छ उद्देसगा' चतुर्विंशतितमं शतकं द्वाभ्यां दिवसाभ्यां षट् षट् इति द्विषड्मेलने द्वादश भवन्ति, तेन प्रत्येक दिवसे द्वादशेति द्वाभ्यां दिवसाभ्यां चतुर्विंशतिरुद्देशका उद्दिश्यन्ते, इत्यर्थो बोध्यः, चतुर्विंशतितमशतके चतुर्विंशत्युद्देशकानां सद्भावात् 'पंचवीसइमं सयं दोहिं दिवसेहिं छ-छ उद्देसगा' पञ्चविंशतितमं

व्याख्यान उपदेश एक ही दिन में करना चाहिए। यदि वह कुछ बाकी बचा रहता है तो उसका एक आयंबिलकरके दूसरे दिन उपदेश करना चाहिए। फिर भी यदि वह बाकी बचा रहता है तो दो आयंबिलकरके तृतीय दिन उसका उपदेश करना चाहिए 'एक्कवीसबावीस तेवीस इमाइं सयाइं एक्केक्क दिवसेणं उद्दिसिज्जंति' २१ वां शतक, २२ वां शतक एवं २३ वां शतक इनका उपदेश एक एक दिन में करना चाहिए 'चउवीसइमं सयं दोहिं दिवसेहिं ६-६ उद्देसगा' चोवीस वें शतकका एकदिन में छ-छ उद्देशकों को लेकर व्याख्यान करना चाहिए इस प्रकार एकदिन में १२ उद्देशकों का व्याख्यान हो जाता है। इसी प्रकार दो दिन में इसके २४ उद्देशकों का व्याख्यान हो जाता है।

દિવસમાં કરી લેવો જોઈએ. એક દિવસમાં ઉપદેશ કરતાં જો કદાચ બાકી રહી જાય તો એક આયંબિલ કરીને બીજે દિવસે તેનું વ્યાખ્યાન-ઉપદેશ કરી લેવો જોઈએ. તો પણ જો બાકી રહી જાય તો બે આયંબિલ કરીને ત્રીજે દિવસે તેનું કથન કરવું જોઈએ. 'एक्कवीसबावीसतेवीसइमाइं सयाइं एक्केक्कदिवसेणं उद्दिसिज्जंति' २१ એકવીસમું શતક २२ બાવીસમું શતક અને २३ તેવીસમું શતક આનો ઉપદેશ એક એક દિવસે કરી લેવો જોઈએ. 'चउवीसइमं सयं दोहिं दिवसेहिं छछ उद्देसगा' ચોવીસમા શતકના એકદિવસમાં ७ ७ ઉદ્દેશાઓ લઈને ઉપદેશ કરવો જોઈએ. આ રીતે એક દિવસમાં ૧૨ બાર ઉદ્દેશાઓનું કથન થઈ જાય છે. આજ પ્રમાણે બીજે દિવસે પણ બાર ઉદ્દેશાઓનું વ્યાખ્યાન કરી લેવું જોઈએ. આ પ્રમાણે બે દિવસમાં તેના ૨૪ ચોવીસ ઉદ્દેશાઓનું વ્યાખ્યાન થઈ જાય છે. ચોવીસમા શતકમાં ૨૪ ચોવીસ

शतकं द्वाभ्यां दिवसाभ्यां षट् षट् उद्देशकाननुद्दिश्य उपदिश्यन्ते। 'बंधिसयाइं अट्ठसयाइं एगेणं दिवसेणं' बन्धिशतकाद्यष्टशतानि एकेन दिवसेनोपदिश्यन्ते 'सेढिसयाइं बारस एगेणं' श्रेणि शतानि द्वादश एकेन दिवसेनोपदिश्यन्ते। 'एगिंदिय महाजुम्मसयाइं बारस एगेणं' द्वादश एकेन्द्रिय महायुग्मशतानि एकदिवसेनोपदिश्यन्ते। 'एवं बेंदियाणं बारस' एवं द्वीन्द्रियाणां द्वादशशतानि 'तेइंदियाणं बारस चउरिंदियाणं बारसएगेणं' त्रीन्द्रियाणां द्वादशशतानि चतुरिन्द्रियाणां द्वादशशतानि एकेन दिवसेनोपदिश्यन्ते 'असन्निपंचिंदियाणं बारस सन्निपंचिंदिय महाजुम्म सयाइं एकवीसं एगदिवसेणं उद्दिसिज्जंति' असंज्ञिपञ्चेन्द्रियाणां द्वादश

चौबीसवें शतक में २४ उद्देशक हैं। 'पंचवीसइमं सयं दोहिं दिवसेहिं छ-छ उद्देसगा पच्चीसवें शतकका व्याख्यान ६-६ उद्देशकों को लेकर २ दिनमें करना चाहिये। 'बंधिसयाइं अट्ठसयाइं एगेणं दिवसेणं' बंधिशतक आदि आठ शतों का व्याख्यान एकदिनमें करना चाहिये। 'सेढिसयाइं बारस एगेणं' श्रेणि शत आदि १२ शतोंका व्याख्यान एकदिन में करना चाहिए। 'एगिंदिय महाजुम्मसयाइं बारस एगेणं' एकेन्द्रिय के १२ महायुग्म शतों का व्याख्यान एकदिन में करना चाहिए। 'एवं बेंदियाणं बारस' दोइन्द्रिय के १२ महायुग्म शत तेइन्द्रियके १२ महायुग्म चौइन्द्रियों के ४१ महायुग्मशत और असंज्ञी पञ्चेन्द्रियों के ४१ महायुग्मशत एवं संज्ञी

ઉદ્દેશાઓ કહ્યા છે. 'पंचवीसइमं सयं दोहिं दिवसेहि छ छ उद्देसगा' પચ્ચીસમા શતકનું વ્યાખ્યાન છ છ ઉદ્દેશાઓ લઈને ૨ બે દિવસમાં કહેવું જોઈએ. 'बंधिसयाइं अट्ठसयाइं एगेणं दिवसेणं' બંધિશતક વિગેરે આઠ શતકોનું વ્યાખ્યાન એક જ દિવસે કહેવું જોઈએ. 'सेढिसयाइं बारस एगेणं' શ્રેણિશતક વિગેરે બાર શતકોનું વ્યાખ્યાન એક જ દિવસમાં કરવું જોઈએ. 'एगिंदिय महाजुम्मसयाणं बारस एगेणं' ૮ એકેન્દ્રિયોના ૧૨ બાર મહાયુગ્મ શતકોનું વ્યાખ્યાન એક જ દિવસમાં કરવું જોઈએ. 'एवं वेइंदियाणं बारस' બે ઇન્દ્રિય વાળા જીવોના સંબંધના ૧૨ બાર મહાયુગ્મ શતકો, ત્રણ ઈન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં ૧૨ મહાયુગ્મ શતકો, ચાર ઈન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં ૧૨ બાર મહાયુગ્મ શતકો, તથા પાંચ ઈન્દ્રિયવાળા જીવોના સંબંધમાં ૧૨ બાર મહાયુગ્મ શતક અને સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિયના સંબંધમાં ૨૧ એકવીસ મહાયુગ્મ

शतानि तथा संज्ञिपञ्चेन्द्रियमहायुग्मशतानि एकविंशतिरेकदिवसेनोपदिश्यन्ते। 'रासीजुम्मसयं एगदिवसेणं उद्दिसिज्जइ' राशियुग्मशतमेकचत्वारिंशं शतकं समग्रमपि एकदिवसेन उपदिश्यते इति ।

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-
कलितकलितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित—कोल्हापुरराजगुरु-
बालब्रह्मचारि — जैनाचार्य — जैनधर्मदिवाकर
-पूज्यश्री घासिलालव्रतिविरचितायां श्री "भग-
वतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्या
व्याख्या समाप्ता॥

॥ भगवती सम्पूर्णा ॥

पञ्चेन्द्रिय के ४१ महायुग्म शत ये सब महायुग्म शत एक एक दिन में उपदिष्ट करदेना चाहिए तथा राशियुग्म शत ४१ वां शतक पूरा का पूरा एक दिन में उपदिष्ट करना चाहिए।

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराजकृत
"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्या समाप्त।
भगवती सूत्र समाप्त ॥

શતક આ મહાયુગ્મ શતકોનું કથન એક એક દિવસમાં કરી લેવું જોઈએ. તથા રાશિયુગ્મ શતક ૪૧ એકતાળીસમાં શતકનું વ્યાખ્યાન પૂરેપૂરૂ એક જ દિવસમા કરી લેવું જાઈએ. આ પ્રમાણે આ શાસ્ત્ર પ્રશસ્તિ કહેલ છે.

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર શ્રી પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત
'ભગવતીસૂત્રની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યા સમાપ્ત ॥
॥ભગવતીસૂત્ર સમાપ્ત॥
ઓં શાન્તિઃ શાન્તિઃ શાન્તિઃ
॥શ્રી સ્તુમે॥
શ્રી મદ ઘાસીલાલ મુનીશ્વરો વિજયેતેતરામ

